॥ श्रीः ॥

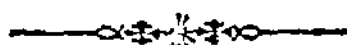
शालग्रामनिघण्टुभूषणम्.

अर्थात्

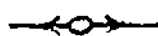
बृहन्निघण्टुरत्नाकरान्तर्गतौ

सप्तमाष्टमभागौ ७-८

(वैद्यकोपयुक्तसमस्तपदार्थनामगुणकोश)



श्रीमाथुरवैश्यवंशोद्भवमुरादाबादस्थकविकुलकुमुद
कलानिधिश्रीशालिग्रामवैश्यवर्यविरचितौ ।



सोऽयं ग्रंथ

खेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

(खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन,)

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशित ।



संवत् १९६९, शके १८३४

लाला शालिग्रामजी वैश्य



मुरादाबादवास्तव्य करुणातरुणान्तरः ।
आयुर्वेदसमुद्धर्ता शालिग्रामो जयत्ययम् ॥ १ ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बम्बई

धन्यवादाः ।

भवन्तु भूयांसो भव्यभूतये विश्वकर्त्रे महीयसे परमेश्वराय प्रणामाः । येन भगवता विविध जगत्सिसृक्षता प्रथमतः सृष्टिक्रमानुसारेण महदादिपृथिव्यन्तो महान्सर्गः स्वात्मनि विकाशमानीयत । अस्मिंश्च सर्गे तत्तद्भौतिकनिकाया सर्वे प्राणिनस्तस्यैव परमेशितुः सकेतमनुवर्तमाना यथातत्कल्पितवृत्तयो विचरन्तीति स्वाभाविकं सृष्टिसौन्दर्यमेतत् । तत्रापि सृष्टिक्रमपराकाष्ठाभूताया पृथिव्यामस्मदादिजीवाना पुरोक्तपरमेश्वरेणैव पृथिवीनिकायत्वमाकलयता विशेषतः कौतुकेनेव विविधवृक्ष–लता–सस्य–जल रत्न–धातु–प्रभृतयः पदार्था असृज्यन्त तदनु प्राणिनः । इति सृष्ट्युपक्रमे पुराणेषु शोश्रूयते सर्वतः । अथ च प्रकृतं तत्र विमृश्यते ।

इह पृथिव्या जन्यमानानां नानाजीवानां निजपारम्परीकानन्तजन्मोपार्जितविविधदुष्कृतपरिणतानेकव्याधिपरिपीडितकलेवराणां पारत्राणैकार्यसमुद्भवानां नानाविधवृक्ष–लता–सस्य–जल–रत्न–धातु–प्रभृतीनां पदार्थानां यथोचितोपयोगार्थं परमकारुणिकैरात्रेय–दक्ष–शक्र–धन्वन्तरि–दिवोदास–सुश्रुत चरक–वाग्भट–प्रभृतिभिर्महानुभावैरायुर्वेदशास्त्रं स्वस्वानुभवानुगमानुसारेणोपबृंहितमासीत् । यतः परावरदर्शां महर्षीणां बुद्धिवैभवेन प्रसिद्धिं गतेभ्य आयुर्वेदग्रन्थेभ्य औषधीनां गुणदोषानविज्ञाय वैद्यजना रोगिणां रोगान्यथोचितौषधप्रयोगेण निर्मूल्योपकुर्वन्ति समन्ततः । तथापि तत्तन्महर्षिस्वस्वबुद्धिविनिर्मितानामनेकग्रन्थानामध्ययनाध्यापने कालातिक्रममन्वीक्षमाणैः परमकारुणिकैः श्रीमन्मुरादाबाद–नगरनिवासिभिः श्रीमन्माथुरवैश्यवंशावतंसश्रीलालाशालिग्रामसुगृहीतनामधेयैरस्मत्परममित्रैः केवलं परोपकाराय निजमतिमन्थानेनायुर्वेदमहोदधिं विनिर्मथ्य सकलौषधिगुणगणप्रतिमण्डितोऽयं "शालिग्रामनिघण्टूभूषण" नामा नवीनो ग्रन्थो विनिर्मितः ।

अस्मिन् "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" ग्रन्थे प्रोक्तमहाशयैर्विविधदेशभाषाप्रचारिततत्तदौषधीनां नामानि–तत्तदौषधीनां गुणाश्च सविस्तरं प्रत्यपाद्यन्त । येन च कृत्वा प्रायश्चैष ग्रन्थः–संस्कृत–हिन्दी–बांगी–माहाराष्ट्री–गौर्जरी–कार्णाटकी–द्राविडी–तामिली–औत्कली इङ्ग्लिश्–लैटिन्–फारसी–आरबी–भाषानिविष्टौषधीनामतया सर्वतः सञ्चरता सर्वदेशीयानां जनानां परमोपयोगीति को नानुमन्येतनाम सहृदयः सारासारविवेकनिपुणो जनः ।

अथ ग्रन्थश्च तैरुदारबुद्ध्या सर्वलोकोपकृत्यर्थं प्रकाशनार्थं मत्समीपे प्राहीयत । स च मया तेभ्यः सादरं स्वीकृत्य स्वीकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशमानीयत।तस्यैव द्वितीयावृत्तिर्भूयसापरिश्रमेण सम्यक्परिशोध्य विदुषां मुदे पुनर्मुद्रिता ।

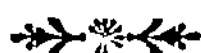
अतएतादृशग्रन्थनिर्माणपरिश्रमपरिक्लिष्टबुद्धिवैभवानां नानाविधग्रन्थनिर्माणजन्यातिनिर्मलयशोभासुरीकृतविबुधजनमनसां श्रीमतां श्रीलालाशालिग्रामनामधेयानां यावन्तो धन्यवादा देयास्ते सर्वेपि रवेर्दीपदानमिवेति मन्ये ।

विबुधगणप्रेमाभिलाषी–

खेमराज–श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्षः–मुंबई

भूमिका।



देखो इस असारससारमें उस निराकार निर्विकार परब्रह्म परमेश्वरने साकार रूप धारण कर चार वेद, षट् शास्त्र और अष्टादश पुराण अपने हृदयसे प्रगट किये, उनमेंसे अथर्वणवेदका सार लेकर अत्यन्त अनुपम और अद्वितीय, प्राणियोंके कष्टका हरनेवाला और दीर्घायु करनेवाला आयुर्वेद निकाला, जिसमें एक लक्ष श्लोक और सहस्रअध्यायमें नियत करके आयुर्वेदसहिता नाम रक्खा और प्रजाके रचनेसे पहिले ब्रह्माके हृदयमें उसका प्रकाश किया ब्रह्माने उसके आठ भाग किये, फिरभी कठिन समझ कर कोष और निघण्टुको मुख्य रक्खा, और सम्पूर्ण कर्म्मोंमें चतुर बुद्धिविशारद और अग्रगामी जानकर दक्षप्रजापतिको सर्वांगसहित आयुर्वेदका उपदेश किया, दक्षने स्वर्गीय वैद्य, मार्तण्डके समान प्रचण्ड शक्तिवाले महाविद्वान् देवताओंमें श्रेष्ठ अश्विनीकुमारोंको आयुर्वेदसहिता विस्तारपूर्वक पढाई, जिसके प्रभावसे अश्विनीकुमार तैंतीसकोटि देवताओंके पूर्ण वैद्य हुए, ब्रह्माका मस्तक जोडा, देवताओंको अग जोड व्रणरहित किया, इन्द्रकी भुजाका कष्ट हरा, चन्द्रमाको सुखी करा, इन्द्र अश्विनीकुमारोंके इन अद्भुत कर्मोंको देख उत्साहपूर्वक आयुर्वेद पढनेके लिये अश्विनीकुमारोंसे प्रार्थना करनेलगा जब सत्यसिन्धु इन्द्रने इसप्रकार प्रार्थना की तब वैद्यशिरोमणि अश्विनीकुमारोंने जिसप्रकार आप पढाथा उसीप्रकार आयुर्वेदसहिता विस्तारसहित देवराज इन्द्रको पढाई, इन्द्रने ऋषियोंमें प्रधान आत्रेयको पढाया उस समय लोग उत्तमरीतिसे आहार विहार करतेथे, इसलिये उनको कोई रोग नहीं होताथा, उनकी आयुभी पूर्ण होतीथी, और शरीरमें वलभी अधिकहोताथा, पश्चात् कुछ कालोपरान्त समयके हेरफेरसे मनुष्योंकी बुद्धिभी विपरीत होगई, उससे रोग और क्लेशादिक अधिक वढने लगे, उस समय करुणानिधान परोपकारी वडे वडे ऋषि मनुष्योंको रोगोंसे दुःखी देख मनमें अत्यन्त दुःखी हो हिमालयपर्वतकी ओरको चले, वहां दैवयोगसे वहुतसे ऋषिलोग एकत्र थे, भारद्वाज, अंगिरा, मरीचि, भृगु, भार्गव, पुलस्त्य, अगस्त्य, असित, वसिष्ठ,

पराशर, हारीत, गौतम, साख्य, मैत्रेय, च्यवन, जमदग्नि, गर्ग, काश्यप, कश्यप, नारद, मार्कण्डेय कपिञ्जल, वामदेव, कौण्डिन्य, शाण्डिल्य, शाकुनेय, शौनक, आश्वलायन, साकृत्य, विश्वामित्र, परीक्षक, देवल, गालव, धौम्य, काम्य, कात्यायन, काकायन, वैजवाप, कुशिक, बादरायण, हिरण्याक्ष, लौगाक्षी, शरलोमा, गोभिल वैखानस, और वालखिल्यादिक अनेक महर्षि-लोगये, वह ब्रह्मऋषि, ब्रह्मज्ञानी, यमनियमके समुद्र और होमाग्निके समान प्रकाशमान, तपस्तेजःपुञ्ज आनन्दपूर्वक सब मुनिपुंगव यह चर्चा कर रहेथे कि मनुष्यका धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चतुर्वर्गके साधनका मूल यह शरीरहै, यदि यह शरीर अच्छाहै तो यह चतुर्वर्ग साधसक्ताहै और जो यह शरीरही रोगग्रसित रहै तो कदापि नहीं साधसक्ता।

रोगाःकार्श्यकराबलक्षयकरादेहस्यचेष्टाहराः।
दृष्ट्यादीन्द्रियशक्तिसंक्षयकराःसर्वाङ्गपीडाकराः॥
धर्मार्थाखिलकाममुक्तिपुमहाविघ्नस्वरूपाबलात्।
प्राणानाशुहरन्तिसन्तियदितेसौख्यकुतःप्राणिनाम्॥
तत्तेषांप्रशमायकश्चनविधिश्चिन्त्योभवद्भिर्बुधैः।
योग्यैरित्यभिधायसंसदिभरद्वाजंमुनिंतेऽब्रुवन्॥

अर्थ-रोग मनुष्योंके देहको दुर्बल करतेहैं, बलका क्षय करतेहैं, शरीरकी चेष्टाको विनाश करते हैं, नेत्रादिक इन्द्रियोंकी शक्तिको हरण करतेहैं, सब अंगोंमें पीडाको उत्पन्न करतेहैं, धर्म, अर्थ, अखिल काम, और मोक्षके लिये तो महाविघ्नकारीहैं, अधिक बढनेपर बलात्कार शीघ्रही प्राणोंको हरलेतेहैं, जब इसप्रकारके रोग शरीरमें सदा विद्यमान हैं तो फिर प्राणियोंके प्राणोंकी कुशल कहा? इसकारण तुम सब रोगोंके प्रयत्नमें तत्पर और पूर्ण विद्वान् एकत्रित हुए हो तो रोगोंके दूर करनेका कोई उपाय विचारो। इसप्रकार भारद्वाजके वचनोंको सुनकर सब ऋषि अत्यन्त हर्षित होकर उच्चस्वरसे जयजय शब्दकर, शालध्वनि करने लगे और भारद्वाजजीसे बोले कि, हे भगवान्! आपही इस कार्य करनेके योग्यहैं, इसकारण तुम परिश्रम करके इन्द्रके पास जाकर प्रार्थना करो, और विधिपूर्वक आयुर्वेदको पढो, जिससे प्रजाके रोग रोगरहितहों, भयसे छूटें इसप्रकार जब सब मुनियोंने विनययुक्त प्रार्थना की, तब उनकी आज्ञानुसार मुनि-पुङ्गव भारद्वाज इन्द्रलोकको गये, इन्द्रको आशीर्वाद दे स्तुति करी, और

सब ऋषियोंके वचन देवराजसे कहे, फिर कहा हे इन्द्र ! सब प्राणियोंके प्राण रहनेके लिये महाभयानक रोग संसारमें उत्पन्न हुयेहैं, उनके दूर होनेका कोई उपाय बताओ, इन्द्रने परम चतुर भारद्वाजको आयुर्वेद पढाया, जिसके प्रभावसे रोगरहित हो प्राणी एक सहस्रवर्ष जीयें, भारद्वाजने थोडेही दिनमें आयुर्वेद पढ उसके आशयको जानलिया, इसी आयुर्वेदके प्रभावसे भारद्वाज मुनि रोगोंसे छूट दीर्घायु हुए, और अनेक मुनियोंको रोगरहित कर पूर्णायु किया, पश्चात् आत्रेयमुनिनेभी इन्द्रहीसे आयुर्वेद पढा और अपने नामकी आत्रेयसंहिता रच अग्निवेश, भेड, जातूकर्ण्य, पराशर, क्षीरपाणि और हारीतको पढाई, इन छहोंने अपने अपने नामकी संहिता निर्माण कीं, और अग्निवेशादिक छहों शिष्योंने अत्रिनन्दनको अपनी अपनी संहिता सुनाई, और आत्रेयने अत्यन्त आनन्दित होकर आशीर्वाद दिया, वह छहों संहिता आजतक संसारमें प्रसिद्ध हैं, और अत्यन्त उपयोगी हैं परन्तु इनमें सबसे प्रधान अग्निवेशकृत तंत्र उत्कृष्टतासे सबके मनको आकर्षण करनेवाला हुआ, किसी समय चरकमुनिने उन सब तन्त्रोंको एकत्र करके संस्कार किया और अपने नामसे नवीन संहिता रचकर प्रचार की, जो आजतक चरकके नामसे विख्यातहै, अग्निवेशकृत तंत्र जो कि चरकका संस्कार किया हुआ है उसमें शल्यादिक अष्टांगमयी नवीन संहिता आठ भागोंमें विभाग कीगई, उस संहितामें खनिज, उद्भिज्ज, प्राणिवाची द्रव्योंको तीनभागोंमें विभाग करके, फिर प्राणियोंके जरायुजादिकोंको चारभागोंमें विभाग करके, उद्भिज्जोंको वनस्पतिवृक्ष वीरुध औषधियोंको चारभागोंमें विभाग किया, फिर उन उद्भिद द्रव्योंको जीवनादिक पचाशगणोंमें विभाग किया, इसकी भाषा प्राकृत नहीं है, प्राचीन होनेसे विषयरचनाप्रणालीशोधन नहीं की गई है, इसलिये अत्यन्त गडबड है, इसके सिद्धकल्प दो स्थान सत्रह अध्यायोंसे संयोजना करके पश्चनदपुरवासी दृढबलने सम्पूर्ण किया इस संहिताके सिद्धस्थानकी पहिली समाप्तिमें लिखा है –

"अखण्डार्थंदृढबलोजातःपञ्चनदेपुरे ।
कृत्वाबहुभ्यस्तंत्रेभ्यो विशेषाच्चबलोच्चयम् ॥
सप्तदशौषधाध्यायै सिद्धकल्पैरपूरयत ।"

अर्थ–इस संहिताके सम्पूर्ण करनेकेलिये दृढबल पञ्चनदपुरमें उत्पन्न हुआ उसने अनेक ग्रन्थोंका अनुसन्धान करके सत्रह अध्यायोंमें सिद्धकल्पको पूर्ण

किया । सुश्रुतसंहिता—इसीप्रकार सुश्रुतसंहिता शल्यतंत्रके उपदेशसे प्रधान अ ष्टांगमयी धन्वन्तरिसम्प्रदायकी पहिली और चरकसंहितासे पिछली है, इसमें काशीराजरूप धारणकिये हुए भगवान् धन्वन्तरि वक्ता, और विश्वामित्र महर्षिपुत्रसुश्रुत श्रोता, और परमरासायनिक सिद्धनागार्जुन संस्कारकर्ता हैं, सूत्रादिपश्चस्थानात्मक पूर्व तंत्रमें चिकित्सा किये हुए रोग, रसायन, वाजीकर णतंत्रोंके साथ चिकित्सक शल्यतंत्रको प्रधानतासे वर्णन कियाहै। कल्पमें चिकि त्सक विषतंत्रको चिकित्सा स्थानमें रसायन, वाजीकरणतंत्र वर्णन किये हैं, उत्तरतंत्रमें शालाक्यकायचिकित्सा, कौमार, भूत्य, भूतविद्या वर्णन की है ।

एक समय सुश्रुताचार्य पिता विश्वामित्रकी आज्ञा पाकर अपने सहगामी मुनिकुमारोंके साथ काशीको गये, जहां वानप्रस्थ आश्रममें स्थित, देवताओंमें श्रेष्ठ, अनेक मुनि जिन की स्तुति कररहे, उन सर्वानन्ददायक धन्वतरि काशीनरेश दिवोदासको विनयपूर्वक सुश्रुतादिक सब ऋषिपुत्रोंने नमस्कार किया, अनन्तकीर्तिस्वरूपद्रव्यवाले दिवोदास उन ऋषिपुत्रोंको समीप खडा देखकर बोले कि, हे ऋषियो ! तुम कुशलपूर्वक हो ? किसकारण आगमन हुआ, तब उन सब ऋषिकुमारोंने सुश्रुतद्वारा उत्तर दिया, कि हे भगवन् ! रोगोंसे भयभीत हाहाकार करते और मरते हुए प्राणियोंको देखकर हमारे चित्तमें अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ है, इसलिये आपके पास रोगोंको दूर करनेका उपाय पूछनेको हम आये हैं, सो आप कृपा करके हम सबको आयुर्वेद अध्ययन कराओ तब काशीनरेशने सुश्रुतादि ऋषिपुत्रोंके वचन स्वीकार कर उनको आयुर्वेद पढाना आरम्भ किया, उस व्याख्याको वह मुनिनन्दन परमानन्दपूर्वक पढने लगे अपने कार्यको सिद्ध करके चलते समय काशीराजको आशीर्वाद दिया कि, जयहो, जयहो, आपकी सदा जयहो, यह कह सब अपने अपने आश्रमपर आये और उन मुनिपुत्रादिकोंमें प्रथम सुश्रुतने अपना ऐसा स्फुट तंत्र रचा, जोकि एकसौ बीस १२० अध्यायमें सम्पूर्ण हुआ, और ऋषिपुत्रोंनेभी पृथक् पृथक् अपने तंत्र रचे, सुश्रुतके रचे हुए तंत्रको बहुत लोगोंने सुना, इसीकारण उसका नाम सुश्रुत संसारमें प्रसिद्ध हुआ, परन्तु हमको यह बडा भारी सन्देह है कि सुश्रुत नामके दो आचार्य्य हुए हैं एक सुश्रुत, दूसरा वृद्धसुश्रुत, इनमें यह निश्चय नहीं होसक्ता कि प्रसिद्ध सुश्रुतसंहिताका कर्त्ता कौनहै ? जब बौद्धोंने प्रबल होकर वाद विवादसे पण्डिताका तिरस्कार करके वैदिक क्रियाका लोप

करनेका प्रारम्भ किया, उस बौद्धसग्राम समयमेंही (विक्रमके सवत्से एक हजार १००० वर्ष पहिले) ससारमें प्रसिद्ध परम रासायनिक बौद्धपालक सिद्धनागार्ज्जुन सुश्रुतनाम तन्त्रको सस्कारमुखसे सूत्रादि पञ्चकस्थानोंमें अर्थ वशसे विभाग करके विस्तारपूर्वक स्पष्ट व्याख्या कर शेष उत्तर तन्त्रमें शेष अर्थोंको प्रगट करके एक नवीन संहिताको रचा। वह सुश्रुतसहिता ससारमें प्रचलितहै, यह उल्वणाचार्य्यका मतहै इसकी भाषा प्राचीनहै, रचनारीति यथाभागानुकूलहै, इसमें शरीरास्थिमालाकी प्रगटता, रोगोंका निश्चय, और व्रणचिकित्सादिके ज्ञानका वर्णन है, इस लिये श्रेष्ठकोटिकी अधिरूढताका अतिनिर्विकल्प स्वीकार करना चाहिये इसका मूढगर्भ अश्मरी प्रकरण अत्यन्त प्रशंसा करने योग्य है, अधिक क्या ? वडे वडे विदेशीय वैद्योंने मूढ गर्भादिक प्रकरणकी समालोचना करके विस्मयपूर्वक प्रशसा की है

वाग्भटसहिता–कुछ कालोपरान्त चिकित्सकोंमें परमोत्तम धन्वन्तरिके समान भूमण्डलमें वाग्भट भिषक् उत्पन्न हुआ, यह महाराजाधिपति सत्यसिन्धु परमज्ञानी राजा युधिष्ठिर पाण्डुकुलभूषणकी सभामें सर्व रोगनाशक महाश्रेष्ठ एक वैद्य था उसने जगत्के उपकारार्थ आयुर्वेदके अनेक ग्रन्थ निर्माण किये, उनमें अष्टागहृदयसहिता सब ससारमें प्रसिद्ध हुई और वही वाग्भटाभिधानसे भूमण्डलमें सूर्यके समान प्रकाशमान है। चरकसुश्रुतादि अनेक ग्रन्थोंको मथकर ससारके हितार्थ वडे प्रयत्नसे इस सुखसञ्चारिणी सहिताका सग्रह किया। इस सहितामें और इसकी औषधियोंमें उन्होंने ऐसी अपूर्व चातुर्य्यता प्रगट कीहै। वह और ग्रन्थोंमें नहीं दिखाई देती, जो बात चरकसुश्रुतमें बीस पचीस श्लोकोंसे वर्णन की है वह बात इस सहिताके तीनही चार श्लोकोंमें दर्शा दीहै, सत्य तो यह है कि, इन्होंने सब ससारके उपकारके लिये आयुर्वेदका उद्धार किया इसीलिये इस वाग्भटसहिताकी बृहत्त्रयीमें वैद्योंने गणना कर रक्खी है। यथा–

सुश्रुतो न श्रुतो येन वाग्भटो नैव वाग्भटः।
नाधीतश्चरको येन स वैद्यो यमकिङ्करः॥

अर्थ–जिस वैद्यने सुश्रुत सुना नहीं, वाग्भट कण्ठाग्र किया नहीं और चरक पढा नहीं वह वैद्य नहीं है, वह साक्षात् यमका दूत है। इसीलिये बृहत्त्रयीपाठक वैद्योंका अत्यन्त गौरव और सत्कार होताहै, और जो अठारह १८ सहितायें वह औरही और युगोंके निमित्त हैं, परन्तु अष्टागहृदयसहिता केवल कलियुगहीके लिये निर्मित्त हुईहै। यथा–

अत्रिः कृतयुगे चैव त्रेतायां चरको मतः ।
द्वापरे सुश्रुतः प्रोक्तः कलौ वाग्भटसंहिता ॥

अर्थ–सत्ययुगके लिये अत्रिसंहिता रचीगई थी, त्रेताके लिये चरकसंहिता निर्माण कीगई, द्वापरके लिये सुश्रुत, और कलियुगके लिये वाग्भटसंहिता बनीहै । और जो किसीके चित्तमे सन्देह हो कि, वह अठारह संहिता कौनसी हैं जो और और युगोंके लिये निर्माण की गई है, इसलिये उनके नामभी लिखे देताहू वह अठारह संहिताओंके नाम हारीतसंहितामें इसप्रकार हैं–

हारीतसुश्रुतपराशरभोजभेडभृग्वग्निवेशचरकाश्च्यवनोऽप्यगस्तिः । वाराहवाग्भटनरायणनारसिंहाआत्रेयकात्रिशशिनःशिवभास्करौच ॥ सन्त्यष्टादशशिक्षाधन्वन्तरेर्वाग्भटवहिष्कृत्य ॥

अर्थ–हारीत, सुश्रुत, पराशर, भोज, भेड, भृगु, अग्निवेश, चरक, च्यवन, अगस्ति, वाराह, वाग्भट, नारायण, नारसिंह, आत्रेय, अत्रि, चन्द्रमा, शिव और सूर्य इनमेंसे वाग्भटको छोडकर अठारह संहिता आयुर्वेदकी वर्णन करीहै । इस संहिताका जिसप्रकार प्रचार हुआ सो विस्तारसहित लिखताहू, अत्रिसंहिता पञ्चनदादि प्रदेशमें प्रसिद्धहै, अत्रिमुनिकृत चरकादिकके समान प्राचीनहै, यह संहिता न बहुत संक्षिप्तहै न बहुत विस्तृतहै, यही आदिमें प्रामाणिक और स्मृतिसंहिताकार थी, वाग्भटसंहिताका वृत्तान्त वाग्भटसंहितामें इसप्रकार लिखा है कि, वाग्भटसंहितादि आत्रेयसम्प्रदाय और धन्वन्तरिसम्प्रदायके अनेक चिकित्साग्रन्थोंसे आदिमेंही स्वयंसगृहीत अष्टांगहृदयसंग्रहसे लेकर वाग्भटाचार्यने रचीहै । जैसा उसमें लिखाहै–

अष्टांगवैद्यकमहोदधिमन्थनेन
योऽष्टांगसंग्रहमहामृतराशिराप्तः ।
तस्मादनल्पफलमल्पसमुद्यमानां
प्रीत्यर्थमेतदुदितंपृथगेवतन्त्रम् ॥ वा.उ ४०अ

अर्थ–अष्टांगवैद्यक समुद्रके मथनेसे जो अष्टांगसंग्रह यह अमृतकी राशि प्राप्त हुई, उससे अल्प उद्यम करनेवालोंके लिये यह अनल्प फल तन्त्र पृथक् ही कहा

है,इसीप्रकार यह अलकारादि सहित अपने नामसे अनेक शास्त्रोंको रचता हुआ ऐसा सुनाजाताहै कि, यह आदिमें ब्राह्मणधर्मावलम्बी निरन्तर वैदिकाचारका अनुष्ठान करताथा,उसके उपरान्त किसीसमय इसने बौद्धधर्म्मके तत्त्वको जाननेके लिये किसी बौद्धाचार्य्यको गुरु किया,इसप्रकार बहुतकालतक निश्चलचित्त होकर उसके अनुसार वर्त्तंतारहा और उस धर्मके परम रहस्यको प्राप्तकरके उसमें बडी श्रद्धा करतारहा, फिर वह अपने गुरुके पास आया उस धर्म्मके अनुरागको धारणकरता हुआ उसके गुरुने देखकर उसे उसी धर्म्मके अवलम्बनके लिये उपदेश दिया, इसप्रकार दक्षिणके पण्डितोंका कथनहै और बहुतलोग इस वाग्भटको अमरसिंहकृत कहतेहैं, परन्तु काश्मीरराजतरगिणीकी समालोचनासे यही विदित होताहै कि,सिंहगुप्तसुत परबौद्ध वाग्भटाचार्य्य काश्मीर नरपति जयसिंहके प्रजापालन समयमें (सवत् विक्रम १२५३ शके ११९८) में वर्त्तमान था, तथा विजयनगराधिपति बुक्कराजके समयमें माधवने अपने ग्रन्थमें वाग्भटका उद्धार कियाहै इसकोभी९००नौसौ वर्ष बीते,इसके उपरान्त उसी समयमें वाग्भटने अपनी संहिता रची बहुतसे वैद्योंका यह मत है, कोई वैद्यलोग यह कहतेहैं वाग्भटसंहिता बहुत प्राचीनहै चरक,सुश्रुतसे पीछेकी रची अनुमान कीजातीहै, उसम सब प्रकारकी चिकित्साओंके अग समान हैं इसके मुष्टियोग रोगलक्षणादिक और इसकी भाषाप्रणाली अत्यन्तशुद्ध और परम प्रशसनीयहै, वाग्भटका जन्म लोग कईप्रकारसे कहते हैं, कोई उसको धन्वन्तरि बतलातेहैं,कोई उसको समुद्रके मथनेसे उत्पन्न हुआ एक रत्न कहतेहैं, कोई उसको कलियुगका प्रधान बुद्ध गौतमक्रापि कहतेहैं, अपने रचेहुए अष्टागहृदयसग्रहमें उसने सिन्धुदेशमें अपना उत्पन्न होना लिखाहै, । जैसे कि—

"भिषग्वरोवाग्भटइत्यभून्मेपितामहोनामधरोऽस्मियस्य ।
सुतोऽभवत्तस्यचसिंहगुप्तस्तस्याप्यहंसिन्धुषुजातजन्मा ॥"

अर्थ—मेरे पितामह वाग्भट वैद्यवर हुए जिनका मैं नाम धारण कररहाहू (मैंनेभी वही वाग्भट नाम अपना रक्खाहै) उनके पुत्र सिंहगुप्त हुए और मैंभी उसी अनुपम विद्यालयसिन्धुमें उत्पन्न हुआ ।

अरुणदत्त वैद्यवर मृगाकदत्तका पुत्र वैद्यवशमें उत्पन्नहुआ, उसने सुप्रसिद्ध वाग्भटसंहिताकी सर्वाङ्गसुन्दरी नाम टीका निर्माण की ।

हेमाद्रि बड़ा प्रसिद्ध ग्रन्थकारहै, उसने वाग्भटसंहिताके सूत्रस्थानकी आयुर्वेदरसायनटीका रची, चतुर्वर्गचिन्तामणिनामक स्मृतिसंग्रहभी उसीका कहते हैं ।

भावप्रकाश–वैद्यवर लटकमिश्रके पुत्र श्रीमान् भावमिश्रकृतहै, यह बहुत विस्तारयुक्त, रोगोंका निश्चय करनेवाला चिकित्साका संग्रह है, अनेक प्राचीन संहितासंग्रहकोष, निघण्टुकी समालोचना और अपनी कल्पनासे रोगोंके लक्षण, चिकित्सा, पथ्य, द्रव्यगुण, रसवीर्यविपाक, जारण, मारण, शोधनादिकोंका संग्रह करके लिखाहै, इन भावमिश्रने वैदेशिक पूर्तगीज व ईरानसे लायेहुए उपदंशरोग विशेष अन्तर लक्षण सम्पन्न फिरंग रोगको अपने ग्रंथमें चिकित्सासहित वर्णन कियाहै और नवीन चोपचीनी, छुहारे इत्यादि बहुत वैदेशिक द्रव्य गुणसहित उसमें मिलायेहैं, उसमें उपदंशनाशक चोपचीनी मूल चीनदेशसे और भारतखण्डके गोवा प्रदेशमें तीनसौ ३०० वर्षसे अधिक पहिले संवत् १५९६ में लाया, यह बुइलसन् साहेबका मत है ।

भावमिश्रका प्रादुर्भाव उस कालमें वा उसके उपरान्त हुआ, इस भावप्रकाशसंग्रहको वैद्यलोग सब देशोंमें अधिक मानतेहैं और इसीको आयुर्वेदका मुख्य ग्रन्थ जानतेहैं, इसीसे यह भावप्रकाश सब संसारमें प्रसिद्ध है ।

माधवनिदान–माधवकरका रचाहुआहै, इसमें माधवकरने अनेक प्रकारके प्राचीन तंत्र, वैद्यकसंहितादिकोंसे, कहीं आदर्शके उद्धारसे, कहीं अपनी रची हुई भाषासे, कहीं सारसंग्रहसे और कहीं पर्यायके अनुक्रमसे संग्रह करके अनेक रोगोंके निदानका लक्षण लिखकर भारतवासी चिकित्सकोंके पढनेके लिये बड़ा उपकार सिद्ध कियाहै यह ग्रन्थ माधवाचार्य्यकृत है, ऐसा बहुत विद्वानोंका मतहै परन्तु वह ठीक नहीं जानपडता, क्योंकि माधवकर ऐसी उपाधिवाला अत्यन्त प्रचीन वैद्यजातीय ग्रन्थकार था, संसारमें ऐसी प्रसिद्धि है, दूसरा चक्रपाणिदत्तने माधवनिदानके रोगोंकी अनुक्रमणिकाके अनुसार अपने ग्रन्थको निर्माणकिया यह माधवकर चक्रपाणिसे पहिले था ऐसा ज्ञात होताहै, और यह चक्रपाणि बारहसौ १२०० संवत्में गौड राज्यकी पाठशालाके अध्यक्षहोनेको अपने ग्रन्थमें लिखताहै और यहभी है कि माधवकर अपने ग्रन्थके उपसंहारमें जो वृद्ध भोज गोविन्द पातञ्जलि वृत्तिकारके समयमें सातवीं शताब्दीमें वर्तमान था, उसके रचेहुए सूक्तिकरुणामृत नामक ग्रन्थके मुक्तावलिकार गोविन्दसे पीछे गुरुको स्वीकार करके अपने आपको उसके समान समयानुसार, वा उसके पीछे इस रसग्रन्थको अनुपम

प्रतिपादन करताहै, उसका निदान आठवीं शताब्दीमें अरबी भाषामें अनुवाद हुआ और "एदान" नामरक्खा, यह ग्रन्थ अरबी भाषामें प्रसिद्धहै यह पहिले तत्त्ववित् उइलसनसाहेबका मतहै ।

व्याख्यामधुकोष-माधवनिदानकी टीका-वैद्यवर श्रीविजयरक्षित श्रीकण्ठ दत्तने रचीहै (श्रीकण्ठवृन्दकृत सिद्धयोगका टीकाकारभीहै, वह टीका कुसुमावली नामसे प्रसिद्धहै) इसकी भाषा प० दत्तराम चौबेने अच्छी कीहै ।

शार्ङ्गधरसंग्रह-प्रसिद्ध शार्ङ्गधरपद्धतिकार शार्ङ्गधरवैद्यकृतहै, यह ग्रन्थ न अति संक्षिप्त न अति विस्तृत है, हमारे देशके विद्यार्थी लोग इस ग्रंथको अधिक पढतेहैं, यह ग्रन्थकार विश्वप्रकाशकृत महेश्वरसे पीछे हुआ, इसकी प्रसिद्ध संस्कृतव्याख्या आढमल्लीहै और उसीके अनुसार इसका भाषानुवाद पण्डित दत्तराम चौबेने कियाहै ।

रसेन्द्रसारसंग्रह-प्रमाणिक रसग्रंथ गोपालभट्टने रचाहै, इसमें रसोंका जारण मारण शोधनादिसहित रोगोंके सम्पूर्ण प्रकारके रसघटित योग संग्रह कियेहैं, इस ग्रंथको देखकर हमारे देशके अनेक वैद्य अपने अपने ग्रंथोंमें संग्रह करतेहैं यह ग्रन्थकार विक्रमकी तेरहवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, इसकी भाषाटीका मुरादाबादनिवासी शंकरलाल जैनने कीहै ।

रसेन्द्रचिन्तामणि-राधाविनोदकाव्यके रचयिता रामचन्द्र कविवरका निर्माण किया हुआ यह रसग्रन्थ है, परन्तु यह ग्रन्थ सब रसग्रन्थोंसे प्राचीन है, ऐसा वैद्योंके मुखसे सुननेमें आयाहै, इस ग्रन्थमें रसोंका जारण मारणादिक विधिपूर्वक वर्णन किया है, रसपारिजात ग्रन्थभी रामचन्द्रकाही रचा हुआ है । और एक रसेन्द्रचिन्तामणि ढुण्ढनाथकृतभी है, उसमें भी रसोंके बनानेकी क्रिया अच्छी रीतिसे लिखी है, और प्राचीन भी है, परन्तु इस देशमें उसका प्रचार नहीं, वङ्गदेशमें अधिक प्रचार है ।

चक्रदत्तसंग्रह-चक्रपाणिदत्तविरचित रोगोंकी चिकित्साका संग्रह है, इसमें माधवकरप्रणीत रोगोंका निदान, ग्रन्थानुसार रोगोंका अनुक्रम और ज्वरादिक रोगोंकी चिकित्सा कही है, उसमें रोगोंके तत्प्रणीत सिद्ध योग हैं, वह परम दृष्ट फल हैं, इसप्रकार यह संग्रह सर्वत्र सत्कारपूर्वक ग्रहण कियाहुआ संसारके हितको सिद्ध करनेवाला है, चक्रपाणि वीरभूमि देशवासी प्रसिद्ध रोध्रवलनाम दत्तकुलमें उत्पन्न नारायणदत्तका पुत्र, और नरदत्तका शिष्यथा

वह विद्याकुलसम्पन्न वैद्यभानुदत्तके अन्तरंगभावसे उसके पीछे गौडराजपकी पाकशालाका अध्यक्ष हुआ, उसका प्रादुर्भाव सातसौ पचास ७५० वर्षका अनुमान जान पडता है, यह भी सुननेमें आया कि, उसकी जन्मभूमिमें उसका स्थापन किया हुआ चक्रपाणीश्वर शिवालय है, इस कारणसे उसका धर्म्म शैव जान पडता है।

"गौडाधिनाथरसवत्यधिकारिपात्र
नारायणस्यतनय सुनयोऽन्तरङ्गात् ॥
भानोरनुप्रथितरोध्रवलीकुलीनः
श्रीचक्रपाणिरिहकर्तृपदाधिकारी ॥
य.सिद्धयोगलिखिताधिकसिद्धयोगान्
तत्रैवनिक्षिपतिकेवलमुद्धरेद्वा" ॥

अर्थ-गौडाधिनाथकी रसोईके अधिकारियोंमें पात्र नारायणका पुत्र। नीतिमान् भानुदत्तके अन्तरंगसे प्रसिद्ध रोध्रवली कुलीन श्रीचक्रपाणि कर्त्ता पदका अधिकारी जो सिद्धयोग लिखित अधिक सिद्धि योगोंका। उसमेंही केवल उद्धार कर्त्ता है

सिद्धयोग-वृन्दकुण्डकृत अत्यन्त प्रमाणिक चिकित्सा ग्रन्थहै, उसकी कुसुमावली नाम टीका श्रीकण्ठकृत है, जिसे चक्रपाणिने अपने ग्रन्थमें इस ग्रन्थका समुल्लेखन किया है, इससे यह चक्रपाणिसे पहिला समझना चाहिये।

रसकौमुदी-वैद्य माधवकृत है, माधवने इसमें रसवटिक इष्ट फल औषधियोंको अनेक रस ग्रन्थोंसे लेकर अपने रचे हुए ग्रन्थमें समायोजना करके चिकित्सा ओषधसग्रह किया, और बहुत रोगोंमें अनेक योग स्वयमेव स्थापना किये, यह ग्रन्थकार निदानका कर्त्ता माधवकर नाम वृद्धपरम्परासे सुनाजाता है परन्तु इस ग्रन्थको किसी और माधव नाम वैद्यने प्रसिद्ध किया यदि यह बात सत्यभी हो तो भी इसको कोई शीघ्र सिद्ध नहीं कर सक्ता, क्योंकि माधवकरके समयमें अहिफेन प्रयोग, रसादिकोंका जारण मारण आदिका प्रथम प्रचार न था।

रसरत्नाकर-नित्यनाथकृत बडा रसोंका सग्रह है इसने रसोका जारण मारणादिक इस ग्रन्थमें विस्तारपूर्वक दर्शाकर अपने रचे हुए और सग्रह कियेहुए मेल औषधादिक बहुत सन्निवेश किये हैं, नित्यनाथ बङ्गदेशवासी न था, परन्तु पश्चिम देशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा अनुमान किया जाता है,

अलौकिक देखकर मैंने इसकी हिन्दीभाषामें टीका की जो जगत्में सर्वसाधारण मनुष्योंके लिये उपयोगी हो ।

योगचिन्तामणि-श्रीहर्षसूरिकृत है, इसमें सिद्ध चिकित्सा उपयोगी बहुतसे योग हैं उसका समय ग्यारहसौ ११०० अथवा साढे ग्यारहसौ ११५० संवत् विक्रममें रचा गया, यह राजतरंगिणीमें लिखा है, और इसकी भाषाटीका माथुरीमञ्जूषा नाम पण्डित दत्तराम चौबेने निर्माण की है।

योगतरंगिणी-वैद्यक रसोंका ग्रन्थ अत्यन्त प्रामाणिक त्रिमल्लभट्टकृत है, यह ग्रन्थ हमारे देशमें अधिक प्रचलित है, इसका भाषानुवाद पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र मुरादाबादनिवासीने किया है, इनही त्रिमल्लभट्टके बनाये हुए वैद्यचन्द्रोदय, रसदर्पण, योगचन्द्रिका, द्रव्यगुणशतकादि और भी ग्रन्थ हैं, इसी द्रव्यगुणशतककी भाषाटीका मैंने लिखी है ।

वैद्यामृत और वैद्यवृन्द-भिषक् नारायणकृत रसग्रन्थ है, यह ग्रन्थ नवीन होनेके कारण अधिक प्रचलित नहीं है, यह ग्रन्थकार संवत् १८५० में विद्यमान था ।

वैद्यजीवन-वैद्यवर लोलिम्बराजकृत है, परन्तु बहुत प्राचीन नहीं है, उसने इसमें काव्यकरणके छलसे चिकित्साके उपकारी औषध अनुपानादिका उपदेश किया है ।

सारकौमुदी-आनन्दवर्म्मकृत अर्वाचीन वैद्यकसंग्रह एक सौ पचाश १५० वर्षके लगभगमें रचागया है इस ग्रन्थका वङ्गदेशमें अधिक प्रचार है ।

भैषज्यरत्नावली-१०० सौ वर्षसे अधिक पहिले गोविन्ददाससेनने रची है, हमारे देशमें इस ग्रन्थकी अधिक प्रतिष्ठा नहीं है

वैद्यरहस्य-वैद्यवर विद्यापतिप्रणीत, यह ग्रन्थ आज कलके सब नवीन ग्रन्थोंसे उत्तम है, इसमें अत्युत्तम प्रयोग हैं, इस कविके बनाये और भी चिकित्साञ्जनादि अच्छे अच्छे ग्रन्थ हैं ।

चिकित्सासारसंग्रह-भिषग्वर क्षेमशर्म्माआचार्य्यकृत सर्वोपयोगी है, इन्होंने सब रोगोंका उपाय बहुत अच्छी रीतिसे लिखा है ।

हारीतसंहिता-महर्षि आत्रेय और हारीत मुनिके संवादमें रची गई है, ऐसा प्राचीन वैद्योंने लिखाहै, परन्तु हमको यह वह ग्रन्थ निश्चय नहीं होता, क्योंकि इसमें बहुतसे प्रयोग और श्लोक अशुद्ध दिखाई देतेहैं, हमारी समझमें तो किसी वैद्यने नवीन कल्पना की है ।

प्रयोगामृत-यह अत्यन्त विस्तृत चिकित्साग्रन्थ नृसिंहधन्वन्तरिशिष्य वैद्य चिन्तामणिकृतहै, यह ग्रन्थकार श्रीखण्डसमाजके अन्तर्गत नीरोल ग्राममें १०० वर्षसे अधिक पहिले उत्पन्न हुआ।

नाडीप्रकाश-नाडीके जाननेका ग्रन्थ क्षत्रियगोत्रज आनन्दसेनके वंशमें उत्पन्न शङ्करसेनने रचाहै, वैद्यविनोद और रसशङ्कर ग्रन्थभी उसी कविकृतहैं।

अर्कप्रकाश-यह चिकित्सासंग्रह रावणकृतहै, परन्तु इसको रावणकृत होनेमें सन्देहहै क्योंकि, इस ग्रन्थमें नवीन औषधि बहुत लिखी हैं जैसे कि, गुलदाउदी, गुलाब, इससे रावणकृत नहीं जानपडता, किसी नवीन वैद्यने अपना नाम रावण रखलिया अथवा रावणके नामसे रचदिया है, इसका भाषानुवाद मैंने कियाहै।

चिकित्साक्रमवल्ली-यह अर्वाचीन ग्रन्थ काशीनाथद्विवेदीप्रणीतहै, अभीतक विशेष प्रसिद्धि नहीं पाई, कविता और प्रयोग अत्यन्त उत्तम हैं।

निघण्टुरत्नाकर-यह नवीन ग्रंथ विष्णु वासुदेव गोडबोलेकृत है, परन्तु गणेश रामचन्द्र शास्त्रीदातार, भास्करानन्दशास्त्री तामनकर, कृष्णशास्त्री महाबल, तथा विश्वनाथ विनायक पाटीलकी सहायतासे रचागयाहै और यह ग्रन्थ एक लाख श्लोकोंमें समाप्त हुवा है, अकारादिकोष, द्रव्यगुणदोष, शारीरक अष्टविध परीक्षा निदानसहित चिकित्सा, धातुशोधनमारणविधि, यन्त्राध्याय, पुटविधि, और अजीर्णमञ्जरी इत्यादि विषयोंसे परिपूर्णहै, इसमें अनेक औषधि द्वीपान्तरकी लाई हुई लिखीगईहैं, तथा यूनानी औषधियोंका नाम गुणदोष, संस्कृत और मराठी भाषामें लिखे हैं, इसमें नाना प्रकारके विषय अंग्रेजी और फारसीसे लेकर सन्निवेशित कियेहैं, आज कल इस ग्रन्थके समान दूसरा ग्रन्थ विदित नहीं होता, किसी ग्रन्थमें केवल चिकित्साही है, किसीमें रोगोंके लक्षण, किसीमें निदानसहित चिकित्सा, किसीमें धातुशोधन मारण, किसीमें परिभाषा, किसीमें निघण्टु, किसीमें मानपरिभाषा, किसीमें नाडीविज्ञान, किसीमें कोष, किसीमें पाकप्रणाली, किसीमें पथ्यापथ्य, किसीमें चर्या और किसीमें धात्रीचिकित्साहै परन्तु इसको तो सम्पूर्ण विषयोंसे विभूषित करदियाहै, जो विषय कहीं नहीं पायेजाते वह सब इस ग्रन्थमें विद्यमानहैं इसलिये विष्णु वासुदेव गोडबोलेको हम वारवार धन्यवाद देतेहैं कि, जिसने अनेक ग्रन्थोंको संग्रह करके यह निघण्टुरत्नाकर निर्माण किया, अब हम सूर्यवंशीय श्रीरघुराजभूषण रामचन्द्रधन्नू लववंश चूडामणि सेठ हरराज करमसीको धन्यवाद देतेहैं कि, जिन्होंने अपनी

सहायतासे इस ग्रन्थको प्रकाशित किया, ग्रन्थकारने यह निघण्टुरत्नाकर सवत् १९२४ में रचाथा यह विष्णु वासुदेव गोडबोले पावसग्रामनिवासी जिले रत्नागिरिकेथे ।

अमरकोष-अमरसिंहकृतहै, अमरसिंह वा अमरदेव विक्रमादित्यके समयमें हुवा, ऐसा निश्चय होताहै, परन्तु विक्रमादित्य तीन हुए, न जानिये यह अमरसिंह किसके समयमें हुवा, इसमें अनेक मत दिखाई देतेहैं, उइल्फोर्ड साहिबके मतसे नौ ९ विक्रमादित्यहैं, उन सबने शालिवाहनादिकसे युद्ध किया, (विद्याकल्पद्रुमेमें) परमाधुनिक ऐतिहासिक रहस्यकी अनुसन्धि करनेवालोंने कारण प्रदर्शनपूर्वक किसी समय यह सन् ५६ ई० प्रथम विक्रमादित्य नरपतिकी सभामें नवरत्नथे ।

धन्वतरिःक्षपणकामरसिंहशकुवेतालभट्टघटकर्परकालिदासाः । ख्यातोवराहमिहिरोनृपतेःसभायांरत्नानि वैवररुचिर्नवविक्रमस्य ॥

(काव्यसग्रह)

अर्थ-धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शङ्कु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि राजा विक्रमकी सभामें यह नवरत्न थे ।

धारानगराधिपति दूसरे वृद्ध भोजकी सभामें किसी समय सन् १००५ ई० में अन्यतम भोजको सभाम उसीप्रकारके रत्नोंम अन्यतम होनेसे स्थापन किया, परन्तु इन तीनों कल्पोंमें कौनसा कल्प मुख्यहै, यह निश्चय नहीं होसक्ता, हमें तो सवत् प्रवृत्तकरनेवाले विक्रमादित्यके सवत् तीनमे था, ऐसा विश्वासहै, अमरसिंह बौद्धमतावलम्बी था, यह बात सब ससारमें प्रसिद्धहै, उसका कोष प्राचीन रीतिसे छन्दोबद्ध सब कोषोंमें श्रेष्ठ होनेसे सब जगत्में आदर किया गयाहै, वह इसको स्वर्गादिक वर्गोंमें विभाग करके बीच बीचम वर्णानुक्रमकी रीतिसे रचताहुआ ।

अमरकोषके प्रचलित टीकाकारोंमें-

मथुरेश प्राचीनहै, शाकेशालिवाहनके ६०० वर्षमें उत्पन्न हुआ, वह किसी मुसलमान वीरकी सहायतासे सदा शास्त्रका आन्दोलन करताथा, यह उइल्सन्साहिबका मत है, वही कवि शब्दरत्नावलीका रचनेवाला था ।

क्षीरस्वामी-काश्मीरपति ललितादित्यके राज्यसमयमें उत्पन्न हुआथा,

जयापीडनाम कोई राजा इसीसे शब्दविद्याको पढकर अन्तमें ललितादित्य पण्डित ऐसी प्रसिद्धिको प्राप्त हुआ सन् ७०९ । ७३१ राजतरंगिणी ।

रायमुकुट-(सन् १४३०) में हुआथा, राजतरंगिणी ।

गौरांगमल्लिका पुत्र भरतमल्लिक बहुत प्राचीन ग्रन्थकार और टीकाकार है यह वर्द्धमान देशके पातिल पटिग्राममें कुलीन वैद्यवंशमें एकसौ पचास १५० वर्षके लगभग पहिले उत्पन्न हुवाथा, यह कवि प्रसिद्ध शाब्दिककार कोलासका रचनेवाला और रघुवंश आदि काव्य कुमारसम्भवादिकोंका टीकाकार है, उसकी रची हुई अमरकोषकी टीकासे उसकी कीर्ति भारतमें चिरकालतक स्थित रहेगी

धन्वन्तरिनिघण्टुभी-अमरसिंहकृत अमरकोषके सदृश प्रमाणोंसे वैसाही पायाजाताहै वह ६०० छःसौ वर्ष पहिला है ।

हेमचन्द्राभिधान-अभिधानचिन्तामणिके नामसे प्रसिद्ध है, उत्तमरीतिसे विशेष करके दो भागोंमें विभाग करके हेमचन्द्राचार्य्यने रचा है, उसमें पहिला स्वर्गादिक छै भागोंमें विभाग किया है, शब्दोंकी श्रेणीका विभाग अन्ततक क्रमसे किया है,दूसरा नानार्थरचित है, परन्तु हेमचन्द्र अवतरणिकामें अपने अभिधानके केवल प्रथमभागकी शब्दरचनाप्रणालीको वर्णन करके दूसरेका कुछ वृत्तान्त नहीं लिखा और पहिलेके समान दूसरे भागकी टीका भी नहीं जान पडती, इससे दूसरे भागको हेमचन्द्रकृत होनेमें वैद्य लोग सन्देह करतेहैं कि, महेश्वरकृतनानार्थवर्ग इसमें मिलादियाहै, "विद्वान लोग ऐसी तर्कना करते है"

हेमचन्द्र वा हेमाचार्य्ययति-प्राचीन जैनग्रन्थलेखक और जैनधर्म्मावलम्बी था, यह सवत् १२३० में हुवा और पाटलीपुत्र नगरनिवासी था, इसने अपने जीवनके पहिलेभागको नानाशास्त्रकी रचनासे व्यतीतकरके अन्तिमअवस्थामें गुजरातदेशकी ओर जाकर वहा जैनधर्म्मकी समालोचनासे बडी प्रतिष्ठा पाई. और वहा प्रकृतिसहित राजत्व और जैनधर्म्मको ग्रहण किया, सुनाजाताहै कि, जैनधर्म्मावलम्बी हेमाचार्य यतिने उसीसमयमें राजपूत नरपति कुमार पालकोभी जैनधर्ममेंही दीक्षित करलिया, इसप्रकार प्रसिद्धिहै, जैसा कि यह हलायुध गुरु लक्ष्मणसेनकी सभामें था (सवत् १२९०) ऐसा उइलसन् साहिबका मत है ।

शब्दमाला-रामेश्वरशर्म्माकृत अतिसंक्षिप्त अभिधानसंग्रहहै, अमरकोषकी शेषभूत बंगभाषामें कहीगईहै, यह मेदिनीकोषसे पहिलाहै यह उइलसन् साहबका मत है ।

नाममाला-धनञ्जयकृत है, उसमें श्रेणीविभागके असद्भाव होनेसे यह प्राचीन अनुमान कीजातीहै, महर्षि जैनधर्म्मावलम्वी मानतुगाचार्य्यका शिष्य धनञ्जय विक्रमकी दशवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, वैद्यलोगोंने ऐसा लिखाहै ।

भूरिप्रयोग-दामोदरदत्तके पुत्र प्रसिद्ध सुपद्म व्याकरणकार पद्मनाभदत्तने रची है और तीनभागोंमें विभाग की है, पद्मनाभ मेदिनीकारके पीछे हुआ, स्वय अपने ग्रन्थमें मेदिनीके उल्लेखसे प्रमाण किया है ।

शब्दरत्नावली-मूँसेखाँ नाम किसी मुसल्मान वीरके आश्रयसे अमरटीकाकार मथुरेशने अमरकोषकी प्रणालीसे रची है, उसमे शब्दोंके भिन्न रूप पाठ किये गये हैं ।

जटाधरकोष-चट्टग्रामनिवासी जटाधरने रचा है, जटाधरने अमरको विना देखे जटाधरकोष निर्माण किया, यह बहुत प्राचीन अनुमान नहीं कियाजाता।

अभिधानरत्नमाला-हलायुधकृत है, यह सक्षिप्त कोष स्वर्ग, भू नरक, वारि, मिश्र नाम पाँचभागोंमें विभाग की गई है, हलायुध भट्ट भास्करका शिष्य केरलदेशीय ब्राह्मण अति प्राचीन बौद्ध धर्म्मका अवलम्बन करनेवाला विक्रमकी द्वादश शताब्दीमें वर्त्तमानथा,उसके कोषमें उद्भिज्ज द्रव्य खनिजद्रव्योंकी मनोरमसूची वग भाषासे व्याख्यान कीगई, ऐसा सुना जाताहै कि, हलायुध लक्ष्मणनरेशकी सभामे पण्डित था ।

शब्दचन्द्रिका-नाम, द्रव्य, गुणादिके कोष यह चक्रपाणिदत्तका रचा-हुआ प्रसिद्ध है, यह उद्भिज्ज, खनिज, प्राणी, पथ्यापथ्यादिकोंके कार्य्योपयोगी होनेके सग्रहसे सर्वत्र प्रशसनीय है, इसके द्रव्योंके नाम वग भाषामें कहे हैं, यह वगदेशहीके रहनेवाले थे ।

विश्वप्रकाश-यह कोष बहुत प्राचीन है, जब कान्यकुब्जमें विद्याके उत्साहका अत्यन्त समादर था, तब महेश्वरने सवत् १०६६ में सग्रह किया, उस समय शाके १०३३ थे, महेश्वर गाधिपुरनिवासी साहसांक नरपति चिकित्साधिकारी श्रीकृष्णके वशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा पहिले तत्त्वके जाननेवाले, उइल्सन् साहब का मत है ।

अजयपालकृतसग्रह-सक्षिप्तहै, परन्तु बहुत प्रमाणोंसे बडा है, अजयपाळ मेदिनीकारसे पीछे हुआ और जैनमतावलम्बी था यहभी उइल्सन् साहबका मतहै।

धरणीकोष-कान्यकुब्जदेशके ब्राह्मण धरणीधरने निमाण किया है, यह मल्लिनाथसे पहिले हुआ, यह उइल्सन् साहबका मत है ।

त्रिकाण्डशेष–परम जैन पुरुषोत्तम देवकृत तीन अध्यायमेंही यह ग्रन्थ अमरादिकोष परिशिष्टमात्र प्रसिद्धशब्दोंसे पूर्ण है।

हारावलिकोष–संक्षिप्त प्रसिद्ध सामान्यशब्दोंसे ग्रन्थित दो भागोंमें विभाग किया हुआहै उनमें पहिला भाग नामपर्य्यायसमह, दूसरा भाग नानार्थसमहहै, यह ग्रन्थकार नववीं वा दशवींशताब्दीमें हुआ, ऐसा डइल्सन् साहबका मतहै।

मेदिनीकोष–प्राणकरके पुत्र मेदिनीकरका रचाहुआ है, और यह अभिधान रत्नमालाके नामसे संसारमें प्रसिद्ध है, मेदिनीकर महेश्वरसे पीछे चौदहवींशता ब्दीके अन्तमें और महेश्वर, रायमुकुट इन दोनोंके मध्यवर्ती समयमें हुआ, यह कोष अन्त्यादि क्रमसे सुलभ समझने योग्य और प्रशंसनीय है "कर" उपाधिसे अनुमान कियाजाता है कि, यह वैद्य बङ्गवासी है।

इत्यादि अनेक कोष देखनेमें आये और वनस्पतियों सम्बन्धक बहुधा प्राचीन ग्रन्थकारोंने अपने अपने ग्रन्थोंमें वर्णन किये हैं, इसके अतिरिक्त निघण्टु नामक स्वतंत्र ग्रन्थभी है, निघण्टु शब्दका अर्थ कोष वा समह है, निघण्टु और निघण्ट इन दोनों शब्दोंका अर्थ एकही है, प्राचीन निघण्टुओंकी पुस्तकोंमें वनस्पतियोंके नाम, गुण, दोष, उपयोग, किस रोगपर कौन औषधि देनीचाहिये इत्यादि बातें लिखी हैं।

आत्रेय, हारीत, चरक, सुश्रुत, वाग्भट और भावप्रकाशादि अनेक ग्रन्थ कारोंने अपने अपने ग्रन्थोंमें निघण्टुका वर्णन लिखाहै,परन्तु ज्यों ज्यों शास्त्रका विचार बढ़तागया त्यों त्यों एक एक विषयपर अनेक अनेक ग्रन्थ बनने लगे, और इसी वनस्पतिशास्त्रपर बहुतसे निघण्टु नामक ग्रन्थ बनगये, जितने निघण्टु आजतक निर्माण हुए हैं, उनमें कुछ कुछ मतभेद है, एक गुडूच्यादि निघण्टु है इसीको बहुत लोग धन्वन्तरिनिघण्टु मानते हैं, परन्तु यह बात निश्चय नहीं है, गुडूच्यादिनिघण्टु व धन्वन्तरिनिघण्टु दोनों धन्वन्तरिजीके बनाये हैं, गुडूच्यादिनिघण्टु बहुत दिन हुए कि, छपगया, परन्तु यह दूसरा धन्वन्तरिनिघण्टु कहीं नहीं मिलता जहांतक मुझसे बनपड़ा मैंने बहुत अनुसन्धान किया।

एक राजनिघण्टु नरहरि पण्डित प्रणीतहै, जिसको छपे बहुत दिनहुए, इस निघण्टुका दूसरा नाम "चूडामणि" है, बहुतसे लोग कहतेहैं कि, राजनिघण्टु एकही [illegible] गीराजप्रणीत भी एक निघण्टुहै काशीनाथका नाम [illegible] [illegible] –प्रकाशका आशार मालूम होता है

कि, पहिला कहाहुआ धन्वंतरिनिघण्टुही कदाचित् काशीराजकृत 'राजनिघण्टु' हो, "धन्वतरिः क्षपणकामरसिंहशङ्कु" इस श्लोकके आधारसे ज्ञात होताहै कि, विक्रमादित्यकी सभामें जो नव रत्नथे उनहींमें एक धन्वंतरिजी भी थे आश्चर्य नहीं कि जो इन्होंनेही धन्वतरि नामक निघण्टु रचाहो विक्रमकी सभाके नौओं रत्न महाविद्वान् थे उनके रचे हुए ग्रन्थोंका आजतक अधिक प्रचारहै, इसलिये यहभी कहाजासक्ताहै कि, धन्वतरिनिघण्टु इनहीं धन्वन्तरिजीका रचाहुआहै ।

धन्वतरिके बनाये दो निघण्टु, तीसरा नरहरिपडितकृत निघण्टुचूडामणि कि, जिसको राजनिघटु भी कहते हैं, चौथा काशीराज (कि जिनको धन्वन्तरिका अवतार कहते हैं) कृत राजनिघण्टु है, नरहरिरचित निघण्टुको लोग अवतक नहीं जानते, पडित शकरदास शास्त्रीने लिखा है कि, एक जगह उसका भी पता लगता है परन्तु राजनिघण्टु नाम राजनिघण्टु नहीं है इस निघण्टुका कर्त्ता अपने मगलाचरणमें लिखता है ।

प्रारम्भिभैपजहितायनिघण्टुराज· ।

और समाप्तिम भी ऐसा लिखा है ।

इति काश्मीरमण्डलप्रसिद्धवसतिश्रीमठसिद्धगुहाक्षास्थानस्थितश्रीनान्दिस्फोटाप्रसिद्धमहिमानन्दश्रीसोमानन्दाचार्य्यवंशोद्भवचतुर्दशविद्याविनोदपरिणतसमागमद्विजवैराग्ययोग्यश्रीपरमहसजगद्विज्ञानतिमिरमार्तण्डश्रीचण्डेश्वरापरनामधेयश्रीराजराजेन्द्रगिरिश्रीपादपद्मसर्वशास्त्रमकरन्दामोदमुदितसद्वैद्यविद्याविशारद्दासविशारदमानसहतारिधुरन्धरनानाधनाद्रहणसत्त्वगुणसहजश्रीमदीश्वरसूरिसूनुश्रीमदमृतेशानन्दचरणारविन्दमकरन्दानन्दोदितश्रीनरहरिपण्डितविरचिते निघण्टुराजापरपर्यायवत्यभिधानचूडामणौचैकार्थाद्यभिधानस्त्रयोविंशो वर्गः ॥

इससे ज्ञात हुआ कि, ग्रन्थकर्त्ताने इस निघण्टुके दो नाम रक्खे हैं, एक निघण्टुराज, और दूसरा चूडामणि, दो वास्तविक नामोंके रहते हुएभी न जानिये कि, फिर किसने इसका तीसरा नाम राजनिघण्टु रखदिया ? ।

इसप्रकार चार निघण्टु हुए पाँचवाँ नाम निघण्टु ज्ञातहोताहै निघण्टुप्रकाशमें लिखाहै कि, चन्द चन्दनकृत गणनिघण्टुहै जिसको मदनादिनिघण्टु भी कहते हैं, यह अभी कहीं छपा नहीं है, और मदननिघण्टु मदनपाल राजाका बनाया हुआ छपगया है, इसका दूसरा नाम मदनादिनिघण्टुभी है, परन्तु गणनिघण्टु भोजराजनिघण्टु और शेषराजनिघण्टु दशवीं शताब्दीमें वर्त्तमानथे

यह प्रमाण पायाजाता है इन तीनों निघण्टुओंका आजतक कहीं पता नहीं लगता, और मदनपालनिघण्टु तो सर्वत्र प्रसिद्ध विस्तृत और प्रशंसनीय है, यह निघण्टु मदनपालनरेशके विनोदार्थ किसी वैद्यने निर्माण किया था ऐसा निश्चय होता है, विद्यार्थियोंमें इसका अधिक प्रचार है, क्योंकि इसमें नाम, द्रव्य, गुण विस्तारपूर्वक वर्णन कियेहैं ।

इसप्रकार सात निघण्टु प्रमाणित हुए आठवां बोपदेव "द्रव्यदीप "निघण्टु है, नवां मुद्गलकृत "द्रव्यरत्नाकर" दशवां कैयदेवकृत "कैयदेवरत्नाकर निघण्टु "ग्यारहवां "केशवकृत सिद्धमंत्र "यह चारों निघण्टु अभी कहीं छपे नहीं हैं,केवल विश्वनाथसेनकृत पथ्यापथ्यनिघण्टु छपाहै, और बडे खोजसे एक त्रिमल्लभट्टविरचित "द्रव्यगुणशतश्लोकी "निघण्टु मुझको मिला मैंने वैद्यजनोंके हितार्थ उसका भाषानुवाद कियाहै ।

राजवल्लभीयद्रव्यगुण-यह परमोत्तम ग्रन्थ वैद्यवर राजवल्लभकृतहै, परन्तु श्रीनारायणदास कविराजने विस्तारपूर्वक व्याख्या करके इस ग्रन्थका संस्कार कियाहै, राजवल्लभ वैद्य परम्परासे सुनते आतेहैं कि, सम्वत् १७६० साबहीसे आठपै वर्त्तमानथा, यह ग्रन्थ ७. परिच्छेदोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ श्रेणीसे विभाग किया हुआ वैद्योंको उपयोगीहै, इस ग्रन्थका नामही सुनाजाताथा परन्तु कहीं देखनेमें नहीं आताथा, मैंने अपने मित्रोंके पास देशदेशान्तरोंमें राजवल्लभके लिये पत्र भेजे परन्तु कहींसे प्राप्त न हुआ, बहुतदिन पश्चात् कलकत्तेसे एक मेरे मित्रने भलीभांति खोज करके इसग्रन्थकी एक प्रति मेरे पास भेजी वास्तवमें यह सटीक ग्रन्थ जैसा सुनाथा वैसाही निकला, मैंने अत्यंत हर्षसहित भाषानुवाद करके वैश्यवंशावतंस श्रेष्ठी खेमराज श्रीकृष्णदासको समर्पण किया ।

निघण्टुसंग्रह-जूनागढ निवासी वैद्यशिरोमणि रघुनाथजी इन्द्रजी उपनाम कतामदारचितहै, अनेक ग्रन्थोंका संग्रह कियाहुआ तो है परन्तु आज कालके समयमें यह निघण्टु सब निघण्टुओंका शिरोमणिहै इसकी प्रणाली धन्वन्तरिनिघण्टुकी सदृशहै, यह शके १८१५ में रचागयाहै ।

वैद्यकशब्दसिंधु-बाबू उमेशचन्द्रकृत नवीन कोषोंमें बहुत उत्तमहै ।

जब इन प्राचीन ग्रन्थोंको मैंने देखा, तो विचार किया कि देखो पृथ्वी पर कैसे कैसे विद्वान् और बुद्धिमान् हुए, कि जिन्होंने यह अनुपम ग्रन्थ निर्माण कियेहैं, परन्तु सब वैद्योंने वैद्यकमें कोष और निघण्टुहीको मुख्य समझा, कि वैद्यकरी मूल यही है, उन वैद्योंको गुण और गुणज जानकर

वारम्वार धन्यवाद देताहूं, जो महाद्दुस्तर रोगरूपी समुद्रसे तारनेके लिये यह अद्भुत नौका वनागये, परन्तु आजकल विद्याकी न्यूनतासे पठन पाठन कठिन होगया, लोगोंने भाषानुवाद कियाभी परन्तु उससे किसीका काय ठीक ठीक सिद्ध न हुआ, और ठीक ठीक औषधियोंके नाम भी समझने दुर्लभ होगये, और सस्कृतनामोंका चालचलन छूट गया, पसारियोंकी दूकानपर जो वह औषधि होतीभीहै तोभी कहदेतेहैं कि हमारी दूकानपर नहीं हैं, क्योंकि वह लोग उनकी भाषा तो जानतेही नहीं, लोग हार मान, यूनानी और अंग्रेजी औषधि करने लगे, उनकी यह दशा देख मेरे चित्तमें अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ कि, ऐसी ऐसी भारी नौका वृथा आलस्यरूपी वारिधिमें डूवीजाती हैं इनको वचानेका कोई उपाय होना चाहिये। यह विचार मैंने उसीसमय ऊपर लिखे हुए ग्रन्थोंकी सहायतासे और अपनी बुद्धिसे "शालिग्रामौषधशब्दसागरनाम अकारादिक्रमसे एक नवीन कोष रचा" जिसमें प्रथम सस्कृत नाम, उसके आगे हिन्दीभाषाका नाम, जव यह पूर्ण होगया, तो फिर चित्तमें विचार किया कि, कोषका प्रचार तो होगया, परन्तु ससारके उपकारके लिये एक निवण्टु और निर्माण करना चाहिये, क्योंकि विना निघण्टु औषधियोंके नाम, गुण, दोष, नहीं जाने जाते यथा–

निघण्टुनाविनावैद्योविद्वान्व्याकरणविना ।
अनभ्यासेनधानुष्कस्त्रयोहास्यस्यभाजनम् ॥ १ ॥
वैद्येनपूर्वंज्ञातव्याद्रव्यनामगुणागुणा ।
तदायत्तंहिभैषज्ययज्ज्ञानेस्यात्क्रियाक्रम ॥ २ ॥

अर्थ–विना निघण्टुके वैद्य, विना व्याकरण विद्वान् (पण्डित) और विना अभ्यास धनुष चलानेवाला (तीरन्दाज) यह तीनों मनुष्य अपनी हँसी करानेवाले हैं ॥१॥ इसलिये प्रथम वैद्यको औषधियोंका गुण अवगुण विचारनाचाहिये, क्योंकि उनही द्रव्योंके आधीन सव औषधादिकका वनाना है, और बुद्धिके आश्रयसे सम्पूर्ण क्रिया कर्म जानेजाते हैं ॥ २ ॥

ऐसा विचार करके मैंने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" नाम नवीन निघण्टु निर्माण किया है, इस निघण्टुमें सव निघण्टुओंका सार और नवीन नवीन औषधि जिनका आज कल अधिक प्रचार है, जैसे कि, अकरकरा, शोरा, सत्वगिलोय, सनाय, कालादाना, चाय, सालममिश्री, कश्मीआम,

नासपाती, अनन्नास, पिस्ता, बादाम, छुहारा, आलूबुखारा, मातु, मरुदण्डी, रेवटचीनी, तमाखू, ईसफलगोल, भिण्डी, फूट, अडखरबूजा, शकरकन्दी, घुँइयाँ, सलजम, वेला, चँवेली, मोतिया, हारसिंगार, गुलाब, मह्दी, समुद्रसोख, पोदीना, सफरी, विहारीनिम्बू, मक्का, बाजरा, महुआ और कालाजीरी इत्यादि अनुसन्धान करके इसमें लिखे। फिर उनके नाम, गुणागुणका विचार और लक्षण लिखे, पचीस वर्गोंमें यह ग्रन्थ पूर्णकिया है, प्रथम कर्पूरादि वर्गमें ओषधियोंके नाम, और ब्राकट (कोष्ठ) में अनेक कोष निघण्टुओंसे उनके पर्य्याय, फिर प्रत्येक ओषधिका प्रसिद्ध संस्कृत नाम, पश्चात् हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गुजराती, कर्णाटकी, तैलङ्गी, अंग्रेजी लैटिन, फारसी, अरबी, और कहीं कहीं ओरकली, द्राविडी, कुसाई, ब्रह्मी, पंजाबी, तुरकी, फरङ्गी, और यूनानी आदि भाषाओंमें नाम लिखेहैं, फिर अनेक ग्रन्थोंसे उनके गुण, दोष, लक्षण, भेद, परीक्षा, स्वरूप और विवरण लिखाहै, किसी किसी ओषधिकी मात्रा, व्यवहार, अनुपान, उत्पत्ति, शोधन और सेवन करनेकीभी विधि लिखीहै।

प्रथम कर्पूरादिवर्गमें सम्पूर्ण सुगन्धित द्रव्योंका विस्तारपूर्वक वर्णन ॥१॥

दूसरे हरीतक्यादिवर्गमें, हरडसे आदि लेकर चूकपर्यंत ओषधियोंका वर्णन ॥ २ ॥

तीसरे गुडूच्यादिवर्गमें नागवल्ली, बिल्व, गम्भारी, पाटला, शालिपर्णी आदिका वर्णन ॥ ३ ॥

चौथे पुष्पवर्गमें चम्पा, चँवेली, मालती, माधवी और केतकी, इत्यादि पुष्पोंका धारण, सुगन्ध, शोभाका वर्णन ॥ ४ ॥

पंचम फलवर्गमें आम, जामुनप्रभृति फलोंका वर्णन ॥ ५ ॥

छठे वटादिवर्गमें वड, पीपल, पाकर इत्यादि बडे बडे शालीवृक्षोंका विस्तारसहित वर्णन ॥ ६ ॥

सातवें धातूपधातुवर्गमें सुवर्ण, चांदी, ताँबे इत्यादिसे लेकर शिलाजीत पर्यंतका वर्णन ॥ ७ ॥

आठवें रत्नोपरत्नवर्गमें वज्र, विद्रुम, वैदूर्य्य, नीलमणि आदिका वर्णन ॥ ८ ॥

नवम विषवर्गमें सबप्रकारके विषोंका विस्तारयुक्त वर्णन ॥ ९ ॥

दशवें धान्यवर्गमें शालिआदि अनेक प्रकारके उत्तमोत्तम धान्योंका वर्णन ॥ १० ॥

ग्यारहवें शाकवर्गमें वथुवा, कुल्फा, चूका, मरसा, चौलाई, पालक आदिका वर्णन ॥ ११ ॥

बारहवें वारिवर्गमें नदी, कूप, तडाग, वर्षा आदि सब प्रकारके पानीका वर्णन ॥ १२ ॥

तेरहवें दुग्धवर्गमें गाय, भैंस, बकरी इत्यादि सब प्रकारके दूधका वर्णन ॥ १३ ॥

चौदहवें दधिवर्गमें सब प्रकारके दधिका विस्तारसहित वर्णन ॥ १४ ॥

पन्द्रहवें तक्रवर्गमें सब प्रकारकी छाँछ, मट्ठेका सम्पूर्ण वर्णन किया है ॥१५॥

सोलहवें नवनीतवर्गमें मक्खन (नैनीघी) का भलीभाँति वर्णन कियाहै॥१६॥

सत्रहवें घृतवर्गमें सबप्रकारके घृतोंका भिन्न भिन्न वर्णन किया है ॥ १७ ॥

अठारहवें मूत्रवर्गमें, मनुष्य, हाथी, घोडा, बकरी आदिके मूत्रोंका सम्पूर्ण वर्णन ॥ १८ ॥

उन्नीसवें तैलवर्गमें तिल, सरसों, राई, इत्यादिके तेलका वर्णन ॥ १९ ॥

बीसवें अर्कवर्गमें सब ओषधियोंके अर्कोंके गुण दोष ॥ २० ॥

इक्कीसवें इक्षुवर्गमें सब प्रकारकी ईखोंका वर्णन ॥ २१ ॥

बाईसवें सन्धानवर्गमें सब प्रकारकी काँजी, अचार, सिरका मदिरा (शराब) आसवप्रभृतिका वर्णन ॥ २२ ॥

तेईसवें सख्यावर्गमें त्रिफला, त्रिकुटा, पञ्चवर्गादि औषधियोंका वर्णन ॥२३॥

॥ इति पूर्वार्द्ध ॥

अथ उत्तरार्द्ध ।

चौवीसवें (प्रथम अनूपादि वर्ग) में अनूपदेश जाङ्गल देश और साधारण देशके लक्षण, ब्राह्मणक्षेत्र, क्षत्रियक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र, शूद्रक्षेत्र इन चार क्षेत्रोंमें उत्पन्न होनेवाली ओषधियोंके गुण, उन चारों क्षेत्रोंके देवता, फिर पार्थिव, आप्य, तैजस, वायव्य, आन्तरिक्ष यह पांच प्रकारके क्षेत्रोंका वर्णन करके फिर उन पाचोंक्षेत्रोंमें उत्पन्नहोनेवाले द्रव्योंके गुण, फिर उन क्षेत्रोंके देवता, फिर वृक्षोंकी उत्पत्ति, और ब्राह्मणादिक भेद, उनके देनेकी विधि, चारप्रकारसे ओषधियोंका निर्णय, जङ्गम, पार्थिव, औद्भिज्ज द्रव्योंके पांच भेद, वृक्षोंकी स्त्री, पुरुष, नपुंसक जाति और उनके गुण, फिर वृक्षोंकी क्षुधा, पिपासा और निद्राका वर्णन, वृक्षादिकोंमें पञ्चमहाभूतात्मकत्व, फिर उन वृक्षोंके उपकारका वर्णन फिर उनके गर्भ और सन्तान होनेका वर्णन करके अश्विन्यादि सत्ताईस २७ नक्षत्रवाले वृक्ष और जन्मनक्षत्रके वृक्षका औषधमें त्यागना, फिर विंध्याचल और हिमालयकी ओषधियोंके गुण, ओषधियोंके लानेमें मुहूर्त्तका विचार, उनके उखाडनेकी विधि, मन्त्र, और समय, दुष्ट ओषधियोंका त्यागन, और श्रेष्ठ ओषधियोंके रखनेकी विधि, स्वभावमें हितकारी ओषधियोंका वर्णन, उनकी परीक्षा, उपयोगविरुद्ध औषधि लेनेमें सङ्केत, प्रतिनिधि द्रव्यान्तर्गत पदार्थ, फिर मधुरादि रसोंका वर्णन, वीर्य्य, विपाक, प्रभाव, शक्ति इत्यादिका वर्णन ।

पच्चीसवें (दूसरे मिश्रवर्गमें) उत्थानकालनिर्णयादि–हाथ पांव और मल मार्गको स्वच्छ रखनेके गुण, सूर्योदयमें पहले जलपीनेके गुण, नासिकासे जल पीनेके गुण, दतौन करनेकी विधि, दतौनमें वृक्षोंका निषेध, दतौन करनेके समय दिशाका निर्णय, किन किन रोगियोंको दतौनका निषेध, जिह्वाको घिसनेके गुण, चक्षुधावनविधि, गण्डूष (कुल्ला) करनेका गुण, मुखप्रक्षालनगुण, अञ्जन लगानेका गुण, किस किस रोगीको अञ्जन न लगाना चाहिये, कङ्घीसे बाल स्वच्छ करनेका गुण, पगडी शिरपर बांधनेके गुण, श्मश्रु (दाढी मूछ क्षौरकर्म और नख) कटानेके गुण, नाकके बाल उखाडनेके दोष, प्रातःकाल उठकर क्या देखना चाहिये, अग्निमें तापनेके गुण, धुएं और हिमको सेवनके गुण, ओसके गुण, मुद्गरके गुण, दण्डी

लगानेके गुण, दृष्टिक गुण, आतपके गुण, छायाके गुण, लाठी धारणके गुण, व्यायाम (कसरत) करनेके गुण, अंगमर्दनके गुण, शरीर घिसनेके गुण, मार्ग चलनेके गुण, अत्यन्त भ्रमण करनेके गुण, पादुका धारण करनेके गुण, नंगे पाव फिरनेके दोष, हाथी इत्यादिपर बैठनेके गुण, पाँव धोनेके गुण, पूर्व दिशाकी पवन (पुर्वाई) के गुण, अग्निकोणकी पवनके गुण, दक्षिण दिशाकी (दक्षिणी) पवनके गुण, नैर्ऋत कोणकी पवनके गुण, पश्चिम दिशाकी (पछाहिया) पवनके गुण, वायव्यकोणकी पवनके गुण, उत्तर दिशाकी (पहाडी) पवनके गुण, ईशानकोणकी पवनके गुण, नीहारादि संयुक्त पवनके गुण, बघूलेके गुण, खजूरके पत्तेकी पवनके गुण, ताड, केला, वास, खस, मोरपख, वाल, वस्त्र, और फूलोंके पखेकी पवनके गुण, ऋतुविशेषसे वायुके गुण, अभ्यंग (पाँवोंमें तेल) मलनेके गुण, अभ्यंग वर्जित मनुष्य अवगाहनयुक्त तेलके गुण, तैलमर्दनकी विधि, शिरसे तेल मलनेके गुण, कानमें तेल डालनेके गुण, उबटन करनेके गुण, मुखमलेपके गुण, स्नानके गुण, गरमजलसे स्नान करनेके गुण, आवले आदि शरीरसे मलकर स्नानकरनेके गुण, स्नानवर्जित रोगी, किसरोगमें स्नान करना नहीं चाहिये, शरीरमार्जनके गुण, वस्त्र धारण करनेकी विधि, रत्नाभरण धारणके गुण, गुरु और देवतादिकके पूजनकी विधि, दर्पण देखनेके गुण, अनुलेपनके गुण, पुष्पादिधारण गुण, भोजनकी आदिमें लवणादि पदार्थ भक्षणके गुण, क्रमसे अन्नादिकोंके गुणोंकी विशेषता, आहार करनेके गुण, आहार करनेके समय दिशाका निर्णय, भोजनादि करनेका परिमाण, आचमनके गुण, भोजनके अन्तमें कर्त्तव्यता, भोजनके अन्तमे शयनादिकके गुण, पान, सुपारी, इलायची आदि खानेके गुण, अध्ययनादिकके गुण, बुद्धिके गुण, तत्काल प्राणकारक पदार्थ, तत्काल प्राणहारक पदार्थ, आयुके भेदसे स्त्रियोंकी वाल्यादि संज्ञा, बालास्त्रीससर्गगुण, मैथुनकालनिर्णय, सन्तानोत्पत्तिनिर्णय, सुखपूर्वक सोने और उत्तम भोजनके गुण, पृथ्वी और खाटपर सोनेके गुण, चांदनीके गुण, अन्धकारके गुण, मैथुनके गुण, निद्राके गुण, रात्रिमें जागने और दिनमें सोनेके गुण, हेमन्त, शिशिरकृत्य, वसन्तकृत्य, ग्रीष्मकृत्य, वर्षाकृत्य, शरत्कृत्य ॥

॥ इति उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

परिशिष्टमें, माजूफल, समुद्रफल, रेवटचीनीसे आदि लेकर अण्ड खरबूजेतक नवीन नवीन ओषधियोंका विस्तारपूर्वक वर्णन लिखाहै ।

जिन जिन ग्रन्थोंसे यह निघण्टुभूषण संग्रह कियाहै उनके चिह्न एक एक अक्षरसे लिखेहैं, अब वैद्यजनोंके जाननेके लिये उन ग्रन्थोंके पूरे नामभी लिखताहूं ।

नि०	र०	निघण्टुरत्नाकर	भा०	प्र०	भावप्रकाश
रा०	नि०	राजनिघण्टु	वै०	नि०	वैद्यकनिघण्टु
म०	नि०	मदनपालनिघण्टु	ध०	नि०	धन्वंतरिनिघण्टु
म०	वि०	मदनविनोद	वि०ति०भा०		विकारतिमिरभास्कर
रा०	व०	राजवल्लभ	कै०	दे०	कैयदेव
ग०	नि०	गणनिघण्टु	नि०	चू०	निघण्टुचूडामणि
सो०	नि०	सोढलनिघण्टु	लंकेश०		अर्कप्रकाश
आ०	सं०	आत्रेयसंहिता	द०	मि०	दत्तमिश्र
च०	नि०	चंद्रिकानिघण्टु	र०	चं०	रसचंद्रिका
भै०	चि०	भैषज्यचिन्तामणि	र०	स०	रसेन्द्रसारसंग्रह
सु०	सं०	सुश्रुतसंहिता	नि०	सं०	निघण्टुसंग्रह
च०	सं०	चरकसंहिता ।			

और जिस परिश्रमसे वृक्षोंके चित्र एकत्र किये मेराही जी जानताहै, मेरी इच्छा तो यहथी कि, जिस जिस पृष्ठमें द्रव्योंके नाम गुणहैं, वहीं २ वृक्षोंके चित्रभी होने चाहिये, परन्तु चित्रोंके बनानेमें विलम्ब होनेके कारण चित्र एकही जगह लगाये गये हैं ।

अब सब आयुर्वेदरसरसिकोंसे मेरी यह प्रार्थनाहै कि, इस परिश्रमका ध्यान करें कि, मैंने इस ग्रन्थके लिये कितना परिश्रम किया, इस बातको वैद्यलोगही पहिचानेंगे, सैकडों पुस्तकें देश देशान्तरोंसे संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, गुजराती, महाराष्ट्री, बंगला इत्यादिकी मँगाई, उनमेंसे एक एक शब्द ढूंढ ढूंढकर निकाला तब यह ग्रन्थ रचागया, जब यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ तो "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" इसका नाम रक्खा. और वैद्यजनोंके हितार्थ इस निघण्टुको श्रीमान् धन्वन्तर्यादिवतार, सकलगुणभाण्डागार, परमोदार, गोब्राह्मणहितकारी, सत्यव्रतधारी, सर्वविद्याविभूषित, श्रीमद्रत्ना

करसन्निकट मुम्बईपत्तननिवासी श्रीयुतश्रेष्ठिखेमराज श्रीकृष्णदासजीको पूर्णप्रतापी जानकर मैंने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" उनको समर्पण किया, और उनको कोटिशः धन्यवाद हैं कि, जिन्होंने अपना धन व्यय करके इस "शालिग्रामनिघण्टुभूषण "को अपने जगद्विख्यात "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें मुद्रितकरके मेरा नाम प्रसिद्ध किया, मेरे परिश्रमको देखकर गुणीजन अवश्य मेरे गुणकी श्लाघा करेंगे, यह मुझको पूर्ण विश्वास है, और दुष्टजन अपना नीचपना प्रगट करेंहीगे, यहभी मुझे दृढ आशा है, जब सज्जनोंकी कृपादृष्टि मेरे ऊपरहै तो दुर्जन मेरा क्या करसक्ते हैं।

इति प्रथमावृत्ति भूमिका।

वि० सम्वत् १९५३
आषाढपूर्णमायां भृगौ।

आपका कृपाभिलाषी-
आयुर्वेदोद्धारक-शालिग्रामवैश्य,
मुरादाबाद

श्रीः ।

द्वितीयवारकी भूमिका.

औषधिशास्त्र आयुर्वेदका मुख्य अंग और वैद्यकका प्रधान आवश्यकीय विषय है क्योंकि सम्पूर्ण क्रियाकर्मोंकी मूल चिकित्साहै और चिकित्साकी मूल औषधिशास्त्र अर्थात् निघण्टु इसी कारण सर्वत्र लिखाहै कि-"विना निघण्टुके वैद्य नहीं होता है" जो वैद्य केवल रोगकेही ज्ञानको जानतेहैं औषधिकल्पको नहीं जानते उनकी संसारमें कदापि प्रतिष्ठा नहीं होती । और न वह वैद्यके योग्यही कहे जासक्ते हैं । हमारे पूर्वज महर्षियोंने संसारके उपकारके लिये अनेक प्रकारके औषधिशास्त्रके ग्रन्थ निर्माण किये । अनुमान आठसौ वर्ष पूर्व इन समस्त आर्षग्रन्थोंके पढनेका इस देशमें अधिकतासे प्रचार था पश्चात् वारवार मुसल्मानबादशाहोंके चढनेपर सब विद्याओंकी अवनतिके साथ आयुर्वेदीय चिकित्साकी भी अवनति होगई और आयुर्वेदीय चिकित्साकी अवनति होनेसे सम्पूर्ण औषधिशास्त्रके ग्रन्थोंके पठन पाठन और औषधिशिक्षाका एकसाथ प्रचार उठसागया । यहांतक आयुर्वेदीय चिकित्साकी दुर्दशा हुई कि, आजतक भी हमारे देशकी उत्पन्न हुई और हमारी प्रकृतिके अनुकूल सुलभ औषधियें भी हमको ठीक ठीक प्राप्त नहीं होतीं । बडे कष्टका विषयहै कि-यूनानी और डाक्टरी विदेशी औषधि होनेपर भी भारतके प्रत्येक प्रदेश, जिले, कसबे और गांवोंमें सुगमतासे प्राप्त होजातीहैं और आयुर्वेदीय औषधियें हमारी कठिनतासे भी हमको ठीक ठीक किसी स्थानपर भी नहीं मिलतीं । यदि किसी पसारीसे पूछते हैं कि, तुम्हारे पास अमुक औषधि है ? तब प्रथम तो वह नाहीं करदेताहै और जो कहीं विशेष खोज करनेसे एक दो मिल भी गई तो गली, सडी वर्षोंकी पडीहुई होंगी ।

इत्यादि उपर्युक्त आयुर्वेदीय चिकित्साकी जो दुर्दशा हुई उसको वारंवार लिखनेकी यहां आवश्यकता नहींहै किन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि, आयुर्वेदीय चिकित्साकी इसप्रकार अवनति रहनेपर तुम्हारी कदापि उन्नति नहीं होगी । क्योंकि यह बात अच्छे प्रकारसे सिद्ध होचुकी है कि, हमारे लिये हमारेही देशकी औषधि सात्म्य होसकतीहै ।

उपर्युक्त सम्पूर्ण दुर्दशाका केवल अविद्याका प्रभाव दीखपडताहै यद्यपि इस नवीन शताब्दीके आविष्कारमें कुछ कुछ आयुर्वेदीय चिकित्सा और

औषधिशास्त्रकी उन्नति हुई है किन्तु जितनी उन्नतिकी आवश्यकताहै उसका सोलहवा भाग नहींहै। यद्यपि अनेक स्थानोंमें चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, हारीत, अत्रि, धन्वन्तरि आदि ग्रन्थोंमें निघण्टुखड छपचुकाहै तथा मदनपाल, राजनिघण्टु, धन्वतरीनिघण्टु, शोंढलनिघण्टु, निघण्टुशिरोमणि आदि कितनेक निघण्टुके स्वतत्र ग्रन्थ भी छपचुकेहैं किन्तु ऐसा ग्रथ कहीं भी नहीं छपा कि, जिस एकही ग्रन्थसे सम्पूर्ण औषधियोंके गुण दोष लक्षण परीक्षा विवरणादि पूरी पहचान मालूम होजाय। इसी अभावको दूर करनेके लिये प्रायः सम्पूर्ण अर्वाचीन और प्राचीन द्रव्य गुण, कोष और निघण्टुओंका सार लेकर लाला शालिग्रामजीने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" निर्माण कराहै। इस इकले ग्रन्थसेही समस्त आयुर्वेदीय औषधियोंका अच्छे प्रकारसे अनुभव हो सक्ताहै। यद्यपि लालाजीने इस ग्रन्थको सर्वांगसुन्दर और सम्पूर्ण विषयोंसे परिपूर्ण लिखाहै किन्तु उनकी इच्छानुसार इसमें कितनी एक त्रुटि रहगईथीं सो अबकीबार लालाजीकी आज्ञानुसार वह सब त्रुटिया पूर्ण करदी गई हैं।

इस आवृत्तिमें वनप्सा, आलू, गोभी, फूलगोभी, पत्रगोभी, गाठगोभी, गुलेवनप्सा, झाऊ, झिल, देशीबादाम आदि अनुमान २०–२५ अर्वाचीन औषधियोंके गुण दोष, विवरण आदि सस्कृत श्लोक और भाषा बनाकर लिखदी गई हैं। पहली बारमें सम्पूर्ण औषधियोंके विवरण विस्तारपूर्वक नहीं लिखेगये थे सो अबकीबार अनुमान ३००–४००औषधियोंके विशेष विवरण परिवर्द्धित करदिये गयेहैं। इसके अतिरिक्त २०० चित्र औषधियोंके बढादिये है। तथा अकारादि क्रमकी बगला, मराठी और गुजराती यह तीन अनुक्रमणिका पाठकोंके सुभीतेके लिये विशेष लगादीगई, हैं। इसमें प्रमादके वश अथवा अल्पज्ञतासे जो त्रुटि रहगई हों उनको पाठक महाशय क्षमा करें अथवा पत्रद्वारा लिखकर भेजदेंगे तो आगामी आवृत्तिमें ठीक करदी जायँगी।

इति द्वितीयावृत्तिभूमिका।

तारीख–४–४–१९०४

भवदीय–कृपाकांक्षी–
वैद्य–शकरलाल हरिशकर,
"आयुर्वेदोद्धारक–कार्य्यालय"
मुरादाबाद

॥ श्री ॥

तीसरीवारकी भूमिका.

पाठक महाशयोंकी गुणग्राहकतासे इसका तीसरा संस्करणभी शीघ्र होगया। शीघ्रताके कारण अबकीवार कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं किया जासका, तथापि ग्राहकोंके संतोषार्थ इस वार भी कुछ न कुछ अवश्य नवीन संशोधन कियागयाहै। पहले और दूसरे संस्करणोंमें वनौषधियोंके सब चित्र ग्रन्थकी आदिमें एकत्र लगाये गयेथे, प्रत्येक औषधिके चित्रको अलग अलग ढूंढनेमें तब बहुत देरलगतीथी। अबकीवार इसी दिक्कतको दूर करनेके लिये प्रत्येक औषधिका चित्र उसके विवरणके साथ यथास्थानमें लगादियागयाहै तथा दूसरे संस्करणकी अशुद्धियोंकाभी यथातथ्य संशोधन कियागयाहै।

तारीख १ मई सन् १९१२

भवदीय-कृपाकांक्षी-
वैद्य-शङ्करलाल हरिशंकर
"आयुर्वेदोद्धारक-शर्म्मोदय"
मुरादाबाद U P

श्रीः ।

आयुर्वेदोद्धारक वनौषधालय.

हमने सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये बहुतसा द्रव्य खर्च करके बडे परिश्रमसे अनेक देश, वन, पर्वत और जंगलकी बहुतसी दिव्य और दुष्प्राप्य वनौषधियोंको मँगाकर अपने औषधालयमें रखीहैं जैसे–ब्रह्मी, शंखपुष्पी, शिवलिंगी, पातालगरुडी, देवदाली, अपराजिता, विष्णुक्रांता, अशोक, भुँइआमला, विदारीकंद, वाराहीकंद, मूर्वा, कालाभांगरा, कालाधतूरा इत्यादि सब प्रकारकी हरी और सूखी औषधि मिलसक्तीहैं। जिस किसी महाशयको किसी जडी बूटीकी आवश्यकता हो उसका खुलासा नाम देशभाषामें अथवा संस्कृतभाषामें लिखभेजे तो औषधि तत्काल भेजदीजायगी। किन्तु यह अच्छे प्रकारसे स्मरण रहै कि, एक रुपयेसे कम मूल्यकी कोईभी वनौषधि नहीं भेजीजाती।

इसके अतिरिक्त इस औषधालयमें प्रायः सब प्रकारके रोगोंकी शास्त्रोक्त विधिसे बनाई हुई और लालाशालिग्रामजी तथा हमारी वारवार परीक्षा कीहुई औषधियेंभी विक्रीके लिये सदैव तैय्यार रहती हैं। जैसे–रस, धातु, सुवर्ण, रौप्य, ताम्र, वंग, अभ्रक, हरिताल, नाग, लोह, मण्डूर, मौक्तिक, प्रवाल, मकरध्वज, चन्द्रोदय, स्वर्णसिन्दूरप्रभृति रसायन तथा चूर्ण, गुटिका, वटी, अवलेह, पाक, मोदक, आसव, अरिष्ट, पाचन, कषाय, तेल, घृत, गूगल आदि समस्त औषधिय उचित मूल्यसे मिलसक्तीहैं। अधिक माल मँगानेवालोंको और वैद्यलोगोंको विशेष कमीशन दियाजाताहै। आध आनेका टिकट भेजकर औषधालयके नियम और सूचीपत्र मँगाकर देखो।

पता–वैद्य–शङ्करलाल हरिशंकर
आयुर्वेदोद्धारक–औषधालय
मुरादाबाद यू पी

श्रीः।

शालिग्रामनिघण्टुकी-

विषयानुक्रमणिका।



हरीतक्यादिवर्गः।

वटादिवर्गः ।

धातूपधातुवर्गः।

इति



श्रीः ।

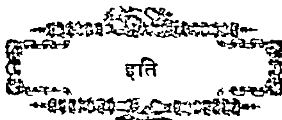
शालिग्रामनिघण्टुभूषणकी अकरादिक्रमसे हिन्दी-अनुक्रमणिका ।

इति शालिग्रामनिघण्टुकीअकारादि हिन्दी अनुक्रमणिका समाप्ता ।

श्री.।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणान्तर्गत-वंगभाषाकेशब्दोंकीअकारादि-अनुक्रमणिका




इति

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणांतील मराठीशब्दांची

अकारादि अनुक्रमणिका



इति ।



शालिग्रामनिघण्टुभूषणने-
गुजरातीशब्दोनीअकारादि-
अनुक्रमणिका

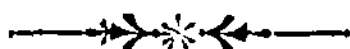


इति ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषण ।

सप्तमअष्टमभाग ।



नत्वा सिद्धिविनायकं च विविधा भाषाः समालोच्य ताः
आयुर्वेदमहोदधिं विमलया बुद्ध्या विनिर्मथ्य वै ॥
शालिग्रामबुधेन केवलमिदं लोकोपकृत्यै कृतं
शालिग्रामनिघण्टुभूषणगतं सप्ताष्टमांशद्वयम् ॥ १ ॥

कर्पूरादिवर्गः ।

कर्पूरनामानि ।

ओषधीशश्चकर्पूरं सोमसंज्ञं सिताभ्रकम् ।
शिला हिमांशुः शीतांशुश्चंद्रभस्म निशापतिः ॥

अर्थ–ओषधीश, कर्पूर, सोमसंज्ञ, सिताभ्रक, शिला, हिमांशु, शीतांशु, चंद्रभस्म, निशापति, (तरुसार, भस्माह्वय, रेणुसार, इन्दु, हिमाह्वय, वेधक, रेणुसारक, शीतमरीचि, भस्मवेधक, विधु, शीतमयूख, घनसार, चन्द्रसंज्ञ, जैवातृक, ग्लौ, कुमुदबान्धव, सिताभ्र, हिमवालुका, इन्दु, द्विजराज, नक्षत्रेश, निशीथिनीनाथ, यामिनीपति, शशधर, सोम, क्षपाकर, हिमाह्व, क्षपापति, सिताभ, शीत, घनसारक, शीतकर, शशाङ्क, हिमवालुक, हिमकर, शीतप्रभ, शाम्भव, शुभ्रांशु, स्फटिकाभ्र, कारमिहिका, ताराभ्र, चन्द्रार्द्रक, चंद्र, नाकतुषार, गौर, कुमुद, शीतलरज, सिताह्व, स्फटिक, शशि और हिमोपल) ॥

हिन्दीभाषामें	कपूर
बंगभाषामें	कर्पूर
महाराष्ट्रभाषामें	कापूर
गुर्जरभाषामें	कपुर, कपूर
कर्णाटकीभाषामें	कर्पूर

तैलङ्गीभाषायां — कर्पूरमु.
अंग्रेजीभाषायां — कैम्फर — Camphor
लैटिन्भाषायाम — केम्फोरा. — Camphora
फारसीभाषायां — काफूर
अरबीभाषायाम — काफूर कफूर

कर्पूरभेद ।

पोतास, भीमसेन, सितकर, शङ्करावास, पांशु, पिञ्ज, अब्दसार, हिमवालुक, घटिका, तुषार, हिम, शीतल, पक्वकादि यह १३ भेद हैं।

कर्पूरगुणा ।

सतिक्तः सुरभिः शीतः कर्पूरो लघुलेखनः ।
तृष्णायां मुखशोषे च वैरस्ये चापि पूजितः ॥ (सुश्रुत)

अर्थ—कर्पूर—कडुवा, सुगंधि, शीतल, हलका, लेखन तथा तृषा, मुखशोष और विरसताको दूर करनेवाला है।

अपरञ्च ।

कर्पूरः शीतलो वृष्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः ।
सुरभिर्मधुरस्तिक्तः कफपित्तविषापहः ॥
दाहतृष्णास्यवैरस्यमेदोदौर्गन्ध्यनाशनः ।
आक्षेपशमनो निद्राजननो वमनार्दनः ।
वेदनाहारकः कामशान्तिकृच्छुक्रमेदकृत् ॥
कर्पूरो द्विविधः प्रोक्तः पक्वापक्वप्रभेदतः ॥
पक्वात्कर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्तरम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—कपूर—शीतल, वीर्यवर्धक, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, हलका, सुगंधि, मधुर और कडुवा है तथा कफ, पित्त, विष, दाह, तृष्णा, मुखकी विरसता (स्वादरहितपना) मेदरोग और दुर्गंधका नाश करै है॥ पक्व और अपक्व इन भेदोंसे कपूर दो प्रकारका है। पक्व कपूरसे अपक्व (कच्चा) कपूरमें अधिक गुण है॥

अन्यच्च ।

कर्पूरो मधुरस्तिक्तः शीतलः सुरभिर्लघुः ।
नेत्र्यो लेखनकृद्वृष्यः कटुः प्रीतिकरो मृदुः ॥

मदकारीचसंप्रोक्त कफदाहतृपापहः ।
रक्तपित्तकण्ठरोग नेत्ररोगविपतथा ॥
पित्तचमुखवैरस्यदौर्गन्ध्यमुदरतथा ।
मूत्रकृच्छ्रंप्रमेहञ्चमलगन्धचनाशयेत् ॥
सएवनूतन·स्निग्धस्तिक्तश्चोष्णश्चदाहकृत् ।
सोपिजीर्णोदाहशोपनाशनःपरिकीर्त्तितः ॥
सोपिधौतोगुणैःश्रेष्ठःप्रोक्तोवैद्यै·पुरातनै· ॥
(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-गुण । कपूर-मधुर, कडुवा, शीतल, सुगन्धि, हलका, नेत्राको हितकारी,लेखन, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, प्रीतिकारक, मृदु और मद (नसा)करनेवाला है तथा कफ, दाह, पियास, रक्तपित्त, कण्ठरोग, नेत्ररोग, विप,पित्त, मुखकी विरसता, दुर्गंध, उदररोग, मूत्रकृच्छ, प्रमेह और मलकी दुर्गंधको दूर करेहै वही नवीन कपूर, स्निग्ध, कडुवा, गरम और दाहजनकहै । वही पुराना कपूर दाह और शोपनाशक है और धुलाहुआ कपूर गुणोंमें श्रेष्ठ है ॥

कपूरलक्षणम् ।

शिरोमध्यतलचेतिकर्पूरस्त्रिविध स्मृतः ।
शिरस्तम्भाग्रजमध्ये मध्यपर्णतलेतलम् ॥
भास्वद्विदर्शपुलकशिरोजाततुमध्यमम् ।
सामान्यपुलकस्वच्छतलेचूर्णंतुगौरवम् ॥
स्तम्भगर्भस्थितश्रेष्ठस्तम्भबाह्येचमध्यम· ।
स्वच्छमीपद्धरिद्राभंशुभंतन्मध्यजस्मृतम् ॥
सदृढशुभ्ररूक्षञ्चपुलकबाह्यजवदेत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-शिर, मध्य और तल इन भेदोंमे कपूर तीन प्रकारके हैं, स्तम्भके अग्रभागमें होनेवाला कर्पूर शिरसंज्ञक है, मध्यमें होनेवाला मध्यम है और पत्तोंके तले होनेवाला तलसंज्ञक कहलाताहै, प्रकाशवान् निर्मल फूलाहुआ शिर है, सामान्य फूलाहुआ स्वच्छ मध्यम है और तलेमें होनेवाला चूर्णस्वरूप

भागोंमें, स्तम्भके गर्भमें स्थित कपूर श्रेष्ठ है, स्तम्भके पाद होनेवाला मध्यम है, निर्मल और शुद्ध हलदीके रंगके सदृश रंगवाला श्रेष्ठ कपूर मध्यमें होनेवाला है, कठोर, नपेर, रूप और पुराना आदि कपूर कहलाता है ॥

अपिच।

स्वच्छंभृङ्गारपत्रलघुतरविशदंतोलनेस्तिक्तकंचे-
त्स्वादेशैत्यसुहृद्यंबहलपरिमलामोदसौम्यत्वदायि।
निःस्नेहदार्ढ्यपत्रंशुभतरमितिवेद्राजयोग्यंप्रशस्तं
कर्पूरंचान्यथाचेद्बहुतरमलस्फोटदायिव्रणाय॥
(रा० नि०)

अर्थ-स्वच्छ भौंरोंके पंखके समान, छोटे २ टुकडे, कपूर हलके और तोलमें बहुत हलके स्वादमें तिक्त हो, ठण्डा, स्पर्शमें प्रिय, जो अत्यन्त सुगन्धिको सदा देनेवाला, तेलरहित, दृढ पत्रवाला ऐसा कपूर अत्यन्त उत्तम राजाओंके योग्य है। इससे दूसरे प्रकारका कपूर विशेष करके फोडे और घावको उत्पन्न करनेवाला है ॥

पोताश्रय भीमसेनी-चीनाक कर्पूरगुणाः।

पोताश्रयः स्वादुशीतोवृष्यस्तिक्तःकटुस्मृतः।
तृड्दाहरक्तपित्तानांकफस्यचविनाशकः॥
त्रयोप्येतेतुकर्पूराःपक्वापक्वनिभेदतः।
द्विप्रकाराःस्मृताह्येषःपक्वोऽतिगुणदःस्मृतः॥
(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-(पोताश्रय भीमसेनी और चीनाक कपूर) स्वादिष्ठ शीतल, वृष्यकारक, तिक्त, कटु तथा तृषा दाह, रक्तपित्त और कफका नाश करते हैं ये तीनों कपूर पक्व और अपक्व इन भेदोंसे दो प्रकारके हैं इनमें पक्व कपूर गुणोंमें अधिक है ॥

गुडकर्पूरवर्णनम्।

ईशानासन्नकर्पूरोभेदीवृष्योमदापहः।
अतिशीतोन्मादहरपाश्मरीप्रमेहविनाशनः।
स्वेदंचेयोगदान्नन्नाशयेदितिकीर्तितः॥ (नि० र०)

अर्थ-शकरावास कपूर-दस्तावर, वृष्य, मदनाशक और अत्यन्त शुभ्र है तथा उन्माद, पियास, श्रम, खाँसी, कृमि, क्षईरोग, पसीना और अंगके दाहको दूर करेहै ॥

हिमकपूरगुणा ।

हिमकर्पूरकःशुभ्रोवृष्यःशीतोरसेकटुः ।
तृड्दाहमोहस्वेदानांनाशकःपरमोमतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-हिमकपूर-शुभ्र, वीर्य्यजनक, शीतल, रसमें चरपरा, तथा तृषा, दाह,मोह और पसीनेको दूर करेहै ॥

उदयभास्करकर्पूरगुणा ।

कर्पूरोदयभास्करोनिगदितःपीतःसरःस्वच्छकः
सप्रोक्तः कठिनःकटुःसमुदितःस्याद्दीपकोग्नेर्लघुः ॥
श्रीदःपित्तकरःकफक्रिमिविषान्वातश्चनासास्त्रुति
लालास्रावगलग्रहौचशमयेज्जिह्वाजडत्वापहः ॥
(नि० र०)

अर्थ-उदयभास्कर कपूर-(पक सदल निर्दल दोनों प्रकारका) पीत, दस्तावर, निर्मल, कठिन, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, हल्का, लक्ष्मीदायक, पित्तकारक तथा कफ, कृमि, विष, वात, नाकसे पानी-गिरना, मुखसे लार गिरनी, गलग्रह और जिह्वाकी जडता इनको दूर करेहै ।

पर्णकर्पूरगुणा ।

पर्णकर्पूरकस्तिक्तःशुद्धश्चुन्मादकरोमतः ।
मूत्रकृत्पीनसदाहनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-पानकपूर-कडवा, शोधक, उन्माद करनेवाला तथा मूत्र रोग, पीनस और दाहनिवारक है ॥

चीनकपूरनामानि ।

चीनकश्चीनकर्पूरःकृत्रिमोधवलः कटुः ।
मेघसारस्तुषारश्चद्वीपकर्पूरजः स्मृतः ॥

अर्थ-चीनक चीनकपूर, कृत्रिम, धवल,कटु, मेघसार,तुषार,द्वीपकर्पूरज॥

चीनकर्पूरगुणाः ।

चीनकः कटुतिक्तोष्णईषच्छीतः कफापहः ।
कण्ठदोषहरोमेध्यः पाचनः कृमिनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ–चीनियाकपूर–चरपरा, कड़वा, गरम, किंचित् शीतल, कफनाशक, कण्ठरोगनिवारक, मेधाजनक, पाचक और कृमिनाशक है ॥

अपिच ।

चीनाकसञ्ज्ञ कर्पूर कफक्षयकरं स्मृत ।
कुष्ठकण्डूवमिहरस्तथातिक्तरसश्च सः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–चीनियाकपूर कफ, कोढ़ खुजली और वमनको हरनेवाला है तथा तिक्तरसान्वित है ॥

विवरण ।

कपूरके वृक्ष चीन और जापानमें बहुत होतेहैं पर कुछ तराई और सिंहलमेंभी मिलजाते हैं । इनकी शाखाओंकी छाल ऊपरसे रूखी और भीतरसे चिकनी होतीहै, इस वृक्षके ऊपर मौर आताहै फल मटरकी समान होतेहैं फलके चाबनेमें कपूरकी समान सुगंधि आतीहै और इस वृक्षकी छाल गोदनेमें दूध निकलताहै उस दूधका कपूर बनताहै। कपूर की अनेक जाति हैं जैसे भीमसेनी, चित्र, पोतास हिम सित पांशु उदधिसागरज, अब्दसार, रुतिका, तुषार पत्रिकारूप, शीतल और घनकपूर इत्यादि । इसके सिवाय पक्का कपूर और कृत्रिम कपूर होतेहैं ।

कस्तूरीनामानि ।

गन्धधूलिश्चकस्तूरीमदाढ्यामृगनाभिजा ।
कस्तूरिकाण्डजानाभिर्मिश्रायोजनगन्धिका ॥
(रा० नि०)

अर्थ–गन्धधूलि कस्तूरी, मदाढ्य मृगनाभिजा कस्तूरिका, अण्डजा, नाभि मिश्रा योजनगन्धिका ([illegible], मृगनाभि [illegible] मृग, [illegible] नाभि [illegible] योजनगन्धा, मार्ग, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] वेधमुख्या [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] श्यामा कामान्धा, मृगाण्डजा [illegible], [illegible], श्यामला [illegible]) ॥

हिन्दीभाषामें	कस्तूरी	
वङ्गभाषामें	मृगनाभी	
महाराष्ट्रभाषामें	कस्तूरी	
गुर्जरभाषामें	कस्तूरी	
कर्णाटकीभाषामें	कस्तूरी	
तैलङ्गभाषामें	कास्तूरी	
अंग्रेजीभाषामें	मस्क	Mush
लैटिन्भाषामें	मोस्कस्	Moscus
फारसीभाषामें	मुष्क	
अरबीभाषामें	मिस्क	

कस्तूरीभेदा ।

कपिलापिङ्गलाकृष्णाकस्तूरीत्रिविधाक्रमात् ।
नेपालिकाचकाश्मीरेकामरूपेचजायते ॥ (रा०नि०)
कामरूपोद्भवाश्रेष्ठानैपालीमध्यमाभवेत् ।
काश्मीरदेशसम्भूताकस्तूरीह्यधमाभवेत् ॥ (भावप्र०)

अर्थ–कस्तूरी वर्णके भेदकरके तीनप्रकारकी है । जैसे कपिल वर्ण, पिङ्गलवर्ण और कृष्णवर्ण, तहा नेपालमें उत्पन्न होनेवाली कपिलवर्ण अर्थात् भूरेरगकी होतीहै, काश्मीरमें उत्पन्न होनेवाली पिङ्गलवर्णकी होतीहै और कामरूदेशमें उत्पन्न होनेवाली काले रगकी होतीहै किन्तु भावमिश्रने नेपाल देशकी कस्तूरी नीले रगकी और काश्मीरकी कपिलरगकी लिखीहै । कामरू-देशमें उत्पन्न होनेवाली श्रेष्ठ है, नेपालदेशमें उत्पन्न होनेवाली मध्यम है और काश्मीरमें उत्पन्न होनेवाली कस्तूरी अधम होतीहै ॥

कस्तूरीपञ्चभेदा ।

साप्येकाखरिकाततश्चतिलकाज्ञेयाकुलित्थापरा
पिंडान्यापिचनायिकेतिचपरायापचभेदाभिधा ॥
(रा० नि०)

अर्थ–खरिका, तिलका, कुलित्था, पिण्डा और नायिका इस भाति पाच प्रकारकी है ॥

चूर्णाकृतिस्तु खरिकातिलकातिलाभा
कौलित्थबीजसदृशान्कुलत्थकान् ।
स्थूलाततः कियदियं किल पिण्डिकाख्या
तस्याश्च किंचिदधिकाय दिनायिकाख्या ॥
(रा० नि०)

अर्थ-चूर्णके सदृश खरिका, तिलके सदृश तिलका, कुल्थीके बीजोंके समान कुल्था, कुल्थाकस्तूरीसे कुछ मोटी पिण्डिका और पिण्डिकासे किंचित् अधिक स्थूल नायिका कस्तूरी होतीहै ॥

कस्तूरीपरीक्षा ।

स्वादेतिक्ता पिञ्जरा केतकीनां गन्धं धत्ते लाघवं तोलनेन ।
याप्सु न्यस्ता नैव वैवर्ण्यमीयात्कस्तूरी सा राजभोग्या प्रशस्ता ॥
(रा० नि०)

अर्थ-स्वादमें कडवी, पीतवर्ण, केतकीके पुष्पके समान सुगंधिवाली, तोलमें हलकी और पानीमें गेरनेसे जिसका रंग न पलटे वह कस्तूरी राजाओंके सेवने योग्यहै ॥

अपिच ।

या गन्धं केतकीनां दधति परिमलैर्वर्णतः पिञ्जराभा
स्वादे तिक्ता कटुर्वा लघुरथ तुलिना मर्दिता चिक्कणा स्यात् ॥
दाहं याने तिवह्नौ चिमिचिमिकुरुते नैव गन्धाद्भुता या
सा कस्तूरी प्रशस्ता मृगतनुजा राजते राजभोग्या ॥
(रा० नि०)

अर्थ-जो केतकीके पुष्पके सदृश गन्धवाली हो और रंगमें पीलेपन सहित हो, स्वादमें कडवी तथा चरपरी हो, तोलमें हलकी और मलनेसे चिकनी होजाय आगमें डालनेसे जले नहीं, किंतु चटचट शब्द करके चिम चिम शब्द करै और पवनसे केतकीके समान गन्ध आवे वो मृगके तनसे उत्पन्न हुई कस्तूरी राजाओंके भोगने योग्यहै ॥

कस्तूरीगन्धोत्पत्तिलक्षण ।

यालेनरनिनदारणेश्रीणीगिरिगमदगन्धपुना ।

कामातुरेचतरुणेकस्तूरीबहलपरिमलाभवति ॥
(रा० नि)

दुष्टकस्तूरीलक्षण ।

यास्निग्धाधूमगंधावहतिविनिहितापीततांयावसोंत-
र्निःशेषयानिविष्टाभवतिहुतवहेभस्मसादेवसद्यः ।
याचन्यस्तातुलायांकलयतिगुरुतांमर्दितारूक्षणच
ज्ञेयाकस्तूरिकेयखलकृतमतिभिःकृत्रिमानैवसेव्या ॥
(रा० नि०)

अपिच ।

शुद्धोवामलिनोस्तुवामृगमदःकिंजातमेतावता
कोप्यस्याऽनवधिश्चमत्कृतिनिधिःसौरभ्यएकोगुणः ।
येनासौस्मरमण्डनैकवसतिर्भालेकपोलेगले
दोर्मूलेकुचमण्डलेचकुरुतेसगकुरङ्गीदृशाम् ॥
(रा० नि)

दुष्टकस्तूरीपरीक्षा ।

करतलजलमध्येस्थापनीयामहद्भिः
पुनरपितदवस्थचिंतनीयंमुहूर्त्तम् ।
यदिभवतिचरक्तंतज्जलंपीतवर्णं
नभवतिमृगनाभिः कृत्रिमोऽयंविकारः ॥ (का०)

अर्थ–बालक, वृद्ध, क्षीण और रोगी मृगकी कस्तूरी मंद गंधवाली होतीहै । कामातुर और तरुण मृगकी कस्तूरी बहुत उज्ज्वल और अत्यन्त सुगंधिवाली होतीहै । जो कस्तूरी छूनेमें चिकनी हो और धुयेंकेसी गंध आवे, वस्त्रमें रखनेसे वस्त्र पीतवर्ण होजाय, आगमें रखतेही तत्काल भस्म होजाय, तराजूमें रक्खी हुई भारी हो, अर्थात् कम चढे और मरनेमें रूखी होजाय, उस कस्तूरीको बनावटी समझकर सेवन करना नहीं चाहिये शुद्ध व मलिन जातिकी कस्तूरी नपुंसक मृग और मृगी की होतीहै, इसके अतिरिक्त और कोई दूसरीकी पहिचान नहीं, इसमें केवल एक सुगंधही बडा चमत्कृत गुण

है। जो कि यह रामका श्रृगार मस्तक, कपाल पट भुजा और कुचम पहलम लियाकर लगाई जातीहै इसीमें जब सावर वक मुल्कोंमात्रमें उत्तम कस्तूरी पदी गलेहै यदि उसका जल टाप व पीला होजाय तो जान कस्तूरी असल नहीं है इसिलये अर्थात् बनावटी जानिये ॥

कस्तूरीगुणाः।

कस्तूरीछर्दिदौर्गन्ध्यरक्तपित्तकफापहा ॥ (रा० व०)

अर्थ-कस्तूरी छर्दि, दुर्गन्ध रक्तपित्त और कफरोगकी नाशक है ॥

गुणाः।

कस्तूरिकाकटुस्तिक्ताक्षारोष्णाशुक्रलागुरुः।

कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गन्ध्यशोषहृत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कस्तूरी-चरपरी कड़वी खारयुक्त गरम शुक्रनाशक, भारी तथा कफ वात, विष, छर्दि, शीत दुर्गन्धता और शोषनाशक है ॥

अन्यच।

कस्तूरिकातुकटुरुष्णाकटीतिक्तासुगंधिका।

उष्णाशुक्रप्रदागुर्वीवृष्याक्षारारसायनी ॥

किलासकुष्ठमुखरुक्कफदौर्गन्ध्यनाशिनी।

अलक्ष्मीमलवाततृट्छर्दिशोषविषापहा ॥

शीतश्लेष्मामयोत्सन्नाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० रत्ना०)

अर्थ-कस्तूरी-चरपरी तिक्तरसी कडवी, चरपरी, सुगंधित गरम, शुक्रदायक भारी वृष्य, खार रसायन तथा किलास कोढ, मुखरोग कफ दुर्गन्ध अलक्ष्मी मल वात तृषा छर्दि शोष, विष, शीतकी और श्लेष्मा नाश करती है ॥

विवरण। कस्तूरी हिरनकी नाभिमें होती है उस हिरनको मारकर उसकी नाभिको काटलेते हैं उसको कस्तूरीका नाफा कहते हैं यह नाफा [illegible] गोल है तथा [illegible] होताहै और उसका आकार गोल होताहै उसके ऊपर छोटे छोटे बाल होते हैं [illegible] होताहै, [illegible] होताहै इसमें आठवां [illegible] होताहै उस नाफेको चीरकर कस्तूरी निकालते हैं, जिसमें मसूर अन्नके समान निकलतीहै [illegible] निकलती है जिसमें [illegible] समान निकलतीहै जिसमें

मटरके दानेके समान निकलतीहै, जिन हिरनोंकी नाभिसे कस्तूरी निकलती है, वह हिरन काश्मीर नेपाल और कामरूदेशमें होतेहैं ।

गंधमार्जारवीर्य (जबादिकस्तूरी अर्थात्गोरासार व बेदभजीर)

मार्जारीवान्तिमाद्यतेचक्षुष्याकफवातजित् ॥

(मदनपालनि०)

अर्थ–गंधमार्जारवीर्य-वान्तिको उत्पन्न करे है, नेत्रोंको हितकारीहै और कफ वातको जीतेहै ॥

अपिच ।

गन्धमार्जारवीर्यंतुवीर्यकृत्कफवातहृत् ।
कण्डूकुष्ठहरनेत्र्यसुगन्धिस्वेदगंधनुत् ॥

(भा० प्र०)

अर्थ–गंधमार्जारवीर्य–वीर्यको उत्पन्न करेहै,कफवातनाशक तथा कण्डू और कोढको दूर करेहै,नेत्रोंको हितकारी, सुगंधित और पसीनेकी वासको हरेहै ॥

अन्यच्च ।

ओतुद्रवाकस्तुरिकाचक्षुष्योष्णासुखावहा ॥
सुगंधिकाचसुस्निग्धावातेशस्ताचवान्तिदा ॥
शुक्रवृद्धिकरीवृष्याअङ्गकांतिकरीमता ॥
कण्डूकिटिभकुष्ठश्चघर्मगंधविषंतथा ॥
कण्ठरोगश्चकुष्ठश्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–गन्धमार्जारवीर्य–नेत्रोंको हितकारी, गरम, सुखजनक, सुगन्धित, वात रोगमें हितकारी, वान्तिदायक, वीर्यवर्द्धक, वृष्य, शरीरकी कान्ति बढानेवाली, तथा कण्डू, किटिभ, कुष्ठ, पसीना, दुर्गंध, विष, कण्ठरोग और कोढका नाश करनेवाली है ।

लताकस्तूरीगुणाः ।

लताकस्तूरिकास्वादुर्वृष्याशीतालघु स्मृता ॥
नेत्र्यातिक्ताछेदनीचतीक्ष्णावस्तिविशोधिनी ॥
वस्तिरोगकफतृष्णांमुखरोगश्चनाशयेत् ।

लालास्रावंवमिंवातदौर्गंध्यंचमदजयेत् ॥
अलक्ष्मीनाशिनीप्रोक्ताभवेद्देशेचदक्षिणे ॥ नि० र०)

अर्थ-लताकस्तूरी (मुश्कदाना) स्वादिष्ट, वीर्यजनक, शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, कडवी, छेदक, तीक्ष्ण बस्तिशुद्धिकरनेवाली तथा बस्तिरोग, कफ, तृषा, मुखरोग, लालास्राव वान्ति, वात, दुर्गंध, मद और अलक्ष्मीका नाश करनेवाली है ॥

अपिच ।

लताकस्तूरिकातिक्ताहृद्याशीतास्यरोगनुत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-लताकस्तूरी-(मुश्कदाना) कडवी, हृदयको हितकारी, शीतल और मुखरोगनाशक है ॥

विवरण । लताकस्तूरीकी बेल दक्षिणदेशमें होतीहै, ऐसा निघण्टुरत्नाकरमें लिखाहै । किन्तु यहाँ देखनेमें नहीं आती, सम्भवतः लताकस्तूरी और दक्षिणदेशजा कहते हैं । हिंदी भाषामें लताकस्तूरी और मुश्कदाना कहते हैं । बङ्ग, गुर्जर, महाराष्ट्र, कर्णाटकादि देशोंमें लताकस्तूरीही नामसे प्रसिद्ध है । तैलङ्ग देशमें तवोल करमु कहतेहैं । तामिलदेशमें कटेकस्तूरी कहते हैं । द्राविडदेशमें कस्तूरवेण्ड कहते हैं ।

व्यवहार-बीज मात्रा सात मासेकी ।

कुंकुमनामानि ।

काश्मीरजकुङ्कमंचबाह्लिकंशोणिताह्वयम् ॥
कुसुमात्मकसंकोचंपीतनरक्तचंदनम् ॥ (केचित्)

अर्थ-काश्मीरज, कुंकुम, बाह्लीक, शोणिताह्वय, कुसुमात्मक, संकोच, पीतन, रक्तचन्दन, (पीतक, घस्र, रक्तमल, संकोचपिशुन, हरिचन्दन, राग, रज, दीपक, लोहित, सौरभ, चन्दन, काश्मीरजन्म, अग्निशिख, वर, रक्त, पिशुन, धीर लोहित, मदन, नाग, काश्मीरजन्म, बाह्लीक, वरबाह्लीक, अग्निशेखर, जाग्रज, काश्मीर, रुधिर, शठ, शोणित, कुसुम, संकोच, अरुण, कान्तिकर, आयुद, रक्त, वह्निशिख, केसर, गौर केसर, धीर, असृक्, रुधिर,) ॥

हिन्दीभाषामें	केसर
बङ्गभाषामें	कुंकुम-केसर
मराठीमें	केसर

गुजरातीमें	केसर	
कर्णाटकीमें	कुकुम	
तैलङ्गीमें	कुकुमपुवु	
अंग्रेजीमें	सेफ्रन्	Saftron
लैटिन्में	क्रोकस्सेटिवस्	Crocussti\ ios
द्राविडीम	कुकुमपूव	Cracistimata.
फारसीमें	लरकीमास	
अरवीमें	जाफरान	

कुङ्कुमभेदा ।

काश्मीरदेशजक्षेत्रेकुकुमंयद्भवेद्धितत् ।
सूक्ष्मकेशरमारक्तपद्मगन्धितदुत्तमम् ॥
बाह्लीकदेशसञ्जातकुङ्कुमपाण्डुरभवेत् ।
केतकीगन्धयुक्ततन्मध्यमसूक्ष्मकेशरम् ॥
कुङ्कुमपारसीकेयंमधुगन्धितदीरितम् ।
ईषत्पाण्डुरवर्णतदधमस्थूलकेशरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–केशर तीन प्रकारकी है, काश्मीर देशमें उत्पन्न होनेवाली वाह्लीक (बुखारा) देशमें उत्पन्न होनेवाली और पारस (ईरान) देशमें उत्पन्न होनेवाली । जो केशर काश्मीरके खेतोंमे उत्पन्न होती है, वह सूक्ष्म केशरसे युक्त कुछेक ललाई लिये और कमलकी सदृश सुगधियुक्त होतीहै, यह सब केशरोंमे श्रेष्ठ है ॥ जो केशर वाह्लीक (बुखारा) देशमें उत्पन्न होतीहै, वह पीली और केतकीके पुष्पकी समान सुगधीयुक्त होतीहै, और सूक्ष्मभी होतीहै यह मध्यम है ॥ जो केशर पारस (ईरान) देशमें उत्पन्न होतीहै, वह मधुकी गन्धयुक्त, कुछेक पीली और वडे केशवाली होतीहै, उसको अधमकेशर जानना ।

कुङ्कुमलक्षणम् ।

अव्यक्तरक्तिमामोदिमर्दनात्कर्णिकात्मकम् ।
स्थिररागंकरेलग्नभग्नकुङ्कुमसुत्तमम् ॥
हीनमेवाग्निकाश्मीरगरपाण्डुरकेशरम् ॥ (द्रव्यचिह्न)

अर्थ-जिसमें अमरट लाली हो और सुगधवाली हो, तथा मस्तकमें कर्णिकाकी समान हाथमें लगकर उसका रंग स्थिर रहे, वह केशर उत्तम है और जो केशर अग्निके रंगकी समान, विषयुक्त पीले रंगकी केशरसे युक्तहो, वह हीन केशर समझनी ॥

कुङ्कुमगुणाः ।

कुङ्कुमसुरभितिक्तकटूष्णकासवातकफकण्ठरुजाघ्नम् ।
मूर्द्धशूलविषदोषनाशनरोचनंचतनुकान्तिकारकम् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-केशर-सुगंधित, कडवी, चरपरी, गरम, रोचक, शरीरकी शोभा बढानेवाली, तथा कास, वात, कंठरोग मस्तकपीडा और विषके विकारोंका नाश करे है ॥

अपिच ।

कुङ्कुमकटुकस्निग्धशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
तिक्तवमिहरवर्ण्यंव्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केशर-चरपरी है, स्निग्ध है, तथा शिरोरोग, व्रण और कृमिनाशक है, कडवी है, वमनको हरेहै, शरीरके रंगको सुन्दर करेहै, व्यङ्ग अर्थात् झाई और त्रिदोषका नाश करेहै ॥

अन्यच्च ।

कुङ्कुम रेचकप्रोक्तकण्डूवैवर्ण्यनाशनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-केशर-रेचक अर्थात् दस्त करानेवाली है, तथा खुजली और विवर्णताको दूरकरै है ॥

अपिच ।

कुङ्कुमकटुकसिध्मशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
उष्णहास्यकरंवल्यंव्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-केशर-चरपरी, गरम हँसीको करनेवाली, बलको उत्पन्न करनेवाली तथा सिध्मरोग, शिरोरोग, व्रण कृमि, व्यंग और त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कुङ्कुमतीक्ष्णमुष्णञ्चप्रियंवर्ण्यंसुगन्धिकम् ।
कटूष्णंकफवातघ्नंत्वग्दोषस्वेदपित्तजित् ॥ (वैद्यक)

अर्थ-केशर-तीक्ष्ण, गरम, प्रिय, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, चरपरी, कफवातनाशक, त्वचाके रोग, पसीना और पित्तको दूर करे है ॥

सूखीहुई सुगन्धियुक्त गर्म केशर, देशी वैद्यक चिकित्साकी अपेक्षा इंगनी चिकित्सामें अधिक वर्त्तावमें आती है ।

तैलादि सुगन्ध और रंगके लिये अधिकतासे काममें लीजाती है । ईरान देशमें इसका व्यवहार अनेकप्रकारसे होताहै, आनन्दपूर्वक प्रसव करनेके लिये और प्रसवके उपरान्त जरायुकी पीडाके लिये ईरानदेशकी स्त्री केशरकी गोलियें अचलमें बाँध रखतीहैं ।

होमियोपैथिकके मतसे रजसबधीय रोगोंमें इसका प्रयोग देखा जाता है।

मात्रा चार रत्तीकी ।

तृणकुङ्कुमनामानि ।

तृणकुङ्कुमतृणास्रगन्धितृणंशोणितञ्चतृणपुष्पम् ।
गन्धाधिकंतृणोत्थतृणगौरलोहितञ्चनवसंज्ञम् ॥

अर्थ-तृणकुङ्कुम, तृणास्र, गन्धितृण, शोणित, तृणपुष्प, गन्धाधिक, तृणोत्थ, तृणगौर और लोहित ॥

अस्यगुणा ।

तृणकुङ्कुमकटूष्णकफमारुतशोफनुत् ।
कण्डूतिपामाकुष्ठामदोषघ्नभास्करपरम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तृणकेशर-चरपरी, गरम, तथा कफ, वात, सूजन, कण्डू, पामा, कोढ और आमको दूर करेहै और दीप्ति करैहै ॥

चन्दननामानि ।

श्रीखडचन्द्रकान्तञ्चगोशीर्पभोगिवल्लभम् ।
भद्रसारमलयजगन्धसारञ्चचन्दनम् ॥

अर्थ-श्रीखण्ड, चन्द्रकान्त, गोशीर्प, भोगिवल्लभ, भद्रसार,मलयज, गन्धसार, चन्दन,(भद्रश्री, एकाग, पटीर,वर्णक, भद्राश्रय, सेव्य, रौहिण, ग्राम्य, सर्पेष्ट, पीतसार, महार्ह, श्वेतचन्दन,तिलपर्ण, मंगल्य, मलयोद्भव, गन्धराज, सुगन्ध, सर्पावास, शीतल, गन्धाढ्य,पावन, शीतगन्ध, तैलपर्णिक,चन्द्रद्युति, भद्रश्रिय, सितहिम, सर्वप्रिय, राजयोग्य) ॥

(ख) (ग)



चंदन



लालचंदन.

हिन्दीभाषामें द्राविडमें	चंदन	
बंगला-मराठी-तैलङ्गीमें	चंदन.	
कर्णाटकीभाषामें	गन्ध.	
गुजरातीभाषामें	सुखड	
अंग्रेजीभाषामें	सेंडल वुड	Sandal wood
लेटिन्भाषामें	सेन्टेलम-आल्बम	Santalum album
फारसीभाषामें	सन्दल सुफेद	
अरबीभाषामें	सन्दले अबियज	

चन्दनलक्षणम् ।

स्वादे तिक्तं कषे पीतं छेदे रक्तं तनौ सितम् ।
ग्रंथिकोटरसंयुक्तं चन्दनं श्रेष्ठमुच्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-स्वादमें कडवा हो, घिसनेमें पीला हो, तोडनेमें लाल हो, देहमें श्वेत हो, और गांठ तथा कोटर करके संयुक्त हो, ऐसा चन्दन श्रेष्ठ होता है ॥

चन्दनगुणाः ।

चन्दनं शीतलं रूक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु ।
श्रमशोषविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहनुत् ॥
(मदनपालनिघण्टुः)

अर्थ–चदन–शीतल, रूक्ष, कडुवा, आनन्दजनक, हलका, हृदयको हितकारी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा विष, कफ, तृषा, पित्तरक्त और दाहको दूर करे है ॥

अपिच ।

श्रीखण्डोयद्वितीयःस्यादतिशीतश्चतिक्तकः ।
दाहपित्तज्वरच्छर्दिमोहतृष्णाविनाशनः ॥
रक्तरुङ्मूत्रकृच्छ्रघ्नःकासांश्चैवविनाशयेत् ॥
(गणनिघण्टु)

अर्थ–दूसरे प्रकारका श्रीखण्ड चदन, अत्यन्तशीतल, कडुवा, तथा दाह, पित्त, ज्वर, छर्दि, मोह और तृषाको दूर करेहै ॥ तथा रक्तरोग, मूत्रकृच्छ्र और खासीका विनाश करेहै ॥


चंदन (सफेत)

अन्यच्च ।

श्रीखण्डःकटुकस्तिक्तोवृष्य शीतकषायकः ।
कान्तिकृत्कामजनकोहृद्यश्चसुरभिर्मतः ॥
आह्लादनोलघूरूक्ष पित्तभ्रान्तिज्वरापहः ।
छर्दितृट्कृमिसन्तापदाहश्रमविनाशनः ॥
मुखरोगरक्तदोपशोपश्चैवविनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-श्रीखण्ड चंदन-चरपरा, कडवा, वीर्यजनक, शीतल, कषेला, कान्तिदायक, कामको उत्पन्न करनेवाला, हृदयको हितकारी, सुगन्धि, आह्लादजनक, हलका, रूखा तथा पित्त, भ्रम, ज्वर, वान्ति, पियास, कृमि, सन्ताप, दाह, श्रम, मुखरोग, रुधिरविकार और शोषका नाश करे है ॥

चन्दनभेदाः ।

चन्दनद्विविधप्रोक्तवेट्टसुक्कडिसञ्ज्ञिकम् ।
वेट्टन्तुसार्द्रविस्फोटंस्वयशुष्कतुसुक्कडि ॥

अर्थ-चंदन, वेट्ट और सुक्कडि इन भेदोंसे दो प्रकारका है तहां गीला और छिद्ररहित वेट्ट चंदन है और स्वय शुष्क सुक्कडि है ।

मलयाद्रिसमीपस्थाःपर्वतावेट्टसञ्ज्ञिकाः ।
तज्जातचदनयत्तुवेट्टवाच्यक्वचिन्मतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मलयाचल पर्वतके निकट जो पर्वत है, उनको वेट्ट कहते हैं उन वेट्ट नामवाले पहाडोंमे चदन उत्पन्न होता है, इसी कारण किन्हीके मतसे वह चदन वेट्ट नामवाला कहलाता है ।

वेट्टचन्दनगुणाः ।

वेट्टचदनमतीवशीतलदाहपित्तशमनज्वरापहम् ।
छर्दिमोहतृपिकुष्ठतिमिरोत्कासरक्तशमनंचतिक्तकम् ॥
(नि० र०)

अर्थ-वेट्ट चदन-अत्यन्त शीतल है तथा दाह, पित्त ज्वर, वमन, मोह, तृषा, कुष्ठ तिमिररोग, खांसी और रक्त रोगको दूर करै और कडवा है ।

सुक्कडिचन्दनगुणाः ।

सुक्कडिश्चदनतिक्तकृच्छ्रपित्तास्रदाहनुत ।
शैत्यंसुगधिदचार्द्रंशुष्कलेपेनदन्यथा ॥ (नि० र०)

अर्थ-सुक्कडि चंदन-कडवा तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तरक्त और दाहको दूर करता है शीतल और सुगन्धिदायक है । यह गुण गीले चदनके हैं और सूखे चंदनके गुण और प्रकारके हैं ।

शम्बरचन्दननामानि ।

केरानन्दलगन्धनलयशम्बरचन्दनम् ॥

अर्थ–करात, वल्लगन्ध, वल्य, शम्बर, चदन, (गधकाष्ठ, कैरातक, शैलगन्ध)।

शम्बरचन्दनगुणाः ।

कैरातकशीतलतिक्तकंचश्लेष्मानिलघ्नश्रमपित्तहारि ।
विस्फोटपामादिकनाशनचतृषापहन्तापविमोहनाशनम् ॥
(रा० नि०)

अर्थ–शम्बरचदन शीतल, कडवा, तथा कफ, वात, श्रम, पित्त, विस्फोटक, पामा, तृषा, ताप और मोहका नाश करे है ।

पीतचन्दननामानि ।

नारायणप्रिय पीत पीताभ हरिचन्दनम् ।
कालीयक पीतकाष्ठ जायक कांतिदायकम् ॥

अर्थ–नारायणप्रिय, पीत, पीताभ, हरिचन्दन, कालीयक, पीतकाष्ठ, जायक, कान्तिदायक, (कालानुसार्य, जावक, कालेय, वर्णद, पीतगन्ध, पीतक, माधवप्रिय, कालेयक, कर्पूर, कालीय, हरिप्रिय, कालसार) हि० कलम्बक, पीलाचदन । व० कलम्बा । लैटिन्‌में० सेन्टेलम् फ्लव ।

अस्य गुणा ।

पीतश्चचदनःशीतस्तिक्त कांतिकरोमतः ।
विचर्चिकाकुष्ठकण्डूकफदद्रुविषापहः ॥ (नि० र०)

अर्थ–पीलाचदन–शीतल, कडवा, कान्तिकारक तथा विचर्चिका, कुष्ठ, कण्डू, कफ, दद्रु, विष, रक्तपित्त, कृमि, व्यङ्ग, पित्त, तृषा, ज्वर और दाहको दूर करे है।

रक्तचन्दननामानि ।

ताम्राभताम्रसारश्चरञ्जनरक्तचन्दनम् ।
रक्तसारताम्रसाररक्तबीजकुचन्दनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ–ताम्राभ, ताम्रसार, रञ्जन, रक्तचदन, रक्तसार, ताम्रसार, रक्तबीज, कुचन्दन, (क्षुद्रचन्दन, तिलपर्णी, पत्राङ्ग, कुमोद, रक्ताक्त, ताम्रवृक्ष, चदन, लोहित, लोहितचन्दन, ताम्रसारक, रक्ताङ्ग, क्षुद्रचदन, अर्कचदन, तिलपर्णिका, पत्तङ्ग, पत्रङ्ग, प्रवालफल, भास्करप्रिय, तिलपर्ण)

हिन्दीभाषामें	लाल चंदन
बंगभाषामें	रक्तचन्दन
मराठीभाषामें	रक्तचन्दन
गुजरातीभाषामें	रतांजली
कर्णाटकीभाषामें	रक्तचन्दन
तैलङ्गीभाषामें	एर्रगन्धपुचेक—रक्तचन्दनम
तामिलीभाषामें	सेन् शाण्डनम
अंग्रेजीभाषामें	रेडसाण्डलवुड् Redsandal wood
लैटिन्भाषामें	टेरोकार्पससेन्टेलम Teracarpus santalum
फारसीभाषामें	संदल सुर्ख
अरबीभाषामें	सन्दलेअहमर

अस्यगुणाः ।

रक्तचन्दनमतीवशीतलं तिक्तमक्षिगदास्रदोषनुत् ।
वातपित्तकफकाससंज्वरभ्रांतिजंतुवमथुतृषापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लालचंदन-अत्यन्त शीतल कडवा, रक्तरोगनाशक, वात, पित्त, कफ, कासज्वर भ्रान्ति, कृमि, वमन और तृषाको शान्त करे है।

अपिच ।

रक्तपित्तहरंबल्यचक्षुष्यंरक्तचन्दनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-लालचंदन-रक्तपित्तनाशक बलकारक और नेत्रोंको हितकारी है।

अपरञ्च ।

रक्तंशीतंगुरुस्वादुच्छर्दितृष्णास्रपित्तहृत् ।
तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-लाल चदन-शीतल, भारी स्वादिष्ट, रक्तपित्तनाशक, वमन निवारक तृष्णाको शान्त करनेवाला, कडवा नेत्रोंको हितकारी, वीर्यजनक तथा ज्वर व्रण और विषको दूर करे है।

पत्रङ्गनामानि ।

पतङ्गंरक्तसारञ्चसुरङ्गंरञ्जनंतथा ।
पट्टरञ्जकमाख्यातंपत्तूरञ्चकुचन्दनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पतङ्ग, रक्तसार, सुरङ्ग रञ्जन पट्टरञ्जक पत्तूर, कुचन्दन, (पतङ्ग,

रक्तकाष्ठ, सुरङ्गद, पत्राण्य, पट्टरङ्ग, भार्यावृक्ष, रक्तक, लोहितरङ्गकाष्ठ, रोगकाष्ठ, पट्टरञ्जनक)

हिन्दी, कर्णाटकी, गुजराती, मराठी–पतङ्ग, पतङ्गवृक्ष ।

वगला–	वकम काष्ठ ।
तैलङ्गीमें–	ओंकनु कट्टु ।
तामिलीमें–	वट्टङ्गी ।
इंग्रेजीमें–	सेप्पनवुड् । Sappan wood
लैटिनमें–	सिसालपिनियासेप्पन् । Cocsalpinia Sappan
फारसी–अरबीमें–	वकम ।

पतङ्गगुणा ।

पत्राङ्गकटुकंरूक्षंमालशीततुगौल्यकम् ।
वातपित्तज्वरघ्नचविस्फोटोन्मादभूतहृत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–पतग–चरपरा, रूखा, खट्टा, शीतल, गौल्य, तथा वात, पित्त, ज्वर, विस्फोटक, उन्माद और भूतनाशक है ॥

अपिच ।

पत्राङ्गस्तिक्तक शीतोरूक्षोम्लोमधुरःकटु· ।
व्रणशुद्धिकरोवर्ण्य·सुगन्धिर्वातपित्तहृत् ॥
उन्मादज्वरविस्फोटमूत्रकृच्छ्रव्रणाञ्जयेत् ।
कफाश्मरीरक्तदोपभूतबाधानिवारण· ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–पतङ्ग–कडवा, शीतल, रूक्ष, अम्ल, मधुर, चरपरा, व्रणशोधक, वर्ण कारक, सुगन्धि तथा वात, पित्त, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृच्छ, व्रण, कफ, पथरी, रुधिरविकार और भूतबाधाको दूर करे है ॥

अपिच ।

हरिचन्दनवद्वेद्यविशेपाद्दाहनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–पतङ्गके गुण और पीले चदनके गुण समान जानने किन्तु विशेप करके दाहको दूर करे है ।

बर्बरचन्दननामानि ।

बर्बरोत्थबर्बरकश्वेतबर्बरकतथा ।
शीतसुगन्धिपित्तारि·सुरभिश्चेतिसप्तधा ।

अर्थ-वर्बरोत्थ, वर्बरक, श्वेतवर्बरक शीत, सुगन्धि, पित्तारि सुरभि. (वर्बरोद्भव)

बर्बरगुणा ।

बर्बरंशीतलतिक्तकफमारुतपित्तजित् ।
कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्तिविशेषाद्रक्तदोषजित् । (राजनिघण्टु)

अर्थ-बर्बरचन्दन-शीतल, कडवा, तथा कफ वात, पित्त, कुष्ठ कण्डू और व्रणनाशक है । विशेषकरके रुधिर विकारको दूर करें है ।

हरिचन्दननामानि ।

हरिचन्दनंसुरार्हं हरिगन्धंचन्द्रचदनदिव्यम् ।
दिविजंचमहागन्धनन्दनजलोहितजनवसञ्ज्ञम् ॥

अर्थ-हरिचन्दन-सुरार्ह, हरिगन्ध, चन्द्रचदन दिव्य, दिविज महागन्ध, नन्दनज, लोहितज ।

हरिचन्दनगुणा ।

हरिचन्दनतुदिव्यंतिक्तहिमंतदिहदुर्लभमनुजे ।
पित्ताटोपविलेपिचन्दनवच्छ्रमहरचशोषहरम् ॥
(रा० नि०)

अर्थ-हरिचन्दन-दिव्य, कडवा, शीतल तथा पित्त, आटोप भ्रम [वमन, मन्दाग्नि, मेदोदोष] नाशक है ॥ और सामान्य चन्दनकी समान श्रम तथा शोषको दूरकरे है । यह चन्दन मनुष्योंको मिलना दुर्लभ है ।

चन्दनानिसमानानिरसतोवीर्यतस्तथा ।
भिद्यन्तेकिन्तुगन्धेनतत्राद्यगुणवत्तरम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सर्वप्रकारके चन्दन रस और वीर्यमें समान है । किन्तु आदिका अर्थात् श्रीखण्ड चदन गन्ध चदनोंकी अपेक्षा सुगन्धिमें अधिक गुणवाला है

विवरण-चन्दनकी अनेक जाति है श्रीखण्डचन्दन १ पीतचन्दन २ रक्त चन्दन ३ सारचन्दन ४ पतंगचन्दन ५ बर्बरचन्दन ६ और हरिचंदन ७ । इन सात जातिके चंदनोंमें सफेद चंदन सर्वोत्कृष्ट है ।

अगरनामानि ।



अगरुक्रिमिजलोहराजार्हवंशिकलघु ।
लोहाख्यजोङ्गकश्चापिकृष्णवर्णप्रसादनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–अगरु, कृमिज, लोह, राजार्ह, वंशिक, लघु, लोहाख्य, जोङ्गक कृष्ण, वर्णप्रसादन, (कृमिज, अगरु, वंशक, पिच्छिल, भृङ्गज, पातक, अनार्यक, अनार्यज, अमार, अग्निकाष्ठ, कृमिन्ध, काष्ठक, प्रवर, योगज) हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तामिली इत्यादि सब भाषाओंमें "अगर" नामसेही प्रसिद्ध है ।

तेलङ्गीभाषामें	हरुगुहचेट्टु ।	
इंग्रेजीभाषामें	इगल्वुड ।	Eagle wood
लेटिन्भाषामें	एक्वीलेरिया । एगेलोका ।	Aquilaria Agallocha
अरबीभाषामें	उदगर्की ।	
फारसीभाषामें	कश्ववेवा ।	

अगुरुगुणाः ।

अगुरूष्णं कटु त्वच्यं तिक्तं तीक्ष्णं च पित्तलम् ।
लघु कर्णाक्षिरोगघ्नं शीतवातकफप्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगर-गरम चरपरा, त्वचाको हितकारक, कडवी, तीक्ष्ण, पित्तजनक, हल्की तथा कर्णरोग नेत्ररोग, शीत, वात और कफनाशक है ।

अपिच ।

अगुरुस्तु सुगंधिः स्यादुष्णस्तिक्तः कटुः स्मृतः ।
स्निग्धो मंगलदो रुच्यो धूपयोग्यश्च पित्तलः ॥
तीक्ष्णो वातकफौ हन्ति कर्णनेत्ररुजापहः ॥
कुष्ठनाशकरः प्रोक्तो लेपे चोद्वर्त्तने शुभः ॥ (नि० र०)

अर्थ-अगर-सुगंधि, गरम तिक्त कटु, स्निग्ध, मंगलदायक, रुचिकारी, धूपके योग्य, पित्तजनक तीक्ष्ण तथा वात कफ, कर्णरोग और कोढका नाश करै है । लेपन और उबटनमें श्रेष्ठ है ।

अगरुप्रभवः स्नेहः कृष्णागुरुसमः स्मृतः ।

अर्थ-अगरका तेल कृष्णागुरुके समान गुणवाला है ।

कृष्णागरुनामानि ।

कृष्णागरु स्याद्वसुकं मंगल्यं निश्वरूपकम् ॥

अर्थ-कृष्णागर-वसुक, मंगल्य, विश्वरूपक (काकतुण्ड, भृंग, शृंगार-शीर्ष, कालागरु, केन्द्र, कृष्णकाष्ठ, धूपार्ह, वासर, विश्ववर्ण, गन्ध, गजार्ह, शीतमल्लि, ओंगर कृमिजाग्ध और भजक)

कृष्णागरुगुणाः ।

कृष्णागरु कटूष्णं च तिक्तं लेपे च शीतलम् ।
[illegible] मधु[illegible] ॥ (गरु[illegible]

अर्थ-कालागर-कटु, उष्ण, कडवी [illegible] पनिर्म[illegible]
और विशेष मदमें विशेषनाशक है ।

[illegible]

[illegible]

अर्थ-[illegible] लेपमें [illegible]

दाहागरुनामानि ।

दाहागरुदहनागरुदाहककाष्ठञ्चवह्निकाष्ठञ्च ।
धूपागरुतैलागरुपुरञ्चपुरमथनवल्लभंचैव ॥

अर्थ-दाहागरु, दहनागरु, दाहककाष्ठ, वह्निकाष्ठ, धूपागरु, तैलागरु, पुर और पुरमथनवल्लभ ।

दाहागरुगुणा ।

दाहागरुकटुकोष्णकेशानांवर्द्धनञ्चवर्ण्यञ्च ।
अपनयतिकेशदोषानातनुतेसततञ्चसौगन्ध्यम् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-दाहागरु-चरपरी, गरम, केशवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, केशोंके दोषोंको हरनेवाली और निरन्तर सुगधिदायक है ।

मङ्गलागरुनामानि ।

मङ्गल्यामल्लिकागन्धमङ्गलागरुवाचका ॥

अर्थ-मङ्गल्या, मल्लिका, गन्धमङ्गला और जितने अगरके नामहैं, सन इसके भी जानने ।

मङ्गलागरुगुणा ।

मङ्गल्यागुरुशिशिरागन्धाढ्यायोगवाहिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मङ्गलागरु-शीतल, गन्धवाली और योगवाही है ।

विवरण । आसामके पहाडी जगल और प्रशात सागरके टापुओंमे इसका वृक्ष होता है, शाखा कभी सीधी उत्पन्न नहीं होती ।

अगर अनेक प्रकारकी होतीहै, उनम काली अगरही उत्तम और वैद्यकमे कहीहुई औषधियोंके साथ व्यवहार कीजाती है, यह भारी होनेके कारण जलमें डूबजातीहै और नरम ऐसी होतीहै कि, दांतोंमे रखकर खानेमें चिपट जाती है, इसको पीसकर जलानेसे सुगन्धि निकलतीहै, कारी अगरकी समान और अगरमे ऐसी सुगन्धि नहीं आती ॥

व्यवहार । इसका झादर अनेक प्रकारके तेलोंमे व्यवहार किया जाताहै और इसके वृक्षका गोंद वातरोगमे लेप करनेके लिये विलायतके मनुष्य काम में लातेहैं ।

देवदारुनामानि ।

सुरदारुद्रुकिलिमभद्रदारुसुराह्वयम् ।

देवकाष्ठञ्चपित्तद्रुदेवदारुचभद्रवत् ॥

अर्थ-सुरदारु, द्रुकिलिम, भद्रदारु, सुराह्व, देवकाष्ठ, पितद्रु देवदारु, भद्र वद्र,(शतपादप, पारिभद्रक, पीतदारु, दारु, पूतिकाष्ठ, कान्तपादप, किलिम, दारुक, स्निग्धदारु, अमरदारु, शिवदारु, शाम्भव, भूतहारि,भवदारु, रुद्रद्रुम, इन्द्रवृक्ष, सुराह्वय, दारुभद्र, इन्द्रदारु मस्तदारु, सुरभूरुह, देववृक्ष सुरद्रुम, सुरदारु और सुरकाष्ठ)

हिन्दीभाषामें	देवदारु।
बङ्गभाषामें	देवदारु।
मराठीभाषामें	तेल्यादेवदारु।
गुजरातीभाषामें	देवदार।
कर्णाटकीभाषामें	चोपडादेवदारु, काष्ठदेवदारु।
तैलङ्गीभाषामें	देवदारुचेका।
लेटिनभाषामें	सिड्रसदेवदोरा Cedrus Deodara
फारसीभाषामें	देवदार।
अरबीभाषामें	शजर सुरजीन।
इंग्रेजीभाषामें	पाइनसडीयोडरा।

देवदारुगुणाः।

देवदारुलघुस्निग्धतिक्तोष्णकटुपाकिच।

विबन्धाध्मानशोथामतन्द्राहिक्काज्वरास्रजित् ॥

प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकण्डूसमीरनुत ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-देवदारु-हलका स्निग्ध कडवा, गरम, पाकमें चरपरा, तथा विबन्ध अफरा शोथ, आम, तन्द्रा हिचकी, ज्वर, रक्तविकार, प्रमेह पीनस, कफ खांसी खाज और वातनाश करनेवाला है।

देवदारुभेदाः।

देवदारुद्विधाज्ञेयतत्राद्यस्निग्धदारुकम्।

द्वितीयकाष्ठदारुस्यादुभयोर्नामान्यभेदतः॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-देवदारु दो प्रकारका है, पहिला स्निग्धदारु और दूसरा काष्ठदारु।

स्निग्धदारुगुणाः।

स्निग्धदारु कटु पाके स्निग्धोष्णास्तिक्तलघु।

कफवातप्रमेहार्शोमलस्तम्भामदोषहा ॥
ज्वराध्मानश्वासकासशोथकण्डूविनाशकः ।
हिक्कातंद्रारक्तदोषंपीनसचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–स्निग्धदेवदारु–पचनेमें चरपरा, चिकना, गरम, कडवा, हलका तथा कफ, वात, प्रमेह, ववासीर, मलस्तम्भ, आमदोष, ज्वर, अफारा, श्वास, खासी, सूजन, खुजली, हिचकी, तन्द्रा, रुधिर विकार और पीनसको दूर करेहै ।

काष्ठदारुगुणा ।

देवकाष्ठमतचोष्णंतिक्तंरूक्षंकफापहम् ।
वातंचभूतबाधांचलेपाद्व्यङ्गविनाशनम् ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ–काष्ठदारु–गरम, कडवा, रूखा, तथा कफ, वातरोग और भूतबाधाको दूर करेहै । इसका लेप करनेसे व्यङ्ग (झाई) दोष दूर होताहै ।

विवरण–बडा वृक्ष होताहै, इसकी दो जाति हैं एकमें तेलकेसमान चिकनाईसी होतीहै, दूसरेमें रूखापन होताहै ॥ (व्यवहारपचाग)

चीडानामानि ।

चीडाचदारुगन्धागन्धवधूर्गंधमादनीतरुणी ।
ताराचभूतमारीमङ्गल्याख्याकपाटिनीग्रहजित् ॥
(राजनिघटु)

अर्थ–चीडा–दारुगन्धा, गन्धवधू, गन्धमादनी, तरुणी, तारा, भूतमारी, मङ्गल्या, कपाटिनी, ग्रहजित् ।

चीडागुणा ।

चीडाकटुष्णाकासघ्नीकफजिद्दीपनीपरा ।
अत्यन्तसेवितासातुपित्तदोषश्रमापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–चीड–गरम, कासनाशक, चरपरी, कफको दूर करे, अग्निको दीपन करे, इसका अत्यन्त सेवन करनेसे पित्त और श्रम दूर होताहै ।

सरलनामानि ।

सरल'पूतिकाष्ठश्चमनोज्ञोधूपवृक्षक ।

अर्थ–सरल, पूतिकाष्ठ, मनोज्ञ, धूपवृक्षक, (पीतद्रु धूपवृक्षक पीतदारु,

मद्रद्राक, धूपवृक्ष, पीत, स्निग्धदारुसार, त्रिप, मीनपतत्रक, पीतद्रुम, सुरभिदारुक)

हिन्दीभाषामें	धूपसरल ।
बङ्गभाषामें	सरलगाछ, तार्पिनतेलगाछ, सरलकाष्ठ ।
कर्णाटकीभाषामें	सरलदेवदारुविशेष ।
तैलङ्गीभाषामें	सरलदेवदार चेट्टु ।
तामिळभाषामें	सरलदेवदारी ।
गुजरातीभाषामें	सरलदेवदार ।
मराठीभाषामें	सरलदेवदार ।
इंग्रेजीभाषामें	लोग लिवु पाईन । Long leved pine
लैटिनभाषामें	पाईनस-लोंगिफोलिया । Pinus longifolia

सरलगुणाः ।

सरलोमधुरस्तिक्तः कटुपाकरसोलघुः ।
स्निग्धोष्णःकर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरः स्मृतः ॥
कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–सरल–मधुर, तिक्त, पाक और रसमें कटु, हलका, स्निग्ध, उष्ण तथा कर्णरोग, कण्ठरोग, नेत्ररोग, कफ, वात, पसीना, दाह, श्वास, मूर्च्छा और व्रणको दूर करैहै ।

अपिच ।

सरलः कटुतिक्तोष्णः कफवातविनाशनः ।
त्वग्दोषशोफकण्डूतिव्रणघ्नः कोष्ठशुद्धिदः ॥ (रा० नि०)

अर्थ–सरल–चरपरा, कडवा, गरम, कफ वात नाशक, तथा त्वचाके रोग सूजन खाज और व्रणका नाश करैहै । और कोठेको शुद्ध करैहै ।

अन्यच्च ।

सरलः कटुतिक्तोष्णोऽन्यः श्लेष्मानिलापहः ।
भूतदोषापहोरक्तोल्लिनोऽङ्गपुष्टकान्तिदः ॥ (धन्वि०)

अर्थ–सरल–चरपरा, कडवा, गरम, तथा कफ, वात, भूतबाधा और रक्तविकारको दूर करैहै । इसका अंगमें लेप करनेसे पुष्टि करताहै ।

अपिच ।

सरलोमधुरस्तिक्तोरसेपाकेकटुर्लघु. ।
स्निग्धश्चोष्ण'कर्णनेत्रकण्ठरोगविनाशन' ॥
कफवातश्चयूकाश्चकासस्वेदंव्रणतथा ।
रक्षोबाधामलक्ष्मीचनाशयेदितिकीर्त्तित. ॥ (रा० नि०)

अर्थ–सरल–मधुर, कडवा, रसमे तथा पाकमें चरपरा, हलका, स्निग्ध, गरम तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, कण्ठरोग, कफ, वात, जूएँ, खासी, पसीना, घाव, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करेहै।

विवरण । इसका बडा वृक्ष हिमालयमें होताहै, उसके भीतरसे गोंदकी समान रस निकलताहै, उसको चद्ररस कहतेहैं ।

तगरनामानि ।

कालानुसार्यंतगरंकुटिलंलघुपनतम् ।
अपरंपिण्डतगरंदण्डहस्तिचबर्हणम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–कालानुसार्य, तगर, कुटिल, लघुप, नत । (जिह्म, दीपन, कालानुसारिवा, वक्र, कुञ्चिन, चक्र, शठ, महोरग, दीपन, तगर, पादिक, विनम्र नहुपाख्य, दीन) दूसरा पिण्डतगर होताहै, उसके नाम यह हैं । पिण्ड तगर, दण्ड, हस्ति, बर्हण, (दण्डहस्त, पिण्डीतगरक, पार्थिव, राजहर्षण, कालानुसारक, क्षत्र)

हिन्दीभाषामें	तगर ।
वङ्गभाषामें	तगरपादुका ।
मराठीभाषामें	गोढेतगर ।
गुजरातीभाषामें	तगर ।
कर्णाटकीभाषामें	तगर ।
तैलङ्गीभाषामें	गन्धितगरपु चेट्टु, नदिवर्द्धनचेट्टु ।
उत	पाणिफ्लग ।
नेपालीभाषामें	चम्मा ।
लैटिनभाषामें वेलिरीआना ।	हार्डविकिआई । Valeriana Hardwickii
अरबीभाषामें	अशारुन ।

तगरगुणा' ।

तगरद्वयमुष्णंस्यात्स्वादुस्निग्धलघुस्मृतम् ।

मराठीभाषामें	म्हैसीगुग्गुळ गुगुळ ।
कर्णाटकीभाषामें	इडबोल ।
तैलङ्गीभाषामें	गुग्गिलमुचेट्टुमहिषाक्षी ।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियन डेलियम । Indian Bdellium
लेटिनभाषामें	बालसमोडेन्ड्रन रक्सबर्घिआई । बाल्सम ओडेन्ड्रन मुकुल Balsamodendron Roxburghii B. Mukul
फारसीभाषामें	बोएजहूदान ।
अरबीभाषामें	मुक्लेअर्जक

गुग्गुलोर्महिषाक्षादिलक्षणम् ।

महिषाक्षोमहानीलःकुमुदःपद्मइत्यपि ।
हिरण्यःपञ्चमोज्ञेयोगुग्गुलोःपञ्चजातयः ॥
भृङ्गाञ्जनसवर्णस्तुमहिषाक्षइतिस्मृतः ।
महानीलस्तुविज्ञेयः स्वनामसमलक्षणः ।
कुमुदः कुमुदाभःस्यात्पद्मोमाणिक्यसन्निभः ।
हिरण्याक्षस्तुहेमाभःपञ्चानांलिङ्गमीरितम् ॥
महिषाक्षोमहानीलोगजेन्द्राणांहितावुभौ ।
हयानांकुमुदःपद्मःस्वस्त्यारोग्यकरौपरौ ॥
विशेषेणमनुष्याणांकनकःपरिकीर्तितः ।
कदाचिन्महिषाक्षश्चमतःकश्चिन्नृणामपि ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-महिषाक्ष महानील, कुमुद, पद्म, और हिरण्य इन भेदोंसे गूगल पांच प्रकारका है। उनमें महिषाक्ष गूगल-भौंरेके रंगके समान चीकने और अञ्जनके सदृश वर्णवाला होताहै। महानीलगूगल-अत्यन्त नीले रंगका होता है। कुमुद गूगल-कुमुदके फूलके समान वर्णवाला होता है। पद्मगूगल-माणिक्यके समान लाल रंगका होताहै। हिरण्याक्षगूगल-हेमके समान रंगवाला होता है। महिषाक्ष और महानील गूगल हाथियोंके लिये हितकारी है, घोड़ोंको आरोग्य करनेवाला कुमुद और पद्मगूगल है और मनुष्योंके लिये हिरण्याक्ष गूगल अत्यन्त उपकारी है। कोई कोई ऐसाभी कहते हैं कि मनुष्योंके लिये कहीं कहीं महिषाक्ष गूगलभी हितकारी है।

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुकी-

विषयानुक्रमणिका ।



हरीतक्यादिवर्गः।

फलवर्ग ।

जायफलको पकाकर अर्क निकाल लियाजाताहै इस अर्कसे हैजेकी पियास दूर होतीहै ।

जावित्रीकी मात्रा साढेतीन ३॥ मासेकीहै ।

स्थूलैलानामानि ।



एलास्थूलैलाबहुलामालेयाताडकीफलम् ।

अर्थ–एला, स्थूलैला, बहुला, मालेया, ताडकीफल, (स्थूला, बृहदेला, त्रिपुटा, निदिवोद्भवा, सुरभित्वक्, महिला, कन्या–कुमारी, कुमारिका, पृथ्वी, गोपुटा, कायस्था, कान्ता, घृताची, भद्रैला, गर्भसम्भवा, इन्द्राणी, ऐन्द्री, दिव्यगन्धा, निष्कुटी, निष्कादि, चर्मसम्भवा, वाला, वल्वती, एलीका सागरगामिनी, गन्धालीगर्भ और महेला)

हिन्दीभाषामें	वडी इलायची, इलायची, पूर्वी इलायची, लालइलायची ।
वंगभाषामें	एलाइच । वड इलाइच ।
मराठीभाषामें	थोरवेला । वेल्दोडे ।
गुजरातीभाषामें	मोठी एलची । एलचा ।
कर्णाटकीभाषामें	पग्ड्लक्की ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्द एलक्कुल्लु । एलुक्काचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	एलम् ।
इंग्रेजीभाषामें	लार्ज–कोडामोम । Large Cardamom
लेटिन्भाषामें	एमोम सुब्युलेटम् । Amomum Sukhulatum
फारसीभाषामें	हेल कला ।
अरबीभाषामें	काकरे किवार ।

स्थूलैलागुणा ।

स्थूलैलारक्तपित्तघ्नीवमिशुक्राश्मजिद्धिमा ।
तृष्णाहृल्लासकण्डूघ्नीपित्तश्लेष्मामयापहा॥(रा० नि०)

अर्थ-बडीइलायची-रक्तपित्तनाशक, वमननिवारक, शुक्रनाशक, पथरीको दूर करनेवाली, शीतल तथा तृषा हल्लास, कण्डू, पित्त और कफरोगको हरनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

स्थूलैलारोचनीतीक्ष्णालघूष्णाकफवातजित् ।
सुगंधि·पाचिकाशीताचाग्निदीप्तिकरीमता ॥

अर्थ-बडी इलायची-रुचिकारक, तीक्ष्ण, हलकी, गरम, कफवातनाशक, सुगन्धि, पाचक, शीतल और अग्नि दीपन करनेवाली है ।

अपिच्च ।

स्थूलैलाकटुकापाकेरसेचानलकृल्लघु· ।
रूक्षोष्णाश्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषापहा ॥
हृल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ॥ (भा०)

अर्थ-बडीइलायची-पाक और रसमें चरपरी है । अग्निजनक है हलकी है, रूखी और गरम है तथा कफ, रक्त, पित्त, कण्डू, श्वास, तृषा, हल्लास, विष, वस्तिरोग, मस्तरोग, शिरोरोग, वमन और कासका नाश करे है ॥

अन्यच्च ।

स्थूलैलाकटुकारूक्षाकोष्ठबन्धतृट्शूलनुत् । (क्वचित्)

अर्थ-बडी इलायची-चरपरी, रूखी तथा कोष्ठबद्धता, पिपास और शूलको निर्मूल करे है ।

सूक्ष्मैलानामानि ।



वय स्थातीक्ष्णगधाचसूक्ष्मैलाद्राविडित्रुटि· ।

अर्थ-वयस्था, तीक्ष्णगन्धा, सूक्ष्मैला, द्राविडि, त्रुटि, (उपकुञ्चिका,

कोरगी, भृगपर्णिका, उपकुञ्चिका, तुल्या, त्रिपुटा, क्षुद्रैला, त्रिपुटी, छर्दिकारिपु, त्वचिसुगन्धा, पुटिका, चन्द्रसम्भवा, कपोतवर्णी, दिवोद्भवा, चन्द्रवाला, बहुला, निष्कुटि, कुनटी, गौरागी, गर्भारा, गन्धफलिका, सुगन्धि चन्द्रिका और श्वेतैला)

हिन्दीभाषामें	छोटी इलायची, गुजराती इलायची, सफेद-इलायची।
बंगभाषामें	छोटएलाच-गुजराती एलाइच।
मराठीभाषामें	वेलची।
गुजरातीभाषामें	एलचीकागदी।
तैलिंगीभाषामें	एलाकु, चिल्लयालकुलु-एल्लकप।
द्राविडीभाषामें	एलोकुलुकापु।
इंग्रेजीभाषामें	शिलिसर, कार्डामोम्। Sheleser, Cardamo
लैटिन्भा०	इलेटिरिया कार्डामोम Eleteria, Cardamomam
फारसीभाषामें	हैल, हिल, हाल।
अरबीभाषाम	काकिलेसिगार।

अस्यागुणाः।

एलासूक्ष्माकफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत्।
रसेतुकटुकाशीतालघ्वीवातहरामता॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-छोटी इलायची-कफ, कास, श्वास, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाशकरे है, रसमें चरपरीहै, शीतलहै, हलकीहै और वातविनाशकहै।

अन्यच्च।

त्रुटिस्तिक्ताचशीताचरसेकट्वीलघुःस्मृता।
सुगंधिःपित्तलाचैवमुखमस्तकशोधिनी॥
गर्भपातकरीरूक्षावातश्वासकफापहा।
कासार्शःक्षयविषरुग्वस्तिकंठरुजंहरेत्।
मूत्राश्मरींव्रणकण्डूनाशयेदितिकीर्तिता॥ (नि० र०)

अर्थ-गुजराती इलायची-कडवी, शीतल, रसमें चरपरी, हल्की, सुगन्धी, पित्तजनक, मुख और मस्तकको शोधनेवाली है, गर्भको गिरानेवालीहै, रूखीहै तथा वात, श्वास, खासी, बवासीर, क्षयरोग, विषविकार, बस्तिरोग, कण्ठरोग, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, घाव, और खुजलीका नाशकरेहै।

द्विविधा एलागुणाः ।

एलाद्वयंशीतलतिक्तमुष्णंसुगंधिपित्तार्त्तिकफापहारि ।
करोतिहृद्रोगमलार्तिवस्तिपुंस्त्वघ्नमत्रस्थविरोगुणाढ्यः ॥
(रा० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी इलायची-शीतल, चरपरी, गरम, सुगंधि, पित्तरोगको शांतिकर, कफका नाशकर, हृद्यरोगको उत्पन्नकर, तथा मल, वस्तिरोग, पुंस्त्व (पुरुषता) नाशक है । इन दोनोंमें बडी इलायची अधिक गुणवाली है ।

विवरण-छोटी इलायचीका क्षुप अदरखकी समान होताहै, फूल सफेद, और लाल इलायचीके सुगन्धकी समान होतेहैं । इसके बीज काले और रसभरे होतेहैं ।

मात्रा बडी इलायचीकी १॥ मासे, छोटी इलायचीकी १ मासे ।

कङ्कोलनामानि ।



कङ्कोलवृ

ककोल, माधवोचित, कट्फल, काल, मरिच, कटुक, कोल, मारिच, मारवोपित, कृतफल, द्वीपसम्भव और सुगन्धिफल)

हिन्दीभाषामें	शीतलचीनी-कवावचीनी, चिनीकवाव, ककोला ।
वंगभाषामें	काकला ।
मराठीभाषामें	ककोळ, कापुरचीनी ।
गुजरातीभाषामें	चणकनाव ।
कर्णाटकीभाषामें	कक्कोलद्वय ।
तैलिङ्गीभाषामें	कवाकचीनी ।
इङ्ग्रेजीभाषामें	क्युवेव पेपर । Cubeb Pepper
लैटिनभाषामें	क्यूवेबा ऑफ़िसिनेलिस । Cubeba, Officinalis
फारसीभाषामें	कवावह ।
अरवीभाषामें	कवास, हेवुल, ऊरस, कवावा ।

अस्य गुणाः ।

कंकोललघुतीक्ष्णोष्णंतिक्तहृद्यरुचिप्रदम् ।
आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयांध्यहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—शीतलचीनी—हलकी, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, हृदयको हितकारी, रुचिदायक तथा मुखकी दुर्गन्धता, हृदयरोग, कफ, वात और नेत्ररोगको दूर करैहै ।

अपिच ।

ककोलकटुकतिक्तमुष्णदीपनपाचकम् ।
रुच्यंसुगन्धिहृद्यचलघुचकफनाशकम् ॥
मुखजाड्यवातरोगहृद्रोगचकृमीस्तथा ।
अन्धत्वमुखदौर्गन्ध्यमामचैवाग्निमांद्यकम् ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तमृषिभि सूक्ष्मदर्शिभिः ।
एतेगुणास्तुसुवृहत्कक्कोलस्यसमीरिता ॥

अर्थ—शीतलचीनी—चरपरी, कडवी, गरम, दीपन, पाचन, रुचिकारी, सुगन्धि, हृदयको हितकारी, हलकी, कफनाशक तथा मुखकी जडता, वातरोग, हृदयरोग, कृमि, अन्धापन, मुखकी दुर्गन्धता और मन्दाग्निको नाश करैहै, बडी शीतलचीनीके गुण इसीके समान जानने ।

द्विविधा एलागुणाः ।

एलाद्वयंशीतलतिक्तमुष्णंसुगंधिपित्तार्त्तिकफापहारि ।
करोतिहृद्रोगमलार्तिवस्तिपुंस्त्वघ्नमत्रस्थविरोगुणाढ्यः ॥
(रा० नि०)

अर्थ–दोनों प्रकारकी इलायची–शीतल, चरपरी, गरम, सुगंधि, पित्तरोगको शांतिकर्त्ता, कफका नाशकर्त्ता, हृदयरोगको उत्पन्नकर्त्ता, तथा मल वस्तिरोग, पुंस्त्व (पुरुषता) नाशक है । इन दोनोंमें बडी इलायची अधिक गुणवाली है ।

विवरण–छोटी इलायचीका क्षुप अदरखकी समान होताहै, फूल सफेद, और लाल इलायचीके सुगन्धकी समान होतेहैं । इसके बीज काले और रसभरे होतेहैं ।

मात्रा बडी इलायचीकी १॥ माशे, छोटी इलायचीकी १ माशे ।

पद्मोऽएनामानि ।



कङ्कोलकंकोपफलंकोलकंतैलसाधनम् ।

अर्थ–कंकोल [illegible] कैलसाधन, ([illegible]
[illegible]

कंकोल, माधवोचित, कटुफल, काल, मरिच, कटुक, कोल, मागिच, मागधोपित, कृतफल, द्वीपसम्भव और सुगन्धिफल)

हिन्दीभाषामें	शीतलचीनी-कवावचीनी, चिनीकवाव, ककोला ।
वंगभाषामें	काकला ।
मराठीभाषामें	ककोळ, कापुरचीनी ।
गुजरातीभाषामें	चणकवाव ।
कर्णाटकीभाषामें	कंकोलद्वय ।
तैलिङ्गीभाषामें	कवाकचीनी ।
इंग्रेजीभाषामें	क्युबेव पैपर । Cubeb Pepper
लैटिनभाषामें	क्यूबेबा ऑफिसिनेलिस । Cubeba, Officinalis
फारसीभाषामें	कवाबह ।
अरबीभाषामें	कवास, हेबुल, ऊरस, कबाबा ।

अस्य गुणाः ।

कंकोललघुतीक्ष्णोष्णतिक्तहृद्यरुचिप्रदम् ।
आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयांध्यहृत् ॥ (भा०प्र०)

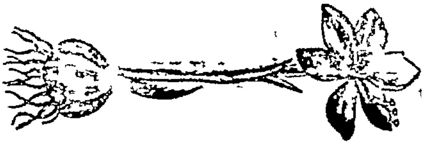
अर्थ-शीतलचीनी-हलकी, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, हृदयको हितकारी, रुचिदायक तथा मुखकी दुर्गन्धता, हृदयरोग, कफ, वात और नेत्ररोगको दूर करैहै ।

अपिच ।

ककोलकटुकतिक्तमुष्णदीपनपाचकम् ।
रुच्यसुगन्धिहृद्यचलघुचकफनाशकम् ॥
मुखजाड्यवातरोगहृद्रोगचक्रमीस्तथा ।
अन्धत्वमुखदौर्गन्ध्यमामचैवाग्निमांद्यकम् ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तमृषिभि सूक्ष्मदर्शिभि ।
एतेगुणास्तुसुबृहत्ककोलस्यसमीरिता ॥

अर्थ-शीतलचीनी-चरपरी, कडवी, गरम, दीपन, पाचन, रुचिकारी, सुगन्धि, हृदयको हितकारी, हलकी, कफनाशक तथा मुखकी जडता, वातरोग, हृदयरोग, कृमि, अन्धापन, मुखकी दुर्गन्धता और मदाग्निको नाश करैहै, बडी शीतलचीनीके गुण इसीके समान जानने ।

नागकेशरनामानि ।



चाम्पेयः केसरो नागकेशरः कनकाह्वयः ।
महौषधं राजपुष्पः फलकः स्वरघातनः ॥

अर्थ-चाम्पेय, केसर, नागकेशर, कनकाह्वय, महौषध राजपुष्प, फलक, स्वरघातन (केशर, काञ्चनाह्वय, सुवर्णाख्य, सुजङ्गाख्य, पद्मपद्मप्रिय, इभाख्य, पुष्परेचन, नागाख्य, सुवर्णाख्य, नागकेशर, केसरी किञ्जल्क, नागकिञ्जल्क, नागीय, काञ्चन, सुवर्ण, हेमकिञ्जल्क रुक्म, हेम, पिञ्जर, फणिकेशर, पुन्नागकेशर, नागपुष्प, नाग)

हिन्दी भाषामें	नागकेशर ।
बंग भाषामें	नागेश्वर ।
मराठी भाषामें	नागकेशर । तांबडा नागकेशर ।
गुजराती भाषामें	नागकेशर ।
कर्णाटकीभाषामें	नागकेशर ।
तैलिंगीभाषामें	नागकेशराव ।
तामिली भाषामें	नागल ।
बम्०	नागचम्प ।
लैटिनभाषामें	ओक्रोकार्पस लॉंगिफोलियम मेस्वआफेरिया Ocrocarpuslongifolium Mesuoferrea
अरबीभाषामें	नागपुष्प ।

अस्यगुणाः ।

नागपुष्पं कषायोष्णं रूक्षं लघ्वामपाचनम् ।
ज्वरकण्डूतृषास्वेदच्छर्दिहृल्लासनाशनम् ॥
दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-नागकेशर-कसैली गरम, रूखी हलकी, आमपाचक तथा ज्वर खुजली पियास पसीना वमन उबकाई, दुर्गंध कोढ़ विसर्प कफ पित्त और विषको दूर करेहै ।

अपिच ।

नागकेशरकंतिक्तंकषायचामपाचकम् ।
किञ्चिदुष्णंलघुरूक्षपित्तच्छर्दिकफापहम् ॥
खुडवातंरक्तरुजंवातकण्डूचहृद्व्यथाम् ।
स्वेददौर्गन्ध्यविषतृट्कुष्ठवीसर्पनाशनम् ॥
वस्तिपीडावातरक्तकण्ठमस्तकशूलनुत् । (नि० र०)

अर्थ-नागकेशर-कडवी, कषेली, आमपाचक, किञ्चित् गरम, रूखी, हलकी तथा पित्त, वान्ति, कफ, खुडवात, रुधिररोग, वात, कण्डू, हृदयकी पीडा, पसीना, दुर्गन्ध, विष, तृषा, कोढ, विसर्प, वस्तिपीडा, वातरक्त, कण्ठरोग और मस्तकशूलका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

केसरविषवीसर्परक्तार्शोवमिकुष्ठहृत् ।
हृल्लासखुडदौर्गन्ध्यतृष्णापित्तबलासजित् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-नागकेशर-विष, विसर्प, रक्तरोग, अर्श, वमन, कुष्ठ, हृल्लास, वातरक्त, दुर्गन्ध, तृषा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुन्नागवृक्षकी केशरको और नागचपाकी कलीको नागकेशर कहते हैं, इसकी दो जाति हैं, कोकण, गोवाकी ओरसे आती है ।

त्वचगुडत्वचनामानि ।



भृङ्गं वरांगरामेष्टंविज्जुलत्वचमुत्कटम् ।
चोलगुडत्वचपत्रचोचंसुरभिवल्कलम् ॥

अर्थ-भृंग, वराङ्ग, रामेष्ट, विज्जुल, त्वच, उत्कट, चोल, गुडत्वच, पत्र, चोच, सुरभिवल्कल (सुतकट, त्वक्पत्र, वरागक, त्वचा, हृद्य, त्वक्, वल्कल, मुखशोधन, शकल, सिंहल, वल्य, सुरस, कामवल्लभ, भद्रगन्ध, वनप्रिय, लटपर्ण, गन्धवल्कल, वर, शीत, त्वक्पत्र, सैंहल, रामवल्लभ, तनुत्वक् दारुसिता)

हिन्दीभाषामें	तज-दालचीनी ।
बंगभाषामें	दारुचिनी ।
मराठीभाषामें	दालचिनी ।
गुजरातीभाषामें	तज ।
कर्णाटकीभाषामें	तज ।
तैलिङ्गीभाषामें	सर्नालिंगु । दाल्चीनी, सनाल लींगपुता ।
तामिलीभाषामें	कान्खा पट्ट उपट्टाई ।
इंग्रेजीभाषामें	सिन्नामल बार्क Cinnamon Bark
लेटिन्भाषामें	सिन्नामोमी कार्टेक्स । [छाल]
	सिनामोमं । ओफि सिलिस । [वृक्ष]
	Cinnamomi Cortex C' officinalis Cinnomomum Cylonicum
फार्सीभाषामें	दार्चिनी ।
अरबीभाषामें	सालीखा ।
ब्रह्मीभाषामें	मिठल्यावो ।
चुत्ताईभाषामें	ख्याक, थ्विन ।

दारुसितागुणाः ।

उक्तादारुसितास्वाद्वीतिक्ताचानिलपित्तहृत् ।
सुरभि शुक्रलावण्यामुखशोषतृषापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दालचीनी-स्वादिष्ट, चर्परी, वात पित्तनाशक, सुगन्धि, शुक्रजनक, शरीरको सुन्दर करनेवाली तथा मुखशोष और तृषाको हरनेवाली है ।

अपिच।

त्वचंतुकटुकंशीतकफकासविनाशनम् ।
शुक्रामशमनंचैवकण्ठशुद्धिकरंलघु ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तज-चरपरी, शीतल, तथा कफ और खासीको दूर करे शुक्र और आमको शान्ति करे और हलकी है ।

अपिच ।

त्वचलघूष्णकटुकंस्वादुतिक्तंचरूक्षकम् ।
पित्तलकफवातघ्नंकण्ड्वामरुचिनाशनम् ॥
हृद्वस्तिरोगवातार्शं कृमिपीनसशुक्रहृत् । (भा० प्र०)

अर्थ-तज-हलकी, गरम, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी, रूखी, पित्तवर्द्धक, कफवातनाशक, तथा कण्डू, आम, अरुचि, वस्तिरोग, हृदयरोग, वातार्श, कृमि, पीनस और शुक्रको हरे है ॥

अन्यच्च ।

त्वक्कट्वीपित्तलास्वाद्वीकण्ठशुद्धिकरीलघुः ।
रूक्षातिक्तावस्तिशुद्धिकारिणीचोष्णदामता ॥
कफहिक्कावातकासकण्डूहृद्रोगनाशिनी ।
आमचवस्तिरोगश्चपीनसचविषतथा ॥
शुक्रचार्शं कृमीश्चैवनाशयेदितिकीर्तिता ।
तनुत्वक्सुरभिस्तिक्तास्वाद्वीबलकरीमता ॥
धातुवृद्धिकरीवातपित्ततृण्मुखदोषनुत् ।

अर्थ-तज-चरपरी, पित्तको उत्पन्न करनेवाली, स्वादिष्ठ, कण्ठकी शुद्धि करनेवाली, हलकी, रूखी, कडवी, वस्तिशोधक, गरम तथा कफ, हुचकी, वात, खासी, खुजली, हृदयरोग, आम, वस्तिरोग, पीनस, विष, शुक्र, बवासीर और कृमिरोगका नाश करेहै । दालचीनी-सुगन्धि, कडवी, स्वादिष्ठ, बलकारक, धातुवर्धक, तथा वात, पित्त, तृषा और मुखरोगको दूर करेहै ।

त्वचतैलगुणा ।

वह्निमान्द्यानिलदरमाध्मानाक्षेपनाशनम् ।
वान्त्युत्क्लेशप्रशमनसग्राहिदशनार्तिहृत् ॥
त्वाचतैलरज स्त्रावितोयेक्षिप्तनिमज्जति । (आ० स०)

अर्थ-तजका तेल-मन्दाग्नि, वात, अफरा और आक्षेपका विनाशक है,

तथा चान्ति और उत्क्लेशको शान्ति करे है, मन्दाग्नि है, दन्तरोगको दूर करे है, रक्तस्राव अर्थात् रुधिरके गिरनेमे इसको पानीमें डालकर लगाना चाहिये।

विवरण-छोटा पेड होताहै। सिंहल, मलवार, कोचीन, चीन, सुमात्रा, मजाभा आदि देशोंमें अधिकतासे होती है, इसके पत्ते तमालपत्रकी समान होतेहैं, पत्तोंको सुखानेपर उनमेंसे लौंगकी समान सुगन्धि आतीहै। वृक्षकी डडीके उपर सफेद फूल आताहै; फूलमें गुलाबकी समान सुगन्धि आतीहै। फल करोंदेके समान होतेहैं, इनमेंसे तेल निकलताहै, इसके फूलोंका अर्क और इत्र बनातेहैं। सिंहलद्वीपकी दालचीनी बहुत उत्तम होतीहै। वृक्षकी पतली छालकोही दालचीनी कहतेहैं।

तेजपत्रनामानि।

तेजपत्र गन्धजात पत्रक पाकरञ्जनम्।

अर्थ-तेजपत्र, गन्धजात, पत्रक, पाकरञ्जन, (पत्र, दलाह्वय राम, गोमेद, वमनाह्वय, गोमेदक, पत्राख्य, छदन, दल, पालाश, अंकुश, वास तापस, सुकुमारक, वस्त्र, तमालक, गोपन, वसन तमाल, सुगन्धिगन्ध, तमालपत्र, इष्टगन्ध, शीतरस, सुरस और रोमश)

हिन्दी भाषामें	तेजपात।
वङ्ग भाषामें	तेजपाता। तेजपत्र।
मराठी भाषामें	तमालपत्र। गभारपान।
गुजराती भाषामें	तमालपत्र।
कर्णाटकी भाषामें	पत्रक।
तैलिङ्गी भाषामें	आकुपत्री।
इंग्रेजी भाषामें	फोलिया मालाबार्थी। Folia Malabathy
लैटिन् भाषामें	सिनामोम तमाला। Cinnamomum Tamala
फारसी भाषामें	सादरम्।
अरबी भाषामें	साजिज।

अस्यगुणाः।

पत्रमुष्णलघुश्लेष्मवह्निमार्शोनिलापहम्।
हृद्रोगपीनसच्चापित्रिदोषचैवनाशयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-तेजपान-गरम, हलका तथा कफ उपकार बवासीर, वात हृदय रोग, पीनस और त्रिदोषनाशक है॥

अपिच।

पत्रकलघुतिक्तोष्णकफवातनिषापहम्।
वस्तिकण्डूत्रिदोषघ्नमुग्रमस्तकशोधनम्॥ (राजनि०)

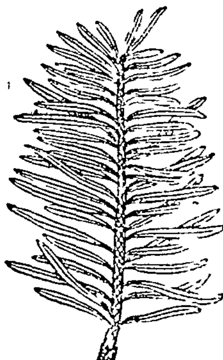
अर्थ-तेजपात-हलका, कडवा, गरम, वात, विष, वस्तिरोग, खुजली और त्रिदोषनाशकहै, मुख और मस्तकशोधक है।

अन्यच्च ।

पत्रकमधुरकिञ्चित्तीक्ष्णोष्णपिच्छिलंलघु ।
निहतिकफवातार्शोहृल्लासारुचिपीनसान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-तमालपत्र(तेजपात)-मधुर, कुछेक तीक्ष्ण, गरम, पिच्छिल, हलका तथा कफ, वात, बवासीर, हृल्लास, अरुचि और पीनस रोगका नाशक है। तेजपत्र तजके पत्तोकी समान होतेहैं, सुगन्धिके लिये मसालेमे डाले जातेहैं। मात्रा तीन ३ मासेकी है।

तालीसपत्रनामानि ।



तालीसपत्रतालीसधात्रीपत्रशुकोदरम् ।
अपरग्रथिकापत्रपत्राढ्यतुलसीछदम् ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-तालीसपत्र-तालीस, धात्रीपत्र, शुकोदर, ग्रथिकापत्र, पत्राढ्य तुलसीछद, (पत्राल्य, अर्कवध, करिपत्र, करिच्छद, नील, नीलाम्बर, ताल, तालीपत्र, तमाह्वय, तालीशपत्रक, तामलकीदल, मुखरोगहर, हृद्य, सुपत्र अर्कवाह, करीपत्र, आमलकीपत्र और घनच्छद)

हिन्दीभाषामें	तालीसपत्र-तालिशपत्र ।
बंगभाषामें	तालीशपत्र ।

मराठीभाषामें	लघुतालीसपत्र ।
कर्णाटकीभाषामें	तालीसपत्र ।
तैलिङ्गीभाषामें	तालीशपत्री ।
गुजरातीभाषामें	तालीसपत्र ।
बम्०	ताम्नठ ।
द्राविडीभाषामें	पनिअर ।
लैटिन्भाषामें	टेक्सस् बेकेटा । Taxus bacata
फारसीभाषामें	जरनब ।
अरबीभाषामें	तालीसफर ।

तालीसपत्रगुणाः ।

तालीसलघुतीक्ष्णोष्णश्वासकासकफानिलान् ।
निहंत्यरुचिगुल्मामवह्निमांद्यक्षयामयान् ॥ (भावप्रका०

अर्थ-तालीसपत्र-लघु, तीक्ष्ण, गरम तथा श्वास, खाँसी, कफ, अरुचि, गुल्म, आम, मंदाग्नि और क्षयरोगका नाश करैहै ।

अपिच ।

तालीसपत्रंतिक्तोष्णमधुरंकफवातनुत ।
कासहिक्काक्षयश्वासच्छर्दिदोषविनाशकृत् ॥(राजनिघण्टु

अर्थ-तालीसपत्र-कडवे, गरम, मधुर, कफवातनाशक तथा खाँसी, हिचकी, क्षयरोग, श्वास और वमनरोगको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

तालीसपत्रमधुरतिक्तञ्चोष्णलघुस्मृतम् ॥
तीक्ष्णस्वर्यञ्चहृद्यञ्चअग्निदीप्तिकरमतम् ॥
श्वासकासकफंवातंक्षयगुल्मारुचीस्तथा ।
रक्तदोषंवमिंचाममग्निमांद्यंचनाशयेत् ।
मुखरोगञ्चपित्तञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-तालीसपत्र, मधुर कडवे, गरम, हलके, तीक्ष्ण, स्वरको गैंभाल्ने-वाले, हृदयको हितकारी, अग्नि दीपन करनेवाले तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात क्षय, गुल्म, अरुचि, रुधिरविकार, वान्ति, आमदोष, अग्निमान्द्य, मुखरोग और पित्तका नाश करैहै ।

[illegible] अत्यन्त बडा होताहै इसलिये अधिक करके [illegible] जाता [illegible] रहैहै इसके नीचेकर चैकी पत्तोंमें लगाने जातेहैं । [illegible]

जटामांसीनामानि ।

जटामांसीजटीपेषीलोमशाजटिलामिसिः ।
मांसीतपस्विनीहिस्रामिषिकाचक्रवर्तिनी ॥

अर्थ-जटामासी, जटी, पेषी, लोमशा, जटिला, मिसि, मासी, तपस्विनी, हिंस्रा, मिषिका, चक्रवर्तिनी, (नलद, वह्निनी, कृष्णजटा, किरातिनी, भूतजटा, क्रव्यादी, पिशिता, पिशी, पेशी, पेशिनी, जटा, मासिनी, जटाला, नलदा, मेषी, तामसी, माता, अमृतजटा, जननी, जटावती, मृगभक्षा, जडामासी, मिसि, मिसी, मिसिका, मिषि)

गन्धमांसीनामानि ।

द्वितीयागन्धमांसीचकेशीभूतजटास्मृता ।
पिशाचीपूतनाचैवभूतकेशीच लोमशा ॥
जटालालघुमांसीचख्याताअकाभिधाह्वया ।

अर्थ-गन्धमासी, केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, भूतकेशी, लोमशा, जटाला, लघुमासी, (पिशाचिका और श्वेतकेशी)

आकाशमांसीनामानि ।



मराठीभाषामें	लघुतालीसपत्र ।
कर्णाटकीभाषामें	तालीसपत्र ।
तैलिङ्गीभाषामें	तालीसपत्री ।
गुजरातीभाषामें	तालीसपत्र ।
वम०	ताम्नठ ।
द्राविडीभाषामें	पनिअल्ल ।
लैटिन्भाषामें	टैक्सस् वैकेटा । Taxus bacata
फारसीभाषामें	जरनब ।
अरबीभाषामें	तालीसफर ।

तालीसपत्रगुणाः ।

तालीसलघुतीक्ष्णोष्णंश्वासकासकफानिलान् ।
निहन्त्यरुचिगुल्मामवह्निमांद्यक्षयामयान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-तालीसपत्र-लघु, तीक्ष्ण, गरम तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात, अरुचि, गुल्म, आम, मन्दाग्नि और क्षयरोगका नाश करैहै ।

अपिच ।

तालीसपत्रंतिक्तोष्णमधुरंकफवातनुत ।
कासहिक्काक्षयश्वासच्छर्दिदोषविनाशकृत् ॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-तालीसपत्र-कडवे, गरम, मधुर कफवातनाशक तथा खांसी, हिचकी क्षयरोग, श्वास और वमनरोगको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

तालीसपत्रमधुरतिक्तंचोष्णलघुस्मृतम् ॥
तीक्ष्णस्वर्यंश्चहृद्यञ्चअग्निदीप्तिकरंमतम् ॥
श्वासकासकफवातक्षयगुल्मारुचीस्तथा ।
रक्तदोषंवमिंचाममग्निमांद्यंचनाशयेत् ।
मुखरोगञ्चपित्तञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-तालीसपत्र मधुर कडवे, गरम, हलके, तीक्ष्ण, स्वरको सुधारनेवाले हृदयको हितकारी, अग्नि दीपन करनेवाले तथा श्वास, खांसी, कफ, वात, क्षय, गुल्म, अरुचि, रुधिरविकार, वान्ति, आमदोष, अग्निमान्द्य, मुखरोग और पित्तका नाश करैहै ।

निघण्टु-नृप, अत्यन्त बड़ा होताहै हिमालयमें अधिक उत्पन्न होता मिल-जाता है, इसके लकड़ी बहुत चीकना चिकनी करनाम बनाये जाते हैं । व्यवहारमें ।

जटामांसीनामानि।

जटामांसीजटीपेपीलोमशाजटिलामिसिः।
मांसीतपस्विनीहिंस्रामिपिकाचक्रवर्तिनी॥

अर्थ-जटामासी, जटी, पेपी, लोमशा, जटिला, मिसि, मासी, तपस्विनी, हिंस्रा, मिपिका, चक्रवर्तिनी, (नलद, वह्निनी, कृष्णजटा, किरातिनी, भूतजटा, क्रव्यादी, पिशिता, पिशी, पेशी, पेशिनी, जटा, मासिनी, जटाला, नलदा, मेपी, तामसी, माता, अमृतजटा, जननी, जटावती, मृगभक्षा, जडामासी, मिसि, मिसी, मिसिका, मिपि)

गन्धमांसीनामानि।

द्वितीयागन्धमांसीचकेशीभूतजटास्मृता।
पिशाचीपूतनाचैवभूतकेशीच लोमशा॥
जटालालघुमांसीचख्याताअकाभिधाह्वया।

अर्थ-गन्धमासी, केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, भूतकेशी, लोमशा, जटाला, लघुमासी, (पिशाचिका और श्वेतकेशी)

आकाशमांसीनामानि।



आकाशमांसीसूक्ष्मान्यानिरालम्बाखसम्भवा ।
सेवालसिक्ष्मपत्रीचगौरीपर्वतवासिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-आकाशमांसी, सूक्ष्मजटामासी, निरालम्बा, खसम्भवा, सेवाली, सूक्ष्मपत्री, गौरी, पर्वतवासिनी ।

हिंदीभाषामें	जटामासी, बालछड, कनुचर ।
बंगभाषामें	जटामांसी ।
मराठीभाषामें	जटामांसी ।
गुजरातीभाषामें	बालछड ।
कर्नाटकीभाषामें	बहुलगन्धजटामासी आकाशमटामासी ।
तैलिंगीभाषामें	जटामांसी ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पिकनार्ड Spikenard
लैटिनभाषामें	नार्डोसटेचिस जटामासी । Nardostachys
फारसीभाषामें	सुम्बुल ।
अरबीभाषामें	सुम्बुत्तीब ।

जटामांसीगुणाः ।

मांसीतिक्ताकषायाचमेध्याकांतिबलप्रदा ।
स्वाद्वीहिमात्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बालछड, कडवी, कसैली, मेधाजनक, कान्तिकारक, बलदायक, स्वादिष्ठ, शीतल, तथा त्रिदोष, रुधिरविकार, दाह, विसर्प और कुष्ठरोगको नष्ट करे है ।

अपिच ।

सुरभिस्तुजटामांसीकषायाकटुशीतला ।
कफभूतदाहघ्नीपित्तघ्नीमोदकांतिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जटामासी (बालछड)-कसैली, चरपरी, शीतल, कफनाशक, भूतदाह और पित्तका नाशक, आनन्दको उत्पन्न करे, और कांतिको बढानेवाली है ।

अन्यच्च ।

अनुलेपनज्वरघ्नदाहतांचैवनाशयेत् । (राजवल्लभ)

अर्थ-इसका लेप करनेसे ज्वर और ज्वाला दूर होती है ।

गन्धमांसीगुणाः ।

गन्धमांसीतिक्तशीताकफकण्ठामयापहा ।
रक्तपित्तहरावर्ण्याविषभूतज्वरापहा ॥

अर्थ–गन्धमासी,कडवी, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, रक्त, पित्त, विष, भूत और ज्वरको दूर करेहै तथा वर्णको उज्ज्वल करेहै ॥

आकाशमांसीगुणा ।

अभ्रमांसीहिमाशोफव्रणनाडीरुजापहा ।
लूतागर्दभजालादिहारिणीवर्णकारिणी ॥ (राजनि०)

अर्थ–आकाशमासी–शीतल तथा सूजन और नाडीरोगनाशक है, लूता, गर्दभक, जालादिनिवारक और शरीरके रंगको उज्ज्वल करेहै ।

अन्यच्च ।

जटामांसीतुतुवराशीतलाकांतिकारका ।
बल्याकट्वीस्वादुतिक्ताकफांतर्दाहपित्तहा ॥
विसर्पकुष्ठत्वग्दोषभूतबाधाजरापहा ।
दाहत्रिदोषवातंचरक्तदोषविषहरेत् ॥
कृष्णासुगंधामांसीतुकेश्यासुरभितिक्तका ।
वर्ण्याचशीतलाप्रोक्ताकफकण्ठरुजाहरा ॥
भूतबाधारक्तपित्तरक्षोबाधाज्वरापहा ।
विषवातहराचान्येगुणामांसीवदीरिताः ॥
आकाशमांसीवर्ण्यातुशीतलाव्रणशोथहा ।
जालगर्दभकलूताविस्फोटंचमसूरिकाम् ॥
नाडीव्रणविसर्पादिनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥

अर्थ–जटामासी (बालछड)–कषेली, शीतल, कान्तिकारक, बलकारक, चरपरी, स्वादिष्ट, कडवी तथा कफ, अन्तर्दाह, पित्त, विसर्प, कोढ, त्वचाके रोग, जरा, दाह, त्रिदोष, वात, रक्तविकार और विषका विनाश करेहै । सुगन्धजटामासी–केशोंको उज्ज्वल करनेवाली, सुगन्धि, कडवी, वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, भूतबाधा, रक्तपित्त, राक्षस-

आकाशमांसीसूक्ष्मान्यानिरालम्बाखसम्भवा ।
सेवालीसूक्ष्मपत्रीचगौरीपर्वतवासिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-आकाशमासी, सूक्ष्मजटामासी, निरालम्बा, खसम्भवा, सेवाली, सूक्ष्मपत्री, गौरी, पर्वतवासिनी ।

हिंदीभाषामें	जटामासी, बालछड, फनुचर ।
बंगभाषामें	जटामासी ।
मराठीभाषामें	जटामासी ।
गुजरातीभाषामें	बालछड ।
कर्नाटकीभाषामें	बहुलगन्धजटामासी आकाशजटामांसी ।
तैलिंगभाषाम	जटामासी ।
इंग्रेजीभाषाम	स्पिकनार्ड Spikenard
लेटिनभाषामें	नार्डोस्टेकिस जटामासी । Nordostachys
फारसीभाषाम	सुंबुल ।
अरबीभाषामें	सुंबलुत्तीब ।

जटामांसीगुणाः ।

मांसीतिक्ताकषायाचमेध्याकांतिबलप्रदा ।
स्वाद्वीहिमात्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बालछड, कटवी, कषेली, मेधाजनक, कान्तिकारक, बलदायक, स्वादिष्ठ, शीतल, तथा त्रिदोष, रुधिरविकार, दाह, विसर्प और कुष्ठरोगको नष्ट करैहै ।

अपिच ।

सुरभिस्तुजटामांसीकषायाकटुशीतला ।
कफभूतदाहघ्नीपित्तघ्नीमोदकांतिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जटामासी (बालछड)-कषेली, चरपरी, शीतल, कफनाशक, भूतदाह और पित्तका नाशक, आनन्दको उत्पन्न करे, और कांतिको बढानेवाली है ।

अन्यच्च ।

अनुलेपनज्वरघ्नूतांचैवनाशयेत । (गजवल्लभ)

अर्थ-इसका लेप करनेसे ज्वर और भूता दूर होती है ।

गन्धमांसीगुणाः ।

गन्धमांसीतिक्तशीताकफकण्ठामयापहा ।
रक्तपित्तहरावर्ण्याविषभूतज्वरापहा ॥

अर्थ-गन्धमासी,कडवी, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, रक्त, पित्त, विष, भूत और ज्वरको दूर करेहै तथा वर्णको उज्ज्वल करेहै ॥

आकाशमांसीगुणा ।

अभ्रमांसीहिमाशोफव्रणनाडीरुजापहा ।
लूतागर्दभजालादिहारिणीवर्णकारिणी ॥ (राजनि०)

अर्थ-आकाशमासी-शीतल तथा सूजन और नाडीरोगनाशक है, लूता, गर्दभक, जालादिनिवारक और शरीरके रगको उज्ज्वल करेहै ।

अन्यच्च ।

जटामांसीतुतुवराशीतलाकांतिकारका ।
बल्याकट्वीस्वादुतिक्ताकफांतर्दाहपित्तहा ॥
विसर्पकुष्ठत्वग्दोषभूतबाधाजरापहा ।
दाहत्रिदोषवातंचरक्तदोषंविषहरेत् ॥
कृष्णासुगंधामांसीतुकेश्यासुरभितिक्तका ।
वर्ण्याचशीतलाप्रोक्ताकफकण्ठरुजाहरा ॥
भूतबाधारक्तपित्तरक्षोबाधाज्वरापहा ।
विषवातहराचान्येगुणामांसीवदीरिताः ॥
आकाशमांसीवर्ण्यातुशीतलाव्रणशोथहा ।
जालगर्दभकलूताविस्फोटचमसूरिकाम् ॥
नाडीव्रणविसर्पादिनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-जटामासी (बालछड)-कषेली, शीतल, कान्तिकारक, बलकारक, चरपरी, स्वादिष्ट, कडवी तथा कफ, अन्तर्दाह, पित्त, विसर्प, कोढ, त्वचाके रोग, जरा, दाह, त्रिदोष, वात, रक्तविकार और विषका विनाश करेहै । सुगन्धजटामासी-केशोंको उज्ज्वल करनेवाली, सुगन्धि, कडवी, वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, भूतबाधा, रक्तपित्त, राक्षस-

बाधा, ज्वर, विष और बादीका नाश करैहै ॥ आकाशजटामांसी-शरीरके रंगको शोभायमान करनेवाली शीतल तथा व्रण, शोथ, जालगर्दभरोग, लूता, विस्फोटक, मसूरिका (शीतलामाता) नाडीव्रण (नासूर) और विसर्पादि अनेक रोगोंको दूर करैहै ।

विवरण-जटामासी गुल्मजातिकी वनस्पति है, इसके पत्ते सरजीवनकी समान होतेहै, यह हिमालयके जंगलम उत्पन्न होतीहै । इसकी जडपर भूरे रंगके रूएँ जमे रहतेहैं, फूल गुलाबी आभा और गुच्छोंमें लगतेहैं ॥

व्यवहार-रूँवांसे ढकी हुई जड बाजारमें जो जटामासी अर्थात् बालछड बिकतीहै वह कृत्रिम बनीहुई होतीहै इस कारण देख भालके काममें लाना उचित है । मात्रा चार ४ मासेकी है ।

बहुतदिनोंसे जटामासीका व्यवहार सुगन्धि तैलादिकके बनानेमें होताहै और मागनेसि आदि अंग्रेज डाक्टरलोग इसको भेलेरिन नामक इंग्रेजी औषधिकी तुल्य गुणवाली समझतेहैं, स्नाय्वादिकी दुर्बलतामें विशेष उपकारी होनेसे यह बहुत औषधियोंके अनुपानमें दीजातीहै, धबलाब, उदरामय, श्वास, खांसी मूर्च्छादिरोगमें इसका व्यवहार करतेहै । दक्षिणदेशमें जगमांसीसे एक प्रकारका तेल निकालकर केशोंमें लगाया जाताहै ।

प्रियगुनामानि ।

प्रियगुःफलिनीश्यामागन्धफलागोवन्दनी ।
विष्वक्सेनाकृष्णपुष्पीकृशाङ्गीमहिलाह्वया ॥

अर्थ-प्रियङ्गु फलिनी, श्यामा, गन्धफला गोवन्दनी, विष्वक्सेना, कृष्णपुष्पी, कृशाङ्गी, महिलाह्वया, लता (कान्ता, गुन्द्रा, कारम्भा, प्रियक, गृह गोवर्णा, भेदिनी, प्रियवल्ली, परम्प्रिया गौरी, वृत्ता, फङ्गु, पंगुली भगुरा, गौरवल्ली, सुभगा, पर्णभेदिनी, शुभा, पीता मङ्गल्या, श्रेयसी अङ्गनाप्रिया वनिता, नारीवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	प्रियगु ।
हिन्दीभाषामें	फूलप्रियंगु प्रियंगु कङ्गन.
बंगभाषामें	प्रियंगु, गन्धप्रियगु ।
मराठीभाषामें	गहूला ।
गुजरातीभाषामें	घहुला ।
कर्णाटकीभाषामें	नौघण्टु ।

तैलिङ्गीभापामें	मकणपुचेट्टु ।
तामिलीभापामें	प्रियगु ।
वम्	गहुली ।
लैटिनभापामें	प्रुनस्-महालिब् । Psunesma hdleb

अस्यगुणाः।

प्रियगु शीतलातिक्तातुवरानिलपित्तहृत् ।
रक्तातिसारदौर्गन्ध्यस्वेददाहज्वरापहा ॥
गुल्मतृड्विपमेहघ्नीतद्वद्गन्धप्रियगुका ।
तत्फलमधुररूक्षकपायशीतलगुरु ॥
विबन्धाध्मानबलकृत्सग्राहीकफपित्तजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-प्रियगू-शीतल, कडवा, कपेला तथा वात, पित्त, रक्तातिसार, दुर्गन्ध, पसीना, दाह, ज्वर, गुल्म, तृपा और प्रमेहको दूर करैहै, इसीके सदृश गन्धप्रियगुके गुण हैं ।

प्रियगुका फल-मधुर, कपाय, भारी, शीतल तथा विबन्ध, आध्मान और बलकारक है, मलरोधक तथा कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

प्रियगु शीतलोवातिदाहपित्तज्वरास्रजित् ।
मुखकांतिप्रजननोगात्रदौर्गन्ध्यनाशनः ॥(मदनविनोद)

अर्थ-प्रियगु-शीतल है वान्ति, दाह, पित्त, ज्वर और रुधिरविकारको दूर करैहै तथा मुखकी शोभाको बढावैहै और शरीरकी दुर्गन्धको हरैहै ।

अन्यच्च ।

गन्धप्रियगुस्तुवरस्तिक्तोवृष्यश्चशीतलः ।
केश्योवांतिभ्रांतिदाहपित्तरक्तरुजस्तथा ॥
ज्वरमोहस्वेदकुष्ठमुखजाड्यतृपा हरेत् ।
वातगुल्मविपमोहमेदचैवविनाशयेत् ॥
रक्तपित्तनाशयतिबीजमस्यकपायकम् ।
मधुरशीतलरूक्ष तुवर ग्राहक गुरु ॥

मलस्तम्भकरंबल्यपित्तघ्नंकफनाशनम् ।
आध्मानकारकञ्चैवमुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥

अन्यसुगन्धमियङ्गु ।

सुगन्धफलिनीशीतासुगन्धिःकुष्ठदाहनुत् ।
ज्वररक्तविकारञ्चनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-प्रियङ्गु-कपेला, कडवा, वीर्यजनक, शीतल, केशोंको उज्ज्वल करनेवाला तथा वमन, वान्ति, दाह, पित्त, रक्तरोग, ज्वर, मोह, पसीना, कोढ, मुखकी जडता, पियास, वात, गुल्म, विष, प्रमेह मेदरोग और रक्त-पित्तका नाश करेंहैं ॥

इसके बीज-कपेले, मधुर, शीतल, रूखे, ग्राही, मलको स्तम्भन करने-वाले, बलकारक, पित्तका नाश करनेवाले कफको दूर करनेवाले और अफारेको करनेवाले हैं ।

सुगन्धप्रियङ्गु [दूसरे प्रकारका प्रियङ्गु अर्थात् फलप्रियङ्गु] शीतल, सुगन्धि तथा कोढ, दाह, ज्वर और रुधिरके विकारोंको दूर करै है ।

उशीरनामानि ।

खस



वीरणस्यतुमूलस्यादुशीरनलदञ्चतत् ।
अमृणालंचसेव्यञ्चसमगन्धिकमित्यपि ॥

अर्थ-वीरण (गौंडर) घासकी जडको उशीर अर्थात् खस कहतेहैं । सं० उशीर नैष्य, अमृणाल, सेव्य समगन्धिक (अभय अवदाह, जलवास, लामज्जक, लघुलय, अवदाह इष्टकापथ, उशीर, मृणाल, लघुलय, अवदाह, जलवासहरिकापथ इन्द्रद्रुम-उशीरमें, पञ्चवास, हरिप्रिय, वीर, वीरण,

रणप्रिय, वीरतरु, शिशिर, शीतमूलक, वितानमूलक, दाहहरण, जलामोद, गन्धाढच, सुगन्धिक, सुगन्धिमूलक, सुगन्धिमूल, कम्बु, वीरण, कटायन वीरतर, वीरभद्र, वीर और बहुमूलक)

हिन्दीभाषामें	खस, वीरन, गाँडर ।
बंगभाषामें	व्याणारमूल, वेणारमूल, वीरणमूल–खस ।
मराठीभाषामें	काळावाळा ।
गुजरातीभाषामें	कालीवालो मोथ्यतावालाजिनांगीणमूल ।
कर्णाटकीभाषामें	वाल्देवस ।
तैलिंगभाषामें	अवरुगट्टि, नल्ल वट्टिवेळ्ळु ।
तामिलीभाषामें	वेत्तेवेर ।
बम्	खसखस ।
उर्दू	विणा, गन्दविणा, वाधिवेरु ।
लैटिनभाषामें	अन्द्रोपागन मूरिकेटम्। AndropagonMuricatum

उशीरगुणा ।

उशीरशीतलतिक्तदाहश्रमहरंपरम् ।
पित्तज्वरार्तिशमनजलसौगन्ध्यदायकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–खस–शीतल, कडवी तथा दाह, परिश्रम और पित्तज्वरकी शान्ति करे तथा जलको सुगन्धि करेहै ।

अपिच ।

उशीरस्वेददौर्गन्ध्यदाहपित्तास्त्ररोगजित् । (रा०व०)

अर्थ–खस–पसीना, दुर्गन्ध, दाह और रक्तपित्तको हरेहै ।

अन्यच्च ।

उशीरस्वेदपित्तास्रदाहदौर्गन्ध्यनाशनम् ।
क्लमतृष्णाविषध्वंसिसतिक्तमधुरंहिमम् ॥

अर्थ–खस–स्वेद, पित्त, रक्तविकार, दाह, दुर्गन्ध, क्लम, तृष्णा और विषको दूर करे तथा कडवी, मधुर और शीतल है ।

अपिच ।

उशीरंपाचनशीतस्तम्भनलघुतिक्तकम् ।
मधुरज्वरहृद्वान्तिमदनुत्कफपित्तहृत् ॥
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-खस-पाचक, शीतल, स्तम्भन, हलकी, कडवी, मीठी तथा ज्वर वमन, मद, कफ, पित्त, तृषा, रुधिरदोष विष, वीसर्प, दाह मूत्रकृच्छ्र और व्रणरोगका नाश करेहै।

गाडरके भी गुण इसीके समान है।

विवरण-यह गाडर घासकी जड है।

गोरोचननामानि।

गोरोचनातुगोपित्तवन्दनीयामनोरमा।

अर्थ-गोरोचना-गोपित्त, वन्दनीया मनोरमा (वन्या रोचनाशनि, शोभा, रुचिरा, शोभना, शुभा, गौरी, गेचनी, पिङ्गा, मङ्गल्या मङ्गला शिवा, पीता, गौतमी, गव्या, चन्दनीया, काञ्चनी, मेध्या, श्यामा, रामा, मृतविद्राविणी, गोपित्तसम्भवा, पिंगला, नन्दिनी, पार्थिवी, गोरुचि)

हिन्दीभाषामें	गोरोचन, गोलोचन।
वंगभाषामें	गोरोचना।
मराठीभाषामें	गोरोचन।
गुजरातीभाषामें	गोरोचन्दन गोरोचन।
कर्णाटकीभाषामें	गोरोचन।
तैलिङ्गीभाषाम	गोरोचनमु।
इंग्रेजीभाषामें	गोल्स्टोन बिजोर Gollstone Bijoor
लैटिनभाषामें	बोस्टोरस। Bostarous
फारसीभाषामें	गवरोहन।
अरबीभाषामें	हजरुलबकर।

गोरोचनागुणाः।

गोरोचनाहिमातिक्तावश्यामङ्गलकांतिदा।
विषालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रजित्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गोरोचना-शीतल, कडवी, वशीकरण, मङ्गलजनक कान्तिदायक तथा विष, अलक्ष्मी, ग्रह, उन्माद, गर्भस्राव, क्षत और रक्तदोषनाशक है।

अपिच।

गोरोचनाचशिशिराविषदोषहन्त्रीरूक्षाचपाचनकरीकृमिकुष्ठहन्त्री। भूतग्रहोपशमनंकुरुते च पथ्या शृङ्गारमङ्गलकरीजनमोहिनीच॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-गोलोचन-शीतल, विषदोषनाशक, रुचिकारी, पाचक, कृमि और कुष्ठको नष्ट करनेवाला, भूतग्रहको शान्ति करनेवाला, पथ्य, शृंगार और मंगलको करनेवाला तथा मनुष्योंको मोह करनेवाला है।

अपिच।

गोरोचनंचातिशीतरुच्यमंगलदायकम्।
वशीकरकांतिकरवृष्यतिक्तसमीरितम्॥
पिशाचग्रहपीडाश्चविषकुष्ठकृमीस्तथा।
अलक्ष्म्युन्मादशमनंगर्भस्रावहरंपरम्॥
क्षतरक्तविकारश्चनेत्ररोगश्चनाशयेत्। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-गोरोचन-अत्यन्त शीतल, रुचिकारक, मंगलदायक, वश करनेवाला, कान्तिकारक, वीर्यजनक, कडवा तथा पिशाचबाधा, ग्रहकी पीडा, विषविकार, कोढ, कृमि, अलक्ष्मी, उन्माद, गर्भस्राव, क्षत, रक्तविकार और नेत्ररोगका नाश करैहै।

गोरोचन-गायके मस्तकका पित्त होताहै, इसका रंग पीला होताहै यह अधिक व्यवहारमें आताहै, औषधिप्रयोगमें भी अधिकतासे लिया जाताहै इसका मस्तकमें तिलक लगानेसे वशीकरण होताहै। मात्रा दोरत्ती की।

नखनामानि।

नखव्याघ्रनखव्याघ्रायुधतच्चक्रकारकम्।
नखस्वल्पनखीप्रोक्ताहनुर्हट्टविलासिनी॥ (भावप्र०)

अर्थ-नख, व्याघ्रनख, व्याघ्रायुध, चक्रकारक, (व्याडायुध, करज, कूटस्थ, नखाङ्क, नख्य, व्याघ्रनखी, चक्रनायक, चक्री, चक्रनख, व्यमफल, द्वीपिनख, खपुर, व्यालपाणिज, व्यालायुध, व्यालवल, व्यालखड्ग) दूसरा छोटा नख जिसको नखी कहतेहैं उसके पर्य्याय यह है हनु, हट्टविलासिनी [शुक्ति, शंख, खुर, कोलदल व्यालायुध, शशनख, नखरी, करजाख्य, अपचखुर, नख, व्याघ्रनख, कररुह, निम्बी, शफ, चलकोशी, करज, हनु, नागहनु, पाणिज, बदरीवच, रूप्य, पण्यविलासिनी, सन्धिनाल, पाणिरुह] यह नाम साधारण नखके हैं।

हिन्दीभाषामें	दोना नख, नख, नखी।
बंगभाषामें	नखी, गन्धद्रव्य, छोटनखी।

मराठीभाषामें	नख, वाघनख ।
गुजरातीभाषामें	नखला वाघना नख ।
कर्णाटकीभाषामें	नख, वाघनख ।
उर्दू	नख, वाघनख ।
इंग्रेजीभाषामें	शेल । Shell
लैटिनभाषामें	हेलिक्सासम्पेग ।
फारसीभाषामें	नाखुनपरी, याहफसर ।
अरबीभाषामें	अनफारतिब, इकलिलुल्मुलूक ।

नखपञ्चभेदाः ।

नखीपञ्चविधाज्ञेयागन्धार्थागन्धवत्परैः ।
कचिद्बदरपत्राभा तथोत्पलदलामता ॥
काचिदश्वखुराकारागजकर्णसमापरा ।
वराहकर्णसकाशापञ्चमेपरिकीर्तिता ॥ (च० चि०)

अर्थ-गन्ध अर्थवाली और गन्धयुक्त नखी पांच प्रकारकी होती है कोई बेरीके पत्तोंकी समान थाई कमलके पत्तोंकी समान, कोई घोडेके खुरकी आकारवाली, कोई हाथीके कानकी समान और पांचवीं सूअरके कानकी समान होतीहै ।

नखशुद्धिविधिः ।

पञ्चपल्लवतोयेनगन्धानांक्षालनंतथा ।
शोधनंचापिसंस्कारोविशेषश्चात्रवक्ष्यते ॥
चण्डीगोमयतोयेनयदिवातिन्तिडीजले ।
नखसंस्कारयेदेभिर्लाभेमृण्मयेनतु ॥
पुनरुद्धृत्यप्रक्षाल्यभर्जयित्वानिषेचयेत् ।
गुडपथ्याम्बुनात्वेवंशुध्यतेनात्रसंशयः ॥ (च०)

अर्थ-पञ्चपल्लव (आमके पत्ते जामुनके पत्ते, बेजोरेके पत्ते कैथके पत्ते और बेलके पत्ते) के जलसे तथा गन्धोंके पुटसे इसका शोधन और संस्कार विशेष यहां कहतेहैं भैंसके गोबरके जलसे अथवा इमलीके पानीमें नख औषधीका संस्कार करे और यदि उपरोक्त द्रव्य न मिलें तो मट्टीकी हांडी, फिर निकालकर और धोकर गुड और हर्डके अर्थ भीगे इसतरह शुद्ध होजायगा, इसमें संशय नहीं है ।

द्विविधनखगुणा ।

नखद्वयग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत् ।
लघूष्णशुक्रलंवर्ण्यंस्वादुव्रणविषापहम् ॥
अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोःकटु । (भा०प्र०)

अर्थ–दोनों प्रकारके नख–ग्रहकी पीडाको दूर करे हैं तथा कफ, वात-रक्त, ज्वर, कोढ, व्रण, विष, अलक्ष्मी और मुखकी दुर्गन्धताको नाश करेहै, हलके, गरम, शुक्रजनक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाले, स्वादिष्ठ तथा पाकमें और रसमें चरपरी है ।

नखगुणा ।

नखःस्वादूष्णकटुकोविषहन्तिप्रयोजितः ।
कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्चभूतविद्रावणःपरः ॥

अर्थ–नख–स्वादिष्ठ, गरम, चरपरा तथा कोढ, कण्डू और व्रणको दूर करे है, तथा भूतविद्रावक है ।

व्याघ्रनखगुणाः ।

व्याघ्रनखस्तुतिक्तोष्णःकषायःकफवातजित् ।
कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्चवर्ण्यं सौगन्ध्यदःपरः ॥ (रा०नि०)

अर्थ–व्याघ्रनख–कडवा, गरम, कषेला, कफ, वातनाशक तथा कोढ, खुजली और घावको दूर करेहै, शरीरके रंगको उज्ज्वल करेहै और सुगन्धिदायक है ।

अपिच–द्विविधनखगुणाः ।

नखसुगन्धिचोष्णंचकटुमेध्यञ्चशुक्रलम् ।
लघुवर्ण्यंस्वादुहृद्यंकफवातविषप्रणुत् ॥
दौर्गन्ध्यस्वेदकुष्ठादिज्वरालक्ष्मीव्रणापहम् ।
मुखदौर्गन्ध्यकण्डूघ्नभूतग्रहनिवारणम् ॥
व्याघ्रस्यचनखस्तिक्तोवर्ण्यश्चोष्ण कषायकः ।
सुगन्धि कुष्ठकण्डूतिकफवातग्रहाञ्जयेत् ॥
गुणास्त्वन्येतुनखवन्मुनिभिः परिकीर्तिताः । (नि०र०)

अर्थ-नख-गरम, सुगन्धि, चरपरा, मेधाकारक, शुक्रजनक, हलका, वर्णकारक, स्वादिष्ट, हृदयको हितकारी तथा कफ वादी, विष, दुर्गन्ध, पसीना, कोढ ज्वर, अलक्ष्मी, घाव मुखकी दुर्गन्धि, खुजली, भूतबाधा, ग्रहकी पीडा वातरक्त और पित्तका नाश करैहै । व्याघ्रनख-कडवा, वर्णको सुन्दर करनेवाला, उष्ण, कषेला, सुगन्धि तथा कोढ खुजली व्रण, वात और ग्रहकी पीडाको दूर करैहै । शेष गुण नखके समान जानने ।

विवरण-नखद्रव्य नदीके जीवोंका नख होताहै, यह सुगन्धि पदार्थ है धूपमें और सुगन्धि तैलादिकके बनानेमें पडताहै । घोडे हाथियोंके नख अनेक औषधियोंके प्रयोगमें लिये जातेहैं ऐसा चरकाचार्यने लिखाहै ।

वालकनामानि ।

वालकवारिदवालह्रीवेरकेशनामकम् ।
कचामोदवरपिङ्गकुन्तलोवारिनामकम् ॥

अर्थ-वालक, वारिद, वाल ह्रीवेर केशनामक, कचामोद, वरपिङ्ग, कुन्तल, वारिनामक, (बर्हिष्ठ, उदीच्य, केशनामा अम्बुनामक, ह्रीबेर, बर्हिष्ठ, केश, केश्य, वज्र, ललनाप्रिय, कुन्तलोशीर, ह्रीवेरक, वारि, तोय, जल) और जितने नाम पानीके तथा केशोंके हैं सो सब इसके भी जानो ।

हिन्दीभाषामें	सुगन्धवाला ।
बंगभाषामें	बाल्य, गन्धवाला ।
मराठीभाषामें	वाळा ।
गुजरातीभाषामें	वालो ।
कर्णाटकीभाषामें	वालद्वेरु, रामसुद्दिवाल ।
तैलङ्गीभाषामें	वाटिवेर्डु ।
द्राविडीभाषामें	कंवाल् ।
बम्ब०	वाला ।
लेटिनभाषामें	एन्ड्रोपोगन । Andro Pogon म्यूरिकेटस (Muricatus)
फारसीभाषामें	अगारे ।

वालकगुणाः ।

वालकशीतलरूक्षलघुदीपनपाचनम् ।
हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सुगन्धवाला-शीतल, रूखा, हलका, दीपन और पाचक है तथा हृल्लास (उबकाइ), अरुचि, वीसर्प, हृदयरोग और आमातिसारको दूर करे है ।

अपिच ।

वालक·शीतलस्तिक्त·केश्यःपाचनकृन्मधुः ।
दीपनोलघुरूक्षश्चकफपित्तवमीहर· ॥
तृपाकुष्टातिसारघ्नोज्वरश्वासारुचीहर· ।
व्रणवीसर्पहृद्रोगलालास्रावहरोमतः ॥
रक्तदोपंरक्तपित्तकण्डूदाहचनाशयेत् ॥ (नि०रत्ना०)

अर्थ-सुगन्धवाला-शीतल, कडवा, केशोंको सुन्दर करनेवाला, पाचक, मधुर, दीपन, हलका, रूखा तथा कफ, पित्त, वान्ति, तृपा, कोढ, अतिसार, ज्वर, श्वास, अरुचि, व्रण, विसर्प, हृदयरोग, लालास्राव, रक्तविकार, रक्तपित्त, कण्डू और दाहका नाश करे है । मात्रा एक मासेकी ।

सुस्तकनामानि ।

मेघाख्यमुस्तकमुस्तवालेयपरिपेलवम् ।

अर्थ-मेघाख्य, मुस्तक, मुस्त, वालेय, परिपेलव, (कुरुविन्द, मेघनामा, मुस्त, अम्बुवाह, अम्बुभृत, तडित्वान्, वारिवाह, बलाहक, स्तनयित्नु, तोयद, तोयधर, अभ्रनामक, गाङ्गेय, भद्रमुस्तक, श्रीभद्रा, भद्रक, भद्रा, गजकसेरू, कसेरुक, कुरुविन्द)

नागरमुस्तकनामानि ।



नागरमोथा

नागरमुस्तानादेयीवृषध्मांक्षीकच्छरुहा ।
चूडालापिण्डमुस्ताचनागरोत्थाकलापिनी ॥

अर्थ-नागरमुस्ता, नादेयी, वृषध्मांक्षी, कच्छरुहा, चूडाला, पिण्डमुस्ता नागरोत्था, कलापिनी, (नागरादि घनमञ्जरा, चक्राभा, शिशिर चारुकेसरा, उच्चटा, पूर्णकोष्ठमज्ञा)

भद्रमुस्तकनामानि ।

गांगेयकुरुविल्वचभद्रमुस्तकुटन्नटम् ।

अर्थ-गांगेय कुरुविल्व, भद्रमुस्त कुटन्नट, (भद्रमुस्ता, भद्रमुस्तक गुन्द्रा, कशेरुका वराही, ग्रन्थि, भद्रकाशी, कच्छरुहा मोदिनी, कुरुविन्दाख्या, सुगन्धिग्रन्थिला, हिमा, वल्या, कच्छोत्था, अर्णोद, वारिद, अब्द,)

हिन्दीभाषामें	मोथा, नागरमोथा भद्रमोथा ।
बंगभाषामें	मुताथा, नागरमुता, भादडामुथा ।
मराठीभाषामें	मोथे, नागरमोथे, भद्रमोथे ।
गुजरातीभाषामें	मोथ्य, नागरमोथ्य, भद्रमोथ्य ।
कर्णाटकीभाषामें	मुस्ता नागरमुस्ता, भद्रमुस्ता ।
तैलिंगीभाषामें	तुगमुस्त (स्ता) गरुडतुग विक, नगगडुलविम ।
तामिलीभाषामें	कोरय, मुदक्कार ।
द्राविडीभाषामें	गरमोठ ।
लेटिनभाषामें	साइपरस् रोटंडस साइपरसपर्टेन्युइस ।
	Cyperus rotundus & Cyperus pertenuis
फारसीभाषामें	शादकूफी ।
अरबीभाषामें	सुक्कजर्मीन ।

श्रेष्ठमुस्तकप्रशंसा ।

अनूपदेशेयज्जातमुस्तकंतत्प्रशस्यते ।
तत्रापिमुनिभिःप्रोक्तंवरंनागरमुस्तकम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अनूपदेश (जलस्थान) में उत्पन्न होनेवाला मोथा श्रेष्ठ होताहै तोभी मुनियोंने नागरमोथेकाही उत्तम कहा है ।

तत्पुटपाकः ।

मुस्तकंसुमनाक्क्षुण्णंकाञ्जिकेनिदिनोषितम् ।
पक्वपाकनतोयेनस्विन्नमातपशोषितम् ॥

गुडाम्बुनासिच्यमानभर्ज्जयेच्चूर्णयेत्ततः ।
आजशोभाञ्जनजलैर्भावयेच्चेतिशुद्धयति ॥

अर्थ-मोथेको लेकर तीन दिन काजीमें डाले, फिर पचपल्लवके जलमें भिजोकर धूपमें सुखावे, फिर गुडके जलसे सींचकर भूनकर उसका चूर्ण करे, बकरीका दूध और सैंजिनेके जलकी भावना देनेसे शुद्ध होताहै ॥

भद्रमुस्तकगुणाः ।

मुस्तंकटुहिमग्राहितिक्तंदीपनपाचनम् ।
कषायकफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजन्तुनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-भद्रमोथा-चरपरा, शीतल, ग्राही, कडवा, दीपन, पाचक, कषेला तथा कफ, रक्तपित्त, तृषा ज्वर, अरुचि और कृमिरोगका नाश करे है ।

मुस्तकगुणाः ।

क्षुद्रमुस्तातुकटुकामेध्याकान्तिप्रदाहिमा ।
सुगन्धिकातुतुवराकट्वीरक्तरुजापहा ॥
कफपित्तज्वरकृमिवाय्वतीसारनाशिनी ।
रक्तरुग्व्रणदाहघ्नीकण्डूामशूलघर्महा ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-मोथा-चरपरा, मेध्य, कान्तिदायक, शीतल, सुगन्धि, कषेला तथा रुधिरविकार, कफ, पित्तज्वर, कृमि, वात, अतिसार, रक्तरोग, व्रण, दाह, कण्डू, आम, शूल और पसीनेको दूर करे है ।

नागरमुस्तकगुणाः ।

तिक्तानागरमुस्ताकटु कषायाचशीतलाकफनुत् ॥
पित्तज्वरातिसारारुचितृष्णादाहनाशिनीश्रमहृत् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-नागरमोथा-चरपरा, कषेला, शीतल, कफनाशक तथा पित्त, ज्वर, अतिसार, अरुचि, तृषा दाह और श्रमका नाश करैहै ।

अपिच भद्रमुस्तागुणाः ।

भद्रमुस्तातुतुवराशीतातिक्ताचपाचका ।
कट्वग्निदीपनीग्राहीचाम्लपित्तकफापहा ॥
अतिसाररक्तदोषज्वरंचैवविनाशयेत ।

अरुचिंचतृषांचैवक्रूमीनपिविनाशयेत् ॥ (नि० १०)

अर्थ-भद्रमोथा-कषेला, शीतल, कडवा, पाचक, चरपरा, अग्निदीपक, ग्राही, अम्ल तथा पित्त, कफ अतिसार, रुधिरदोष, ज्वर, अरुचि, पिपास और कृमिरोगका नाश करे है ।

मोथेकी अनेक जाति है, कोई पानीमें होताहै, कोई मोटीडण्डीवाला और कोई छोटी डण्डीका होता है । किन्तु सर्वप्रकारके मोथोंमें नागरमोथा उत्तम होताहै ।

व्यवहार-नहु । मात्रा माशेसे ३॥ माशेतक ।

कैवर्तमुस्तकनामानि ।

कैवर्त्तीमुस्तकंवन्यंकुटनटंकुटन्नटम् ।
मितपुष्पदासपूग्वालेयपरिपेलवम् ॥

अर्थ-कैवर्त्तीमुस्तक, वन्य, कुट, नट, कुटनट, सितपुष्प, दाशपूर, वालेय, परिपेलव, (कैवर्तमुस्त, दशपुर, पुर, गोपुर, गोनर, केवटी, दाशपुर, दशपुर परिपेल, पारिपेल कैवर्तिमुस्तक कैवर्त्तमुस्तक वनगम्भर, धान्य, शीतपुष्प, जीर्णवुध्नक)

अस्यगुणाः ।

वितुन्नकंहिमतिक्तकषायकटुकान्तिदम् ।
कफपित्तास्रवीसर्पकुष्ठकण्डूविषव्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केवटीमोथा-शीतल, कडुवा, कषैला, चरपरा, कान्तिदायक तथा कफ रक्त पित्त वीसर्प, कोढ खुजली और विषविकारको दूर करैहै ।

अपिच ।

परिपेलंकटूष्णचकफमारुतनाशनम् ।
व्रणदाहामशूलघ्नंरक्तदोषहरंपरम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-केवटीमोथा-चरपरा गरम कफवातनाशक तथा व्रण, दाह, आम, शूल और रक्तविकारको हरैहै ।

विवरण-इसकी गुणजातिहै इसको जदर्भ मुराशि आदि संस्कृत इसको कैवर्तमुस्तक कहते है, हिन्दीमें केवटीमोथा पंजाबमें केउडमुथा, केमुरीआमुथा, मराठीमें, केवडीमोथा, गुजरातीमें केवटमोथा कहतेहैं ।

व्यवहार-नहु । मात्रा मन मासेसे ।

शैलेयनामानि।

शैलाख्यशैलेयवृद्धंसुभगंगिरिपुष्पकम्।

अर्थ–शैलाख्य, शैलेय, वृद्ध, सुभग, गिरिपुष्पक (शीतशिव, शिलासन, शैलज, शीतल, शैल, कालानुसार्य, शिलेय, शैलक, कालानुसारिवा, अश्मपुष्प, गृह, शिलाभव, शिलापुष्प, शिलोद्भव, स्थविर, पलित, जीर्ण, कालानुमार्यक, शिलोत्थ, शिलदद्रु, शिलाप्रसन, शिलापुष्प)

हिन्दीभाषामें	भूरिछरीला, पत्थरका फूल।
वङ्गभाषामें	शैलज।
मराठीभाषामें	दगडफूल।
गुजरातीभाषामें	पत्थरफूल।
कर्णाटकीभाषामें	कलहू, कलट्टू।
तैलिङ्गीभाषामें	शैलेयमने द्रव्यमु।
लैटिनभाषामें	पारमेलिया परलेटा। परमेलिया वरफोरेटा Parmaliar perletaP Perforatus
फारसीभाषामें	दहाल।
अरबीभाषामें	आशीना।

अस्यगुणाः।

शैलेयशीतलहृद्यकफपित्तहरलघु।

कण्डूकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्रुदरक्तहृत्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–छरीला–शीतल, हृदयको हितकारी, कफपित्तनाशक, हलका तथा कण्डू (खुजली), कुष्ठ, पथरी, दाह, विष और गुदासे रक्त गिरनेको दूर करे है।

अपिच।

शैलेयशिशिरतिक्तसुगन्धिकफपित्तजित्।

दाहतृष्णावमिश्वासव्रणदोषविनाशनम्। (रा० नि०)

अर्थ–छरीला–शीतल, कडवा, सुगन्धि तथा कफ, पित्त तृषा, वमन श्वास और व्रणदोषनाशक है।

अन्यच्च।

शैलेयकटुकशीतसुगन्धिलघुहृद्यकम्।

रुच्यचकफपित्तघ्नदाहतृष्णावमिप्रणुत्॥

श्वासव्रणंचकण्डूंचकुष्ठाश्मरीविषज्वरान् ।
रक्तदोषंवातरोगंरक्तार्शंचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-भूरिछरीला-चरपरा, शीतल, सुगन्धि, हलका, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा कफ, पित्त, दाह, तृषा, वमन, श्वास, घाव, खुजली, कोढ़, पथरी, विष, ज्वर, रुधिरविकार, वातरोग और रक्त. बवासीरका नाश करे है। मात्रा छै ६ मासे की ।

रेणुकाकपिलाकौन्तीहरेणुर्भस्मगन्धिका ।
कृतान्ताराजपुत्रीचनन्दिनीखरनादिनी ॥

अर्थ-रेणुका, कपिला, कौन्ती, हरेणु भस्मगन्धिका, कृतान्ता, राजपुत्री, नन्दिनी, खरनादिनी, (द्विजा अभीष्टा, वत्सर्गा, वत्सपूर्ती, वरा, शान्ता, महिला, हिमा, रेणु, हरेणुका, सुपर्णिका, पाण्डुपुत्री, शिशिरा, शान्ता, वृत्ता, हैमगन्धिनी, धर्मिणी, कपिलोमा, हमवती, पाण्डुपत्नी)

हिन्दीभाषामें	रेभालूके बीज रेणुका ।
बंगभाषामें	रेणुक ।
मराठीभाषामें	रेणुकबीज ।
गुजरातीभाषामें	हरेणु ।
कर्णाटकीभाषामें	रेणुका ।
तामिलीभाषामें	मेट्टी ।
लैटिन्भाषामें	विटेक्सस्पेस्योसा । Vitex Speciosa

भस्यगुणा ।

रेणुकाकटुकापाकेतिक्तानुष्णाकटुर्लघु ।
पित्तलादीपनीमेध्यापाचनीगर्भपातिनी ॥
वलासवातवैकृव्यतृट्कण्डूविषदाहहृत् । (भा० प्र०)

अर्थ-रेणुका पचनेमें चरपरी, कड़वी, किंचित् उष्ण, चरपरी हलकी, पित्तकोप, अग्निदीपक, मेधाजनक, पाचक, गर्भको गिरानेवाली तथा कफ वात, विकलता तथा कण्डू विष और दाहका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

रेणुकातुकटुःशीताखर्जूकण्डूतिदारिणी ।
तृष्णादाहविषघ्नीचमुखवैमल्यकारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतल तथा खर्ज, कण्डु, तृषा, दाह और विष-नाशक है और मुखको विमल करहै ।

अन्यच्च ।

रेणुकाकटुकाशीतामुखवैमल्यकारका ।
तिक्ताचपित्तलालघ्वीचाग्निमेधाकरीमता ॥
पाचनीगर्भपातस्यकारिणीदद्रुकण्डुहा ।
तृष्णादाहविषक्लैब्यकफवातविनाशिनी ॥ (नि०र०)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतल, मुखको स्वच्छ करनेवाली, कडवी, हलकी, पित्तजनक तथा अग्नि और मेधा इनको उत्पन्न करनेवाली, पाचक, गर्भको पतन करनेवाली तथा दाद, खुजली, तृषा, दाह, विष, नपुसकता, कफ और वातका विनाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

रेणुकाकफवातघ्नीदीपनीपित्तलालघुः । (रा० व०)

अर्थ-रेणुका-कफ वातनाशक, अग्निदीपक, पित्तकारक और हलकी है । रेणुकाको कोई वैद्य निर्गुण्डी अर्थात् सभालुके बीज कहते है, और कोई मेंहदीके बीज कहतेहैं । सो मेंहदीके बीजोंसे रेणुकामें बहुत अन्तर है ।

ग्रन्थिपर्णनामानि ।

ग्रन्थिपर्णबर्हिपुष्पस्थौणेयग्रन्थिपर्णकम् ।

अर्थ-ग्रन्थिपर्ण, बर्हिपुष्प, स्थौणेय, ग्रन्थिपर्णक (शुक, कुकुर, बर्हिपुष्प, बर्ह, शुकबर्ह, विशीर्णाख्य, स्वारामगुच्छक, बर्हि, शुकपुच्छ, शुकच्छद, गुत्सक, बर्हिकुसुम, ग्रन्थिक, काकपुष्प, गुच्छक, नीलपुष्प, सुगन्ध, तैलपर्णक)

ग्रन्थिपर्णलक्षणम् ।

ग्रथिक पाण्डुर किञ्चित्कनिष्ठ·सर्वसम्मत ।
उत्तम·कृष्णवर्णोय स्थूलोऽतीवचनिन्दितः॥(ह०मि०)

अर्थ-कुछ पाण्डुरगका गठिवन कनिष्ठ होताहै, काले रगका उत्तम होताहै और स्थूल अत्यन्त निन्दित है ।

ग्रथिपर्णगुणा· ।

ग्रथिपर्णतिक्ततीक्ष्णकटूष्णदीपनलघु ।
कफवातविष·श्वासकण्डूदौर्गन्ध्यनाशनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गठिवन-कडवा, तीक्ष्ण, चरपरा, गरम, अग्निको दीपन करनेवाला, हलका तथा कफ, वात, विष, श्वास, खुजली और दुर्गन्धका नाश करैहै। यह सुगन्धिपदार्थ है, यह शरीरपर लेप करनेसे रूक्षता उत्पन्न करे है, तथा अलक्ष्मी, ज्वर और राक्षसबाधाको हरै है इसको हिन्दीभाषामें गठिवन कहतेहैं, बंगभाषामें गेठेला, मराठीभाषामें गठोना और कर्णाटकीभाषामें गाटिवन कहतेहैं।

स्थौणेयकनामानि।

स्थौणेयविकीर्णसञ्ज्ञंहरितंशुकपुच्छकम्।

अर्थ-स्थौणेय, विकीर्णसंज्ञ, हरित, शुकपुच्छक, (स्थौणेयक, बर्हिशिख, शुकच्छद, मयूरचूड, विकीर्णरोम, कीरवर्णक, बर्हिचूड, शुकपिच्छ, शुकबर्ह, विकच, शीर्णरोमक, बर्हिबर्ह, कुक्कुर, शीर्णरोम)

स्थौणेयकगुणाः।

स्थौणेयकफपित्तघ्नसुगन्धिकटुतिक्तकम्।
पित्तप्रकोपशमनबलपुष्टिविवर्द्धनम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-थुनेर-कफ, पित्तनाशक, सुगन्धि, चरपरा कडवा, पित्तके कोपको शान्त करनेवाला तथा बल और पुष्टिवर्द्धक है।

अपिच।

स्थौणेयककटुस्वादुतिक्तस्निग्धत्रिदोषनुत्।
मेधाशुक्रकररुच्यरक्षोघ्नज्वरजन्तुजित्॥
हन्तिकुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गन्ध्यतिलकालकान्।(भा०प्र०)

अर्थ-थुनेर-चरपरा, स्वादिष्ट कडवा स्निग्ध त्रिदोषनाशक, मेधाकारक शुक्रकारक, रुचिकारी तथा राक्षसबाधा, ज्वर कृमि, कोढ रुधिरविकार पियास दाह, दुर्गन्ध और शरीरके तिल्लोंको दूर करनेवाला है।

इससे अधिक गुण देखनेकी अभिलाषा हो तो भावप्रकाशमें देखो। यह सुगन्धि द्रव्य है, इसको हिन्दीभाषामें थुनेर कहतेहैं बंगभाषामें गन्धपर्णभेद कहतेहैं, मराठीभाषामें थुनेर कर्नाटकी भाषामें [illegible] और [illegible]भाषामें [illegible] कहतेहैं।

[illegible]नामानि।

तस्करश्चोरकश्चण्डाह्निव कोपधुर्स्थलः।

अर्थ–तस्कर, चोरक, चण्डा, कितव, क्रोधमूर्च्छित (दुष्कुलीन, विरोध, कोरक, धनहरी, क्षेम, राक्षसी, गणहासक, शङ्कित, खडग, दुष्पत्र, क्षेमक, रिपु, चपल, धूर्त, पटु, नीच, निशाचर, गणहास, कोपनक, चोर, फलचोरक, दुष्कुल, ग्रथिल, सुगन्धि, पर्णचोरक, ग्रन्थिपर्ण, ग्रन्थिदल, ग्रन्थिपत्र, धनहर)

अस्य गुणाः ।

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णस्तिक्तोवातकफावहः ।
नासामुखरुजाजीर्णकृमिदोषविनाशनः ॥

अर्थ–चोरक सुगन्धद्रव्य, तीव्रगन्ध, कडवा तथा वात, कफ, नासारोग, मुखरोग, अजीर्ण और कृमिदोषनाशक है ।

अपिच ।

चोरकोमधुरस्तिक्त कटुःपाकेकटुर्लघुः ।
तीक्ष्णोहृद्योहिमोहतिकुष्ठकण्डूकफानिलान् ॥
रक्षोश्रीस्वेदमेदोऽस्रज्वरगन्धविषव्रणान् । (भा० प्र०)

अर्थ–चोरक, मधुर, तिक्तरसयुक्त, पचनेमें चरपरा, चरपरा, हलका, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, शीतल तथा कोढ, खुजली, कफ, वात, राक्षस, अलक्ष्मी, पसीना, रुधिरविकार, मेदरोग ज्वर, गन्ध विष और व्रणका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णोमधुरस्तिक्तोलघुःस्मृतः ।
पाकेकटुश्चतीक्ष्णश्चहृद्योवातविकारहा ॥
कण्डूकुष्ठकफस्वेदत्वग्दोषविषनाशनः ।
व्रणमेदरक्तदोषमुखनासारुजजयेत् ॥
कृमीनजीर्णदौर्गन्ध्यमलक्ष्मीनाशनविदुः ।
क्रव्यादबाधांशमयेदितिवैद्यैर्निरूपितः ॥ (नि० र०)

अर्थ–चोरक–तीव्रगन्ध, उष्ण, मधुर तिक्त, लघु पाकके समय चरपरा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी तथा वात, कण्ठ कोढ, कफ, मेद, त्वचाके विकार, विष, घाव, रुधिरविकार, मुखरोग, नासारोग, कृमि अजीर्ण, दुर्गन्ध अलक्ष्मी और राक्षसबाधाको दूर करे है ।

यह सुगन्धि द्रव्य गांधिवर्गीया भट्टहै। इसको नेपाल देशमें भटेडर और पार्वती देशादिकोंम चोरा कहतेहैं। मात्रा २ मासेकी।

कुष्ठनामानि।

कुष्ठव्याधि पारिभाव्यव्याप्यपाकलमुत्पलम्।

अर्थ-कुष्ठ, व्याधि, पारिभाव्य व्याप्य पाकल, उत्पल (पद्मात्य, कुष्ठ, व्याप्य, गन्धाढ्य, आप्य, जरण, कौवेर, भागुर, गदाढ, गदाढ्य कुष्ठिक, वाकर, नीरुज, आमय, रुजा, गद, वार्णीराज, पारिभद्रक, राम, कुत्सित, पावन पद्मक रोग, रोगाढ्य, किञ्जल्क, हरिभद्रक)

हिन्दी भाषामें	कुठ
बंग भाषामें	कुड
मराठी भाषामें	कोष्ठ
गुजराती भाषामें	कुठ, उपलेट।
कर्णाटकी भाषामें	कोट।
तैलङ्गी भाषामें	चगल कुष्ठ। चेंगलिकोष्ठ।
इंग्रेजी भाषामें	कोस्टसरूट Costus root
लेटिन भाषामें	सासुरीआलेप्पा Saussurea lappa
	औपकेंडियाकोलिंग
फारसी भाषामें	साश्वद।
अरबी भाषामें	कुस्तवेहरी

अथ गुणाः।

कुष्टकटूष्णतिक्तस्यात्कफमारुतकुष्ठजित।
विसर्पविषकण्डूतिखर्जूद्दुमकान्तिकृत ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुठ-चरपरा, गरम कडवा तथा रस, वात कोढ विसर्प विष, खुजली, दाद और शरीरकी कुरु करे और कान्ति करे।

अन्यच्च।

कुष्ठश्वासकासकुष्ठज्वरहिक्काविनाशयेत्।

अर्थ-कुठ-गरम, चरपरा स्वादिष्ठ, गरम कडवा हलका तथा वातरक्त वीसर्प, खांसी, कोढ और दाह इनका नाश करे।

अन्यच्च।

कोष्टमुष्णकटुस्तिक्तं स्यात्कुष्ठ्यघनमुकन्दम्।

रसायन कान्तिकर लघुर्वातकफापहम् ॥
कुष्टविषविसर्पश्च कण्डू दद्रु त्रिदोषकम् ।
पामारक्तविकार च कास वान्तितृषांतथा ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तलेपनाद्वातव्याधिजित् । (नि०र०)

अर्थ-कूठ-उष्ण, कटु, तिक्त, स्वादु, वृष्य, शुक्रजनक, रसायन, कान्तिजनक, लघु, वातकफनाशक तथा कुष्ठ, विसर्प, कण्डू, दद्रू, त्रिदोष, पामा, रुधिरदोष, खाँसी और वान्तिको दूर करैहै, इसका लेप करनेसे वातव्याधि दूर होतीहै, यह वृक्षकी सुगन्धियुक्त जड है, इसकी उत्पत्ति सिन्धु नदीके तीरपर है मात्रा ६ रत्तीकी ।

कचूरनामानि ।

कर्चूरोवेधमुख्यश्चद्राविड कल्पक शठी ।

अर्थ-कर्चूर वेध्य, मुख्य, द्राविड, कल्पक, शठी, (कार्श्य, दुर्लभ, गन्धमूलक, गन्धसार, जटाल)

हिन्दी भाषामें	कचूर, काली हलदी ।
बंग भाषामें	एकाङ्गी ।
मराठी भाषामें	कचोरा । नरकचोरा । काचरी ।
गुजराती भाषामें	कचूरो ।
कर्णाटकी भाषामें	कचोरा ।
तैलिङ्गी भाषामें	काचोराछु । ओकाती कचेट्टा ।
इंग्रेजी भाषामें	लांग झेडीआरी Long/zedearo
लटिन् भाषामें	कर्क्यूमाझरंबेट Curcumazo umbrt
फारसी भाषामें	जरंबाद ।
अरबी भाषामें	उर्कुल्काफुर ।

कचूरगुणाः ।

कर्चूरो दीपनो रुच्य कटुकस्तिक्त एव च
सुगन्धि कटुपाक स्यात्कुष्ठार्शोव्रणकासनुत् ॥
उष्णोलघुर्हरेच्छ्वास गुलमवातकफक्रिमीन् । (भा०प्र०)

अर्थ-कचूर-अग्निको दीपन करनेवाला रुचिको उत्पन्न करनेवाला, चरपरा कडवा, सुगन्धि, कटुपाकी तथा कोढ, बवासीर, घाव और

खांसीको दूर करै है। गरम, हलका और श्वास, गुल्म, वात, कफ तथा कृमिरोगका नाश करै है।

अन्यच्च।

कर्चूरःकटुतिक्तोष्णःकफकासविनाशनः।
मुखवैशद्यजननोगलगण्डादिदोषनुत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—कचूर—चरपरा, कडवा, गरम मुखको स्वच्छ करनेवाला तथा कफ खांसी और गलगण्डादि रोगोंका नाश करै है।

अन्यच्च।

शटीतिक्ताचकटुकाचोष्णातीक्ष्णाग्निदीपनी।
सुगन्धिरुचिरालघ्वी मुखस्वच्छकरी मता ॥
कोपनी रक्तपित्तस्य गलगण्डादिरोगहा।
कुष्ठार्शोव्रणकासघ्नी श्वासगुल्मकफापहा ॥
त्रिदोषक्रिमिवातानाज्वरप्लीहादिनाशकृत्। (नि० र०)

अर्थ—कचूर—कडवा, चरपरा गरम तीक्ष्ण अग्नि संदीपक, सुगन्धि, रुचिकारक, हलका, मुखको स्वच्छ करनेवाला रक्तपित्तको कुपित करनेवाला तथा गलगण्ड गंडमालादिकोढ बवासीर घाव, खांसी श्वास, गोला, कफ, त्रिदोष, कृमि, वात, ज्वर और प्लीहा इत्यादि रोगोंका नाश करनेवाला है।

अपिच।

"कर्चूरोमरुदामघ्नोदीपनोरक्तपित्तकृत्।
अजीर्णजरणश्वासेऽप्यपस्मारं पिपुजित ॥"

अर्थ—कचूर—वात तथा आमनाशक है दीपन है, रक्त, पित्त, रोगको उत्पन्न करनेवाला है अजीर्ण रोगको दूर करनेवाला है तथा मृगीरोगमें और श्वास रोगमेंभी इसको सर्वोत्तम कहेहै।

विवरण—कचूरका क्षुप होताहै, पत्ते हल्दीके समान होतेहैं इसके कंद आदिभी हल्दीके समान गांठ होतीहैं। उस गांठको सुखाकर और उसी गांठको कचूर कहतेहैं मात्रा ४ मासेकी।

गन्धपलाशीनामानि।

शटीपलाशीषड्ग्रन्थासुव्रतागन्धमूलिका।
गन्धारिकागन्धवधूर्वधूःपृथुपलाशिका ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—शठी, पलाशी पड्ग्रथा, सुव्रता, गन्धमूलिका, गन्धारका, गन्धवधू, वधू, पृथुपलाशिका, (गन्धमूली, ग्रथिका, कर्पूर, पलाशसटी, शठी, पटी, गन्धशटी, कर्बुर, कर्चुर, सुगन्धासटी, गन्धमूला, गन्धोलि, गन्धमूलक, सुगन्धा, गन्धसटी, गन्धमूल, गन्धपलाशी, जीमूतमूल, कच्छोरा, हिमजा, हेमी, पड्ग्रन्थि, गन्धोलि, पलाशा, हिमाग्रन्था, अम्लनिशा, सुगन्धमूला, गन्धोरी, शठिका, पलाशिका, समुद्रा, तृणी, दूर्वा, गन्धा, पृथुपलाशिका, मठी, अम्लहरिद्रा, सौम्या, हिमोद्भवा, गन्धवधू)

हिन्दीभाषामें	गन्धपलाशी, कचूरभेद, कपूरकचरी ।
वङ्गभाषामें	शटी, आम, आदा, गन्धशठी ।
मराठीभाषामें	कापूरकचरी ।
गुजरातीभाषामें	कपूरकाचरी ।
कर्णाटकीभाषामें	गन्धशटी ।
तलङ्गभाषामें	किचल्लिरागड्डल ।
लेटिन्भाषामें	हिडिक्यम् स्पिकेटम् । Hedychum Spectatum
अरबीभाषामें	जरवाद ।
वम	आवेहलद् ।

अस्य गुणाः ।

भवेद्गन्धपलाशी तु कषायाग्राहिणीलघुः ।
तिक्तातीक्ष्णाचकटुकानुष्णास्यमलनाशिनी ॥
शोथकासव्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा । (भा० प्र०)

अर्थ—गन्धपलाशी—कषैली, ग्राही, हलकी, कडवी, तीक्ष्ण, चरपरी किञ्चित् उष्णा, मुखके मलका नाश करनेवाली तथा सूजन, खांसी, घाव, श्वास शूल, हिध्म और ग्रहनाशक है ।

अपिच ।

ससुगन्ध कर्चुरकस्तीक्ष्णोदाहीकटु स्मृतः ।
तिक्तश्चतुवरश्चैव शीतवीर्यो लघु स्मृत ॥
किञ्चित्पित्तकोपयतिकासश्वासज्वरापह ।
शूलहिक्कागुल्मरक्तरुजवातत्रिदोषकम् ॥
मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यव्रणामच्छर्दिहिध्महा । (नि० र०)

अर्थ-कपूरकचरी-(ग्रेयाकनृग) तीक्ष्ण दाहजनक, चरपरी कड़वी कसेली, शीतवीर्य, हलकी तिक्त पित्तकारक तथा खांसी श्वास ज्वर शूल, हुचकी, गोला, रुधिररोग, वातादि त्रिदोष मुखकी विरसता दुर्गन्ध घाव, आम, वमन और हिध्मरोगको नष्ट करैहै।

विवरण। येह होतीहै, इसकी, जड़ सुगन्धियुक्त कन्दकी समान होतीहै, जाके टुकड़े कर सुखालेतेहैं, उसीको गन्धपलाशी अर्थात् कपूरकचरी कहतेहैं

मुरानामानि।

गंधिनीतालपर्णीतुदैत्यागन्धकुटीमुरा।

अर्थ-गन्धिनी, तालपर्णी, दैत्या, गन्धकुटी, मुरा, (सुगन्धवर्णा दिव्या, गन्धाढ्या, गन्धमादिनी, सुरभि भृंगगन्धा सुरी, गन्धिनी, पुर गन्धा, तालपर्णिका और मुरमांसी)

हिन्दीभाषामें	एकांगी मुरा।
बंगभाषामें	मुरामांसी।
मराठीभाषामें	एकांगीमुरा। मोरमांसी।
कर्णाटकी भाषामें	मुर।
गुजराती भाषामें	मोरमांसी।

मुरागुणाः।

मुरातिक्ताहिमास्वाद्वीलघ्वीपित्तानिलापहा।
ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नीकुष्ठकासविनाशिनी ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मुरामांसी-कड़वी, शीतल स्वादिष्ट लघु तथा पित्त, वात, ज्वर, रुधिरदोष, भूत, राक्षस बाधा और कासरोगका नाश करैहै।

एकांगी।

एकांगीकटुकातिक्ता तुवराशीतला मता।
लघुस्वादुसुगन्धाग्न्याहिंद्रियाणांचहर्षदा ॥
कफपित्तश्वासवातरक्तदोषविषापहा।
दाहभ्रमतृषामूर्च्छाज्वरकुष्ठविनाशिनी ॥
पिशाचरक्षसामालक्ष्मीबाधानाशकरीमता। (नि०र०)

अर्थ-एकांगी-चरपरी कड़वी कसैली, शीतल, हलकी स्वादिष्ट सुगन्धि इन्द्रियोंको सुख करनेवाली तथा कफ पित्त श्वास वात रुधिरविकार विष

कार, दाह, भ्रम, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, कोढ, पिशाचबाधा, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करेहै ।

लामज्जकनामानि ।

लामज्जकसुनालस्यादमृणाललयलघु ।
इष्टकापथिकसेव्यनलदचावदातकम् ॥

अर्थ-लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लय लघु, इष्टकापथिक, सेव्य, नलद, अवदातक, (सुनील, शीघ्र, दीर्घमूल, जलाशय और अवदाहक)

हिन्दी भाषामें	लामज्जक ।
बंगभाषामें	गन्धवेणा ।
मराठीभाषामें	लावज, पिंवळावाळा ।
गुजराती भाषामें	सुगंधिपील्लु, खडजल, जलवालो ।
तेलगी भाषामें	तेल्वट्टिवेरु ।

श्रेष्ठलामज्जकलक्षणम् ।

दीर्घमूलदृढसूक्ष्ममुत्तमंगन्धसंयुतम् ।
देशेसाधारणेजातलामज्जभद्रकभवेत् ॥ (भै० चि०)

अर्थ-जिसकी बडी जड हो, दृढ हो सूक्ष्म हो, सुगन्धियुक्त हो, साधारण देशमें उत्पन्न हुआ हो, ऐसा लामज्जक श्रेष्ठ होताहै ।

अस्य गुणाः ।

लामज्जकहिमतिक्तलघुदोपत्रयास्रजित् ।
त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-लामज्जक-शीतल, कडवा, हलका, त्रिदोषनाशक तथा रक्तरोग, त्वचाके रोग, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, दाह और रक्तपित्त रोगको दूर करे है ।

अपिच ।

लामज्जकहिम तिक्तमधुर वातपित्तजित् ।
तृड्दाहश्रममूर्च्छार्त्तिरक्तपित्तज्वरापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लामज्जक-शीतल कडवा, मधुर, वातपित्तनाशक तथा तृषा दाह, श्रम मूर्च्छा, रक्तपित्त और ज्वरको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

लामज्जकन्तुमधुरतिक्त शीतश्चपाचकम् ।

स्तम्भनलघुपित्तघ्नंवाततृड्दाहनाशनम् ॥
त्रिदोषश्रममूर्च्छास्रशूलवातिविनाशनम् ।
ज्वरञ्च रक्तदोषञ्च स्वेदकृच्छ्रं मदकफम् ॥
व्रणविषविसर्पञ्चनाशयेदितिकीर्त्तितम् (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-रामज्जक-मधुर, तिक्त (कडवा), शीतल, पाचन, स्तम्भन, हलका पित्तनाशक तथा वात, तृषा दाह, त्रिदोष, श्रम, मूर्च्छा, रक्त, शूल, वमन, ज्वर, रुधिरविकार, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, मद, कफ, घाव, विष और विसर्प इनको दूर करे है ।

यह एक प्रकारका सुगन्धि तृण नरम और वेगरगम होताहै ।

मात्रा २ मासेकी ।

स्पृक्कानामानि ।

स्पृक्कालताकोटिवर्षामरुन्माला लतामरुत् ।
लङ्कापिकासमुद्रान्ता कुटिला देवपुत्रिका ॥

अर्थ-स्पृक्का-लता कोटिवर्षा, मरुन्माला लतामरुत्, लङ्कापिका, समुद्रान्ता, कुटिला, देवपुत्रिका, (देवपुत्री वधू, पृक्का पिशुना, लघु वधू, लङ्कायिका, लङ्कापिका, ब्राह्मणी मनु, मालालिका मालाली, स्पृक्का, पथगु तिरसा समुद्रकान्ता मरुत, माला कोटि वर्षा लङ्कोपिका, वर्षाङ्कायिका तस्कर चोरक, चण्ड, अमृत)

हिन्दीभाषामें	असबरग असबरक पर्ग ।
बङ्गभाषामें	पिडिङ्ग शाक ।
मराठीभाषामें	स्पृक्का मर्गानी पाकुरी, शाक ।
कर्णाटकभाषामें	दिग्र ।
तैलङ्गीभाषामें	स्पृक्कनेड्डप्पगु ।
उत	तिर्गिवनार ।

अस्या गुणाः ।

स्पृक्कास्वाद्वीहिमावृष्यातिक्तानिखिलदोषनुत् ।
कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहास्रज्वररक्तजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-असबरग-स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यवर्धक, कडवा, सम्पूर्ण दोषनाशक तथा कोढ, खुजली विष, पसीना दाह रक्त ज्वर और रक्तविकारको हरे है ।

अपिच ।

स्पृक्काकटु कषायाचतिक्ताश्लेष्मार्तिकासजित् ।
श्लेष्ममेहाश्मरीकृच्छ्रनाशिनीचसुगंधिदा ॥ (रा०नि०)

अर्थ–असवरग–चरपरा, कषेला, कडवा तथा कफसे उत्पन्न हुई पीडा-खासी, कफ, प्रमेह, पथरी और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करे है और सुगन्धि, दायक है ।

अन्यच्च ।

स्पृक्कातुमधुरापाकेहृद्याचकफपित्तनुत् । (रा० व०)

अर्थ–असवरग–पचनेमें मधुर, हृदयको हितकारी और कफपित्तनाशक है)

अपिच ।

गर्गोनाकटुकातिक्तातुवरास्वादुशीतला ।
वृष्याचैवसुगंधिश्चकासतृण्मेहनाशिनी ॥
कण्डूत्रिदोषकुष्ठचविषदोषज्वर कफम् ।
स्वेददाहरक्तदोषदौर्गन्ध्यञ्चतथाश्मरीम् ॥
मूत्रकृच्छ्र च शूलञ्च नाशयेदितिकीर्तिता । (नि०र०)

अर्थ–असवरग–चरपरा, कडवा, कषेला, स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यजनक, सुगन्धि तथा खासी पियास, प्रमेह, खुजली, त्रिदोष (वात, पित्त, कफ । कोढ, विषविकार, ज्वर, कफ, पसीना, दाह, रुधिरविकार, दुर्गन्ध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और शूलको निर्मूल करे है ।

एलावालुकनामानि ।

एलावालुकमैलेयसुगन्धिहरिवालुकम् ।

अर्थ–एलावालुक–ऐलेय, सुगन्धि, हरिवालुक, (वालु, वाउक, एल्वा-लुक, एल्वालु, आलुक, एल्वबाउक, कपित्थत्वक, गन्धत्वक, कुष्ठगन्धी, कपित्थ, गन्धात्वक, एलालु, एल्वाउ)

अस्य गुणाः ।

एलालु कटुकपाके कषायशीतल लघु ।
हन्तिकण्डूव्रणच्छर्दितृट्कासारुचिहृद्रुज ॥
वलामविषपित्तास्रकुष्टमूत्रगुदक्रिमीन् । (भा० प्र०)

अर्थ-एलुआ-पकनेमें चरपरा, कसैला, शीतल हलका तथा खुजली, घाव छर्दि, पियास, खांसी, अरुचि, हृद्रोग कफ विष मल, विस्फोट, मूत्ररोग और कृमिरोगको नष्ट करै।

अन्यच्च।

एलावालुकमत्युग्रकषायं कफवातनुत् ।
मूर्च्छार्तिज्वरदाहांश्च नाशयेद्रोचनं परम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-एलुआ-अतिउग्र, कसैला, कफवातनाशक तथा मूर्छा ज्वर और दाहको दूर करै, और अत्यन्त रुचिको उत्पन्न करै।

अन्यच्च।

ऐलेयतुवरं रूक्षमत्युग्रं शीतलं लघु ।
पाकेकटुसुगन्धिस्यात्तिक्तशुद्धिकरंमतम् ॥
कफमूर्च्छावातदाहज्वरकण्डूविषव्रणान् ।
छर्दितृट्कासहृद्रोगपित्तरक्तरुजस्तथा ॥
वर्ष्मरुक्कृमिकुष्ठानिह्यरुचिंचविनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-एलुआ-कसैला, रूखा, अति उग्र शीतल हलका, पाकमें चरपरा, सुगन्धि कडुआ, शुद्धिकारक तथा कफ, मूर्छा वात दाह, ज्वर, खुजली, विष व्रण वमन तृषा खांसी हृद्रोग रक्तपित्तरोग वर्ष्मरोग कृमि कोढ और अरुचिको दूर करै।

एलुआ-सुगन्धि पदार्थ है इसमें कूठकी समान सुगन्धि आती है।

संस्कृतमें	एलवालुक।
हिन्दीमें	एलुवा।
बङ्गलामें	एलवालुका।
तैलङ्गीमें	पुनुगुपूस।
मराठीमें	एलवा।

प्रपौण्डरीकनामानि।

श्रीपुष्पपुण्डरीकंतुपौण्डर्यंपुण्डरीयकम् ।
प्रपौण्डरीकचक्षुष्यपुण्डर्यंपौण्डरीयकम् ॥

अर्थ-श्रीपुष्प-पुण्डरी, शीत पौण्डर्य, पुण्डरीयक प्रपौण्डरीक चक्षुष्य पुण्डर्य पौण्डरीयक (पुण्डरीक, पौण्डरीक पौण्डर्य [illegible], [illegible] हरिद्रा [illegible] पुण्डरिया नामक [illegible])

अस्य गुणाः ।

प्रपौण्डरीकचक्षुष्यमधुरतिक्तशीतलम् ।
पित्तरक्तव्रणान्हन्तिज्वरदाहतृपापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–पुण्डरिया–नेत्रोंको हितकारी, मधुर, तिक्त, शीतल तथा रक्त, पित्त, व्रण, ज्वर, दाह और तृष्णाकी शान्ति करैहै ।

अपिच ।

पौण्डर्यंमधुरतिक्तकषायशुक्रलहिमम् ।
चक्षुष्यमधुरपाकेवर्ण्यपित्तकफास्त्रनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–पुण्डरिया–मीठा, कडवा, कषेला, वीर्यवर्द्धक, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पचनेमभी मीठा, शरीरके वर्णको सुंदर करनेवाला, तथा पित्त कफ और रक्तदोषनिवारक है ।

प्रपौण्डरीक सुगंधि वृक्ष है, इसके रसको आखमे लगानेसे आखके रोग दूर होतेहै, इसको हिन्दीभाषामे पुण्डेरी, पुण्डरिया बंगभाषामें पुण्डरिया । मराठीमें पुण्डरीक वृक्ष । तैलङ्गीमें पुडरीक मनुगे विध्मानमु । गुजरातीमें पाण्डेरवा । कर्नाटकी भाषामें पुडरीक कहते हैं ।

पर्पटीनामानि ।



पनडी

जतुकारञ्जनीकृष्णापर्पटीचक्रवर्तिनी ।
जतुकृन्निमस्पर्शाजनेष्टाजननीतथा ॥

अर्थ-जतुका, रञ्जनी, कृष्णा, पर्पटी, चक्रवर्तिनी, जतुकृत्, जनि, जनेष्टा जननी, (जतुकारी, तिपरपला, निशान्ता, सुषविरा, मधुपर्णी गजकृष्णा, रपिरच्छु, कर्णोपमा, सूक्ष्मवल्ली भ्रमरी, कृष्णाशिरा, रिपुलिका कृष्णाम्हा, ग्रन्थिपर्णा मूर्वाशिरा, तम्वल्ली, दीर्घरसा, गर्ती जतुका जनिजन्तुका)

अस्या गुणाः ।

पर्पटीतुवरातिक्ताशिशिरावर्णकृल्लघु ।
विषव्रणहरीकण्डूकफपित्तास्रकुष्ठनुत ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पर्पटी-कसैली कड़वी, शीतल, वर्णकारक हलकी तथा विष, घाव खुजली, कफ पित्त रुधिर कुष्ठको नष्ट करे है ।

अपिच ।

जन्तुकाशिशिरातिक्तारक्तपित्तकफापहा ।
दाहतृष्णावमिघ्नीचरुचिकृद्दीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जनी-शीतल, कड़वी तथा रक्तपित्त कफ दाह, तृषा और वमन निवारक है तथा रुचिकारक और अग्निदीपक है ।

अपिच ।

पर्पटीशीतलावर्ण्या तुवरातिक्तका लघुः ।
अग्निदीप्तिकरीरुच्यारक्तपित्तकफाञ्जयेत् ॥
पित्तं च रक्तदोषं च कुष्ठदाहं वमिं तृषाम् ।
कुष्ठरोगंकण्डुरोगंव्रणंचैवविनाशयेत्॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-पर्पटी-शीतल, वर्णकारक कसैली, कड़वी हलकी अग्निदीपक-रुचिकारक तथा रक्तपित्त, कफ पित्त, रुधिरविकार कोढ़, दाह, वमन, तृषा, रोग, विष, खुजली और व्रणका विनाश करे है । यह पाश्चात्योंमें प्रसिद्ध है ।

नलिका नामानि ।

नलिकाविद्रुमलता कपोतचरणानटी ।
धमन्यञ्जनकेशीचनिर्मध्याशुषिरानली ॥

अर्थ–नलिका–विद्रुमलता, कपोतचरणा, नटी, धमनी, अञ्जनकेशी, निर्मध्या, शुषिरा, नली (कपोताङ्घ्रि, विद्रुमलतिका, कपोतवाणा, नलिनी, अध्मानी, स्तुत्या, रक्तदला, नर्त्तकी)

अस्यागुणा ।

नलिकाशीतलालघ्वीचक्षुष्याकफपित्तहृत् ।
कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ–नलिका–शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, पित्त, मूत्र-कृच्छ्र, पथरी, पियास, रुधिरविकार, कोढ, कण्डू और ज्वरको नष्ट करे है ।

अपिच ।

नलिकाकटुकातिक्तातीक्ष्णा च मधुरासरा ।
लघ्वीशीताचसंप्रोक्ताचक्षुष्यावातपित्तहा ॥
रक्तपित्तक्रिमिविषकफवातोदरापहा ।
शूलाश्मरीमूत्रकृच्छ्ररक्तदोषतृषाहरा ॥
कण्डूकुष्ठज्वरव्रणदुर्नामान चनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ–नलिका–चरपरी, कडवी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा वातपित्त, रक्तपित्त, कृमि, विष, कफ, वातोदर, शूल, पथरी, मूत्रकृच्छ, रुधिरविकार तृषा, खुजली, कोढ ज्वर घाव और बवासीरको दूर करे है ।

यह सुगंधिद्रव्य उत्तरखण्डम नलीनामसे प्रसिद्ध है इसका स्वरूप मूँगेके समान होता है, कहीं कहीं पवारी और प्रवाली, नामसे प्रसिद्ध है । कर्णाटकमें वेसनलिके कहते हैं । और तलिङ्ग देशम पचेमुक सुगंधि द्रव्यमु कहते है ।

पुदिनानामानि ।

व्यञ्जनोवान्तिहारीचरुचिश्य शाकशोभन ।

अर्थ–व्यञ्जन–वान्तिहारी, रुचिश्य, शाकशोभन,(सुगन्धिपत्र अर्जाणहर)

हिन्दी भाषाम	पोदीना ।
बङ्ग भाषाम	पुदिना ।
मराठी भाषामें	पुदिना ।
गुजराती भाषामें	फोदिनो ।
इंग्रेजीभाषाम	गेर्ड पेर्डमिंट । Tallredan ent

इंग्लिशभाषामें	गार्डनमिन्ट, स्पियरमिन्ट। Mentha Sylvestris
तिलंगभाषामें	ओद रोडा।
फारसीभाषामें	नॉअना।
अरबीभाषामें	हवा।

अस्य गुणाः।

पुदिनस्तु गुरुः स्वादू रुच्यो हृद्यः सुगन्धकः।
मलमूत्रस्तम्भकरः कफकासमदापहः॥
अग्निमान्द्यविसूचिघ्नः संग्रहण्यतिसारहा।
जीर्णज्वरकृमींश्चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-पोदीना-भारी, स्वादिष्ट, रुचिकारक हृदयको हितकारी, सुगन्धकर- (सुगन्धको देनेवाला), मल और मूत्रको रोकनेवाला तथा कफ, खांसी, मदहर, विसूचिका, संग्रहणी, अतिसार जीर्णज्वर और कृमिरोगका नाश करे है।

विवरण-इसका छोटा क्षुप होता है, मनुष्य घर और बागोंमें लगाते हैं पोदीना भारतीय नहीं है, कारण यह है कि, आदिके निघण्टुरत्नाकरसे (जो कि थोड़े दिनोंसे बना है) और किसी ग्रन्थमें नहीं देखा जाता, पोदीनेका अर्क निकालते हैं, यह अर्क वमनादिक अनेक रोगोंको दूर करता है, पोदीनेकी चटनी खानेसे अत्यन्त रुचि बढ़ती है।

इति शालिग्रामनिघण्टुभूषणे ...।



हरीतक्यादिवर्गः।

दक्षप्रजापतिस्वस्थमश्विनौवाक्यमूचतुः।
कुतोहरीतकीजातातस्यास्तुकतिजातय ॥
रसाःकतिसमाख्याता कतिचोपरसा स्मृता।
नामानिकतिचोक्तानिकिंवातासांचलक्षणम् ॥
केचवर्णगुणा के च का च कुत्रप्रयुच्यते।
केनद्रव्येणसंयुक्ताकांश्चरोगान्व्यपोहति ॥
प्रश्नमेतद्यथापृष्टं भगवन्वक्तुमर्हसि।
अश्विनोर्वचनंश्रुत्वादक्षोवचनमब्रवीत् ॥
पपातबिंदुर्मेदिन्यांशक्रस्यपिबतोऽमृतम्।
ततोदिव्यात्समुत्पन्नासप्तजातिर्हरीतकी ॥

अर्थ–प्रसन्नचित्त बैठेहुए दक्षप्रजापतिसे अश्विनीकुमारने पूछा कि, हे भगवन्! हमारे प्रश्नके अनुसार आप विधिपूर्वक कहिये कि, हरीतकी कहां उत्पन्न हुई? किस प्रकारसे इसका जन्म हुआ? कितने प्रकारकी है? इसमें कितने रस और उपरस रहतेहैं, सर्व प्रकारकी हरीतकीके नाम क्या हैं? उनके लक्षण क्या हैं? उनके रंग और गुण क्या क्या हैं? और कौनसी हरीतकी किसकिस प्रयोगमें आसकर्ताहै? और हरीतकी किसकिस द्रव्यके योगसे कौन कौनसे रोगोंका नाश कर्ताहै, इसप्रकार दोनों अश्विनीकुमारोंका वचन सुनकर दक्षप्रजापतिने उत्तर दिया कि, जिस समय देवराज इन्द्रने अमृतपान किया, तब उसमेंसे एक बूंद पृथ्वीपर गिरपडी, उस अमृतकी बूंदसे सातप्रकारसे हरीतकी उत्पन्न हुई।

हरीतकीनामानि।

हरीतक्यभयापथ्याकायस्थापूतनामृता।
हैमवत्यव्यथाचापिचेतकीश्रेयसीशिवा ॥
वयस्थाविजयाचापिजीवन्तीरोहिणीति च।

अथ-हरीतकी-अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हैमवती, अव्यथा चेतकी, श्रेयसी शिवा, वयस्था, विजया, जीवन्ती, रोहिणी (सुधा, चन्द्रा, रसायनफला, पाचनी प्रमथा, तारा, महौषधा, [illegible] [illegible], सुपोद्भवा, जया, चेतनकी, मधुपथ्या, [illegible], जीवनिका, भिषग्वरा, भिषक्प्रिया, जीवन्ती, प्राणदा, जीव्या देवी दिव्या [illegible] [illegible])



संस्कृतभाषामें	हरीतकी बालहरीतकी ।
हिन्दीभाषामें	हरड, हर्रा, हर्रे ।
बंगभाषामें	हरीतकी ।
मराठीभाषामें	हरडे । बाळहरडे ।
गुजरातीभाषामें	हरडे । हिमज ।
कर्णाटकीभाषामें	[illegible] ।
तैलङ्गीभाषामें	[illegible] ।
तामिलभाषामें	[illegible] ।
[illegible]	[illegible] । [illegible] ।
[illegible]	[illegible] ।
[illegible]	[illegible] । [illegible]
	[illegible]
[illegible]	[illegible] ।

फारसीभाषामें हलैले कलाजीरेजवी अस्फर हलैले जर्द ।
अरबीभाषामें एहलीलज, काबली, अहलीजअस्फर, अहलीज असवद ।

हरीतकी सप्तधा यथा ।

विजया रोहिणी चैवपूतना चामृताभया ।
जीवन्तीचेतकी चेति विज्ञेया' सप्त जातय· ॥

अर्थ-विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी, इन भेदोंसे हर्ड सात जातिकी है ।

सातोंके पृथक् २ लक्षण ।

अलाबुवृत्ताविजयावृत्तासारोहिणीस्मृता ।
पूतनास्थिमतीसूक्ष्माकथितामांसलाऽमृता ॥
पचरेखाभयाप्रोक्ताजीवन्तीस्वर्णवर्णिनी ।
त्रिरेखाचेतकीज्ञेयासप्तानामियमाकृति·॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-विजयाहरड-तोमडीके समान गोल और लम्बी होतीहै, रोहिणी हरड गोल होतीहै, पूतना हरड छोटीगुठलीवाली होती है, अमृतानामवाली हरड मोटीहोतीहै, पाचरेखावाली अभया हरड होतीहै, जीवन्ती हरड स्वर्णके समान पीलेरगकी होतीहै, और चेतकी हरड तीनरेखावाली होतीहै ।

जन्मस्थानम् ।

विंध्याद्रौविजयाहिमाचलभवास्याच्चेतकीपूतना
सिंधौस्यादथरोहिणीतुविजयाजाताप्रतिस्थानके ।
चम्पायाममृताभया च जनितादेशे सुराष्ट्राह्वये
जीवन्तीतिहरीतकीनिगदितासप्तप्रभेदा बुधै· ॥
(नि० र०)

अर्थ-विजयाहरड विंध्याचल पर्वतमें उत्पन्न होतीहै । पूतना और चेतकी हरड हिमालय पर्वतपे होतीहै । रोहिणी हरड सिंधु नदीके तीरपे होतीहै । और विजया हरड प्रतिस्थानमें होतीहै, अमृता और अभया हरड चम्पादेशमें उत्पन्न होतीहै । और जीवन्ती हरड सौराष्ट्रदेशमें उत्पन्न होतीहै ।

सप्ताना प्रयोगभेदा ।

विजयासर्वरोगेपुरोहिणीव्रणरोहिणी ।

प्रलेपेपूतनायोज्याशोधनार्थेऽमृताहिता ॥
अक्षिरोगेऽभयाशस्ताजीवन्तीसर्वरोगहृत ।
चूर्णार्थेचेतकीशस्तायथायुक्तंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–सर्व प्रकारके रोगोंमें विजया हरड देनी चाहिये, घावके भरनेके लिये रोहिणी हरड उत्तम है, लेपमें पूतना लेनी चाहिये, शोधनके अर्थ अमृता हरड हितकारी है नेत्ररोगमें अभया हरड श्रेष्ठ है, जीवन्ती हरड सब रोगोंको हरनेवाली है और चूर्णमें चेतकी हरड डालनी चाहिये ।

दोप्रकारकी चेतकी हरडका स्वरूप ।

चेतकीद्विविधाप्रोक्तासिताकृष्णाचवर्णतः ।
षडंगुलायताशुक्लाकृष्णात्वेकांगुलास्मृता ॥

अर्थ–चेतकी हरड–सफेद और काली इन भेदोंसे दो प्रकारकी है, तहां सफेद रंगकी हरड छः अंगुल परिमाण लंबी होती है और काले रंगकी चेतकी हरड एक अंगुल परिमाण लम्बी होती है ।

सब प्रकारकी हरडोंके रेचनगुण ।

काचिदास्वादमात्रेणकाचिद्गन्धेनभेदयेत् ।
काचित्स्पर्शेनदृष्ट्यान्याचतुर्धाभेदयेच्छिवा ॥

अर्थ–कोई हरड खानेसे, कोई सूंघनेसे कोई स्पर्श करनेसे, और कोई दर्शनमात्रसेही दस्त लाती है ऐसे चार प्रकारकी हरडें हैं ।

चेतकी हरडके रेचनगुण ।

चेतकीपादपच्छायामुपसर्पन्तियेनराः ।
भिद्यन्तेतत्क्षणादेवपशुपक्षिमृगादयः ॥
चेतकीतुधृताहस्तेयावत्तिष्ठतिदेहिनः ।
तावद्भिद्येतवेगैस्तुप्रभावान्नात्रसंशयः ॥
नृपाणांसुकुमाराणांकृशानांभेषजद्विषाम् ।
चेतकीपरमाशस्ताहितासुखविरेचनी ॥

अर्थ–चेतकी हरडके वृक्षकी छायामें जो मनुष्य पशु पक्षी, मृगादिक गमन करें, वह [illegible]

चेतकी हरडको हाथमें धारण किये रहेगा, तबतक उस प्राणीको उस हरडके प्रभावसे निश्चय दस्त होते रहेंगे, चेतकी हरडको सुकुमार दुर्बल और जो मनुष्य औषधिसे शत्रुता रखतेहैं, उनको कभीभी धारण नहीं करना चाहिये। चेतकी हरड अत्यन्त उत्कृष्ट हितकारी और सुखसहित दस्त करानेवाली है।

विजयाहरडकी प्रशंसा।

सप्तानामपिजातीनांप्रधानाविजयास्मृता ।
सुखप्रयोगा सुलभासर्वरोगेषु शस्यते ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सातप्रकारकी हरडोंमें विजया नामवाली हरड सर्वमें प्रधान है, प्रयोगभी सुखकारक है। सुलभ अर्थात् सब स्थानोंमें मिलती है और सर्व रोगोंमें दी जातीहै।

हरीतकीगुणा ।

कषायाम्लाचमधुरातिक्ताकटुरसान्विता ।
इति पंचरसा पथ्या लवणेनविवर्जिता ॥

अर्थ-कषाय, अम्ल, मधुर, तिक्त और कटु इस प्रकार हरड लवणरसके अतिरिक्त पांच रसवाली है।

रूक्षोष्णादीपनीमेध्यास्वादुपाकारसायनी ।
चक्षुष्यालघुरायुष्याबृंहणीचानुलोमनी ॥
श्वासकासप्रमेहार्शः कुष्ठशोथोदरक्रिमीन् ।
वैस्वर्यग्रहणीरोगविबन्धविषमज्वरान् ॥
गुल्माध्मानतृषाच्छर्दिहिक्काकण्डूहृदामयान् ।
कामलांशूलमानाहप्लीहानचयकृत्तथा ॥
अश्मरीमूत्रकृच्छ्रंचमूत्राघातंचनाशयेत् ॥

अर्थ-हरड-रूखी, उष्णवीर्य, अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक, पाकमें स्वादिष्ठ, नेत्रोंको हितकारी, हल्की आयुर्वर्धक, बृंहण, (बलकारक) और वायुको अनुलोमन करनेवाली है तथा श्वास, खांसी, प्रमेह, बवासीर, कोढ, सूजन, उदररोग, कृमी, स्वरभंग, संग्रहणी, विबन्ध, विषमज्वर, गुल्म, आध्मान (अफारा), तृषा, वमन, हुचकी, कण्डू, हृदयरोग,

वामन, शूल, आनाह मलबद्ध, अर्श, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात नाश करैहै ।

अम्लभावाज्जयेद्वातं पित्तं मधुरतिक्ततः ।
कफं रूक्षकषायत्वात्त्रिदोषघ्नी ततोऽभया ॥

अर्थ-हरड अम्लरसयुक्त होनेसे वातका नाश करतीहै, मधुर और तिक्तरसयुक्त होनेसे पित्तका नाश करतीहै और कषाय तथा रूक्षरसयुक्त कफका नाश करतीहै, इसप्रकार हरड त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

स्वादुतिक्तकषायत्वात्पित्तहृत्कफहृत्तु सा ।
कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहृच्छिवा ॥

अर्थ-हरड स्वादु, तिक्त, कषैलेपनसे पित्तको हरतीहै कटु तिक्त और कषैलेपनसे कफको हरतीहै और अम्लपनसे वातका नाश करतीहै ।

अन्यच्च ।

हरीतकी समप्रोक्ता पञ्चभिर्मधुरैर्युता ।
लवणेन च मा हीना योगवाही रसायनी ॥
अग्निदीप्तिकरी लघ्वी सारमेध्या च लेखना ।
वातानुलोमनी श्वास्या चक्षुष्या स्मृतिकारका ॥
वयसः स्थापनी बल्या बुद्धिदा कुष्ठनाशिनी ।
विवर्णतानाशिनी चेन्द्रियाणां प्रसादनी ॥
शिरोरोगं नेत्ररोगं स्वर्यं विषमज्वरम् ।
पुराणं ज्वरं पाण्डुं रोगं कामलं तथा ॥
शोफशोषमूत्रघातग्रहणीं चातिसारकम् ।
अश्मरीं जलं मेदः कृमि श्वास विषोदरम् ॥
कासं वमनं च मलमानाहं वर्णरोगकम् ।
अर्शः प्लीहा त्रिदोषघ्नी गुल्मं हृद्रोगं तथा ॥
हृत्कम्पमग्रशूलमानाहं बद्धविट्तथा ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-हरड-पाच रसोंसे युक्तहै और लवणरसकरके वर्जितहै । योगवाही, रसायन, अग्निप्रदीपक, हलकी, दस्तावर, मेधाजनक, लेखन, वातको अनुलोमन करनेवाली, हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, स्मृतिकारक, अवस्थास्थापक, बलकारक,कोढका नाश करनेवाली, विवर्णतानाशक,इन्द्रियोंको प्रसन्न करनेवाली तथा मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभग, विषमज्वर, पुराना ज्वर, पाण्डु, हृदयरोग, कामला, शोष, सूजन, मूत्राघात, सग्रहणी,अतिसार, पथरी, वमन, प्रमेह, कृमि, श्वास, विष, उदररोग, खाँसी, पसीना, मलस्तम्भ, आनाह, कर्णरोग, बवासीर, प्लीहा, त्रिदोष, गुल्म, हुचकी, व्रण, ऊरुस्तम्भ, शूल और अरुचिका नाश करेहै ।

हरीतक्या पथ्यरसावस्थितिनिर्णय ।

पथ्यायामज्जनिस्वादुःस्नाय्वामम्लोव्यवस्थितः ।
वृन्तेतिक्तस्त्वचि कटुरस्थिस्थस्तुवरो रसः ॥

अर्थ-हरडकी मज्जामें मधुर रस, नसोंमें अम्लरस, डठलमें तिक्तरस, छालमें कटुरस और अस्थियोंम कषेला रस रहताहै ।

श्रेष्ठहरीतकीलक्षणम् ।

नवास्निग्धाघनावृत्तागुर्वीक्षिप्ताचयांभसि ।
निमज्जेत्साप्रशस्ताचकथितातिगुणप्रदा ॥
नवादिगुणयुक्तत्वतथैकत्रद्विकर्षता ।
हरीतक्या फलेयत्रद्वयंतच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥

अर्थ-जो हरड नूतन, स्निग्ध, घन, गोल, भारी और पानीमें डालनेसे डूबजावे, तो हरड अत्यन्त गुणवाली और श्रेष्ठ होतीहै अथवा जो हरड पूर्वोक्त गुणयुक्तहो और चार तोले परिमाण भारी हो, उसको सर्वगुणवाली जानना ।

चर्विताद्विहरीतकीगुणा ।

चर्विताबर्द्धयत्यग्निंपेषितामलशोधिनी ।
स्विन्नासंग्राहिणीपथ्याभृष्टाप्रोक्तात्रिदोषनुत् ।

अर्थ-हरड दांतोंसे चबाकर खानेसे अग्निको बढातीहै, पीसकर खानेसे मलको शोधन करेहै, अर्थात् मलको निकालकर उदरकी शुद्धि करतीहै पकाईहुई खानेसे मलको रोकतीहै और भुनी हुई हरड त्रिदोषका नाश करेहै ।

भक्ष्यसहितहरीतकीगुणाः ।

उन्मीलिनीबुद्धिबलेन्द्रियाणांनिर्मूलिनी पित्तकफानिलानाम् ।
विस्रंसिनीमूत्रशकृन्मलानां हरीतकीस्यात्सहभोजनेन ॥

अर्थ-हरड भोजनके साथ भक्षण कीहुई बुद्धि और बलको बढाती है तथा इन्द्रियोंको प्रकाशित करती है और पित्त, कफ, वायुका नाश करती है तथा मल मूत्र, और मलको निकालती है।

भुक्तोपरिहरीतकीगुणाः ।

अन्नपानकृतान्दोषान्वातपित्तकफोद्भवान् ।
हरीतकीहरत्याशुभुक्तस्योपरियोजिता ॥

अर्थ-भोजनके पीछे भक्षण कीहुई हरड अन्नपानके दोष और वात, पित्त, कफसे उत्पन्न हुये दोषोंको दूर करती है ।

हरीतकी विशेषगुणाः ।

लवणेनकफंहन्तिपित्तंहन्तिसशर्करा ।
घृतेनवातजान्रोगान्सर्वरोगान्गुडान्विता ॥

अर्थ-हरड-लवणके साथ कफको, मिश्रीके साथ पित्तको, घीके साथ वातसे उत्पन्न हुए रोगोंको और गुडके साथ खानेसे संपूर्ण रोगोंको नाश करती है ।

ऋतुहरीतकीगुणाः ।

सिन्धूत्थशर्कराशुण्ठीकणामधुगुडैः क्रमात् ।
वर्षादिष्वभयाप्राश्यारसायनगुणैषिणा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-हरड-वर्षाऋतुमें सेंधव लवणके साथ शरदऋतुमें शर्कराके साथ [illegible] वसन्तऋतुमें मधुके साथ और ग्रीष्मऋतुमें गुडके साथ रसायन गुणकी इच्छावालोंको सेवन करनी चाहिये ।

हरीतकी प्रशंसा ।

हरीतकीमनुष्याणांमातेवहितकारिणी ।
कदाचित्कुप्यतेमातानोदरस्थाहरीतकी ॥ ([illegible])

[illegible]

[illegible]

अर्थ-हरड मनुष्योंको माताकी समान हित करनेवालीहै, माता तो कभी २ कुपितभी होजातीहै, परतु उदरमें स्थित अर्थात् खाईहुई हरड कभी भी अपकारी नहीं होती ।

अन्यद्रव्ययुक्तहरीतकीगुणा ।

द्राक्षांनियोज्यविधिनाद्विगुणशिवायाः
संचूर्ण्यचाक्षफलमानमिताप्रभाते ।
कल्याणिकाञ्चसुकृतागुटिकामिमांय·
संसेवतेभवतितस्यहिपित्तनाशः ॥
हृद्रोगरक्तविषमज्वरपाण्डुवान्ति-
कुष्ठानिकासकमलारुचिमेहमुख्याः ।
आनाहगुल्मपिटिकाप्रभवाविकाराः
सर्वेचतेविलयमाशुसुखेनयान्ति ॥

अर्थ-हरडसे दूनी दाख लेकर विधिपूर्वक चूर्ण करके वहेडेके फलकी समान गोली बनावे उस कल्याणकारी-गोलीका प्रातःकालमें जो मनुष्य सेवनकरताहै, उसके पित्त, हृदयरोग, रक्तदोप, विषमज्वर, पाण्डुरोग, वमन, कुष्ठ, खासी, कामला, अरुचि, प्रमेह, आनाह, गुल्म और पिडिका इत्यादि रोग नाश होते हैं ।

भुक्तेपथ्याऽभुक्तेपथ्याभुक्ताभुक्तेपथ्यापथ्या ।
जीर्णेपथ्याऽजीर्णेपथ्याजीर्णाजीर्णेपथ्यापथ्या ॥

अर्थ-हरड भोजनके उपरान्त और भोजनसे प्रथम दोनो समयमें पथ्यहै, तथा जीर्णमें और अजीर्णमें भी पथ्यहै ।

हरीतकीसेवननिषेध ।

"अध्वातिखिन्नोवलवर्जितश्च रूक्ष·कृशोलघनकर्पितश्च ।
पित्ताधिकोगर्भवती च नारी विमुक्तरक्तस्त्वभयांनखादेत्"॥

अर्थ-मार्गमें चलनेसे थकाहुआ, बलहीन, रूक्ष, कृश, लंघन करनेसे दुर्बल हुआ, अधिक पित्तवाला, गर्भवती स्त्री और जिसका रुधिर निकाला-गया हो अर्थात् फस्त खुलीहोय, नवीनज्वरवाला, हनुस्तम्भरोगवाला और शोपयुक्त इत्यादि कहेहुये मनुष्योंको हरड खानी निपेध है ।

हरीतकीशब्दस्य निरुक्तिः ।

हरस्यभवनेजाताहरिताचस्वभावतः ।
हरेत्तुसर्वरोगांश्चतेनप्रोक्ताहरीतकी ॥ (मदनपालनिघण्टु)

अर्थ-हर (महादेव) के भवनमें उत्पन्न हुई स्वभावसे हरे रंगवाली और सर्व रोगोंको हरतीहै, इसीकारण इसका नाम हरीतकी है ।

अस्य बीजगुणाः ।

हरीतक्या स्मृतंबीजंचक्षुष्यंगुरुवातनुत ।
पित्तनाशकरचैवमुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हरडके बीज नेत्रोंको हितकारी, भारी तथा वातपित्तहारी है ।

विवरण-इसका बडा वृक्ष होताहै, पञ्जाब, शरद और काबुल देशमें अधिकतासे उत्पन्न होताहै । इसके पत्ते अडूसेकी समान होतेहैं, इसका फूल महीन आमके मौरकी समान होताहै, इस वृक्षको संस्कृतमें "नाभक" कहतेहैं । हरडकी अनेक जाति हैं । व्यवहार-हरडके फलकी छाल । मात्रा ६ मासेकी ।

बिभीतकीनामानि । (बहेडेके नाम)



कलिद्रुमः कल्पवृक्ष सवर्तांक्षोबिभीतकी ।

अर्थ-कलिद्रुम, कल्पवृक्ष, संवर्त, अक्ष, विभीतकी, (विभीतक, विभीत, तुप, कर्पफल, भूतवास, कलि, कुशिक, वहुवीर्य्य, तैलफल, भूतावास, सवर्त्तक, वासन्त, कलिवृक्ष, वहेडुक, हार्य, विपन्न, कलिन्द, अनिलघ्नक, कासघ्न, कलियुगालय, तोलफल और तिलपुष्पक)

संस्कृतभाषामें	विभीतक ।
हिन्दी भाषामें	वहेडा ।
वंग भाषामें	वयडा-वहेडा ।
मराठी भाषामें	वेहेडा-धाटिंगवृक्ष।
गुजराती भाषामें	वेडा ।
कर्नाटकीभाषामें	तोरे ।
तैलङ्गी भाषामें	वल्ला-ताडेचेद्दु ।
तामिली भाषामें	तनि, तण्डि, तोअण्ढे ।
इङ्ग्रेजीभाषामें	मेरोवेलन्-वेलिरिक Myrovallan Bellirika
लैटिन भाषामें	टरमिनेलिया-वेलिरिका Terumalia Bellirica
फारसी भाषामें	वलेले ।
अरवी भाषामें	वलेलज ।

अस्यगुणा ।

विभीतकःकटुस्तिक्तोकपायोष्ण.कफापहः ।
चक्षुष्यःपलितघ्नश्चविपाकेमधुरोलघु. ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वहेडा-कटु, तिक्त, कपेला, कफनाशक, नेत्रोंको हितकारी, पलितरोगविनाशक, पाकमें मधुर और हलका है ।

अपिच ।

विभीतकंस्वादुपाककपायकफपित्तनुत् ।
उष्णवीर्य्यंहिमस्पर्शभेदनकासनाशनम् ॥
रूक्षनेत्रहितकेश्यकृमिवैस्वर्यनाशनम् ।
विभीतमज्जातृट्छर्दिकफवातहरोलघु ॥
कपायोमदकृच्चाथधात्रीमज्जापितद्गुणः । (भावप्रकाश)

अर्थ-वहेडा-स्वादुपाकी, कषेला, कफपित्तनाशक, उष्णवीर्य्य, स्पर्शमे

शीतल, भेदक, कासनाशक, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुंदरतादायक, कृमि और स्वरभंगको नष्ट करेहै ।

बहेडेकी मींग-तृषा, वमन, कफ और वातनाशकहै । हलकी, कषैली और मदकारकहै । आमलेकी मज्जाके गुण भी इसकी समान जानने ।

अपरञ्च ।

विभीतकः कटुस्तिक्तस्तुवरोष्णोलघुः सरः ।
पाकेचमधुरोरूक्षश्चक्षुष्यः केशवृद्धिकृत् ॥
हिमस्पर्शोभेदकश्चपलितस्वरभङ्गजित् ।
नासारोगरक्तदोषकण्ठरोगचनेत्ररुक् ॥
जन्तूनांकासहृद्रोगनाशकोमुनिभिः स्मृतः । (नि०र०)

अर्थ-बहेडा-चरपरा, कडवा, कषैला, हलका, दस्तावर, पाकके समय मधुर, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, केशवर्द्धक, शीतस्पर्श, भेदक तथा पलित, स्वरभंग, नासारोग, रुधिरदोष कण्ठरोग, नेत्ररोग, खांसी, हृदयरोग और कृमिका नाश करेहै ।

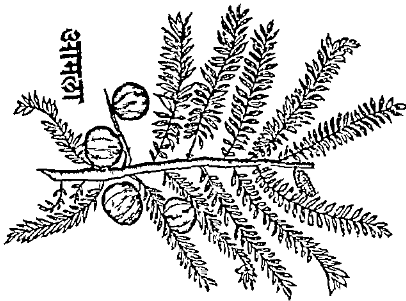
अपिच ।

"विभीतकोलघुः शीतः पाकेस्वादु कफास्रजित् ।
कासहृत्क्षयकुष्ठघ्नः केशवृद्धिकरः परः ॥
परकेश्यस्तुतन्मज्जानेत्रपुष्पहरोजनात् ।
नासारोगनेत्ररोगकृमिशुक्रहरोलघुः ॥
अक्षवृक्षभवः कल्कश्चित्रपाण्डुगदापहः ।"

अर्थ-बहेडा-हलका, शीतल, तथा पाकमें स्वादिष्ट कफ रुधिरविकार, खांसी, क्षयीरोग और कुष्ठको नष्ट करेहै, केशवर्द्धक नासारोग, नेत्ररोग, कृमि और शुक्रको हरेहै, हलका और केशोंको हितकारीहै, इसकी मींग नेत्रके फूलेको दूर करेहै, इसके वृक्षकी छालका काढा, चित्ररोग और पाण्डुरोगको दूर करेहै ।

विवरण-इसका बडा वृक्ष जंगल और पर्वतोंमें उत्पन्न होताहै, पत्ते बडके पत्तोंके समान होतेहैं, फूल अत्यन्त सूक्ष्म होतेहैं फल सुपारीके समान और सुमकोंमें आतेहैं । व्यवहार-फलकी छाल । मात्रा ३ मासेकी ।

आमलकीनामानि।



आमलकीपचरसाश्रीफलीधात्रिकाशिवा।
अकरामृतावयस्थाचवृष्यातिष्यफलातथा॥

अर्थ-आमलकी, पचरसा, श्रीफली, धात्रिका, शिवा, अकरा, अमृता-वयस्था, वृष्या, तिष्यफला, (वय'स्या, कायस्था, वहुफली, शान्ता, धात्री, अमृतफला, वृत्तफला, रोचनी, कर्षफला, तिष्या, धात्रीफल, श्रीफल, अमृ, तफल, शिव, आमलक, जातीफल)

संस्कृतभाषामें	आमलकी।
हिन्दीभाषाम	आमला।
वगभाषामें	आम्ला।
मराठीभाषाम	आवळा।
गुजरातीभाषामें	आवला।
कर्णाटकीभाषामें	नेल्लि।
तैलिङ्गीभाषामें	उसर काय।
उत्	अडा।
इग्रेजीभाषामें	एव्लि कमिरो वेलन्। Emblic myrobalan
लैटिनभाषामें	फिलेंथस एम्लका Phylanthus Amblica
फारसीभाषामें	आम्लज़।
अरबीभाषामें	अमल्ज्।

अस्यागुणाः ।

आमलकषायाम्लमधुरंशिशिरंलघु ।
दाहपित्तवमीमेहशोषघ्नंचरसायनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-आमला-कषेला, अम्ल, मधुर, शीतल, हलका तथा दाह, पित्त, वमन, प्रमेह और शोषका नाशकरे है और रसायन है ।

आमलक्या फलंकिंचित्कटुकंस्वादुतिक्तकम् ।
अम्लचतुवरंशीतंजराव्याधिविनाशनम् ॥
वृष्यंकेश्यंसारकञ्चहितचारुचिनाशकम् ।
रक्तपित्तप्रमेहञ्चविषज्वरं वमिं तथा ॥
आध्मानवद्धविट्कत्वशोथशोषतृषांतथा ।
रक्तस्यविकृतिंचैवत्रिदोषंचैवनाशयेत् ॥
अम्लत्वाद्वातहृप्रोक्तमाधुर्याच्चैवशीततः ।
पित्तनाशकरंचोक्तंरूक्षत्वाच्चकषायतः ॥
कफनाशकरंप्रोक्तंपूर्वैर्विद्याविशारदैः ।

अर्थ-आमला-किञ्चित् कटु, स्वादिष्ट, कडवा, अम्ल, कषेला, शीतल, जरा व्याधिनाशक, वीर्यजनक, केशोंको हितकारी, दस्तावर, हितकारक, अरुचिनाशक, तथा रक्तपित्त, प्रमेह, विष, ज्वर, वमन, आध्मान (अफारा) मलबद्धता, सूजन, शोष, पिपासा, रक्तविकार और त्रिदोषका नाश करे है ।

आमला-खट्टेपनसे वातका, मधुरपन और शीतलतासे पित्तका और कषेलेपनसे तथा रूक्षतासे कफका नाशकरे है, इसप्रकार आमला त्रिदोषनाशक है ।

शुष्कामलकगुणाः ।

आमलस्यफलंशुष्कंतिक्तमम्लंकटुस्मृतम् ।
मधुरंतुरकेश्यं भग्नसन्धानकारकम् ॥
धातुवृद्धिकरंनेत्र्यंलेपनात्कांतिकारकम् ।
पित्तकफंतृषांघर्मंमेदोरोगविषंतथा ॥
त्रिदोषनाशयत्येवपूर्वाचार्यनिरूपितम् । (नि० र०)

अर्थ-सूखा आमला-कडवा, खट्टा, चरपरा, मीठा, कपेला, केशोंको हितकारी, भग्नसन्धानकारक, धातुवर्द्धक और नेत्रोंको हितकारी है । इसका लेप करनेसे देहकी काति वढती है, तथा पित्त, कफ, तृपा, पसीना, मेद, विप और त्रिदोपनाशक है ।

अस्य मज्जागुणा ।

तन्मज्जाप्रदरच्छर्दिवातपित्तज्वरापहा ।
कपायामधुरावृष्याश्वासकासनिबर्हणा ॥

अर्थ-इसकी मींग प्रदररोग, वमन, वात, पित्त और ज्वरको दूर करेहै । तथा कपेली, मधुर, वीर्यजनक, श्वास और खासीको नष्ट करेहै ।

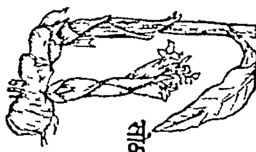
यस्ययस्यफलस्येहवीर्यंभवतियादृशम् ।
तस्यतस्यैववीर्य्येणमज्जानमपिनिर्दिशेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जिस जिस वृक्षके फलमें जैसा जैसा वीर्य होताहै, वैसाही उसकी मींगमेंभी जानना ।

विवरण-इसका वडा वृक्ष वाग और जगलमें होताहै, पत्ते छोटे छोटे इमलीके समान होतेहैं, इसकी शाखाओंपै छोटी छोटी लाईके दानेकी समान पीले फल होतेहै, फल तेंदूकी समान गोल और झुमकोंमें लगते है । फलके ऊपर छ' रेखा अत्यन्त सूक्ष्म होती है ।

व्यवहार-फलकी छाल] माना ४ मासेकी ।

शुण्ठीनामानि ।



शुण्ठीमहौपधीविश्वाशुष्कार्द्रंविश्वभेपजम् ।
भेपजशृङ्गवेरञ्चविश्वकफारिनागरम् ॥

अर्थ-शुण्ठी, महौपधी, विश्वा, शुष्कार्द्र, विश्वभेपज, भेपज, शृगवेर,

विश्व, कफारि, नागर (महौषध, शुण्ठि, इन्द्रभेषज, विश्वौषध, कटुग्रन्थि, कटुभद्र, शुण्ठय, कटूत्कटक, कटूपण, सौवर्ण, आर्द्रक, शोषण, नागराह्व, आर्द्रज, औषध)

संस्कृत भाषामें	शुंठी।
हिन्दी भाषामें	सोंठ, शुंठी।
बङ्गभाषामें	शुट-ठ।
मराठीभाषामें	सुंठ।
गुजरातीभाषामें	शुण्ठ्य।
कर्णाटकीभाषामें	शुंठि।
तैलिङ्गीभाषामें	शोंठी।
इंग्रेजीभाषामें	डाइजञ्जर। Dygmger
फार्सीभाषामें	जजबील।

अस्या गुणाः।

शुण्ठीरुच्यामवातघ्नीपाचनीकटुकालघु ।
स्निग्धोष्णामधुरापाकेकफवातविबन्धनुत् ॥
वृष्यास्वर्यावमिश्वासशूलकासहृदामयान् ।
हन्तिश्लीपदशोथार्शआनाहोदरमारुतान् ॥
आग्नेयगुणभूयिष्ठतोयांशपरिशोषियत् ।
सगृह्णातिमलतत्तुग्राहिशुण्ठ्यादयोयथा ॥
विबन्धभेदनीयातुसाकथंग्राहिणीभवेत् ।
शक्तिर्विबन्धभेदेस्याद्यतोनमलपातने ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सोंठ-रुचिकारी, आमवातनाशक, पाचक, चरपरी, हलकी, स्निग्ध, उष्णवीर्य, पाकमें मधुर कफ वात और विबन्धको दूर करती है। वीर्यवर्द्धक, मारक तथा वमन, श्वास, शूल, खांसी, हृदयरोग, श्लीपद, शोथ, बवासीर अफारा, उदररोग और वातके रोगोंका नाश करती है। जो द्रव्य आग्नेयगुणविशिष्ट है और जलांशशोषक है, मलका ग्रहण करताहै जिसप्रकार सोंठ आदि पदार्थ ग्राही है, कोई कहै कि जो विबन्धको भेदन करनेवाली है वह कैसे ग्राही होसकती है तो कहतेहैं कि सोंठमें विबन्धभेदनी शक्ति है, परन्तु मलपातनी नहीं।

अपच्च ।

नागरं कफवातघ्नविपाकेमधुर कटु ।
वृष्योष्णंरोचनंहृद्यसस्नेहलघुदीपनम् ॥
पाण्डुंसग्रहणीपित्तनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ–सोंठ–कफ वातनाशक, पचनेमें मधुर, चरपरी, वीर्यवर्द्धक गरम, रोचक, हृदयको हितकारी, स्नेहयुक्त, हलकी और दीपन है तथा पाण्डुरोग, सग्रहणी और पित्तका नाश करे है ।

आर्द्रकनामानि ।



आर्द्रकशृङ्गवेरस्यात्कटुभद्रंकटूत्कटम् ।

अर्थ–आर्द्रक, शृङ्गवेर, कटुभद्र, कटूत्कट, (गुलममूल, मूलज, कन्दर, वर, महीज, सकतेष्ट, अनूपम, अपाकृष्णक, चन्द्रारय, राहुच्छत्र, मुखाकक, शार्ङ्ग, आर्द्रशाक, मच्छाक, आर्द्रिका)

संस्कृतभाषामें	आर्द्रक ।
हिन्दीभाषामें	अदरख–क ।
वंगभाषामें	आदा ।
मराठीभाषामें	आल ।
गुजरातीभाषामें	आदु ।
कर्णाटकीभाषामें	अल्ल ।
तैलिङ्गीभाषामें	अल्ल ।
इंग्रेजीभाषामें	जिंजिररूट । Gingerroot
अरबीभाषामें	जिंजिबिरतर ।

लेटिन्भाषामें जिंजिबर ओफिसिनेलि Gingiber Officinale
फारसीभाषामें जिंजिबिल्त्तर ।

अस्य गुणा: ।

आर्द्रिकाभेदनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीमता ।
कटुकामधुरापाकेरूक्षावातकफापहा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–अदरख–भेदक, भारी, तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, चरपरा, पाकमें मधुर रूक्ष, वात और कफनाशक है ।

अपिच ।

शृंगवेरंरसेपाकेशीतलमधुरंलघु ।
कटुकोष्णञ्चहृद्यञ्चभेदकंचाग्निदीपकम् ॥
रूक्षरुचिप्रदवृष्यंपाचकसारकमतम् ।
कण्ठ्यमग्रेमांद्यहरशोथारुचिकफापहम् ॥
वातंकण्ठरुजंकासंश्वासमानाहवातकम् ।
मलबंधंवमिंशूलनाशयेदितिकीर्तितम् ॥
तस्यांकुरारसाभावात्कफवातकरामता: ।
रक्तदोषस्यशमनास्तेवृद्धा कफनाशका: ॥
काञ्जिकासैन्धवचार्द्रंपाचकंचाग्निदीपनम् ।
मलबाधामवातानांकफवातविनाशकम् ॥
केवललवणेनाथमिश्रितंचाग्निदीपनम् ।
रुच्यप्रियंसरप्रोक्तशोथवातकफापहम् ॥
भोजनात्पूर्वपश्चात्तुकण्ठजिह्वाविशोधकम् ।
जम्बीरसैन्धवयुतरुचिदमुखशुद्धिकृत् ॥
मूत्रकृच्छ्रपाण्डुरोगरक्तपित्तंव्रणतथा ।
मूत्राश्मरीज्वरदाहंपित्तग्रीष्मेशरद्यपि ॥
[illegible] ।

अर्थ–अदरख रसमें और पाकमें [illegible] मधुर [illegible], हल्का

हितकारी, भेदक (दस्तावर) अग्निको दीपनकरनेवाला, रूखा, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, वीर्य्यजनक, पाचक, सारक, कण्ठको हितकारक तथा मदाग्नि, सूजन, अरुचि, कफ, वात, कण्ठरोग, खाँसी, श्वास, आनाह, वात, मलवन्ध, वमन और शूलका नाश करेहै ।

काजी-और सैन्धवलवणयुक्त अदरख-पाचक, अग्निप्रदीपक तथा मलवन्ध और आमवातका नाश करेहै ।

केवल लवणमिश्रित अदरख-अग्निको दीपन करे, रुचिको उत्पन्न करे, प्रिय, सारक तथा सूजन, वात और कफका नाशक है ।

भोजनके प्रथम भक्षण कियाहुआ अदरख-कण्ठ और जिह्वाको शुद्ध करेहै । जम्भीरी नींबू और सेंधानोनके साथ अदरख मुखको शुद्धि करेहै तथा मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, घाव, मूत्ररोग, पथरी, ज्वर, दाह और पित्तको शरदृऋतुमें तथा ग्रीष्मऋतुमें नष्ट करे है, शेष गुण सोंठकी समान जानने ।

द्रव्यगुणा ।

वातपित्तकफेभानांशरीरवनचारिणाम् ।
एकएवनिहन्त्यत्रलवणार्द्रककेसरी ॥

अर्थ-वात, पित्त, कफरूपी हाथी जो वनरूपी शरीरमें विचरण करते हैं उनके मारनेको एकही महापराक्रमी लवण और अदरखरूपी सिंह है ।

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् ॥

अर्थ-भोजनके आदिमें अर्थात् प्रथम लवणसहित अदरखका सेवन करना सदा पथ्यहै ।

निषेध ।

कुष्ठपाण्ड्वामयेकृच्छ्रेरक्तपित्तव्रणज्वरे ।
दाहेनिदाघेशरदिनैवपूजितमार्द्रकम् ॥

अर्थ-अदरख-कोढमें, पाण्डुरोगमें, मूत्रकृच्छ्रमें, रक्तपित्तमें, व्रणरोगमें, ज्वरमें, दाहरोगमें, ग्रीष्मऋतुमें और शरदृऋतुमें अपथ्य है । ऐसा भावमिश्रने लिखाहै ।

विवरण । अदरखका गुल्म होताहै, रेतली भूमि और सजल स्थानमें अधिकतासे उत्पन्न होताहै, पत्ते छोटी इलायचीके समान होते हैं, इसके

कन्दकोही अदरख कहते हैं । इसी कन्दको सुखाकर सोंठ बनाते हैं, सोंठकी अनेक जाती हैं ।

मरिचनामानि ।



मरिचपवितश्यामवेणुजयवनप्रियम् ।
वल्लीजवेल्लजं शुद्ध कोलकधर्मपत्तनम् ॥

अर्थ-मरिच-पवित, श्याम, वेणुज, यवनप्रिय, वल्लीज, वेल्लज, शुद्ध, कोलक, धर्मपत्तन, कोल, (ऊषण, वल्लि, यवेष्ट, वृत्तफल, शाकाङ्ग, वेणुक, कटुक, शिरोवृत्त, याग, कफविरोधि, सृष्ट, सर्वहित, कृष्ण)

सितमरिचनामानि ।

सितमरिचशीतांत्यसितवल्लीजंचबालकबहुलम् ।
धवलंचन्द्रकमेतन्मुनिनामगुणाधिकंचचक्ष्यकरम् ॥

अर्थ-सितमिरच-शीतांत्य सितवल्लीज, बालक बहुल, धवल, चन्द्रक, (सितान्य)

संस्कृतभाषामें	मरिच, सितमरिच ।
हिन्दीभाषामें	कालीमिरच, सफेद मिरच । गोलमिरच ।
बंगभाषामें	मरिच, गोलमरिच, शादामरिच ।
मराठीभाषामें	मिरें-पांढरें, मिरीं ।
गुजरातीभाषामें	मरी, तीखा, धोळामरी ।
कर्णाटकीभाषामें	मेणसु, बिळियमेणसु ।
तैलङ्गीभाषामें	मरिया, मिरियन ॥
तामिलभाषामें	मिलगु, मिलगो ।

अँग्रेजीभाषामें ब्लाकपेपर Black Pepper
लेटिन्भाषामें पाईपर नेग्रम्। Piper Nigrum
फारसीभाषामें पिल पिले अस्वद् हल पिलेगिर्द।
अरबीभाषामें फिल फिलेअवीद।

अस्यगुणाः।

मरिचं कटुकं तीक्ष्णं दीपनं कफवातजित्।
उष्णं पित्तकरं रूक्षं श्वासशूलकृमीन्हरेत्॥
तदार्द्रं मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु।
किञ्चित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम्॥ (भा प्र)

अन्यच्च।

अर्थ—कालीमिरच—चरपरी, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाली, कफ वातनाशक, गरम, पित्तजनक, रूखी तथा श्वास, शूल और कृमिको नष्ट करैहै। कच्ची कालीमिरच—पाकमें मधुर, किंचित् उष्ण, चरपरी, भारी, ईषत् तीक्ष्ण, कफको निकालनेवाली और पित्तकारक नहींहै।

सितमरिचगुणाः।

कटूष्णं लघु तच्चक्षुष्यमवृष्यं कफवातजित्।
नात्युष्णं नातिशीतञ्च वीर्यतो मरिचं सितम्॥
गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यञ्च विशेषतः॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ—सफेद मिरच—चरपरी, गरम, हल्की, अवृष्य, कफ वातनाशक इसका वीर्य न अत्यन्त गरमहै और न अत्यन्त शीतलहै, इसके गुण काली मिरचके समान हैं, परन्तु विशेषकरके नेत्रोंको हितकारी है।

अपिच।

कटूष्णं श्वेतमरिचं विषघ्नं भूतनाशनम्।
अवृष्यं दृष्टिरोगघ्नं युक्तं चैव रसायनम्॥ (रा० नि०)

अर्थ—सफेद मिरच—चरपरी, गरम, विषनाशक, भूतनाशक, अवृष्य, दृष्टिरोगविनाशक और किसीके साथ रसायनहै।

अन्यच्च-मरिचगुणाः।

मरिचं कटुकं तिक्तं लघु चोष्णं रुचिप्रदम्।
अग्निदीप्तिकरं तीक्ष्णमवृष्यं छेदि शोषकम्॥

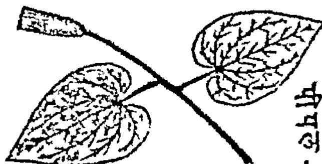
रूक्षं पित्तकरञ्चैव कफवातकृमीञ्जयेत् ।
श्वासकासं च हृद्रोगं शूलं चैव विनाशयेत् ॥
प्रमेहं चार्शरोगञ्च पथ्यं प्रोक्तं पुराविदैः । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–कालीमिरच–कडवी, चरपरी, हलकी, गरम रुचिदायक, अग्नि-दीपक, तीक्ष्ण, अवृष्य, छेदक, शोषक, रूक्ष, पित्तकारक, तथा कफ, वात, कृमि, श्वास, खाँसी, हृदयरोग, शूल, प्रमेह और बवासीरका नाश करेहै ।

कचीमिरचका सेक करनेसे सूजन दूर होतीहै, गायके घीके साथ पिसीहुई मिरचका व्यवहार करनेसे अर्शरोगका वियोग होताहै । एक मिरचको सुईके नोकपर वेधकर उसको आग अथवा दीपकी लोहपे जलावे, उसका धुआँ सूँघनेसे हिचकी और सिरकी पीडा शान्त होतीहै ॥ मिरचमें घी मिलितकर खानेसे अनेक प्रकारके नेत्ररोग विध्वंस होतेहैं ।

विवरण । मिरच लता दक्षिणदेशके त्रिवाङ्कुर मलयागादिकी स्वादु उपजाऊ भूमिमें अधिकतासे उत्पन्न होतीहै, वहाँके रहनेवाले इसलताके छोटे छोटे टुकडे करके बडे बडे वृक्षोंकी जडमें लगादेतेहैं तीनवर्षमें लताएँ फल जातीहै फल पककर लाल होजाते हैं, परन्तु सूखजानेपर कालापन आजाताहै । शाक इत्यादिमें कालीमिरच मसाला होताहै । लाल मिरचके पर्याय आगे लिखेहै ।

पिप्पलीनामानि ।



पिप्पलीमागधीकृष्णाचपलाचञ्चलाकणा ।
उपकुल्याचकोल्याचवैदेहीतिक्ततण्डुला ॥

अर्थ–पिप्पली–मागधी, कृष्णा चपला चञ्चला कणा, उपकुल्या कोल्या, वैदेही, तिक्ततण्डुला (कृष्णा, शौण्डी,कोला पल्ली ऊषणा, मगधा,

ऊषणा, पिप्पली, कृकला, कटुबीजा, कोरङ्गी, तिक्ततण्डुला, श्यामा, सूक्ष्मतण्डुला, दन्तकफा, मगधोद्भवा)

संस्कृतभाषामें	पिप्पली।
हिन्दीभाषामें	पीपल, (र)
बंगभाषामें	पिपुल।
मराठीभाषामें	पिपळी।
गुजरातीभाषामें	लिंडिपीपल।
कर्णाटकीभाषामें	हिप्पली।
तैलिंगभाषामें	पिप्पलु।
तामिलभाषामें	पिपिलि
बम्र	बङ्गालिपिम्परि।
इंग्रेजीभाषामें	लॉंगपीप्पर। Long pepper
लैटिन्भाषामें	पाइपर लॉग। Piper Longuw
फारशीभाषामें	पिल्पिल् दराज।
अरबीभाषामें	डारफिल, फिल्।

अस्या गुणाः।

पिप्पलीदीपनीवृष्यास्वादुपाकारसायनी।
अनुष्णा कटुका स्निग्धावातश्लेष्महरीलघु॥
पिप्पलीरेचनीहन्तिश्वासकासोदरज्वरान्।
कुष्टप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान्॥
आर्द्राकफप्रदास्निग्धाशीतलामधुरागुरु।
पित्तप्रशमनीसातुशुष्का पित्तप्रकोपिनी॥
पिप्पलीमधुसंयुक्तामेद कफविनाशिनी।
श्वासकासज्वरहरावृष्यामेध्याग्निवर्धिनी॥
जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्येचशस्यतेगुड़पिप्पली।
कामाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत्॥
द्विगुण पिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजामत। (भा०प्र०)

अर्थ-पीपल अग्निको दीपन करनेवाली वीर्यको उत्पन्न करनेवाली, पाकमें स्वादिष्ट, रसायन, किञ्चित् उष्ण, चरपरी, स्निग्ध, वात-कफनाशक हलकी, दस्त लानेवाली तथा श्वास, कास, उदररोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, (क्षयरोग) बवासीर, प्लीहा, शूल और आमवातका नाश करेहै ।

कच्ची पीपल-कफको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, शीतल, मधुर, भारी, पित्तको शान्त करनेवाली, और सूखी पीपलें, पित्तको कुपित करनेवालीहै ।

मधुयुक्त पीपल-मेदरोग, कफ, श्वास खाँसी और ज्वरनाशकहै वीर्यवर्द्धक, मेधाजनक और अग्निवर्द्धक है, गुडमिश्रित पीपल जीर्णज्वर, हृद्रोग, मन्दाग्नि खाँसी, अजीर्ण, अरुचि श्वास, पाण्डुरोग और कृमिरोगका नाश करेहै ।

पीपलका चूर्ण और सोंठका चूर्ण गुड मिलाकर खानेसे आम, शूल, अजीर्ण और सूजन दूर होती है ।

पीपलको नीमके रसमें उबालकर नास देनेसे अपस्माररोग दूर होताहै ।

पीपलके काढेमें सहत मिलाकर खानेसे वातज्वर और कफज्वर दूर होताहै ।

सहतमें पीपलका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे मूर्च्छारोग दूर होताहै ।

विवरण-पीपलकी बेल जगवार और मगधदेशमें अधिकतासे उत्पन्न होतीहै, इसके पत्ते नागवल्ली अर्थात पानके समान होतेहैं ।

पिप्पलीमूलनामानि ।

मूलन्तुपिप्पलीमूलग्रन्थिकञ्चटकाशिरः ।
कणामूलंकोलमूलचटिकासर्वग्रन्थिकम् ॥

अर्थ-मूल-पिप्पलीमूल, ग्रन्थिक, चटकाशिर, कणामूल, कोलमूल, चटिका, सर्वग्रन्थिक (मेदिनीमें पद्मग्रन्थि, शिर, पटुग्रन्थि पटुमूल, पटूषण, सर्वग्रन्थि, पत्राढ्य, विस्प, शौण्डसम्भव, सुगन्धि, मधिल, उषण, मागध, मागधीजटा)

संस्कृतभाषाम	पिप्पली ।
हिन्दीभाषाम	पीपरा (रा । मूल ।
बंगभाषामें	पिपुलमूल
मराठीभाषाम	पिंपळमूळ ।

गुजरातीभाषामें	पीपरीमूलना गठोडा ।
कर्णाटकीभाषामें	पिप्पलियबेरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिप्पली वेरुपिप्पलीदुम्प ।
इंग्रेजी भाषामें	पाईपररूट Piper root
लेटिन्भाषामें	पाइपर ओफिसिनेरPiper officinarum
फारसीभाषामें	फिल्फिल् मोया ।
आरबीभाषामें	असलुल् फिलफिर ।

अन्यगुणाः ।

दीपनपिप्पलीमूलकटूष्ण पाचनलघु ।
रूक्षपित्तकरभेदिकफवातोदरापहम् ॥
आनाहप्लीहगुल्मघ्नकृमिश्वासक्षयापहम् । (भा० प्र०)

अर्थ-पीपरामूल-जठराग्निको दीपन करे, चरपरा, गरम, पाचक, हलका, रूखा, पित्तकारक, भेदक तथा कफ, वात, उदररोग, आनाह, प्लीहा, गुल्म, कृमि, श्वास और क्षयरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

भेदनपिप्पलीमूलकासामशूलनाशनम् ।
पित्तप्रकोपितीक्ष्णोष्णंरूक्षपाचनरोचनम् ॥

अर्थ-पीपरामूल-दस्तावर, खासी, आम और शूलनाशक है । पित्तको कुपित करे, तीक्ष्ण, उष्ण, रूक्ष, पाचक और रोचक है ।

चविकानामानि ।

चव्यचवणमुच्छिष्टचविकाकोलवल्लिका ।

अर्थ-चव्य, चवण, उच्छिष्ट, चविका, कोलवल्लिका, (चव्या, चविक, चवी, चवि, पुरन्दर, तेजोवती, कोला, नाकुली, उपणा, चव्यक, वशिर, गन्धनाकुली, वल्ली, कोलवल्लि, कोल, कुक्कुटमस्तक, तीक्ष्णकणिकावल्ली, कृकर, कुटिलराक्षक कटुका, कटुशाकिनी)

संस्कृतभाषामें	चविका, चव्य ।
हिन्दीभाषामें	चव्य ।

बंगभाषामें	चई गाछ।
मराठीभाषामें	मिरवेलीचे मूळ, चवक।
गुजरातीभाषामें	चवक।
कर्णाटकीभाषामें	चव्य।
तैलंगीभाषामें	चेवासु, चेवकाणी।
लैटिनभा०	चविका, रक्सबर्घी और पाइपरचव। Chavica Roxburghii And Piper Chava

अथ गुणाः।

चव्यस्यादुष्णकटुकलघुरोचनदीपनम्।
जन्तूद्रेकापहकासश्वासशूलार्तिकृन्तनम्॥ (राजनि०)

अर्थ-चव्य-गरम, चरपरी, हलकी, रोचक, जठराग्निदीपक तथा कृमि, खांसी, श्वास और शूलविनाशक है।

अपिच।

पिप्पलीमूलवत्तस्याविशेषाद्गुदजापहम्।
चव्यपुष्पंगरश्वासकासक्षयविनाशनम्॥ (म०नि०)

अर्थ-चव्यके गुण पिपलामूलके समान हैं, विशेषकरके गुदाके रोगोंको दूर करे है।

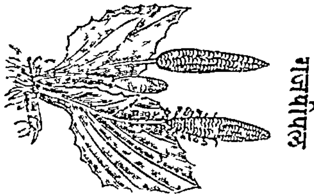
इसका पुष्प-विष, श्वास, खांसी और क्षय रोगनाशक है।

अन्यच्च।

चवकंकटुकंचोष्णंरुच्यंचाग्नेश्चदीपनम्।
लघुकंचकृमिश्वासकासवातकफापहम्॥
ज्वरार्शःशूलशमनमृषिभिःपरिकीर्तितम्।
अन्येगुणास्तुविज्ञेयाःपिप्पलीमूलवद्बुधैः॥

अर्थ-चव्य-चरपरी, गरम, रुचिकारक, जठराग्निदीपक, हलकी तथा कृमि, श्वास, खांसी, वात, कफ, ज्वर, बवासीर और शूलका नाश करे है। शेष गुण पीपलामूलके समान जानने चव्यकी बेल मलबारमें होती है, इसके फलको गजपीपर कहते हैं।

गजपिप्पलीनामानि ।



चविकाया फलप्राज्ञे कथितागजपिप्पली ।
कपिवल्लीकोलवल्लीश्रेयसीवशिरश्वसा ॥

अर्थ–चव्यके फलकोही भिषक् लोक गजपीपल कहते हैं । कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर, गजकृष्णा, (करिपिप्पली, इभकणा, कपिवल्ली, कपिल्लिका, कपिवल्लिका, वसिर, गजाह्वा, इभोषणा, कुञ्जरपिप्पली, गजोपणा, चव्यफल, चव्यजा, छिद्रवैदेही, दीर्घग्रन्थि, तेजसी, वर्तुली, स्थूलवैदेही)

संस्कृतभाषामें	गजपिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	गजपीपल ।
बंगभाषामें	गजपिपुल ।
मराठीभाषामें	मोरवेलीला पिंपळ्या येतात ती ।
कर्णाटकीभाषामें	गजहिप्पली ।
गुजरातीभाषामें	गजपीपर ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दापिप्पलु ।
लैटिन्भाषामें	प्लैंटेगोऍम्प्लुक्सि कोलिस् सिन्डाप्सस् जोफिसीनेलिस Plantago Amplexicaulis Scandapans Officinalis

अस्यागुणाः ।

गजकृष्णाकटुर्वातश्लेष्मह्वह्निवर्द्धिनी ।
उष्णानिहन्त्यतीसारश्वासकण्ठामयक्रिमीन् ॥

अर्थ–गजपीपल–चरपरी वातकफनाशक, अग्निवर्द्धक, गरम तथा अतिसार, श्वास, कण्ठरोग और कृमीका नाश करेहै ।

गुणाः ।

गजोपणा कटूष्णा च रूक्षा मलविशोधिनी ।
बलासवातहन्त्री च स्तनकर्णविवर्द्धिनी ॥ (राजनि०)

अर्थ-गजपीपल-चरपरी, गरम, रूखी, मलशोधक तथा वातनाशक, स्तन और कर्णवर्द्धक है ।

अपरञ्च ।

गजोपणा कटूष्णा च तीक्ष्णा मलविशोधिणी ।
बलासवातघ्नी च स्तनलिंगविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-गजपीपल-चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, मलशोधक तथा कफ, वातनाशक, स्तन और लिंगवर्द्धक है ।

सैंहलीपिप्पलीनामानि ।

सैंहली सर्पदण्डा च सर्पांगी ब्रह्मभूमिजा ।
पार्वती शैलजा मूललम्बबीजा तथोत्कटा ।
अद्रिजा सिंहलस्था च लम्बदन्ता च जीवला ।
जीवाला जीवनेत्रा च कुरवी षोडशाह्वया ॥

अर्थ-सैंहली, सर्पदण्डा, सर्पांगी, ब्रह्मभूमिजा, पार्वती, शैलजा, मूल, लम्बबीजा, उत्कटा, अद्रिजा, सिंहलस्था, लम्बदन्ता, जीवला, जीवाला, जीवनेत्रा, कुरवी ।

अस्या गुणाः ।

सैंहली कटुरुष्णा च जन्तुघ्नी दीपनी परा ।
कफश्वाससमीरार्तिशमनी कोष्ठशोधिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सिंहलीपीपल-चरपरी, गरम, कृमिनाशक, अत्यन्त अग्निदीपन करनेवाली तथा कफ, श्वास और वातकी पीडाकी शान्ति करनेवाली और कोठेको शुद्ध करती है ।

वनपिप्पलीनामानि ।

वनादिपिप्पल्यभिधानयुक्तं सूक्ष्मादिपिप्पल्यभिधानमेतत् ।
क्षुद्रा च पिप्पल्यभिधानयोग्यं वनाभिधापूर्वकणाभिधानम् ॥

अर्थ-वनपिप्पली, सूक्ष्मपिप्पली, क्षुद्रपिप्पली, वनकणा ।

अस्या गुणा ।

वनपिप्पलिकाचोष्णातीक्ष्णारुच्याचदीपनी ।
आमाभवेद्गुणाढ्यातुशुष्कास्वल्पगुणास्मृता॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—वनपीपल—गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक और अग्निसंदीपक है, कच्ची वनपीपल अधिक गुणवाली है और सूखी स्वल्प गुणवाली है ।

मर्कटीपिप्पलीगुणा ।

मर्कटीपिप्पलीतिक्तातुवरासुरसास्मृता ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीयोनिशूलविस्फोटकाञ्जयेत्॥ (नि०र०)

अर्थ—वानरीपीपल—कडवी, कषेली, स्वादिष्ठ तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, योनिशूल और विस्फोटकका नाश करेहै ।

चित्रकनामानि ।



चित्रकोऽनलनामाचपाठीव्यालस्तथोपण. ।

अर्थ—चित्रक, अनलनामा, पाठी, व्याल, ऊपण, (कृष्णवर्त्मा, जातवेदा, वर्हि, विभाकर, विभावसु, बृहद्भानु, वैश्वानर, शिखावान्, शुचि, शुष्मा, सप्तार्चि, हिमाराति, हिरण्यरेता, अग्नि, शार्दूल, चित्र, पाठी, कुट, शिखी, कृशानु, दहन, व्याल, ज्योतिष्क, पालक, अनल, दारुण, वह्नि, पावक, शम्बर, द्वीपी, चित्राङ्ग, दाहक, उग्र, पाठीन, दारुण, अग्निक, वल्लरी, पाली, कुट, शिखी, लोहिताङ्ग, हुतभुक, मार्ला, वह्नि, पाची, वह्निनामा)

रक्तचित्रकनामानि ।

कालोव्याल·कालमूलोतिदीप्योमार्जारोग्निर्दाहक·पावकश्च ।
चित्राङ्गोयंरक्तचित्रोमहाङ्ग स्याद्रुद्राह्वश्चित्रकोन्योगुणाढ्य ॥

अर्थ-काल, व्याल, कालमूल, अतिदीप्य, मार्जार, अग्नि, दारुक पावक, चित्राङ्ग, रक्तचित्र, महाङ्ग, (रक्तचित्रक, उपचुंपाह्व, दहनाग्नि, पाठी, रस्वाग्नि)

संस्कृतभाषामें	चित्रक रक्तचित्रक ।
हिन्दीभाषामें	चीता, लालचीता ।
बंगभाषामें	चितेगाछ पटचिते, चिता ।
मराठीभाषामें	चित्रक, रक्तचित्रक ।
कर्णाटकीभाषामें	चित्रमूल, केंपिनचित्रमूल ।
तैलङ्गीभाषामें	चित्रमूलमु एर्रचित्र ।
तामिलीभाषामें	शिवपु, चित्तिर ।
उर्दू	शुरचीता, रक्तचीता ।
गुजरातीभाषामें	चित्रो ।
लैटिनभाषामें	प्लाम्बेगोरोज़िया-प्लंबेगोज़िलेनिका । Plumbago rosea Plumbago Zeylanica
फारसीभाषामें	बेग़बरंदा ।
अरबीभाषामें	शितरज ।
इंग्रेजीभाषामें	पल्म्बेगोराकुलेगो ।

अस्य गुणाः ।

चित्रकःकटुकःपाकेवह्निकृत्पाचनोलघु ।
रूक्षोष्णोग्रहणीकुष्ठशोफार्शः कृमिकासनुत् ॥
वातश्लेष्महरोग्राहीवातार्शः श्लेष्मपित्तहृत्॥(भा०प्र०)

अर्थ-चीता-पाकमें चरपराहै, अग्निकारक, पाचक, हलका, रूखा, गरम तथा संग्रहणी, कोढ़, सूजन, बवासीर, कृमि, खांसी और वातकफका नाश करैहै । ग्राही है तथा वादीकी बवासीर, और कफपित्तको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

चित्रकः पाचकोरूक्षोलघुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पाके च कटुर्ग्राहकश्चतिक्तोष्णोरुचिदोमतः ॥
रसायनोग्निमद्घ्नः शोथकुष्ठार्शश्चामहा ।
कृमीन्वातोदरकण्डूयकृतग्रहणीनथा ॥

आमक्षयचोदरंचनाशयेदितिकीर्तितः ।
कटुत्वात्कफहाप्रोक्तस्तिक्तत्वात्पित्तनाशकः ॥
उष्णत्वाद्वातहाप्रोक्तोमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभि ॥(नि०र०)

अर्थ-चीता-पाचक, रूखा, हलका, अग्निदीपक, पाकके समय चरपरा, ग्राही, कडुवा, गरम, रुचिदायक, रसायन, अग्निकी समान पराक्रमी तथा सूजन कोढ, ववासीर, खासी, कृमि, वातोदर, कण्डू, यकृत्, संग्रहणी, आम, क्षय और उदररोगका नाश करैहै ।

यह चरपरेपनसे कफका, कडवेपनसे पित्तका और उष्णतासे वातका नाश करैहै, इसप्रकार चीता त्रिदोषनाशकहै ।

रक्तचित्रकगुणा ।

स्थूलकायकरोरुच्य·कुष्ठघ्नोरक्तचित्रक ।
रसेनियामकोलोहेवेधकश्चरसायन ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लालचीता-देहको स्थूल करनेवाला, रुचिकारी, कुष्ठनाशक, पारेको बाधनेवाला, लोहेमे वेध करनेवाला, रसायन, और शरीरको नूतन करैहै ।

कृष्णचित्रकगुणा ।

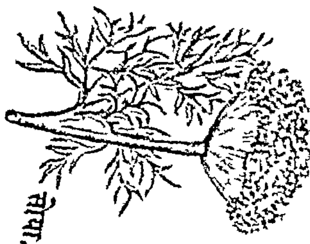
केशाःकृष्णाःप्रजायन्तेकृष्णचित्रकभक्षणात् ।
कृष्णकृष्णमसुत्पाट्यगोभिराघ्रातमेवजा ॥
क्षीरमध्येक्षिपेद्वापिक्षारकृष्णप्रजायते ।

अर्थ-कालेचीतेको भक्षण करनेसे केश काले होजातेहैं, गायके सूँघेहुए काले चीतेको लाकर दूधमे डालनेसे दूध काला होजाताहै ।

विवरण । क्षुप होताहै, चीतेकी अनेक जातीहै सफेद फूलका, लाल फूलका, काले फूलका, पीले फूलका, इनमे सफेद फूलका सर्वस्थानोंमें होताहै और लालफूलवाले तथा और फूलके चीते देखनमे बहुत कम आतेहैं ।

व्यवहार-मूल, मूलकी छाल, मात्रा ४ मासेकी ।

शतपुष्पानामानि ।



शताह्वाशतपुष्पाचशताक्षीशतपुष्पिका ।
कारवीतालपर्णीचमाधवीशोफकामिषिः ॥

अर्थ-शताह्वा, शतपुष्पा, शताक्षी शतपुष्पिका, कारवी, तालपर्णी, माधवी, शोफका, मिशि (घोषा, शिफा अतिच्छत्रा, अवाक्पुष्पी, छत्रा, संघातपत्रिका, वज्रपुष्पी, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, पट्टा, पुष्पाह्वा, शतपत्रिका, शालेय, मिशी, शालेय, मिसी, पोति, अहिच्छत्रा, संघातपत्रिका, छत्रा तालपर्णी, मिषी, शाल्या, शीतशिवा, शालीना, वनजा और अतिच्छत्रा)

संस्कृतभाषामें	शतपुष्पा ।
हिन्दीभाषामें	सोया-सोयेके बीज ।
बंगभाषामें	शुल्फा ।
मराठीभाषामें	बाळंतशोप ।
गुजरातीभाषामें	सुवानी भाजी-सवादाणा ।
कर्णाटकीभाषामें	सब्बसिगे ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दसदापचेट्टु-सदापा ।
इंग्रेजीभाषामें	डिल्सीड । Dil seed.
लैटिनभाषामें	एनिथ ग्रेवीओलन्स Anethum Graveolens.
फारसीभाषामें	शुत-सुत्वेशत ।
अरबीभाषामें	बीश्दा बजरूल शिब्त ।

शतपुष्पागुणा ।

शतपुष्पालघुस्तीक्ष्णापित्तकृद्दीपनीकटु ।
उष्णाज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सोया हलका, तीक्ष्ण, पित्तजनक, जठराग्निको दीपन करनेवाला, चरपरा, गरम तथा ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगोंको हरैहै ।

अपिच ।

शतपुष्पाकटुस्तिक्तातीक्ष्णोष्णादीपनीलघु ।
पित्तलाकफवातघ्नीविशेषाद्योनिशूलनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सोया-चरपरा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, अग्निप्रदीपक, हलका, पित्तकारक, कफ वातनाशक और विशेष करके योनिशूलका नाश करैहै ।

अन्यच्च ।

शताह्वापित्तलालघ्वीतिक्ताकट्वग्निदीपनी ।
उष्णामेध्यावस्तिकर्मप्रशस्ताकफनाशिनी ॥
वातज्वरञ्चशूलञ्चयोनिशूलञ्चनाशयेत् ।
आध्मानचक्षूरोगञ्चव्रणञ्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-सोया- पित्तजनक, हलका, कडवा, चरपरा, अग्निदीपक, गरम, मेधाजनक, बस्तिकर्ममें प्रशस्त तथा कफ, वात, ज्वर, शूल, योनिशूल, आध्मान, नेत्ररोग, व्रण और कृमिका नाशकरैहै ।

अस्या आकृतिः ।

शतपुष्पासूक्ष्मपत्रापीतपुष्पातिछत्रका ।
प्रसिद्धाक्षेत्रविख्यातादीपनोक्तामहर्षिभिः ॥

अर्थ-सोयेके पत्ते सूक्ष्म होतेहैं, फूल पीला होताहै, छत्र बहुत होतेहैं, खेतमें उत्पन्न होताहै और प्रसिद्धहै तथा दीपनहै ।

मधुरिकानामानि ।

सितामधुरिकाचापिमाधुरीतापसप्रिया ।
गन्धाधिकाघोषवतीसुगन्धाचतृषाहरा ॥

अर्थ-सिता-मधुरिका, माधुरी, तापसप्रिया, गन्धाधिका, घोषवती सुगन्धा, तृषाहरा, (छत्रा, शालेय, शालीन, मिश्रेया, मधुरा, मिसी,

शतिशिरा, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, पुष्पाह्वा, मिशी, घोषा, पोतिका, अहि-
च्छत्रा, माधवी, कारवी, संघातपत्रिका, अवाक्पुष्पी, तालपर्णी, मङ्गल्या
शतपत्रिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा, मधुरी और शतपुष्पा)

संस्कृतभाषामें	मधुरिका, शतपुष्पा, मिश्रेया।
हिन्दीभाषामें	सोंफ।
बंगभाषामें	मौरी।
मराठीभाषामें	बडीशोफ।
गुजरातीभाषामें	वरियाली।
कर्णाटकीभाषामें	कालजीरिगे।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्दजिल कुरद सौंफ।
तामिलीभाषामें	सोहि किरे।
इंग्रेजीभाषामें	फेनलसीड्स। Fennel seed
लेटिनभाषामें	फेनिक्युलं वलगेरी। Foeniculum vulgare
फारसीभाषामें	बादियान।
अरबीभाषामें	रजियानज, असतुल रजियानज।

अस्या गुणाः।

शतपुष्पातुमधुरावातपित्तहरागुरुः। (राजवल्लभ)

अर्थ-सौंफ-मधुर, वात-पित्तनाशक और भारी है।

अपिच।

शतपुष्पात्रिदोषघ्नीमेध्यापथ्यारुचिप्रदा।(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-सौंफ-त्रिदोषनाशक, मेधाजनक पथ्य और रुचिको उत्पन्न करती है।

अन्यच्च।

माधुरीकटुकापाकेस्त्रीणांगर्भप्रदासरा।
तिक्ताकट्वीचमधुराचोष्णाचाग्निप्रदीपनी॥
वातज्वरश्लेष्मशूलचदाहंनेत्ररुजंतृषाम्।
व्रणज्वरातिसारौचामंचैवविनाशयेत्॥ (वै॰ नि॰)

अर्थ-मधुरिका अर्थात् सौंफ पाकमें चरपरी, गर्भजनक, सारक, कड़वी चरपरी, मधुर, अग्निवर्द्धक, और गर्म है तथा वात, ज्वर, कफ, शूल, दाह, नेत्ररोग, पियास, व्रण, ज्वर, अतिसार और आमको नाश करती है।

अन्यच्च ।

मिश्रेया मधुरा स्निग्धा कटु कफहरापरा ।
वातपित्तोत्थदोषघ्नी प्लीहजन्तुविनाशिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–सौंफ–मधुर, स्निग्ध, चरपरी, कफनाशक तथा वातपित्तके दोष, प्लीहा और कृमिको दूर करेहै ।

अपिच ।

मिश्रेया रोचनी वृष्या दाहपित्तास्त्रनाशिका ।

अर्थ–सौंफ–रुचिकारी, वीर्यजनक, तथा दाह और रक्तपित्तका नाशकरेहै ।



अस्या जलगुणाः ।

तज्जलं शीतलं रुच्यं कटु दीपनपाचनम् ।
मधुरं तृड्वमिभ्रान्तिपित्तदाहं च नाशयेत् ॥ (वि०ति०भा०)

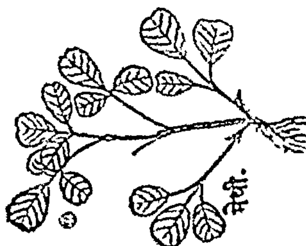
अर्थ–सौंफका अर्क–शीतल, रुचिकारक, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, पाचक, मधुर तथा तृष्णा, वमन, पित्त और दाहको दूर करेहै । इसके क्षुप सोयेके समान श्वेत और वारोमास होते हैं ।

मेथिकानामानि ।

मेथिका मेथिनी मेथी दीपनी बहुपत्रिका ।
वेधनी गन्धबीजा च ज्योतिर्गन्धफला तथा ।
वल्लरी चन्द्रिका मन्था मिश्रपुष्पा च कैरवी ।
कुञ्चिका बहुपर्णी च पीतबीजा मुनीन्द्रिका ॥

अर्थ–मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, वेधनी, गन्धबीजा,

उपोति, गन्धफला, पहगी, चन्द्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, कुञ्चिका, बहुपर्णी, पीतबीजा, मुनिन्द्रिका ।



संस्कृतभाषामें	मेथिका ।
हिन्दीभाषामें	मेथी ।
बंगभाषामें	मेथी ।
मराठीभाषामें	मेथी ।
गुजरातीभाषामें	मेथी ।
कर्णाटकीभाषामें	मेंथपक ।
तैलङ्गीभाषामें	मेगुरु ।
तामिलीभाषामें	वेन्दयम् ।
इंग्रेजी भाषामें	फेनुग्रीक । Fenugreek
लैटिनभाषामें	ट्रायगोनेला फेनमग्रेकम Trigonella foenum graecum
फारसीभाषामें	शुम्ले शमलीत ।
अरबीभाषामें	हुल्बा ।

अथ गुणाः ।

मेथिका वातशमनी श्लेष्मघ्नी ज्वरनाशिनी ।
ततः स्वल्पगुणा वन्या वाजिनां सा तु पूजिता ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मेथी-वातको शांत करै, कफ और ज्वरका नाश करैहै, वनमेथी इसकी अपेक्षा स्वल्प गुणवाली है और घोडोंके लिये अत्यन्त हितकारी है ।

अन्यच्च ।

मेथिका कटुरुष्णा च रक्तपित्तप्रकोपिनी ।
अरोचकहरा दीप्तिकरी वातमदी ॥ (राजनिघण्टु).

अर्थ–मेथी–चरपरी, गरम, रक्तपित्तनाशक, अरुचिहारक, दीपिकारक, वातविनाशक और अग्निको दीपन करे है।

अन्यच्च।

मेथिकाकटुकाचोष्णारक्तपित्तप्रकोपनी।
दीपनीचरसेतिक्तामलावष्टम्भिकालघु॥
रूक्षाहृद्याबलकरीज्वरारोचकवान्तिहा।
वातरक्तकफकासवातमर्शकृमीन्क्षयम्॥
शुक्रंचनाशयत्येपाप्रोक्तापूर्वचिकित्सकैः। (नि०र०)

अर्थ–मेथी–चरपरी, गरम, रक्तपित्तको कुपित करनेवाली, दीपन, रसम कडवी, मलावष्टम्भक, हलकी, रूखी, हृदयको हितकारी, बलकारक तथा ज्वर, अरोचक, वमन, वातरक्त, कफ, खाँसी, वादी, ववासीर, कृमि और शुक्रका नाश करेहै।

अन्यच्च।

मेथिकावातशमनीवेजिकावातलामता।

अर्थ–मेथी–वातको शान्त करेहै और वनमेथी वातको उत्पन्न करेहै मेथी खेतामें बोईजाती है, फूल पीला होताहै और फली आती है।

चन्द्रशूरनामानि।

चन्द्रिकाचर्महन्त्रीचपशुमेहनकारिका।
नदिनीकारवीभद्रावासुपुष्पासुवासरा॥

अर्थ–चन्द्रिका, चर्महन्त्री, पशुमेहनकारिका, नन्दिनी, कारवी, भद्रा, वासुपुष्पा, सुवासरा, (अशालिक, कालमेषा, दरकृष्ण, दीर्घवीज, रक्तराजी, सिद्धप्रयोजना)

संस्कृत भाषामें	चन्द्रशूर, अहालिम।
हिन्दी भाषामें	हालो हालिम।
मराठी भाषामें	आहाळीव।
गुजराती भाषामें	अशेलियो।
बंग भाषामें	हालिम।
इंग्रेजी भाषामें	कामन्, क्रेस्। Common cress
लैटिन् भाषामें	लेपिडिय, सेटीव। Lepidum Sativum

फारसी भाषामें हालमतुल्मतरातेजक ।
अरबी भाषामें हबुरशाद, हाफम, यजदलानिराजिर ।

अस्यागुणाः ।

चन्द्रशूरहितहिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ।
असृग्वातगदद्वेषिबलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-हालों-वात, कफ अतिसार और वातरोगका नाश करै, तथा बल और पुष्टिवर्द्धक है । अपिच ।

दरकृष्णोवातशूलगुल्मन स्तन्यपुष्टिकृत् ।
बल्योवाजीकरःपानाल्लेपाच्छोणितशूलनुत् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-हालों-वात, शूल और गुल्मनाशक है, स्तनोंमें दूध बढानेवाला है, बलकारक, वाजीकरणकारक, इसको पानीमें पीसकर पीनेसे तथा इसका लेप करनेसे रुधिरविकार और शूल नष्ट होता है ।

अन्यच्च ।

अहालिममतचोष्णतिक्तत्वग्दोषनाशनम् ।
वातगुल्मनाशयतीत्येवप्रोक्तंचिकित्सकै ॥ (नि० र०)

अर्थ-हालों-गरम, कडवा त्वचाके दोषोंका नाश करै तथा वात और गुल्मनाशक है । अपिच ।

अभिघातरुजहन्तिसदुग्धोदरकृष्णकः ।
त्वग्दोषान्वातरोगांश्चनेत्ररोगान्सशोणितान् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-दुग्धयुक्त हालों-अभिघातरोग, त्वचाके रोग, वातरोग, नेत्ररोग और रुधिरविकारोंको दूर करै है [illegible] होता है । मात्रा [illegible] माशाकी ।

[illegible]नामानि ।



यवानीदीप्यकोदीप्योभूतिकश्चयवानिका ।
यवाग्रजोग्रगन्धाचयवाह्वाभूकदम्बकः ॥

अर्थ-यवानी, दीप्यक, दीप्य, भूतिक, यवानिका, यवाग्रज, उग्रगन्धा, यवाह्वा, भूकदम्बक (ब्रह्मदर्भा, क्षेत्रयवानिका, यवसाह्व, दीपनी, दीपिनी, वातारि, यवजदीपनीय, शूलहन्त्री, यमानिका, उग्रा, तीव्रगन्धा, अजमोदिका, तीक्ष्णगन्धा, हृद्या, अग्निवर्धिनी, भूमिकदम्बक और अजमोदा)

संस्कृतभाषामें	यवानी ।
हिन्दीभाषामें	अजवाइन । अजमान ।
बंगभाषामें	यमानी योयान् ।
मराठीभाषामें	ओंवा ।
गुजरातीभाषामें	अजमा ।
कर्णाटकीभाषामें	ओड, उड्ड ।
तैलिङ्गीभाषामें	वामु । ओममी ।
तामिलीभाषामें	ओमन ।
इंग्रेजीभाषामें	बिशप्स विडसीड Bishops Weed Seed
लैटिन्भाषामें	कैरं कोपटिकम् टेकोटिसअजवान् । Carum Copticum Ptychotis
फारसीभाषामें	नानुखा ।
अरबीभाषामें	कमूनमुलूकी ।

यवानीगुणाः ।

यवानीपाचनीरुच्यातीक्ष्णोष्णाकटुकालघुः ।
दीपनी च तथा तिक्तापित्तलाशुक्रशूलहृत् ॥
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् । (भावप्रकाश)

अर्थ-अजवायन-पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण, चरपरी, हलकी, दीपन, कडवी, पित्तवर्धक तथा शुक्र, शूल, वात, कफ, उदररोग, आनाह, गुल्म, प्लीहा और कृमिको नाश करेहै ।

अपिच ।

यवानीकटुतिक्तोष्णावातार्शःश्लेष्मनाशिनी ।
शूलाध्मानकृमिच्छर्दिमर्दिनीदीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कडवी, गरम तथा वातकी बवासीर, कफ, शूल, आध्मान, कृमि और वमनको दूर करै है और परम दीपन है।

अन्यच्च।

यवानीकुष्ठशूलघ्नीहृद्यापित्ताग्निवर्द्धिनी।

अर्थ-अजवायन-कोढ और शूलनाशक है, हृदयको हितकारी है, पित्त तथा अग्निवर्द्धक है।

अपिच।

यवानीकटुकातिक्तारुच्याचोष्णाग्निदीपनी।
पाचनीपित्तलातीक्ष्णालघुहृद्याचसारिका॥
वृष्यावातार्शकफरुक्शूलाध्मानवमिक्रमीन्।
शुक्रदोषोदरानाहहृद्रोगप्लीहगुल्मकान्॥
द्वंद्वरोगामवातांश्च नाशयेदितिकीर्तिता। (नि० र०)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम अग्निदीपक, पाचक, पित्तजनक, तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, सारक, वीर्यजनक तथा वादीकी बवासीर, कफ, शूल, अफारा, वमन, कृमि, शुक्रदोष, उदररोग, आनाह, हृदयरोग प्लीहा, गुल्म द्वन्द्वरोग और आमवातका नाश करै है।

अजमोदानामानि।

अजमोदाखराश्वाचमयूरोदीप्यकस्तथा।
तथाब्रह्मकुशाप्रोक्ताकारवीलोचमस्तकः॥

अर्थ-अजमोदा, खराश्वा, मयूर दीप्यक, ब्रह्मकुशा, कारवी, लोचमस्तक, (खराह्वा, वस्तमोदा, उग्रगन्धा, मर्कटी, मोचा, गन्धदला, हस्तिकारवी, अजपर्णिका, मायूरी, शिखिमोदा मोदाढ्या, वह्निशिखा, मर्कटोर्षी, विगन्धी, हयगन्धा उग्रगन्धिका, मोदिनी, फलमुख्या और विदन्धा)

संस्कृतभाषामें	अजमोदा।
हिन्दीभाषामें	अजमोद।
बंगभाषामें	बनयमानी, रांधुनी, बनयोयान इत्यादि।
मराठीभाषामें	अजमोदा।

गुजरातीभाषामें	बोडीअजमोद ।
कर्णाटकीभाषामें	अजमोदा ।
तैलिङ्गीभाषामें	आजमोदा, वाम ।
लैटिन्‌भाषामें	एप्यमग्रेवियोलेन्स Apium Graveolens
इंग्रेजीभाषामें	सेलेरीसीड Celery seed
फारसीभाषामें	करफस ।
अरबीभाषामें	इब्बुलकर्द्रुकेरफस ।

अस्या गुणा ।

अजमोदाकटुस्तीक्ष्णादीपनीकफवातनुत् ।
उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्या वलकरी लघुः ॥
नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्कावस्तिरुजोहरेत् (भा०प्र)

अर्थ–अजमोद–चरपरा, तीक्ष्ण, जठराग्निप्रदीपक, कफवातनाशक, गरम, दाहजनक, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, वलकारक, हलका तथा नेत्ररोग, कफ, वमन, हिचकी और वस्तिरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

अजमोदाकटुरुष्णा रूक्षा कफवातहारिणी रुचिकृत् ।
शूलाध्मानारोचकजठरामयनाशिनी चैव ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–अजमोद–चरपरा, गरम, रूखा, कफवातनाशक, रुचिकारक तथा शूल, अफारा, अरोचक और उदररोगका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

अजमोदो रुचिकरो दीपकः कटुरूक्षकः ।
उष्णो विदाही हृद्यश्च वृष्यो वलकरो लघुः ॥
तिक्तो मलस्तम्भकरो ग्राहकः पाचकः स्मृतः ।
आध्मानशूलकफहृद्वातोरोचकनाशनः ॥
उदराग्निकृमींश्चैव वान्तिनेत्ररुजं जयेत् ।
वस्तिशूलदन्तरोगं गुल्मशुक्ररुजं तथा ॥ (नि०र०)

अर्थ–अजमोद–रुचिकारक, दीपन, चरपरा, रूखा, कड़वा, मलस्त-

ध्मान, उदरके रोग, कृमि, वमन, नेत्ररोग, वातरक्त, शूल, दन्तरोग, गुल्म और (वीर्यके विकारको दूर करेहै ।)

पारसीकयवानीनामानि ।

यवानीयायवानीस्याच्चोहारोजन्तुनाशनः ।
पारसीयावनीगन्धा छागश्चखरपुष्पिका ॥

अर्थ-यवानीया, यवानी, चोहार, जन्तुनाशन, पारसी, यावनी, गन्धा, छाग, खरपुष्पिका ।

संस्कृतभाषामें	पारसी ।
हिन्दीभाषामें	खुरासानी अजवाइन, खुरासानी अजमोद ।
मराठीभाषामें	किरमाणीओवा, खुरासनीचें फूल ।
गुजरातीभाषामें	खुरासानी अजमोद, करमाणी दीनेची ।
ऐंग्लिभाषामें	आर्टिमिस्या, मेरिटिमा Artemisia Maritima
फारसीभाषामें	तुरमइस्प ।

अस्या गुणाः

पारसीकयवानीतुतिक्तोष्णावह्नितीक्ष्णा ।
अग्निदीप्तिकरीवृष्यालघ्वीचैवप्रकीर्तिता ॥
त्रिदोषाजीर्णकृमिनुच्छूलामस्यपचनाशिनी ।
विशेषात्तुगुणास्त्वन्येयवानीवत्प्रकीर्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ-खुरासानी-अजवायन, चरपरी, गरम, चरपरी, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाली, वीर्यजनक, हलकी तथा त्रिदोष, अजीर्ण कृमि, शूल और आमको नष्ट करे है, शेषगुण अजवायनके समान है । इसका वृक्ष होताहै । पत्ते गुलदाऊदीकी समान होतेहैं । फूल पारसीक होताहै ।

खुरासानी बचनामानि ।

यवानीयावनीतीव्रातुरुष्कामदकारिणी ।
दीप्यश्यामकुबेराख्योमादकोमदकारकः ॥

अर्थ-यवानी यावनी, तीव्रा, तुरुष्का, मदकारिणी, दीप्य, श्याम, कुबेराख्य, मादक मदकारक ।



संस्कृतभाषामें	खुरसानी, पारसीक यवानी ।
हिन्दीभाषामें	खुरसानी, अजवायन ।
बंगभाषामें	खुराशानी, योयान् (यमानी)
मराठीभाषामें	खुरासाणी, ओवा, खुरसाण ।
गुजरातीभाषामें	खुरमाणी, अजमा ।
तैलिङ्गीभाषामें	खुरसाण वामु ।
बो०	खोरसनी, उभा ।
तामिलीभाषामें	खोरसनी, ओमाम शिट्टामुट्टि ।
इंग्रेजीभाषामें	हेनवेन । Henbane
लेटिन्भाषामें	हायो श्यामस्, नाईगर Hyoscyamus Niger
फारसीभाषामें	बज, तुख्मबजे ।
अरबीभाषामें	बजरुल बज, अर्बाद शीकरान् ।

अस्या गुणा ।

खुरासानीयवानीतुयवानीसदृशागुणैः ।
विशेषात्पाचनीरुच्याग्राहिणीमादिनीगुरु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-खुरासानी अजवायनके गुण अजवायनके समानहैं, किन्तु विशेष करके पाचकहै, रुचिकारीहै, माही मदकारक और भारी है ।

अपिच ।

खुरासानीयवानीतुकटुरूक्षाचपाचिका ।
ग्राहिकोष्णामादिकाचगुर्वीवातकरीमता ॥
कफनाशकरीप्रोक्तागुणास्त्वन्येयवानिवत् ।

अर्थ-खुरासानी अजवायन-चरपरी, रूखी, पाचक, ग्राही, गरम, नशा करनेवाली, भारी, वातकारक और कफनाशक है, शेषगुण अजवायनके समानहै ।

विवरण । इसका क्षुप यूरोप और एशियाके महादेशोंमें उत्पन्न होताहै, आजकल सहारनपुरकी ओर अधिकतासे इसकी खेती होतीहै पत्ते बीजे होतेहैं । व्यवहार-पत्ते और बीज ।

यह बीज ½ ड्राम १ ड्रामपोस्त मधु और जलके साथ मिलाकर शर्दी वातादि रोगोंमें दिये जातेहैं । काबुलमें इसके बीज जोंकके दूधके साथ पीसकर भैंसके चमड़ेमें लगाकर पेटके ऊपर बांधने तो गर्भ बंद होजाताहै, यह दस्तूर वहांपर बराबर चली आतीहै ।

इसके पत्तोंका अर्क जौके आटेमें मिलायकर लगावै पुठ्ठे पर वा छाती तथा उसकी पीडा दूर होजायगी । एक बूंद इसको आंखमें लगानेसे आंखकी पीडा जातीरहतीहै ।

खुरासानीअजवायन ।



अजाजीजीरकोजीरोदीप्यकोजरणाकणा ।

अर्थ-अजाजी, जीरक, जीर, दीप्यक, जरणा, कणा ([illegible] [illegible], [illegible] [illegible], असालिया दहीगज, मागध, ईरान)

गौरजीरकनामानि ।

शुक्लाजाजीकणाख्यातादीर्घकःकणजीरकः ।

अर्थ-शुक्लाजाजी, कणा, दीर्घक, कणजीरक, (अजाजी, गौरजीरक, श्वेतजीरक, कणाह्वा, कणजीर, मितदीप्य,दीर्घकणा,मिताजाजी, गौराजाजी)

संस्कृतभाषामें	जीरक, सितजीरक ।
हिन्दीभाषामें	जीरा, सफेद्जीरा ।
बंगभाषामें	जीरे, सादाजीरे ।
मराठी भाषामें	जिरें, पांढरें जिरें ।
गुजराती भाषामें	शाकनु जीरु । साङ्कुजीरु ।
कर्नाटकीभाषामें	जिरिगे, बिळियजीरिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	जिलकारा, जील करर ।
इंग्रेजीभाषामें	क्युम्मिन्, सीड । Cummin seed
लैटिन्भाषामें	क्युमिनम् सेमिनम् Cumminum Cyminum
फारसीभाषामें	जीरा ।
अरबीभाषामें	कमुन् ।
यूनानीभाषामें	खामुन् ।

सामान्यजीरकगुणाः ।

जीरकः कटुरुष्णश्चवातहृद्दीपन परः ।

गुल्माध्मानोतिसारघ्नोग्रहणीकृमिहृत्परः ॥ (रा०नि०व०)

अर्थ-साधारणजीरा-चरपरा, गरम वातनाशक, दीपन तथा गुल्म, अफारा, अतिसार, संग्रहणी और कृमिको दूर करे है ।

श्वेतजीरकगुणाः ।

गौराजाजीहिमारुच्याकटुर्मधुरदीपनी ।

कृमिघ्नीविषहन्त्रीचचक्षुष्याधातुनाशिनी ॥ (नि०व०)

अर्थ-सफेद्जीरा-शीतल, रुचिकारक, चरपरा, मधुर, अग्निको दीपन करनेवाला, विषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और अफारेको दूर करे है ।

अपिच ।

शुभ्रजीरकटुर्ग्राहिपाचनदीपनलघु ।

किञ्चिदुष्णञ्चमधुरचक्षुष्यरुचिकृन्मतम् ॥

गर्भाशयशुद्धिकररूक्षमल्पसुगन्धिकम् ।

तिक्तंचमिक्षयाध्मानवातंकुष्ठंविषंज्वरम् ॥
अरोचकंरक्तदोषमतीसारकृमींस्तथा ।
पित्तञ्चगुल्मरोगञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेदजीरा-चरपरा, मलरोधक, पाचक, जठराग्निका दीपन करनेवाला, हलका, किंचित् उष्ण, मधुर, नेत्रोंको हितकारक, रुचिकारी, गर्भाशयको शुद्ध करनेवाला, रूखा, बलकारक, सुगन्ध, कडवा तथा छर्दि, क्षय, आध्मान, वात, कोढ, विषविकार, ज्वर, अरुचि, रक्तविकार, अतिसार, कृमि, पित्त और गुल्मरोगका नाश करे है ।

कृष्णजीरकनामानि ।



कृष्णाजाजीतुजरणासुगन्धाकालजीरकः ।
वर्षाकालीचहृद्याचतथोद्गारशोधिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कृष्णाजाजी, जरणा, सुगन्धा, कालजीरक, वर्षाकाली, हृद्या, उद्गारशोधिनी, (कृष्णा, जरणा, मधुगन्धा, भेदिनी, बहुभेदिनी, दृष्या, जीर्णा, जीरकणा, कार्मुकजीरका, ग्रन्थिशोधिनी, काष्ठभेदी, सुगन्धा, सुगन्ध, कृष्णजीर, कृष्णजीरक और उद्गारशोधक)

संस्कृतनामानि कृष्णजीरक ।
हिंदीभाषामें कालाजीरा ।
बंगभाषामें कालजीरे ।

मराठीभाषामें	शहाजिरें ।
गुजरातीभाषामें	शाजीरु ।
कर्णाटकीभाषामें	करिजीरके ।
तैलिङ्गीभाषामें	नल्लजीर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाक्कारावे सीड् । Black Caraway seed
लैटिन्भाषामें	केरनैग्रम् । Carum Nigrum
फारसीभाषामें	जीरेश्याह ।
अरबीभाषामें	कमुन् किरमानी ।

अस्यगुणाः ।

जरणाकटुरुष्णाचकफशोफनिकृन्तनी ।
रुच्याजीर्णज्वरघ्नीचचक्षुष्याग्रहणीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ—कालाजीरा—चरपरा, गरम, कफ और शोफनाशक, रुचिकारक, जीर्णज्वरहारक नेत्रोंको हितकारक और ग्राहकहै ।

अपिच ।

कृष्णजीरञ्चचक्षुष्यरुच्यंसोष्णसुगन्धिकम् ।
ग्राहकंकटुकंरूक्षदीपकजीर्णज्वर्तिनुत् ॥
कफशोथशिरोरोगकुष्ठचैवविनाशयेत् ।(नि० र०)

अर्थ—कालाजीरा—नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, गरम, सुगन्धि, ग्राही (भारी), चरपरा, रूखा, दीपन तथा जीर्णज्वर, कफ, सूजन, मस्तकरोग और कुष्ठको दूर करैहै ।

पीतजीरकगुणाः ।

पीताजाजीदीपनीचकट्वीचोष्णातिसारहा ।
आध्मानवातगुल्मचग्रहणींचकृमीञ्जयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ—पीलाजीरा—जठराग्निको दीपन करै, चरपरा, गरम तथा अतिसार, आध्मान, वायु, गुल्म, संग्रहणी और कृमिका नाश करैहै ।

द्विविधजीरकगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णकटुकपाकेरुच्यपित्ताग्निवर्धनम् ।
कटुश्लेष्मानिलहरगन्धाढ्यजीरकद्वयम् ॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ-दोनों प्रकारकेजीरे-तीक्ष्णोष्ण, पचनेमें चरपरे, रुचिको उत्पन्न करनेवाले, पित्त तथा जठराग्निको बढानेवाले चरपरे, कफ, वातनाशक और अत्यन्त गन्धवाले हैं।

स्थूलजीरकनामानि।

कालाजाजीपृथिवीचपृथ्वीचपृथुकापृथु।
कुञ्चिकाकुञ्चिकाकुञ्चीकारवीस्थूलजीरकः॥

अर्थ-कालाजाजी, पृथिवी, पृथ्वी, पृथुका, पृथु, कुञ्चिका, कुञ्चिका, कुञ्ची, कारवी, स्थूलजीरक. (दिप्या, उपकुञ्चिका काला, मधुरकाला, मनोज्ञा, जागिणी, जीणा, करणी, सुपर्वा, पृथ्वीका, पांतरा, सुषवी, उपकुञ्ची, सुपवी, भेषज, कृष्णा, अरणा, शाली, बहुगन्धा, कालिका उपकालिका, उपकुञ्ची, वृहज्जीरक.)

संस्कृतभाषामें	स्थूलजीरक, कालाजाजी।
हिन्दीभाषामें	कलौंजी, मगरेला।
बंगभाषामें	मोटाकालेजीरो।
मराठीभाषामें	कलौंजीजिरें।
गुजरातीभाषामें	कलौंजी जीरुं।
कर्णाटकीभाषामें	करिदोड्डजीरिगे।
तैलंगीभाषामें	नल्लजीला करा।
इंग्रेजीभाषामें	स्मोल फेनल, फ्लौवर। Small Fenel Flower
लैटिन्भाषामें	निगेल्लासेटिवा। Nigella Sativa
फारसीभाषामें	शोनिज, स्याहदाने।
अरबीभाषामें	हब्बुस्सौदा।

अथ गुणाः।

स्थूलोपकुञ्चिकातिक्ताकटूष्णाचदीपनी।
तृष्णाचाजीर्णशमनीगर्भाशयविशोधिनी॥
आध्मानवातगुल्मघ्नरक्तपित्तकृमींस्तथा।
कफंपित्तंचामदोषंवातशूलंचनाशयेत्॥

अर्थ-कलौंजी-चरपरी कड़वी, गरम, जठराग्निदीपक, गर्भाशयशोधक, अजी-

र्णनाशक, गर्भाशयको शुद्ध करनेवाली तथा आध्मान, वात, गुल्म, रक्तपित्त, कृमि, कफ, पित्त, आमदोष, बादी और शूलको नष्ट करे है ।

त्रिविधजीरकगुणा ।

जीरकत्रितयंरूक्षकटूष्णदीपनंलघु ।
संग्राहिपित्तलमेध्यंगर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥
ज्वरघ्नपाचनबल्यवृष्यरुच्यकफापहम् ।
चक्षुष्यंपवनाध्मानगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तीनोंप्रकारके जीरे-(सफेद जीरा, काला जीरा, कलौंजी) रूखे चरपरे, गरम, दीपन, हलके, मलरोधक, पित्तजनक, मेधाजनक, गर्भाशयशोधक, ज्वरनाशक, पाचक, बलकारक, वीर्यवर्धक, रुचिकारक, कफनाशक, नेत्राको हितकारी तथा वात, आध्मान, गुल्म, वमन और अतिसारका नाश करे है ।

अरण्यजीरकनामानि ।

बृहन्यालीक्षुद्रपत्रोऽरण्यजीरकणौ तथा ।

अर्थ-बृहन्पाली-क्षुद्रपत्र, अरण्यजीर, कण ।

संस्कृतभाषामें	वनजीरक ।
हिन्दीभाषामें	कालाजीरी ।
बंगभाषामें	वनजीरे ।
मराठीभाषामें	कडूजिरें ।
कर्णाटकीभाषामें	काजीरगे ।
गुजरातीभाषामें	कालीजिरी । कडवीजीरी ।
इंग्रेजीभाषामें	परपल फ्लीवेन । Purpalo Fleabane
लैटिनभाषामें	वरनोनिया एथेल मेंटिका । Vernonia Anthelmentica
अरबीभाषामें	कमून बहरी कमून रुमी ।

अस्यागुणाः ।

वनजीर कटु शीतोव्रणहापञ्चनामक ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कालाजीरी-चरपरी, शीतल और व्रगनाशक है ।

अपिच ।

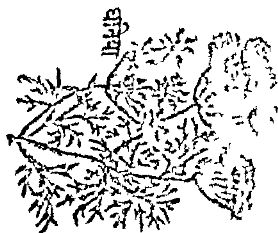
अरण्यजीरकचोष्णतुवरकटुकमतम् ।

स्तम्भवातंकफंचैवव्रणंचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कालाजीरी-गरम, कपैली, चरपरी तथा स्तम्भक वात, कफ और घावको दूर करैहै।

इसका क्षुप होताहै, इसके ऊपरके भागमें रूआ और बीजमें फानगीरी होतीहै, यह घोडीके मसालेमें पडताहै.

धन्याकनामानि।



धन्याकधनिकधन्यधान्यकञ्चधनीयकम्।
कुस्तुम्बुरीछत्राधन्यातुम्बुरुंचवितुन्नकम् ॥

अर्थ-धन्याक, धनिक, धन्य, धान्यक, धनीयक, कुस्तुम्बुरी, छत्रा, धन्या, तुम्बुरु, वितुन्नक, (कुस्तुम्बरु धान्याक, धेनेयक, धानक, धान्य, धानेय, धनिका, छत्रा धान्य, सुगन्धि, शाकयोग्य, मनोरम, वनेधिप धान्यबीज, धीरधान्य अपधिका, वेधक, धाना, कुनटी, धेनिका, धना अजगन्धा, वेणव, धानी और जिम्भा)।

संस्कृतभाषामें	धन्याक।
हिन्दीभाषामें	धनिया।
बंगभाषामें	धने।
मराठीभाषामें	धने, कोथिंबीर।
गुजरातीभाषामें	धाणा, कोथमीर।
कर्णाटकभाषामें	कोत्तुंबरि।
तैलङ्गभाषामें	कोत्तिमिर धनियालु।
द्राविडभाषामें	कोत्तमल्लि।

इंग्रेजीभाषामें	कोर्यांडिर्सीड् । Corıander seed
लैटिन्भाषामें	कोरीगड्रम सेटाईवम् । Corıanbrım Satıvım
फारसीभाषामें	तुख्मे कश्नीझ ।
अरबीभाषामें	कजबुरा ।

धन्याकगुणाः ।

धान्यकमधुरशीतकषायपित्तनाशनम् ।
ज्वरकासतृषाछर्दिकफहारि च दीपनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-धनिया-मधुर, शीतल, कषेला, पित्तनाशक तथा ज्वर, खासी, तृषा, वमन और कफका नाश करेहै, तथा अग्निको दीपन करेहै ।

अपिच ।

धान्यकतुवरस्निग्धमवृष्यमूत्रलंलघु ।
तिक्तकटूष्णवीर्य्यञ्चदीपनंपाचकस्मृतम् ॥
ज्वरघ्नरोचकग्राहिस्वादुपाकत्रिदोषनुत् ।
आर्द्रन्तुतद्गुणस्वादुविशेषात्पित्तनाशितत् ॥
तृष्णादाहवमिश्वासकासकार्श्यक्रिमिप्रणुत् ।

अर्थ-धनिया-कषेला, स्निग्ध, अवृष्य, मूत्रजनक, हलका, कडवा, चरपरा, उष्णवीर्य, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पाचक, ज्वरनाशक, रोचक, पाकके समय स्वादिष्ट है, तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, वमन, श्वास, खासी, कृशता और कृमिरोगका नाश करे है ।

कच्चे धनियेके भी धनियाके समान गुण हैं, स्वादिष्ट है और विशेष करके पित्तका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

आर्द्राकुस्तुम्बरीकुर्य्यात्स्वादुसौगन्ध्यहृद्यताम् ।
भक्ष्यव्यञ्जनभोज्येषुविविधेष्ववचारिता॥(गौडनि०)

हिङ्गुनामानि ।

हिङ्गुशूलद्विड्रमठवाह्लीकजतुकजतु ।
सहस्रवेधिजन्तुघ्नसूपाङ्गंसूपधूपनम् ॥

अर्थ-हिङ्गु-शूलद्विट, रमठ, वाह्लीक, जतुक, जतु, सहस्रवेधि, जन्तुघ्न,

हिंगुपत्रीनामानि ।

त्वक्पत्री हिंगुपत्री च कारवी पृथुला पृथु । वाष्पीका वाष्पिका वाष्पी दीर्घिका दारुपत्रिका ॥

अर्थ-त्वक्पत्री-हिंगुपत्री, कारवी, पृथुला, पृथु, वाष्पीका, वाष्पिका, वाष्पी, दीर्घिका, दारुपत्रिका, (कारवी, कारवी, पृथ्वी, पृथ्वीका, वाष्पका, वाष्पा, पत्री, तन्वी, दारुपत्री, बिल्वा और पृथुला)

अथ गुणाः ।

हिंगुपत्री भवेद्रुच्या तीक्ष्णोष्णा पाचनी कटुः । हृद्बस्तिरुग्विबन्धार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हिंगुपत्री-रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, पाचक, चरपरी, तथा हृदय रोग, वस्तिरोग, विबन्ध, बवासीर, कफ, गुल्म और वातका नाश करे है ।

अपिच ।

हिंगुपत्री कटुस्तीक्ष्णा तिक्तोष्णा पाचिका मता । रुच्या पथ्या दीपनी च हृद्या संगन्धकारिणी ॥
तुवरा कफवातामबस्तिपीडाविनाशयेत् । हृद्विड्बन्धार्शगुल्मादिप्लीहामेदोऽपचीविषान् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हिंगुपत्री-चरपरी, तीक्ष्ण, कड़वी, गरम, पाचक, रुचिकारक, पथ्य, दीपन, हृदयको हितकारी, सुगन्धि करनेवाली तथा कफ, वात, आमवात, वस्तिकी पीड़ा, मलबद्धता, बवासीर, गुल्म, प्लीहा, मेद, अपची और विषका नाश करे है ।

इसके पत्तोंके गुण और नाम हींगके समान लिखे हैं । और हिंगुके पत्तो से [illegible] गन्ध और स्वाद, कहते हैं यो इसकोभी कारवी कहते [illegible] और गुणभी हींगके लिखते हैं । निघण्टुरत्नाकरकी मराठी भाषाम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ।

नाडीहिंगुनामानि ।

नाडीहिंगुपत्रशाखा जन्तुका रामठी नसा । वंशपत्री नपिण्डाख्या सुवीर्या हिंगुनाडिका ॥

अर्थ-नाडीहिंगु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], हिंगुनाडिका, [illegible] [illegible] हिंगु [illegible]) ।

संस्कृतभाषामें	नाडीहिंगु ।
हिन्दीभाषामें	कटः पतिहींङ्ग, टिकामाली ।
बंगभाषामें	हिंगुविशेष ।
मराठीभाषामें	डिकेमाली ।
गुजरातीभाषामें	डिकामाली ।
कर्णाटकीभाषामें	कलहन्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिभहिंगवा कारु इगवा ।
इंग्रेजीभाषामें	डिकेमालीगम्, गम्मीगार्डिनिया । Dika mallegum Gummy Gardunia
लैटिन्भाषामें	गार्डित्यायुसिडा गार्धिन्यागम्मिफेरा । Gardinia Ceeda Gardinia Gummifera
अरबीभाषामें	कनखाभ

अस्या गुणा ।

नाडीहिंगु कटुष्णाचकफवातार्त्तिशान्तिकृत् ।
विष्ठाविबन्धदोषघ्नीचानाहामापहारिणी । (राजनिघण्टु)

अर्थ–नाडीहिंगु–चरपरी, गरम, कफ और वातकी वेदनाको शान्ति करनेवाली तथा विष्ठा, विबन्ध और आनाह रोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

नाडीहिंगुस्तुकटुकस्तीक्ष्णश्चोष्णश्चदीपक ।
कफवातमलस्तम्भमनोमोहामनाशन· ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–नाडीहिंगु–चरपरी, तीक्ष्ण, उष्ण, अग्निप्रदीपक तथा कफ, वात, मलबन्ध, मनका मोह और आमको दूर करैहै ।

विवरण। बडा वृक्ष होता है, फूल सफेद होतेहैं, फल पोगतके डोंगेकी समान होतेहैं, पत्ते वटमोगराके समान होतेहैं इसको नाडीहिंगु कहतेहै ।

वचानामानि ।

वचोग्रगन्धाषड्ग्रन्थागोलोमीशतपर्विका ।
मङ्गल्याजटिलातीक्ष्णागालिनीलोमशातथा ॥

अर्थ–वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका, मङ्गल्या, जटिला, तीक्ष्णा, गालिनी, लोमशा (विजया, उग्रा, रक्षोघ्नी, वच्या, काङ्गा, भद्रा,

क्षुद्रपत्री इक्षुपर्णी, स्मारणी, मांपनीया भूतनाशिनी श्लेष्मघ्नी, मीदमत्वा, जलजा इक्षुपत्रिका)

पारसीकवचानामानि ।

पारसीकवचाशुक्लाप्रोक्ताहैमवतीतिसा ।

अर्थ-खुरासानी वच सफेद होतीहै, उसको गहूनमें हैमवती (शतपर्वी, मेध्या, शुक्ला, भोगवती, मीदपत्रा, कर्पिणी) कहतेहैं ।

संस्कृतभाषामें	वचा, पारसीकवचा, श्वेतवचा ।
हिन्दीभाषामें	वच, खुरासानीवच, सफेदवच ।
बंगभाषामें	वच खोरासानी वच श्वेतवच ।
मराठीभाषामें	वेखंड, पांढरें वेखण्ड ।
गुजरातीभाषामें	घोडावज, खुरासाणीवज वालावज ।
कर्णाटकीभाषामें	वच बिळियवजे ।
तैलिङ्गीभाषामें	वाया, वदज नञ्जाग ।
तामिलीभाषामें	वसम्बु ।
इंग्रेजीभाषामें	स्वीटफ्लाग्ज । Sweet Flower
लैटिन्भाषामें	एकोरस, केलमस । Acorus Calamus
पारसीभाषामें	गोशन नई अगर तुर्की ।
अरबीभाषामें	उदल्बुज ।

वचागुणाः ।

वचोग्रगन्धाकटुकातिक्तोष्णावान्तिवह्निकृत् ।
दीपनीवाक्प्रदाकण्ठ्याशकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
विबन्धाध्मानशूलघ्नीशोफवातज्वरापहा ।
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान्हरेत् ॥(रा०नि०)

अर्थ-वच-उग्रगन्धयुक्त, चरपरी कड़वी, गरम वमनकारक, अग्नि कारक, दीपन वाणीदायक, कण्ठको हितकारी, मलमूत्रशोधक तथा विबन्ध आध्मान शूल शोथ, वातज्वर, अपस्मार कफ, उन्माद, भूत कृमि और वातका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

वचानीक्ष्णाकटुष्णाग्नकफामग्रन्थिशोफनुत ।

वातज्वरातिसारघ्नीवान्तिकृन्मादभूतहृत्॥

अर्थ-वच-तीक्ष्ण, चरपरी, गरम तथा कफ, आम, ग्रन्थि, सूजन, वातज्वर और अतिसारको हरेहै । वमनकारक, उन्माद और भूतनाशक है ।

अन्यच्च ।

वचायुष्यावातकफतृष्णाघ्नीस्मृतिवर्द्धिनी । (रा०व०)

अर्थ-वच-अवस्थास्थापक, वातकफनाशक, तृष्णानिवारक, और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

शुक्लवचागुणाः ।

वचाश्वेतामतिर्मेधाचाग्निदीप्तिकरीमता ।
आयुष्यदागुणाढ्याचवृष्याकफविनाशिनी ॥
वातभूतकृमिहरात्वितरेपूर्ववद्गुणा ।

अर्थ-सफेदवच-मति और मेधादायकहै, जठराग्निमदीपकहै, आयुर्वर्द्धक, अधिकगुणवाली, वीर्यजनक तथा कफ, वादी, भूतबाधा और कृमिको दूर करेहै । शेषगुण वचाकी समान जानने ।

महाभरीवचागुणाः ।

सुगन्धाप्युग्रगन्धाचविशेषात्कफकासनुत् ।
सुस्वरत्वकरीरुच्याहृत्कण्ठमुखशोधिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-महाभरीवच-सुगन्ध और उग्रगन्धयुक्त है । विशेषकरके कफ तथा खासीको दूरकरे है स्वरको उत्तम करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली तथा हृदय, कण्ठ और मुखको शुद्ध करनेवाली है ।

वचाद्भुतगुणाः ।

अद्भिर्वापयसाज्येनमासमेकन्तुसेविता ।
वाचाकुर्य्यान्नरंप्राज्ञश्रुतिधारणसंयुतम् ॥
चन्द्रसूर्यग्रहेपीतंपलमेकंपयोन्वितम् ।
वचायास्तत्क्षणंकुर्य्यान्महाप्रज्ञान्वितंनरम् ॥

अर्थ-वचके चूर्णको जलके साथ अथवा दूधके साथ एक मासपर्यन्त सेवन करनेसे मनुष्य बुद्धिमान् और ज्ञानी होताहै तथा चन्द्रग्रहणके समय

क्षुद्रपत्री, इक्षुपर्णी, इक्ष्वारणी, पौधनीपा, भूतनाशिनी रोमशा, दीर्घपत्रा, जल्वो, इक्षुपत्रिका)

पारसीकवचानामानि ।

पारसीकवचा शुक्ला प्रोक्ता हैमवतीति सा ।

अर्थ-खुरासानी वच सफेद होतीहै, इसको संस्कृतमें हैमवती (पारसीका, मेध्या, शुक्ला, भोगवती, दीर्घपत्रा कपिर्णा) कहतेहैं ।

संस्कृतभाषामें	वचा, पारसीकवचा, श्वेतवचा ।
हिन्दीभाषामें	वच, खुरासानीवच, सफेदवच ।
बङ्गभाषामें	वच, खोरासानी वच, श्वेतवच ।
मराठीभाषामें	वेखंड पांढरें वेखण्ड ।
गुजरातीभाषामें	घोडावज, खुरासाणीवज वालावज ।
कर्णाटकीभाषामें	बज बिल्लिबजे ।
तैलिङ्गीभाषामें	वाजा, वदज नल्लवा ।
तामिलीभाषामें	वसम्बु ।
इङ्गरेजीभाषामें	स्वीट्फ्लाग्स । Sweet Flag.
लैटिन्भाषामें	एकोरस, केलेमस । Acorus Calamus.
पारसीभाषामें	सोसन जर्द अगर तुर्की ।
अरबीभाषामें	उस्कुरा ।

वचागुणाः ।

वचोग्रगन्धा कटुका तिक्तोष्णा वान्तिवह्निकृत् ।
दीपनी वाक्प्रदा कण्ठ्या शकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
विबन्धाध्मानशूलघ्नी शोफवातज्वरापहा ।
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान्हरेत् ॥(रा०नि०)

अर्थ-वच-उग्रगन्धयुक्त, चरपरी कडवी, गरम, वमनकारक, अग्नि-वर्धक दीपन वाणीप्रद कण्ठको हितकारी, मलमूत्रशोधक तथा विबन्ध, आध्मान, शूल, शोथ, वातज्वर, अपस्मार, कफ, उन्माद भूत एवं कृमि और वातका नाश करै ।

अन्यच्च ।

वचातीक्ष्णा कटूष्णा नकफामग्रन्थिशोफनुत् ।

वातज्वरातिसारघ्नीवान्तिकृन्मादभूतहृत् ॥

अर्थ-वच-तीक्ष्ण, चरपरी, गरम तथा कफ, आम, ग्रन्थि, सूजन, वातज्वर और अतिसारको हरैहै । वमनकारक, उन्माद और भूतनाशक है ।

अन्यच्च ।

वचायुष्यावातकफतृष्णाघ्नीस्मृतिवर्द्धिनी । (रा०व०)

अर्थ-वच-अवस्थास्थापक, वातकफनाशक, तृष्णानिवारक, और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

शुक्लवचागुणाः ।

वचाश्वेतामतिर्मेधाचाग्निदीप्तिकरीमता ।
आयुष्यदागुणाढ्याचवृष्याकफविनाशिनी ॥
वातभूतकृमिहरात्वितरेपूर्ववद्गुणा ।

अर्थ-सफेदवच-मति और मेधादायकहै, जठराग्निप्रदीपकहै, आयुर्वर्द्धक, अधिकगुणवाली, वीर्यजनक तथा कफ, वादी, भूतबाधा और कृमिको दूर करैहै । शेषगुण वचाकी समान जानने ।

महाभरीवचागुणाः ।

सुगन्धाप्युग्रगन्धाचविशेषात्कफकासनुत् ।
सुस्वरत्वकरीरुच्याहृत्कण्ठमुखशोधिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-महाभरीवच-सुगन्ध और उग्रगन्धयुक्त है । विशेषकरके कफ तथा खासीको दूरकरै है स्वरको उत्तम करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली तथा हृदय, कण्ठ और मुखको शुद्ध करनेवाली है ।

वचाद्भुतगुणाः ।

अद्भिर्वापयसाज्येनमासमेकन्तुसेविता ।
वाचाकुर्यान्नरप्राज्ञश्रुतिधारणसंयुतम् ॥
चन्द्रसूर्यग्रहेपीतंपलमेकपयोन्वितम् ।
वचायास्तत्क्षणकुर्यान्महाप्रज्ञान्वितंनरम् ॥

अर्थ-वचके चूर्णको जलके साथ अथवा दूधके साथ एक मासपर्यन्त सेवन करनेसे मनुष्य बुद्धिमान् और ज्ञानी होताहै तथा चन्द्रग्रहणके समय

अथवा सूर्यग्रहणके समय पक्व पञ्च पत्रके चूर्णको दूधके साथ भक्षण करनेसे उसी समय मनुष्यको अत्यन्त बुद्धियुक्त करतीहै। यह गरम स्थान और रेतली भूमिमें उत्पन्न होती है।

कुलिञ्जननामानि।

कुलञ्जो गन्धमूलश्च तीक्ष्णमूलः कुलञ्जन ।

अर्थ-कुलञ्ज, गन्धमूल, तीक्ष्णमूल, कुलञ्जन ।

संस्कृतभाषामें	कुलञ्जन ।
हिन्दीभाषामें	कुलींजन ।
बंगभाषाम	कुलञ्जन ।
मराठीभाषामें	कोष्ठिञ्जन । और कोरिञ्जन ।
गुजरातीभाषामें	कुलिञ्जन नानु । कुलिञ्जन मोटे ।
अंग्रेजीभाषामें	ग्रेटर गेलंगाल । Greater Galangal
लेटिनभाषाम	आल्पिनिया,आलिगिनां । Alpinia galanga
फारसीभाषामें	खिसदार ।
अरबीभाषामें	ईर्क खोलिञ्जान ।

अथ गुणाः ।

कुलञ्ज कटुतिक्तोष्णो दीपनो मुखदोषनुत । (रा० नि०)

अर्थ-कुलींजन-चरपरा कडवा गरम, दीपन और मुखदोषनाशक है।

अन्यच्च ।

कुलिञ्जनं कटुस्तिक्तमुष्णं चाग्निप्रदीपनम् ।
रुच्यमन्यच्च हृद्यं च मुखकण्ठविशुद्धिकृत् ॥
मुखदोषकफश्वासकासवातकफार्तिहृत् । (नि० र०)

अर्थ-कुलींजन-चरपरा, कडवा गरम, अग्निदीपक रुचिकारक, हृदयको सुखदेनेवाला स्वच्छ, दिलदार, मुख और कण्ठको शुद्ध करनेवाला तथा मुखरोग कफ खांसी वात और कफको नष्ट करताहै ।

यह कुलिञ्जनका पदार्थ हमारे देशमें आताहै, इसके बहुत दोनों होतीहैं उनको कुलिञ्जन कहतेहैं । जिसको मनुष्य पानमें खाते उसको कुलिञ्जन कहतेहैं सो पानकी जड नहीं है ।

चोपचीन्युत्पत्तिलक्षणम् ।



फिरंगदेशसम्भूताचीनदेशेथविश्रुता ।
नामतश्चोपचीनीस्यादश्वगन्धसमाभवेत । (शि०प्र०)

अर्थ–फिरंग देशमें उत्पन्न होतीहै, चीनदेशसे आती है और इसका नाम चोपचीनी है और असगन्धकी समान होतीहै ।

संस्कृतभाषामें	द्वीपान्तरवचा, अमृतोपहिता ।
हिन्दीभाषामें	चोबचीनी ।
बंगभाषामें	तोपचीनी ।
मराठीभाषामें	चोपचीनी ।
गुजरातीभाषामें	चोपचीनी ।
इंग्रेजीभाषामें	चाइनारूट् । China root
लैटिन्भाषामें	स्माइलाक्स चाइना । Smilax China
फारसीभाषामें	एबन ।
अरबीभाषामें	एबन ।
फिरंगीभाषामें	चपा ।
यूनानीभाषामें	सागिलियस आशमिनी ।

अकरकरागुणाः ।

अकल्लकोष्णवीर्यश्च बलकृत्कटुकोमतः ।
प्रतिश्यायञ्च शोथञ्च वातञ्चैव विनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-अकरकरा-उष्णवीर्य, बलकारक, चरपरा तथा प्रतिश्याय, सूजन और वातका विनाश करैहै ।

हपुषानामानि ।

हपुषा वपुषा विस्रा पराश्वत्थफला स्मृता ।
मत्स्यगन्धा प्लीहहन्त्री विषघ्नी ध्मांक्षनाशिनी ॥

अर्थ-हपुषा वपुषा, विस्रा, (हपुषा, विस्रगन्धा, विस्रगन्धिका, यह नाम प्रथम प्रकारके हाउबेरके हैं) अश्वत्थफला, मत्स्यगन्धा, प्लीहहन्त्री, विषघ्नी, ध्मांक्षनाशिनी, (स्वल्पफला, कच्छुघ्ना, प्लीहशत्रु, कफघ्नी, अपराजिता)

संस्कृतभाषामें	हपुषा ।
हिन्दीभाषामें	हाउबेर ।
बंगभाषामें	हबुषा ।
मराठीभाषामें	*होश ।
फारसीभाषामें	पर्दुइल्वे ।
लैटिनभाषामें	जेनिपरसकोमोनिस्या । [illegible]

हाउबेर दो प्रकारका है, जिसमें प्रथम का फल मछलीके समान और दूसरा सरसों सदृश गन्धवाला होता है ।

हपुषागुणाः ।

हपुषा कटुका तिक्ता गुरूष्णा दीपनी मता ।
तुवरा ग्रहणीशूलगुल्मार्शोवातनाशिनी ॥
गुल्मोदरकफामाग्निमांद्यक्रिमिकफानिलान् ।
मलावष्टम्भकृच्चैव प्रदरञ्चैव नाशयेत् ॥

अर्थ-हाउबेर-चरपरा कड़वा भारी गरम, दीपन, कषैला तथा संग्रहणी, शूल, गुल्म, बवासीर वात, उदररोग, कफ आम, मन्दाग्नि, कृमि, पीनस, मलस्तम्भ और प्रदरको नाश करैहै ।

[illegible] ।

स्वल्पफलाप्युक्तगुणा हपुषा [illegible] ।

गुणाह्यस्या पूर्ववज्ज्ञेया सुज्ञैश्चिकित्सकै ॥ (नि०र०)

अर्थ-दूसरेप्रकारका हाऊवेर, मूत्रकृच्छ्र, प्लीहा, विष और कफको नष्ट करेहै। शेष गुण प्रथमकी समान जानने।

विडङ्गनामानि।

क्रिमिघ्नभस्मकमोघाविडङ्गकृमिकण्टकम्।
कैरालंकेवलंवेल्लंतण्डुलजित्रतण्डुला॥

अर्थ-क्रिमिघ्न, भस्मक, मोघा, विडङ्ग, कृमिकण्टक, कराल, केवल, वेल, तण्डुल, चित्रतण्डुला (विडङ्गा, अमोघा, तडुला, जन्तुनाशक, क्रिमिकटक, रसायन, पावक, तडुल, क्रिमिरिपु, जन्तुघ्न, चित्रतण्डुल, क्रिमिशत्रु, गर्दभ, कृमिहा, चिना, तण्डुला, तण्डुलीयका, वातारि, जन्तुघ्नी, मृगगामिनी, कगली, गहरा, कापाली, वरा, सुचित्रबीजा, वृषणाशन, जन्तुहन्त्री, कृष्णतन्दुला, शुद्रतंदुला, चित्रबीजा और घोपा)

संस्कृत भाषामें	विडङ्ग।
हिन्दीभाषामें	वायविडङ्ग।
बंग भाषामें	विडङ्ग
मराठी भाषामें	वावडिंग।
गुजराती भाषामें	वावडींग।
कर्णाटकी भाषामें	वायुविडङ्ग
तैलिङ्गी भाषामें	वायु विडघमु।
तामिली भाषामें	वायविल।
इंग्रेजीभाषामें	बेब्रेग। Babreng
लेटिन भाषामें	एँबेलिया रिबीस् Embrelia ribes
फारसी भाषामें	बरंगकावली।
अरबी भाषामें	बरंज कावली।

अस्य गुणाः।

विडङ्गकटुतिक्तोष्णरूक्षवह्निकरलघु।
गुल्माध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत्॥(मद०नि०)

अर्थ-वायविडङ्ग-चरपरी, कड़वी, गरम, रूखी, अग्निकारक, हल्की तथा गुल्म आध्मान, उदररोग, कफ, कृमि, वात और विबन्धको दूर करेहै।

अन्यच्च ।

विडङ्गकटुकपाकिलघुवातकफापहम् ।

तिक्तमीपद्विषहन्तिरूक्षोष्णक्रिमिनाशनम् ॥ (गौडदेशनि०)

अर्थ-वायविडंग-पाकमें चरपरी, हलकी, वात कफनाशक किंचित् क-ड़वी, विषनाशक, रूखी गरम और कृमिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

विडङ्गकटुकंतिक्तमुष्णरूक्षंलघुस्मृतम् ।

दीपनंवातकफघ्नमग्निमांद्यारुचीर्जयेत ॥

भ्रान्तिकृमिश्चशूलंचआध्मानमुदरंतथा ।

प्लीहाजीर्णश्वासकासौहृद्रोगंविषदोषकम् ॥

आमंमलावष्टम्भश्चमेदोमेहश्चनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-वायविडंग-चरपरी कड़वी, गरम रूखी, हलकी, जठराग्नि को दीपन करनेवाली तथा वात, कफ, मंदाग्नि, अरुचि भ्रान्ति, कृमि, शूल, अफारा, उदररोग, प्लीहा, अजीर्ण, श्वास, खांसी, हृद्रोग, विषविकार, आम, मलस्तम्भ, मेदरोग और प्रमेह रोगको दूर करे है । मात्रा २ मासेकी ।

तुम्बुरुनामानि ।

तुम्बुरु सौरभ सौम्यनज.सानुजोद्विजः ।

तीक्ष्णवल्कस्तीक्ष्णफलस्तीक्ष्णपत्रोमहामुनिः ॥

अर्थ-तुम्बरु, सौरभ, सौम्यनज, सानुज द्विज, तीक्ष्णवल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णपत्र, महामुनि, (सुगन्ध, सुगन्धि, वृन्तक, सौरभ अम्बष्ठ, गन्धाढ्य, सुगन्धिक)

अस्य गुणाः ।

तुम्बुरुर्मधुरस्तिक्तःकटूष्णःकफवातनुत ।

शूलगुल्मोदराध्मानक्रिमिघ्नोवह्निदीपन ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तुम्बुरु-मधुर कड़वा, चरपरा, गरम, कफ वात नाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, अफारा और कृमिका नाश करे है तथा अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

तुम्बुरुमथितंतिक्तंकटुपाकेपितलंकटु ।

रूक्षोष्णंदीपनतीक्ष्णरुच्यलघुविदाहिच ॥
वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताक्रिमीन् ।
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणिनाशयेत् ॥

अर्थ–तुम्बुरु– कडवा, पाकमें चरपरा, रूखा, गरम, दीपन, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हलका, विदाही तथा वात, कफ, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरोरोग, शरीरका भारीपन, कृमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

संस्कृतभाषामें	तुम्बुरु ।
हिन्दीभाषामें	तुम्बुरू ।
वंगभाषामें	नेपालिधने, तुम्बुरु ।
मराठीभाषामें	चिरफळ ।
कोंकणीभाषामें	तिरफळ ।

वंशलोचननामानि ।

तुगाक्षीरीशुभावांशीत्वक्क्षीरीवंशलोचना ।

अर्थ–तुगाक्षीरी, शुभा, वांशी, त्वक्क्षीरी, वंशलोचना, (त्वक्क्षीरा, वंशजा, क्षीरिका, तुगा, शुभ्रा, वंशक्षीरी, वैणवी, त्वक्सारा, कर्म्मरी, श्वेता, कर्पूररोचना, तुङ्गा, रोचनिका, पिङ्गा, वंशशर्करा, वंशरोचना, वंशकर्पूर)

संस्कृतभाषामें	वंशलोचना ।
हिन्दीभाषामें	वंशलोचन ।
वङ्गभाषामें	वंशलोचन, बाँशकावर ।
मराठीभाषामें	वंशलोचन ।
गुजरातीभाषामें	वंशलोचन, वंशकपूर ।
कर्णाटकीभाषामें	वंशलोचना ।
तैलिङ्गीभाषामें	वंशलोचना ।
इंग्रेजीभाषामें	थीसिलिस्यस् कन्क्रिशन् । Thesiliceous Concretion
लैटिन्भाषामें	बम्बुसाए रंडिनेस्या । Bambusatundinceoea
फारसीभाषामें	तबाशीर ।
अरबीभाषामें	तबाशीर ।

अपिच।

विडगकटुकंपाकेलघुवातकफापहम्।
तिक्तमीषद्विषहन्तिरूक्षोष्णकृमिनाशनम्। (गोडलनि०)

अर्थ-वायविडग-पाकमें चरपरी, हलकी, वात कफनाशक, किंचित् कटवी, विषनाशक, रूखी, गरम और कृमिको दूर करे है।

अन्यच्च।

विडगकटुकंतिक्तमुष्णंरुच्यलघुस्मृतम्।
दीपनंवातकफहृदग्निमांद्यारुचीर्जयेत्॥
भ्रान्तिकृमिंचशूलंचआध्मानमुदरंतथा।
प्लीहाजीर्णेश्वासकासोहृद्रोगविषदोषकम्॥
आमंमलावष्टम्भञ्चमेदोमेहञ्चनाशयेत्। (नि० र०)

अर्थ-वायविडग-चरपरी, कडवी, गरम, रुचिकारी, हलकी, जठराग्निको दीपन करनेवाली तथा वात, कफ, मंदाग्नि, अरुचि, भ्रान्ति, कृमि, शूल, अफारा, उदररोग, प्लीहा, अजीर्ण, श्वास, खाँसी, हृदयरोग, विषविकार, आम, मलस्तम्भ, मेदरोग और प्रमेह रोगको दूर करेहै। मात्रा २ मासेकी।

तुम्बुरुनामानि।

तुम्बुरुःसौरभःसौरवनजःसानुजोद्विजः।
तीक्ष्णवल्कस्तीक्ष्णफलस्तीक्ष्णपत्रोमहामुनिः॥

अर्थ-तुम्बरु, सौरभ, सौरवनज, सानुज, द्विज, तीक्ष्णवल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णपत्र, महामुनि, (स्फुटक, सुगन्धि, शूल्घ्न, सौरज, अन्धक, गन्धाढ्य, स्फुटितफल)

अस्य गुणाः।

तुम्बुरुर्मधुरस्तिक्तःकटुष्णःकफवातनुत्।
शूलगुल्मोदराध्मानकृमिघ्नोवह्निदीपनः॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तुम्बुरु-मधुर, कडवा, चरपरा, गरम, कफ वात नाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, अफारा और कृमिका नाश करे है तथा अग्निको दीपन करे है।

अन्यच्च।

तुम्बुरुप्रथितंतिक्तंकटुपाकेपितत्कटु।

रूक्षोष्णंदीपनतीक्ष्णंरुच्यलघुविदाहिच ॥
वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताक्रिमीन् ।
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणिनाशयेत् ॥

अर्थ—तुम्बुरु— कडवा, पाकमें चरपरा, रूखा, गरम, दीपन, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हलका, विदाही तथा वात, कफ, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरोरोग, शरीरका भारीपन, कृमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

संस्कृतभाषामें	तुम्बुरु ।
हिन्दीभाषामें	तुम्बुरू ।
वंगभाषामें	नेपालिधने, तुम्बुरु ।
मराठीभाषामें	चिरफळ ।
कोंकणभाषामें	तिरफळ ।

वंशलोचननामानि ।

तुगाक्षीरीशुभावांशीत्वक्क्षीरीवंशलोचना ।

अर्थ—तुगाक्षीरी, शुभा, वांशी, त्वक्क्षीरी, वंशलोचना, (त्वक्क्षीरा, वंशजा, क्षीरिका, तुगा, शुभ्रा, वंशक्षीरी, वैणवी, त्वक्सारा, कर्म्मरी, श्वेता, कर्पूररोचना, तुङ्गा, रोचनिका, पिङ्गा, वंशशर्करा, वंशरोचना, वंशकर्पूर)

संस्कृतभाषामें	वंशलोचना ।
हिन्दीभाषामें	वंशलोचन ।
वङ्गभाषामें	वंशलोचन, बाँशकावर ।
मराठीभाषामें	वंशलोचन ।
गुजरातीभाषामें	वंशलोचन, वंशकपूर ।
कर्णाटकीभाषामें	वंशलोचना ।
तैलिङ्गीभाषामें	वंशलोचना ।
इंग्रेजीभाषामें	थीसिलिस्यस् कन्क्रिशन् । Theasliceous Concretion
लैटिन्भाषामें	बम्बूसाए रुडिनेस्या । Bambusatur dinecea
फारसीभाषामें	तवाशीर ।
अरबीभाषामें	तवाशीर ।

अस्यागुणा ।

वंशजाबृंहणीवृष्याबल्यास्वाद्वीचशीतला ।
तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामला ॥
हरेत्कुष्ठव्रणपाण्डुकषायावातकृच्छ्रजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-वंशलोचन-पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, स्वादिष्ठ, शीतल तथा तृषा, खाँसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्त, पित्त, कामला, कुष्ठ और पाण्डुरोगको दूर करैहै, कषायरसयुक्त है, वात तथा मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करैहै ।

अपिच ।

वांशीस्वादुर्हिमारूक्षाशोषकासक्षयापहा ।
भ्रमश्वासहराचैवतवक्षीरश्चतद्गुणम् ॥ (शोडलनिघण्टु)

अर्थ-वंशलोचन-स्वादिष्ठ, शीतल, रूखा तथा शोष, खाँसी, क्षय, भ्रम और श्वासको दूर करैहै । तवक्षीरके भी इसीके समान गुण जानने ।

अन्यच्च ।

तुगारूक्षातुवरामधुरारक्तशुद्धिकृत् ।
शीताशुभावहाग्राहीवृष्याधातुविवर्धिनी ॥
बल्याक्षयश्वासकासरक्तदोषारुचिप्रणुत् ।
रक्तपित्तज्वरंकुष्ठकामलांपाण्डुरोगकम् ॥
दाहतृषांव्रणमूत्रकृच्छ्रदाहश्चनाशयेत् ।
वातघ्नीचैवविज्ञेयावैद्यशास्त्रविशारदे ॥(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-वंशलोचन-रूखा, कषेला, मधुर, रक्तको शुद्ध करनवाला, शीतल, शुभावह, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, बलकारक तथा क्षय, श्वास खाँसी, रुधिरविकार, अरुची, रक्तपित्त, ज्वर कुष्ठ, कामला, पाण्डुरोग, दाह, तृषा व्रण, मूत्रकृच्छ्र, दाह और वातका विनाश करैहै ।

तवक्षीरनामानि ।

तवक्षीरपय क्षीरयवजगवयोद्भवम् ।
अन्यत्रोधूमजचान्यत्पिष्टिकातण्डुलोद्भवम् ॥
अन्यचतालसम्भूततालक्षीरादिनामकम् ।

अर्थ–तवक्षीर, पयःक्षीर, यवज, गवयोद्भव, गोधूमज, पिष्टिका, तण्डुलोद्भव, तालसम्भूत, तालक्षीर ।



संस्कृतभाषामें	तवक्षीर ।	
हिन्दीभाषामें	तवाखीर ।	
बंगभाषामें	तवक्षीर ।	
मराठीभाषामें	तवकील ।	
गुजरातीभाषामें	तवखार ।	
इंग्रेजीभाषामें	आरारोट ।	Arrotwrot
कर्णाटकीभाषामें	तवक्षीर ।	
लैटिन् भाषामें	कर्क्यमाआंगस्टिफोलिया ।	Curcuma angustifolia
फारसीभाषामें	तवाशीर ।	

अस्य गुणाः ।

तवक्षीरन्तुमधुरंशिशिरंदाहपित्तनुत् ।
क्षयकासकफश्वासनाशनंचास्रदोषनुत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–तवाखीर–मधुर, शीतल, तथा दाह, पित्त,क्षय रुधिरविकार, खांसी, कफ और श्वासको दूर करेहै ।

अपिच ।

तवक्षीरन्तुमधुरंशुभ्रंशीतंसुगन्धिकम् ।
बल्यंवृष्यंपौष्टिकञ्चधातुवृद्धिकरंलघु ॥
सुस्निग्धंक्षयपित्तास्रपित्तदाहारुचीहरम् ।
कासश्वासज्वरतृष्णाकामलापाण्डुकुष्ठहम् ॥

मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रमेहव्रणकफापहम् ।
रक्तदोषहरत्वान्यजातस्वल्पगुणंमतम् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तवासीर-मधुर, शुभ्र, शीतल, सुगन्धी, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, हलकी, स्निग्ध, तथा क्षय, पित्त, रक्तपित्त, दाह, अरुचि, खासी, श्वास, ज्वर, तृषा, कामला, पाण्डु, कोढ, मूत्राश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, व्रण, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

तवासीर पाच प्रकारकी होतीहै, जौ, गेहूं, चावल, तालवृक्ष और वनगायके दूधकी, इसप्रकार तवासीर अनेक जातिकी होतीहै, सिंगाडेके चूनकी भी बनतीहै, । इन सबमे वनगायके दूधकी और जौकी उत्तम होतीहै ।

समुद्रफेननामानि ।

समुद्रफेन·फेनश्चडिण्डिरोऽब्धिकफस्तथा ।

अर्थ-समुद्रफेन, फेन, डिण्डिर, अब्धिकफ, (अर्णवजमल, अर्णवज, सिन्धुकफ, डिण्डिर, डिण्डीर, समुद्रकफ, जलहास, फेनक, उदधिमल, श्वेतधामा, लवणोदधिसम्भव, वार्द्धिफेन, पयोधिप्रसुफेन, अब्धिडिण्डीर, सामुद्र, शुष्काशुष्क, विल्याह, दधिफेन, सारमल)

संस्कृतभाषाम	समुद्रफेन ।
हिन्दीभाषाम	समुद्रफेन ।
बंगभाषामें	समुद्रफेना ।
मराठीभाषामें	समुद्रफेण ।
गुजरातीभाषाम	समदर फीण ।
कर्णाटकीभाषामें	कडल नागले ।
तैलिंगीभाषामें	सामुद्रनालिके ।
इंग्रेजीभाषामें	कटल फीशबोन । Cattlefishbone
लैटिन् भाषामें	सेपिया ऑफिसिनेलीस्त । Sepia officinal s
फारसीभाषामें	कफेदरिया
अरबीभाषामें	जुबदुल्बेहर ।

अस्य गुणा ।

समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखन·शीतलस्तथा ।
कषायोविषपित्तघ्न·कर्णरुक्कफहृल्लघु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–समुद्रफेन–नेत्रोंको हितकारी, लेखन, शीतल, कपेले तथा विष, पित्त, कर्णरोग और कफको दूर करेहै । और हलका है ।

अपिच ।

समुद्रफेनशिशिरकषायनेत्ररोगनुत् ।
कफकण्ठामयघ्नश्चरुचिकृत्कर्णरोगहृत् ॥ (राजनि०)

अर्थ–समुद्रफेन–शीतल, कपेला तथा नेत्ररोग, कफ, कण्ठरोग, और कर्णरोगका नाश करेहै और रुचिको उत्पन्न करेहै ।

अन्यच्च ।

अब्धिफेनोरुचिकरोलेखनस्तुवरोलघु ।
चक्षुष्य शीतलश्चैवपटलादिरुजाहर· ॥
सारश्चविषदोषघ्न·कर्णशूलहर·पर ।
कफश्चकण्ठरोगचपित्तचैवविनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ–समुद्रफेन–रुचिकारक, लेखन, कपेले, हल्के, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, पटलादिरोगनाशक, सारक, विषनाशक तथा कर्णशूल, कफ, कण्ठरोग और पित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

समुद्रफेनशिशिरतुवरवान्तिकृत्परम् ।

अर्थ–समुद्रफेन–शीतल, कपेला और अत्यन्त वान्तिकारक है । मात्रा २ मासेकी ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे हरीतक्यादिर्वर्गः ॥ २ ॥

अथ अष्टवर्गः ।



जीवकनामानि ।

जीवक क्ष्वेडह्रस्वाङ्गो दीर्घायु शृङ्गक·प्रियः ।

अर्थ–जीवक, क्ष्वेड, ह्रस्वाङ्ग, दीर्घायु, शृङ्गक, प्रिय, (शृङ्गकूर्च, शीर्ष, मधुरक, मधुर, कूर्चशीर्षक, चिरजीवक, जीवन, प्राणद, जीव्य, भृङ्गाह्व, चिरजीव, मधुर, मङ्गल्य, वृद्धिद, आयुष्मान्, जीवद, बलद)

अस्यगुणा ।

जीवकोमधुर शीतोरक्तपित्तानिलार्तिजित् ।

क्षयदाहज्वरान्हन्तिशुक्रश्लेष्मविवर्द्धन. ॥ (गणनिघण्टु)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह और ज्वरको दूर करेहै। शुक्र (वीर्य) और कफको बढावेहै।

अपिच।

जीवकोमधुर'शीत.शुक्रल.कफकृन्मत ।
रक्तपित्तहरोबल्योवातपित्तज्वरापह ॥
कृशताक्षयदाहानांरक्तदोषस्यनाशक । (नि० र०)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल, शुक्रजनक, कफकारक, रक्त पित्तनाशक, बलकारक तथा वात, पित्त, ज्वर, कृशता, क्षय, दाह और रुधिरविकारको दूर करे है।

अस्य स्वरूप यथा।

जीवन्तीसदृशै.पत्रैर्जीवकोगुल्मक.स्मृत ।
कण्टीक्षीरीतथानूपेभवतीत्यब्रवीन्मुनि ॥ (इतिकैयदेव)

अर्थ-जीवक औषधिका गुल्म अनूप देशमें उत्पन्न होताहै, पत्ते जीवन्तीके समान होते हैं, कांटे सूक्ष्म होते हैं और इसमें दूध होताहै।

अपिच।

जीवकोह्रस्वविटप कूर्चशीर्षश्वदक्षिणे ।
देशेसजायतेकन्दोनि सार सूक्ष्मपत्रक ॥(शिवनिघण्टु)

अर्थ-विटप छोटा है, इसका आकार कुचाके समान होता है, इस कन्दकी उत्पत्ति दक्षिण देशमें होती है। पत्ते सूक्ष्म सारहीन होते हैं। व्यवहार-कन्द।

ऋषभकनामानि।

ऋषभोदुर्द्धरोद्राक्षामातृकोवल्लुरोनृपः ॥

अर्थ-ऋषभ, दुर्द्धर, द्राक्षा, मातृक, बन्धुर, नृप, (ऋषभक, वृषभ, वृष, धीर, पृथिवीपति, गोपति, धीर, विषाणी, ककुद्मान, पुङ्गव, मोटी, श्रृङ्गी, धुर्य, भूपति, कामी, रूक्षप्रिय, उक्षा लाङ्गली, गौ, बन्धुर, बन्धूर, गौरव, वनवासी, ऋषिप्रिय, मधुर, शीतल, कामद)

अस्य गुणा।

ऋषभकोमधु शीतोगर्भसन्धानकारक. ।

शुक्रधातुकफानाञ्चकारकोबलदायक ॥
वृष्य पुष्टिकर प्रोक्त पित्तरक्तातिसारजित् ।
रक्तरुक्कृशतावातज्वरदाहक्षयापह ॥ (नि० र०)

अर्थ–ऋषभक–मधुर, शीतल, गर्भसन्धानकारक, शुक्रवर्द्धक, कफकारक, बलदायक, वीर्यजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, रक्तातिसार, रक्तरोग, कृशता, वातज्वर, दाह और क्षयका नाश करे है ।

जीवकर्षभकगुणा ।

जीवकर्षभकौबल्यौशीतौशुक्रकफप्रदौ ।
मधुरौपित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–जीवक और ऋषभक–बलकारक, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, मधुर, पित्त, दाह, रुधिरविकार, वायु और क्षयरोगको नाश करेहै ।

ऋषभोजीवकगुणोकामद सविशेषत । (शोढलनिघण्टु)

अर्थ–ऋषभक औषधीके गुण जीवकके़ही समान हैं । विशेषतः यह कामको उत्पन्न करे है ।

जीवकर्षभकस्वरूपम ।

जीवकर्षभकौज्ञेयौहिमाद्रिशिखरोद्भवौ ।
रसोनकन्दवत्कन्दौनि सारौसूक्ष्मपत्रकौ ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–जीवक और ऋषभक यह दोनों औषधि हिमालय पर्वतके शिखर पर उत्पन्न होतीहै, इनका कद लहसनके कदकी समान होताहै साररहित बारीक पत्ते होते है ।

जीवक कुदरीके आकार और ऋषभक वृषभ(बैल)के सिंगके आकार होताहै ।

मेदानामानि ।

मेदाधीरामणिच्छिद्रामधुराजीवनीरसा ।

अर्थ–मेदा, धीरा, मणिच्छिद्रा, मधुरा, जीवनी, रसा (मेदोद्भवा, श्रेष्ठा, विभावरी, वसा, शल्यपर्णिका, मेदसारा, स्नेहवती, मेदिनी, स्निग्धा, मेदा, द्रवा, साध्वी, शल्यदा, बहुरन्ध्रिका, मेदोवती, पुरुषदन्तिका, शल्यपर्णी छिद्रतुला, भव्या, जीवनिका, अध्वरा, स्वल्पपर्णी)

मेदागुणा ।

मेदातुमधुराशीतापित्तदाहार्त्तिकासनुत् ।

राजयक्ष्मज्वरहरावातदोषकरीचसा ॥(निघण्टुचूडामणि)

अर्थ-मेदा-मधुर, शीतल तथा पित्त, दाह, खांसी, राजयक्ष्मा और ज्वरको नाश करेंहै और वातको उत्पन्न करे है।

अपिच।

मेदातुमधुराशीतावृष्यास्वाद्वीगुरु स्मृता।
शुक्रवृद्धिकरीस्तन्यास्निग्धाचश्लेष्मलास्मृता॥
वातपित्तरक्तदोषक्षयञ्चैवविनाशयेत्।
ज्वरंदाहञ्चकासचनाशयेदितिकीर्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-मेदा-मधुर, शीतल, वीर्यजनक स्वादु, भारी, धातुवर्द्धक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, कफकारक तथा वात, पित्त, रक्तविकार, क्षय, ज्वर, दाह और खांसीको दूर करे है।

मेदालक्षणम्।

शुभ्रकन्दोनखच्छेद्योमेदधातुरिवस्रवेत्।
य समेदेतिविज्ञेयोजिज्ञासातत्परीक्षणे॥

अर्थ-जिसका सफेद कन्द हो और जिसमें नखसे छेदनसे मेदा धातुकी समान एकप्रकारका रस टपके, उसको मेदा जानना।

महामेदानामानि।

महामेदादेवमणिर्वसुच्छिद्राविपाण्डुरा।

अर्थ-महामेदा, देवमणी, वसुच्छिद्रा, विपाण्डुरा (जीवनी, पाण्डुरोगिणी, महामेद, सुरोद्भवा, देवेष्ट, सुरमेदा, त्रिव्या, देवगन्धा, वृक्षादा, त्रिदन्ती, देवतामणि, सोमा, देवेष्टा, सुरमेदा और मेदोद्भवा)

महामेदागुणाः।

महामेदाहिमारुच्याकफशुक्रप्रवृद्धिकृत्।
हन्तिदाहास्रपित्ताग्निक्षयवातज्वरञ्चसा॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-महामेदा-शीतल, रुचिकारक, कफ और शुक्रको बढानेवाली तथा दाह, रक्तपित्त, क्षय, वात और ज्वरका नाश करनेवाली है।

महामेदा-मेदागुणाः।

मेदायुग्मपरस्निग्धशुक्रमेद प्रवर्द्धनम्।
मधुररसपाकाभ्यांजीवनवातपित्तजित्॥

अर्थ-मेदा और महामेदा-स्निग्ध, शुक्रजनक, मेदोवर्द्धक, रस और पाकमें मधुर, जीवन तथा वातपित्तको दूर करे है।

महामेदालक्षणम् ।

महामेदाभिध·कन्दोमोरगादौप्रजायते ।
शुभ्रार्द्रकनिभ कन्दोलताजात सुपाण्डुर· ॥

अर्थ-महामेदा-नामवाला कन्द मोरगादि देशोंम उत्पन्न होताहै यह कन्द देखनेम सफेद अदरखकी समान होताहै, इसकी बेल चलती है और पाण्डुरगका होताहै।

ऋद्धिनामानि।

ऋद्धि·प्राणप्रियावृष्याप्राणदासम्पदाह्वया ।

अर्थ-ऋद्धि, प्राणप्रिया, वृष्या, प्राणदा, सम्पदाह्वया, (योग्य, सिद्धि, लक्ष्मी, प्राणप्रदा, जीवदात्री, सिद्धा, योग्या, चेतनीया, रथाङ्गी, मङ्गल्या, लोककान्ता, जीवश्रेष्ठा, यशस्या)

ऋध्या गुणा ।

ऋद्धिर्वल्यात्रिदोपघ्नीशुक्लामधुरागुरु ।
प्राणैश्वर्यकरीमूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी ॥ (भा०प्र)

अर्थ-ऋद्धि-बलकारक, त्रिदोपनाशक, शुक्रजनक, मधुर, भारी, प्राणप्रद, ऐश्वर्यजनक तथा मूर्च्छा और रक्तपित्तनाशक है।

अन्यच्च ।

ऋद्धिस्तुमधुरास्निग्धामेधाकृच्छीतलास्मृता ।
कफशुक्रवर्धयन्तीप्राणैश्वर्यबलप्रदा ॥
रक्तशुद्धिकरीरुच्यागुर्वीकुष्ठापहामता ।
क्रिमित्रिदोपमूर्च्छास्रपित्ततृट्क्षयपित्तहा ॥
वातरक्तरुजज्र्तिनाशयेदितिकीर्तिता । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-ऋद्धि-मधुर, स्निग्ध, मेधाजनक, शीतल, कफकारक, शुक्रवर्द्धक, प्राणदायक, ऐश्वयजनक, बलकारक, रक्तशोधक, रुचिकारक, भारी तथा कोढ, कृमिदोप, मूर्च्छा, रक्तपित्त, तृपा, क्षय, पित्त, वातरक्त और ज्वरका नाश करेहै।

वृद्धिनामानि ।

वृद्धिर्योधनिकाचैवप्रियासिद्धिःसुरोत्तमा ।

अर्थ-वृद्धि, योधनिका, प्रिया, सिद्धि, सुरोत्तमा, (योग्या, ऋद्धि, लक्ष्मी, पुष्टिदा, वृद्धिदात्री, मङ्गल्या, श्री, सम्पत्, आशी, जनेष्टा, मृदि, मुद, सुख, जीवभद्रा)

वृद्धिगुणाः ।

वृद्धिर्गर्भप्रदाशीताबृंहणीमधुरास्मृता ।
वृष्यापित्तास्रशमनीक्षतकासक्षयापहा ॥

अर्थ-वृद्धि-गर्भजनक, शीतल, पुष्टिकारक, मधुर, वीर्यवर्द्धक, रक्तपित्तकी शान्ति करनेवाली तथा उरःक्षत, खासी और क्षयरोगका नाश करैहै ।

ऋद्धिवृद्ध्युत्पत्तिलक्षणम् ।

ऋद्धिर्वृद्धिश्चकन्दौचभवतःकोशलेऽचले ।
श्वेतलोमान्वितःकन्दोलताजातःसरन्ध्रकः ॥
सएवऋद्धिर्वृद्धिश्चभेदमप्येतयोर्ब्रुवे ।
तूलग्रंथिसमाऋद्धिर्वामावर्तफलाचसा ॥
वृद्धिस्तुदक्षिणावर्त्तफलाप्रोक्तामहर्षिभिः ।

अर्थ-ऋद्धि और वृद्धि दोनों कन्द कोशलपर्वतमें उत्पन्न होतेहैं, यह दोनोंही कन्द लताजातिके होतेहैं और इनके ऊपर सफेद रोम होतेहैं और छिद्रयुक्त होतेहैं ।

ऋद्धि और वृद्धिमें केवल इतनाही अंतर है कि, ऋद्धि कपासकी गांठके समान आकृतिवाली वामभागमें आवर्तवाले फलयुक्त होतीहै, वृद्धि दक्षिण भागमें आवर्तमय फलसहित होतीहै ।

काकोलीनामानि ।

काकोलीशीतपाकीचपयस्यावायसोलिका ।

अर्थ-काकोली, शीतपाकी, पयस्या, वायसोलिका, (वायसोली धीरा, वीरा, क्षीरा, शुक्ला, मेदुरा, ध्वांक्षोली, ध्वांक्षिका स्वादुमांसी, वयस्था, जीवनी, मधुरा, शुक्लांगी, पयस्विनी, कायस्थिका, जीवनीया)

काकोलीगुणाः ।

काकोलीमधुरास्निग्धाक्षयपित्तानिलार्तिनुत् ।

रक्तदाहज्वरघ्नीचकफशुक्रविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ–काकोली–मधुर, स्निग्ध तथा क्षय, पित्त, वातकी पीडा, रक्तदोष, दाह और ज्वरको नाशकरे है, कफ और शुक्रको बढावेहै।

अन्यच्च।

काकोलीशीतलावृष्यामधुराशुक्रकारिणी।
तिक्ताकफकरीगुर्वीक्षयपित्ततृपाहरा ॥
रक्तदोपरक्तपित्तपित्तदाहज्वरविपम्।
वातपित्तरुजचैवनाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ–काकोली–शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, धातुवर्द्धक, कडवी, कफकारक, भारी तथा क्षय, पित्त, तृषा, रुधिरविकार, रक्तपित्त, दाह, ज्वर, विपवायु और पित्तरोगको दूर करैहै।

क्षीरकाकोलीनामानि।

पयस्याक्षीरकाकोलीमहावीरापयस्विनी।

अर्थ–पयस्या, क्षीरकाकोली, महावीरा, पयस्विनी (क्षीरकाकोलिका, क्षीरशुक्ला, सुकोली, अष्टमी, क्षीरविपाणिका, जीववल्ली, जीवशुक्ला, क्षीरा, क्षीरवल्ली, वयस्था, क्षीरमधुरा, दुग्धाढ्या)

क्षीरकाकोलीगुणाः।

क्षीरकाकोलिकावृष्यास्तन्यवृद्धिकरीलघु।
रसवीर्य्यविपाकेपुकाकोलीसदृशाचसा ॥ (रा०नि०)

अर्थ–क्षीरकाकोली–वीर्य्यजनक, स्तनोंमें दूधबढानेवाली, हलकी और रस, वीर्य्य और विपाकमे काकोलीकी समानहै।

द्विविधकाकोलीगुणाः।

काकोलीयुगलशीतशुक्लमधुरगुरु।
बृंहणवातदाहास्रपित्तशोपज्वरापहम् ॥

अर्थ–काकोली और क्षीरकाकोली–शीतल, वीर्यजनक,मधुर, भारी, पुष्टिकारक तथा वात, दाह, रक्तपित्त, शोप और ज्वरको दूरकरैहै।

अन्यच्च।

काकोलिकाद्वयवृष्यमवस्थास्थापनपरम्।
स्वादुपाकरसवल्यशीतवीर्य्यञ्चजीवनम् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-काकोली और क्षीरकाकोली-वृष्य, अवस्थास्थापक, पाक और रसमें स्वादिष्ठ, बलकारक, शीतवीर्य्य और जीवन है।

काकोलीक्षीरकाकोल्योरुत्पत्तिलक्षणम्।

जायते क्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले।
यत्रस्यात्क्षीरकाकोलीकाकोलीतत्रजायते॥
पीवरीसदृश कन्द क्षीरस्रवतिगन्धवान्।
सप्रोक्त·क्षीरकाकोलीकाकोलीलिङ्गमुच्यते॥
यथास्यात्क्षीरकाकोलीकाकोल्यपितथाभवेत्।
एषाकाचिद्भवेत्कृष्णाभेदोऽयमुभयोरपि॥

अर्थ-जिस स्थानमें महामेदा उत्पन्न होतीहै, उसीस्थानमें काकोली और क्षीरकाकोली उत्पन्न होतीहै। क्षीरकाकोलीका कन्द सतावरके समान होता है और इसमें एक प्रकारका सुगन्धि युक्त दूध निकलताहै। जैसी क्षीरकाकोली होतीहै, वैसेही काकोली होतीहै, इन दोनोंमें केवल इतनाही अंतरहै कि क्षीरकाकोलीकी अपेक्षा काकोली किंचित् कृष्णवर्ण होतीहै।

अष्टवर्गनामानि।

जीवकर्षभकौमेदेकाकोल्यौवृद्धिऋद्धिके।
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यै कथितश्चरकादिभि॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, वृद्धि, ऋद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली इन एकत्र मिलेहुए आठ द्रव्योंको अष्टवर्ग कहतेहैं।

अष्टवर्गगुणा।

अष्टवर्गोहिम स्वादुर्बृंहण शुक्रलोगुरु।
भग्नसन्धानकृद्बल्य शरीरकफवर्द्धन॥
वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत।

अर्थ-अष्टवर्ग-शीतल स्वादिष्ट, पुष्टिजनक, बलकारी, भारी और कफवर्द्धक है। वीर्यजनक, भारी, भग्नसन्धानकारक तथा वात, पित्त, रक्त तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षय रोगका नाश करे है।

राजामप्यष्टवर्गस्तुयतोऽयमतिदुर्लभ।
तस्मादस्यप्रतिनिधिंगृह्णीयात्तद्गुणभिषक्॥

अर्थ—यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी अत्यन्त दुर्लभ है इसकारण अष्टवर्गके वदले इन्हीके सदृश गुणवाली औषधी लेनी ।

एतस्य प्रतिनिधीनाह ।

मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वन्द्वेपिचासति ।
वरीविदार्यश्वगन्धावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् ।

अर्थ-मेदा और महामेदाके अभावमें सतावर लेनी, जीवक और ऋषभकके अभावमें विदारीकन्द लेना, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगन्ध लेनी, ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें वाराहीकन्द लेना चाहिये ।

जीवक १ ऋषभक, २ काकोली, ३ क्षीरकाकोली ४ मेदा ५ महामेदा६ ऋद्धि ७ और वृद्धि ८ यह आठ कन्द हैं । इनके नाम गुण, उत्पत्ति और लक्षण प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखेहैं, परन्तु उनका ठीक निश्चय नहीं होता कि, उनका कैसा रूप है, वह कैसी हैं सो 'भावमिश्र' के लिखे अनुसार हम प्रथमही लिख चुकेहैं कि "यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी दुर्लभहै, इनके नाम संस्कृतके अतिरिक्त और किसी भाषामें आजपर्यन्त नहीं सुने, किन्तु किसी-किसी ग्रन्थकारने बंगाला, कर्णाटकी, तैलङ्गी, तामिली और लैटिनभाषामें इनके नाम लिखे हैं, सो उन देशोंमें प्रचलित न होनेके कारण अशुद्धसे जान पडते हैं"।

मधुयष्टिनामानि ।



मधुयष्टी यष्टिमधुर्यष्ट्याह्वा क्लीतका स्मृता ।
मधुकयष्टिमधुकयष्टिका मधुयष्टिका ॥

अर्थ-मधुयष्टी, यष्टिमधु, यष्ट्याह्वा, क्लीतका, मधुक, यष्टिमधुक यष्टिका,

मधुयष्टिका, (यष्टिमधु, यष्टिमधुका, यष्टीक, यष्टिमधुका, यष्टयाह, यष्टयाह्न, क्लीतक, यष्टि, मधुस्रवा, मधुयष्टिक)
(क्लीतन, क्लीतनीयक, मधुक, मधुवल्ली, मधूली, मधुरसा, अतिरसा, मधुनाम, शोषापहा, सौम्या)

संस्कृतभाषामें	यष्टीमधु, जलयष्टी, स्थलयष्टी, यष्टिशाखिका।
हिन्दीभाषामें	मुलहटी, मीठीलकरी, मुलैठिका।
बंगभाषामें	यष्टीमधु।
मराठीभाषामें	ज्येष्ठमध।
गुजरातीभाषामें	जेठीमधनो मूल, जेटीमधनो शीरो।
कर्णाटकीभाषामें	यष्टिमधु, यष्टियष्टिमध।
तैलङ्गीभाषामें	यष्टीमधुकमु।
इंग्रेजीभाषामें	लिकरिसरूट। Liquorice root
	कामन् लिकरिस Liquorice Extract
लैटिन्भाषामें	ग्लिसिरिझारिझिया ग्लिसिरिझाग्लेब्रा। Glycyrrhiza_labra
फारसीभाषामें	वेसमेहेकमसु
अरबीभाषामें	असउमसूसमुकसारग्व्यसूम।

अस्य गुणाः।

मधुरयष्टिमधुकं किञ्चित्तिक्तञ्च शीतलम्।
चक्षुष्यपित्तहृद्रुच्यशोषतृष्णाव्रणापहम् ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-मुलैठी-मधुर, किंचित् कडवी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पित्तनाशक, रुचिकारी तथा शोष, तृषा और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

यष्टिर्हिमा गुरुः स्वाद्वी चक्षुष्या बलवर्णकृत्।
सुस्निग्धा शुक्रला केश्या स्वर्या पित्तानिलास्रजित्।
व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा।
तस्या रसक्रिया त्वाद्यैर्यष्टे मातुर्गुणाधिका ॥

अर्थ-मुलैठी-शीतल, भारी, मधुर, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाली, स्निग्ध, वीर्यजनक, केशोंको सुशोभित करनेवाली, स्वरको सुधारनेवाली तथा पित्त, वात, रक्त, घाव, सूजन, विष, वमन, तृषा,

ग्लानि और क्षयरोगका नाश करे है । इसका सत्त (रुब्बसूस) मीठाहै और मुलैठीकी अपेक्षा अधिक गुणवालाहै ।

अन्यच्च ।

मधुवल्लीद्विप्रकाराजलजाचस्थलोद्भवा ।
सावृष्यामधुरारुच्याबल्यागुर्व्वीचशीतला ॥
चक्षुष्यावर्णदास्वर्य्यास्निग्धाकेशहितामता ।
शुक्लारक्तपित्तघ्नीव्रणशुद्धिकरीमता ॥
शोथविषवातरक्तव्रणंवान्तिं तृषांतथा ।
ग्लानिंक्षयरक्तदोषरक्तपित्तञ्चपित्तकम् ॥
सद्योव्रणंवातपित्तंनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी मुलैठी-[एक जलमें उत्पन्न होनेवाली, दूसरी स्थलमें उत्पन्न होनेवाली] वीर्यवर्द्धक, मधुर, रुचिकारी, बलकारक, भारी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, वर्णको सुदर करनेवाली, स्वरको निर्मल करनेवाली, स्निग्ध, केशोंको हितकारी, शुक्रजनक, [पुष्टिकारक, गौल्य, मूत्रवर्द्धक] रक्तपित्तनाशक, व्रणको शुद्धि करनेवाली तथा सूजन, विष, वातरक्त, घाव, वमन, तृषा, ग्लानि, क्षई, रक्तविकार, रक्तपित्त, पित्त, सद्योव्रण और वातपित्तको दूर करेहै ।

जलयष्ट्यर्कगुणा ।

वार्यष्ट्यर्कोविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः । (लकेश)

अर्थ-जलमें उत्पन्न होनेवाली मुलैठीका अर्क-विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षई रोगको दूर करेहै ।

विवरण-मुलैठीका क्षुप होताहै, इसके पत्ते छोटे छोटे गोल होतेहैं इसमें छोटी और बारीक फली लगतीहै, फूल लाल आताहै, इसकी जड प्रयोगमें लीजातीहै । दूसरी बेलवाली मुलैठी होतीहै ।

कम्पिल्लनामानि ।

कम्पिल्ल कर्कशश्चन्द्रोरक्ताङ्गोरोचनोऽपिच ।

अर्थ-कम्पिल्ल, कर्कश, चन्द्र, रक्ताङ्ग, रोचन, (कम्पिलक, कंपिल, कम्पील, कम्पिल्य, कम्पिल्य, रेचनी, कम्पिल्लका, रेचना, पिकाद,

रोचनी, रक्तपत्रक कम्पीलक, रेची, रेचन, रञ्जक, लोहिताङ्ग, रक्तचूर्णक, रक्तफल, नदीवास, बहुपुष्प और बहुफल)

संस्कृतभाषामें	काम्पिल्ल, कम्पिल्लक ।
हिन्दीभाषामें	कबी (म्बी) ला ।
बंगभाषामें	कमलागुंडि, गुण्डारोचनी ।
मराठीभाषामें	कपिला ।
गुजरातीभाषामें	कपीलो ।
कर्णाटकीभाषामें	कम्पिल्लक ।
इंग्रेजीभाषामें	केमिला राट्लीरा । Kamila Rottlera
लेटिन्भाषामें	मल्लोटसफिलिप्पाइननिस (वृक्ष) Mellotusphilippinensis Rottlera tinctoria
फारसीभाषामें	कम्बिलाय ।
अरबीभाषामें	किम्बीर ।

अथ गुणाः

कम्पिल्लकोविरेचीस्यात्कटूष्णोव्रणनाशनः ।
कफकासार्तिहारीचजन्तुकृमिहरोलघुः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कबीला-दस्तावर चरपरा, गरम, व्रणनाशक तथा कफ, खांसी, जन्तु और कृमिको दूर करे है । और हलका है ।

अपिच ।

कम्पिल्ल कफपित्तास्त्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ।
हन्तिरेचीकटूष्णश्चमेहानाहविषाश्मनुत् ॥

अर्थ-कबीला-कफ, रक्तपित्त, कृमि, गुल्म, उदररोग और घावको दूर करे है, दस्त करानेवाला है चरपरा है, गरम है और आनाह, विष तथा पथरीका नाशकरे है ।

अपरञ्च ।

कम्पिल्लक सरश्चाग्निदीपकः कटुकः स्मृतः ।
व्रणान्यरोपणश्चोष्णोलघुर्भेदीकफापहः ॥
व्रणगुल्मोदराध्मानकामपित्तभ्रमेहहा ।
आनाहश्चविषश्चैवमूत्राश्मारिरुजापहः ॥

कृमिंचरक्तदोषञ्चनाशयेदितिकीर्तितः ।
तच्छाकशीतलतिक्तवातलंग्राहिदीपनम् ॥

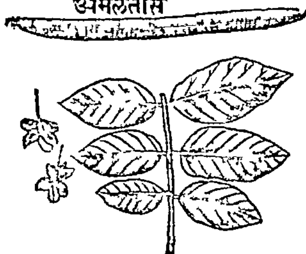
अर्थ–कबीला–सारक, अग्निदीपक, चरपरा, व्रणको भरनेवाला, गरम, हलका, दस्तावर, कफनाशक तथा व्रण, गुल्म, उदररोग, आध्मान, खासी, पित्तप्रमेह, आनाह, विष, मूत्राश्मरी, कृमि और रक्तविकारको नाश करेहै ।

इसके पत्तोंका शाक, शीतल, कडवा, वादी, मलरोधक और जठराग्निको दीपन करेहै ।

विवरण । इसके वृक्ष पर्वतोंपर अधिकतासे उत्पन्न होतेहैं पत्ते गूलरकी समानहैं, इसके फल छोटेबेरकी समान होतेहैं । उनके ऊपर लाललाल रजसी जमी होती है, पहाडी लोग उन फलोंको तोड टोकरियोंमें डाल पैरोसे मलतेहैं, जो रज छूटकर नीचे झड जाती है उसीको कबीला कहतेहैं । मात्रा ६ रत्तीकी ।

आरग्वधनामानि ।

अमलतास



आरग्वधोराजवृक्षोव्याधिघातोजठरनुत् ।

अर्थ–आरग्वध, राजवृक्ष, व्याधिघात, जठरनुत् (चक्रपरिव्याध, सम्यक्, चतुरंगुल, शम्पाक, आरेवत, कृतमाल, सुवर्णक, मन्थान, रोचन, दीर्घफल नृपद्रुम, प्रमेह, हिमपुष्प, राजतरु, कर्णद्रुम, महाकर्णिकार, ज्वरान्तक, अरु-ज, स्वर्णपुष्प, स्वर्णद्रु, कुष्ठसूदन, कर्णाभरणक, महाराजद्रुम, कर्णिकार स्व-र्णाङ्ग, दीर्घफल, स्वर्णभूषण, आरोग्यशिम्बी, शम्पाक, व्याधान्तक, आमदा,

स्वर्णस्थाली, रेचन कुण्डली, हेमपुष्प, शेफालिका, नक्तमाल, स्वर्णद्रु, सारफल, कुष्ठन, द्रुमोत्पल)

संस्कृतभाषामें	आरग्वध ।
हिन्दीभाषामें	अमलतास, घनबहेडा ।
बंगभाषामें	सोनालु, सोंदाल, एसाहनडी, बानरलाठी ।
मराठीभाषामें	बाहवा, बाव्याच्याशेंगातील गर ।
गुजरातीभाषामें	गरमालो । गरमालोना गोल ।
कर्णाटकीभाषामें	हेगाके ।
तैलङ्गीभाषामें	रेलकाया ।
इंग्रेजीभाषामें	पुडिंगपाईपट्री, पांजिङ्गकासिया, कासियापल्प Pudding pipe tree, Pungingcassia Cassia pulp
लैटिन्भाषामें	केश्याफिसचुला । Cassiafistula
अरबीभाषामें	ख्यारेशम्बर ।

आरग्वधगुणाः ।

आरग्वधोगुरुःस्वादु शीतलोमृदुरेचनः ।
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत् ॥

अर्थ-अमलतास-भारी, स्वादिष्ट, शीतल, मृदु, रेची तथा ज्वर, हृदयरोग, रक्तपित्त, वात, उदावर्त और शूलको निर्मूल करे है ।

तत्फलगुणाः ।

तत्फलंस्रंसनंरुच्यंकुष्ठपित्तकफापहम् ।
ज्वरेतत्सततंपथ्यंकोष्ठशुद्धिकरंपरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अमलतासकी फली-सारक, रुचिकारक, कुष्ठनाशक, पित्तनाशक, कफघ्न, ज्वरमें सर्वदा पथ्य है और कोठेको अतीव शोधे है ।

पत्रगुणाः ।

पत्रमारग्वधस्यापिकफमेदोविशोषणम् ।
ज्वरेचसततंपथ्यमलदोषसमन्वितेः ॥

अर्थ-अमलतासके पत्ते-कफ और मेदाशोषक हैं, ज्वरमें सदा पथ्य है और मलको ढीला करे है ।

पुष्पगुणाः ।

पुष्पाणिस्वादुशीतानितिक्तानिग्राहकाणिच ।

तुवराणिवातलानिकफपित्तहराणिच ॥

अर्थ–अमलतासके फूल–स्वादिष्ठ, शीतल, कड्वे, ग्राहक, कषेले, वातवर्द्धक फक, और पित्तको दूर करे हैं ।

एतन्मज्जागुणा ।

मज्जातुमधुरापाकेस्निग्धाचाग्निविवर्द्धिनी ।
रेचिकापित्तवातानांनाशिकासमुदाहृता ॥

अर्थ–अमलतासकी मज्जा–पाकमें मधुर, स्निग्ध, जठराग्निको वर्धक, रेचक तथा पित्त और वादीका नाश करे है

एतन्मूलगुणा ।

कृतमालस्यमूलन्तुदुग्धेनसहपाचयेत् ।
वातरक्तनिहत्याशुदद्रुमण्डलकान्यपि ॥

अर्थ–अमलतासकी जड–दूधमें औटाई हुई–वातरक्तनाशक, दाद और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है ।

कर्णिकारगुणा ।

कर्णिकारःसरस्तिक्त कटूष्ण कफशूलहा ।
उदरक्रिमिमेहघ्नोव्रणगुल्महरोनृप ॥ (नि०र०)

अर्थ–कर्णिकार–(दूसरे प्रकारका अमलतास) सारक, कडवा, चरपरा, गरम तथा कफ, शूल,उदररोग, क्रिमि,प्रमेह, व्रण और गुल्मका नाश करे है।

गजकर्ण, कुष्ठ, दद्रु, खुजली, विचर्चिकादि रोगोंपर अमलतासके पत्तोंको पीस उसमें काजी मिलाकर लेप करते हैं ।

गण्डमाला रोगमें अमलतासकी जडको चावलाके पानीमें पीसकर नास (नाकके द्वारा पीना) देते हैं ।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होता है, पत्ते लाल चदनके पत्तोंकी समान होते हैं फूल पीले, तरवट आमलेकी सदृश होते हैं । फली गोल और १–१॥ हाथ लम्बी होती है, उसमेंसे गूदा निकलताहै, उस गूदेका जुलाव लगताहै । व्यवहार–गूदा, पत्ते, फूल, मूल । मात्रा गूदेकी ३ मासेसे लेकर १॥ तोलेतक है ।

फहगानामानि ।

तिक्ताकाण्डेरुहारिष्टाचक्राङ्गीशकुलादनी ।

तिक्तरोहणिकाचैवकटुकाकटुरोहिणी ॥

अर्थ-तिक्ता-काण्डरुहा, अरिष्टा, चक्राङ्गी, शकुलादनी, तिक्तरोहणिका, कटुका, कटुरोहिणी, (जननी, तिक्ता, तिक्तरोहिणी, मत्स्यपित्ता, नकुलादनी, शतपर्वा, द्विजाङ्गी, मलभेदिनी, अशोकरोहिणी, कृष्णा, कृष्णभेदा, कृष्णभेदी, महौषधी, कट्वी, अञ्जनी, कटु, केदारकटुका, वामघ्नी, धन्वन्तरिग्रंथा, वान्तिदा, कटम्बरा, कटुम्भरा, अशोका, काण्डरुहा, तिक्तिका, चित्राङ्गी, मत्स्यशकला)



संस्कृतभाषामें	कटुका ।
हिन्दीभाषामें	कुटकी ।
बंगभाषामें	कटकी ।
मराठीभाषामें	कुटकी, काळी कुटकी ।
गुजरातीभाषामें	कडु ।
कर्णाटकीभाषामें	केदार कटकी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कटुकरोहिणी, नल्लकोलकर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाक्हेलीबोरलीग्ज । Black Hellebore
लेटिन्भाषामें	हेलोबोरी नैगरी दिग्स पिक्रोरीजा कुर्रोआ । Picrorhiza Kurroa
फार्सीभाषामें	खर्बक स्याह ।
आरबीभाषामें	खर्बक अस्वद खर्बक अस्पद ।

अस्या गुणाः ।

कटीतुकटुकापाकेतिक्तारूक्षाहिमालघुः ।
भेदिनीदीपनीहृद्याकफपित्तज्वरापहा ॥
प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठक्रिमिप्रणुत् । (भा प्र.)

अर्थ-कुटकी-पाकमें कटु, तिक्त, रूक्ष, शीतल, हलकी, भेदन, दीपन, हृदयको हितकारी तथा कफ, पित्त, ज्वर, प्रमेह, श्वास, कास, रुधिरदोष, दाह, कोढ और क्रिमिका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

कटुकीशीतलातिक्ताकटीचाग्निप्रदीपनी ।
भेदिकाचसरारूक्षालघ्वीरक्तरुजापहा ॥
शीतपित्तश्वासकफदाहारुचिज्वराञ्जयेत् ।
प्रमेहकुष्ठविषमज्वरकासक्षयापहा ॥
कामलाविषहृद्रोगनाशिनीतिप्रकाशिता ।

अर्थ-कुटकी-शीतल, तीखी, कडवी, अग्निदीपक, भेदक, (दस्तावर) सारक, रूखी, हलकी तथा रक्तरोग, शीतपित्त, श्वास, कफ, दाह, अरुचि, ज्वर, प्रमेह, कोढ, विषमज्वर, खाँसी, क्षई, कामला, विष और हृदयरोगको दूर करेहै ।

अस्याः शोधनविधिः ।

कटुकीमुष्णदुग्धेनप्रक्षाल्यग्राहयेदपि ।

अर्थ-कुटकीको गरम दूधसे धोकर औषधिके काममें लावे ।

विवरण । बडी जडवाली गुल्म है, आश्रय छोटा, पत्ते अण्डेके समान आकारवाले, जिनके नीचेका भाग बडा और बगल खण्डित होतेहैं, फूल नीला और गुच्छोंमें होतेहैं, हिमालयके निकट पर्वतोंके जंगलमें उत्पन्न होतेहैं । कुटकी कृष्णा और पीत इनभेदोंसे दो प्रकारकीहै इनमें पीले रंगकी कुटकी नेत्ररोगोंको दूर करतीहै । व्यवहार मूल । मात्रा ६ रत्तीसे लेकर ७ मासेतक है ।

चिरतिक्तनामानि ।

चिरतिक्तश्चभूनिम्बः किराततामसेनक ।

अर्थ-चिरतिक्त, भूनिम्ब, रिगत, रामसेनक (अनार्यतिक्त, किरातक, चिरातिक्त, तिक्तक, सुतिक्तक चिराटिका, कटुतिक्ता, कैरात, खाण्डीतिक्तक, हैम, काण्डतिक्त)

नेपालनिम्बनामानि।

नेपालनिम्बोनैपालस्तृणनिम्बोज्वरान्तकः ।
नाडीतिक्तोर्धतिक्तश्चनिद्रारिःसन्निपातहा ॥

अर्थ-नेपालनिम्ब, नैपाल, तृणनिम्ब, ज्वरान्तक, नाडीतिक्त, अर्धतिक्त, निद्रारि, सन्निपातहा।

संस्कृतभाषामें	चिरतिक्त।
हिन्दीभाषामें	चिरायता।
बंगभाषामें	चिरता, चिराता, नेपाले निम्ब।
मराठीभाषामें	किराईत, फाडेकिराईत, फुलकिराईत,
गुजरातीभाषामें	करियातु।
कर्णाटकीभाषामें	नेलबदवु।
तैलङ्गीभाषामें	नेलावेमु।
लैटिन् भाषामें	स्विर्टियाचिरेटा। Sovertia Chirata Aphelia Chirata
इंग्रेजीभाषामें	चिरेटा।
फारसीभाषामें	नैनिहाद
अरबीभाषामें	कस्बुस्, सारिंग।

भूनिम्बगुणाः।

भूनिम्बोवातलस्तिक्तोव्रणरोपणकारकः ॥
सरःशीतःपच्यकरोलघूरूक्षस्तृषापहः ।
कफपित्तज्वरकुष्ठकण्डूशोथकृमींस्तथा ॥
सन्निपातज्वरदाहशूलमेहव्रणंतथा ।
श्वासकासंचमदंशोपचाशोरुर्निजयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-चिरायता-वातकारक, कडवा, व्रणरोपक, दस्तावर, शीतल, पाचक, हलका, रूखा तथा तृषा, कफ पित्त, ज्वर, कोढ़, खुजली, सूजन, कृमि, सन्निपातज्वर, दाह, शूल, प्रमेह, व्रण श्वास खांसी मद, शोष बवासीर और अरुचिको दूर करै है।

नेपालनिम्बगुणाः ।

नेपालतिक्तकिञ्चिदुष्णयोगवहलघु ।
तिक्तपित्तकफशोथंरक्तरुक्तृड्ज्वराञ्जयेत् ॥

अर्थ-नेपालीनीम-किंचित् गरम, योगवाही, हलका, कडवा, तथा पित्त, कफ, सूजन, रुधिररोग, पियास और ज्वरका नाश करे है । शेष गुण चिरायतेके समान जानने ।

अपिच ।

नैपालःसन्निपातारिर्ज्वरनिद्रापहस्तथा । (शो० नि०)

अर्थ-नेपालीनीम-सन्निपात, ज्वर और निद्राको दूरकरे है । चिरायतेका क्षुप होताहै । मात्रा २ मासेकी ।

कुटजनामानि ।

कुटजःशक्रपर्य्यायोवत्सकोगिरिमल्लिका ॥

अर्थ-कुटज, शक्रपर्य्याय, वत्सक, गिरिमल्लिका, (शक्र, वरतिक्त, पाण्डुर, कटुक, कुटक, शक्राशन, कौटज, तिक्तक, रक्तनाशक, वृक्षक, शक्राह्वय, कूटज, काही, कालिङ्ग, मल्लिकापुष्प प्रावृष्य, शक्रपादप, यवफल, सग्राही, पाण्डुरद्रुम, प्रावृषेण्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, कौट, शक्रशाखी, इन्द्रयवफल)

संस्कृतभाषामें	कुटज, श्वेतकुटज ।
हिन्दीभाषामें	कुडा, कौरेया ।
बंगभाषामें	कुडचिगाछ, कुटराज ।
मराठीभाषामें	काळा कुडा, सफेद कुडा ।
गुजरातीभाषामें	कडी-दुधला ।
कर्णाटकीभाषामें	कोडसिगेयमरनु ।
तैलङ्गीभाषामें	अन्तुड्डुचेट्टु अंगिशचेट्टु, तुम्भिकचेट्टु, अकेलु, चराल कुप्र ।
औत्क०भाषामें	कुडिया ।
इंग्रेजीभाषामें	ओवललिवडरोसबे । Ovalleaved Rose Bay
लैटिन् भाषामें	राइटियाएण्टिडिसेन्टेरिका । Wrightia antidysenterica
अरबीभाषामें	तिवाज ।

कुटजगुणाः ।

कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो हिमः ।
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुडा-कटु, रूक्ष, दीपन, कषाय, शीतल तथा बवासीर, अतिसार, रक्त, पित्त, कफ, तृषा, आम और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अपिच ।

कुटजः कटुकः प्लीहकफपित्तातिसारनुत् ॥ (शो० नी०)

अर्थ-कुडा-कटु, प्लीहा, कफ, पित्त और अतिसारका नाशकरे है ।

अन्यच्च ।

कुटजः कटुतिक्तोष्णः कषायश्चातिसारजित् ।
तत्रासितश्च पित्तास्रत्वग्दोषार्शोनिकृन्तनः ॥(रा० नि०)

अर्थ-कुडा-कटु, तिक्त, गरम, कषाय और अतिसारनाशक है, और काला कुडा पित्त, त्वचाके दोष और बवासीरको दूर करे है ।

श्वेतकुटजगुणाः ।

श्वेतस्तु कुटजस्तिक्तः कटुश्चोष्णोऽग्निदीपकः ।
पाचकस्तुवरो रूक्षो ग्राहको रक्तदोषहा ॥
कुष्ठातिसारपित्तार्शःकफतृट्कृमिहा मतः ।
ज्वरचामश्च दाहच नाशयेदिति कीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद कुडा-कडवा, तीखा, गरम, अग्निसंदीपक, पाचक, कसैला, रूखा, मलरोधक तथा रक्तविकार, कोढ, अतिसार, पित्त, बवासीर, कफ, तृषा, कृमि, ज्वर, आम और दाहको दूर करे है ।

अथ पुष्पगुणाः ।

पुष्पन्तु वत्सकस्योक्तं तुवरं चाग्निदीपकम् ।
तिक्तं शीतं वातलं च लघु पित्तातिसारनुत् ॥
रक्तदोषकफपित्तकुष्ठघ्नं नातिसारकम् ।
कृमींश्चैव हरेद्देतदुक्तं पूर्वैश्च सूरिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-कुडेके फूल-वातादिको शोधन करनेवाले, कसैले, दीपन, वातकारक, हलके तथा पित्तातिसार रक्तविकार, कफ, पित्त, कुष्ठ, और अतिसार और कृमिको नाश करे है ।

अस्य शिम्बीशाकगुणाः ।

तस्यशिम्बीभवं शाकंव्यजनंचामवातजित् ।
रुच्यकफघ्नंरक्तातीसारकुष्टकृमीञ्जयेत् ॥

अर्थ–कुडेकी फलियोंका शाक–आमवातनाशक, रुचिकारक तथा रक्तातिसार, कोढ और कृमिको दूर करे है ।

त्वग्गुणाः ।

कुटजस्यत्वचा तिक्तासर्वातीसारनाशिनी ।

अर्थ–कुडेकी छाल–कडवी और सर्वातिसारनाशक है ।

विवरण । वडा वृक्ष होताहै, पत्ते रामफलके पत्तोंकी समान घडे घडे होते हैं, फूल सफेद होताहै, इसमें फली होती हैं ।

सफेद कुडेके दूधमें विष होताहै, उस दूधको खानेसे मनुष्य मरजाते हैं ।

इन्द्रयवनामानि ।

उक्तकुटजवीजन्तुयवमिद्रयवतथा ।
कलिंगचापिकालिंगतथा भद्रयवस्मृतम् ॥

अर्थ–कुटजवीज, यव, इन्द्रयव, कलिंग, कालिंग, भद्रयव, (कलिंगक, शक्राह्व, शक्रवीज, वत्सक, वत्सकवीज, कलिंगवीज, कुटज, भद्रज)

संस्कृतभाषामें	इन्द्रयव ।
हिन्दीभाषामें	इन्द्रजौ ।
गुजरातीभाषामें	इदरजव ।
वंगलेमें	इन्द्रयव ।
मराठीभाषामें	कुडयाचें वीज, इन्द्रजव ।
कर्णाटकीभाषामें	कोडसिगेय वीज ।
फारसीभाषामें	जवान कुञ्जिस्क ।
अरवीभाषामें	लेमानुत् असाकीर ।
लैटिन्भाषामें	होलरहेनाएंटिडिसेंटेरिका । Holarrhena antidysenterica

अस्यगुणाः ।

इन्द्रयवाकटुतिक्ताशीताकफवातरक्तपित्तहरा ।
दाहातिसारशमनीनानात्वग्दोषशूलमूलघ्नी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-इन्द्रजौ, कटु, तिक्त, शीतल तथा कफ, वात, रक्तपित्त, दाह, अतिसार, नाना प्रकारके त्वचाविकार और शूलको निर्मूल करै है।

अपिच।

वत्सकस्यतुबीजंचकटुतिक्तञ्चशीतलम्।
ग्राहकंपाचनञ्चोष्णचाग्निदीप्तिकरपरम्॥
वातरक्तकफंदाहंपित्तनानाज्वरांस्तथा।
शूलमर्शश्चातिसारत्रिदोषगुदकीलकम्॥
कुष्ठकृमिविसर्पामरक्तार्शोस्रुग्भ्रमान्।
श्रमंचैवनिहन्त्याशुकथितमुनिपुङ्गवैः॥ (नि०र०)

अर्थ-इन्द्रजौ-तीखे, कडवे, शीतल, मलरोधक, पाचक, गरम, अग्निदीपक तथा वातरक्त, कफ, दाह, पित्तज अनेक प्रकारके ज्वर, शूल, बवासीर, अतिसार, त्रिदोष, गुदकील, कोढ, कृमि, विसर्प, आम, रक्तार्श, रक्तरोग, भ्रम और श्रमको दूर करैहै।

विवरण। कुडेके बीजोंको इन्द्रजौ कहतेहैं। इन्द्रजौ दोप्रकारके होतेहैं, एक मीठे दूसरे कडवे, इनमें सफेद कुडेके इन्द्रजौ मीठे होतेहैं और काले कुडेके इन्द्रजौ कडवे होतेहैं। मात्रा ३ मासेकी।

मदनफलनामानि।



मदनश्छर्द्दनः पिण्डीनटः पिण्डीतकस्तथा।
करहाटो मरुवकः शल्यको विषपुष्पकः॥

अर्थ-मदन, छर्द्दन, पिण्डीनट, पिण्डीतक, करहाट, मरुनक, शल्यक, विषपुष्पक, (पिचुक, मुचुकुन्द, कण्टकी, करहाटक, शल्य, कण्ठ, रामच्छर्द्दनक, रामाच्छर्द्दनक, कैटर्य्य, धाराफल, तगर, राठ, गाल्ल, ग्रन्थिफल, घण्टाल, वस्तिशोधन)

संस्कृतभाषामें	मदन ।
हिन्दीभाषामें	मैनफल, करहर ।
बंगभाषामें	मयनाकाटा ।
मराठीभाषामें	गेळ ।
गुजरातीभाषामें	ढोल ।
कर्णाटकीभाषामें	बोनगरे रणय बोनगरे एड्डु ।
तैलिङ्गीभाषामें	वसन्तकडिमिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	मड्डुकक्करय ।
ओत्क०	पातर ।
नेपालीभाषामें	मदल ।
प०	मिण्डकोल्ल ।
दक्षिणीभाषामें	मेणाहल ।
इंग्रेजीभाषामें	बुशीगार्डिनीया । Bushy gardenia
लेटिन्भाषामें	रेन्डियाडुमेटोरम् । Randiadumetorum
अरबीभाषामें	जोजुल्के ।

अस्य गुणा ।

मदनोमधुरस्तिक्तोवीर्योष्णोलेखनोलघु ।
वान्तिकृद्विद्रधिहरःप्रतिश्यायव्रणान्तकः ॥
रूक्षःकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः । (भावप्रकाश)

अर्थ-मैनफल-मधुर, कडवा, उष्णवीर्य्य, लेखन, हलका, वमनकारक, विद्रधिहारक, प्रतिश्याय (जुकाम) और व्रणविनाशक है, रूखा तथा कफ, आनाह, सूजन, गुल्म और घावको दूर करे है ।

अपिच ।

राठोवमनकृद्रदीपकामाशयशुद्धिकृत् ।
त्वग्दोषमारुतश्लेष्मविषप्रशमनः स्मृतः ॥ (शो०नि०)

अर्थ-मैनफल-वमनकारक, भेदक, पक्वाशय और आमाशयशोधक तथा त्वचाके रोग, वात, कफ और विषविकारको दूर करेहै ।

मदिन ।

मदनःकटुकस्तिक्तोमधुश्चोष्णश्चलेखनः ।
लघूरूक्षोवान्तिकारीवस्तिकर्म्मणिचोत्तमः ॥
कफंवातंव्रणंशोथमानाहविद्रधीस्तथा ।
गुल्मंकुष्ठप्रतिश्यायविषचार्शोज्वरंजयेत् ॥

अर्थ-मैनफल-कटुरसयुक्त, तिक्तरसान्वित, मधुर, उष्ण, लेखन, रूक्ष, वमनकारक, बस्तिकर्ममें उत्तम तथा कफ, वात, घाव, सूजन, आनाह, विद्रधि, गुल्म, प्रतिश्याय, (जुकाम) विष, बवासीर और ज्वरको हरे है ।

कृष्णःश्वेतश्चमदनःशीतलोमधुरःस्मृतः ।
कटुस्तिक्तश्चतुवरोवान्तिकृत्कफनाशनः ॥
पक्वामाशयशुद्धेश्चकारकःपित्तनाशकः ।
हृद्रोगनाशकश्चैनपूर्वस्मादुत्तमोगुणैः ॥ (नि० र०)

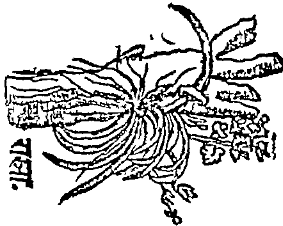
अर्थ-दूसरे प्रकारके दोनों मैनफल-(एक काले रंगका दूसरा सफेद रंगका) शीतल, मधुर, कटु, तिक्त कषैले, वान्तिकारक, कफनाशक, पक्वाशय और आमाशयको शोधनेवाले तथा पित्त और हृदयरोगका नाश करनेवाले है। यह पहले मैनफलकी अपेक्षा अधिक गुणवाले है ।

विवरण । मैनफलका वृक्ष होताहै, फिरे त्रिगचिरोंका समान होते है, फूल सफेद पाच पखडीके गुच्छेक पीलापन लिए होतेहै, फल अखरोटके आकार होते है, यह वमन करनेमें एकही औषधी है ।

रास्नानामानि ।

नाकुलीसुरसारास्नासुर्पगन्धापलङ्कपा ।

अर्थ-नाकुली, सुरसा, रास्ना, सर्पगन्धा, पलङ्कषा (द्रोणगन्धा, सुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजङ्गाक्षी छत्राकी, सुवहा, रसा, श्रेयसी, रासना, पत्ररसा, रसा सुगन्धिमूला रसाढ्या, अतिरसा, युक्तरसा, युक्तरसा)



संस्कृतभाषामें	रास्ना ।
हिन्दीभाषामें	रासन, रायसन, रहसनी, रास्ना ।
वंगभाषामें	रास्ना ।
मराठीभाषामें	नावळीच्या मुळ्या ।
गुजरातीभाषामें	रासना
कर्णाटकीभाषामें	रसनाकेदारे प्रसिद्धा ।
तैलिंगीभाषामें	रासनापुडका, किरम्मिचक्क अन्तर दामर ।
लैटिन्भाषामें	वेंडा रोक्स वुर्धि आई । Vanda roxburghie
इंग्रेजीभाषामें	प्लुचियालेन्सिओलेटा । Pluchialanceolata
फारसीभाषामें	रासुन ।
अरबीभाषामें	जजबील शामी ।

रास्नाभेदाः ।

रास्नातुत्रिविधाप्रोक्तामूलपत्रतृणतथा ।
ज्ञेयोमूलदलौश्रेष्ठौतृणरास्नातुमध्यमा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-रास्ना-जड, पत्ते और तृण इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है । तिनमें जड रास्ना और पत्र रास्ना श्रेष्ठ होती है और तृण रास्ना अधम गिनी जाती है ।

रास्नागुणाः ।

रास्नाऽऽमपाचनीतिक्तागुरूष्णाकफवातजित् ।
शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ॥
कासज्वरविषाशीतिवातिकामयहिध्मजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-रास्ना-आमपाचक, कडवी, भारी, गरम, कफ-वातनाशक, तथा सूजन, रक्तवात, वातशूल, उदररोग, खासी, ज्वर, विषविकार, ८० अस्सी प्रकारके वातरोग और हिध्मको दूर करे है।

अपिच।

रास्नोष्णावातशोथामवातवातामयाञ्जयेत् ॥ (शोढलनि०)

अर्थ-रास्ना-गरम है, वात, सूजन, आमवात और वातरोगोंको नष्ट करै है।

अपरञ्च।

रास्नातिक्तागुरुश्चोष्णापाचन्यामविनाशिनी।
वातरक्तविषश्वासकासचविषमज्वरम् ॥
शोथहिक्काचामवातकफशूलविनाशयेत्।
ज्वरकम्पचोदरञ्चसर्वान्वातांश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-रास्ना-कडवी, भारी, गरम, पाचक, आमनाशक तथा वात, रक्त, विष, श्वास, खासी, विषमज्वर, सूजन, हिचकी, आमवात, कफ, शूल, ज्वर, कम्प, उदररोग और सर्व प्रकारके वातका विनाश करे है।

विवरण। बङ्गदेशके प्राचीन आम्रादि वृक्षोंपर उत्पन्न होती है, इसकी जड वृक्षकी छालके ऊपर जमीरहती है, फूल पीला बेंगनी छींटदार होता है, जड सहित रास्नाका क्षुप लायकर सुन्दरी काष्ठके ऊपर नारियलकी रस्सीसे बांधकर रखकर पानी दे, वृक्ष बढेगा और फूलेगा। व्यवहार-जड। मात्रा २ तोलेकी।

नाकुलीनामानि।

नाकुलीसुरसानागसुगन्धागन्धनाकुली।
नकुलेष्टाभुजङ्गाक्षीसर्पाङ्गीविषनाशिनी ॥

अर्थ-नाकुली, सुरसा, नागसुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, सर्पांगी, विषनाशिनी, (सरगन्धा सुगन्धा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नागगन्धा, अहिभुक्, सुरसा, सर्पादनी, व्यालगन्धा)

गन्धनाकुलीनामानि।

अन्यामहासुगन्धाचसुवहागन्धनाकुली।
सर्पाक्षीफणिहन्त्रीचनकुलाख्याहिभुक्चसा ॥
विषमर्दनिकानाहिमर्दनीविषमर्दनी।
महाहिगन्धाहिलताजयन्याहादशाहया ॥

अर्थ-महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहत्री, नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता)

संस्कृतभाषामें	नाकुली, गन्धनाकुली।
हिन्दीभाषामें	नाई, नाकुलीकन्द, नकुलकन्द, हरकाईचन्दा।
बंगभाषामें	नाकुली, सुगन्धनाकुली।
मराठीभाषामें	मुंगुसवेल, नाई सापसद।
कर्णाटकीमें	विषमुंगरीद्वय।
तैलिङ्गीभाषामें	पन्नपुचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	रोवोलफिया सर्वेटिना। Rauwolfia Serpentina
फारसीभाषामें	छोटा चादा।

नाकुलीगुणा।

नाकुलीकटुकातिक्तातथोष्णाकृमिरोगहृत्।
वृश्चिकोन्दुरसर्पादिविषनाशयतिक्षणात्॥
तुवराचत्रिदोषघ्नीकन्देप्येतेगुणाःस्मृताः। (ग०नि०)

अर्थ-नाकुली-चरपरी, कडवी, गरम, कृमिरोगनाशक, विच्छू, मूषा और सर्पादिके विषको तत्क्षण दूर करनेवाली, कषेली और त्रिदोषनाशक है, इसके कन्दके गुणभी इसीके समान जानने।

अन्यच्च।

नाकुलीतुवरातिक्ताकटुकोष्णाविनाशयेत्॥
भोगिलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान्। (भा०प्र०)

अर्थ-नाकुली, कषेली, कडवी, चरपरी, गरम तथा साँप, मकरी, विच्छू और मूषा इनका विष, ज्वर, कृमि और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

नाकुलीयुगलतिक्तकटूष्णचत्रिदोषनुत्।
अनेकविषविध्वंसिकिञ्चिच्छ्रेष्ठद्वितीयकम्॥(रा०नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी नाकुली-(नाकुली, सुगन्धनाकुली) कडवी, चरपरी, गरम, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषविनाशक और गन्धनाकुली नाकुलीकी अपेक्षा किंचित् श्रेष्ठ है।

नाकुलीकी बेल जंगलमें होती है, पत्ते पानकी समान होते हैं, नीचे कन्द होता है।

सरस्वती, अमृता, कगुनी, सुवर्णलतिका, अग्निभाषा, दुर्मेदा, स्वर्णा, किंशुका, आवेगा, काकाण्डी, त्रिपर्णी, पीतथा)

महाज्योतिष्मतीनामानि।



महाज्योतिष्मतीतीक्ष्णाकङ्गुनीवृहत्कगुनी।

अर्थ-महाज्योतिष्मती, तीक्ष्णा, कगुनी, वृहत्कगुनी (तेजोवती, मदगन्धा, कनकप्रभा, सुवर्णकङ्गुनी, स्वर्णा, अग्निर्दीप्ता, सेनरसिनी, सुरलता, अग्निकन्या, अग्निगर्भा, शैलसुता, सुतैला, सुवेगा, वायसी, तीव्रा, काकाण्डी, पारसादनी, गीर्लता, श्रीलता, सौम्या, ब्राह्मी, स्वर्णाङ्गुका, भागवतवर्द्धी, पीता, पीततैला, यशस्विनी, मेध्या, मेधावती, धीरा)

संस्कृतभाषामें	ज्योतिष्मती, महाज्योतिष्मती।
हिन्दीभाषामें	मालकांगुनी, बड़ीमालकांगुनी, उमिमिनी।
बंगभाषामें	लताफटकी, बड़लताफटकी।
गुजरातीभाषामें	मालकांगणी।
मराठीभाषामें	मालकागोणी (फा०) पिगवी।
कर्णाटकीभाषामें	कांगुएडु।
तैलङ्गीभाषामें	बावर्ची (तेडुबोगे)
द्राविडीभाषामें	स्वाड्री।
इंग्रेजीभाषामें	गिलेग ट्रापेनिकपुन्स। C...
... टिनभाषामें	बार।
फारसीभाषामें	

ज्योतिष्मतीगुणाः।

ज्योतिष्मतीतिक्तरसानरूक्षाकिंचित्कटूर्वानकफापहान्।

दाहप्रदादीपनकृच्चमेध्याप्रज्ञांचपुष्णातितथाद्वितीया॥ रा.नि

अर्थ-मालकागुनी-चरपरी, कडवी, रूखी, किंचित् चरपरी, वातकफनाशक, दाहजनक, अग्निप्रदीपक और मेधा तथा प्रज्ञाकारकहै, दूसरीके, भी इसीके समान गुण जानने।

अपिच।

ज्योतिष्मतीकटुस्तिक्तासराकफसमीरजित्।
अत्युष्णावामनीतीक्ष्णावह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा॥ (म०नि०

अर्थ-मालकाङ्गुनी-चरपरी, कडवी, सारक, कफवातनाशक, अत्यन्त गरम, वमनजनक, तीक्ष्ण तथा जठराग्नि, बुद्धि और स्मरणशक्तिको देनेवालीहै।

अन्यच्च।

ज्योतिष्मतीतुकटुकातिक्ताचाग्निप्रदीपनी।
अत्युष्णादाहकामेध्याप्रज्ञापुष्टिकरीमता॥
वृष्यावान्तिकरीतीक्ष्णावर्ण्याचतुवरामता।
उदरस्य हरेत्पीडांव्रणपाण्डुविसर्पहा॥ (गणनि०)

अर्थ-मालकागुनी-चरपरी, कडवी, अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, दाहकारक, मेधाजनक, प्रज्ञाकारक, पुष्टिदायक, वीर्यवर्धक, वमनकारक, तीक्ष्ण, शरीरके रंगको उज्ज्वल करनेवाली, कपेली तथा उदरकी पीडाको हरतीहै, घाव, पाण्डुरोग और विसर्प रोगको दूर करैहै।

विवरण। इसकी वेल होतीहै, पत्ते गोल कुछ अनीदार होतेहैं। फलोंका झुमका होताहै, कच्चे फल नीले होतेहैं और पकनेपर पीले पडजातेहैं उनमेंसे लाल बीज निकलताहै, उन बीजोंमेंसे पीला तेल निकलताहै, वह तेल अनेकप्रकारके वातरोगोंको और खुजलीको दूर करताहै।

पुष्करमूलनामानि।

पौष्करपुष्करमूलपुष्करपद्मवर्णकम्॥

अर्थ-पौष्कर, पुष्करमूल, पुष्कर, पद्मवर्णक, (पद्मकर्ण, पद्मपत्रमूल, पद्मपर्णक, पुष्करिणी, वीरपुष्कराह्वया, काश्मीर, ब्रह्मतीर्थ, श्वासारि, मूल पुष्कर, पुष्करजटा, पुष्करशिफा, वीर, पद्मपत्रक, पद्मपुष्प, सागर, शूर, वृक्षरुह, सुमूलक, शूलघ्न, कुष्ठभेद)

संस्कृत भाषामें पुष्करमूल।

हिन्दी भाषामें	पोहकरमूल ।
बंग भाषामें	कुष्ठविशेष, पुष्करमूल ।
गुजराती भाषामें	पोकरमूल ।
मराठी भाषामें	पुष्करमूल ।
कर्णाटकी भाषामें	पुष्करमूल ।

अस्यगुणाः ।

पुष्करकटुतिक्तोष्णकफवातज्वरापहम् ।
श्वासारोचककासघ्नंशोफघ्नपाण्डुनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-पोहकरमूल-चरपरा, कडवा तथा कफ, वात, ज्वर, श्वास, अरोचक, खांसी, सूजन और पाण्डुरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

पुष्करपार्श्वरुग्वातकासशोथज्वरापहम् ।
श्वासोर्ध्ववातपाण्डुघ्नंहिक्कादोषनिवारणम् ॥

अर्थ-पोहकरमूल-पार्श्ववेदना, वात, खांसी, सूजन, ज्वर, श्वास, ऊर्ध्ववात, पाण्डुरोग और हिचकीरोगनिवारक है ।

पोहकरमूल उत्तम कहीं नहीं मिलता, इसलिये इसके बदलेमें कूट देना ।

स्वर्णक्षीरी नामानि ।



स्वर्णक्षीरीहैमगिरापट्टपर्णीहिमावती ।
हेमवतीपीतपुष्पातन्मूलंचोकउच्यते ॥

अर्थ-स्वर्णक्षीरी, हेमगिरा, पट्टपर्णी, हिमावती, हेमवती, पीतपुष्पा,

(स्वर्णदुग्धा, स्वर्णाह्वा, रुक्मिणी, सुवर्णा, हेमदुग्धा, हेमक्षीरी, काञ्चनी, कटुपर्णी, हेमाह्वा, क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी, कर्विणी, तिक्तदुग्धा, हिमाद्रिजा, यवचिंचा, हिमोद्भवा, हैमी, हिमजा) इसकी जडको चोक कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें	कटुपर्णी, स्वर्णक्षीरी, क्षीरिणी ।
हिन्दीभाषामें	सत्यानासी, कटेरी (चोक) भरेबद् पिसोला ।
बंगभाषामें	स्वर्णक्षीरी, शोणाखिरुई-(चोक)।
मराठीभाषामें	काटेघोत्रा, फिरंगीधोत्रा ।
गुजरातीभाषामें	दारुडी ।
कर्णाटकीभाषामें	चिक्कणिकेयभेद ।
तामिलभाषामें	ब्रह्मदण्डुविरइ ।
इंग्रेजीभाषामें	गॅंबोज़ थिसल् । Gamboge Thistld
	मेकसिकन् आर्गिमोन् । Maxican Argemon
लैटिन्भाषामें	आर्गिमनी मेक्सी केना ।

अस्या गुणाः ।

हेमाह्वारेचनीतिक्ताभेदिन्युत्क्लेशकारणी ।
कृमिकण्डूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-रेचक, कडवी, भेदक, उत्क्लेशकारक तथा कृमि, कण्डू, विष, आनाह, कफ, रक्तपित्त और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

क्षीरिणीकटुकातिक्तारेचनीशोफतापनुत् ।
कृमीदोषकफघ्नीचपित्तज्वरहराचसा ॥

अर्थ-काञ्चनक्षीरी-चरपरी, कडवी, रेचक तथा सूजन, ताप, कृमि, कफ और पित्तज्वरविनाशक है ।

अपिच ।

स्वर्णक्षीरीहिमातिक्ताकृमिपित्तकफापहा ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीशोफदाहज्वरहरापरा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-शीतल है और कृमि, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, सूजन तथा दाहज्वरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

स्वर्णक्षीरीहिमातिक्तासराकण्डूविनाशिका ।

वातंरक्तंक्रिमीन्पित्तकफंकृच्छ्रञ्चनाशयेत् ॥
जूर्त्यश्मरीशोफदाहज्वरकुष्ठविनाशिनी ।
मूलंचास्यचोकइतिगुणाःपूर्वोक्तवत्स्मृता ॥ (राजनि०)

अर्थ–स्वर्णक्षीरी–शीतल, कडवी, दस्तावर तथा खुजली, वात रक्त, कृमि, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अश्मरी (पथरी) सूजन, दाह, ज्वर और कोढ इनका नाश करैहै, इसकी जडको चोक कहते हैं, इसके गुणभी इसही समान जानने ।

अपिच ।

तस्याःक्षीरबिन्दुमात्रंनेत्रेक्षिप्तघृतप्लुतम् ।
शुक्लञ्चह्यधिमांसंचनेत्रान्ध्यञ्चैवनाशयेत् ॥ (ग० नि०)

अर्थ–इसके दूधकी एक बूंद घीके साथ आंखमें लगानेसे शुक्लनेत्ररोग, अधिमांसनेत्ररोग और नेत्रान्ध्यरोग दूर होते हैं ।

अस्याः स्वरूपम् ।

कण्टकीकण्टपत्राचपीतपुष्पाक्षुपाभवेत् ।
स्वर्णक्षीरीकण्टफलाकृष्णबीजाचसुस्थिरा ॥ (शिवनि०)

अर्थ–इसका क्षुप कांटावाला होताहै, पत्तोंके ऊपर कांटे होते हैं, फूल पीला होताहै, दूधका रंग सुवर्णके समान वर्णवाला होताहै, फलोंपर कांटे होतेहैं, इनमेंसे काले रंगके बीज निकलते हैं । उन बीजोंका तेल निकलताहै, यह तेल अनेक प्रकारके त्वचा रोगोंको हरताहै ।

[illegible]नामानि ।



कर्कटशृङ्गिकाशृङ्गीकुलिङ्गीकासनाशिनी।
महाघोषाचचक्राङ्गीकर्कटीवनमूर्द्धजा॥

अर्थ-कर्कटशृङ्गिका, शृङ्गी, कासविनाशिनी, कुलिंगी, महाघोषा, चक्रागी, कर्कटी, वनमूर्द्धजा (कर्कटाख्या, कुलीरशृंगी, घोषा, चक्रा, शिखरी, कर्कटाख्या, कौलिरा, विषाणिका, चन्द्रास्पदा, नवागा, कुलीरविषाणिका, नतागी, वक्रा, अजशृंगी, कर्कटशृंगी)

संस्कृतभाषामें	कर्कटशृङ्गी।
हिन्दीभाषामें	काकडाशिंगी।
वंगभाषामें	काकडाशृगी।
मराठीभाषामें	काकडशिंगी।
गुजरातीभाषामें	काकडाशिंगी।
कर्णाटकीभाषामें	कर्कटिशृङ्गी।
तैलिङ्गीभाषामे	कर्कटाशृङ्गी।
लैटिन्भाषामें	पेस्टाशिया इटिग्रेरिमा। Pistacia integerrima

अस्यागुणाः।

कर्कटशृङ्गीकातिक्ताचोष्णाचतुवरागुरुः।
वातहिक्कातिसारघ्नीबालानांचहितावहा॥
कासश्वासरक्तदोषपित्तज्वरकफक्षयम्।
वान्तिहिध्मांचोर्ध्ववातक्रिमितृष्णाक्षतक्षयान्॥
अरुचिनाशयत्येवऋषिभिःपरिकीर्त्तिता। (निघण्टु०)

अर्थ-काकडासिंगी-कडवी, गरम, कषेली, भारी तथा वात, हुचकी और अतिसारको हरे है, बालकोंको हितकारी और खासी, श्वास, रुधिरविकार, पित्त, ज्वर, कफ, क्षय, वमन, हिध्मे, ऊर्ध्ववात, कृमि, तृषा, क्षतक्षय तथा अरुचिको दूर करे है।

कट्फलनामानि।

कट्फलत्वक्फलकुम्भीकुमुदिकाश्रीपर्णिका॥

अर्थ-कट्फल, त्वक्फल, कुम्भी, कुमुदिका, श्रीपर्णिका, (कैटर्य, कायफल, कुम्भिपाकी, पुरुष, कुमुदी, सोमवल्क, सोमवृक्ष, रोहिणी, नासानु, अरण्य,

कृष्णगर्भ, प्रचेतसी, भद्रावती, महाकुम्भी, रामसेनक, कुमुदा, उदगन्ध, भद्राश्वनक, लघुकाश्मर्य, श्रीपर्णी, भद्रा, कायफल)

संस्कृतभाषामें	कट्फल ।
हिन्दीभाषामें	कायफल ।
बंगभाषामें	कायफल, कायफाल ।
मराठीभाषामें	कुंभ्याची शाल, वा फल ।
गुजरातीभाषामें	कायफल ।
कर्णाटकीभाषामें	चिरुतिरुचि ।
तैलिङ्गीभाषामें	पापर चुडम ।
लैटिनभाषामें	मिरिका साषिडा, (छाल) ।
	केरिया आर्बोरिया Careya arborea
	मैरिस्टिका मलबेरिका (फल) Myristica Myristica Malbarica
अरबीभाषामें	शार शीशहान ।
फार्सीभाषामें	उदुम्बर्क ।

अथास्य गुणाः ।

कट्फलस्तुवरस्तिक्तकटुर्वातकफज्वरान् ।
हन्तिश्वासंप्रमेहार्शः कासकण्ठामयारुची ॥
रमदाहहरंरुच्यंमुखरोगशमप्रदम् ।
तीक्ष्णश्चतकरश्चोष्णंहन्तिगुल्मामयानपि ॥

अर्थ-कायफल-कषेला, कडुवा, चरपरा तथा वात, कफ, ज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कण्ठरोग, अरुचि और दाहको दूर करते हैं, रुचिकारक, मुखरोगको शमन करें, तीक्ष्ण, छीक लानेवाला, गरम और गुल्मरोगविनाशक है ।

अन्यच्च ।

कट्फलरुचिदंचोष्णंतुवरंकटुतिक्तकम् ।
कासंश्वासंचोन्मदाहमुखरोगंज्वरंतथा ॥
कफवातप्रमेहार्शोऽरुचिगुल्मगलामयान् ।
अग्निमांद्यंपाण्डुरोगग्रहणीविनाशयेत् ॥

अर्थ-कायफल-रुचिदायक, गरम, कषेला, चरपरा, कडवा तथा खासी, श्वास, उमदाह, मुखरोग, ज्वर, कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, गुल्म, कण्ठरोग, अग्निमाद्य, पाण्डुरोग और संग्रहणी इनका नाश करे है । व्यवहार-छाल । मात्रा १ मासेकी ।

भार्ङ्गीनामानि ।

भारङ्गीब्राह्मणीपद्माभृङ्गजाङ्गारवल्लरी ।
मुखधौतादूर्वाफञ्जीभार्ङ्गीब्राह्मणयष्टिका ॥

अर्थ-भारङ्गी, ब्राह्मणी, पद्मा, भृङ्गजा, अङ्गारवल्लरी, मुखधौता, दूर्वा, फञ्जी, भार्ङ्गी, ब्राह्मणयष्टिका, (गर्दभशाक, गर्दभशाका, फञ्जिका, घर्घर, वालेयशाक, वर्द्धक, ब्रह्मयष्टि, यष्टि, ब्रह्मयष्टिका, शाकवालेय, अङ्गारवल्लि, वालेय, ब्राह्मिका, गर्दभशाखी, ब्राह्मी, ब्राह्मणयष्टी, वान्तारि, वातारि, कासजित्, स्वरूपा, भ्रमरेष्टा, शक्रमाता, भृगुभवा, खरशाका, हञ्जिका, कासघ्नी, भृगुजा, भार्गवी, कालिंगवल्ली)

संस्कृतभाषामें	भार्ङ्गी ।
हिन्दीभाषामें	भारङ्गी, ब्रह्मनेटी ।
वंगभाषामें	वामुनहाटी ।
मराठीभाषामें	भारगी ।
गुजरातीभाषामें	भारगी ।
कर्णाटकीभाषामें	किर्देदेगु ।
तैलिङ्गीभाषामें	भण्टभारङ्गी ।
नेपालीभाषामें	चूया ।
लैटिन्भाषामें	क्लेरोडेण्ड्रान्सारटम Clero-dendronserratum
	क्लेरोडड्रन् सिफोन्याथस् । Clerodendron siphonanthus

भार्ङ्गीगुणाः ।

भार्ङ्गीरूक्षाकटुस्तिक्तारुच्योष्णापाचनीलघुः ।
दीपनीतुवरागुल्मरक्तमुन्नाशयेद्ध्रुवम् ।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारगी-रूखी, चरपरी, कडवी, रुचिकारी, गरम, पाचक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, कषेली तथा रक्त, गुल्म, सूजन, खांसी, श्वास, पीनस, ज्वर और वातको नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

भार्ङ्गीतुकटुतिक्तोष्णाकासश्वासविनाशिनी ।
शोफव्रणक्रिमिश्चापदाहज्वरनिवारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-भारंगी-चरपरी, कड़वी, गरम तथा खांसी, श्वास, सूजन, घाव, क्रिमि, दाह और ज्वरको दूर करेंहै ।

अन्यच्च ।

वातज्वरप्रहन्त्रीचगुणेहिक्काविनाशिनी ।
गुल्मज्वरासृग्वातघ्नीक्षयपीनसनाशिनी ॥

अर्थ-भारंगी-वातज्वर, हिचकी, गुल्म, ज्वर, वातरक्त, क्षय, और पीनसरोगका नाश करेंहै ।

अस्याःपत्रगुणाः ।

पर्णमस्यज्वरदाहहिक्कादोषत्रयहरेत् ॥ (नि० र०

अर्थ-इसके पत्ते ज्वर, दाह, हुचकी और त्रिदोषनाशकहैं । इसका, वृक्ष मनुष्यके समान ऊंचा होताहै, पत्ते महुवेके पत्तोंकी समान, होतेहैं, पुष्प, सफेद होताहै, इसके कोमलपत्तोंका शाक बनाते हैं । व्यवहार-मूल, पत्ते । मात्रा २॥ माशेतक ।

पाषाणभेदनामानि ।

पाषाणभेदकोश्मघ्न शिलाभेदोश्मभेदकः ।
सचैवोपलभेदश्चनगभिच्छैलगर्भजः ॥

अर्थ-पाषाणभेद-अश्मघ्न, शिलाभेद, अश्मभेदक, उपलभेद, नगभिद, शैलगर्भज, (अश्मभिद, अश्मभेदक, पाषाणभेदक, पाषाणभेदन, पाषाणभेदी (न) भेता, उपलभेदी, उपलभिद, शिलागर्भज, गिरिभिद, गिरिपोतनी)

संस्कृत भाषामें	पाषाणभेद ।
हिन्दीभाषामें	पाखानभेद ।
बंग भाषामें	पाथरचुरी, हिमसागर, पाथरकूचा ।
मराठी भाषामें	पाषाणभेद ।
गुजराती भाषामें	पाखाणभेद ।
कर्णाटकी भाषामें	अलाणगथा पाषाणभेदी ।
तैलिङ्गी भाषामें	तेल्लुउलिश्री ।
इंग्रेजीभाषामें	आर्गिमुसम । (८८३)

लैटिन् भाषामें	कोमियस एरोमेटिकम् Cocius aromaticum
फारसी भाषामें	गोशाद।
अरबी भाषामें	जिंतियाना।

पाषाणभेदगुणाः।

अश्मभिद्वस्तिरुङ्मूत्रकृच्छ्रतोदाहवातनुत्।
शीतवीर्योगुरुःस्निग्धस्तथातीसारनाशनः॥(शो०नि०

अर्थ-पाखानभेद-वस्तिरोग, मूत्रकृच्छ्र, दाह, वात और अतिसारको दूर-करे है, शीतवीर्य्य है, भारी और चिकनाहै।

अन्यच्च।

अश्मभेदोहिमस्तिक्तःकषायोवस्तिशोधनः।
भेदंहन्तित्रिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः।
योनिरोगान्प्रमेहांश्चप्लीहशूलव्रणानिच॥

अर्थ-पाखानभेद-शीतल, कडवा, कषेला, वस्तिशोधक, भेदक तथा त्रिदोष, ववासीर, गुल्म, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, हृदयरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूल और व्रणरोगका विनाश करे है।

क्षुद्रपाषाणभेदगुणाः।

क्षुद्रपाषाणभेदश्चव्रणकृच्छ्राश्मरीहरः॥ (रा० नि०)

अर्थ-क्षुद्रपाषाणभेद-व्रण, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूरकरे है। पाखानभेदवाली लकडी, परदेशसे आती है, वह क्याहै यह कोई नहीं जानता। इसको सर्वप्रकारके प्रमेह मूत्रकृच्छ्रादि रोगी लेते हैं और देशी पाषाणभेदके गुण इस पाषाणभेदसे सब मिलतेहैं। मात्रा १ मासेकी।

धातकीनामानि।

धातकीताम्रपुष्पीचधात्रीचधातृपुष्पिका॥

अर्थ-धातकी, ताम्रपुष्पी, धात्री, धातृपुष्पिका, (धातृपुष्पी, धातुपुष्पी, धातुपुष्पिका, वह्निपुष्पी, धावनी, अग्निज्वाला, सुभिक्षा, पार्वती, बहुपुष्पिका, कुमुदा, सीधुपुष्पी, कुञ्जरा, मद्यवासिनी, गुच्छपुष्पी, सन्नपुष्पी, रोध्रपुष्पिणी, तीव्रज्वाला, वह्निशिखा, मद्यपुष्पा)



संस्कृतभाषामें	धातकी ।
हिन्दीभाषामें	धायके फूल, धवईके फूल ।
बङ्गभाषामें	धाइफूल ।
मराठीभाषामें	धायटी ।
गुजरातीभाषामें	धावडी ।
कर्णाटकीभाषामें	धायिफूल ।
तैलङ्गीभाषामें	धातुकी पुव्व, और पुव्वु, जाजि ।
उ०	जातिको ।
लैटिनभाषामें	वुडफोर्डिया, फ्लोरिबंडा ।
	Woodfordia floribunda
इंग्रेजीभाषामें	ग्रीस्लिआटोमेन्टोसा ।

धातकीगुणाः ।

धातकी कटुका शीता मदकृत्तुवरा लघुः ।
तृष्णातिसारपित्तास्रविषक्रिमिविसर्पजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-धायके फूल-चरपरे, शीतल, मदकारक, कसैले, हलके, तृषा, अतिसार, रक्तपित्त, विष कृमि और विसर्परोगोंको नाशै है ।

अन्यच्च ।

धातकी कटुका शीता तुवरा मदकारिणी ।
तिक्ता ... गर्भस्थापनकारिणी ॥

रक्तप्रवाहिकापित्ततृड्विसर्पव्रणापहा ।
कृम्यतीसारहननीरक्तदोषरुजापहा ॥
पुष्पमस्याःस्वादुरूक्षरक्तपित्तातिसारजित् ।
विषनाशकरंचोक्तमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि०र०)

अर्थ-धातकी-चरपरी, शीतल, कपेली, मदकारक, कडवी, हलकी, गर्भस्थापक तथा रक्तप्रवाहिका, पित्त, तृषा, विसर्प, व्रण, कृमि, अतिसार और रुधिरदोषको दूर करेहै ।

धायकेफूल-स्वादिष्ठ, रूखे, तथा रक्तपित्त, अतिसार और विषका विनाश करेंहैं । धायके वृक्षकी अपेक्षा धायके फूलोंके अधिक गुण हैं ।

विवरण। इसका वृक्ष होताहै, पत्ते अनारके समान होतेहैं, अनारके पत्ते अधिक नीले होतेहैं, धायके पत्ते कुछ पिलाई लिये खरखरे होतेहैं । फूल लाल होतेहै, इस फूलमें कली नहीं होती। धायके फूलोंका काढा तीन दिन देनेसे मदररोग दूर होताहै ।

दन्तरोगोंमें धायके फूल अत्यन्त हितकारीहैं । व्यवहार-फूल, छाल । मात्रा २ मासेकी ॥

मञ्जिष्ठानामानि ।



मञ्जिष्ठाविकसाजिङ्गीसमङ्गाकालमेषिका ।
मण्डूकपर्णीभण्डीरीकालयोजनवल्लिका ॥
योजनवल्लीमण्डूकाकाण्डीरावस्त्ररञ्जनी ।
रक्तागीरक्तयष्टिश्चरक्तायोजनपर्णिका ॥

अर्थ-मञ्जिष्ठा, विकसा, जिंगी, समगा, कालमेषिका, मण्डूकपर्णी,

मण्डीरी, काला, योजनवल्लिका, योजनवल्ली, मण्डूकी, कालागा, वस्त्ररञ्जनी, रक्ताङ्गी, रक्तयष्टि, रक्ता, योजनपर्णिका, (भण्डी, लतायष्टि, हेमपुष्पी, भिण्डीरी, काण्डीरी, जिङ्गी, भण्डिर, भण्डिरी, भण्डिरा, मञ्जि, मञ्जिष्ठर्वा, स्थापनी, गण्डीरी, हरिणी, गौरी, वमा, रोहिणी, चित्रलता, चित्रा, चित्राङ्गी, जननी, विजया, मञ्जूषा, रक्तयष्टिका, क्षत्रिणी, रागाढ्या, कालभण्डिरा, अरुणा, ज्वरहन्त्री, छत्रा, नागकुमारिका, भण्डीरलतिका, रागाङ्गी, वस्त्रभूषणा, क्षेत्रिणी, ताम्रमूली, ताम्रिका, लोहितलता और ताम्रवल्ली)

संस्कृतभाषामें	मञ्जिष्ठा ।
हिन्दीभाषामें	मजीठ ।
बंगभाषामें	मञ्जिष्ठा ।
मराठीभाषामें	मंजिष्ठ ।
गुजरातीभाषामें	मजीठ ।
कर्णाटकभाषामें	मजिष्ठा ।
तैलङ्गीभाषामें	मजिष्ठतीगे, ताम्रवल्ली ।
तामिलीभाषामें	मञ्जिट्टी ।
इंग्रेजीभाषामें	मेडरूट । Mad leroot
लैटिनभाषामें	रुबिआ कोर्डि फोलिया । Rubia cordifolia
फारसीभाषामें	रूनास ।
अरबीभाषामें	फुवहतु सिरग उरू कुम्बु मार्गान ।

मञ्जिष्ठागुणाः ।

मञ्जिष्ठामधुरातिक्ताकषायास्वरवर्णहृत् ।
गुर्वीचोष्णाविषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक् ॥
रक्तातिसारकुष्ठास्रविसर्पव्रणमेहनुत । (भा० प्र०)

अर्थ-मजीठ-मधुर, कडवा कसैला, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाला, वर्णको उत्तम करनेवाला, भारी, गरम तथा विष, कफ, सूजन, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, रक्तातिसार, कुष्ठ, रुधिरविकार, विसर्प, व्रण और प्रमेहरोगका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मञ्जिष्ठानुवरा तोष्णावर्ण्यान्वर्ण्यागुरुःस्मृता ॥
तिक्ताल्पर्शीनमधुरावणमेहकफापहा ।

विषनेत्ररुजंशोफंयोनिदोषज्वरतथा ॥
शूलंकर्णरुजचैवकुष्ठंचार्शःक्रमीञ्जयेत् ।
रक्तातिसारवीसर्पनाशिनीचप्रकीर्तिता ॥

अर्थ-मजीठ-कषेला, गरम, वर्णको सुन्दर करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला भारी, कडवा, हलका, मधुर तथा घाव, प्रमेह, कफ, विष, नेत्ररोग, सूजन, योनिदोष, ज्वर, (कामला पक्षाघात) शूल, कर्णरोग, कुष्ठ, ववासीर, कृमि, रक्तातिसार और विसर्परोगको नष्ट करे है ।

अस्याः शाकगुणाः ।

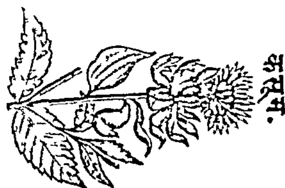
शाकेस्यान्मधुरालघ्वीस्निग्धादीप्तिकरीमता ।
वातपित्तहरीचोक्ताऋषिभिः सत्यवादिभिः ॥(नि०र०)

अर्थ-मजीठके पत्तोंका शाक-मधुर, हलका, स्निग्ध, जठराग्निको दीपन करनेवाला, तथा वात और पित्तको हरनेवालाहै ।

फलयकृद्दोषहरमूलंचम्मविवर्णताहरतिलकालकभञ्च(का०नि)

अर्थ-मजीठका फल-प्लीहाको नाश करनेवालाहै, मजीठकी जड-चर्मरोग और, तिलकालक (शरीरके तिल) को दूरकरे है ।

कुसुम्भानामानि ।



स्यात्कुसुम्भवह्निशिखलोहितग्राम्यकुकुमम् ॥

अर्थ-कुसुम्भ-वह्निशिख, लोहित, ग्राम्यकुकुम (कमलोत्तम, महारजन, कुक्कुटशिख, पावक, पीत, पद्मोत्तर, रक्त, वस्त्ररञ्जन, अग्निशिख)

संस्कृतभाषामें कुसुम्भं, कुसुम्भबीज ।
हिन्दीभाषामें कसुम (करं)

फारसीभाषामें — लाक।
अरबीभाषामें — कुह घोषल लारुदरमलुल।

लाक्षागुणाः।

लाक्षावर्ण्याहिमाबल्यास्निग्धाचतुवरालघुः।
अनुष्णाकफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत्॥
व्रणोरःक्षतवीसर्पकृमिकुष्ठगदापहा।
विषरक्तप्रशमनीविषमज्वरनाशिनी। (निघण्टुसंग्रह)

अर्थ-लाख-शरीरके वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल बलकारक, स्निग्ध, कषेली, हलकी, अनुष्ण तथा कफ, रक्तपित्त, हिचकी, खांसी, ज्वर, व्रण, उरःक्षत, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, विष, रक्तदोष और विषमज्वरको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

लाक्षातुतिक्तातुवराभग्नसन्धानकारिका।
स्निग्धालघ्वीचबल्याचशीतावर्णप्रदामता॥
कफपित्तश्चशोषश्चविषरक्तविकारकम्।
हिक्काकासज्वरश्चैवविषमश्चविनाशयेत्॥
उरःक्षतचवीसर्पनासारोगकृमींस्तथा।
कुष्ठव्रणश्चत्वग्दोषदाहश्चैनविनाशयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-लाख कडवी, कषेली, भग्नसन्धानकारक, स्निग्ध, हलकी, बलकारक, शीतल, वर्णकारक तथा कफ, पित्त, शोष, विष, रक्तविकार, हिचकी, खांसी, ज्वर, विषमज्वर, उरःक्षत, विसर्प, नासारोग, कृमि, कोढ, व्रण, त्वग्दोष और दाहको दूर करनेवाली है।

अलक्तकगुणाः।

अलक्तकोरजोरोगोर्थोरक्तपित्तक्षयापहः।
प्रदरघ्नाप्यतीनागमरतंजपयेद्धुवम्॥ (आर्येन्द्राविता)

अर्थ-महावर-रजोरोग, रक्तपित्त, क्षय, प्रदर और [illegible] दूर करनेवाला है, इसके अधिक गुण आगे लिखे हैं। [illegible] इत्यादि अनेक [illegible] [illegible] लिखे जाते हैं।

हरिद्रानामानि ।



हरिद्रानिशाह्वापीतायुवतीहेमरागिणी ।
काञ्चनीक्षणदागौरीमेहघ्नीवरवर्णिनी ॥

अर्थ-हरिद्रा, निशाह्वा, पीता, युवती, हेमरागिणी, काञ्चनी, क्षणदा, गौरी, मेहघ्नी, वरवर्णिनी, (यामिनी, क्षपा, तमासिनी, गन्धपलाशिका, सुवर्णवर्णा, युवती, मङ्गलमदा, कावेरी, उमा, वर्णवती, पिञ्जा, पीतवालुका, हेमरागी, रमङ्गवासा, घर्षणी, पीतिका, रजनी, निशा, वहुला, वर्णिनी, रात्रिनामिका, हरित्, रञ्जनी, सुवर्णवर्णा, सुवर्णा, शिवा, दीर्घरागा, हलदी, वराङ्गी, अनेष्टा, वरा, वर्णदात्री, पवित्रा, हरिता, विपघ्नी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, लक्ष्मी, भद्रा, शिफा, शोभा, शोभना, सुभगाह्वया, श्यामा, ज्वरान्तिका, योषित्प्रिया, कृमिघ्नी, हट्टिविलासिनी, निशाख्या, जयन्ती, दीर्घरागा, वर्णविलासिनी और हल्दी)

संस्कृतभाषामें	हरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	हलदी ।
बगलामें	हलुद ।
मराठीभाषामें	हळद ।
गुजरातीभाषामें	हलदर ।
कर्णाटकीभाषामें	अर्शिना ।
तैलिङ्गभाषामें	पसुपु ।
द्रा०	हलद ।
इंग्रेजीभाषामें	टर्मेरिक । Turmeric
लेटिन्‌भाषामें	करक्युमालोंगा । Curcumalonga
फारसी भाषामें	जरदचोब ।
अरबीभाषामें	उरुकुस्सुफर ।

मत्स्यपुराण।

हरिद्राकटुकातिक्तारूक्षोष्णकफवातनुत्।
वर्ण्यात्वग्दोषमेहास्रशोथपाण्डुव्रणापहा॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-हल्दी-चरपरी, कडवी, रूखी, गरम, कफ, वातनाशक, वर्णको सुंदरतादायक, तथा त्वचाके रोग, प्रमेह, रक्तदोष, सूजन, पाण्डुरोग और व्रणको नाश करे है।

अथच।

हरिद्राकटुकातिक्तादेहवर्णविधायिका।
उष्णारूक्षाशोधनीचस्त्रीणांविभूषणंमता॥
कफवातरक्तदोषकुष्ठकण्डूप्रमेहनुत्।
त्वग्दोषव्रणशोफपाण्डुरोगकृमीन्विषम्॥
पीनसमचारुचिंपित्तमपचींचविनाशयेत्। (नि०र०)

अर्थ-हल्दी-चरपरी, कडवी देहके रंगको करनेवाली, गरम रूखी, शोधक और स्त्रियोंका भूषण है, तथा कफ वात, रुधिरदोष, कोढ, खुजली, प्रमेह, त्वचाके दोष, घाव, सूजन, पाण्डुरोग, कृमि, विष, पीनस, अरुची, पित्त और अपचीका नाश करनेवाली है।

कर्पूरहरिद्रानामानि।



दार्वीभिदाम्रगन्धाचसुरभीदारुकाम्रक।
पद्मपत्रापद्मपत्रान्यात्सुरभिःसुगन्धाधिका॥

अर्थ-दार्वीभेद, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरभी, सुरनायिका ।

संस्कृतभाषामें	कर्पूरहरिद्रा, आम्रगन्धहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	कपूरहलदी, आम्वीयाहलदी ।
बंगलामें	आमआदा ।
मराठीभाषामें	आंबेहळद ।
गुजरातीभाषामें	आंबाहलदर ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलीअरिशिना ।
तैलिंगीभाषामें	कारुपसुपु ।
इंग्रेजीमें	मेंगोजिंजर । Mangojinger
लैटिन्‌में	कर्क्यूमाएरोमेटिका । Curcuma-aromatica

अस्यागुणाः ।

आम्रगन्धिहरिद्रायासाशीतावातलामता ।
पित्तहन्मधुरातिक्तासर्वकण्डुविनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-आम्बियाहलदी-(कपूरहल्दी) शीतल, वातकारक, पित्तनाशक, मधुर, कडवी और सर्वप्रकारके कण्डुकानाशकहै ।

अपिच ।

अम्लारुचिप्रदालघ्वीदीपनीचवरासरा ।
कफचोग्रव्रणंकासंश्वासहिक्काज्वरजयेत् ॥
अभिघातभवशोथंलेपाच्छीघ्रविनाशयेत् ॥(केचित्)

अर्थ-कपूरहलदी-(अम्बिया हल्दी, वात, रक्त और, विषनाशक है, वीर्य वर्द्धक, सन्निपातनाशक, अम्ल, रुचिदायक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, सारक तथा कफ, उग्रव्रण, खाँसी, श्वास, हुचकी, ज्वर और अभिघातसे उत्पन्न हुई सूजनको दूर करेहै ।

वनहरिद्रानामानि ।

शोलीवनहरिद्रास्याद्वनारिष्टाचशोलिका ।

अर्थ-शोली, वनहरिद्रा, वनारिष्टा, शोलिका, (अरण्यहरिद्रा, वनहल्दी)

संस्कृतभाषामें	वनहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	वनहलदी, जगलीहल्दी ।

अस्या गुणाः ।

हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा कफपित्तनुत् ।
वर्ण्या त्वग्दोषमेहास्रशोथपाण्डुव्रणापहा ॥ (भावप्रकाश)

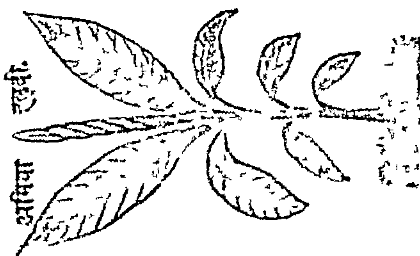
अर्थ-हल्दी-चरपरी, कड़वी, रूखी, गरम, कफ, पित्तनाशक, शरीरको सुन्दरताकारक, तथा त्वचाके रोग, प्रमेह, रक्तदोष, सूजन, पाण्डुरोग और व्रणको नाश करे है ।

अन्यच्च ।

हरिद्रा कटुका तिक्ता देहवर्णविधायिका ।
उष्णा रूक्षा शोधनी च स्त्रीणां विभूषणमता ॥
कफवातास्रदोषकुष्ठकण्डूप्रमेहहृत् ।
त्वग्दोषव्रणशोफपाण्डुरोगकृमीन्विषम् ॥
पीनसं चारुचिं पित्तमपचीं च विनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-हल्दी-चरपरी कड़वी देहके रंगको सुन्दर करनेवाली, गरम, रूखी, शोधक और स्त्रियोंका भूषण है, तथा कफ, वात, रक्तदोष, कोढ़, खुजली, प्रमेह, त्वचाके रोग, घाव सूजन, पाण्डुरोग, कृमि, विष, पीनस, अरुची, पित्त और अपचीका नाश करनेवाली है ।

अथ दारुहरिद्रानामानि ।



दार्वी सा च प्रगन्धा स्यात् ... कटङ्कटम् ।
स पीतपर्णा ... सुगन्धिका ॥

अर्थ-दार्वीभेद, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरभी, सुरनायिका।

संस्कृतभाषामें	कर्पूरहरिद्रा, आम्रगन्धहरिद्रा।
हिन्दीभाषामें	कपूरहलदी, आम्बीयाहलदी।
बंगलामें	आमआदा।
मराठीभाषामें	आंबेहळद।
गुजरातीभाषामें	आंबाहलदर।
कर्णाटकीभाषामें	हुलीअंशिना।
तैलिंगीभाषामें	कारुपसुपु।
इंग्रेजीमें	मेंगोजिंजर। Mangojinger
लेटिन्में	कर्क्यूमाएरोमेटिका। Curcuma-aromatica

अस्यागुणाः।

आम्रगन्धिहरिद्रायासाशीतावातलामता।
पित्तहृन्मधुरातिक्तासर्वकण्डुविनाशिनी॥ (भा०प्र०)

अर्थ-आम्बियाहलदी-(कपूरहलदी) शीतल, वातकारक, पित्तनाशक, मधुर, कडवी और सर्वप्रकारके कण्डुकानाशकहै।

अपिच।

अम्लारुचिप्रदालघ्वीदीपनीचवरासरा।
कफचोग्रव्रणंकासश्वासहिक्काज्वरजयेत्॥
अभिघातभवशोथंलेपाच्छीघ्रविनाशयेत॥(केचित)

अर्थ-कपूरहलदी-(अम्बिया हल्दी, वात, रक्त और, विषनाशक है, वीर्य वर्द्धक, सन्निपातनाशक, अम्ल, रुचिदायक, हल्की, अग्निको दीपन करनेवाली, सारक तथा कफ, उग्रव्रण, खाँसी, श्वास, हुचकी, ज्वर और अभिघातसे उत्पन्न हुई सूजनको दूर करेहै।

वनहरिद्रानामानि।

शोलीवनहरिद्रास्याद्वनारिष्टाचशोलिका।

अर्थ-शोली, वनहरिद्रा, वनारिष्टा, शोलिका, (अरण्यहरिद्रा, वनहल्दी)

संस्कृतभाषामें	वनहरिद्रा।
हिन्दीभाषामें	वनहल्दी, जंगलीहल्दी।

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
	[illegible]

[illegible]

[illegible] उग, [illegible]
[illegible] पादोष, [illegible]
[illegible] गण, कृमि, विप, [illegible]

[illegible] (८)
[illegible] नामानि ।

[illegible]



[illegible]

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	

सीभापामें दारचोव ।

तिभापामें दारहलद ।

अस्या गुणाः ।

तिक्ता दारुहरिद्रा तु कटूष्णा व्रणमेहनुत् ।
कण्डूविसर्पत्वग्दोषविषकर्णाक्षदोषहा ॥ (राजनिघण्टु)

।-दारुहलदी-कडवी, चरपरी, गरम तथा व्रण, प्रमेह, कण्डू, विसर्प, दोष, विष, कर्णरोग और नेत्ररोगको दूर करैहै ।

अपिच ।

दार्वी तद्वद्विशेषेण कफाभिष्यन्दनाशिनी ॥ (रा० व०)

।-दारुहलदीके गुण हलदीके समान हैं विशेषकरके कफ और अभि- ... हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

...किन्तु नेत्रकर्णास्यरोगनुत् ॥(भा०प्र०)

...केही समान हैं,तोभी विशेषकरके, नेत्ररोग,

आम्रगन्धिहरिद्रा...
पित्तहृन्मधुरा तिक्ता सर्वक...

अर्थ-आम्बियाहलदी-(कपूरहलदी) शीतल, ...पानि ।
मधुर, कडवी और सर्वप्रकारके कण्डुकानाशकहै । ...जम् ।

अपिच । ...वीकायोद्भव, वालभै ...वीर्याञ्जन, रसना-

अम्लारुचिप्रदा लघ्वी दीपनी चवरा सरा
कफचोयव्रणकासंश्वासहिक्काज्वरंजयेत्
अभिघातभवशोथंलेपाच्छीघ्रविनाश

अर्थ-कपूरहलदी-(अम्बिया हल्दी, वात, रक्त ... वर्द्धक, सन्निपातनाशक, अम्ल, रुचिदायक, हलकी ... सारक तथा कफ, उग्रव्रण, खाँसी, श्वास, हिच... उत्पन्न हुई सूजनको दूर करैहै ।

वनहरिद्रानामगुणाः ।

शोलीवनहरिद्रास्याद्र... (एक्स्ट्राक्ट आफ इंडियन बर्बेरि)

अर्थ-शोली, वनहरिद्रा ... Extract of Indian Berbery

संस्कृतभाषामें ... एक्स्ट्राक्टम्बेरिस् । Axtracum Berberis

...भाषामें ... हुजुज ।

रसाञ्जनकल्पः ।

दार्वीक्वाथसमं क्षीरं पादं पक्त्वा यदा घनम् ।
तदा रसाञ्जनाख्यं तन्नेत्रयोः परमं हितम् ॥

अर्थ-दारुहल्दीका काढा बनाकर उस काढेमें उसकी बराबर दूध मिला कर औटावे, जब औटकर गाढा होजावे तो उतारले, उसको रसौत कहतेहैं । और यह रसौत नेत्रोंको अत्यन्त हितकारी है ।

अस्या गुणाः ।

रसाञ्जनं कटु श्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ।
उष्णं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-रसौत, चरपरा, गरम, रसायन, कडवा, छेदन तथा कफ, विष, नेत्रविकार और व्रणको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

रसाञ्जनं हिमं तिक्तं हिक्काशोविषनाशनम् ।
कर्णनेत्रभवान्रोगान्योजितं मधुनाधयेत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रसौत-शीतल, कडवा तथा हिचकी, बवासीर विष, कर्णरोग और नेत्ररोगोंको हरैहै ।

अपिच ।

दार्वीक्वाथोद्भवं तीक्ष्णं कटूष्णं च रसायनम् ।
छेदनं चक्षुषे चोष्णं नासुखकफनाशनम् ।
कृष्यविषरक्तपित्तच्छर्दिहिक्काविनाशनम् ।
श्वासनमुखरोगघ्नं चाचार्यैर्निरूपितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-रसौत-शोधन, कटु, रसायन छेदन गरम नेत्रोंको हितकारी, कफनाशक, विषमज्वर तथा रक्तपित्त वमन हिचकी, श्वास और मुखरोगका नाश करेहै ।

रसाञ्जनशोधनविधिः ।

तोयेनोष्णेन प्रक्षिप्य द्रवीकुर्याद्रसाञ्जनम् ।
पश्चाद्गालयित्वा च शोधनं भानुरश्मिना ॥
एवं विशोधितं तत्तु कर्मसु परियोजयेत् ।

विशुद्धनाशयेद्व्याधीन्नाविशुद्धंकदाचन ॥

अर्थ-रसोतको अत्यन्त उष्ण जलमें घोलदे, फिर वस्त्रमें छानकर धूपमें सुखादे, इसप्रकार शोधाहुआ रसोत सर्वकामोंमें ले शोधन, कियाहुआ रसोत व्याधिको नाश करताहै और अशुद्ध रसोत कदापि नहीं। मात्रा १॥ मासेकी।

वाकुचीनामानि ।



सोमराजीकृष्णफलावाकुचीकुष्ठनाशिनी ।
सोमवल्लीपूतिफलीवेजानीकालमेषिका ॥

अर्थ-सोमराजी, कृष्णफला, वाकुची, कुष्ठनाशिनी, सोमवल्ली, पूतिफली, वेजानी, कालमेषिका (अवल्गुज, सुवल्ली, सोमवल्लिका, कालमेषी, चन्द्रलेखा, कृष्णा, पूतिफला, सुवल्ली, कालमेषी, वागुजी, वाकुजी, सोमराजिका, ऐन्दवी, शूलोत्खा, क्रिमिघ्नी, सुवल्लिका, सिता, सितावरी, चन्द्री, सुप्रभा, कुष्ठहन्त्री, काम्बोजी, पूतिगन्धा, वल्गुजा, चन्द्रराजी, कालमेषी, त्वग्दोषापहा, कान्तिदा, अवल्गुजा, चन्द्रप्रभा, पूतिगंधिका, सुपर्णिका, शशिलेखा, सोमा, कुष्ठघ्नी, कण्डूघ्नी और असितत्वचा)।

संस्कृतभाषामें	वाकुची, सोमराजी ।
हिन्दीभाषामें	वायची, वावची, बकुची, (वाकुचीके दाने)
बंगभाषामें	हाकुच, सोमराज (ज)।
मराठीभाषामें	बावची ।
गुजरातीभाषामें	बावची, बावचीनावी ।
कर्णाटकीभाषामें	वाउचिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	तिप्पतीगे, नेल्ववयरिये ।
तामिलभाषामें	वोगिविट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	एसक्यूल्दल्काकुर्शा । Esculent Flacourtia

लैटिन्में सोरेलिया-कोरेलिफोलिया, सोरेलिया, स्पाईके ।

Psoralia Corylifolia P Spicata

बाकुचीगुणाः ।

बाकुचीमधुरातिक्ताकटुपाकारसायनी ।
विष्टम्भहृद्धिमारुच्यासराश्लेष्मास्रपित्तनुत् ॥
रूक्षाहृद्याश्वासकुष्ठमेहज्वरकृमिप्रणुत् ।
तत्फलंपित्तलंकुष्ठकफानिलहरंकटु ॥
केश्यंत्वच्यंकृमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बावची-मधुर, कडवी, पचनेमें चरपरी, रसायन, विष्टम्भको दूर करनेवाली, शीतल, रुचिकारक, सारक, कफ और रक्तपित्तका नाश करनेवाली, रूखी, हृदयको हितकारी तथा श्वास, कोढ़, प्रमेह, ज्वर और कृमि, विनाश करै ।

बावचीका फल-पित्तजनक, कुष्ठनाशक, कफ, वातविनाशक, कटु केशोंको, उत्तम करनेवाला, त्वचाको सुन्दरताजनक तथा कृमि, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, बवासीर, खांसी, सूजन, आम और पाण्डुरोगका नाश करै ।

अन्यच्च ।

वाकुचीपाकेकटुकातिक्ताशीतारसायनी ।
मधुरारुचिदारूक्षाहृद्यामेधाग्निदीपनी ॥
बल्याचतुवरालघ्वीमेध्यानिलरक्तपित्तजित् ।
कफकुष्ठकृमिश्वासकासमेहज्वरव्रणान् ॥
त्रिदोषश्वासत्वग्दोषशिरःकण्डूश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-बावची-पाकमें चरपरी कडवी, शीतल, रसायन, मधुर, रुचिकारक, रूखी, हृदयको हितकारी, भारी अग्निसंदीपन करनेवाली, कसैली, हलकी, मेधाजनक तथा रक्त, पित्त, कफ, कोढ़, कृमि, श्वास, खांसी, प्रमेह, ज्वर, व्रण, त्रिदोष, दाद, त्वचाके विकार, शिर, खाज और सब प्रकार कुष्ठोंका नाश करै ।

बाकुचीबीजगुणाः ।

बीजंशिशिरंकुष्ठीभेदंदुष्टदोषत्रयापजित् ।
वातरक्तहरंपामाकृमिश्वासविनाशनम् ॥ (आ० मे०)

अर्थ–श्वित्रारि यह वाकुचीका भेद है, यह कोढ, त्रिदोष, रक्तविकार, वातरक्त, सिध्मरोग और श्वित्र कोढको दूर करेहै ।

वाकुचीस्वरूपम् ।

क्षुपोवाकुचिकायाश्च गोवारीसदृशोभवेत् ।
कृष्णपुष्पोगुच्छफलोदुर्गंध.कृष्णबीजक ॥ (शो०नि०)

अर्थ–वाकुचीका, क्षुप होताहै, पत्ते ग्वारकी समान होतेहै, फूल काला होताहै, फल गुच्छोंमें आतेहैं, उनमेंसे काले बीज निकलते हैं और इसमें दुर्गन्ध आतीहै । व्यवहार–बीज, लकडी । मात्रा १॥ मासेकी ।

चक्रमर्दनामानि ।

चक्रमर्दःप्रपुन्नाटोदद्रुघ्नोमेपलोचन. ।
पद्माट.स्यादेडगजश्चक्रीपुन्नाटइत्यपि ॥

अर्थ–चक्रमर्द, प्रपुन्नाट, दद्रुघ्न, मेपलोचन, पद्माट, एडगज, चक्री, पुन्नाट, (तार्किण; तर्किल, प्रपुन्नड, मेपाक्षि, कुसुम, प्रपुन्नाल, अडगज, गजाख्य, मेपाह्वय, एडहस्ती, व्यावर्त्तक, चक्रगज, पुन्नाड, विमर्द्दक, तर्वट, चक्राह्व, शुकनाशन, दृढबीज, प्रपुन्नाड, खर्ज्जूघ्न, चक्रमर्द्दक, उरणाख्यक, प्रपुन्नड, प्रपुन्नाड, उरणाक्ष, उरणाक्षक, चक्रपद्माड, दृढबीज)

संस्कृतभापामें	चक्रमर्द,
हिन्दीभापामें	चकवड, पवाड, पमाड (र)।
वंगभापामें	चाकुन्दा, एडाचि ।
मराठीभापामें	टाकाळा, तरोटा ।
गुजरातीभापामें	कुवाधियो ।
कर्णाटकीभापामें	चगचे
तैलिंगीभापामें	तान्टचमु ।
इंग्रेजीभापामें	ओवल्लीव्ड केशिया । Ovalleaved Cassia
लैटिन्भापामें	केशिया टोरा । Cassia Tora
फारसीभापामें	सजीस बोया ।

अस्य गुणाः ।

चक्रमर्दोलघु स्वादूरूक्ष पित्तानिलापह ।
हृद्योहिम कफश्वासकुष्ठदद्रुक्रमीन्हरेत् ॥

हन्त्युष्णं तत्फलं कुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् ।
गुल्मकासकृमिश्वासनाशनं कटुकं स्मृतम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–चकवड़–हलका, स्वादिष्ट, रूखा, पित्तवातनाशक, हृदयको हितकारी, शीतल तथा दाद, श्वास, कुष्ठ, खुजली और कृमिको नाश करनेवाली है।

चकवड़का फल–गरम है और कुष्ठ, कण्डू, दाद, विष, वात, गुल्म, खांसी, कृमि तथा श्वासको दूर करनेवाला है और कटु–कहा गया है।

अन्यच्च।

प्रपुन्नाट स्वादुरूक्षो लघुस्तिक्तः कटुः स्मृतः ।
हृद्यः शीतः पटुश्चैव वातपित्तकफापहः ॥
दद्रुकुष्ठकृमिश्वासगेरुव्रणनाशनः ।
मेदोरोगं च पामां च त्रिदोषं चारुचिं ज्वरम् ॥
मलमूत्रस्तम्भनश्च मेहकामलनाशनः ।
प्रपुन्नाटस्य बीजं तु स्वादिचोष्णं कटु स्मृतम् ॥
कफकुष्ठश्वासकासदद्रुकण्डुविषापहम् ।
शोथगुल्मवातरक्तनाशयेदिति कीर्तितम् ॥
चक्रमर्दकपर्णानि शाकाल्पानि पित्तला ।
अम्लोष्णा कफवातघ्नी दद्रुकुष्ठापहा मता ॥
पामां कण्डूं च कासं च श्वासक्षयविनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ–पमार–(पवाड़) स्वादिष्ट, रूखा, हलका तथा कड़वा, चरपरा, हृदयको हितकारी, शीतल, खारी तथा वात पित्त कफ, दाद, कोढ़, कृमि, श्वास [illegible] (मस्सा) [illegible] मेदरोग, पामा, त्रिदोष, अरुचि ज्वर, मल और मूत्रका रुकजाना, प्रमेह और कामलाको दूर करता है । पमारके बीज– स्वादिष्ट, गरम, कफको तथा कोढ़, श्वास, खांसी, दाद, खुजली, विष, सूजन, गुल्म और वातरक्तका नाश करनेवाले हैं।

पमार (चकवड़) के पत्तोंका शाक–हलका, पित्तकारक, खट्टा, गरम तथा कफ, वात, दाद, कोढ़, पामा, [illegible] और [illegible] दूर करनेवाला है।

इस प्रकार इसके गुण [illegible] हुए।

पमाडकी फली टूटकर पृथ्वीमें गिर पडतीहै जो वीज उपज निकलतेहैं । विवरण । पमाडका क्षुप होता है, पत्ते गोल और एक २ डंडीमें पाच पाच होते हैं, फूल पीला होता है, उससे फली लगती हैं । व्यवहार–वीज, मूल, छाल, पत्ते ।

अतिविषानामानि ।

काश्मीरातिविषा श्वेताविषाप्रतिविषारुणा ॥

अर्थ–कश्मीरा, अतिविषा, श्वेता, विषा, प्रतिविषा, अरुणा, (प्रविषा, उपविषा, घुणवल्लभा, शृङ्गीका, विश्वा, शृङ्गी, महौषध, श्वेतकन्दा, भृङ्गी, विरूपा, श्यामकन्दा, विषरूपा, वीरा, माद्री, अमृता, श्वेतवचा, शुक्लकन्द, भगुरा, मृद्वी, शिशुभैषज्य, शोकापहा, अतिसारघ्नी)

संस्कृतभाषामें	अतिविषा ।
हिन्दीभाषामें	अतीस ।
वंगभाषामें	आतइच ।
मराठीभाषामें	अतिविष ।
गुजरातीभाषामें	अतलसनी कली ।
कर्णाटकीभाषामें	अतिविषा ।
तैलिङ्गीभाषामें	अतिवासा ।
लैटिन्भाषामें	एकोनैटम हिटरोफाइलम । Acconitum Heterophyllum

अस्या गुणाः ।

विषासोष्णा कटुस्तिक्ता पाचनी दीपनी हरेत् ।
कफपित्तातिसारामविषकासवमिक्रिमीन् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–अतीस–गरम, चरपरा, कडवा, पाचक, जठराग्निको दीपन करनेवाला तथा कफ, पित्त, अतिसार, आम, विष, खासी, वमि और कृमिरोगको, दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

विषात्रयं च दोषघ्नं पाचनं ग्राहि तिक्तकम् ।
बालानां सर्वदा पथ्यं वमिशोफविमर्दनम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ–तीनों प्रकारके अतीस–त्रिदोषनाशक, पाचक, मलरोधक, कडवे, बालकोंको सर्वकालमें पथ्य है और वमन तथा सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

त्रिमकारंचातिविषंकिञ्चिदुष्णंचतिक्तकम् ।
अग्निदीप्तिकरंग्राहित्रिदोषाणांनिपातनम् ॥
कफपित्तज्वरामातिसारकासविषापहम् ।
यकृद्वान्तितृषांचैवकृमीनर्शांसिपीनसम् ॥
पित्तोदरंचातिसारंहर्षंच्छर्दिहरंमतम् । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तीनों प्रकारके अतीस-रुक्षिक उष्ण, कडवे, अग्निदीपक, ग्राही, त्रिदोषनाशक तथा कफ, पित्त, ज्वर, आमातिसार, खांसी, विष, यकृत् वमन, तृषा, कृमि, बवासीर, पीनस, पित्तोदर और गर्भ व्याधियों इत्यादि विनाशक है ।

अतिविषभेदाः ।

अतिविषात्रिधाज्ञेयाशुक्लाकृष्णातथारुणा ।
रसवीर्यविपाकेपुनर्निर्दिष्टागुणाधिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-अतीस-श्वेत, कृष्ण और रक्त इन भेदोंसे, तीन प्रकारका है, यह तीनों रस, वीर्य और विपाकमें समान है, किन्तु सफेद गुणोंमें अधिक है । मात्रा ३ मासेकी ।

लोध्रनामानि ।

लोध्रस्तिरीटकश्चैवशावरोगालवस्तथा ।
द्वितीयःपट्टिकालोध्रःक्रमुकःस्थूलवल्कलः ॥
जीर्णपत्रोबृहत्पत्रःपट्टीलाक्षाप्रसादनः ।

अर्थ-लोध, तिरीटक, शावर, गालव, (लोध, लोधर, लोध्रपुष्प, तल्वक, तिन्दुक, रक्तगर्भा, शुद्ध शावरलोध, महालोध, मार्जन भिल्लद्रुम, वायाघात, मन्मद गंध, तिलक, तिरीट, काण्डकीलक, हाथर, हस्तिलोधक, तिलक, काण्डनील, हेमपुष्पक, पिण्डी, शावरक, तिरीट, यह नाम शावर लोधके हैं । दूसरा पठानी लोध होताहै, उसकी पर्याय यह है पट्टिकालोध-क्रमुक, स्थूलवल्कल, जीर्णपत्र, बृहत्पत्र, पट्टी, लाक्षाप्रसादन पट्टिकाख्य, पट्टिका, पट्टीलोध पट्टीलोधक, बस्तलोध, वल्कल, श्वेतपुष्प, बृहद्दल, पट्टिका लोध्रभेद, शावर, पैरलोध शाबर, पट्टिका, महाप्रसादन इत्य)

सस्कृतभाषामें	लोध्र, पट्टिकालोध्र।
हिन्दीभाषामें	लोध, पठानीलोध।
वगभाषामें	लोधकाष्ठ, पाटियालोध।
मराठीभाषामें	लोध।
गुजरातीभाषामें	लोदर, पठाणीलोदर।
कर्णाटकीभाषामें	लोध।
तैलिङ्गीभाषामें	तेल्ललोद्दुगचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	सिंप्लोकोसरेसिमोसा (वृक्ष) सिंप्लोकोस्क्रेटिगोइडिस् (छाल) Syjmplocosracemosa, S Cratac goides
अरबीभाषामें	मुगाम्।

लोध्रगुणा।

लोध्रोग्राहीलघु शीतश्चक्षुष्य कफपित्तनुत्।
कषायोरक्तपित्तासृग्रक्तातीसारशोथहृत्॥ (भा०प्र०)

अर्थ–लोध–मलरोधक, हलका, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्तनाशक, कषेला तथा रक्तपित्त, रुधिरविकार, रक्तातिसार और शोथ (सूजन) को दूरकरेहै।

अन्यच्च।

रोध्रद्वयकषायस्याच्छीतवातकफास्रनुत्।
चक्षुष्यविषहृत्तत्रविशिष्टोवल्करोध्रक॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–दोनांप्रकारके लोध–कषेले, शीतल, वातकफनाशक, रुधिरके विकारको दूर करनेवाले, नेत्रोंको हितकारी, विषके विकारोंके हरनेवाले इन दोनोंमें पठानी लोध श्रेष्ठ है।

अन्यच्च।

लोध्रद्वयतुवरचक्षुष्यशीतललघु।
ग्राहकंवातकफनुद्रक्तरुक्छोफपित्तनुत्॥
अतिसारारुचिविषप्रदराणिविनाशयेत्।
रक्तपित्तहरप्रोक्तपुष्पपाकेकटुस्मृतम्॥
तुवरंमधुरशीतंतिक्तञ्चग्राहकमतम्।
कफपित्तहरचैवऋषिभि परिकीर्तितम्॥ (निघण्टुरत्ना०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके छोटे-बडे, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, रूखे, ग्राही तथा वात, कफ, रक्तदोष, शोफ, पित्त, अतिसार, ज्वर, विष, मद और रक्तपित्तका नाश करनेवाले हैं।

लोधका फूल-पचनेमें चरपरा, कसैला, मधुर, शीतल, ग्राही, मादक और कफपित्तनाशक है।

भल्लातकनामानि।

भल्लातकोऽरुष्करश्च भल्लातः शोफकृत्तथा ।
वह्निनामावीरतरुर्व्रणकृद्भूतनाशनः ॥

अर्थ-भल्लातक, अरुष्कर, भल्लात, शोफकृत्, वह्निनामा, वीरतरु, व्रणकृत्, भूतनाशन, (भल्लातकी, अग्निमुखी, वीरवृक्ष, अरुष्का, अग्नि, भल्लिका, अग्निकिरा, भल्ली, निर्दहन, दहन, अनल, कृमिघ्न, शैलवीज, वातारि, स्फोटबीजक, पृथग्बीज, धनुर्वृक्ष, बीजपादप, वह्नि, महातीक्ष्णा, अग्निक, स्फोटहेतु, शोफकृत्, छेदबीज, रक्तहर)

संस्कृतभाषामें	भल्लातक।
हिन्दीभाषामें	भिलावा।
बंगालाभाषामें	भेला।
मराठीभाषामें	बिबवा, बिब्बा, बिब्बे।
गुजरातीभाषामें	भिलामां।
कर्णाटकीभाषामें	केरबीज।
तैलंगीभाषामें	नालजीडी, जीडीबिजा।
ओड्याभाषामें	भलिय।
तामिलभाषामें	शेरांकोट्टै।
द्रा०	भिल्लवा।
इंग्लिशभाषामें	मार्किंग नट। [illegible]
लैटिनभाषामें	सेमिकार्पस एनाकार्डियम। [illegible]
फारसीभाषामें	बिलादुर।
अरबीभाषामें	हब्बुलकल्ब।

भल्लातकगुणाः।

भल्लातः कषायोष्णः शुक्रलो मधुरो लघुः ।

वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीमदान् ॥
हन्तिगुल्मज्वरश्वित्रवह्निमांद्यक्रमिव्रणान् । (भावप्रकाश)

अर्थ–भिलावा–कषेला, गरम, शुक्रजनक, मधुर, हलका तथा वात, कफ, उदररोग, आनाह, कुष्ठ, बवासीर, सग्रहणी, गुल्म, ज्वर, श्वित्रकुष्ठ, अग्निमांद्य (प्रमेह) कृमि और व्रणरोगका नाश करे है ।

भल्लातकफलगुणाः ।

भल्लातकफलस्निग्धक्रिमिदुर्नामनाशनम् ।
दन्तस्थैर्यकरंग्राहिकषायमधुरश्चनत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ–भिलावेका फल–स्निग्ध, क्रिमि तथा बवासीरका नाश करनेवाला, दांतोंको स्थिर करनेवाला, ग्राही, कषेला और मधुर है ।

पक्वभल्लातकगुणाः ।

भल्लातकफलपक्वस्वादुपाकरसलघु ।
कषायपाचनस्निग्धतीक्ष्णोष्णंछेदिभेदनम् ॥
मेध्यवह्निकरहतिकफवातव्रणोदरम् ।
कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरक्रिमीन् (भावप्रकाश)

अर्थ–भिलावका पक्का फल–मधुर, पाकमें मधुर, हल्का, कषेला, पाचक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम, छेदन, भेदक, मेधाजनक, अग्निदीपक, तथा कफ, वात, व्रण, उदररोग, कुष्ठ, अर्श, सग्रहणी, गुल्म, सूजन, आनाह, ज्वर और क्रमिरोगोंको दूर करे है

अपिच ।

भल्लातस्यफलकषायमधुरकोष्णकफार्तिभ्रम–
श्वासानाहविबन्धशूलजठराध्मानक्रिमिध्वंसनम् ॥ (रा नि)

अर्थ–भिलावेका फल–कषेला, मधुर, गरम तथा कफ, भ्रम, श्वास, आनाह, विबंध, शूल, उदररोग, आध्मान और क्रिमिको नाश करनेवाला है ।

भल्लातफलत्वग्गुणाः ।

फलत्वचाथमधुरास्निग्धाल्घुकषायका ।
रसेकट्वीपाचिकाचलघुतीक्ष्णाचभेदिका ॥
तृष्णाछेदनकर्त्रीचदीपनीकफनाशिनी ।

मेध्यावातश्चकुष्ठश्च व्रणं चोदरमेव च ॥
अर्शःसंग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरक्रिमीन् ।
नाशयेदितिसंप्रोक्तं मुनिभिः सत्यवादिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-भिलावेके फलकी छाल-मधुर, स्निग्ध, कसेली, गरम, चरपरी, पाचक, दीपन, भेदक, गुरु, तीक्ष्ण, शोधन, कफनाशक, मेधाजनक तथा वात, कुष्ठ, व्रण, उदररोग, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, सूजन, अफरा, ज्वर और कृमिरोगको नष्ट करते हैं ।

अथ मज्जागुणाः ।

तथास्थिफलजा मज्जा मधुरा बृंहणी स्मृता ।
वृष्या दीपनकर्त्री च तर्पणी शोकनाशिनी ॥
अरोचकश्च दाहश्च पित्तं वातश्च नाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-इसके फलकी मज्जा-मधुर, बृंहण, वीर्यवर्धक, अग्निदीपक, तर्पण, शोकनाशक तथा अरुचि, दाह, पित्त और वातको दूर करनेवाली है ।

अथ वृन्तगुणाः ।

भल्लातवृन्तं मधुरं कषायं वातकोपनम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-भिलावेका डंठल-मधुर, कसेला और वातको कुपित करता है ।

अन्यच्च ।

वृन्तमारुष्करस्यादु पित्तघ्नं केश्यमग्निकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-भिलावेका डंठल-स्वादिष्ट, पित्तनाशक, बालोंको हितकारी और जठराग्निवर्धक है ।

भल्लातकशोधनविधिः ।

भल्लातकानि पक्वानि मग्नानि क्षिप्य च जले ।
मज्जन्ति यानि तान्येव शुद्ध्यर्थं तानि योजयेत् ॥
इष्टकाचूर्णनिचयघर्षणान्निर्विषं भवेत् । (आ० ग्र०)

अर्थ-पके भिलावें लेकर जलमें डालदे जितने भिलावें जलमें डूबजावें उनको, शुद्ध करनेके लिये उपयोगमें लावे, फिर इनको अर्थात् ईंटके चूर्णसे उनको घिसे तो शीघ्र शुद्ध हों ।

अथ भल्लातकपर्यायनामानि ।

शोफकृत् स्यादग्निनामानो भल्लातकः स्मृतः ॥

अर्थ–वृषाक, गोजनक, नदीभल्लातक ।

अस्य गुणा

वृषांकस्तुभवेत्तिक्त'कषायोमधुरोहिम ।
सग्राहीवातलश्चैवकफरक्तादिपित्तहा॥
व्रणहेतिभिषक्श्रेष्ठैःप्रोक्तःकैयनिघण्टके । (नि०र०)

अर्थ–नदीभिलावा–कडवा, कषेला, मधुर, शीतल, ग्राही, वातकारक तथा कफपित्त, रक्तपित्त, और व्रणविनाशक है ।

इसका वृक्ष वडा होताहै, पत्ते गूमाकी समान होतेहैं, फल लाल होता है ।

विजयानामानि ।

शक्राशनन्तुविजयात्रैलोक्यविजयाजया ॥

अर्थ–शक्राशन, विजया, त्रैलोक्यविजया, जया (मत्कुणारि, भङ्गा, इन्द्राशन, वीरपत्रा, चपला, अजया, आनन्दा, हर्षिणी, मोहिनी, भृङ्गी, धूर्त्तवधू, मातुलानी, मातुली, नीली, मनोहरा, हरा, उन्मत्तिनी, योगिनी, धूर्त्तपत्नी, कामाग्नि, तन्द्रारुचिवर्द्धिनी, वीरपत्री, शिवा, माया, शिवप्रिया, मत्ता, ज्ञानवल्लिका)

संविदामञ्जरीगञ्जामादिनीहर्षिणीतथा ॥

अर्थ–संविदामञ्जरी, गञ्जा, मादिनी, हर्षिणी ।

संस्कृतभाषामें	भङ्गा, विजया, गंजा, चरस ।
हिन्दीभाषामें	भाँग, भंग, गाँजा ।
वंगभाषामें	सिद्धि, भाङ्ग, गाजा ।
मराठीभाषामें	भाग, गाजा ।
ब्रह्मीभाषामें	बिन ।
गुजरातीभाषामें	भांग्य, गांजो, चरस ।
तैलिङ्गीभाषामें	जनपरितुल्ल गाजाई ।
इंग्रेजी भाषामें	इण्डियन्हेंप । Indian Hemp
लैटिन्भाषामें	केनाविस् सेटाईवा । Cannabis Sativa
फारसीभाषामें	किन्नाविष वरकुल्ख्याल शवनवग ।
अरबीभाषामें	किन्नवकेन ड्रुवीरुल रुडुल्वज ।

भङ्गागुणा ।

भङ्गाकफहरीतिक्ताग्राहिणीपाचनीलघु' ।

तीक्ष्णोष्णा पित्तला मोहमदवाग्वह्निवर्द्धिनी ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-भंग-कफनाशक, कड़वी, ग्राहक, पाचक, हलकी, तीक्ष्ण, गरम, पित्तकारक तथा मोह, मद, वाणी और अग्निको बढ़ानेवाली है।

राजव० ।

शक्राशनन्तु तीक्ष्णोष्णं मोहकृत्कुष्ठनाशनम् ।
बलमेध्याग्निकृच्छ्लेष्मदोषहारि रसायनम् ॥

अर्थ-भाँग-तीक्ष्ण, उष्ण, मोहकारक, कुष्ठनाशक, बलदायक, मेधाजनक, अग्निकारक, कफनाशक और रसायन है।

अन्यच्च ।

भृङ्गी तु दीपनी रुच्या ग्राहिणी पाचनी लघुः ।
निद्रापित्तमदोष्णा च स्मरदा कफवातजित् ॥

अर्थ-भंग-अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, मलको रोकनेवाली, पाचक, हलकी, निद्राजनक, पित्तकारक, कामजनक और कफ तथा वातको जीतनेवाली है।

[illegible] ।

आग्नेयी तर्पिणी रम्या मन्मथोद्दीपनी तथा ।
निद्राप्रजननी गर्भपातिनी च विकाशिनी ॥
वेदनाक्षेपहारिणी ज्ञेया मदकारिणी । (आर्यभिषक्)

अर्थ-भांग-पाचक, तृप्तिकारक, मनोहर, कामोद्दीपक, निद्राको उत्पन्न करनेवाली, निद्राकारक, गर्भको गिरानेवाली, विकासी, वेदनाको हरनेवाली, आक्षेपको हरनेवाली और मदकारक है।

[illegible] ।

जाता मन्दरमन्थनाज्जलनिधौ पीयूषरूपा पुरा
त्रैलोक्ये विजयप्रदेति विजया श्रीदेवराजप्रिया ॥
लोकानां हितकाम्यया क्षितितले प्राप्ता नरैः कामदा
सर्वातङ्कविनाशहर्षजननी यैः सेविता सर्वदा ॥

अर्थ-[illegible]
[illegible]

इसका नाम विजया हुवा, यह देवराज इन्द्रको प्यारी है । हितकी अभिलाप करनेसे पृथ्वीपर मनुष्योंको प्राप्त होतीहै, इसको जलके साथ मिलाकर पीनेसे काम अत्यन्त प्रबल होताहै, सर्व प्रकारके रोग शोक दूर होतेहैं और अतुल आनन्द प्राप्त होता है ।

विवरण—यह एक प्रकारका क्षुप है, इसके फूल हरे गुच्छेदार होतेहैं, इसके पत्ते नीमके पत्ते समान लम्बे और कगूरदार होतेहैं, परन्तु नीमके पत्तोंसे कुछ छोटे होते हैं, प्रति दंडीपर तीन पांच अथवा सात पत्ते होतेहैं, पुरुष और स्त्रीके नामसे भंग दोप्रकारकी होतीहै, पुरुष जातिके क्षुपसे पत्ते लिये जातेहैं और स्त्री जातिके क्षुपसे गांजेकी उत्पत्ति होती है, बंगदेशके राजशाही जिलेमें गांजेकी खेती होती है । दोनों जातिके क्षुप एक जगह रहनेसे जटा नहीं बांधीजासकती, वह यही कारण है कि भंगकी खेती हरेक स्थानमें नहीं होती । वहां पर जो पुरुष जातिके वृक्ष उत्पन्न होतेहैं, उन सबको बहुत छोटे छोटेपनसे उखाड डालतेहैं मुंगेर पञ्जाब और रामपूरके जिलेकी भंग उत्तम होती है । क्षुप छै. फुटसे ऊंचा नहीं होता पत्ते एक इंच लम्बे होते हैं ।

हिन्दुओंको भंग अत्यन्त प्यारी है विनाविघ्नके कार्य सिद्ध करनेको सब उत्सवोंमें यह प्रथमही पीजाती है । पश्चिमोत्तर देशमें इसका अधिक व्यवहार ह ।

हमारे देशके कोई कोई भंगेडी कहते हैं, कि भंगही इस संसारमें मनभावन और परमपावन है इसी कारण भगवान् भूतनाथने इसको ग्रहण किया कोई यह भी कहते हैं कि—

सवैया ।

भीजत ही सब रीझत हैं जब घोय धरी शिवके मनमानी ।
मिर्च मसालो मिलाय दियो तब घोटकरी वाकी रस धानी ॥
साफी सुरपतिरायवनी यद नम्र कमण्डलुके जल छानी ।
गंगते दूनी तरङ्ग उठैं जब अंगमें आवत भंग भवानी ॥ १ ॥

कोई पोद्धा यह ठीक नहीं करत यों है—

साधुनके अरु सिद्धनके अरु भट्ट सुभट्टनके मनमानी ।
यामिनिके अरु दूतनके रजपूतनजोटम घोटके छानी ॥
याहिके बीच अनेकन तीरथ याहिमें गंग तरंगके पानी ।
कोटिन रंग दिखावति है जब अंगमें आवति भंग भवानी ॥ २ ॥

तीक्ष्णोष्णा पित्तला मोहमदवाग्वह्निवर्द्धिनी ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-भांग-कफनाशक, कड़वी, ग्राही, पाचक, हलकी, तीक्ष्ण, गरम, पित्तकारक तथा मोह, मद, वाणी और अग्निको बढ़ानेवाली है।

अन्यच्च।

शक्राशनं च तीक्ष्णोष्णं मोहकृत्कुष्ठनाशनम्।
बलमेधाग्निकृच्छ्लेष्मदोषहारि रसायनम् ॥

अर्थ-भांग-तीक्ष्ण, उष्ण, मोहकारक, कुष्ठनाशक, बलवर्द्धक, मेधाजनक, अग्निकारक, कफनाशक और रसायन है।

अपिच।

भृंगी तु दीपनी रुच्या ग्राहिणी पाचनी लघुः।
निद्रापित्तमदोष्णा च [illegible] ॥

अर्थ-भंग-अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, मलको रोकनेवाली, पाचक, हलकी, निद्राकारक, पित्तकारक, [illegible] और [illegible] तथा [illegible] नाश करनेवाली है।

[illegible]।

आग्नेयी तिक्तवर्णा रुच्या मन्दाग्निदीपनी लघ्वी।
निद्राप्रजननी गर्भपातिनी च पित्तागिनी ॥
ज्ञानाक्षेपकारिणी जिह्वाजाड्यकारिणी। (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-भांग-पाचक, [illegible], [illegible], [illegible] निद्राकारक, गर्भको गिरानेवाली, [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible] है।

[illegible]।

जाता मन्दरमन्थनाज्जलनिधौ पीयूषरूपा पुरा
त्रैलोक्ये विजयप्रदेति विजया श्रीदेवराजप्रिया ॥
लोकानां हितकाम्यया क्षितितले प्राप्ता नरैः कामदा
सर्वातङ्कविनाशहर्षजननी यैः सेविता सर्वदा ॥

अर्थ-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

इसका नाम विजया हुवा, यह देवराज इन्द्रको प्यारी है । हितकी अभिलाष करनेसे पृथ्वीपर मनुष्योंको प्राप्त होतीहै, इसको जलके साथ मिलाकर पीनेसे काम अत्यन्त प्रबल होताहै, सर्व प्रकारके रोग शोक दूर होतेहैं और अतुल आनन्द प्राप्त होता है ।

विवरण–यह एक प्रकारका क्षुप है, इसके फूल हरे गुच्छेदार होतेहैं, इसके पत्ते नीमके पत्ते समान लम्बे और कगूरदार होतेहैं, परन्तु नीमके पत्तोंसे कुछ छोटे होते हैं, प्रति दंडीपर तीन पाच अथवा सात पत्ते होतेहैं, पुरुष और स्त्रीके नामसे भग दोप्रकारकी होतीहै, पुरुष जातिके क्षुपसे पत्ते लिये जातेहैं और स्त्री जातिके क्षुपसे गाजेकी उत्पत्ति होती है, बगदेशके राजशाही जिलेमें गाजेकी खेती होती है । दोनों जातिके क्षुप एक जगह रहनेसे जटा नहीं बाधीजासकती, यह यही कारण है कि भगकी खेती हरेक स्थानमें नहीं होती । वहा पर जो पुरुष जातिके वृक्ष उत्पन्न होतेहैं, उन सबको बहुत छोटे छोटेपनसे उखाड डालतेहैं मुगेर पञ्जाब और रामपूरके जिलेकी भग उत्तम होती है । क्षुप छै. फुटसे ऊचा नहीं होता पत्ते एक इच लम्बे होते हैं ।

हिन्दुओंको भग अत्यन्त प्यारी है विनाविघ्नके कार्य सिद्ध करनेको सब उत्सवोंमे यह प्रथमही पीजाती है । पश्चिमोत्तर देशमें इसका अधिक व्यवहार है ।

हमारे देशके कोई कोई भगेडी कहते हैं, कि भगही इस ससारमें मनभावन और परमपावन है इसी कारण भगवान् भूतनाथने इसको ग्रहण किया कोई यह भी कहते हैं कि–

सवैया ।

भीजत ही सब रीझत हैं जब धोय धरी शिवके मनमानी ।
मिर्च मसालो मिलाय दियो तब घोटकरी वाकी रस धानी ॥
साफी सुरपतिरायबनी यह ब्रह्म कमण्डलुके जल छानी ।
गगते दूनी तरङ्ग उठें जब अगमें आवत भग भवानी ॥ १ ॥

कोई थोड़ा यह ठीक नहीं वरन यों है–

साधुनके अरु सिद्धनके अरु भट्ट सुभट्टनके मनमानी ।
कामिनिके अरु दूतनके रजपूतनघोटम घोटके छानी ॥
याहिके नीच अनेकन तीरथ याहिमे गग तरगके पानी ।
कोटिन रग दिखावति है जब अगम आवति भग भवानी ॥ २ ॥

इसके कहा भंग यह भी कही कोई-

गायके गावति [illegible] जुरे बिन [illegible] नहीं होत है भली ।
[illegible] गव पीनी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
याके समान न और कछु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] सब संगमें आवति भंग भवानी ॥ ३ ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । कवित्त-

देखत हरी है गुण अमित भरी है [illegible] [illegible] धरी है ज्ञान भरी [illegible] [illegible] । ध्यानकी पुरी है [illegible] [illegible] है [illegible] देवत भरी है बुद्धि [illegible] गणेशजी ॥ [illegible] गई है [illegible] [illegible] भरी है [illegible] [illegible] है दे [illegible] [illegible] । [illegible] है [illegible] है [illegible] [illegible] भरी है [illegible] [illegible] महेशकी ॥ ४ ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भंग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ५ ॥ इत्यादि

व्यवहार-वैद्यक ग्रन्थोंमें भंग और भंगके दोषोंके अतिरिक्त इसके और [illegible] अथवा व्यवहार नहीं देखा जाता, परंतु [illegible] किसी किसी स्थानमें लिखा जाता है ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] साथ इसका [illegible] करते हैं । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इसके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] इसका [illegible] [illegible] हुआ है । फिर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

आयुर्वेद [illegible] [illegible] [illegible] औषधियोंमें इसका व्यवहार [illegible] जाता है । [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] औषधी [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] अधिक [illegible] [illegible] है । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] इसका [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

रोगियोंको आरोग्य किया है उसका वृत्तान्त नीचे लिखतेहैं, उन्होंने छै रोगियोंको धुवापिलाकर आराम किया । सात रत्ती भग तमाखूके साधारण पत्तोंमें एक नई चिलम तमाखूके समान सजाकर हुक्केके द्वारा रोगीको पिलायाथा आक्षेप होनेका पहला लक्षण देखतेही रोगीको धूमपान कराया-गया । धुआ पीतेही रोगी आक्षेपसे छूट नेत्र बदकर साधारण रीतिसे सोगया । आक्षेप होनेका ध्यान होतेही इसप्रकारसे वार वार धुआ पिला-कर उन सव रोगियोंको आराम किया गया ।

वम्बई देशके डॉक्टर जि सि (G C) लूकसने परीक्षा करके देखा है कि धुआ पीनेसे (१) आक्षेप थोडी देरतक ठहरता है (२) धीरे धीरे आक्षेप वहुत समयके पीछे हुआ करताहै (३) आक्षेपका तेजभी धीरे धीरे कम होजाता है (४) आक्षेपके किये रोगीको अत्यन्त कृश (दुवला) होना नहीं पडता (५) वारवार व्यवहार करनेसे फिर आक्षेप एक साथ उडजाताहै ।

डाक्टर ओसागनसीने अनेक प्रकारके रोगोंमें भगका प्रयोग करके परीक्षा की थी । उनकी राय है । धनु.स्तम्भ, जलान्तक, वातरस, तडका और विपूचिका रोगकी यह औपधी है, उनके पीछे अगरेज डाक्टर लोग भगको धनुस्तम्भ और विपूचिकाकी श्रेष्ठ औपधी समझतेहैं ।

डाक्टर डाईमक (Dymac) ने धनु'स्तम्भके वहुतरोगियोंको केवल भ-गसे आराम किया और निश्चय करदियाहै कि धनु.स्तम्भके लिये उत्तम औपधी है यह विपूचिका रोगमें अफीमके समान काम करनेवाली है, रोग-की सम्प्राप्तिके समय काममें लानेसे अत्यन्त लाभ होताहै । इन रोगोंके अतिरिक्त यूनानी मतसे प्रमेह और अन्त्रवृद्धिके रोगमें भगका प्रयोग होताहै । दूधमें भंग पीसकर लेप करनेसे ववासीरीको आराम होताहै । भुनीहुई भग-का चूर्ण सहतके साथ खानेसे अतिसार, संग्रहणी और मदाग्नि दूर होतीहै । भगका पूरा क्षुप पीसकर नवीन घावमें लगानेसे शीघ्र आराम होताहै । और चोटकी पीडा निवारण करनेको लेप देनेसे विशेप उपकार होताहै ।

मात्रा २-४ रत्ती व्यवहार-वीज, पत्ते, जड ।

खाखसफलनामानि ।

खसफलेखाखसफलमुह्ममत्फलमित्यपि ।

सन्निपातकृमिकफपाण्डुक्षयविनाशकः ।
मेदादीन्श्वासकासांश्चप्लीहादीन्धातुक्षयंतथा ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तोविशेषस्तस्यकथ्यते ।
श्वेतवर्णोमारण स्याद्रुक्मस्त्रप्रजारयेत् ॥
मृतिप्रद कृष्णवर्णोमारणन्तु भस्मीनिन ।
जरानाशकर पीतोधारण संपरीनिन ॥
चित्रवर्ण मारण स्यान्मलमारणकारणः । (नि० र०)

अर्थ—अर्थात—मारण, मारण, और मारण, इन भेदोंसे मारनेवाला है।

गुण—वीर्यवर्द्धक, पाचनकर, ... सप्तधातुपोषक, ... आयुष्कारक, ... बलवर्द्धक, ... मधुर तथा सन्निपात कृमि, कफ, पाण्डुरोग, क्षय, प्रमेह, श्वास, खांसी, ... और धातुक्षयको नष्ट करे । ... अर्थात ... (...) को है, इसप्रकार इसको मारण करते हैं।

... अर्थात ... इसको मारण करते हैं । ... इसको मारण करते हैं । ... अर्थात ... मारण करते हैं इसको मारण करते हैं ।

...

उत्पन्तेनमयोज्ञानिनेयामपतिलाअपि ॥

अर्थ—स्वर्णबीज, ... (..., ..., ..., ... भेद ...)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णबीज, ... ।
हिन्दीभाषामें	..., ... ।
बंगलामें	... ।
है० ...	... ।
मराठीभाषामें	... ।
गुजरातीभाषामें	... ।
तैलंगीभाषामें	...
अंग्रेजीभाषामें	... । ...
क्षु०	... ।

मला० कशकश।
फारसीभाषामें तुख्मेकोकनार।
अरबीभाषामें ह्बुलकोकनार।

अस्य गुणाः।

खसबीजानिबल्यानिवृष्याणिमधुराणिच।
जनयन्तिकफतानिशमयन्तिसमीरणम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ–खसखस–बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, मधुर, ग्राहक, और वातविनाशक है।

विवरण। पोस्तकी खेती पूर्व, दक्षिण और रुहेलखण्डमे अधिकतासे होतीहै। इसका क्षुप चारफूटका होताहै, फूल सफेद, लाल, और काले रगके अतीव सुन्दर गुल्लालेकी समान आते हैं, उसपे डोडे लगतेहैं उन डोडोंको छुरीकी नोकसे गोद देतेहैं, उनमेंसे जो दूध निकलताहै, उस दूधको इकट्ठा करलेतेहैं उसको पकाकर अफीम बनातेहैं और डोडेके भीतर जो बीज होतेहैं उनको खसखस कहतेहैं।

यवक्षारनामानि।

पाक्यक्षारोयावशूकोयवक्षारोयवाग्रजः।

अर्थ–पाक्य, क्षार, यावशूक, यवक्षार, यवाग्रज, (यवलास, यवशूक, सारक, रेचक, यवनालक, तिर्य्य, तीक्ष्णरस, यवनालज, यवज, यवशूकज, यवाह्व, यवापत्य)

संस्कृतभाषामें यवक्षार।
हिन्दीभाषामें जवाखार)
वगभाषामें यवक्षार, सोरा।
मराठीभाषामें जवखार।
गुजरातीभाषामें जवखार।
कर्णाटकीभाषामें यवक्षार।
तैलङ्गीभाषामें यवखार।
इंग्रेजीभाषामें कार्बानेट ऑफ़ पोटाश। Carbonate of Potash
लैटिन्भाषामें पोटाश्य कार्बोनास्। Potassium Carbonas
अरबीभाषामें नुतरुन।

अस्य गुणाः ।

यवक्षारोलघुः स्निग्धः ससूक्ष्मोवह्निदीपनः ।
निहन्तिशूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान् ॥
पाण्डुर्शोग्रहणीगुल्मानाहप्लीहहृदामयान् । (भा० प्र०)

जवाखार-हल्का, स्निग्ध, सूक्ष्म, अग्निप्रदीपक तथा शूल, वात, आम, कफ, श्वास, गलरोग, पाण्डुरोग, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, आनाह, प्लीहा और हृद्रोगोंको हरै है ।

अन्यच्च ।

यवक्षारोहिमः श्रेष्ठः शर्कराश्मरिकृच्छ्रजित् ।
निहन्तिशूलवातामपुंस्त्वगुल्मादिजन्तुजित् ॥ (गणनि)

जवाखार—शीतल, श्रेष्ठ तथा शर्करा, अश्मरीरोग, शूल, वात, आम, गुल्मादिरोग और कृमिको दूर करै है ।

अपिच ।

यवक्षारःसरश्चोष्णःकट्वग्निप्रदीपकः ।
...पुर्वातकफशूलाश्मरीरुजापहः ॥
...कण्ठरोगमामशूलाश्मरीहरः ।
...मूत्रकृच्छ्रगुल्मश्वासार्शनाशनः ॥
...हृद्रोगमामपाण्डुरुजंतथा ।
...पुनर्नार्यो... (...)

...सारक, उष्ण, चरपरा, ... तथा ... ...

[illegible]

अर्थ-कपोत, स्वर्जिका, स्वर्जि, शूलघ्नी, सुखवर्चक (सौवर्चल, रुचक, सृज्जिकाक्षार, सर्जिका, क्षार, सुनार्चिक, सुघ्नी, योगवाही, स्वजेका, सुखवर्चक, घ्रुग्निका, सर्जि, सर्जिक्षार, स्वर्जिक, सुखोर्जिक, सुवर्जिक, स्वर्जिक्षार, सुवर्चि, सुवर्चा, स्वर्जिकाक्षार)

संस्कृत भाषामें	स्वर्जिक्षार।
हिन्दीभाषामें	सज्जी ।
बंग भाषामें	साजिखार, साजिमाटि ।
मराठी भाषामें	सज्जीखार ।
गुजराती भाषामें	साजीखार ।
कर्णाटकी भाषामें	साजीखारु ।
इंग्रेजीभाषामें	कार्बोनेट ऑफ सोडा । Carbonate of soda
लैटिन्‌भाषामें	आर्थोक्नेमम्इंडिकम्, कैरोक्सीलन्‌फिटिड । Arthrocnemem Indicum Caroxylon foetidum
फारसीभाषामें	संजारकलीया ।
अरबीभाषामें	कलीबग्न्बुलअसफर ।

अस्यगुणा ।

स्वर्जिक्षारःकटुश्चोष्णस्तीक्ष्णोगुल्मविनाशक ।
शूलवातकफचैवकृमीनाध्मानवातकम् ॥
उदरस्यचवातंचनाशयेदितिकीर्त्तित । (नि० र०)

अर्थ-सज्जी-चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, गुल्मनाशक तथा शूल, वात, कफ, कृमि, आध्मान, वायु और उदरकी वातको दूर करनेवाली है ।

विवरण । वृक्षोंके पञ्चाङ्गके टुकडेकरके मल्वार प्रांतकी ओर बडी बडी खाई बनाकर उनमें भरदेतेहैं और उसमें आगलगातेहैं पीछे वह अपने आप जलकर जमजाते हैं इसको खारी कहते है । यह खारी जमीनमें बनाई जातीहै ।

टङ्कणक्षारनामानि ।

लोहद्रावीटङ्कणश्चसुभगोधातुवल्लभ ॥

अर्थ-लोहद्रावी, टङ्कण, सुभग, धातुवल्लभ, (पाचनक, मालतीतीरज, लोहश्लेषण, रसशोधन, रसाधिक, लोहद्रावी, रमन, वर्तुल, कनकक्षार, मालिन, टङ्कण, मालतीतीरसम्भव, द्रावक, लोहशुद्धिकारक, रङ्कद, स्वर्णपाचक, टङ्क, धातुगन्धिकर, सौभाग्य, श्वेतटङ्कण)

संस्कृतभाषामें	टङ्कणक्षार ।
हिन्दीभाषामें	सुहागा ।
बंगभाषामें	सोहागा ।
मराठीभाषामें	त्वागीखार, टाकणखार ।
गुजरातीभाषामें	टंकणखारियो, टंकनकुटियो ।
कर्णाटकीभाषामें	टंकणक्षार, विलियटंकणु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पलिगारम् ।
इंग्रेजीभाषामें	बोराक्स, बायबोरेट् ऑफ् सोडा । Borax Biborate of soda
लैटिनभाषामें	सोडाबायबोरास । Sodas Biboras
पारसीभाषामें	तंगार ।
अरबीभाषामें	बुरग ।

अथ गुणाः ।

कथितष्टंकणक्षारः कटूष्णः कफनाशनः ।
स्थावरादिविषश्वासकासश्वासापहारकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सुहागा-कटु, उष्ण तथा कफ, स्थावरादि विष, खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अपिच ।

टङ्कणं वह्निकृद्रूक्षं कफघ्नं वातपित्तकृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सुहागा-अग्निजनक, रूखा, कफनाशक और वातपित्तको करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

टङ्कणो द्रावणो भेदी विषहारी ज्वरापहः ।
गुल्मामशूलशमनो वातश्लेष्महरः परः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सुहागा-द्रावक, धातुको पतला करनेवाला, भेदक तथा विष, ज्वर, गुल्म, आम, शूल, वात और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

मालतीतीरजः क्षारस्तीक्ष्णो वह्निप्रदीपकः ।
स्निग्धो रूक्षो निलकरः श्लेष्मघ्नः पित्तदूषकः ॥

अर्थ-सुहागा-तीक्ष्ण, जठराग्निको दीपन करनेवाला, स्निग्ध, वातकारक, कफनाशक और पित्तको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

टङ्कणोऽग्निकरोरूक्षःकफघ्नोरोचनोलघु॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ-सुहागा-अग्निकारक, कफनाशक, रोचक और हलका है ।

अपिच ।

टङ्कणोभेदकोरूक्षःकटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पित्तलोष्णोवातकरस्तिक्तस्तीक्ष्ण'पटुःस्मृतः ॥
धातुद्रावीज्वरवातकफजगमजविषम् ।
स्थावरञ्चविषवांतिंवातरक्तञ्चनाशयेत् ॥
कासंश्वासनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-सुहागा-भेदक, रूक्ष, कटु, अग्निदीपक, पित्तजनक, उष्ण, वातवर्द्धक, तिक्त, तीक्ष्ण, खारी, धातुको पतला करनेवाला तथा ज्वर, घाव, कफ, जगमविष, स्थावरविष, वमन, वातरक्त, खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लोहद्रावीतीक्ष्णोष्णश्चबलवह्निविवर्द्धनः॥(शोडलनि०)

अर्थ-सुहागा-तीक्ष्ण, गरम और बल तथा जठराग्निको बढानेवालाहै ।

श्वेतटङ्कणगुणाः ।

सुश्वेतटंकणस्निग्धकटूष्णकफवातनुत् ।
आमक्षयापहृच्छ्वासविषकासमलापहम्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सफेद सुहागा-स्निग्ध, कटु, उष्ण, कफवातनाशक तथा आम, क्षय, श्वास, विष, खासी और मलको हरनेवाला है ।

टंकणशोधनविधिः ।

आर्द्रंटकणमादायकाञ्जिकाम्लेविनिक्षिपेत् ।
एकरात्रात्समुद्धृत्यरौद्रयन्त्रेविभावयेत् ॥
नरमूत्रगत टंक गवां मूत्रगत तथा ।
दिनान्तेतत्समुद्धृत्यजम्बीराम्लगतकुरु ॥
जम्बीराम्लात्समुद्धृत्यनारिकेलस्यपात्रके ।

संस्कृतभाषामें टङ्कणक्षार ।
हिन्दीभाषामें सुहागा ।
बंगभाषामें सोहागा ।
मराठीभाषामें टाकणखार, टाकणक्षार ।
गुजरातीभाषामें टंकणखारियो, टंकनखूडियो ।
कर्णाटकीभाषामें टंकणखार, बिल्गिपटंकणु ।
तैलंगीभाषामें वेलिगारम ।
इंग्रेजीभाषामें बोरेक्स, बायबोरेट ऑफ् सोडा ।
Borax Biborate of soda
लैटिन्भाषामें सोडाबायबोरास । Sodae Biboras
फारसीभाषामें तिनकार ।
अरबीभाषामें बुरक ।

अथ गुणाः ।

कथितष्टङ्कणक्षारः कटूष्णः कफनाशनः ।
स्थावरादिविषघ्नश्च कासश्वासापहारकः ॥ (राजनिघण्टुः)

अर्थ-सुहागा-कटु, उष्ण तथा कफ, स्थावरादि विष, खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अपिच ।

टङ्कणं वह्निकृद्रूक्षं कफघ्नं वातपित्तकृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सुहागा-अग्निजनक रूखा, कफनाशक और वातपित्तको करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

टङ्कणो द्रावणो भेदी विषहारी ज्वरापहः ।
गुल्मामशूलशमनो वातश्लेष्महरः परः ॥ (ग० नि०)

अर्थ-सुहागा-द्रावण, धातुको पतला करनेवाला, भेदक तथा विष, ज्वर, गुल्म, आम, शूल, वात और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

मालतीतीरजः क्षारस्तीक्ष्णो वह्निप्रदीपकृत् ।
विरूक्षणोऽनिलकरः श्लेष्मघ्नः पित्तदूषकः ॥

अर्थ-सुहागा-तीक्ष्ण, जठराग्निका दीपन करनेवाला, रूक्ष, वातकारक, कफनाशक और पित्तको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

टङ्कणोऽग्निकरोरूक्षःकफघ्नोरोचनोलघुः॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ-सुहागा-अग्निकारक, कफनाशक, रोचक और हलका है ।

अपिच ।

टङ्कणोभेदकोरूक्षःकटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पित्तलोष्णोवातकरस्तिक्तस्तीक्ष्ण पटुःस्मृतः ॥
धातुद्रावीज्वरवातकफजंगमजविषम् ।
स्थावरञ्चविषवांतिवातरक्तञ्चनाशयेत् ॥
कासंश्वासंनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-सुहागा-भेदक, रूक्ष, कटु, अग्निदीपक, पित्तजनक, उष्ण, वातवर्द्धक, तिक्त, तीक्ष्ण, खारी, धातुको पतला करनेवाला तथा ज्वर, वात, कफ, जगमविष, स्थावरविष, वमन, वातरक्त, खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लोहद्रावीतीक्ष्णोष्णश्चबलवह्निविवर्द्धनः॥(शोडलनि॰)

अर्थ-सुहागा-तीक्ष्ण, गरम और बल तथा जठराग्निको बढानेवालाहै ।

श्वेतटङ्कणगुणाः ।

सुश्वेतटंकणस्निग्धकटूष्णकफवातनुत् ।
आमक्षयापहृच्छ्वासविषकासमलापहम्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सफेद सुहागा-स्निग्ध, कटु, उष्ण, कफवातनाशक तथा आम, क्षय, श्वास, विष, खांसी और मलको हरनेवाला है ।

टंकणशोधनविधिः ।

आर्द्रांटकणमादाय काञ्जिकाम्लेविनिक्षिपेत् ।
एकरात्रात्समुद्धृत्यरौद्रयन्त्रेविभावयेत् ॥
नरमूत्रगत टक गवां मूत्रगत तथा ।
दिनान्तेतत्समुद्धृत्यजम्बीराम्लगतकुरु ॥
जम्बीराम्लात्समुद्धृत्यनारिकेलस्यपात्रके ।

मरीचचूर्णसंयुक्तं क्षालयेच्छीतलाम्बुना ॥
एवं टङ्कणमादाय सर्वरोगेषु योजयेत् ।

अन्यच्च ।

टङ्कणं वह्नियोगेन स्फुटितं शुद्धतां व्रजेत् ॥ (रसेन्द्रसार०)

अर्थ-प्रथम सुहागेको लेकर कांजीमें छोड़ दे, एक रात्रि पीछे निकाल-कर रौद्रयन्त्रमें पकावे, फिर मनुष्यके मूत्रमें डालकर गोमूत्रमें डाले फिर सायंकालको निकालकर जम्बीरीनीम्बूके रसमें डाले उसमेंसे निकालकर नारियलके पात्रमें लेकर कालीमिरचके चूर्णयुक्त शीतल जलसे धोवे, इस प्रकार सुहागेको शोधकर सब रोगोंमें दे। सुहागा अग्निके संयोगसे फूल-कर शुद्ध होता है।

विवरण। सुहागेकी खान तिब्बत प्रदेशके उत्तरखण्डमें पाई जाती है, प्रायः भोटानदेशके भोटिये लोग इसको गोद मेंढल पर्वतोंसे मंगातेहैं। इसको यहीं कहीं पकातेहैं।

सैन्धव नामानि ।

सिन्धूद्भवमाणिमन्थनादेयलवणोत्तमम् ॥

अर्थ-सिन्धूद्भव, माणिमन्थ, नादेय, लवणोत्तम (सिंधीनिमक, सिंधानिमक, शीतशिव, शीतशिव, सिन्धुज, सिन्धुक, वशिर, सिन्धूदेशज, माणिमन्थ, सिन्धुमन्थज सिन्धुजन्म, सिन्धुभव, सिन्धुसम्भव, नादेय, शिव, शुद्ध, शिलासम्भव, पथ्य, माणिमन्थ, शुद्ध शीतशिव)

संस्कृतभाषामें	सैन्धव ।
हिन्दीभाषामें	सेंधानोन ।
बङ्गभाषामें	सैं धवलवण ।
मराठीभाषामें	सैंधेलोण ।
गुजरातीभाषामें	सिंधालुण ।
फारसीभाषामें	सेंधव ।
अंग्रेजीभाषामें	सिंधुज ।
इंग्लि-	इंग्लिशरॉकसॉल्ट
लैटि०	सोडियम्क्लोराइड ।
तामिलभाषामें	समलवण, इन्तुप्पु, उप्पु ।
अरबीभाषामें	मिल्हेहिन्दी ।

अस्य गुणा ।

सैन्धवलवणंस्वादुदीपनंपाचनलघु ।
स्निग्धंरुच्यंहिमवृष्यसूक्ष्मंनेत्र्यत्रिदोषहृत॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सैंधानोंन-स्वादिष्ठ, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, सूक्ष्म, नेत्रोंको हितकारी और त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

सैन्धवरुचिदवृष्यचक्षुष्यचाग्निदीपनम् ।
शुद्धस्वादुलघुस्निग्धपाचनशीतलमतम् ॥
अविदाहितुसूक्ष्मञ्चहृद्यञ्चैवत्रिदोषहम् ।
व्रणदोषमलस्तम्भहृद्रोगचैवनाशयेत्॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-सैंधानोंन-रुचिदायक, वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी अग्निप्रदीपक, शुद्ध, स्वादिष्ठ, हलका, स्निग्ध, पाचक, शीतल, अविदाही, सूक्ष्म, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक तथा व्रणदोष, मलस्तम्भ और हृदयरोगका नाशकरेहै ।

सेंधानोंन-सिंधकी ओरसे आताहै, सैंधानोंन आखके लिये अत्यन्त हितकारीहै, जिसमनुष्यका मल सूखगयाहो और दस्त न आताहो, उसको घीके साथ सैंधानोंन देनेसे तुरन्त दस्त आवेगा, सैंधानोंन तेलके साथ लगानेसे अनेकप्रकारके त्वचाके रोगोंको दूर करताहै हाथमें धारण करनेसे चर्बीहुई नसोंको छुडादेताहै । सब प्रकारके नमकोंमें श्रेष्ठ है ।

शाकम्भरीलवणनामानि ।

शाकम्भरीयवसुकरौम्लवणरौमकम् ॥

अर्थ-शाकम्भरीय, वसुक, रौमलवण, रौमक, (रोमक, गडाख्य, गडलवण, शुभ्र, पृथ्वीज, गडदेशज, गडोत्थ, महारम्भ, साम्भर, सम्भरोद्भव)

संस्कृतभाषामें	शाकम्भरीय ।
हिन्दीभाषामें	साँभरनोंन ।
बंगभाषामें	सामरनुण ।
मराठीभाषामें	साम्बरलोण, साम्भरमीठ ।
गुजरातीभाषामें	वडागरमीठ ।
कर्णाटकीभाषामें	गाडलवण, सम्भरदेशज ।
फारसीभाषामें	मिलहेअवकीर ।

अस्य गुणाः ।

शाम्भरदीपनंचोष्णकोष्ठशुद्धिकरलघु ।
किञ्चिदम्लमभिष्यदिपाकेचकटुकमतम् ॥
तीक्ष्णपित्तकरभेदिव्यवायिकफनाशकम् ।
सूक्ष्मचार्शं कफानाहमलवातांश्चनाशयेत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सांभर-दीपन, गरम, कोष्ठशोधक, हलकी, किंचित्‌अम्ल, अभिष्यन्दि, पाकमें कटु, तीक्ष्ण, पित्तकारक, भेदक, व्यवायि, कफनाशक, सूक्ष्म तथा बवासीर, कफ, आनाह, मल और वातको दूरकरै है । सांभरनमक मारवाड देशके प्रसिद्ध सांभर सरोवरमें उत्पन्न होताहै ।

समुद्रलवणनामानि ।

सामुद्रिकत्रिकूटश्चवशिरलवणाब्धिजम् ।

अर्थ-सामुद्रिक त्रिकूट, वशिर, लवणाब्धिज (वाशक, कटक, शिर, सागरज, अक्षीर, सामुद्रज, लवणोदधिसम्भव, सामुद्रिक)

संस्कृतभाषामें	समुद्रलवण ।
हिन्दीभाषामें	समुद्रनोन, पांगा ।
बंगभाषामें	करकचनुन ।
मराठीभाषामें	मीठ ।
गुजरातीभाषामें	मीठुं ।
कर्णाटकीभाषामें	चडागर लवण ।
तैलिङ्गीभाषामें	उप्पु ।
इंग्रेजीभाषामें	साल्ट । Salt
लैटिनभाषामें	सोडिआ म्युरास् । Soda Muras
फारसीभाषामें	नमक ।
अरबीभाषामें	मिल्ह शोर्ग ।

अस्य गुणाः ।

सामुद्रलवणंपाकेनात्युष्णमविदाहिच ।
भेदनमधुरंस्निग्धंशूलघ्नंनातिपित्तलम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सामुद्रनोन-किंचित् उष्ण और दाही, भेदक, मधुर, स्निग्ध, शूलनाशक और अत्यन्त पित्तकारक नहीं है ।

अन्यच्च ।

सामुद्रमधुरंपाकेसतिक्तमधुरगुरु ।
नात्युष्णदीपनभेदिसक्षारमविदाहिच ॥
श्लेष्मलवातनुत्तिक्तसरूक्षनातिशीतलम् । (भा० प्र०)

अर्थ–समुद्रनोंन–पचनेमें मधुर, तिक्त, मधुर, भारी, किंचित् उष्ण, दीपन, भेदक, क्षाररसयुक्त, अविदाही, कफकारक, वातनाशक, कडवा, रूखा और अत्यन्त शीतलभी नहीं है ।

अन्यच्च ।

सामुद्ररुचिदहृद्यमग्निदीप्तिकरंमतम् ।
केशशौक्ल्यकरभेदिह्यविदाह्विबलासकृत् ॥
पाकेतुमधुरप्रोक्तकटुतिक्तगुरुस्मृतम् ।
किञ्चिदुष्णपित्तलश्चक्षारस्निग्धचशूलनुत् ॥
वातनाशकरस्वादुऋपिभिःपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ–समुद्रनोंन–रुचिदायक, हृदयको हितकारी, बालोंको धवल करनेवाला, भेदक, अविदाहि, कफकारक, पचनेमें मधुर, कटु, तिक्त, भारी, किंचित् उष्ण, पित्तजनक, खारी, स्निग्ध, शूलनाशक, वातविनाशक और स्वादिष्ठ है ।

विवरण । समुद्रके जलको जमाकर समुद्रनोंन बनातेहैं ।

विड्लवणनामानि ।

विडविड्लवणंधूर्तंविड्गन्धकृतकतथा ॥

अर्थ–विड, विड्लवण, धूर्त, विड्गन्ध, कृतक, (काललवण, द्राविडक, खण्ड, क्षार, आसुर, सुपाक्य, खण्डलवण, कृत्रिमक, द्राविडक, पाक्य, विट)।

संस्कृतभाषामें	विड्लवण ।
हिन्दीभाषामें	विरियासचरनोंन, कटीलानोंन ।
बंगलाभाषामें	विट्नुन, ।
मराठीभाषामें	विड्लोण ।
गुजरातीभाषामें	विड्लवण ।

अस्य गुणाः ।

विडलवणमुत्क्लेदिवह्नेर्बलविवर्द्धनम् ।

मलवातामविष्टम्भशूलाटोपविबन्धनुत् (राजवल्लभ)

अर्थ-बिरियासंचरनोन-उत्क्लेदक, जठराग्निवर्द्धक, बलवर्द्धक तथा मल, वात, आम, विष्टम्भ, शूल, आटोप और विबन्धको दूर करै है ।

मतान्तर ।

विडक्षारोलघुश्चोष्णोरुच्यस्तीक्ष्णोऽग्निदीपनः ।

वातानुलोमनोरूक्षोव्यवायीशूलनाशनः ।

वातनाशकरोमेहगुल्माजीर्णविनाशनः ।

मलावष्टम्भकानाहवातहृद्रोगनाशनः ॥

जाड्यंकफञ्चदद्रूंचनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-बिरियासंचर-हलका, गरम, रुचिकारक, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, वातानुलोमन, रूक्ष, व्यवायि तथा शूल, वात, प्रमेह, गुल्म, अजीर्ण, मलावष्टम्भ, आनाह, वात, हृद्रोग, जड़ता, कफ और दादको दूर करनेवाला है ।

विवरण । विड्लवण प्रसारणीके क्षारका बनाया जाता है ।

सौवर्चलनामानि ।

अक्षसौवर्चलरुच्यदुर्गन्धशूलनाशनम् ॥

अर्थ-अक्ष, सौवर्चल, रुच्य, दुर्गन्ध, शूलनाशन, (तिलक, कृष्णलवण, तिलक, हृद्गन्ध, रोचक, पाक्य, मेचक और मधुपाक)

संस्कृतभाषामें	सौवर्चल ।
हिन्दीभाषामें	कालानोन, सौंचरनोन, सोंचरनोन ।
बंगालभाषामें	सचल लवण ।
मराठीभाषामें	पादेलोण ।
गुजरातीभाषामें	संचल ।
कर्णाटकीभाषामें	सौवर्चल ।
तैलङ्गीभाषामें	नागरसु ।
इंग्रेजीभाषामें	[illegible]
लैटिनभाषामें	[illegible]
फारसीभाषामें	नमक सियाह ।
अरबीभाषामें	मलह अस्वद् ।

अस्यगुणाः ।

कृष्णलवणवीर्योष्णरुचिदनिर्मलकटु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नंकिंचित्पित्तकरलघु॥(वि०ति०भा०)

अर्थ-कालानोंन-उष्णवीर्य्य, रुचिदायक, निर्मल, कटु तथा गुल्म, शूल और विबन्धका नाश करे है। किंचित् पित्तजनक और हलकाहै।

अन्यच्च।

सौवर्चलकटुक्षारवीर्य्योष्णविशदलघु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नंहृद्यसुरभिरेचनम् ॥
आनाहारोचकजन्तूनूर्द्धवातचनाशयेत् । (ध०नि०)

अर्थ-कालानोन-कटुरसयुक्त क्षाररसान्वित, उष्णवीर्य, विशद, हलका, हृदयको हितकारी, सुगन्धित, दस्तावर तथा गुल्म, शूल, विबन्ध, अफारा, अरुचि, कृमि और ऊर्ध्ववातका नाश करेहै।

अन्यच्च।

रुचकरोचनभेदिदीपनपाचनपरम्।
सस्नेहवातघ्नातिपित्तलविशदलघु ॥
उद्गारशुद्धिदसूक्ष्मविबन्धानाहशूलहृत्। (भा प्र)

अर्थ-कालानोन-रोचक, भेदक, दीपन, पाचक, स्नेहयुक्त, वातनाशक, अत्यन्त पित्तजनक, विशद, हल्का, डकारको शुद्ध करनेवाला, सूक्ष्म तथा विबन्ध, आनाह और शूलको निर्मूल करे है।

विवरण। यह सज्जी और मीठे नानसे बनाया जाता है।

काचलवणनामानि।

काचत्रिकूटंपाक्याह्वलवणकाचसम्भवम् ॥

अर्थ-काच, त्रिकूट, पाक्याह्व, लवण, काचसंभव (काचलवण, नील, काचोद्भव, काचसौवर्चल, नीलक, कृष्णवलण, पाकजकाचोत्थ, हयगन्ध, काललवण, कुरुविन्दकाचमल, कृत्रिम, नीलकाचोद्भव)

संस्कृतभाषामें	काचलवण।
हिन्दीभाषामें	काँचियानोंन।
वंगभाषामें	कालालोण।
मराठीभाषामें	बागडखार।
गुजरातीभाषामें	बगडोखार।

अस्य गुणाः ।

काचदीपनमत्युष्णरक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-कचियानोन-अग्निको दीपन करनेवाला, अत्यन्त उष्ण और रक्तपित्तवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

काचादिलवणरुच्यंकिंचित्क्षारंचपित्तलम् ।

दाहककफवातघ्नदीपनगुल्मशूलहृत् ॥ (राजनि०)

अर्थ-कचियानोन-रुचिकारी, कुछेक खारी, पित्तजनक तथा दाह, कफ, वात, गुल्म और शूलका नाश करैहै और दीपन है ।

विवरण । काचलवण काँचसे बनायाजाताहै ।

औद्भिदनामानि ।

औद्भिदंपांशुलवणंयज्जातंभूमितःस्वयम् ।

अर्थ-औद्भिद, पांशुलवण यह उसके नाम हैं, जो स्वयं (आपही) पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै ।

हिन्दीभाषामें रेहगवानोन ।

अस्य गुणाः ।

क्षारंगुरुकटुस्निग्धंशीतलंवातनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-रेहगवानोन-खारी, भारी, चरपरा, स्निग्ध, शीतल और वातनाशक है ।

अन्यच्च ।

औद्भिदंतीक्ष्णमुत्क्लेदिसक्षारंकटुतिक्तकम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-रेहगवानोन-तीक्ष्ण, उत्क्लेदी, खारयुक्त, चरपरा और कड़वा है ।

विवरण । रेहगवानोन नमक मारवाड़ जंगलदेशकी खारी जमीनमें उत्पन्न होताहै इसको रेह भी कहतेहैं ।

औषरकनामानि ।

औषरकंसार्वगुणसार्वरसंगल्वनगभूषरजम् ।

साम्भारंबहुलवणंचमिश्रकंनवधा (१)॥

अर्थ- औषरक, सार्वगुण, सार्वगंधरस, ऊषरज, साम्भार, बहुलवण, मिश्रक ।

संस्कृतभाषामें [illegible] ।

हिन्दीभाषामें [illegible] ।

वंगभाषामें	खारीनुन ।
मराठीभाषामें	खारादिमीठ, उपर भूमीवर पिकतें तें ।
इंग्रेजीभाषामें	कार्बोनेट आफ् सोडा । Carbonate of soda
लैटिन्भाषामें	सोडीयकार्बोनास् Sodium carbonas
फारसीभाषामें	बोरे अर्मनी ।
अरबीभाषामें	बोद्कबहलोज ।

अस्य गुणाः ।

औषरंतुपटुक्षारतिक्तवातकफापहम् ।
विदाहिपित्तकृद्ग्राहिमूत्रसंशोषकारि च ॥ (रा० नि०)

अर्थ-खारीनोन-पटु क्षार, कडवा, वातकफनाशक, दाहजनक, पित्तकारक, ग्राही और मूत्रको सुखावे है ।

विवरण। खारी नमक स्वयं खारी पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै ।

रोमकलवणगुणाः ।

रोमकंतीक्ष्णमत्युष्णंपटुतिक्तंचदीपनम् ।
दाहशोषकरंग्राहिपित्तकोपकरंपरम् ॥

अर्थ-रोमकलवण-तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, पटु, कडवा, दीपन, दाहजनक, शोषकारक, ग्राही और पित्तको कुपित करे है ।

द्रोणीलवणनामानि ।

द्रौणेयंवार्द्धेयंद्रोणीजंवारिजंचवार्द्धिभवम् ।
द्रौणीलवणंद्रौणंत्रिकटुलवणंचवसुसंज्ञम् ॥

अर्थ-द्रौणेय, वार्द्धेय, द्रोणीज, वारिज, वार्द्धिभव, द्रौणीलवण, द्रौण, त्रिकटु लवण ।

अस्य गुणाः ।

द्रौणेयलवणंपाकेनात्युष्णमविदाहि च ।
भेदनंस्निग्धमीषच्चशूलघ्नंचाल्पपित्तलम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-द्रौणीलवण-पचनेमें किञ्चित् उष्ण, अविदाही, भेदक, कुछेक स्निग्ध, शूलनाशक और अल्पपित्तजनक है ।

नरसारनामानि ।

क्षारश्रेष्ठोऽमृतक्षारश्चूलिकालवणाभिधः ।
सादरोनरसारश्चनरक्षारोविदारणः ॥

अर्थ-क्षारश्रेष्ठ, अमृतक्षार, चूल्हिकालवण, सार, नरसार, गजसार, विडारण ।

संस्कृतभाषामें	नरसार ।
हिन्दीभाषामें	नवसादर ।
बंगभाषामें	निशादल ।
मराठीभाषामें	नवसागर ।
गुजरातीभाषामें	नवसार ।
इंग्रेजीभाषामें	आमोन्य, म्योरिटम । Ammonium (sal-ammoniac)
लैटिन् भाषामें	आमोन्यम्म्यूरिआस । Ammonii Murias
अरबीभाषामें	नवसादर खुरासानी ।

अस्य गुणाः ।

पटुप्रवृत्तिशालीनां (?) क्षारगःशोथहृद्धिमः ।
यकृद्दोषेज्वरेप्लीहेशिरःशूलेऽर्बुदादिषु ॥
स्तनरोगेरक्तपित्तकासेभग्नामयेतथा ।
योनिव्यापत्सुचज्ञेयोनरसारःसुखावहः ॥

अर्थ-नवसादर-शोथनाशक, शीतल तथा यकृत् रोगमें, प्लीहारोगमें, ज्वरमें, शिरके शूलमें, अर्बुदादिकमें, स्तनरोगमें, रक्तपित्तमें, कासमें, भग्नरोगमें और योनिव्यापद्रोगमें सुखदायक है ।

अन्यच्च ।

नरसारःकटुस्तीक्ष्ण सरोव्रणविशोधनः ।
रसजारणकारीस्यादतिऽोष्णश्चगुल्मनुत् ॥
मलस्तम्भोदरशूलप्लीहाऽनाशयेत् ।

अर्थ-नवसादर-तीक्ष्ण, सारक, व्रणशोधक, रसजारणकारक, अत्यन्त उष्ण, गुल्मनाशक तथा मलस्तम्भ, उदररोग, शूल और प्लीहाका नाश करनेवाला है ।

सत्त्व नवसादरलक्षणं यथा ।

• ओपृवामादिपवन्पुनीपमम्मतागतम् ।
क्षारपाकनिपानेनत्रमारःसिद्धउच्यते (भा० प्र०)

अर्थ-इट भिग और गागर गोबरकी क्षार पार्थिवको भस्म करनेसे नरसार सिद्ध होता है ।

अस्य शोधनविधियथा।

नरसारोभवेच्छुष्कश्चूर्णतोयेविपाचित·।
दोलायन्त्रेणयत्नेनभिषग्भिर्योगसिद्धये ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ–सूखेनौसादरका चूर्ण दोलायन्त्र करके जलमें पचावे, इस प्रकार वैद्योंनें इसकी शुद्धि कही है।

विवरण। नवसादर कृत्रिम और अकृत्रिम इन भेदोंसे दोप्रकारका है जो मनुष्यके मूत्र, पुरीष अथवा पशुओंके पुरीषके क्षारका बनाया जाताहै उसको अकृत्रिम कहते हैं, दूसरा नकली खारोंसे बनाया जाताहै उसको कृत्रिम कहते हैं।

सूर्यक्षारनामानि।

सूर्यक्षारोऽर्कक्षारश्चतार्क्ष्यस्तीक्ष्णरसस्तथा।
सुवर्चिकासर्वसहोह्यौरिणश्चशिलाजतु·॥

अर्थ–सूर्यक्षार, अर्कक्षार, तार्क्ष्य, तीक्ष्णरस, सुवर्चिका, सर्वसह, औरिण, शिलाजतु।

संस्कृतभाषामें	सूर्यक्षार।
हिन्दीभाषामें	सोरा सूर्याखार, बाजी।
मराठीभाषामें	सोरा।
गुजरातीभाषामें	सुरोखार।
तैलिङ्गीभाषामें	चिट्लुभस्मसु।
इंग्रेजीभाषामें	नाइटर Nitre साल्ट पिटर Saltpter
लैटिन् भाषामें	पोटेश्यर्मनेट्रास् Potaossum Nitras
फारसीभाषामें	शोरा।
अरबीभाषामें	अबकेर।

अस्य गुणा·।

औद्भिदंलवणंतीक्ष्णमत्युष्णरेचककटु।
तिक्तमग्नेर्दीप्तिकरसूक्ष्मक्षारलघुस्मृतम्॥
दाहकृच्छ्रोपकृद्द्राहिवातनुत्पित्तकोपनम्।
प्लीहमूर्च्छामूत्रकृच्छ्रनेत्ररुग्वातरक्तनुत्॥

कुम्भकामलतुत्कासनासापाकञ्चपीटिकाम् ।
शिरःपाकंचशूलञ्च आध्मानंचैवनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सूर्यक्षार-तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, रेचक, पटु, अग्निवर्द्धक, सूक्ष्म, क्षार, लघु, दाहजनक, शोषक, ग्राहक, वातनाशक, पित्तकारक तथा प्लीहा, मूर्च्छा, मूत्रकृच्छ्र, नेत्ररोग, वातरक्त, कुम्भकामला, श्वास, नासापाक, पिटिका, शिरःपाक, शूल और आध्मानको दूरकरैहै ।

विवरण । सोराक्षार सज्जीका बनाया जाताहै ।

फेनक्षारगुणाः ।

मर्त्त्यक्षारोवस्तिशुद्धिकरःकोमलशोधनः ।
वस्त्रशुद्धिकरश्चैवचक्षुष्यः कृमिनाशकः ॥
उदावर्त्तहरश्चैवमुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-फेनक्षार-(साबुन) वस्तिशोधक, मलशोधक, वस्त्रोंको निर्मल करनेवाला, नेत्रोंका हितकारी, कृमिनाशक और उदावर्त्तरोगका नाश करैहै । साबुन समस्त संसारमें प्रसिद्ध है ।

लोणारक्षारगुणाः ।

लोणारक्षारमत्युष्णंतीक्ष्णंपित्तप्रवृद्धिदम् ।
क्षारलवणमीषच्चवातगुल्मादिदोषनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लोणारक्षार-अत्यन्त गरम, तीक्ष्ण, पित्तवर्धक, क्षारगुण, किंचित् लवणरसयुक्त तथा वात और गुल्मादि रोगविनाशक है ।

चणकाम्लकगुणाः ।

चणकाम्लकमत्यम्लंदीपनंदन्तहर्षणम् ।
लवणानुरसंरुच्यंशूलाजीर्णविबन्धनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चनाखार-अत्यन्त अम्ल, अग्निदीपन, रोचक, दन्तहर्षक, कुछ लवण रसयुक्त, रुचिकारी तथा शूल, अजीर्ण और विबन्धको दूर करैहै ।

विवरण । चनाखारके बनानेकी विधि गत पत्रोंमें लिखी है ।

शुक्तगुणाः ।

शुक्तमत्यम्लमुष्णंचदीपनंपाचनंपरम् ।
शूलगुल्मविबन्धामवातश्लेष्महरंपरम् ॥
रुचिकृत्तृष्णात्यौष्ण्यहृत्पीडानक्रिमापहम् ।

अर्थ–चूक–अत्यन्त खट्टा, गरम, दीपन, पाचक, तथा शूल, गुल्म, विवन्ध, आम, वात, कफ, वमन, तृषा, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा और मदाग्निको दूर करेहै। चूक–खट्टे अनार, नींबु, इमली, आमले आदि कितनेक पदार्थोंके रसका वनाया जाताहे।

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृतशालिग्रामनिघण्टुभूषणे भाषानुवादविभूषित अष्टवर्ग समाप्त ॥ ३ ॥

अथ गुडूच्यादिवर्गः ॥

अथ गुडूच्या उत्पत्तिः ।

अथलंकेश्वरोमानीरावणोराक्षसाधिप ।
रामपत्नीबलात्सीतांजहारमदनातुर ॥
ततस्तवलवान्रामोरिपुजायापहारिणम् ।
युतोवानरसैन्येनजघानरणमूर्द्धनि ॥
हतेतस्मिन्सुरारातौरावणेबलगर्विते ।
देवराज सहस्राक्ष परितुष्टस्तुराघवे ॥
तत्रयेवानरा केचिद्राक्षसैर्निहतारणे ।
तानिन्द्रोजीवयामाससिंचित्वामृतवृष्टिभि ॥ ६
ततोयेपुप्रदेशेषुकपिगात्रात्परिच्युता ।
पीयूषबिन्दव पेतुस्तेभ्योजातागुडूचिका ॥

अर्थ–एक समय राक्षसाधिप लंकेश्वर अभिमानी मदोन्मत्त रावण रामचन्द्रकी पत्नी सीताको बलात्कारसे हर लेगया तब बलवान् रामचन्द्रजी निज स्त्रीके हरनेवाले अपने रिपु रावणको वानराके सेनाके द्वारा रणस्थलमें जीतताभया जव वह बलगर्वित देवताओंका वैरी रावण मारागया, तब देवराज इन्द्र अत्यन्त परितुष्ट हुए और उस रणस्थलमे जो वदर असुरोंके हाथसे मारेगयेथे उनको अमृत वर्षाकर, जिलाया उस समय उन वानराके शरीरसे उछलकर अमृत जिसजिस स्थानमें गिरा, वहीं वहीं यह गिलोय उत्पन्न हुई। इस कारण इसका नाम अमृता हुआ।

गुडूचीनामानि ।



गुडूच्यमृतवल्लीचकुण्डलीचक्रलक्षणा ।
मधुपर्णीसोमवल्लीविशल्यातन्त्रीनिर्जरा ॥

अर्थ-गुडूची-अमृतवल्ली कुण्डली, चक्रलक्षणा, मधुपर्णी, सोमवल्ली, विशल्या, तन्त्री, निर्जरा (वत्सादनी, छिन्नरुहा, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, गुडूची, धारकत्वारि, पापरोहिणी, पित्तघ्नी, रसायन, गुडूची, धारा, ज्वरारि, श्यामा, कुण्डला, मधुपर्णिका, छिन्नोद्भवा, अमृतलता, रसायनी, छिन्ना, सोमनिधा, भिषक्प्रिया कुण्डलिनी, वयस्था, नागकुमारिका, छिन्नाङ्गी, चन्द्रहासा, अमृतसम्भवा, अमृतस्रवा, जीवन्ती, सोमा, चक्रपर्णिका, धीरा, नागकन्या, देवनिर्मिता, चक्राङ्गी)

संस्कृतभाषामें	गुडूची ।
हिन्दीभाषामें	गिलोय ।
बंगलाभाषामें	गुलञ्च ।
मराठीभाषामें	गुळवेल ।
गुजरातीभाषामें	गळो ।
कर्णाटकीभाषामें	अमरदवल्लि ।
तैलङ्गीभाषामें	तिप्पतिगा, तिप्पातिगे, गोधूचि ।
तामिलभाषामें	शिन्दी, अमोदि ।
फा०	गिलोई ।
अ०	गिलोई ।
इं०	गरुड़ ।
मारवाड़ी	गुडूची ।
इंग्रेजीभाषामें	टिनोस्पोरा ।

लैटिनभाषामें काक्युलस कार्ड फीलयिस । Coculuscordifolious

टिनोस्पोरा कार्डि फोलिया । Tisnosporad Corifolia

फारसीभाषामें गिलाई ।

अरबीभाषामें गिलोई ।

कन्दगुडूचीनामानि ।

अन्याकन्दोद्भवाकन्दामृतापिण्डगुडूचिका ।
बहुच्छिन्नाबहुरुहापिण्डालु·कन्दरोहिणी ॥

अर्थ–कन्दोद्भवा, कन्दामृता, पिण्डगुडूचिका, बहुच्छिन्ना, बहुरुहा और कन्दरोहिणी ।

गुडूचीगुणाः ।

ज्ञेयागुडूचीगुरुरुष्णवीर्य्यातिक्ताकषायाज्वरनाशिनीच ।
दाहार्त्तितृष्णावमिरक्तवातप्रमेहपाण्डुभ्रमहारिणीच॥(रा.नि)

अर्थ–गिलोय–भारी, उष्णवीर्य्य, कडवी, कषेली तथा ज्वर, दाह, तृषा, वमन, रक्त, वात, प्रमेह, पाण्डु और भ्रमको हरनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

गुडूचीग्राहिणीबल्यात्रिदोषघ्नीरसायनी ।
दीपनीज्वरतृट्छर्दिकामलावातपित्तनुत् ॥

अर्थ–गिलोय–मलरोधक बलकारक, त्रिदोषनाशक, रसायन, अग्निदीपक तथा ज्वर, तृष्णा, वमन, कामला और वातपित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

गुडूचीतुवरातिक्तावीर्येचोष्णाचऊषणा ।
ग्राहीरसायनीबल्यामधुराचाग्निदीपनी ॥
लघ्वीहृद्यायु·प्रदाचज्वरदाहतृषाहरी ।
रक्तदोषवमिंवातभ्रमपाण्डुप्रमेहकम् ॥
त्रिदोषकामलांचामकासकुष्ठतथाकृमीन् ।
रक्तार्शवातरक्तचकण्डूमेदविसर्पकम् ॥
पित्तकफनाशयतिघृतेनसहवातहा ।
गुडेनबद्धविट्कृत्वसितयापित्तनाशिका ॥

मधुनाकफहाप्रोक्तावातनाशातिलकैः ।
शुण्ठ्यामवातशमनीमुनिभिःपरिकीर्तिता ॥

अर्थ-गिलोय-कसेली, कडवी, उष्णवीर्य, उष्ण, मलरोधक, रसायन, बलकारक, मधुर, अग्निसंदीपक, हलकी, हृदयको हितकारी, आयुवर्धक तथा ज्वर, दाह, तृषा, रक्तदोष, वमन, वात, भ्रम, पाण्डुरोग, प्रमेह, त्रिदोष, कामला, आम, खांसी, कोढ, कृमि, रक्तार्श (खूनीबवासीर) वातरक्त, कण्डू, मेद, विषम, पित्त, और ज्वरको दूर करती है । गिलोय घृतके साथ वातको, गुडके साथ मलबद्धताको, खांडके साथ पित्तको, मधुके साथ कफको अरंडीके तेलके साथ वातरक्त और सोंठके साथ आमवातको दूर करती है ।

अन्यच्च ।

गुडूचीमधुरातिक्ताकुष्ठहृद्रोगवातनुत् ॥

अर्थ-गिलोय-मधुर, कडवी, कुष्ठरोग, हृदयरोग और वातकी नाशक है ।

अथ पत्रगुणाः ।

गुडूचीपर्णशाकन्तुवरोष्णाल्पगुरुर्मता ।
कटुस्तिक्तापाककालेमधुराचरसायनी ॥
अग्निदीप्तिकरीरूक्षाग्राहिणीचत्रिदोषहा ।
वातरक्ततृषादाहमेहकुष्ठककामलाः ॥
पाण्डुरोगनाशयतीत्यजमानाभिभाषितम् । (नि० र०)

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका शाक-कषाय, उष्ण, हलका, चरपरा, कडवा, पाकमें मधुर, रसायन, अग्निको दीपन करनेवाला, रूखा, ग्राही, मलरो-धक, त्रिदोषनाशक तथा वातरक्त, तृषा, दाह, प्रमेह, कुष्ठ, कामला और पाण्डुरोगका नाश करनेवाला है यह आत्रेयमुनि कहते हैं इसके अधिक गुण ग्रन्थान्तरोंमें देखो ।

गुडूचीसत्त्वगुणाः ।

गुडूचीसत्त्वसुस्वादुपथ्यंचपुनर्दीपनम् ।
चक्षुष्यंधातुकृन्मेध्यंवयस्थापनकारकम् ॥
वातरक्तत्रिदोषघ्नंपाण्डुजीर्णज्वरान्वमिम् ।
प्रमेहजीर्णज्वरंपित्तकामलाप्रमेहकम् ॥

अरुचिंश्वासकासौचहिक्कांचार्शक्षतथा ।
सदाहंमूत्रकृच्छ्रञ्चप्रदरसामरोगकम् ॥
नाशयेदितिसप्रोक्तपित्तमेहसशर्करम् । (रा०र०)

अर्थ–गिलोयका सत्त्व–स्वादिष्ठ, पथ्य, हलका, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, मेधाजनक, अवस्थास्थापक तथा वातरक्त, त्रिदोष, पाण्डुरोग, तीव्रज्वर, वमन जीर्णज्वर, पित्त, कामला, प्रमेह, अरुचि, श्वास, खासी, हिचकी, ववासीर, क्षय, दाह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, सोमरोग, पित्त, प्रमेह और शर्करारोगको दूर करेहै ।

कन्दगुडूचीगुणाः ।

कन्दोद्भवागुडूचीचकटूष्णासन्निपातहा ।
विषघ्नीज्वरभूतघ्नीवलीपलितनाशिनी ॥

अर्थ–कन्दगिलोय–कटु, उष्ण, सन्निपातनाशक तथा विष, ज्वर, भूत और वलीपलितविनाशक है ।

गिलोयके सत्त्व बनानेकी विधि ।

गिलोयके छोटे छोटे टुकडे करके कूट डाले और पानीमें दोदिनतक भिजोये रक्खे फिर चलनीसे छानले । दूसरे दिन उसके ऊपरका पानी सावधानीके साथ नितारदे फिर नीचेका जो गाढा जल रहजाय, उसको धूपमें सुखाले । वह सत्त्व बनजायगा ।

विवरण–गिलोयकी वेल होतीहै और वृक्षोंपर फैलजाती है । गाठोंसे दो दो भाग निकलतहै । धीरेधीरे उनकी झादरी और उनकीही जड होजातीहै । पत्ते कुछ कुछ पानकी समान और अधिक नीले होतेहैं फूल छोटा गुच्छोंमें आताहै, फल मटरकी समान होतेहैं और पकनेके समय लाल पड जातेहैं । व्यवहार–पत्ते, झादरा । मात्रा २ तोले ।

नागवल्लीनामानि ।

ताम्बूलीनागवल्लीचनागिनीनागवल्लिका ।
दिवाभीष्टापर्णलताताम्बूलिर्नागवल्लरी ॥

अर्थ–ताम्बूली, नागवल्ली, नागिनी, नागवल्लिका, दिवाभीष्टा, पर्णलता, ताम्बूलि, नागवल्लरी (नागवली, ताम्बूलवल्ली, सप्तशिरा, सप्तलता, फणिवल्ली, भुजगलता, भक्ष्यपत्रा, ताम्बूलवल्लिका, पर्णगृहाश्रया, मुखभूषण, ताम्बूल)

संस्कृतभाषामें ताम्बूलवल्ली, ताम्बूल ।
हिन्दीभाषामें नागरबेल, पान ।
बंगभाषामें पान ।
मराठीभाषामें नागवेल ।
कोंकणीभाषामें पानवेल ।
गुजरातीभाषामें नागरवेल्य, पान ।
कर्णाटकीभाषामें नागरवल्ली, पण ।
तैलिङ्गीभाषामें तामलपाकु ।
तामिलमें वेट्टिली ।
इंग्रेजीभाषामें बिटलीफ । Betel leaf
इंग्रेजीभाषामें पाईपरबिटल । Piper betel
फारसीभाषामें बर्गतंबोल ।
अरबीभाषामें तान ।

ताम्बूलगुणाः ।

ताम्बूलं कटुतिक्तमुष्णमधुरं क्षारं कषायान्वितं
वातघ्नं कृमिनाशनं कफहरं दुर्गन्धनिच्छेदनम् ।
स्त्रीसंभाषणभूषणं धृतिकरं कामाग्निसंदीपनं
ताम्बूलं विदितास्त्रयोदशगुणाः स्वर्गेऽपि ते दुर्लभाः ॥

अर्थ-पान-चरपरा, कडवा, गरम, मधुर, खारा और कषायान्वित तथा वात, कृमि, कफ और दुर्गन्धको दूर करनेवाला है। स्त्रीसंभाषणके विषयमें भूषणरूपी समझाहै तथा धारणाशक्ति और कामाग्निप्रदीप्त है। पानमें यह जो तेरह गुण विद्यमान हैं, वो स्वर्गमें भी दुर्लभ है।

अन्यच्च ।

ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम् ।
वश्यं तिक्तं कटु क्षारं रक्तपित्तकरं लघु ॥
बल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् ।(भा०प्र०)

अर्थ-पान-विशद, रुचिकारी, तीक्ष्ण, गरम, कसैला, सारक, वशीकरण, कडवा, चरपरा खार, रक्तपित्तकारक, हलका, बलकारक तथा कफ, मुखकी दुर्गन्ध मल, वात और श्रमको दूर करेंहै।

अन्यच्च ।

नागवल्लीकटुस्तीक्ष्णातिक्तापीनसवातजित् ।
कफकासहरारुच्यादाहकृद्दीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पान-चरपरा, तीक्ष्ण, कडवा तथा पीनस, वात, कफ और खासीको दूर करैहै, दाहजनक और अग्निप्रदीपकहै ।

श्रीवाटीपर्णगुणा ।

श्रीवाटीमधुरातीक्ष्णावातपित्तकफापहा ।
रसाढ्यासुरसारुच्याविपाकेशिशिरास्मृता ॥

अर्थ-श्रीवाटीपान-मधुर, तीक्ष्ण, वातपित्तकफनाशक, रसाढ्य, सुरस-युक्त, रुचिकारक और पचनेके समय शीतलहै ।

अम्लवाटीपर्णगुणा ।

स्यादम्लवाटीकटुकाम्लतिक्तातीक्ष्णातथोष्णामुखपाककर्त्री ।
विदाहपित्तास्रविकोपनीचविष्टम्भदावातनिबर्हिणीच ॥

अर्थ-अम्लवाटीपान-चरपरा, खट्टा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, मुखको पकानेवाला, दाहको उत्पन्न करनेवाला, विष्टम्भदायक और वातनिवारकहै ।

सातसीपर्णगुणा ।

सातसीमधुरातीक्ष्णाकटुरुष्णाचपाचनी ।
गुल्मोदराध्मानहरारुचिकृद्दीपनीपरा ॥

अर्थ-सातसीपान-मधुर, तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, पाचक तथा गुल्म, उद-ररोग और आध्मानको दूर करनेवालाहै, रुचिकारक और जठराग्निको दीपन करनेवाला है ।

जीर्णपर्णगुणा ।

तत्पर्णजूर्णातिरसातिरुच्यासुगन्धितीक्ष्णामधुरातिहृद्या ।
प्रदीपनापुंस्त्वकरातिबल्याविरेचनीवक्त्रसुगन्धिकारिणी ॥

अर्थ-पुरानापान-अत्यन्त रसपूरित, रुचिकारक, सुगन्धित, तीक्ष्ण, मधुर, हृदयको हितकारी, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पुंस्त्वदायक, बलकारक, दस्तावर और मुखको शुद्ध करनेवाला है ।

मालवोद्भवांगरपर्णगुणा ।

नाम्नान्याम्लमरासुतीक्ष्णमधुरारुच्याहिमादाहनु-

तिपित्तोद्रेकहराक्षुद्दीपनकरी रुच्यामुखामोदिनी ।
स्त्रीसौभाग्यविवर्द्धनीमदकरीराज्ञांसदावल्लभा
गुल्माध्माननिबन्धजिच्च कथितासामालवीतुस्थिता ॥

अर्थ-मालवेका नागरपान-अम्ल, गरम, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिकारक, शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, अग्निको दीपन करनेवाला, मलको देनेवाला, मुखमें सुगन्ध करनेवाला स्त्रियोंके सौभाग्यको बढानेवाला, नशा करनेवाला, राजाओंको सदा वल्लभ तथा गुल्म, आध्मान और विबन्धको दूर करनेवाला ।

अथ अन्ध्रपट्टलिकागुणाः ।

अन्ध्रपट्टलिकानाम कषायोष्णा कटुस्तथा ।
मलापकर्षा कण्ठस्य पित्तकृद्वातनाशिनी ॥

अर्थ-अन्ध्रदेशका पोटुली पान-कसेला, गरम, चरपरा, कण्ठके मलको निकालनेवाला, पित्तकारक और वातनाशक है ।

हेसणीपानगुणाः ।

हेसणीया च तीक्ष्णा च कथ्यते दीर्घदला च सा ।
कफवातहरा रुच्या कटुर्दीपनपाचनी ॥

अर्थ-मसुरदेशका पान-चरपरा तीक्ष्ण, इसको हिरवाणी, दीर्घपत्रों-वाला, कफवातनाशक, रुचिकारक, चरपरा, दीपन और पाचक है ।

सर्वपर्णगुणाः ।

सद्यस्त्रोटितभग्नमुत्कटरुजाजाड्यापहं दीपनं
ह्याहारोच्चयकृद्विमर्दि रुचिदं सम्मोहशान्तिप्रदम् ।
यद्वा योजनपानपापि च तरं ... चिरं जातं तु
ताम्बूलादपि सुत्तमं च निहितं दर्पं त्रिदोषापहम् ॥

अर्थ-तत्कालके तोडेहुए पानका भक्षण करना मुखरोग और जडताको दूर करे है, त्रिदोषनाशक, दाहजनक, अग्निदीपक, आहारको उत्तम करनेवाला, कफनाशक, विष्टम्भ और मदनाशक है, यही पान, बहुत दिनतक पानी सींचा हुआ होय है इसको उत्तम कहते हैं, इसके दर्पको दूर करनेवाला है और त्रिदोषनाशक है ।

कृष्णपर्णगुणाः ।

कृष्णापर्णं तिक्तमुष्णं कषायं ... दंश ... ।
शुभ्रपर्णं ... सर्वपापनाशनम् ॥

अर्थ-काला पान-कडवा, गरम, कषेला, दाह, मुखकी जडता और मलको दूरकरनेवाला है । सफेद पान-कफ वात रोगनाशक, पथ्य, रुचिकारक, जठराग्निप्रदीपक और पाचक है ।

पर्णशिरादिगुणा ।

शिरापर्णस्यशैथिल्यंकुर्य्यात्तस्यास्तुहृद्रसः ।
शीर्णंत्वग्दोषदंतास्यरोगकृत्तुसितासितम् ॥

अर्थ-पानकी शिरा-(नस) शिथिलताकारक और उन शिराओंका रस रुधिरको हरनेवालाहै । गले और सूखे पान-त्वचाके रोगोंको, दन्तरोगोंको और मुखरोगोंको उत्पन्न करेहैं ।

पर्णमूलेभवेद्व्याधिःपर्णाग्रेपापसञ्चयः ।
चूर्णपर्णंहरेदायुःशिराबुद्धिविनाशिनी ॥
आयुरग्रेयशोमूलेमध्येलक्ष्मीर्व्यवस्थिता ।
तस्मादग्रञ्चमूलञ्चमध्यपर्णस्यवर्जयेत् ॥
चूर्णाधिकहरतिगन्धमथादिपूगपूगतथाधिकद-
लचसुगन्धिकारि । ताम्बूलमुत्तममिदरसनाग्रभि-
न्नपर्णनिशास्वधिकखण्डितपर्णमह्नि ॥ (वि०ति०भा०)

भावार्थ-पानकी जडके भक्षण करनेसे अनेक प्रकारकी व्याधि उत्पन्न होतीहै, पानका अग्रभाग भक्षण करनेसे पाप सञ्चय होताहै, पानका चूर्ण आयुको हरताहै, और पानकी शिरा (नस) बुद्धिको भ्रष्ट करतीहै, अधिक चूना सुगंधिको हरताहै, अधिक सुपारी रागको उत्पन्न करती है और अधिक पान सुगन्धि करनेवालाहै । चोच टूटा हुआ पान रात्रिमें और अधिक टूटा पान दिनमें भक्षण करना उत्तमहै ।

अस्य फलगुणाः ।

नागवल्लीफलंहृद्यंसुगन्धिकफवातजित् ॥ (आ०स०)

अर्थ-नागरबेलका फल हृदयको हितकारी, सुगन्धि, कफ और वातविनाशक है ।

पर्णरहितपूगगुणाः ।

अनिधायमुखेपर्णंपूगंखादतेनरः ।

मतिभ्रंशो दरिद्री स्यादन्ते न स्मरते हरिम् ॥

अर्थ–जो मनुष्य विनापान सुपारी खावेहै, उनकी बुद्धि बिगड़जाती है और दरिद्री होजावेहै तथा अन्तमें हरिका स्मरण नहीं करते।

अन्यच्च।

विनापर्णं मुखे दत्त्वा गुवाकं भक्षयेद्यदि।
तावद्भवति चाण्डालो यावद्गङ्गां न गच्छति ॥

अर्थ–जो मनुष्य विना पानके सुपारी खावेहै, वो मनुष्य जबतक गंगा जीमें स्नान नहीं करते, तबतक चाण्डाल गिने जावेहैं।

ताम्बूलसेवननिषेधः।

न नेत्ररोगेन च रक्तपित्ते क्षते न वाते न विषे न शोषे।
मदात्यये नापि च मोहमूर्च्छाश्वासेषु ताम्बूलमुशन्ति वैद्याः ॥
(सुषेणदेव)

अर्थ–नेत्ररोग, रक्तपित्त, उरःक्षतरोग, वातरोग, विषरोग, शोष मद पानजनितरोग, मोह, मूर्च्छारोग और श्वासरोगमें ताम्बूल खाना मना निषेध है।

अन्यच्च।

ताम्बूलमहितं प्रोक्तं शरीरे रूक्षदुर्बले।
ज्वरास्यशोषपित्तास्रमदमूर्च्छादिरोगिषु ॥

अर्थ–ताम्बूल–रूखे शरीर, दुर्बल, ज्वररोग, मुखशोष, रक्तपित्त, मदरोग, मूर्छा और नेत्ररोगवाले को अहितकारी कहाहै।

अन्यच्च।

ताम्बूलं विधवाणां च यतीनां ब्रह्मचारिणाम्।
तपस्विनां च विप्रेन्द्र गोमांसेन समं स्मृतम् ॥ (ब्रह्मवैवर्तपुराणे)

अर्थ–पान–विधवा स्त्री, यती, ब्रह्मचारी और तपस्वियोंको गोमांसके समान है।

[illegible]

बिल्वनामानि ।



बिल्वोमहाकपित्थाख्यःश्रीफलोगोहरीतकी ।
पूतिवातोऽथमङ्गल्योमालूरस्त्रिशिखावपि ॥

अर्थ–बिल्व, महाकपित्थाख्य, श्रीफल, गोहरीतकी, पूतिवात, मंगल्य, मालूर, त्रिशिख, (शाण्डिल्य, शैलूप, माल्लर, कपीतन, महाकपित्य, अतिमगल्य, महाफल, शल्य, ह्यगन्ध, शलाटु, कर्कटाह्न, शैलपत्र, शिवेष्ट, पत्र श्रेष्ठ, त्रिपत्र, गन्धपत्र, लक्ष्मीफल, गन्धफल, दुरारुह, त्रिशाखपत्र, शिवद्रुम, सदाफल, सत्यफल, सुनीतिक, समीरसार, सत्यधर्म, अधरारुह, कण्टकाढ्य, सितानन, नीलमल्लिक, पीतफल, गोमहरीतकी)

संस्कृतभाषामें	बिल्व ।
हिन्दीभाषामें	बेल ।
बंगलामें	बेल, बिल्व ।
मराठीभाषामें	बेल, बेलफळ ।
गुजरातीभाषामें	बिलोबिलु ।
कर्णाटकीभाषामें	बेललु ।
तैलिङ्गीभाषामें	मारेडीपट्ठुनिल्व ।
तामिलीभाषामें	बिल्वपाझाम ।
इंग्रेजीभाषामें	बेंगालकिन्स । Bengal Kins
लैटिन्भाषामें	इगलमारमेलास । Aegle Marmelos

अस्य गुणाः ।

श्रीफलस्तुवरस्तिक्तोग्राहीरूक्षोऽग्निपित्तकृत् ।

वातश्लेष्महरो बिल्वो लघुरुष्णश्च पाचनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बेल-[illegible], कड़वा, मलरोधक, रूखा, अग्निदीपन, [illegible], वातज्वरनाशक, [illegible], हल्का, गरम और पाचक है।

अन्यच्च।

बिल्वस्तु मधुरो हृद्यः कषायोष्णो रुचिप्रदः ।
दीपनो ग्राहको रूक्षः पित्तलस्तिक्तकः कटुः ॥
गुरुः पाचनकर्त्ता च वातातीसारज्वरातिहा ।
बालबिल्वफलं स्निग्धं गुरु रुच्यं च दीपनम् ॥
ग्राहकं पाचकं तिक्तं लघु चोष्णं कषायकम् ।
शूलाममानमवर्णाय कफानिलारुनाशनम् ॥
तरुणं तु फलं बिल्वं ग्राहि दीपकमम्लकम् ॥
स्निग्धं च कटु तीक्ष्णं च उष्णं च लघु दीपनम् ।
पाचकं कफवातघ्नं शोषनाशकं हृदयप्रियम् ॥
पक्वं बिल्वं दाहकरं मधुरं गुरु दुर्जरम् ।
विष्टम्भकारि तिक्तोष्णमादयत् कटु दोषलम् ॥
दुर्जरं वातलं चाग्निमान्द्यकृदपि भिर्मतम् ।
बिल्वमूलं तु मधुरं त्रिदोषघ्नं छर्दिशूलनुत् ॥
लघु कृच्छ्रघ्नं वातघ्नं पित्तास्यनाशनम् ।
पर्णानि ग्राहकाणि स्युर्वातनाशकराणि च ॥ (नि० र०)

अर्थ-बेल-[illegible] हृदय [illegible], गरम, [illegible], [illegible], हल्का [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible] है। [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] है। [illegible], [illegible], [illegible], [illegible],

कटु, त्रिदोषकारक, दुर्जर, वातकारक और मदाग्निको उत्पन्न करनेवाला है। वेलकी जड-मधुर तथा त्रिदोष, वमन, शूल इनको नाश करनेवाली, हलकी तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ और पित्तका नाश करनेवाली है । इसके पत्ते ग्राही और वातनाशक हैं ।

अथ च पत्रगुणा ।

तत्पत्रकफवातामशूलघ्नग्राहिरोचनम् ॥

अर्थ-वेलके पत्ते-कफ, वात, आम, और शूलनाशक हैं, ग्राही और रोचक हैं ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

निहन्याद्बिल्वजपुष्पमतिसारतृषांवमिम् ॥

अर्थ-वेलके फूल-अतिसार, तृषा और वमननिवारक हैं ।

बिल्वमज्जाभवतैलगुणा ।

बिल्वमज्जाभवतैलमुष्णवातहरपरम् ॥

अर्थ-वेलका तेल-गरम और वातविनाशक है इसके अधिक गुण तैल-वर्गमें देखो ।

बिल्वपेषिकागुणाः ।

कफवातामशूलघ्नीग्राहिणीबिल्वपेषिका ॥

अर्थ-बिल्वपेशिका-(वेलका सूखा गूदा) कफ, वात, आम और शूलनाशक है तथा मलरोधक है । ॥ ६४ ॥

काञ्जिकस्थितबिल्वगुणा ।

काञ्जिकेसस्थितबिल्वमग्निसदीपनपरम् ।
हृद्यरुचिकरप्रोक्तमामवातविनाशनम् ॥

अर्थ-काञ्जीमें रक्खा हुआ वेल-अग्निको दीपन करैहै, हृदयको हितकारी है, रुचिकारी है और आमवातनाशक है ।

पक्वबिल्वस्य दोषोक्तिः।

फलेषुपरिपक्वेषुयेगुणाःसमुदाहृताः ।
बिल्वादन्यत्रविज्ञेयाबिल्वमामगुणोत्तरम् ॥ (रा०व०)

अर्थ-सर्वप्रकारके पकेहुएही फल गुणवाले होते हैं, किन्तु वेल तो कच्चाही गुणवाला होता है और पका वेल, अनेक प्रकारके दोषोंको उत्पन्न करनेवाला है ।

विवरण-इसका वृक्ष बड़ा होता है, जंगलोंमें बहुत होते हैं। इसके भिन्न एक डंठीमें तीन (त्रिपुटाकार) होते हैं । फूल गहेर और सुगन्धित होते हैं। फल गोल स्वादिष्ट और कच्चे छिलकेसे हरा होताहै, पकनेसे [illegible] पीत होतेहैं। बीजोंमें गोंद होता है। ग्रीष्म ऋतुके आरम्भमें इसके पुराने पत्ते गिरकर नवीन निकल आते हैं। और इसकी लकड़ी बहुत चिकनी होती है, चन्दनकी समान मानीजातीहै और इसकी छाल [illegible] पाचक [illegible] प्रधान औषधि है, इसके पत्तोंको पीसकर आराम लगानेसे नेत्ररोग आराम होता है। इसके पत्रपर [illegible] अरिष्ट पीनेसे [illegible] नाश होता है। [illegible] [illegible] लिये [illegible] और [illegible] नाश करनेवाला है, बहुत औषधियोंके अनुपानमें इसका व्यवहार होता है। हिन्दुस्थानके अनेक स्थानमें इसका वृक्ष पायाजाताहै। और इसमें एक बड़ा भारी गुण है कि, जो कोई इन पत्तोंको सिरपर ऊपर बांधता है, उसके सिर [illegible] आराम होते हैं। इसके अधिक गुण आगे [illegible] देखो।

गम्भारीनामानि ।

गम्भारीसर्वतोभद्राकाश्मरीमधुपर्णिका ।
श्रीपर्णीभद्रपर्णीचभद्रानागोपभद्रिका ॥

अर्थ-गम्भारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, भद्रा, गोपभद्रिका (काश्मर्य, काश्मरी, कम्भारी, कटफलिका, मधुर, महाभद्रा, कृष्णवृन्ता, [illegible], [illegible], हीर, सर्वतोभद्रिका, [illegible] पर्णी, सुभद्रा, कम्भारी, गोपभद्रा, [illegible], विदारिणी, मधुरसा, [illegible], [illegible] भद्रा, कृष्णा, [illegible], रोहिणी [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible])

संस्कृतभाषामें	गम्भारी, गंभारी ।
हिन्दीभाषामें	कुम्भेर, गम्भारी ।
बंगलामें	गामारी, गाम्भार ।
मराठीभाषामें	शिवणवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	शेवण ।
लैटिन्भाषामें	[illegible] ।
	[illegible] ।

कर्णाटकीभाषामें सीवनी ।
तैलिंगीभाषामें साल्लागुबुटीचेट्टु ।

अस्याः गुणाः ।

काश्मरीतुवरातिक्तावीर्योष्णामधुरागुरुः ।
दीपनीपाचनीमेध्याभेदिनीभ्रमशोषजित् ॥
दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा ।

अर्थ-कुम्भेर-कषेली, कडवी, उष्णवीर्य, मधुर, भारी, अग्निको दीपन करनेवाली, पाचक, मेधाजनक, दस्तलानेवाली तथा भ्रम, शोष, त्रिदोष, तृषा, आमशूल, ववासीर, विष, दाह और ज्वरको दूर करनेवाली है ।

अस्याः फलगुणाः ।

तत्फलबृंहणवृष्यगुरुकेश्यरसायनम् ।
वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धहृत् ॥
स्वादुपाकेहिमस्निग्धतुवराम्लविशुद्धिकृत् ।
हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुम्भेरका फल-पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी, केशोंको हितकारी, रसायन तथा वात, पित्त, तृष्णा, रक्तक्षय, मूत्र और विबन्धनाशक है, पचनेमें स्वादिष्ठ, शीतल, स्निग्ध, कषेला, खट्टा, शुद्धिकारक और दाह, तृषा, वात, रक्तपित्त, क्षत और क्षयरोगको नष्ट करैहै ।

अन्यच्च ।

गाम्भारिकाफलग्राहिसतिक्तमधुरगुरु ।
केश्यरसायनमेध्यशीतलदाहपित्तजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कुम्भेरका फल-मलरोधक, कडवा, मधुर, भारी, केशोंको हितकारी, रसायन, मेधाजनक, शीतल, दाह और पित्तनाशक है ।

गम्भारीगुणाः ।

श्रीपर्णीमारुतश्लेष्मशोफमेहकृमीञ्जयेत् ।

अर्थ-कुम्भेर-वात, कफ, शोफ, प्रमेह और कृमिनाशक है ।

अस्याः पुष्पगुणाः ।

तत्पुष्पमधुरशीततिक्तसंग्राहिवातलम् ॥

कषायमधुरपाके पित्तास्रग्गदापहम् ॥ (शा० नि०)

अर्थ-कुम्भेरका फल-मधुर, शीतल, कडवा, भारी, शमनकारक, कसैला, पाकमें भी मधुर तथा स्वादिष्ट और रक्तरोगको दूर करै है।

अथ मूलगुणाः।

गाम्भारीमूलमत्युष्णमहितं मानुषे पुनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुम्भेरकी जड़-अत्यन्त गरम और मनुष्योंको अहित करनेवाली है

अन्यच्च।

काश्मरी कटुका तिक्ता वीर्योष्णा तुवरा गुरुः ।
मधुरा दीपनी मेध्या पाचनी भेदिनी मता ॥
तृष्णाविषामशूलघ्नी कफशोफत्रिदोषहा ।
विषदाहज्वरास्रदोषार्शोभ्रमनाशिनी ॥
शोषनाशकरी प्रोक्ता फलं वृष्यं गुरु स्मृतम् ।
धातुवृद्धिकरं केश्यं स्वादु शीतं रसायनम् ॥
स्निग्धं बुद्धिप्रदं चाम्लं तुवरं मूत्रलं गुरु ।
मूत्रकृच्छ्ररक्तपित्तरक्तदोषामयापहम् ॥
तृषादाहक्षयवातरक्तपित्तक्षतक्षयम् ।
प्रसूनमस्याः कथितं फलमन्नातु शीतलम् ॥
मधुरा ग्राहिणी तिक्ता पाके लघ्वी तुवरा मता ।
शल्यातृष्णास्रदोषकफपित्तदाहनाशना ॥
प्रदरं नाशयत्येषा मूर्धिभिः परिकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ-कुम्भेर-कड़वी चरपरी, वीर्यमें गरम कसैली भारी, मधुर, शीतल मेधाजनक पाचक, भेदक, हृदयको हितकारी तथा, शूल आमशूल, कफ, शोथ, त्रिदोष, विष, दाह, ज्वर, रक्तविकार बवासीर भ्रम और शोषको दूर करनेवाली है। इसका फल वीर्यजनक, भारी, धातुवर्धक, केशोंको हितकारी, स्वादिष्ट, शीतल, रसायन, चिकना, बुद्धिवर्धक खट्टा, कसैला, मूत्रजनक, भारी तथा मूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त, रक्तदोष, वातरक्त, तृषा, दाह,

क्षय, वात, रक्तपित्त, क्षतक्षय और प्रदररोगका नाश करनेवालाहै । कुम्भेरके फलकी मज्जा शीतल, मधुर, ग्राही, कडवी, वातकारक, कषैली, बलकारक, वीर्यवर्द्धक तथा रक्तविकार, कफ, पित्त और प्रदररोगको दूर करनेवालीहै ।

विवरण–कुम्भेरका वृक्ष वडा होता है, पत्ते समुद्रशोष और पीपलके पत्तोंसे कुछ, कबडे २ होतेहैं, फूल पीले रगके और फलभी पीले होतेहैं। छाल सुफेद और इसमें दूध निकलताहै ।

पाटलानामानि ।

पाटलाकर्बुरामोघाफलेरुहाम्बुवासिनी ।
कृष्णवृन्ताकालवृन्ताकुम्भीतोयाधिवासिनी ॥

अर्थ–पाटला, कर्बुरा, अमोघा, फलेरुहा, अम्बुवासिनी, कृष्णवृन्ता, कालवृन्ता, कुम्भी, तोया, तोयाधिवासिनी (पाटली, काचस्थाली, कुबेराक्षी, तोयपुष्पी, ताम्रपुष्पी, कुम्भीका, सुपुष्पिका, वसन्तदूती स्थाली, स्थिरगन्धा, अम्बुवासी, कालवृन्ती,कामदूती, अलिप्रिया, मधुदूती, अलिवल्लभा, वसन्तदूती, कोकिला)

श्वेतपाटला–काष्ठपाटलानामानि ।

द्वितीयापाटलाश्वेतानिर्दिष्टाकाष्टपाटला ॥

अर्थ–श्वेतपाटला, काष्ठपाटला (श्वेतकुम्भी, श्वेतकुबेराक्षी, श्वेतफलेरुहा, काष्ठकुबेराक्षी, काष्ठफलेरुहा, काष्ठपाटलि, मुष्कक, मोक्षक, घण्टापाटलि)

संस्कृतभाषामें	पाटला, श्वेतपाटला ।
हिन्दीभाषामें	पाडरि, पाढल, सफेदपाडर, कठपाडर।
बंगलाभाषामें	पारुल, घण्टापारुल ।
मराठीभाषामें	रक्तपाडल ।
गुजरातीभाषामें	रातोफूलना पाडल, श्वेतपाडर, काकच ।
कर्णाटकीभाषामें	हादरी, बिलियहादरी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कलगोरु, कलिगोट्टुचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	पद्रि ।
उत्०	पारुंडि ।
लैटिन्‌भाषामें	बिगनोनिया सुविपोलेन्स् Bignonia suaveolens
	स्टिरियोस्परमकेलोनोइडिस् Stereospermum Chelonoides

पाटलागुणाः ।

पाटला तु रसे तिक्ता कटूष्णा कफवातजित् ।
शोफाध्मानवमिश्वासशमनी सन्निपातनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पाडल-तिक्तरसान्वित, कटु और उष्ण, कफवातनाशक तथा सूजन, अफरा, वमन, श्वास और सन्निपातनाशक है।

अन्यच्च ।

पाटलारुचिशोथास्रश्वासच्छर्दिविनाशिनी ।
नात्युष्णा तुवरा स्वाद्वी तत्पुष्पं कफवातनुत् ॥
पित्तातिसारदाहघ्नं फलं हिक्कास्रपित्तनुत् । (ध० नि०)

अर्थ-पाडल-अरुचि, सूजन, रुधिरविकार, श्वास, वमन और वृद्धिनाशक है। किञ्चित् उष्ण, कषाय, स्वादिष्ठ, इसका फूल कफ वात, पित्तातिसार और दाहनाशक, है इसका फल हिचकी और रक्तपित्तको दूर करता है।

अन्यच्च ।

पाटला कफपित्तास्रच्छर्दितृष्णारुचापहा ।
पुष्पं कषायं मधुरं शीतं पित्तकफास्रजित् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-पाडल-कफ, रक्तपित्त, वमन, तृषा और अरुचिको दूर करती है। इसका फूल-कषाय, मधुर, शीतल तथा पित्त कफ और रुधिरविकारको हरता है।

अन्यच्च ।

रक्तपाटलिरातिक्ता कटूष्णा कफवातहा ।
सन्निपातश्वासवमिशोफाध्मानाग्निनाशिनी ॥
पुष्पाणि पाटलायास्तु रुच्यानि तुवराणि च ।
रक्तनिर्गमनिर्घ्नानि कफदोषहराणि च ॥
दाहकफपित्तरोगं पित्तार्तिमास्रदाहनुत् ।
फलानि पाटलायास्तु शीतलानि गुरूणि च ॥
हिक्काश्रमातिसारघ्नं मधुराणि ज्वरापहम् ।
वातपित्तहरं रुच्यं दाहपित्तास्रनाशनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रक्तपाडल-कडवी, चरपरी, गरम, कफवातनाशक तथा

(त्रिदोप) वमन, सूजन और अफारेको दूर करे है पाडलके फूल–स्वादिष्ठ, कपेले, हृदयको हितकारी, शीतवीर्य्य तथा रक्तदोप, दाह, कफ, पित्तरोग और पित्तातिसारको हरनेवाले हैं। पाडलके फल–शीतल, भारी, कपेले, कडवे, मधुर तथा मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, हिचकी और वातके नाश करनेवाले हैं।

श्वेतपाटलागुणा ।

सितपाटलिकातिक्तागुर्व्युष्णावातदोपजित् ।
वमिहिक्काकफघ्नीचश्रमशोपापहारिका॥ (ध० नि०)

अर्थ–सफेदपाडर–कडवी, भारी, वातनाशक तथा वमन, हिचकी, कफ, श्रम और शोपको दूर करे है।

अन्यच्च ।

श्वेतातुपाटलाचोष्णातिक्तागुर्वीसुगन्धिका ।
रक्तदोपारुचिशोफश्वासतृड्वान्तिनाशिनी ॥
हिक्कांकफचवातञ्चनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।(नि० र०)

अर्थ–सफेदपाडर–गरम, कडवी, भारी, सुगन्धि तथा रक्तविकार, अरुचि, सूजन, श्वास, तृपा, वमन, हिचकी, कफ और वातका नाश करे है।

भूमिपाटलागुणा ।

भूपाटलाकटूष्णाचवल्यावीर्य्यविवर्द्धिनी ।

अर्थ–भुईपाडर–चरपरी, गरम, वलजनक, और वीयवर्द्धक है।

क्षुद्रपाटलागुणा ।

क्षुद्रातुपाटलाश्वेतास्निग्धाचव्रणशोधिनी ।
कफमेद कुष्ठविपमण्डलानिविनाशयेत् ॥

अर्थ–क्षुद्रपाडर–सफेद, स्निग्ध, व्रणशोधक तथा कफ, मेद, कुष्ठ, विप और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है।

वल्लीपाटलागुणा ।

वल्लीपाटलिकाचोष्णावातारोचकपित्तहा ।
रक्तदोपचशोफचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ–वल्लीपाडर–गरम, वात, अरोचक, पित्त, रक्तविकार और सूजनको दूर करेंहै।

(म०)—रास्नाके पत्तोंका रस निकालकर उसमें दो मासे सोंठ और दो तोले गुड़ मिलाकर देनेसे अम्लपित्त दूर होताहै ।

विवरण । पाढरका फूल लाल होताहै और दूसरी पाढरका फूल सफेद होताहै । इसके वृक्ष समान होतेहैं ।

अग्निमन्थनामानि ।

अग्निमन्थोहविर्मन्थः कर्णिकागिरिकर्णिका ।
जयाजयन्तीतर्कारीनादेयीवैजयन्तिका ॥

अर्थ-अग्निमन्थ, हविर्मन्थ, कर्णिका, गिरिकर्णिका, जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी और वैजयन्ती तथा (श्रीपर्ण, तेजोमन्थ, ज्योतिष्क, पावक, अरणि, वह्निमन्थ, मथन, जय, पावकारणि, अग्निमन्थन, तर्कारी, अग्निकेतु, श्रीपर्णी, विजया, अनन्ता, नदीजा, तनुशर, विषमान्धा, कपिपुर आदि संस्कृत)

क्षुद्राग्निमन्थनामानि ।



क्षुद्राग्निमन्थोविजयानादेयीनाग्निमन्थिनी ।
जयाजगन्धपत्रातनुपुष्पामृगानुगा ॥

अर्थ-क्षुद्राग्निमन्थ, विजया, नादेयी, अग्निमन्थिनी, जया, गन्धपत्रा, तनुपुष्पा, मृगानुगा (तन्वी, ... मधुपत्रा)

[illegible]	अग्निमन्थ अरणी [illegible] ।
हिन्दीभाषामें	अरणी, [illegible] ।
[illegible]	[illegible] ।

मराठीभाषामें	थोरऐरण, लघुऐरण, टहाकळी, नरवेल्य ।
गुजरातीभाषामें	अरणी, ऐरण ।
कर्णाटकीभाषामें	नरुवल ।
तैलिङ्गीभाषामें	नेलिचेट्ट ।
उत्कलिभाषामें	अगिवथ ।
लैटिन्भाषामें	क्लोरेड्रूनफ्लोमोईडिस । Clorodrudron Phlomodes

अग्निमन्थगुणाः ।

तर्कारीकटुकातिक्तातथोष्णानिलपाण्डुजित् ।
शोथश्लेष्माग्निमांद्यार्शोविड्बन्धामविनाशिनी॥(ध०नि०)

अर्थ–अरणी–कटु, तिक्त, उष्ण तथा वात, पाण्डुरोग, शोथ, कफ, अग्निमाद्य, अर्श, मलवद्धता और आम इत्यादि अनेक प्रकारके रोगोंको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अग्निमन्थोगुरुस्तिक्तोवातशोफामजित्सरः॥(शो० नी०)

अर्थ–अरणी–भारी, कडवी तथा वायु, सूजन और आमको जीतेहै, तथा सारकहै ।

अपिच ।

अग्निमन्थोबृहत्प्रोक्तःकटुश्चोष्णोमधुरस्मृत ।
तिक्तस्तुतुवरश्चाग्निदीपकोवातनाशन ॥
प्रतिश्यायकफशोथमर्शश्चैवामवातकम् ॥
मलरोधचाग्निमांद्यपाण्डुरोगविषतथा ॥
आमचमेदोरोगचनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ–अरणी–कटु, उष्ण, मधुर, तिक्त, कषाय, अग्निप्रदीपक, वातनाशक तथा प्रतिश्याय (जुकाम) कफ, सूजन, बवासीर, आमवात, मलरोध, मंदाग्नि, पाण्डुरोग, विष, आम और मेदोरोगको नाश करनेवाली है ।

क्षुद्राग्निमन्थगुणाः ।

लघ्वग्निमन्थस्यगुणाः प्रोक्तावृद्धाग्निमन्थवत् ।
विशेषाल्लेपनेचोपनाहेशोफेचकीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-छोटी अरणीके गुण अरणीके समान हैं, किन्तु विशेष करके इसका लेप ग्रन्थके विषय हितकारक है और यह शूलको दूर करनेवाली है।

[illegible]।

तेजोमन्थगुणा प्रोक्ताश्चाग्निमन्थसमा बुधैः ।
विशेषाद्वातशोफघ्नःप्रोक्ता·पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ (नि०र०)

अर्थ-तेजोमन्थ-(अरणीका भेद) इसके गुण अरणीके समान हैं, परन्तु विशेष करके यह वातशोथका नाश करती है।

विवरण-इसका वृक्ष होता है, पत्ते गोल और गुच्छ करकपुष्ट होते हैं, फूल सफेद होते हैं [illegible] छोटे [illegible] समान होते हैं।

श्योनाकनामानि।

श्योनाक शुकनासश्च कट्वङ्गोऽथ कटम्भर ।
मयूरजङ्घोऽरलुक प्रियजीवीकुटन्नट ॥

अर्थ-श्योनाक-शुकनास, कट्वङ्ग, कटम्भर, मयूरजंघ, अरलुक, प्रियजीवी, कुटन्नट ([illegible]) [illegible]

[illegible]

टुण्टु [illegible] दीर्घवृन्तश्च [illegible]नाशन ।
[illegible]पूतिनाशोऽपि पुण्यो मुनिद्रुमः ॥

[illegible]

[illegible]

कर्णाटकीभापामें	शोणा, शोडिलमर ।
तैलिङ्गीभापामें	पेद्दामानु ।
औत्कलीमें	फणफणा ।
पञ्जाबीमें	मुलिन ।
नेपालीमें	करुमकन्द ।
तामिलीमें	पन ।
लैटिन्‌भापामें	ओरोक्‌ सिल ईडिकम्‌ (Orocylnm ındicum

श्योनाकगुणा ।

श्योनाकस्तुवरस्तिक्तःकटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
ग्राहक'शीतलोवृष्योबलदोवातपित्तहा ॥
सन्निपातज्वरकफत्रिदोपारुचिनाशनः ।
आमवातकृमिवमीकासातीसारनाशनः ॥
तृष्णाकुष्ठनाशयतीत्येवमाहुर्मनीपिणः ।

अर्थ–शोनापाठा–कपेला, कडवा, चरपरा, जठराग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, वलदायक तथा वात पित्त, सन्निपातज्वर, कफ, त्रिदोप, अरुचि, आमवात, कृमि, वमन, खासी, अतिसार, तृपा और कुष्ठको नष्ट करेहै ।

अन्यच्च ।

टिण्टुकोवातजिद्रूक्ष शोफहाग्निवलप्रद ।
तुवर.शीतलस्तिक्तोवस्तिरोगहर.परः ॥
पित्तश्लेष्मामवातारि श्वासकासारुचीर्जयेत्‌ ।

अर्थ–टेंटु–वातविनाशक, रूक्ष, शोफनिवारक, जठराग्निवर्द्धक, वलदायक, कपाय, शीतल, तिक्त, वस्तिरोगनाशक, पित्त, कफ, वातनाशक, श्वास, कास और अरुचिनिवारकहै ।

अस्य कोमलफलगुणा ।

कोमलतुफलचास्यतुवरमधुरलघु ।
हृद्यरुच्यपाचकञ्चकण्ठयञ्चाग्निप्रदीपकम्‌ ॥

उष्णश्च कटु रूक्षाग्निगुल्मवातकफार्शनुत् ।
अरुचिं कृमिश्वासं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥

अर्थ–इसका [illegible] कसैला, मधुर, हलका, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], अग्निवर्धक, [illegible], कटु [illegible] तथा गुल्म, वात, कफ, बवासीर, अरुचि और कृमिरोगनाशक है ।

अथ तत्फलगुणाः ।

दीर्घवृन्तफलं चामं गुरु वातप्रकोपनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ–इसका कच्चा फल भारी और वायुको कुपित करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पुटपाकविधानेन श्योनाकत्वक्प्रभक्षितः ।
चिरन्तनमतीसारं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (शा० नि०)

अर्थ–सोनापाठा का पुटपाक विधिसे [illegible] खानेसे बहुत दिनका पुराना अतिसार दूर होता है ।

द्विविधश्योनाकगुणाः ।

श्योनाकयुगलं तिक्तं शीतलं च त्रिदोषजित् ।
पित्तश्लेष्मानिलास्रसन्निपातज्वरापहम् ॥ (शा. नि.)

अर्थ–दोनों प्रकारके श्योनाक–कड़वे, शीतल, त्रिदोषनाशक तथा पित्त, कफ, अतिसार, सन्निपात और ज्वरको हरनेवाले हैं ।

विवरण–[illegible]

शालपर्णीनामानि ।

शालिपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा ।
विदारिगन्धा दीर्घाङ्गी दीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥

अर्थ–शालपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीवरी, गुहा, विदारिगन्धा, [illegible]

शुभपत्रिका, सुपर्णी, शालिपत्री, शालिदला, विदारी, सालपर्णी, एकमूला, अस्तमती, शालानी, शालिका, तन्वी और कीटविनाशिनी)

संस्कृतभाषामें	शालिपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	सरिवन ।
बंगभाषामें	शालपान, शालपानी ।
मराठीभाषामें	सालवण ।
गुजरातीभाषामें	शालिपर्णी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुरुडुवोने ।
तैलिङ्गीभाषामें	शीयाकुपना, सप्पाकुपोवा ।
औत्कलीभाषामें	शारपाणि ।
लैटिन्भाषामें	डेस्मोडियर्गेजेटिकम्। Desmodium Gangetcum
	डेस्मोडियम् ट्रायल्फोरम् ।

अस्या गुणा ।

शालिपर्णीगरच्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित् ।
शोपदोपत्रयहरीबृंहण्युक्तारसायनी ।
तिक्ताविपहरीस्वाद्वीक्षतकासकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-सरिवन-विप, वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और त्रिदोपनाशक है तथा पुष्टिजनक, रसायन, कडवी, विपनाशक, स्वादिष्ठ, क्षत, कास और कृमिरोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

शालिपर्णीरसेतिक्तागुर्व्युष्णाधातुवर्धिका ।
रसायनीस्वादुवृष्याविपमज्वरवातहा ॥
मेहार्शःशोथसन्तापज्वरश्वासविपकृमीन् ।
त्रिदोपशोपच्छर्दिघ्नीक्षतकासातिसारहा ॥ (नि०र०)

अर्थ-सरिवन-तिक्तरसान्वित, भारी गरम, रसायन, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, वीर्यजनक तथा विपमज्वर, वात, प्रमेह, ववासीर, सूजन, सन्तापज्वर, श्वास, विप, कृमि, त्रिदोप, शोप, वमन, क्षत, खासी और अतिसारको दूर करैहै ।

उष्णश्चकटुकश्चाग्निगुल्मवातकफार्शोनुत् ।
अरुचिंचकृमींश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-इसका कच्चा फल कषेला, मधुर, हलका, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, पाचक, कण्ठको हितकारक, अग्निसंदीपक, गरम, कटु और तथा गुल्म, वात, कफ, बवासीर, अरुचि और कृमिरोगनाशक है।

अस्य तरुणफलगुणाः ।

दीर्घवृन्तफलंचामगुरुवातप्रकोपनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसका तरुण फल-भारी और वातको कुपित करनेवाला है।

अन्यच्च ।

पुटपाकविधानेनरसोनिष्कास्यभक्षित ।
चिरंतनमतीसारंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शोनाकका रस पुटपाककी विधिसे निकालकर उस रसको पीनेसे बहुत दिनोंका पुराना अतिसार दूर होता है।

द्विविधश्योनाकगुणाः ।

श्योनाकयुगलतिक्तंशीतलश्चत्रिदोषजित ।
पित्तश्लेष्मातिसारघ्नंसन्निपातज्वरापहम् ॥ (रा नि)

अर्थ-दोनों प्रकारके श्योनाक-कडवे, शीतल, त्रिदोषनाशक तथा पित्त, कफ, अतिसार, सन्निपात और ज्वरको हरनेवाले हैं।

विवरण-श्योनाकका वृक्ष बहुत ऊंचा होताहै, इसकी लम्बी लम्बी तलवारकी समान दो दो फुटकी होतीहैं, फलीके भीतर रुई और दाने निकलतेहैं एक दूसरे प्रकारका श्योनाक होताहै। इसका वृक्ष भली किसे मधुश्योणाकी समान होताहै।

शालिपर्णीनामानि ।

शालिपर्णीस्थिरासौम्यात्रिपर्णीपीवरीगुहा ।
विदारिगन्धादीर्घांघ्रिर्दीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥

अर्थ-शालिपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीवरी, गुहा, विदारिगन्धा, दीर्घांघ्रि, दीर्घपत्रा, अंशुमती (मुद्ला, गुवर्गी, कुम्भ, ... गुर्विका, दीर्घमूला, ... , ... , ... , ... , सुभा, ... , ... , सुभगा, देवी, ... , ... , ... , ... ,

शुभपत्रिका, सुपर्णी, शालिपत्री, शालिदला, विदारी, सालपर्णा, एकमूला, अरवमती, शालानी, शालिका, तन्वी और कीटविनाशिनी)

संस्कृतभापामें	शालिपर्णी ।
हिन्दीभापामें	सरिवन ।
वगभापामें	शालपान, शालपानी ।
मराठीभापामें	सालवण ।
गुजरातीभापामें	शालिपर्णी ।
कर्णाटकीभापाम	मुरुलुवोने ।
तैलिङ्गीभापामें	शीयाकुपना, सप्पाकुपोवा ।
औत्कलभापामें	शारपाणि ।
लैटिन्भापामें	डेस्मोडियगेंजेटिकम्। Desmodium Gangetcum
	डेस्मोडियम् ट्रायफ्लोरम् ।

अस्या गुणाः ।

शालिपर्णीगरच्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित् ।
शोपदोपत्रयहरीबृहण्युक्तारसायनी ।
तिक्ताविपहरीस्वाद्वीक्षतकासकृमिप्रणुत् ।

अर्थ–सरिवन–विप, वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोप और त्रिदोपनाशकहै तथा पुष्टिजनक, रसायन, कडवी, विपनाशक, स्वादिष्ठ, क्षत, कास और कृमिरोगको हरनेवालीहै ।

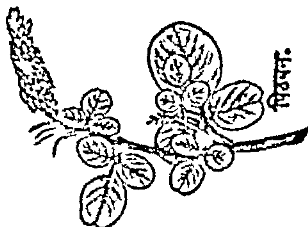
अन्यच्च ।

शालिपर्णीरसेतिक्तागुर्व्युष्णाधातुवर्धिका ।
रसायनीस्वादुवृष्याविपमज्वरवातहा ॥
मेहार्शःशोथसन्तापज्वरश्वासविपक्रमीन् ।
त्रिदोपशोपच्छर्दिघ्नीक्षतकासातिसारहा ॥ (नि०र०)

अर्थ–सरिवन–तिक्तरसान्वित, भारी, गरम, रसायन, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, वीर्यजनक तथा विपमज्वर, वात, प्रमेह, ववासीर, सूजन, सन्तापज्वर, श्वास, विप, कृमि, त्रिदोप, शोप, वमन, क्षत, खासी और अतिसारको दूर करैहै ।

विवरण-शालिपर्णीका क्षुप होताहै, एक एक डंडीमें तीन २ पत्ते होतेहैं और उसमें बहुत छोटीफलिय होतीहैं ।

पृश्निपर्णीनामानि ।



पृश्निपर्णीपृथक्पर्णीतन्वीक्रोष्टुकपुच्छिका ।
त्रिपर्णीपूर्णपर्णीचकलसीसिंहलांगुली ॥

अर्थ-पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, तन्वी, क्रोष्टुकपुच्छिका, त्रिपर्णी, पूर्णपर्णी, कलसी और सिंहलाङ्गुली (चित्रपर्णी, अंघ्रिवल्लिका, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी, गुहा, पिष्टपर्णी, लाङ्गली, क्रोष्टुपुच्छिका, कलशी, क्रोष्टुकमेखला, दीर्घा, शृगालवृन्ता, सिंहपुच्छिका, दीर्घपत्रा, अतिगुहा, घृष्टिला, चित्रपर्णिका, कलशि, क्रोष्टुपुच्छी, पृश्नि, पृथक्पत्नी, चक्रकुल्या, चक्रपर्णी, शीर्णमाला, महागुहा, शृगालविन्ना, धमनी, मेखला, लाङ्गलिका, मृगपर्णी, दीर्घपर्णी, सिंहपुच्छी, पृष्टिपर्णी, अंघ्रिपर्णी, धावनी, विष्णुपर्णी)

संस्कृतभाषामें	पृश्निपर्णी, पृष्टिपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	पिठवन, पिठोनी डाबरा, दौंग, पृश्निपर्णी ।
बंगभाषामें	चाकुले, चाकुलिया ।
मराठीभाषामें	पीठवण ।
गुजरातीभाषामें	पृष्टिपर्णी ।
कर्णाटकीभाषामें	[illegible], [illegible] ।
तैलङ्गीभाषामें	[illegible] ।
अरबीमें	[illegible] ।
लैटिनभाषामें	उरेरिया लेगोपोडिअइडिस । डेस्मोडियम [illegible] ।
	[illegible]

पृश्निपर्णीगुणाः ।

पृश्निपर्णीत्रिदोषघ्नीवृष्योष्णामधुरासरा ।
हन्तिदाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमीन् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–पिठवन– त्रिदोषनाशक, वीर्यजनक, गरम, मधुर, सारक तथा दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, तृषा और वमननिवारकहै ।

अन्यच्च ।

पृष्टिपर्णीकटूष्णाचतिक्तातीसारकासनुत् ।
वातरक्तज्वरोन्मादव्रणदाहविनाशिनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ–पिठवन–कटु, उष्ण, तिक्त तथा अतिसार, खासी, वातरक्त, ज्वर, उन्माद, व्रण और दाहनाशकहै ।

शालपर्णीपृश्निपर्ण्योर्गुणाः ।

शालपर्णीपृश्निपर्णीग्राहिणीकफवातजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ–शालपर्णी और पृश्निपर्णी, ग्राही और कफपित्तनाशक हैं ।

विवरण । पिठवन पश्चिम और वगदेशमें अधिकतासे उत्पन्न होती है, दक्षिण देशमें दिखाई नहीं देती । पत्ते गोल वेलदार होते हैं, फूल गोल सपेद कुछ नीले जटायुक्त होतेहैं, । मात्रा तीन आनेभारि ।

व्यवहार–जड । परन्तु अल्पमूल्य होनेसे सर्वदेशान्तरोंमें इसके वेलकाही व्यवहार होताहै ।

बृहतीनामानि ।

वृहतीमहतीसिंहीप्रसहाहिंगुलीकुली ॥
अक्रान्ताक्षुद्रवार्ताकीरक्तापाकीलतातथा ।

अर्थ–बृहती महती, सिंही, प्रसहा, हिंगुली, कुली, अक्रान्ता, क्षुद्रवार्ताकी, रक्तपाकी, लता (बृहतिका, क्रान्ता, वार्त्ताकी, सिंहिका, राष्ट्रिका, स्थूलकण्ठा, क्षुद्रभण्टा, भण्टाकी, महोटिका, बहुपत्री, कण्ठतनु, कण्टालु, कटफला, डोवडी, वनवृन्ताकी, बृहतिका, पारावेदी)

संस्कृतभाषामें	बृहती, वार्त्ताकी ।
हिन्दीभाषामें	कटाई, वरहटा ।
बंगभाषामें	व्याकुड, तित्‌बेगुन ।
मराठीभाषाम	थोरडोरली ।

गुजरातीभाषामें	उभीभोरिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामें	हेग्गुळु ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दामुलेगा, कुरुमाना ।
तामिलीभाषामें	पेकन्नुण्ण ।
लैटिनभाषामें	सोलेनमजेक्वीनीआई । Solanum Jequini ।
	सोलेनमइंडिकम । Solanum Indicum
फारसीभाषामें	उरूतरगार, बादञ्जानुजगर्दा ।
अरबीभाषामें	बादुञ्जानुजगर्दा ।

बृहतीगुणाः ।

बृहती ग्राहिणी हृद्या पाचनी कफवातहृत् ।
कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ॥
उष्णा कुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमांद्यजित् (भा० प्र०)

अर्थ-बडीकटाई-मलरोधक, हृदयको हितकारी, पाचक, कफवातनाशक, कटु, तिक्त तथा मुखकी विरसता, मल और अरुचिनाशक है, गरम है और कोढ, ज्वर, श्वास, शूल, खांसी और मन्दाग्निको दूर करे है।

अन्यच्च ।

बृहती कटुतिक्तोष्णा वातजिज्ज्वरहारिणी ।
अरोचकामकासघ्नी श्वासहृद्रोगनाशिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कटाई-कटु, तिक्त, गरम, तथा वात, ज्वर, अरुचि, आम, खांसी, श्वास और हृदयरोगका नाश करनेवाली है।

अन्यच्च ।

बृहती कटुका चोष्णा तिक्ता हृद्या च पाचिका ।
ग्राहिण्यग्नेर्दीप्तिकरी कफवातज्वरापहा ॥
कुष्ठचारोचकच्छर्दिश्वासं कासं कृमींस्तथा ।
मुखवैरस्यमल्लासं कण्डूशूलामदोषहा ॥
हृद्रोगं चाग्निमान्द्यं च नाशयेदिति कीर्तिता ।

अर्थ-कटाई-कटु, उष्ण, तिक्त, हृद्य, पाचक मलरोधक अग्निदीपक तथा कफ वात, ज्वर, कुष्ठ, अरोचक, वमन, श्वास, कास, कृमि

मुखकी विरसता, हृल्लास, कण्डू, शूल, आमदोष, हृदयरोग और अग्निमान्धका नाश करे है।

भन्या' फलगुणा'।

फलानिबृहतीनांचकटुतिक्तलघूनिच।
कण्डूकुष्ठकृमिघ्नानिकफवातहराणिच ॥

अर्थ-बृहतीके फल-कटु, तिक्त, लघु, कण्डू, कुष्ठ, कृमि, कफ और वातनाशक हैं।

क्षुद्रबृहतिकागुणा'।

लघ्वीबृहतिकावातश्वासशूलकफापहा।
अग्निमांद्यज्वरछर्दिहृद्रुगामंचनाशयेत् ॥

अर्थ-क्षुद्रबृहती-वात, श्वास, शूल, कफ, मंदाग्नि, ज्वर, वमन, हृदयरोग और आमनाशक है।

श्वेतबृहतीगुणा'।

श्वेताबृहतिकारुच्याकफवातविनाशिनी।
अजनान्नेत्ररोगघ्नीगुणास्त्वन्येतुपूर्ववत् ॥

अर्थ-सफेदबृहती-रुचिकारक, कफवातविनाशक और अजनके योगसे अनेक प्रकारके नेत्ररोगोंको नाश करतीहै। शेष गुण बृहतीकी समान जानने।

बृहतीभेदगुणा'।

अन्याबृहतिकातिक्ताकट्वीचोष्णाचपित्तला।
रुक्षारुच्याभेदिकाचपाचिन्यग्निप्रदीपनी ॥
कफवातहराप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभि'। (नि०र०)

अर्थ-दूसरे प्रकारकी कटाई-कडवी, चरपरी, गरम, पित्तजनक, रूखी, रुचिकारी, भेदक, पाचक, अग्निप्रदीपक, कफवातनाशकहै।

विवरण। बृहतीका क्षुप जगलमें होताहै इसमें काटे बहुत कम होतेहै, इसके पत्ते बैगुनकेसे होते हैं, फल बडे बडे आमलेकी समान चितले और पीले होतेहैं।

कण्टकारीनामानि।

कण्टकारीकुलीक्षुद्राकामघ्नीकण्टकारिका।
स्पृहीधावनिकाव्याघ्रीदुस्पर्शादुष्प्रधर्षिणी ॥

कटेरी.

अर्थ-कण्टकारी, क्षुद्री, क्षुद्रा, कासघ्नी, कण्टकारिका, स्पृही, धावनिका, व्याघ्री, दुःस्पर्शा, दुष्प्रधर्षिणी (कण्टश्रेणी, निदिग्धिका, धर्षी, मनोहिनी, राष्ट्रिका, अनाक्रान्ता, भण्टाकी, सिंही, कुलि, कण्टकिनी, निदिग्धा, धावनी, क्षुद्रकण्टिका, बहुकण्टा, क्षुद्रफला, कण्टालिका, चित्रफला)

संस्कृतभाषामें कण्टकारी ।
हिन्दीभाषामें कटेरी, लघुकटाई, भटकटैया, रेंगनी ।
बंगभाषामें कण्टकारी ।
मराठीभाषामें रिंगणी, भुईरिंगणी, लघुरिंगणी ।
गुजरातीभाषामें भेटीभोरिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामें नेलगुळ्ळु ।
तैलङ्गीभाषामें नेलमुलगा, वाकुडिचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें कण्टमारिष ।
लैटिनभाषामें सोलेनमजेन्थोकार्पम Solanum Xanthocarpum

कण्टकारीगुणाः ।

कण्टकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः ।
रूक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान् ॥
निहन्ति पीनसं शोषं पार्श्वपीडाकृमिहृदामयान् । (भा० प्र०)

अर्थ-कटेरी-दस्तावर, कड़वी, चरपरी, अग्निदीपक, हलकी गरम, पाचन

पाचक तथा खासी, श्वास, ज्वर, कफ, वात, पीनस, पार्श्वपीडा और हृद-
यरोगका नाश करैहै ।

अन्यच्च ।

कण्टकारीकटूष्णाचदीपनीश्वासकासजित् ।
प्रतिश्यायार्त्तिदोपघ्नीकफवातज्वरार्तिनुत्॥ (रा०नि०)

अर्थ–कटेरी–चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक तथा श्वास, खासी, प्रतिश्याय, कफ, वात और ज्वर नाशक है ।

अपिच ।

कटेरीकटुकाचोष्णादीपन्यग्नेश्चभेदिका ।
कटीरूक्षापाचनीचलघ्वीतिक्ताचसारिका ॥
श्वासंकासकफवातपीनसंचज्वरजयेत् ।
हृद्रोगारुचिकृच्छ्रघ्नीपार्श्वशूलस्यनाशिनी ॥
आमकृमींश्चशूलञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि०र०)

अर्थ–कटेरी–चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक, भेदक, कडवी, रूखी, पाचक, हलकी, तिक्त, सारक तथा श्वास, खासी, कफ, वात, पीनस, ज्वर, हृदयरोग, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, पार्श्वशूल, आम, कृमि और शूलका नाश करनेवाली है ।

फलतस्याः कटु· पाके रसेचकटुकभवेत् ।
शुक्रस्यरेचनभेदितिक्तपित्ताग्निकृल्लघु ॥

अर्थ–कटेरीके फल–पचनेमें चरपरे और रसमें भी चरपरे हैं, शुक्रको दूर करनेवाले, भेदक, कडवे, पित्तजनक, अग्निवर्द्धक और हलके हैं।

अन्यच्च ।

कण्टकारीफलतिक्तकटुकभेदिपित्तलम् ।
हृद्यचाग्नेर्दीप्तिकरलघुवातकफापहम् ॥
कण्डूश्वासज्वरकृमिमेहशुक्रविनाशनम् ॥

अर्थ–कटेरीके फल–कडवे, चरपरे, भेदक, पित्तकारक, हृदयको हित-कारी, अग्निदीपक, हलके, वातकफनाशक तथा कण्डू, श्वास, ज्वर, कृमि, प्रमेह और वीर्यविनाशक हैं ।

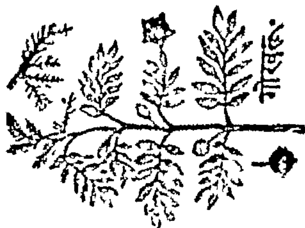
[illegible] ।

लक्ष्मणाकटुकाचोष्णाचक्षुष्याचाग्निदीपनी ।
गर्भस्थापनकर्त्रीचपारदस्यनियामिका ॥
रुचिकृत्कफवातानांनाशिनीपरमामता ।
शेषाश्चास्या गुणाः प्रोक्ताः फलस्यापिचपूर्ववत् ॥

अर्थ-सफेद कटेरी-चरपरी, गरम, नेत्रोंको हितकारी, अग्निदीपक, गर्भ स्थापक, पारेको बाधनेवाली, रुचिकारक तथा कफ और वातका विनाश करनेवालीहै । इसके शेष गुण और इसके फलके शेष गुण कटेरीके समान जानने । व्यवहार-मूल, फल । मात्रा १ मासेकी ।

विवरण । कटेरीके क्षुप छत्तेसे पृथ्वीपर सर्वत्र होतेहैं । फूल बैंजनी और केशर पीले रंगकी होती है । पत्ते चिकने और अत्यंत कांटेदार होते है । फल चिकने कच्ची अवस्थामें हरे और पकने पर पीले पडजातेहैं । दूसरी सुफेद फूलकी कटेरीभी इसीमाफिक होती है ।

गोक्षुरनामानि ।



पलङ्कषात्विक्षुगन्धाश्वदंष्ट्रास्वादुकण्टका ।
गोकण्टकोगोक्षुरकोवनशृङ्गाट इत्यपि ॥

अर्थ-पलङ्कषा, इक्षुगन्धा, श्वदंष्ट्रा, स्वादुकण्टका, गोकण्टक, गोक्षुरक, वनशृङ्गाट, त्रिकण्ट ([illegible], गोकण्ट, त्रिकण्टक, [illegible], [illegible], गोखरू, गोखुर, त्रिकण्टक, गोक्षुर, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], इक्षुगन्धिका, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible])

क्षुद्रगोक्षुरनामानि ।

क्षुद्रोपरोगोक्षुरकस्त्रिकण्टक.कण्टीपडंगोबहुकण्टकःक्षुरः ।
गोकण्टक.कण्टफल.पलकषाक्षुद्रक्षुरोभक्षटकश्चणद्रुमः ॥
स्थलशृङ्गाटकश्चैववनशृङ्गाटकस्तथा ।
इक्षुगन्धःस्वादुकण्ट.पर्य्यायाःषोडशस्मृताः ॥

अर्थ–क्षुद्रगोक्षुर, त्रिकण्ट, कण्टी, षडङ्ग, बहुकण्टक, क्षुर, गोकण्टक, कण्टफल, पलकषा, क्षुद्रक्षुर, भक्षटक, चणद्रुम, स्थलशृङ्गाटक, वनशृङ्गाटक, इक्षुगन्ध, स्वादुकण्ट यह सोलह नाम क्षुद्रगोखुरुके हैं ।

संस्कृतभाषामें	गोक्षुर, क्षुद्रगोक्षुर ।
हिन्दीभाषामें	गोखुरु, छोटे गोखरु ।
बंगभाषामें	गोखरि ।
मराठीभाषामें	सराटे, लहान गोखरु ।
गुजरातीभाषामें	गोखरु, उभो बेठो बेजातनो छे ।
कर्णाटकीभाषामें	बेडितीसराटीदोड्डनेग्गिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पाल्लेरु ।
औत्कलीभाषामें	गोखरा ।
लैटिन्भाषामें	पेडेलयम्युरेक्स (बडा) ट्रिब्युलसटेरेसट्रीस (छोटा) Pedalum Murew Terrebulus Terrestris

ट्रिब्युलसपेलटस (सिन्धुकागोखरू) Tribulas alatus

फारसीभाषामें	तुख्मेखार खस्क ।
अरबीभाषामें	बजरुल खस्क, बकलतलखार, खसूक ।

द्विविधगोक्षुरगुणाः ।

स्यातामुभौगोक्षुरकौसुशीतलौबलप्रदौतौमधुरौचबृंहणौ ।
कृच्छ्राश्मरीमेहविदाहनाशनौरसायनौतत्रबृहद्गुणोत्तरः ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ–दोनोंप्रकारके गोखुरु–शीतल, बलकारक, मधुर, बृंहण तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह और दाहनाशक हैं, रसायन हैं, इनमें बड़ा गोखुरु अधिक गुणवाला है ।

अन्यच्च ।

गोक्षुरः शीतलो बल्यो मधुरो बृंहणो मतः ।
वस्तिशुद्धिकरो वृष्यः पौष्टिकश्च रसायनः ॥
अग्निदीप्तिकरः स्वादुर्मूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः ।
दाहमेहश्वासकासहृद्रोगार्शविनाशनः ॥
वस्तिवातत्रिदोषघ्नः कुष्ठशूलनाशयेत् ।

अर्थ-गोखरू-शीतल, बलकारक, मधुर, बृंहण, वस्तिशोधक, वीर्य वर्द्धक, पुष्टिकारक, रसायन, अग्निदीपक, स्वादिष्ठ, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, श्वास, खांसी, हृद्रोग, बवासीर, वस्तिवात, त्रिदोष, कुष्ठ और शूलको नष्ट करे है ।

अपिच ।

गोक्षुरो मूत्रकृच्छ्रघ्नो बल्यो वृष्यो निलापहः ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गोखरू-मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक बलकारक, वीर्यवर्धक और वात-विनाशक है ।

अथ शाकगुणाः ।

तिक्तं गोक्षुरकं वृष्यं शाकं स्रोतोविशोधनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-गोखरूके पत्तोंका शाक-तिक्तरसान्वित, वीर्यजनक और स्रोत विशोधक है ।

अथ बीजगुणाः ।

बीजं गोक्षुरकं शीतं मूत्रलं शोषवारणम् ।
वृष्यमायुष्करं शुक्रमेहकृच्छ्रविनाशनम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

गोखुरके बीज-शीतल, मूत्रजनक, शोषनिवारक, वृष्य, आयुवर्द्धक तथा शुक्र, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रको दूर करनेवाले हैं ।

अथ क्षारगुणाः ।

क्षारस्तु गोक्षुरस्योक्तो मधुरः शीतलो मतः ।
स्रोतोविशोधनश्चैव वातघ्नो वृष्यपदः ॥ (नि० र०)

अर्थ-गोखरूका क्षार-मधुर, शीतल, स्रोतोविशोधन, वातनाशक और वीर्यवर्द्धक है ।

विवरण । गोक्षुर दो जातिके होतेहैं, एक पहाडी दूसरा देशी । पहाडी गोखरुका क्षुप होताहै, फूल पीला और सफेद होता है, पत्तेभी किंचित् सफेद होते हैं, फलके चार कोनोंके ऊपर एक कांटा होता है। देशी गोखरुका पृथ्वीके ऊपर छत्ता होता है, पत्ते चनेकी समान होते हैं, फूल पीला होताहै, इसके फलमें छः कांटे होते हैं । मात्रा ६ मासेकी ।

पञ्चमूलगुणा ।

पञ्चमूलमिदह्रस्वबृंहणबलवर्द्धनम् ।
कषायतिक्तकनातिशीतोष्णसर्वदोषजित् ॥

अर्थ–ह्रस्वपञ्चमूल–पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कषायरसान्वित, तिक्तरसस-युक्त, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त गरम और त्रिदोषनाशक है ।

बृहत्पचमूलगुणा

पचमूलमहत्तिक्तंकषायकफवातनुत् ।
मधुरश्वासकासघ्नमुष्णलघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ–बृहत्पचमूल–तिक्त, कषाय, कफवातनाशक, मधुर, श्वासनिवारक, कासनाशक, उष्ण, लघु और अग्निदीपक हैं ।

दशमूलगुणा ।

दशमूलत्रिदोषघ्नश्वासकासशिरोरुज ।
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–दशमूल–त्रिदोष, श्वास, खासी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, अनाह, पार्श्वपीडा और अरुचिको हरनेवालाहै । अधिक दशमूलके गुण मिश्रवर्गमें देखो ।

जीवन्तीनामानि ।

जीवन्तीजीवनीजीवाजीवदाचसुखकरी ।
रक्ताङ्गीप्राणदाभद्रामङ्गल्यामृगराटिका ॥

अर्थ–जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवदा, सुखङ्करी, रक्ताङ्गी, प्राणदा, भद्रा, मङ्गल्या, मृगराटिका (जीवनीया, स्रवा, मधुस्रवा मङ्गल्यनामधेया, पयस्विनी, जीव्या, जीवदात्री, शाकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, क्षुद्रजीवा, यशस्या, शृङ्गाटी, जीवपृष्ठा, काञ्जिका, शशशिम्बिका, सुपिंगला, पुनर्भद्रा, मधुश्वासा जीवयूपा, जीवपत्री, जीवपुष्पी, जीववर्द्धिनी, यशस्करी)

संस्कृतभाषामें	जीवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	जीवन्ती (डोडी)
बंगभाषामें	जीवई, जीयाती, जीवन्ती ।
मराठीभाषामें	जीवंती ।
गुजरातीभाषामें	गडाडडी, वाडगी ।
कर्णाटकीभाषामें	हिरियाहालि ।

अस्या गुणाः ।

जीवन्तीमधुराशीतारक्तपित्तानिलापहा ।
क्षयदाहज्वरान्हन्तिकफवीर्य्यविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जीवन्ती-मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह, और ज्वरका नाश करनेवाली है तथा कफ और वीर्यको बढानेवाली है ।

अन्यच्च ।

चक्षुष्यासर्वदोषघ्नीजीवन्तीमधुराहिमा ॥ (आ० सं०)

अर्थ-जीवन्ती-नेत्रोंको हितकारी, त्रिदोषनाशक, मधुर और शीतल है ।

अपिच ।

जीवन्तीश्वासकासघ्नीस्वर्य्याचक्षयनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-जीवन्ती-श्वास और खांसीको दूर करनेवाली है, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाली है और क्षयरोगका क्षयकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

जीवन्तीशीतलामधुरीस्निग्धास्त्राहीरसायनी ।
चक्षुष्याग्राहिकाबल्यालघ्वीचाग्निविवर्द्धिनी ॥
वृष्याकफकरीमूत्रबन्धिनीरक्तपित्तहा ।
वातक्षयज्वरंदाहंनेत्ररोगंत्रिदोषकम् ॥
रक्तदोषभूतशाखापित्तनेत्रविनाशनम् ।
फलंचास्याधातुवृद्धिकारकमधुरंगुरु ॥

अर्थ-जीवन्ती-शीतल, मधुर, स्निग्ध, ग्राहि, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, बलदायक, हलकी, धातुवर्द्धक, दीपनकर्त्ता, ... धातुको रोकनेवाली तथा रक्तपित्त, दाह, क्षय, ज्वर, दाह, नेत्ररोग त्रिदोष

रक्तविकार, भूतबाधा और पित्तका नाशकरे है। इसका फल-धातुवर्धक मधुर और भारी है।

बृहज्जीवन्तीनामानि ।

जीवन्त्यन्याबृहत्पूर्वापुत्रभद्राप्रियकरी ॥
मधुराजीवपुष्पाचबृहज्जीवायशस्करी ।

अर्थ-बृहज्जीवन्ती, पुत्रभद्रा, प्रियकरी, मधुरा, जीवपुष्पा, बृहज्जीवा, यशस्करी।

संस्कृतभाषामें	बृहज्जीवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	बडीजीवन्ती ।
बंगभाषामें	भडजीवइ ।
गुजरातीभाषामें	मोटीखरखोडी तृणधारनी ।
कर्णाटकीभाषामें	किरियहाले ।
इंग्रेजीभाषामें	शाशाप्रेरला । Sasapralla

अस्या गुणाः ।

एवमेवबृहत्पूर्वारसवीर्य्यबलान्विता ।
भूतविद्राविणीज्ञेयावेगाद्रसनियामका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-बडी जीवन्ती-रसवीर्य्य और बलमें जीवन्तीके समान है भूत-विद्रावक और पारेको बांधनेवाली है।

स्वर्णजीवन्तीनामानि ।

हेमपूर्णास्वर्णलतास्वर्णजीवन्तिकाचसा ।
हेमवल्लीहेमलताहेमक्षीरीसुमङ्गला ॥

अर्थ-हेमपूर्णा, स्वर्णलता, स्वर्णजीवन्तिका, हेमवल्ली, हेमलता, हेमक्षीरी, सुमङ्गला (हेमाद्रा, स्वर्णजीवन्ती, स्वर्णजीवा, हेमजीवन्ती, तृणग्रन्थि, हिमाश्रया स्वर्णपर्णा, सुजीवन्ती, सुपर्णिका, हेमपुष्पी, हेमा, हेमवती, सौम्या)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णजीवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	पीली जीवन्ती, सुनहरीजीवन्ती ।
बंगलामें	स्वर्णजीवन्ती ।
मराठीभाषामें	हरणवेल, हेमहरणवेल ।
गुजरातीभाषामें	खरखोडी, मोठीखरखोडी ।

कर्णाटकीभाषामें	होगहाले ।
लेटिनभाषामें	ट्रेनिआवोल्युबिलिस ।

अस्या गुणाः ।

स्वर्णजीवन्तिकावृष्याचक्षुष्यामधुरातथा ।
शिशिरावातपित्तासृग्दाहजिद्बलवर्द्धिनी ॥ (शा०नि०)

अर्थ-स्वर्णजीवन्ती-वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, मधुर, शीतल तथा वात, रक्त, पित्त और दाहको दूर करनेवाली है और बलवर्द्धक है ।

तिक्तजीवन्तीनामानि ।

तिक्तजीवन्तिकातिक्तभद्रातिक्तप्रियङ्करी ॥

अर्थ-तिक्तजीवन्तिका, तिक्तभद्रा, तिक्तप्रियङ्करी (विषमुष्टि, मेषमुष्टि, गुमुष्टि, रणमुष्टिक, डोडीशुप)

संस्कृतभाषामें	विषमुष्टि, तिक्तजीवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	डोडी ।
मराठीभाषामें	विषडोडी ।
गुजरातीभाषामें	मदयोगरसादो ।
कर्णाटकीभाषामें	दोडीपगगगे ।

अस्या गुणाः ।

तिक्तजीवन्तिकावातकफाजीर्णज्वरापहा ।
शोफघ्नीविषहन्त्रीचलेपादाखुविषापहा ।

अर्थ-तिक्तजीवन्ती-वात, कफ, अजीर्ण, ज्वर, सूजन और विषविनाशक है । इसका लेप करनेसे मूसेका विष दूर होता है ।

अन्यच्च ।

विषडोडीभवेत्तिक्ताकट्वीचाग्निप्रदीपनी ।
मलस्तम्भकरीग्राहीपित्तलोष्णानिलापहा ॥
लघ्वीरुच्यारुच्यानदाहकारीकफापहा ।
कण्ठरुग्वातगुल्मार्शः क्रिमिकुष्ठविषापहा ॥
श्वासप्रमेहवातघ्नीविषनाशिनीपरिकीर्तिता ।

अर्थ-डोडी-तिक्त, कटु, अग्निदीपक, मलस्तम्भ करनेवाली, ग्राही, पित्तकारक, गरम, वातनाशक, हल्की, रोचक, दाहकारक, कफनाशक, कण्ठ

नाशक तथा कण्ठरोग, वात, गुल्म, ववासीर, कृमि, कुष्ठ, विष, श्वास, प्रमेह और मूषेके विषको दूर करनेवाली है ।

विषमुष्टिगुणा ।

विषमुष्टिः कटुस्तिक्तोदीपनःकफवातनुत् ।
कण्ठामयहरोरुच्योरक्तपितार्तिदाहनुत् ॥

अर्थ–विषमुष्टि–चरपरी, कडवी, दीपन, कफवातविनाशक, कण्ठरोगनाशक, रुचिकारी तथा रक्तपित्त और दाहको दूरकरे है ।

विवरण । जीवन्ती अनेक जातिकी होतीहै, इसकी वेल चलतीहै, फल डोडोंमें आते हैं इसमें आककी समान दूध निकलताहै ।

मुद्गपर्णीनामानि ।

मुद्गपर्णीकाकमुद्गासहाचशिम्बिपर्णिका ।
शिम्बीपर्णीक्षुद्रसहाशिम्बीमार्जारगन्धिका ॥

अर्थ–मुद्गपर्णी, काकमुद्गा, सहा, शिम्बिपर्णिका, शिम्बिपर्णी, क्षुद्रसहा, शिम्बी, मार्जारगन्धिका (वनजा, रिङ्गिणी, हस्वा, शूर्पपर्णी, कुरङ्गिका, कोशिला, वनोद्भवा, वनमुद्गा, आरण्यमुद्गा, वन्या, करञ्जिका)

संस्कृतभाषामें	मुद्गपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	मुगवन ।
बंगलाभाषामें	मुगानि ।
मराठीभाषामें	रानमूग ।
गुजरातीभाषामें	अडवाड मगवेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	कोहसरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कारुपेसारा ।
लैटिन्भाषामें	फेशिपोल्स् ट्रायलो बेटस् । Phasiolous Trilobctus

अस्या गुणाः ।

मुद्गपर्णीहिमारूक्षातिक्तास्वाद्वीचशुक्रला ।
चक्षुष्याक्षयशोथघ्नीग्राहिणीज्वरदाहनुत् ॥
दोषत्रयहरीलघ्वीग्रहण्यर्शोतिसारजित् । (भा० प्र०)

अर्थ–मुगवन–शीतल, रूखी, कडवी, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, नेत्रोंको हित-

कारी, क्षयघ्न, शोथनाशक, मलरोधक तथा ज्वर, दाह और त्रिदोषनाशक, हलकी और संग्रहणी, ववासीर और अतिसारको दूर करनेवाली है।

अपच्च।

मुद्गपर्णी हिमा कासवातरक्तक्षयापहा।
पित्तदाहज्वरान्हन्तिचक्षुष्याशुक्रवृद्धिकृत् ॥(रा०नि०)

अर्थ-मुगवन-शीतल तथा खासी, वातरक्त, क्षय, पित्त, दाह और ज्वरको दूर करनेवाली है, नेत्रोंको हितकारी और वीर्यवर्द्धक है।

अपिच।

मुद्गपर्णीहिमाकासवातरक्तज्वराञ्जयेत्।
स्वाद्वीलघ्वीत्रिदोषघ्नीग्रहणीकृमिनाशिनी ॥
अतिसारकफार्शोघ्नीपित्तनाशकरीमता ॥
रक्तस्तम्भकराख्क्षाचोक्तावैद्यैर्निघण्टुके ॥

अर्थ-मुगवन-शीतल तथा खासी, वात, रक्त और ज्वरका नाश करे है। स्वादिष्ठ, हलकी, त्रिदोषनाशक तथा संग्रहणी, कृमि, अतिसार, कफ, ववासीर और पित्तको दूर करैहै। रक्तस्तम्भक और रूखा है।

विवरण। मुद्गपर्णी मूगकी समान बेल होतीहै, पत्ते मूगकी समान होवेहैं, फूल पीले रंगके होते हैं और फलीभी मूगकी समान आती है।

माषपर्णीनामानि।

माषपर्णीकृष्णवृन्तापर्णिनीपाण्डुलोमशा।
ऋषिप्रोक्ताहयपुच्छीकाम्बोजीसिंहपुच्छिका ॥

अर्थ-माषपर्णी, कृष्णवृन्ता, पर्णिनी, पाण्डुलोमशा, ऋषिप्रोक्ता, हयपुच्छी, काम्बोजी, सिंहपुच्छिका (महासहा, सिंहपुच्छी, पाण्डु, लोमशपर्णिनी, पाण्डुलोमा, आर्द्रमाषा, मांसमाषा, मङ्गल्या, हयपुच्छिका, हयमाषा, अश्वपुच्छी, माषपर्णिका, कल्याणी, वज्रमूली, शालिपर्णा, विसारणी, आत्मोद्भवा, बहुफला, स्वयम्भू सुलभा, घना, सिंहविन्ना, विशालपिका, सूर्यपर्णी पाण्डुरा)

संस्कृतभाषामें	माषपर्णी।
हिन्दीभाषामें	मषान, बनउर्दी, जंगलीउड़द।
बंगभाषामें	माषाणी।

मराठीभाषामें रानउडीद ।
गुजरातीभाषामें अडवाड, अडदवेल ।
कर्णाटकीभाषामें रानोंड्डिका उद्दु ।
तैलङ्गीभाषामें कारुमीनुरु ।
लैटिन्भाषामें ग्रेंजिआमड्रासपटना । Cranjea madras, Patana

अस्या गुणाः ।

मापपर्णीहिमातिक्तारूक्षाशुक्रबलासकृत ।
मधुराग्राहिणीशोथवातपित्तज्वरास्त्रजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मषवन-शीतल, कडवी, रूखी, शुक्रजनक, कफकारक, मधुर, ग्राही तथा सूजन, वात, पित्त, ज्वर और रूधिरविकारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

मापपर्णीरसेतिक्तावृष्यादाहज्वरापहा ।
शुक्रवृद्धिकरीबल्याशीतलापुष्टिवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मषवन-तिक्तरसान्वित, वृष्य, दाह ज्वरनाशक शुक्रवर्द्धक, बलकारक, शीतल और पुष्टिवर्द्धक है ।

अपिच ।

मापपर्णीमहावृष्यावृंहणीबलवर्णकृत् ।
स्तन्यकेशहितास्निग्धावातपित्तापहाहिमा॥(शो०नि०)

अर्थ-मषवन-महावृष्य, पुष्टिकारक, बलकारक, बलवर्द्धक, वर्णको सुंदरतादायक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, केशोंको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, वातपित्तनाशक और शीतलहै ।

अन्यच्च ।

मापपर्णीशुक्रवृद्धिकरावृष्याचतिक्तका ।
बलदापौष्टिकाशीतारूक्षाकफकरीमता ॥
रक्तरुङ्नाशिनीग्राहीत्रिदोषज्वरपित्तहा ।
रक्तपित्तक्षयकासवातंशोषञ्चदाहकम् ॥
वातपित्तरक्तदोषनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-मषवन-शुक्रवर्द्धक, वृष्य, कडवी, बलदायक पुष्टिकारक, शीतल, रूखी, कफकारक, रक्तरोगनाशक, मलरोधक तथा त्रिदोष, ज्वर, पित्त,

रक्तपित्त, क्षय, खासी, वात, शोष, दाह, वातपित्त और रुधिरविकारको हरनेवाली है । माषपर्णीकी बेल उड़दकी समान होतीहै । व्यवहार-सर्वांग । मात्रा २ मासेकी । एरण्डनामानि ।



एरण्डोव्याघ्रपुच्छःस्याच्चित्रकस्त्रिपुटीफलः ।
पञ्चांगुलःशूलशत्रुर्वातारिर्दीर्घदन्तकः ॥

–अर्थ–एरण्ड, व्याघ्रपुच्छ, चित्रक, त्रिपुटीफल, पञ्चांगुल, शूलशत्रु, वातारि, दीर्घदन्तक (रुवूक, गन्धर्वहस्तक, उरुवुक, रुवुक, चञ्चुक, मण्ड, वर्द्धमान, व्यडत्वक्, एरण्डक, इष्ट, अमण्डल, तुच्छद्रु, प्रणदा, त्रिपुटी, व्याघ्रदल, उरुवूक, रुवूक, रुवुक, रूवक, वुक, अमण्ड, आमण्ड, व्यडम्बन, कान्त, तरुण, शुक्ल, दीर्घपत्रक (दीर्घदण्डक) चित्रबीज और स्नेहमद)

रक्तैरण्डनामानि ।



रक्तोपरोहस्तिकर्णोव्याघ्रोव्याघ्रकरोरुवुः ।
त्रिबीजश्चरुवूकश्चचारुरुत्तानपत्रक ॥

अर्थ–रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रकर, रुवु, त्रिबीज, रुवूक, उत्तानपत्रक, (उरुवुक, नागकर्ण, चञ्चु, करपर्ण, पाचन, स्निग्ध, व्याघ्रदल, रक्तक, चिरवीर्य्य, हस्वैरण्ड और व्याघ्रपुच्छ)

स्थूलैरण्डनामानि ।

स्थूलैरण्डोमहैरण्डोमहापश्चाङ्गुलादिकः ॥

अर्थ–स्थूलैरण्ड, महैरण्ड और महापश्चागुल ।

हिन्दीभाषामें	अण्ड, सफेद अण्ड, लाल अण्ड, बडा अण्ड ।
वंगलाभाषामें	भेराण्डा, शादारेडी, लालभेण्डा, वडभेराण्डा ।
मराठीभाषामें	एरड, एरण्डोली ।
गुजरातीभाषामें	धोलोएरडो, रातोएरण्डो ।
कर्णाटकीभाषामें	एरडुआडलके ।
तैलिङ्गीभाषामें	आमुडामु, आमिदपुचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	कास्टर ओईल प्लांट Casteroil Plant Castor seed कास्टरसीड्
लेटिन्भाषामें	रिसिनस्कॉम्युनिस् । Ricinus Communis
फारसीभाषामें	वेदजीर, सुरूमेवेदजीर ।
अरबीभाषामें	खिरवा, हबुलखिरुवा ।
तुरकीमें	करचक ।

द्विविधैरण्डगुणा ।

ऐरण्डयुग्ममधुरमुष्णगुरुविनाशयेत् ।
शूलशोथकटीवस्ति शिरःपीडोदरज्वरान् ॥
वध्मश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ–दोनोंप्रकारके अण्ड–मधुर, उष्ण, भारी तथा शूल, सूजन, कमर, वस्ति (पेडू) और शिरोरोग, उदर, ज्वर, वद, श्वास, कफ, अफारा, कास, कुष्ठ और आमवातनाशक है ।

अस्य पत्रगुणा ।

एरडपत्रवातघ्नकफक्रिमिविनाशनम् ।

मूत्रकृच्छ्रहरंचापिपित्तरक्तप्रकोपनम् ॥
वातार्यग्रदलंगुल्मवस्तिशूलहरंपरम् ।
कफवातकृमीन्हन्तिवृद्धिंसप्तविधामपि ॥

अर्थ-अण्डके पत्ते-वातनाशक, कफघ्न, क्रिमिविनाशक, मूत्रकृच्छ्र रोगको हरनेवाले और पित्तरोगको कुपित करनेवाले है। अण्डके आगेके दल अर्थात् कोमल पत्ते-वात, गुल्म, वस्ति, शूल, कफवात, कृमि और सात-प्रकारकी अण्डवृद्धिको दूर करे हैं।

अस्य फलगुणा ।

एरण्डफलमत्युष्णंगुल्मशूलानिलापहम् ।
यकृत्प्लीहोदरार्शोघ्नकटुकंदीपनपरम् ॥

अर्थ-अण्डके फल-अत्यन्त उष्ण, चरपरे, अग्निको दीपन करनेवाले तथा गुल्म, शूल, वात, यकृत्, प्लीहा, उदररोग और बवासीरको दूर करे हैं।

अस्य मज्जागुणा ।

एतन्मज्जाचविडभेदीवातश्लेष्मोदरापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-इसकी मींग-मलभेदक तथा वात, कफ और उदररोगका नाश करे है।

अस्य मूलगुणा ।

एरण्डमूलशूलघ्नवृष्यवातकफापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-इसकी जड-शूल, वात और कफको निर्मूल करे है, तथा वीर्य-जनक है।

अस्य पुष्पगुणा ।

पुष्पंहन्त्यस्यवर्ध्मानिलकफगुदजान्गुल्मशूलोर्ध्ववातान् ।

अर्थ-इसका फूल-वर्ध्म (घद) वात, कफ, गुदजरोग, गुल्म, शूल और ऊर्ध्ववातको, दूर करे है।

श्वेतैरण्डगुणा ।

श्वेतोरुवूकस्तुकटुस्तीक्ष्णश्चोष्णोगुरुःस्मृतः ।
मधुरस्तिक्तकोवृष्योगुरुःस्वादु सरःस्मृत ॥
वातोदावर्तकफहृज्ज्वरकासोदरापहः ।
शोथशूलकटीवस्तिशिरोरुङ्नाशनः स्मृतः ॥

श्वासानाहकुष्ठवर्ध्मगुल्मप्लीहामपित्तहा ।
प्रमेहोष्मावातरक्तमेदान्त्रावर्धनप्रणुत् ॥
अस्यभेदोवृहत्स्थूलोरसेपाकेगुणाधिक· ।

अर्थ–सफेद अण्ड–कटु, तीक्ष्ण, गरम, भारी, मधुर, कडवा, वृष्य, भारी, स्वादिष्ठ और दस्तावर है । तथा वात, उद्वावर्त्त, कफ, ज्वर, कास, उदर, सूजन, शूल और कमर, वस्ति, मस्तकशूल, श्वास, अफारा, कोढ, वर्ध्मरोग (वद) गोला, प्लीहा, आमपित्त, प्रमेह, उष्णता, वातरक्त, मेद और अन्त्रवृद्धिरोगका नाश करैहै । इसका भेद–स्थूल एरण्ड है और वह इसकी अपेक्षा रसमें और पाकमें अधिक गुणवाला है ।

रक्तैरण्डगुणा ।

रक्तोरुबूकस्तुवरोरसेकटुर्लघु स्मृत ।
तिक्तोवातकफश्वासकासकृम्यर्शवर्ध्महा ॥
रक्तदोपपाण्डुरुजभ्रांत्यरोचकनाशन· ।
प्रायस्त्वन्येगुणाश्चास्यश्वेतवच्चसमीरिता ॥
पर्णद्वयोस्तुसप्रोक्तवातपित्तस्यवर्धकम् ।
मूत्रकृच्छ्रवातकफकृमींश्चैवविनाशयेत् ॥
एतयोश्चांकुरोगुल्मवस्तिशूलकफक्रिमीन् ।
वातसप्तप्रकारतुवृद्धिरोगविनाशयेत् ॥
पुष्पतुवातकफहृत्पित्तमूत्ररुजापहम् ।
रक्तपित्तवर्धयतिफलमज्जाग्निदीपनी ॥
अत्युष्णाकटुकास्वादु पटु स्निग्धासरास्मृता ।
मलभेदकरालघ्वीगुल्मशूलकफापहा ॥
यकृद्वातोदरप्लीहावातार्शानाविनाशिनी ।

अर्थ–लाल अण्ड–कषेला, रसमें चरपरा, हलका, कडवा, वात, कफ, श्वास, कास, कृमि, ववासीर, वद, रुधिरविकार, पाण्डुरोग भ्रान्ति और अरुचिको दूर करे है । शेष गुण सफेद अण्डकी समान जानने । इन दोनोंके

पत्ते-वातपित्तकारक तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ, और कृमिरोगका नाश करे हैं। इसके कोमल अंकुर-गुल्म, वस्ति, शूल, कफ, कृमि, वायु और सात प्रकारके वृद्धिरोगको दूर करेहैं। इसके फूल-वात, कफ, पित्त और मूत्रकृच्छ्रादिरोगोंको दूर करे हैं तथा रक्तपित्तको बढावे हैं। इसकी मींग-अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, कटु, स्वादिष्ठ, खारी, स्निग्ध, सारक, मलभेदक, लघु तथा गुल्म, शूल, कफ, यकृत्, वात, उदररोग, प्लीहा और वादीकी बवासीरको दूर करे है।

अस्य तैलगुणाः।

एरण्डतैलंमधुरंगुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम्।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरंपरम्॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, भारी, कफवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म, हृद्रोग और जीर्णज्वरका नाश करे है।

अपिच।

एरण्डतैलंमधुरंसरंचोष्णंगुरुस्मृतम्।
अरुच्यंचस्मृतंस्निग्धंतिक्तंवर्ध्मोदरापहम्॥
गुल्मवातकफांश्चैवशोथंचविषमज्वरम्।
कटिपृष्ठकोष्ठगुह्यशूलनाशकरंपरम्॥

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, दस्तावर, गरम, भारी, अरुचिकारक, स्निग्ध, तिक्त तथा, वद, उदर, गुल्म, वात, कफ, सूजन, विषमज्वर और कमर, पीठ, कोष्ठ और गुदा आदिके शूलको निर्मूल करे है।

अपिच।

एरण्डतैलंमधुरमुष्णंतीक्ष्णंचदीपनम्।
रसेकटुकषायंचसूक्ष्मंस्रोतोविशोधनम्॥
योनिशूलविशोधनमारोग्यमेधाकान्तिकृत्।
स्मृतिस्थैर्य्यंबलकरंवृष्यंमधुरमेवच॥
वयःस्थापनकंहृद्यंवातश्लेष्मदरंपरम्।

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, उष्ण, तीक्ष्ण और जठराग्निदीपक है। कटुरसान्वित, कषेला, सूक्ष्म और स्रोतविशोधक है। योनि (वीर्य्य)

शूलको शोषनेवाला है । आरोग्यता, मेधा और कान्ति करनेवाला है । स्मरणशक्ति बढानेवाला, स्थिरताकारक, बलजनक, मधुर और वीर्य्यको उत्पन्न करैहै । अवस्थाको स्थापन करनेवाला है, हृदयको हितकारी तथा वात और कफको दूर करैहै ।

अपिच।

एरण्डतैलकृमिदोषनाशनवातामयघ्नसकलाङ्गशूलहृत् ।
कुष्ठापहस्वादुरसायनोत्तमपित्तप्रकोपकुरुतेतिदीपनम् ।

अर्थ–अण्डीका तेल–कृमिरोगनाशक, वातरोगनिवारक, सर्व प्रकारके शूलको निर्मूल करनेवाला, कुष्ठघ्न, स्वादिष्ठ, रसायनमें श्रेष्ठ, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निको दीपन करनेवाला है । आगे इसके गुण तैलवर्गमें देखो ।

विवरण–इसके वृक्ष प्रायः खेतीकी बाडपर लगाये जाते हैं, इसकी लाल और सफेद दो जाती हैं, इसके फलपर, कोमल कांटे होते हैं, फलमेंसे तीन बीज निकलतेहैं, यह फल ऊपर चित्रित होतेहैं और बीजके भीतर मींग सफेद निकलतीहै उस मींगके भीतर तेल होताहै, उस मींग अथवा तेलको खानेसे जुलाब होता है । इसके पत्तोंको मस्तकपर बांधनेसे माथेका शीत दूर होताहै । व्यवहार–मूल, पत्ते, छाल, मूलकीछाल, फल, फूल, मींग और तैल।

अर्कनामानि ।





पत्ते-वातपित्तकारक तथा मूत्रकृच्छ, वायु, कफ, और कृमिरोगका नाश करे हैं। इसके कोमल अंकुर-गुल्म, वस्ति, शूल, कफ, कृमि, वायु और सात प्रकारके वृद्धिरोगको दूर करेहैं। इसके फूल-वात, कफ, पित्त और मूत्रकृच्छ्रादिरोगोंको दूर करे हैं तथा रक्तपित्तको बढावे है। इसकी मींग-अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, कटु, स्वादिष्ठ, खारी, स्निग्ध, सारक, मलभेदक, लघु तथा गुल्म, शूल, कफ, यकृत्, वात, उदररोग, प्लीहा और बवासीर बवासीरको दूर करे हैं।

अस्य तैलगुणाः।

एरण्डतैलंमधुरंगुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम्।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरंपरम्॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, भारी, कफवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म हृद्रोग और जीर्णज्वरका नाश करे है।

अपिच।

एरण्डतैलमधुरंसरंचोष्णंगुरुस्मृतम्।
अरुच्यंचस्मृतस्निग्धतिक्तवध्मोदरापहम्॥
गुल्मवातकफांश्चैवशोथञ्चविषमज्वरम्।
कटिपृष्ठकोष्ठगुह्यशूलनाशकरंपरम्॥

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, दस्तावर, गरम, भारी, अरुचिकारक, स्निग्ध, तिक्त तथा, बद, उदर, गुल्म, वात, कफ, सूजन, विषमज्वर और कमर पीठ, कोष्ठ और गुदा आदिके शूलको निर्मूल करे है।

अन्यच्च।

एरण्डतैलमधुरमुष्णतीक्ष्णञ्चदीपनम्।
रसेकटुकषायञ्चसूक्ष्मस्रोतोविशोधनम्॥
योनिशूलविशोधनमारोग्यमेधाकान्तिकृत।
स्मृतिस्थैर्य्यंबलकरवृष्यमधुरमेवच॥
वयःस्थापनकत्हृद्यवातश्लेष्महरंपरम्।

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, उष्ण, तीक्ष्ण और जठराग्निदीपक है। कटुरसान्वित, कषेला, सूक्ष्म और स्रोतविशोधक है। योनि (वीर्य्य)

शूलको शोधनेवाला है । आरोग्यता, मेधा और कान्ति करनेवाला है । स्मरणशक्ति बढानेवाला, स्थिरताकारक, बलजनक, मधुर और वीर्य्यको उत्पन्न करैहै । अवस्थाको स्थापन करनेवाला है, हृदयको हितकारी तथा वात और कफको दूर करैहै । अपिच।

एरण्डतैलकृमिदोषनाशनवातामयध्वंसकलाङ्गशूलहृत् ।
कुष्ठापहंस्वादुरसायनोत्तमंपित्तप्रकोपकुरुतेतिदीपनम् ।

अर्थ–अण्डीका तेल–कृमिरोगनाशक, वातरोगनिवारक, सर्व प्रकारके शूलको निर्मूल करनेवाला, कुष्ठघ्न, स्वादिष्ठ, रसायनमें श्रेष्ठ, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निको दीपन करनेवाला है । आगे इसके गुण तैलवर्गमें देखो ।

विवरण–इसके वृक्ष प्रायः खेतीकी बाडपर लगाये जाते हैं, इसकी लाल और सफेद दो जाती हैं, इसके फलपर, कोमल कांटे होते हैं, फलोंमेंसे तीन बीज निकलतेहैं, यह फल ऊपर चित्रित होतेहैं और बीजके भीतर मींग सफेद निकलतीहै उस मींगके भीतर तेल होताहै, उस मींग अथवा तेलको खानेसे जुल्लाब होता है । इसके पत्तोंको मस्तकपर बाधनेसे माथेका शीत दूर होताहै । व्यवहार–मूल, पत्ते, छाल, मूलकीछाल, फल, फूल, मींग और तैल ।

अर्कनामानि ।





क्षीरदलंशुकफलतूलार्कश्च सदासुमः ॥

अर्थ-क्षीरदल, शुकफल, तूलफल, अर्क, सदासुम, (प्रताप, क्षीरकाण्डक, विक्षीर, भास्कर, हरिदश्व, विवस्वान्, अहर्मणि, अहर्बान्धव, अर्यमा, अहपति, उष्णरश्मि, भानु, विकर्त्तन, गणरूप, मन्दार, प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, विभावसु, विवस्वान्, सप्ताश्व, सविता, सूनु, आस्फोत, वसुक, हिमारोति, पुच्छी, प्रताप, क्षीरी, खर्जुघ्न, शीतपुष्पक, जम्भल, क्षीरपर्णी, विक्षीरण, सदापुष्प, सूर्य्याह्व, आस्फोतक, भास्कर, आस्फोटक, रवि, कीरतनुफल और क्षीराङ्ग)

श्वेतार्कनामानि।

श्वेतार्कोऽलर्कराजार्कोमन्दारोगणरूपकः ॥

अर्थ-श्वेतार्क, अलर्क, राजार्क, मन्दार, गणरूपक, (तपन, श्वेत, दीर्घपुष्प, शिवाह्वय, प्रताप, शीतार्कक, शकरापुष्प, कार्दलि, वसुक, सदापुष्प, वृत्तमल्लिका, वेधा, शम्भु, गणरूपी, रक्तार्क, विस्फोर, सदापुष्पी, क्षपिका, आदित्यपुष्पिका, दिव्यपुष्पिका, अर्क, रक्तपुष्प और शुकफल)

हिन्दीभाषामें	लाल आक, सफेद आक, मदार ।
बंगभाषामें	आकन्द, श्वेतआकन्द ।
मराठीभाषामें	रुई, पाढरीरुई ।
कर्णाटकीमें	पक्के, मदारपक्के ।
तैलङ्गीभाषामें	नीलजिल्लेडेघोली, तेलाजिल्लेडे, जिल्लेट्टचेट्टु ।
गुजरातीभाषामें	आकडो, भोलोआकडो ।
इंग्रेजीभाषामें	जाईगांटिक्स्वोलोवर्ट् । Gigantic Swallow wort
लैटिन्भाषामें	केलोट्रोपीस् जाईगेंटिया । Calotropis Jigantea
	कलोट्रोपिसप्रोसिरा । G Procera
फारसीभाषामें	खुर्क, दूध ।
अरबीभाषामें	उषर ।

अर्कगुणाः।

अर्कः कृमिहरस्तीक्ष्णःसरोष्णःकफनाशनः ।
तत्पुष्पकृमिदोषघ्नहन्तिशूलोदराणिच॥(धन्व तरिनि०)

अर्थ-आक-कृमिनाशक, तीक्ष्ण, दस्तावर, गरम और कफनाशक है। इसके पुष्प कृमिदोष, शूल और उदररोगका नाशकरते हैं।

रक्तार्कपुष्पमधुरंसतिक्तकुष्ठक्रिमिघ्नंकफनाशनञ्च ।
आखोर्विषंहतिचरक्तपित्तसंग्राहिगुल्मेश्वयथौहितंतत् ॥

अर्थ-लाल आकका फूल-मधुर, तिक्त, ग्राही तथा कुष्ठ, कृमि, कफ, मूषेका विष, रक्तपित्त, गुल्म, और सूजनको दूर करे है ।

अर्कक्षीरगुणाः ।

क्षीरमर्कस्यतिक्तोष्णस्निग्धसलवणलघु ।
कुष्ठगुल्मोदरहरश्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-आकका दूध-तिक्त, उष्ण, स्निग्ध लवणरस संयुक्त, हलका, कोढ, गुल्म तथा उदररोगको दूर करे, इसका विरेचनदेना श्रेष्ठ है, अर्थात् इसके द्वारा दस्त उत्तम प्रकारसे होते हैं ।

अथ मूलस्य त्वग्गुणाः ।

अर्कमूलत्वचास्वेदकरीश्वासनिबर्हणी ।
उष्णाचवामिकाचैवह्युपदंशविनाशिनी ॥

अर्थ-आकके जडकी छाल-पसीनेको उत्पन्न कर, श्वासको दूरकरे गरम है और उपदंशरोगका नाश करे है ।

अर्कस्तुकटुरुष्णश्चवातजिद्वह्निदीपकः ।
शोफव्रणहरःकण्डूकुष्ठक्रिमिविनाशन ॥ (रा०नि०)

अर्थ-आक-कटु, उष्ण, वातनाशक, अग्निप्रदीपक तथा शोफ, व्रण, कण्डू, कुष्ठ और कृमिरोगका नाशकरे है ।

द्विविधार्कगुणाः ।

अर्कद्वयंसरंवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।
निहन्तिप्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरयकृत्कृमीन् ॥
अलर्ककुसुमंवृष्यंलघुदीपनपाचनम् ।
अरोचकप्रसेकार्शः कासश्वासनिवारणम् ॥

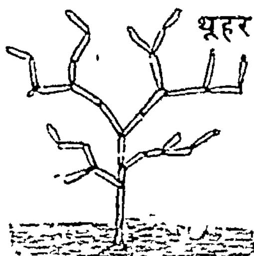
अर्थ-दोनो प्रकारके आक-रेचक तथा वात, कोढ, कण्डू, विष, व्रण, प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग, यकृत् और कृमि रोगको दूर करे है। सफेद आकका फूल-बलकारक, हलका, अग्निको दीपन करे, पाचक, अरुचि, प्रसेक (मुखसे लारका गिरना) बवासीर कास और श्वासको दूर करे है ।

श्वेतमन्दारकोत्युष्णस्तिक्तोमलविशोधनः ।
मूत्रकृच्छ्रव्रणान्हन्तिकृमीनत्यन्तदारुणान् ॥
राजार्कःकटुतिक्तोष्णःकफमेदोविषापहः ।
वातकुष्ठव्रणान्हंतिशोफकण्डूविसर्पनुत् ॥

अर्थ-सफेद मन्दार-अत्यन्त उष्ण, तिक्त, मलशोधक तथा मूत्रकृच्छ्र, व्रण और अत्यन्त दारुण क्रिमिरोगको दूर करेहै । राजार्ककटु, तिक्त, उष्ण तथा कफ, मेद, विष वातकुष्ठ, व्रण, शोफ, कण्डू और विसर्परोगका नाशकरे है ।

विवरण । आकके वृक्ष जगल और भूडोंमें अधिकतासे होतेहैं । लकडी नि सार होतीहै, पत्ते वडके समान होतेहैं, फल तोतेकी समान । उसके भीतर तीन रुई निकलतीहै, आकके पच अङ्गका क्षार करतेहैं, वो क्षार कफको दूर करेहै । इसके पत्तोंको गरम कर पेटपर बाधनेसे पेटका दर्द दूर होताहै ।

स्नुहीनामानि ।



स्नुहीसमन्तदुग्धाचनागद्रुर्बहुदुग्धिका ।
महावृक्ष सुधावज्राशीहुण्डोदण्डवृक्षक ॥ (शो०नि०)

अर्थ-स्नुही, समन्तदुग्धा, नागद्रु, बहुदुग्धिका, महावृक्ष, सुधा, वज्रा, शीहुण्डा, दण्डवृक्षक, (सीहुण्ड, सिहुण्ड, स्नुह, स्नुषा, स्नुहा, स्नुही, वज्र,

वज्रद्रु, वज्रद्रुम, वज्रकण्टक, गुड, गुडा, गुडि, गुला, वहुशाल, कृष्णसार, निस्त्रिंशपत्रिका, नेत्रारि, शाखाकण्ट, सेहुण्ड, सिंहतुण्ड, वज्री, काण्डशाख, कुलिशद्रुम, काण्डरोहक)

हिन्दीभाषामें	थूहर, सेहुड ।
वंगभाषामें	मनसागाछ, सिजवृक्ष ।
मराठीभाषामें	निवडुंग, काटेनिवडुंग, फणीचें निवडुंग, विकाडी, वईनिवडुंग ।
गुजरातीभाषामें	थोर दाडलियो, कटाली, कटालोथोर । हाथलो तरधारी, नानों परदेशी ।
कर्णाटकीभाषामें	निर्वाडिंगु, कालि, मुड्डुकालि ।
तैलिङ्गीभाषामें	चेंमुड्ड ।
देशान्तरीभाषामें	सावर ।
इंग्रेजी भाषामें	मिल्कसहेज्ज । प्रिक्लीपीयर । Milks hedge Prickly pear
लैटि०	युफोर्बिया ट्रायगोना । Euphorbia Trigona युफोरबियानिरिफोलीया । Euphorbia Nirifolia
फारसीभाषामें	लादनाम्
अरबीभाषामें	जकुम, फर्युन ।
लैटिन्‌भाषामें	युफोर्बिया टिरुकालाइ । युफोर्बिया पेण्टागोता ।
तु०	कोडकलि । ता० कलि । मला० तिरुकलि ।

स्नुहिगुणा ।

स्नुहिरुष्ण पित्तदाहकुष्ठवातप्रमेहनुत् ।
क्षीरवातविषाध्मानगुल्मोदरहरपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ–थूहर–गरम, पित्त, दाह, कुष्ठ, वात, और प्रमेहनाशकहै । थूहरका दूध–वायु, विष, आध्मान, गुल्म और उदररोगनिवारक है ।

अपिच

सेहुण्डोरेचनस्तीक्ष्णोदीपन कटुकोगुरु ।
शूलमष्ठीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान् ॥

उन्मादमोहकुष्ठार्शशोथमेदोश्मपाण्डुहा ।
व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषहरेत् ॥

अर्थ-सेहुण्ड-रेचक, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाला, कटु, भारी तथा शूल, अष्ठीलिका, आध्मान, कफ, गुल्म, उदररोग, वायु, उन्माद, मूर्छा, कोढ, बवासीर, सूजन, मेदोरोग, पथरी, पाण्डुरोग, व्रण शोथ, ज्वर, प्लीहा, दूषीविष और विषको दूर करे है ।

अस्य दुग्धगुणाः ।

उष्णवीर्यस्नुहिक्षीरस्निग्धश्चकटुकंलघु ।
गुल्मिनांकुष्ठिनांचापितथैवोदररोगिणाम् ।
हितमेतद्विरेकार्थेयेचान्येदीर्घरोगिणः ॥

अर्थ-सेहुण्डका दूधउष्णवीर्य, स्निग्ध, चरपरा और हलका है तथा गुल्म, कुष्ठ (उपदंशरोग) उदर इनरोगवालोंको और बहुत कालके रोगियोंकोभी इसका जुलाब हितकारीहै ।

अस्य पत्रगुणाः ।

सेहुण्डस्यदलंतीक्ष्णंदीपनंरोचनंभवेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच ॥

अर्थ-सेहुण्डके पत्ते तीक्ष्ण अग्निको दीपन करनेवाले अत्यन्त रुचिकारक तथा आध्मान, अष्ठीलिका, गुल्म, शूल, शोथ और उदररोगको दूर करे है ।

अपिच ।

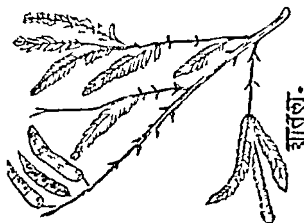
सेहुण्डः कटुकस्तिक्तश्चोष्णस्तीक्ष्णःप्रदीपनः ।
सरोगुरुर्वांतिकरःकुष्ठोदरविनाशकः ॥
प्लीहवातप्रमेहघ्नः शूलामकफशोफनुत् ।
गुल्माष्ठीलाध्मानपाण्डुकफोदरव्रणज्वरान् ॥
उन्मादवातंमेदश्चवृश्चिकस्यविषंहरेत् ।
दूषीविषार्शोश्मरीनोमुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-थूहर, वा सेहुण्ड-कटु, तिक्त, उष्ण, तीक्ष्ण, जठराग्निदीपक, दस्तावर, भारी, वान्तिकारक तथा कुष्ठ, उदर, प्लीहा, वात, प्रमेह, शूल, आम, कफ, सूजन, गोला, अष्ठीला, आध्मान, पाण्डुरोग, कफ, उदरव्रण, ज्वर,

उन्माद,वायु,मेद, विच्छूका विष, दूषीविष, बवासीर और पथरीको दूरकरहै ।

- विवरण । थूहर और सेड दोनों एकही जातिके वृक्ष है सेहुडकी डंडी कांटेदार और मोटी होतीहै, पत्ते कोमल पत्थरचटेकी समान होते हैं, परन्तु दूध इसकी प्रत्येकशाखा और प्रत्येक पत्तेमें होताहै थूहरकी शाखा पतली और पत्तेभी छोटे छोटे हरीमिर्चकी समान लम्बे होते हैं इसके सब अंगोंमें दूध निकलताहै । थूहरकी अनेक जातिहैं । जैसे कांटेवाला थूहर, तिधारा थूहर, चौधारा थूहर, नागफनी थूहर, खुरसानी थूहर, विलायती थूहर, इत्यादि । खुरासानी थूहरका दूध विषैला होताहै । इसके दूधको वादीके रोगमें तथा सन्धियोंकी पीडामें चुपडनेसे तुरत पीडा दूर होतीहै । थूहरके दूधकी बाजरेके चूनके साथ गोली बनाकर खानेसे जुल्लाब होकर उदरका रोग दूरहोता है और थूहरके दूधमें चनेकी दालको भिगोकर उसको पीसकर झडबेरकी समान गोली बनाकर खानेसे जुल्लाब होकर उपदंश तथा फिरंग-रोग दूरहोताहै । थूहरकी राख कर उसका खार निकाल अनेक औषधियोंमें डालतेहैं । कांटेवाले थूहरके पत्तोंका शाक बनाकर खाते हैं । उससे उदरके रोग दूर होतेहैं । इसके डंडोंकी भस्मारक नामवाली औषधि बनती है । नागफनी थूहरके लाल पके हुए फल खानेसे श्वास और खांसी दूर होती है ।

सातलानामानि ।



सातलासप्तलासाराविमलाविदुलाचसा ।
तथानिगदिताभूरिफेनाचर्म्मकषेत्यपि ॥

अर्थ-सातला, सप्तला, सारा, विमला, विदुला, भूरिफेना, चर्मकषा, (अमला, बहुफेना, फेना, दीप्ता, विषाणिका, स्वर्णपुष्पी, पुत्रघना)

हिन्दीभाषामें	सातला।
वंगभाषामें	सिजविशेष।
मराठीभाषामें	निवडुंगाचा भेद।
गुजरातीभाषामें	सायेर।
लैटिन् भाषामें	ओरिगेन वल्गेरीस Origanum Vulgaris
कर्णाटकीभाषामें	चडीलसोतुली, हिरीयचट, कनरव।
फारसीभाषामें	एशन्।
अरबीभाषामें	सातर।

सातलागुणाः।

सातलाकटुकापाकेवातलाशीतलालघु।
तिक्ताशोफकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तनुत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सातला-पचनेमें कटु, वातजनक, शीतल, हलका, तिक्त तथा शोफ, कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त और रक्तदोषको दूर करैहै।

अपिच।

सातलाकफपित्तघ्नीलघ्वीतिक्ताकषायिका।
विसर्पकुष्ठविस्फोटव्रणशोफनिकृन्तनी॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सातला-कफपित्तनाशक, लघु, तिक्त, कषाय तथा विसर्प, कुष्ठ, विस्फोट, व्रण और शोफनाशकहै।

अपच।

सातलामुखपाकघ्नीजठरव्रणहृत्सरा॥ (शो० नि०)

अर्थ-सातला-मुखपाक, उदर और व्रणरोगनाशक है।

अपिच।

सातलातुविसर्पघ्नीरेचनीवातशोफनुत्॥ (ग० नि०)

अर्थ-सातला-विसर्परोगनाशक, दस्त करानेवाला, वात तथा शोफको दूर करै है।

अन्यच्च।

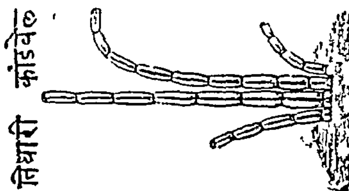
सातलाशीतलातिक्तातीक्ष्णापाकेकटुर्लघुः।
हृद्यानिलप्रकुरुतेहरतेहृद्रुजंकफम्॥

पित्तोदावर्तकुष्ठार्शोगुल्मोदरगतविषम् ।
आनाहकृमिशोफामनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सातला-शीतल, तिक्त, तीक्ष्ण, पचनेमें कटु, लघु, हृदयको हितकारी, अग्निजनक तथा हृदयरोग, कफ, पित्त, उदावर्त, कुष्ठ, बवासीर, गुल्म, उदरविष, आनाह, कृमि, शोफ और आमको दूर करेहै ।

विवरण । सातलेकी वेल जगल और वनोंमें होतीहै, पत्ते खैरके पत्तोंकी समान छोटे छोटे होते हैं । फूल पीलाहोता है । उसमें पतली तथा चपटी फली लगतीहैं । उसमें काले बीज निकलते हैं । इसमें पीले रगका दूध निकलताहै ।

अस्थिसहारिनामानि ।



वज्रवल्ल्यस्थिसहारीकुलिशचशिरालक ॥

अर्थ-वज्रवल्ली, अस्थिसहारी, कुलिश, शिरालक (ग्रन्थान्तरमें, अमर, वज्राङ्गी, अस्थिशृखला, अस्थिसहारक, क्रोष्टुघण्टिका)

हिंदीभाषामें	हडसहारी, हडजोड, हडसकरी ।
बगभाषामें	हाडभाङ्गा ।
गुजरातीभाषामें	हाडसाकळा, वेधारी, तरधारी, चोधारी ।
मराठीभाषामें	काडवेल, त्रिधारी, चौधारी,
तैलिङ्गीभाषामें	नालेह ।
लैटिन् भाषामें	विटिस्क्कॉड्रेग्युलारिस् । Vitisquolron gularis
	साइसस् काड्रेग्युलोरिस् ।

अस्थिसहारगुणा ।

अस्थिसहारक प्रोक्तोवातश्लेष्महरोस्थियुक् ।

उष्णः सरः कृमिघ्नश्च दुर्नामघ्नोक्षिरोगजित् ॥
रूक्षः स्वादुर्लघुर्वृष्यः पाचनः पित्तलः स्मृतः ।
कांडत्वग्विरहितमस्थिशृंखलाया
माषार्द्रद्विदलमकचुकंतदर्द्धम् ।
संपिष्टसुतनुततस्तिलस्यतैले
संपक्ववटकमतीववातहारि ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हडसहारी-वातकफनाशक, टूटी हड्डीको जोडनेवाली, उष्ण, सारक, कृमिघ्न, बवासीरको दूर करनेवाली, आंखके रोगका नाशकरनेवाली, रूखी, स्वादिष्ठ, हलकी, वीर्य्यजनक, पाचक और पित्तकारक है । हडसहारीकी लकडीका एक टुकडा लेकर उसकी छाल छीलकर चूर्ण करले, पश्चात् उस चूर्णमें गीले उडदोंकी छिलकारहित दाल चूर्णसे आधी मिलावे दोनोंको सिलपर महीन पीस तिलके तेलमें वडी बनावे, यह वडी अत्यन्त वातका नाश करेहै ।

अपरञ्च ।

वज्रवल्लीसरारूक्षाकृमिदुर्नामनाशिनी ।
दीपन्युष्णाविपाकेम्लास्वाद्वीवृष्याबलप्रदा ॥
अर्शसातुविशेषेणहिताचैवाग्निदीपनी ।
चतुर्धाराकाण्डवल्लीभूतोपद्रवशूलहा ॥
अत्युष्णाध्मानवातांश्चतिमिरवातरक्तकम् ।
अपस्मारंवातरोगनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥
त्रिधाराकाण्डवल्लीतुसरालघ्व्यग्निदीपनी ।
रूक्षोष्णामधुरावातकृम्यर्शः कफनाशिनी ॥
काण्डवल्लीतुकटुकातिक्तानोष्णासरामता ।
पित्तलाचकफंगुल्मलूतादुष्टव्रणंतथा ॥
प्लीहोदराग्निमांद्यानिशूलंवातंचनाशयेत् ।
मलस्तम्भहराचैवकीर्त्तितामुनिभिः पुरा ॥ (नि० र०)

अर्थ–वज्रवल्ली–दस्तावर, रूखी, कृमि, ववासीरनाशक, पचनेमें अम्ल, स्वादिष्ठ, वीर्यजनक, वलदायक, विशेषकरके ववासीरके लिये अधिक हितकारी है और अग्निदीपक है। चौधारा काण्डवेल–भूतोपद्रवको दूर करनेवाली, शूलनाशक, अत्यन्त उष्ण तथा आध्मान, वात, तिमिर, वातरक्त, अपस्मार और वातरोगविनाशकहै। त्रिधारी काण्डवेल–दस्तावर, हलकी, अग्निदीपक, रूखी, उष्ण, मधुर तथा वात, कृमि, ववासीरऔर कफनाशक है। काण्डवल्ली–कटु, तिक्त, उष्ण, दस्तावर, पित्तजनक तथा कफ, गुल्म, लूता, दुष्टव्रण, प्लीहा, उदर, मदाग्नि, शूल, वात और मलस्तम्भको दूरकरैहै।

विवरण। इसकी वेल थूहरकी जाति होतीहै, इस वेलमें चार छै अंगुलपै गाठ होतीहै, यह द्विधार, तिधार, चारधार इनमेंसे एक हडसधारीकी जाति होती है। काण्डवेलके भिन्नभिन्न भागमें काण्ड होतीहै इसकारण संस्कृतमें इसको काण्डवल्ली कहतेहैं, यह शकलके समान होतीहै, इसलिये इसको हडशङ्करी कहते हैं।

कलिकारीनामानि।

कलिकारीलाङ्गलिकीदीप्ताचगर्भघातिनी।
अग्निजिह्वावह्निशिखावह्निवक्राचलांगुली॥

अर्थ–कलिकारी, लाङ्गलिकी, दीप्ता, गर्भघातिनी, अग्निजिह्वा, वह्निशिखा, वह्निवक्त्रा, लांगुली, (हलिनी, गर्भपातिनी, विशल्या, अग्निमुखी, हली, नक्ता, इन्द्रपुष्पिका, विद्युज्ज्वाला, व्रणहृत्, पुष्पसौरभा, स्वर्णपुष्पा, इन्द्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी, अनन्ता, कलिकारिका, लांगलिका, गर्भनुत्)

संस्कृतभाषामें	कलिकारी।
हिन्दीभाषामें	कलिहारी, कलियारी।
बंगलामें	विषलाङ्गला, ईशलाङ्गला।
मराठीभाषामें	खडयानाग, चगमोड्या, कळलावी।
गुजरातीभाषामें	दुधियो, वछनाग, कल्गारी।
को०	कल्ई।
कर्णाटकीभाषामें	राटागारी।
मला०	मेहोनि, फाडल।
इंग्रेजीभाषामें	गुलकसवेन। Wolfs bane
लेटिन्भाषामें	ग्लोरीओझासुपर्वा। Gloriosa superba
	एकोनाइटमनेपिलस। Aconitum napellus

अस्या गुणाः ।

कलिकारीसरातीक्ष्णाकुष्ठदुष्टव्रणापहा ॥ (वि० ति० भा०

अर्थ–कलिहारी–सारक, तीक्ष्ण और कुष्ठ तथा दुष्ट व्रणको नष्ट करनेवाली है।

अपिच ।

कलिकारीसराकुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित् ।
सक्षाराश्लेष्मजित्तिक्ताकटुकातुवरापिच ॥
तीक्ष्णोष्णाकृमिहृल्लघ्वीपित्तलागर्भपातिनी ।(भा० प्र०)

अर्थ–कलिहारी, सारक, कुष्ठ, शोफ, बवासीर, व्रण और शूलका नाश करेहै । क्षाररसयुक्त, कफनाशक, कडवी, चरपरी, कषेली, तीक्ष्ण, गरम, कृमिहारक, हलकी, पित्तजनक और गर्भको गिरानेवाली है ।

अन्यच्च ।

कलिकारीसरातीक्ष्णागर्भशल्यव्रणापहा ।
शुष्कगर्भञ्चगर्भञ्चपातयेल्लेपमात्रतः ॥ (शो० नि०)

अर्थ–कलिहारी–सारक, तीक्ष्ण तथा गर्भशल्य और व्रणनाशक है। शुष्कगर्भ और गर्भको केवल लेपसेही गिरानेवाली है ।

अपिच ।

कलिकारीसरातिक्ताकट्वीपट्वीचपित्तला ।
तीक्ष्णोष्णातुवरालघ्वीकफवातकृमिप्रणुत् ॥
वस्तिशूलंविषचार्शः कुष्ठकण्डूव्रणंतथा ।
शोथशोषञ्चशूलञ्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥
शुष्कगर्भञ्चगर्भञ्चपातयेदितिकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ–कलिहारी–सारक, कडवी, चरपरी, खारी, पित्तकारी, तीक्ष्ण, गरम, कषेली, हलकी तथा कफ, वात, कृमि, वस्ति शूल, विष और कोढ, बवासीर, कण्डू, व्रण, सूजन, शोष, शूल, शुष्कगर्भ और गर्भको दूर करनेवाली है।

विवरण । कलिहारीका क्षुप बच्छनागकी बेलके समान बडी आकृतिवाला होताहै, पत्ते अंगाडूली समान होतेहैं । फूल–लाल और पीले मिश्रित रंगके अत्यन्त सुन्दर होतेहैं । फल–तीनोंधाराओंमें विरले समान होते हैं.

उसके भीतर लाल छालवाले इलायचीके वीजोंके समान वीज होतेहैं, इसकी वेलके नीचे गाठ होतीहै, उसकी ऊपरकी छाल पिलाई लिये होतीहै, इस-गाठको वच्छनाग कहते हैं इसमें विष होताहै ।

करवीरनामानि ।



करवीर श्वेतपुष्प शतकुम्भोऽश्वमारक ।
द्वितीयोरक्तपुष्पश्चचण्डालोलगुडस्तथा ॥

अर्थ–करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुम्भ, अश्वमारक, (प्रतिहास, शतप्रास, चण्डात, हयमारक, अश्वमार, अश्वघ्न, हयारि, शीतकुम्भ, तुरङ्गारि, रङ्गारि, शातकुम्भ, प्रचण्ड, अश्वहा, वीर, हयमार, हयघ्न, शतकुन्द, अश्वरोधक, वीरक, कुन्द, शकुन्द्र, तुङ्गारी, श्वेतपुष्पक, अश्वान्तक, नखराह्व, अश्वनाशक, स्थलकुमुद, दिव्यपुष्प, हरिप्रिय, गौरीपुष्प और सिद्धपुष्प, यह नाम श्वेतकरवीरके हैं । रक्तपुष्प, चण्डात, लगुड, रक्तप्रसव, गणेशकुसुम, चण्डीकुसुम, क्रूर, भूतद्रावी, रविप्रिय)

संस्कृतभाषामें	करवीर, श्वेतकरवीर, रक्तकरवीर ।
हिन्दीभाषामें	सफेदकनेर, लालकनेर, पीलीकनेर, काले फूलकी कनेर ।
बंगलाभाषामें	करवी, लालकरवी ।
मराठीभाषामें	कहेर, पाढरी, तानडी, पिंवळी ।
गुजरातीभाषामें	कणेर, धोलाफुलनी, रातापुलनी, गुलाबी-फूलनी, पीला फूलनी ।
कर्णाटकीभाषामें	वाकणर्लिंगे, केगणर्लिंगे ।

तैलिङ्गीभाषाम कानेरचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषाम स्वीटसेन्टेड् ओलियण्डर Sweet scented oleander
लैटिन्भाषामें नीरीयम ओडोरम Nerium odorum नीरीयम
ओलियण्डर Nerium oleander सर्वराथिविटिया Cerbera Thevetia
फारसीभाषामें खरजेहरा ।
अरबीभाषामें सुमुल, हिमारदफली ।

श्वेताश्वमारकगुणाः ।

हयारिः पञ्चधा प्रोक्तः श्वेतो रक्तश्च पाटलः ।
पीतः कृष्णः समुद्दिष्टः श्वेतस्यैतान्गुणाञ्छृणु ॥
कटुस्तिक्तश्च तुवरस्तीक्ष्णो वीर्येण चोष्णदः ।
ग्राही मेहकृमीन्कुष्ठव्रणार्शोवातनुत्परः ॥
भक्षितो विषवज्ज्ञेयो नेत्र्यो लघुर्विषापहः ।
विस्फोटकुष्ठकृमिनुत्कण्डूव्रणकफापहः ॥
ज्वरनेत्ररुजं चैव हयप्राणांश्च नाशयेत् ।

अर्थ-कनेर-सफेद, लाल, गुलाबी, पीली और काली इसप्रकार फूलोंके भेदसे पाच प्रकारकी है । इनमें सफेद कनेर कटु, तिक्त, कषैली, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, ग्राही तथा प्रमेह, कृमि, कोढ, घाव, बवासीर और वातनाशक है, यह भक्षण करनेमें विषके समान है, और नेत्रोंको हितकारी, हलकी तथा विस्फोट, कुष्ठ, कृमि, कण्डू व्रण, कफ, ज्वर, नेत्ररोग और घोडेके प्राणोंको हरनेवाली है ।

रक्तकरवीरगुणाः ।

रक्तवर्णः शोधकः स्यात्कटुः पाके च तिक्तकः ।
कुष्ठादिनाशको लेपादथ पाटलवर्णकः ॥
शीर्षपीडाकफवातनाशयेदिति कीर्तितः ।
रक्तादिचतुर्भेदा गुणाः श्वेतहयारिवत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लाल कनेर-शोधक, चरपरी, पकनेके समय चरपरी और इसका लेप करनेसे कोढ दूर होजाते हैं । गुलाबी कनेर-मस्तकशूल, कफ, वात,

इनका नाश करैहै, इसके और गुण तथा पीली, काली कनेरोंके गुण सफेद कनेरकी समान जानने।

विवरण। कनेरके वृक्ष, वन, उपवन और पुष्पवाटिकामें लगाये जातेहैं। इसपर लाल, गुलाबी, सफेद, पीले और काले फूल आते हैं लाल, पीले और सुफेद फूलकी कनेर सर्वत्र होतीहै।

कनेरमें विष होता है। इसको विना विचारे खानेसे मनुष्य मृत्युको प्राप्त होते हैं इसकारण इसको विना विचारे कभी भक्षण करना नहीं चाहिये। इसका घी बनाते हैं, वह घी अत्यन्त नशीला होताहै। मात्रा दोरत्तीसे लेकर चाररत्तीतककी।

धुस्तरनामानि।





धुस्तूरोमदनोन्मत्त कितव'कनकाह्वय।
शिवप्रियोमहामोही देविकाखरदूषण॥

अर्थ-धुस्तूर, मदन, उन्मत्त, कितव, कनकाह्वय, शिवप्रिय, महामोही, देविका, खरदूषण, (धूर्त, मातुल, पुरीमोह, धूर्तकृत, धत्तूर, घण्टिक, शठ, मातुलक, श्याम, शिवशेखर, सज्जृम्भन, कादलापुष्प, खल, कण्टफल, मोहन, कलम, मत्त, शैव, तूरी, धुस्तुर, धूतुर, उन्मत्तक, मदनक, हरवल्लभ, कण्ट-

फल, कनक, सविष, मोहन, मदकर, घण्टापुष्प, महाशठ और जितने सुवर्णके नाम हैं वो सब इसके भी जानने)

हिन्दीभाषामें	धतूरा ।
बंगलाभाषामें	धुतुरा ।
मराठीभाषामें	धोत्रा, धोतरा ।
गुजरातीभाषामें	धतुरो ।
कर्णाटकीभाषामें	मदकुणिके ।
तैलिङ्गीभाषामें	नालाउम्मंति, उम्मेत्तचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	उमतताई, कारुउमते ।
पारसीभाषामें	सतुल्या, तातरईसफेदा ।
इंग्रेजीभाषामें	थोर्नआपल स्ट्रामोनिय Thorn apple Stramonium
लेटिन्भाषामें	डाटुरा स्ट्रामोनिय डाटुराआल्वा, डा॰फेस्टुओसा Datura stramonium D. albo D. Fastuosa
अरबीभाषामें	जोजमासील जोजनसी तातूरा ।

अस्य गुणाः ।

धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।
कषायोमधुरस्तिक्तोयूकालिक्षाविनाशनः ॥
उष्णोगुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः । (भा० प्र०)

अर्थ-धतूरा-मद,वर्ण,अग्नि और वात इनको करनेवाला,ज्वरको दूर करनेवाला,कोढका नाश करनेवाला,कसेला, मीठा,कडवा जुयें और लीखोंको दूर करनेवाला, गरम, भारी तथा व्रण, कफ, कण्डू, कृमि और विषनाशक है।

अपिच ।

धत्तूरःकटुरुष्णश्चकांतिकारीव्रणार्तिनुत् ।
त्वग्दोषखर्जूकण्डूतिज्वरहारीभ्रमप्रदः । (रा० नि०)

अर्थ-धतूरा-कटु, उष्ण, कान्तिकारी तथा व्रण, त्वचाके रोग, खर्ज, कण्डू और ज्वरको दूर करे तथा भ्रमदायक है।

अन्यच्च ।

धत्तूरोदुष्टरक्तघ्नोव्रणदाविषपित्तकृत् ॥ (शोढलनिघण्टु)

अर्थ-धतूरा-दुष्टरक्तनाशक, व्रणको दूर करनेवाला, पित्त और विषको दूर करे है।

अपिच ।

धत्तूरकौचसविषौतिक्तोग्रौमोहकारकौ ।
कुष्ठदुष्टव्रणहरौकामलार्शोविषापहौ ॥ (ग० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके धत्तूरे (काला और सफेद) विषयुक्त, कडवे, उग्र, मोहकारक तथा कुष्ठ, दुष्टव्रण, कामला, ववासीर और विषको नष्टकरेहैं ।

अपिच ।

धत्तूरःकांतिकृच्चोष्ण कटुकश्चाग्निदीपकः ।
तुवरोमधुरस्तिक्तोमदकृद्भ्रांतिकृद्गुरुः ॥
वर्ण्यःकुष्ठव्रणश्लेष्मज्वरकण्डूकृमीञ्जयेत् ।
यूकालिक्षाश्रमविषपामात्वग्दोषनाशनः ॥
एषुकृष्णोगुणैःश्रेष्ठोमुनिभिःपरिकीर्त्तितः (नि० र०)

अर्थ-धत्तूरा-कान्तिकारक, गरम, चरपरा, अग्निदीपक, कषेला, मधुर, कडवा, मदकारक, वान्तिकरनेवाला, भारी, वर्णकर्त्ता तथा कुष्ठ, व्रण, कफ-ज्वर, कण्डू, कृमि, जुआ, लीख, आम, विष, पामा और त्वचाके रोगोंका नाशकरेहै इन सबप्रकारके धतूरोंमें काला गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

अपिच ।

धुस्तूरोमूर्च्छाजनकोवह्निपित्तश्चनाशयेत् (रा० व०)

अर्थ-धतूरा-मूर्च्छाकारक अग्नि और पित्तका नाशकरेहै ।

कृष्णधत्तूरकनामानि ।

कृष्णधत्तूरकःसिद्धः कनकःसचिव शिवः ।
कृष्णपुष्पोविषाराति क्रूरधूर्त्तश्चकीर्त्तितः ॥ (रा०व०)

अर्थ-कृष्णधत्तूरक-सिद्ध, कनक, सचिव, शिव, कृष्णपुष्प, विषाराति, क्रूरधूर्त्त ।

हिन्दीभाषामें	कालाधतूरा ।
बंगलाभाषामें	धुतुरा, कनकधुतुरा ।
कर्णाटकीभाषामें	करियमदगणिके ।

राजधत्तूरनामानि ।

राजधत्तूरकश्चान्योराजधूर्त्तोमहाशठ ।

फल, कनक, सविष, मोहन, मदकर, घण्टापुष्प, महाशठ और जितने सुवर्णके नाम हैं वो सब इसके भी जानने)

हिन्दीभाषामें	धतूरा ।
बंगलाभाषामें	धुतुरा ।
मराठीभाषामें	घोत्रा, धोतरा ।
गुजरातीभाषामें	धतुरो ।
कर्णाटकीभाषामें	मदकुणिके ।
तैलिङ्गीभाषाम	नाल्लाउम्मंति, उम्मेत्तचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	उमतताई, कारुउमते ।
पारसीभाषामें	सतुल्या, तातरईसफेदा ।
इंग्रेजीभाषामें	थोर्नआपल स्ट्रामोनिय Thorn apple Stramonium
लेटिन्भाषामें	डाटुरा स्ट्रामोनिय डाटूराआल्वा, डा॰फेस्टुओसा Datura stramonium D. alba D. fastuosa
अरबीभाषामें	जोजमासील जोजनसी तातूरा ।

अस्य गुणाः ।

धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।
कषायोमधुरस्तिक्तोयूकालिक्षाविनाशनः ॥
उष्णोगुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः । (भा० प्र०)

अर्थ-धतूरा-मद,वर्ण,अग्नि और वात इनको करनेवाला,ज्वरको दूर करनेवाला,कोढका नाश करनेवाला,कषेला, मीठा,कडवा जुयें और लीखोंको दूर करनेवाला, गरम, भारी तथा व्रण, कफ, कण्डू, कृमि और विषनाशक है ।

अपिच ।

धत्तूरःकटुरुष्णश्चकांतिकारीव्रणार्तिनुत् ।
त्वग्दोषखर्जूकण्डूतिज्वरहारीभ्रमप्रदः । (रा० नि०)

अर्थ-धतूरा-कटु, उष्ण, कान्तिकारी तथा व्रण, त्वचाके रोग, खर्ज कण्डू और ज्वरको दूर करे तथा भ्रमदायक है ।

अन्यच्च ।

धत्तूरोदुष्टरक्तघ्नोव्रणहाविषपित्तकृत् ॥ (शोढलनिघण्टु)

अर्थ-धतूरा-दुष्टरक्तनाशक, व्रणको दूर करनेवाला, विष और पित्तको दूर करे है ।

अपिच ।

धत्तूरकौचसविषौतिक्तोग्रौमोहकारकौ ।
कुष्ठदुष्टव्रणहरौकामलार्शोविषापहौ ॥ (ग० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके धत्तूरे (काला और सफेद) विषयुक्त, कडवे, उग्र, मोहकारक तथा कुष्ठ, दुष्टव्रण, कामला, ववासीर और विषको नष्टकरेहैं ।

अपिच ।

धत्तूरःकांतिकृच्चोष्ण कटुकश्चाग्निदीपक ।
तुवरोमधुरस्तिक्तोमदकृद्वांतिकृद्गुरु ॥
वर्ण्यःकुष्ठव्रणश्लेष्मज्वरकण्डूकृमीञ्जयेत् ।
यूकालिक्षाश्रमविषपामात्वग्दोषनाशनः ॥
एषुकृष्णोगुणे श्रेष्ठोमुनिभि परिकीर्त्तित (नि० र०)

अर्थ-धत्तूरा-कान्तिकारक, गरम, चरपरा, अग्निदीपक, कषेला, मधुर, कडवा, मदकारक, वान्तिकरनेवाला, भारी, वर्णकर्त्ता तथा कुष्ठ, व्रण, कफ-ज्वर, कण्डू, कृमि, जुआ, लीख, आम, विष, पामा और त्वचाके रोगोंका नाशकरेहै इन सबप्रकारके धतूरोंमें काला गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

अपिच ।

धुस्तूरोमूर्च्छाजनकोवह्निपित्तश्चनाशयेत् (रा० व०)

अर्थ-धतूरा-मूर्च्छाकारक अग्नि और पित्तका नाशकरेहै ।

कृष्णधत्तूरकनामानि ।

कृष्णधत्तूरक सिद्ध कनकःसचिव शिव ।
कृष्णपुष्पोविषाराति क्रूरधूर्त्तश्चकीर्त्तितः ॥ (रा०व०)

अर्थ-कृष्णधत्तूरक-सिद्ध, कनक, सचिव, शिव, कृष्णपुष्प, विषाराति, क्रूरधूर्त्त ।

हिन्दीभाषामें	कालाधतूरा ।
बंगलाभाषामें	धुतुरा, कनकधुतुरा ।
कर्णाटकीभाषामें	करीयमद्दगणिके ।

राजधत्तूरनामानि।

राजधत्तूरकश्चान्योराजधूर्त्तोमहाशठ ।

निश्रेणिपुष्पकोभ्रान्तोराजस्वर्ण पडाह्वय· ॥

अर्थ-राजधत्तूरक, राजधूर्त, महाशठ, निश्रेणिपुष्पक, भ्रान्त, राजस्वर्ण और पडाह्वय।

सितनीलकृष्णलोहितपीतप्रसवाश्चसतिधत्तूरा ।
सामान्यगुणोपेतास्तेषुगुणाढ्यस्तुकृष्णकुसुम स्यात ॥

अर्थ-धतूरे-सफेद, नीले, काले, लाल और पीले फूलके होतेहैं, इन सबोंमें सामान्यही गुण हैं, किन्तु काले फूलका धतूरा अधिक गुणवाला है।

प्रयोग

श्वासके रोगमें बढेहुएश्वासको रोकनेके लिये इसके सूखे डंठल और पत्तोंका धुआ पिलावे। वातादिरोग और चोटलगीहुइ दर्दकी जगहमें धतूरेका रस गायका घी और सेंधानोन मिलाकर दर्दके स्थानमें लगावे। धतूरेके बीजसे वातजनित शिरोरोग आराम होताहै।

विवरण। धतूरा फूलके भेदसे काला, नीला, सफेद, पीला ४-५ प्रकारका होताहै। आप जंगलमें उत्पन्न होताहै। काले और सुनहरी फूलका धतूरा बागादिमें होताहै, पत्ते मध्यमाकार होतेहैं, फूल नलके आकार होताहै। फूलका रंग बीचमें सफेद और ऊपर सफेद, नीला, काला पीला, होताहै, जिसके पांच भाग होतेहैं, फूलकी बाहिरी पांच पत्तडियाँ नीलरंगकी होती हैं। फल-गोल, कांटेदार और भीतर बहुत बीजवाला होताहै। जिस धतूरेका रंग अत्यन्त काला और डण्डी, पत्ते, फूल, फल तथा सर्वांग काला हो, उस धतूरेमें विष अधिक होताहै और उसके गुणभी अधिक हैं, फल सूखनेपर कठोर होजाताहै इसके बीजोंमें विष अधिक होताहै, उन बीजोंको मात्रासे अधिक खानेसे मृत्यु होतीहै, वैद्यनादिक धातु छिकी औषधिमें इसके बीजोंका व्यवहार ग्रन्थोंमें लिखा है, इसके पत्ते प्रमेहको दूर करनेवालेहैं, काले धतूरेके पंचांगकी धूपसे खांसी दूर होतीहै। धतूरेके मदको दूर करनेके लिये धतूरेकी भांगका नाम लेना चाहिये, धतूरेका नाम धतूरेके विषको दूर करनेवाला है। अथवा धतूरेके विषमें उसको पीसकर पिलावे, तथा तत्कालका दुहा हुआ दूध और घी मिलाकर पीजाय।

व्यवहार-फूल, पत्ते, बीज। मात्रा आधी रत्तीसे एक रत्तीतक।

वासकनामानि ।





वासकोवासिकावासासिंहिकारामरूपक ।
मातृसिंहीवैद्यमाताकसनोत्पाटनोवृष ॥

अर्थ–चासक, वासिका, वासा, सिंहिका, गमरूपक, मातृसिंही, वैद्यमाता, कसनोत्पाटन, वृष, (अटरुप, सिंही, वृष, सिंहास्य, वाजिदन्तक, आमलक, वाशा, वाशिका, अटरूप, वासक, घाम, वाजी, वैद्यसिंही, सिंहपर्णी, भिषङ्-

माता, रसादनी, सिंहमुखी, कण्ठीरवी, सितकर्णी, वाजिदन्ती, नागा, पंच मुखी, सिंहपत्री, मृगेन्द्राणी, आटरूष, अटरूप सिंहानन)

संस्कृतभाषामें	वासक, आटरूष ।
हिन्दीभाषामें	वासा, अडूसा, विसौंटा ।
बङ्गभाषामें	वाकस, छोट वाकस ।
मराठीभाषामें	अडुळसा ।
गुजरातीभाषामें	अरडुशो ।
कर्णाटकीभाषामें	आडसोगे ।
तैलङ्गीभाषामें	आडासार, आडाषाकु ।
तामिलीभाषामें	अघडोढे ।
लैटिन्भाषामें	आधाटोडा वासीका । Adhatoda vasica

अस्य गुणाः ।

वासकोवातकृत्स्वर्य्यःकफपित्तास्रनाशनः ।
तिक्तस्तुवरकोहृद्योलघुःशीतस्तृडार्तिहृत् ॥
श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ।(भा. प्र.)

अर्थ-अडूसा-वातकारक, स्वरको उत्तम करनेवाला, कफ, रक्तपित्त-नाशक, कडवा, कषेला, हृदयको हितकारी, हलका, शीतल तथा तृषा, श्वास, खांसी, ज्वर, वमन, मोह, कोढ और क्षयरोगको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

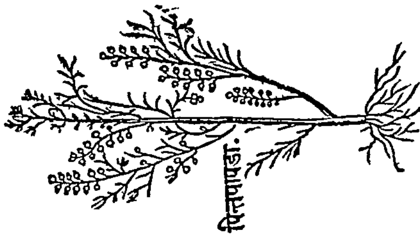
वासातिक्ताकटुःशीताकासघ्नीरक्तपित्तजित् ।
कामलाकफवैकल्यज्वरश्वासक्षयापहा ॥ (राजनि०)

अर्थ-अडूसा-तिक्त, कटु, शीतल तथा खांसी, रक्तपित्त, कामला, कफ विकलता, ज्वर, श्वास और क्षयरोगनाशक है ।

अडूसेका क्षुप होताहै, पत्ते लम्बे अनीदार, अमरूदके समान होतेहैं, फूल सफेद लगताहै, दूसरा एक और लाल फूलका अडूसा होता है अडूसा सर्वत्र मशहूर है ।

पर्पटनामानि ।

पर्पटोवरतिक्तःस्यात्पर्पटकश्चरः ।
कथितःपांशुपर्य्यायस्तथाकवचनामकः ॥



अर्थ–पर्पट, वरातिक्त, पर्पटक, पांशुपर्य्याय, कवचनामक, (त्रियष्टि, तिक्त, चरक, वरक, अरक, रेणु, तृष्णारि, शीत, शीतप्रिय, पांशु, कलपाङ्ग, वर्म्मकण्टक, कृष्णशाख, प्रगन्ध, सुतिक्त, रक्तपुष्पक, पित्तारी, कटुपत्र, नरु, शीतवल्लभ)

संस्कृतभाषामें	पर्पट ।
हिन्दीभाषामें	पित्तपापडा, दवन पापरा ।
वंगभाषामें	क्षेत् पापडा ।
मराठीभाषामें	सिरपठी, पित्तपापडा, को०–थरमरें ।
वम्र०	पित्तपापडा ।
गुजरातीभाषामें	पितपापडो, खडमाल्यिो ।
	क्षेत्रपर्पट, धातो ।
कर्णाटकी भाषामें	पपाटक ।
तैलिङ्गीभाषामें	पापार्टकमु ।
औत्कलीभाषामें	जडपाँपुडा ।
इंग्रेजीभाषामें	जस्टिसयाप्रोकंबेन्स । Justicia Procorabens
लैटिन् भाषामें	फुमेरियापार्वीफ्लोरा । Fumeria Parviflora
	फुमेरियाओफिसिनेलीस । Fumeria officinalis
फारसीभाषामें	शातरा ।
अरबीभाषामें	बकलतुल मलीक ।

अस्य गुणाः ।

पर्पट शीतलस्तिक्त सग्राहीवातकोपन ।

माता, रसादनी, सिंहमुखी, कण्ठीरवी, सितकर्णी, वाजिदन्ती, नासा, पञ्चमुखी, सिंहपत्री, मृगेन्द्राणी, आटरूष, अटरूष सिंहानन)

संस्कृतभाषामें	वासक, आटरूष ।
हिन्दीभाषामें	वासा, अडूसा, विसौंटा ।
वङ्गभाषामें	वाकस, छोट वाकस ।
मराठीभाषामें	अडुळसा ।
गुजरातीभाषामें	अरडुसो ।
कर्णाटकीभाषामें	आडसोगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	आडासार, आदापाकु ।
तामिलीभाषामें	अधडोदे ।
लैटिनभाषामें	आधाटोडा वासीका । Adhatoda vasica

अस्य गुणाः ।

वासकोवातकृत्स्वर्य्यःकफपित्तास्रनाशनः ।
तिक्तस्तुवरकोहृद्योलघु शीतस्तृडार्तिहृत् ॥
श्वासकासज्वरच्छर्दिमोहकुष्ठक्षयापहः । (भा प्र.)

अर्थ-अडूसा-वातकारक, स्वरको उत्तम करनेवाला, मलज, रक्तपित्त नाशक, कड़वा, कषेला, हृदयको हितकारी, हलका, शीतल तथा तृषा, श्वास, खांसी, ज्वर, वमन, मोह, कोढ और क्षयरोगको दूर करेहै ।

अपरञ्च ।

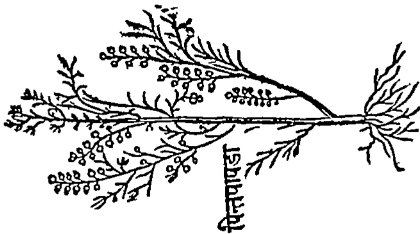
वासातिक्ताकटुःशीताकासभीरक्तपित्तजित् ।
कामलाकफवैकृव्यज्वरश्वासक्षयापहा ॥ (राजनि॰)

अर्थ-अडूसा-तिक्त, कटु, शीतल तथा खांसी, रक्तपित्त, कामला, कफ विकलता, ज्वर, श्वास और क्षयरोगनाशक है ।

अडूसेका क्षुप होताहै, पत्ते लम्बे अनीदार, अमरूदके समान होतेहैं, पुष्प सफेद् लगतेहैं, दूसरा एक और लाल पुष्पका अडूसा होता है, अडूसा सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

पर्पटनामानि ।

पर्पटोवरतिक्तश्चस्मृतःपर्पटकश्चसः ।
कथितःपांशुपर्य्यायस्तथाकवचनामकः ॥



अर्थ–पर्पट, वरातिक्त, पर्पटक, पाशुपर्य्याय, कवचनामक, (त्रियष्टि, तिक्त, चरक, वरक, अरक, रेणु, तृष्णारि, शीत, शीतप्रिय, पाशु, कलपाङ्ग, वर्म्मकण्टक, कृष्णशाख, प्रगन्ध, सुतिक्त, रक्तपुष्पक, पित्तारी, कटुपत्र, नक्र, शीतवल्लभ)

संस्कृतभाषामें	पर्पट ।
हिन्दीभाषामें	पित्तपापडा, दवन पापरा ।
वंगभाषामें	क्षेत्र पापडा ।
मराठीभाषामें	सिरपठी, पित्तपापडा, को०–परमरं ।
वम्ब०	पित्तपापडा ।
गुजरातीभाषामें	पितपापडो, खडसलियो ।
	क्षेत्रपर्पट, धातो ।
कर्णाटकी भाषामें	पर्पाटक ।
तैलिङ्गीभाषामें	पापाटकमु ।
औत्कलीभाषामें	जडपॉपुडा ।
इंग्रेजीभाषामें	जस्टिसयाप्रोकवेन्स । Justici Procorahens
लैटिन् भाषामें	फुमेरियापार्वीफ्लोरा । Eumeria Parviflora
	फुमेरियाओफिसिनेलीस । Fumeria officinalis
फारसीभाषामें	शातरा ।
अरबीभाषामें	वकल्तल मलीक ।

अस्य गुणाः ।

पर्पट शीतलस्तिक्त सग्राहीवातकोपनः ।

लघु पाकेचकटुकोहरेत्पित्तकफज्वरान् ॥
रक्तदोषारुचिर्दाहग्लानिभ्रममदाञ्जयेत् ।
प्रमेहवान्तितृड्रक्तपित्तानांचविनाशकः ।
अस्यशाकातुसग्राहीशीतावातकरालघु ।
तिक्तारक्तरुजपित्तज्वरतृष्णाश्चनाशयेत् ।
कफभ्रमचदाहञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-पित्तपापड़ा-शीतल, कड़वा, मलरोधक, वातप्रकोपक, हलका, पचनेमें चरपरा तथा पित्त, कफ, ज्वर, रुधिरविकार, अरुचि, दाह, ग्लानि, भ्रम, मद, प्रमेह, वान्ति, तृषा और रक्तपित्तका नाश करनेवाला है । इसका शाक-मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, कड़वा, रक्तरोग, पित्तज्वर, तृषा, कफ, भ्रम और दाहको दूर करेहै ।

विवरण । इसका क्षुप होताहै, इसकी दो जाती है एकमें नीला और दूसरेमें लाल पुष्प आताहै, इन दोनोंमें लालपुष्पका अधिक गुणवाला है ।

निम्बनामानि ।



निम्बोनियमनोनेतापिचुमर्दःसतिक्तकः ।
अरिष्टःसर्वतोभद्रः सुभद्रः पारिभद्रकः ॥
शुकप्रियः शीर्षपर्णोयवनेष्टोवरत्वचः ।
छर्दनोहिंगुनिर्यासः पीतसारोऽग्निप्रियः ॥

अर्थ–निम्ब, नियमन, नेता, पिचुमद, सतिक्तक, अरिष्ट, सर्वतोभद्र, सुभद्र, पारिभद्रक, शुकप्रिय, शीर्षपर्ण, यवनेष्ट, वरत्वच, छर्दन, हिगु, निर्यास, पीतसार, रविप्रिय, (मालक, पिचुमद, पक्वकृत, पूयारि, अर्कपादप, पूकमालक, कीटक, विबन्ध, निम्नक, कैटर्य्य, छर्दिघ्न, प्रभद्र, काकफल, कीरेष्ट, सुमना, विशीर्णपर्ण, पीतसारक, शीत, राजभद्रक)

संस्कृतभाषामें	निम्ब ।
हिन्दीभाषामें	नीम ।
बंगलाभाषामें	निमगाछ ।
मराठीभाषामें	कडूनिंब ।
गुजरातीभाषामें	लिंबडो ।
कर्णाटकीभाषामें	बेड बेवु ।
तैलिङ्गीभाषामें	वेया, टोयचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	वेप्पमरम ।
इंग्रेजीभाषामें	निंबट्री । Nimbtree
लेटिन्भाषामें	एकाडिरेक्टा इंडिका । Azadiracta Indica
	मेलियाएकाडिरेक्टा । Melia Azadiracta
फारसीभाषामें	नेनबनीम दरख्तहक ।

अस्य गुणाः ।

प्रभद्रकः प्रभवतिशीततिक्तकः कफव्रणक्रिमिवमिशोफशांतये ।
बलासभिद्बहुविधपित्तदोषजिद्विशेषतोहृदयविदाहशांतिकृत् ।

अर्थ–प्रभद्रक- (नीम) शीतल, कडवा तथा कफ, व्रण, कृमि, वमन, सूजन, बलास, बहुविध पित्तदोष और विशेषकरके हृदयकी दाहको शान्तकरहै ।

अपरञ्च ।

निम्बवृक्षोलघुः शीतस्तिक्तोग्राहीकटुः स्मृतः ।
अग्निमांद्यकरश्चैवव्रणशोधनकारकः ॥
शोथपाककरोबालेहितोरुच्योमतोबुधैः ।
कृमिवान्तिव्रणकफशोफपित्तविषापहः ॥
वातरुष्टश्चहृद्दाहश्रमकासज्वरतृषाम् ।
अरुचिरक्तदोषञ्चमेहञ्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-नीम-हलका, शीतल, कडवा, ग्राही, कटु, मन्दाग्निकारक, व्रण शोधक, शोफको पकानेवाला, वालकोंको हितकारक तथा कृमि, वमन, व्रण, कफ, शोथ, पित्त, विष, वात, कुष्ठ, हृदयकी दाह, श्रम, खांसी, ज्वर, तृषा अरुचि, रुधिरविकार और प्रमेहका नाशक है।

अथ कोमलपल्लवगुणाः।

कोमलपल्लवश्चास्य ग्राहकोवातकारकः।
रक्तपित्तनेत्ररोगकुष्ठंचैवविनाशयेत ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसके कोमल पत्ते-ग्राही, वातकारक तथा रक्तपित्त, नेत्ररोग और कुष्ठनाशक हैं।

अथ सामान्यपत्रगुणाः।

निम्बपत्रंस्मृतनेत्र्यंकृमिपित्तविषप्रणुत।
वातलंकटुपाकञ्चसर्वारोचककुष्ठनुत। (भा० प्र०)

अर्थ-नीमके पत्ते-नेत्रोंको हितकारी, कृमि, पित्त और विषविनाशक हैं। वादी, पचनेमें कटु, तथा सर्वप्रकारकी अरुचि और कुष्ठनाशक हैं।

अथ जीर्णपत्रगुणाः।

जीर्णपर्णविशेषेणव्रणनाशकरमतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसके पुराने पत्ते-विशेष करके व्रणको दूर करनेवाले हैं।

अथ पुष्पगुणाः।

निम्बवृक्षस्यपुष्पाणिपित्तघ्नानिविशेषतः।
तिक्तानिचकृमिघ्नानितथाकफहराणिच ॥

अर्थ-नीमके फूल-पित्तनाशक, कडवे तथा कृमि और कफको हरनेवाले हैं।

अथ सूक्ष्मशाखादिगुणाः।

निम्बस्यसूक्ष्मशाखातुकासश्वासार्शगुल्महा।
कृमिमेहहराप्रोक्ताफलञ्चामलघुस्मृतम् ॥
स्निग्धञ्चभेदकंचोष्णंमेहकुष्ठनिनाशकम्।

अर्थ-इसकी सूक्ष्मशाखें-खांसी, श्वास, बवासीर, गुल्म, कृमि और प्रमेहको दूर करनेवाली हैं, इसके अपक्व फल (कच्ची निबोरी) लघु, स्निग्ध, भेदक, गरम, प्रमेह और कुष्ठको नष्ट करते हैं।

अन्यच्च ।

आमफलरसेतिक्तपाकेतुकटुकंमतम् ।
स्निग्धंलघूष्णकुष्ठघ्नगुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥

अर्थ–कच्ची निंवोली–रसमें कडवी, पचनेमें चरपरी, स्निग्ध, हलकी, गरम तथा कोढ, गुल्म और बवासीर, कृमि और प्रमेहको हरनेवाली है ।

अस्य पक्वफलगुणा ।

निम्बस्यपक्वमधुरसुतिक्तस्निग्धफलशोणितपित्तरोगे ।
कफेप्रशस्तंनयनामयघ्नक्षतक्षयघ्नगुरुपिच्छलश्च ॥

अर्थ–पकी निंवोली–मधुर, कडवी, स्निग्ध तथा रक्तपित्त, कफ, नेत्ररोग, क्षत और क्षयरोगनाशक है तथा भारी और पिच्छलहै ।

अस्य बीजस्य मज्जागुणा ।

निम्बबीजस्यमज्जातुकुष्ठघ्नीकृमिनाशिनी ।

अर्थ–निंवोलीकी मींग–कुष्ठ और कृमिनाशक है ॥

अस्य तैलगुणा ।

निम्बतैलन्तुकुष्ठघ्नतिक्तकृमिहरपरम् ॥

अर्थ–नीमके बीजाका तेल–कडवा कुष्ठ और कृमिनाशक है ।

अस्य पञ्चाङ्गगुणा ।

निम्बवृक्षस्यपञ्चागरक्तदोषहरमतम् ।
पित्तकण्डूव्रणदाहकुष्ठश्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ–नीमका पचाग–(छाल, पत्ते, फूल, फल, जड) रुधिरविकार, पित्त, कण्डू, व्रण, दाह और कुष्ठको दूर करेहै ।

विवरण । नीमका वृक्ष बडा होताहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमे अधिकतासे पाया जाताहै । वसतऋतुके आरम्भमें नये पत्ते और अन्तमें फूल आतेहैं । वमिरोगमें पत्तोंको पानीमें पकाके रोगीको पिलावे तो वमन और कुष्ठरोग बद होजायगा । मसूरिका रोगके लेपादिमें इसका व्यवहार होता है । मसूरकी दालको इसके पत्तोंमे मिलाकर चैत्र महीनेमें देनेसे अत्यन्त विषेले सापकाभी विष नहीं चढताहै । व्यवहार–छाल, पत्ते, फूल, तेल, जड । मात्रा १ पल ।

महानिम्बनामानि।

महानिम्ब स्मृतोद्रेकाकार्मुकोविषमुष्टिकः ।
केशमुष्टिर्निम्बकश्चरम्यकःक्षीर इत्यपि ॥

अर्थ-महानिम्ब, द्रेका, कार्मुक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निम्बक, रम्यक, क्षीर, (काकाण्ड, वृहन्निम्ब, महातिक्त, महाद्रेष्क, हिमद्रुम, पार्वत, गैरिक, शुक्लसारक, सकालेयक, गिरिपत्र पवनेष्ट, केन्द्र्य)

संस्कृतभाषामें	महानिम्ब ।
हिन्दीभाषामें	बकायन ।
बंगलाभाषामें	घोडानिम, महानिम ।
मराठीभाषामें	बकाणीनिंब, कडुनिंब ।
गुजरातीभाषाम	बकान्य ।
कर्णाटकीभाषामें	महाबेट ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्देवेपा, गगरासिचेट्टु, तुरकवाप, पाजवेप ।
तामिलीभाषामें	मालाइवेनुवावेप्पम ।
लेटिन्‌भाषामें	मेलिया एजेडेरक। Melia Azedarach
फारसीभाषामें	आजाददरख्त ।
अरबीभाषामें	वान (वृक्ष) हबूल, (बीज)

अस्य गुणाः ।

महानिम्बोहिमोरूक्षस्तिक्तोग्राहीकषायकः ।
कफपित्तक्रमिच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् (भ०नि०)

अर्थ-बकायन-शीतल, रूक्ष कडवी, मलरोधक, कषेली, तथा कफ पित्त, क्रिमि, वमन, कोढ, हृल्लास (उबकाई) और रुधिरविकारको दूर करे।

अन्यच्च।

महानिम्ब कटुस्तिक्त शीतश्चतुवरोमत ।
रूक्षोग्राहीकफदाहव्रणरक्तरुजंतथा ॥
पित्तंक्रमींश्वविषमज्वरंचहृदयव्यथाम् ।
सर्वकुष्ठानिछर्दिंचप्रमेहंचत्रिपृष्ठिकाम् ॥
मूषिकायाविषगुल्मंशीतपित्तंचनाशयेत् ।
कोटरोगंनाशरोगंश्वासंचविनिवारयेत् ॥

अर्थ–बकायन्–कटु, तिक्त, शीतल, कषाय, रूक्ष, ग्राही तथा कफ, दाह, व्रण, रक्तरोग, पित्त, कृमि, विषमज्वर, हृदयव्यथा, सर्वप्रकारके कुष्ठ, वमन, प्रमेह, विषूचिका, मूषेका विष, गुल्म, शीतपित्त, कोढरोग, अर्शरोग और श्वासरोगको निवारण करनेवालीहै ।

विवरण–बकायनके वृक्ष नीमकी समान अधिक लम्बे होतेहै, पत्ते किंचित् बडे होतेहैं, बकायनके फूल भी नीमकी समान होतेहै परन्तु कुछ नीले रंगके होतेहैं फल गोल गोल होते है ।

कैडर्य्यनामानि ।

कैडर्य्योऽन्योमहानिम्बोरामणोरमणस्तथा ।
गिरिनिम्बोमहारिष्ट शुक्रसारोऽलकाह्वय ॥

अर्थ–कैडर्य–महानिम्ब, रामण, रमण, गिरिनिम्ब, महारिष्ट, शुक्रसार, अलकाह्वय (छर्दिघ्न, प्रियसाल, शुक्रसार, वरतिक्त)

संस्कृतभाषामें	कैडर्य ।
हिन्दीभाषामें	मीठानीम, कृष्णनिम्ब, बरसग ।
बंगभाषामें	घोडानिम्बविशेष ।
मराठीभाषाम	कढ्यानिंब, धाणेरानिंब ।
गुजरातीभाषामें	मीठोलीवडो ।
कर्णाटकीमें	कपाहैबेड ।
तैलिङ्गीमे	कारीवेया ।
लेटिनभाषामें	मरेयाकोनिजिआई । Muryava Koriuju
इंग्रेजीभाषामें	सजदकरखी कुनाह ।

अस्य गुणाः ।

कैडर्य कटुकस्तिक्त कषाय शीतलोलघु ।
सन्तापशोपकुष्टास्रक्रमिभूतविषापह ॥ (रा० नि०)

अर्थ–मीठा नीम–कटु, तिक्त, कषाय, शीतल, लघु तया सन्ताप, शोप, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, भूत और विषविनाशक है ।

अन्यच्च ।

कैडर्य शीतलस्तिक्त कटुश्चतुवरोलघु ।
दाहार्श क्रमिशूलघ्न सन्तापविषनाशन ॥
शोफकण्डूभूतबाधानाशयेदितिकीर्त्तितः । (नि० र०)

अर्थ-मीठानीम-शीतल, कडवा, चरपरा, कषेला, हलका तथा शार, मवासीर, कृमि, शूल, सताप, विषनाशक, सूजन, कण्डू, और मूत्रघातको हरनेवाला है ।

विवरण । मीठेनीमका वृक्ष होताहै, पत्ते नीमकी समान किन्तु कहीं गंध होतेहैं, निंबोली शुभखेमें आतीहै और पकनेके समय निंबोलीका रंग लाल पड जाताहै ।

पारिभद्रनामानि ।

पारिभद्रश्चपालाशोरक्तपुष्पःप्रभद्रकः ।
कण्टकीपारिजातःस्यान्मन्दारःकण्टकिंशुकः ॥

अर्थ-पारिभद्र, पालाश, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कण्टकी, पारिजात, मन्दार, कण्टकिंशुक (पारिजात, निम्बतरु, रक्तपुष्पक, क्रिमिशत्रु, रक्तकुसुम, कृमिन्न, बहुपुष्प, रक्तकेसर)

संस्कृतभाषामें	पारिभद्र ।
हिन्दीभाषामें	फरहद ।
बंगभाषामें	पालतेमान्दार ।
मराठीभाषामें	पानरो (को०) पारिंगा ।
गुजरातीभाषामें	पाडेखो ।
कर्णाटकीभाषामें	हरिवाल । (भदकमरम)
तैलिङ्गीभाषामें	मुलमोतिचेट्ट मोदुग्र, बारिदेचेट्ट ।
द्राविडीभाषामें	पजीर ।
तामिलीभाषामें	मुराप ।
इंग्रेजीभाषामें	एरिथिनाइंडिका Erythrina indica
	एरिथिनासुबरोसा Erythrina Suberosa

अस्य गुणाः ।

पारिभद्रः कृमिश्लेष्ममेदः कफानिलापहः ॥ (म०नि०)

अर्थ-फरहद-कृमि, कफ, मेद और कफवातविनाशक है ।

अपिच ।

पारिभद्रः कटूष्णः स्याद्वातनिकृन्तनः ।
अरोचकघ्नःपथ्योदीपनश्चापिकीर्त्तितः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-फरहद-कटु, उष्ण, कफवातनाशक, अरुचिहारक, पथ्य और दीपन है ।

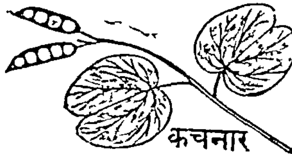
अन्यच्च ।

पारिभद्रःकटूष्णश्चपथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ।
अरोचक कफकृमिमेहशोफहरःस्मृतः ॥
पुष्पपित्तरुजंहन्तिकर्णव्याधिविनाशयेत् ।

अर्थ-फरहद-कटु, उष्ण, पथ्य, अग्निप्रदीपक तथा अरुचि, कफ, कृमि, प्रमेह और सूजनको दूर करेहै, इसके फूल पित्तरोग और कर्णरोगनाशक हैं ।

विवरण । इसके वृक्ष जगल और सडकोपर होतेहै,पत्ते ढाककी समान एक डालीमें तीन तीन होते हैं, फूल लाल और सुन्दर होताहै, इसपर फली आतीहै, इसकी शाखाओमें सूक्ष्म काटे होते हैं। व्यवहार, छाल, पत्ते, फूल । मात्रा २ मासेकी ।

काञ्चनारनामानि ।



काञ्चनोरक्तपुष्पश्चकान्तारःकनकप्रभ· ।
सुवर्णारोथगिरिज·करकः काञ्चनारकः ॥

अर्थ-काञ्चन, रक्तपुष्प, कान्तार, कनकप्रभ, सुवर्णार, गिरिज, करक, काञ्चनारक, (युग्मपत्र, महापुष्प, गण्डारि, यमलच्छद, काञ्चनार, काञ्चनक, शोणपुष्पक, चमरिक, कुद्दार, युगपत्रक, युगपत्र, काञ्चनाल, ताम्रपुष्प, कुद्दार, रक्तकाञ्चन, चम्पविदल, यमलच्छद)

कोविदारनामानि ।

कोविदारोथकुद्दाल कुदार कुण्डलीकुली ।
आस्फोतोदालक स्वल्पकेसरश्चमरीमत· ॥

अर्थ-कोविदार, कुद्दाल, युगपत्र, कुण्डली, कुम्भी, आस्फोत, उद्दालक, स्वल्पकेसर, चमरी, (काञ्चनार, यमलपत्र, पाकारी, आश्मन्तक)

संस्कृतभाषामें	काञ्चनार (र), कोविदार ।
हिन्दीभाषामें	कचनार, सफेदकचनार ।
बंगभाषामें	काञ्चन, सफेदकाञ्चन ।
मराठीभाषामें	कोरल, काञ्चनवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	चम्पाकाटी, चम्पोकाचनार जेना पानडाने चम्पाभाजी कहे छे ।
कर्णाटकीभाषामें	कोचाले कचनार ।
तैलङ्गीभाषामें	देवकाञ्चन ।
लैटिनभाषामें	बोहिनिया, वेरिगेटा । Bauhinia Variegata
	बोहिनिया परपुरिआ B. Purpurea

काञ्चनारगुणाः ।

काञ्चनारोहिमोग्राहीतुवरः श्लेष्मपित्तनुत् ।
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कचनार-शीतल, मलरोधक, कषैला, पित्त, कफनाशक तथा कृमि, कोढ, गुदभ्रंश, गण्डमाला और व्रणका नाशकरे है।

अन्यच्च ।

रक्तस्तुकाञ्चनः शीतः सरोऽग्निप्रदीपनः ।
संप्रोक्तस्तुवरोग्राहीकफपित्तव्रणक्रिमीन् ॥
गण्डमालारक्तपित्तकुष्ठवाताश्रनाशनः ।
गुदभ्रंशरक्तपित्तनाशयेत्पुष्पमस्यच ॥
शीतलं तुवरंरूक्षंग्राहिमधुरं लघु ।
पित्तंक्षयक्षमप्रदरंकासरक्तरुजहरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-लालकचनार-शीतल, सारक, अग्निदीपक, कषैला, भारी तथा कफ, पित्त, व्रण, कृमि, गण्डमाला, रक्तपित्त, कुष्ठ, वात, गुदभ्रंश और रक्तपित्तको दूर करे है। इसके फूल-शीतल, कसैले रूखे, भारी, मधुर, हलके तथा पित्त, क्षय, प्रदर खांसी और रक्तरोगको दूर करे है।

श्वेतकाञ्चनगुणा ।

श्वेतस्तुकाञ्चनोग्राहीतुवरोमधुर स्मृत· ।
रुच्योरूक्ष·श्वासकासपित्तरक्तविकारहा ॥
क्षतप्रदरनुत्प्रोक्तोगुणाश्चान्येतुरक्तवत् ।

अर्थ–सफेदकचनार, ग्राही, कषेला, मधुर, रुचिकारक, रूक्ष, श्वास, खासी, पित्त, रक्तविकार, क्षत और प्रदररोगनाशक है। शेष गुण लाल कचनारकी समान जानने ।

कोविदारगुणा ।

कोविदारोदीपन·स्यात्कपायोव्रणरोपण ।
सग्राहीसारक·स्वादु·पर्णशाकेषुचोत्तम· ॥
मूत्रकृच्छ्रत्रिदोपश्चशोपदाहकफतथा ।
वातहरेत्पुष्पगुणारक्तकाञ्चनपुष्पवत् ॥

अर्थ–कोविदार–(सफेद कचनार) अग्निप्रदीपक, कषेला, व्रणको भरनेवाला, मलरोधक, सारक, स्वादिष्ट यह पत्रशाकोंमें उत्तम है। तथा मूत्रकृच्छ्र, त्रिदोप, शोप, दाह, कफ और वातनाशक है। इसके फूलोंके गुण लालकचनारके समान जानने ।

पीतकाञ्चनारगुणा ।

पीतस्तुकाञ्चनोग्राहीदीपनोव्रणरोपण ।
तुवरोमूत्रकृच्छ्रस्यकफवाय्वोश्चनाशनः ॥

अर्थ–पीला कचनार–ग्राही, दीपन, व्रणरोपण, कषेला, मूत्रकृच्छ, कफ और वातनाशक है ।

काञ्चनीगुणा ।

काञ्चन्युक्ताशीर्परुजत्रिदोपचविनाशयेत् ।
स्तन्यस्यवर्द्धनकरीऋपिभि सूक्ष्मदर्शिभि ॥ (नि०र०)

अर्थ–काञ्चनी–(छोटाकचनार) शिरोरोग और त्रिदोपनाशकहै। तथा स्तनोंमें दूध बढानेवालीहै ।

विवरण। कचनार लाल और सुफेद इनमें दोसे दोमकारका होता है। यह वृक्ष जगल और पहाडोंमे अधिक होतेहै । पत्ते एक एक शाखामे बराबर दोदो होते है, सुफेद फूल आतेहै, और फलियें लगतीहै, दूसरी प्रकारका कचनारभी ऐसाही होताहै परन्तु फूल लाल रगके होतेहै ।

शोभाञ्जननामानि ।

शोभाञ्जनःशिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ॥

अर्थ-शोभाञ्जन, शिग्रु, तीक्ष्णगन्धक, अक्षीव, मोचक, (तीक्ष्णगन्धा, अक्षीव, सोभाञ्जन, सौभाञ्जन, विद्रधिनाशन, मधुगुञ्जन, हरीतशाक, गाञ्जपत्र, शिग्रुक, सुपत्रक, उपदंश, क्षमादंश, कोमलपत्रक, पद्मूल, दंशमूल, तीक्ष्णमूल, उग्र, कामिनीश, शोभतक, शौभाञ्जन, मोचक, तीक्ष्णगन्ध, सुतीक्ष्ण, वनपञ्जर, श्वेतमरिच, कटुकन्द, गन्ध, गन्धक, बहलपत्र, मेचक, आक्षीव, शुभाञ्जन, स्त्रीचित्तहारी, द्रविणनाशन, कृष्णगन्धा, मूलकपर्णी, मोच, विटशिग्रु, जलप्रिय, मुखमोद, कृष्णशिग्रु, चक्षुष्य, रुचिराञ्जन)

श्वेतशिग्रुनामानि ।

श्वेतशिग्रुःसुतीक्ष्णश्चसुखभङ्गःसिताह्वयः ॥

अर्थ-श्वेतशिग्रु, सुतीक्ष्ण, सुखभङ्ग, सिताह्वय, (श्वेतमरिच, रोचन, सुमूल, मधुशिग्रुक)

रक्तशिग्रुनामानि ।

रक्तोऽसौमधुशिग्रुः स्यात्सुरगीचशुभाञ्जना ॥

अर्थ-रक्तशिग्रु, मधुशिग्रु, सुरगी, शुभाञ्जना, (कृष्णबीज, गर्भपातक, रक्तक, मधुर, बहुदल, सुगन्ध, केसरी, सिंह, मृगारी)

संस्कृतभाषामें	शोभाञ्जन, श्वेतशिग्रु । रक्तशिग्रु ।
हिन्दीभाषामें	सैंजिना, सफेदसैंजिना, लालसैंजिना ।
बंगभाषामें	सजिने, सादासजिने, लालसजने ।
मराठीभाषामें	शेगट, शेवगा ।
गुजरातीभाषामें	सरगवो ।
कर्णाटकीभाषामें	बिलिपनुगि, नुग्गेपनुगि ।
तैलङ्गीभाषामें	मुनगा ।
तामिलभाषामें	[illegible]
अंग्रेजीभाषामें	[illegible]
इंग्रेजीभाषामें	[illegible]
लैटिनभाषामें	[illegible]

शि०

दीपनोरोचनोरूक्षःक्षारतिक्तोविदाहकृत् ॥
संग्राहीशुक्रलोहृद्य पित्तरक्तप्रकोपनः ।
चक्षुष्य.कफवातघ्नोविद्रधिश्वयथुक्रिमीन् ॥
मेदोऽपचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणान्हरेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–सैंजिना–चरपरा, पचनेमेंभी चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, मधुर, हलका, अग्निको दीपन करनेवाला, रुचिकारक, रूखा, क्षारयुक्त, कडवा, दाहजनक, मलरोधक, शुक्रवर्द्धक हृदयको हितकारी, पित्तको कुपित करनेवाला, रुधिरको दूषित करनेवाला नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, वात, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेदोरोग, अपची, विष, प्लीहा, गुल्म, गण्डमाला और व्रणको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च ।

शोभाञ्जनस्तीक्ष्णकटु स्वादूष्ण पिच्छिलस्तथा ।
जन्तुवातार्त्तिशूलघ्नश्चक्षुष्योरोचन पर ॥ (रा०नि०)

अर्थ–सैंजिना–तीक्ष्ण, चरपरा, स्वादिष्ठ, गरम, पिच्छिल तथा कृमि, वातकी वेदना और शूलको निर्मूल करेहै। नेत्रोंको हितकारी और परम रोचनहै।

श्वेतशिग्रुगुणा ।

श्वेत प्रोक्तगुणोज्ञेयोविशेषाद्दाहकृद्भवेत् ।
प्लीहानविद्रधिहन्तिव्रणघ्न पित्तरक्तकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–सफेदसैंजिनेके गुणभी सैंजिनेकी समान हैं, विशेषकरके दाह उत्पन्न करेहै। तथा प्लीहा, विद्रधि और व्रणको दूरकरेहै तथा पित्तरक्तकारकहै।

अन्यच्च ।

श्वेतशिग्रु कटुस्तीक्ष्ण शोफानिलनिकृन्तन ।
अङ्गव्यथाहरोरुच्योदीपनोमुखजाड्यनुत ॥ (रा नि)

अर्थ–सफेदसैंजिना–चरपरा, तीक्ष्ण, शोफनाशक, वातविनाशक, अंगव्यथानिवारक, रुचिकारक, अग्निको दीपनकरनेवाला और मुखकी जडताको दूरकरनेवाला है।

रक्तशिग्रुगुणा ।

रक्तशिग्रुर्महावीर्योमधुरश्चरसायन ।

शोभाञ्जननामानि ।

शोभाञ्जनःशिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवसुभाञ्जनः ॥

अर्थ-शोभाञ्जन, शिग्रु, तीक्ष्णगन्धक, अक्षीव, सुभाञ्जन, (तीक्ष्ण अक्षीव, मोचाञ्जन, गौभाञ्जन, विद्रधिनाशन, मधुगुञ्जन, हरीतनाप पन, शिग्रुक, सुपत्रक, उपदंश, क्षमादंश, कोमलपत्रक, घटुपुष्प, तीक्ष्णमूल, उग्र, कामिनीश, शोभतक, शोभाञ्जन, मोचक, ती सुतीक्ष्ण, वनपत्र, श्वेतमरिच, कटुकन्द, गन्ध, गन्धक, कार्तीयर आक्षीव, शुभाञ्जन, स्त्रीचित्तहारी, व्रणनाशन, कृष्णगन्धा, मोच तिलशिग्रु, जलमिष, मुरमोद, कृष्णशिग्रु, चक्षुष्या, रुचिरा

श्वेतशिग्रुनामानि ।

श्वेतशिग्रुःसुतीक्ष्णश्चसुखभङ्गःसिताह्वयः ॥

अर्थ-श्वेतशिग्रु, सुतीक्ष्ण, सुखभङ्ग, सिताह्वय, (श्वेतम सुमूल, मधुशिग्रुक)

रक्तशिग्रुनामानि ।

रक्तोऽसौमधुशिग्रुःस्यात्सुरगीचशुभाञ्जन

अर्थ-रक्तशिग्रु, मधुशिग्रु, सुरगी, शुभाञ्जना, (कृष्ण रक्तक, मधुर, बहुलद, सुगन्ध, केसरी, सिंह, मृगारी)

संस्कृतभाषामें	शोभाञ्जन, श्वेतशिग्रु । र
हिन्दीभाषामें	सैंजिना, सहँजना,
बंगभाषामें	सजिने, सादासजिने
मराठीभाषाम	शेगट, शेवगा ।
गुजरातीभाषाम	सरगवो ।
कर्णाटकीभाषामें	विन्पिन
तैलिङ्गीभाषामें	मुन्ग
तामिल्भाषामें	मो
द्राविडीभाषामें	
इंग्रेजीभाषामें	
लैटिनभाषामें	

शिग्रुःकटुः

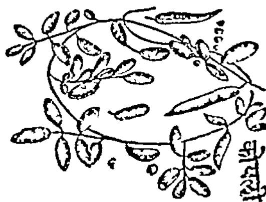
कोढ, क्षय, श्वास और गुल्म (गोला) का नाश करैहै तथा दीपन है ।
विवरण । सँजिनेके वृक्ष बाग, वन और जंगलमें होतेहैं । इसकी फूलोंके लौटफेरसे तीन जातीहैं, फूल सफेद, नीले और लाल आतेहैं, इनमेंसे सफेद फूलका सँजिना अधिकतासे होताहै, इसकी फलियोंको दालमें डालकर खाते हैं, सँजिनेका तेल अनेक प्रकारकी खुजलीको दूर करताहै ।

अपराजितानामानि ।

आस्फोतागिरिकर्णीस्याद्भूमिलग्नापराजिता ।
नगपर्य्यायकर्णीचगवाक्षीगिरिशालिनी ॥

अर्थ-आस्फोता, गिरिकर्णी, भूमिलग्ना, अपराजिता, नगपर्य्यायकर्णी, गवाक्षी, गिरिशालिनी (अश्वक्षुरादिकर्णी, कटभी, दधिपुष्पिका, गर्दभी, सितपुष्पा, श्वेतस्पदा, किणिही, श्वेता, भद्रा, सुपुष्पी, विषघ्नी, सुपुत्री, सिहपुष्पी, श्वेतवराटा, गवादिनी)

नीलापराजितानामानि ।



नीलपुष्पीमहानीलास्यान्नीलागिरिकर्णिका ।
गवादिनीव्यक्तगन्धाविष्णुक्रान्ताविभाण्डिका ॥

अर्थ-नीलपुष्पी, महानीला, नीला, गिरिकर्णिका, गवादिनी, व्यक्तगन्धा, विष्णुक्रान्ता, विभाण्डिका ।

संस्कृतभाषामें	अपराजिता, नीलापराजिता ।
हिन्दीभाषामें	सफेदकोयल, नीलीकोयल ।
बंगलाभाषामें	अपराजिता, नीलअपराजिता ।
मराठीभाषामें	गोकर्णी काळी, पांढरी ।

गुजरातीभाषामें	गरणी ।
कर्णाटकीभाषामें	बिळीगिरिकर्णिके, नीलगिरिकर्णिके ।
तैलिङ्गीभाषामें	नीलगदुना ।
लैटिनभाषामें	क्लीटोरिआ टर्नेटिया Clitorea Ternatea
लै०	मेगोरिअन् Megorian
अ०	मजीरयुतर्णदनी ।

श्वेतापराजितागुणाः ।

श्वेतागोकर्णिकाकट्वीशीतातिक्ताचबुद्धिदा ।
चक्षुष्यातुवराचैवसराविषविनाशिनी ॥
त्रिदोषशीर्षशूलश्चदाहंकुष्ठंचशूलकम् ।
आमपित्तरुजंचैवशोथजन्तूनूव्रणकफम् ॥
ग्रहपीडाशीर्षरोगविषसर्पस्यनाशयेत ।

अर्थ-सफेद कोयल-चरपरी, शीतल, कडवी, बुद्धिदायक, नेत्रोंको हितकारी, कषेली, सरा (दस्तावर), विषविनाशक तथा त्रिदोष, मस्तक-शूल, दाह, कोढ, शूल, आम, पित्तरोग, सूजन, कृमि, व्रण (घाव), कफ, ग्रहपीडा, मस्तकरोग और सर्पके विषको दूर करै ।

कृष्णगोकर्णिकागुणाः ।

कृष्णगोकर्णिकातिक्तारसेस्निग्धात्रिदोषहा ।
शीतवीर्य्यावातपित्तज्वरदाहभ्रमापहा ॥
पिशाचबाधारक्तातिसारोन्मादमदापहा ।
अतिकासश्वासकफकुष्ठजंतुविनाशदा ॥
अन्येगुणास्तुशुभ्रेतगोकर्णीसदृशामता ।

अर्थ-नीली कोयल-कडवी, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, शीतवीर्य तथा वात, पित्त, ज्वर, दाह, भ्रम, पिशाचबाधा, रक्तातिसार, उन्माद, मद, अत्यन्त खांसी, श्वास, कफ, कोढ, जन्तु, और सर्पविषको दूर करै । और गुण सफेद अपराजिताकी समान जानो ।

विवरण-कोयल सफेद और नीली फूलोंके भेदसे दो प्रकारकी है यह बेल बाग और उपवनोंमें होती है इसके छोटे गुलाबकी समान होते हैं इसपर फली लगती है ।

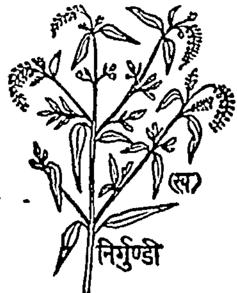
सिन्दुवारनामानि ।

इन्द्राणिकेन्द्रसुरसोनिर्गुण्डीसिन्धुवारक ॥

अर्थ–इन्द्राणिका, इन्द्रसुरस, निर्गुण्डी, सिन्धुवारक, (सिन्धुवार, सिन्धुवारक, सिन्धुक, इन्द्रसुरिप, सिन्दुवारित, इन्द्राणी, शक्राणी, काशनाशिनी, सुरसा, सिन्धु, शुक्लपुष्पक, विसुगन्धक, सुरस, श्वेतपुष्प, स्थिरसाधनक, अनन्त, सिद्धक, अर्थसिद्धक, सिन्दुवारिका)

नीलसिन्धुवारनामानि ।


(क) निर्गुण्डी


(ख) निर्गुण्डी

नीलिकानीलनिर्गुण्डीसिन्दुकोनीलसिन्दुक ॥

अर्थ–नीलिका, नीलनिर्गुण्डी, सिन्दुक, नीलसिन्दुक, (नीलसिन्दुवार, पीतसहा, निर्गुण्डी, भूतकेशी, इन्द्राणी, नीलिका, कपिका, शेफालिका, शीतभीरु, नीलिका, नीलमञ्जरी, कर्त्तरीपत्रा, भूतकेशी, वनजा, मरुत्पत्री, वनेंद्राणी)

संस्कृतभाषामें	सिन्दुवार, नीलसिन्दुवार, निगुण्डी, निर्गुण्डीभेद ।
हिन्दीभाषामें	सम्हालु, निर्गुण्डी, मेउडी, नीलसम्हालु, सिह्म, सम्हालुके बीज ।
बंगभाषामें	निशिन्दा, नीलनिशिन्दा ।
मराठीभाषामें	निर्गुण्डी–पांढऱ्याफुलाची, काऴ्याफुलाची, लिंगुर, निर्गुण्डीचें बीज ।
गुजरातीभाषामें	नागडय, नागडयनारी ।

कर्णाटकीभाषामें	करियल्लाक्किमेउदी विलीयल्लेकि ।
तामिलीभाषामें	नोकूचि, निनोचि, मनजाप ।
बम्ब०	निर्गुण्डी, काट्रि, कन्न अदन्दुसा ।
द्रा०	सानवालि, कालिगुम्बालि ।
पञ्जाबीभाषामें	बणा, स्हारि ।
कोकणीभाषामें	नगूड, सेन्दवार ।
इंग्रेजीभाषामें	फाईवलिव्ह चेष्ट्री । Fiveleaved Chastetree
लेटिन्भाषामें	वाईटेक्सनिगण्डू । Vitex Negundo
तैलिङ्गीभाषामें	वेलावाविली, नाविलिचेट्टू, तेलर, नल्लविलि वविली
फारसीभाषामें	पञ्जुष्ट, तुरुमेपञ्जुष्ट-मिसवान ।
अरबीभाषामें	असालुक, हबुल्फकुल, सनदल, अगनुप ।

सिन्दुवारगुणाः ।

सिन्दुक स्मृतिदस्तिक्त कषाय कटुकोलघु ।
केश्योनेत्रहितोहतिशूलशोथाममारुतान् ॥
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीला सिता द्विधा ।
सिन्दुवारदलजन्तुवातश्लेष्महरलघु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सम्हालू-और नीलसम्हालू दोनों स्मरणशक्तिदायक, कसैले, चरपरे हलके पत्तोंको सुन्दरतादायक, नेत्रोंको हितकारी तथा शूल, सूजन, आम वात, कृमि, कोढ, अरुचि, कफ और ज्वरको दूर करते हैं । सम्हालूके पत्ते- कृमि, वात और कफनाशक हैं तथा हलके हैं ।

कटूष्णानीलनिर्गुण्डीतिक्तारूक्षाचकासजित ।
श्लेष्मशोफसमीरार्तिप्रदराध्मानहारिणी॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलीनिर्गुण्डी-कटु (चरपरी) उष्ण (गरम) तिक्त (कडवी) रूक्ष (रूखी) तथा कास (खांसी) कफ, शोथ (सूजन), वातपीडा, प्रदररोग और आध्मान (अफारा) को दूर करे है ।

अन्यच्च ।

निर्गुण्डीकटुकातिक्तारूक्षोष्णानकषायका ।
स्मृतिप्रशनेत्रहिताकेश्यालघ्वग्निदीपनी ॥
मेध्यामर्त्यानसप्तानाशुदनातमपापहा ।

सन्धिवातञ्चवातञ्चशोफवामकृमीस्तथा ॥
कुष्टकफव्रणप्लीहांगुल्मकण्ठरुजतथा ।
विपशूलचारुचिचज्वरमेदोरुजतथा ॥
गृध्रसीचप्रतिश्यायकासश्वासचनाशयेत् ।
पित्तनाशकरीप्रोक्तापर्णमस्यालघुस्मृतम् ॥
कृमिनाशकरप्रोक्तपूर्ववैद्यैःकृपालुभिः ।

अर्थ–निर्गुंडी–चरपरी, कडवी, रूखी, गरम, कषेली, स्मरणशक्तिदायक, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुन्दरतादायक, हलकी अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक, वर्णकारक तथा गुदवात, क्षय, सान्धवात, सूजन, आम, कृमि, कोढ, कफ, घाव, प्लीहा, गोला, कण्ठरोग, विष, शूल, अरुचि, ज्वर, मेदोरोग, गृध्रसीवात, प्रतिश्याय, (नाकसे पानीगिरना) खासी, श्वास और पित्तको दूर करेहै । इसके पत्ते–हलके और कृमिरोगनाशक हैं ।

कत्तरीनिर्गुण्डीगुणा ।

निर्गुण्डीकर्त्तरीयुक्ताकट्वीतिक्ताकफापहा ।
वातक्षयश्चशूलश्चकण्डूकुष्ठंचनाशयेत् ॥

अर्थ–कर्तरी, निर्गुंडी–चरपरी, कडवी, कफनाशक तथा वात, क्षय, शूल, कण्डू और कुष्ठको नष्ट करेहै ।

अरण्यनिर्गुण्डीगुणा ।

प्रोक्ताचारण्यनिर्गुण्डीपथ्यापित्तज्वरहरेत् ।
विपचगृध्रसीवातनाशयेद्वर्णकारिणी ॥
पर्णंचास्यास्तुकटुकचाग्निदीप्तिकरलघु ।
कृमीन्कफञ्चवातञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥
कटु चोष्ण पुष्पमस्यास्तिक्तकृमिकफापहम् ।
प्लीहागुल्मञ्चवातञ्चकुष्टशोथञ्चनाशयेत् ॥
अरुचेर्नाशकप्रोक्तकण्डूचेवविनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ–वननिर्गुंडी–पथ्य तथा पित्तज्वर, विष और गृध्रसीवातनाशक

है और वर्णकारक है। इसके पत्ते-चरपरे, अग्निको दीपन करनेवाले, रूखे तथा कृमि, कफ और वातनाशक हैं। इसके पुष्प-चरपरे, गरम, कडवे, तथा कृमि, कफ, पीडा, गोला, वात, फोड, सूजन, अरुचि और कण्डू तथा खुजलीका नाश करते हैं।

विवरण। निर्गुण्डीके वृक्ष बाग और वनोंमें होते हैं। पत्ते अरहरकी समान होतेहैं। एक डंडीपै पांच पांच होतेहैं। पत्ते नीले और नीचे सफेद होतेहैं। निर्गुण्डी अनेक जातिकी होतीहै किसीपै काले और किसीपै सफेद फूल आते हैं। फल आमके मौरकी समान गुच्छेदार और केसरी रंगके होतेहैं। व्यवहार। मूल। मात्रा ३ मासेकी।

कुटजनामानि।



कुटजोमल्लिकापुष्प शक्राशोवरतिक्तक ॥

अर्थ-कुटज, मल्लिकापुष्प, शक्राश, वरतिक्त, (शक्र, वत्सक, गिरिमल्लिका, पाण्डुर, मद्गुर, कुटक, कौटज, तिक्तक, रक्तातिसार? शक्रक, शक्रपर्याय, कुटज, कारी, कालिङ्ग, मल्लिका, पुष्प, प्रावृष्य, ग्रन्थिल, पाराव, गवाक्षी, पाण्डुद्रुम, मासपेश्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, शक्रपादप)

संस्कृतभाषामें	कुटज।
हिन्दीभाषामें	कुडा, कौरैया।
बंगभाषामें	कुर्चि, कुरचि।
मराठीभाषामें	कुडा।
गुजरातीभाषामें	कडो।

कर्णाटकीभाषामें	कोडसिगेयमहनु ।
तैलिंगीभाषामें	अकेडु चगलकुष्ठ ।
तामिलीभाषामें	वेप्पाले
तु०	कोडजि ।
इग्रेजीभाषामें	ओवल्लीव्ड रोझबे । Ovalleaved Rose Bay
लैटिन् भाषामें	राइटियाएंटिडिसेन्टरिका । Wrightia antidysenterica
अरबीभाषामें	तिवाज ।

अस्य गुणाः ।

कुटजः कटुकोरूक्षोदीपनस्तुवरोलघु ।
अर्शोतिसारपित्तास्रकफतृष्णामपित्तनुत् ॥
तत्पुष्पशीतलतिक्तकषायलघुदीपनम् ।
वातलकफपित्तास्रकुष्ठातीसारजन्तुजित् ॥
तस्यशिम्बीभवशाकव्यजनचामवातजित् ।
रुच्यकफघ्नंरक्तातीसारकुष्ठक्रिमीञ्जयेत् ॥ (म० वि०)

अर्थ–कुडा–चरपरा, रूखा, दीपन, कषेला, हलका तथा बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त, कफ, तृषा, आम और पित्तको दूर करैहै । कुडेके फूल–शीतल, कडवे, कषेले, हलके, दीपन, वातकारक तथा कफ, रक्तपित्त, कुष्ठ, अतिसार और कृमिको दूर करैहै । इसकी फलियोंका शाक–व्यञ्जन, आमवातनाशक, रुचिकारक, कफनाशक तथा रक्तातिसार, कुष्ठ और कृमिको दूर करैहै, इसकी विशेष पर्य्याय और गुण एव विवरणादिक सब हरीतक्यादिवर्गमें देखो ।

करजनामानि ।



करञ्जोनक्तमालश्चपूतिकःपूतिपत्रकः ।
पूतीकरञ्ज कैडर्यःकलिमारश्चदाहृत ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, पूतिपत्रक, पूतिकरञ्ज, कैडर्य, कलिमार, (पूतिपर्ण, पद्मपत्र, रोचन, गुच्छ, करञ्जक, स्नेहवीर्य)

मधिश्च।

चिरविल्वःकरञ्जोन्य प्रकीर्योगौरएवच ।
उदकीर्योपद्मग्रन्थोवृत्तपर्णःप्रकीर्त्तितः ॥

अर्थ-चिरविल्व, प्रकीर्य, गौर, उदकीर्य, पद्मग्रन्थ, और वृत्तपर्ण ।

अन्यच्च।

करञ्जोनक्तमालश्चपूतिकश्चिरविल्वक ।
पूतिपर्णोवृत्तफलोरोचनोगुच्छपुष्पकः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, चिरविल्वक, पूतिपर्ण, वृत्तफल, रोचन, गुच्छपुष्पक (स्निग्धपत्र, तपस्वी, विषारि, घृतपर्णक)

तृतीय

उदकीर्यस्तृतीयोन्य पद्मग्रन्थाहस्तिवारुणी ।
अंगारवल्लीशार्ङ्गेष्ठाकाकम्भीकरभण्डिका ॥

अर्थ-उदकीर्य-पद्मग्रन्था, हस्तिवारुणी, अंगारवल्ली, शार्ङ्गेष्ठा, काकम्भी, करभण्डिका ।

महाकरञ्जिकाचैवमदहस्तिनिकाचसा ॥

अर्थ-महाकरञ्जिका, मदहस्तिनिका (षड्ग्रन्था मदहस्तिनी)

संस्कृतभाषामें	करञ्ज, पूतिकरञ्ज, घृतकरञ्ज, पद्मग्रन्थ, महाकरञ्ज,
हिन्दीभाषामें	करञ्ज, करञ्जभेद ।
बंगभाषामें	डहरकरञ्ज, नाटाकरञ्ज इत्यादि ।
मराठीभाषामें	घाणेरडाकरञ्ज, पांढराकरञ्ज, करंज ।
गुजरातीभाषामें	करञ्ज, नाहिनकरंज ।
कर्नाटकीभाषामें	नाघणीमक्कु बारयदुणिगिड ।
तैलिङ्गीभाषामें	कानुगचेट्टु मल ।
फा०	कीर्ज ।
तामिलभाषामें	पुंगामारं ।

इग्रेजीभापामें स्मूथ्लिव्ड पोनगेमिया। Smooth leaved Pongamia
लैटिन्भापामें पोनगेमियाग्लेब्रा । Pongamia Glabra अलमस्
इन्टेग्रेफोल्यिा । Almus Integrefolia

करञ्जगुणा ।

करजःकटुकःपाकेनेत्र्योष्णस्तिक्तकोरसे ।
कपायोदावर्त्तवातानांयोनिदोपापह स्मृतः ॥
वातगुल्मार्शव्रणहत्कण्डूकफविपापहः ।
विचर्चिकापित्तकृमित्वग्दोपोदरमेहहा ॥
प्लीहाहरश्चसप्रोक्तःफलमुष्णलघुस्मृतम् ।
शिरोरुग्वातकफहृत्कृमिकुष्टार्शमेहनुत् ॥
पर्णपाकेकटूष्णस्याद्भेदकपित्तललघु ।
कफवातार्शकृमिनुद्व्रणशोथश्चनाशयेत ॥
पुष्पमुक्तचोष्णवीर्य्यंपित्तवातकफापहम् ।
अस्यांकुरारसेपाकेकटुकाश्चाग्निदीपका ॥
पाचकाःकफवातार्शःकुष्टकृमिविपापहा ।
शोथनाशकरा प्रोक्ताऋपिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः॥ (नि र)

अर्थ–करज–पचनेमें चरपरी, नेत्रोंको हितकारी, गरम, कडवी, कपैली तथा उदावर्त, वात, योनिदोप, वातगुल्म, ववासीर, घाव, कण्डू, कफ, विप, विचर्चिका, पित्त, कृमि, त्वचाके विकार, उदरगोग, प्रमेह और प्लीहाको दूर करनेवालीहै । करजके फल–गरम, हल्के तथा शिरोरोग, वात, कफ, कृमि, कोढ, ववासीर और प्रमेहको दूर करै है ।

इसके पत्ते–पचनेमें चरपरे, गरम, भेदक, (दस्तावर) पित्तजनक, हल्के तथा कफ, वात, ववासीर, कृमि, घाव और सूजनको दूर करै हैं । इसके फूल–उष्णवीर्य्य तथा पित्त, वात और कफका नाश करै है । इसके अंकुर–रसमें और पचनेमें चरपरे, अग्निदीपन करनेवाले, पाचक, तथा कफ, वात, ववासीर, कुष्ठ, कृमि, विप और सूजनको दूर करनेवाले हैं ।

अपिच ।

करञ्जोज्वरत्वद्दोपनाशनोदंतदार्ढ्यकृत् ।

करञ्जोनक्तमालश्चपूतिकःपूतिपत्रकः ।
पूतीकरञ्ज कैडर्य कलिमारश्चदाहृतः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, पूतिपत्रक, पूतिकरञ्ज, कैडर्य, कलिमार, (पूतिपर्ण, यद्रस्न, रोचन, गरज, करञ्जक, उदकीर्य)

अपिच ।

चिरबिल्व करञ्जोन्य प्रकीर्यांगारएवच ।
उदकीर्योथपड्ग्रन्थोवृत्तपर्ण प्रकीर्तित ॥

अर्थ-चिरबिल्व, प्रकीर्य, गार, उदकीर्य, पड्ग्रन्थ, और वृत्तपर्ण ।

अन्यच्च ।

करञ्जोनक्तमालश्चपूतिकश्चिरबिल्वक ।
पूतिपर्णोवृत्तफलोरोचनोगुच्छपुष्पक ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, चिरबिल्वक, पूतिपत्र, वृत्तफल, रोचन, गुच्छपुष्पक (स्निग्धपत्र, तपस्वी, विषारि, घृतपर्णक)

तथाच

उदकीर्यस्तृतीयोन्य पड्ग्रन्थाहस्तिवारुणी ।
अगारवल्लीशार्ङ्गेष्टाकाकम्नीकरभण्डिका ॥

अर्थ-उदकीर्य-पड्ग्रन्था, हस्तिवारुणी, अगारवल्ली, शार्ङ्गेष्टा, काकघ्नी, करभण्डिका ।

महाकरञ्जिकाचैवमदहस्तिनिकाचसा ॥

अर्थ-महाकरञ्जिका, मदहस्तिनिका (कापर्जी मदहस्तिनी)

संस्कृतभाषामें	करञ्ज, पूतिकरञ्ज, पूतकरञ्ज, गरदन्द, महाकरञ्ज,
हिन्दीभाषामें	करञ्ज करञ्जभेद ।
बंगभाषामें	डहरकरञ्ज, नाटाकरञ्ज इत्यादि ।
मराठीभाषामें	भापडाकरञ्ज, पाण्डिकरञ्ज, पारञ्जा ।
गुजरातीभाषामें	करंज, घोल्डकरंज ।
कर्णाटकीभाषामें	नापर्गीमसलु, धाकमुरिगिन ।
तैलङ्गीभाषामें	कानुगचेट्टु, कज ।
अरबी०	घोर्त ।
फारसीभाषामें	हुगाधारे ।

इग्रेजीभाषामें स्मूथ्लिव्ड पोनगेमिया। Smooth leaved Pongamia
लैटिन्भाषामें पोनगेमियाग्लेब्रा । Pongamia Glabra अलमस् इन्टेग्रेफोलिया । Almus Integrefolia

करञ्जगुणाः ।

करञ्जः कटुकः पाकेनेत्र्योष्णस्तिक्तकोरसे ।
कषायोदावर्त्तवातानांयोनिदोषापहः स्मृतः ॥
वातगुल्मार्शव्रणहृत्कण्डूकफविषापहः ।
विचर्चिकापित्तकृमित्वग्दोषोदरमेहहा ॥
प्लीहाहरश्चसप्रोक्तःफलमुष्णलघुस्मृतम् ।
शिरोरुग्वातकफहृत्कृमिकुष्ठार्शमेहनुत् ॥
पर्णपाकेकटूष्णस्याद्भेदकपित्तलघु ।
कफवातार्शकृमिनुद्व्रणशोथश्चनाशयेत् ॥
पुष्पमुक्तंचोष्णवीर्य्यंपित्तवातकफापहम् ।
अस्याकुरारसेपाकेकटुकाश्चाग्निदीपकाः ॥
पाचकाःकफवातार्शःकुष्ठकृमिविषापहाः ।
शोथनाशकरा प्रोक्ताऋषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः॥ (नि र)

अर्थ-करज-पचनमें चरपरी, नेत्राको हितकारी, गरम, कडवी, कपैली तथा उदावर्त, वात, योनिदोष, वातगुल्म, बवासीर, घाव, कण्डू, कफ, विष, विचर्चिका, पित्त, कृमि, त्वचाके विकार, उदररोग, प्रमेह और प्लीहाको दूर करनेवालीहै । करजके फल-गरम, हलके तथा शिरोरोग, वात, कफ, कृमि, कोढ, बवासीर और प्रमेहको दूर करै है ।

इसके पत्ते-पचनेमें चरपरे, गरम, भेदक(दस्तावर) पित्तजनक, हलके तथा कफ, वात, बवासीर, कृमि, घाव और कुष्ठको दूर करै हैं । इसके फूल-उष्णवीर्य्य तथा पित्त, वात और कफका नाश करै है । इसके अंकुर-रसमें और पचनेमें चरपरे, अग्निदीपन करनेवाले, पाचक, तथा कफ, वात, बवासीर, कुष्ठ, कृमि, विष और सूजनको दूर करनेवालेहैं ।

अपिच ।

करञ्जोज्वरत्वग्दोषनाशनोदतदार्ढ्यकृत् ।

कटुकोभेदनस्तन्यफलनयनपुष्पहृत् ॥
पित्तश्लेष्मण्युदासीनविष्टम्भनविबन्धकृत् ।(शा० नि०)

अर्थ-करंज-ज्वर और त्वचाके दोषको दूर करै है, दंतोंको दृढ करै है, चरपरी और दस्तावर है। इसके फल-आंखोंके फूलेको दूर करै है। तथा पित्त और कफको हरै है, विष्टम्भ और विबन्धकारक है।

करञ्जतैलगुणाः ।

करञ्जतैलतीक्ष्णोष्णकृमिघ्नरक्तपित्तकृत् ।
नयनामयवातार्त्तिकुष्ठकण्डूव्रणप्रणुत ॥
वातनुत्पित्तकृत्किञ्चिल्लेपनाच्चर्म्मदोषनुत् । (आ० स०)

अर्थ-करंजका तैल-तीक्ष्ण, गरम, कृमिनाशक, रक्तपित्तनाशक तथा नेत्ररोग, वातकी वेदना, कोढ, कण्डू (खुजली) घाव और वातको नाश करै है, किंचित् पित्तकारक और इसका लेप करनेसे त्वचाके विकार दूर होते हैं।

महाकरञ्जगुणाः ।

महाकरजकस्तीक्ष्ण-कटुर्नोष्णश्चतिक्तकः ।
कण्डूविचर्चिकाकुष्ठत्वग्दग्निविषव्रणापहा ॥

अर्थ-महाकरंज-तीक्ष्ण, चरपरी, गरम, कड़वी तथा कण्डू, विचर्चिका, कुष्ठ, त्वचाके रोग, विष और व्रणनाशक है।

घृतकरञ्जगुणाः ।

प्रोक्तोघृतकरजस्तुकटुकोष्णोव्रणापह ।
वातत्रमर्त्वग्दोषविषार्शोविनाशयेत ॥
करञ्जस्त्रयमोक्तागुणास्त्वन्यैभिषग्वरै ।

अर्थ-घृतकरंज-चरपरी, गरम तथा व्रण (घाव), वात, मर्दनाशक त्वचाके रोग, विषरोग और अर्श (बवासीर) को दूर करै है। और गुण करंजके समान जानने।

गुच्छकरञ्जगुणाः ।

गुच्छनामाकरंज स्योष्णस्तिक्तःकटुःस्मृत ।
विचर्चिकावातविषकण्डूकुष्टार्शनाशनः ॥

त्वग्दोषनाशकश्चैवऋषिभिः परिकीर्तितः ।

अर्थ–गुच्छकरज–गरम, कडवी, चरपरी तथा विचर्चिका, वात, विष, कण्डू, कुष्ठ, ववासीर और त्वचाके रोगोंका नाश करेहै ।

पूतिकरञ्जगुणाः ।

पूतिकरञ्जकःप्रोक्तोगुच्छपूर्वकरञ्जवत् ॥ (नि० र०)

अर्थ–पूतिकरञ्जके गुण गुच्छकरञ्जकी समानहैं ।

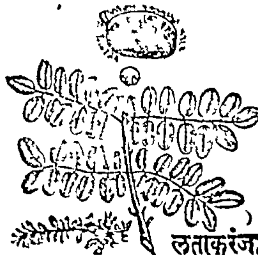
पूतिकरञ्जपत्रगुणाः ।

पूतिकरञ्जपत्रंलघुवातकफापहम् ।
भेदनकटुकंपाकेवीर्य्योष्णशोफनाशनम् ॥

अर्थ–पूतिकरञ्जके पत्ते–हलके, वातकफनाशक, भेदक (दस्तावर), पचनेमें चरपरे, उष्णवीर्य और शोफ (सूजन) नाशक है ।

विवरण । करञ्जके बहुत बडे २ वृक्ष वनमें होतेहैं, पत्ते–पाखरके पत्तोंकी समान गोल और ऊपरके भागमें चमकदार होतेहैं । इसमें फूल आसमानी रंगके आतेहैं और फलभी नीले २ झुमकेदार लगते हैं, पत्तोंमें दुर्गन्ध आती है । करञ्ज छै सातप्रकारकी होती है ।

कण्टकरञ्जनामानि ।



कुबेराक्षीककचिकाकरञ्जातिणगच्छिका ।
वारिणीतीरिणीवल्लीज्ञेयाकण्टकिनीतिच ॥

अर्थ–कुबेराक्षी, मकचिका, करंजा, तिणगच्छिका, वारिणी, तीरिणी, वल्ली, कण्टकिनी ।

संस्कृतभाषामें	कण्टकरञ्ज।
हिन्दीभाषामें	करंजा, कन्जुवा।
वंगभाषामें	काँटाकरंज।
मराठीभाषामें	सागरगोटा।
गुजरातीभाषामें	काकच, तेनाफ़-काकचिया।
कर्णाटकीभाषामें	कन्नभेदु।
तैलङ्गीभाषामें	गचकाई, गुचेपिक्का।
इंग्रेजीभाषामें	बोण्डकनट Bardnenut
लैटिन्भाषामें	सिसाल्पिनिया बोण्डुसेला Caesalpinia B...
फारसीभाषामें	खाय, इबलीस।
अरबीभाषामें	अक्तमक्त।

कण्टकरञ्जगुणाः।

कण्टयुक्तःकरञ्जस्तुपाकेचतुरःकटुः।
ग्राहकश्चोष्णवीर्य्य स्यात्तिक्त प्रोक्तश्चमेहहा॥
कुष्ठार्शोव्रणवातानांक्रिमीणांनाशनःपरः।
पुष्पंतुचोष्णवीर्यंस्यात्तिक्तवातकफापहम्॥

अर्थ-कचा-पाकके समय चरपरा करंजा, ग्राही (मलरोधक) उष्णवीर्य, कडवा तथा प्रमेह, कोढ, बवासीर, घाव, वात और कृमिनाशक। इसके फूल उष्णवीर्य, कडवे तथा वात और कफनाशक।

विवरण। कण्टककरंज अर्थात् करञ्जवेके वृक्ष मालीलोग [illegible] के लिये लगादेतेहैं। और [illegible] में भी होताहै [illegible]

काञ्जिकसमुद्रः

अर्थ-पूतकरञ्ज-पेरपरी, [illegible] होतेहैं और [illegible] जातेहैं। इस प्रकार [illegible] अवयवोंके रोग, विपरोग और अर्श। [illegible] समान जानने।

गुणाः

गुच्छनामागरञ्जः स्यात्कुष्ठ [illegible]
पित्तनिकायात विषकण्डूकुष्ठार्गना [illegible]

कृष्णलाकाकिनीकक्षाकनीचि काकणन्तिका ॥

अर्थ–रक्तिका, गुञ्जिका,गुञ्जा, काकजवा, शिखण्डिनी,कृष्णला, काकिनी, कक्षा, कनीची, काकणन्तिका (काकचिंची, शागुञ्ज, काकादनी, काकतिक्ता, काकतुण्डिका, काका, काकिणी, काञ्ची, चूडामणी, सौम्या, शिखण्डी, अरुणा, ताम्रिका, शीतपाकी, उच्चटा, कृष्णचूडिका, रक्ता, काम्बोजी, भीलभूषणा, वन्या, श्यामलचूडा, काकचिञ्चिका, काकपीलु, काकणन्ती, काकवल्लरी, काकशिम्बी, रक्तला, वक्त्रशल्या, ध्वाक्षनख, दुर्मोघा वायसादनी, चटकी, तुलावीजा, अगारवल्लरी)

श्वेतगुञ्जानामानि ।

द्वितीयाश्वेतकाम्बोजीश्वेतगुञ्जामिरिण्टिका ।
श्वेतोच्चटाश्वेतबीजाश्वेतपूर्वाचसास्मृता ॥

अर्थ–श्वेतकाम्बोजी, श्वेतगुञ्जा, मिरिण्टिका, श्वेतोच्चटा, श्वेतवीजा, श्वेतरक्तिका और श्वेतगुञ्जिका इत्यादि (चक्रशल्या, चूडाला)

संस्कृतभाषामें	गुञ्जा, श्वेतगुञ्जा ।
हिन्दीभाषामें	घुँघुची, चोंटली, चिरमिटी, सपेद घुँघची ।
बंगभाषामें	कुँच, सादाकुँच ।
मराठीभाषामें	गुंजा, को०–माडलवेल ।
गुजरातीभाषामें	चणोठी राती, चणोठीधोली ।
कर्णाटकीभाषामें	गुलगुंजे, एरडु ।
तैलिङ्गीभाषाम	गुलुविंदे ।
तामिलीभाषामें	करिन ।
तु०	गोजी ।
म०	कुन्नि गुंजा ।
उत्	रुंज ।
इंग्रेजीभाषामें	विड्टी । Beal tree
लैटिन्भाषामें	एब्रेस प्रिकेटोरियस । Abrus precatorius
फारसीभाषाम	चश्मेखरूस् ।
अरबीभाषामें	हब मुर्ख, हब मुसेद ।

गुणागुणा ।

गुञ्जाद्वयंणारसेतिक्ताकषायाकफपित्तहा ।

चक्षुष्याशुक्रलाकेश्यात्वच्यारुच्याबलप्रदा ॥
इन्द्रलुप्तहरीतीव्रासविषामदमोहकृत् ।
यक्षग्रहविषहन्तिकण्डूकुष्टव्रणान्क्रिमीन् ॥

अर्थ-घुँघची-अनुष्णा (गरमनहीं) कड़वी, कषैली, चरपरी, विषनाशक, नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, केशोंको सुन्दरतादायक, त्वचाको हितकारक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, इन्द्रलुप्त (गञ्ज) रोगनाशक, तीव्रविषघ्न, मदकारक, मोहजनक तथा यक्ष, ग्रह, विष, कण्डू (खुजली) कोढ़, घाव और कृमिरोगको नष्ट करती है ।

द्विविधगुञ्जागुणाः ।

गुञ्जाद्वयस्वादुतिक्तबल्यंनोष्णंकषायकम् ।
त्वच्यंकेश्यञ्चरुच्यंचशीतंवृष्यमतद्बुधैः ॥
नेत्ररोगविषपित्तमिन्द्रलुप्तव्रणक्रिमीन् ।
राक्षसग्रहपीडांचकण्डूकुष्टंकफज्वरम् ॥
मुखशोषरुजंवातभ्रमश्वासतृषांतथा ।
मोहमदनाशयतिबीजंवान्तिकरंमतम् ॥
शूलनाशकरमूलपर्णंचविषनाशकम् ।
श्वेतगुञ्जाविशेषेणवशीकरणकृन्मता ॥

अर्थ-दोनोंघुँघची (लाल और सफेद) मीठी, स्वादिष्ट, कड़वी, बल कारक, गरम, कषैली, त्वचाको उत्तम वर्णकारी, केशोंको हितकारी, रुचिकारी, शीतल, वीर्यवर्द्धक तथा नेत्ररोग, विष, पित्त इन्द्रलुप्त, व्रण, कृमि, राक्षस, ग्रहपीडा, कण्डू, कुष्ठ, कफ ज्वर, मुखशोष, वात भ्रम, श्वास तृषा, मोह और मदका नाशकरती है । इसके बीज वान्तिकारक और शूलदायक है । इसकी जड और पत्ते-विषनाशक हैं । सफेद घुँघची विशेषकरके वशीकरण है ।

विवरण । घुँघचीकी बेल जंगलमें अधिकतासे होती है । इसके पत्ते इमलीके समान होते हैं । और फलीमें बीज रहते हैं । [illegible] [illegible] और [illegible] भी [illegible] [illegible] होती है । [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होती है और [illegible]

रगकी चोंटली सम्पूर्ण सफेद होतीहै । सफेद रगकी चोंटलीके छुलके उतारकर उसका चून पीसले उस चूनको दूधमें मिलाकर खडी करले वह खडी धातुको बढानेवालीहै । चोंटलीका तेल त्वचाके रोगोंको हरनेवाला, केशोंको बढानेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको हरनेवाला है । व्यवहार-मूल और बीज । मात्रा १ रत्तीसे २॥ रत्तीपर्यन्त है ।

कपिकच्छुनामानि ।



कपिकच्छूरात्मगुप्ताशुकशिम्बाकपिप्रभा ।
शुकपिण्डीस्वयगुप्ताकण्डूराशूकशिम्बिका ॥

अर्थ-कपिकच्छु, आत्मगुप्ता, शुकशिम्बा, कपिप्रभा, शुकपिण्डी स्वयगुप्ता, कण्डूरा, शूकशिम्बा (जडा, अव्यण्डा, प्रावृषायणी, शुकशिम्बि, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, मर्कटी, सद्य'शोथा, शूका, शूकवती, गात्रभगा, कच्छूमती, कच्छुरा, ऋषभी, कपिकच्छुरा, ऋषभ, जटा, स्वगुप्ता, अजाह्वा, कण्डुरा, प्रावृषा, शूकशिम्बा, अजहा, वानरी, कपिकच्छू, कपीकच्छू, शूकपिण्डी, शूकपिण्डि, शुकशिम्बी, व्याघ्रा, सुगुप्ता, महर्षभी लाङ्गली, कुण्डली, चण्डा, दुरभिग्रहा, कपिरोमफला, गुप्ता, दु स्पर्शा, अजडा, प्रावृषेण्या, वदरी, गुरु, आर्षभी, शिम्बी, वराहिका, तीक्ष्णा, रोमालु, वनशूकरी, काशीरोमा, रोमवल्ली, व्यङ्गा, वृष्या)

संस्कृतभाषामें	कपिकच्छु ।
हिन्दीभाषामें	कौंछ, किवाँच ।
वगभाषामें	आलकुशि, धुनारगुड, दया, शुयाशिम्बी ।
मराठीभाषामें	कुहिलीचें बीज ।
गुजरातीभाषामें	कउचाँ, भेरवनी शीगना वी ।

चक्षुष्याशुक्लकेश्नात्वच्याकफ्याबलप्रदा ॥
इन्द्रलुप्तहरीतत्रासविषामदमोहकृत् ।
यक्ष्मग्रहविषहन्तिकण्डूकुष्ठव्रणान्क्रिमीन् ॥

अर्थ–घुंघची–अनुष्णा (गरमनहीं) चरपरी, कड़वी, कसैली, विषनाशक नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, केशोंको [illegible], त्वचाको हितकारी, [illegible], बलवर्द्धक, इन्द्रलुप्त (गंज) रोगनाशक, [illegible], मदकारक, मोहजनक तथा यक्ष्मा, ग्रह, विष, कण्डू (खुजली) कोढ़, घाव और कृमिरोगको नष्ट करतीहै ।

द्विविधगुञ्जागुणाः ।

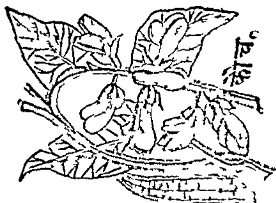
गुञ्जाद्वयस्वादुतिक्तंबल्यंचोष्णंकषायकम् ।
त्वच्यंकेश्यंचरुच्यंचशीतंवृष्यंमतद्वये ॥
नेत्ररोगविषपित्तमिन्द्रलुप्तव्रणकृमीन् ।
राक्षसग्रहपीडांचकण्डूकुष्ठकफज्वरम् ॥
मुखशोषकजवातभ्रमश्वासंतृषंतथा ।
मोहमदंनाशयतिबीजवान्तिकरमतम् ॥
शूलनाशकरंमूलपर्णंचविषनाशकम् ।
श्वेतगुञ्जाविशेषेणवशीकरणकृन्मता ॥

अर्थ–दोनोंप्रकारकी (लाल और सफेद) घुंघची, स्वादिष्ट, कड़वी, बल कारक, गरम, कसैली, त्वचाको उत्तम करनेवाली, केशोंको हितकारी, रुचिकारी, शीतल, वीर्यवर्द्धक तथा नेत्ररोग, पित्त, विष, इन्द्रलुप्त, व्रण, कृमि, राक्षस, ग्रहबाधा, खुजली, कोढ़, कफ ज्वर, मुखशोष, वात, भ्रम, श्वास, तृषा, मोह और मदको नाशकरतीहै । इसके बीज वान्तिकारक और शूलनाशक है । इसकी जड़ और पत्ते-विषनाशकहै । सफेद घुंघची विशेषकरके वशीकरणमें [illegible] है ।

विवरण । घुंघची बेल जंगलम अधिकतासे होतीहै । [illegible]

रंगकी चोंटली सम्पूर्ण सफेद होतीहै । सफेद रंगकी चोंटलीके छुलके उतारकर उसका चून पीसल उस चूनको दूधमे मिलाकर रवडी करले वह रवडी धातुको वढानेवालीहै । चाटलीका वेल त्वचाके रोगोंको हरनेवाला, केशोंको वढानेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको हरनेवाला है । व्यवहार-मूल और वीज । मात्रा १ रत्तीसे २॥ रत्तीपर्यन्त है ।

कपिकच्छुनामानि ।



कपिकच्छूरात्मगुप्ताशुकशिम्बाकपिप्रभा ।
शुकपिण्डीस्वयगुप्ताकण्डूराशूकशिम्बिका ॥

अर्थ-कपिकच्छु, आत्मगुप्ता, शुकशिम्बा, कपिप्रभा, शुकपिण्डी स्वयगुप्ता, कण्डूरा, शूकशिम्बा (जडा, अध्यण्डा, प्रावृपायणी, शुकशिम्बि, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, मर्कटी, सद्य शोथा, शूका, शूकवती, गात्रभगा, कच्छूमती, कच्छुरा, ऋपभी, कपिकच्छुरा, ऋपभ, जटा, स्वगुप्ता, अजाहा, कण्डुरा, प्रावृषा, शूकशिम्बा, अजहा, वानरी, कपिकच्छू, कपीकच्छू, शूकपिण्डी, शूकपिण्डि, शुकशिम्बी, व्याघ्रा, सुगुप्ता, महर्पभी लाङ्गली, कुण्डली, चण्डा, दुरभिग्रहा, कपिरोमफला, गुप्ता, दु स्पर्शा, अजडा, प्रावृपेण्या, वदरी, गुरु, आर्षभी, शिम्बी, वराहिका, तीक्ष्णा, रोमालु, वनशूकरी, काशीरोमा, रोमवल्ली, व्यङ्गा, वृष्या)

संस्कृतभाषामें	कपिकच्छु ।
हिन्दीभाषामें	कौंछ, किवाँच ।
वगभाषामें	आलकुशि, धुनारगुड, दया, शुयाशिम्बी ।
मराठीभाषामें	कुहिलीचें वीज ।
गुजरातीभाषामें	कउचो, भेरवनी शींगना वी।

कर्णाटकीभाषामें	नसुगुन्नी ।
तैलङ्गीभाषामें	पिल्लिअडुगु ।
तामिलीभाषामें	पुनाइक्, कालि ।
मद्रासीभाषामें	नायिकरुणा, पोनैकालि ।
गोमन्तकी	राखसकोलीन ।
बम्ब०	कुहिला ।
इंग्रेजीभाषामें	कौहेज Cowhage
लैटिन भाषामें	म्युक्युना प्रुरियेन्स । Mucuna Pruriens

कपिकच्छुगुणाः ।

कपिकच्छु स्वादुरसा वृष्याऽतिशयापहा ।
शीतपित्तास्रहन्त्री च निखिलानिलनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कौंछ-स्वादु, वीर्यवर्द्धक तथा वात, क्षय, शीतपित्त, रुधिरविकार और दुष्टव्रणको नष्ट करै है ।

अन्यच्च ।

कपिकच्छुर्भृशं वृष्या मधुरा बृंहणी गुरुः ।
तिक्ता वातहरी बल्या कफपित्तास्रनाशिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कौंछ-अत्यन्त वीर्यवर्द्धक तथा मधुर, बृंहण (पुष्टिकारक) भारी, कडवी, वातनाशक, बलकारक तथा कफ और रक्तपित्तनाशक है ।

कपिकच्छुबीजगुणाः ।

तद्बीजं वातशमनं स्मृतं वाजीकरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कौंछके बीज-वातनाशक और वाजीकरण करनेवाले हैं ।

स्थूलकपिकच्छुगुणाः ।

कपिकच्छुर्लघुः शीता वृष्या पित्तानिलापहा ।
मिथ्याभिचारहन्त्री च नराणां चाप्यपत्यदा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मोटीकौंछ-हलकी, शीतल, वीर्यवर्धक तथा पित्त, वात, मिथ्या और अभिचारको दूर करै है । तथा मनुष्य स्त्रियोंको संतान उत्पन्न करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कच्छुरा तु रसे तिक्ता वीर्ये चोष्णा प्रकीर्तिता ।
दुष्टव्रणरुजाशोषनाशयेदिति कीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-छोटीकौंछ-कपैली, कडवी तथा योनिदोष, कोढ व्रण और रक्तके रोगको दूर करेहै ।

विवरण । कौंछकी वेल होतीहै, फूल सेमकी समान होतेहै और फलियें भी सेमकी समान होतीहैं, और फलियोंके ऊपर सूक्ष्म रुँआ अधिक होताहै, इसका रुँआ शरीरमें लगनेसे अत्यन्त खुजली होनेलगतीहै । फलियोंके भीतरसे सेमके बीजोंकी समान बीज निकलतेहैं, छोटी कौंछका क्षुपहोताहै ।

मांसरोहिणीनामानि ।

मांसरोहिण्यतिरुहावृत्ताचर्मकषावसा ।
प्रहारवल्लीविकशावीरवत्यपिकथ्यते (भा० प्र०)

अर्थ-मासरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकषा, वसा, प्रहारवल्ली, विकशा, वीरवती, (अग्निरुहा, मासरोही, कशामासी, महामासी, मासरोहा, रसायनी, सुलोमा, लोमकरणी, रोहिणी, चन्द्रवल्लभा)

सस्कृतभाषामें	रोहिणी, मासरोहिणी ।
हिन्दीभाषामें	मासरोहिणी, रोहिणी ।
मराठीभाषामें	रोहिणी, मासरोहिणी ।
गुजरातीभाषामें	रोण्य ।
कर्णाटकीभाषामें	रोहिणी, मासरोहिणी ।
इग्रेजीभाषामें	रेड्वुडट्री । Redwood Tre
लैटिन् भाषामें	सोयमीडा फेब्रीफ्युगा । Soymiba Febrifiga

मांसरोहिणीगुणा ।



स्यान्मांसरोहिणीवृष्यासरादोषत्रयापहा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मासरोहिणी-वीर्यवर्द्धक, सारक, (दस्तावर) और त्रिदोषनाशकहै ।

अन्यच्च ।

मांसरोहिणिकावर्ण्याचोष्णाचरक्तपित्तजित् ।
सर्वासृग्दर्णोऽतिनात्रकार्याविचारणा ॥ (नि० र०)

अर्थ-मांसरोहिणी-रंगको हितकारी, उष्ण, तथा रक्तपित्त और सर्व प्रकारकी संग्रहणी दूर करै है ।

रोहिणीगुणाः ।

रोहिणीवातहृत्कासश्वासशोणितनाशिनी ॥ (अ० मा० नि०)

अर्थ-रोहिणी-वातनाशक, कासनाशक, श्वासहारक और रुधिरविकारविनाशक है ।

[illegible]रोहिणीगुणाः ।

रोहिणीयुगलंशीतकषायकृमिनाशनम् ।
कण्ठशुद्धिकररुच्यवातदोषनिषूदनम् (रा० नि०)

अर्थ-दोनाप्रकारकी रोहिणी-शीतल, कषैली, कृमिनाशक, कण्ठशोधक, रुचिकारक और वातनाशक है ।

विवरण । रोहिणीके वृक्ष जङ्गलमें अधिक होते हैं, पत्ते सिरसके समान होते हैं और एक २ डालीमें लाल २ आते हैं, [illegible] होते हैं ।

[illegible]गुणाः ।

चिरकोशातनिहरि श्लेष्मशोषातपुष्टिकृत् ।
आमेयोनिपक्वमस्त्यफलंमत्स्यनिषूदनम् ॥

अर्थ-निहर-वातनाशक, पथ्य, धातुपुष्टिकारक, आंव, (आमदोष) और इसका फल सिरसके समान गुणवाला है तथा मछलियोंको नष्ट करै है ।

विवरण । [illegible] वृक्ष, छोटे २ होते हैं [illegible] [illegible] भूमिमें उत्पन्न होते हैं । पत्ते-छोटे और वृक्ष [illegible] होते हैं । इसके [illegible]-छोटेके समान गोल २ होते हैं ।

टङ्कारीगुणाः ।

टङ्कारीवातजित्तिक्ताश्लेष्मघ्नीदीपनीलघुः ।
शोथोदर[illegible]पिणी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-टङ्कारी-वातनाशक, कड़वी, कफनाशक, [illegible]

हलकी तथा सूजन और उदररोगको हरनेवालीहै । और पीठ तथा विसर्प रोगवालोंको हितकारीहै ।

विवरण । टकारीके क्षुप वन और जगलमें अधिक होतेहैं। पत्ते-लम्बे और गोल आतेहैं, फूल- लाल, गुलाबी, कईमकारके आतेहै । फल-छोटे २ झुमकेदार लगते हैं ।

वेतसनामानि ।

वेतसोनिचुल प्रोक्तोवञ्जुलोदीर्घपत्रक· ।
कलनोमंजरीनम्रोवानीरोविदुलस्तथा ॥

अर्थ-वेतस, निचुल, वञ्जुल, दीर्घपत्रक, कलन, मञ्जरीनम्र, वानीर, विदुल, (रथ, अभ्रपुष्प, शीत, वञ्जुलप्रिय, गन्धपुष्प, रथाभ्र, वेतसी, मञ्जरीनम्र, सुषेण, गन्धपुष्पक)

जलवेतसनामानि ।

निकुञ्चक परिव्याधोनादेयोजलवेतस· ॥

अर्थ-निकुञ्चक, परिव्याध, नादेय, जलवेतस, (शाखालु, मेघपुष्प, तोयकाम, अभ्रपुष्पक, नदीकूलप्रिय, नीरप्रिय, सुशीतल, परिव्याध, व्याधिघात)

सस्कृतभापामें	वेतस, जलवेतस ।
हिन्दीभापामें	वेत, जलवत ।
वगभापाम	वेत, वयगा, जलवेत ।
मराठीभापामें	थोरवेत, वेत ।
गुजरातीभापामें	नेतर ।
कर्णाटकीभापामें	वेडिसु, वेतसु ।
तैलिङ्गीभापामें	पीपाम्या, जीतयुग्लुकी ।
इंग्रेजीभापामें	रोटा केन । Cane
लैटिन्भापामें	केलेमस रोटन् । Calamus
फारसीभापामें	वेत ।
अरवीभापामें	खलाफ ।

वेतसगुणा ।

वेतस शीतलोदाहशोफार्शोयोनिरुग्व्रणान् ।
हन्तिवीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वेत-शीतल तया शोफ (सूजन) अर्श (ववासीर) योनिरोग,

व्रण (घाव) विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, अश्मरी (पथरी) कफ और वातका नाश करै है।

अन्यच्च।

वेतसः कटुकः स्वादुः शीतो भूतविनाशनः ।
वातप्रकोपनो रुच्यो विज्ञेयो दीपनः परः ॥
रक्तपित्तोद्भवरोगकुष्ठदोषघ्ननाशयेत् । (राजनिघण्टु)

अर्थ-बेत-चरपरा, स्वादिष्ट, शीतल, भूतनाशक, वातको कुपित करनेवाला, रुचिकारक अग्निको दीपन करनेवाला तथा रक्तपित्त और कोढको दूर करै है।

अपिच।

वेतस्तुतुवरः शीतस्तिक्तः कटुकफापहः ।
वातपित्तहदाहघ्नः शोफार्शोऽश्मरिकृच्छ्रजित् ॥
विसर्पातिसारक्तयोनिरोगतृषाञ्जयेत् ।
रक्तदोषव्रणमेहरक्तपित्तनकुष्ठनम् ॥
विषघ्नं नाशयत्यस्यांकुरः स्याद्गोलघुः स्मृतः ।
कटूष्णं कफवातघ्नं पर्णभेदस्तथामतम् ॥
तुवरो लघुः शीतश्च तिक्तः कटुर्वातलम् ।
रक्तदोषकफपित्तनाशयेदिति कीर्तितम् ॥
वेतसीमूलतुवरस्वादुरम्लकफपित्तलम् ।
रक्तदोषकफघ्नं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-बेत-कसैला, शीतल कडवा, चरपरा, कफ वात, पित्त, दाह, सूजन, बवासीर, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, विसर्प अतिसार, योनिरोग, [illegible] रोग, तृषा, रक्तदोष, व्रण प्रमेह रक्तपित्त, कोढ और विषका नाश करनेवाला है। इसके अंकुर-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जलवेतसगुणाः।

जलजोवेतसःशीतःसंग्राहीवातकोपनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–जलवेंत–शीतल, मलरोधक और वातको कुपित करेहै।

अन्यच्च।

वानीरःशीतलस्तिक्तोव्रणशुद्धिकरोमतः।
तुवरोवातकृद्ग्राहीरूक्षःपित्तहरोमत ॥
रक्तदोषव्रणकफक्रव्यादग्रहनाशनः। (नि० र०)

अर्थ–जलवेंत–शीतल, कडवा, व्रणशोधक, कपेला, वातकारक, मलरोधक, रूखा, पित्तनाशक तथा रुधिरदोष, व्रण, कफ, राक्षसबाधा और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै।

द्विविधवेतसगुणाः।

वेतसस्यद्वयशीतरूक्षचव्रणशोधनम्।
रक्तपित्तहरंतिक्तसकषायकफापहम् ॥ (ध० नि०)

अर्थ–दोनों प्रकारके वेत–शीतल, रूखे, व्रणशोधक, रक्तपित्तनाशक, कडवे, कपेले और कफनाशक है।

बृहद्वेत्रगुणाः।

बृहद्वेत्रस्तुशीत स्याद्भूतपित्तामकफहा।
अन्येगुणाःपूर्ववेत्रसदृशाः समुदाहृताः ॥

अर्थ–बडा वेंत–शीतल तथा भूतबाधा, पित्त आम और कफको दूर करे है। शेष गुण वेंतकी समान जानने।

बृहज्जलवेत्रगुणाः।

स्थूलवानीरक शीतोरूक्षोव्रणविशोधन।
तिक्तस्तुतुवरोरक्तदोषपित्तकफाञ्जयेत ॥ (नि० र०)

अर्थ–बडा जलवेंत–शीतल, रूखा, व्रणशोधक, कडवा, कपेला, तथा रक्तविकार, पित्त और कफको दूर करे है।

विवरण। वेत और जलवेंत इसकी दो जाति है, यह वेत जलके निकटकी भूमिमें उत्पन्न होतेहैं। इसके पेडभी लताके आकार होतेहैं, पत्ते–बांसके समान, फल फूल आतेही नहीं, वेंतकी जड बहुत लम्बी २ होतीहै। वेतके

ऊपरका भाग पहाड पर होता है । इसकी जिन्द इत्यादि इसीसे पुरानी भाषाके बीत नम्बेमें उत्पन्न होता है । इसके गुण बेतहीके समान होते हैं ।

हिज्जलनामगुणाः ।

इज्जलो हिज्जलश्चापि निचुलश्चाम्बुजस्तथा ।
जलवेतसवद्वेद्यो हिज्जलोऽप्यविषापहः ॥

अर्थ-इज्जल, हिज्जल, निचुल, अम्बुज, यह समुद्रफल (जोर) के नाम हैं । इसके गुण जलवेतके समान हैं, विशेषता यह है कि विषविनाशक है ।

अङ्कोटनामानि ।

अङ्कोट कोलकोऽङ्कोली विषघ्नो दीर्घकीलक ।
पीतसारस्ताम्रफलो गन्धपुष्पो निकोचक ॥

अर्थ-अङ्कोट, कोलक, अङ्कोली, विषघ्न, दीर्घकीलक पीतसार, ताम्रफल, गन्धपुष्प, निकोचक (अङ्कोठ, अंकोल, अंकोल, निकोठक, अंकोलक, कोप, मदिक, दीर्घकीलक, रामठ, वेदतीक्ष्ण, गुणाढ्य, [illegible], कोल, गूढपत्र, मदन, गुणाढ्य, गूढाशिरा, पीत, दीर्घकील, गुणाढ्यक, [illegible], रोचन, विषाग्निनाशन, निकोठक, कटोर, वामन, [illegible], मूषिक)

संस्कृतभाषामें	अङ्कोट (ठ) ।
हिन्दीभाषामें	ढेरा ढेरा ।
बंगभाषामें	आकड, धला आकड, आंखोट ।
मराठीभाषामें	अंकोली वृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	अंकोल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	अंकुले ।
तैलङ्गीभाषामें	उडुगु ।
इंग्रेजीभाषामें	[illegible] ।
लैटिनभाषामें	एलेञ्जियम् लेमार्कि आई । Alangium Lamarckii. एलेञ्जीयम् हेक्सापेटलम् ।

अङ्कोटगुणाः ।

अङ्कोटस्तु परस्तिक्तोऽम्लशुद्धिकरोऽस्तु ।
किञ्चित्कटु सर स्निग्धस्तीक्ष्णोष्णश्च कफापह ॥
क्रिमिशूलहरश्चास्त्रविषदोषकफापहः ।

वातशूलशोथकृमिग्रहपीडामपित्तहा ॥
रक्तदोपविसर्पघ्नःश्वानाखुविपनाशनः ।
ओतोर्विपकटीशूलमतिसारचनाशयेत् ॥
पिशाचपीडाशमनोबीजचास्यतुशीतलम् ।
धातुवृद्धिकरस्वादुचाग्निमाद्यकरगुरु ॥
रसेपाकेतुमधुरवलकृत्कफकृत्सरम् ।
स्निग्धवृष्यश्चदाहघ्नवातपित्तक्षयापहम् ॥
रक्तदोपकफपित्तविसर्पश्चैवनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-ढेरा-कपेला, कडवा, पारेको शुद्ध करनेवाला, हलका, किञ्चित् चरपरा, सर (दस्तावर), स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम और रूखा है । इसका रस-वान्तिजनक तथा विपविकार, कफ, वात, शूल, कृमि, सूजन, ग्रहपीडा, आम, पित्त, रुधिरविकार, विसर्प, कुत्तेका विप, मूसेका विप, विलावका विप, कटिशूल, अतिसार, और पिशाचपीडा इनका नाश करेहै । इसके वीज-शीतल, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मदाग्निकारक, भारी, रसमें और पाकमें मधुर, वलकारक, कफकारी, सारक, स्निग्ध, वृष्य (वीर्य्यवर्द्धक) तथा दाह, वात, पित्त, क्षय, रक्तविकार, कफ, पित्त और विसर्प इनको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अङ्कोटक कटुस्तीक्ष्ण स्निग्धोष्णस्तुवरोलघु ।
रेचन कृमिशूलामशोफग्रहविपापह ॥
विसर्पकफपित्तास्रमूपकाहिविपापह ।
तत्फलशीतलस्वादुश्लेष्मघ्नबृहणगुरु ॥
वल्यविरेचनवातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ढेरा-चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, कपेला, हलका, दस्तावर तथा कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रहपीडा, विप, विसर्प, कफ, पित्त, रुधिर-विकार, मूपेके विप और सापके विपको दूर करेहै । इसका फल-शीतल, स्वादिष्ठ, कफनाशक, बृहण (वाजीकरण), भारी, बलकारक, दस्तावर तथा वात, पित्त, दाह, क्षय और रक्तविकारको दूर करेहै ।

ऊपरका धान्य बहुत पकाहोताहै । कुर्सी चिच इत्यादि इसीमे बुनी जाती हैं, बेंत जलमेंभी उत्पन्न होताहै । उसके गुण बेतहीके समान होतेहैं ।

हिज्जलनामगुणाः ।

इज्जलोहिज्जलश्चापिनिचुलश्चाम्बुजस्तथा ।
जलवेतसवद्वेद्योहिज्जलोऽयविपापह ॥

अर्थ-इज्जल, हिज्जल, निचुल, अम्बुज, यह समुद्रफल (शोथ) के नाम है । इसके गुण जलवेतकी समान है, विशेषता यह है कि विषविनाशक है ।

अङ्कोटनामानि ।

अङ्कोट कोलकोरेचीविषघ्नोदीर्घकीलक ।
पीतसारस्ताम्रफलोगन्धपुष्पोनिकोचक ॥

अर्थ-अकोट, कोलक, रेची, विषघ्न, दीर्घकीलक, पीतसार, ताम्रफल, गन्धपुष्प, निकोचक, (अङ्कोटक, अकोट, अकोल, निकोटक, अंकोलक बोध, नेदिष्ठ, दीर्घकीलक, रामठ, ककरोल, पलन्ध, दक्षपत्रक, कोठर, गूढपत्र, मदन, गुप्तस्नेह, गूढवल्लिका, पीत, दीर्घकील, गुणाढ्यक, रक्तपर्णी, रोचन, विशालतलगर्भ, निकोठक, कठोर, वामर, रक्तपणक, भूषित)

संस्कृतभाषामें	अंकोट (ठ) ।
हिन्दीभाषामें	ढेरा, ढेरा ।
बंगभाषामें	आकोड, धला आंकड, आंकोड ।
मराठीभाषामें	अंकोली वृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	अंकोल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	अङ्कुले ।
तैलिङ्गीभाषामें	उर्हाक ।
इंग्रेजीभाषामें	ट्रीलीवड सल्वुरिटीस ।
लैटिन्भाषामें	एलेन्जेम ऐमार्कि आई । Alangium Lamarckii एलेनजियम् हेक्सापेटेलम् ।

अङ्कोटगुणाः ।

अङ्कोटस्तुवरस्तिक्तोरसशुद्धिकरोलघु ।
किंचित्कटुःसर स्निग्धस्तीक्ष्णश्चोष्णश्चरेचक ॥
रसोनान्तिकरश्चास्यविषदोषकफापह ।

वातशूलशोथकृमिग्रहपीडामपित्तहा ॥
रक्तदोषविसर्पघ्नःश्वानाखुविषनाशनः ।
ओतोर्विषकटीशूलमतिसारचनाशयेत् ॥
पिशाचपीडाशमनोबीजचास्यतुशीतलम् ।
धातुवृद्धिकरस्वादुचाग्निमांद्यकरगुरु ॥
रसेपाकेतुमधुरंबलकृत्कफकृत्सरम् ।
स्निग्धवृष्यश्चदाहघ्नवातपित्तक्षयापहम् ॥
रक्तदोषकफपित्तविसर्पश्चैवनाशयेत । (नि० र०)

अर्थ-ढेरा-कपेला, कडवा, पारेको शुद्ध करनेवाला, हलका, किञ्चित् चरपरा, सर (दस्तावर), स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम और रूखा है । इसका रस-वान्तिजनक तथा विषविकार, कफ, वात, शूल, कृमि, सूजन, ग्रहपीडा, आम, पित्त, रुधिरविकार, विसर्प, कुत्तेका विष, मूसेका विष, विलावका विष, कटिशूल, अतिसार, और पिशाचपीडा इनका नाश करेहै । इसके बीज-शीतल, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मंदाग्निकारक, भारी, रसमें और पाकमें मधुर, बलकारक, कफकारी, सारक, स्निग्ध, वृष्य (वीर्य्यवर्द्धक) तथा दाह, वात, पित्त, क्षय, रक्तविकार, कफ, पित्त और विसर्प इनको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अङ्कोटक कटुस्तीक्ष्ण स्निग्धोष्णस्तुवरोलघु ।
रेचन कृमिशूलामशोफग्रहविषापह ॥
विसर्पकफपित्तास्रमूपकाहिविषापहः ।
तत्फलशीतलस्वादुश्लेष्मघ्नबृंहणगुरु ॥
बल्यविरेचनवातपित्तदाहक्षयास्रजित ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ढेरा-चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, कपेला, हलका, दस्तावर तथा कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रहपीडा, विष, विसर्प, कफ, पित्त, रुधिर-विकार, मूसेके विष और सापके विषको दूर करेहै । इसका फल-शीतल, स्वादिष्ठ, कफनाशक, बृंहण (वाजीकरण), भारी, बलकारक, दस्तावर तथा वात, पित्त, दाह, क्षय और रक्तविकारको दूर करेहै ।

विवरण। देरेके वृक्ष वनमें अधिकतासे होतेहैं। इसके पत्ते-एक अंगुष्ठ चौडे और पाच छै अंगुल लम्बे होतेहैं, फूल-सफेद होताहै, फल-कच्ची अवस्थामें नीले और पकनेपर लाल होजातेहैं। उनके ऊपर कालापन झलकता रहताहै। इस वृक्षपर कांटे होतेहैं।

अथ नामानि।

वाट्यपुष्पीसमांशाचविल्लावलिनीबला।

अर्थ-वाट्यपुष्पी, समांशा, विल्ला, वलिनी, बला (वाट्यालक, ओदनी, समगा, ओदनिका, भद्रा, भद्रोदनी, खरकाष्ठिका, कल्याणिनी, भद्रबला, मोटापाटी, वलाढ्या, शीतपाकी, वाट्यवाटी। निलया, वाट्यायनी, वाटिका, वाट्यालिका, खरयष्टिका, ओदनाह्वा, वातघ्नी, रसना, रसवल्लभा, कूटा, मदामा, वारिगा, फणिजिह्विका, जयन्ती, कठोरयष्टिका मन्यादया)

संस्कृतभाषामें	बला।
हिन्दीभाषामें	खिरैंटी, बरियारा (ला), बीजबन्द।
बंगभाषामें	बेडेला।
मराठीभाषामें	रानुचिकणा, चिकणी, पांढचिकणा।
गुजरातीभाषामें	बलदाणा, खरेटी।
कर्णाटकीभाषामें	बेणेगरग।
तैलिङ्गीभाषामें	मुत्तिदी।
इंग्रेजीभाषामें	हार्ट लिवडसिडा।हार्टलिव्हडसिडा। Heart leaved Sida Heart leaved sida
लैटिन भाषामें	सिडा कार्पिनीफोलिया। Sida carpinifolia सिडाकोर्डिफोलिया। Cord folia

अथ गुणाः।

स्निग्धारुच्यावलावृष्याग्राहिणीवातपित्तजित्॥ (रा०प०)

अर्थ-खिरैटी-स्निग्ध, रुचिकारक, वृष्य (वीर्यवर्द्धक), माहि तथा वात और पित्तको दूर करते है।

अन्यच्च।

बल्यातिक्तानिमधुरापित्तातीसारनाशिनी।
गन्धर्वायपुष्टिमनोकफजयविशोषनी॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–खिरेटी–कडवी, मधुर, पित्तातिसारनाशक, वलवीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और कफरोधविशोधक है।

अपिच।

वलामूलत्वचश्चूर्णपीतसक्षीरशर्करम्।
मूत्रातिसार हरति दृष्टमेतन्नसंशय॰॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ–खिरैंटीकी–जडकी छालका चूरण मिश्रीमिलेहुए दूधमें मिलाकर पीनेसे मूत्रातिसार रोग दूर होता है।

वलाबीजगुणाः।

वलाफलस्वादुपाकेकपायमधुररसे।
हिमवीर्यंगुरुगुणस्तम्भनलेखनभृशम्॥
विवन्धाध्मानपवनकारिपित्तकफास्रनुत्। (व॰ नि॰)

अर्थ–खिरैंटीका फल–पचनेमें स्वादिष्ठ, कपेला, मधुर, शीतवीर्य्य, भारी, स्तम्भन, लेखन, विवन्धकारक, आध्मानजनक, वातवर्द्धक, तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करैहै।

माहावलानामानि।

महावलापीतपुष्पीसहदेवीचसास्मृता॥

अर्थ–महावला, पीतपुष्पी, सहदेवी, (ज्येष्ठवला, करम्भरा, केशरुहा, केसरिका, मृगादनी, वर्षपुष्पा, केशवर्द्धनी, प्रसादनी, देववला, सारिणी, पीतपुष्पा, देवार्हा, गन्धवल्लरी, मृगा, मृगरमा, वर्षपुष्पी, वाट्या, वाट्यायनी, सहदेवा, देवसहा, वृहद्वला, गन्धावली, महागन्धा, मङ्गल्यार्यप्रसादनी)

संस्कृतभाषामें	महावला, सहदेवी।
हिंदीभाषामें	सहदेई।
वंगलाभाषामें	पीतपुष्प, वेडेला।
मराठीभाषामें	भाबुर्डी।
गुजरातीभाषामें	सहदेवी।
तामिलीभाषामें	नेचिट्टी।
म॰	पिरिना।
कर्णाटकीभाषामें	वेल्लुदुरुवे।
लैटिन् भाषामें	सिडारोंफिफोलिया। Sida rhombifolia

महाबलागुणाः ।

हरेन्महाबलाकृच्छ्रंभवेद्वातानुलोमनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-महाबला-मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है और वातानुलोमक है ।

अन्यच्च ।

महाबलातुमधुराधातुवृद्धिकरीमता ।
बल्यावृष्यात्रिदोषघ्नीज्वरहृद्रोगदाहनुत् ॥
वातार्शःशोफविषमज्वरान्मेहगणंतथा ।
बहुमूत्रंनाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् ॥

अर्थ-महाबला-मधुर, धातुवर्द्धक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक तथा ज्वर, हृद्रोग, दाह, वादीकी बवासीर सूजन, विषमज्वर, सर्वप्रकारके प्रमेह और मूत्रातिसारनिवारक है ।

अतिबलानामानि ।



कघी

बलिकानिबलाबल्याविकङ्कतावाट्यपुष्पिकाघण्टा ।
शीताचशीतपुष्पाभूरिबलावृष्यगन्धिकादशधा ॥

अर्थ-बलिका, अतिबला, बल्या, विकङ्कता, वाट्यपुष्पिका, घंटा, शीता, शीतपुष्पा, भूरिबला, वृष्यगन्धिका (ककही, ऋषिप्रोक्ता, वृष्यगन्धा)

संस्कृतभाषामें	अतिबला ।
हिन्दीभाषामें	कंगही, कंघी, ककहिया ।
मराठीभाषामें	चिकणी, आवर्त्ती, पोगुली ।

गुजरातीभाषामें खपाट्र ।
कर्णाटकीभाषामें मुद्दुदुरुंवे ।
इंग्रेजीभाषामें इंडियनमेलो । Indian Malow
लैटिन् भाषामें एब्युटिलन्इंडिकम् । Aputilon indicum

अतिबलागुणाः ।

तिक्ताकटुश्चातिबलावातघ्नीकृमिनाशिनी ।
दाहतृष्णाविषच्छर्दिक्लेदोपशमनीपरा ॥

अर्थ–कगई–कडवी, चरपरी तथा वात कृमि, दाह, तृषा, विष, वमन और क्लेदको शान्तकरेहै ।

अन्यच्च ।

बलिकामधुराचाम्लाहितादोषत्रयप्रणुत् ।
युक्त्याबुद्ध्याप्रयोक्तव्याज्वरदाहविनाशिनी॥(ग०वि०)

अर्थ–कघी (ककहिया)–मधुर, अम्ल (खट्टी), हितकारक, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ युक्तिपूर्वक देनेसे ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

हन्यादतिबलामेहपयसासितयासह ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–कघीको दूध और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे प्रमेह रोगका नाश होताहै ।

त्रिविधबलागुणाः ।

बलात्रयस्वादुशीतस्निग्धवृष्यबलप्रदम् ।
आयुष्यवातपित्तघ्नग्राहिमूत्रग्रहापहम् ॥

अर्थ–खिरैटी, महदेई और कघी यह तीनों स्वादिष्ट, शीतल, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अवस्थास्थापक, वातपित्तनाशक, मलरोधक, मूत्ररोगनिवारक और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै । मात्रा २ मासेकी ।

नागबलानामानि ।

गाङ्गेरुकीनागबलाझषाह्रस्वगवेधुका ॥

अर्थ–गांगेरुकी, नागबला, झषा, ह्रस्वगवेधुका, (खरगन्धिनी, गोरक्षतण्डुला, भद्रौदनी, खरगन्धा, चतुःफला, महोदया, महापत्रा, महाशाखा, महाफला, विश्वदेवा, अनिष्टा, देवदण्डा, महागन्धा, घण्टा, गरवल्लरिका, विश्वदेवी)

संस्कृतभाषामें	नागबला ।
हिन्दीभाषामें	गंगेरन, गुल्सकरी ।
बंगालभाषामें	गोरस, चाकुले, पानगाछा ।
मराठीभाषामें	गागेरी, गांदे थामण ।
कोकणीभाषामें	तुपरडी ।
कर्णाटकीभाषामें	षट्टगडे ।
लैटि०	सिडाकमोसा । Sida spinosa

अस्या गुणाः ।

मधुराम्लानागबलाकषायोष्णागुरुस्तथा ।
कटूष्णाकफवातघ्नीव्रणपित्तविनाशिनी (रा० नि०)

अर्थ-गंगेरन-मधुर, अम्ल, कसैली, गरम, भारी, चरपरी, कफवातना-शक, व्रणनिवारक और पित्तहारक है ।

अपरश्च ।

तद्वन्नागबलात्यर्थं कृच्छ्रक्षीणक्षतेहिता ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गंगेरनके गुणभी खिरैटीके समान हैं, विशेषकरके मूत्रकृच्छ्र, क्षत और क्षीणरोगमें हितकारी है ।

अपरश्च ।

ज्ञेयानागबलाचाम्लामधुरातुवरागुरुः ।
कटुवत्युष्णाव्रणवातपित्तकुष्ठघ्नाशयेत् ॥
कण्डूघ्नानाशयत्यंतमुनिभिः परिकीर्तिता । (निघण्टु०)

अर्थ-गंगेरन-अम्ल, मधुर, कसैली, भारी, चरपरी, गरम तथा व्रण, वात, पित्त, कुष्ठ और कण्डूको दूरकरनेवाली है ।

अस्याः फलगुणाः ।

गांगेरुकीफलंरूक्षंकषायंस्वादुवातलम् ।
श्लेष्मनस्तम्भनंशीतविबन्धाध्मानकृद्गुरु ॥ (शा०नि०)

अर्थ-गुलसकरीके फल-रूखे, कसैले, स्वादु, वादी, कफनाशक, स्तम्भन, शीतल, विबन्ध और आध्मानकारक तथा भारी है ।

वृहन्नागबलागुणाः ।

वृहन्नागबलाचाम्लामधुरात्रिदोषहा ।

दाहज्वरहराप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभि (नि० रा०)

अर्थ-वडीगगेरन-अम्ल, मधुर, त्रिदोषनाशक, तथा दाह और ज्वर-निवारकहै ।

चतुर्विधवलागुणा ।

वलाचतुष्टयशीतंमधुरवलकान्तिकृत् ।
स्निग्धग्राहिसमीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥

अर्थ-चारोंप्रकारकी खिरेंटी (खिरेंटी, सहदेई, कघी, गगेरन) शीतल, मधुर, वलवर्द्धक, कान्तिकारक, स्निग्ध, मलरोधक, तथा वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है ।

विवरण । वला अनेक प्रकारकी होती है जैसे खिरेंटी, कघी, गगेरन, गगेटी, सहदेई, दण्डोत्पल इत्यादि । इनमें खिरेंटीके भी कई भेद है । एक प्रकारकी खिरेंटी वह होतीहै कि, जिसके वृक्ष डेढहाथ ऊचे होतेहैं । इसके पत्ते-तुलसीके पत्तोंकी समान होतेहैं । फूल-पीला आताहै । फल-छोटे २ आतेहैं और इसमें वहुतसे वीज निकलतेहैं । इसके पत्तोंका शाक वनाते है ।

२ दूसरे प्रकारकी खिरेंटीका वृक्ष पुरुषकी वरावर ऊचा होता है । इसके पत्ते-अनीदार होतेहै । फूल-सफेद रंगके आतेहै, फल वारीक और गोल आतेहैं । उनमेंसे जो वीज निकलताहै उनको वलावीज अथवा वीजवद कहतेहै ।

३ कघीके वृक्षभी दोढाई हाथ ऊचे होतेहै । फूल-पीला, फल-चक्रकी समान और गोल होतेहैं । उनको प्राय वालक छापाकरते है । इसके वीजभी खिरेंटीकी समान होतेहै ।

४ गगेरनका वृक्ष सहदेईके वृक्षकी सदृश होताहै किन्तु, इसके पत्ते-कुछ अधिक मोटे और दो अनियाले होतेहै । फूल-गुलावी रंगका होताहै, फलभी सहदेईसे वडे होतेहै, और फलके सूखनेपर उसके अपने आप पाच भाग होजाते है ।

५ सहदेईके वृक्ष छोटे और वडे दोप्रकारके होतेहै, इसके पत्ते पतले और खरखरे होतेहै । इसका फूल पीलेरंगका आताहै, फल छोटे २ गोल आतेहै और इसमें काटे होतेहैं ।

लक्ष्मणानामानि ।

लक्ष्मणापुत्रजननीनागपत्रीचपुत्रदा ।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रजननी, नागपुत्री, पुत्रदा (पुत्रकन्दा, पुच्छश्वा,नागिनी नागाह्वा, नागपुत्री, सुरिनी, मञ्जिका, असबिन्दुच्छदा)

लक्ष्मणागुणाः ।

लक्ष्मणाकन्दकःशीतोमधुरश्चरसायन ।
गर्भप्रदश्चवृष्यश्चत्रिदोषव्रणवातहा ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-शीतल, मधुर, रसायन गर्भप्रद वीर्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक और व्रणविनाशकहै ।

विवरण । लक्ष्मणा औषधि बहुत कम मिलतीहै । यह कहीं २ पर्वत इत्यादिमें उत्पन्न होतीहै । इसके पत्ते-चौडे होतेहै उनपर लाल २ चन्दाकी समान बूंदेसी होतीहैं । इसके नीचे सफेद रंगका कंद निकलता है)

स्वर्णवल्लीनामानि ।

स्वर्णवल्लीरक्तफलाकाकायु काकनहरी ॥

अर्थ-स्वर्णवल्ली, रक्तफला, काकायु, काकनहरी (हरणीपीतिका)

अस्या गुणाः ।

स्वर्णवल्लीशिरःपीडांत्रिदोषान्हन्तिदुग्धदा ॥

अर्थ-स्वर्णवल्ली-शिरपीडा और त्रिदोषनाशक है, तथा स्तनोंमें दूध बढानेवाली है ।

विवरण । स्वर्णवल्ली अर्थात् सोनवेल माथ पर्वत, बाग, और वनोंमें अधिक होतीहै । पत्ते-गोल अनीदार होतेहैं, फल-लाल लगतेहै इस लताका रंग सम्पूर्ण पीला होताहै इसी कारण इसका नाम स्वर्णलताहै ।

हिन्दीभाषामें	स्वर्णवल्ली ।
मराठीभाषामें	सोनवेल ।
गुजरातीभाषामें	सोनवली ।

कार्पासीनामानि ।

कार्पासीतुण्डिकेरीचसमुद्रान्तानकथ्यते ॥

अर्थ-कपासी, तुण्डिकेरी, समुद्रान्ता, (मदन, वदर, वादरा, गुणसूत्रा, चरणि, पार्वतिका, कर्पासी, कार्पासगासिणी, भत्स्या, गुण, गुड, तुण्डकेरिका, मरुद्भवा, पिचु, वादर, कार्पास, फर्जुन, वादन)



वनकार्पासनामानि ।

त्रिपर्णावनकार्पासीभारद्वाजीयशस्विनी ॥

अर्थ-त्रिपर्णा, वनकार्पासी, भारद्वाजी, यशस्विनी (वनसरोजिनी, बहुमूर्त्ति, वनकार्पासिका, वनजा, वनोद्भवा, वनोद्भवकार्पास, अरण्यकार्पासिका, अरण्यकार्पासी)

कालाञ्जनीनामानि ।

कालाञ्जनीचकृष्णाभाकृष्णाञ्जनीशिलाञ्जनी ॥

अर्थ-कालाञ्जनी, कृष्णाभा, कृष्णाञ्जनी, शिलाञ्जनी, (अञ्जनी, रचनी नीलाञ्जनी, काली)

संस्कृतभाषामें	कार्पासी, वनकार्पासी, कालाञ्जनी ।
हिन्दीभाषामें	कपास, वनकपास, नरमावाडी, कापच्छी, [बिनोले] कालीकपास, [रुई]
बङ्गभाषामें	कार्पास, वनकार्पास, कालिकार्पासिकिर्ना [तुला]
मराठीभाषामें	कापशी, कापूस, सरकी, काळी कापशी ।
गुजरातीभाषामें	वणरु कपास, हिरवणी कपाशिया ।
कर्णाटकीभाषामें	हत्ति काडहत्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	पत्तिचेट्टु ।

इंग्रेजीभाषामें	काटन। Cotton plant
लेटिनभाषामें	गोसिपियम हर्बेसियम। Gossypium herbaceum
फारसीभाषामें	कुतुन, पुम्बेदाना।
अरबीभाषामें	कुतन, हबुल कुतन।

कार्पासीगुणाः।

कार्पासीमधुराशीतास्तन्यापित्तकफापहा।
तृष्णादाहभ्रमभ्रान्तिमूर्च्छाहृद्बलकारिणी॥ (रा० नि०)

अर्थ-कपास-मधुर, शीतल, स्तनोंमें दूध बढानेवाली, बलकारक तथा पित्त, कफ, तृषा, दाह, भ्रम, भ्रांति और मूर्च्छाको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च।

कार्पासकी लघुः कोष्णा मधुरा वातनाशिनी।
तत्पलाशं समीरघ्नं रक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम्॥
तत्कर्णपिडकानादपूयास्रावविनाशनम्।
तद्बीजं स्तन्यदं वृष्यं स्निग्धं कफकरं गुरु॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कपास-हलकी, गरम, मधुर, और वातविनाशक है। कपासके पत्ते-वातनाशक, रक्तवर्द्धक, मूत्रको बढानेवाले, तथा कानकी पीडा, कर्णनाद और कानमें राधके बहनेको दूर करनेवाले हैं। कपासके बीज-स्तनोंमें दूध बढानेवाले, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, कफकारी और भारी हैं।

वनकार्पासीगुणाः।

भारद्वाजी हिमा रुच्या व्रणशस्त्रक्षतापहा॥

अर्थ-वनकपास-शीतल, रुचिकारक, तथा घाव और शस्त्रके घावको दूर करे है।

कालाञ्जनीगुणाः।

कालाञ्जनी कटूष्णा स्याद्रूक्षामक्रिमिशोधिनी।
अपानावर्त्तशमनी जठरामयहारिणी॥ (रा० नि०)

अर्थ-कालाञ्जनी-चरपरी, गरम, रूखी, आमनाशक, कृमिशोधक, अपानावर्त्तनाशक और उदररोगको हरनेवाली है।

विवरण। कपासके पेड सब हिन्दोस्थानमें बहुत होते हैं। इसकी बडी खेती होती है, इसका बहुत बडा व्यापार होता है, उत्तम व मध्यम ...

सहीके बनते हैं। कपासके फूल पीले और बीचमें लाल होतेहैं उसमें गूलरकी समान तिकोने फूल आते हैं। उसके भीतर कपास निकलतीहै, वह कपास चरखीमें ओटी जातीहै उसमेंसे जो बीज निकलतेहैं उनको बिनौले कहतेहैं। इसके पत्तेमें पाच अनी होतीहै जैसे, एरण्डके पत्तोंमें। परन्तु उनसे बहुत छोटे होतेहैं। एक काली कपास होतीहै जिसके फूल काले और बिनौले भी काले होतेहैं। एक नरमाबाडी होतीहै जिसके पेड बडे २ होते हैं, फल फूल बारह महीने आतेहैं, रुई नरम होतीहै, बिनौले हरे होतेहैं, यह सब कपासहीके भेदहैं।

वंशनामानि।



वंशत्वक्सारकर्म्मारत्वचिसारतृणध्वजाः।
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः॥

अर्थ–वंश, त्वक्सार, कर्म्मार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन, (किलाटी, पुष्पघातक, बृहत्तृण, किष्कुपर्वा, वन्य, सुपर्वा, तृणकेतुक, कण्टालु, कण्टकी, महाबल, दृढग्रन्थि, दृढपत्र, धनद्रुम, धानुष्य, दृढकाण्ड, कीचक, कुक्षिरन्ध्र, षट्पदालय, कमठ, मृत्युबीज, वादनीय, फलान्तक, तृणकेतु, पर्वयोनि, सुपर्वन्, तृणराजक, बहुपर्वन्, दुरारुह)

संस्कृतभाषामें वंश।
हिन्दीभाषामें बाँस।
बंगलामें बाँस।

मराठीभाषामें	वेट, पोकरवेट, भरियवेट ।
गुजरातीभाषामें	वाश ।
कर्णाटकीभाषामें	वरडुबिदोर ।
तैलिङ्गीभाषामें	कचिकड् मदुरु, वेनेमुरु, वेदुरुशेणि, वेद्रु ।
तामिल्भाषामें	मनगिल ।
ब्रम०	माण्डगय ।
इंग्रेजीभाषाम	बॅंबूकेन । Camboo cane
लैटिन् भाषाम	वेम्बुसायरुंगेरिम Bambusa Vulgaris
फारसीभाषाम	कमव ।

वंशगुणाः ।

वंशोऽम्लस्तुवरस्तिक्तःशीतलःसारकोमतः ।
बस्तिशुद्धिकर स्वादुश्छेदनोभेदकोमत ॥
कफरक्तरुजपित्तंकुष्ठशोथव्रणतथा ।
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शोन्दाहञ्चैवविनाशयेत ॥ (नि० र०)

अर्थ-बाँस-खट्टा, कसेला, कड़वा, शीतल, सारक, बस्तिशोधक, स्वादिष्ट, छेदक, भेदक तथा कफ, रक्तविकार, पित्त, कोढ, सूजन घाव, मूत्रकृच्छ, प्रमेह, बवासीर, और दाहको दूरकरे है ।

अस्या करीरगुणाः ।

तत्करीर कटु पाकेरम्सोगुरुःसर ।
कषाय कफकृत्स्वादुर्विदाहीवातपित्तलः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बाँसके अंकुर-पचनेमें चरपरे, रूखे, भारी सारक (दस्तावर), कसेले, कफकारक, स्वादु, दाहजनक और वातपित्तकारक है ।

मतान्तर ।

करीरकटुतिक्ताम्लकषायल्घुशीतलम् ।
पित्तास्रदाहकृच्छ्रघ्नरुचिकृत्पर्वनिर्गुणम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-बांसके अंकुर-चरपरे, कड़वे, खट्टे, कसेले, हलके, शीतल, तथा रक्तपित्त, दाह और मूत्रकृच्छ्र रोगको हरे हैं । इसके पर्व (गांठ) निर्गुण हैं ।

वंशयवगुणाः ।

वेणोर्यवास्तुवरो रूक्षश्च मधुरोमतः ।

पुष्टिकृद्वीर्यकृद्बल्यःकफपित्तहरोमत ।
विपप्रमेहशमनोमुनिभिःपरिकीर्त्तित ॥ (नि० र०)

अर्थ-बाँसके चावल-कपेले, मधुर, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, तथा कफ, पित्त, विप और प्रमेहको दूर करेहैं ।

अपिच ।

तद्यवास्तुसरारूक्षा·कपाया कटुपाकिन ।
वातपित्तकराउष्णावद्धमूत्रा·कफापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बाँसके चावल-सारक (दस्तावर), रूखे, कपेले, पचनेमें कटु, वातपित्तकारक, गरम, तथा मूत्ररोध और कफनाशक हैं ।

द्विविधवंशगुणा ।

वंशौत्वम्लौकपायौचकिञ्चित्तिक्तौसुशीतलौ ।
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्श पित्तदाहास्रनाशनौ ॥
विशेषाद्रन्ध्रवंशस्तुदीपनोऽजीर्णनाशन ।
रुचिकृत्पाचनोहृद्य शूलघ्नोगुल्मनाशन·॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-दोनोंप्रकारके बास-(बास और रन्ध्रबास) खट्टे, कपेले, किञ्चित् कडवे, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, बवासीर, पित्त, दाह और रक्तविकारोंको हरे हैं । रन्ध्रवश-विशेषकरके अग्निको दीपन करनेवाला, अजीर्णनाशक, रुचिकारक, पाचक, हृदयको हितकारी, तथा शूल और गुल्मनाशक है ।

विवरण । बाँस वन जगल और पर्वतोंकी तलेटियोंमें उत्पन्न होते है, फूल सफेद आता है, बाँसमें वंशलोचन निकलता है, कभी २ बाँसपे जौ आते है उन जौओंमेंसे चावल निकलते है उनका भात करते हैं ।

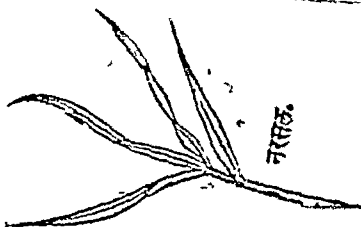
नलनामानि ।

नल पोटगल·शून्यमध्यश्चधमनस्तथा ॥

अर्थ-नल, पोटगल, शून्यमध्य, धमन (नाल, नड, शुषिरन्ध्र, कीचक, दीर्घवंश, विभीषण, उद्भ्रान्त, मृदुपत्र, वंशपत्र, मृदुच्छद, लालवंश, नट, नटी, नड, नर्त्तक, मृत्युपुष्प)

देवनलनामानि ।

अन्योमहानलोवन्योदेवनालोनलोत्तम ।
स्थूलनाल स्थूलदण्ड सुरनाल सुरद्रुम ॥



अर्थ-महानल, वन्य, देवनाल, नलोत्तम, स्थूलनाल, स्थूलदण्ड, सुनाल, सुखम।

संस्कृतभाषामें	नल, महानल।
हिन्दीभाषामें	नरसल, नल, महानरसल।
बंगभाषामें	नल, महानल।
मराठीभाषामें	नळ, देवनळ, थोरदेवनळ।
गुजरातीभाषामें	नार्गी।
कर्णाटकीभाषामें	देवनाल, दोड्डदेवनाल।
तैलिङ्गीभाषामें	मुगुण्डुरु, पिरिनगाड्डि।
इंग्रेजीभाषामें	इण्डियन रीड्स। Indian reeds
लैटिनभाषामें	लोबिलीया, निकोटिया, निकोशिया। Lobelia Nicotianaefolia
पश्तोभाषामें	आंगी।

नलगुणाः।

नलस्तुमधुरस्तिक्तः कषायः कफरक्तजित्।
उष्णोहृद्बस्तियोन्यार्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ॥ (भा प्र.)

अर्थ-नल-मधुर, कडवा, कषेला, कफनाशक, रक्तविकारविनाशक, गरम, तथा हृद्रोग, बस्तिपीडा, योनिरोग, दाह, पित्त और विसर्पको नाश करे है।

अन्यच्च।

ज्ञेयोविभीषणः शीतोरूक्षश्चगुरुरमधुः।
धातुवृद्धिकरः स्निग्धोदीपनोमूत्रशोधनः ॥

विसर्पकृच्छ्रदाहास्रदोषपित्तकफान्हरेत् ।
हृद्रोगवस्तिशूलौघयोनिरुग्रक्तपित्तहा ॥ (नि० र०)

अर्थ-नल (नरसल)-शीतल, रुचिकारक, कषेला, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, कडवा, अग्निको दीपन करनेवाला, मूत्रशोधक, तथा विसर्प मूत्रकृच्छ्र, दाह, रुधिरविकार, पित्त, कफ, हृदयरोग, वस्तिशूल, योनिरोग, और रक्तपित्तका नाशकरै है)

देवनलगुणा ।

देवनलोतिमधुरोवृष्यईषत्कषायकं ।
नलाधिकश्चवीर्य्येतुशस्यतेरसकर्मणि ॥

अर्थ-बडा नरसल-अत्यन्त मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किञ्चित्कषेला, और नलकी अपेक्षा वीर्य्यमे अधिक है तथा रसकर्ममें उत्तम है ।

विवरण-नरसल अर्थात् नल बासके समान जलाशयके निकट जगलोंमें उत्पन्न होतेहै । पत्ते-ईखके पत्तोंके समान होतेहैं इसकी आकृतिभी ईखकेही सदृश होतीहै । जिस प्रकार गन्नेके ऊपर अगोला होताहै उसीप्रकार इसके ऊपरभी होताहै परन्तु ऊचावमें ईखसे तिगुना ऊचा होताहै यह भीतरसे पोला होताहै ।

भद्रमुञ्जनामानि ।

भद्रमुञ्ज शरोवाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टन ।
मुञ्जोमुंजातकोवाण-स्थूलदर्भ' सुमेखल ॥

अर्थ-भद्रमुञ्ज, शर, वाण, तेजन, और चक्षुवेष्टन, यह नाम रामशरके है । मुञ्ज, मुञ्जात, वाण, स्थूलदर्भ, सुमेखल (इक्षुकाण्ड, मौञ्जी, वृणाख्य, ब्रह्मण्य, तेजनाह्वय, वानीरक, मुञ्जनक, शीरी, दर्भाह्वय, दुर्मूल, दृढतृण, दृढमूल, वहुप्रज, रञ्जन, शक्रभग) यह नाम मूँज अर्थात् सेटेके हैं ।

संस्कृतभाषामें	भद्रमुञ्ज, मुञ्ज ।
हिन्दीभाषामें	रामसर, मूँज ।
मराठीभाषामें	मोळ ।
वगभाषामें	मुँज, रामशर, सरपत ।
तैलिङ्गीभाषामें	मुजगड्डि अनिस्फुलिंग ।

द्विविधमुञ्जगुणा ।

मुञ्जद्वयन्तुमधुरतुवरशिशिरतथा ।

दाहतृष्णाविसर्पास्रमूत्रनेत्राक्षिरोगजित् ॥
दोषत्रयहरा वृष्यमेखला सूपयुज्यते । (भा० प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी मूंज (मुञ्ज और रामशर) मधुर, कषैली, शीतल तथा दाह, तृषा, विसर्प, रुधिरविकार, मूत्ररोग, नेत्ररोग और त्रिदोषनाशक है । तथा वीर्यवर्द्धक है ।

अन्यच्च मुञ्जगुणाः ।

मुञ्जस्तु मधुरः शीतः कफपित्तास्रदोषजित् ।
ग्रहरक्षासु दीक्षासु पावनो भूतनाशनः ॥

अर्थ-मूंज-मधुर, शीतल, कफपित्तरक्तदोषनाशक, ग्रहरक्षा और दीक्षामें पवित्र तथा भूतनाशक है ।

विवरण-मुंज और भद्रमुंजके गुच्छभी नलके समान जलाशयके समीप या रेतेमें बहुत होतेहैं इसको मौञ्जी कहतेहैं, यह वास्तवमें मौञ्ज शब्द था अब बिगड़कर मौंज होगया इसके बानको मूज कहतेहैं । [illegible] रंगके होतेहैं ।

काशनामानि ।

काशः सुकाण्डः काशेक्षुर्नादेयो नीरजस्तथा ।
काकेक्षुस्तापसेक्षुश्च मत्स्याद्विक्षुरसः शिरिः ॥

अर्थ-काश, सुकाण्ड, काशेक्षु, नादेय, नीरज, काकेक्षु, तापसेक्षु, इक्षुरस, शिरि, (इक्षुगन्धा, पोटगल, काश, कर्म्मपुष्प, इक्षुगन्धिका, इक्षीका, अश्वबाल, चामरपुष्प, चामरपुष्पक, काशी, काशा, काण्डेक्षु, अमरपुष्पक, वायस, वनहासक, इक्षारि, इक्षुर, इक्षुकाण्ड, शारद, सितपुष्पक, दर्भपत्रक, शेरल, काण्ड, काण्डक, कण्डकाण्डक, दर्भपत्र)

महाराष्ट्रभाषामें काश ।
हिन्दीभाषामें काँस ।
बंगभाषामें केशेघास ।
मारवाड़ीभाषामें [illegible] ।
कोंकणीभाषामें कगाड ।
गुजरातीभाषामें कांसडो ।
कर्णाटकीभाषामें शिविदराडु, काडु, काशु ।

तैलिङ्गीभापामें	रेछु ।	
लैटिन्भापामें	कुइक्स बारवेटा ।	Coxbarbata

काशगुणाः ।

काशस्तुतपर्ण शीतोगौल्योरुचिकरोमतः ।
बलकृन्मधुरोवृष्यस्तिक्तः पाकेमधु स्मृतः ॥
सर स्निग्ध पित्तदाहमूत्रकृच्छ्रक्षयापह ।
मूत्राश्मरीरक्तदोपरक्तपित्तक्षतक्षयम् ॥
पित्तरोगनाशयतीत्येवपूर्वैर्निवेदितम् ।

अर्थ–कास तृप्तिकारक, शीतल, गौल्य, रुचिकारी, बलकारक, मधुर, वीर्यवर्द्धक, कडवा, पचनेमेंभी मधुर, सर, (दस्तावर) स्निग्ध तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, मूत्राश्मरी, रुधिरविकार, रक्तपित्त, क्षतक्षय और पित्तरोगको दूर करे है ।

विवरण । कास–नदियोंके किनारे कीचडमें उत्पन्न होतीहै, पत्ते बाभरके समान, वरन एकप्रकारकी देशी बाभरभी होतीहै, फूलसफेद अधिक शोभायमान मजरीके समान आतेहैं ।

गुन्द्रनामानि ।

गुन्द्र पटेरकोरच्छ शृङ्गवेराभमूलकः ॥

अर्थ–गुन्द्र, पटेरक, रच्छ, शृङ्गवेराभमूलक ।

सस्कृतभापामें	गुन्द्र ।	
हिन्दीभापामें	गोंदपटेर ।	
मराठीभापामें	पाणगवत, रद्दा ।	
गुजरातीभापामें	पान्यघाडाडी ।	
इंग्रेजीभापामें	एलिफटग्रास ।	Elephant gross
लैटिन् भापामें	टाइफा एलिफण्टाइना ।	Typha Ilephantma

अस्य गुणाः ।

गुन्द्र कपायोमधुरःशिशिर पित्तरक्तजित् ।
स्तन्यशुक्ररजोमूत्रशोधनोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥

अर्थ–पटेर–कपेली, मधुर, शीतल, रक्तपित्तनाशक, स्तनोंके दूधको तथा शुक्र, रज, मूत्रको शुद्धकरेहै । एव मूत्रकृच्छ्ररोगविनाशक है ।

विवरण। गुद्रपटेर–अर्थात् गोंदपटेर पानीमें होताहै, पत्ते–पतले नीचे चार पांच फुटके और एकइंच चौडे होतेहैं, पत्तेमें पत्ते निकलतेहैं पत्ते मोटे बहुत होतेहैं, परन्तु बीचसे गिरजातेहैं, उनके ऊपर एक पाल धागेके समान होताहै, बाद ऊपर एक पतलीसी लकडी होतीहै। इनसे चटाई इत्यादि अनेक पदार्थ बनतेहैं।

एरकानामानि।

एरकागुन्द्रमूलाचशिम्बिर्गुन्द्राशरीति च ॥

अर्थ–एरका, गुन्द्रमूला, शिम्बि, गुन्द्रा, शरी। यह नामहैं।

हिन्दीभाषामें मोथीतृण।
बंगालभाषामें होगला।
मराठीभाषामें एरका, पाणलव्हाळा।
गुजरातीभाषामें एरका।

अथ गुणाः।

एरकाशिशिरावृष्याचक्षुष्यावातकोपनी।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ॥

अर्थ–एरका–(मोथीतृण) शीतल, वीर्यवर्धक, नेत्रोंको हितकारी वातको कुपित करनेवाली, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह और रक्तपित्तनाशक है।

विवरण। मोथीतृण–जलमें उत्पन्न होताहै, पत्ते–[illegible] लम्बे होतेहैं।

कुशनामानि।

कुशोदर्भस्तथाबर्हिः सूच्यग्रोयज्ञभूषणः।
ततोऽन्योदीर्घपत्रः स्यात्क्षुरपत्रस्तथैव च ॥

अर्थ–कुश, दर्भ, बर्हि, सूच्यग्र, यज्ञभूषण (कुश दर्भ, बर्हिस्, [illegible] गर्भ, [illegible]) यह नाम कुशाके हैं। दीर्घपत्र और क्षुरपत्र यह दूसरे प्रकारके कुशाके हैं।

[illegible]भाषामें कुश, दर्भ।
हिन्दीभाषामें कुशा, दाभ, डाभ।
बंगभाषामें कुश।
मराठीभाषामें [illegible]
कर्नाटकीभाषामें दर्भ।
गुजरातीभाषामें दाभ, डाभ।

कर्णाटकीभाषामें विलीप वुदकुशि उद्मकुशि ।
तैलिङ्गीभाषामें कुशदूर्वालु, दुभ ।
लैटिन्भाषामें एड्रोपोगननारडेइडिस् । Andropogon nordaidea

द्विविधदर्भगुणा ।

दर्भद्वय त्रिदोषघ्न मधुर तुवर हिमम् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक्प्रदरास्रजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी दाभ-त्रिदोषनाशक, मधुर, कपेली, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, वस्तिरोग, प्रदररोग और रक्तविकारको दूर करनेवाली है ।

अपच्च ।

दर्भस्तुमधुर शीतोगर्भस्थापनकारकः ।
पित्तदाहश्रमरजोदोषश्चैवविनाशयेत् (ध० नि०)

अर्थ-डाभ-मधुर, शीतल, गर्भस्थापक, तथा पित्त, दाह, श्रम और रजोदोषनाशक है ।

अपिच ।

दर्भ शीतोरुचिकरोमधुरस्तुवरोमत ।
स्निग्ध कफकर शुक्ररक्तशुद्धिकरोमत ॥
कफरक्तरक्तपित्तपित्तश्वासतृषांतथा ।
मूत्रकृच्छ्रवस्तिशूलकामलाप्रदरतथा ॥
रक्तदोषविसर्पश्चछर्दिंमूर्छांतथाश्मरीम् ।
नाशयेदितिचप्रोक्तोमूलतस्यतुशीतलम् ॥
रुच्यंचमधुररक्तज्वरतृट्श्वासकामलाम् ।
पित्तञ्चनाशयत्येवमुनिभि परिकीर्त्तितम ॥ (नि०रा०)

अर्थ-कुशा तथा दाभ-शीतल, रुचिकारक, मधुर, कपेली, स्निग्ध, कफकारक, शुक्र और रक्तशोधक तथा कफ, रक्त, रक्तपित्त, पित्त, श्वास, तृषा, मूत्रकृच्छ्र, वस्तिशूल, कामला, प्रदर, रक्तविकार, विसर्प, वमन, मूर्च्छा और अश्मरी (पथरी) रोगको नष्ट करे है । इसकी जड शीतल, रुचिकारक, मधुर, रक्त, ज्वर, तृषा, श्वास, कामला और पित्तको दूर करे है ।

दर्भाः कुशाश्च गुणैस्तुल्याँस्तथापि च कुशोऽधिकः ।
यदि श्वेतकुशाभावस्तथा योजयेद्भिषक् ॥

अर्थ—यद्यपि कुशा और डाभके गुण समान ही हैं तथापि कुशा अधिक गुणवाली है। जो कुशा न मिले तो उसके अभावमें डाभ लेनी।

विवरण। कुशा और दर्भ—दोनों एक ही जातिके तृण हैं। यह रेतली भूमिमें और जंगलोंमें उत्पन्न होता है। पत्ते-इसके गाण्डरके समान होते हैं।

रोहिषनामानि।

कत्तृणं रोहिषं देवजग्धं सौगन्धिकं तथा ।
भूतिकं ध्यामपौरश्च श्यामकं धूपगन्धिकम् ॥

अर्थ—कत्तृण, रोहिष, देवजग्ध (क) सौगन्धिक, भूतिक, ध्याम, पौर, श्यामक, धूपगन्धिक, (सुगन्ध, तृणगौर, कुटुम्बक, रोहिषतृण, कत्तृण, भूति, श्यामक, भूतिकतृण)

संस्कृतभाषामें	कत्तृण, रोहिषतृण।
हिन्दीभाषामें	रोहिषघाँस, गंधेजघास, मिरचियागन्ध, रूसाघास।
बङ्गलाभाषामें	गन्धकपूर।
मराठीभाषामें	रोहिष, सुगन्धरोहिषतृण।
गुजरातीभाषामें	[illegible]
तैलङ्गीभाषामें	कामचिगड्डि, सुगन्धुर।
अंग्रेजीभाषामें	पालरोसा।
फारसीभाषामें	[illegible]
अरबीभाषामें	अजखर।

रोहिषगुणाः।

रोहिषं तुवरं तिक्तं कटुपाकं व्यपोहति ।
हृत्कण्ठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ—रोहिष—कसैली, कड़वी, पाकमें चरपरी, तथा हृद्रोग, कण्ठरोग, रक्तपित्त, शूल, खांसी, कफ और ज्वरको हरे है।

अन्यच्च।

कत्तृणं रोहिषं नाम [illegible] कफापहम् ।
[illegible] दीपनम् ॥

अर्थ-कत्तृण-(रोहिपतृण) चरपरे, कडवे, कफनाशक तथा शस्त्रशल्यादि दोष और बालग्रहनिवारक हैं ।

दीर्घरोहिषनामानि ।

अन्यद्रोहिपकंदीर्घंदृढकाण्डोदृढच्छदम् ।
यज्ञेष्टदीर्घनालश्चतिक्तसारश्चकुत्सितम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिपक, दृढकाण्ड, दृढच्छद, यज्ञेष्ट, दीर्घनाल, तिक्तसार, कुत्सित ।

अस्य गुणाः ।

दीर्घरोहिपकतिक्तकटूष्णकफवातजित् ।
भूतग्रहविषघ्नश्चव्रणक्षतविरोपणम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिपतृण-कडवे, चरपरे, गरम तथा कफवात, भूत, ग्रह और विषनाशक हैं । तथा व्रण और क्षतको भरनेवाले हैं ।

विवरण । रोहिप तृण-लम्बे और सुगन्धित मालवे और राज पूतानेके जगलमे बहुत होतेहैं । पत्ते-छोटे २ और हरे हरे अत्यन्त शोभायमान होतेहैं, इसके सर्वांगमें बहुत सुगन्धि आतीहै । दूसरे रोहिपतृणके कुछ वडे क्षुप होतेहैं । इसका तेल निकलता है, उसमें बहुत सुगन्धि होतीहै ।

भूतृणनामानि ।

गुह्यवीजन्तुभूतीकसुगन्धजम्बुकप्रियम् ।
भूतृणन्तुभवेच्छत्रामालातृणकमित्यपि ॥

अर्थ-गुह्यवीज, भूतीक, सुगन्ध, जम्बुकप्रिय, भूतृण, छत्रा, मालातृणक (रोहिप, भूति, भूतिक, कुटुम्बक, मालातृण, समालम्नी, छत्र, अहिच्छत्रक, गुच्छाल, पुस्त्वाविग्रह, वधिर, अतिगन्ध, शृङ्गरोह, गुण्डरोह, करेन्दुक, गोच्छालक, पूतिगन्ध, वधिरध्वनिनोधन)

संस्कृतभाषामें	भूतृण ।
हिन्दीभाषामें	भूतृण ।
गुजरातीभाषामें	भूत्रण ।
कर्णाटकी भाषामें	परिमलदगनीण ।
लैटिन्भाषामें	एँड्रोपोगन, साईट्रेटस । Andropogan Citratus

अस्य गुणाः ।

भूतृणंकटुकंतिक्ततीक्ष्णोष्णरेचनलघु ।

विदाहिदीपनरूक्षमनेत्र्यमुखशोधनम् ॥
अवृष्यं बहुविट्कं च पित्तरक्तप्रदूषणम् । (भा०प्र०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, तीक्ष्ण, गरम, [illegible], हलके, [illegible], अग्निको दीपन करनेवाले, रूखे, नेत्रोंको अहितकारी । मुखशोधक, अवृष्य, बहुमलवर्धक और रक्तपित्तको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

भूतृणकटुतिक्तञ्चवातसन्तापनाशनम् ।
हन्तिभूतग्रहावेशान्विषदोषांश्चदारुणान् ॥ (राजनि०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, वातसन्तापनाशक, भूत, ग्रहावेश [illegible] और विषके दारुण विकारोंको हरे है ।

अपिच ।

भूतृण कटुतिक्तोष्णःपुंस्त्वघ्नोमलशोधनः ।
कृमिकासानिलश्वासश्लेष्मदद्रुविनाशनः ॥ (गो०नि०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, गरम, पुंस्त्वनाशक, मलशोधक, तथा कृमि, खांसी, वात, श्वास, कफ, और दादको दूर करे है

सुगन्धभूतृणनामानि ।

रौहिषसुगन्धभूतृणभूतृणगोमयप्रियम् ॥

अर्थ-रौहिष, सुगन्धभूतृण, भूतृण गोमयप्रिय ([illegible], सुगन्ध, सुरभि, सुगन्धि, सुरसाल ।

हिन्दीभाषामें	सुगन्धभूतृण ।
मराठीभाषामें	पुर्णा गवत, सुगन्ध गवत ।
बंगालीभाषामें	सुगन्ध तृन ।
गुजरातीभाषामें	सुगन्ध घास ।

अस्य गुणाः ।

गन्धतृणसुगन्धिस्याद्दीपतिक्तरसायनम् ।
स्निग्धमधुरशीतञ्चकफपित्तश्रमापहम् ॥

अर्थ-सुगन्धभूतृण-सुगन्धित, किंचित् कडवे, रसायन, स्निग्ध, मधुर शीतल तथा कफ पित्त और श्रमनाशक है ।

विशेष-भूतृण जंगल और बगीचे [illegible] अधिक उत्पन्न होते हैं इनमें सुगन्धि आती है और [illegible] ।

वल्वजातृणनामानि ।

वल्वजादृढपत्रीचतृणेक्षुस्तृणवल्वजा ।
मौञ्जीपत्राहृढतृणापानीयाश्राहृढक्षुरा ॥

अर्थ-वल्वजा, दृढपत्री, तृणेक्षु, तृणवल्वजा, मौंजीपत्रा, दृढतृणा, पानीयाश्रा, दृढक्षुरा ।

अस्या गुणा ।

वल्वजामधुराशीतापित्तदाहतृषापहा ।
वातप्रकोपनीरुच्याकण्ठशुद्धिकरीपरा ॥

अर्थ-वल्वजातृण-मधुर, शीतल, पित्तनिवारक, दाहकारक, तृषानाशक, वातको कुपित करनेवाले, रुचिकारक, और कण्ठकी शुद्धिकरे है ।

ऊपलतृणनामानि ।

ऊपलोभूरिपत्रश्चसुतृणश्चतृणोत्तम ॥

अर्थ-ऊपल, भूरिपत्र, सुतृण और तृणोत्तम ।

अस्य गुणा ।

ऊपलोवलदोरुच्य पशूनासर्वदाहित· ॥

अर्थ-ऊपलतृण-बलकारक, रुचिकारी और पशुओंको सर्वदा हितकारीहै ।

इक्षुदर्भानामानि ।

इक्षुदर्भासुदर्भाचपत्रालुस्तृणपत्रिका ॥

अर्थ-इक्षुदर्भा, सुदर्भा, पत्रालु, तृणपत्रिका ।

अस्या गुणा ।

इक्षुदर्भासुमधुरास्निग्धाईषत्कषायिका ।
कफपित्तहरारुच्यालघु सन्तर्पणीस्मृता ॥

अर्थ-इक्षुदर्भ-मधुर, स्निग्ध, किञ्चित्कषेला, कफपित्तनाशक, रुचिकारक, हल्का, और सन्तपर्ण है ।

गोमूत्रिकातृणनामानि ।

गोमूत्रिकारक्ततृणाक्षेत्रजाकृष्णभूमिजा ।

अर्थ-गोमूत्रिका, रक्ततृणा, क्षेत्रजा, कृष्णभूमिजा ।

अस्य गुणा ।

गोमूत्रिकातुमधुरावृष्यागोदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-गोमूत्रतृण-मधुर, वीर्यवर्द्धक और गौओंके दूध बढानेवाला है।

शिल्पिकानामानि।

शिल्पिकाशिल्पिनीशीताक्षेत्रजानमृदुच्छदा ॥

अर्थ-शिल्पिका, शिल्पिनी, शीता, क्षेत्रजा, मृदुच्छदा।

अस्या गुणाः।

शिल्पिकामधुराशीतातद्वीजंबलवृष्यदम् ॥

अर्थ-शिल्पिकातृण-मधुर और शीतल है। इसके बीज बल और वीर्यवर्द्धक है।

निःश्रेणिकानामानि।

निःश्रेणिकाश्रेणिवल्लानीरसावनवल्लरी ॥

अर्थ-निःश्रेणिका, श्रेणिवल्ला, नीरसा, वनवल्लरी।

अस्या गुणाः।

निःश्रेणिकानीरसोष्णापशूनामबलप्रदा ॥

अर्थ-निःश्रेणितृण-नीरस अर्थात् रसहीन, गरम, और पशुओंको निर्बलताकारक है।

गर्ङीतृणनामानि।

गर्मोटिकासुनीलाचजर्डीचजलाश्रया।

अर्थ-गर्मोटिका, सुनीला, जर्डी, जलाश्रया।

अस्या गुणाः।

जर्डीमधुराशीतासारिणीदाहहारिणी।

रक्तदोषहराकच्यापशूनांदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-जर्डीतृण-मधुर, शीतल, सारक, दाहहारक, रक्तविकारविनाशक रुचिकारक, तथा पशुओंके दूध बढानेवाले है।

मन्थरतृणनामानि।

मन्थर. पवन. शोक. सुनग. स्निग्धपत्र ॥

अर्थ-मन्थर, पवन, सुशृण, स्निग्धपत्र, (मृदुग्रन्थि)।

अस्य गुणाः।

मृदुग्रन्थिरमधुरोधेनुदुग्धकारकः ॥

अर्थ-मन्थरतृण-मधुर, और गौओंके दूध बढानेवाले है।

तृणाख्यनामानि।

तृणाख्यचपर्वतृणपत्राढ्यचमृगप्रियम् ॥

अर्थ-तृणाख्य, पर्वतृण, पत्राढ्य, मृगप्रिय ।

अस्य गुणा ।

वलपुष्टिकररुच्यंपशूनांसर्वदाहितम् ॥

अर्थ-पर्वतृण-वल, पुष्टि और रुचिको उत्पन्न करनेवाला है तथा पशुओंको सर्वदा हितकारी है ।

वशपत्रीतृणनामानि ।

वशपत्रीवशदलाजीरिकाजीर्णपत्रिका ॥

अर्थ-वशपत्री, वशदला, जीरिका, जीर्णपत्रिका ।

अस्या गुणा ।

वशपत्रीसुमधुराशिशिरापित्तनाशिनी ।
रक्तदोपहरारुच्यापशूनादुग्धदायिनी ॥

अर्थ-वशपत्रीतृण-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रक्तदोपनिवारक, रुचिकारक, और पशुओंके स्तनोंमें दूध वढानेवाले हैं ।

मन्थानकतृणनामानि ।

पन्थानकस्तुहरितोदृढमूलस्तृणाधिप ॥

अर्थ-मन्थानक, हरित, दृढमूल, तृणाधिप ।

मन्थानकतृणगुणा ।

स्निग्धोधेनुप्रियोदोग्धामधुरोवहुवीर्य्यक ॥

अर्थ-मन्थानकतृण-स्निग्ध, गायोंको प्रिय, दुग्धदायक, मधुर और वहुवीर्य्यदायक है ।

पल्लिवाहतृणनामगुणाश्च ।

पल्लिवाहोदीर्घतृण सुपत्रस्ताम्रवर्णक ।
अदृढ शाकपत्रादिपशूनामवलप्रद ॥

अर्थ-पल्लिवाह-दीर्घतृण, सुपत्र, ताम्रवर्ण, अदृढ, शाकपत्रादि पल्लिवाह तृण-पशुओंको निर्वल करनेवाले हैं ।

लवणतृणनामानि ।

लवणतृणलोणतृणतृणाम्लपटुतृणचअम्लकाण्डञ्च ॥

अर्थ-लवणतृण, लोणतृण, तृणाम्ल, पटुतृण, अम्लकाण्ड ।

अस्य गुणाः ।

पटुतृणकंक्षारमम्लंकषायंस्तन्यवृद्धिकम् ॥

अर्थ-लवणतृण-खारी, अम्ल, कषेला, और दूधबढ़ाता है ।

पण्यन्धानामानि ।

पण्यन्धाफंजुणीपत्रापण्यपत्रापणायिता ॥

अर्थ-पण्यन्धा, फञ्जुणीपत्रा, पण्यपत्रा, पणाया ।

अस्या गुणाः ।

पण्यन्धासमवीर्य्याम्यातिक्ताक्षारानसारिणी ।

तत्कालभग्नघातस्यव्रणसंरोपणीपरा ॥

दीर्घामध्यातथाह्रस्वापण्यन्धात्रिविधास्मृता ।

रसवीर्य्यविपाकेषुमध्यमागुणदायिका ॥

अर्थ-पण्यन्धातृण-समवीर्य्य, तिक्त, क्षार और सारक है तथा तत्काल लगनेसे उत्पन्न हुये घावको भरै है पण्यन्धा दूबदीर्घ, मध्य और ह्रस्व इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है । इन तीनोंमें रस वीर्य्य और विपाकमें मध्यम गुणदायक है ।

गुन्द्रनामानि ।

गुड सुकाण्डोगुण्ड स्याद्दीर्घकाण्डस्त्रिकोणकः ।

छत्रगुच्छोमिषपत्रश्चनीलपत्रस्त्रिधारकः ॥

अर्थ-गुद, सुकाण्ड, गुन्द, दीर्घकाण्ड, त्रिकोणक, छत्रगुच्छ अमिपत्र, नीलपत्र, त्रिधारक ।

वृत्तगुन्द्रनामानि ।

वृत्तगुण्डोपगोवृत्तोदीर्घनालोजलाश्रयः ।

ततस्थूलोलघुश्चान्यस्त्रिधायद्वादशाङ्गिकः ॥

अर्थ-वृत्तगुन्द्र, दीर्घनाल, जलाश्रय । यह लघु और स्थूल इन भेदोंसे दो प्रकारके हैं ।

अस्य गुणाः ।

गुण्ड्रस्तुमधुरः शीतःकफपित्तातिसारहा ।

दाहरक्तहरस्तन्यमन्दवृद्धिकरोगहा ॥

अर्थ-गुण्डतृण-मधुर, शीतल, तथा कफ, पित्त, अतिसार, दाह और रुधिरविकारको दूर करेहै। इन दोनोंमें स्थूल गुण्डतृण अधिक गुणवालाहै।

चणिकातृणनामानि ।

चणिकादुग्धदागौल्यासुनालाक्षेत्रजाहिमा ॥

अर्थ-चणिका, दुग्धदा गौल्या, सुनाला, क्षेत्रजा, हिमा ।

अस्या गुणा ।

वृष्याबल्यातिमधुराबीजे पशुहितातृणे ॥

अर्थ-इसके बीज-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अत्यन्तमधुर और तृण, पशुओंको हितकारीहै ।

गुण्डासिनीतृणनामानि ।

गुण्डासिनीतुगुण्डालागुडालागुच्छमूलिकाचिपिटा ।
तृणपत्रीजलवासापृथुलासुविष्टराचनवाह्वा ॥

अर्थ-गुण्डासिनी, गुण्डाला, गुडाला, गुच्छमूलिका, चिपिटा, तृणपत्री, जलवासा, पृथुला, सुविष्टरा ।

अस्या गुणा ।

गुण्डासिनीकटु स्वादु पित्तादाहश्रमापहा ।
तिक्तोष्णाचपशुघ्नीचव्रणदोपनिवर्हणी ॥

अर्थ-गुण्डासिनीतृण-चरपरे, स्वादु, पित्तनाशक, दाहको दूर करनेवाले श्रमको हरनेवाले, कडवे, गरम, पशुनाशक और व्रणदोपनिवारकहै ।

शूलीतृणनामानि ।

शूलीतुशूलपत्रीस्यादशाखाधूम्रमूलिका ।
जलाश्रयामृदुलतापिच्छिलामहिपीप्रिया ॥

अर्थ-शूली, शूलपत्री, अशाखा, धूम्रमूलिका, जलाश्रया, मृदुलता, पिच्छिला, महिपीप्रिया ।

अस्या गुणा ।

शूलीतुपिच्छिलाकोष्णागुरुर्गौल्याबलप्रदा ।
पित्तदाहहरारुच्यादुग्धवृद्धिप्रदायका ॥ (नि० रा०)

अर्थ-शूलीतृण-पिच्छिल, गरम, भारी, गौल्य, बलकारक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, रुचिकारक और दुग्धवर्द्धक है ।

नीलदूर्वानामानि ।

नीलदूर्वाऽमृताऽनन्ता शाड्वलं हरितं तथा ।
शतपर्वा शतकुम्भी शीतला यामिनी तथा ॥

अर्थ-नीलदूर्वा, अमृता, अनन्ता, शाड्वल, हरित, शतपर्वा, शतकुम्भी, शीतला, यामिनी (हरिता, शाम्भवी, श्यामा शीता, शतवल्लिका, अमृता, पूर्वा, शतग्रन्थि, अनुवल्लिका, शिवा, शिवेष्टा, मङ्गल्या, जया, भूतहन्त्री, शतमूला महौषधी, विजया गौरी, शान्ता, भद्रा, भार्गवी, सहस्रवीर्या, शताग्नी, शुभा, नन्दा, महौषधी, हरितालिका शिवप्रिया, दुर्वा, सहस्रपर्णी, हरिता, हरितालिनी, पन्नगहरा, भद्रा, गौरी, शाम्भवी, अमरा, अभिकाण्डा)

श्वेतदूर्वानामानि ।

श्वेतदूर्वा गन्धवीर्या गण्डाली शकुलाक्षका ।
गोलोमी सितदूर्वा च शतपर्वा सिताह्वया ॥

अर्थ-श्वेतदूर्वा, गन्धवीर्या, गण्डाली, शकुलाक्ष, गोलोमी, सितदूर्वा, शतपर्वा, सिताह्वया, (सिता, श्वेता, सितागन्धा, चण्डा, भद्रा, मार्गी, दर्भग, गौरी, सितालवाक्ता, भार्गवी, शिवा, श्वेतशाला, मङ्गला, गन्ध वल्ली, गन्धमाला, सहस्रवीर्या, सुगन्धा, शुभा, शुभ्रा, सितवर्णा महौषधा, वच्छाभावा)

गण्डदूर्वानामानि ।

गण्डदूर्वा तु गण्डाली मत्स्याक्षी शकुलादनी ।
गण्डप्रग्रन्थिपर्णी च मत्स्याख्या शकुलाशनी ॥

अर्थ–गण्डदूर्वा, गण्डाली, तीव्रा, मत्स्याक्षिका, जलस्था, ग्रन्थिपर्णी, वाह्ली, शकुलादनी, (अतितीव्रा, मत्स्याली, ग्रन्थिला, ग्रन्थिपणी, वारुणी, मतिनेत्रा, श्यामग्रन्थि, सूचिपत्रा, श्यामकाण्डा, कलाया, शकुलाक्षी, चित्रा और शकुलाक्षक)

संस्कृतभाषामें	दूर्वा, नीलदूर्वा, श्वेतदूर्वा, गण्डदूर्वा ।
हिन्दीभाषामें	दूब, हरीदूब, सफेददूब, गाडरदूब ।
बंगभाषामें	दूर्वा, नीलदूर्वा, सादादूर्वा, गेंटदूर्वा ।
मराठीभाषामें	दूर्वा, नील श्वेत हरळी, गण्डरदूर्वा, गाटीहरळी ।
गुजरातीभाषामें	ध्रो, लीलीध्रो, धोलीध्रो, गण्डूरध्रो ।
कर्णाटकीभाषामें	हसुगरुके, बिलिपकरके, मीनगचे, होन्नगुदे ।
तैलिंगीभाषामें	दूर्वालु, गरिकेगड्डि, गरिककसुवु, पोन्नगडी ।
तामिलीभाषामें	अरुगम पुल्लु ।
औत्कलीभाषामें	दुबू ।
इंग्रेजीभाषामें	क्रीपिंग् साई नोडन् । Creeping Cynodon
लैटिन्भाषामें	साई नोडन् डेक् टिलन् । Cynodon Dactylon

सामान्यदूर्वागुणा ।

दूर्वाकषायामधुराचशीतापित्ततृषारोचकवान्तिहन्त्री ।
सदाहमूर्च्छाग्रहभूतशान्तिश्लेष्मश्रमध्वंसनतृप्तिदाच। (रा०नि०)

अर्थ–दूब कषेली, मधुर, शीतल, तथा पित्त, तृषा, अरुचि, वान्ति, दाह, मूर्च्छा, ग्रहकी पीडा, भूतबाधा, कफ और श्रमनाशक है तथा तृप्तिदायक है ।

नीलदूर्वागुणा ।

दूर्वातुरक्तपित्तघ्नीकण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥ (रा०व०)

अर्थ–हरीदूब–रक्तपित्त, खुजली और त्वचाके रोगोंको हरे है ।

अन्यच्च ।

नीलदूर्वातुमधुरातिक्ताशीतारुचिप्रदा ।
संजीवनीचतुवर्गारक्तशुद्धिकरीमता ॥
रक्तपित्तातिसारघ्नीज्वरपित्तवमीहरा ।
कफरक्तरुजतृष्णाविसर्पश्चविनाशयेत् ॥
दाहश्चचर्म्मदोषश्चनाशयेदितिकीर्तिता ।

अर्थ-दूर्वादूब-मधुर, कड़वी, शीतल, कफपित्तघ्न, [illegible], रक्तशोधक तथा रक्तपित्त, अतिसार, ज्वर, पित्त, वमन, कफ, रक्तरोग, तृषा, विसर्प, दाह और त्वचाके विकारोंको दूर करै है ।

श्वेतदूर्वागुणाः ।

श्वेतातुदूर्वामधुराकषायाचानुरसमता ।
तिक्तातिशीतलावान्तिविसर्पतृट्कफापहा ॥
पित्तदाहामातिसृतिरक्तपित्तशमना ।
कासघ्नाशमयत्यर्शनैर्धीनिरूपिता ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सफेद दूब-मधुर, कषायरसक, कसैली, कड़वी, शीतल तथा वमन, विसर्प, तृषा, कफ, पित्त, दाह, आमातिसार, रक्तपित्त और खाँसीको दूर करै है ।

गण्डदूर्वागुणाः ।

गण्डदूर्वातुमधुरावातपित्तज्वरापहा ।
शिशिरारक्तदोषघ्नीभ्रमतृष्णाश्रमापहा ॥ (राजनि०)

अर्थ-गाडरदूब-मधुर, शीतल तथा वात, पित्त, ज्वर, रक्तदोष, भ्रम, तृषा और श्रमको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

गण्डदूर्वाहिमालोहद्राविणीग्राहिणीलघु ।
तिक्ताकषायामधुरावातकृत्कटुपाकिनी ॥
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा (भावप्रकाश)

अर्थ-गाडरदूब-शीतल, लोहेको पिघलानेवाली, मलरोकनेवाली, हलकी, कड़वी, कसैली, मधुर, वातकारक, चरपरे पाकवाली तथा दाह, तृषा, कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ, पित्त और ज्वरको दूर करनेवाली है ।

विशेष । नीलदूब [illegible] होती है [illegible] है और [illegible] है । [illegible] और [illegible] है । [illegible] ३ और [illegible] होती और [illegible] है, [illegible] है ।

२ सपेद दूबभी नीलीदूब अर्थात् हरीदूबहीकी जगह कहीं कहीं कोई छत्ता होजाता है वह बहुत सफेद होती है, परन्तु सब आकृति हरीही दूबकेसी होतीहै ।

३ गाडर एकप्रकारकी घास होती है इसके क्षुप दो दो तीन २ फुट ऊँचे होजातेहैं जलाशयके स्थानमें कोसोंतक लगातार इसके खेत होते हैं इसके तृण कासके समान लम्बे होतेहैं, घरोंके छप्पर आदि उसीके तृणोंसे छाये जाते हैं, इसीकी जड खस होतीहै ।

विदारीनामानि ।

विदारीवृष्यकन्दाचक्षीरशुक्लासितास्मृता ।
इक्षुगन्धात्रिपर्णाचशुक्लागजवाजिप्रिया ॥

अर्थ-विदारी, वृष्यकन्दा, क्षीरशुक्ला, सिता, इक्षुगन्धा, त्रिपर्णा, शुक्ला, गजवाजिप्रिया, (क्रोष्ट्री, विदारिका, स्वादुकन्दा, शृगालिका, वृष्यवर्द्धिनी, विडाली, वृष्यवल्लिका, भूकृष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वाजिवल्लभा, गन्धफला, क्षीरवल्ली पयस्विनी, वृक्षवल्ली और भूमिकूष्माण्ड)

क्षीरविदारीनामानि ।

अन्याक्षीरविदारीस्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्ल्यपि ।
क्षीरकन्दाक्षीरवल्लीक्षीरशुक्लापयस्विनी ॥

अर्थ-क्षीरविदारी, इक्षुगन्धा, इक्षुवल्ली, क्षीरकन्दा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, (महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका, ऋष्यगन्धिका, ऋष्यगन्धा, इक्षुवल्लरी, क्षीरकन्द, क्षीरलता, पय कन्दा, पयोलता, पयोविदारिका और दुग्धविदारी ।

संस्कृतभाषामें	विदारी, क्षीरविदारी ।
हिन्दीभाषामें	बिलैयाकन्द बिलाई कन्द, विदारीकन्द, बिलारी, कन्द, दूधविदारी ।
वंगभाषामें	भूइंकुमडा (ड), श्वेतभूइंकुमड, कालभूइंकुमड ।
मराठीभाषामें	भुईकोहळा, वेन्द्रिचा वेल ।
गुजरातीभाषामें	फगवेलानो कन्द, भोकोल्ड ।
कर्णाटकीभाषामें	नेलकुबल ।
तैलिङ्गीभाषामें	नेलगुम्मुड, मट्टमलतिग ।
औत्कलिभाषामें	भूइंकरवारु ।

लैटिनभाषामें आइपोमिया डिजिटेटा । Ipomoeadijitata
प्युरेरियाट्यूबरोसा Puraria tuberosa
बटाटास पेनिक्युलेटा Batataspaniculata

विदारीकन्दगुणा ।

विदारीमधुराशीतागुरु स्निग्धास्रपित्तजित् ।
ज्ञेयाचकफकृत्पुष्टिबल्यावीर्यविवर्धिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्यवर्धक है

अन्यच्च ।

विदारीमधुरास्निग्धावृंहणीस्तन्यशुक्रदा
शीतास्वर्य्यामूत्रलाचजीवनीबलवर्णदा ॥
गुरु पित्तास्रपवनदाहान्हन्तिरसायनी । (भावप्रकाश)

अर्थ-विदारीकन्द, मधुर, स्निग्ध, बृंहण, स्तनोंमें दूध बढानेवाला, वीर्यजनक, शीतल, स्वरको शुद्ध करनेवाला, मूत्रवर्धक, सजीवन, बलकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, रसायन, भारी तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

विदारीवातपित्तघ्नीवृष्याबल्यारसायनी ॥ (रा०व०)

अर्थ-विदारीकन्द-वातपित्तनाशक,वीर्यवर्द्धक,बलकारक और रसायन है।

अन्यच्च ।

विदारीमधुराशीतावृष्यास्निग्धाचपौष्टिका ।
धातुवृद्धिकरीबल्याकफदुग्धप्रदागुरु ॥
रसायनीमूत्रलाचस्वर्य्यारूक्षाचगर्भदा ।
पित्तवातहरास्वादूरक्तरुग्दाहवान्तिहा ॥
ज्ञेयाह्येतेगुणा कन्देपुष्पवृष्यञ्चशीतलम् ।
रसेपाकेचमधुरकफकृद्वातनलंगुरु ॥
पित्तनाशकरञ्चेतदुक्तमुनिवरैः पुरा ।

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, पुष्टिकारक, धातु-

वर्धक, बलकारक, कफजनक, दुग्धवर्धक, भारी, रसायन, मूत्रजनक, स्वरको सुन्दर करनेवाला, रूखा, गर्भदायक, स्वादिष्ठ, तथा पित्त, वात, रुधिरविकार, दाह और वमनको दूर करे है। इसके फूल-वीर्यवर्धक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक, वातवर्धक, भारी और पित्तनाशक हैं।

क्षीरविदारीगुणाः ।

प्रोक्ताक्षीरविदारीतुमधुराम्लाकषायका ।
वृष्याचशुक्रजननीपुष्टिदुग्धप्रदाकटुः ॥
रसायनीचबल्याचशीतामूत्रकफप्रदा ।
स्निग्धावर्ण्यागुरुःस्वर्य्यापित्तरुग्रक्तदोषहा ॥
पित्तशूलहरावातदाहजिन्मूत्रमेहजित् ।
ज्ञेयाकंदगुणाह्यस्या सदृशावल्लिवद्गुणे ॥

अर्थ-दूधविदारी-मधुर, अम्ल, कषेला, वीर्य्यवर्द्धक, शुक्रजनक, पुष्टिकारक, दूधवर्द्धक, चरपरा, रसायन, बलकारक, शीतल, मूत्रजनक, कफकारक, स्निग्ध, वर्णको सुंदरकरनेवाला, भारी, स्वरको उत्तम करनेवाला तथा पित्तरोग, रुधिरविकार, पित्तशूल, वात, दाह और मूत्रमेहको दूर करनेवालीहै, इसके कंदके गुण बेलकी समान जानने।

अन्यच्च ।

कन्द क्षीरविदार्यास्तुस्वादुर्वृष्योरसायन ।
मधुरोबृंहणोहृद्य शीतवीर्योहिमूत्रल ॥

अर्थ-क्षीरविदारीकन्द-स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, मधुर, बृंहण, हृदयको हितकारी, शीतल और मूत्रवर्द्धक है।

अपिच ।

क्षीरकन्दोद्विधाप्रोक्तोविनालम्तुसनालक ।
विनालोरोगहर्त्तास्याद्वय· स्तम्भीसनालक· ॥

अर्थ-क्षीरकन्द-नालरहित और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारकाहै, तहां विनानालका रोगोंको हरनेवालाहै और नालवाला अवस्थाको स्थापन करनेवालाहै।

इन्दीवरी, वरी, ऋष्यमोक्ता, नारायणी, अहेरु, अभीरु, अभीरुपत्री, महापुरुषदन्ता, रङ्गिणी, द्वीपिशत्रु, ऋषगता, काञ्चनकारिणी, मदभञ्जिनी, शतपदी, पीवरी, पीवरा, वृष्या, दिव्या, द्वीपिका, दरकण्टिका, सूक्ष्मपत्रा, सूक्ष्मपत्रिका, सुपत्रा, बहुमूला, शताह्वया, द्वीपशत्रु, स्वादुरसा, शताका, लघुपर्णिका, आत्मगुप्ता, जटा, मूला, शतवीर्य्या, महौषधी, मधुरा, केशिका, शतपत्रिका, विश्वस्या, वैष्णवी, कार्ष्णी, वासुदेवप्रियकरी, दुर्मना, वैरवल्ली, अर्धकण्टका, सुपत्रिका और शतवीर्य्या)। महाशतावरी, शतवीर्य्यामहोदरी, (सहस्रवीर्य्या, सुरसा, महापुरुषदन्तिका, वीरा, तुरङ्गिणी, पटुपत्रिका, ऊर्ध्वकण्ठी, महावीर्य्या, फणिजिह्वा, महाशता, सुवीर्य्या, महती, अर्द्धकण्टिका, शतमूली, अभीरु, बहुपुत्रिका, स्वादुरस्या)।

संस्कृतभाषामें	शतावरी, महाशतावरी।
हिन्दीभाषामें	सतावर, बडीसतावर।
बंगभाषामें	शतमूली।
महाराष्ट्रीभाषामें	लघुशतावरी, शतमूली, आसवल्ली, बडीशतावरी, सहस्रमूली।
गुजरातीभाषामें	शतावरी, एकलकण्टो, शापनाशुवा।
कर्णाटकीभाषामें	किरियआसडी, परदुआसडी।
तैलिङ्गीभाषामें	एदुमट्टिटेङाचल्ल, चल्लगड्डु।
इंग्रेजीभाषामें	एसपैरेगस् रेसिमोसस्। A racemosus
लैटिन्‌भाषामें	एस्पैरेगस्,सतवर वा एडसेंडन्स् Asparogus satarar or A adscendens
फारसीभाषामें	गुर्जदस्ति।
अरबीभाषामें	शकाकुलमिश्री।

शतावरीगुणाः।

शतावरीगुरुःशीतातिक्तास्वाद्वीरसायनी।
मेधाग्निपुष्टिदास्निग्धानेत्र्यागुल्मातिसारजित्॥
शुक्रस्तन्यकरीबल्यावातपित्तास्रशोथजित्॥(भा०प्र०)

अर्थ-सतावर-भारी, शीतल, कडवी, मधुर, रसायन, मेधाकारक, जठराग्निवर्द्धक, पुष्टिदायक, स्निग्ध, नेत्रोंको हितकारी, गुल्मनाशक, अतिसारनिवारक, शुक्रजनक, स्तनोंमें दूधवर्द्धक, बलकारी तथा वात, रक्तपित्त और सूजनको दूर करे है।

अन्यच्च ।

शतावर्य्यांहिमेतिक्तेमधुरेपित्तजित्परे ।
कफवातहरेवृष्येमहाश्रेष्ठेरसायने ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सतावर-शीतल, कडवी, मधुर, पित्तनाशक, कफवातनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और रसायनकर्ममें श्रेष्ठ हैं ।

अन्यच्च ।

शतावरीतुमधुराशीतावृष्याचतिक्तका ।
रसायनीगुरुःस्वादु स्निग्धादुग्धप्रदामता ॥
अग्निदीप्तिकरीवल्यामेध्याशुक्रकरीमता ।
चक्षुष्यापुष्टिकृत्पित्तकफवातक्षयापहा ॥
रक्तदोषगुल्महन्त्रीशोथातीसारनाशिनी ।
तैलेघृतेप्रयोगार्थप्रशस्तामुनिभिर्मता ॥ (नि० र०)

अर्थ-शतावर-मधुर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कडवी, रसायन, भारी, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, दुग्धप्रद, अग्निप्रदीपक, बलकारक, मेधाजनक, शुक्रजनक, नेत्राको हितकारी, पुष्टिकारक तथा पित्त, कफ, वात क्षय, रुधिरविकार, गुल्म, सूजन और अतिसारको हरनेवाली है ।

महाशतावरीगुणा ।

महाशतावरीहृद्यामेध्याचाग्निप्रदीपनी ।
शुक्रलाशीतवीर्य्याचवल्यावृष्यारसायनी ॥
अर्शस्सग्रहणीरोगनेत्ररोगविनाशिनी ।
गुणाढ्यस्यास्तुविज्ञेया पूर्वोया सदृशागुणे ॥ (नि०र०)

अर्थ-बडीशतावर-हृदयको हितकारी, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, शीतवीर्य्यबलकारक, वीर्य्यवर्धक, रसायन तथा बवासीर, सग्रहणी और नेत्ररोगको हरेहै । शेष गुण उसके शतावरकी समान जानने ।

अन्यच्च ।

महतीकफवातघ्नीतिक्ताश्रेष्ठारसायने ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बडीशतावर-कफ वातनाशक, कडवी और रसायनकार्य्यमें श्रेष्ठ है ।

द्विविधशतावरीगुणाः ।

शतावरीद्वयंवृष्यमधुरंपित्तजिद्धिमम् ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारकी शतावर-वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, पित्तनाशक और शीतल है ।

शतावर्यङ्कुरगुणाः ।

शतावर्य्यंकुरस्तुतिक्तोवृष्योलघु स्मृतः ।
हृद्यस्त्रिदोषपित्तघ्नोवातरक्तार्शसांहरः ॥
क्षयसंग्रहणीरोगनाशनस्तिक्तकोलघुः ॥ (नि०र०)

अर्थ-शतावरके अंकुर-कडवे, वीर्य्यवर्द्धक, हलके, हृदयको हितकारी तथा त्रिदोष, पित्त, वातरक्त, बवासीर, क्षय और संग्रहणीरोगका नाश करे हैं ।

विवरण । शतावरकी वेल जंगलोंमें होती है, वेलका रंग सफेदी लिये होता है, पत्ते अत्यन्त छोटे २ सोयेके पत्तोंके समान होते हैं, उसकी वेलको कोई २ वैद्यलोग एकलकण्ठी कहते हैं, इसमें कांटे बहुत होतेहैं, फूल सफेद छोटे होतेहैं, बडी शतावरीभी इसीप्रकारकी होतीहै, इससे कुछ अधिक बडी होती है, और इसकी अनन्त मूल होती है और शतावर और इसमें कुछ भेद नहीं होता । शतावरी वर्षाके आरम्भमें हरी होतीहै और फूल आतेहैं, एक वृक्षके नीचे सैकडों जड होतीहैं उसेही शतावरी कहते हैं ।

अश्वगन्धानामानि ।

अश्वगन्धावाजिगन्धाकट्ठुकाश्वावरोहकः ।
वाराहकर्णीतुरगीवल्यावाजिकरीहया ॥

अर्थ-अश्वगन्धा, वाजिगन्धा, कट्ठुका, अश्वावरोहक, वाराहकर्णी, तुरगी, वल्या, वाजिकरी, हया, (अश्वकान्तिका, काम्बुका, अश्वारोहा, अश्वगन्धिपत्रा, तुरगगन्धा, कम्बुका, अश्वावरोहिका, वरजा, वाजिनी, अवरोहिका, वराहकर्णी, पुष्टिदा, बल्दा, पुष्टिपीवरा, पलाशपर्णी, वातघ्नी, श्यामला, कामरूपिणी, काला, प्रियकरी, गन्धपत्री, हयप्रिया, वाराहपत्री, वन्या, वस्दा, तुरंगगन्धिनी, वराहकर्णी, पुण्या, कुष्ठगन्धा) ।

संस्कृतभाषामें अश्वगन्धा ।
हिन्दीभाषामें असगन्ध ।

वंगभाषामें	अश्वगन्धा ।
मराठीभाषामें	आसकंद, असन्ध ।
गुजरातीभाषामें	आखसंध ।
कर्णाटकीभाषामें	आसाडु, अङ्गुर ।
तैलङ्गीभाषामें	पिल्लिआगा ।
इंग्रेजी भाषामें	विंटरचेरी । Winter cherry
लैटिन् भाषामें	फाइसेलिस् सोम्निफेरा.। Physalis Somnifero
	वियानीआ सोम्निफेरा । Withania Somnifea
फारसीभाषामें	मेंहेमन् बररी ।

अस्याः गुणाः ।

अश्वगन्धानिलश्लेष्मशोफश्वित्रक्षयापहा ।
बल्यारसायनीतिक्ताकषायोष्णातिशुक्रला ॥(भा०प्र०)

अर्थ–असगन्ध–वात, कफ, सूजन, श्विनकुष्ठ और कफरोगनाशक है, तथा बलकारक, रसायन, कडवी, कषेली, गरम और अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक है।

अन्यच्च ।

अश्वगन्धाकटूष्णास्यात्तिक्ताचमदगन्धिका ।
बल्यावातहराहन्तिकासश्वासक्षयव्रणान् ॥ (रा० नि०)

अर्थ–असगन्ध–चरपरी, गरम, कडवी, मदगन्धियुक्त, बलकारक, वातनाशक तथा खाँसी, श्वास, क्षय और व्रण (घाव) दूर करे है ।

अन्यच्च ।

अश्वगन्धोजराव्याधिनाशकस्तुवरःस्मृतः ।
धातुवृद्धिकरः किञ्चित्कटुकोबलदः स्मृतः ॥
कान्तिप्रदश्चसप्रोक्तस्तथाचमधुगन्धिकः ।
शरीरपुष्टिकारीचवृष्यश्चोष्णोलघुःस्मृतः ॥
वातक्षयश्वासकासौव्रणश्वेतञ्चकुष्टकम् ।
कविषकृमीञ्छोथतथाचैवक्षतक्षयम् ॥
कण्डूनाशयतीत्येवपूर्वाचार्य्यैर्निरूपितम् (नि० र०)

अर्थ–असगन्ध–रसायन अर्थात् जराव्याधिनाशक, कषेली, धातुवर्द्धक,

किञ्चित् चरपरी, बलवर्द्धक, कान्तिजनक, मधुगन्धियुक्त, शरीरको पुष्टिकरनेवाली, वीर्यवर्द्धक, गरम, हलकी तथा श्वास, खांसी, घाव, श्वेतकुष्ठ, कफ विष, कृमि, सूजन, क्षतक्षय और कण्डू (खुजली) को दूर करे है।

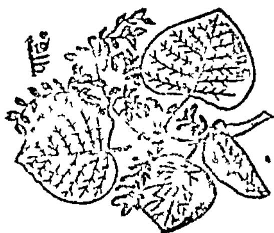
अपिच।

अश्वगन्धापत्रलेपोग्रन्थिगण्डापचीन्हरेत्॥ (शो० नि०)

अर्थ–असगन्धके पत्तोंका लेप–ग्रन्थि, गण्डमाला और अपचीको दूर करनेवाला है।

विवरण–असगन्धका क्षुप होता है। फल–पनसोखाकी समान गोल होते हैं। इस क्षुपके नीचे छोटी मूलीकी समान कंद होताहै, उस कंदको निकाल कर सुखा लेते हैं, उसको असगन्ध कहते हैं।

पाठानामानि।



पाठाम्बष्ठापापचेलीकुचेलाछिन्नवेधिका॥

अर्थ–पाठा, अम्बष्ठा, पापचेली, कुचेला, छिन्नवेधिका (अम्बष्ठिका, प्राचीना, पापचेलिका, यूथिका, स्थापनी, श्रेयसी विद्धकर्णिका, एकाष्ठीला, कुचेली, दीपनी, वनतिक्तिका, तिक्तपुष्पा, बृहत्तिक्ता, शिशिरा, वृकी, मालती, वरा, देवी, वृत्तपर्णी, तिक्ता, विद्धकर्णी, रसा, अविद्धकर्णी, पाटिरा, अविद्धकर्णा, पाटिका, सुस्थिरा, मलानिनी, वत्सादनी, मालवी, त्रिशिरा, त्रिवृत्, वृत्तपर्णा, रक्तघ्नी, विषदन्त्री, महौजसी, हरिप्रिया, दीपनी, वीरा, वल्लिरा)

संस्कृतभाषामें	पाठा।
हिन्दीभाषामें	पाढ़।
बंगभाषामें	आकनादी, निमुक, मांरांदि।

मराठीभाषामें	पहाडमूळ ।
गुजरातीभाषामें	कालीपाट, करेटीमूळ ।
कर्णाटकीभाषामें	पाठा ।
तैलिङ्गीभाषामें	पाढचेट्टु ।
औत्कलिभाषामें	पाकन्न विन्धि ।
इंग्रेजीभाषामें	परेराउट ।
लैटिन्भाषामें	सिसाम्पिलोस् परिरा । Cissampelos pareiro

अस्या गुणाः ।

पाठोष्णाकटुकातिक्तावातश्लेष्महरीलघु ।
हन्तिशूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुज ॥
दाहकण्डूविषश्वासकृमिगुल्मोदरव्रणान् । (भा०प्र०)

अर्थ–पाढ–गरम, चरपरा, कडवा, वातघ्न, कफनाशक, हलका, तथा शूल, ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार, हृदयरोग, दाह, कण्डू, विष, श्वास, कृमि, गुल्म, उदररोग, और व्रणको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पाठातिक्ताकटूष्णाचभग्नसन्धानकारका ।
तीक्ष्णालघ्वीपित्तदाहशूलातीसारनाशिनी ॥
वातपित्तज्वरच्छर्दिविषाजीर्णत्रिदोषकान् ।
हृद्रोगरक्तकुष्ठातिकण्डूश्वासकृमीञ्जयेत् ॥
गुल्मोदरव्रणकफवातनाशकरीमता । (नि० रा०)

अर्थ–पाढ–कडवा, चरपरा, गरम, भग्नसन्धानकारक, (टूटे हुये स्थानको जोडनेवाला) तीक्ष्ण, हलका तथा पित्त, दाह, शूल, अतिसार, वातपित्त, ज्वर वमन, विष, अजीर्ण, त्रिदोष, हृदयरोग, रक्तकुष्ठ, कण्डू, श्वास, कृमी, गुल्म, उदरगेग, व्रण और कफवातको हरनेवाला है ।

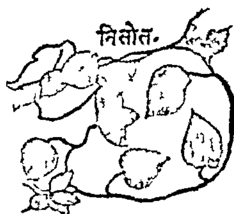
लघुपाठागुणाः ।

लघुपाठातिक्तरसाविषघ्नीकुष्ठकण्डनुत ।
छर्दिहृद्रोगगरजित्त्रिदोषशमनीमता ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–लघुपाढ–कडवा तथा विष, कोढ, खुजली, वमन, हृदयरोग और त्रिदोपनाशक है ।

विवरण। पाढकी वेल होतीहै, पत्ते कुछ गोल होते हैं, उसके कोनोंमेंसे श्वेत और सूक्ष्म मोरकी समान फूल निकलता है। फलमकोयकी समान लालरंगके होते हैं और पाढकी जडको रघुपाठा कहते हैं तथा पाढकी भी वेल होतीहै, पत्ते-फजीकी समान होते हैं, फजीके पत्ते ऊपर नीले और नीचे सफेद होते हैं, किन्तु पाढके ऐसे नहीं होते, आकार गोलपत्रोंकी समान और कुछेक पिलाई लिये होता है, फूल-सूक्ष्म और सफेद होते हैं, फल पीलुकी सदृश होते हैं।

त्रिवृन्नामानि।



त्रिवृत्सुवहात्रिपुटात्रिभण्डीरेचनीसरा॥

अर्थ-त्रिवृत्-सुवहा, त्रिपुटा, त्रिभण्डी, रेचनी, सरा (सर्वानुभूति, त्रिवृता, सरला, सरणा, सहा, रोचनी, मालविका, श्यामा, मसूरी, अर्द्धचन्द्रा, विदला, सुषेणी, कालिन्दिका, कालमेषी, काली, त्रिवेला त्रिवृत्तिका, सारा)

संस्कृतभाषामें	त्रिवृत्।
हिन्दीभाषामें	निसोत, पनिलर।
वंगभाषामें	तेउडी।
मराठीभाषामें	निशोत्तर, तेंड।
गुजरातीभाषामें	नसोतर।
कर्णाटकीभाषामें	तिगडे।
तैलिङ्गीभाषामें	आलतेगडा।
फारसीभाषामें	निसद।
इंग्रेजीभाषामें	टरबीथरूट Turbith root

लेटिन्भाषामें आईपोमिया टरपीयम् । Ipomoeaturpetnum
फारसीभाषामें निसोथ ।
अरबीभाषामें तुरबुद ।

कृष्णत्रिवृन्नामानि ।

श्यामात्रिवृन्मालविकामसूरविदलाचसा ।
कालार्द्धचन्द्रपालदीसुषेणीकालमेषिका ॥

अर्थ–श्यामा–त्रिवृत्, मालविका, मसूरविदला, काला, अर्द्धचन्द्रा, पालदी, सुषेणी, कालमेषिका (पालिन्धी, कालमेशिका)

हिन्दीभाषामें कालानिसोथ, श्यामनिलर ।
बंगभाषामें कालतेउडी ।
कर्णाटकीभाषामें केप्पनेयतिगडे ।

श्वेतत्रिवृन्नामानि ।

शुक्लभण्डीत्रिभण्डीस्यात्काकाक्षीसरलात्रिवृत ।
सर्वानुभूतिस्त्रिपुटात्र्यस्राकोटरवाहिनी ॥

अर्थ–शुक्लभण्डी, त्रिभण्डी, काकाक्षी, सरला, त्रिवृत्, सर्वानुभूति, त्रिपुटा, त्र्यस्रा, कोटरवाहिनी (व्याघ्रपादी, त्रिसृत्रा, घृकाक्षी, चोरनासिका, सुवहा, निशोत्रा, रेचनी, सर्वानुभूति और त्रिवृता)

हिन्दीभाषामें सफेदनिसोत ।
बंगभाषाम श्वेततेउडी ।
मराठीभाषामें पांढऱ्या फुलाचा निशोत्तर ।
गुजरातीभाषामें धोलाफुलनु नसोतर ।

रक्तत्रिवृन्नामानि ।

रक्तपुष्पारक्तमूलाकलिङ्गापरिपाकिनी ।
त्रिवृतानि सृतारुणासन्नमध्याचसास्मृता ॥

अर्थ–रक्तपुष्पा, रक्तमूला, कलिंगा, परिपाकिनी, त्रिवृता, निसृता, अरुणा, सन्नमध्या, (व्याघ्रादनी, कुटरुणा, कालिन्दी, त्रिपुरा, ताम्रपुष्पिका, कुलवर्णा, मसरी, अमृता, काकनासिका, और रक्तत्रिवृत् ।

सामान्यत्रिवृद्गुणाः ।

त्रिवृत्तिक्ताकटूष्णाचक्रिमिश्लेष्मोदरार्त्तिजित ।

कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्तिप्रशस्ताचविरेचनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-निसोत-कडवा, चरपरा, गरम, तथा क्रिमि, कफ, उदररोग, कुष्ठ कण्डू और व्रणको दूर करेहै, इसका जुलाब प्रशसायोग्यहै ।

अन्यच्च ।

त्रिवृत्स्यान्मधुरारूक्षातीक्ष्णवातकरामता ।

तुवरारसेतिक्तकटुपाकेचरेचकम् ॥

हितकृन्मलस्तम्भञ्चग्रहणीञ्चकफोदरम् ।

शोथपाण्डुकृमीन्प्लीहांज्वरपित्तकफतथा ॥

वातरक्तमुदावर्त्तंहृद्रोगञ्चविनाशयेत । (ग०नि०)

अर्थ-निसोत-मधुर, रूखा, तीक्ष्ण, वातजनक, कषैला, तिक्तरसान्वित, कटुपाकी, इसका रेचक (जुलाब), हितकारी तथा मलस्तम्भ, ग्रहणी, कफोदर, सूजन, पाण्डुरोग, कृमि, प्लीहा, ज्वर, पित्त, कफ, वातरक्त, उदावर्त और हृदयरोगको हरनेवाला है ।

श्यामत्रिवृद्गुणा ।

श्यामात्रिवृत्ततोहीनगुणातीव्रविरेचनी ।

मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ॥

अर्थ-श्यामपनिलर (काला निसोथ)-सफेद निसोथकी अपेक्षा हीन-गुणवाला है, किन्तु विरेचन गुण इसमें तीव्रहै, तथा मूर्च्छा दाह, मद, भ्रान्ति और कण्ठको उत्कर्षण करनेवाला है ।

श्वेतत्रिवृद्गुणा ।

श्वेतात्रिवृद्रेचनीस्यात्स्वादुरुष्णासमीरहृत ।

रूक्षापित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा (भा० प्र०)

अर्थ-सफेद निसोत-रेचक, स्वादिष्ट, गरम, वातनाशक, रूखा, तथा पित्तज्वर, कफ, पित्त, सूजन और उदररोगको दूर करेहै ।

रक्तत्रिवृद्गुणा ।

अरुणात्रिवृतास्वादु कषायामृदुरेचनी ।

रूक्षाचकटुकाचैवपाकेतिक्ताकफापहा ॥ (राजवल्लभ०)

अर्थ-लाल निसोथ-मधुर, कषैला, मृदुरेची, रूखा, चरपरा, रसमें कड़वा और कफनाशक है ।

अन्यच्च।

रक्तात्रिवृत्कटुस्तिक्ताकटूष्णारेचनीचसा।
ग्रहणीमलविष्टम्भहारिणीहितकारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-लालनिसोथ-कडवा, चरपरा, गरम, रेचक तथा सग्रहणी, एव मलविष्टम्भहारक और हितकारक है।

विवरण। सफेद निशोथकी वेल जगलमें होतीहै, सफेद फूल आतेहै, गोल २ फल आतेहै, उनमें चार २ वीज होतेहै, पत्ते-नोकदार गोल होतेहै, इसकी वेलकी लकडीमें तीन धार होतीहै, निसोथ तीन प्रकारका होताहै, परन्तु सफेद सवसे उत्तम है।

२ काले निसोथकीभी लता होतीहै, फूल कालापनलिये वैंजनीसे होतेहैं, पत्ते गोल २ नोंकदार उसीप्रकार होतेहैं, परन्तु सफेदसे कुछ छोटे और फलभी कुछ छोटे होतेहै और सव आकार इकसार होताहै, परन्तु वैद्योंने सफेदकी अधिक प्रशसा करीहै।

मात्रा सफेद निसोथकी २ मासेसे लेकर ४॥ मासे पर्य्यन्त है। मात्रा काले निशोथकी १ मासेसे लेकर ३ मासेपर्य्यन्त है। मात्रा लाल निसोथकी ३ मासेसे ६ मासेतककी है

दन्तीनामानि।

उदुम्बरपर्णीदन्तीप्रत्यक्पर्णीचदन्तिका।
श्वेतघण्टानिकुम्भीचनि शल्यानिष्कुम्भस्तथा ॥

अर्थ-उदुम्बरपर्णी, दन्ती, प्रत्यक्पर्णी, दन्तिका, श्वेतघण्टा, निकुम्भी, नि.शल्या, निष्कुम्भ (निकुम्भ, शीघ्रा, नागस्फोता, दन्तिनी, उपचित्रा, भद्रा, रूक्षा, रेचनी, अनुकूला, रक्तदन्ती, विशल्या, मधुपुष्पा, एरण्डफला, तरुणी, एरण्डपत्रिका, एरण्डपत्री, अणुखेती, विशोधनी, कुम्भी, उदुम्बरदला, विशल्या, उदुम्बरपर्णा, शीघ्रा, श्येनघण्टा, घुणप्रिया, वराङ्गी, निकुम्भ और मकूलक यह नाम छोटी दन्तीके है) (द्रवन्ती, सावगी, चित्रा, प्रत्यक्पर्णा, अर्कपर्णा, चित्रोपाचित्रा, न्यग्रोधी, प्रत्यङ्श्रेणी, आखुकर्णा)

संस्कृतभाषामें	दन्ती।
हिन्दीभाषामें	दन्ती, तिरिफल।
वंगभाषामें	दन्तीगाछ।
मराठीभाषामें	ल्युदन्ती।

गुजरातीभाषामें	दातरडले नेपालना मूल ।
कर्णाटकीभाषामें	दती ।
तैलिङ्गीभाषामें	दन्तीचेट्टु, कोण्ड अमदुन् ।
इंग्रेजीभाषामें	क्रोटन् सीडस् । Crotenseeds
लैटिन् भाषामें	क्रोटनटिग्लियम । Crotentiglium
फारसीभाषामें	दद ।
अरबीभाषामें	हब्बुल मुलुक ।

दन्तीगुणा ।

दन्तीवह्निसमापाकेशोफदद्रुविनाशिनी ।
कण्डूपामाहराकुष्ठध्वंसिनीक्रिमिहृत्सरा ॥ (ग० नि०)

अर्थ-दन्ती-पाकमें अग्निकी समान है, दस्तावर है तथा शोफ, बवासीर, कण्डू, पामा, कोढ और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

दन्तीकटूष्णाशूलामत्वग्दोषशमनीचसा ।
अर्शोव्रणाश्मरीशल्यशोधनीदीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

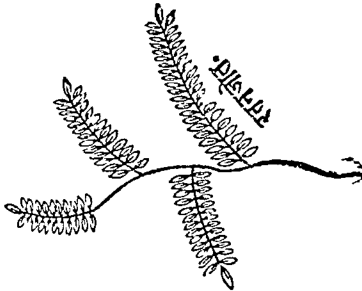
अर्थ-दन्ती-चरपरी, गरम, शोधक, दीपन, तथा शूल, आम, त्वचाके दोष, बवासीर, घाव, पथरी और शल्यनिवारक है ।

अपिच ।

दन्तीद्वयसरपाकेरसेचकटुदीपनम् ।
गुदांकुराश्मशूलार्श कण्डूकुष्ठविदाहनुत् ॥
तीक्ष्णोष्णहन्तिपित्तास्रकफशोफोदरक्रमीन् ।
क्षुद्रदन्तीफलंतुस्यान्मधुररसपाकयो ॥
शीतलसृष्टविण्मूत्रगरशोथकफापहम् । (भा०प्र०)

अर्थ-दोनाप्रकारकी दन्ती-दस्तावर, रस और पाकमें चरपरी जठराग्निको दीपन करनेवाली, तीक्ष्ण, गरम, तथा गुदांकुर, पथरी, शूल, बवासीर, कण्डू, कोढ, दाह, पित्तविकार, कफ, सूजन, उदररोग और कृमि रोगका नाश करे है । छोटी दन्तीका फल-रस और पाकमें मधुर, शीतल, मल तथा मूत्रको निकालनेवाला, विष, शोथ और कफनाशक है ।

बृहद्दन्तीनामानि।



वृहद्दन्ती गुच्छफला दुग्धगर्भा विरेचनी।
विषभद्राभद्रदन्तीज्योतिष्काचजयावहा॥

अर्थ–वृहद्दन्ती, गुच्छफला, दुग्धगर्भा, विरेचनी, विषभद्रा, भद्रदन्ती, ज्योतिष्का, जयावहा।

संस्कृतभाषामें	वृहद्दन्ती।
हिन्दीभाषामें	मुगलाई अण्ड।
मराठीभाषामें	थोरदन्ती।
गुजरातीभाषामें	रतनजोत।
कर्णाटकीभाषामें	एरण्डनेद्दन्ती।
इंग्रेजीभाषामें	दिफिझिकनट्। The physicient
लेटिन्भाषामें	करकस मल्टीफीडस। Curcas Multifidus जेट्रोफापरगन्स्, Jatrophapurgans
फारसीभाषामें	शकारदुजुवा।
अरबीभाषामें	अनुखरसा।

वृहद्दन्तीगुणाः।

वृहद्दन्तीकटूष्णाचजठरामयशोधिनी।
अर्शोव्रणाश्मरीशूलत्वग्दोषशमनीचसा॥

अर्थ–वृहद्दन्ती–चरपरी, गरम, जठरामयशोधक तथा बवासीर, घाव, पथरी, शूल और त्वचाके दोषोंको दूर करे है।

बृहद्दन्तीबीजगुणाः।

तिक्तैरण्डस्यबीजन्तुरसपाकेगुरुमधु।
स्निग्धंरेचकवृष्यबृंहणञ्चबलप्रदम्॥
कफपित्तप्रदंचैववामकंवातदाहकृत्।
नविषंविषमित्याहुर्जेपालोविषमुच्यते॥
शोधितश्चविरेकेपुचमत्कृतिकरंपरं।

अर्थ-बृहद्दन्तीका बीज-रस और पाकमें भारी, मधुर, स्निग्ध, रेचक, वीर्यवर्द्धक, बृंहण, बलदायक, कफपित्तकारक, वमनजनक, वात और दाह कारकहै। जो विषहै वह विष नहीं है, परन्तु यह विष है अर्थात् जमालगोटा विषहै। यह शोधा हुआ विरेचनके विषय शरीरमें चमत्कार करता है।

भद्रदन्तीनामानि।

भद्रदन्तीकेशरुहाभिषग्भद्राजयावहा॥

अर्थ-भद्रदन्ती, केशरुहा, भिषग्भद्रा, जयावहा (आरसकी, बड़गढी, जयाला, भद्रदन्तिका) तस्या गुणा।

भद्रदन्तीकटूष्णाचरेचनीकृमिहापरा।
शूलकुष्ठामदोषघ्नीतुदामयविनाशिनी॥

अर्थ-भद्रदन्ती-चरपरी, गरम, दस्तावर, कृमिनाशक तथा शूल, कोढ, आमदोष और उदररोगनाशक है।

जयपालनामानि।



जयपालश्चजैपाल सारकस्तिन्तिडीफलम् ॥

अर्थ–जयपाल, जैपाल, सारक, तिन्तिडीफल, (दन्तीबीज, मलद्रावि, निकुम्भाख्यबीज, रेचक, बीजरेचन, कुम्भीबीज, कुम्भिनीबीज, घण्टाबीज, घण्टिनीबीज, शोधनीबीज, चक्रदन्तीबीज)

संस्कृतभाषामें	जयपाल ।
हिंदीभाषामें	जमालगोटा ।
बंगभाषामें	जैपाल ।
मराठीभाषामें	जेपाळ ।
गुजरातीभाषामें	नेपालो ।
कर्णाटकीभाषामें	जेपाल ।
इंग्रेजीभाषामें	पार्जिगक्रोटन । Parging Broton
लैटिन् भाषामें	औल्यिम, कोटोनिस ।
अरबीभाषामें	हबुससलातीन ।
फारसीभाषाम	तुखमेबेंद जीरखताई ।

अस्य गुणा ।

जयपाल कटुरुष्ण·क्रुमिहारीविरेचक ।
दीपन कफवातघ्नोजठरामयशोधन ॥ (रा० नि०)

अर्थ–जमालगोटा–चरपरा, गरम, कृमिनाशक, रेचक, दीपन, कफवात नाशक और उदरामयशोधक है ।

अन्यच्च ।

जयपालोगुरु स्निग्धोरेचीपित्तकफापह ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–जमालगोटा–भारी, स्निग्ध, दस्तावर और पित्त, कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

सारककफनुत्क्लेदितीक्ष्णमुष्णविरेचनम ॥ (रा०नि०)

अर्थ–जमालगोटा–कफनाशक, क्लेदकारक, तीक्ष्ण, गरम और दस्त लानेवाला है ।

अस्य बीजशोधनविधि ।

निस्तुपजयपालञ्चद्विधाकृत्वाविचक्षण ।
एतद्बीजस्यमध्येतुपत्रवत्परिवर्ज्जयेत् ॥

अष्टमांशेनचूर्णेनटङ्कणस्यतुमेलयेत ।
केशयन्त्रेणतद्भाव्यपाच्यंदुग्धेनसंप्लुतम् ॥
त्रिवारशुद्धिमायातिजयपालोमृतोपमम् । (इतिरस०)

अर्थ-बुद्धिमान् वैद्य वक्कल रहित जमालगोटेके दो भाग करके इसके बीजके मध्यमें पत्तेकी समान जो वस्तु है उसको निकाल डाले और जमालगोटेकी दालमें अष्टमांश सुहागेका चूर्ण करके मिलावे । केशयन्त्रके द्वारा भावना दे, फिर दूधमें भिजोकर मिलावे, इसप्रकार तीन बार करनेसे जमालगोटा अमृतकी सदृश होजाता है ।

अन्यच्च ।

स्विन्नगोमयतोयेनाद्दुग्धेवाजयपालकम् ।
खर्परीमृदुभृष्टन्नि स्नेहशुद्धिमृच्छति ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-जमालगोटेको गोबरके जलमें तथा दूधमें भिजोकर फिर कोमल खीपडेमें भूनलेवे जब उसमें चिकनाई न रहे तब शुद्ध होजाता है ।

अथ बीजतैलगुणाः ।

तैलनिकुम्भबीजोत्थमत्युग्रंरेचनंपरम् ।
आनाहमुदरंहन्तिसन्यासञ्चशिरोगदम् ॥
धनुस्तम्भज्वरोन्मादगदमेकाङ्गसंज्ञकम् ।
आमवातञ्चशोथञ्चमर्दनात्कासनाशनम् (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-जमालगोटेका तेल-अत्युग्र रेचक तथा आनाह (अफरा) उदररोग, सन्यास, शिरोरोग, धनुस्तम्भ, ज्वर, उन्माद, एकाङ्गनाशक रोग, आमवात और शोथको मर्दन करनेसे तथा खाँसीको दूरकरे है ।

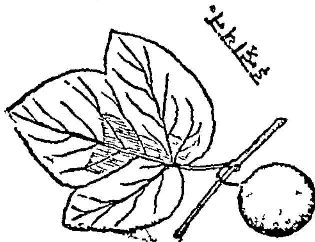
विवरण-दन्तीका क्षुप होताहै, पत्ते-गूलरकी समान होते हैं, फूल मजूरकी समान होता है इसका फल जमालगोटा है । बडी दन्तीका बडा वृक्ष होता है, फल-अण्डकी समान होते हैं, उसमेंसे अंडीकी समान बीज निकलते हैं, उन बीजोंका जुल्लाब होता है, तथा इसके दूधकाभी भूदरके सुपारी समान जुल्लाब दियाजाता है ।

इन्द्रवारुण्यानामानि ।

इन्द्रवारुणिकाचित्रानिशालागजचिर्भिटा ।
मृगेर्वारु शुक्रसज्ञा चित्रफलेन्द्रवारुणी ॥

अर्थ–इन्द्रवारुणिका, चित्रा विशाला, गजचिर्भिटा, मृगेर्वारु, क्षुद्रसहा, चित्रफला, इन्द्रवारुणी, (ऐन्द्री, गवाक्षी, भरा, पिटङ्कोकी, मृगादनी, इन्द्रा, अरुणा, गवादनी, इन्द्रचिर्भिटी, सूर्य्या, विषघ्नी, गणकर्णिका, माता, सुकर्णिका, तारका, वृषभाक्षी, पीतपुष्पा, इन्द्रवल्लरी, हेमपुष्पा, क्षुद्रफला, वारुणी, बालकप्रिया, रक्तेर्वारु, विषलता, शक्रवल्ली, विषापहा, अमृता, विषवल्ली, चित्रवल्ली, बहुफला, कपिलाक्षी, मृगेक्षणा मृगेक्षणा)

महेन्द्रवारुणीनामानि ।



महेन्द्रवारुणीकायाविशालाचमहाफला ।
आत्मरक्षाचित्रफलातुवसीत्रपुसीचसा ॥

अर्थ–महेन्द्रवारुणी, काया, विशाला, महाफला, आत्मरक्षा, चित्रफला, तुवसी, त्रपुसी (रम्या, महेन्द्री, त्रपुसा, चित्रवल्ली, दीर्घवल्ली, वृहत्फला, वृहद्वारुणी, सौम्या, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगेर्वारु, मृगादिनी, हस्तिदन्ती, कटुरसा, कपिलाक्षी, कुम्भसी, उरुप्रिया, चित्रला, देवी और गजचिर्भिटा)

संस्कृतभाषामें	इन्द्रवारुणी, महेन्द्रवारुणी ।
हिन्दीभाषामें	इन्द्रायण, फरफेंदु, बडीइन्द्रायण, बडीइन्द्रफला ।
बंगभाषामें	राखालशशा, राखालताड़ु, कुदरुकी, बडमाकाल ।
मराठीभाषामें	लघुइंद्रवण, कांवडळ, थोरकावँडळ ।
गुजरातीभाषामें	इंदरवाणीयुँ, गावमुकणु ।
रा०	तसतुम्बो, गडतुम्बो ।
दे०	घोडइन्द्रावण, घुलेइन्द्रावण ।
कर्णाटकीभाषामें	हामेथे, हिरियाहामेथे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पतिपुच्छा ।

इंग्रेजीभाषामें कोलोसिंथ। Colocynth

लेटिन्भाषामें सिट्रुल्स् कोलोसिंथिस। Citrullus Colocynthis

क्युक्युमिस स्युडोकोलो सिंथिस्। Cucumis pseudocolocynthis

फारसीभाषामें खुर्पजातलख।

अरबीभाषामें हजल।

इन्द्रवारुणीगुणाः।

इन्द्रवारुणिकातिक्ताकटुःशीताचरेचनी।
गुल्मपित्तोदरश्लेष्मक्रिमिकुष्ठज्वरापहा॥ (रा०नि०)

अर्थ-इन्द्रायण-कडवी, चरपरी, शीतल, रेचक तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, क्रिमि, कोढ और ज्वरको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

लघ्वीन्द्रवारुणीप्रोक्तापाकेकट्वीचतिक्तका।
शीतासरोष्णवीर्य्याचलघ्वीचैनप्रकीर्तिता॥
गुल्मपित्तोदरकफकृमिकुष्ठज्वरव्रणान्।
श्वासकासग्रन्थिमेहमूढगर्भककामला॥
प्लीहानशुष्कगर्भञ्चगलगण्डविषंतथा।
आनाहवातमपचीआमंदुष्टोदरंतथा॥
सर्वोदराणिपाण्डुञ्चनाशयेदितिकीर्त्तिता। (नि० र०)

अर्थ-इन्द्रायण-पचनेमें चरपरी, कडवी, शीतल, सारक, उष्णवीर्य हलकी तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, कृमि, कुष्ठ, ज्वर, व्रण, श्वास, खाँसी, ग्रन्थि, प्रमेह, मूढगर्भ, कामला, प्लीहा, शुष्कगर्भ, गलगण्ड, विष, आनाह, वात, अपची, आम, दुष्टोदर, सर्वप्रकारके उदररोग और पाण्डुरोगका नाश करनेवाली है।

बड़ी इन्द्रायणगुणाः।

अन्येन्द्रवारुणीकफरुजअर्शोपहतथा।
नाशयेदितिसम्प्रोक्तागुणाश्चान्येतुपूर्ववत्॥
रसेवीर्येचपाकेचाधिकाचोक्तागुणैरियम्। (नि० र०)

अर्थ-बड़ी इन्द्रायण-कफरोग और बवासीर रोगको दूर करनेवाली है,

रस, वीर्य्य और विपाकमें इन्द्रायणकी अपेक्षा यह अधिक गुणवाली है, शेष गुण इन्द्रायणकी समान जानने।

विवरण। इसकी बेल अधिकतर खारी भूमिमें उत्पन्न होतीहै, फल-सूक्ष्म कांटेयुक्त लालरंगका होताहै, फूल-पीलेरंगका होताहै। पत्ते लम्बे बीचबीचमें कटेहुवे होतेहैं, दूसरी रेतली भूमिमें होतीहै, उसका फल-पीलेरंगका होताहै। इन दोनों जातिकी इन्द्रायणके फल तथा मूलके द्वारा जुल्लाव दियाजाताहै।

स्वर्णपत्रीनामानि।

कल्याणीहेमपत्रीचरेचनीस्वर्णपत्रिका।

अर्थ-कल्याणी, हेमपत्री, रेचनी, स्वर्णपत्रिका, (स्वर्णपत्री, स्वर्णमुखी, हेमपत्रिका, रेचिका, स्वर्णनी और मलहारिणी)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णपत्री।
हिन्दीभाषामें	सनाय।
मराठीभाषामें	सोनामुखी।
बंगभाषामें	सोनामुखी, सोनापाता।
इंग्रेजीभाषामें	टिनेवेलीसिना।
लेटिन्भाषामें	सिनाइंडिका।

अस्या गुणाः।

विद्वन्धवह्निमान्द्यञ्चयकृदाद्युदरंतथा।
प्लीहोदरबद्धगुदमजीर्णंविषमज्वरम्॥
कामलापाण्डुरोगञ्चकल्याणीक्षपयेद्ध्रुवम्। (आ० स०)

अर्थ-सनाय-मलबद्ध, मन्दाग्नि, यकृत्, उदररोग, प्लीहोदर, बद्धगुद, अजीर्ण, विषमज्वर, कामला और पाण्डुरोगका नाशकरैहै।

कृष्णबीजनामानि।



कृष्णबीजश्यामबीजस्मृतंश्यामलबीजकम् ॥

अर्थ-कृष्णबीज, श्यामबीज, श्यामलबीजक ।

संस्कृतभाषामें	कृष्णबीज ।
हिन्दीभाषामें	कालादाना ।
बंगभाषामें	नीलकलमी ।
इंग्रेजीभाषामें	पेलव्हइपोमिया ।
लेटिन्भाषामें	फारवटिसर्नल ।

अस्य गुणाः ।

कृष्णबीजसरस्निग्धशोथोदरहरपरम् ।
ज्वरविष्टम्भहारीचमस्तकामयनाशनम् ॥
उदावर्त्तकफेनाहेप्रयोज्यबुद्धिमत्तरैः ।

अर्थ-कालादाना-दस्तावर, चिकना तथा सूजा, उदररोग, ज्वर, विष्टम्भ, मस्तकरोग, उदावर्त, कफ, और आनाह रोगको दूर करे है ।

विवरण । जमालगोटेके अभावमें इसका व्यवहार किया जाता है, क्योंकि जमालगोटेकी समान यह इतना भयङ्कर दस्तावर नहीं है । आजकल बहुतसे आलोपैथिक्डाक्तर सरकारी सफाखानेमें इसका व्यवहार करते हैं । व्यवहार-बीज । मात्रा ६ मासेकी ।

नीलिकानामानि ।

नीलीतुनीलिनीनीलामेघवर्णाचकुत्मला ।
दूलीक्लीतकिकाकालानीलिकानीलपुष्पिका ॥

अर्थ-नीली, नीलिनी, नीला, मेघवर्णा, कुत्मला, दूली, क्लीतकिका, काला, नीलिका, नीलपुष्पिका, (ग्रामीणा, मधुपर्णिका, रञ्जनी, श्रीफली, तुत्था, तूणी, दोला, दूल्किा, द्रोणिका, अक्लिश्, ग्रामणी, ग्रामिणी, वर्णी, द्रोणी, मेला, तुच्छा, नीलपत्री, राती, नीलपुष्पी, भार्गी, श्यामा, शाखिनी, श्रीफला, ग्राम्या, भद्रा, भारवाही, मोचा, कृष्णा, व्यञ्जनकेशी, महारङ्गा, असिता, रञ्जनी, पेशी, चारटिका, गन्धपुष्पा, श्यामलिका, स्थूलपर्णी, महाफला, स्थिररङ्गा, रङ्गपुष्पी, मूल्लिका, अञ्जनकेशिका, भार्गी, शिफा, गन्धपुष्पी, और स्थिररागा)

संस्कृतभाषामें	नीली ।
हिन्दीभाषामें	नील, नील ।

वगभापामें	नीलगच्छी नीलगाछ।
मराठीभापाम	गुळी, रुनीळी।
गुजरातीभापामें	गली।
कर्णाटकीभापामें	हिरीपनीली।
तैलिङ्गीभापामें	निलीजेट्टु।
इंग्रेजीभापामे	इंडिगो। Indigo
लैटिन्भापामें	इंडिगोफेरा कोर्डिफोलिआ। Indigofera cordifolia

अस्याः गुणाः।

नीलीतुकटुकातिक्ताकेश्याचोष्णासरामता।
व्यगश्लेष्मोदरमोहहृद्रोगचभ्रमतथा॥
वातरक्तमुदावर्त्तमामवातकफञ्जयेत्।
मदकासविपंचामवातगुल्मज्वरतथा॥
कुष्टकृमीश्चोदरञ्चप्लीहाश्चैवविनाशयेत्। (नि०र०)

अर्थ–नील–चरपरा, कडवा, केशोंको हितकारी, गरम, सारक तथा व्यग, श्लेष्म, उदररोग, मोह, हृदयरोग, भ्रम, वातरक्त, उदावर्त्त, आमवात, कफ, मद, खाँसी, विप, आम, वात, गुल्म ज्वर, कोढ, कृमि, उदर और प्लीहाका नाशकरे है।

अन्यच्च।

नीलीकेश्याशिरोरोगव्रणकुष्ठापहासरा॥ (शो० नि०)

अर्थ–नील–केशोंको सुंदरकरनेवाला तथा मस्तकरोग, घाव और कोढको दूर करेहै, तथा दस्तावर है।

विवरण। नीलके क्षुप छोटे २ किसानलोग खेतीमें बोतेह, पत्तेसरफाकके समान नीले और कुछेक कालापन लिये होतेहं। इसकी फली–टेढी और गोल होतीहै, इसकी डाली और पत्तोंकी कुट्टीकर कुण्डोंमें पानीभर उसमें गलातेहं, तब इसका नील बनातेह वह नीले रगके काममें आताहै, दूसरा इसीका भेद बडा नील है।

महानीलीनामानि।

अन्याचैवमहानीलीअमराराजनीलिका।
तुल्याश्रीफलिकामेलाकेशार्हाभत्सर्पत्रिका॥

अर्थ-महानीली, अमग राजनीलिका, तुत्था, श्रीफलिका, गेला, मेगाही, भतंपत्रिका ।

हिन्दीभाषामें	बडानील ।
बंगभाषामें	बडनील ।
मराठीभाषामें	थोरनीली ।
गुजरातीभाषामें	मोटीगली ।
कर्णाटकीभाषामें	हिरीयनील ।
लेटिनभाषामें	इंडिगोफेरा टिंक्टोरिया । Indigofera tinctoria

अस्या गुणाः ।

महानीलीगुणाढ्यास्यात्प्रगश्रेष्ठासुवीर्य्यदा ।
पूर्वोक्तनीलिकादेषासगुणासर्वकर्मसु ॥

अर्थ-बडानील-गुणाढ्य, उत्तमरंगवाला, वीर्यजनक, नीलकी अपेक्षा यह सब गुणोंमें उत्तम है ।

शरपुङ्खानामानि ।



शरपुङ्खाकालशाकप्लीहारि कालिकामता ॥

अर्थ-शरपुंखा, कालशाक, प्लीहारि, कालिका (प्लीहशत्रु, नीलवृक्षाकृति, काण्डपुंखा, बाणपुंखा, इषुपुंखिका, सायकपुंखा, इषुपुंखा, शरपुंखा)

श्वेतशरपुङ्खानामानि ।

शराभिधानपुंखान्याच्छ्वेताद्यासितसायका ।
सितपुंखाश्वेतपुंखाशुभ्रपुंखाचपञ्चधा ॥

अर्थ-श्वेतशरपुंखा, सितसायका, सितपुंखा, श्वेतपुंखा, शुभ्रपुंखा ।

कंटपुङ्खानामानि ।

अन्यातुकंटपुंखास्यात्कंटान्तु कंटपुंखिका ॥

अर्थ-कण्ठपुखा, कठाल्ड, कण्ठपुखिका ।

संस्कृतभाषामें	शरपुखा, श्वेतशरपुखा, कण्ठपुंखा ।
हिन्दीभाषामें	सरफोंका, सफेद सरफोंका, कण्ठपुखा ।
बंगभाषामें	बननील, सादबननील ।
मराठीभाषामें	उन्हाळी ।
कर्णाटकीभाषामें	येरङ्कोगिग, मङ्कुकोगिग ।
तैलिङ्गीभाषामें	प्रापोराचेट्टु, तेल्लवेंपल्लिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	कोल्लुकत्वकेळपि ।
द्रा०	जलिकुलथि ।
इंग्रेजीभाषामें	परपल्टेफ्रोझिया । Purple tephrosia
लैटिन्भाषामें	टेफ्रोशियापरपूरिया । Tephrosia Purpurea

शरपुखागुणाः ।

शरपुखायकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहा ।
तिक्तः कषायःकासास्रश्वासज्वरहरोलघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरफोंका-यकृत, प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषविनाशक, है । तथा कडवा कषेला, हलका, और खासी, रुधिरविकार, श्वास तथा ज्वरको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

शरपुखाकटूष्णाचक्रिमिवातरुजापहा ।
श्वेतात्वेषागुणाढ्यास्यात्प्रशस्ताचरसायने ॥(रा नि)

अर्थ-सरफोंका-चरपरा, गरम, क्रिमि और वातनाशक है सफेद सरफोंका सरफोंकेकी, अपेक्षा अधिक गुणवाला और रसायनकार्य्यमें उत्तम है ।

अन्यच ।

शरपुखातुकटुकातिक्तोष्णातुवरालघुः ।
यकृत्क्रिमिप्लीहगुल्मव्रणकासविषापहा ॥
श्वासार्शरक्तदोषघ्नीहृद्रोगकफजूर्तिहा ।
वातकफोदरव्यगगलत्कुष्ठश्चनाशयेत् ॥
श्वेतायाश्शरपुखायास्तातोप्यधिकागुणा ।(नि०र०)

अर्थ-सरफोंका-चरपरा, कडवा, गरम, कषेला, हल्का, तथा यकृत्, कृमि, प्लीहा, गुल्म, व्रण, खासी, विष, श्वास, ववासीर, रुधिरविकार, हृदयरोग, कफ, ज्वर, वात, कफोदर, व्यङ्ग (झाँई) औरगलत्कुष्ठको नष्ट करे है । रक्त शरफोंकेसे सफेद अधिक गुणवाला है ।

कठपुखागुणाः ।

कठपुखाकटूष्णाचक्रिमिशूलविनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-कठपुखा-चरपरा, गरम तथा कृमि और शूलविनाशक है ।

विवरण । सरफोंकेका क्षुप होता है, पत्ते-नीलके समान होते हैं, फूल-लाल और बारीक होते हैं, फलियोंके ऊपर रुँआ होता है, दूसरे प्रकारकी फलियोंपै रुँआ नहीं होता । सफेद सरफोंकेका क्षुप, पृथ्वीपर फैलाहुआ होता है, पत्ते-लाल सरफोंकेसे कुछेक छोटे होते हैं, फूल-सफेद होते हैं । शरफोंकेकी जड-चिलममें रखकर पीनेसे खासी और श्वास दूर होता है । सरफोंकेकी मात्रा ४ मासे । कठपुखेकी मात्रा ५ मासे ।

दुरालभानामानि ।

दुरालभादुरालम्भासमुद्रान्ताचरोदिनी ।
गान्धारीकच्छुरानन्ताकषायादुरभिग्रहा ॥

अर्थ-दुरालभा, दुरालभा, समुद्रान्ता, रोदिनी, गांधारी, कच्छुरा, अनन्ता, कषाया, दुरभिग्रहा (दुःस्पर्शा, कुनाशक, रोदनी, धनुर्याग, सुवा, [illegible] म, विकण्टक, आतममूली, पत्रमुरी, इदकारपा, धन्वयास, [illegible] धन्वी, धन्वयवासक, प्रबोधिनी, सूक्ष्मदला, [illegible] [illegible] रमृती, मरुजन्मा, उष्ट्रभक्ष्या, मृदुपर्णा, [illegible]

शरपुंखाकाल[illegible] [illegible]री, विशारदा, रविप्रदा, [illegible]

अर्थ-शरपुंखा, काल[illegible]

काण्डपुंखा, बाणपुंखा, इषुपुंखि[illegible] [illegible]था ।

[illegible] [illegible]गुणा ।

[illegible]गनभिधाचपुंखाम्या[illegible]

[illegible]पुंखा श्वेतपुंखाशुभ्रपुंख

[illegible] निगदापरा, गिरपुंख

[illegible] शरपुंखानामानि ।

[illegible]

लेटिन्भाषामें फगोनियाएरेबिका । Fogonia-arabica
फारसीभाषामें वादावर्द ।
अरबीभाषामें शुकाई ।

अस्या गुणा ।

उष्ट्रभक्ष्यामरुच्छ्वासविषघ्नीबोधकृत्परा ।
कषायाज्वरहृच्छीतातथातीसारनाशिनी ॥ (ध०नि०)

अर्थ–धमासा–बोधकारक, कषेला, शीतल तथा वात, श्वास, विष, ज्वर और अतिसारनाशक है ।

अन्यच्च ।

दुरालम्भाकटुस्तिक्तासोष्णाक्षाराम्लिकातथा ।
मधुरावातपित्तघ्नीज्वरगुल्मप्रमेहजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ–धमासा, चरपरा, कडवा, गरम, खारी, खट्टा, मीठा तथा वात, पित्त, ज्वर, गुल्म और प्रमेहको हरैहे ।

अपिच ।

दुरालभाकटुस्तिक्तामधुरारक्तशुद्धिकृत् ।
शीताचोष्णाविसर्पघ्नीविषमज्वरनाशिनी ॥
तृट्छर्दिमेहगुल्मघ्नीमोहरक्तरुजापहा ।
वातपित्तकफकुष्टज्वरंचैवविनाशयेत ॥ (नि०र०)

अर्थ–धमासा–चरपरा, कडवा, मीठा, रक्तशोधक, शीतल, गरम, तथा विसर्प, विषमज्वर, तृषा, वमन, प्रमेह, गुल्म, मोह, रुधिरविकार, वातपित्त, कफ, कोढ और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । धमासेका, रेतली भूमिमे छत्ता होता है, कांटे बारीक होते हैं, पत्ते–सूक्ष्म और फलभी बहुत छोटे २ होते हैं । मात्रा ६ मासेकी ।

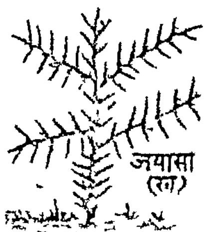
यवासनामानि ।

यासोयवासकोनन्ताबालपत्रोधिकण्टकः ।
दूरमूलःसमुद्रान्तोदीर्घमूलोमरुद्भव ॥

अर्थ–यास, यवासक, अनन्ता, बालपत्र, अधिकण्टक, दूरमूल समुद्रान्त, दीर्घमूल, मरुद्भव (यवास, कण्टकी, बहुकण्टक, क्षुद्रगुंडी, गेंडनिका, विपन्न,

कण्टकालुक, त्रिपर्णिका, गन्धारी, यासन्त, धनदर्भ, त्रिपर्णक, तीक्ष्णकण्टक, सूक्ष्मपत्र)





संस्कृतभाषामें	यवास।
हिन्दीभाषामें	जवासा, दुलाह।
बंगभाषामें	यवासा।
मराठीभाषामें	कांटेचुबुक, तायटा धमासा।
गुजरातीभाषामें	जवासो।
कर्णाटकीभाषामें	तोरे इंगलु।
लैटिनभाषामें	अल्हेगाई मरोरम। Alhagi maurorum
फारसीभाषामें	फरावसुन।
अरबीभाषामें	अरगुल हाज।

अस्य गुणाः।

यासः स्वादुरसस्तिक्तस्तुवरः शीतलो लघुः।
कफमेदोमदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकासजित्॥
तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरः स्मृतः। (धन्वन्तरिनि०)

अर्थ-जवासा-स्वादिष्ट, कडवा, कषेला, शीतल, हलका, तथा कफ, मेद, मद, भ्रान्ति, रक्तपित्त, कोढ, खांसी, तृषा, विसर्प, वातास्र वमि और ज्वरको दूर करे है।

अन्यच्च।

यासस्तु मधुरस्तिक्तो नात्युष्णोऽग्निप्रदीपकः। सरः शीतोऽल-

घुश्चेवतुवर कफपित्तजित् ॥ रक्तरुक्कुष्टवीसर्पमेदभ्रममदा-
पहः । वातरक्ततृषांछर्दिकासदाहज्वरंहरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ–जवासा–मधुर, कडवा, वलकारक, अग्निको दीपन करनेवाला, सारक, शीतल, हलका, कषेला तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, कोढ, विसर्प, मेद, भ्रम, मद, वातरक्त, पियास, वमन, खाँसी, दाह और ज्वरका नाश करे है ।

विवरण । जवासा–धमासेकी समान होता है, और यह भी जलाशयके समीपकी भूमिमें अधिक उत्पन्न होताहै । इसके काँटे धमासेसे कुछेक वडे होते है, और पत्ते भी किश्चित् वडे होते है । प्राय' जवासेके गुण धमासेसे मिलते हैं । वर्षाऋतुके आदि अतमें यह फलता फूलता है, और वर्षाऋतुमें तो आपसे आपही जलजाता है ।

मुण्डीनामानि ।

श्रावणीश्रवणामुण्डीभूतघ्नीचपलङ्कषा ॥

अर्थ–श्रावणी, श्रवणा, मुण्डी, भूतघ्नी, पलङ्कषा, (कदम्बपुष्पा, अरुणा, मुण्डीरिका, कुम्भला, भिक्षु, श्रवणशीर्षिका, प्रव्रजिता, परिव्राजि, तपोधना)

महामुण्डीनामानि ।

महाश्रावणिकान्यातुसास्मृताभूकदम्बिका ।
कदम्बपुष्पिकाचस्यादव्यथातितपस्विनी ॥

अर्थ–महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, कदम्बपुष्पिका, अव्यथा, तपस्विनी, (महामुण्डी,लोचनी, कदम्बपुष्पी, विकचा, क्रोडचूडा, पलङ्कषा, नदीकदम्बा मुण्डाख्या, महामुण्डनिका, माता, स्थविरा, लोतनी, भूकन्द, अलम्बुषा, वृद्धा, छिन्नग्रन्थिका, नीरकदम्बिका, वोडा)

सस्कृतभाषामें	मुण्डी, महामुण्डी, महाश्रावणिका ।
हिन्दीभाषामें	मुण्डी, छोटीमुण्डी, गोरखमुण्डी, वडीमुण्डी ।
वगलाभाषामें	मुडिरी, मुण्डी, थुलकुडी, वडथुलकुडी ।
मराठीभाषामें	वरसवोडी, वोडयरा ।
गुजरातीभाषामें	मुडी, गोरखमुडी, वोडियोकगार ।
कर्णाटकीभाषामें	कीपोवोडतर, दिरीपधोडतर ।
तैलिङ्गीभाषामें	वोडसरपुचेट्टु ।
ता० वम०	कोट्टक ।

लैटिन्‌भाषामें रिफ़ेंरंयस् इंडिकस् (Sphoeranthus indicus)
अरबीभाषामें कमादर युस् ।

मुण्डीगुणाः ।

मुण्डीतिक्ताकटुःपाकेवीर्य्योष्णामधुरालघुः ।
मेध्यागंडापचीकृच्छ्रकृमिपित्तार्तिपाण्डुनुत ॥
श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्त्तिनुत । (ग०नि०)

अर्थ-मुण्डी-कडवी, पचनेमें, चरपरी, उष्णवीर्या, मधुर, हलकी, मेधाजनक, तथा गलगंड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, पित्तकी पीडा, पाण्डुरोग, श्लीपद, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा, मेद और गुदाकी वेदनाको दूर करती है ।

अपरञ्च ।

श्रावणीतुकषायोष्णापाकेतिक्ताचतीक्ष्णका । मधुराभेदकालघ्वीमेध्यावल्यारसायना ॥ गलगंडगंडमालामपचीं कफवातकम् । प्लीहामेदमथोन्मादश्लीपदपाण्डुरोगकम् ॥ अरुचियोनिशूलञ्चकासमर्शांचकृच्छ्रकम् । पित्तामापस्मारकृमिश्वासञ्चकुष्ठकम् ॥ विषदोषचातिसारछर्दिञ्च विनाशयेत ।

अर्थ-गोरखमुण्डी-(मुण्डी) कषैली, गरम, पचनेमें चरपरी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, मेधाजनक, बलकारक, रसायन, तथा गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, कफ, वात प्लीहा, मेदरोग, उन्मादरोग, श्लीपद, पाण्डुरोग, अरुचि, योनिशूल, खांसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, पित्त, आमदोष, मृगी, कृमि, श्वास, कोढ, विषविकार, अतिसार और वमनको दूर करनेवाली है ।

महाश्रावणिकागुणाः ।

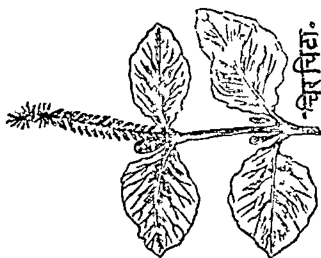
महामुण्डीतुमधुरातिक्ताचोष्णारसायनी ।
रुच्याम्चर्यामवेदमीवातनाशकरीमता ॥
अन्येगुणास्तुमुण्डीवज्ज्ञेयावैद्यैश्चसूरिभिः । (नि० र०)

अर्थ महामुण्डी-मधुर, कडवी, गरम, रसायन, रुचिकारक स्वरको

शुद्ध करनेवाली, प्रमेहनाशक और वातविनाशक है । शेप गुण मुण्डीकी समान जानने ।

विवरण । मुण्डी और महामुण्डी तृणके समान प्रसर जातिकी वनस्पति है, पत्ते-अंगुलीकी समान लम्बे २ होतेहैं फल-कदम्बके समान अथवा मरोंटीके तुल्य किंवा घुण्डीसदृश होतेहैं ।

अपामार्गनामानि ।



अपामार्ग शैखरिकोधामार्गवमयूरकौ ।
प्रत्यक्पर्णीकीशपर्णीकिणिहीखरमञ्जरी ॥

अर्थ-अपामार्ग, शैखरिक, धामार्गव, मयूरक, प्रत्यक्पर्णी, कीशपर्णी, खरमञ्जरी, (अपाङ्गक, किणी, कीशपर्णी, चमत्कार, शैखरेय, अधामार्गव, केशपर्णी, स्थलमञ्जरी, प्रत्यक्पुष्पी, क्षारमध्य, अधोघण्टा, शिखरी, दुर्ग्रह, अध्वशल्य, कान्तरिक, मर्कटी, दुरभिग्रह, वाशिर, परावपुष्पी, कण्टी, कर्कटपिप्पली, कटुमञ्जरिका, अघाट, क्षुरक, पाण्डुकण्टक, तालाकट, कुब्ज, मालाकण्ट, अघाट)

संस्कृतभाषामें	अपामार्ग ।
हिन्दीभाषामें	चिरचिटा, लटजीरा, ओंगा ।
बंगभाषामें	आपाङ्ग ।
मराठीभाषामें	अघाडा ।
गुजरातीभाषामें	अंघेडो ।
कर्णाटकीभाषामें	उत्तरणे, चिचिरा ।
तैलिङ्गीभाषामें	दुर्चीणिके ।

इंग्रेजीभाषामें रफ्चेफ्ट्री। Rou. h chaff tree
लैटिन् भाषामें एचिरैंथिस् एस्पिरा। Achyranthes aspera
ओचिरैंथस आल्टर निफोलिया। A. Alt rnifolia
फारसीभाषामें खारवाजगोता।
अरबीभाषामें अत्कम।

अपामार्गगुणाः।

अपामार्ग सरस्तीक्ष्णोदीपनस्तिक्तक कटु।
पाचनोरोचनश्छर्दिकफमेदोनिलापह॥
निहन्तिहृद्रुजाध्मार्श:कण्डुशूलोदरापची। (भा०प्र०)

अर्थ-चिरचिरा-सारक (दस्तावर) तीक्ष्ण, दीपन, कडवा, चरपरा, पाचक, रुचिकारक, तथा वमन, कफ, मेदोरोग, वात, हृदयरोग, आध्मान, बवासीर, कण्डू, शूल, उदररोग और अपचीको दूर करैहै।

अन्यच्च।

अपामार्गस्तुतिक्तोष्ण कटुश्चकफनाशन:।
अर्श:कण्डूदरामघ्नोरक्तहृद्ग्राहिवान्तिकृत॥ (रा०नि०)

अर्थ-चिरचिरा-कडवा, गरम, चरपरा, कफनाशक तथा कण्डू, उदररोग, आम और रुधिरविकारको दूर करे है, तथा मलरोधक और वमनकारक है।

मतभेद।

अपामार्गोऽग्निवत्तीक्ष्ण क्लेदन भ्रमन मरः॥ (रा.प)

अर्थ-चिरचिरा-अग्निकी समान तीक्ष्ण, क्लेदन भ्रमन और सारक है।

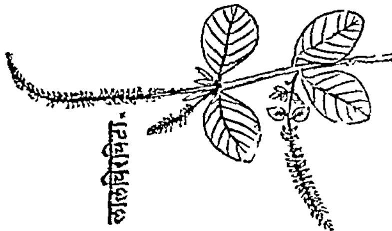
अन्यच्च।

अपामार्गोऽग्निकृत्तीक्ष्णोनस्याच्छीर्षकृमीञ्जयेत।
वामकोरक्तसंग्राहीरक्तातीसारनाशनः॥
नस्येनान्तीप्रशस्त स्याद्दद्रुकण्डूकफापह। (गो०नि०)

अर्थ-चिरचिरा-अग्निकारक, तीक्ष्ण और इसका नास-शिरके कृमियोंको दूर करे है। वमनकारक, रक्तविकारनाशक, और रक्तातिसारनाशक है, चिरचिरा-नास और वमनकर्ममें महाउपयोगी है, तथा, दाद, खुजली और कफनाशक है।

विवरण। चिरचिटेका क्षुप होताहै, पत्ते-गोल होते हैं, पत्तोंके वीचमेंसे एक वाल निकलती है, उस वालमे सूक्ष्म और मृदु काँटेयुक्त वीज होते हैं उन, वीजोंको पीसकर पीनेसे ववासीर दूर होती है। चिरचिटेके क्षारके गुण क्षारवर्गमें देखो।

रक्तापामार्गनामानि ।



रक्तोन्योवशिरोवृत्तफलोधामार्गवोपि च ।
प्रत्यक्पर्णीकेशपर्णीकथिताकपिपिप्पली ॥

अर्थ-रक्तापामार्ग, वशिर, वृत्तफल, धामार्गव, प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी, कपिपिप्पली, (क्षुद्रापामार्ग, आवर्त्तक, दुग्धनिका, रक्तविट, कल्पपत्रिका, क्षव, अधामार्गव, प्रत्यक्छ्रेणी, खरच्छद, कूट, मर्कटपिप्पली, कुब्ज और दुरभिग्रह)

संस्कृतभाषामें	रक्तापामार्ग ।
हिन्दीभाषामें	लालचिरचिरा ।
बंगभाषामें	रागाआपांग ।
मराठीभाषामें	लालअघाडा ।
गुजरातीभाषामें	झिपटो ।
कच्छीभाषामें	कैंपिगुत्तरणे ।
तैलिङ्गीभाषामें	उतरायणी कैंपिगुत्तरणे ।
लै०	एकिरेंथिसलेपेरिया ।

अस्य गुणाः ।

रक्तापामार्गकःकिञ्चित्कटुकःशीतलःस्मृतः । मलावष्टम्भ-

वमिकृद्वातविष्टम्भकारकः ॥ रूक्षोष्णंविषवातकफकण्डूं-
चनाशयेत । बीजमस्यरसेपाकेदुर्जरस्वादुशीतलम् ॥
मलावष्टम्भकरूक्षवान्तिकृद्रक्तपित्तजित् । कासनाशकर-
प्रोक्तमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-लाल चिरचिरा-किंचित् चरपरा, शीतल, मलावष्टंभक, वमन जनक, वात, और विष्टम्भकारक, रूखा तथा गरम, विष, वात, कफ और खुजलीको दूर करनेवाला है। इसके बीज-रस और पाकमें दुर्जर, स्वादिष्ट, शीतल, मलावष्टम्भक, रूखे, वमनकारक, रक्तपित्तनाशक और खांसीको हरनेवाले हैं।

द्विविधापामार्गगुणाः ।

अपामार्गद्वयंतिक्ततीक्ष्णोष्णकफवातनुत ।
सिध्मोदरापचीदद्रुकण्डूशोभातिवान्तिकृत॥ (म० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके चिरचिरे-कड़वे, तीक्ष्ण, गरम, कफ, वातनाशक तथा सिध्म, उदररोग, अपची, दाद, खुजली और बवासीरको दूर करते हैं और वमनजनक हैं।

अपिच।

अपामार्गद्वयंतिक्तंकृमिशीर्षविशोधनम् ।
वातकफक्षमप्राहिरक्तातीसारनाशनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-दोनोंप्रकारके चिरचिरे-कड़वे, कृमि और शीर्षशोधक, वातकफ नाशक, ग्राही और रक्तातिसारनाशक हैं।

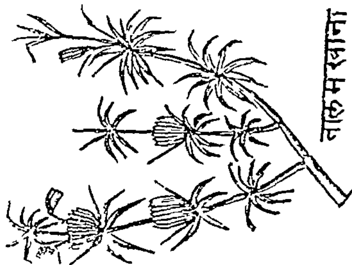
विवरण। लाल चिरचिराभी उसीप्रकार होता है, इसके पत्ते-कुछ २ गोल और लाल होतेहैं, फूल-बीज और डण्डी-लाल २ बालपर लगे होतेहैं, परन्तु उनके ऊपर कांटेभी होतेहैं, इसप्रकार लाल और सफेद दो जातिका चिरचिरा होताहै।

गोक्षुरस्य नामानि ।

कोकिलाक्षस्तुकाकेक्षुरिक्षुर क्षुरक क्षुर ।
भिक्षुकाण्डेक्षुगन्धस्तुकाण्डेक्षुर्वालिका ॥

अर्थ-कोकिलाक्ष, काकेक्षु, इक्षुर, क्षुरक, क्षुर, भिक्षु, काण्डेक्षु, इक्षुगन्धा, इक्षुवालिका, (कोकिलाक्ष) तालिमखाना, तालमखाना, कोकिला, इक्षुर,

शृगालघण्टी, वज्रास्थि, शृखला, वज्रकण्टक, वज्र, शृखलिका, पिकेक्षणा, पिच्छिला,) (वीरतरु, त्रिक्षुर, क्षुरक, शुक्लपुष्प और कुलाहक यह नाम सफेद कोकिलाक्षके हैं) (छत्रक और अतिछत्र यह दो नाम लाल कोकिलाक्षके हैं)



संस्कृतभाषामें	कोकिलाक्ष ।
हिन्दीभाषामें	तालमखाना-कल्या ।
वंगभाषामें	कुलियाखाडा, कुलेकाँटा, कुलक, शूलमर्दनइत्यादि
मराठीभाषामें	विखरा ।
कोकणीभाषामें	कोल्स्ता ।
गुजरातीभाषामें	एखरो ।
कर्णाटकीभाषामें	कुलुगोल्कि ।
तैलिङ्गीभाषामें	गोवी । गोलिमिडिचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	कुइलिरखा, माखुरेण ।
इंग्रेजीभाषामें	लांगलिव्ड बार्लारिया । Longleaved Barlaria
लैटिन् भाषामें	एष्टकैंथा लांजिफोलिया । Asteracantha Longifolia

अस्य गुणाः ।

कोकिलाक्षोमधु शीतोरुच्योबल्योगुरु स्मृत । वृष्योम्लस्तर्पणस्तिक्त स्वादु स्निग्धश्चपिच्छिल ॥ आमवातामवातातिसारतृष्णाश्मरीरुज । वातास्रमेहशोथामरक्तरुङ्नाशनोमत ॥ पित्तञ्च दृष्टिरोगञ्च नाशयेदिति कीर्त्तित ।

अस्य पत्रगुणाः ।

पर्णञ्चस्वादुतिक्तस्याच्छोथशूलविषापहम् । आनाहवात-
मुदरपाण्डुरोगञ्चनाशयेत ॥ बन्धञ्चमलमूत्राणांवातमेवच
नाशयेत । वृद्धस्यकोकिलाक्षस्यगुणास्त्वस्यसमामताः ॥

अर्थ-तालमखाना-मधुर, शीतल, रुचिकारक, कफकारक, भारी, वीर्य-वर्द्धक, खट्टा, तर्पण (तृप्तिकारक), कडवा, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, पिच्छल, तथा आमवात, आन, वातातिसार, तृषा, पथरीरोग, वातरक्त, प्रमेह, सूजन, आमरक्त, पित्त और दृष्टिरोगको दूर करे है । तालमखानेके पत्ते-स्वादिष्ठ, कडवे, तथा सूजन, शूल, विष, आनाहवात, उदररोग, पाण्डुरोग, मलरोग, मूत्ररोग और वातविष्टम्भको हरनेवाले हैं, पके तालमखानेके गुण इसीके समान जानने ।

अस्य बीजगुणाः ।

कोकिलाक्षस्यबीजन्तुशीतंस्वादुकषायकम् । तिक्तंवृष्य-
गुरुर्बल्यंग्राहकंगर्भस्थापनम् ॥ कफवातकरञ्चैवमलस्त-
म्भकरंतथा । रक्तदोषञ्चदाहञ्चपित्तञ्चैवविनाशयेत ॥

अर्थ-तालमखानेके बीज-शीतल, स्वादिष्ठ, कसेला, कडवा, वीर्यवर्द्धक, भारी, बलकारी, गर्भस्थापक, कफवातकारक, मलस्तम्भक तथा रक्तविकार, दाह, और पित्तको हरनेवाले हैं ।

विवरण । कोकिलाक्ष अर्थात् तालमखाने क्षुप भाषा नाम कफ निरूढ तथा आँपासेकी साल, और वर्षामें उत्पन्न होजाते हैं, पत्ते-लम्बे होते हैं पुष्प कंटे होते हैं, गुमेरीके समान गांठ होती हैं उन गांठोंमेसे बीज निकलते उसको तालमखाना कहते हैं ।

कुमारीनामानि ।

महाफलकुमारीचकुमारीदीर्घपत्रिका ।
[illegible] कन्यापृथुपत्राकुमारिका ॥

[illegible], दीर्घपत्रिका, अजरा, सुकुमारा कन्या, गृहकुमारी
[illegible] बहुपत्री, कन्या स्थलेरुहा, पृथुपत्री, अमरा
[illegible], वीरा, मृदुला, कन्दी, रामा,

कपिला, अम्बुधिस्रवा, सुकण्टका, स्थूलदला, गृहकन्या, अदला, मण्डला, माता, अतिपिच्छिला, रसायनी, कण्टकिनी)

संस्कृतभाषामें	घृतकुमारी ।
हिन्दीभाषामें	घिगुवार, ग्वारपाठा, कुवारपाठा ।
बंगलाभाषामें	घृतकुमारी ।
मराठीभाषामें	कोरफड, कोरफाटा ।
गुजरातीभाषामें	कुवार ।
कर्णाटकीभाषामें	लोयिसर ।
तैलङ्गीभाषामें	पिन्नगोरिण्टकलवन्द, विरजाजितोगे ।
इंग्रेजीभाषामें	बार्बेडोझ्आलोझ् । Barbadocsaloes
लेटिन्भाषामें	आलाइबार्वेडेन्स । Aloebarbadense
फारसीभाषामें	दरख्तेसिन्न ।
अरबीभाषामें	मुसव्वर ।

अस्या गुणाः ।

कुमारीभेदिनीशीतातिक्तानेत्र्यारसायनी । मधुराबृंहणीबल्यावृष्यावातविषप्रणुत् ॥ गुल्मप्लीहयकृच्छर्दिकफज्वरहृद्‌रीभवेत्। ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटरक्तपित्तत्वगामयान्॥ भा प्र

अर्थ–घीकुवार–भेदक (दस्तावर) शीतल, कडवा, नेत्रोंको हितकारी, रसायन, मधुर, बृंहण, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, तथा वात, विष, गुल्म, प्लीहा, यकृत्, वमन, कफज्वर, ग्रन्थि, अग्निदग्ध, विस्फोट, रक्तपित्त और त्वचाके रोगोंको दूर करे है । अन्यच्च ।

गृहकन्याहिमातिक्तामदगन्धि कफापहा ।
पित्तकासविषश्वासकुष्ठघ्नीचरसायनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ–घीकुवार, शीतल, कडवा, मदगन्धियुक्त, कफनाशक, तथा पित्त, खासी, विष, श्वास और कुष्ठको नष्टकरे है, और रसायन है ।

अस्य दण्डादिगुणाः ।

तन्मध्यदण्डोमधुरःकुमारीसदृशोगुणैः ।
विशेषात्कृमिपित्तघ्न पुष्पमस्यगुरुस्मृतम् ॥
वातपित्तकृमींश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ-इसके नीचका डण्डा-घीकुवारके समान गुणवाला है विशेषकरके मधुर तथा कृमि और पित्तनाशक है । इसके फलभागी तथा वात, पित्त और कृमिको दूर करनेवाले हैं ।

विवरण । घीकुवारका क्षुप-खारी पृथ्वी, रेतली भूमि तथा नदीके समुद्रके निकट अधिकतासे उत्पन्न होते हैं, पत्ते-लम्बे और मोटे होते हैं । पत्तोंकी दोनों ओर कांटे होते हैं, इनके भीतर घीके समान गूदा निकलता है, पत्तोंके छोर नकीदार होते हैं, घीकुवारके बीचसे डंडा निकलता है, उसमें लाल फूल आता है । घीकुवारके रससे एडुआ बनाया जाता है ।

एलीयकनामानि ।

एलीयक कृष्णबोल कुमारीसारतोद्भव ॥

अर्थ-एलीयक, कृष्णबोल, कुमारी, सारतोद्भव ।

संस्कृतभाषामें	एलीयक ।
हिन्दीभाषामें	एलुवा ।
मराठीभाषामें	कालाबोल, एलियाबोल ।
गुजरातीभाषामें	एलियो, सिकोतरी एलियो ।
तैलङ्गीभाषामें	मोर ।
इंग्रेजीभाषामें	सॉकोट्रिन आलोज ।
लेटिनभाषामें	आलोसोकोट्रिना ।
फारसीभाषामें	मुसब्बीर ।
अ०	सेबर ।
अन्यभाषामें	गीतकुमारी ।

अथ गुणाः ।

कृष्णबोल कटु शीतो भेदनो रक्तशोधनः ।
शूलाध्मानकफान्वातकृमिगुल्मानुत्तानाशयेत् ॥ (श० नि०)

अर्थ-एलुवा, चरपरा, शीतल, दस्तावर, रक्तको शोधनेवाला तथा शूल, अफरा, कफ, वात, कृमि और गुल्मको दूर करनेवाला है ।

क्षुद्रकारीनामानि ।

काकनासिका क्षुद्रपैत्र कीनूतरी तथा ।
रक्तदार्मीम राण्डाप्रनपुष्पानामतूना ॥

अर्थ–काककेतकी, क्षुद्रकेतकी, तृणकेतकी, रज्जुदात्री, मध्यदण्डा, पृथक्पुष्पा ।

हिन्दीभाषामें　　रामवाँस (न)

गुजरातीभाषामें　　केतकी ।

लैटिन्भाषामें　　एलोअमेरिकाना । Aloe Americana

विवरण–रामवाँसके-वृक्ष प्रायः वाग और खेतोंकी वाडोंपर अधिकतासे होतेहैं, यह घीकुवारकी समान होते हैं, परन्तु घीकुआरसे कुछ कालापन लिये और वडे तथा पतले होते हैं, इसपर लाल और सफेद रंगके गुच्छेदार फूल आते हैं ।

अस्या गुणा ।

श्वेतातुकेतकीकट्वीस्वाद्वीतिक्तालघुःस्मृता । विषकफना-
शयतिपुष्पमस्यालघुस्मृतम् ॥ कटुतिक्तंकान्तिकरमुष्ण
वातकफापहम् । केशदुर्गन्धितापघ्नकेसरः सिध्मकण्डुहा॥
किञ्चिदुष्णफलस्वादुवातमेहकफापहम् ॥　(नि० र०)

अर्थ–रामवाँस–चरपरा, स्वादु, कडवा, हलका, तथा विष और कफनाशक, है । इसका फूल–हलका, चरपरा, कडवा, कान्तिजनक, गरम, वातकफनाशक, केशोंकी दुर्गन्धताको दूर करनेवाला और तापनाशक है । इसके फूलका जीरा–सिध्म और कण्डूनाशक है । इसका फल किञ्चित्, उष्ण, स्वादिष्ठ, तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है ।

पाण्डुफलीनामानि ।

पाटलीस्यात्पाण्डुफलीधूसरावृत्तबीजका ।
पाण्डुफलाभूरिफलातथासप्ताह्वयाभिधा ॥

अर्थ–पाटली, पाण्डुफली, धूसरा, वृत्तबीजका, पाण्डुफला, भूरिफला ।

हिन्दीभाषामें　　पाटली ।

मराठीभाषामें　　पाढरफली ।

गुजरातीभाषामें　　शीणवी ।

कर्णाटकीभाषामें　　पाटरफल मणमड ।

लै०　　फ्लुजिया ल्युकोपाईरस Flujia leucopyrus

अस्या गुणा ।

पाण्डुफलीतुमधुराबल्यावृष्याचशीतला ।
मूत्राघातपित्तरोगमूत्रकृच्छ्रास्त्ररुग्जयेत ॥ (नि० र०)

अर्थ-पाण्डुरफली-मधुर, मलकारक, वीर्यवर्द्धक, शीतल, तथा मूत्राघात, पित्तरोग, मूत्रकृच्छ्र, और रुधिरके विकारोंको दूर करै है।

अन्यच्च ।

शिशिरा पाण्डुरफली गौल्या कृच्छ्रार्तिदोषहा ।
बल्या पित्तहरा वृष्या मूत्राघातनिवारणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पाण्डुफली-शीतल, गौल्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, पित्त-नाशक, वीर्यवर्द्धक, और मूत्राघातनिवारक है।

पनसीनामानि ।

पनस्यां गोपर्णी चोक्ता तथा च कपिकच्छुकः ॥

अर्थ-पनसी, गोपर्णी, कपिकच्छुक ।

अस्या गुणाः ।

पनसीकाभवं मूलं व्रणरोपणभेदनम् ॥

अर्थ-पनसीकी जड-व्रणको भरनेवाली और दस्तावर है।

गगाटीनामानि ।

गगाट्या गगटी चैव पित्तव्रणप्रमादनी ॥

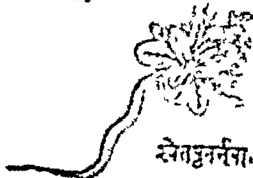
अर्थ-गगाटी, गगटी, पित्तव्रणप्रमादनी ।

अस्या गुणाः ।

गंगेटी बद्धविण्मूत्रा कषाया शीतला गुरुः ॥ (शा० नि०)

अर्थ-गांगेटी-मलमूत्ररोधक, कसैली, शीतल और भारी है। तथा व्रण और पित्तनाशक है।

श्वेतपुनर्नवानामानि ।

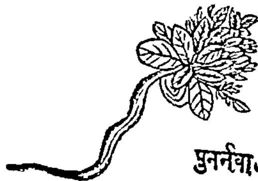


श्वेतपुनर्नवा.

पुनर्नवाऽश्वेतमूला कठिल्लश्च शिलाटिका ।

अर्थ–पुनर्नवा, श्वेतमूला, कठिल्ल, चिराटिका, (वृश्चीरा, श्वेतपुनर्नवा, सितवर्षाभू, वर्षाङ्गी, वर्षाही, विशाख, शशिवाटिका, पृथ्वी, धनपत्र, कठिल्लक, शोथघ्नी, दीर्घपत्रिका ।

रक्तपुनर्नवानामानि ।



पुनर्नवा.

रक्तपुनर्नवाप्युक्ताशोथघ्नीरक्तपत्रिका ।
रक्तकाण्डावर्षकेतुर्वर्षाभू प्रावृषायणी ॥

अर्थ–रक्तपुनर्नवा, शोथघ्नी, रक्तपत्रिका, रक्तकाण्डा, वर्षकेतु, वर्षाभू, प्रावृषायणी (कठिल्लक, रक्तपुष्पा, शिलाटिका, वर्षकेतु, क्रूरा, मण्डलपत्रिका, लोहिता, वैशाखी, रक्तवर्षाभू शोफघ्नी, रक्तपुष्पिका, विकस्वरा, विषघ्नी, प्रावृषेण्या, सारिणी, वर्षाभव, शोणपत्र, भौम, पुनर्भव, नव, नव्य)

नीलपुनर्नवानामानि ।



नीलापुनर्नवानीलाश्यामानीलपुनर्नवा ।
कृष्णाख्यानीलवर्षाभूर्नीलिनीस्वाभिधान्विता ॥

अर्थ–नीलापुनर्नवा, नीला, श्यामा, नीलपुनर्नवा, कृष्णाख्या, नीलवर्षाभू, नीलिनी ।

संस्कृतभाषामें	पुनर्नवा, श्वेतपुनर्नवा, रक्तपुनर्नवा, नीलपुनर्नवा ।
हिन्दीभाषामें	विषखपरा, गांठ, गदहपूर्णा, सोंठ, ... इत्यादि ।
बंगभाषामें	श्वेतगादापुने, श्वेतपुन्ना, गादापुन्ना, ... वन्दे, गादागोदापुने ।
मराठीभाषामें	घटुली पांढरी, ...
गुजरातीभाषामें	साटोडी ... निचे घोळाकर ढोला पानने गोसागानी ।
कर्णाटकीभाषामें	...
तैलिङ्गीभाषामें	गाल्जेरु, अतिरसमेति ।
तामिलभाषामें	मुकरत्तेकिरे ।
वम्ब०	पुनर्नवा ।
इंग्रेजीभाषामें	स्प्रेडिंग् होगूवीड् । Spreading Hogweed ।
लैटिनभाषामें	बोरहाविया डिफ्यूसा । Boerhaavia Diffusa और, ट्रिएन्थेमा ओब्कार्डाटा । Trianthema Obcordata
अरबीभाषामें	ईदहर्री ।

श्वेतपुनर्नवागुणाः ।

श्वेतापुनर्नवाप्णानिक्ताकफनिपापहा ।

कासहृद्रोगशूलास्रपाण्डुशोफानिलार्त्तिनुत्॥(रा०नि०)

अर्थ—श्वेतपुनर्नवा (विषखपरा)—गरम, कड़वा तथा कफ, विष, खांसी, हृद्रोग, शूल, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, सूजन और वातकी, वेदनाको दूर करै ।

अन्यच्च ।

कटु कषायानुरसा पाण्डुघ्नी दीपनी परा ।

शोफानिलगरश्लेष्महरी ब्रध्नोदरप्रणुत् (भा०प्र०)

अर्थ—श्वेतपुनर्नवा—चरपरा, कसैला अनुरसवाली, अग्निदीपक तथा पाण्डुरोग, सूजन, वात, विष कफ ब्रध्न और उदररोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पुनर्नवातुवीर्य्योष्णाभेदिनीचरसायनी ।

कफानिलामदुर्नामब्रध्नशोथोदरापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा–उष्णवीर्य्य, दस्तावर, रसायन तथा कफ, वात, बवासीर, ब्रध्न, सूजन और उदररोगको दूरकरे है ।

अन्यच्च ।

वर्षाभूर्मधुरातिक्ताकषायाकटुकासरा ।

क्षारोष्णादीपनीरूक्षाशोफानिलकफापहा ॥

हृद्यारुच्याजयेदर्शोव्रणपाण्डुगरोदरम् । (ग० नि०)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा-मधुर, कडवा, कषेला, चरपरा, सारक, क्षारयुक्त, गरम, दीपन, रूखा, शोफघ्न, वातविनाशक, कफनाशक, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा बवासीर, घाव, पाण्डु, विष और उदररोगको दूरकरेहै ।

अपिच ।

श्वेतापुनर्नवातिक्ताचोष्णाकट्वीचतूवरा।रुच्याग्निदीपनी-रूक्षामधुरापटुसारका ॥ हृद्याशोफकफवातकासमर्शोव्रण-जयेत् । पाण्डून्विषोदरशूलंहृद्रोगोर क्षतापहा ॥ घृतेनमूलकचास्याह्यजितहन्तिपुष्पकम् । मधुनासहमूलतुह्यजित स्रावनाशकम् ॥ अजितमार्कवरसेनेत्रकण्डूनिवारणम् । केवलेनजलेनैवह्यजिततिमिरापहम् । जलेनगोशकृताचपिप्पल्याचांजितयदा ॥ रात्र्यांध्यनश्यतेतेनचोष्ण'पर्णग्स स्मृत' ॥ (नि० र०)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा–कडवा, गरम, चरपरा, कषेला, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, रूखा, मधुर, खारी, दस्तावर, हृदयको हितकारी, तथा सूजन, कफ, वात, खाँसी, बवासीर, घाव, पाण्डुरोग, विष, उदर, शूल, हृदयरोग और उर क्षत रोगको दूर करे है । इसकी जडको पीसकर घीमें मिलाकर अंजन करे, वह अंजन आँखोके फूलेको दूर करता है । इसकी जडमें मधु-मिलाकर अंजन करे वह अंजन रक्तस्रावनाशक है । इसकी जडको भांगरेके रसके साथ नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोकी खुजली दूर होती है । इसकी जडको

पेचस पत्तेके साथ आंखोंमें लगानेसे तिमिररोग दूर होता है। गायके गोबरके रसमें इसकी जड और पीपल उबालकर अञ्जन करनेसे यह अंजन रतौंधीको दूर करनेवाला है, इसके पत्तोंका रस गरम है।

रक्तपुनर्नवागुणाः।

पुनर्नवारुणा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः।
वातला ग्राहिणी श्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी॥ (भा० प्र०)

अर्थ-रक्तपुनर्नवा (गदहपूर्ना) कडवी, पचनेमें चरपरी, शीतल, हलकी, वातकारक, मलरोधक, तथा कफ, पित्त और रक्तविकारोंको दूर करे है।

अन्यच्च।

रक्तपुनर्नवा तिक्ता सारिणी शोफनाशिनी।
रक्तप्रदरदोषघ्नी पाण्डुपित्तप्रमर्दिनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-रक्तपुनर्नवा (गदहपूर्ना लाल) कडवी, सारक, सोजेनाशक तथा रक्त, प्रदररोग, पाण्डुरोग और पित्तको दूर करनेवाली है।

नीलपुनर्नवागुणाः।

नीलपुनर्नवा तिक्ता कटूष्णा च रसायनी।
हृद्रोगपाण्डुश्वयथुश्वासवातकफापहा॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलपुनर्नवा-कडवी, चरपरी, गरम, रसायन तथा हृदयरोग, पाण्डुरोग, सूजन, श्वास, वात और कफनाशक है।

अथ पत्रशाकगुणाः।

पौनर्नवीपर्णशाका नातिरूक्षा कफापहा।
वाताग्निमांद्यगुल्मघ्नी प्लीहाशूलविनाशिनी॥ (नि० र०)

अर्थ-पुनर्नवेके पत्तोंका शाक-अत्यन्त रूखा, तथा वात, मंदाग्नि, गुल्म, प्लीहा और शूलको दूर करे है।

विवरण। गदहपूर्ना चार जातिकी होतीहैं, एक लाल, सफेद, नीली और काली होती हैं। इनमें सफेद अधिक प्रसिद्ध विषखपरा है और लाल गदहपूर्ना और अर्थात् गदहपूर्ना मानना। १-विषखपराका पुनर्नवासे भेद होता है। पत्ते गोल और लाल किनारेदार होवें, फूल सफेद होवें। २-लाल-पुनर्नवाकी पूर्वोक्तसे अधिक बड़ी होवें, इसे शाखायें अधिक होवें, फूल-लाल होता है।

प्रसारणीनामानि ।



प्रसारणीराजबलागन्धालीचकटम्भरा ।
गन्धाढ्यागन्धभद्राचसारणीसरणीतथा ॥

अर्थ-प्रसारणी, राजवला, गन्धाली, कटम्भरा, गन्धाढ्या, गन्धभद्रा, सारणी, सरणी (भद्रपर्णी, शरणा, शरणी, गन्धोली, सारणी, भद्रवला, भद्रपर्णी, प्रतानिनी सरणी, सुप्रसरा, सारिणी, प्रसरा, सरा, चारुपर्णी, प्रतानिका, प्रवला, राजपर्णी, चन्द्रपर्णी, चन्द्रवल्ली, प्रभद्रा, प्रसारिणी, वल्या)

संस्कृतभाषामें	प्रसारणी ।
हिंदीभाषामें	गन्धप्रसारणी, पसरन, प्रसारनी ।
वङ्गभाषामें	गन्धभादला, गाँधाली, गन्धभादुलिया ।
मराठीभाषामें	प्रसारणी, चादवेल ।
गुजरातीभाषाम	प्रसारणवेल्य (नारी)
कर्णाटकीभाषामें	हेसरणे ।
तेलिङ्गीभाषामें	गोन्तेमगोरुचेट्टु, सविरेल्चेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	पिडेरिया फिटीडा Paederia foetida
	मेकारंगा टोमेंटोसा। Macaranga tomentosa

अस्या गुणा ।

प्रसारिणीगुरुर्वृष्याबलसन्धानकृत्सरा ।
वीर्य्योष्णावातहृत्तिक्तावातरक्तकफापहा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, सन्धानकारक, उष्ण-वीर्य्य, वातनाशक, कडवी तथा वातरक्त और कफको हरनेवाली है ।

मदन।

प्रसारिणीगुरूष्णा च तिक्ता वातविनाशिनी।
अर्शःश्वयथुहन्त्री च मलविष्टम्भहारिणी॥ (म०नि०)

अर्थ-पसारन-भारी, गरम, कडवी तथा वात नाशक, बवासीर, और मलकी विष्टम्भताको हरनेवाली है।

मदन।

वातपित्तहरा सोष्णा बल्या वृष्या प्रसारिणी॥ (राजवल्लभ)

अपिच।

अर्थ-गन्धप्रसारणी वातपित्तनाशक, गरम बलकारक और वीर्य वर्द्धक है।

सारणी वातरक्तघ्नी सोष्णा वृष्या बलप्रदा।
कटुश्च लघुश्चक्षुष्या स्वर्ण्या ज्वरनिशान्ध्यहृत॥(शो.नि)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-वातरक्तनाशक, गरम, वीर्यवर्द्धक, बलवर्द्धक, चरपरी हलकी, नेत्रोंको हितकारी, स्वरको उत्तम करनेवाली तथा ज्वर और रतौंधीको दूर करती है।

अन्यच्च।

प्रसारिणीगुरुश्चोष्णा तिक्ता बल्या सरा मता। भग्नास्थिसन्धान-करी कान्तिकृद्धातुवर्द्धिनी॥ वातार्शःशोफकफहा मलस्तम्भ-करी मता। वातरक्तत्रिदोषघ्ना गन्धेति कीर्तिता॥ (नि०र०)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-भारी, गरम, कडवी, बलकारक सारक, टूटी हुई हाडको जोडनेवाली, कान्तिकारक, धातुवर्द्धक, तथा बवासीर, सूजन, और कफको दूर करनेवाली है, मलस्तम्भकारक और वातरक्त तथा त्रिदोषनाशक है।

प्रसारणीको सबकोई जानते हैं, परन्तु अभीतक यह किसीने निश्चय नहीं किया कि, प्रसारणी क्या है? इसको कोई २ ... मरहठी ... और गुजराती ... कहते हैं, ... और ... कोई ... लता और ... भिन्न २ हैं, सो यह ... और ... इसमें ... नहीं, क्योंकि ... है और प्रसारणी ... विचार ... है इससे यहां ... है।

सारिवानामानि ।

सारिवाशारिवानन्तागोपीचोत्पलशारिवा ।
भद्रवल्लीनागजिह्वाकरालाभद्रवल्लिका ॥

अर्थ–सारिवा, शारिवा, अनन्ता, गोपी, उत्पलशारिवा भद्रवल्ली, नागजिह्वा, कराला, भद्रवल्लिका, (गोपवल्ली, सुगन्धा, भद्रा, श्यामा, शारदा, गोपकन्या, गोपा, मतानिका, लता, आस्फोता, काष्ठशारिवा, गोपवधू, धवलशारिवा, कृशोदरी)

कृष्णशारिवानामानि ।



श्यामलताचपालिन्दीगोपिनीकृष्णशारिवा ॥

अर्थ–श्यामलता, पालिन्दी, गोपिनी, कृष्णशारिवा, (चिह्नधारिणी, दृढवन्धिनी, गोपी, गोपवल्ली, गोपा, सारिवा, उत्पलसारिवा, अनन्ता, शारिवा, श्यामा, कालपेपी, महाश्यामा, सुभद्रा, दीर्घमूला, मसूरविदला, कलघण्टिका, गोपवधू, कृष्णमूली, कृष्णा, चन्दनसारिवा, भद्रा, चन्दनगोपा, चन्दना, कृष्णवल्ली)

संस्कृतभाषामें	सारिवा, कृष्णसारिवा ।
हिन्दीभाषामें	गोरीसर, कालीसर, करियासाउ, गौरियासाउ, सालसा, सारिवन इत्यादि ।
वंगभाषामें	अनन्तमूल, श्यामालता, कन्चघण्टि इत्यादि ।
मराठीभाषामें	श्वेतउपलसरी, कृष्णउपलसरी, सुगन्धउपलसरी ।
गुजरातीभाषामें	कपरी, कालीवेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	सारिवा ।
तैलङ्गभाषामें	नीलतिग ।

[illegible] भाषामें [illegible] ।
अंग्रेजी भाषामें इंडियन सार्सापरिला । Indian sarsaparilla.
लैटिन भाषामें हेमिडेस्मस इंडिकस । Hemidesmus indicus.

श्वेतशारिवागुणाः ।

श्वेता तु शारिवा शीता मधुरा शुक्रला गुरुः । स्निग्धा तिक्ता सुगन्धिश्च कुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥ देहदौर्गन्ध्यमन्दाग्निश्वासकासारुचीहरा । आमत्रिदोषविषहृद्रक्तप्रदरापहा ॥ कफातिसारतृड्दाहरक्तपित्तहरा परा । वातनाशकरी प्रोक्ता ऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-गौरीसर-शीतल, मधुर, शुक्रजनक, भारी, स्निग्ध, कडुई, सुगन्धित तथा कोढ, खुजली, ज्वर, देहकी दुर्गन्धता, मन्दाग्नि, श्वास, खांसी, अरुचि, आम, त्रिदोष, विष, रुधिरविकार, प्रदररोग, कफ, अतिसार, तृषा, दाह, रक्तपित्त और वातको हरनेवाली है ।

अपरञ्च ।

अनन्ता ग्राहिणी रक्तपित्तप्रशमनी हिमा ॥

अर्थ-गौरीसर-मलरोधक, रक्तपित्तनाशक और शीतल है ।

कृष्णशारिवागुणाः ।

शारिवा वातपित्तासृक्तृड्दाहच्छर्दिज्वरनाशिनी ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-शारिवा (श्यामालता)-वात, पित्त, रुधिरविकार, तृषा, वमन और ज्वरको हरनेवाली है ।

अपरञ्च ।

कृष्णा तु शारिवा शीता स्वादुर्मधुरवर्तना ।
[illegible] ॥ (नि० र०)

अर्थ-शारिवा-शीतल, [illegible] मधुर और [illegible] है और इसके गुण श्वेतशारिवाके समान जानने ।

द्विविधशारिवागुणाः ।

सारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ।
अग्निमान्द्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम् ॥

दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम्। (भा० प्र०)

अर्थ–दोनोंप्रकारकी सारिवा–स्वादिष्ठ, स्निग्ध, शुक्रजनक, भारी तथा मन्दाग्नि, अरुचि, श्वास, खासी, आम, विष, त्रिदोष, रक्तप्रदर और ज्वरातिसारको हरनेवाली है।

विवरण। कालीसारिवा और सफेदसारिवाकी काली बेल होती है, पत्ते–अनारकी समान होते हैं, उन पत्तोंमें सफेद छोटे होते हैं, बेलकी जडमें कपूर-कचरीकी, समान सुगन्धि आती है, और इसमें दो २ फली आती हैं, कितनेक मनुष्य इसकी जडको सालसापरेला कहते हैं।

भृङ्गराजनामानि।

मार्कवोभृङ्गराजश्चभृङ्गाह्व केशरञ्जन।
पितृप्रियोरगकश्चकेश्य कुन्तलवर्द्धन॥

अर्थ–मार्कव, भृङ्गराज, भृङ्गाह्व, केशरञ्जन, पितृप्रिय, रगक, केश्य, कुन्तलवर्द्धन (भृङ्ग, पतङ्ग, मार्कर, मार्क, नागमार, परु, भृङ्गसोदर, अङ्गारक, एकरज, करञ्जक, भृङ्गरज, भृङ्गार, अजागर, केशराज, मर्कर, भृङ्गारक, भेकराज पकजात)

पीतभृङ्गराजनामानि।

पीतोन्य स्वर्णभृङ्गारोहरिवासोहरिप्रिय।
देवप्रियोवन्दनीय पावनश्चषडाह्वय॥

अर्थ–पीतभृङ्गराज–स्वर्णभृङ्गार, हरिवास, हरिप्रिय, देवप्रिय, वन्दनीय, पावन।

नीलभृङ्गराजनामानि।

नीलस्तुभृङ्गराजोन्योमहानील सुनीलक।
महाभृङ्गोनीलपुष्प श्यामलश्चषडाह्वय॥

अर्थ–नीलभृङ्गराज, महानील, सुनीलक, महाभृङ्ग, नीलपुष्प, श्यामल यह छे नाम हैं।

संस्कृतभाषामें	भृगराज, केशराज।
हिंदीभाषामें	भागरा, भगरा, भेगरिया, भगरैया, कुकुरभागरा।
बंगलाभाषामें	भीमराज, केशुरे।
मराठीभाषामें	माका।

गुजरातीभाषामें भांगरो।
कर्णाटकीभाषामें गरगधुरु।
तैलङ्गीभाषामें गुन्टगलगरेट्ट भृंगराजमुचेट्ट।
ऑरब्बीभाषामें रगायगुरा।
इंग्रेजीभाषामें ट्रेलिंगइक्लिप्टा। Trailing Eclipta
लेटिनभाषामें इक्लिप्टाप्रोस्ट्रेटा। Eclipta Prostrata इक्लिप्टा
अल्बा। alba
फारसीभाषामें जमरज।
अरबीभाषामें कर्जाज।

भृङ्गराजगुणाः।

भृङ्गराजस्तु चक्षुष्यस्तिक्तोष्णः केशरञ्जनः।
कफशोफविषघ्नश्च नीलोऽतिरसायनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-भांगरा-नेत्रोंको हितकारी, कड़वा, गरम केशरंजक (केशोंको काला करनेवाला) तथा कफ सूजन, और विषविनाशक है इनमें भी नीला भांगरा रसायन है।

अन्यच्च।

भृङ्गराजः कटुस्तिक्तो रूक्षोष्णः कफवातहृत्।
रसायनोऽस्त्रगन्धन्तिकुष्ठनेत्रशिरोर्त्तिनुत् ॥ (ध० नि०)

अर्थ-भांगरा-चरपरा कड़वा, रूखा, गरम, कफवातनाशक रसायन तथा दांत, गंड, नेत्ररोग, और सिरकी पीडाको दूर करनेवाला है।

अपिच।

मार्कवस्तिक्तरूक्षोष्णश्चक्षुष्यः केशरञ्जनः। त्वच्योऽतिकृ-
त्तीक्ष्णश्च दन्त्योऽपि योग्यरसायनः ॥ शोफकामलनाजीर्णशिरो-
नेत्ररुजस्तथा। कर्णनासिकाशूलघ्नः कुष्ठदृग्गीःवेतौ ॥
आमेनपाण्डुरोगघ्नः श्लेष्मघ्नः पुंस्तथा। विषघ्नाशनात्पर
पण्डुनाशकरो मत ॥ (नि० र०)

अर्थ-भांगरा-चरपरा रूखा, गरम, नेत्रोंको हितकारी केश और त्वचाको हितकारी, तीक्ष्ण, दांतोंको हितकारी, रसायन तथा शोफ, कामला, अजीर्ण, शिरोरोग, नेत्ररोग, कर्णशूल, ...

कोढ, कृमि, आम, पाण्डुरोग, हृदयरोग, त्वचाके रोग, विष, और कण्डूको दूर करनेवाला है ।

विवरण–भागरेका क्षुप-प्राय' गीली पृथ्वीम होता है, पत्ते खरखरे होते हैं, पत्तोंका रस काला होताहै, सपेद, पीले और काले इन फूलोंके भेदसे तीन प्रकारका है ।

शणपुष्पीनामानि ।

शणपुष्पीस्मृताघण्टाशणपुष्पसमाकृतिः ॥

अर्थ–शणपुष्पी, घण्टा, शणपुष्पसमाकृति (बृहत्पुष्पी, शणिका, शणघण्टिका, शणपुष्पिका, पीतपुष्पी, स्थूलफला, लोमशा, माल्यपुष्पिका और घण्टारवा)

द्वितीयान्यासूक्ष्मपुष्पास्यात्क्षुद्रशणपुष्पिका ।
विष्टिकासूक्ष्मपर्णीचबाणाह्वासूक्ष्मघटिका ॥

अर्थ–दूसरी–सूक्ष्मपुष्पा, क्षुद्रशणपुष्पिका, विष्टिका, सूक्ष्मपर्णा, बाणाह्वा और सूक्ष्मघण्टिका ।

तृतीयान्यावृत्तपर्णीश्वेतपुष्पामहासिता ।
सामहाश्वेतघण्टीचसामहाशणपुष्पिका ॥

अर्थ–तीसरी–वृत्तपर्णा, श्वेतपुष्पा, महासिता, महाश्वेतघण्टी, महाशणपुष्पिका ।

शणनामानि ।



शणस्तुमाल्यपुष्प स्याद्वामक कटुतिक्तक ।
निशादनोदीर्घशाखस्त्वक्सारोदीर्घपल्लव ॥

अर्थ-शण, माल्यपुष्प, वामक, कटुतिक्त, निशादन, दीर्घशाख, त्वक्सार, दीर्घपल्लव ।

संस्कृतभाषामें	शणपुष्पी, द्वि० शणपुष्पी, तृ० शणपुष्पी । शण ।
हिंदीभाषामें	झुनझुनिया, पटशण, वनशण, शणहुली, शणइ, घागही इत्यादि । सन ।
वंगभाषामें	वनझणइ, झनझने, शोणेरगाछ ।
मराठीभाषामें	ताग ।
कोकणीभाषामें	खुळखुळा ।
गुजरातीभाषामें	शण ।
द्राविडभाषामें	जनवकनर ।
कर्णाटकीभाषामें	गिल्लिगिच्चि, चिक्कगिल्ल, मतेकाडविट्टि ।
तैलिङ्गीभाषामें	शणमतुवेल्ल, जेनपनर, रेल्लचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	जेनप्पनर ।
ब्रह्मीभाषामें	पन ।
इंग्रेजीभाषामें	फ्लाक्सहेम्प् । Flax Hemp
लेटिन्भाषामें	क्रोटेलेरिया जुनशिया । Crotalaria-juncea
फारसीभाषामें	लादना ।

शणपुष्पीगुणाः ।

शणपुष्पीकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित । (भा०प्र०)

अर्थ-वनशन (झुनझुनिया)-चरपरी, कडवी, वमनकारक और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

शणपुष्पीरसेतिक्ताकषायाकफवातजित ।
अजीर्णज्वरदोषघ्नीवामनीरक्तदोषनुत ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वनशण-तिक्तरसान्वित, कषेली कफवातनाशक, वमनजनक तथा अजीर्ण, ज्वर और रुधिरविकारको हरनेवाली है ।

अपिच ।

शणघण्टारसेतिक्तातुवरावामनीस्मृता ।
अजीर्णकफवातघ्नीरक्तदोषज्वरजयेत ।
कण्ठास्यरोगहृद्रोगपित्तरुक्सन्निपातहृत् ॥

अर्थ-वनशन-तिक्तरसान्वित, कपेली, वमनजनक तथा अजीर्ण, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, कण्ठरोग, मुखरोग, हृदयरोग, पित्तरोग और सन्निपातको दूर करे है।

क्षुद्रशणपुष्पीगुणा।

शणपुष्पीक्षुद्रतिक्तावम्यारसनियामिका ॥ (रा०नि०)

अर्थ-दूसरी शणपुष्पी-कडवी, वमनकारक, और पारेको बाधनेवाली है।

महाश्वेतागुणा।

महाश्वेतातुवराचोष्णासूतनियामिका।
मोहनेस्तम्भनेचैवप्रशस्ताऋषिभिःस्मृता ॥ (नि०र०)

अर्थ-तीसरी शणपुष्पी-कपेली, गरम, पारेको बाधनेवाली तथा मोहन और स्तम्भनके विषय लीजाती है।

शणगुणा।

शणस्त्वम्लःकपायश्चमलपातकरोमत। गर्भपातरक्तपात वान्तिकृच्चामपातकृत् ॥ उष्णोवातकफघ्नश्चअगमर्दरुजापह। अस्यप्रसूनंप्रदररक्तदोपहरस्मृतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सन-अम्ल (खट्टा), कपेली, मलको पतित करनेवाली, गर्भ और रुधिरको गिरानेवाली, वमनजनक, आमको गिरानेवाली, गरम तथा वात, कफ और अगके टूटनेको दूर करे है। इसका फूल-प्रदर और रुधिरविकारको हरे है।

शणबीजगुणा।

शीतलशणवीजस्याद्ग्राहकश्चगुरुस्मृतम।
इतरेतुगुणा सर्वेशणवत्परिकीर्त्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ-सनके बीज-शीतल, ग्राही और भारी है,गुण सनकी समान जानने।

विवरण। शनकी खेती हिन्दोस्थानमें सर्वत्र अधिकतामे होती है, झाड़रा अडकी समान पत्ता-फलाकार। फूल-पीले होते है। फल लम्बा और खुपल होताहै। व्यवहार-बीज और पत्ते।

त्रायमाणानामानि।

त्रायमाणासुभद्राणीत्रायन्तीबलभद्रिका ॥

अर्थ-त्रायमाणा, सुभद्राणी, त्रायन्ती, बलभद्रिका (बांपक, बल्देवा,

अर्थ-शण, माल्यपुष्प, वामक, कटुतिक्त, निशादन, दीर्घशाख, त्वक्सार, दीर्घपल्लव ।

संस्कृतभाषामें	शणपुष्पी, द्वि० शणपुष्पी, तृ० शणपुष्पी । शण ।
हिंदीभाषामें	झुनझुनिया, पटशण, वनशण, शणहुली, शणई, घागही इत्यादि । सन ।
बंगभाषामें	वनशणइ, झनझने, शोणोरगाछ ।
मराठीभाषामें	ताग ।
कोकणीभाषामें	खुळखुळा ।
गुजरातीभाषामें	शण ।
द्राविडभाषामें	जनवकनर ।
कर्णाटकीभाषामें	गिर्डुगिचि, चिकगिल्ल, मतेकाडविट्टि ।
तैलिङ्गीभाषामें	शणमतुवेल्ल, जेनपनर, रेल्चेट्टु ।
तामिलीभाषामें	जेनप्पनर ।
ब्रह्मीभाषामें	पन ।
इंग्रेजीभाषामें	फ्लाक्सहेम्प् । Flax Hemp
लैटिन्भाषामें	क्रोटेलेरिया जुनाशिया । Crotalaria-juncea
फारसीभाषामें	लादना ।

शणपुष्पीगुणाः ।

शणपुष्पीकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित । (भा०प्र०)

अर्थ-वनशन (झुनझुनिया)-चरपरी, कडवी, वमनकारक और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

शणपुष्पीरसेतिक्ताकषायाकफवातजित ।
अजीर्णज्वरदोषघ्नीवामनीरक्तदोषनुत ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वनशण-तिक्तरसान्वित, कषेली कफवातनाशक, वमनजनक तथा अजीर्ण, ज्वर और रुधिरविकारको हरनेवाली है ।

अपिच ।

शणघण्टारसेतिक्तातुवरावामनीस्मृता ।
अजीर्णकफवातघ्नीरक्तदोषज्वरञ्जयेत ।
कण्ठास्यरोगहृद्रोगपित्तरुक्सन्निपातहृत् ॥

अर्थ-चनशन-तिक्तरसान्वित, कषेली, वमनजनक तथा अजीर्ण, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, कण्ठरोग, मुखरोग, हृदयरोग, पित्तरोग और सन्निपातको दूर करे है ।

क्षुद्रशणपुष्पीगुणा ।

शणपुष्पीक्षुद्रतिक्तावम्यारसनियामिका ॥ (रा०नि०)

अर्थ-दूसरी शणपुष्पी-कडवी, वमनकारक, और पारेको वाधनेवाली है ।

महाश्वेतागुणा ।

महाश्वेतातुतुवराचोष्णासूतनियामिका ।
मोहनेस्तम्भनेचैवप्रशस्ताऋपिभि स्मृता ॥ (नि०र०)

अर्थ-तीसरी शणपुष्पी-कषेली, गरम, पारेको वाधनेवाली तथा मोहन और स्तम्भनके विपय लीजाती है ।

शणगुणा ।

शणस्त्वम्ल कपायश्चमलपातकरोमत· । गर्भपातरक्तपात वान्तिकृचामपातकृत् ॥ उष्णोवातकफघ्नश्चअगमर्दरुजापह । अस्यप्रसूनंप्रदररक्तदोपहरस्मृतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सन-अम्ल (खट्टा), कषेली, मलको पतित करनेवाली, गर्भ और रुधिरको गिरानेवाली, वमनजनक, आमको गिरानेवाली, गरम तथा वात, कफ और अगके टूटनेको दूर करे है । इसका फूल-प्रदर और रुधिरविकारको हरे है ।

शणवीजगुणा ।

शीतलशणवीजस्याद्ग्राहकञ्चगुरुस्मृतम् ।
इतरेतुगुणा सर्वेशणवत्परिकीर्त्तिता· ॥ (नि०र०)

अर्थ-सनके वीज-शीतल, ग्राही और भारी है,गुण सनकी समान जानने।

विवरण । शनकी खेती हिन्दोस्थानमें सर्वत्र अधिकतासे होती है, झादुरा अडकी समान पत्ता-फलाकार । फूल-पीले होते हैं । फल लम्बा और खुफल होताहै । व्यवहार-बीज और पत्ते ।

त्रायमाणानामानि ।

त्रायमाणासुभद्राणीत्रायन्तीवलभद्रिका ॥

अर्थ-त्रायमाणा, सुभद्राणी, त्रायन्ती, वलभद्रिका (वांपक, वलदेवा,

भद्रनाभिका, कुलना, त्रायमाणिका, बलभद्रा, सुक्तामा, वार्षिका, गिरिजा, अनुजा, मंगल्याहा, देवबला, पालिनी, भयनाशिनी, अवनी, रक्षणी, त्राणा)

संस्कृतभाषामें त्रायमाणा।
हिन्दीभाषामें त्रायमान।
बंगभाषामें बडाडुसुर, बला, बहुला, वनभादुलिया इत्यादि।
मराठीभाषामें त्रायमाण।
गुर्जरतीभाषामें त्राहिमान्।
कर्णाटकीभाषाम त्रायमाणा हिमवति प्रसिद्धा।
लेटिन भाषामें थेलिक्ट्रम फोलियो लोझम। Thalictrum Faliolosum
फारसीभाषामें अस्पक।

अस्या गुणा।

त्रायमाणातुतुवराशीतलामधुरासरा। तिक्तापित्तरुजछर्दिं-ज्वरंगुल्मकफविषम॥शूलभ्रमरक्तरुजंक्षयग्लानितृषातथा। हृद्रोगरक्तपित्तञ्चदुर्नामानविनाशयेत ॥ त्रिदोषनाशिनी प्रोक्तापूर्ववैद्यैर्महर्षिभि। (नि० र०)

अर्थ-त्रायमान-कषली, शीतल, मधुर, दस्तावर, कटवी तथा पित्तरोग, वमन, ज्वर, गुल्म, कफ, विष, शूल, भ्रम, रक्तरोग, क्षय, ग्लानि, तृषा, हृदयरोग, रक्तपित्त, बवासीर और त्रिदोषका नाश करनेवाली है।

विवरण। त्रायमानके पत्ते गोजियाकी समान पृथ्वीपर फैलेहुये होते हैं, और बीचम दोदण्डीसी निकलतीहैं, उसके बीजाको त्रायमान कहते हैं। किन्तु कितनेक मनुष्य भ्रममें त्रायमानको गुलबनपसा कहते हैं।

यवतिक्तानामानि।

यवतिक्तामहातिक्ताद्दढपादाविसर्पिणी। नाकुलीनेत्रमीला चशखिनीपत्रतण्डुली॥ तदुलीचाक्षपीडाचसूक्ष्मपुष्पी-यशस्विनी। माहेश्वरीतिक्तयवायावीतिक्तेतिषोडश॥

अर्थ-यवतिक्ता, महातिक्ता, दृढपादा, विसर्पिणी, नाकुली, नेत्रमीला, शखिनी, पत्रतण्डुली, तन्दुली, अक्षपीडा, सूक्ष्मपुष्पी, यशस्विनी, माहेश्वरी, तिक्तयवा, यावी, तिक्ता।

संस्कृतभाषामें यवतिक्ता।

हिन्दीभाषामें शखिनी ।
वगभाषामें यवेची, श्वेतवोना (कालमेघ)
मराठीभाषामें यवोची, टीर्त्वी ।
को० शाखवेल्य ।
गुजरातीभाषामें शखहेल्य आख्युकुटामाणा, भगलिंगी ।
कर्णाटकीभाषामें शखिनी ।
लैटिन्भाषामें एड्रोग्राफिस पेनिक्युलेटा । Andrograph-is-paniculata
ब्रायोनियास्का ब्रेला Bryoniascabrella

अस्या गुणा ।

यवतिक्तासतिक्तास्याद्दीपनीरुचिकृत्परा ।
आमकुष्ठक्रिमिविषदोषघ्नीरेचनीचसा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शखिनी-कटवी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, दस्तोंको लानेवाली, तथा आम, कोढ, कृमि और विषदोषको दूरकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

यवतिक्तामहातिक्तासाग्निकृद्बलवर्द्धिनी ।
तिक्ताज्वरातिसारघ्नीबालानांशुभदासदा ॥ (आ०स०)

अर्थ-शखिनी-जठराग्निको दीपन करनेवाली, बलवर्द्धक, कडवी ज्वरातिसारनाशक और सदैव बालकोंके कल्याण करनेवाली है ।

अपिच ।

शंखिनीकटुतिक्तोष्णागुरु स्निग्धाविशोधिनी ।
त्रिदोषशमनीकुष्ठक्षयोदरविनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शखिनी-चरपरी कडवी, गरम, भारी, स्निग्ध, विशोधक, तथा त्रिदोष, कोढ, क्षय और उदररोगको दूरकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

यवतिक्तातुकटुकारुचिराचाग्निदीपनी ।
साम्लाकटुकातीक्ष्णास्निग्धोष्णाचत्रिदोषहा ॥
कुष्ठामविषदोषघ्नीरक्तदोषकृमींस्तथा ।
शोफंजयेच्चोपरञ्जनाशनेदितिकीर्तितम् ॥ (नि०रा०)

अर्थ-शखिनी-कडवी, चरपरी, रुचिकारक, अग्निदीपक, सारक, (दस्तावर) अम्ल (खट्टी), कटु, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, त्रिदोषनाशक तथा कुष्ठ, आम, विषविकार, रक्तदोष, कृमि, सूजन और उदररोगको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । शखिनीकी वेल-शिवलिंगीकी समान होतीहै, फल भी शिवलिंगीकी समान होतेहैं, शखिनीके बीज-शखकी सदृशहोतेहैं, शिवलिंगीके फलके ऊपर सफेद छींटे होतेहैं,किन्तु शखिनीके फलके उपर छींटे नहीं होते।

लिङ्गिनीनामानि ।

लिङ्गिनीबहुपत्रास्यादीश्वरीशैवमल्लिका । स्वयम्भूर्लिंगसम्भूतालिंगीचित्रफलाऽमृता ॥ पंडोलीलिंगजादेवीचण्डापस्तम्भिनीतथा । शिवजाशिववल्लीचविज्ञेयाषोडशाह्वया ॥

अर्थ-लिंगिनी, बहुपत्रा, ईश्वरी, शैवमल्लिका, स्वयम्भू, लिंगसम्भूता, लिंगी, चित्रफला, पडोली, लिंगजा, देवी, चण्डा, आपस्तम्भिनी, शिवजा, शिववल्ली (शिवमल्लिका, वकपुष्पा, और तुत्थिनी)

संस्कृतभाषामें	लिंगिनी ।
हिन्दीभाषामें	शिवलिंगी, ईश्वरलिंगी ।
बंगभाषामें	शिवलिंगिनी ।
मराठीभाषामें	शिवलिंगी वाङ्गवली ।
गुजरातीभाषामें	शिवलिंगी ।
कर्णाटकीभाषामें	पचगुरिया ईश्वरलिंगी ।
लैटिनभाषामें	ब्रायोनिया लेसिनियोसा । Bryonia lacinıosa

अस्या गुणाः ।

लिंगिनीकटुरुष्णाचदुर्गन्धाचरसायनी ।
सर्वसिद्धिकरीदिव्यावश्यारसनियामिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शिवलिंगी-चरपरी, गरम, दुर्गन्ध, रसायन,सर्वसिद्धिकारक, दिव्य, वशीकरण और पारेको बाधनेवाली है ।

अपिच ।

लिंगिनीकटुकाचोष्णादुर्गन्धाचरसायनी ।
सर्वसिद्धिप्रदालोहस्तम्भिनीसूतबन्धिनी ॥

सिध्मनाशकरीवश्यकारिणीचप्रकीर्तिता । (नि०र०)

अर्थ–शिवलिङ्गी–चरपरी, गरम, दुर्गन्धित, रसायन, सर्वसिद्धिदायक, लोहस्तम्भक, पारदको बाधनेवाली, सिध्मनाशक और वशीकरण है ।

विवरण । शिवलिंगीकी वेल होतीहै, फल–नीले और गोल होतेह, पकनेपर लाल पडजातेहैं, फलके ऊपर सपेद चिन्ह होते हैं, फलमेंसे बीज निकलतेहैं, उन बीजोंमें शिवके लिंगका, आकार होताहै ।

मूर्वानामानि ।

मूर्वामधुरसादेवीगोकर्णीदृढसूत्रिका ।
तेजनीपीलुपर्णीचधनुर्मालाधनुर्गुणा ॥

अर्थ–मूर्वा, मधुरसा, देवी, गोकर्णी, दृढसूत्रिका, तेजनी, पीलुपर्णी, धनुःमाला, धनुर्गुणा (मोरटा, स्रवा, मधुलिका, धनु श्रेणी, कर्म्मकरी, धनुःशाखा, श्रवा, मूर्वी, मधुश्रेणी, धनु, श्रेणी, सुरङ्गिका, देवश्रेणी, पृथक्त्वचा, मधुस्रवा, अतिरसा, पीलुपर्णिका, दिव्यलता, ज्वलिनी, गोपवल्ली)

संस्कृतभाषामें	मूर्वा ।
हिन्दीभाषामें	चूर्णहार, मुर्हरी, चुरनहार ।
वंगभाषामें	मुर्वा, मुर्गा, मुरहर, शोचमुखी, बोडाचक्र इत्यादि ।
मराठीभाषामें	मोरवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	मुहुरसि ।
तैलिङ्गीभाषाम	पागचेट्टु, सग, चग, सागा ।
तामिलीभाषामें	मरूल ।
का०	मोरहरी ।
लैटिन् भाषामें	क्लिमेटिस ट्राईलोवा । Olomatistriloba

अस्या गुणाः ।

मूर्वासरागुरु स्वादुस्तिक्तापित्तास्रमेहनुत ।
त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डुकुष्ठज्वरापहा ॥ (धन्वन्तरि)

अर्थ–चूर्णहार–सारक (दस्तावर), स्वादिष्ठ, कडवी तथा रक्तपित्त,प्रमेह, त्रिदोष, तृषा, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मूर्वातिक्ताकषायोष्णाहृद्रोगकफवातहृत ।

अर्थ-शखिनी-कडवी, चरपरी, रुचिकारक, अग्निदीपक, सारक, (दस्तावर) अम्ल (खट्टी), कटु, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, त्रिदोषनाशक तथा कुष्ठ, आम, विषविकार, रक्तदोष, कृमि, सूजन और उदररोगको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । शखिनीकी बेल-शिवलिंगीकी समान होतीहै, फल भी शिवलिंगीकी समान होतेहैं, शखिनीके बीज-शखकी सदृशहोतेहैं, शिवलिंगीके फलके ऊपर सफेद छींटे होतेहैं,किन्तु शखिनीके फलके ऊपर छींटे नहीं होते।

लिङ्गिनीनामानि ।

लिङ्गिनीबहुपत्रास्यादीश्वरीशैवमल्लिका । स्वयम्भूलिंगस-
…स्मृता ॥ पडोलीलिंगजादेवीचण्डाप-

अर्थ-चूर्णहार-कपेली, कडवी, स्व॥८४॥ …षोडशाह्वया ॥
दस्तावर, त्रिदोषनाशक तथा रुधिरविकार, मेदोरोग का८, …गसम्भूता,
वमन, मुखदोष, भ्रम, कण्डू, तृषा, हृदयरोग, कफ, पित्त, वात और ।५ …
ज्वरको दूर करनेवाली है । इसका कन्द-कृमि, कृमिकीलकरोग और विषविकारको दूर करेहै ।

विवरण । मूर्वाकी बेल वनमें होतीहै, इसमे छोटे २ और मधुर २ फल लगते हैं, पत्ते-घीकुआरकी समान चिकने और कुछ मोटे २ होते हैं ।

काकमाचीनामानि ।



मकोय।

काकमाचीध्वांक्षमाचीवायसीचवनाघना ॥

सिध्मनाशकरीवश्यकारिणीचप्रकीर्तिता । (नि०र०)

अर्थ–शिवलिङ्गी–चरपरी, गरम, दुर्गन्धित, रसायन, सर्वसिद्धिदायक, लोहस्तम्भक, पारदको वाधनेवाली, सिध्मनाशक और वशीकरण है ।

विवरण । शिवलिंगीकी वेल होतीहै, फल–नीले और गोल होतेहैं, पकनेपर लाल पडजातेहैं, फलके ऊपर सपेद चित्र होते हैं, फलमेसे बीज निकलतेहैं, उन बीजोंमे शिवके लिंगका, आकार होताहै ।

मूर्वानामानि ।

मूर्वामधुरसादेवीगोकर्णीदृढसूत्रिका ।
तेजनीपीलुपर्णीचधनुर्मालाधनुर्गुणा ॥

अर्थ–मूर्वा, मधुरसा, देवी, गोकर्णी [illegible]
र्माला, धनुर्गुणा (मोम्म सालनम् नाइग्रम् । Solanum nigrum
शाखा, श्रापामें रोवातरीख ।
मअरबीभापामें एनबुस्सालव ।

अस्या गुणा ।

काकमाचीत्रिदोषघ्नीस्निग्धोष्णास्वरशुक्रदा ।
तिक्तारसायनीशोथकुष्ठाशोज्वरमेहजित ॥
कटुनेत्रहिताहिक्काछर्दिहृद्रोगनाशिनी । (भा० प्र०)

अर्थ–मकोय–त्रिदोपनाशक, स्निग्ध, गरम, स्वरजनक, शुक्रकारक, कडवी, रसायन, चरपरी, नेत्रोंको हितकारि तथा सूजन, कोढ, ववासीर, ज्वर, प्रमेह, हिचकी, वमन और हृदयरोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

काकमाचीकटुस्तिक्तरसोष्णाकफनाशिनी ।
शूलार्श शोफदोषघ्नीकुष्ठकण्डूतिहारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ–मकोय–चरपरी, तिक्तरसान्वित, गरम, कफनाशक तथा शूल, ववासीर, सूजन, कोढ और कण्डूका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

काकमाचीसरास्वर्य्यावृष्यादोपत्रयापहा ।
नात्युष्णाशीतलानातिकुष्ठहन्त्रीरसायनी॥ (शो०नि०)

अर्थ-मकोय-सारक (दस्तावर), स्वरको उत्तम करनेवाली, वीर्य्य वर्द्धक, त्रिदोषनाशक, न अत्यन्त उष्ण है, और न अत्यन्त शीतल है, कुष्ठनाशक और रसायन है ।

अपिच ।

काकमाचीरसेतिक्ताचोष्णाकट्टीरसायनी । वृष्यास्निग्धाच स्वर्य्याचहृद्याधातुविवर्द्धिनी ॥ नेत्र्यारुच्यासरालघ्वीकफशूलार्शशोफहा । त्रिदोषकुष्ठकण्डूतिकर्णकीटातिसारहा ॥ हिक्काछर्दिश्वासकासज्वरहृद्रोगमेहहा । (नि० र०)

अर्थ-मकोय-तिक्तरसान्वित, गरम, चरपरी, रसायन, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, स्वरको उत्तम करनेवाली, हृदयको हितकारी, धातुवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, दस्तावर, हलकी तथा कफ, शूल, ववासीर, सूजन, त्रिदोष, कोढ, कण्डू, कर्णकीट, अतिसार, हिचकी, वमन, श्वास, खाँसी, ज्वर और हृदयरोगको हरनेवाली है ।

विवरण । मकोयका-क्षुप होताहै, पत्ते-गोल और लम्बे । फूल-सपेद रंगका छोटा । फल-चोटलीकी समान गोल और गुच्छोंमे आते हैं । फल पकनेपर लाल रंगके और किसी २ के काले रंगके भी होजातेहैं ।

काकजंघानामानि ।



काकजंघाचकाकाञ्चीकाकाङ्गीकाकनासिका ॥

अर्थ-काकजंघा, काकाञ्ची, काकाङ्गी, काकनासिका (काका, काकनासा, काककुन्ना, शूर्पीयल, काकाह्वा, ध्वाक्षजंघा, काकाह्वा, सुलोमशा, पारावतपदी, दासी, नदीकान्ता, काकी, मुरगी)

संस्कृतभाषामें काकजंघा ।
हिन्दीभाषामें काकजंघा, ममी ।

वगभापामें	केउयाठेडा काटागुडकाउली ।
मराठीभापामें	कागाचें झाड ।
गुजरातीभापामें	अवेडी ।
कर्णाटकीभापामें	जीरीचिल्लेच ।
तैलिंगीभापामें	नालादुच्चीणीके ।
लैटिन्भापामं	हैंपलेथिस् हैंटेस्युलेरीस । Leea Hirta

अस्या गुणा ।

काकजघातुतिक्तोष्णाकृमिव्रणकफापहा ।
बाधिर्य्याजीर्णजित्कट्वीविपमज्वरहारिणी (रा० नि०)

अर्थ–काकजघा (मसी)–कडवी, गरम, चरपरी तथा कृमि, घाव,,कफ, वधिरता, अजीर्ण और विपम ज्वरको दूर करनेवाली है ।

विवरण। काकजघाके क्षुप-जगलमे और वनोंमें वहुत होतेहैं, पत्ते–लम्बे २ हरे और काले रगके होते हैं, फूल–छोटे २ और काले रगके होते हैं। पत्तापर खरखरापन और वारीक २ रुआसा होता है, शाखा गाठेदार होती है और उनमे थोडी २ दूरपर ऐंडावेडापन होता है ।

अन्यच्च ।

काकजघाहिमातिक्ताकपायाकफपित्तनुत ।
निहन्तिज्वरपित्तास्रव्रणकण्डूविपक्रिमीन् ॥ (भा०प्र०)
"क्षतोपयोगिकाचैववाधिर्य्यश्चविनाशयेत् ।"

अर्थ–काकजघा (मसी)–शीतल, कडवी, कपेली तथा कफ, पित्त, ज्वर, रक्तपित्त, कण्डू, विप, और कृमिका नाश करेहै। तथा क्षतरोगमें हितकारी और वधिरताको दूर करे है ।

कायनाशानामानि ।

काकनासातुकाकांगीकाकतुण्डफलाचसा ।

अर्थ–काकनासा, काकागी, काकतुण्डफला (ध्वाक्षनासा, काकतुण्डी, वायसी, सुरगी, तस्करस्नायु, ध्वाक्षतुण्डा, सुनासिका, वायसाह्वा, ध्वाक्षनखी, काकाक्षी, ध्वाक्षनासिका, काकप्राणा, काकश्मश्रु, चोरस्नायु, शिरोचला)

सस्कृतभापामें	काकनासा ।
हिन्दीभापामें	कौआठोडी ।
वगभापामें	केउयाठुटी ।

मराठीभाषामें श्वेतकावळी ।
कर्णाटकीभाषामें हिरीयकागे डोले वडिलि कट्टुरली ।
तैलिङ्गीभाषामें वेल्लमसन्दिचेट्टु, पुसगुलिविन्दचेट्टु, काकिदोंडचेट्टु।
लैटिन्‌भाषामें जिम्निमासिल्वेस्ट्रि । Gymurbma Sylvestre

अस्या गुणाः ।

काकनासाकषायोष्णाकटुकारसपाकयो ।
कफघ्नीवामनीतिक्ताशोफार्श·श्वित्रकुष्ठनुत ॥ (भा प्र)

अर्थ-कौआठोडी-कषेली, गरम, रसमें चरपरी और पचनेमेंभी चरपरी, कफनाशक, वमनकारक, कडवी, तथा सूजन, बवासीर और श्वित्रकुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

काकनासातुमधुराशिशिरापित्तहारिणी ।
रसायनीदार्ढ्यकरीविशेषात्पलितापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कौआठोडी-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रसायन, दृढताकारक और विशेषकरके पलित (बालोंका धवल होजाना) को दूर करे है । कौआठोडी,-विशेषकरके जगल और कठिनकी भूमिमें होतीहै, पत्ते-गुलाबके पत्तोंसे छोटे, फूल-नीले और सुफेद रगके कौवेकी नासिकाकी समान होतेहै, इसपर फली आतीहै बीज लोबियेकी समान निकलते हैं ।

नागपुष्पीनामानि ।

नागपुष्पीश्वेतपुष्पानागिनीरामदूतिका ॥

अर्थ-नागपुष्पी, श्वेतपुष्पा, नागिनी, रामदूतिका ।

अस्या गुणाः ।

नागिनीरेचनीतिक्तातीक्ष्णोष्णाकफपित्तनुत ।
विनिहन्तिविषशूलयोनिदोषवमिक्रिमीन् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-नागपुष्पी-दस्तावर, कडवी, तीक्ष्ण, गरम तथा कफ, पित्त, विष, शूल, योनिदोष, वमन और कृमिरोगको दूर करे है ।

विवरण । नागपुष्पीकी बेल चलतीहै, बनके वृक्षोंपर फैलजातीहै, फूल-सफेद और काले होतेहै, एक एक शाखामें एक एक पत्ता होताहै, इसके नीचे कद होताहै ।

मेषशृङ्गीनामानि।

मेषशृङ्गीमेषवल्लीचक्षुर्मेषविषाणिका ॥

अर्थ-मेषशृगी, मेषवल्ली, चक्षु, मेषविषाणिका (नन्दीवृक्ष, चक्षुर्वहल, मेढ्रशृगी, गृहद्रुमा, बहलचक्षु, विषाणी, अजशृगिका, विषाणिका, अजशृङ्गी, चक्रश्रेणी, अजगन्धिनी, मौर्वी, नेत्रौषधी, आवर्तिनी, वर्तिका, सर्पदंष्ट्रिका, चक्षुष्या, तिक्तदुग्धा, पुत्रशृगी, कर्णिका, अक्षिभेषज)

संस्कृतभाषामें	मेषशृङ्गी, अजशृङ्गी।
हिन्दीभाषामें	मेढाशींगी।
बंगलाभाषामें	मेडाशिंगे, गाडलशिंगी, छागलबेंटे।
मराठीभाषामें	मेंडफळी, केवणीच्या शेंगा।
गुजरातीभाषामें	मडाशिंगी आटडीनी शींग।
कर्णाटकीभाषामें	उरियमर।
इंग्रेजीभाषामें	स्क्रूट्री। Screw tree
लैटिन् भाषामें	हेलीक्टेरीस् इसोरा। Helicteris isora
	जिमनेमा सिलवेसट्री। Gymnemasylves-tree
फारसीभाषामें	किस्त।
अरबीभाषामें	बर्किस्त।

अस्या गुणाः।

अजशृंगीरसेतिक्तारूक्षापाकेकटु स्मृता। चक्षुष्याशीतला स्वाद्वीबल्याभेदकरीमता ॥रसायनातुतुवरादाहपित्तकफापहा। रक्तरुक्कासतिमिरश्वासव्रणविषापहा॥ कृम्यर्श शूलहृद्रोगनाशिनीशोथहास्मृता॥ कुष्ठवातनाशयतिफलमस्यास्तुतिक्तकम ॥ कटूष्णदीपनंत्वरुच्यचाम्लपटुस्मृतम। स्रमनकुष्ठमेहघ्नकासक्रिमिकफप्रणुत् ॥ विषदोषव्रणवातनाशयेदितिकीर्त्तितम्। (नि०र०)

अर्थ-मेढाशिंगी-रसमें कडवी, रूखी, पचनेमें चरपरी, नेत्रोंको हितकारी शीतल, स्वादिष्ठ, बलकारक, भेदक, रसायन, कषेली तथा दाह, पित्त, कफ, रक्तविकार, खांसी, तिमिररोग, श्वास, व्रण, विष, कृमि, बवासीर, हृदयरोग, सूजन, कोढ और वातको विनाश करनेवाली है। इसका फल-कडवा, चर-

परा, गरम, दीपन, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, खट्टा, खारा, मगन, तथा कोढ, प्रमेह, खाँसी, कृमि, कफ, विषविकार, व्रण, और वातको दूर करनेवाली है।

विवरण। मेढाशिंगीका वडा वृक्ष होताहै, पत्ते-फालसेके समान, और फूल-लाल होते हैं, इसकी फली गोल और लम्बी होतीहै, इसके वृक्ष प्राय पर्वतोंपर बहुत होतेहैं।

हंसपादीनामानि।



हंसपादीकीरमातात्रिपादीचमधुस्रवा।

अर्थ-हंसपादी, कीरमाता, त्रिपादी, मधुस्रवा (सुवहा, हंसपदी, गोधांघ्रि, त्रिफला, गोधापदिका, त्रिदला, हंसवती, चित्रपदा, हंसपदिका, हंसांघ्रि, रक्तपादी, त्रिपदा, घृतमण्डलिका, विश्वग्रन्थि, त्रिपदिका, त्रिपर्दी, कीटमारी, कर्णाटी, ताम्रपादी, विक्रान्ता, प्रह्लादनी, पदाङ्गी, शीताङ्गी, सूतपान्तिका, सञ्चारिणी, पदिका, महादी, कीरपादिका, धार्त्तराष्ट्रपदी, गोधापदी, त्रिपादिका, रक्तपादी)

संस्कृतभाषामें	हंसपादी, गोधापदी।
हिन्दीभाषामें	हंसपादी, हंसपगी।
बंगभाषामें	गोयालेलता।
मराठीभाषामें	लाल लाजाळू।
गुजरातीभाषामें	हंसराज कालीडाडलीनो।
कर्णाटकीभाषामें	नविलडि।
तैलंगीभाषामें	हंसपादम्।
इंग्रेजीभाषामें	मेडनहेर। Maiden hair
लैटिनभाषामें	एडिएन्टम ल्युन्युलेटम। Adiantum Lunulatum
फार्सीभाषामें	परस्या उशान।
अर्वीभाषामें	शारलजीन शाळल्अद।

अस्या गुणाः ।

हंसपादीगुरुःशीता हन्ति रक्तविपव्रणान् ।
विसर्पदाहातीसारलूताभूताग्निरोहिणी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हंसपादी-भारी, शीतल तथा रुधिरविकार, विप, व्रण, विसर्प, दाह, अतिसार, लूता, भूतवाधा और अग्निरोहिणीरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

हंसपादीतुकटुकाचोष्णाप्रोक्तारसायनी ।
भूतवाधाविपचैवापस्मारभ्रमनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ-हंसपादी-चरपरी, गरम, रसायन तथा भूतवाधा, विप, अपस्मार और भ्रमको हरनेवाली है ।

विवरण । हंसपदीके क्षुप-जलाशयके समीप अत्यन्त शीतल स्थानोंम, होते हैं, विशेष करके कुँएँ वावडी इत्यादि स्थानोंमें वहुत होते हैं, इसको इस देशमें हंसराज कहते हैं, इसकी जड लाल और कोमल होतीहै, पत्ते-हरे २ वहुत छोटे २ होते है ।

सोमलतानामानि ।

सोमलतासोमवल्लीसोमक्षीरीद्विजप्रिया ॥

अर्थ-सोमलता, सोमवल्ली, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया (चन्द्रवल्लरी, इन्दुरेखा, सोमवल्लिका, महागुल्मा, यज्ञश्रेष्ठा, धनुर्लता, सोमार्हा, गुल्मवल्ली, यज्ञवल्ली, सोमक्षीरा, सोमा, यज्ञाङ्गा)

संस्कृतभापामें	सोमवल्ली ।
हिन्दीभापामें	सोमवल्ली, सोमलता ।
वंगभापामें	सोमलता ।
मराठीभापामें	सोमवल्ली ।
कर्णाटकीभापामें	सोमवल्ली ।
तैलिङ्गीभापामें	पल्लटीजी, टिंगटमुम्मुडु, पुल्लतोगे ।
लैटिन्भापामें	सारकोष्टिमा ब्रेवीस्टिग्मा Sarcostemma brevistigma

अस्या गुणाः ।

सोमवल्लीत्रिदोपघ्नीकटुतिक्तारसायनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सोमलता-त्रिदोपनाशक, चरपरी, कडवी और रसायन है ।

अन्यच्च ।

सोमवल्लीकटु शीतामधुरापित्तदाहनुत ।
तृष्णाविशोषशमनीपावनीयज्ञसाधनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ–सोमलता–चरपरी, शीतल, मधुर तथा पित्त, दाह, तृषा और विशोषको शान्त करनेवाली है, पवित्र और यज्ञसाधक है ।

विवरण । पृहरकी जो कोई प्रकारकी जातिहैं उनमेंसे सोमलता भी एकभांतिकी वेल है, इसमें शुक्ल पक्षके दिनोंमें क्रमवार प्रतिपदासे लेकर पूर्णमासीतक एक एक पत्ता प्रतिवार निकलताहै, पन्द्रहतिथियोंमें पन्द्रह पत्ते होजातेहैं, फिर कृष्णपक्षकी परीवासे लेकर अमावास्यातक एक एक पत्ता प्रतिदिन गिरता जाताहै, पन्द्रहदिनमें एक पत्ताभी नहीं रहता, इस लताका चन्द्रमासे अविच्छेदहै, इसकारण इस अद्भुतलताका नाम सोमलताहै ।

आकाशवल्लीनामानि ।

आकाशवल.



आकाशवल्लीतुबुधे कथिताऽमरवल्लरी ॥

अर्थ–आकाशवल्ली, अमरवल्ली, (खवल्ली, दु स्पर्शा, व्योमवल्लिरा)

सस्कृतभाषामें	आकाशवल्ली ।
हिंदीभाषामें	आकाशबेल, अमरबेल ।
बंगभाषामें	आलोकलता, आकाशबेल ।
मराठीभाषामें	आकाशवेल, अमरवेल ।
गुजरातीभाषामें	अमरवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	नेदमुदवल्ली ।
तैलिङ्गीभाषामें	इन्द्रजाल ।
लेटिन्भाषामें	कसकुटारी फ्लेक्सा । Cuscutareflexa कैसियाफिलिफोर्मिस । Cassythafiliformis
अरबीभाषामें	अफ्तिमून ।

अस्या गुणा ।

खवल्लीग्राहिणीतिक्तापिच्छिलाक्ष्यामयापहा ।
तुवराग्निकरीहृद्यापित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-आकाशवेल-ग्राही, कडवी, पिच्छल, अक्षिरोगनाशक, कपेली, अग्निजनक, हृदयको हितकारी, तथा पित्त, कफ और आमवातनाशक है ।

अन्यच्च ।

आकाशवल्लीकटुकामधुरापित्तनाशिनी ।
वृष्यारसायनीवल्यादिव्यौषधिपरास्मृता ॥ (रा०नि०)

अर्थ-आकाशवेल-चरपरी, मधुर, पित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, वलकारक और दिव्यौषधि है ।

विवरण । आकाशवेल-डोरेकी समान वृक्षोंपै फैली हुई होती है, रग-पीला होताहै, फूल-सफेद आताहै, और इसकी जड नहीं होती । व्यवहार सर्वांग । मात्रा २ तोले ।

पातालगरुडीनामानि ।



छिलिहिण्डोमहामूल पातालगरुडाह्वय ॥

अर्थ-छिलिहिण्ड, महामूल, पातालगरुड (वत्सादनी, सोमवल्ली, तिक्तागा, मोचकाभिधा, तार्क्षी, सौपर्णी, गारुडी, दीर्घकाण्डा, दृढकाण्डा, महावला, दीर्घवल्ली, दृढलता)

संस्कृतभाषामें	पातालगरुडी ।
हिंदीभाषामें	छिरेटा ।
वंगभाषामें	शिलिन्दा ।

मराठीभाषामें तानीचा वेल, मुयपाढ ।
गुजरातीभाषामें वेवडीओलप ।
तैलिङ्गीभाषामें दूसरतोगे ।
लेटिन्भाषामें कोक्युलस् विलोसस् । Cocculus villosus ।

अस्या गुणाः ।

छिलिहिण्ड परवृष्य.कफघ्न पवनाह्वय ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-छिरेटा-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, कफ और वातनाशक है ।

अपरञ्च ।

वत्सादनीतुमधुरापित्तदाहास्रदोषनुत् ।
वृष्यासन्तर्पणीरुच्याविषदोषविनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-छिरेटा-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, सन्तर्पण, रुचिकारक, तथा दाह, पित्त, रुधिरविकार और विषदोषविनाशक है ।

विवरण । पातालगरुडकी अर्थात् छिरेटीकी वेल होतीहै, यह बहुत मोटी और दृढ होती है, इसके ततुभी बहुत घने होतेहैं, इसके फल छोटे २ और गुच्छोंमें लगतेहैं, तरुण अवस्थामें हरे और पकनेपर काले होजाते है, इसके पत्ते सीसमके पत्तोंकी समान होते हैं, उनका रंग निकालकर जलमें डालनेसे जल जमजाता है ।

वन्दानामानि ।



वन्दावृक्षादनीमेव्यापरपुष्टापरश्रया ॥

अर्थ–वदा, वृक्षादनी, सेव्या, परपुष्टा, पराश्रया (वृक्षरुहा, जीवन्तिका, काकुरुहा, वन्दाका, शेखरा, वन्दका, वल्दक, नीलवल्ली, वन्दाकी, परवासिका, वशिनी, पुत्रिणी, वन्ध्या, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी, वृक्षादनी, कामवृक्ष, शैखरी, केशरूपा, तरुरुहा, तरुस्था, गन्धमादनी, कामिनी, तरुभुक, श्यामा, उपदी, वृक्षभक्षा, नीलवर्णा, वन्दाकी, गन्धमादनी और गेहिणी)

संस्कृतभाषामें	वन्दा ।
हिन्दीभाषामें	वन्दा, वन्दाल, वदाक, वादा ।
बंगलाभाषामें	वाँदु, परगाछा, मान्दडा ।
मराठीभाषामें	वादागुल, कामरुख ।
गुजरातीभाषामें	वादो ।
कर्णाटकीभाषामें	वन्दणिके ।
तैलिङ्गीभाषामें	वाजिनीके ।
लैटिन् भाषामें	लोरेन्थस लोंगिफोलियस् । Loranthus Longifolious

अस्या गुणाः ।

वन्दाकःकफवातास्रस्नायुव्रणविषापहः ॥ (म० नि०)

अर्थ–वादा–कफ, वात, रुधिरविकार, स्नायु, व्रण और विषविनाशक है।

अन्यच्च ।

वदाक स्याद्धिमस्तिक्त कषायोमधुरोरसे ।
मांगल्य·कफवातास्ररक्षोव्रणविषापहः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–वन्दा–शीतल, कडवा, कषेला, मधुररसान्वित, मङ्गलजनक तथा कफ, वात, रुधिरविकार, राक्षसबाधा, व्रण और विषविनाशक है ।

अपिच ।

वन्दाकस्तिक्तशिशिर·कफपित्तश्रमापह ।
वश्यादिसिद्धिदोवृष्य कषायश्चरसायन ॥ (रा०नि०)

अर्थ–वन्दा–कडवा, शीतल, कफनाशक, पित्तघ्न, श्रमहर्ता, वशीकरणादिसिद्धिकर्ता, वीर्यवर्द्धक, कषेला और रसायन है । वन्दा, वृक्षोंकी शाखोंपे होता है ।

विवरण । वन्दा विविधप्रकारका वृक्षोंपर वृक्षसरीखा होजाता है, उसकी जड अलग नहीं होती, वृक्षमें उत्पन्न होजाता है कोई २ ऐसा कहते हैं कि, काकादिक कोई पक्षी किसी वृक्षकी शाखा लाकर वृक्षपर रखदेतेहैं, उसीमें

मराठीभाषामें तानीचा वेल, भुयपाद ।
गुजरातीभाषामें वेवडीओळप ।
तैलिङ्गीभाषामें दूसरतोगे ।
लैटिन्भाषामें कोक्युलस विलोसस् । (occulus villosus)

अस्या गुणाः ।

छिलिहिण्डः परं वृष्यः कफघ्नः पवनापहः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-छिरेटा-अत्यन्त वीर्यवर्द्धक, कफ और वातनाशक है ।

अन्यच्च ।

वत्सादनी तु मधुरा पित्तदाहास्रदोषनुत् ।
[illegible] ॥ (रा०नि०)

[illegible]भाषामें वडवती [illegible]
वंगभाषामें वडपाथरकुचि ।
तैलिङ्गीभाषामें पिण्डि, वण्डचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें लैकोपेडियम् ।

अस्या गुणाः ।

वटपत्री कषायोष्णा योनिमूत्रगदापहा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वडपत्री-कषेली, गरम तथा योनिरोग और मूत्ररोगको दूर करे है।

अपिच ।

वटपत्र्यश्मभिच्छीता मधुरा तु बलप्रदा ।
किञ्चिदग्नेर्दीप्तिकरी व्रणकृच्छ्रप्रमेहजित ॥
अश्मरीं मूत्रघातञ्च भगन्दरं विनाशयेत। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-वडपत्री-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, किञ्चित् अग्निको दीपन करने वाली, तथा घाव, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, पथरी, मूत्रघात और भगन्दररोगको दूर करनेवाली है ।

विवरण । वटपत्री पाषाणभेदकीका भेद है, इसके पत्त-वडके समान होते है, इसीसे इसका नाम वटपत्री है ।

मत्स्याक्षीनामानि ।

मत्स्य[illegible] [illegible] [illegible] ।मत्स्या[illegible]ति च ॥
अर्थ-म[illegible] [illegible] , मत्स्यादनी ।

म[illegible] [illegible] जित् ।

अर्थ-वदा, वृक्षादनी, सेव्या, परपुष्टा, पराश्रया (वृक्षरुहा, जीवन्तिका, काकुरुहा, वन्दाका, शेखरा, वन्दका, वल्दक, नीलवल्ली, वन्दाकी, परवासिका, वशिनी, पुत्रिणी, वन्ध्या, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी, वृक्षादनी, कामवृक्ष, शैखरी, केशरूपा, तरुरुहा, तरुस्था, गन्धमादनी, कामिनी, तरुसुक, श्यामा, उपदी, वृक्षभक्षा, नीलवर्णा, वन्दाकी, गन्धमादनी और रोहिणी)

संस्कृतभाषामें	वन्दा ।
हिन्दीभाषामें	वन्दा, वन्दाल, वदाक, वादा ।
बंगलाभाषामें	बाँदु, परगाछा, मान्दडा ।
मराठीभाषामें	वादागुल, कामरुख ।
गुजराती[illegible]	[illegible]

वृश्चिकोन्दुरुसर्पाणांविषघ्नीव्रणरोपणी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सर्पाक्षी (सरहटी, गडनी)-चरपरी, कडवी, गरम, कृमिनाशक तथा विच्छू, मूसा और साँपके विषको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सर्पाक्षी-सरफोंकेका भेदहै, सरफोंकेमें और इसमें किसी प्रकारका भेद नहीं पाया जाता है ।

शंखपुष्पीनामानि ।

शखपुष्पी (शखाहूली)

मेध्याचण्डाशखपुष्पीसुपुष्पीकम्बुमालिनी ।

अर्थ-शखपुष्पी, मेध्या, चण्डा, सुपुष्पी, कम्बुमालिनी, (शखाह्वा,

पीतपुष्पी, कम्बुपुष्पा, मलविनाशिनी, किरीटी, शंखकुसुमा, भूलग्ना, शंखमालिनी, माङ्गल्यकुसुमा, कम्बुपुष्पी, वनमालिनी, इतरा, सूक्ष्मपत्रा, सर्पाक्षी, रक्तपुष्पी, रक्तपुष्पिका, नीलपुष्पी, विष्णुक्रान्ता, सितपुष्पी, श्वेतकुसुमा, वनविलासिनी)

संस्कृतभाषामें	शंखपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	शंखाहुली, कौडियाली ।
बंगलाभाषामें	शंखाहुली, डानकुनी ।
मराठीभाषामें	शंखावळी, शंखोनी ।
गुजरातीभाषामें	शंखावली ।
कर्णाटकीभाषामें	शंखपुष्पी ।
लेटिन्भाषामें	इवोल्व्युलस इरेक्टा (सफेद) Evolvulus Irecta इवोल्व्युलस् आलसिनोइडिस् (लाल) E Alsinoides इवोल्व्युलस् हर्सटस् (काली) E hirsutus

अस्या गुणाः ।

शंखपुष्पीतुतीक्ष्णोष्णामेध्याकृमिविषापहा॥ (रा०व०)

अर्थ–शंखाहुली–तीक्ष्ण, गरम, मेधाजनक, तथा क्रिमि और विषविनाशक है ।

अपरञ्च ।

शंखपुष्पीसरामेध्यायुष्यामानसरोगहृत।रसायनीकषायोष्णास्मृतिकान्तिबलाग्निदा ॥ कटुकाशीतलास्वर्य्याकुष्ठक्रिमिविषप्रणुत । पाचकायु स्थिरकरीमांगल्यापित्तनाशिनी ॥ लूतापस्मारदोषघ्नीग्रहदोषस्यनाशिनी। सर्वोपद्रवहाप्रोक्तापुष्पभेदागुणैःसमा ॥

अर्थ–शंखाहुली–सारक, मेधाजनक, आयुर्वर्द्धक, मनके रोगोंको हरनेवाली, रसायन, कषैली, गरम, स्मरणशक्तिवर्द्धक, कान्तिजनक, बलवर्द्धक, अग्निदायक, चरपरी, शीतल, स्वरको उत्तम करनेवाली, मंगलकारक, अवस्थास्थापक, पाचक, तथा कोढ, कृमि, विष, पित्त, लूता, अपस्मार, ग्रहदोष और सर्वप्रकारके उपद्रवोंको दूर करनेवाली है सर्वप्रकारकी शंखपुष्पी गुणोंमें समान है ।

अन्यच्च ।

शखपुष्पीकपायोष्णा कफकुष्टविनाशिनी ।
रसायनीसरादिव्या लालाह्लासज्र्तिहा ॥
लक्ष्मीमेधाबलाग्नीनां वर्द्धिनीकथितावुधै· ।

अर्थ–शखपुष्पी–कपेली, गरम, कफ और कुष्ठको नष्ट करनेवाली, रसायन सारक, दिव्य, मुखसे लारका गिरना, उबकाई, और ज्वरको दूर करनेवाली है तथा लक्ष्मी, मेधा, बल और अग्निको बढानेवाली है ।

श्वेतशखपुष्पीगुणा ।

शुभ्राचशखिनीमेध्याशीतलावश्यसिद्धिदा । रसायनीसरास्वर्य्याकिञ्चिदुष्णाचतूवरा ॥ स्मृतिकान्तिबलाग्नीनां वर्द्धिनीकटुकामता ॥ पाचकायु·स्थिरकरीमाङ्गल्यापित्तनाशिनी ॥ विपदोपमपस्मारकफक्रमिविपहरेत् । कुष्टलूतात्रिदोषघ्नीग्रहदोपस्यनाशिनी ॥ सर्वोपद्रवहाप्रोक्तारक्तानीलागुणै समा । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–सफेद शखाहुली–मेधाजनक, शीतल, वशीकरण, सिद्धिदायक, रसायन, सारक, स्वरको सुन्दर करनेवाली, किञ्चित् उष्ण, कपेली, तथा स्मरणशक्ति, काति और अग्निको बढानेवाली है । चरपरी, पाचक अवस्थास्थापक, मगलकारक, तथा पित्त और विपदोप, अपस्मार (मृगी), कफ, कृमि, विप, कोढ, लूता, त्रिदोष, ग्रहदोष और सर्व उपद्रवोंको दूर करे है । लाल शखपुष्पी और नीली शखपुष्पीके गुणभी इसकी समान जानने ।

विवरण । शखपुष्पीका छत्ता प्राय' ऊपर भूमिमें होता है, पत्ते छोटे और धूसर रगके सूक्ष्म होते है, फूल–कुपहरियासे मिलता हुवा होता है, सफेद फूलवालीको सफेद शखाहुली कहते है, लाल रगके फूलवालीको लाल शखाहुली कहते है, नीले रगके फूलवालीको विष्णुक्रान्ता कहते हैं ।

अर्कपुष्पीनामानि ।

पयस्याह्यर्कपुष्पीचसूर्य्यवल्लीकुटुम्बिनी ॥

अर्थ–पयस्या, अर्कपुष्पी, सूर्यवली, कुटुम्बिनी (जलकामुका, क्षीरिणी, वक्रशल्या, दुराधर्पा, क्रूरकर्मा, सिरिण्टिका, शीता, मद्रकुट्वी, शीतला, जलेरुहा, सितपर्णी, शीतपर्णा और अर्कपुष्पिका)

पीतपुष्पी, कम्बुपुष्पा, मलविनाशिनी, किरीटी, शखकुसुमा, भूलग्ना, शखमालिनी, माङ्गल्यकुसुमा, कम्बुपुष्पी, वनमालिनी, इतरा, सूक्ष्मपत्रा, सर्पाक्षी, रक्तपुष्पी, रक्तपुष्पिका, नीलपुष्पी, विष्णुकान्ता, सितपुष्पी, श्वेतकुसुमा, वनविलासिनी)

संस्कृतभाषामें	शखपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	शखाहुली, कौडियाली ।
बंगलाभाषामें	शखाहुली, डानकुनी ।
मराठीभाषामें	शंखावळी, शखोनी ।
गुजरातीभाषामें	शखावली ।
कर्णाटकीभाषामें	शखपुष्पी ।
लैटिनभाषामें	इवोल्व्युलस इरेक्टा (सफेद) Evolvulus Erecta
	इवोल्व्युलस आलसिनोइडिस् (लाल) E. Alsinoides
	...ल्व्युलस हर्सटस् (काली) E. hirsutus

समान होती है, पत्ते–गिलोयके सम...
समान गोल आता है, और इसमें दूध निकलता है (

लज्जालुनामानि ।



लज्जालु स्याच्छमीपत्रासमगाञ्जलिकारिका ।
रक्तपादीनमस्कारीताम्रासदरिकेत्यपि ॥

अर्थ–लज्जालु, शमीपत्रा, समगा, अञ्जलिकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी, ताम्रा, खदिरिका, (कन्दिरी, स्पृक्का, खदिरपत्रिका, सङ्कोचिनी, गमक्ता,

अन्यच्च ।

शखपुष्पीकपायोष्णा कफकुष्ठविनाशिनी ।
रसायनीसरादिव्या लालाहृल्लासजर्तिहा ॥
लक्ष्मीमेधाबलाग्नीना वर्द्धिनीकथितावुधै. ।

अर्थ-शखपुष्पी-कपैली, गरम, कफ और कुष्ठको नष्ट करनेवाली, रसायन सारक, दिव्य, मुखसे लारका गिरना, उबकाई, और ज्वरको दूर करनेवाली है तथा लक्ष्मी, मेधा, बल और अग्निको बढानेवाली है ।

श्वेतशखपुष्पीगुणा ।

शुभ्राचशखिनीमेध्याशीतलावश्यसिद्धिदा । रसायनीसरास्वर्य्योकिञ्चिदुष्णाचतूवरा ॥ स्मृतिकान्तिबलाग्नीनां वर्द्धिनीकटुकामता ॥ पाचकायु स्थिरकरीमाङ्गल्यापित्तनाशिनी ॥ विपदोपमपस्मारकफ[illegible] तात्रिदो[illegible]॥नरागान्विनाशयेत् ॥ (भा०प्र०)

[illegible]र्थ-लज्जावती (छुईमुई) शीतल, कडवी, कपेली तथा कफ, पित्त, रक्तपित्त, अतिसार और योनिरोगोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

रक्तापादीकटुःशीतापित्तातीसारनाशिनी ।
शोफदाहश्रमश्वासव्रणकुष्ठकफास्रनुत ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लज्जावती (छुईमुई) चरपरी, शीतल, पित्तातिसारनाशक तथा सूजन, दाह, श्रम, श्वास, घाव, कोढ, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

विपरीतलज्जालुनामानि ।

लज्जालुर्विपरीतान्याअल्पक्षुपबृहद्दला ॥

अर्थ-विपरीतलज्जालु, अल्पक्षुप, बृहद्दल ।

अस्या गुणा ।

वेपरीत्याचलज्जालुर्व्व्यभिधानेप्रयोजयेत ।
लज्जालुर्वैपरीत्याहु'कटुरुष्ण कफप्रणुत ॥
रसेनियामकश्चैवनानाविज्ञानकारक । (राजनिघण्टु)

अर्थ-विपरीतलज्जालु-चरपरा, गरम, कफनाशक, पारेको बाधनेवाला और अनेक प्रकारके चमत्कार दिखलानेवाला है ।

विवरण । लज्जावन्ती अर्थात् छुईमुईके क्षुप बेलके समान होतेहैं, पत्ते ऑंकर अथवा गैरके समान होवेहैं, फूल-गुलाबी नीले भिन्न भिन्न रंगके होते हैं, इसकी जड लाल होती है, इसको स्पर्श करे तो ये लज्जाके मारे सर्माकर मुकड जाती हे, पश्चात् विस्तृत होजाती है, यह दो प्रकारकी होती है, एक कांटेवाली, एक विना कांटेकी, हाथके लगतेही सुकड सुकडाकर नीचेको झुक जाती है । इसीलिये इसका नाम लज्जावती (छुईमुई) रक्खा है ।

अलम्बुषानामानि ।

अलम्बुषाखरत्वक्चतथामेदोगलास्मृता ॥

अर्थ-अलम्बुषा, खरत्वक्, मेदोगला ।

अस्या गुणा ।

अलम्बुषालघु स्वादु कृमिपित्तकफापहा ॥

अर्थ-अलम्बुषा (लज्जालुका भेद) हलका, स्वादिष्ठ तथा कृमि, पित्त और कफनाशक है ।

दुग्धिकानामानि ।

दुग्धीक्षीरात्मिकाक्षीरीक्षीरावीचमरुद्भवा ॥

अर्थ-दुग्धी, क्षीरात्मिका, क्षीरी, क्षीरावी, मरुद्भवा, (स्वादुपर्णी, क्षीरिणी, क्षीरात्रिका, ग्राहिणी, कच्छरा, ताम्रमूला और दुग्धिका)

दुग्धफेनीनामानि ।

दुग्धफेनीपय·फेनीफेनीदुग्धापयस्विनी ।
लूतारिर्व्रणकेतुश्चगोजापर्णीचसत्तथा ॥

अर्थ-दुग्धफेनी, पय फेनी, फेनीदुग्धा, पयस्विनी, लूतारि, व्रणकेतु, गोजापर्णी ।

नागार्जुनीनामानि ।


दुद्धी. (क)


दुद्धी. (ख)

नागार्जुनीपयोवर्षायोगिनीलघुदुग्धिका ।

अर्थ–नागार्जुनी, पयोवर्षा, योगिनी, लघुदुग्धिका ।

सस्कृतभाषामें	दुग्धिका, दुग्धफेनी, नागार्जुनी ।
हिन्दीभाषामें	दुद्धी, दूधिया, दूधीकलव ।
वगभाषामें	दुधि, दुध्या, दुदूले, क्षीरइ, खिरुइ इत्यादि ।
मराठीभाषामें	लघुदुधी, थोरदुधी ।
गुजरातीभाषामें	दुधेलीमोटी, थोरदुधी ।
कर्णाटकीभाषाम	मरिजवणीगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिलपालचेट्टु ।
लैटिन्भाषामे	युफोर्बियाहिंर्टा । Euphorbia hirta यूपार्विफ्लोरा Euparviflora युटाईमिफोलिया Eu thymefolia
फारसीभाषामें	निशाशत ।

दुग्धिकागुणा ।

दुग्धिकोष्णागुरूरूक्षावातलागर्भकारिणी ।
स्वादुक्षीराकटुस्तिक्तासृष्टमूत्रमलापहा ॥
स्वादुर्विष्टम्भिनीवृष्याकफकुष्ठकृमिप्रणुत् । (भा प्र)

अर्थ–दुद्धी–गरम, भारी, रूखी, बादी, गर्भकारक स्वादिष्ठ क्षीरयुक्त, मलमूत्रको निकालनेवाली, चरपरी, कडवी, मधुर, विष्टम्भजनक, वीर्य्यवर्द्धक तथा कफ, कोढ, और कृमिनाशक है ।

दुग्धफेनीगुणा ।

दुग्धफेनीकटुस्तिक्ताशिशिराविषनाशिनी ।
व्रणापसारणीरुच्यायुक्त्याचैवरसायनी ॥ (रा०नि)

अर्थ–दुग्धफेनी–चरपरी, कडवी, शिशिर, विषनाशक, व्रणनिवारक, रुचिकारक और किसीके साथ होनेसे रसायन है ।

नागार्जुनीगुणा ।

नागार्जुनीतुमधुरावृष्यारूक्षाचग्राहिणी । तिक्ताचवातला गर्भस्थापनीकटुकापटुः ॥ धातुवृद्धिकरीहृद्याचोष्णापारदबन्धिनी । मलस्तम्भकरीमेहकफकुष्ठकृमीन्हरेत् ॥

अर्थ–नागार्जुनी (एकप्रकारकी दुद्धी)–मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रूखी,

ग्राही, कडवी, वातकारक, गर्भस्थापक, चरपरी, खारी, धातुवर्द्धक' हृदयको हितकारी, गरम, पारेको बाधनेवाली, मलको स्तम्भन करनेवाली तथा प्रमेह, कफ, कोढ और कृमिको दूर करेहै ।

विवरण । दुद्धीका क्षुप छत्तासा होताहै, ऊपरको कम उठताहै, छितिम फैलताहै, दुद्धी तीनप्रकारकी होतीहै, एक नोकदार लाल पत्तोंकी, एक गोलपत्तोंकी और एक मूगोंके दानोंकी समान छोटे२ पत्तोंकी होतीहै, तीनोंप्रकारकी दुद्धीमें दूध निकलता है ।

भूम्यामलकीनामानि ।



भूम्यामलीशिवातालीक्षेत्रामलीचझारिका ॥

अर्थ-भूम्यामली-शिवा, ताली, क्षेत्रामली, झारिका (बहुपुष्पी, जटा, अध्यण्डा, तालि, तामलकी, अजटा, सूक्ष्मफला, क्षेत्रामलकी, भूम्यामलकी, वितुन्नक, झटा, अफला, अमला, अज्झटा, झाटा, माला, झाटामला, अम लज्झटा, तमाली, तमालिका, तामलकी, उच्चटा, कटपादी, वितुन्ना, वितु- न्निका, भूधात्री, चारटी, पृथ्वा, विपत्री, बहुपत्रिका, बहुवीर्य्या, अदि- मपदा, वीरा, विश्वपर्णा, हिमालया, अग्रदा, भूम्यामलकिका, बहुप्रजा, बहुफला, भूधर्वा, दलस्पर्शिनी, बहुपुत्रा, सूक्ष्मदला, दृढपादा, चित्रपर्णी, अमली, तमालिनी, पुत्रश्रेणिका, आमलकी, हिलालिका, चोरटा)

संस्कृतभाषामें	भूम्यामलकी ।
हिन्दीभाषामें	भुंईआमला, भद्रऑवला, पतालआवरा, भोमिऑवरा
बंगभाषामें	भुंईआमला ।
मराठीभाषामें	भुंइआवळी ।
गुजरातीभाषामें	भोंआवळी ।

कर्णाटकीभाषामें आईनेल्लि ।
तैलिङ्गभाषामें नेलाउसरीके ।
लैटिन्भाषामें फाईलेन्थस् निरुरी Phyllanthusniruri
फाईलेन्थस् युरिनेरिया P urinaria

अस्या गुणाः ।

भूधात्रीचकषायाम्लापित्तमेहविनाशिनी ।
शिशिरामूत्ररोधार्त्तिशमनीदाहनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-भुँईआमला-कषेला, खट्टा, शीतल तथा पित्त और प्रमेहनाशक, मूत्ररोधनिवारक और दाहको शान्त करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

भूधात्रीवातकृत्तिक्ताकषायामधुराहिमा ।
पिपासाकासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा ॥ (भा प्र)

अर्थ-भुँईआमला-वातकारक, कडवा, कषेला, मधुर, शीतल तथा पियास, खाँसी, रक्तपित्त, कफ, पाण्डुरोग और क्षतनाशक है ।

अन्यच्च ।

भूधात्रीतुविशेषेणविषघ्नीपुत्रदायिनी ॥ (शो०नि०)

अर्थ-भुईआमला-विशेषकरके विषनाशक और पुत्रदायक है ।

अपिच ।

भूधात्रीतुहिमातिक्ताकषायामधुरालघु ।
रोचनीपाण्डुपित्तास्रकफकुष्ठविषापहा ॥
जयेच्छ्वासतृषादाहहिक्काकासक्षतक्षयान् । (ग०नि०)

अर्थ-भुईआमला-शीतल, कडवा, कषेला, मधुर, हलका, रुचिकारक तथा पाण्डुरोग, रक्तपित्त, कफ, कोढ, विष, श्वास, तृषा, दाह, हिचकी, खाँसी, क्षत और क्षयका नाश करेहै ।

विवरण । भुईआमलेके क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्तोंके नीचे राईके दानेके समान फलोंकी शाखा होती है ।

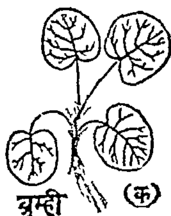
ब्राह्मीनामानि ।

ब्राह्मीवयस्थामत्स्याक्षीसुरसाब्रह्मचारिणी ॥

अर्थ-ब्राह्मी, वयस्था, मत्स्याक्षी, सुरसा, ब्रह्मचारिणी (सोमवल्लरी, मत्स्याक्षी, सरस्वती, सोम्या, सुरश्रेष्ठा, सुवर्चला, कपोतवेगा, वेधात्री,दिव्य-

तेजा, महौषधि, स्वायम्भुवी, सौम्यलता, सुरेष्टा, ब्रह्मकन्यका, मण्डूकमाता, मण्डूकी, मेध्या, वीरा, भारती, वरा, परमेष्ठिनी, दिव्या, शारदा, कपोतवङ्का, सोमवल्ली)

मण्डूकपर्णीनामानि ।





मण्डूकपर्णीमण्डूकीभेकीमण्डूकपर्णिका ॥

अर्थ-मण्डूकपर्णी, मण्डूकी, भेकी, मण्डूकपर्णिका (माण्डूकी, त्वाष्ट्री, दिव्या, महौषधी, ब्रह्ममण्डूकी, सुभिषा, दर्दुरच्छदा)

संस्कृतभाषामें	ब्राह्मी, माण्डूकी, ब्रह्ममाण्डूकी ।
हिन्दीभाषामें	ब्राह्मी, ब्रह्ममाण्डूकी, बम्भी, चोंटी ।
बंगभाषामें	ब्राह्मीशाक, अधविर्णी, थुल्कुडि, थाल्कुनि ।
मराठीभाषामें	ब्राह्मी ।
गुजरातीभाषामें	ब्राह्मी, विषाब्राह्मी, गडभगमी ।
कर्णाटकीभाषामें	ओदिलग ।
तैलिङ्गीभाषामें	ब्रम्हमंडूकि, मण्डूकब्रम्मी ।
तामिलीभाषामें	वीमी, वल्लीकिरी ।
वम्०	बाम, ब्रह्मी ।
इंग्रेजीभाषामें	इण्डियन पेनीवर्ट । Indian penny wort
लैटिन्भाषामें	हाइड्रो कोटाइल एशयाटीका Hydrocotyle Asiatica
फारसीभाषामें	जरनब ।

ब्राह्मीगुणाः ।

ब्राह्मीहिमासरातिक्तालघ्वीमेध्याचशीतला । कषायामधु-

रास्वादुपाकायुष्यारसायनी ॥ स्वर्य्यास्मृतिप्रदाकुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित् । विपशोथज्वरहरीतद्वन्मण्डूकपर्णिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ब्रह्मी-हिम, सारक (दस्तावर), हलकी, मेधाकारक, शीतल, कषेली, मधुर, स्वादुपाकी, आयुर्वर्द्धक, रसायन, स्वरको उत्तम करनेवाली, स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा कोढ, पाण्डु, प्रमेह, रुधिरविकार, खासी, विष, सूजन और ज्वरको हरनेवाली है, इसकेही समान मण्डूकपर्णीके गुण जानने।

अन्यच्च ।

ब्राह्मीतुभेदिनीगुर्वीमेध्यापित्तकफापहा ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-ब्रह्मी-भेदक, भारी, मेधाजनक, तथा पित्त और कफनाशकहै ।

अपिच ।

ब्राह्मीशीताकषायाचतिक्ताबुद्धिप्रदामता । मेध्यायुरग्निजननीसारकास्वादुलालघु ॥ कण्ठशुद्धिकरीहृद्यास्मृतिदाचरसायना । हृद्यामेहविपकुष्ठपाण्डुकासज्वरजयेत् । शोफकण्डूप्लीहवातरक्तपित्तारुचीर्जयेत । श्वासशोपसर्वदोपकफवातामयाञ्जयेत् । सर्वेप्येतेगुणाब्रह्ममण्डूक्यामपिसस्थिता । (नि० र०)

अर्थ-ब्रह्मी-शीतल, कषेली, कडवी, बुद्धिदायक, मेधाजनक, आयुवर्द्धक, अग्निजनक, सारक, स्वादिष्ठ, हल्की, कण्ठशोधक, हृदयको हितकारी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, रसायन तथा प्रमेह, विष, कोढ, पाण्डुरोग, खासी, ज्वर, सूजन, कण्डु, प्लीहा, वातरक्त, पित्त, अरुचि, श्वास, शोष, सकलदोष, कफ और वातको दूर करनेवाली है । ब्रह्ममाण्डूकीकेभी इसीके समान गुण जानने ।

अन्यच्च ।

ब्राह्मीतुपिच्छिलायुष्यासरोन्मादविमर्दिनी ।
वयस स्थापनीमेध्यावाक्स्वरस्मृतिदापरा ॥
तिक्ताहृद्याकटु पाकेश्वासश्लेष्मनिकृन्तनी । (ग०नि०)

अर्थ-ब्रह्मी-पिच्छिल, आयुर्वर्द्धक, सारक (दस्तावर), उन्मादनाशक, अवस्थास्थापक, मेधाकारक तथा वाणी, स्वर और स्मरणशक्तिवर्द्धक है । कडवी, हृदयको हितकारी, पचनेमे चरपरी और श्वास तथा कफनाशक है ।

मण्डूकपर्णीगुणाः ।

मण्डूकपर्णिकालघ्वीस्वादुपाकासराहिमा ॥ (रा०व०)

अर्थ-ब्रह्ममाण्डूकी-हलकी, पचनेमें स्वादिष्ठ, दस्तावर और शीतल है ।

अस्याकगुणाः ।

ब्रह्ममण्डूकिकापाण्डुविषशोथज्वरान्हरेत् ॥ (इतिदशा०)

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकीका अर्क-पाण्डुरोग, विषदोष, सूजन और ज्वरको दूर करनेवाला है ।

विवरण । जहांकि क्षुपका छत्तासा प्रायः सजल क्षिति अथवा जलाशयके समीप भूमिमें होता है, पत्ते-छोटे २ गोल एक ओरसे खिले हुए होते हैं, दूसरी ब्रह्ममण्डूकी होती है, उसके पत्ते-छोटे होते हैं ।

द्रोणपुष्पीनामानि ।

द्रोणाचद्रोणपुष्पीचफलेपुष्पाचकीर्तिता ॥

अर्थ-द्रोणा, द्रोणपुष्पी, फलेपुष्पा, (छत्रपत्री, कुम्भयोनि, कुरुम्बिका, चित्राक्षुप, कुरुम्बा, सुपुष्पी, चित्रपत्रिका, भसनक, पालिन्दी, कुम्भयोनिका, छत्राणी, छत्रका, कौण्डिन्य, वृक्षसारक)

संस्कृतभाषामें	द्रोणपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	गूमा, गोमा ।
बंगालीभाषामें	द्रोणपुष्पी (घलघसे)
मराठीभाषामें	कुम्भा, तुम्बा ।
गुजरातीभाषामें	कुबो ।
कर्णाटकीभाषामें	तुम्ब ।
तैलिंगीभाषामें	स्तुमतुम्मि ।
लैटिनभाषामें	ल्युकासशिरोफ्लोटस Leucas cephalotus

अस्या गुणाः ।

द्रोणपुष्पीगुरु स्वाद्वीरूक्षोष्णावातपित्तकृत् ।

सतीक्ष्णालवणास्वादुपाकाकट्वीचभेदिनी ॥

कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-द्रोणपुष्पी (गूमा)-भारी, स्वादिष्ठ, रूखी, गरम, वातपित्तकारक, तीक्ष्ण और लवणरसयुक्त, पचनेमेंभी स्वादिष्ठ, चरपरी, दस्तावर तथा कफ, आम, कामला, सूजन, तमकश्वास और कृमिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

द्रोणपुष्पीकफाशोघ्नीकामलाक्रिमिशोथजित॥(रा०व०)

अर्थ–द्रोणपुष्पी (गूमा)–कफ, ववासीर, कामला, कृमि और सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

द्रोणपुष्पीकटुःसोष्णारुच्यावातकफापहा ।
अग्निमांद्यहराचैवपक्षाघातस्यनाशिनी ॥ (शो०नि०)

अर्थ–गूमा–चरपरा, गरम, रुचिकारक तथा वात, कफ, मदाग्नि और पक्षावात रोगनाशक है ।

अस्या पत्रगुणा ।

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षंगुरुचपित्तकृत ।
भेदनंकामलाशोथमेहज्वरहरंकटु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–गूमाके पत्ते–स्वादिष्ठ, रूखे, भारी, पित्तकारक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरको हरनेवाले है ।

विवरण । गूमाका क्षुप होता है, गुच्छे गाठ २ मे होते है, उन गुच्छोंमे सफेद फूल होता है । और फूलके ऊपर दो पत्ते होते है । इसके भीतर वीज होते है । मात्रा २ मासेकी ।

आदित्यभक्तानामानि ।

आदित्यभक्तावरदार्कभक्तासुवर्चलासूर्यलतार्ककान्ता ।
मण्डूकपर्णीसुरसम्भवाचसौरिस्सुतेजार्कहितारवीष्टा ॥
मण्डूकीसत्यनाम्नीस्यादेपामार्तण्डवल्लभा ।
विक्रान्ताभास्करेष्टाचभवेदष्टादशाह्वया ॥

अर्थ–आदित्यभक्ता–वरदा, अर्कभक्ता, सुवर्चला, सूर्यलता, अर्ककान्ता, मण्डूकपर्णी, सुरसम्भवा, सौरि, सुतेजा, अर्कहिता, रवीष्टा, मण्डूकी, सत्यनाम्नी, मार्तण्डवल्लभा, विक्रान्ता, भास्करेष्टा (सूर्य्यावर्त्ता, रविप्रीता) और दूसरी ब्रह्मसुवर्चला इसीकाही भेद है ।

संस्कृतभाषामें	आदित्यभक्ता, सुवर्चला, ब्रह्मसुवर्चला ।
हिन्दीभाषामें	हुरहुज, ब्रह्मसौंचली, सौंचली ।
वंगभाषामें	हुडहुडे, वनदालते ।

मराठीभाषामें	सूर्यफूल ।
गुजरातीभाषामें	सूरजमुखी ।
कर्णाटकीभाषामें	दुरदुर, आदित्यभक्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	सूर्यकान्तिमु ।
इंग्रेजीभाषामें	सनफ्लावर । Sunflower
लैटिन्भाषामें	हेलिएथस् एन्युअस । Helianthus annus
फारसीभाषामें	गुलेआफतावपरस्त ।
अरबीभाषामें	अरदमून ।

आदित्यभक्तागुणाः ।

आदित्यभक्ताशिशिरासतिक्तापटुस्तथोग्राकफहारिणीच ।
त्वग्दोषकण्डूव्रणकुष्ठभूतग्रहोग्रशीतज्वरनाशिनीच ॥ (रा०)

अर्थ-आदित्यभक्ता (दुरहुज)-शीतल, कडवी, खारी, उग्र, कफनाशक तथा त्वचाके विकार, कण्डू, व्रण, कुष्ठ, भूत, और उग्रशीतज्वरनाशक है ।

अन्यच्च ।

आदित्यभक्ताकटुकाशीतातिक्तातिपित्तला । रूक्षास्वाद्वी चकटूचकफवातव्रणापहा । शीतज्वरभूतबाधाग्रहपीडावि-नाशयेत ॥ मेहकृमिश्वकुष्ठश्चत्वग्दोषश्चविनाशयेत ॥ (नि० र०)

अर्थ-आदित्यभक्ता (दुरहुज)-चरपरी, शीतल, कडवी, अत्यन्त पित्तकारक, रूखी, स्वादिष्ठ, खारी, तथा कफ, वात, व्रण, शीतज्वर, भूत-बाधा, ग्रहपीडा, प्रमेह, कृमि, कोढ और त्वचाके दोषोंको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

सुवर्चलाहिमीरूक्षास्वादुपाकासगगुरुः ।
अपित्तलाकटुःक्षारविष्टम्भकफवातजित ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दुरहुज-शीतल रूखी पचनेमें स्वादिष्ठ, दस्तावर, भारी, पित्तकारक नहीं, चरपरा, खारी तथा विष्टम्भ, कफ, और वातको दूर करनेवाला है।

अपिच ।

सुवर्चलागुरुःशीतामूत्रलाकर्णशूलनुत ॥

अर्थ-दुरहुज-भारी, शीतल, मूत्रजनक और कर्णशूलनाशक है ।

ब्रह्मसुवर्चलागुणाः ।

अन्यानितिक्तकषायोष्णासरागुःआलघु कटुः ।

निहन्तिकफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥
विस्फोटकुष्टमेहास्रयोनिरुक्क्रमिपाण्डुता ॥

अर्थ–ब्रह्मसुवर्चला (ब्रह्मसोचली)–कपेली, गरम, सारक (दस्तावर), हलकी, चरपरी तथा कफ, रक्तपित्त, श्वास, खासी, अरुचि, ज्वर, विस्फोटक, कोढ,प्रमेह,रुधिरविकार,योनिरोग, कृमि और पाण्डुरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अन्योष्णाकुष्टमेहाश्मकृच्छ्रज्वरहरालघु ॥ (म०नि०)

अर्थ–ब्रह्मसोंचली–गरम, हलकी तथा कोढ, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और ज्वरको हरनेवाली है ।

आदित्यपत्रागुणा ।

आदित्यपत्रावीर्योष्णाकट्वीसदीपनीमता । स्वर्यारसायनी तिक्तातुवराचसरामता ॥ रूक्षालघ्वीचसप्रोक्ताकफवातविनाशिनी । रक्तदोपज्वरश्वासकासविस्फोटकंतथा ॥ कुष्ट मेहचारुचिचयोनिशूलतथाश्मरीम् । मूत्रकृच्छ्रपाण्डुरोग गुल्मश्चैवविनाशयेत ॥ (नि० र०)

अर्थ–आदित्यपत्रा–उष्णवीर्य, चरपरा, अग्निमदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, रसायन, कडवा, कपेला, दस्तावर, रूखा, हलका तथा कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, श्वास, खासी, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, अरुचि, योनिशूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग और गुलमका नाश करेहै ।

विवरण । ब्रह्मसुवर्चला–अर्थात् हुरहुरकी बेल तथा क्षुप होतेहं, यह विशेपकरके वागोंमें वोये जाते ह, प्राय इसपर सूर्योदयके होनेपर फूल प्रफुल्लित होजाते हैं, वेलवाले हुरहुरमें जो फूल आते ह वह नीले रगके होते हैं, और क्षुपवाले हुरहुरके फूल सफेद होते ह, बहुत सुन्दर और सूर्याकार होते हैं, परन्तु बहुत छोटे २ होते ह ।

वन्ध्याककोटकीनामानि ।

वन्ध्याकर्कोटकीदेवीकान्तायोगेश्वरीतिच ।
नागारिर्भक्तदमनीविपकण्टकिनीतथा ॥

अर्थ–वन्ध्याककोटकी, देवी, कान्ता, योगेश्वरी, नागारि, भक्तदमनी, विपकण्टकिनी (नागारति, वन्ध्या, नागहन्त्री, मनोज्ञा, पथ्या, दिवा, पुत्रदा,

मकन्दा वन्दवल्ली, ईश्वरी, श्रीकन्दा,सुगन्धा, गर्पदमनी,विषकन्दविनी, वरा, नक्रदमनी,कन्दशालिनी, भूतापहा, सर्वौषधी, विषमोहप्रशमनी,महायोगेश्वरी)

संस्कृतभाषामें	वन्ध्याककोंटकी ।
हिन्दीभाषामें	बांझखखसा, बनककोडा, बांझककोडा ।
बंगभाषामें	तित्काँकरोल, तित्काकडी ।
मराठीभाषामें	वांझकर्टोली ।
गुजरातीभाषामें	वांझकण्टोलो ।
कर्णाटकीभाषामें	बजेमडुवागलु ।
लैटिनभाषामें	मोमोर्डिका डायोइकामेल। Momodia dioicamale

अस्या गुणाः ।

वन्ध्याककोंटकीतिक्ताकटूष्णाचकफापहा ।
स्थावरादिविषघ्नीचशस्यतेसारसायने ॥ (रा. नि)

अर्थ-बांझककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, कफनाशक, स्थावरादि विष-विनाशक और पारेको बांधनेवाला है ।

अन्यच्च ।

वन्ध्याककोंटकीलघ्वीकफव्रणशोधिनी ।
सर्पदर्पहरीतीक्ष्णाविसर्पविषहारिणी ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-बनककोडा-हलका, कफनाशक, व्रणशोधक, सर्पके विषको हरनेवाला, तीक्ष्ण तथा विसर्प और विषको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

वन्ध्याककोंटकीतिक्ताकटुश्चोष्णालघु स्मृता । रसायनी शोधिनीचस्थावरादिविषापहा ॥ कफनेत्रशिरोरोगव्रणघ्नी-सर्पकासहा । रक्तदोषमर्पविषनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (नि.र)

अर्थ-बांझककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, हलका, रसायन, शोधक, स्थावरादिविषनाशक तथा कफ, नेत्ररोग, मस्तकरोग, व्रण, विसर्प, खांसी, सर्पविकार और सांपके विषको दूर करनेवाला है ।

विवरण-वन्ध्याककोंटकी अर्थात् बांझककोडेकी बेल ककोडेके समान लगती है तथा फूल भी आते हैं, परन्तु इसमें फल नहीं आते, इसलिये इसको बांझककोडा कहते हैं, इसके स्थानमें शाखा पर गांठ होती है और इसकी जडमें नीचे गांठमें एक कन्द निकलता है ।

अस्या कन्दगुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकीकन्दोहन्तिश्लेष्मविषद्वयम् ॥ (शो॰नि॰)

अर्थ-वनककोडेका कन्द-कफ और दोनों प्रकारके विष, (स्थावर और जगम) को दूर करनेवाला है।

मार्कण्डिकानामानि ।

मार्कण्डिकाभूमिचरीमार्कण्डीमृदुरेचनी ॥

अर्थ-मार्कण्डिका, भूमिचरी, मार्कण्डी, मृदुरेचनी, (भूमिवल्ली, पीतपुष्पी, पीतपुष्पा, महौषधी, जालतीका)

संस्कृतभाषामें	मार्कण्डिका ।
हिन्दीभाषामें	भुईखखसा । (सनाय)
बंगभाषामें	काकरोलभेद ।
मराठीभाषामें	सोनामुखी ।
द॰	सोनामुखी ।
दे॰	आहुली ।
गुजरातीभाषामें	मीठीआवल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	तलाडवल्ली ।
तैलङ्गीभाषामें	नेलतङडी ।
इंग्रेजीभाषामें	आलेक्झाण्डियन-सेना । Alexandrian-sena
लैटिन्भाषामें	सेन्नेफोलिआ । Sennafolia
	केसियाअगस्टिफोलिआ । Cassia augustifolia
फारसीभाषामें	सना ।
अरबीभाषामें	सना ।

अस्या गुणाः ।

मार्कण्डिकाकुष्ठहरीऊर्द्धाध कायशोधिनी ।
विषदुर्गन्धकासघ्नीगुल्मोदरविनाशिनी ॥ (भा॰प्र॰)

अर्थ-भुईखखसा-कुष्ठनाशक, ऊपर और नीचेसे शरीरका शोधन करनेवाला, तथा विष, दुर्गन्ध, खांसी, गुल्म और उदररोगोंको हरनेवाला है।

विवरण । भुईखखसाकी एक लता होतीहै, पत्ते-परवलकी समान होतेहैं और फूल पीले रगके होतेहैं ।

देवदालीनामानि।



देवदाली (पन्दाल)

जीमूतक कण्टफलागरागरीवेणीसहाकोपफलाचकदफला।
घोराकदम्बाविपदाचकर्कटीस्याद्देवदालीखलुसारमृपिका॥
वृत्तकोपाविपघ्नीचदालीलोमशपत्रिका।
तुरंगिकाचतकारीनाम्नामेकोनविंशति ॥

अर्थ-जीमूतक, कण्टफला, गगगरी, वेणी, गहा, कोपफला, कदूफला, घोरा, कदम्बा, विषहा, कर्कटी, देवदाली, सारमृपिका, वृत्तकोपा, विषघ्नी, दाली, लोमशपत्रिका, तुरंगिका, तकारी (देवताड, गरनाशिनी, घोषा, आखुविषहा, चतुरंगका, देवदालिका, पीता, सर्पघ्ना)

संस्कृतभाषामें	देवदाली।
हिन्दीभाषामें	सोनिया, घघरबेल, घिदाली घुसगा बंदाल।
बंगभाषामें	घोषकलताविशेष, ठयाताडा।
मराठीभाषामें	देवदाली, देवडंगरीफल।
गुजरातीभाषामें	कुकडवेल्य।
तैलङ्गीभाषामें	दातगाण्ड, लताविशेषमु।
कर्णाटकीभाषामें	देवडगर।
इंग्रेजीभाषामें	ब्रिस्टलि-ल्युफा। Bristly-luffa
लेटिन् भाषामें	ल्युफाएकिनेटा। Luffa Echinata
फा०	पन्दाल।

अस्या गुणाः।

देवदालीरसेपाकेतिक्तातीक्ष्णाविषापहा।

वामनीहन्तिगुदजकफशोफामकामला ॥
ज्वरकासारुचिश्वासहिध्मापाण्डुक्षयक्रिमीन् । (रा नि)

अर्थ-देवदाली (घघरबेल)-रस और पाकमें कडवी, तीक्ष्ण, विषनाशक, वमनकारक, तथा गुदजरोग, कफ, शोफ आम, कामला, ज्वर, खासी, अरुचि, श्वास, हिध्म, पाण्डु और क्षयरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

देवदालीवमिकरातिक्ताचोष्णाचऊष्मणा।तीक्ष्णापाण्डुकफश्वासकासार्शःक्षयनाशिनी ॥ कामलाक्रिमिहिक्काघ्नीज्वरशोथविषापहा । भूतबाधारुचिहरा चोदुरोर्विषनाशिनी ॥ फलमस्याःसरतिक्तगुल्मक्रिमिकफापहम् । शूलार्शःकामलावातनाशकपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-देवदाली (घघरबेल)-वमनकारक, कडवी, गरम, चरपरी, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, कफ, श्वास, खासी, बवासीर, क्षय कामला, कृमि, हिचकी, ज्वर, सूजन, विष, भूतबाधा, अरुचि और मूषेके विषको दूर करनेवाली है । इसका मूल-सारक, कडवा तथा गुल्म, कृमि, कफ, शूल, बवासीर और कामला वातको हरनेवाली है । अन्यच्च ।

देवदालीत्रयश्वासज्वरकासकफापहम् ।
आखोर्विषनिहन्त्याशुवामकश्चविरेचकम ॥
श्वेतारक्ताचपीताचदेवदालीगुणे समा । (शो० नि०)

अर्थ-तीनो प्रकारकी देवदाली-श्वास, ज्वर, खासी, कफ और मूषेके विषको दूर करेहै तथा वमनकारक और विरेचक है । सफेद, लाल और पीली इन तीनो देवदालीके गुण समान है ।

विवरण । देवदाली, बन्दाल, घघरबेल, गुनेया और खखसाके फलवाली वडीबेल होतीहै, खेतकी बाडोपर किसान लोग बहुत लगादेतेह, फूल-सफेद पीले और लाल तीन रगके होते है, फलोंके ऊपर बहुत छोटे २ काटे होतेहैं, इसका फल छोटी तुरईकेसा होताहै ।

जलपिप्पलीनामानि ।

जलपिप्पल्यभिहिताशार्दीशकुलादनी ।

मत्स्यादनीमत्स्यगन्धालाङ्गलीत्यपिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-जलपिप्पली, शारदी, शकुलादनी, मत्स्यगन्धा, लाङ्गली (महागारी, तोयवल्लरी, अग्निज्वाला, चित्रपत्री, माणदा, तृणशीता, बहुशिखा)

संस्कृतभाषामें	जलपिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	पनिसिगा, गगतिग्पा, जलपीपर ।
वगभाषामें	काँचडाघास, पनिसिगा ।
मराठीभाषामें	जलपिंपळी ।
गुजराती भाषामें	रतवेलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	होसुगुड्ड ।
इंग्रेजीभाषामें	परपल् लिप्पा । Purple Lippia
लैटिन्भाषामें	लिपियानोडिफ्लोरा । Lippia Nodiflora
फारसीभाषामें	पीपलआवी ।
अरबीभाषामें	फिल्फिल्माय ।

अस्या गुणा ।

जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशुक्रलालघुः ।
सग्राहिणीहिमारूक्षारक्तदाहव्रणापहा ॥
कटुपाकरसारुच्याकषायावह्निवर्द्धिनी । (भा०प्र०)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, हलकी, मलरोधक, शीतल, रूखी, पचनेमें और रसम चरपरी, रुचिकारक, कसैली, अग्निवर्द्धक तथा रुधिरविकार, दाह और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

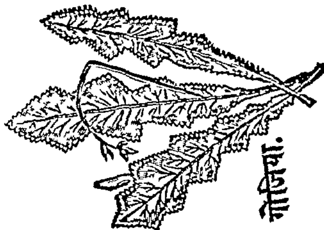
जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशीतलामता । रसकालेचकटुकाग्राहिणीशुक्रलालघु ॥ रूक्षातीक्ष्णाचतुवरामुखशुद्धिकरीमता । रुच्याग्निदीपनीवातकारिणीरक्तदोषहा ॥ रसदोषंकृमीन्दाहव्रणश्वासकफंतथा । वातविषंभ्रमंमूर्च्छांतृषांपित्तज्वरंहरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, रसमें कटु, ग्राही, शुक्रजनक, हलकी, रूखी, तीक्ष्ण, कषैली, मुखको शुद्ध करनेवाली, रुचिकारक, अग्निदीपक, वातकारक तथा रुधिरविकार, रस

दोष, कृमि, दाह, व्रण, श्वास, कफ, वात, विष, भ्रम, मूर्च्छा, तृषा और पित्तज्वरको दूर करे है।

विवरण। जलपीपलके क्षुप-प्रायः सजल भूमिमें उत्पन्न होते है, पत्ते-बडी नोनियाके समान और नोकदार होते हैं, इसमें पीपलके समान एक बाल निकलती है।

गोजिह्वानामानि।



गोजिह्वादार्विकागोभीकुरसादार्विपत्रिका ॥

अर्थ–गोजिह्वा, दार्विका, गोभी, कुरसा, दार्विपत्रिका (अनडुज्जिह्वा, दर्विका, दर्वी, दावी, गोजिह्विका, खरपत्री, वातोना, अधोमुखा, अध पुष्पी।

संस्कृतभाषामें	गोजिह्वा।
हिन्दीभाषामें	गोजिया, गोभी।
वंगभाषामें	दाडिशाक।
मराठीभाषामें	पाथरी।
गुजरातीभाषामें	भोपाथरी।
तैलिङ्गीभाषामें	येदुनाछुकचेट्टु, भरील्किचेट्टु।
लेटिनभाषामें	एलिफेण्टोपस् स्केबर। Elophuntopus Scalar
फारसीभाषामें	कल्मरूमी।

अस्या गुणाः।

गोजिह्वावातलाशीताग्राहिणीकफपित्तनुत् ।
हृद्याप्रमेहकासास्रव्रणज्वरहृगीलघु ॥
कोमलातुवगतिक्तास्वादुपाकारसास्मृता । (भा०प्र०)

अर्थ-गोभी-दाहकारक, शीतल, ग्राही, कफपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, हल्की तथा प्रमेह, खाँसी, रुधिरविकार, व्रण और ज्वरको हरनेवाली है, तथा कोमल, कषैली, कडवी, पचनेमें और रसमें स्वादिष्ट है।

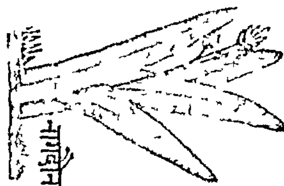
अन्यच्च।

गोजिह्वाकटुकातिक्ताशीतलाव्रणरोपिणी।
पित्तसर्वविषहन्तिकासारुचिविनाशिनी॥ (नि०र०)

अर्थ-गोभी-चरपरी, कडवी, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा पित्त, सर्व प्रकारके विष, खाँसी और अरुचिको दूरकरनेवाली है।

विवरण। गोभीका क्षुप होताहै, पत्ते-लम्बे और खरखरे होते हैं, फूल-सुवर्णके वर्णके समान चक्राकार होताहै, पत्तोंके बीचमें एक नाल निकलतीहै। इसको शाककी गोभी नहीं समझना चाहिये।

नागदमनीनामानि।



विज्ञेयानागदमनीनलमोटाविषापहा।
नागपुष्पीनागपत्रामहायोगेश्वरीतिच॥

अर्थ-नागदमनी, घटा, मोटा, विषापहा, नागपुष्पी, नागपत्रा, महायोगेश्वरी, (जम्बु, नाम्रवर्ता, पृथुता, रक्तपुष्पी, जाम्बवी, मल्ली, दुर्धर्षा, दुःसहा, वृत्ता, वृत्तपुष्पा, मदघ्नी, विषमर्दिनी, विषघ्ना, वनकुमारी विषारी, श्रीकन्दा, पद्मशाखिनी, विषविनाशिनी)

संस्कृतभाषामें	नागदमनी।
हिन्दीभाषामें	नागदमन, नागदौन।
बंगलाभाषामें	नागदना।
मराठीभाषामें	नागदवणी।
गुजरातीभाषामें	नागडमण।
कर्णाटकभाषामें	नागदमनी।

तैलङ्गीभाषामें	ईश्वरिचेट्टु दरणमु ।
तामिलीभाषामें	माचिपत्री ।
नेपालीभाषामें	तितापात ।
लैटिनभाषामें	आर्टिमसियाबुलोरिस् साइन ए इण्डियन ।

Artimsia vulgoris Syn A Indian

अस्या गुणा ।

बलामोटाकटुस्तिक्तालघु पित्तकफापहा । मूत्रकृच्छ्रव्रणा-न्रक्षोनाशयेज्जालगर्दभम् ॥ सर्वग्रहप्रशमनीविशेषविषना-शिनी । जयसर्वत्रकुरुतेधनदासुमतिप्रदा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नागदौन-चरपरी, कडवी, हलकी, तथा पित्त, कफ, मूत्र, कृच्छ्र, घाव, राक्षसबाधा, और जालगर्दभरोगको दूरकरनेवाली है। सर्वग्रहोंको शान्ति करनेवाली और विशेषकरके विषनाशकहै, सर्वत्र जयकारक, धन और सुमतिदायक है ।

अन्यच्च ।

ज्ञेयाजम्बूस्त्रिदोषघ्नीतीक्ष्णोष्णाकटुतिक्तका ।
उदराध्मानदोषघ्नीकोष्ठशोधनकारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-नागदौन-त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, कडवी, उदरके अफारेको दूर करनेवाली, और कोठेको शुद्ध करनेवालीहै ।

अपिच ।

प्रोक्तानागदमन्युष्णातिक्तालघ्वीरुचिप्रदा ।
कोष्ठशुद्धिकरीतीक्ष्णाकटुकायोनिदोषजित् ॥
लूतासर्पविषवातंकफवान्तिकृमीन्व्रणम ।
मूत्रकृच्छ्रोदरञ्चजालगर्दभकंतथा । त्रिदोषञ्चप्रमेहञ्चका-सकण्ठरुजंतथा । शूलगुल्मरक्तदोषज्वरम्सर्वविषाणिच । आध्मानग्रहपीडाश्चनाशयेदितिकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ-नागदौन-गरम, कडवी, हलकी, रुचिदायक, कोठेको शुद्धकरनेवाली, तीक्ष्ण, चरपरी तथा योनिदोष, मकडी और साँपका विष, कफ, वमन, कृमि, घाव, मूत्रकृच्छ्र, उदररोग, जालगर्दभ, त्रिदोष, प्रमेह, खांसी,

कण्ठरोग, शूल, गुलम, रुधिरविकार, ज्वर, सर्वविष, आध्मान और मदपीडाको दूर करनेवाली है।

विवरण। नागदमनको कितनेक वैद्य ता दौना कहते हैं और कितनेक भिषग्वर सुदर्शन कहते हैं, सो हमको ठीक २ निश्चय नहीं होता कि, नागदमन क्या वस्तु है।

छिक्कनीनामानि।



नकछिकनी.

छिक्कनीक्षवकृत्तीक्ष्णाछिक्किकाघ्राणदुःखदा।

अर्थ-छिक्कनी, क्षवकृत्, तीक्ष्णा, छिक्किका, घ्राणदुःखदा, (उग्रा, उग्रगन्धा, क्षवक, क्रूरनासा, सवेदनापटु)

संस्कृतभाषामें	छिक्कनी।
हिंदीभाषामें	नाकछिकनी।
बंगभाषामें	हाँचुटी, छिक्नी, हँचेतागाछ।
मराठीभाषामें	नाकशिकणी।
गुजरातीभाषामें	नाकछीकणी।
लैटिनभाषामें	सेंटिपीडा ऑर्बेक्युलरीस्। Sentipeda Orbicularis
फारसीभाषामें	बेरगाउजबा।
अरबीभाषामें	उफरक्ुदुन।

अस्या गुणाः।

छिक्कनीकटुकारूक्षातीक्ष्णोष्णावह्निपित्तकृत्।
वातरक्तदरीकुष्ठकृमिवातकफापहा॥ (भा०प्र०)

अर्थ-नाकछिकनी-चरपरी, रूखी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निकारक, पित्तकारक, तथा वातरक्त, कोढ, कृमि, वात, और कफनाशक है।

अपिच।

छिक्कनीकटुकारूक्षापित्तलाचाग्निदीपनी।
लघ्व्युष्णातुवरातीव्रगन्धात्वग्दोषनाशिनी॥

कफवातश्वेतकुष्ठकृमिरक्तरुजस्तथा ।
ग्रहपीडाभूतबाधांदृष्टिंश्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ–नाकछिकनी–चरपरी, रुचिकारक, पित्तकारक, अग्निदीपक, हलकी, गरम, कषेली, तीव्रगन्धयुक्त, तथा त्वचाके दोष, कफ, वात, श्वेत-कुष्ठ, कृमिरोग, रक्तविकार, ग्रहकी पीडा, भूतबाधा और दृष्टिके दोषोंको दूर करनेवाली है ।

विवरण। नाकछिकनीका क्षुप छोटा होताहै, पत्ते छोटे होतेह। इसके नीचे कद होताहै, इसके पत्ताको वा डडीको सूँघनेसे छीकें आतीहैं ।

अन्यच्च ।

छिक्कनीश्वासकासासृग्विषघ्नीवामनीमता । (शो०नि०)

अर्थ–नाकछिकनी–श्वास, खासी, रुधिरविकार, और विषविनाशक है । तथा वमनकारक है ।

कुकन्दरनामानि ।

कुकुन्दरस्ताम्रचूड सूक्ष्मपत्रोमृदुच्छद ।

अर्थ–कुकुन्दर, ताम्रचूड, सूक्ष्मपत्र, मृदुच्छद, (कुकुरद्रु) ।

सस्कृतभाषामें	कुकुन्दर, कुकुरद्रु ।
हिन्दीभाषामें	कुकुरौंदा ।
बंगभाषामें	कुकुरशोंका, कुकुरसुता ।
मराठीभाषामें	कुकुरबदा ।
गुजरातीभाषामें	कोकरुदा ।
लैटिन्भाषामें	ब्ल्युमियाओडोरेटा । Blumea Odorata
फारसीभाषामें	कमाफिसुस ।
अरबीभाषामें	सर्नोनरल् अर्द ।

अस्या गुणाः ।

कुकुन्दर कटुस्तिक्तोज्वरघ्नश्चोष्णकृन्मत ।
रक्तरुक्कफदाहानांतृषायाश्चैवनाशन ॥
अस्यार्द्रमूलञ्चमुखेधारितमुखदोषनुत । (नि० र०)

अर्थ–कुकरौंदा–चरपरा, कडवा, ज्वरनाशक, गरम, तथा रुधिरविकार, कफ, दाह, और तृषाको दूर करनेवाला, है । इसकी कच्ची जडको मुखमें रखनेसे मुखके रोग दूर होतेह ।

विवरण । मुकरोंदिके क्षुप, लम्बे लम्बे होते हैं । विशेष करके जलोंके स्थानोंमें उत्पन्न हो जातेहैं, पत्ते तम्बाकूकी समान बडे बडे होतेहैं, इनके ऊपर लाल शिखा होतीहै ।

सुदर्शननामानि ।

सुदर्शनासोमवल्लीचक्राङ्गीमधुपर्णिका ।

अर्थ-सुदर्शना-सोमवल्ली, चक्राङ्गी, मधुपर्णिका (चक्राह्वा, मधुपर्णी, वृषकर्णी, चक्राह्वा) ।

हिन्दीभाषामें	सुदर्शन ।
वंगभाषामें	सुदर्शनगुल्म, पद्मगु० ।

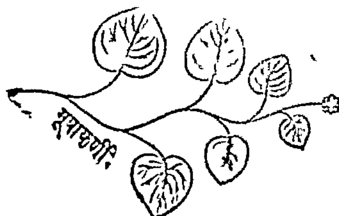
अस्या गुणाः ।

सुदर्शनास्वादुरुष्णाकफशोफास्रवातजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-सुदर्शन-स्वादिष्ठ, गरम, तथा कफ, सूजन, और वातरक्तको हरनेवाला है ।

विवरण । सुदर्शनका क्षुप चक्रकी समान होताहै, पत्ते लम्बे लम्बे ईखकी समान होतेहैं कभी कभी किसीपर सुफेद रंगका फूलभी आताहै ।

आखुपर्णीनामानि ।



मूषाकर्ण्याखुपर्णीचवृषपर्ण्याखुकर्णिका ।
भूमिचरीद्रवन्तीचशम्बरीभूषगाश्रया ॥

अर्थ-मूषाकर्णी-आखुपर्णी, वृषपर्णी, आखुकर्णिका, भूमिचरी, द्रवन्ती, शम्बरी, मूषगाश्रया (मूषिका, उन्दुरुकर्णी, न्यग्रोधी, मूषिकपर्णी, मूषिकपर्णी पत्रकर्णिका, माता, भूमिचरी, नन्दा, बहुपादिका, प्रत्यक्श्रेणी, वृषा, पुत्रश्रेणी, आदिनु शिवा, मूषगा, शतमूलिका, आखुशालिका, पृथि

कपर्णी प्रतिपर्णशिफा, सहस्रमूपी, विक्रान्ता, पत्रश्रेणी, आखुपर्णी, पर्णिका, भूदरीभवा, उपचित्रा, मूपिकाह्वया, रण्डा, आखुपर्णिका, मूषिका, फञ्जिपत्रिका, मूपिपर्णिका, सचित्रा मूपीकर्णा, सुकर्णिका, न्यग्रोधी) ।

संस्कृतभापामें	आखुकर्णी, मूपाकर्णी, द्रवन्ती ।
हिंदीभापामें	मूसाकानी ।
बंगलाभापामें	उन्दुरकानीपाना ।
मराठीभापामें	उंदिरकानी भोपनी ।
गुजरातीभापामें	उदरकनी ।
कर्णाटकीभापामें	वल्लिहर्हे ।
तैलङ्गीभापामें	एलुकचेविचेट्टु ।
लैटिनभापामें	आईपोमिया रेनिफोर्मिस्, Ipomoea Reniformis लेक्टूकारिमोटीलफोरा । Lectcaremotiflora
फारसीभापामें	गोरोसुप, सतर ।
अरबीभापामें	अजानुलफार ।
यु०	शरदम ।

अस्या गुणाः ।

आखुकर्णीकटुस्तिक्ताकपायाशीतलालघुः ।
विपाकेकटुकामूत्रकफामयक्रमिप्रणुत ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—मूसाकानी—चरपरी, कडवी, कषैली, शीतल, हलकी, पचनेमें चरपरी तथा मूत्ररोग, कफरोग और कृमिरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

द्रवन्तीकृमिहृत्तीक्ष्णायोनिदोपहरासरा । (शो०नि०)

अर्थ—मूसाकानी—कृमिनाशक, तीक्षण, सारक और योनिदोपहारक है ।

अपिच ।

लघ्व्याखुकर्णीकटुकातिक्ताचोष्णाचशीतला । रसायनीसरालघ्वीकपायाकफपित्तनुत ॥ शूलज्वरकृमिग्रन्थिमूत्रकृच्छ्रप्रमेहहृत ॥ अनाहोदरहृद्रोगविपपाण्डुभगन्दरान् । कुष्ठानिनाशयेदेवपूर्ववैद्यैर्निरूपितम् ॥

अर्थ—मूसाकानी—चरपरी, कडवी, गरम, शीतल, रसायन, सारक, हलकी,

कपेली तथा कफ, पित्त, शूल, ज्वर, कृमि, ग्रन्थि, मूत्रकृच्छ, प्रमेह, आनाह, उदररोग, हृदयरोग, विष, पाण्डुरोग, भगन्दर और कुष्ठको दूर करनेवाली है।

बृहदाखुपर्णीगुणाः।

आखुकर्णीबृहत्युक्ताशीतलामधुरास्मृता ।
रसबन्धकरीनेत्र्यारसायन्यथशूलनुत् ॥
ज्वरकृमीन्व्रणचाखुविषचैवविनाशयेत । (नि०र०)

अर्थ-बडी मूसाकानी-शीतल, मधुर, पारेको बाधनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, रसायन तथा शूल, ज्वर, कृमि, व्रण और मूसके विष हरनेवाली है।

विवरण। मूषाकर्णीका छत्ता पृथ्वीपर फैला हुआ होताहै, पत्तेमूसेके कानकी समान होते हैं, हरेकपत्तेके नीचे जड होती है, डारी सूक्ष्म और लालीलिये होती है और फल बहुत लगते हैं।

मयूरशिखानामानि।

वर्हिचूडातुशिखिनीशिखालुःसुशिखाशिखा ।
शिखिवलाकेकिशिखामयूराद्याभिधाशिखा ॥

अर्थ-बर्हिचूडा, शिखिनी, शिखालु, सुशिखा, शिखा, शिखिबला, केकिशिखा, मयूरशिखा, (नीलकण्ठशिखा, सहस्राहि, मयूरच्छदा, मयूरचूडा)

संस्कृतभाषामें	मयूरशिखा ।
हिंदीभाषामें	मोरशिखा (लालमुर्गा)
वङ्गभाषामें	मयूरशिखा ।
मराठीभाषामें	मयूरशिखा ।
गुजरातीभाषामें	मोरशिखा ।
कर्णाटकीभाषामें	होरेयमृक्षुव ।
तलिङ्गीभाषामें	मयूरशिखियनै क्षुपविशेषमु ।
लेटिनभाषामें	सिलोसिया क्रिस्टाटा । C...
फारसीभाषामें	अगनारी, गलान ।

अस्या गुणाः।

नीलकण्ठशिखालघ्वीपित्तश्लेष्मातिसारजित । (भा० प्र०)

अर्थ-मोरशिखा-हलकी तथा पित्त, कफ और अतिसारको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

वर्हिचूडारसेस्वादुर्मूत्रकृच्छ्रविनाशिनी ।
वालग्रहादिदोषघ्नीवश्यकर्म्मणिशस्यते ॥

अर्थ–मोरशिखा–स्वादुरसान्वित, मूत्रकृच्छ्रनाशक, वालग्रहादिदोषविनाशक और वशीकरण कर्ममें प्रशंसायोग्य है ।

अपिच ।

मयूराह्वाशिखाशीताकषायाम्लाम्लपाकिनी ।
लघ्वीपित्तकफपित्तमतीसारंविनाशयेत् ॥ (कै०चि०)

अर्थ–मोरशिखा–शीतल, कषैली, खट्टी, पचनेंमभी खट्टी, हलकी तथा पित्त, कफपित्त और अतिसारनिवारक है ।

विवरण । मोरशिखाके छोटे छोटे क्षुप होते हैं, यह प्राय. शुस्क भूमिमें उत्पन्न होती है, पत्ते–कटीले होते हैं, इसके ऊपर मोरकी समान चोटी होती है, इसी कारण इसको मोरशिखा कहते है, कितनेक वैद्य मोरशिखाको लज्जावतीका भेद कहते हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे गुडूच्यादिवर्गो ॥ २ ॥

अथ पुष्पवर्गः ।

पुष्पनामानि ।

स्त्रिय सुमनसःपुष्पप्रसूनकुसुमसुमम् ॥

अर्थ–सुमनस, पुष्प, प्रसून, कुसुम, सुम, (सून, प्रसव, सुमन)

पुष्परसनामानि ।

पुष्पद्रव पुष्पसार पुष्पस्वेदश्चपुष्पज· ।
पुष्पनिर्य्यासकश्चैवपुष्पाम्बुजपडाह्वय ॥

अर्थ–पुष्पद्रव, पुष्पसार, पुष्पस्वेद, पुष्पज, पुष्पनिर्यासक, पुष्पाम्बुज ।

संस्कृतभाषामें	पुष्प, पुष्पद्रव ।
हिन्दीभाषामें	फूल, पुष्पका अर्क, गुलाबादि अथवा पुष्पका मधु ।
बंगलाभाषामें	फुल, फुलेरस, गोलापजलप्रभृति वा मधु ।
मराठीभाषामें	फूल ।
गुजरातीभाषामें	फुल ।

कर्णाटकीभाषामें	हुविनपगर ।
तैलङ्गीभाषामें	पुवु ।
इंग्रेजीभाषामें	फ्लावर । Flower
लेटिन् भाषामें	फ्लोस् Flos फ्लारिस् Flores
फारसीभाषामें	गुल ।
अरबीभाषामें	वर्द ।

पुष्पधारणगुणाः ।

पुष्पस्यधारणकान्तिवर्द्धनकामकारकम् ।
ओज श्रीवर्द्धकञ्चैवपापग्रहविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पुष्पको धारण करनेसे-कान्ति, काम, ओज और लक्ष्मीकी वृद्धि होती है तथा पापग्रहका नाश होताहै ।

पुष्पद्रवगुणाः ।

पुष्पद्रव सुरभिशीतकपायगौल्यो दाहश्रमार्तिवमिमोहमु-खामयघ्न । तृष्णार्तिपित्तकफदोपहर सरश्च सन्तर्पणश्चि-रमरोचकहारकश्च ॥

अर्थ-पुष्पद्रव-(पुष्पका अर्क तथा मधु)-सुगन्धित, शीतल, कषैला, गौल्य तथा दाह, श्रम, वमन, मोह, मुखरोग, तृषा, पित्त, कफ और बहुत कालकी अरुचिको दूर करनेवाला है । तथा सारक और सन्तर्पण है ।

अन्यच्च ।

पुष्पद्रव सर शीतस्तुवर श्रमदाहहा ।
वान्तितृट्पित्तरोगघ्नोमुखरोगविनाशन ॥ (ग्रन्थान्तर)

अर्थ-पुष्पद्रव-सारक (दस्तावर), शीतल, कषैला तथा श्रम, वमन, तृषा, पित्तरोग और मुखरोग नाशक है ।

जात्याः नामानि ।

सुमनामालतीजातीचेतकीचसुरप्रिया ॥

अर्थ-सुमना-मालती-जाती, चेतकी, सुरप्रिया (सुगन्धिगन्धा, गन्ध-मादि, गन्धापुष्पी, मनोहरा, राजपुत्री, मनोज्ञा, वेल्लमालिनी, जातिः, स्वर्णगन्धा, जाति, राजपुत्रिका, चेतिका, त्रिपत्रा, मालिनी वामनी, सरस्वती, सुगन्धा, वम पजा, दासवरा)(२ स्वर्णजातिका, स्वर्णमाली,

प्रियवदा, मनोज्ञा, नृपात्मजा, जाति और वसन्तजाता) यह नाम पीली जातिके है ।

संस्कृतभाषामें	जाती, स्वर्णजाती ।
हिन्दीभाषामें	जाती (चमेली) जाई, पीलीजाई ।
बंगभाषामें	जाती (चामिली) स्वर्णजाती ।
मराठीभाषामें	पाढरी जाई, पिवळीजाई ।
कर्णाटकीभाषामें	जाजि ।
तैलङ्गीभाषामें	जाईपुष्पालु ।
तुर्कीभाषामें	जाजिपु ।
लैटिन्‌भाषामें	जेस्मिन फ्लेक्सार्ईलिस् ।

अस्या गुणाः।

जातीतुतुवरातिक्तालघ्वीचोष्णाकटुःस्मृता । मुखपाककफ वातमुखदन्तशिरोरुजम् ॥ अक्षिरोगविषकुष्ठरक्तदोषव्रण तथा। पित्तकृमीन्नाशयति कलिकास्याव्रणापहा ॥ विस्फो-टनेत्ररुक्कुष्ठनाशिनीतिबुधाजगुः।पुष्पसुगन्धिसंप्रोक्तमनो-ज्ञकफपित्तनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-जाती-कषेली, कडवी, हल्की, गरम, चरपरी, वमनकारक तथा मुखपाक, कफ, वात, मुखरोग, दन्तरोग, मस्तकरोग, नेत्ररोग, विष, कुष्ठ, रुधिरदोष, घाव, पित्त और कृमिरोगको दूर करनेवाली है। इसकी कली-व्रण, विस्फोट, नेत्ररोग और कुष्ठको नष्ट करे है। इसका फूल-सुगन्धित, मनोज्ञ, कफ और पित्तनाशक है।

स्वर्णजातीगुणाः ।

स्वर्णजातीचसंप्रोक्तादन्तशूलरुजापहा ।
रक्तदोषश्चपूयश्चकर्णशूलश्चनाशयेत् ॥
गुणास्त्वन्येतुजातीवज्ज्ञेया पूर्वमनीषिभिः ।

अर्थ-पीलीजाती-दन्तशूल, रुधिरविकार, पूय (राध, पीप) और कर्णशूलको दूर करनेवाली है । इसके शेष गुण जातीकी समान जानने ।

विवरण । जातीकी-बेल-भाय चौमासेमें अधिकताने होतीहै, फूल-सफेद और बारीक पँखडीका होता है ।

उपजातिनामानि ।



उपजाति सुवर्णाचसुरूपाश्रीमतीतथा ।
वर्णपुष्पाचचम्बेलीवल्लिहासाचवेशिका ॥

अर्थ-उपजाति, सुवर्णा, सुरूपा, श्रीमती, वर्णपुष्पा, चम्बेली, वल्लिहासा, वेशिका ।

संस्कृतभाषामें	उपजाति ।
हिंदीभाषामें	चमेली ।
बंगभाषामें	चामिली ।
मराठीभाषामें	चमेली ।
गुजरातीभाषामें	चंबेली ।
कर्णाटकीभाषामें	मोगराचाभेद ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पॅनिश् जासमीन । Spanish Jasmine
लैटिन्भाषामें	जेस्मिन ग्रान्डिफ्लोरा । Jasminum grandiflorum
फारसीभाषामें	यासमीन ।
अरबीभाषामें	यासमन् ।

अस्या गुणाः ।

चम्बेलीतुवरातिक्तात्रणकुष्ठविषास्रजित ।
शिरोक्षिमुखदन्तार्तिहरात्वग्दोषनाशिनी ॥

अर्थ-चमेली-कषेली, कड़वी, व्रण नाश, कोढ़, विष, रुधिरविकार,

शिरोरोग, नेत्ररोग, मुखरोग, दन्तरोग, और त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है ।

विवरण। चमेलीकी वेल-वन, उपवन, बाग और पुष्पवाटिकामें लगाई जातीहै, इसकी कली लम्बी डडीकी होतीहै, फूलका रग सफेद और ऊपर कुछ लाली लिये होता है, फूलकी सुगन्धि अत्यन्त प्रिय होती है, चमेलीके फूलोंमें तिलोंको बसाकर अर्थात् रखकर कुछ दिन पीछे कोल्हूमें पिरवाते हैं, तब उस तेलको फुलेल और चमेलीका तेल कहते हैं, वह उत्तम सुगन्धिवाला और शीतल होता है ।

वार्षिकी-मल्लिकामुद्गरनामानि ।

वार्षिकीशीतभीरुश्चमदयन्तीप्रमोदनी ।
भद्रवल्लीप्रियासौम्यामल्लिकावनचन्द्रिका ॥
मुद्गरकोगन्धराज सप्तपत्रश्चविट्प्रियः ।

अर्थ-वार्षिकी, शीतभीरु, मदयन्ती, प्रमोदिनी (अतिगन्धा, गवाक्षी, भूपदी, वार्षिकी, अष्टापदी, दन्तपत्रा, देवलता, श्रीपदी, षट्पदानन्दा, मुक्तबन्धना, दलकोपका) भद्रवल्ली, प्रिया, सौम्या, मल्लिका, वनचन्द्रिका, (भूपदी, शीतभीरु, तृणशल्य, तृणशून्या, गौरी, वनचन्द्रिका, नारीष्टा, गिरिजा, मिता, मल्ली) मुद्गरक, गन्धराज, सप्तपत्र, विट्प्रिय, (मुद्गरा, राजपुत्री, वर्तुल, षट्पद, प्रिया, गन्धसार, अतिगन्ध, प्रिय, जनेष्ट, भृंगेष्ट)

संस्कृतभाषामें	१ वार्षिकी, २ मल्लिका, ३ मुद्गर ।
हिन्दीभाषामें	वेला, मोतिया, घुघुरुमोतिया, वनमोगरा, मोगरा ।
वंगभाषामें	वेलफुलगाछ, मल्लिकाफुलेरगाछ, मल्लिकाभेद ।
गुजरातीभाषामें	वेलय, डोलर, जगलीचिखल्यो, रानमोगरो ।
मराठीभाषामें	मोगरी, रानमोगरी, सोर्ईमोगरा ।
कर्णाटकीभाषामें	वल्लिमाल्लिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	मल्लिपुष्पालु, मल्लेचेट्टु, कुरुकान्वाचेट्टु ।

लैटिन्भाषामें जेस्मिनपुविगेन्स । J जेस्मिनसँवॅक्। Jasminum Sambac

वार्षिकीगुणा ।

वार्षिकीशीतलालघ्वीतिक्तादोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नीतत्तैलतद्गुणस्मृतम् ॥

इत्यजातिनामानि।



अर्थ-मोतिया-मधुर, शीतल, [illegible], शुक्रस्थापक, कामको उत्पन्न करनेवाला, भौंरोंको आनन्दजनक, और पित्तके कोपको दूर करे है।

अथवा।

वार्षिकी शिशिरा हृद्या सुगन्धि पित्तनाशिनी ।
कफवातविषस्फोटकृमिदोषामनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बेला-शीतल, हृदयको हितकारी, सुगन्धित, पित्तनाशक, तथा कफ, वात, विष, स्फोट, कृमि और आमको दूर करनेवाला है।

अपिच।

मल्लिका कटुतिक्ता स्याच्चक्षुष्या मुखपाकहृत् ।
कुष्ठविस्फोटकण्डूतिविषव्रणहरा परा ॥

अर्थ-मल्लिका (मोतियाभेद)-चरपरा, कड़वा, नेत्रोंको हितकारी, मुखपाकनाशक तथा कुष्ठ, विस्फोट, खुजली, विष और व्रणको हरनेवाला है।

मल्लिकासम्भवपुष्पं तिक्तं जयति मारुतम् ॥ (शा० नि०)

अर्थ-मल्लिकाके फूल-कड़वे और वातको जीतते हैं।

विवरण। मोतिया, बेला, मुगुरमोतिया और मोगरा, यह सब एकभेदी होते हैं। पत्ते-पेड़के पत्तोंसे कुछ छोटे और विशेष रेखादार होते हैं, फूल-अत्यन्त सुगन्धित सुफेद रंगके होते हैं। मोतियाके फूल अधिक गोलदार हैं, मोगराके फूल कुछ कम गोल होते हैं।

शिरोरोग, नेत्ररोग, मुखरोग, दन्तरोग, और त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है ।

विवरण। चमेलीकी वेल-वन, उपवन, वाग और पुष्पवाटिकामें लगाई जातीहै, इसकी कली लम्बी डडीकी होतीहै, फूलका रग सफेद और ऊपर कुछ लाली लिये होता है, फूलकी सुगन्धि अत्यन्त प्रिय होती है, चमेलीके फूलोंमें तिलोंको वसाकर अर्थात् रखकर कुछ दिन पीछे कोल्हूमे पिरवाते हैं, तव उस तेलको फुलेल और चमेलीका तेल कहते है, वह उत्तम सुगन्धिवाला और शीतल होता है ।

वार्षकी-मल्लिकामुद्गरनामानि ।

वार्पिकीशीतभीरुश्चमदयन्तीप्रमोदनी ।
भद्रवल्लीप्रियासौम्यामल्लिकावनचन्द्रिका ॥

वगभापामें	[illegible]
गुजरातीभापाम	नेवरी ।
मराठीभापामें	नेवाळी, रायनेवाळी, वीरवन्ति ।
कर्णाटकीभापाम	विरवन्तिगे, विरवन्तिभेद ।
लैटिन्भापामें	इक्सोरा पार्विफ्लोरा । Ixora parviflora

अस्या गुणा ।

नेपालीकटुकातिक्ताशीताचसुरभिर्लघु ।
त्रिदोपनेत्ररोगघ्नीकर्णाननरुजापहा ॥
सर्वरोगहराप्रोक्तागुणज्ञै पूर्वकोविदै ।

अर्थ-नेवारी-चरपरी, कडवी, शीतल, सुगन्धि, हलकी तथा त्रिदोप, नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोग, सर्वरोगनाशक है ।

विवरण । नेवारीके वनमें वडे वडे वृक्ष होते हैं, पत्ते-लम्बे कुछ गोल होतेहैं, फूल-आमके बोरकी समान गुच्छोंमे आते हैं ।

यूथिकानामानि ।

यूथिकायूथिवासन्तीवालपुष्पीशिखण्डिनी ।
सापीतास्वर्णयूथीचहेमपुष्पीमनोहरा ॥

अर्थ-यूथिका, यूथि, वासन्ती, वालपुष्पी, शिखण्डिनी (गणिका, अम्वष्ठा,मागधी, महसन्ती, वालपुष्पिका, भृङ्गानन्दा, पुण्यगन्धा, गुणज्वला,

चारुमोदा, शिखण्डी, हारिणी, भस्त्रयूथिका, सुगन्धिका, मुषितकणी, सुगन्धा, मोदनी बहुगन्धा, गजाह्वया) यह जुहीके नाम हैं। स्वर्णयूथी, हेमपुष्पी मनोहरा, (सुवर्णयूथी, हेमपुष्पा, सुगन्धा, हेमयूथिका, युवतीष्टा, रक्तगन्धा, शिखण्डी, नागपुष्पिका, पीतयूथी, पीतिका, कनकप्रभा, हेमा, गन्धाढ्या, हेमपुष्पिका, सुवर्णाढ्या, व्यक्तगन्धा, पीतयूथी) यह पीली जुहीके नामहैं।

संस्कृतभाषामें	यूथिका, यूथी।
हिंदीभाषामें	जुही, पीलीजुही।
बंगभाषामें	जुइ, स्वर्णजुई।
मराठीभाषामें	पाढरी लहान जुई, पिवळी जुई।
गुजरातीभाषामें	जुईजिगरी, पीली जुई।
कर्णाटकीभाषामें	यरदुमोल्ले।
तैलिङ्गीभाषामें	जुईपुष्पालु।
लैटिन्भाषामें	जास्मिन औरिक्युलेटम् । Jasminum Auriculatum

द्विविधयूथिकागुणाः।

यूथिकायुगलस्वादुशिशिरशर्करार्त्तिनुत्। पित्तदाहतृषाहारिनानात्वग्दोषनाशनम् ॥ सर्वासांयूथिकानान्तुरसवीर्यादिसाम्यता । सुरूपसुगन्धाढयस्वर्णयूथ्यांविशेषतः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी जुही-स्वादिष्ठ, शीतल, तथा शर्करारोग, विष, दाह, तृषा और नानाप्रकारके त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है, सबप्रकारकी जुही रस, वीर्य और विपाकमें समानही है, परन्तु पीली जुही सुरूपमें और सुगन्धिमें अधिक है।

अन्यच्च।

यूथियुग्महिमतिक्तंकटुपाकरसंलघु ।
मधुरंतुवरंहृद्यंपित्तघ्नकफवातलम् ॥
व्रणास्यमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम् ।

अर्थ-दोनोप्रकारकी जुही-शीतल, कडवी, पाकमें चरपरी, हलकी, मधुर, कषैली, हृदयको हितकारी पित्तनाशक, कफ और वातकारक तथा

व्रण, रुधिरविकार, मुखरोग, दन्तरोग, नेत्ररोग, मस्तकरोग, और विषको नाश करनेवाली है ।

विवरण । जुहीकी वेल–वन, उपवन और पुष्पवाटिकामें होतीहै, फूलकी पँखडी सपेद रंगकी और सुगन्धिवाली होती है, दूसरी पीलेरंगकी जुही होतीहै, उसके फूल पीलेरंगके होतेहैं, पीली जुही अत्यन्त शोभायुक्त और सुगन्धिदायक है ।

माधवीनामानि ।

अतिमुक्तामाधवीचसुवसन्तापराश्रया ।
अतिमुक्तःकामुकश्चमण्डपोभ्रमरोत्सवः ॥

अर्थ–अतिमुक्ता, माधवी, सुवसन्ता, पराश्रया, अतिमुक्त, कामुक, मण्डप, भ्रमरोत्सव (चन्द्रवल्ली, सुगन्धा, भृङ्गप्रिया, भद्रलता, भूमिमण्डप, भूषणा, वासन्ती, पुण्ड्रकलता, अतिमुक्तक, माधविका, विमुक्तक, माधवीलता, वसन्तदूती, और लतामाधवी)

संस्कृतभाषामें	माधवी ।
हिन्दीभाषामें	माधवी ।
बंगभाषामें	माधवीलता ।
गुजरातीभाषामें	माधवीलता, रक्तपित्ति ।
मराठीभाषामें	पीतवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	इन्द्रगोचे, विरवन्तिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	माधवतीगे, पुष्पुन्गुरिविंद ।
इंग्रेजीभाषामें	क्लस्टर्ड हिप्टेज । Clustered Hiptage
लेटिन्भाषामें	हिप्टेजमेडेब्लोटा Hiptage Madablota

अस्या गुणा ।

माधवीकटुकातिक्ताकषायामदगन्धिका ।
पित्तकासव्रणान्हन्तिदाहशोषविनाशिनी ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ–माधवीलता–चरपरी, कडवी, कषैली, मदगन्धवाली, तथा पित्त, खाँसी, व्रण, दाह और शोषको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

माधवीमधुराशीतालघ्वीदोषत्रयापहा । (भा॰प्र॰)

अर्थ–माधवीलता–मधुर, शीतल, हलकी, और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण। माधवी लताकी बडी बेल होती है, पत्ते-चम्पाकी समान होते हैं, फूल-तिलके फूलकी समान होते हैं, और गुच्छोंमें आते हैं।

मालतीनामानि।

मालतीसुमनाजातिर्वासन्तीयुवतीतथा ॥

अर्थ-मालती, सुमना, जाति, वासन्ती, युवती।

संस्कृतभाषामें मालती।
हिन्दीभाषामें
बंगभाषामें
मराठीभाषामें
गुजरातीभाषामें
लैटिन्भाषामें एकाईटिस् कार्पोफाइलेटा। Echites Coryophyllata

अस्या गुणाः।

मालतीकफपित्तास्यरुग्व्रणक्रिमिकुष्ठजित।
चक्षुष्यंकुसुमं तस्याः पत्रंतत्कफपित्तजित् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मालतीलता कफ, पित्त, मुखरोग, व्रण, क्रिमि, और कुष्ठनाशक है। मालतीके फूल-नेत्रोंको हितकारी हैं। मालतीके पत्ते-कफ और पित्तको हरनेवाले हैं।

अन्यच्च।

मालतीकफपितास्रत्वग्दोषक्रिमिकुष्ठनुत्।
वामनीव्रणशोथघ्नीप्लीहकर्णास्यपाकहृत ॥ (शो०नि०)

अर्थ-मालती-कफ, रक्तपित्त, त्वचाके दोष, कृमि, और कुष्ठनाशक है, वमनकारक, तथा व्रण, सूजन, और कानमें तथा मुखके पकनेको दूर करे है।

विवरण। मालती लताकीभी बेल होती है, फूल गुच्छोंमें आते हैं, पत्ते जीवन्तीकी समान होते हैं।

शतपत्री शतपत्री कुब्जका नामानि।

सेवतीशतपत्रीकर्णिकाचारुकेसरा।
शतपत्रीमोम्यगन्धामहाराशतपत्रिका ॥
कुब्जकोभद्रतरुणीवृत्तपुष्पोतिकेसर।

अर्थ-सेवती, शतपत्री, कर्णिका, चारुकेसरा (गुलाबी, गदा, स्व

पत्री, गन्धाढ्या, शिववल्लभा, भृङ्गेष्टा, तरुणी, सुदला, बहुपत्रिका, भृङ्गवल्लभा) शतपत्री, सौम्यगन्धा, सुवृत्ता, शतपत्रिका, (महाकुमारी, लाक्षापुष्पा, अतिमञ्जुला, सुमना, सुशीता, शतदला, सुवृत्ता,) कुब्जक, भद्रतरुणी, वृत्तपुष्प, अतिकेसर, (महासह, कण्टकाढ्य, खर्व, अलिकुल सकुल, बृहत्पुष्प, महासहा, कण्टकाढ्या, देवतरुणी, वारिकण्टक)





संस्कृतभाषामें	तरुणी, शतपत्री, कुब्जक।
हिन्दीभाषामें	सेवती, गुलाब, कूजा, सदागुलाब।
बंगभाषामें	सेउती, गोलाप, कृजा, श्वेतगोलाप।
मराठीभाषामें	गुलाबाचें फूल, शेवती, काटेशेवन्ती।
गुजरातीभाषामें	शेवती, गुलाब, मोशमीगुलाब।
कर्णाटकीभाषामें	सेवतिगे, चेवडे।
तैलिङ्गीभाषामें	गुलाबीपुवु, चेमण्डिचेट्टु।
इंग्रेजीभाषामें	केबेजरोज Cabbageroos गुलकंद कनफेक्शन Confection ऑफरोस of roso
लेटिन् भाषामें	रोसा सेण्टिफोलिया Rosa Centifolia रोसाडेमेसेना Rosa damascena
फारसीभाषामें	गुले, गुलसुर्ख, गुलेमुश्की।
अरबीभाषामें	वर्दअह्मरजनरीन, जरनबीन, गुलकंद, माउलवर्द, अर्क।

विवरण। माधवी लताकी यही भेद होती है, पत्ते-चम्पाकी समान होते हैं, फूल-बिल्के फूलकी समान होते हैं, और गुच्छोंमें लगते हैं।

मालतीनामानि।

मालतीसुमनाजातिर्वासन्तीयुवतीतथा ॥

अर्थ-मालती, सुमना, जाति, वासन्ती, युवती।

संस्कृतभाषामें मालती।

हिन्दीभाषामें

बंगभाषामें

मराठीभाषामें

गुजरातीभाषामें

लैटिन्भाषामें एकाइंटिस् कार्योफाइल्टा। Echites Caryophyllata

अस्या गुणाः।

--मालतीकफपित्तास्यरुग्व्रणक्रिमिकुष्ठजित्।

शतपत्रीहिमाहृद्याग्राहिणीशुक्रपित्तजित् ॥ (रा०प्र०)

दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्यातिक्ताकट्वीचपाचनी ॥ गुरु

अर्थ-सेवती-शीतल, हृदयको हितकारी, मलरोधक, शुक्रजनक, रक्तपित्तनाशक, त्रिदोषनाशक, रक्तदोषविनाशक, कडवी, चरपरी और पाचक है।

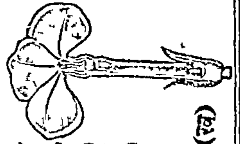
अन्यच्च।

शतपत्रीमराट्पुष्पाशीताहृद्याचशुक्रला।लघ्वीचतुवरास्वा-द्वीसुरभिर्ग्राहिणीमता॥ वर्ण्याकट्वीचतिक्ताचरुच्याचाग्नि-प्रदीपनी। त्रिदोषमुखपाकघ्नकपित्तंकफंतथा॥ पित्तर-क्तविकारघ्नदाहशमननिनाशयेत। पुष्पन्तुशीतलंवर्ण्यंवात-पित्तविदाहनुत ॥

अर्थ-सेवती-शीतल, वीर्यवर्द्धक, शीतल, हृदयको हितकारी, शुक्रजनक, हलकी, कसैली, स्वादिष्ठ, सुगन्धित, मलरोधक, वर्णको सुन्दर करनेवाली, चरपरी, कडवी, रुचिकारक, अग्निदीपक तथा त्रिदोष, मुखपाक, रक्तपित्त, कफ, पित्त, रुधिरविकार और दाहको दूर करनेवाली है। इसका फूल-शीतल, वर्णको उत्तम करनेवाला, वात, पित्त और दाहनाशक है।

पत्री, गन्धाढ्या, शिववल्लभा, भृङ्गेष्टा, तरुणी, सुदला, वहुपत्रिका, भृङ्गवल्लभा) शतपत्री, सौम्यगन्धा, सुवृत्ता, शतपत्रिका, (महाकुमारी, लाक्षापुष्पा, अतिमञ्जुला, सुमना, सुशीता, शतदला, सुवृत्ता,) कुब्जक, भद्रतरुणी, वृत्तपुष्प, अतिकेसर, (महासह, कण्टकाढ्य, खर्व, अलिकुल सकुल, वृहत्पुष्प, महासहा, कण्टकाढ्या, देवतरुणी, वारिकण्टक)







...दाहभ्रवातपित्तजित् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–कूजा (सदागुलाब)–सुगन्धि, शीतल, तथा रक्तपित्त और कफ ...शक है । इसका फूल–शीतल, वर्णको सुदरतादायक तथा दाह और वातपित्तनाशक है ।

विवरण । सेवती, गुलाव और कूजा यह तीनों क्षुपजातिके वृक्ष–वन उपवन और पुष्पवाटिकामें होतेहैं, तहा सेवती सपेद फूलवाली और प्राचीन है, गुलाव, लाल फूलका, पीलेफूलका, सपेद फूलका और अनेक जातिका नवीन है, अर्थात् पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होता था, कूजेपै भी सपेद फूल आता है, इसके फूलमें गुलाव और सेवतीकी अपेक्षा अल्प सुगन्धि होतीहै । एक मोशमी गुलाव, दूसरा वारहमासी होताहै, मोशमी गुलाव चैत्र वैशाखमें खिलताहै और इसमें सुगन्धि अत्यन्त होतीहै, वारहमासी गुलावपै सदैव फूल आते है । गुलाव और सेवतीके फूलोंका गुलकन्द तथा पाक वनताहै, वह पाक पुष्टिकारी, वलदायक और दस्तावर है । मारवाडकी ओर गुलावके वन होतेहैं । गुलावका अर्क अत्यन्त गुणकारी है । औषधिके प्रयोगमें सेवती और मोशमी गुलाव लेना चाहिये ।

चम्पकनामानि ।

चम्पकःसुकुमारश्चसुरभि शीतलश्चस ।
चाम्पेयोहेमपुष्पश्चकाञ्चन·षट्पदातिथिः ॥

अर्थ-चम्पक, सुकुमार, सुरभि, शीतल, चाम्पेय, हेमपुष्प, काञ्चन, षट्पदातिथि, (कुसुमाधिराट्, हेमाह्व, सुभग, शीतलच्छद, कुसुमाधिप, वरलभ्य, उग्रगन्ध, कटु, हेमपुष्पक, पुष्पगन्ध, नागपुष्प, स्वर्णपुष्प, भृङ्गमोहि, भ्रमरातिथि, दीपपुष्प, वनदीप, स्थिरगन्ध, अतिगन्धक, पीतपुष्प, सुकुमार, स्थिरपुष्प)

अस्य कलिकानामानि ।

एतस्य कलिकागन्धफलीतिकथिताबुधै ॥

अर्थ-चम्पाकी कलीको गन्धफली, (षट्गन्धा, गन्धमोदिनी, चम्पककोरक कहते हैं)

संस्कृतभाषामें	चम्पक ।
हिन्दीभाषामें	चम्पा (आर्जन, हे०)
बंगभाषामें	चापा ।
मराठीभाषामें	सोनचांफा, पिवळाचाफा ।
गुजरातीभाषामें	सपचपो, पीलोचपो ।
कर्णाटकीभाषामें	सम्पगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चपागी पुट्टु ।
ता०	चवक । नु० सपेडो ।
लैटिन्भाषामें	मिचेल्या चम्पेका । Michelia Champaca

अस्य गुणाः ।

चम्पकः कटुकस्तिक्तः कषायोमधुरोहिमः ।

विषक्रिमिहरः कृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चम्पा-चरपरी, कड़वी, कषैली, मधुर, शीतल, तथा विष, कृमि, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात और रक्तपित्तको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

चम्पकः कटुकस्तिक्तः शिशिरोदाहनाशनः ।

कुष्ठकण्डूव्रणहरोगुणाढ्योराजचम्पकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चम्पा-चरपरी, कड़वी, शीतल तथा दाह, कुष्ठ और व्रणको हरनेवाली है । इसमें राजचम्पा अधिक गुणवाली है ।

चम्पकगुणाः ।

चम्पकःकफपित्तघ्नःशीतोष्णंकफनाशनम् ॥ (सु० स०)

अर्थ—चम्पाके फूल—रक्तपित्तनाशक, शीतल, उष्ण और कफनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

चाम्पेयकुसुमशीतकपायस्वादुपाकिच ।
कफपित्तहरंतद्वत्पुन्नागस्यचसम्भवम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ—चम्पाके फूल—शीतल, कपेले, पचनेमें स्वादिष्ठ, तथा कफ और पित्तनाशक हैं ।

अपिच ।

सुवर्णचम्पकश्चोक्तःशीतलस्तिक्तक:कटु । तुवरोमधुरोवृ-ष्योहृद्यश्चैवसुगन्धिद: ॥ भ्रमराणांघातकरोदाहपित्तकफा-पह: । रक्तदोपमूत्रकृच्छ्रवातंकुष्टविषंतथा ॥ कृमिकण्डूव्र-णांश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—चम्पा—कडवी, चरपरी, शीतल, कपेली, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, हृद-यको हितकारी, सुगन्धि, भौरोंका नाश करनेवाली तथा दाह, पित्त, रुधि-रविकार, मूत्रकृच्छ्र, वात, कुष्ठ, विष, कृमि, कण्डु और व्रणको दूर करनेवाली है ।

विवरण । चम्पाका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते—रामफलकी समान होतेहैं, फूल—पीले अत्यंत सुगंधियुक्त होते है ।

चम्पकभेदा: ।

श्वेतस्तुचम्पक प्रोक्तोनागादिश्चम्पकस्तथा ।
सुलतानचम्पकश्चान्योनीलश्चभूमिचम्पक: ॥

संस्कृतभाषामें	श्वेतचम्पक (क्षुद्रचम्पक, क्षीरवृक्ष) २ नागचम्पक, (नागपुष्प, नागकेशरक) ३ सुल्तानचम्पक, ४ नीलचम्पक (मधुगन्धि, मनोहर) ५भूमिचम्पक ।
हिन्दीभाषामें	१ सपेदचंपा, २ नागचम्पा, ३ सुल्तानचम्पा, ४ नीलचंपा, भुँइचंपा ।
मराठीभाषामें	१ खुरचाफा, २ नागचाफा, ३ सुलतानचाफा, ४ निळाचांफा, ५ भुईचाफा ।
गुजरातीभाषामें	१ धोळोचम्पो, २ नागचम्पो, ३ सुलतानचम्पो, ४ लीलोचम्पो ५ भूचम्पो ।

कर्णाटकीभाषामें १ नागचम्पगे ।
तैलङ्गीभाषामें १ गणेरचेट्टु ।
लैटीनभाषामें १ प्ल्युमेरिया एक्युटिफोलिया । Plumer 1 acutifo lia मेसुआफेरिआ Mesuaferma केलोफिल्लं इनोफिल्लं Calophyllum Inobillum स्वाटसेन्टेडकेलोफिल्लं, (३०) Sweet scented calophyllum आर्टबोट्रिस ओडोरेटिसिमा । Artabotys Odoratissima केम्फेरिया रटुंडा । Kaempheria rotunda

श्वेतादिचम्पकगुणाः ।

श्वेतस्तुचम्पकःप्रोक्तःसरस्तिक्तः कटुः स्मृतः । तुवरोष्णः कुष्ठकण्डूव्रणशूलकफापहः ॥ वातचोदररोगश्चआध्मानचैवनाशयेत । नागनामाचम्पकस्तुवर्ण्यश्चोष्णः कटुःस्मृतः ॥ व्रणरोपणकारीचचक्षुष्यः कफवातहा । वस्त्वतरस्यसयोगादग्निस्तम्भकरोमतः ॥ भूमिजश्चम्पकश्चोष्णः कटुः शोथरुजापहः । गलगण्डव्रणश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद चम्पा-सारक (दस्तावर) कड़वी, चरपरी, कषैली, गरम, तथा कुष्ठ, कण्डू, व्रण, शूल, कफवात, उदररोग और आध्मान रोगको दूर करनेवाली है । नागचम्पा-वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गरम, चरपरी, व्रणको भरनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, तथा कफ और वातनाशक है । और वस्तुओंके संयोगसे अग्निस्तम्भक है । भुईचम्पा-गरम, चरपरी, तथा शोथरोग, गलगण्ड और व्रणको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सफेद चम्पाका वृक्ष बड़ा होता है, पत्ते-लम्बे और तोड़नेसे दूध निकलता है, फूल-सफेद और थोड़े भाग पीला होता है । नागचम्पाका वृक्ष मध्यमाकारका होता है, पत्ते-रामबाणकी समान होते हैं, फूल-सफेद रंगका होता है, उन फूलोंको नागकेसर कहते हैं, नागकेसरके गुण सुगन्धिवर्गमें लिखचुके हैं । सुलतानचम्पाके फूलोंको भी नागकेसर कहते हैं, नागकेसरकी दो जाती हैं इसको आगे लिखेंगे । भूमिचम्पाका फूल ऐसे पृथ्वीमेंसे निकलै है ऐसा होता है, पत्ते-हलदीके समान होते हैं । फूल-सफेद आता है और सुगन्धभी मुश्कबेदकीसी आती है ।

वकुलनामानि ।

वकुल·केशर·कण्ठस्तैलाङ्गोमधुपञ्जर· ॥

अर्थ–वकुल, केशर, कण्ठ, तलाग, मधुपञ्जर (सिंहकेशर, केशर, मुकुल, वकुल, मकुल, वरलब्ध, सीधुगन्ध, स्त्रीमुखमधु, दोहल, मधुपुष्प, सुरभि, भ्रमरानन्द, स्थिरकुसुम, शारदिक, करक, सिन्धुगन्ध, विशारद, गूढपुष्पक, धन्वी, मदन, पद्यमोद, चिरपुष्प)

संस्कृतभाषामें	वकुल ।
हिन्दीभाषामें	मौलसिरी, वकुल ।
वंगभाषामें	वकुलगाछ ।
मराठीभाषामें	वकुळ ।
गुजरातीभाषामें	बोलसरी, वरशोली ।
कर्णाटकीभाषामें	करक ।
तैलिंगीभाषामें	पावडा, पोगडचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	वउडकुडि ।
तामिलीभाषामें	मोगदम् ।
दा०	बोलसरी ।
इंग्रेजीभाषामें	सुरीनाममेडलर । Surinam medlar
लैटिन्भाषामें	माईमुसोप्सइलजीआई । MimusopsElen.

वकुलगुणा ।

वकुल·शीतलोहृद्योविपदोपविनाशन· ।
मधुरश्चकपायश्चमदाढ्योहर्पदायक ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–मौलसिरी–शीतल, हृदयको हितकारी, विपदोपनाशक, मधुर, कपेली, मदाढ्य, और हर्पदायक है ।

अन्यच्च ।

वकुलस्तुवरोऽनुष्ण कटुपाकरसोगुरु ।
कफपित्तविपश्वित्रकृमिदन्तगदापह ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–मौलसिरी–कपेली, अनुष्ण, पाक और रसमें चरपरी, भारी, तथा कफ, पित्त, विप, श्वित्रकुष्ठ, कृमि और दन्तरोगोंको दूर करनेवाली है।

वकुलपुष्पगुणा ।

वकुलजकुसुमरुच्यक्षीराढ्यसुरभिशीतलमधुरम ।

स्निग्धकषायंकथितंमलमग्रहकारकंचैव ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मौलसिरीके फूल-रुचिकारक, शीतल, सुगन्धि, शीतल, मधुर, स्निग्ध, कषैले और मलको संग्रह करनेवाले हैं।

अथवा।

पुष्पकषायमधुरशीतपित्तकफास्रजित ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ मौलसिरीके फूल-कषैले, मधुर, शीतल, कफ और रुधिरविकारोंको दूर करनेवाले हैं।

बकुलफलगुणाः।

मधुरञ्चकषायञ्चस्निग्धंसंग्राहिवाकुलम।

स्थिरीकरञ्चदन्तानांविशदफलमुच्यते ॥ (सु० सं०)

अर्थ-मौलसिरीके फल-मधुर, कषैले, स्निग्ध, मलको संग्रह करनेवाले, दांतोंको स्थिर करनेवाले और विशद हैं।

अथवा।

तत्फलमधुरस्निग्धकषायंविशदंहिमम।

कफपित्तहृदन्त्यविषन्याध्मानवातकृत् ॥ (ध० नि०)

अर्थ-मौलसिरीके फल-मधुर, स्निग्ध, कषैले, विशद, शीतल, कफपित्तनाशक, दांतोंको स्थिर करनेवाले, तथा विषघ्न, आध्मान और वातकारक हैं।

अपिच।

बकुलस्यफलंरुच्यंविशदंस्तम्भनगुरु।कषायमधुरंशीतंले-खनकफपित्तनुत॥दन्तदार्ढ्यकरग्राहिविषन्याध्मानवात-कृत।तद्बीजदन्तचालनस्यान्नसीर्षरुजापहम ॥ (शो० नि०)

अर्थ-मौलसिरीके फल-रुचि, विशद, स्तम्भन, भारी, कषैले, मधुर, शीतल, लेखन, कफपित्तनाशक दांतोंको दृढकरनेवाले, मलरोधक, तथा विषघ्न, आध्मान और वातकारक हैं। मौलसिरीके बीज दांतोंके हिलनेको दूर करें अर्थात दांतोंको स्थिरकारक हैं, और मौलसिरीके बीजोंका नास लेनेसे शिरोरोग नाशको प्राप्त होता है।

गुडबकुलस्यनामानि।

शिवमल्लीपाशुपतएकाष्ठीलोबुकोवसुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक, वसु (शैव, शिवपिण्ड, सुव्रत, वसुक, शिवाग, शिवेष्ठ, क्रमपूरक, शिवाह्लाद, शाम्भव)

संस्कृतभाषामें शिवमल्ली, बृहद्बकुल ।
हिन्दीभाषामें वनहुला, बृहन्मौलसिरी ।
मराठीभाषामें थोरबकुल ।
गुजरातीभाषामें वरशोली, मोटीबालसिरी ।
कर्णाटकीभाषामें बगेदाट्ट ।

अस्य गुणाः ।

बुकोऽनुष्णःकटुस्तिक्तःकफपित्तविषापहः ।
योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥

अर्थ-बडी मौलसिरी-अनुष्ण, चरपरी, कडवी, तथा कफ, पित्त, विष, योनिशूल, तृषा, दाह, कुष्ठ, सूजन और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बुकः शीतोविषश्लेष्मपित्तकृच्छ्राश्मदाहनुत् ।

अर्थ-बृहन्मौलसिरी (वनहुला,)-शीतल, तथा विष, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और दाहका नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

स्थूलपुष्पश्चबकुलोदीपनोमधुरः कटुः ।
पित्तदाहकफश्वासमूत्रकृच्छ्रविषश्रमान् ॥
अश्मरींनाशयत्येवमदगन्धिश्चविद्यते (नि० र०)

अर्थ-बडीमौलसिरी-अग्निमदीपक, मधुर, चरपरी तथा पित्त, दाह, कफ, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, विष, श्रम और पथरी रोगका नाश करे है, तथा मदगन्धियुक्त है ।

विवरण-मौलसिरीके वृक्ष-वन और उपवनोंमे होते हैं, पत्ते-राजजामुनके समान होते हैं, फूल-सूक्ष्म और सपेद तथा चक्रके आकारके होते हैं, फूलमें अत्यन्त सुगन्ध होती है इसकी सुगन्ध सुखानेपरभी न्यून नहीं होती, मौलसिरीकी नर नारी दो जाती है । एकमें फल आते हैं, और दूसरेमें नहीं आते है जिसपर फल नहीं आते उस मौलसिरीका फूल कुछ बडा और सपेद होता है और जिसपर सिन्दूरी रंगका फूल आता

स्निग्धं कषायं कथितं मलसंग्रहकारकं चैव ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मौलसिरीके वृक्ष-रुचिकारक, शीतादय, सुगन्धि, शीतल, मधुर, स्निग्ध, कसैले और मलको संग्रह करनेवाले है ।

मदनपाल ।

पुष्पं कषायं मधुरं शीतं पित्तकफास्रजित् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ मौलसिरीके फूल-कसैले, मधुर, शीतल, कफ और रुधिरविकारोंको दूर करनेवाले हैं ।

बकुलफलगुणा ।

मधुरं च कषायं च स्निग्धं संग्राहि बाकुलम् ।

स्थिरीकरं च दन्तानां विशदं फलमुच्यते ॥ (सु० सं०)

अर्थ-मौलसिरीके फल-मधुर, कसैले, स्निग्ध, मलको संचित करनेवाले, दांतोंको मजबूत करनेवाले और विशद हैं ।

वर्णाटकीभाषामें	[illegible]
तलङ्गीभाषामें	बोल्गु ।
तामिलभाषामें	दह्लो ।
अंगरेजीभाषामें	बद्. ।
लेटिनभाषामें	टेरोस्पर्मम् सुबेरीफोलियम । Pterospermum Suberifolium

अस्य गुणा ।

मुचुकुन्दः कटुस्तिक्तः कफकासास्रकण्ठदोषघ्नः ।

त्वग्दोषशोफशमनो व्रणपामाविनाशनश्चैव ॥

अर्थ-मुचकुन्द-चरपरा, कड़वा तथा कफ, खांसी, रुधिरविकार, कण्ठरोग, त्वचारोग, सूजन, व्रण और पामारोग नाशक है ।

मदनपाल ।

मुचुकुन्दः शिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः । (म० पा० नि०)

अर्थ-मुचकुन्द-शिरकी पीडा और रक्तपित्त विनाशक है ।

अन्यच्च ।

मुचुकुन्दः कटुश्चोष्णस्तिक्तः स्वरे कषायः ।

कासत्वग्दोषशोफघ्नः शिरःपीडानिवारणः ॥

निर्दोषरक्तपित्तघ्नः पित्तरक्तविदूषणः । ([illegible])

अर्थ-शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक, वसु (शैव, शिवपिण्ड, सुव्रत, वसुक, शिवाग, शिवेष्ट, क्रमपूरक, शिवाह्लाद, शाम्भव)

संस्कृतभाषामें	शिवमल्ली, बृहद्बकुल ।
हिन्दीभाषामें	वनबुला, बृहन्मौलसिरी ।
मराठीभाषामें	थोरबकुल ।
गुजरातीभाषामें	वरशोली, मोटीवालसिरी ।
कर्णाटकीभाषामें	वगेटाड्ड ।

अस्य गुणाः ।

बुकोऽनुष्ण कटुस्तिक्त कफपित्तविषापहः ।
योनिशूलतृषादाहकुष्टशोथास्त्रनाशनः ॥

अर्थ-बडी मौलसिरी-अनुष्ण, चरपरी, कडवी, तथा कफ, पित्त, विष, योनिशूल, तृषा, दाह, कुष्ठ, सूजन और रुधिरविकारको दूर करे है ।

हिन्दीभाषामें	कुंदेकावृक्ष, कुंदेका फूल ।
बंगभाषामें	कुन्द ।
मराठीभाषामें	कुन्द ।
कर्णाटकीभाषामें	सुरागि ।
तैलिंगीभाषामें	मोल्ल ।

अस्य गुणाः ।

कुन्दशीतलघुश्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तजित ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुन्द-शीतल, हलका, तथा कफ, शिरोरोग, विष और पित्तका नाश करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

कुन्दोतिमधुर शीत कषाय केशभावन ।
कफपित्तहरश्चैवसरोदीपनपाचन. ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुन्द-अत्यन्त-मधुर, शीतल, कषैला, केशभावन, सारक (कुछेक दस्तावर), अग्निदीप, पाचक और कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

कुन्द शीतोतिमधुरस्तुवरःसारकोलघु । पाचकोदीपको हृद्य कटुकस्तिक्तक स्मृत ॥ पित्तरोगशिरोरोगविषशो-

श्वासनाशनः । रक्तदोषञ्च वातञ्च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ।
(नि० र०)

अर्थ-कुन्द-शीतल, अत्यन्तमधुर, कषैला, सारक, हलका, पाचक, दीपन, रुच्यको हितकारी, चरपरा, कड़वा तथा शिरोरोग, मस्तकरोग, विष, सूजन, श्वास, रुधिरविकार और वातको हरनेवाला है ।

विवरण । कुन्दके वृक्ष-छोटे छोटे होते हैं, पुष्प-अतीव सुन्दर सफेद रंगके आते हैं ।

तिलकनामानि ।

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्पुरुषश्छिन्नपुष्पकः ।

अर्थ-तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, पुरुष, छिन्नपुष्पक (मुखमण्डनक, विशेषक, पुण्ड्र, पुण्ड्रक, स्थिरपुष्पा, [illegible] मधुपद, भूतजीव, [illegible], वसन्तसुन्दर, कुचकर, भालविभूषणक, पुन्नाग, रेचक, [illegible])

संस्कृतभाषामें	तिलकपुष्पवृक्ष ।
हिन्दीभाषामें	तिलकपुष्प ।
गुजरातीभाषामें	तिलकवृक्ष ।
मराठीभाषामें	तिलपुष्पक ।
कर्णाटकीभाषामें	तिलकपुष्पविशेष ।

अथ गुणाः ।

तिलकः कटुकः पाके स्नेहोष्णो रसायनः ।
कफकुष्ठकृमीन्वस्तिमुखदन्तगदान्हरेत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तिलकपुष्पवृक्ष-पकनेमें चरपरा, स्नेहमें भी गरम, गरम, रसायन तथा कफ, कुष्ठ, कृमि, वस्तिरोग मुखरोग और दन्तादिरोगोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

तिलको मधुरः स्निग्धो वातपित्तकफापहः ।
बलपुष्टिकरो हृद्यो लघुर्मेदोविवर्द्धनः ॥

अर्थ-तिलक-मधुर, स्निग्ध, बलदायक, पुष्टिकारक, हृदयको हितकारी, हलका, मेदावर्धक तथा वात, पित्त और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

तिलकोमधुरः स्निग्धः पौष्टिको बल्यमेदकृत् । [illegible]-

त्युष्ण पाकेचोष्णकरःस्मृतः ॥ रसायनस्तीक्ष्णरूक्षोदन्त-रुक्कृमिकुष्ठहा॥वातपित्तकफघ्नश्वविपकण्डूव्रणापह॰॥रक्त-रुग्दुग्धरुग्वस्तिरुजांनाशकर स्मृतः । तिलकःक्षारयोगेन गुल्मशूलोदरापह॰ । त्वगस्यतुवराचोष्णापुंस्त्वघ्नी दन्तदोपहा ॥ रक्तदोपकृमिव्रणशोफानाचविनाशिनी ॥ (नि॰र॰)

अर्थ-तिलक-मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, मेदजनक, हृदयको हितकारी, हलका, रसमें अत्यन्त उष्ण, पचनेमें चरपरा, रसायन, तीक्ष्ण, रूखा, तथा दन्तरोग, कृमि, कुष्ठ, वात, पित्त, कफ, विप, कण्डू, व्रण, रुधिरविकार, दुग्धरोग, और वस्तिरोगका नाश करे है । यह किसी क्षारके योगसे गुल्म, शूल और उदररोगको दूर करेहै । इसकी छाल-कषेली, गरम, तथा पुरुषता, दन्तरोग, रुधिरविकार, कृमि, व्रण और सूजनको दूर करनेवाली है ।

विवरण । तिलक वृक्षका फूल-तिलके फूलकी समान होताहै और इस फूलमें सुगन्धि आतीहै, फल-पीपलकी समान तथा मधुर होता है ।

कदम्बनामानि ।

कदम्ब सुरभिर्नीप प्रावृपेण्योहरिप्रिय ।

अर्थ-कदम्ब, सुरभि, नीप, प्रावृपेण्य, हरिप्रिय, (हलिप्रिय, ललनाप्रिय, प्रियक, हारिद्र, अशोकारी, नीप, कादम्ब, षट्पदेष्ट, जाल, वृत्तपुष्प, कादम्बर्य्य, सीधुपुष्प, जीर्णपर्ण, महाढय, कर्णपूरक)

धाराकदम्बनामानि ।

नीपोमहाकदम्ब स्याद्धाराकदम्ब इत्यपि ।

अर्थ-नीप, महाकदम्ब, धाराकदम्ब (धूलिकदम्ब, धाराकदम्बक, भ्रमरप्रिय, षट्पदप्रिय, प्रावृष्य, पुलकी, भृङ्गवल्लभ, मेघाभ, प्रियक, केशराढय, बहुफल, कदम्बक)

भूमिकदम्बनामानि ।

भूमिकदम्बोभूनीपोभूमिजोभृङ्गवल्लभ ।
लघुपुष्पोवृत्तपुष्पोविपघ्नोव्रणहारक ॥

अर्थ-भूमिकदम्ब, भूनीप, भूमिज, भृङ्गवल्लभ, लघुपुष्प, वृत्तपुष्प, विपघ्न, व्रणहारक ।

संस्कृतभाषाम	कदम्ब, धाराकदम्ब, भूमिकदम्ब ।
हिन्दीभाषामें	कदमका पेड, धाराकदम्ब ।
बंगभाषामें	कदमगाछ, केलिकदम ।
मराठीभाषामें	राजकदम्ब, धूलिकदम्ब, कळंब, भूमिकदम्ब ।
गुजरातीभाषामें	कदम्ब, कळम ।
कर्णाटकीभाषामें	कडड, धूलिकडड, ग्राम्यकडड, भूमिकडड ।
तैलङ्गीभाषामें	कड्डिमिनेडु, कम्बचेट्टु, मोगुड्डकोडिमि ।
लेटिनभाषामें	ऐन्थोसिफालसकेडंबा Anthocephalus cadamba नोक्लियापार्विफ्लोरा । Nauclea parviflora
अरबीभाषामें	कदम्ब ।

कदम्बगुणाः ।

कदम्बः कटुकस्तिक्तोमधुरस्तुवरः पटुः । शुक्रवृद्धिकरः शीतोगुरुर्विष्टम्भकारकः ॥ रूक्षःस्तन्यप्रदोभग्नसंरोहणकृद्योनिदोषहा ॥ रक्तकृच्छ्रमूत्रकृच्छ्रश्रमवातपित्तकफव्रणम् ॥ दाहविषं नाशयतीत्युक्तः श्रास्यवृगः । शीतवीर्योदीपकः श्लक्ष्णोऽरोचकापहः ॥ रक्तपित्तातिसारघ्नः फलंरुच्यंगुरूष्णकम् । उष्णवीर्यंकफकरंतत्पक्वंकफपित्तजित् ॥ वातनाशकरंप्रोक्तमृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ।

अर्थ-कदम्ब-चरपरी, कडवी, मधुर, कषेली, खारी, शुक्रवर्धक, शीतल, भारी, विष्टम्भकारक, रूखी, स्तनोंमें दूध बढानेवाली, भग्नरोपक, वर्णकारक, तथा योनिरोग, रक्तरोग, मूत्रकृच्छ्र, वात, पित्त, कफ, घाव, दाह और विषको दूर करनेवाली है । इसके अंकुर-रुचिकारक शीतवीर्य, अग्निदीपक, हलके तथा अरुचि, रक्तपित्त और अतिसारको दूर करनेवाले हैं । इसके फल-रुचिकारक, भारी, उष्णवीर्य और कफकारक है । इसके पके फल-कफ, पित्तनाशक और वातविनाशक है ।

राजकदम्बगुणाः ।

नीपस्तुनाम्लस्तुवरोमधुरः शीतलः स्मृतः । विषंरक्तजं पित्तकफश्रमविनाशनः ॥ फलन्तुमधुरंचास्यकानिलगुरु पित्तहृत् । रक्तदोषहरंप्रोक्तमृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥

अर्थ-राजकदंब-अम्ल, कषेली, मधुर, शीतल तथा विष, रुधिरविकार, पित्त और कफको दूर करनेवालीहै। इसका फल-मधुर, शीतल, भारी, तथा पित्त और रुधिरके दोषोंको दूरकरैहै।

धाराकदम्बगुणा।

धाराकदम्बकस्तिक्तोवर्ण्यःशीतःकषायकः।
कटुकोवीर्य्यकृच्छोथविषपित्तकफव्रणान्॥
वातनाशयतीत्येवमुक्तश्चऋषिभिःकिल।

अर्थ-धाराकदम्ब-कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, कषेली, चरपरी, वीर्य्यकारक तथा सूजन, विष, पित्त, कफ, व्रण और वातका विनाश करनेवाली है।

धूलिकदम्बगुणा।

धूलीकदम्बकस्तिक्तस्तुवरः कटुकोहिमः।
वीर्य्यवृद्धिकरोवर्ण्योविषशोथविनाशकः॥
वातपित्तकफरक्तदोषश्चैवविनाशयेत्।

अर्थ-धूलीकदम्ब-कडवी, कषेली, चरपरी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, वर्णको सुंदर करनेवाली तथा विष, सूजन, वात, पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको हरनेवाली है।

कदम्बिकागुणा।

कदम्बिकातुमधुराशीतलातुवरागुरुः। मलस्तम्भकरीक्षारारूक्षास्तन्यकफप्रदा॥ वातलामुनिभिःप्रोक्ताफलत्वस्यास्तुशीतलम्। तुवरंमधुरंपित्तरक्तदोषहरंमतम्॥

अर्थ-कदम्बिका (कदम्बी)-मधुर, शीतल, कषेली, भारी, मलस्तम्भकारी, खारी, रूखी, स्तनामें दूध उत्पन्न करनेवाली, कफकारक और वातवर्द्धक है। इसके फल-शीतल, कषेले, मधुर तथा पित्त और रक्तविकारनाशक है।

भूमिकदम्बगुणा।

भूमेःकदम्बकस्तिक्तोवर्ण्यःशीतःकटुःस्मृतः।

वीर्यवृद्धिकरश्चैव तुवरो विषशोथहा ॥
पित्तं कृमींश्च सर्वांश्च मेहान्नाशयतीरितः । (नि० र०)

अर्थ—धूलिकदम्ब—कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, कसैली, वीर्यवर्द्धक, कषैली तथा विष, सूजन, पित्त, कृमि और सर्वप्रकारके प्रमेहरोगोंको दूरकरनेवाली है।

द्विविधकदम्बगुणाः ।

कदम्बयुगलं वर्ण्यं विषशोथहरं हिमम् ।

अर्थ—दोनोंप्रकारकी कदम्ब (कदम्ब, धूलीकदम्ब)—वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल, तथा विष और सूजनको दूरकरनेवाली है।

विवरण। कदम्बके वृक्ष—नगरके निकट होते हैं, पत्ते—लम्बे और गोल तथा महुवेकी समान होते हैं, फल—गोल नीम्बूकी समान, पुष्प फलके ऊपर तथा सुगन्धयुक्त और छोटे होते हैं राजकदम्ब तथा नीपको धाराकदम्ब कहते हैं। कदम्बकी अनेक जाति हैं।

कर्णिकारनामानि ।

कर्णिकारः परिव्याधः पादपोत्पल इत्यपि ॥

अर्थ—कर्णिकार, परिव्याध, पादपोत्पल ऐसे तीन नाम हैं।

कर्णिकारगुणाः ।

कर्णिकारः कटुस्तिक्तस्तुवरः शोधनो लघुः ।
रञ्जनः सुखदः शोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ॥ (भा० प्र०)

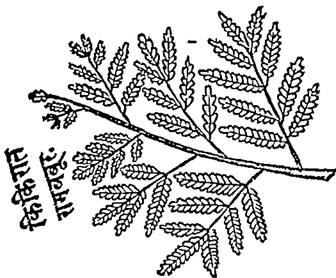
अर्थ—कर्णिकार—चरपरा, कडवा, कसैला, शोधक, हलका, रञ्जक, सुखदायक तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, व्रण और कुष्ठको नष्ट करै है।

विवरण। कर्णिकारके वृक्ष—बाग और वनोंमें अधिक होते हैं। पत्ते—आमके पत्तोंकी समान होते हैं, पुष्प—लाल और अत्यन्त मनोहर लगते हैं।

हिङ्गोटनामानि ।

हिङ्गिनोतः हिङ्गिगटः पीठरः पीतभद्रकः ।
हैमवर्णोऽतिमत्स्याक्षी पदपदानन्दवर्द्धनः ॥

अर्थ—हिंगिनोत हिंगिगट, पीठर, पीतभद्र हेमवर्ण, अतिमत्स्याक्षी, पदपदानन्दवर्द्धन (हिंगोटी, पीतभद्र)



संस्कृतभाषामें	किंकिरात ।
हिन्दीभाषामें	किंकिरात ।
मराठीभाषामें	देववाभूळ ।
गुजरातीभाषामें	रामचावल ।
फारसीभाषामें	मघिलान ।

अस्य गुणाः ।

किङ्किरातोहिमस्तिक्तस्तुवर शोधनोलघु ।
विषक्रिमिहर शोथश्लेष्मश्रवणकुष्टजित् ॥ (ध०नि०)

अर्थ–किंकिरात–शीतल, कडवा, कषेला, शोधक, हल्का तथा विष, क्रुमि, सूजन, कफ, बधिरता और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

किङ्किरातोहिमस्तिक्त कषायश्चहरेदसौ ।
कफपित्तपिपासास्रदाहशोथवमिक्रिमीन् ॥

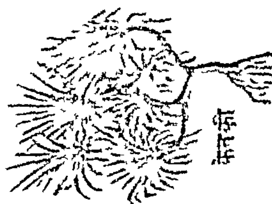
अर्थ–किंकिरात–शीतल, कडवा, कषेला तथा कफ, पित्त, पियास, रुधिरविकार, दाह, सूजन, वमन और क्रुमिरोगको दूर करे है ।

अपिच्च ।

किङ्किराततुवरतिक्तशीतोष्णदमतम्।कफपित्ततृषारक्तदोषदाहज्वरान्वमिम्॥ मोहविषनाशयतीत्येवमुक्तभिषग्वरै ।

अर्थ–किंकिरात–कषेला, कडवा, शीतल, गरम, तथा कफ, पित्त, तृषा, रुधिरदोष, दाह, ज्वर, वमन, मोह और विषका नाश करे है ।

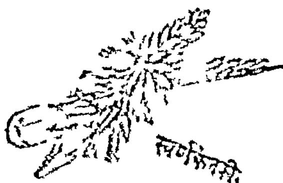
केतकीनामानि।



केतकः सूचिकापुष्पो जम्बुकः क्रकचच्छदः ।

अर्थ–केतक, सूचिकापुष्प, जम्बुक, क्रकचच्छद (सूचिपुष्प, दलाढ्य, जम्बुल, नागपुष्पा, केतकी, गन्धपुष्पा, तीक्ष्णा, सूचीपुष्पिका, मेध्या, कण्टदला, शिवद्विष्टा, नृपप्रिया, स्थिरगन्धा, दीर्घपत्रा, हिंसा, गन्धपुष्पा, इन्दुकलिका, नलपुष्पा, पांसुला ।

सुवर्णकेतकीनामानि।



सुवर्णकेतकी त्वन्या लघुपुष्पा सुगन्धिनी ॥

अर्थ–सुवर्णकेतकी, लघुपुष्पा, सुगन्धिनी (स्वर्णकेतकी, हेमकेतकी, कनककेतकी, पर्णी, हेमा, छिन्नरुहा, विशारदा, स्वर्णपुष्पी, कामखड्गदला)

संस्कृतभाषामें	केतकी, स्वर्णकेतकी ।
हिन्दीभाषामें	केवड़ा, केतकी, पीलीकेतकी ।
बंगभाषामें	केयागाछ, सोनाकेया ।
मराठीभाषामें	केवडा, केतकी ।
गुजरातीभाषामें	केवडो ।
कर्नाटकीभाषामें	केदगी ।

तैलिङ्गीभाषामें मुगलीपुवु, मोगिलिचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें पेन्डनसओडोरेटिसिमस् । Pandanus Odoratissimus
फारसीभाषामें करज ।
अरबीभाषामें कादी ।

केतकी-सुवर्णकेतकीगुणाः ।

केतकीकटुकास्वाद्वीलघ्वीतिक्ताकफापहा ।
उष्णातिक्तरसाज्ञेयाचक्षुष्याहेमकेतकी ॥

अर्थ—केवडा—चरपरा, स्वादिष्ठ, हलका, कडवा, और कफनाशक है । सुवर्णकेतकी-गरम, कडवी और नेत्रोंको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

श्वेतातुकेतकीकट्वीस्वाद्वीतिक्तालघुःस्मृता । विषकफनाशयति पुष्पमस्यालघुस्मृतम् ॥ कटुतिक्तंकान्तिकरमुष्णवातकफापहम् । केशदुर्गन्धतापघ्नकेसर सिध्मकण्डुहा ॥ किञ्चिदुष्णफल स्वादुवातमेहकफापहम् । सुवर्णकेतकीतिक्ता नेत्र्याचोष्णालघु'स्मृता ॥ कटुकामधुराचैवविषरुक्कफनाशिनी । अस्या·पुष्पसुखकरकामोद्दीपनकारकम् ॥ किञ्चिदुष्णञ्चकटुकतिक्तनेत्र्यसुगधिकम् । स्तनश्चास्यातिशिशिरोदेहदाढर्यकर·पटु ॥ वल्योरसायन पित्तकफस्यचविनाशक । फलकेसरयोश्चैवगुणा पूर्वोक्तवन्मता ॥ (नि० र०)

अर्थ—श्वेतकेतकी (केवडा)—चरपरा, स्वादिष्ट, कडवा, हलका तथा विष और कफको दूर करनेवाला है, इसका फूल—हलका, चरपरा, कडवा, कान्तिकारक, गरम तथा वात, कफ और वालाकी दुर्गंधको दूर करे है । इसकी केसर—सिध्म और कण्डूनाशक है, तथा कुछ गरम है । इसका फल—स्वादिष्ट तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है । सुवर्णकेतकी (केतकी)—कडवी, नेत्रोंको हितकारी, हलकी, चरपरी, मधुर, विषविकार और कफनाशक है । इसका फूल—सुखकारी, कामको दीपन करनेवाला, किञ्चित गरम, चरपरा, कडवा, नेत्रोंको हितकारी और सुगन्धित है । इसके स्तन-अत्यन्त शीतल, देहको दृढकरनेवाले निमकीन,बलकारक, रसायन तथा

पित्त और कफनाशक है। और इसके फलके तथा केसरके गुण सफेद केत-कीके फलकी और केसरकी समान जानने।

अन्यच्च।

केतकी वातला वृष्या तन्द्रानिद्राकरी मता॥ (आ० स०)

अर्थ-केवड़ी-वातकारक, वीर्यवर्द्धक तथा तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करनेवाली है।

विवरण। केवड़ेके वृक्ष बाग और जलके निकट अधिकतासे होते हैं, वृक्षके भीतर गांठके कांटे और पत्ते लम्बे होते हैं, पत्तोंके किनारे कांटे होते हैं। दूसरी सुवर्णकेतकी होती है, उसका पुष्प पीला और विशेष सुगंधवाला होता है।

अशोकनामानि।

अशोकः शोकनाशश्च विचित्रः कर्णपूरकः।
कङ्केलिर्हेमपुष्पश्च पिण्डपुष्पस्तथैव च॥

अर्थ-अशोक, शोकनाश, विचित्र, कर्णपूरक, कंकेली, हेमपुष्प, पिण्ड-पुष्प, (अङ्गनाप्रिय, वीतशोक, विशोक, वञ्जुलद्रुम, वञ्जुल, मधुपुष्प, अपशोक, कङ्केलि, केलिक, रक्तपल्लव, चित्र, कर्णपूर, सुभग, [illegible], ताम्रपल्लव, रोगितरु, वामाङ्घ्रिघातन, पिण्डीपुष्प, नट, [illegible], पल्लवद्रु, पादा-ङ्घ्रिदोहद, कान्ताचरणदोहद, चित्रकृत, गन्धपुष्प, [illegible], शोकहर्त्ता, स्मराधिवास, दोषहारी प्रपल्लव, वामाङ्घ्रिघातक)

संस्कृतभाषामें अशोक।
हिंदीभाषामें अशोक (अशोगि)
बंगभाषामें अशोक।
मराठीभाषामें अशोक।
गुजरातीभाषामें आसुपालो देशी पीलाफूलनो, आसुपालो रातोफूलनो।
लेटिनभाषामें [illegible] [illegible]
जोनेसिया अशोका। [illegible]

अशोकगुणाः।

अशोकः शीतलस्तिक्तो ग्राही वर्ण्यः कषायकः।
दोषापचीतृषादाहकृमिशोषविषास्रजित्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-अशोक-शीतल, कड़वा, ग्राही, वर्णको उत्तम करनेवाला,

कपेला, तथा अपचीदोष, तृषा, दाह, कृमि, शोष, विष और रक्तदोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

अशोकोमधुर शीतश्चास्थिसन्धानकृन्मत ।प्रिय सुगन्धि कृमिकृत्तुवरोष्णश्चतिक्तक ॥ शरीरकान्तिकृच्चैवस्त्रीणामु-च्छोकनाशनः । ग्राहीपित्तहरोदाहश्रमगुल्मोदरापहः ॥ शूलाध्मानेविषचार्शोव्रणसर्वांतृषतथा । शोथापचीतृषश्चैव नाशयेद्रक्तजांरुजम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-अशोक-मधुर, शीतल, हड्डीको जोडनेवाला, प्रिय, सुगन्धि, कृमिहारक, कपेला, गरम, कडवा, देहकी कान्ति वढानेवाला, स्त्रियोंके शोकको दूर करनेवाला, मलरोधक तथा पित्त, दाह, श्रम, गुल्म, उदररोग, शूल, आध्मान, विष, ववासीर, व्रण, सर्व प्रकारकी तृषा, सूजन, अपची, तृषा और रुधिररोगको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

अशोकस्यत्वचारक्तप्रदरस्यविनाशिनी ॥ (शो०नि०)

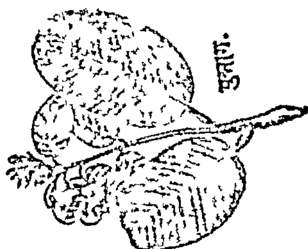
अर्थ-अशोककी छाल-रक्तप्रदररोगको हरनेवाली है ।

विवरण । अशोक वृक्षकी दोजाती है, एकके पत्ते रामफलकी समान और फूल नारंगीके रंगकी सदृश होता है, माह फाल्गुनमें खिलतेहैं और दूसरे अशोकके पत्ते आमकी समान होते हैं, फूल-सफेद कुछेक साधारण पीले रंगका होताहै, इसपे फल चौमासेके आरम्भमें आतेहैं । इसके कच्चे फलका रंग नीला और पकनेपर लाल होजाता है, इसके फल खानेके योग्य नहीं हैं और इन फलोंमेंसे जो वीज निकलतेहैं वह वीजभी किसी औषधिके प्रयोगमें नहीं लिये जाते, फूल जिसका नारंगकी समान है ऐसे अशोक को "जोनेशिआ" अशोक कहते हैं और दूसरेको "ग्वेटेरीआ लॉजिफो-लिआ" कहते हैं ।

पुन्नागनामानि ।

पुरुपारूयोरक्तवृक्ष पुन्नागोदेववल्लभ ॥

अर्थ-पुरुपारूय, रक्तवृक्ष, पुन्नाग, देववल्लभ (पूरुष, तुङ्ग, केशर, केशव, केसरी, काम्वोज, नागपुष्प, कुम्भीक, रक्तकेशर, पाण्डुनाग, पाटलाद्रुम, रक्तपुष्प, रक्तरेणु, अरुमा ।



संस्कृतभाषामें	पुन्नाग।
हिन्दीभाषामें	पुन्नाग, सुल्तान (के) सुल्तानचम्पक।
बंगभाषामें	पुन्नागाछ नागेश्वर।
गुजरातीभाषामें	पुन्नाग, सुरपुन्नाग।
मराठीभाषामें	गोडी उंडीण, कडवी उंडीण।
कर्णाटकीभाषामें	सुरहोन्नेयमर।
तैलिङ्गीभाषामें	सुरपोन्नचेट्टु।
ओड़ि०	पुन्नी।
तामिलभाषामें	पिन्नै।

लैटिनभाषामें ओफाकार्यनोफिलोफिस। [illegible]

अथ गुणाः।

पुन्नागो मधुरः शीतः सुगन्धिः पित्तनाशकृत्। देवप्रसादजनकोऽक्तकफपित्तजित् ॥ कफपित्तभूतरोगाणां नाशने तु निकीर्तितम्। पुष्पवृष्य नाशनमूलकपदोषा जयत्यलम्॥ नमेरुस्तु पुन्नागादधिकश्च गुणे स्मृतः। (नि० र०)

अर्थ-पुन्नाग-मधुर, शीतल, सुगन्धि, पित्तनाशक, देवताओंको प्रसन्न करनेवाला तथा रक्तदोष, कफपित्त, भूत दिष और दुष्टवायुको दूर करे। इसके फूल-वीर्यवर्द्धक [illegible] और [illegible] है सुरपुन्नाग-[illegible] और पुन्नागसे अधिक गुणवाला है।

[illegible]

लिख आये हैं । इसके फल वृहद्दन्तीकी समान होते हैं उन फलोंका तेल निकलता है ।

सैरेयकनामानि ।

सैरेयकः श्वेतपुष्पः सैरेयकटसारिका ।
सहाचरः सहचरः सचभिद्यपिकथ्यते ॥

अर्थ-सैरेयक, श्वेतपुष्प, सैरेय, कटसारिका, सहाचर, सहचर, भिन्दी (मृदुकण्ट, महासह, वाण, उद्यानपाकी, सौरीयक, कण्टकुरण्ट, झिण्टिका, झिण्टी)

कुरण्टकनामानि ।

किङ्किरातोकुरण्टश्चकनकः पीतपुष्पकः ।
पीताम्लानःसहचरःपीतसैरेयकश्चस ॥

अर्थ-किङ्किरात, कुरण्ट, कनक, पीतपुष्पक, पीताम्लान, सहचर, पीतसैरेयक (कुरण्टक, सहचरी, सहाचर, वीर, पीतपुष्प, दासी, कुरुण्टक, पुर)

नीलझिण्टी (आर्त्तगल) नामानि ।

नीलपुष्पीनीलझिण्टीदासीचार्तगलश्चस ।

अर्थ-नीलपुष्पी, नीलझिण्टी, दासी, आर्त्तगल (वाणा, अर्त्तगल, वाण, सहचर, नीलकुरुण्टक, शरीयक, शैरेयक, सैरीय, सैरेय, नीलकुसुमा, वाला, कण्टार्तगला)

कुरवकनामानि ।

रक्ताम्लानोरक्तपुष्पोरामालिङ्गनकामुकः ।
रागप्रसवकश्चैवसुभगः शोणझिण्टिकः ॥

अर्थ-रक्ताम्लान, रक्तपुष्प, रामालिङ्गनकामुक, रागप्रसव, सुभग, शोणझिण्टिक, (कुरवक, रक्तझिण्टी, रक्तझिण्टिका, शोणझिण्टी) ।

रक्तपुष्पः कुरवकः पीतपुष्पः कुरण्टकः ।
नीलपुष्पश्चार्त्तगलः सैरेयः श्वेतपुष्पकः ॥

अर्थ-लालफूलकी कटसरैयाको "कुरवक" पीलेफूलवालीको "कुरण्टक" नीलेफूलवालीको "आर्त्तगल" और सफेदफूलकी कटसरैयाको "सैरेय(क)," कहते हैं ।



संस्कृतभाषामें	पीतक, कुरण्टक, आर्त्तगल, कुरबक ।
हिन्दीभाषामें	कटसरैया, पियाबांसा ।
बंगभाषामें	झाँटि, कुरुवांटि, पीतझाँटि, नीलझाँटि, रक्तझाँटि ।
मराठीभाषामें	पिवळाकोरांटा, तांबडाकोरांटा, नीळाकोरांटा पांढराकोरांटा ।
गुजरातीभाषामें	पीळा अशेलियो, पीळोकुरन्ट, रातोकुरन्टो, काळो कुरन्टो, धोळोकुरन्टो ।
कर्णाटकीभाषामें	हळदिगोरटे, सन्नगिड, कांसगोरटे, मगुद गोरटे गल्दु ।
तैलङ्गीभाषामें	गोरिंट ।
लैटिनभाषामें	बार्लेरिया प्रायोनिटिस ।

पीतकगुणाः ।

सैरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः ।

तिक्तोष्णो मधुरोऽनम्लः सुस्निग्धः केशरञ्जनः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ–पीले फूलकी कटसरैया–कड़वी, गरम, मधुर, खटाईसे रहित, स्निग्ध, केशरञ्जक तथा कोढ, वात, रक्तविकार, कफ, खाज और विषविनाशक है ।

अन्यच्च ।

पीतः कुरण्टकस्तिक्तः केश्यः स्निग्धो मधुः स्मृतः । कट्वोष्णो दन्तहितो वातशोफकफामनाशनः ॥ कुष्ठवातास्रकफामकण्डूविषं तथा । नाशयेदारुणं चैतद्बुद्धिभिः परिकीर्तितं ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद फूलकी कटसरैया-कडवी, केशोंको हितकारी, स्निग्ध, मधुर, चरपरी, गरम, दातोंको हितजनक तथा वलीपलित, कुष्ठ, वात, रक्तविकार, कफ, कण्डू, विष और घोर वेदनाको हरनेवालीहै ।

कुरण्टकगुणा ।

पीत कुरण्टकश्चोष्णस्तिक्तश्चतुवर स्मृतः ।
अग्निदीप्तिकरोवातकफकण्डूहरःस्मृतः ।
शोथरक्तविकारश्चत्वग्दोषश्चैवनाशयेत् ॥

अर्थ-पीलेफूलकी कटसरैया,-गरम, कडवी, कषेली, अग्निदीपक तथा वात, कफ, कण्डू, सूजन, रक्तविकार और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

आर्तगलगुणा ।

नीलःकुरण्टकस्तिक्तःकटुर्वातकफापहः ।
शोथकण्डूशूलकुष्ठव्रणत्वग्दोषनाशनः ॥

अर्थ-नीलेफूलकी कटसरैया-कडवी, चरपरी तथा वात, कफ, सूजन, कण्डू, शूल, कोढ, व्रण और त्वचाके विकारोंको दूर करे है ।

नीलझिण्टीगुणा ।

नीलझिण्टीतुकटुकातिक्तात्वग्दोषनाशिनी ।
दन्तरोगकफशूलवातशोथश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-कालेफूलकी कटसरैया-चरपरी, कडवी तथा त्वग्दोष, दन्तरोग, कफ, शूल, वात और सूजनको दूर करनेवाली है ।

कुरबकगुणा ।

रक्त कुरण्टकस्तिक्तोवर्ण्यश्चोष्णःकटु स्मृत ।
शोथज्वरवातरोगकफरक्तरुजतथा ॥
पित्तमाध्मानकंशूलश्वासकासश्चनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-लालफूलकी कटसरैया-कडवी वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गरम, चरपरी तथा सूजन, ज्वर, वातरोग, कफ, रक्तविकार, पित्त, आध्मान, शूल, श्वास, और खाँसीको हरनेवाली है ।

विवरण । पियावासा अर्थात् कटसरैयाके क्षुप वन और वागोंमें बहुत होते हैं, इसकी चार प्रकारकी जाति है इसके फूलोंका रंग भी चार प्रकारका

होता है—सफेद, पीले, लाल और नीले इन चारों रंगोंके विभागसे चार होते हैं, परन्तु सबके छोटे २ भेद होते हैं, किसीमें विशेष अन्तर नहीं होता ।

बन्धूकनामानि ।



दुपहरियाकाफूल.

बन्धूको बन्धुजीवश्च रक्तो माध्याह्निकोऽपि च ।

अर्थ-बन्धूक, बन्धुजीव, रक्त, माध्याह्निक (रक्तक, बन्धुजीवक, बन्धुर, बन्धु, बन्धूर, बन्धुजीव, [illegible], बन्धूक, सुर्पंक्ति, [illegible] भतान, ओष्ठपुष्प, अर्कवल्लभ, मध्यन्दिन, रक्तपुष्प, हरिप्रिय, [illegible], [illegible], सुपुष्प)

संस्कृतभाषामें	बन्धूक ।
हिन्दीभाषामें	दुपहरिया, गजुनिया ।
बंगभाषामें	बान्धुलि फुलेरगाछ ।
मराठीभाषामें	दुपारीचें फूल ।
गुजरातीभाषामें	बपोरियो ।
फारसीभाषामें	[illegible] ।
अंग्रेजीभाषामें	[illegible] ।
कर्ना०	दुपारि ।
पञ्जा०	गुलदुपहरिया ।
लैटिनभाषामें	पेण्टापिटिस फिनिसिया । [illegible]

बन्धूकगुणाः ।

स्याद्बन्धुजीवो ग्राही किंचिदुष्णो गुरुर्मतः ।
[illegible] ॥
[illegible] ।

अर्थ–दुपहरिया–मलरोधक, किञ्चित् गरम, भारी, कफकारक, ज्वरनाशक, तथा वात, पित्त, पिशाचबाधा और ग्रहबाधाको दूर करे है।

विवरण। दुपहरियाके वृक्ष घर और बागोंमे बोदेते है, फूल सफेद, सिन्दूरी, लाल तीन चार जातिका होता है, यह दुपहरके समय खिलती है, इसीसे इसको दोपहरिया कहते है।

सिद्धेश्वरनामानि।

सिद्धेश्वरश्चसिद्धाख्य सिद्धनाथ·प्रकीर्त्तित·।

अर्थ–सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ।

संस्कृतभाषामें	सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ,
दे०	गुलतुर्रा।
बंगलाभाषामें	कृष्णचूड।
गुजरातीभाषामें	सधेशरो।
कर्णाटकीभाषामें	कोमरी।
लेटिन्भाषामें	सिसालपिनियालकेरिमा। Caesalpina pulcherrima

अस्य गुणा।

सिद्धेश्वरोहिम स्निग्ध ग्रन्थिनाडीव्रणापह·।
वातव्याधिहरश्चैवत्रिदोषामयनाशन·॥

अर्थ–सिद्धेश्वर–शीतल, स्निग्ध तथा ग्रन्थि, नाडीव्रण, वातरोग और त्रिदोषनाशक है।

शखोदरीनामानि।

शखोदरीवर्हपुष्पाचिञ्चापत्राल्पकण्टकी।
श्लाखापत्रीसुपुष्पाचवनवासीसुशिम्बिका॥

अर्थ–शखोदरी, वर्हपुष्पा, चिञ्चापत्रा, अल्पकण्टकी, श्लाखापत्री, सुपुष्पा, वनवासी, सुशिम्बिका।

संस्कृतभाषामें	शखोदरी।
दे०	गुल्तोरा, गुलपरी।
गुजरातीभाषामें	रातगडी, नहानी, गुल्मोर।
मराठीभाषामें	शखासुर, घाकटीगुल, कुकुमकेशर।
तैलङ्गीभाषामें	सामिडीताचेट्ट।
लेटिन्भाषामें	पोइंनसियाना रिजाइना Poinociana regina पोइंनसियाना पल्केरिमा P Pulcherrima

होता है-सफेद, पीले, लाल और नीले इन चारों प्रकारके पियावांसेमें काटे होते हैं, पत्तेभी सबके छोटे २ एकसेही होते हैं, किसीमें विशेष अन्तर नहीं होता ।

बन्धूकनामानि ।



दुपहरियाकाफूल.

बन्धूकोबन्धुजीवश्चरक्तोमाध्याह्निकोपिच ।

अर्थ-बन्धूक, बन्धुजीव, रक्त, माध्याह्निक, (रक्तक, बन्धुजीवक, बन्धुक, बन्धु, बन्धुल, बन्धुजीव, बन्धूलि, बन्धुर, सूर्यभक्त, सूर्य-भक्तक, ओष्ठपुष्प, अर्कवल्लभ, मध्यदिन, रक्तपुष्प, हरिप्रिय, शरत्पुष्प, ज्वरघ्न, सुपुष्प)

संस्कृतभाषामें	बन्धूक ।
हिन्दीभाषामें	दुपहरिया, गेजुनिया ।
बंगभाषामें	बान्धुलिफुलेरगाछ ।
मराठीभाषामें	दुपारीचें फूल ।
गुजरातीभाषामें	बपोरियो ।
कर्णाटकीभाषामें	बद्दुगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	नितिमल्ली, मकिनचेट्टु, वेगसिनचेट्टु ।
बम्०	दुपारि ।
पञ्जा०	गुलदुफारिया ।
लैटिन् भाषाम	पेरोटपिटिस फिनिश्या । Pentapets Phorinces

अस्य गुणाः ।

स्याद्बन्धुजीवकोग्राहीकिञ्चिदुष्णोगुरुर्मतः ।
कफकृज्ज्वरहृद्वातपित्तेचैवविनाशयत ॥
पिशाचग्रहबाधांचनाशयेदितिकीर्त्तित ।

अर्थ-दुपहरिया-मलरोधक, किञ्चित् गरम, भारी, कफकारक, ज्वरनाशक, तथा वात, पित्त, पिशाचबाधा और ग्रहबाधाको दूर करे है।

विवरण। दुपहरियाके वृक्ष घर और बागोंमे बोदेते है, फूल सफेद, सिन्दूरी, लाल तीन चार जातिका होता है, यह दुपहरके समय खिलती है, इसीसे इसको दोपहरिया कहते है।

सिद्धेश्वरनामानि।

सिद्धेश्वरश्चसिद्धाख्य'सिद्धनाथ प्रकीर्त्तित·।

अर्थ-सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ।

सस्कृतभाषामें	सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ,
दे०	गुलतुर्रा।
बगलाभाषामें	कृष्णचूड।
गुजरातीभाषामें	सधेशरो।
कर्णाटकीभाषामें	कोमरी।
लैटिन्भाषामें	सिसालपिनियालकेरिमा। Caesalpına pulcherrıma

अस्य गुणा।

सिद्धेश्वरोहिम'स्निग्ध ग्रन्थिनाडीव्रणापह·।
वातव्याधिहरश्चैवत्रिदोषामयनाशनः॥

अर्थ-सिद्धेश्वर-शीतल, स्निग्ध तथा ग्रन्थि, नाडीव्रण, वातरोग और त्रिदोषनाशक है।

शखोदरीनामानि।

शखोदरीवर्हपुष्पाचिश्चापत्राल्पकण्टकी।
श्लाखपत्रीसुपुष्पाचवनवासीसुशिम्बिका॥

अर्थ-शखोदरी, वर्हपुष्पा, चिश्चापत्रा, अल्पकण्टकी, श्लाखापत्री, सुपुष्पा, वनवासी, सुशिम्बिका।

सस्कृतभाषामें	शखोदरी।
दे०	गुलतोरा, गुलपरी।
गुजरातीभाषामें	राशगडी, नहानी, गुलमोर।
मराठीभाषामें	शखासुर, धाकटीगुल, कुकुमकेशर।
तेलङ्गीभाषामें	सामिडीवावेड्ढु।
लैटिन्भाषामें	पोईनसियाना रिजाइना Poınocana rıgına पोईनसियाना पल्केरिमा P Pulcherrıma

शंखोदरीगुणाः।

शंखोदरीमताचोष्णाकफवातविनाशिनी।
शूलामवातशमनीनेत्ररोगनिवारिणी॥

अर्थ-शंखोदरी-गरम तथा कफ, वात, शूल, आमवात और नेत्ररोग निवारक है।

झण्डूकनामानि।

झण्डुःस्यात्स्थूलपुष्पातुझण्डूकोझण्डुकस्तथा।

अर्थ-झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक।

संस्कृतभाषामें	झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक।
हिन्दीभाषामें	मखमली, गुलतोरा, कलगा, लालमुरगा।
मराठीभाषामें	झंडू, मखमाल।
गुजरातीभाषामें	मुखमल।
इंग्रेजीभाषामें	फ्रेंचमेरीगोल्ड French mary gold
लेटिन्भाषामें	टेजिटिस् इरेक्टा Tagetes erecta मिलेस्यानेक्रस्टोटा Colasiacrestota
फारसीभाषामें	काजेखरूस।
अरबीभाषामें	हमाहम।

अस्य गुणाः।

झण्डु कटुःकषाय स्याज्ज्वरभूतग्रहापहः। (रा० नि०)

अर्थ-लालमुरगा-चरपरा, कषेला तथा ज्वर, भूत और ग्रहकी पीडाको दूर करनेवाला है।

सिन्दूरपुष्पीनामानि।

सिन्दूरपुष्पीसिन्दूरीतृणपुष्पीसुकोमला।

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी, सिन्दूरी, तृणपुष्पी, सुकोमला (रक्तबीजा, रक्तपुष्पी वीरपुष्पा, करच्छदा, शोणपुष्पी)।

संस्कृतभाषामें	सिन्दूरपुष्पी।
हिन्दीभाषामें	सिन्दूरिया, जाफर, लटकण।
मराठीभाषामें	शेंद्री।
गुजरातीभाषामें	सिन्दूरी।
कर्णाटकीभाषामें	सिन्दूरी।

इंग्रेजीभापामें आरनाटो Crnott
लैटिन्भापामें विक्साओरमाना Bixa Oimana

अस्या गुणा ।

सिन्दूरीविपपित्तास्रतृष्णावान्तिहरीहिमा (भा०प्र०)

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-विप, रक्तपित्त, तृपा और कान्तिनाशक तथा शीतलहै ।

अन्यच्च ।

सिन्दूरीकटुकातिक्ताकपायाश्लेष्मवातजित ।
शिरोर्तिशमनीभूतनाशीचडीप्रियाभवेत् ॥

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-चरपरी, कडवी, कपेली, तथा कफ, वात, मस्तकरोग और भूतनाशकहै तथा चण्डीको प्यारीहै ।

अपिच ।

सिन्दूरीपुष्पिकातिक्ताकटु शीतलघु स्मृता । तुवरारक्तदोपघ्नीवातरक्ततृपञ्जयेत् ॥ विपदोपञ्चपित्तञ्चवातपित्तवमिंतथा । कफमस्तकशूलञ्चभूतदोपञ्चनाशयेत । (नि० र०)

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-कडवी, चरपरी, शीतल, हलकी, कपेली तथा रक्तविकार, वातरक्त, तृपा, विपदोप, पित्त, वातपित्त, वमन, कफ, मस्तकशूल और भूतबाधाको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सिन्दूरियाके क्षुप उपवनोंमे होते हैं, पत्ते बेलके समान होतेहैं, फूल लाल २ सिन्दूरकी समान होते हैं उसके बीजभी लाल रगके होते हैं, इनको जलमें डालनेसे जल लाल होजाताहै ।

प्राजक्तनामानि ।



प्राजक्तःपारिजातश्चहारशृङ्गारपुष्पकः ।
नालकुङ्कुमकोरागपुष्पीचखरपत्रकः ॥

संस्कृतभाषामें	प्राजक्त, पारिजात, हारशृङ्गारपुष्पक, नालकुंकुम, रागपुष्पी, खरपत्रक ।
हिंदीभाषामें	हारसिंगार, प्राजक्त ।
मराठीभाषामें	प्राजक्त, पारिजात ।
गुजरातीभाषामें	शीपाली, हारशणगार ।
इंग्रेजीभाषामें	स्कैरस्टोकूड निक्टेंथिस । Square Stalked Nytnactnes
लैटिनभाषामें	निकटेन्थिस अर्बोट्रिस्टिस् । Nycranthes Arbotristis

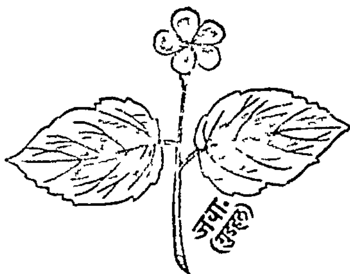
हारशृङ्गारगुणाः ।

रसःप्राजक्तपत्रस्यज्वरघ्नस्तिक्तक स्मृतः ।
पर्णखण्डसमायुक्तस्त्वचाकासविनाशनः ॥

अर्थ-हारशृगारके पत्तोंका रस-ज्वरनाशक और कडवा है । इसकी छाल पानमें रखकर खानेसे खांसी दूर होतीहै ।

विवरण । इसके वृक्ष वन और उपवनोंमें होते हैं, इसके फूल अत्यन्त सुंदर होते हैं, फूलकी डंडी केशरीरंगकी होती है, उन डंडिओंको पीसकर वस्त्र रंगते हैं, इसके फल चपटे और छोटे होते हैं और पत्ते ओढहुलकी समान तथा खरखरे होते हैं ।

॥जपापुष्पनामानि॥



ओड्रपुष्पजपाचाथप्रातिकाहरिवल्लभा ।

संस्कृतभाषामें	ओंड्रपुष्प, जपा, मातिका, हरिवल्लभा (जवा, ओड्राख्या, रक्तपुष्पी, अर्कप्रिया, रागपुष्पी, ओंड्रपुष्पी, त्रिसन्ध्या, अरुणा)
हिंदीभाषामें	ओडहुल, जवा, गुडहर ।
बंगभाषामें	जवाफूलेरगाछ ।
मराठीभाषामें	जासवद ।
गुजरातीभाषामें	जासुम ।
कर्णाटकीभाषामें	दासनल ।
तैलिङ्गीभाषामें	मदारपु ।
इंग्रेजीभाषामें	शुफ्लावर । Shoe flower
लैटिन्भाषामें	हिबिस् स्कस् रोझासाई नेनसिस् । Hibiscus Rosasinensis

अस्य गुणा ।

जपाशीताचमधुरास्निग्धापुष्टिप्रदामता । गर्भवृद्धिकरीग्राहीकेश्याजन्तुप्रदामता ॥ वान्तिजन्तुकरादाहप्रमेहार्शविनाशिनी । धातुरुक्प्रदरचेन्द्रलुप्तञ्चैवविनाशयेत् ॥ जपापुष्पलघुग्राहितिक्तकेशविवर्द्धनम् । (नि० र०)

अर्थ–जपा (ओडहुल, गुडहर)–शीतल, मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, गर्भवृद्धिकारक, ग्राही, बालोंको हितकारी तथा वमन और कृमिको उत्पन्न करनेवाली तथा दाह, प्रमेह, बवासीर, धातुरोग, प्रदर और इन्द्रलुप्त रोगको हरनेवाली है । इसके फूल–हलके, मलरोधक, कडवे और केश वर्द्धक हैं ।

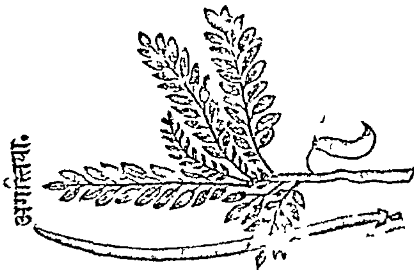
विवरण । जवाके वृक्ष मध्यमाकारके होते हैं, प्राय. बाग और उपवनोंमें बोयेजाते हैं, पत्ते अडूसेकी समान बडे बडे और फूल बहुत बडा अत्यन्त लालरंगका आताहै । प्रयोगमें फूल लिये जातेहैं इसके फूलमें अनेक गुण हैं विशेषकरके रुधिरके विकार और स्त्रियोंके रजके विकारोंमें व्यवहार किये जाते हैं ।

घृतभर्जितजपापुष्पगुणाः ।

घृतेनभ्रर्जितजपाख्यार्त्तवंकुरुतेसुखम् ।

अर्थ–घीमें भुनाहुवा गुडहरका फूल–स्त्रियोंके सुखपूर्वक रजोधर्म्म करानेवाला है ।

अगस्त्यनामानि ।



अगस्त्योवङ्गसेनश्चमुनिपुष्पोमुनिद्रुमः ।

अर्थ-अगस्त्य, वङ्गसेन, मुनिपुष्प, मुनिद्रुम (अगस्ति, शीघ्रपुष्प, व्रणारि, दीर्घफलक, रक्तपुष्प, सुरप्रिय, शुक्लपुष्प, व्रणापह, स्वरघ्नरती, पवित्र, मुनिप्रिय, मुनितरु, वङ्गसेनक, कनली, शीघ्रपुष्प, वक्रपुष्प, सुरप्रिय)

संस्कृतभाषामें	अगस्त्य ।
हिंदीभाषामें	अगास्तिया, हथिया, हदगा ।
वंगभाषामें	वक ।
मराठीभाषामें	अगस्ता, हदगा ।
गुजरातीभाषामें	अगथियो ।
कर्णाटकीभाषामें	अगसेधमरनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	अनीसे, अविसि ।
तामिलीभाषामें	अगति ।
इंग्रेजीभाषामें	लार्जफ्लावर्ड एगेटी ।
लेटिन्‌भाषामें	एगाटी ग्लाडी फ्लोरा ।

अस्य गुणाः ।

अगस्ति पित्तकफजिच्चातुर्थिकहरोहिम ।
रूक्षोवातकरस्तिक्तःप्रतिश्यायनिवारणः । (भा०प्र०)

अर्थ-अगस्तिया-शीतल, रूखा, वातकारक, कडवा तथा पित्त, कफ, चातुर्थिकज्वर और प्रतिश्यायनिवारक है ।

अन्यच्च ।

अगस्तिशिशिरगौल्यत्रिदोषघ्नभ्रमापहम् ।
वलासकासवैवर्ण्यभूतघ्नञ्चबलावहम् ॥

अर्थ-हथिया-शीतल, गौल्य तथा त्रिदोष, भ्रम, वलास, कास, विवर्णता, भूतबाधा और वलनाशक है ।

अस्यपुष्पगुणा ।

अगस्तिकुसुमशीतचातुर्थिकनिवारकम् ।
नक्तान्ध्यनाशनंतिक्तकषायकटुपाकिच ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नवातघ्नमुनिभिर्मतम् ।

अर्थ-अगस्तियाके फूल-शीतल, चातुर्थिकज्वरनिवारक, रतोंधेको दूर करनेवाले, कडवे, कषेले, पचनेमें चरपरे तथा पीनसरोग, कफ, पित्त और वातनाशक हैं ।

अस्यपत्रगुणा ।

पर्णन्तुमुनिवृक्षस्यकटुतिक्तगुरुस्मृतम् ।
मधुरंकिञ्चिदुष्णञ्चस्वच्छकृमिकफापहम् ॥
कण्डूविषरक्तपित्तनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ-अगस्तियाके पत्ते-चरपरे कडवे, भारी, मधुर, किञ्चित्गरम, स्वच्छ तथा कृमि, कफ, कण्डू, विष और रक्तपित्तको हरनेवारे हैं ।

अस्यशिम्बीगुणा ।

मुनिशिम्बीसराप्रोक्ताबुद्धिदारुचिदालघु । पाककालेतु मधुरातिक्ताचैवस्मृतिप्रदा ॥ त्रिदोषशूलकफहृत्पांडुरोगविषापनुत् । शोषगुल्महराप्रोक्तासापक्वारूक्षपित्तला।(नि र)

अर्थ-अगस्तियाकी फली-सारक (कुलैक दस्तावर) बुद्धिदायक, रुचिकारक, हलकी, पचनेमें मधुर, कडवी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष और गुल्मनाशक है । इसका शाक रूखा-और पित्तकारक है ।

विवरण-अगस्तियाके वृक्ष पुष्पोद्यानोंमें अधिक होतेहैं, पत्ते सैंजिनेकेसे होते हैं विशेषकरके इसपर नागरवेल अर्थात् पानोंकी वेल चढा करतीहै, इसलिये

इसके पत्ते उत्तम होतेहैं इसके फूल लाल और सफेद होतेहैं इसकी पत्ती अत्यन्त कोमल होतीहै यह इसकी ठीक पहिचानहै कि, जब अगस्त्यमुनिका उदय होताहै तबही अगस्तिगके फूल खिलतेहैं ।

तुलसीनामानि ।

तुलसीवैष्णवीवृंदासुगन्धागन्धहारिणी ।
अमृतापत्रपुष्पाचपवित्रासुरवल्लरी॥

अर्थ-तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगन्धा गन्धहारिणी, अमृता, पत्रपुष्पा, पवित्रा, सुरवल्लरी (सुभगा, तीव्रा, पावनी, विष्णुवल्लभा, सुरेज्या, सुरसा, कायस्था, सुरदुन्दुभि, सुरभि, बहुपत्री, मञ्जरी, हरिप्रिया, अपेतराक्षसी, श्यामा, गौरी, त्रिदशमञ्जरी, भूतघ्नी, भूतपत्री, पर्णास, कठिञ्जर, कुठेरक, पुण्या, माधवी, सुरवल्ली, प्रेतराक्षसी, सुवहा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमञ्जरी, देवदुन्दुभि, विष्णुपत्नी, मालाश्रेष्ठा, पापघ्नी, लक्ष्मी, श्रीकृष्णवल्लभा)

कृष्णातुलसीनामानि ।

कृष्णातुकृष्णतुलसीकृष्णपर्णीकरालक ।

अर्थ-कृष्णा, कृष्णतुलसी, कृष्णपर्णी, करालक ।

संस्कृतभाषामें	तुलसी ।
हिन्दीभाषामें	तुलसी ।
बंगभाषामें	तुलसी ।
मराठीभाषामें	तुळस, तुळसी ।
गुजरातीभाषामें	तुलसी ।
कर्णाटकीभाषामें	एरेडतुलसी ।
तैलिङ्गीभाषामें	तुलसी ।
इंग्रेजीभाषामें	व्हाईटबेसिल White Basil परपल् स्टाक्ड बेसिल Purple stalked Basil
लैटिन्‌भाषामें	ओसिम आल्ब Ocimum Album ओसिम सैंक्ट Ocimum sanctum
फारसीभाषामें	रेहान् ।
अरबीभाषामें	उल्सीयदरत ।

तुलसीगुणाः ।

तुलसीकटुकातिक्ताहृद्योष्णादाहपित्तकृत ।

दीपनीकुष्टकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥
शुक्लाकृष्णाचतुलसीगुणेस्तुल्याप्रकीर्तिता ।

अर्थ–तुलसी–चरपरी, कडवी, हृदयको हितकारी, गरम, दाहकारक, पित्तजनक, दीपन तथा कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्तविकार, पसवाडेकी पीडा, कफ और वातका नाश करनेवाली है । सफेद और काली तुलसीके गुण समान हैं ।

अपच्च ।

श्वेताकृष्णाचतुलसीकटूष्णाचोपणाजगु । दाहपित्तकरी हृद्यातुवराह्यग्निदीपिका। लघ्वीवातकफश्वासकासहिध्मा-कृमीञ्जयेत् । वान्तिदौर्गन्ध्यकुष्ठानिपार्श्वशूलविपापहा ॥ मूत्रकृच्छ्ररक्तदोपभूतवाधांचनाशयेत् । शूलज्वरंचहिक्का-चनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ–सफेद और काली तुलसी–चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, दाहजनक, पित्तकारक, हृदयको हितकारी, कपेली, अग्निदीपक, हल्की तथा वात, कफ, श्वास, खाँसी, हिध्म, कृमि, वमन, दुर्गन्ध, कुष्ठ, पार्श्वशूल, विप, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोप, भूतवाधा, शूल, ज्वर और हुचकीको दूर करनेवाली है ।

विवरण । तुलसीके क्षुप जगलमें और वागोंमें वहुत होते हैं और वहुतेरे गृहस्थी लोग पूजाके लिये अपने २ घरोंमें लगा लेते हैं इसके पत्ते गोल २ कुछ लम्बाई लिये अत्यन्त कोमल होते हैं और उनमें सुगन्धीभी आती है, इसकी डाली २ में वाल निकलती है उसको मजरी कहते हैं । दूसरी श्याम पत्तोंकी श्यामा तुलसी कहलाती है परन्तु आकृति दोनोंकी एकसीही है ।

मरुयकनामानि ।


मरुवा (क)


मरुवा (ख)

वंगभाषामें	दोना, दना ।
मराठीभाषामें	दवणा, रानद्वणा ।
गुजरातीभाषामें	डमरो ।
कर्णाटकीभाषामें	दवना ।
इंग्रेजीभाषामें	वर्मुउड । Worm wood
लैटिन्भाषामें	आर्टिमिस्या इन्डिका । Artemesia Indica
	आर्टिमिस्या सिवार्सियाना । A Sieversian

दमनकगुणा ।

दमनस्तुवरस्तिक्तोहृद्योवृष्यःसुगन्धिक ।
ग्रहणाद्विषकुष्ठास्त्रक्लेदकण्डूत्रिदोषजित ॥ (नि०र०)

अर्थ-दौना-कषेला, कडवा, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, सुगन्धित, इसका सेवन करनेसे विष, कोढ, रुधिरविकार, क्लेद, कण्डू और त्रिदोषका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

दमन शीतलस्तिक्त कषायकटुकश्चदोषहर ।
द्वन्द्वत्रिदोषशमनोविषस्फोटविकारहरण स्यात् । (रा०)

अर्थ-दौना-शीतल, कडवा, कषेला, चरपरा, तथा, द्वन्द्वज दोष, त्रिदोष, विष और विस्फोटनाशक है ।

वनदमनकगुणा ।

वनजोदमन प्रोक्तोवीर्यस्तम्भनकारक ।
बलप्रदश्चामदोषनाशक परिकीर्तित ॥

अर्थ-वनदौना-वीर्यस्तम्भक, बलदायक व आमदोषनाशक है ।

अग्निदमनकगुणा ।

अग्नेर्दमनकश्चोष्ण कटूरूक्षोग्निदीपन ।
रुच्योहृद्योवातकफगुल्मप्लीहविनाशक ॥

अर्थ-अग्निदवना-गरम, चरपरा, रूखा, अग्निदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा वात, कफ, गुल्म और प्लीहाको दूर करनेवाला है ।

विवरण-दौनेके क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्ते अत्यन्त सुगन्ध युक्त होते हैं, पत्तोंके ऊपर बहुत रुआँसा होता है, फूलोंके छत्तेसे होते हैं ।

अर्जकनामानि ।

अर्जकःक्षुद्रतुलसीक्षुद्रपर्णोमुखार्जकः ।
उग्रगन्धस्तुजम्बीर कुठेरस्तुकठिञ्जरः ॥

अर्थ-अर्जक, क्षुद्रतुलसी, क्षुद्रपर्ण, मुखार्जक, उग्रगन्ध, जम्बीर, कुठेर, कठिञ्जर ।

सितार्जकनामानि ।

सितार्जकस्तुवैकुंठोवटपत्र·कुठेरक ।
जम्बीरोगन्धबहुल सुमुख कटुपत्रक ॥

अर्थ-सितार्जक, वैकुण्ठ, वटपत्र, कुठेरक, जम्बीर, गन्धबहुल, सुमुख, कटुपत्रक (श्वेतच्छद, पाता, अर्जक, श्वेतपर्णास, अम्रार्जक, तीक्ष्ण, तीक्ष्णगन्धा)

कृष्णार्जकनामानि ।

कृष्णार्जक·काममालोमालुक कृष्णमालुक ।
स्यात्कृष्णमल्लिकाप्रोक्तागरघ्नोवनवर्वर ॥

अर्थ-कृष्णार्जक, कालमाल, मालुक, कृष्णमालुक, कृष्णमल्लिका, गरघ्न, वनवर्वर (कृष्णवर्णा, कालपर्णी, करालक, कृष्णपर्णी, सुरभिमालक, कालमालक)।

वर्वरीनामानि ।

वर्वरीकवरीतुङ्गीखरपुष्पाजगन्धिका ।

अर्थ-वर्वरी, कवरी, तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका, (असुरसा, वर्वा, अजगन्धा, कवरा, खरपुष्पिका, सुरभी, तुलसीद्वेषा, सुरसा, अपेतराक्षसी)।

वनवर्वरीनामानि ।

वनवर्वरिकान्यातुसुगन्धि सुप्रसन्नक ।
दोषाक्लेशीविपघ्नश्चसुमुख सूक्ष्मपत्रक ॥
निद्रालु·शोफहारीचसुवक्रश्चदशाह्वय· ।

अर्थ-वनवर्वरिका, सुगन्धि, सुप्रसन्नक, दोषाक्लेशी, विपघ्न, सुमुख, सूक्ष्मपत्रक, निद्रालु, शोकहारी, सुवक्र ।

संस्कृतभाषामें अर्जक, वर्वरी, वनवर्वरी ।
हिंदीभाषामें वर्वरी, वनतुलसी ।

वङ्गभाषामें	बाबुइतुलसी, वनबाबुइतुलसी ।
मराठीभाषामें	रानतुळस ।
गुजरातीभाषामें	रानतुलसीभेद ।
कर्णाटकीभाषामें	कगोरले–करीयकगोग्ले ।
तैलिङ्गीभाषामें	कारुतुलसी ।
सि०	तोस्वलाम्बा ।
लैटिन्‌भाषामें	ओसिमम ग्रेटिसिम । Ocimum gratissimum
फारसीभाषामें	पलगमुष्क ।
अरबीभाषामें	फरजमुष्क ।

अजकत्रिताजक-कृष्णार्जकगुणा ।

अर्जकास्त्रिकटूष्णा स्युः कफवातामयापहाः ।
नेत्रामयहरारुच्या सुखप्रसवकारकाः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-तीनोंप्रकारकी अर्जक-वरएगी, रुचिकारक, गरम तथा कफ, वातरोग और नेत्ररोगनाशक हैं तथा सुखपूर्वक प्रसव करानेवाली हैं।

अन्यच्च ।

वर्वरीत्रितयरूक्षशीतकटुविदाहि च ।
तीक्ष्णरुचिकरहृद्यदीपनलघुपाकि च ॥
पित्तलकफवातास्रदद्रुक्रिमिविषापहम् ।

अर्थ-तीनोंप्रकारकी वबरी-रूखी, शीतल, चरपरी, दाहजनक, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, दीपन, पचनेमें हलकी, पित्तकारक तथा कफ, वात, रुधिरदोष, दाद, कृमि और विषको दूरकरनेवाली है।

अपिच ।

आरण्यतुलसीक्षुद्राकट्वीचोष्णाचतिक्तका। रुच्याग्निदीपनीहृद्याविदाहीलघुपित्तला॥ रूक्षाकण्डूविषच्छर्दिकुष्ठज्वरविनाशिनी। वातक्रमीन्कफदद्रुरक्तदोषञ्चनाशयेत। बीजञ्चास्यादाहशोषनाशकंपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-सर्वप्रकारकी बबंगी-चरपरी, गरम, कडवी, रुचिकारक, अग्निदीपक, हृदयको हितकारी, दाहकारक, हलकी, पित्तजनक, रूखी तथा कण्डू, विष, वमन, कुष्ठ, ज्वर, वात, कृमि, कफ, दाद और रुधिरके दोषोंको दूर करनेवाली है। इसके बीज-दाह और शोषनाशक हैं।

वनवर्वरिकागुणा ।

वनवर्वरिकाचोष्णासुगन्धाकटुकाचसा ।
पिशाचवान्तिभूतघ्नीघ्राणसन्तर्पणीपरा ॥ (रा०नि०)

अर्थ–वनवर्वरी–गरम, सुगन्धित, चरपरी, नासिकाइन्द्रियको तृप्ति करने वाली तथा पिशाचबाधा, वमन और भूतबाधाको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

आरण्यतुलसीचोष्णाकटुकाचसुगन्धिका ।
वातत्वग्दोषवीसर्पविषचैवविनाशयेत ॥ (नि०र०)

अर्थ–वनतुलसी–गरम, चरपरी, सुगन्धित तथा वात, त्वचाके विकार, विसर्प और विषके विकारोको हरनेवाली है ।

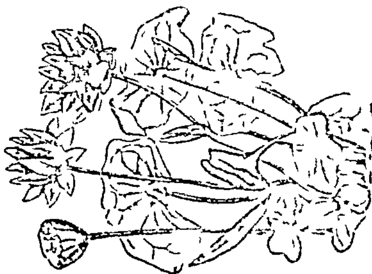
अपिच ।

निद्राहर शोफहारीदाहकारीचसस्मृत· ।
सुमुखचातिकृच्छ्रघ्नवातश्लेष्महरपरम् ॥

अर्थ–वनवर्वरी–निद्राका नाशकरनेवाली, शोफनाशक, दाहकारक तथा मूत्रकृच्छ्र, वात और कफनाशक है ।

विवरण–वर्वरी अर्थात् वनतुलसी अनेक प्रकारकी होती है यह प्राय' जगल और वनोंमें अधिक होतीहै, पत्ते पियानोसिके समान छोटे होतेहै उनमें नीमके पत्तोंकेसे कगूरे होतेहै, फूल पिलावनलिये होताहै सुगन्धिभी बहुत आती है ।

अथ पङ्कजनामानि ।



पङ्कजकमलपद्ममब्जनलिनमम्बुजम ।
कुशेशयञ्चराजीवमरविन्दंसरोरुहम् ॥

अर्थ-पकज, कमल, पद्म, अब्ज, नलिन, अम्बुज, कुशेशय, राजीव, अरविन्द, सरोरुह (पाथोज, नल, अम्भोज, अम्बुजन्म श्री (१) अम्बुरोह, अम्बुपद्म, सुजल, अम्भोरुह, पाथोरुह, पुष्कर, वार्ज, तामरस, कुञ्ज, कज, शतपत्र, बिसकुसुम, सहस्रपत्र, महोत्पल, वारिरोह, सरसिज, सलिलज, पकेरुह, विसप्रसून, वारिज, कवार, आस्यपत्र, वनशोभन, जलजन्म, जलरुह, जलरुह, सरोज, सरोजन्म, सरोरुह, पकेज, श्रीवास, श्रीपर्ण, इन्दिरालय, जलजात, कज, नालीक, नालिक, वनज, अम्लान, पुटक, अब्न, सारज, सरसीरुह, कुटप,)

श्वेतकमलनामानि ।

पुण्डरीकंमहापद्मंश्वेतपद्मसिताम्बुजम् ।
हशोपमहरिनेत्रशारदशम्भुवल्लभम् ॥

अर्थ-पुण्डरीक, महापद्म, श्वेतपद्म, सिताम्बु, हशोपम, हरिनेत्र, शारद, शम्भुवल्लभ (सिताम्भोज, शतपत्र, शुक्लपद्म, सिताब्ज, श्वेतवारिज, शरत्पद्म)।

रक्तकमलनामानि ।

रक्तोत्पलकोकनदंरक्तवर्णंरविप्रियम् ।

अर्थ-रक्तोत्पल, कोकनद, रक्तवर्ण, रविप्रिय, (अलपपत्र, रक्तकमल, रक्तकमल, आलोहित, अलिप्रिय, कृष्णनन्द, रक्ताम्भोज, शोणपद्म, अरुणकमल, चारुनालक, अरविन्द, रक्तवारिज, रक्तसरोरुह ।

नीलकमलनामानि ।

नीलाम्बुजन्मनीलाब्जनीलपद्ममृदूत्पलम् !

अर्थ-नीलम्बुजन्म, नीलाब्ज, नीलपद्म, मृदूत्पल, (इन्दीवर, नीलपङ्कज, नीलकमल,)

नीलोत्पलनामानि ।

इ ... कुवल ... [illegible] ... सन्दोरथ, सौग

अर्थ-इन्दीवर, कुवलय, ... [illegible] ...

न्धिक, सुगन्ध, कुद्मला, अलि ... [illegible]

मारकमोपामे ... कम ...

हिन्दीभापामें	कमल, सफेदकमल, लालकमल, नीलकमल, नील-कमोदनी ।
वंगभापामें	पद्म, श्वेतपद्म, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलशुन्दि,
मराठीभापामें	कमळ, पांढरेंकमळ, तांबडेंकमळ, नीळेंकमळ, ।
गुजरातीभापामें	कमल, धोलाकमल, रातावुंडेते राताकमल, जेना नालमा कांटाहोय, नीलकमल, सुगन्धिनेतान।।
कर्णाटकीभापामें	बिलीयतावरे, केदावरे, करियतावरे, नेइदिल्ल ।
तैलिङ्गीभापामें	कालावा, नालावाकालावा, एराकालावा, तम्मि, तांम्मियुव्वु, नेल्लनामर, नल्लकुल्दु ।
तामिलीभापामें	अम्बल ।
इंग्रेजीभापामें	लोटस । Lotus
लेटिन् भापामें	लीलबियम स्पेसीयोझम । Nelumbium Speciosum नीलवीय केरुलियम । Nelumbium Cærruleum नीलवीय प्युबेसिन्स । N-pubescins
फारसीभापामें	नीलुफर, गुलनीलोफर ।
अरवीभापामें	करबुलमा, वर्द नीलोफर ।

कमलगुणा ।

कमलशीतलवर्ण्यमधुरकफपित्तजित ।
तृष्णादाहास्रविस्फोटविपवीसर्पनाशनम ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–साधारणकमल–शीतल, देहको सुन्दर करनेवाला, मधुर तथा कफ, पित्त, तृपा, दाह, रुधिरदोप, विस्फोट, विप और विसर्परोगनाशक है।

अन्यच्च ।

पद्मकपायमधुरशीतपित्तकफास्रजित । (राजवल्लभ)

अर्थ–कमल–कपेला, मधुर, शीतल तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करे है।

अपिच ।

कमलशीतलस्वादुसुगन्धिभ्रान्तितापहम । वर्ण्यंतृप्तिकरंचैवरक्तपित्तश्रमापहम ॥ कफपित्ततृपादाहविस्फोटरक्तदोपकम् । विसर्पश्चविपश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम ॥

अर्थ–कमल–शीतल, स्वादिष्ट, सुगन्धि, भ्रान्तिहारक, तापनिवारक,

वर्णकारक, तृप्तिजनक तथा रक्तपित्त, श्रम, कफ, पित्त, तृषा, दाह, विस्फोट, रक्तविकार, विसर्प और विषको दूर करनेवाला है।

श्वेतकमलगुणाः।

धवलकमलशीतमधुरकफपित्तजित्। (भा प्र.)

अर्थ-सफेदकमल-शीतल, मधुर तथा कफ और पित्तनाशक है।

अन्यच्च।

श्वेतंतुकमलशीतस्वादुतिक्तकषायकम्। मधुरवर्णकृन्नेत्र्य रक्तदोषतृषाहरम्॥ कफपित्तश्रमंदाहतृष्णाशोथव्रणज्वरम। सर्वविस्फोटकश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेदकमल, शीतल, स्वादिष्ट, कडवा, कषेला, मधुर, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी तथा रुधिरविकार, तृषा, कफ, पित्त, श्रम, दाह, तृष्णा, शोष, व्रण, ज्वर और सर्वप्रकारके विस्फोटकोंको हरनेवाला है।

रक्तकमलगुणाः।

कोकनदकटुतिक्तमधुरशिशिरश्चरक्तदोषहरम्।
पित्तकफवातशमनमन्तर्पणकारणवृष्यम (राजनिघण्टु)

अर्थ-लालकमल-चरपरा, कडवा, मधुर, शीतल, रक्तदोषनाशक, पित्त, कफ और वातको शान्ति करनेवाला, मतर्पण तथा शुक्रवर्द्धक है।

नीलकमलगुणाः।

नीलाब्जशीतलस्वादुसुगन्धिपित्तनाशकृत्।
रुच्यरसायनेश्रेष्ठंकेश्यचदेहदार्ढ्यकृत्॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलकमल-शीतल, स्वादिष्ट, सुगन्धि, पित्तनाशक, रुचिकारक, रसायनकर्ममें उत्तम, देहको, दृढ करनेवाला और बालोंको बढानेवाला है।

नीलोत्पलगुणाः।

नीलोत्पलमतिस्वादुशीतसुरभिसौख्यकृत।
पाकेतुतिक्तमत्यन्तरक्तपित्तापहारकम॥ (रा०नि०)

अर्थ-नीलोत्पल (फा०नीलोफर)-अत्यन्त स्वादिष्ट, शीतल, सुगन्धि, सुखकारक, पचनेमें अत्यन्त कडवा और रक्तपित्तनाशक है।

पद्मिनीनामानि।

मृणालदलोत्फुल्ल फलैःसमुदितापुन।

पद्मिनीप्रोच्यतेप्राज्ञैर्बिसिन्यादिश्चसास्मृता ॥

अर्थ-मूल, नाल, पत्र और बीजादिसंयुक्त, खिलेहुए कमलको पद्मिनी कहते हैं, (बिसिनी, नलिनी, कुन्दिनी, मृणालिनी, कमलिनी, पुटकिनी, पकजिनी, सरोजिनी, अरविन्दिनी, अब्जिनी, नालिकिनी, अम्भोजिनी, पुष्करिणी और जम्बालिनी यह सब पद्मिनीके पर्य्याय हैं)।

पद्मिनीगुणा ।

पद्मिनीमधुरातिक्ताकषायाशिशिरापरा ।
पित्तक्रिमिशोषवान्तिभ्रांतिसन्तापशान्तिकृत ॥ (रा नि)

अर्थ-कमलिनी-मधुर, कडवी, कषेली, शीतल तथा पित्त, कृमि, शोष, वांति, भ्रांति और संतापकी शांति करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पद्मिनीशीतलागुर्वीमधुरालवणाचसा ।
पित्तासृक्कफनुद्रूक्षावातविष्टम्भकारिणी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कमलिनी-शीतल, भारी, मधुर, लवणरसयुक्त, रक्तपित्तनिवारक, कफनाशक, रूखी और वातविष्टम्भकारक है ।

अपिच ।

पद्मिनीमधुराशीतातिक्ताचतुवरागुरु । वातस्तम्भकरीरूक्षास्तनदार्ढ्यकरीमता ॥ कफपित्तरक्तरुजविषशोषवमिक्रुमीन् । सन्तापमूत्रकृच्छ्रश्चनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-कमलिनी-मधुर, शीतल, कडवी, कषेली, भारी, वातस्तम्भकारक रूखी, स्तनाको दृढ करनेवाली तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, विष, शोष, वमन, कृमि, संताप और मूत्रकृच्छ्ररोगको हरनेवाली है ।

पद्मसवर्त्तिकादिनामानि ।

सवर्त्तिकानवदलंबीजकोशस्तुकर्णिका ।
किञ्जल्क केसर प्रोक्तोमकरन्दोरस स्मृत ॥
पद्मनालमृणालस्यात्तथात्रिसमितिस्मृतम् ।

अर्थ-कमलके नये पत्तोंको सवर्त्तिका, बीजकोश (कमलगट्टेका घर) को कर्णिका, केसर (जीरा) को किञ्जल्क रसको मकरन्द और नालको मृणालकद तथा बिस (कमलकद) यह कहते हैं ।

संवर्त्तिकागुणाः ।

संवर्त्तिका हिमा तिक्ता कषाया दाहतृट्प्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्रगुदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ-कमलके कोमलपत्ते-शीतल, कडवे, कसैले तथा दाह, तृषा, मूत्रकृच्छ्र गुदरोग और रक्तपित्तको दूर करनेवाले हैं ।

कर्णिकागुणाः ।

पद्मस्य कर्णिका तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ।
मुखवैशद्यकृल्लघ्वी तृष्णास्रकफपित्तनुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कर्णिका (बीजकोष)-कडवी, कसैली, मधुर, शीतल, हलकी तथा मुखकी विशदता, तृषा, रक्तविकार, कफ और पित्तका नाश करे है ।

पद्मकेसरनामानि ।

किञ्जल्कमकरन्दश्च केसरं पद्मकेसरम् ।

अर्थ-किञ्जल्क, मकरन्द, केसर, पद्मकेसर (किञ्ज, पीतपराग, शुभ्र, चाम्पेयक, केसर, चाम्पेय, आर्णाल, काञ्चन)

पद्मकेसरगुणाः ।

किञ्जल्कः शीतलो वृष्यः कषायो ग्राहिकोऽपि च ।
कफपित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित् ॥

अर्थ-कमलकेसर-शीतल, वीर्यवर्द्धक, कसैली, मलरोधक तथा कफ, पित्त, तृषा, दाह, रक्तार्श (रुधिरकी बवासीर), विष और सूजनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

किञ्जल्को मधुरो रूक्षः कटुरास्यव्रणापहः ।
शिशिरो रुच्यपित्तघ्नस्तृष्णादाहविषापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कमलकेसर-मधुर, रूखी, चरपरी, मुखरोग, तथा व्रणरोगनाशक है और शीतल, रुचिकारक, पित्तनाशक, तृषा, दाह और विषको दूर करने वाली है ।

अन्यच्च ।

किञ्जल्कः शीतलो ग्राही कान्तिदस्तुवरो मधुः । कटुरूक्षो-
शिरोरोगगर्भस्थैर्य्यकरो मतः ॥ व्रणपित्ततृषादाहमुखरोगघ्न-

यकफम् । विपरक्तार्शसशोपज्वरवातञ्चनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ–कमलकेसर–शीतल, मलरोधक, कान्तिजनक, कपेली, मधुर, चरपरी, रुचिकारी, गर्भको स्थिर करनेवाली तथा व्रण, पित्त, तृषा, दाह, मुखरोग, क्षय, कफ, विप, रक्तार्श, शोप, ज्वर और वातका नाश करनेवाली है ।

पद्मबीजनामानि ।

पद्मबीजन्तुपद्माक्षंगालोड्यपद्मकर्कटी ।

अर्थ–पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य, पद्मकर्कटी (कन्दली, भेण्डा, क्रौञ्चादनी, क्रौञ्चा, श्यामा) ।

संस्कृतभाषामें	पद्मबीज ।
हिन्दीभाषामें	कमलगट्टा ।
बंगभाषामें	पद्मबीचि ।
मराठीभाषामें	कमलाक्ष ।
तैलिङ्गीभाषामें	तामरकाडा ।
गुजरातीभाषामें	कमलकाकडी ।
कर्णाटकीभाषामें	पद्माक्ष ।
अरबीभाषामें	वालकेकुवति ।

अस्य गुणाः ।

पद्मबीजहिमस्वादुकषायतिक्तकगुरु ।
विष्टम्भिवृष्यरूक्षञ्चगर्भस्यस्थापकपरम् ॥
कफवातहरवल्यंग्राहिपित्तास्रदाहनुत । (भा० प्र०)

अर्थ–कमलगट्टा–शीतल, स्वादिष्ट, कषेला, कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्यवर्द्धक, रूखा, गर्भस्थापक, कफवातनाशक, वलकारक, मलरोधक तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

कमलाक्ष स्वादुरुच्य पाचन कटुक स्मृत । शीतलस्तुवर-स्तिक्तोगुरुर्विष्टम्भकारक ॥ गर्भस्थितिकरोरूक्षोवृष्यो-वातकरोमत । कफकृल्लेखनोग्राहीवल्य पित्तविनाशक ॥ रक्तरुग्वमिदाहास्रपित्तनाशकरोमत । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-कमलगट्टा-स्वादिष्ट, रुचिकारक, पाचक, चरपरा, शीतल, कपैला, कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, गर्भस्थापक, रूखा, वीर्य्यवर्द्धक, वातवर्द्धक, कफकारक, रेचन, मलरोधक, बलकारक तथा पित्त, रक्तविकार, वमन, दाह और रक्तपित्तका नाश करनेवालाहै । पूर्वदेशमें कमलगट्टेकी गिरी (मींग) को भूनकर मखाना बनाते हैं । मखानेके गुण आगे परिशिष्टवर्गमें लिखे हैं ।

मकरन्द-पद्ममधुगुणाः ।

अरविन्दस्य तु शीतो मकरन्दोऽतिबृंहणः ।
त्रिदोषशमनः सर्वनेत्रामयनिषूदनः ॥ (आ० स०)

अर्थ-कमलका मधु-शीतल अत्यन्तपुष्टिकारक, त्रिदोषनाशक और सर्वप्रकारके नेत्ररोगोंको दूर करनेवालाहै ।

कमलिनीपत्रगुणाः ।

कमलिन्याश्छदः शीतस्तुवरो मधुरो मतः ।
तिक्तः पाकेऽतिकटुकोलघुर्वेग्राहकोमतः ॥
वातकृत्कफपित्तानानाशको मुनिभिः स्मृतः ॥ (नि र)

अर्थ-कमलिनीके पत्ते-शीतल, कषैले, मधुर, कडवे, पचनेमें चरपरे, हलके, मलरोधक, वातकारक तथा कफपित्तनाशक हैं ।

पद्मनालनामानि ।

मृणालं पद्मनालञ्च कोमलं बिसिनी बिसम् ।

अर्थ-मृणाल, पद्मनाल, कोमल, बिसिनी, बिस (बिस, कोमक, धाम रक, तन्तुर, मृणाली, मृणालिनी, पद्मतन्तु, नलिनीरुह, तन्तुल)

संस्कृतभाषामें	मृणाल, पद्मनाल ।
हिंदीभाषामें	कमलकी नाल, कमलकी दंडी ।
बंगभाषामें	पद्मेरडाटा ।
मराठीभाषामें	कमळाचा देंठ ।
कर्णाटकीभाषामें	कमलन्नजु ।
तैलिङ्गीभाषामें	तामरतुन, तामरतोंगे ।

मृणालगुणाः ।

मृणालं शिशिरं तिक्तं कषायं पित्तदाहजित् ।
मूत्रकृच्छ्रविकारघ्नं रक्तवान्तिहरं परम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कमलकी नाल-शीतल, कडवी, कषेली तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरविकार और वमनको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मृणालंशीतलवृष्यपित्तदाहास्रजिद्गुरु ।
दुर्जरस्वादुपाकश्चस्तन्यानिलकफप्रदम् ॥
सग्राहिमधुररूक्षशालूकमपितद्गुणम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-कमलकी नाल-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, दाहहारक, रक्तरोगनाशक, भारी, दुर्जर पचनेमें, स्वादिष्ठ, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, वातवर्द्धक, कफकारक, मलरोधक, मधुर और रूखी है इसीकी समान भसीडेके गुण जानने ।

पद्मकन्दनामानि ।

पद्मादिकन्दश्शालूककरहाटश्चकथ्यते ।
मृणालमूलभिस्साण्डजालालूकश्चकथ्यते ॥

अर्थ-कमलादिकके कन्दको-शालूक, करहाट (पद्ममूल, करहाटप,शालूक और जालालूक) कहते हैं । मृणालकी मूलको भिस्साण्ड, जलालूक, (पकशरण, शालूक, शालु और गोपभद्र) कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें	पद्मकन्द, भिस्साण्ड ।
हिन्दीभाषामें	कमलकन्द, भसीडा ।
बंगभाषामें	पद्मेर गेंडा, शालुक ।
तैलिङ्गीभाषामें	जाजिकाय ।

शालूकगुणाः ।

शालूककटुविष्टम्भिरूक्षरुच्यकफापहम् ।
कषायकासपित्तघ्नतृष्णादाहनिवारणम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शालूक (कमलकंद, भसीडा)-कटु, विष्टम्भकारक, रूक्ष, रुचिकारक, कफनाशक, कषेला तथा खाँसी, पित्त, तृषा और दाहनिवारक है ।

अपिच ।

शालूक कटुकश्चोक्तस्तुवरोमधुरोगुरु । मलस्तम्भकरोरूक्षोनेत्र्योवृष्यश्चशीतल ॥ दुर्जरोग्राहकोरक्तपित्तदाहतृषाकफम् । पित्तवातञ्चगुल्मञ्चपित्तंकासक्रमींस्तथा ॥ मुखरोगरक्तदोषनाशयेदितिचस्मृत । (नि० र०)

अर्थ-शालूक (कमलकन्द, भसीडा)-कटु, कषैला, मधुर, भारी, मल स्तम्भक, रूखा नेत्रोंको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, दुर्जर, मलरोधक तथा रक्तपित्त, दाह, तृषा, कफ, पित्तवात, गुल्म, पित्त, खाँसी, कृमि, मुखरोग और रुधिरविकारको दूर करनेवाला है।

विवरण। कमल-लाल, नीले और सफेद इन भेदोंसे तीन प्रकारके होते हैं, कमल विशेषकरके गम्भीर और निर्मल नीरवाले स्वच्छ सरोवर और तालोंमें उत्पन्न होतेहैं पत्ते बडे २ गोल और चिकने जिनपर जलका बिन्दु न ठहरै इसप्रकारके अद्भुत और शोभायमान होते हैं उन पत्तोंको पुरैनके पातभी कहते हैं, उनके नीचे जो डण्डी होती है उसको मृणाल अर्थात् कमलकी नाल कहते हैं, कमलके फूलोंमें जो पीला २ जीरा होता है उसको कमल केशर कहते हैं, कमलके फूलमें जो स्वरस रस लगा होता है उसको कमलकी रज और मकरन्द कहते हैं कमलमें जो फल लगते हैं उसको कमलकी रज और मकरन्द कहते हैं कमलमें जो फल लगते हैं उसको पद्मकोष कहते हैं, उनमें जो बीज निकलते हैं उनका नाम कमलगट्टे हैं कमलकी जडको भसीडे कहते हैं।

कुमुदनामानि।

केरवचन्द्रकान्तश्चगर्दभकुमुदकुमुद्।

अर्थ-करव, चन्द्रकान्त, गर्दभ, कुमुद, कुमुद् (सौगन्धिक, कन्दोत, कच्छ, कुन, गन्धसोम, सितोत्पल, धवलोत्पल, श्वेतोत्पल, कहार, शीतरश्, शशिकान्त, चन्द्रिकाम्बुज, इन्दुकमल, कुवलय)

संस्कृतभाषामें	कुमुद।
हिन्दीभाषामें	कोई, कमोदनी, वघोला, बघूला।
बंगभाषामें	हेलाफुल, नालिफुल, श्वेतशुन्दि।
मराठीभाषामें	पांढरें उत्पल।
गुजरातीभाषामें	पोयणा।
कर्णाटकीभाषामें	बिलियंते इदिल्ल।

कुमुदगुणाः।

कुमुदंशीतलंस्वादुपाकेतिक्तंकफापहम्।
रक्तदोषहरंदाहश्रमपित्तप्रशान्तिकृत्॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुमुद (कमोदनी)-शीतल-स्वादिष्ठ पाकमें कडवी, कफनाशक तथा रुधिरविकार, दाह, श्रम और पित्तको शान्ति करे है।

अन्यच्च ।

कुमुदपिच्छिलंस्निग्धंमधुरह्लादिशीतलम् ।

अर्थ–कुमुद–पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, शीतल और आनन्दजनक है ।

कुमुदवीजगुणाः ।

भवेत्कुमुद्वतीवीजस्वादुरूक्षहिमगुरु ।

अर्थ–कुमुदके वीज अर्थात् घघोल्के दाने–स्वादिष्ठ, रूखे, शीतल और भारी हैं ।

उत्पलनामानि ।

अनुष्णचोत्पलंचैवरात्रिपुष्पंजलाह्वयम् ।
हिमाब्जशीतजलजनिशाफुल्लञ्चसत्तथा ॥

अर्थ–अनुष्ण, उत्पल, रात्रिपुष्प, जलाह्वय, हिमाब्ज, शीतजलज, निशाफुल्ल (पुष्प) (कुवलु, कुवलय कुवेल) ।

उत्पलगुणाः ।

उत्पलशिशिरस्वादुपित्तरक्तार्त्तिदोपनुत् ।
दाहश्रमवमिभ्रान्तिकृमिज्वरहरपरम् ॥

अर्थ–उत्पल–शीतल, स्वादिष्ठ तथा पित्त, रक्तविकार, दाह, श्रम, वान्ति, भ्रान्ति, कृमि और ज्वरको शान्ति करे है ।

रक्तकुमुदनामानि ।

हल्लकंरक्तकुमुदसोमाख्यंरक्तकैरवम् ।

अर्थ–हल्लक, रक्तकुमुद, सोमाख्य, रक्तकैरव (रक्तसन्ध्यक, रक्तकह्लार, रक्तसौगन्धिक, रोचना, अलगन्ध)

उत्पलिनीनामानि ।

उत्पलिनीकैरविणीकुमुद्वतीकुमुदिनीचचन्द्रेष्टा ।
कुवलयिनीन्दीवरिणीनीलोत्पलिनीचविज्ञेया ॥

अर्थ–उत्पलिनी, करविणी कुमुद्वती, कुमुदिनी, चन्द्रेष्टा, कुवलयिनी, इन्दीवरिणी, नीलोत्पलिनी ।

उत्पलिनीगुणाः ।

उत्पलिनीहिमातिक्तारक्तामयहारिणीचपित्तघ्नी ।
तापकफकासतृष्णाश्रमवमिशमनीचविज्ञेया॥(रा नि)

अर्थ-कुमुदिनी, उत्पलिनी, शीतल, कडवी तथा रक्तरोग, पित्त, ताप, कफ, खासी, तृषा, श्रम और वमनको दूर करनेवाली है।

विवरण। कुमुदनी कमलके तुल्य तीन प्रकारके होते हैं लाल, नीले और सफेद फूलोंके भेदसे हो जाते हैं, कुमुदके फूल कमलके फूलोंसे छोटे होते हैं और रात्रिको चन्द्रमाके उदय होनेपर खिलते हैं और सूर्यका प्रकाश होतेही बन्द होजाते हैं, इसके पत्ते फूलके ऊपरही लगे होते हैं, उसमें जाविर्त्रीके समान कोप होताहै, उस कोपका फल होजाताहै, कच्ची अवस्थामें तो उसके भीतर लालदाने निकलते हैं और पक जानेपर वह दाने काले पड जातेहैं इस फलको घघोल कहते हैं, उसकी जडको चाच अथवा सालुक कहते हैं।

स्थलपद्मिनीनामानि।

पद्मचारिण्यतिचराऽव्यथापद्माचसारदा।

अर्थ-पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा, सारदा, (चारिटी, पद्माह्वा, सुगन्धमूला, अम्बुरुहा, लक्ष्मी, श्रेष्ठा, शुपुष्करा, रम्या, पद्मावती, स्थलरुहा, पुष्करिणी, पुष्करपर्णिका, पुष्करनाडी)।

संस्कृतभाषामें	स्थलपद्मिनी।
हिन्दीभाषामें	स्थलकमलिनी।
वंगभाषामें	स्थलपद्म।
मराठीभाषामें	स्थलकमलिनी।
कर्णाटकीभाषामें	कडुदावरे।
लेटिन भाषामें	आयोनीडियम् सुफ्रुटिकोसम्। Ionidium Suffruticosum

अस्य गुणाः।

शीतातिक्ताचतुवरास्तनदार्ढ्यकरीमता।लघ्वीकट्वीचविज्ञेयाकफपित्तक्षयनाशिनी॥मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रवातशूलातिसारहा।वान्तिदाहमोहमेहरक्तरुग्श्वासहामता॥अपस्माररविषकासंनाशयेत्पद्मचारिणी। (नि० र०)

अर्थ-पद्मचारिणी-स्थलकमलिनी, शीतल, कडवी, कषैली, स्तनोंको दृढ करनेवाली, हलकी, चरपरी तथा कफ, पित्त, मूत्राश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, वात, शूल, अतिसार, वमन, दाह, मोह, प्रमेह, रक्तविकार, श्वास, अपस्मार, विष और खांसीको दूर करनेवाली है।

विवरण । स्थलकमलभी कमलकेही समान होताहै, परन्तु इसमें विशेषता यह है कि, पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै, आकृति तो सब कमलकीसीही होतीहै किन्तु पत्ते और फूल, फल सब कमलसे छोटे होते हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेपुष्पवर्ग ॥ ४ ॥

अथ फलवर्गः ।

आम्रनामानि ।



आम्रःप्रोक्तोरसालश्चसहकारोऽतिसौरभ ।
कामाङ्गोमधुदूतश्चमाकन्द पिकवल्लभ ॥

अर्थ–आम्र, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामाङ्ग, मधुदूत, माकन्द, पिकवल्लभ, (चूतक, अम्र, फलश्रेष्ठ, फलोत्पत्ति, नृपालक, चूत, षट्पदातिथि, वसन्तद्रु, पिकप्रिय, स्त्रीप्रिय, गन्धबन्धु, अलिप्रिय, मदेष्ट, मादिगसख, पिकबन्धु, केशवायुध, कोपी, परपुष्टमहोत्सव, कामशर, कामवल्लभ, कामाग, कीरेष्ट, माधवद्रुम, भृङ्गाभीष्ट, सीधुरस, माधूली, कोकिलोत्सव, वसन्तदूत, मोदाख्य, मन्मथालय, मध्वावास, सुमदन, पिकराग, नृपप्रिय, प्रियम्बु, कोकिलावास, वसन्तपादप, भ्रमरप्रिय, मनोज, मन्मथावास, शुकप्रिय, वनोत्सव, मदाढ्य, मञ्जरी) ।

संस्कृतभाषामें आम्र ।
हिन्दीभाषामें आम ।

वंगभाषामें आम ।
मराठीभाषामें आंबा ।
गुजरातीभाषामें आंबो ।
कर्णाटकीभाषामें माविनफल ।
तैलिङ्गीभाषामें माविडि ।
इंग्रेजीभाषामें मङ्गोट्री । Mangotree
लैटिन्भाषामें मँगीफराइंडिका । Mangifera Indica
फारसीभाषामें आंबा ।
अर्बीभाषामें अम्बज ।

आम्रपुष्पगुणाः ।

आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत् ।
असृग्दुष्टिहरंशीतंरुचिकृद्ग्राहिवातलम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-आमका मौर-अतिसार, कफ, पित्त, प्रमेह और दुष्टरक्तनाशक है । तथा शीतल, रुचिकारक, मलरोधक और वातकारक है ।

अन्यच्च ।

आम्रपुष्पंशीतलंस्याद्वातलंग्राहकंमतम् ।
अग्निदीप्तिकररुच्यंकफपित्तप्रमेहनुत् ॥
प्रदरंचातिसारञ्चनाशयेदितिमेमतम् । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-आमका मौर-शीतल, वातकारक, मलरोधक, अग्निसंदीपक, रुचिकारी तथा कफ, पित्त, प्रमेह प्रदर और अतिसारनिवारक है ।

बालतरुणाम्रगुणाः ।

बालाम्रंकषायाम्लंरुच्यंमारुतपित्तकृत् ।
तरुणंतुतदत्यम्लंरूक्षंदोषत्रयास्रकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बालाम्र अर्थात् कच्ची अँबिया-कोरी, खट्टी रुचिकारक तथा वात और पित्तकारक है, विनापकाहुआ बड़ा आम-अत्यन्त खट्टा, रूखा तथा त्रिदोष और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

बालाम्रंरक्तपित्तकृन्मध्यन्तुपित्तलम् । (रा.नि.)

अर्थ-कच्ची अँबिया-रक्तपित्तकारक और तरुण आम पित्तजनक है ।

अपिच ।

वालाम्रस्तुवरश्चोष्ण'सुगन्धिश्चाम्लकःस्मृत ।क्षारस्ययोगाद्रुचिदोग्राहीरूक्षश्चकान्तिद' ॥ पित्तवातकफास्रक्तदोषांश्चैवकरोतिस । कण्ठरुग्वातमेहश्चयोनिदोपव्रणतथा ॥ अतिसारप्रमेहश्चनाशयेदितिकीर्तित । (नि० र०)

अर्थ–कच्ची अँबिया–कपेली, गरम, सुगन्धि, खट्टी, किसी क्षारके साथ होनेसे रुचिकारी, मलरोधक, रूखी तथा कान्ति, पित्त वात, कफ और रुधिरके दोषोंको उत्पन्न करनेवाली और कण्ठरोग, वात, प्रमेह, योनिदोष, व्रण, अतिसार तथा प्रमेहको हरनेवाली है।

आम्रपेषीगुणा ।

आम्रमामत्वचाहीनमातपेतिविशोपितम् ।
आम्लस्वादुकपायंस्याद्भेदनंकफवातजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–कच्चे आमके ऊपरका छिल्का छील फिर उसके टुकडे करके धूपमें सुखादेवे उसको अमचूर कहतेहैं, यह अमचूर–खट्टा, स्वादिष्ठ, कपेला, भेदक और कफवातको हरनेवाला है।

पक्वाम्रगुणा' ।

पक्वतुमधुरवृष्यस्निग्धवलसुखप्रदम् ।
गुरुवातहरंहृद्यवर्ण्यंशीतमपित्तलम् ॥
कपायानुरसवह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् । (भा०प्र०)

अर्थ–पकाहुआ आम–मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, बल्वर्द्धक, सुखदायक, भारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, वर्णको सुंदर करनेवाला, शीतल, अपित्तल अर्थात् पित्तको नहीं करनेवाला, किञ्चित् कपेला तथा अग्नि, कफ और शुक्रवर्द्धक है।

अन्यच्च ।

पक्वत्वाम्रफलसुगन्धिमधुरस्निग्धपरबृंहण रुच्यवातहरञ्चहृद्यलघुग्राहीप्रमेहप्रणुत ।शीतवर्ण्यमपित्तलव्रणहरश्लेष्मास्ररोगापह यद्वद्गामनउल्लसत्यपिमुने किवर्णनभूतले ॥

अर्थ–पकाहुआ आम–सुगन्धि, मधुर, स्निग्ध, अत्यन्त पुष्टिकारक, रुचि-

कारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, भारी, मलरोधक, प्रमेहनाशक, शीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, अपित्तल तथा व्रण, श्लेष्म और रुधिरके रोगोंको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

पक्काम्रोमधुरः शुक्रवर्द्धकः पौष्टिकः स्मृतः ।
गुरुः कान्तितृप्तिकरः किञ्चिदम्लोरुचिप्रदः ॥
हृद्योमांसबलानाञ्चवर्द्धकः कफकारकः ।
तुवरश्चतृषावातश्रमानानाशकः स्मृतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-पकाहुवा आम-मधुर, शुक्रवर्द्धक, पुष्टिकारक, भारी, कान्तिजनक, तृप्तिकारक, किञ्चित् खट्टा, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा मांस, बल और कफवर्द्धक है, कषेला और तृषा, वात तथा श्रमनाशक है ।

वृक्षपक्वाम्रगुणाः ।

तदेववृक्षसपक्वंगुरुवातहरंपरम् ।
मधुराम्लरसंकिंचिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वही वृक्षपै पका हुआ आम-भारी, वातनाशक, मधुर, किञ्चित् खट्टा और पित्तको कुपित करनेवाला है ।

कृत्रिमपक्वाम्रगुणाः ।

आम्रंकृत्रिमपक्वंचतद्भवेत्पित्तनाशनम् । रसस्याम्लस्यहीनन्तुमाधुर्य्याच्चविशेषतः ॥ उपितंतत्परंरुच्यंबलवीर्य्यकरं लघु । शीतलंशीघ्रपाकिस्याद्वातपित्तहरंसरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालमें पकायाहुवा आम-पित्तनाशक, अम्लरसहीन और मधुररसपूरित है । वही बासित-परम रुचिकारक, बलवर्द्धक, वीर्यजनक, हलका शीतल, शीघ्रपाकी, वातपित्तनाशक और कुछेक दस्तावर है ।

आम्ररसगुणाः ।

तद्रसोगालितोबल्योगुरुर्वातहरःसरः ।
अहृद्यस्तर्पणोतीवबृंहणः कफवर्द्धनः ॥

अर्थ-आमका निचोडाहुवा रस-बलकारक, भारी, वातविनाशक, कुछेक दस्तावर, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, अतीवबृंहण और कफवर्द्धक है ।

सैवदुग्धेनसयुक्तकान्तिदःस्वादद स्मृत ।
वृष्यश्चान्येगुणाश्चोकारसेनसदृशा स्मृता ॥ (नि०र०)

अर्थ-वही रस दूधके साथ कान्तिजनक, स्वाददायक और वीर्य्यवर्द्धक है और गुण रसकी समान जानने ।

चोपिताम्रगुणा ।

चोपिताम्रोवलरुचिर्वीर्य्यवृद्धिकरःपर ।
लघुताशीततताशीघ्रपाकतावातपित्तनुत ॥
मलवन्धकरश्चैवपूर्ववैद्यैरुदीरित ।

अर्थ-चूसकर खायाहुवा आम-बल, रुचि और वीर्य्यवर्द्धक है तथा लघुता, शीतता, शीघ्रपाकता और वातपित्तनाशक है तथा मलवन्धक है ।

शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणा ।

पक्व स्याच्छस्त्रछिन्नाम्रोजाड्यमाधुर्यशीतकृत् ।
रुचिकृच्चिरपाकश्चधातुवृद्धिंकरोतिस ॥
वलकर्त्तावातपित्त नाशन परिकीर्तित । (नि० र०)

अर्थ-शस्त्र अर्थात् चक्कूसे काटके खाया हुआ आम-जडता, मधुरता, शीतता, रुचि, चिरपाक, धातुवृद्धि और वलकारक है तथा वातपित्त नाशक है ।

आम्रावर्त्त ।

पक्वस्यमहकारस्यपटेविस्तारितोरम ।
घर्मशुष्कोमुहुर्दत्तआम्रावर्त्तइतिस्मृत ॥

अर्थ-पकेहुये आमके रसको वस्त्रपर विछाकर धूपमे सुखालेवे उसको आम्रावर्त्त (अॉवट) कहतेहै ।

आम्रावर्त्तगुणा ।

आम्रावर्त्तस्तृपाच्छर्दिवातपित्तहर सर ।
रुच्य सूर्य्याशुभि पाकाल्लघुश्चमहिकीर्त्तित ॥ (भा प्र)

अर्थ-आम्रावर्त्त (आॅवट)-तृषा, वमन और वातपित्तनिवारक है, पुष्टिकर दस्तावर, रुचिकारक यह सूर्यकी किरणासे पाक होनेसे हल्का है ।

आम्रखण्डगुणा ।

तस्यखण्डगुरुपरोचनचिरपाकिच ।

मधुरंबृंहणंबल्यंशीतलंवातनाशनम ॥

अर्थ-आमका टुकडा-भारी, रुचिकारी, देरसे पचनेवाला, मधुर, बृंहण, बलकारक, शीतल और वातविनाशक है ।

अतिशयाम्रभक्षणगुणाः ।

मन्दानलत्वंविषमज्वरञ्चरक्तामयंबद्धगुदोदरञ्च । आम्राति-योगेनयनामयंवाकरोतितस्मादतितानिनाद्यात ॥ एतदम्लाम्रविषयंमधुराम्लपरंनतु । मधुरंन्यपरंनेत्रहितंत्वाद्या गुणायत ॥ शुण्ठ्यम्भसोऽनुपानंस्यादाम्राणामतिभक्षणे । जीरकंवाप्रयोक्तव्यंसहसौवर्चलेनच ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अधिक आमका खाना मन्दाग्नि, विषमज्वर, रुधिरविकार, बद्धगुदोदर और नेत्ररोगको उत्पन्न करे है, इसकारण अधिक आमका खाना वर्जित है, यह जितने दोष आमके कहे हैं सो सब खट्टे आमके जानने, परन्तु मीठे आमके भक्षण करनेसे यह दोष नहीं होते हैं, मधुर आम तो अधिकतर नेत्रोंको हितकारी और अधिक गुणवाला है । अधिक आम खानेके पीछे सोंठका जल पीवे तथा जीरा कालानोन खाना उचित है ।

मधुयुक्ताम्रगुणाः ।

मधुनातत्क्षयप्लीहवातश्लेष्महरंपरम् ।

अर्थ-मधुयुक्त आम-क्षय (राजयक्ष्मा,) प्लीहा, वात और श्लेष्मनाशक है ।

घृतयुक्ताम्रगुणाः ।

सघृतंवातपित्तघ्नंदीपनंबलवर्णकृत । (राजवल्लभ०)

अर्थ- घृतयुक्त आम-वातपित्तनाशक, दीपन, बलवर्द्धक और वर्णकारक है ।

दुग्धयुक्ताम्रगुणाः ।

वातपित्तहरंरुच्यंबृंहणंबलवर्द्धनम ।
वृष्यंवर्णकरंस्वादुदुग्धाम्रंगुरुशीतलम ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दुग्धयुक्त आम-वातपित्तनाशक, रुचिकारक, बृंहण, बलवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, स्वादिष्ठ, भारी और शीतल है ।

आम्रास्थिगुणाः ।

आम्रबीजंतुमधुरंकिञ्चिदम्लंकषायकम ।
वान्त्यतीसारहृद्दाहनाशनञ्चतुर्थमतम ॥

अर्थ-आमकी गुठली-मधुर, किञ्चित् अम्ल, कपेली तथा वमन, अतिसार और हृदयकी दाहको दूर करनेवाली है ।

आम्रास्थितैलगुणा ।

आम्रतैलतुवरंस्वादुरूक्षश्चतिक्तकम् ।
सुगन्धिमुखरोगस्यनाशनकफवातनुत् । (नि० र०)

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-कपेला, स्वादिष्ठ, रूखा, कडवा, सुगन्धि तथा मुखरोग, कफ और वातनाशक है ।

आम्रत्वचादिगुणा ।

आम्रत्वचाकपायाचमूलसौगन्धिताहशम् ।
रुच्यसग्राहिशिशिरपुष्पतुरुचिदीपनम् ॥

अर्थ-आमकी छाल-कपेली, आमकी जड-कपेली, सुगन्धित, रुचिकारक, मलरोधक और शीतल है । आमका फूल-रुचिको दीपन करे है ।

आम्रान्तस्त्वग्गुणा ।

आम्रान्तस्त्वग्ग्राहिणीतुवरादाहकारिणी ।
पित्तमेहकफानाशनाशिनीयोनिशुद्धिकृत् ॥

अर्थ-आमकी अन्तरकी-छाल-मलरोधक, कपेली, दाहकारक तथा पित्त, प्रमेह और कफनाशक है । तथा योनिको शुद्धि करे है ।

आम्रमूलगुणा ।

आम्रमूलतुवरग्राहिशीतरुचिप्रदम् ।
सुगन्धिकफवातानानाशनपरिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-आमकी जड-कपेली, मलरोधक, शीतल, रुचिदायक, सुगन्धि तथा कफ और वातविनाशक है ।

आम्रपल्लवगुणा ।

आम्रच्छदस्तुवरोग्राहकोरुचिकारक ।
वातपित्तकफान्हन्तीत्येवश्चपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-आमके कोमल पत्ते-कपेले, मलरोधक, रुचिकारक तथा वात, पित्त और कफको हरनेवाले हैं ।

राजाम्रनामानि ।

राजाम्रोन्योराजफल स्मराम्र कोकिलोत्सव. ।

मधुर कोकिलानन्द कामेष्टोनृपवल्लभ' ॥

अर्थ-राजाम्र, राजफल, स्मराम्र, कोकिलोत्सव, मधुर, कोकिलानन्द, कामेष्ट, नृपवल्लभ, (टक, आम्राव, कामाढ, राजपुत्रक)

बालराजफलकफास्त्रपवनंश्वासातिपित्तप्रद मध्यताद्दशमेवदोपवहुलभूयं'कपायाम्लकम् । पक्वंचेन्मधुरन्निदोपशमनतृष्णाविदाहश्रमश्वासारोचकमोचकगुरुहिमवृष्यातिभूपाह्वयम् ॥

अर्थ-कच्चा कलमी आम, कफ, वातरक्त, श्वास और अत्यन्त पित्तजनक है। तरुण कलमी आमके गुण कच्चे कलमी आमकी समान है। अनेक दोषकारक, कषैला और खट्टा है। पक्का कलमी आम मधुर, त्रिदोषनिवारक तथा तृष्णा, दाह, श्रम, श्वास और अरुचिनाशक है, भारी, शीतल और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक है।

विवरण। आमके वृक्ष प्रायः भारतवर्षके समस्त प्रदेशोंमें अधिकतासे होते हैं, अर्थात् प्रत्येक नगरके निकट आमके बाग होते हैं। आमकी अनेक जाति हैं, किन्तु आकृति सबकी एकसी होती है। पत्ते जामुनकी समान कुछ विशेष लम्बे होते हैं। फूल छोटा और आताहै, वसन्तऋतुके प्रारम्भमें फूल आने लगता है। और वसन्तऋतुके अन्तमें चनेकी बराबर फल आते हैं, पश्चात् बढकर १०-२० तोले तकके होजाते हैं। कच्ची अवस्थामें हरा रंग होताहै और पकनेपर पीला पडजाता है और कोई हरे-ही रहते हैं। फलके भीतर गुठली निकलती है उसके भीतर भाग निकलती है उसको बिजली कहते हैं।

दूसरे कलमी, मालदहे, बिलायती, अनेकप्रकारके दूसरे द्वीपोंसे आये हुये आम हैं। यह इनकी अपेक्षा अधिक बडे और विशेष मधुर होते हैं। परन्तु अनेकप्रकारके कार्योंमें यह देशीही आम श्रेष्ठ गिनेजाते हैं।

आम्रातकनामानि।

आम्रातक'पीतनक'कपिचूतोम्ल[illegible]

वर्षपाकीकपिन्ड्डातनुक्षीरिकपि[illegible]

अर्थ-आम्रातक, पीतनक, कपिचूत, [illegible] तनुक्षीरी, कपिप्रिय (पीतन, [illegible]

रसाढ्य, तनुक्षीर, अम्नरातक, अम्वरीप, आम्रात, अम्रात, अम्रातक, अध्वगभोग्य, मर्कटाम्र और तुङ्गी)



संस्कृतभापामें	आम्रातक ।
हिंदीभापामें	अवाडा ।
वंगभापामें	आमडा ।
मराठीभापामें	अवाडा ।
कर्णाटकीभापामें	आवोडेयकायि ।
तैलिङ्गीभापामें	आमाटम् ।
गुजरातीभापामें	अभेडा ।
इंग्रेजीभापामें	स्पोन्डिआस् मिनट् । Spondias minute
लैटिन्भापामें	स्पोन्डिआस मॅंगिफरा । Spondias mangifera

अस्यफलगुणाः ।

आम्रातमम्लवातघ्नगुरूष्णरुचिकृत्सरम् । पक्वंतुतुवरस्वादुरसेपाकेहिमंस्मृतम् ॥ तर्पणंश्लेष्मलंस्निग्धंवृष्यंविष्टम्भिबृंहणम् । गुरुबल्यमरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–कच्चा अम्बाडा–खट्टा, वातनाशक, भारी, गरम, रुचिकारक और सारक है । पक्का अम्बाड़ा, कपेला, स्वादु, पाकमेंभी स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, कफकारक, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, भारी, बलकारी तथा वात पित्त, क्षत, दाह, क्षय और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

आम्रातकोगुरुश्चोष्णस्तुवरोम्लोरुचिप्रदः । सरःकण्ठ्यंपि-

और तीसरा खट्टा, वहां मधुर अनार त्रिदोषनाशक है। और मीठा और खट्टा अनार वातपित्तनाशक है। खट्टा अनार-रक्तपित्तकारक और सर्व प्रकारके अनार मलरोधक है।

अन्यच्च।

बल्यपित्तानिलघ्नंलघुशिशिरमसृग्दाहमूर्च्छापिपासा-
भ्रान्तिश्रान्तिज्वरच्छर्द्यरुचिमदगदाजीर्णनैर्बल्यनाशी।
मिष्टविष्टम्भिशुक्रप्रदमकफकरंदाडिमचातिपक्वं
हीनंतस्मादपक्वतुवरमथमरुन्माथिरुच्ययदम्लम् ॥

अर्थ-अत्यन्त पका अनार-बलकारक, पित्तनाशक, वातविनाशक, हलका, शीतल तथा रुधिरविकार, दाह, मूर्छा, पिपासा, भ्रान्ति, श्रम, ज्वर, वमन, अरुचि, मोह, अजीर्ण और निर्बलताका नाश करे है। मिष्ट, विष्टम्भजनक, शुक्रवर्द्धक और कफकारक है। तरुण अनार-कसेला, वात नाशक, रुचिकारक और खट्टा है।

अपिच।

दाडिमतुवरचाम्लंमधुरंतृप्तिकारकम। स्निग्धंचदीपनग्रा-
हिहृद्यंचोष्णरुचिप्रदम्॥ लघ्वग्निदीपकप्रोक्तंकफकासश्र-
मापहम। मुखकंठरुजपित्तंनाशयेदितिकीर्त्तितम ॥ मधुरं
तत्तृप्तिकरधातुवृद्धिकरंलघु। तुवरश्रावकस्निग्धमेध्यंबल्य-
श्रमापहम ॥ पथ्यंत्रिदोषतृड्दाहज्वरहृद्रोगनाशनम।
मुखरोगकंठरोगंनाशयेदितिकीर्त्तितम ॥ मधुराम्लंतदुक्तं
च्यंदीपनंचमतंलघु। वातपित्तप्रशमनंतदम्लंपित्तलंमतम॥
रक्तपित्तकरंचैवकफवातविनाशकम। शुष्कंबाल्यंबल-
स्त्रोक्तरुच्यंचहृदयप्रियम ॥ वातानुलोमनकरंमुनिभि
परिकीर्तितम। (नि० र०)

अर्थ-अनार कसेला, खट्टा, मधुर, तृप्तिकारक ... , दीपन, मलरोधक हृदयको हितकारी, गरम, रुचिकारक, ... दीपक तथा कफ, खांसी, श्रम, मुखरोग, कण्ठरोग और ... नाशक है। मधुर

अनार-तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, हलका, कषेला, ग्राही, स्निग्ध, मेधाजनक, बलवर्द्धक, मधुर, पथ्य तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, मुखरोग और कंठरोगको दूर करेहै । मधुराम्ल अर्थात् खट्टा और मीठा अनार-रुचिकारक, दीपन, हलका, वात और पित्तनाशक है । खट्टा अनार-पित्तकारक रक्तपित्तजनक, कफ और वातविनाशक है । कच्चा सुखाया हुआ अनार-अनारदाना-रुचिकारक, हृदयको प्रिय और वातको अनुलोमन करनेवाला है ।

दाडिमपुष्पादिगुणा ।

तत्पुष्पञ्चपुनर्ज्ञेयंनासासृग्गतिनावनात् ।
दाडिमत्वक्क्रिमिघ्नाचग्राहीरक्तातिसारहा॥ (शो०नि०)

अर्थ-अनारके फूल-नाकसे रुधिर गिरनेको दूर करेहैं । अनारके वल्कल कृमिनाशक, मलरोधक और रक्तातिसारको हरेहैं ।

विवरण । अनार-मध्यमाकारका वृक्षहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें मिलताहै, पंजाबी और काबुली वृक्षोंके फल कुछ अधिक मधुर होतेहैं । जो नाकसे रुधिर गिरता हो तो अनारको सूंघनेसे और इसका अर्क नाकमें डालनेसे आराम होजाताहै । बीज और छिलका खाँसीको खोतेहैं । इसकी जड कीडोंको नाश करतीहै ।

अथ कदलीनामानि ।



कदलीसुफलारम्भामोचावारणवल्लभा ।

और तीसरा खट्टा, तहां मधुर अनार त्रिदोषनाशक है। और मीठा और खट्टा अनार वातपित्तनाशक है। खट्टा अनार-रक्तपित्तकारक और सर्व प्रकारके अनार मलरोधक हैं।

अन्यच्च।

बल्यपित्तानिलघ्नलघुशिशिरमसृग्दाहमूर्च्छापिपासा-
भ्रान्तिश्रान्तिज्वरच्छर्द्यरुचिमदगदाजीर्णनैर्बल्यनाशी।
मिष्टविष्टम्भिशुक्रप्रदमकफकरंदाडिमंचातिपक्व
हीनतस्मादपक्वंतुवरमथमरुन्माथिरुच्यंयदम्लम ॥

अर्थ-अत्यन्त पका अनार-बलकारक, पित्तनाशक, वातविनाशक, हलका, शीतल तथा रुधिरविकार, दाह, मूर्च्छा, पियास, भ्रान्ति, श्रम, ज्वर, वमन, अरुचि, मोह, अजीर्ण और निर्बलताका नाश करे है। मिष्ट, विष्टम्भजनक, शुक्रवर्द्धक और कफकारक है। तरुण अनार-कषैला, वात नाशक, रुचिकारक और खट्टा है।

मदिन।

दाडिमतुवरचाम्लमधुरंतृप्तिकारकम। स्निग्धचदीपनग्राहिहृद्यचोष्णरुचिप्रदम॥ लघ्वग्निदीपकप्रोक्तंकफकामश्रमापहम। मुखकंठरुजपित्तनाशयेदितिकीर्त्तितम ॥ मधुरंतच्चतृप्तिकरधातुवृद्धिकरंलघु। तुवरग्राहकस्निग्धमेध्यबल्यंक्षमाधुरम ॥ पथ्यत्रिदोषतृड्दाहज्वरहृद्रोगनाशनम। मुखरोगकंठरोगंनाशयेदितिकीर्त्तितम ॥ मधुराम्लंतदुरुच्यदीपनंचमतंलघु। वातपित्तप्रशमनंतदम्लपित्तलंमतम॥ रक्तपित्तकरंचैवकफवातनिनाशकम्। शुष्कबालअनन्त्रोक्तरुच्यनाहृदयप्रियम् ॥ वातानुलोमनकरंमुनिभिःपरिकीर्तितम। (नि० र०)

अर्थ-अनार-कषैला, खट्टा, मधुर, तृप्तिकारक [illegible] पन, दीपन, मलरोधक, हृदयको हितकारी, गरम, रुचिकारक, ह[illegible] श्रमनाशक तथा कफ, खांसी, श्रम, मुखरोग, कंठरोग और [illegible] नाशक है। मधुर

अनार-तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, हलका, कपेला, ग्राही, स्निग्ध, मेधाजनक, बलवर्द्धक, मधुर, पथ्य तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, मुखरोग और कंठरोगको दूर करैहै। मधुराम्ल अर्थात् खट्टा और मीठा अनार-रुचिकारक, दीपन, हलका, वात और पित्तनाशक है। खट्टा अनार-पित्तकारक रक्तपित्तजनक, कफ और वातविनाशक है। कच्चा सुखाया हुआ अनार-अनारदाना-रुचिकारक, हृदयको प्रिय और वातको अनुलोमन करनेवाला है।

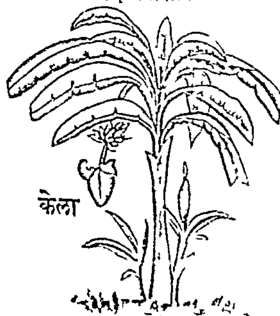
दाडिमपुष्पादिगुणा ।

तत्पुष्पञ्चपुनर्ज्ञेयंनासासृग्गतिनावनात ।
दाडिमत्वक्कृमिघ्नाचग्राहीरक्तातिसारहा॥ (शो०नि०)

अर्थ-अनारके फूल-नाकसे रुधिर गिरनेको दूर करैहैं। अनारके वल्कल कृमिनाशक, मलरोधक और रक्तातिसारको हरैहैं।

विवरण । अनार-मध्यमाकारका वृक्षहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें मिलताहै, पजावी और काबुली वृक्षोंके फल कुछ अधिक मधुर होतेहैं । जो नाकसे रुधिर गिरता हो तो अनारको सूघनेसे और इसका अर्क नाकमें डालनेसे आराम होजाताहै। बीज और छिलका खाँसीको खोतेहैं। इसकी जड कीडोंको नाश करतीहै।

कदलीनामानि ।



कदलीसुफलारभामोचावारणवल्लभा ।

सुकुमारा चर्म्मण्वती तल्पग्री नगरीपथि ॥

अर्थ-कदली, सुफला, रंभा, मोचा, वारणवल्लभा, सुकुमारा, चर्म्मण्वती, तल्पग्री, नगरीपथि (वारणवुसा, अंशुमत्फला, काष्ठीला, फलद, वार वुसा, वारणवुषा, सकृत्फला, गुच्छफला, हस्तिविषाणी, गुच्छदन्तिका, निःसारा, गजेष्टा, बालकप्रिया, ऊरुस्तम्भा, भानुफला, वनलक्ष्मी, मदहक, मोचक, रोचक, लोचक, वारवूषा, आयतच्छदा, तन्तुविग्रहा, अम्बुसारा)।

संस्कृतभाषामें	कदली।
हिन्दीभाषामें	केला।
बंगभाषामें	कला।
मराठीभाषामें	केळ, सोनकेळ, मुटेळी, लोरांडी, नवई।
गुजरातीभाषामें	केल्य।
कर्णाटकीभाषामें	कदली, बरवालेकाय, फावालेबय।
तैलङ्गीभाषामें	चक्रकेली, आरटीकाया अरटिचेट्टु, गुड्डगेल्ल, दोंडतांडे।
तामिलभाषामें	वाळै।
पारसी०	तल, तलमपज।
इराई०	वाता।
बर्मी०	हगार्पी।
इंग्रेजीभाषामें	प्लेन्टेन्। Plantain
लैटिन भाषामें	मुसारोपिएन्टम्। Musa sapientum
	मुसापेरेडिस्याका। Musa paradisiaca
फारसीभाषामें	मावज़, मौज़।
अरबीभाषामें	तल्ह।

अथ साधारणफलगुणाः।

कदलं मधुरं वृष्यं कषायं नातिशीतलम्।
रक्तपित्तहरं स्निग्धं रुच्यं श्लेष्मकरं गुरु ॥ (रा० नि०)

अर्थ-केलेकी साधारणफली, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किंचित् कसैली, शीतल, रक्तपित्तनाशक, दस्तको ढिलाती, रुचिकारी, कफकारक और भारी है।

अन्यच्च।

कदली शीतला गुर्वी वृष्या स्निग्धा मधुः स्मृता।

पित्तरक्तविकारञ्चयोनिदोषंतथाश्मरीम् ॥
रक्तपित्तनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-कदली-शीतल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर तथा पित्त, रुधिरविकार, योनिदोष, पथरी और रक्तपित्तको दूर करे है ।

कोमलकदलीफलगुणा ।

कोमलकदलशीतमधुरचकषायकम् ।
रुच्यमम्लसमुद्दिष्टंपित्तनाशकरञ्चतत ॥

अर्थ-केलेकी कोमल फली-शीतल, मधुर, कषेली, रुचिकारक, अम्ल और पित्तनाशक है ।

मध्यमकदलीफलगुणा ।

तृड्रक्तपित्तादिगदप्रमेहान्फलकदल्यास्तरुणंनिहन्ति ।
संग्राहिकतिक्तकषायरूक्षंरक्तातिसारशमयेज्ज्वरञ्च ॥

अर्थ-केलेकी तरुणफली-तृषा, रक्तपित्त, नेत्ररोग, प्रमेह, रक्तातिसार और ज्वरको दूर करनेवाली है, ग्राही, कडवी, कषेली और रूखी है ।

अन्यच्च ।

मध्यमकदलकिञ्चित्तुवरमधुरगुरु ।
अग्निमांद्यकरचैवऋषिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-केलेकी तरुण (कुछ कची और कुछ पकी) फली-किञ्चित् कषेली, मधुर, भारी और मन्दाग्निकारक है ।

अपक्वकदलीफलगुणा ।

संग्राह्यपक्वञ्चसुशीतलञ्चकषायकवातकफंकरोति ।
विष्टम्भिबल्यगुरुदुर्जरञ्चआरण्यरम्भाफलमेवचैतत ॥

अर्थ-कची केलेकी फली-मलरोधक, शीतल, कषेली, वातकफकारक, [illegible]कारक, बलवर्द्धक, भारी, दुर्जर और जंगली केलेकेभी गुण इसीके [जा]नने ।

पक्वकदलीफलगुणा ।

[प]क्वफलकषायमधुरबल्यञ्चशीततथापित्तचास्रविमर्द-
[क]रपथ्यनमदानले । [illegible] शुक्रविवर्द्धनक्लमहरंतृष्णा-
[ना]न्तद [illegible] [illegible]मयकरसन्ता[illegible]

अर्थ-केलेका नाल-शीतल, मलरोधक तथा तृषा, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, कर्णरोग, अतिसार, रुधिरका गिरना, स्फोटक, रक्तपित्त, दाह, रुधिरविकार, योनिरोग और शोषको दूर करे है।

वल्लीकदल्याः गुणाः।

वल्य कदल्याःकन्द स्यात्कफपित्तहरोगुरु ।
वातलोरक्तशमन कषायोरूक्षशीतल ॥
कर्णशूलरजोदोषसोमरोगनियच्छति ।

अर्थ-केलेका कन्द-बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वातकारक, रक्तविकारको दूर करनेवाला, कषेला, रूखा, शीतल तथा कर्णशूल, रजोदोष और सोमरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

कन्द कदल्यारूक्ष स्याद्वातलस्तुवरोगुरु ।शीतोबल्योम-
धुःकेश्योरुच्योऽग्निमांद्यकारक ॥ कर्णशूलचाम्लपित्तदा-
हंरक्तरुजतथा। सोमदोषरजोदोषंकृमीन्कुष्ठञ्चनाशयेत्॥नि र.

अर्थ-केलेका कन्द-रूखा, कषेला, भारी, शीतल, बलदायक, मधुर, केशोंको हितकारी, रुचिकारी, मन्दाग्निकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमरोग, रजोदोष, कृमि और कुष्ठको नष्ट करे है।

रक्तगीसारगुणाः।

सारकदल्या मधुराहिमाप्रियगुरुशीतलम ॥
तृड्दाहमूत्रकृच्छ्रातिसारमेहाश्मसोमकम ।
अस्थिस्रावरक्तपित्तंविस्फोटाश्चैवनाशयेत ॥

अर्थ-कदलीसार-मलरोधक, अप्रिय, भारी, शीतल तथा तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, अतिसार, प्रमेह, सोमरोग, अस्थिस्राव, रक्तपित्त और विस्फोटनाशक है।

आरण्यकदलीगुणाः।

आरण्यकदलीशीतामधुरानलवर्द्धिनी। वीर्य्यवृद्धिकरीरु-
च्याद्रुर्जरागुरु स्मृता। तृड्दाहशोषपित्तानांनाशिनीप-
रकीर्तिता। [illegible]

अर्थ-वनकदली अर्थात् जंगलीकेला-शीतल [illegible]

वर्द्धक, रुचिकारक, दुर्जर, भारी तथा तृषा, दाह, शोष और पित्तका नाश करे है । इसका फल कषेला, मधुर और भारी है ।

काष्टकदलीगुणा ।

काष्टस्यकदलीग्राहीहृद्यारुच्याचशीतला। अग्निमांद्यकरी गुर्व्वीदुर्जराचातिमाधुरी॥तृड्दाहमूत्रकृच्छ्राणांरक्तपित्तस्य नाशिनी । विस्फोटंचास्थिरोगचनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥

अर्थ–काष्टकदली (काठकेला)–ग्राही, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, शीतल, मन्दाग्निकारक, भारी, कठिनतासे पचनेवाला, अत्यन्त मधुर तथा तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ, रक्तपित्त, विस्फोट और अस्थिरोगका नाश करे है ।

सुवर्णकदलीगुणा ।

सुवर्णकदलीशीतामधुराचाग्निदीपनी ।
वल्यावृष्याचगुर्वीचतृड्दाहकफनाशिनी ॥ (नि०र०)

अर्थ–सोनकेला–शीतल, मधुर, अग्निप्रदीपक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी तथा तृषा, दाह और कफका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

तदेवचम्पकाख्यंतुवातपित्तहरंगुरु ।
वृष्यश्चैवातिशीतश्चमधुररसपाकयो ॥ (रा०व०)

अर्थ–चम्पककेला, वातपित्तनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक, अत्यन्त शीतल, मधुर और पचनेमभी मधुर है ।

अन्यच्च ।

सुवर्णमोचाकफवातहारिणीविष्टम्भिनीदीपनकारिणीच ।
सुदुर्जरादाहविघातिनीचरक्तश्चपित्तंशमयेतनिश्चितम् ।

अर्थ–चम्पकेला–पीलाकेला–कफवातनाशक, विष्टम्भकारक, अग्निप्रदीपक, दुर्जर, दाहनाशक और रक्तपित्तको शान्तिकरे है ।

महेन्द्रकदलीगुणा ।

महेन्द्रकदलीचोष्णावातस्यचविनाशिनी ।
प्रदरपित्तरोगचनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥

अर्थ–महेन्द्रकदली–गरम तथा वात प्रदर और पित्तरोगका नाश करे है ।

कृष्णकदलीफलगुणाः।

कृष्णातुकदलीरुच्यातुवरामधुरालघुः।
वायोर्धातोर्वृद्धिकरीमेहपित्ततृषाहरा ॥ (नि० र०)

अर्थ-कालाकेला-रुचिकारक, कसैला, मधुर, हलका, वातकारक, धातु-वर्द्धक तथा प्रमेह, पित्त और तृषाको दूर करे है।

माणिक्यमुक्तामृतचम्पकाद्याभेदाःकदल्याबहवो-
पिसन्ति। उक्तागुणास्तेपुचिरादवन्तिनिर्दोषता
स्याल्लघुताचतेषाम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-केलेकी माणिक्य, मुक्ता, अमृत और चम्पकादि अनेक जाति हैं, इन सबोंमें उपरोक्तही गुण हैं किन्तु निर्दोष और हलकापन अधिक होता है

विवरण। केला सम्पूर्ण भारतवर्षमें और उधर खण्डके वा और पहाडोंमें अधिकतासे होता है, केलेकी अनेक जाति हैं, जैसे पहाडी केला-चम्पककेला, जंगली केला, बडा केला, काठ केला, इत्यादि, परन्तु गुणमें सब समान हैं, केलेका वृक्ष बहुत ऊंचा होता है, पत्ते दो चार गजतक लम्बे और आध आध गज चौडे होते हैं, यह वृक्ष खम्भके समान होता है और पत्तेमें पत्ते निकलते चले आते हैं, सिवाय पत्तोंके और कोई शाखा इसमें नहीं होती, केवल पत्तोंहीसे वेष्टित होता है, इसमें पाकसे भीतर गामाही निकलता है कुछ सार नहीं होता, उसके बीचमें एक घण्टा निकलता है उस घण्टेपर एक हजार फली आती है बीजमें सबसे ऊपर प्रमअग्रभागमें बडा लाल रंगका एक फूल गोस्तनाकार पुरसीसे पुष्प आता है फली कच्ची अवस्थामें हरी होती है उसको डालपर पकनेसे पीले रंगकी होजाती है पहाडमें मुनियोंके भोजनके लिये यह उत्तम पदार्थ है।

नारिकेलनामानि।



नारिकेलोद्दढफलोलाङ्गलीकूर्चशीर्पक· ।
जुङ्गःस्कन्धफलश्चैवतृणराज· सदाफल· ॥

अर्थ–नारिकेल, दृढफल, लाङ्गली, कूर्चशीर्पक, जुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल, (नारिकेर, नाडिकेलि, नारीकेली, नारीकारी, नारिकेरि, नारिकेलि, सदापुष्प, शिर·फल, मृदुफल, पुटोदक, गारिकेर, रसफल, सुतुङ्ग, कूर्चशेखर, दृढनीर, नीलतरु, मङ्गल्य, उच्चतरु, स्कन्धतरु, दाक्षिणात्य, दुरारुह, त्र्यम्बकफल, शिराफल, करकाम्भा, पयोधर, मुत्कुण, कौशिकफल, फलमुण्ड, जटाफल, मुण्डफल, विश्वामित्रप्रिय, नाडीकेल, नारकेर, सुभङ्ग, फलकेशर, वरफल, महाफल, सदाफल, तोयगर्भ, त्र्यक्षफल) ।

संस्कृतभाषामें	नारिकेल ।
हिन्दीभाषामें	नारियल, नरियल, खोपरा ।
वंगभाषामें	नारिकेल, नारकोल ।
मराठीभाषामें	श्रीफल, नारळ ।
गुजरातीभाषामें	नालीयर ।
कर्णाटकीभाषामें	तेंगिनकायि ।
तैलंगीभाषामें	टेंकाया, नारिकदम ।
तामिलीभाषामें	टेन्ना, तेङ्गायि ।
औत्कलीभाषामें	नडिया ।
इंग्रेजीभाषामें	कोकोनट पाम । Coconut palm
लैटिन्भाषामें	कोकोसन्युसिफेरा । Coccsnusifera
फारसीभाषामें	जोजहिन्दी नारीगल ।
अरबीभाषामें	नारजिल् ।

नारिकेलसाधारणगुणा ।

नारीकेलसुमधुरगुरुस्निग्धञ्चशीतलम् ।
हृद्यसबृंहणवस्तिशोधनरक्तपित्तनुत ॥ (आ० स०)

अर्थ–साधारण नारियल–मधुर, भारी, स्निग्ध, शीतल, हृदयको हितकारी, पुष्टिकारक, वस्तिशोधक और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

नारिकेलगुरुस्निग्धशीतवृष्यचदुर्जरम् । वस्तिशुद्धिकरबल्यबृंहणकफकारकम् ॥ स्वादुविष्टम्भकृत्प्रोक्तशोपतृट्पि-

त्तनाशनम् । वातपित्तरक्तदोषंदाहश्चैवविनाशयेत ॥ क्षत-
क्षयनाशयतीत्येवमुक्तकृपालुभि । (नि० र०)

अर्थ-नारियल-साधारण, भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कठिनताने पचनेवाला, वस्तिशोधक, बलकारक, पुष्टिकारक, कफकारक, स्तम्भ, विष्टम्भकारक तथा शोष, तृषा, पित्त, वातपित्त, रुधिरदोष, दाह और क्षतक्षयका नाश करे है।

अपिच।

स्निग्धस्वादुरसविपाकमधुरंहृद्यजडंदुर्जरंपित्तघ्नक्रिमिवर्द्धनं
मदकरवातामयध्वंसनम् । आमश्लेष्मविपाककोपशमनव-
ह्नि·श्रमध्वसनकन्दर्पस्यबलंददातिनितरांतन्नारिकेलंफलम् ।

अर्थ-नारियल-साधारण, स्वादु रसयुक्त, पाकमें मधुर, हृदयको हित कारी, भारी, दुर्जर, पित्तनाशक, कृमिवर्द्धक, मदकारक, वातरोगनाशक, सारक, आम और कफके कोपको शान्ति करनेवाला, अग्निनाशक, श्रम नाशक और कामदेवके बलको बढानेवाला है।

कोमलनारिकेलगुणाः।

विशेषत कोमलनारिकेलंनिहन्तिपित्तज्वरपित्तदोषान् ।
तृट्छर्द्दिदाहामयमाशुहन्यात्सरक्तपित्तप्रभवाश्चरोगान् ॥
(रा० प०)

अर्थ-कोमल नारियल विशेषकरके पित्तज्वर, पित्तविकार, तृषा, वमन, दाह और रक्तपित्तसे उत्पन्नहुए रोगोंका शीघ्रही नाशकरे है।

पक्वनारिकेलगुणाः।

पक्वनारिकेलतुदाहकपित्तलंगुरु ॥
वृष्यमलस्तम्भकरकनिदंमधुरंमतम् ।
दीपनबलकृत्प्रोक्तवीर्य्यस्यचविवर्द्धनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पकनारियल-दाहकारक, पित्तकारक, भारी, वीर्यवर्द्धक मलरोधक, अग्निदीपक मधुर शीतल, बलवर्द्धक और वीर्यवर्द्धक है।

शुष्कनारिकेलगुणाः।

नारिकेलफलंशुष्कंदुर्जरंदाहदंगुरु ।

स्निग्धंमलस्तम्भकरवलवीर्य्यरुचिप्रदम् ॥

अर्थ–शुष्कनारियल अर्थात् सूखागोला–कठिनतासे पचनेवाला, दाहकारक, भारी, स्निग्ध, मलस्तम्भक, तथा वल, वीर्य्य और रुचिको उत्पन्न करनेवाला है ।

नारिकेलजलगुणा ।

स्निग्धस्वादुहिमहृद्यदीपनवस्तिशोधनम् ।
वृष्यपित्तपिपासाघ्ननारिकेलोदकगुरु ॥ (सु॰मु॰)

अर्थ–नारियलका जल वा दूध–स्निग्ध, स्वादिष्ठ, शीतल, हृदयको हितकारी, दीपन, वस्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, प्यास्नाशक और भारी है ।

– अ यच्च ।

दुग्धतुनारिकेलस्यवल्यरुच्यगुरुस्मृतम् ।
पाकेस्वादुसमुद्दिष्टस्निग्धवृष्यश्चदाहकम् ॥
किञ्चिदुष्णवातकफगुल्मकासविनाशकम् । (नि॰र॰)

अर्थ–नारियलका दूध–वलकारक, रुचिदायक, भारी, पचनेमें स्वादिष्ठ, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, दाहकारक, किञ्चित् गरम तथा वात, कफ, गुल्म और खाँसीको दूर करे है ।

अपिच ।

नारिकेलाम्बुतरुणतृष्णाघ्नपित्तनाशनम् । वालस्यनारिकेलस्यजलंप्रायोविरेचनम् ॥शीतंवमथुमूर्च्छाघ्नपित्तज्वरविनाशनम।नारिकेलोदकजीर्णविष्टम्भिगुरुशीतलम॥(रा॰व॰)

अर्थ–तरुण-नारियलका जल–तृष्णा और पित्तनाशक है। वाल नारिकेल अर्थात्–कचे नारियलका जल–विरेचक, शीतल तथा वमन, मूर्च्छा और पित्तज्वरको दूर करे है । पक्केनारियलका जल-विष्टम्भकारक, भारी और शीतल है ।

नारिकेलपुष्पगुणा ।

नारिकेलस्यपुष्पन्तुशीतरक्तातिसारहृत ॥
रक्तपित्तप्रमेहश्चसोमरोगश्चनाशयेत ।
मलस्तम्भकरचापिप्रोक्तपूर्वमनीषिभि (नि॰ र॰)

त्तनाशनम । वातपित्तंरक्तदोषंदाहञ्चैवविनाशयेत ॥ क्षतक्षयनाशयतीत्येवमुक्तंकपालिभिः । (नि० र०)

अर्थ-नारियल-साधारण, भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कठिनतासे पचनेवाला, वस्तिशोधक, बलकारक, पुष्टिकारक, कफकारक, स्वादिष्ट, विष्टम्भकारक तथा शोष, तृषा, पित्त, वातपित्त, रुधिरदोष, दाह और क्षतक्षयका नाश करे है ।

अपिच ।

स्निग्धम्स्वादुरसविपाकमधुरंहृद्यंजडंदुर्जरंपित्तघ्नंकृमिवर्द्धनं मदकरंवातामयध्वंसनम् । आमश्लेष्मविपाककोपशमनंवह्नेःश्रमध्वंसनंकन्दर्पस्यबलंददातिनितरांतन्नारिकेलफलम् ।

अर्थ-नारियल-साधारण, स्वादु रसयुक्त, पाकमें मधुर, हृदयको हितकारी, भारी, दुर्जर, पित्तनाशक, कृमिवर्द्धक, मदकारक, वातरोगनाशक, ... गारक, आम और कफके कोपको शान्ति करनेवाला, अग्निनाशक, आमनाशक और कामदेवके बलको बढानेवाला है ।

कोमलनारिकेलगुणाः ।

विशेषतः कोमलनारिकेलंनिहन्तिपित्तज्वरपित्तदोषान् ।
तृट्छर्दिदाहामयमाशुहन्यात्सरक्तपित्तप्रभवांश्चरोगान् ॥
(रा० नि०)

अर्थ-कोमल नारियल विशेषकरके पित्तज्वर, पित्तविकार, तृषा वमन, दाह और रक्तपित्तसे उत्पन्नहुए रोगोंको शीघ्रही नाशकरे है ।

पक्वनारिकेलगुणाः ।

पक्वंचनारिकेलंतुदाहकृत्पित्तलंगुरु ॥
वृष्यमलस्तम्भकरंरुचिदंमधुरंमतम् ।
दीपनंबलकृत्प्रोक्तंवीर्यस्यचविवर्द्धनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पकानारियल-दाहकारक, पित्तकारक, भारी, वीर्यवर्द्धक, मलस्तम्भक, रुचिदायक, मधुर, दीपन, बलवर्द्धक और वीर्यवर्द्धक है ।

शुष्कनारिकेलगुणाः ।

नारिकेलफलंशुष्कंदुर्जरंदाहकृद्गुरु ।

स्निग्धमलस्तम्भकरबलवीर्य्यरुचिप्रदम् ॥

अर्थ-शुष्कनारियल अर्थात् सूखागोला-कठिनतासे पचनेवाला, दाहकारक, भारी, स्निग्ध, मलस्तम्भक, तथा बल, वीर्य्य और रुचिको उत्पन्नकरनेवाला है।

नारिकेलजलगुणाः।

स्निग्धस्वादुहिमहृद्यंदीपनवस्तिशोधनम्।
वृष्यपित्तपिपासाघ्ननारिकेलोदकगुरु ॥ (सु०सु०)

अर्थ-नारियलका जल वा दूध-स्निग्ध, स्वादिष्ठ, शीतल, हृदयको हितकारी, दीपन, वस्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, प्यासनाशक और भारी है।

अन्यच्च।

दुग्धतुनारिकेलस्यबल्यरुच्यगुरुस्मृतम्।
पाकेस्वादुसमुद्दिष्टंस्निग्धवृष्यञ्चदाहकम् ॥
किञ्चिदुष्णवातकफगुल्मकासविनाशकम्। (नि०र०)

अर्थ-नारियलका दूध-बलकारक, रुचिदायक, भारी, पचनेमे स्वादिष्ठ, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, दाहकारक, किञ्चित् गरम तथा वात, कफ, गुल्म और खाँसीको दूर करे है।

अपिच।

नारिकेलाम्बुतरुणतृष्णाघ्नंपित्तनाशनम्। बालस्यनारिकेलस्यजलंप्रायोविरेचनम् ॥शीतंवमथुमूर्च्छाघ्नपित्तज्वरविनाशनम्।नारिकेलोदकजीर्णंविष्टम्भिगुरुशीतलम्॥(रा०व०)

अर्थ-तरुण-नारियलका जल-तृष्णा और पित्तनाशक है। बाल नारिकेल अर्थात्-कच्चे नारियलका जल-विरेचक, शीतल तथा वमन, मूर्च्छा और पित्तज्वरको दूर करे है। पकेनारियलका जल-विष्टम्भकारक, भारी और शीतल है।

नारिकेलपुष्पगुणाः।

नारिकेलस्यपुष्पन्तुशीतरक्तातिसारहृत ॥
रक्तपित्तप्रमेहञ्चसोमरोगञ्चनाशयेत।
मलस्तम्भकरंचापिप्रोक्तपूर्वमनीषिभिः (नि० र०)

अर्थ-नारियलका फूल-शीतल तथा रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और सोमको दूर करै है और मलस्तम्भक है ।

नारिकेलपुष्पजलगुणाः ।

नारिकेलपुष्पजलंगुरुवृष्यंप्रकीर्तितम् ॥
तत्कालमदकृत्प्रोक्तञ्चातिस्निग्धमुदीरितम् ।
तच्चेदम्लंकफकरंपित्तलंकृमिवातनुत् (नि० र०)

अर्थ-नारियलके फलका जल-भारी, वीर्यवर्द्धक, तत्काल मदकारक, अत्यन्त स्निग्ध, अम्ल, कफकारक, पित्तजनक, कृमि और वातनाशक है ।

नारिकेलतरुतोयगुणाः ।

नारिकेलतरुतोयमतीवस्निग्धमाशुमदकृद्गुरुवृष्यम् ।
साम्लभावमुपयात्यपराह्णेश्लेष्मपित्तजनकंकृमिघ्नम् ॥

अर्थ-नारियलके पेडका जल-अत्यन्त स्निग्ध, तत्काल, मदकारक, भारी और वीर्यवर्द्धक है । और वही जल दोपहरके पीछे अम्लभावयुक्त होकर कफकारक, पित्तजनक और कृमिनाशक होजाता है ।

नारिकेलफलतैलगुणाः ।

नारिकेलफलोद्भूतंतैलंवाजीकरंगुरु। पोषणंक्षीणधातूनांवा-
तपित्तप्रणाशनम् ॥ मूत्राघातेप्रमेहेचश्वासेकासेचयक्ष्मणि।
मेधालोपेचहितदंक्षतानांभरणंतथा ॥

अर्थ-नारियलका तेल-वाजीकर, भारी, क्षीणधातुवाले मनुष्योंको पुष्टिकारक, वातपित्तनाशक तथा मूत्राघात, प्रमेह, श्वास, खांसी, राजयक्ष्मा और मेधाके लोपमें हितकारी है तथा क्षतरोगको हरनेवाला है ।

मधुनारिकेलगुणाः ।

मोहजातीयकनामनारिकेलंचशीतलम् ।
मधुरंपुष्टिकृद्बल्यंरुच्यंचाग्निप्रदीपकम् ॥
कान्तिजनकरंस्निग्धंकफस्यामन्यकोपनम् ।
कामवृद्धिकरंदेहस्थैर्य्यकृद्दाहनाशनम् ।
तृषांपित्तश्रमवानमतिसाग्निनाशयेत् ।

अर्थ-मधुनारियल-शीतल, मधुर, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, रुचिकारक,

अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक, कृमिकारक, स्निग्ध, कफको कुपित करनेवाला, आमकारक, कामवर्द्धक, देहको स्थिर करनेवाला, दाहनाशक, तृषा, पित्त, श्रम, वात और अतिसारको दूर करनेवाला है ।

विवरण । नारियलका वहुत वडा वृक्ष होता है आकार खजूर और ताडके समान होता है, यह वृक्ष पूर्वकी ओर कलकत्ता, जगन्नाथ तथा वम्बईमें वहुत हैं, विशेष करके नदी अथवा समुद्रके निकट अधिक उत्पन्न होते हैं, इनमें शाखा नहीं होती, इनके ऊपरके भागम खजूरकेसे पत्ते होते हैं, उनहीं पत्तोंके वीचमें नारियल लगते हैं, उन नारियलको फोडकर जो रस निकलताहै उसको नारियलका दूध कहते हैं, जव वे नारियल सूख जाते हैं, तव उनकी भीतरकी मींगको गोला अथवा खोपडा कहते हैं, यह फल मगलादि कार्योंमें वहुत लिये जाते हैं ।

ग्राम्यखर्जूरीनामानि ।

भूमिखर्जूरिकास्वाद्वीदुरारोहामृदुच्छदा ।
तथास्कन्धफलाकाककर्कटीस्वादुमस्तका ॥

अर्थ–भूमिखर्जूरिका–स्वादिष्ठ, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कन्धफला, काककर्कटी, स्वादुमस्तका (खर्जु, खर्जू, खर्जूरी, खरस्कन्धा, दुष्प्रधर्षा, दुरारुहा, कपायी, नि श्रेणी, यवनेष्टा, हरिप्रिया)

पिण्डखर्जूरिकानामानि ।

पिण्डखर्जूरिकात्वन्यासादेशेपश्चिमेभवेत ।

अर्थ–पिण्डखर्जूरिका (पिण्डखर्जूरी, राजजम्बु, पिण्डीफल, मुद्रिका, दीप्या, सपिण्डा, मधुरस्रवा, फलपुष्पा, स्वादुपिण्डा, हयभक्षा) यह पश्चिमदेशम प्रसिद्ध है ।

छोहारानामानि ।



खर्जूरीगोस्तनाकारापरद्वीपादिहागता।
जायतेपश्चिमेदेशेसाछोहारेतिकीर्त्यते॥

अर्थ-छुहारा गोस्तनाकारखर्जूरी यह दो नाम छुहारेके हैं, छुहारा गौके थनोंकी समान आकारवाला होता है और दूसरे द्वीपसे आया है।

संस्कृतभाषामें	खर्जूरी, पिण्डखर्जूरी, छोहारा।
हिन्दीभाषामें	खजूर, पिंडखजूर, छुहारा।
बंगभाषामें	खेजुर, पिण्डखेजुर, छोहारा।
मराठीभाषामें	शिंदी, खजूरी।
गुजरातीभाषामें	खजूरी, खजूर, खारक।
कर्णाटकीभाषामें	इचिलु, सिद्दइचिलु, करांइचिलु।
तैलिंगीभाषामें	ईतचेट्टु, खर्जुरपुचेट्टु।
इंग्रेजीभाषामें	डेट पाम। Date plam
लेटिनभाषामें	फिनिक्स मोंटेना। Phoenix montana
	फिनिक्स डेक्टिलिफेरा। P. Dactylifera
	फिनिक्स० सिल्वेस्ट्रिस। P. Sylvestris
फारसीभाषामें	तमरुवश।
अरबीभाषामें	तमांतर, तमांरखुश्क।

विविधखर्जूरीगुणाः।

खर्जूरीत्रितयंशीतंमधुरंरसपाकयोः। स्निग्धंरुचिकरंहृद्यंक्षतक्षयहरंगुरु॥ तर्पणंरक्तपित्तघ्नंपुष्टिविष्टम्भशुक्रदम्। कोष्ठमारुतहृद्बल्यंवान्तिवातकफापहम्॥ ज्वराभिघातक्षुत्तृष्णाकासश्वासनिवारकम्। मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूतगदान्तकृत्॥ महतीभ्यांगुणैरल्पास्वल्पखर्जूरिकामता। तस्मादल्पगुणंज्ञेयमन्यत्खर्जूरिकाफलम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तीनोंप्रकारकी खजूर-शीतल, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक हृदयको हितकारी, भारी, तृप्तिकारी, पुष्टिकारक, विष्टम्भकारक, शुक्रवर्द्धक बलवर्द्धक तथा क्षत क्षय, रक्तपित्त, कोष्ठरोग, वातज्वर, अभिघात, वमन, दाह, क्षुधा, तृषा, खांसी, श्वास, मद, मूर्छा, वातपित्त और मद्यपानजनितरोगोंको दूर करनेवाली है। ऐसी बड़ी खजूरके होंगे। खजूरके गुण अल्प हैं और खजूरी छोटी खजूरकी अपेक्षा हीनगुणवाली है।

अन्यच्च ।

अपक्कखर्ज्जूरफलंत्रिदोषाणांप्रकोपनम् ।
पक्कमेवहितश्रेष्ठत्रिदोषशमनपरम् ॥ (आ० स०)

अर्थ-कच्चीखजूर-त्रिदोषको प्रकुपित करनेवाली । पक्की खजूर-हितकारी, उत्तम और त्रिदोषको शान्ति करनेवाली है ।

खर्जूरीताडीगुणा ।

खर्ज्जूरीतरुजतोयमदपित्तकरभवेत् ।
वातश्लेष्महरंरुच्यंदीपनबलशुक्रकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-खजूरकी ताडी-मदकारक, पित्तकारक, वातनाशक, कफनाशक, रुचिकारक, दीपन, बलकारक और शुक्रवर्द्धक है ।

खर्जूरादिमस्तकगुणा ।

खर्ज्जूरिकादितालानांनारिकेलस्यमस्तकम् ।
स्वादुपाकरसप्रोक्तंरक्तपित्तहरंतथा ॥

अर्थ-खजूर, ताड और नारियलवृक्षका मस्तक-स्वादिष्ठ, पचनेमें भी स्वादु और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

गुवाकतालखर्ज्जूरनारिकेलशिरासिच ।
स्वादुतिक्तकषायाणिमूत्रातङ्कहराणिच ॥
बलप्राणकराण्याहु शुक्रवृद्धिकराणिच । (रा० ज०)

अर्थ-सुपारी, ताड, खजूर और नारियलवृक्षका मस्तक-स्वादु, कडवा, कषेला, मूत्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, प्राणवर्द्धक और शुक्रवर्द्धक है ।

पिण्डखर्जूरीगुणा ।

दाहघ्नीमधुरास्रपित्तशमनीतृष्णार्त्तिदोषापहाशीतश्वासकफश्रमोदयहरासन्तर्पणीपुष्टिदा ॥ वह्नेर्मांद्यकरीगुरुर्विषहराहृद्याचधत्तेबल स्निग्धावीर्य्यविवर्द्धिनीचकथितापिण्डाख्यखर्ज्जूरिका ॥

अर्थ-पिण्डखजूर, दाहनाशक, मधुर, रक्तपित्तनिवारक, तृषानाशक, शीतल, श्वासनाशक, कफघ्न, श्रमहारक, तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, मदाग्निकारक, भारी, विषहारी, बलवर्द्धक, स्निग्ध और वीर्य्यवर्द्धक है ।

सुलेमानीखर्जूरनामानि।

सुलेमानीतुमृदुलादलहीनफलाचसा।

अर्थ-सुलेमानी, मृदुला, दलहीनफला यह नाम सुलेमानी खजूरके हैं।

अस्या गुणाः।

सुलेमानीश्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तहृत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-सुलेमानीखजूर-श्रम, भ्रान्ति, दाह, मूर्च्छा और रक्तपित्तनाशक है।

विवरण। खजूर-पिण्डखजूर और छुहारेके वृक्ष नीचे लम्बे २ चले आते हैं, उनमें पत्ते लम्बे और शाखायें लम्बी होती हैं, वृक्षपर छापरेकी सी गरीरेके समान पदार्थ जमा रहता है, ऊपर शाखाओंमें फल लगते हैं यह खानेमें उत्तम नहीं होते हैं, पकनेसे होते हैं इसलिये उनको धनाढ्य लोग नहीं खाते, दीनलोग खाते हैं दूसरी पिण्डखजूर होती है उसके फल तोड़कर बोरियामें भर देते हैं, तीसरा छुहारा होता है यह तीनों खजूरके समान आकारवाले होते हैं।

बादामनामानि।



वातादोवातवैरीस्यान्नेत्रोपमफलन्तथा।

अर्थ-वाताद, वातवैरी, नेत्रोपमफल, (मुकम, बादाम, बाताम, बादामी)

संस्कृतभाषामें	वाताद।
हिंदीभाषामें	बदाम मीठे, बदाम कडवे।
बंगभाषामें	बादाम।
मराठीभाषामें	गोड बदाम, कडू बदाम।
गुजरातीभाषामें	बदाम मीठा, बदाम कडवी।
अंग्रेजीभाषामें	ऐमंड।
लैटिनभाषामें	ऐमिग्डुस।

इग्रेजीभाषामें	स्वीट् अलमड।	Sweet almond
	वीटर् अलमड।	Bitter almond
लैटिन्भाषामें	एमिग्डेलस्ककम्युनी।	Amigdahalus Communis
	एमिग्डेलस् एमेर।	Amigdalus amarr
अरवीभाषामें	लोजलहलु, लोजलमुर।	
फारसीभाषामें	वदामशीरी, वदामतल्ख।	

वदामगुणाः।

वातादउष्ण सुस्निग्धोवातघ्नःशुक्रकृद्गुरुः।
वातादमज्जामधुरावृष्यापित्तानिलापहा।
स्निग्धोष्णाकफकृन्नेष्टारक्तपित्तविकारिणाम्॥ (भा प्र)

अर्थ–वदाम–गरम, स्निग्ध, वातनाशक, शुक्रवर्द्धक और भारी है। वदामकी मींग–मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, वातपित्तनाशक, स्निग्ध, गरम, कफकारक और रक्तपित्तरोगवालेको हितकारी नहीं है।

अपिच।

वादाम सारकश्चोष्णोगुरुरम्लः कफप्रदः। स्निग्धः स्वादुस्तुवरश्चशुक्रलोवातनाशनः॥ उष्णवीर्यंचामफलसारकगुरुपित्तलम्। कफपित्तकरश्चैववातनाशकमुत्तमम्॥ तत्पक्कमधुरंवृष्य सुस्निग्धपौष्टिकमतम्। शुक्रलकफकारीचरक्तपित्तव्यपोहति॥ शामकवातपित्तस्यपूर्ववैद्यैरुदीरितम्। शुष्कश्चतत्फलप्रोक्तमगुरधातुवर्द्धकम्॥ स्निग्धंवृष्यश्चवल्यश्चपौष्टिक कफकारिचावातपित्तस्यशमनप्रोक्तगुणविशारदैः॥(नि०र०)

अर्थ–वदाम–सारक, गरम, भारी, अम्ल, कफकारी, स्निग्ध, स्वादु, कपेला, शुक्रजनक, वातनाशक, उष्णवीर्य है। कच्चा वदाम–सारक, भारी, पित्तजनक तथा कफ, पित्तविकार और वातका नाश करे है। पका वदाम–मधुर, वृष्य, स्निग्ध, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, कफकारक तथा रक्तपित्त और वातपित्तका नाश करे है। सूखा वदाम–मधुर, धातुवर्द्धक, स्निग्ध, वृष्य, वलकारक, पुष्टिकारी, कफकारक और वातपित्तको दूर करे है।

वदामतैलगुणाः।

वातादतैलमृदुरेचनस्याद्वाजीकरमूर्द्धगदघ्नहन्यात्।

पित्तानिलमलघुदाहनाशिलावण्यदमेहकग्धशीतम् ॥
(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-बदामका तेल। मृदुरेची, वाजीकर, मस्तकरोगनाशक, पित्तनाशक, वातघ्न, हलका, दाहनाशक, लावण्यतादायक, प्रमेहनाशक और शीतल है।

विवरण। बदामके पेडे ? पुष्प, फाल्गुन और मास्र्याणम होते हैं। पत्ते लम्बे और गोल होते हैं, पुष्प मौसमे छोटा आता है। इसके फलि बदाम कहलाते हैं।

सवप्रनामानि।

मुष्टिप्रमाणबदरसेवसिञ्चितिकाफलम्।

अर्थ-मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव, सिञ्चितिकाफल, (सेतिं, सेवि)

संस्कृतभाषामें	महाबदर।
हिन्दीभाषामें	सेव।
बंगभाषामें	सेउ।
मराठीभाषामें	मोटें बोर।
गुजरातीभाषामें	सेव।
इंग्रेजीभाषामें	ॲपल्। Apple
लैटिनभाषामें	पाइरस मेलस। Pyrus malus
फारसीभाषामें	सेव।
अरबीभाषामें	तुफाह।

अस्य गुणाः।

सेवसमीरपित्तघ्नंबृंहणंकफकृद्गुरु।

रसेपाकेचमधुरंशिशिरंरुचिशुक्रकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सेव। वातपित्तनाशक, पुष्टिकारक, कफकारी, भारी, रस और पाकमें मधुर, शीतल, रुचि और शुक्रकारक है, सेव मार्गोंमें नहीं है, क्योंकि विलायत आरम्भकालके पीछे किसी ग्रन्थमें नहीं लेखाजाता।

अमृतफलगुणाः।

अमृताख्यफलंधातुवर्द्धकंमधुरंगुरु।

कफ्यंचाम्लवातदनत्रिदोषप्रशमनम् ॥

अर्थ-नासपाती-धातुवर्द्धक, मधुर, भारी, कफकारी, अम्ल वातनाशक और त्रिदोषको शांति करनेवाली है।



विवरण। सेव, बीह और नासपाती इन तीनोंकी एकही जातिहै, इनमें अन्तर थोडाही है, जैसे छुहारे, पिण्डखजूर, खजूरकी एकही जातिहै। सेवके वृक्ष काश्मीर और काबुलमें बहुत होतेहैं, परन्तु नासपाती हिन्दोस्थानमें भी बहुत होतीहैं, इनके वृक्ष अमरूदके वृक्षकी बराबर होतेहैं, पत्तेभी अमरूदके बराबर कुछ चौडे होतेहैं, काश्मीरका सेव बहुत मधुर होताहै, और काबुलका तुरश होता है, काश्मीरकी नासपातीभी बहुतही मधुर होती है, जिसे नाक कहतेहैं, बीहका मुरब्बा दस्तोंकी व्याधिमें काम आताहै और बलदायक होताहै।

पेरुवफल नामानि।



पेरुकदृढबीजञ्चमासलञ्चापृथक्त्वचम।
मृदुपीतवर्तुलञ्चतुवरमधुराम्लकम॥

अर्थ-पेरुक, दृढबीज, मासल, अपृथक्त्वच, मृदु, पीत, वर्तुल, तुवर, मधुराम्लक।

पित्तानिलघ्नंलघुदाहनाशिग्लानिप्रणुद्मेहकरंसुशीतम् ॥

(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-महासुरा सेव। मृदुरेची, दाहीपक, मस्तकरोगनाशक, पित्तनाशक, वातघ्न, हल्का, दाहनाशक, ग्लानिघटानेवाला, प्रमेहकारक और शीतल है।

विवरण। महासुरके पेड़ ? वृक्ष, काबुल और कश्मीरमें होते हैं। इसके लम्बे और गोल होते हैं, फूल सेवसे छोटा आता है। इसके फल महासुर कहलाते हैं।

अथ सेवनामानि।

मुष्टिप्रमाणंबदरंसेवंसिञ्चितिकाफलम्।

अर्थ-मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव, सिञ्चितिकाफल, (सेविज, सेवि)

संस्कृतभाषामें	महाबदर।
हिन्दीभाषामें	सेव।
बंगभाषामें	सेउ।
मराठीभाषामें	मोठें बोर।
गुजरातीभाषामें	सेव।
इंग्रेजीभाषामें	ऍपल्। Apple
लैटिनभाषामें	पाइरस् मेलस्। Pyrus malus
फारसीभाषामें	सेव।
अरबीभाषामें	तुफाह।

अथ गुणाः।

सेवंसमीरपित्तघ्नंबृंहणंकफकृद्गुरु।

रसेपाकेचमधुरंशिशिरंरुचिशुक्रकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सेव। वातपित्तनाशक, पुष्टिकारक, कफकारी, भारी, रस और पाकमें मधुर, शीतल, रुचि और शुक्रकारक है, सेव अग्नि नहीं है, क्योंकि विलायत भारतवर्षसे और किसी देशमें नहीं लेजाता।

अमृतफलगुणाः।

अमृतस्यफलंधातुवर्द्धनंमधुरंगुरु।

रुच्यंचाम्लंवातहरंत्रिदोषघ्नंचशीतलम् ॥

अर्थ-अमृतफल-धातुवर्द्धक, मधुर, भारी, रुचिकारी, अम्ल, वातनाशक और त्रिदोषको हरनेवाला है।



विवरण। सेव, वीह और नासपाती इन तीनोंकी एकही जातिहै, इनमें अन्तर थोडाही है, जैसे छुहारे, पिण्डखजूर, खजूरकी एकही जातिहै। सेवके वृक्ष काश्मीर और काबुलमें बहुत होतेहैं, परन्तु नासपाती हिन्दोस्थानमें भी बहुत होतीहैं, इनके वृक्ष अमरूदके वृक्षकी बराबर होतेहैं, पत्तेभी अमरूदके बराबर कुछ चौडे होतेहैं, काश्मीरका सेव बहुत मधुर होताहै, और काबुलका तुरश होता है, काश्मीरकी नासपातीभी बहुतही मधुर होती है, जिसे नाक कहतेहैं, वीहका मुरब्बा दस्तोंकी व्याधिमें काम आताहै और बलदायक होताहै।

पेरुकफलनामानि।



पेरुकदृढबीजन्त्रमांसलचापृथक्त्वचम्।
मृदुपीतवर्तुलश्चतुवरमधुराम्लकम्॥

अर्थ–पेरुक, दृढबीज, मांसल, अपृथक्त्वच, मृदु, पीत, वर्तुल, तुवर, मधुराम्लक।

संस्कृतभाषामें	पेरुक, अमृतफल ।
हिन्दीभाषामें	सफेद अमरूद, लालअमरूद, बिही, अमरूद ।
मराठीभाषामें	पांढरे पेरू, तांबडे, (गुलाबी) पेरू ।
गुजरातीभाषामें	जामफल, पेरू ।
तैलङ्गीभाषामें	जामिपंडु ।
इंग्रेजीभाषामें	व्हाइट ग्वावा रेड ग्वावा । Guava white Guava red
लैटिनभाषामें	सिडियम पोमिफेरम पाइरस कॉम्युनीस । Psidium Pomiferum Pyrus Communis
फारसीभाषामें	अमरूद ।
अरबीभाषामें	कमस्री ।

अस्य गुणाः ।

पेरुकं तुवरं प्रोक्तं स्वाद्वम्लं कफकारकम् ।
शुक्रलं वातपित्तघ्नं शीतलं च समीरितम् ॥

अर्थ-अमरूद-कसैला, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

ततोऽमृतफलं स्वादु तुवरं चातिशीतलम् ।
तीक्ष्णं गुरु कफकरं वातदं मादनाशनम् ॥
वृष्यं रुचिं शुक्रकरं त्रिदोषघ्नं प्रकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-अमरूद-स्वादु, कसैला, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, उन्मादनाशक, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, शुक्रजनक और त्रिदोष नाशक है ।

विवरण । अमरूदके वृक्ष बागोंमें अधिकतासे होते हैं, इसे [illegible] पुष्ट करके होते हैं, फल वर्षा और शिशिर ऋतुमें आते हैं, फल मीठा [illegible] और थोड़े खटाई भी होता है ।

नारङ्गनामगुणाः ।

नारंगो नागरंगः स्यात्त्वक्सुगन्धो मुखप्रियः ॥

अर्थ-नारंग, नागरंग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय ([illegible], नागर, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible])


नारंगी.

संस्कृतभाषामें	नागरंग, नारंग।
हिन्दीभाषामें	नारंगी।
बंगभाषामें	नारंगालेबु।
मराठीभाषामें	नारिंग।
गुजरातीभाषामें	नारंगीलिंबु।
कर्णाटकीभाषामें	माधवला।
तैलङ्गीभाषामें	दयाकाया, गजनिम्म, नारजिचेट्टु।
तामिलीभाषामें	किचिलि।
औत्कलीभाषामें	नारिंगी।
इंग्रेजीभाषामें	ऑरंज। Orange
लेटिन्भाषामें	साईट्रस ऑरेंटियम्। Citrus aurantium
फारसीभाषामें	नारंज।
अरबीभाषामें	नारंज।

अस्यफलगुणाः।

नागरङ्गन्तुसुरभिविपाकेदुर्ज्जरंगुरु।
नात्यम्लमीषन्मधुरवृष्यवातविनाशनम्॥

अर्थ-नारंगी-सुगन्धि, अतिकठिनतासे पचनेवाली, भारी, किञ्चित अम्ल, किञ्चित, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और वातविनाशक है।

अन्यच्च।

नारंगकफपित्तामकारकंदुर्ज्जरंसरम्। अत्यम्लवातहरकचा-

संस्कृतभाषामें	पेरुक, अमृतफल ।
हिन्दीभाषामें	सपेद सफरी, लालसफरी, वीइ, अमरूद ।
मराठीभाषामें	पाढरे पेरू, तानडे, (गुलावी) पेरू ।
गुजरातीभाषामें	जामफल, पेर ।
तैलिङ्गीभाषामें	झामिपडु ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्वावावैट ग्वावारेड् । Guava white Guava red
लैटिन्भाषामें	सिडियं पोमिफर पाईरस कोम्युनीस् । Psidium Pomiferum Pyrus Communis
फारसीभाषामें	अमरुत ।
अरवीभाषामें	कमशरी ।

अस्य गुणाः ।

पेरुकंतुवरप्रोक्तस्वाद्वम्लंकफकारकम् ।
शुक्रलंवातपित्तघ्नशीतलंचरसंमतम् ॥

अर्थ-सफरी-कषेली, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

ततोमृतफलंस्वादुतुवरचातिशीतलम् ।
तीक्ष्णंगुरुकफकरंवातदंमादनाशकम् ॥
वृष्यरुचिशुक्रकरंत्रिदोषघ्नप्रकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सफरी-स्वादु, कषेली, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, उन्मादनाशक, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, शुक्रजनक और त्रिदोष नाशक है ।

विवरण । सफरीके वृक्ष वागोंमें अधिकतासे होवे हैं, पत्ते आमके पत्तोंसे कुछेक छोटे होवे हैं, फल वर्षा और शिशिर ऋतुमें आतेहैं, फल भीतरसे सफेद और कोई लालभी होता है ।

नागरङ्गनामानि ।

नारंगोनागरंगःस्यात्त्वक्सुगन्धोमुखप्रियः ॥

अर्थ-नारंग, नागरंग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय (नार्य्यङ्ग, नागर, ऐरावत, नागरुक, चक्राधिवासी, किर्मिर, किर्मीरत्वक्, मुखप्रिय, सुरंग, त्वग्गन्ध, इरावत, वक्रवास, योगरंग, गन्धाढ्य, गन्धपत्र, वर्णिष्ठ)



संस्कृतभाषामें	नागरंग, नारंग ।
हिन्दीभाषामें	नारंगी ।
बंगभाषामें	नारंगालेबु ।
मराठीभाषामें	नारिंग ।
गुजरातीभाषामें	नारंगीलिंबु ।
कर्णाटकीभाषामें	माधवला ।
तैलङ्गीभाषामें	दयाकाया, गजनिम्म, नारजिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	किचिलि ।
औत्कलीभाषामें	नारिंगी ।
इंग्रेजीभाषामें	ऑरंज । Orange
लैटिन्भाषामें	साईट्रस् ऑरेंटियम् । Citrus aurantium
फारसीभाषामें	नारंज ।
अरबीभाषामें	नारंज ।

अस्यफलगुणाः ।

नागरङ्गन्तुसुरभिविपाकेदुर्जरंगुरु ।
नात्यम्लमीषन्मधुरंवृष्यंवातविनाशनम् ॥

अर्थ-नारंगी-सुगन्धि, अतिकठिनतासे पचनेवाली, भारी, किञ्चित अम्ल, किञ्चित, मधुर, वीर्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

नारंगकफपित्तामकारकदुर्जरंसरम् । अत्यम्लवातहरकंचा-

संस्कृतभाषामें	पेरुक, अमृतफल ।
हिन्दीभाषामें	सपेद सफरी, लालसफरी, बीह, अमरूद ।
मराठीभाषामें	पांढरे पेरू, तांबडे, (गुलाबी) पेरू ।
गुजरातीभाषामें	जामफल, पेर ।
तैलिङ्गीभाषामें	झामिपड्डु ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्वावाव्हैट ग्वावारेड् । Guava white Guava red
लैटिन्भाषामें	सिडिय पोमिफर पाईरस कोम्युनीस् । Psidium Pomiferum Pyrus Communis
फारसीभाषामें	अमरुत ।
अरबीभाषामें	कमश्शरी ।

अस्य गुणाः ।

पेरुकंतुवरप्रोक्तस्वाद्वम्लकफकारकम् ।
शुक्रलंवातपित्तघ्नशीतलंचरसंमतम् ॥

अर्थ-सफरी-कषैली, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

ततोमृतफलस्वादुतुवरंचातिशीतलम् ।
तीक्ष्णंगुरुकफकरंवातदंमादनाशकम् ॥
वृष्यरुचिशुक्रकरंत्रिदोषघ्नप्रकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सफरी-स्वादु, कषैली, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, उन्मादनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । सफरीके वृक्ष नागोंमें अधिकतासे होते हैं, पत्ते आमके पत्तोंसे कुछेक छोटे होते हैं, फल वर्षा और शिशिर ऋतुमें आतेहैं, फल भीतरमें सफेद और कोई लालभी होता है ।

नागरङ्गनामानि ।

नारंगोनागरंगःस्यात्त्वक्सुगन्धोमुखप्रियः ॥

अर्थ-नारंग, नागरंग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय (नार्य्यङ्ग, नागर, ऐरावत, नागरुक, चक्राधिवासी, किर्मिर, किर्मीरत्वक्, मुखप्रिय, सुरंग, त्वग्गन्ध, इरावत, वक्त्रवास, योगरंग, गन्धाढ्य, गन्धपत्र, वरिष्ठ)



संस्कृतभाषामें	नागरंग, नारंग ।
हिन्दीभाषामें	नारंगी ।
बंगभाषामें	नारंगालेबु ।
मराठीभाषामें	नारिंग ।
गुजरातीभाषामें	नारंगीलिंबु ।
कर्णाटकीभाषामें	माधवला ।
तैलङ्गीभाषामें	दयाकाया, गजानिम्म, नारजिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	किचिलि ।
औत्कलीभाषामें	नारिंगी ।
इंग्रेजीभाषामें	ऑरंज । Orange
लैटिन्भाषामें	साइट्स ऑरेंटियम् । Citrus aurantium
फारसीभाषामें	नारंज ।
अरबीभाषामें	नारंज ।

अस्यफलगुणाः ।

नागरङ्गन्तुसुरभिविपाकेदुर्ज्जर[illegible] ।
नात्यम्लमीषन्मधुरवृष्यवा[illegible]म् ॥

अर्थ–नारंगी–सुगन्धि, अतिकठि[illegible] पचनेवाली, भारी, किञ्चित अम्ल, किञ्चित, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

नारंगकफपित्तामकारकदुर्ज्जरसरम् । अत्यम्लवातहरकचा-

संस्कृतभाषामें	पेरुक, अमृतफल ।
हिन्दीभाषामें	सपेद सफरी, लालसफरी, बीह, अमरूद ।
मराठीभाषामें	पाढरे पेरू, तानडे, (गुलाबी) पेरू ।
गुजरातीभाषामें	जामफल, पेर ।
तैलिङ्गीभाषामें	झामिपडु ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्वावावैट ग्वावारेड् । Guava white Guava red
लैटिनभाषामें	सिडिय पोमिफर पाईरस कोम्बुनीस् । Psidium Pomiferum Pyrus Communis
फारसीभाषामें	अमरुत ।
अरबीभाषामें	कमशरी ।

अस्य गुणा ।

पेरुकतुवरप्रोक्तंस्वाद्वम्लंकफकारकम् ।
शुक्रलवातपित्तघ्नशीतलंचरसमतम् ॥

अर्थ-सफरी-कपेली, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

ततोमृतफलस्वादुतुवरंचातिशीतलम् ।
तीक्ष्णगुरुकफकरंवातदंमादनाशकम् ॥
वृष्यरुचिशुक्रकरत्रिदोषघ्नप्रकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सफरी-स्वादु, कपेली, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, उन्मादनाशक, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । सफरीके वृक्ष बागोंमें अधिकतासे होते हैं, पत्ते आमके पत्तोंसे कुछेक छोटे होते हैं, फल वर्षा और शिशिर ऋतुमें आतेहै, फल भीतरसे सफेद और कोई लालभी होता है ।

नागरङ्गनामानि ।

नारंगोनागरंग:स्यात्त्वक्सुगन्धोमुखप्रिय ॥

अर्थ-नारंग, नागरंग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय (नार्य्यङ्ग, नागर, योगवत, नागरुक, चक्राधिवासी, किर्मिर, किर्मारत्वक्, मुखप्रिय, सुरंग, त्वग्गन्ध, इरावत, यम्रवास, योगरंग, गन्धाढ्य, गन्धपत्र, वरिष्ठ)

गुजरातीभाषामें वीजोरुलिंबु ।
इंग्रेजीभाषामें साईट्रस । Citrus
लैटिन्‌भाषामें साईट्रस् एसीडा । Citrus acida
साईट्रस् मेडिका । Citrus Madica
फारसीभाषामें तुरज ।
अरबीभाषामें उतरज ।

अस्य फलगुणा ।

बीजपूरफलस्वादुरसेऽम्लदीपनलघु ।
रक्तपित्तहरंकण्ठजिह्वाहृदयशोधकम् ॥
श्वासकासारुचिहरंहृद्यंतृष्णाहरंस्मृतम् । (भा० प्र०)

अर्थ–विजोरानींबू–स्वादिष्ट, खट्टा, दीपन, हलका, रक्तपित्तनाशक, कंठशोधक, जिह्वाशोधक, हृदयशुद्धिकारक तथा श्वास, खाँसी, अरुचि, तृषानाशक है और हृदयको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

मातुलुंगफलंचाम्लमुष्णकंठविशोधकम् । तीक्ष्णलघुप्रियं चाग्निदीपकरुचिकारकम् ॥ स्वादुश्चजिह्वाहृदयशोधकं पित्तवातनुत् । कफश्वासतृषाकासान्हिक्काश्चैवविनाशयेत् ॥ अरुचिंरक्तपित्तंचनाशयेदितिकीर्तितम् । तच्चबालमातुलुङ्गंपित्तवातकफप्रदम् ॥ रक्तरुक्कारकंचैतेमध्यमस्यापिते गुणाः । पक्कमहावर्णकरंहृद्यंबल्यञ्चपौष्टिकम् ॥ शूलाजीर्णविबन्धघ्नवातश्वासकफञ्जयेत् । अग्निमांद्यञ्चशोफञ्चकासारोचकनाशकम् ॥ फलत्वग्दुर्जरातिक्तातीक्ष्णोष्णास्निग्धकागुरु । कृमिवातकफान्हन्तित्वग्द्रव साधुशीतलः ॥ गुरुर्धातोर्वृद्धिकरः स्निग्धः कफकरः स्मृतः । वातपित्तहरः प्रोक्तःप्रोक्तोन्तर्भागकोमधु ॥ वातशूलकफच्छर्दिमगोचस्यचनाशकः । केसरदीपनमेध्यलघुग्राहिरुचिप्रदम् ॥ गुल्मोदरश्वासकासहिक्कावातमदात्ययान् । मदशोपविबन्धार्शो-

त्युष्णचमतंबुधे ॥ मधुरत्वामधुरंहृद्यमम्लवलप्रदम् । विशदगुरुरुच्यश्चसरंचोष्णसुगन्धिकम् ॥ स्वादुचामकृमीन्वातश्रमशूलश्चनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ–नारंगी (मधुर और अम्ल) दोनों प्रकारकी–कफ, पित्त और आमकारक है। कठिनतासे पचनेवाली, कुछेक दस्तावर, अत्यन्त अम्ल, वातनाशक, अत्यन्त उष्ण और मधुर है। खट्टी नारंगी–हृदयको, हितकारी, अम्ल, बलवर्द्धक, विशद, भारी, रुचिकारक, सारक, उष्ण, सुगंधि, स्वादु तथा आम, कृमि, वात, श्रम और शूलका नाश करेहै।

विवरण–नारंगीके वृक्ष मध्यमजातिके बागोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते नींबूके समान होतेहैं फूल अत्यन्त सुगन्धित, और सफेद रंगके आते हैं,फल गोल२ होतेहैं, कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर लाल सिंदूरिया रंगके होजातेहैं, बागेश्वरकी नारंगी सर्वत्र स्थानोंमें प्रसिद्ध है।

बीजपूरनामानि।



बीजपूरोमातुलुङ्गोरुचकःफलपूरकः ॥

अर्थ–बीजपूर, मातुलुंग, रुचक, फलपूरक (अम्लकेशर, बीजपूर्ण, पूर्णबीज, सुकेशर, बीजक, मातुलुङ्ग, सुपूर, बीजफलक, जन्तुघ्न, दन्तुरच्छद, पूरक, रोचनफल)

संस्कृतभाषामें	बीजपूर।
हिन्दीभाषामें	बिजौरा नींबु।
बंगभाषामें	टावालेबु।
मराठीभाषामें	महाळुंग।

गुजरातीभाषामें बीजोरुलिंबु ।
इंग्रेजीभाषामें साईट्रस् । Citrus
लैटिन्भाषामें साईट्रस् एसीडा । Citrus acida
साईट्रस मेडिका । Citrus Madica
फारसीभाषामें तुरज ।
अरबीभाषामें उतरज ।

अस्य फलगुणा ।

बीजपूरफलस्वादुरसेऽम्लदीपनंलघु ।
रक्तपित्तहरंकण्ठजिह्वाहृदयशोधकम् ॥
श्वासकासारुचिहरंहृद्यंतृष्णाहरस्मृतम् । (भा०प्र०)

अर्थ–विजोरानींबू–स्वादिष्ठ, खट्टा, दीपन, हलका, रक्तपित्तनाशक, कंठशोधक, जिह्वाशोधक, हृदयशुद्धिकारक तथा श्वास, खाँसी, अरुचि, तृषानाशक है और हृदयको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

मातुलुंगफलंचाम्लमुष्णंकंठविशोधकम् । तीक्ष्णलघुप्रियं चाग्निदीपकरुचिकारकम् ॥ स्वादुश्चजिह्वाहृदयशोधकं पित्तवातनुत् । कफश्वासतृषाकासान्हिक्काश्चैवविनाशयेत ॥ अरुचिंरक्तपित्तंचनाशयेदितिकीर्तितम् । तच्चबालमातुलुङ्गंपित्तवातकफप्रदम् ॥ रक्तरुक्कारकंचैतेमध्यमस्यापिते गुणा । पक्वमहावर्णकरंहृद्यंबल्यञ्चपौष्टिकम् ॥ शूलाजीर्णविबन्धघ्नंवातश्वासकफञ्जयेत् । अग्निमांद्यञ्चशोफञ्चकासारोचकनाशकम् ॥ फलत्वग्दुर्जरातिक्तातीक्ष्णोष्णास्निग्धकागुरु । कृमिवातकफान्हन्तित्वग्द्रवं साधुशीतलः ॥ गुरुर्धातोर्वृद्धिकरं स्निग्धं कफकरं स्मृतं । वातपित्तहरः प्रोक्तं प्रोक्तोन्तर्भागकोमधुः ॥ वातशूलकफच्छर्दिमरोचस्यचनाशकः । केसरंदीपनमेध्यंलघुग्राहिरुचिप्रदम् ॥ गुल्मोदरश्वासकासहिक्कावातमदात्ययान् । मदशोषविबन्धार्शो-

वांतीश्चनाशयत्यलम् । केसरस्यरस पार्श्वबस्तिशूलकफारुची । वातचश्वासकासंचछर्दिंश्चैवविनाशयेत् ॥ बीजंतु मातुलुगस्यगर्भदंदुर्जरंगुरु । उष्णतिक्तदीपनचबल्यमर्शोरुजापहम् ॥ वातपित्तशोफकफान्नाशयेदितिकीर्तितम् । फलमज्जागुरु·शीतास्वाद्वीस्निग्धाबलप्रदा ॥ वातपित्तेनाशयेच्चमूलमर्शकृमीहरम् । विषूचीमलबन्धश्चशूलचैवविनाशयेत् ॥ पुष्पन्तुमातुलुगस्यदीपनग्राहिशीतलम् । लघुवातंरक्तपित्तनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-विजोरा नींबू-खट्टा, गरम, कठशोधक, तीक्ष्ण, हलका, प्रिय, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, स्वादिष्ठ, तथा जिह्वा और हृदयको शुद्ध करनेवाला तथा पित्त, वात, कफ, श्वास, तृषा, खाँसी, हिचकी, अरुचि और रक्तपित्तको दूर करेहै । कोमल विजोरा-पित्त, वात, कफ और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करेहै । मध्यम-अवस्थाके विजोरेकेभी कोमल अर्थात् कच्चे विजोरेकी समान गुण है । पक्का विजोरा-देहको सुंदर करनेवाला, हृदयको हितकारी, बलकारक, पुष्टिजनक तथा शूल, अजीर्ण, विबन्ध, वात, श्वास, कफ, मदाग्नि, सूजन, खाँसी और अरुचिको हरनेवाला है । विजोरेका वक्कल-दुर्जर, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, स्निग्ध, भारी तथा वात और कफको दूर करे है । विजोरेके वक्कलका रस-स्वादु, शीतल, भारी, धातुवर्द्धक, स्निग्ध, कफकारक और वातपित्तनाशक है । विजोरेके वक्कलके अन्तरका भाग-मधुर तथा वात, शूल,कफ, वमन और अरुचिको दूरकरेहै । विजोरेकी केशर-दीपन, मेधाकारक, हलकी, मलरोधक, रुचिकारक तथा गुल्म, उदररोग, श्वास, खाँसी, हुचकी, वात, मदात्यय, उन्माद, शोष, विबन्ध, अर्श और वमनको दूर करनेवाली है । विजोरेकी केसरका रस-पार्श्व, वस्तिशूल, कफ, अरुचि, वात, श्वास, खाँसी और वमनका नाश करे है । विजोरेके बीज-गर्भदायक, अतिकठिनतासे पचनेवाले, भारी, गरम, दीपन, बलवर्द्धक तथा बवासीर, वात, पित्त, सूजन और कफका नाशकरेहै । विजोरेके बीजकी मींग-भारी, शीतल, स्वादु, स्निग्ध, बलवर्द्धक तथा वात और पित्तका नाश करे है । विजोरेके दूसरी जड-अर्शरोग, कृमि, विषूची, मलबध और शूलका

नाशकरेहै । विजोरेके फूल दीपन, मलरोधक, शीतल, हलके तथा वात और रक्तपित्तका नाश करे हैं ।

ऋतुपरत्वेनानुपानगुणा ।

सिन्धूत्थेनघनागमेचसितयाकालेशरत्सञ्ज्ञके हेमन्तेलवणार्द्रहिंगुमरिचे सिद्धार्थतैलान्विते· ॥ एतैस्तै' शिशिरेमधावपि युतैर्ग्रीष्मेगुडेनान्वितवैद्यैर्भूमिपमातुलुंगमुदितसर्वत्रसाधारणम्

अर्थ–विजोरेको–वर्षाऋतुमे सैन्धवलवणके साथ, शरदृऋतुमें मिश्रीके साथ, हेमन्तऋतुमे लवण, अदरख, हींग और मिर्चके साथ, शिशिरऋतुम और वसतऋतुमें सरसोंके तेलके साथ और ग्रीष्मऋतुमें गुडके साथ सेवन करना चाहिये ।

वनबीजपूरगुणा' ।

अम्ल'कटूष्णोवनबीजपूरोरुचिप्रदोवातविनाशनश्च ।
स्यादामदोपक्रिमिनाशकारीकफापह श्वासनिपूदनश्च(रा नि)

अर्थ–वनविजोरानींबु–खट्टा, चरपरा, गरम, रुचिदायक, वातविनाशक तथा आमदोप, कृमि, कफ और श्वासको दूरकरे है ।

मधुरमातुलुङ्गगुणा ।

मधुरमातुलुंगन्तुशीतरुचिकरंमधु । गुरुवृष्यदुर्ज्जरञ्चस्वादिष्टचत्रिदोपनुत् । पित्तदाहरक्तदोपान्विवन्धश्वासकासकान् ॥ क्षयंहिक्कांनाशयेच्चपूर्वैरेवमुदाहृतम् ।

अर्थ–मधुरमातुलुंग–शीतल, रुचिकारक, मधुर, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, दुर्जर, स्वादिष्ठ तथा त्रिदोप, पित्त, दाह, रुधिरविकार, मलबंध, श्वास, खासी, क्षय और हुचकीको दूर करे है ।

विवरण । विजोरेके वृक्ष बागोंमें होते है, इसके पत्ते नींबुके पत्तोंमेंही मिलते हैं, परन्तु लम्बाई चौडाईमें इससे आठ दशगुने होते है, फूल सपेद आता है, फल लम्बा और गोल होता है, किसी किसी देशमें जगली विजोरा होता है, दूसरा मीठा विजोरा होता है ।

निम्बूकनामानि ।

निम्बूकस्यादम्लजम्बीरकास्यवह्निदीप्योवह्निबीजोम्लसार· ।
दन्ताघात शोधनोजन्तुमारीनिम्बूक स्याद्रोचनोरुद्रसञ्ज्ञ ॥

अर्थ-निम्बूक, अम्लजम्बीर, वह्निदीप्य, वह्निबीज, अम्लसार, दन्तावात, शोधन, जन्तुमारी, निम्बूक, रोचन।

जम्बीरनामानि।





जम्बीरोदन्तशठोजम्भजम्भीरजम्भलश्चैव।
रोचनकोमुखशोधीजाड्यारिर्जंतुजिन्नवधा॥

अर्थ-जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर, जम्भल, रोचनक, मुखशोधी, जाड्यारि, जन्तुजित् (जम्भल, जम्भक, जम्भर, दन्तहर्षण, दन्तकर्षण, गम्भीर, जम्भिर, रेवत, वक्त्रशोधी, दन्तहर्षक, जम्भी)

संस्कृतभाषामें	निम्बूक, जम्बीर।
हिन्दीभाषामें	नींबु, कागजीनींबु, जम्भीरीनींबु, बिहारीनींबु, कन्नानींबु, मीठानींबु।
वंगभाषामें	कागजीलेबु, जामीरलेबु, पातीलेबु, कमलालेबु।
मराठीभाषामें	कागदीलिंबु, ईडलिंबु, मोटेईडलिंबु, सारवरलिंबु।
गुजरातीभाषामें	कागदीलिंबु, दोंडगालिंबु, मीठालिंबु।
कर्णाटकीभाषामें	कंचिरे, कनिंबे।
तैलङ्गीभाषामें	निम्मपडु, जंभिरम।
इंग्रेजीभाषामें	लेमन्स। Lemons
लॅटिनभाषामें	लेमोन एसिड। Limonum acidum

लेमोनिस्कोटिक्स ।

फारसीभाषामें लिमुनेतुर्श, लिमुनेशिरि ।

अरबीभाषामें लिमुनेहामिज ।

निम्बूकगुणाः ।

निम्बूकमम्लवातघ्नंदीपनपाचनंलघु ।
निम्बुकंकृमिसमूहनाशनतीक्ष्णमम्लमुदरश्रमापहम् ।
वातपित्तकफशूलिनेहितकष्टनष्टरुचिरोचनपरम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ–नीम्बु–खट्टा, वातनाशक, दीपन, पाचक, हल्का, कृमिसमूहनाशक, तीक्ष्ण, उदररोगनाशक, श्रमहारक, वात, पित्त, कफ और शूलमें हितकारी, अरुचिनिवारक और रोचन है ।

अन्यच्च ।

त्रिदोषसद्योज्वरपीडितानांदोषाश्रितानाञ्चस्रवज्जलानाम् ।
मलग्रहेबद्धगुदेहितञ्चविषूचिकायांमुनयोवदन्ति॥ (आ०स०)

अर्थ–नींबू–त्रिदोषजन्य रोग, तत्कालके ज्वर, अनेक प्रकारके मदाग्निके रोग, मुखादिकसे पानीका गिरना, मलग्रह, गुदबद्धता और विषूचिकारोगमें अत्यत हितकारी है ।

अपिच ।

निम्बूफलंरोचनमग्निवृद्धिंकरोतिपित्तञ्चसवातरक्तम् ।
अचाक्षुषश्लेष्मकरंविशेषाद्भुक्तस्यपाकंकुरुतेचसद्य ॥(सुषेण)

अर्थ–नींबू–रोचन, अग्निदीपक, पित्तजनक, वातरक्तकारक, नेत्रोंको अहितकारी, कफकारक और विशेष करके खायेहुए भोजनको पचानेवाला है।

अन्यच्च ।

त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीडितानांविषविह्वलानाम्।
मदानलेबद्धगुदेचदेयंविषूचिकायांमुनयोवदन्ति ॥

अर्थ–नीम्बु–त्रिदोष, वह्नि, क्षय और वातरोगसे पीडित किये हुए मनुष्योंको तथा विषसे विह्वल कियेहुए मनुष्योंको और मदाग्नि, कोष्ठरोध तथा विषूचिका रोगमें देना चाहिये ।

अन्यच्च ।

निम्बूष्णपाचकञ्चाम्लंदीपनंनेत्रयोर्हितम् । अतिरुच्यञ्चक-

टुकतुवरचमतलघु ॥ कफवातंवमिंकासकण्ठरोगक्षयतथा। पित्तशूलंत्रिदोषञ्चमलस्तम्भविषूचिकाम् । वद्धोदरञ्चामवातगुल्मञ्चैवकृमीञ्जयेत । तत्पक्वञ्चगुणे श्रेष्ठंप्रोक्तंवैद्यविशारदै ॥ (नि० र०)

अर्थ-नींबू-गरम, पाचक, खट्टा, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, अतिशय रुचिकारक, कटु, कषेला, हलका तथा कफ, वात, वमन, खाँसी, कण्ठरोग, क्षय, पित्त, शूल, त्रिदोष, मलस्तम्भ, विषूचिका, बद्धगुदोदर, आमवात, गुल्म और कृमिको दूर करे है । पक्का निम्बु गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

जम्बीरगुणाः ।

जम्बीरंमधुरंकिञ्चिदत्यम्लपित्तकृद्गुरु ।
सुगन्धिदुर्ज्जरवह्निकफवातविवन्धनुत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-जम्भीरीनींबू-किञ्चित् मधुर, अत्यन्तखट्टा, पित्तकारी, भारी, सुगन्धित, दुर्जर तथा अग्नि, वायु और कफकी विवन्धताको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

जम्बीरस्यफलरसेम्लमधुरवातापहपित्तकृत्पथ्यंपाचनरोचनबलकरवह्नेर्विवृद्धिप्रदम् । पक्वंचेन्मधुरकफार्तिशमनपित्तास्रदोषापनुद्वर्ण्यंवीर्य्यविवर्द्धनरुचिकरपुष्टिप्रदतर्पणम् (रा०नि०)

अर्थ-जम्भीरीनींबू-अम्ल, मधुर, वातनाशक, पित्तजनक, पथ्य, पाचक, रोचन, बलकारक और अग्निवर्द्धक है । पक्काजम्भीरीनींबू-मधुर, कफनाशक, रक्तपित्तनिवारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, पुष्टिकारक और तृप्तिदायक है ।

अपिच ।

जम्बीरमुष्णगुर्वम्लवातश्लेष्मविबन्धनुत । शूलंकासकफोत्क्लेशच्छर्दितृष्णामदोषजित् ॥ आस्यवैरस्यहृत्पीडानह्निमान्द्यकृमीन्हरेत । स्वल्पजम्बीरिकातद्वत्तृष्णाच्छर्दिनिवारिणी ॥ (रा०)

अर्थ-जम्भीरीनींबू-गरम, भारी, अम्ल, वातकफनाशक, विबन्धनिवारक

तथा शूल, खाँसी, कफ, उत्क्लेश, वमन, तृषा, आमदोष, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा, मदाग्नि और कृमिको दूर करे है। छोटी जम्भीरीके गुणभी वडीकी समान जानने, विशेपकरके यह तृषा और वमनको दूर करे है।

लिम्पाकगुणा।

लिम्पाकसुरभिस्वादुनात्यम्लभक्तरोचनम्।
वातश्लेष्महरहृद्यछर्दिघ्ननातिपित्तकृत्॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-लिम्पाक (जम्बीरभेद) सुगन्धि, अत्यन्त अम्ल नहीं, अन्नरोचक, वातश्लेष्मनाशक,हृदयको हितकारी,वमननिवारक और कुछेक पित्तकारक है।

करुणगुणा।

करुणकफवातास्रमेदोघ्नपित्तकोपनम्। (रा० व०)

अर्थ-कन्नानींबू-कफ, वातरक्त और मेदरोगनाशक है तथा पित्तवर्द्धक है।

निम्बूकसाधारणगुणा।

अशीतमम्लमग्निकृत्समस्तशूलगुल्महृत्।
अरोचकविपूचिकाकृमीश्चनिवुनाशयेत्॥

अर्थ-साधारणनींबू पित्तकारक, खट्टा, अग्निवर्द्धक, सर्व प्रकारके शूल और गुल्मको नाश करनेवाला तथा अरुचि, विपूचिका और कृमिरोगको हरनेवाला है।

बृहज्जम्बीरगुणा।

बृहज्जम्बीरकचाम्लतुवरंतिक्तकसरम्।
उष्णपित्तकफघ्नश्चपाचनपरिकीर्त्तितम्॥
येगुणालघुजवीरेतेवृद्धेसन्तिचाखिला।

अर्थ-वडाजम्भीरीनींबू-खट्टा, कपैला, कडवा, सारक, गरम, पित्तकफनाशक, पाचक। जो गुण वडे जम्भीरीनींबूमें हैं वही गुण छोटे जम्भीरीनींबूमें जानने।

मधुकुक्कुटिगुणा।

मधुकुक्कुटिकाशीताश्लेष्मलास्यप्रसादनी।
रुच्यास्वादुर्गुरु स्निग्धावातपित्तविनाशिनी॥(रा०व०)

अर्थ-मीठाजम्भीरीनींबू-शीतल, कफकारक, मुखको निर्मल करनेवाला, रुचिकारक, स्वादिष्ट, भारी, स्निग्ध तथा वात और पित्तनाशक है।

मिष्टनिम्बुगुणाः ।

मिष्टनिम्बूफलस्वादुगुरुमारुतपित्तनुत् ।
गररोगविषध्वंसिकफोत्क्लेशास्रक्तहृत ॥
शोषारुचितृषाच्छर्दिहरबल्यञ्चबृंहणम् । (भा०प्र०)

अर्थ-मीठानींबू-स्वादिष्ठ, भारी, वातपित्तनाशक, गररोगनाशक, विष विनाशक तथा कफ, उत्क्लेश, रुधिरविकार, शोष, अरुचि, तृषा और वमनको दूर करेहै, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक है ।

मधुकर्कटीगुणाः ।

मधुकर्कटिकास्वाद्वीरोचनीशीतलागुरु ।
रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चकोतरा-स्वादिष्ठ, रोचक, शीतल, भारी तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, खाँसी, हिचकी और भ्रमको दूर करनेवाला है ।

जम्बीरपत्रगुणाः ।

पत्रजम्बीरजतीक्ष्णकृमिवातकफापहम् ।
सुरभिदीपनरुच्यंमुखवैशद्यकारकम् ॥

अर्थ-जम्भीरीनींबूकेपत्ते-तीक्ष्ण, कृमिहारक, वातनिवारक, कफनाशक, सुगन्धित, दीपन, रुचिकारक और मुखको निर्मल करनेवाले हैं ।

विवरण । नींबूके वृक्ष, बागोंमें होते हैं, किन्तु किसी २ देशमें वनमें भी देखपडते हैं, पत्ते सर्व प्रकारके नीबुओंके गोल होते हैं निंबुओंके पत्तोंमें केवल छोटे बडेकाही अन्तर अर्थात् किसीके पत्ते छोटे और किसीके बडे होते हैं, सर्वप्रकारके नींबुओंके फूल सफेद और सुगन्धियुक्त होते हैं, फल कच्ची अवस्थामें नीले और पकनेपर पीले पडजाते हैं, नींबू, जम्भीर, कागजी, बिहारी, कन्ना, मीठानींबू, चकोतरा, नारंगी, सतरा, बिजोरा इत्यादि अनेक जातिके होते हैं ।

तिन्तिडीनामानि ।

अम्लिकाचुक्रिकाम्लीचचुक्रादन्तशठापिच ।
अम्लाचचिंचकाचिंचातिन्तिडीकाचतिन्तिडी ॥

अर्थ-अम्लिका, चुक्रिका, आम्ली, चुक्रा, दन्तशठा, अम्ला, चिंचका, चिंचा, तिन्तिडीका, तिन्तिडी । (तिन्तिडीक, तिन्तिडिका, वृक्षाम्ल,

अम्लीका, आम्लिका, आम्लीका, तिन्तिड, तिन्तिली, तिन्तिका, आन्दिका, चुक्र, अत्यम्ला, भुक्ता, भुक्तिका, चारित्रा, गुरुपत्रा, पिच्छिला, यमदूतिका, चरित्रा, शाकचुक्रिका, सुचुक्रिका, सुतिन्तिडी, पक्तिपत्रा, सर्वाम्ला)



संस्कृतभाषामें	तिन्तिडी ।
हिन्दीभाषामें	इमली ।
बंगभाषामें	तेंतुल ।
मराठीभाषामें	चिंच ।
गुजरातीभाषामें	आवली ।
कर्णाटकीभाषाम	हुणिसे, हुणिसेहण्णु, हुणिसिनयले ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिंताचेट्टु, चिण्ट ।
औत्कलीभाषामें	कआ ।
तामिलीभाषामें	पुळि ।
बम्०	टिन्टज ।
इंग्रेजीभाषाम	टेमेरिंडूट्री । Tamarind Tree
लैटिन्भाषामें	टेमेरिंडस् इंडिकस् । Tamarindus Indicus
अरबीभाषामें	तमरहिंदी ।

अस्य फलगुणाः ।

अम्लिकाम्लागुरुर्वातहरीपित्तकफास्रकृत ।
पक्वातुदीपनीरूक्षासरोष्णाकफवातनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–कच्ची इमली–भारी, वातनाशक, पित्तजनक, कफकारक और रक्तको दूषित करेहै । पकी इमली–दीपन, रूखी, कुछेक दस्तावर, गरम, कफ तथा वातनाश करेहै ।

अन्यच्च ।

अम्लिकाया फलंबालंवातघ्नंकफपित्तकृत् ।
तत्पक्वंदीपनरुच्यमत्युष्णकफवातजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-कच्ची इमली-वातविनाशक, कफकारक और पित्तजनक है । पकी इमली-दीपन, रुचिकारी, अत्यन्त उष्ण तथा कफ और वातको जीतेहै ।

अपिच ।

चिंचावृक्षोगुरुश्चोष्णश्चाम्ल पित्तकफप्रद· । रक्तकोपनकारीचवातनाशकरोमत ॥ चिंचापुष्पन्तुतुवरस्वाद्वम्लंच रुचिप्रदम् । विशदंचाग्निजनकंलघुवातकफापहम् ॥ प्रमेहघ्नसमुद्दिष्टंपर्णंशोथहरंमतम् । रक्तदोषहरंचैवफलंचास्यतुकोमलम् ॥ अत्यम्लंग्राहकंचोष्णंरुच्यंचाग्निप्रदीपकम् । रक्तपित्तस्यपित्तस्यकफरक्तस्यकोपनम् ॥ वातनाशकरंप्रोक्तंतत्पक्वंवातलंमतम् । कफपित्तकरंचैवतत्पक्वंमधुरंसरम् ॥ अम्लंहृद्यंभेदकंश्चमलस्तम्भकरंमतम् । दीपनंरुचिदंचोष्णंरूक्षंवस्तिविशोधनम् ॥ व्रणदोषकफवातजन्तूंश्चैवविनाशयेत । शुष्कचिंचाफलंहृद्यंलघुभ्रान्तिश्रमापहम् ॥ तृषाहरंक्लमहरंकृमिनाशकरंमतम् ॥

अर्थ-इमलीका वृक्ष-भारी, गरम, खट्टा, पित्तजनक, कफकारक, रक्तप्रकोपक और वातविनाशक है । इमलीके फूल-कषेले, स्वादु, अम्ल, रुचिकारक, विशद, अग्निदीपक, हलके तथा वात, कफ, और प्रमेहको दूर करे हैं । इमलीके पत्ते-सूजन और रुधिरविकारको हरनेवाले हैं । कच्ची इमली-अत्यन्तखट्टी, मलरोधक, गरम, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक तथा रक्तपित्त, पित्त, कफ और रक्तको कुपित करनेवाली है तथा वातनाशक है। तरुण इमली-बादी, कफ और पित्तको उत्पन्न करनेवाली है । पकीहुई इमली मधुर, सारक, खट्टी, हृदयको हितकारी, दस्तावर, मलस्तम्भक, दीपन, रुचिकारक, गरम, रूखी, वस्तिशोधक तथा व्रण दोष, कफ, वात और कृमिनाशकरनेवाली है, सूखी इमली-हृदयको हितकारी, हलकी तथा श्रम, भ्रान्ति, तृषा, क्लम और कृमिका नाश करे है ।

चिंचातुनूतनावातकफस्यकारिणीमता ।
सावार्षिकीवातपित्तनाशिनीपरिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-नवीन इमली-वात और कफको उत्पन्न करे है । एक वर्षकी इमली-वात-पित्तनाशक है ।

चिंचाक्षारश्चाग्निमांद्यशूलनाशकरोमत ॥

अर्थ-इमलीका क्षार-मदाग्नि और शूलको निर्मूल करे है ।

पक्वचिंचारसश्चाम्लोमधुरोरुचिकृन्मत. ।
व्रणनाशकरश्चैवलेपनाच्छोथपंक्तिहृत ॥

अर्थ-पक्वीइमलीका रस-अम्ल, मधुर, रुचिकारक, व्रणविनाशक तथा इसका लेप करनेसे-सूजन और पक्तिशूल नष्ट होता है ।

चिंचासारंदाहकफकारकचातिअम्लकम् ।
वातनाशकरप्रोक्तसमानशर्करायुतम् ॥
दाहपित्तकफचैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-इमलीका सार-दाह और कफकारक, अत्यन्तखट्टा और वातविनाशक है । उसी सारमें वरावरकी खाँड मिलालीजाय तो दाह, पित्त और कफको हरनेवाला होजाताहै ।

विवरण । इमलीके वृक्ष वहुत वडे २ ऊँचे और सघन जगल तथा नगरके निकट घर वाहर सर्वत्र स्थानोंमे होते है, पत्ते चौंटलीके समान डालियोंमे दोनों ओर वरावर लगे होते हैं, और खट्टे होते हैं, फूल गुच्छोंम लगे होते हैं, रगपीला २ उनमे कुछ लाल लाल विन्दुसे पडे होते है, फलियें कटोरके समान तिरछी और लम्बी होती हैं, उसको भी कटारा कहते है, उन कटारोंपर सूखे हुए छिलके होते है, छिल्कोंको छीलनेमे गूदा निकलता है, परन्तु उस गूदेके भीतरभी वीज निकलते है उनको चोइये कहते है, यह इमली दो प्रकारकी होती है, एक लाल गूदेकी दूसरी सपेद गूदेकी ।

आलुकनामानि ।

आरुकवीरसेनश्चवीरवीरारुकतथा ।
तच्चविद्याचतुर्जातिपत्रपुष्पादिभेदत ॥

अर्थ-आरुक, वीरसेन, वीर, वीरारुक (आडूक, मल, भडूक भट्ट, रक्तफल) इसकी पत्र और पुष्पादिके भेदसे चार जाति है ।

वृक्षाम्लनामानि ।

वृक्षाम्लंतिन्तिडीकञ्चचुक्रंस्यादम्लवृक्षकम् ।

अर्थ-वृक्षाम्ल, तिन्तिडीक, चुक्र, अम्लवृक्षक, (अम्लशाक, चुक्राम्ल, तित्तिडीफल, शाकाम्ल अम्लपूर, पूराम्ल, रक्तपूरक, चूडाम्ल, वीजाम्ल, फलाम्लक, अम्लवृक्ष, अम्लफल, रसाम्ल, श्रेष्ठाम्ल, अत्यम्ल, अम्लवीन, चुक्रफल)

संस्कृतभाषामें	वृक्षाम्ल ।
हिन्दीभाषामें	विषाम्बिल । तत्तडीक ।
वंगभाषामें	महादा, (भ) अम्लकुटा, (सार०मु-) चुका (भा० दी०) तेंतुल, (मु) ।
मराठीभाषामें	आमसोल (को०) कोकनसोल ।
गुजरातीभाषामें	कोकम ।
कर्णाटकीभाषामें	तित्तीडिक ।
इंग्रेजीभाषामें	कोकवटर्ट्री । Kokum Butis tree
लैटिन्भाषामें	ग्यारसीनिया परप्यूरिआ । Garcinia Purpure ।
गोवा०	भ्रिंडोओ ।

अस्य गुणाः ।

वृक्षाम्लमाममम्लोष्णवातघ्नकफपित्तलम् । पक्कन्तुगुरुसंग्राहिकटुकंतुवरंलघु ॥ अम्लोष्णरोचनरूक्षदीपनकफवातकृत । तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजन्तुजित ।

अर्थ-कच्चा विषाम्बिल-खट्टा, गरम, वातनाशक, कफकारक और पित्तजनक है । पका विषाम्बिल भारी, मलरोधक, चरपरा, कषेला, हलका, खट्टा, गरम, रोचन, रूखा, दीपन, कफकारक, वातवर्द्धक तथा तृषा, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, शूल, हृदयरोग और कृमिको दूर करे है ।

विवरण । विषाम्बिलके वृक्ष गोवाकी ओर होतेहैं देखनेमें अत्यन्त सुन्दर और डालेदार होतेहैं, पत्ते लम्बे और चिकने, शीत ऋतुमें आतेहैं और वसन्तऋतुमें फल लगते हैं, फल नारंगीके समान होतेहैं इसके सब अंग खट्टे होतेहैं ।

अम्लवेतसनामानि ।

स्यादम्लवेतसश्चुक्रःशतवेधीसहस्रजित् ।

अर्थ-अम्लवेतस, चुक्र, शतवेधी, सहस्रजित् (अम्ल, वोधि, रसाम्ल, आम्लवेतस, वेतसाम्ल, अम्लसार, वेधक, भीम, भेदन, भेदी, राजाम्ल, अम्लभेदक, अम्लाङ्कुश, रक्तसार, फलाम्ल, अम्लनायक, सहस्रवेधी वीराम्ल, गुल्मकेतु, वराभिध, शखद्रावी, मासद्रावी, वराङ्गी, गुल्महा, महाक्षार)

संस्कृतभाषामें	अम्लवेतस ।
हिन्दीभाषामें	अमलवेंत ।
वंगभाषामें	थैकड्, अम्लवेतस ।
मराठीभाषामें	चुका ।
गुजरातीभाषामें	अमलवेत ।
इंग्रेजीभाषामें	कामन् सोरेल । Common Soral
लैटिन् भाषामें	आसीडो झेफोलिया । AcidoZeyfolia
फारसीभाषामें	तुर्षक ।

अस्यफलगुणा ।

अम्लवेतसमत्यम्लंभेदनलघुदीपनम् । हृद्रोगशूलगुल्मघ्नपित्तललोमहर्षणम् ॥ रूक्षविण्मद्यदोषघ्नप्लीहोदावर्त्तनाशनम् । हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत्॥कफवातामयध्वसिच्छागमांसद्रवत्वकृत् । चणकाम्लगुणज्ञेय लोहसूचिद्रवत्वकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-अमलवेंत-अत्यन्त खट्टा, भेदक, हलका, दीपन, पित्तकारक, लोमहर्षक, रूखा तथा हृदयरोग, शूल, गुल्म, मलदोष, मद्यदोष, प्लीहा, उदावर्त्त, हिचकी, आनाह, अरुचि, श्वास खाँसी, अजीर्ण, वमन, कफ और वातरोगको हरनेवाला है । बकरेके मासको गलानेवाला । जैसे चनेके खारसे लोहेकी सुई गलजाती है उसीप्रकार इसके रसमें सुई गेरनेसे गलजातीहै ।

अन्यच्च ।

अम्लवेतसमत्यम्लंकषायोष्णचवातजित् ।
कफार्शःश्रमगुल्मघ्नमरोचकहरपरम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अमलवेंत-अत्यन्तखट्टा, कपेला, गरम, वातनाशक तथा कफ, ववासीर, श्रम, गुल्म और अरुचिको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

अम्लवेतसमत्यम्लमानाहकफवातजित् ।
तदेवसिद्धदोषघ्नंश्रमघ्नग्राहिगुर्व्वपि ॥ (रा० व०)

अर्थ-अमलवेंत-अत्यन्त खट्टा, आनाहनाशक, कफ तथा वातविनाशक है । पक्का अमलवेंत-त्रिदोषनाशक, श्रमहारी, ग्राही और भारी है ।

विवरण । अम्लवेंतके वृक्ष मध्यम आकार और दो प्रकारके होतेहैं, एक अम्लवेंत, दूसरी वेंती, यह छोटे होतेहैं यह पेड मालियोंके बागोंमें बहुत होतेहैं, फूल सफेद रंगके, फलगोल सर्जूके समान, कच्चा हरा, पकनेपर पीला पडजाताहै और चिकना होताहै ।

पनसनामानि ।



पनस कटकिफल फणसोऽतिवृहत्फल ।
अपुष्प फलदश्चैवस्थूलकण्टफलस्तथा ॥

अर्थ-पनस, कटकिफल, फणस, अतिबृहत्फल, अपुष्प, फलद, स्थूलकण्टफल, (कण्टफल, आशय, मुरजफल, पनस, फलस, चम्पकाल्ल, चम्पा, कोप चम्पालु, मृदङ्गफल, पानस, महासर्ज्ज, फलिन, फलवृक्षा, स्थूल, कण्टीफल, मूलफलद, अपुष्पफलद, पूतफल)

संस्कृतभाषामें	पनस ।
हिन्दीभाषामें	कटहर, कटहल, फनस ।
बंगभाषामें	कांठाल ।

मराठीभाषामें फणस ।
गुजरातीभाषामें पणस ।
कर्णाटकीभाषामें हलसिनहण्णु ।
तैलिङ्गीभाषामें पनसकायि ।
औ० फणस ।
तामिलीभाषामें वला ।
लैटिन्‌भाषामें आर्टोकार्पस् इन्टेग्रिफोलिया । ArtocorpusLutergrifolia

अस्यफलगुणा ।

पनसंशीतलपक्वस्निग्धपित्तानिलापहम् । तर्पणबृंहणस्वादु मांसलश्लेष्मलभृशम् ॥ बल्यशुक्रप्रदहन्तिरक्तपित्तक्षतक्षयान् । आमतदेवविष्टम्भिवातलंतुवरगुरु ॥ दाहकृन्मधुरबल्यकफमेदोविमर्दनम् । पनसोद्भूतबीजानिवृष्याणिमधुराणिच ॥ गुरूणिबद्धवर्चांसिसृष्टमूत्राणिसवदेत् । मज्जापनसजोवृष्योवातपित्तकफापहः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–पका कटहर–शीतल, स्निग्ध, पित्तवातविनाशक, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, स्वादिष्ठ, मांसवर्द्धक, कफकारक, बलवर्द्धक, शुक्रजनक तथा रक्तपित्त और क्षतक्षयको क्षयकरे है । कच्चा कटहल–विष्टम्भकारक, वादी, कषेला, भारी, दाहकारक, मधुर, बलकारक, कफनाशक और मेदनाशक है । कटैलके बीज–वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, भारी, मलको बाँधनेवाले और मूत्रको निकालनेवाले हैं । कटैलकी मींग–वीर्य्यवर्द्धक और वात पित्त कफका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कण्टाफलसुमधुरबृंहणंगुरुशीतलम् । दुर्जरवातपित्तघ्नश्लेष्मशुक्रबलप्रदम् ॥ कण्टाफलमपक्वन्तुकषायस्वादुशीतलम् । कफपित्तहरञ्चैवतत्फलास्थ्यपितद्गुणम् ॥ तद्बीजसर्पिषायुक्तस्निग्धंहृद्यबलप्रदम् । (रा० व०)

अर्थ–पका कटहल–मधुर, पुष्टिकारक, भारी, शीतल, दुर्जर, वात और पित्तनाशक तथा कफ,शुक्र और बलवर्द्धक है । कच्चा कटैल और उसके बीज–

कषैले, स्वादिष्ठ, शीतल तथा कफ और पित्तनाशक है। इसके बीज घृतके साथ-स्निग्ध, हृदयको हितकारी और बलवर्द्धक हैं।

अपिच।

पनसस्यफलंचाममलावष्टम्भकृन्मतम्। मधुरंदोषलंबल्यं तुवरंगुरुवातलम् ॥ कोमलंतच्चमधुरंगुरुबल्यंकफप्रदम्। मेदोवृद्धिकरंचैवदाहवातप्रपित्तनुत ॥ तत्पक्वंशीतलंदाहिस्निग्धंवैतृप्तिकारकम्। धातुवृद्धिकरंस्वादुमांसलञ्चकफप्रदम् ॥ बल्यंपुष्टिकरंजन्तुकारकंदुर्जरंवृषम्। वातक्षतक्षयंरक्तपित्तं चाशुव्यपोहति ॥ तस्यबीजन्तुमधुरंवृष्यंविष्टम्भकंगुरु। तस्यपुष्पंगुरुस्तिक्तंमुखशुद्धिकरंमतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कटहरका कच्चा फल-मलस्तम्भक, मधुर, त्रिदोषकारक, बलवर्द्धक, कषैला भारी और वादी है। कोमल कटैल-मधुर, भारी, बलवर्द्धक, कफकारक, मेदोवर्द्धक तथा दाह और वातपित्तनाशक है। पक्का कटैल-शीतल, विदाही, स्निग्ध, तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मांसवर्द्धक, कफकारक, बलवर्द्धक, पुष्टिजनक, जन्तुजनक, दुर्जर, वीर्य्यवर्द्धक तथा वात, क्षतक्षय और रक्तपित्तका नाश करे है। इसके बीज-मधुर, वृष्य, विष्टम्भक और भारी हैं। इसके फूल-भारी, कडवे और मुखको शुद्ध करनेवाले हैं।

विवरण। कटहरके वृक्ष बहुत बडे २ होते हैं, प्रायः बागोंमें माली लोग बहुत लगा देते हैं, पत्ते गोल और लम्बे होते हैं, फूल आतेही नहीं, कटहल बहुत बडा फल होता है और वह गूलरके समान लकडीको फोडकर निकलता है, फल हरे रंगका निकलता है, ऊपर कडे २ कांटे होते हैं, कटहरपर हेमन्तऋतुके पश्चात् फल लगते हैं वह फल गजभर लम्बा और बहुत मोटा होता है, तोल २० सेर तकका होता है।

लकुचनामानि।

लकुचःक्षुद्रपनसोलिकुचोडहुरित्यपि।

अर्थ-लकुच, क्षुद्रपनस, लिकुच, डहु (लकच, ऐरावत, अम्लक, निकुच, कपार्षी, दृढवल्कल, काम्य, शाल, शर, स्थूलस्कन्ध, ग्रन्थिमत्फल)

संस्कृतभाषामें	लकुच।
हिंदीभाषामें	बडहर।

वगलाभापामें डेओ, मादार ।
मराठीभापामें वटार, फल, क्षुद्रफणस ।
गुजरातीभापामें लकुच ।
लैटिन्भापामें आर्टोकार्पसलकुचा । ArtocarpusLacoocha

अस्य गुणाः ।

आमलकुचमुष्णञ्चगुरुविष्टम्भकृत्तथा । मधुरञ्चतथाम्लञ्चदोपत्रितयरक्तकृत् ॥ शुक्राग्निनाशनञ्चापिनेत्रयोरहितं स्मृतम् । सुपक्वंतत्तुमधुरमम्लंचानिलपित्तहृत् ॥ कफवह्निकरंरुच्यवृष्यविष्टम्भकञ्चतत् । (भा प्र)

अर्थ–कच्चा वडहर–गरम, भारी, विष्टम्भकारी, मधुर, खट्टा, त्रिदोपकारक, रुधिरविकारकारक, नेत्रोंको अहितकारी तथा शुक्र और अग्निनाशक है । पक्का वडहर–मधुर, खट्टा, वातपित्तनाशक, कफकारक, वह्निवर्द्धक, रुचिकारी, वीर्य्यवर्द्धक और विष्टम्भकारक है ।

अन्यच्च ।

लकुचंगुरुविष्टम्भिस्वाद्वम्लरक्तपित्तकृत् ।
श्लेष्मकारिसमीरघ्नमुष्णशुक्राग्निनाशनम् ।

अर्थ–वडहर–भारी विष्टम्भकारी, स्वादिष्ठ, खट्टा, रक्तपित्तकारक, कफकारक, वातनाशक, गरम तथा शुक्र और अग्निनाशक है ।

अपिच ।

लिकुचंगुरुविष्टम्भित्रिदोपंशुक्रदूपणम् ।

अर्थ–वडहर–गुरु, विष्टम्भकारक, त्रिदोपवर्द्धक और शुक्रको दूपितकरे है ।

विवरण । वडहरके वृक्ष–वहुत ऊचे २ और झाडेदार होते हैं माय वागोंमे वहुत देखनेमें आतेहैं, पत्ते–पाखरके समान और फल–गाठदार गोल २ कैयके वरावर होतेहं, कच्ची अवस्यामें हरे २ होतेह । इनको पेढपरसे तोडकर पालमें रखकर पकालेतेंह, इसके भीतर दश वीस सफेद रगके वीज निकलतेहें, यहभी कटहरका भेदहै, इसके फूलको लकुच कहतेंह, यह पीले रगके होतेंह ।

तिन्दुकनामानि ।

तिन्दुकोनिलसारश्चकालस्कन्धोतिमुक्तक ।

स्फूर्जक·स्फूर्जन· सृष्ट स्यंदनोरावणोरवः ॥
कृष्णत्वक्कृष्णसारश्चसुसारश्चविरूपकः ।

अर्थ–तिन्दुक, अनिलसार, कालस्कन्ध, अतिमुक्तक, स्फूर्जक, स्फूर्जन, सृष्ट, स्यन्दन, रावण, रव, कृष्णत्वक्, कृष्णसार, सुसार, विरूपक (शितिसारक, स्फूर्जक,केन्दु, तिन्दु, तिन्दुल, तिन्दुकि,तिन्दुकी, नीलसार, स्वर्यक, रावण, स्यन्दनाह्वय)

संस्कृतभाषामें	तिन्दुक ।
हिन्दीभाषामें	तेंदू ।
बंगभाषामें	गाव, तेंद ।
मराठीभाषामें	टेंभुर्णी, आपन ।
गुजरातीभाषामें	टिंबरवो ।
कर्णाटकीभाषामें	रुचुरु ।
तैलङ्गीभाषामें	तमिक ।
तामिलीभाषामें	तुम्बिक ।
इंग्रेजीभाषामें	एबनी । Ebony
लैटिनभाषामें	डायोस्पायीईरोस् एम्ब्रिओप्टेरिस् । Diospyros Embryopteris
फारसीभाषामें	अवनुसुस्ताद ।

अस्य गुणाः ।

तिन्दुकस्तुवरस्तिक्त स्निग्धोष्णोव्रणवातहा। सग्राहीदुर्जरोजिह्वाजाड्यकारीजडोगुरु ॥आमचास्यफलस्निग्धकषायलेखनलघु।सग्राहिशीतलरूक्षविबन्धारुचिवातकृत॥ पक्वपित्तप्रमेहास्त्रश्लेष्मघ्नमधुरगुरु । स्वादुपाकरसंस्निग्ध दुर्जरवातनाशकम् ॥

अर्थ–तेंदू–कसेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, व्रणनाशक, वातहारक, मलरोधक, अतिकठिनतासे पचनेवाला, जिह्वाको जडताकारक, जड और भारी है। इसका कच्चाफल–स्निग्ध, कषेला, लेखन, हलका,मलरोधक,शीतल,रूखा तथा विबन्ध, अरुचि और वातको करनेवाला है। इसका पका फल–पित्त, प्रमेह, रुधिरविकार और अश्मरीनाशक है। स्वादुपाकी, स्वादु, स्निग्ध, दुर्जर और वातनाशक है।

अन्यच्च ।

अम्लोष्णलघुसंग्राहिस्निग्धपित्ताग्निवर्द्धनम् ।
आमकषायसंग्राहितिन्दुकवातकोपनम् ॥ (सु० स०)

अर्थ-तेंदू-खट्टा, गरम, हलका, स्निग्ध, पित्त और अग्निवर्द्धक है। कच्चा तेंदू-कपेला, मलरोधक और वातको कुपित करनेवाला है।

अपिच ।

तिंदुकस्तुवरस्तिक्त·स्निग्धश्चोष्णोमधुःस्मृतः । वायुव्रण हरत्यस्यफलचामकषायकम् ॥ लेखनग्राहकशीतस्वादुरूक्षलघुस्मृतम् । मलस्तम्भारुचिकरवातकृत्तिक्तकमतम् ॥ तत्पक्वश्चगुरुस्वादुमधुस्निग्धश्चदुर्जरम् । कफकृन्मेहपित्तास्ररक्तरुग्वातनाशकम् ॥ तिन्दुकाष्ठस्यसारस्तुपित्तरोगहरोमत· । (नि० र०)

अर्थ-तेंदु-कपेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, मधुर, वात और व्रणनाशक है। इसका कच्चा फल-कपेला, लेखन, ग्राही, शीतल, स्वादु, रूखा, हलका, मलस्तम्भक, अरुचिकारक, वातवर्द्धक और कडवा है। इसका पक्का फल-भारी, मधुर, स्वादु, दुर्जर, कफकारी, प्रमेहहारी तथा पित्त, रक्तरोग और वातनाशक है। तेंदूकी लकडीका सार, पित्तरोगनाशक है।

विवरण। तेंदूके वृक्ष-अत्यन्त ऊचे २ होते हैं, पत्ते-गोल २ नोकदार सीसमकेसे होते हैं, छाल-काली २ होती है, उसमें खार होता है, इसकी लकडी स्थानादिकोंके बनानेके काममें आती है, इसके भीतरका सार काला और वजनदार होता है, हिन्दुस्तानी लोग इसको आवनूस कहते हैं, तेंदूके फल गोल और शोभायमान नींबूके समान हरे हरे होते हैं, पकनेपर पीले पड जाते हैं।

काकतिंदुकनामानि ।

तिन्दुकोन्योद्वितीयस्तुजलजोदीर्घपत्रक ।
काकेंदुकेतिविख्यात कुपीलु·काकपीलुक ॥

अर्थ-काकेन्दु, जलज, दीर्घपत्रक, काकेन्दुका, कुपीलु, काकपीलुक, (काकड, काकतिन्दु, काकस्फूर्ज, काकाह्व, काकबीजक, कुलक)

संस्कृतभाषामें	काकतिन्दुक ।
हिंदीभाषामें	मकरतेंदुआ, काकतदु ।
बंगभाषामें	केंद, माकडागाव, माकडातेंदु ।
मराठीभाषामें	काकटेंभुर्णी ।
गुजरातीभाषामें	कार्काटिनरवो ।
तैलिङ्गीभाषामें	तुमि, तुमकि ।
तामिलीभाषामें	तुम्नि ।

अस्य गुणाः ।

स्यात्काकतिन्दुकंतिक्तंशीतलंवातलंलघु ।
विपाकेकटुकंग्राहिकफपित्तास्रनाशनम् ॥

अर्थ-मकरतेंदुवा-कडवा, शीतल, वादी, हलका, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा कफ और रक्तपित्तकफनाशक है ।

अन्यच्च ।

काकतिन्दुःकषायाम्लोगुरुर्वातविकारनुत् ।
पक्वस्तुमधुरःकिञ्चित्कफकृत्पित्तवातहृत् ॥

अर्थ-काकतेंदू (मकरतेंदुआ)-कषेला, खट्टा, भारी, वातविकारनाशक । पक्वतेंदू-किञ्चित् मधुर, कफकारक और पित्तवातहारक है ।

विवरण । तेंदूके वृक्ष-जंगलमें होते हैं, इसकी छाल काली और छालमें सार होता है, वृक्षके भीतरका सार वजनदार और काले सीसमकी समान होता है, उसको देशीभाषामें आवनूस कहते हैं, फल-गोल नींबूकी समान होते हैं । दूसरा काकतेन्दू कांटेयुक्त होता है, फल-तदूके फलसे छोटे होते हैं ।

कारस्करनामानि ।

कारस्करस्तुकिंपाकोविषतिन्दुर्विषद्रुमः ।
गरद्रुमोरम्यफलः कुपाकः कालकूटकः ॥

अर्थ-कारस्कर, किम्पाक, विषतिन्दु, विषद्रुम, गरद्रुम, रम्यफल, कुपाक, कालकूटक (कुचीला, मर्कटतिन्दु, कर्चीर, वर्तुल, चिपिट)





संस्कृतभाषामें	कारस्कार।
हिन्दीभाषामें	कुचला।
बंगभाषामें	कुचिले।
मराठीभाषामें	काजरा, कारस्कार, कुचला।
गुजरातीभाषामें	झेरकोचला।
कर्णाटकीभाषामें	काजिवार।
तैलिङ्गीभाषामें	मुष्टिगिंजा।
इङ्ग्रेजीभाषामें	पाईझननट। Poison nut
लेटिन्भाषामें	स्टिकनास् नक्सवामिका Strychnos Nuxvomica
फारसीभाषामें	इफराकी।
अरबीभाषामें	कातिलुलकल्ब फलूजमाही।

अस्य गुणाः।

विषतिन्दुर्महातिक्तः कफवातविषापहः॥

अर्थ—कुचला—अत्यन्त कडवा तथा कफ, वात और विषविनाशक है।

अपिच।

कारस्करः कटूष्णश्च तिक्तः कुष्ठविनाशनः।
वातामयास्रकण्डूतिकफकार्श्यव्रणापहः॥

अर्थ-कुचला-चरपरा, गरम, कडवा, कुष्ठनाशक तथा वातरोग, रुधिरदोष, कण्डू, कफ, कार्श्य, बवासीर और व्रणको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

कचिर कटुकस्तिक्तोरूक्षोष्णोदीपनोलघुः। भेदनस्तूदनोहन्तिपाण्डुरोगचकामलाम् ॥

अर्थ-कुचिला-चरचरा, कडवा, रूखा, गरम, दीपन, हलका, भेदक, तूदन तथा पाण्डुरोग और कामलारोगको हरनेवालाहै।

अपिच।

कारस्करोमदकरस्तुवरोग्राहक स्मृत । कटुस्तिक्तोलघुश्चोष्ण कुष्ठरक्तविकारहा ॥ कण्डूकफवातरोगंव्रणचाशो ज्वरजयेत। अस्यचामफलग्राहितुवरवातकृल्लघु ॥ शीतलंचसमुद्दिष्टतत्पक्वविपदगुरु।पाकेचमधुरप्रोक्तकफवातप्रमेहकम् ॥ पित्तरक्तविकारचनाशयेदितिकीर्त्तितम्।(नि०रा०)

अर्थ-कुचिला-मदकारक, कषैला, मलरोधक, चरपरा, कडवा, हलका, गरम तथा कोढ, रक्तविकार, कण्डू, कफ, वातरोग, घाव, बवासीर और ज्वरको दूर करैहै। इसका कच्चा फल-मलरोधक, कषैला, वातकारक, हलका और शीतल है। इसका पक्का फल-विपद, भारी, पाकम मधुर तथा कफ, वायु, प्रमेह, पित्त और रक्तदोषनाशक है।

विवरण। कुचलेके वृक्ष-मध्यम आकारके होतेहैं, प्राय वनोंमें बहुत देखनेमें आतेहैं, पत्ते-पानके समान और फल नारंगीके समान सुन्दर सुन्दर होतेहैं, इसके बीजाको कुचला कहतेहैं।

मधूकनामानि।

मधूकोमधुवृक्षश्चमधुष्ठीलोमधुस्रव । गुडपुष्पोरोध्रपुष्पो वानप्रस्थोथमाधव ॥ मध्यगन्तीक्ष्णसारश्चडोलाफलोमहाद्रुम । मधूकोन्योद्वितीयस्तुजलजोदीर्घपत्रक ॥ ह्रस्वपुष्पफल स्वादुर्गालिकास्यान्मधूलिका ।

अर्थ-मधूक, मधुवृक्ष, मधुष्ठील, मधुस्रव, गुडपुष्प, रोध्रपुष्प, वानप्रस्थ, माधव, मध्यग, तीक्ष्णसार, डोलाफल, महाद्रुम (महुआ, महु, महुवा,

मध्वल,) दूसरा जलमधूक होता है, उसके यह नाम हैं जल्ज, (दीर्घपत्रक, हस्वपुष्पफल, स्वादु, गौलिका, मधूलिका, क्षौद्रप्रिय,पतग,कीरेष्ट, गौरिकाक्ष, मगल्य, मधुपुष्प, गौरिकाख्य)

संस्कृतभाषामें	मधूक, जलमधूक ।
हिन्दीभाषामें	महुआ, जलमहुआ ।
बंगभाषामें	मौल, मउल, मौया, जलमउल ।
मराठीभाषामें	मोहाचा वृक्ष, मोहवृक्ष, जलमोहा ।
गुजरातीभाषामें	महुडो, जलमहुडो ।
कर्णाटकीभाषामें	महूइप्पे, जलमहे, तोरेइप्पे, यरड्डइप्पे ।
तैलिङ्गीभाषामें	इपा, पिन्ना ।
तामिलीभाषामें	कट्इलुपि ।
इंग्रेजीभाषामें	इलूपाट्री । Elloopatree
लेटिन्भाषामें	बेसिया लाटिफोलिया । Bassia latifolia
फारसीभाषामें	चका ।

अस्य गुणा ।

मधूकोमधुर शीत श्लेष्मलोवीर्य्यद'स्मृत' । पुष्टिकृत्तुवरस्तिक्त पित्तदाहव्रणश्रमान् ॥ कृमिदोषचवातचनाशयेदितिकीर्त्तितम् । पुष्पचमधुरशीतंधातुवृद्धिकरगुरु ॥ स्निग्धविकाशिहृद्यचदाहपित्तमरुत्प्रणुत् । फलमस्यगुरुशीतमहृद्यशुक्रलमतम् ॥ स्निग्धरसेचपाकेचमधुरधातुवर्द्धकम् । मलावष्टम्भकबल्यरक्तरुग्वातपित्तकम् ॥ तृषांदाहश्वासकासक्षतयक्ष्मापहस्मृतम् । तदेवपक्वंबलदंपित्तवातविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-महुयेका वृक्ष-मधुर, शीतल, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, कषेला, कडवा तथा पित्त, दाह, व्रण, श्रम, कृमिदोष और वातका नाश करनेवाला है। इसका फूल-मधुर, शीतल, धातुवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, विकाशी, हृदयको हितकारी तथा दाह, पित्त और वातका नाश करनेवाला है। इसका फल भारी, शीतल, हृदयको अहितकारी, शुक्रजनक, स्निग्ध, रस और पाकमें मधुर, धातुवर्द्धक, मलस्तम्भक, बलवर्द्धक, रुधिरदोष, वात, पित्त,

तृषा, दाह, श्वास, खाँसी, क्षतक्षय और राजयक्ष्माको दूर करे है। इसका पका फल-बलवर्द्धक तथा वात और पित्तनाश करे है।

अस्य त्वग्गुणाः।

मधूकरक्तपित्तघ्नव्रणशोधनरोपणम्।

अर्थ-महुवेकी छाल-रक्तपित्तनाशक, व्रणशोधक और व्रणरोपण है।

अस्य तैलगुणाः।

मधूकतैलमधुरपिच्छलतुवरमतम्॥
कफपित्तज्वरचैवदाहपित्तचनाशयेत्।

अर्थ-महुवेका तेल-मधुर, पिच्छल, कषेला तथा कफ, पित्तज्वर, दाह और पित्तका नाश करेहै।

अस्य सारगुणाः।

मधूकसारोनस्येनभूतादिकफवातजित्॥

अर्थ-महुवेके सारकी नास देनेसे-भूतादि बाधा, कफ और वात दूर होताहै।

जलमधूकगुणाः।

ज्ञेयोजलमधूकस्तुमधुरोव्रणनाशन।
वृष्योवान्तिहरः शीतोबलकारीरसायन॥

अर्थ-जलमहुवा-मधुर, व्रणनाशक, वीर्यवर्द्धक, वमननाशक, शीतल, बलवर्द्धक और रसायन है।

विवरण। महुएके वृक्ष-वनमें और पर्वतोंमें बडे २ ऊंचे होतेहैं पत्ते-बदाम अथवा बडके पत्तोंकी समान होतेहैं। फूलमें शहदके समान गन्ध आतीहै और इसमेंसे शरीफेके समान बीज निकलते है, इसके फलोंमें तेल निकलता है।

पीलुनामानि।

पीलु शीतसहःस्रंसीधानीगुडफलस्तथा।
विरेचनफल शाखीश्याम करभवल्लभ॥

अर्थ-पीलु, शीतसह, स्रंसी, धानी, गुडफल, विरेचनफल, शाखी, श्याम, करभवल्लभ (पीलुफ, करभवल्लभ)

महापीलुनामानि।

अन्यश्चैवबृहत्पीलुर्महापीलुर्महाफल।

राजपीलुर्महावृक्षोमधुपीलु·पडाह्वय· ।

अर्थ–बृहत्पीलु, महापीलु, महाफल, राजपीलु महावृक्ष, मधुपीलु ।

संस्कृतभाषामें	पीलु, बृहत्पीलु ।
हिन्दीभाषामें	पीलु, वडापीलु ।
वंगभाषामें	पीलुगाछ ।
मराठीभाषाम	लघुपीलु, थोरपीलु, किकलेचा वृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	खारीजाल्य, मोटीजाल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	मिरीयेऊगनि, दोड्डपीलु ।
तैलङ्गीभाषामें	गोडुगुचेट्टु, पिन्नवरगोण्ड ।
तामिलीभाषामें	कोकु ।
देशीभाषामें	झल ।
इंग्रेजीभाषामें	मस्टर्डट्री ऑफ स्क्रीप्चर Mustard tree of scripure
लैटिन्भाषामें	सालवेडोरेरापासिका Salvadora persica
	सालवेडोराओलिओइडिस Salvadora Oleoides
फारसीभाषामे	दर्खतेमिस्वाक ।
अरवीभाषामें	ईराक ।

पीलुगुणा ।

लघुपीलुस्तुकटुक:कषायोमधुरोम्लक· । सर स्वादुर्दीपनश्चतिक्तस्तीक्ष्णश्चभेदक ॥ रक्तपित्तकरश्चोष्णोविदाहीचार्शगुल्मनुत् । स्निग्ध कफवातरक्तप्लीहानाहरुजतथा ॥ उदरंविषवाधांचनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ–लघुपीलु–चरपरा, कपेला, मधुर, खट्टा, सर, स्वादिष्ट, दीपन, कडवा, तीक्ष्ण, दस्तावर, रक्तपित्तकारक, गरम, दाहजनक, स्निग्ध, तथा ववासीर, गुल्म, कफ, वातरक्त, प्लीहा, आनाह, उदर, और विषके दोषोंको दूर करेहै ।

बृहत्पीलुगुणा ।

बृहत्पीलुस्तुमधुरोवृष्य पित्तविषापह· ।
आमहादीपनोरुच्यस्तैलचास्यलघुस्मृतम् ॥
कफवातरुजहन्तिचेतिपूर्वैर्बुधै·स्मृतम् । (नि०र०)

अर्थ-वृहत्पीलु-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनाशक, विषघ्न, आमनाशक, दीपन, रुचिकारी है। इसका तेल-हलका तथा कफ और वातका नाश करनेवाला है।

विवरण। पीलुके वृक्ष दो जातिके होते हैं एक छोटा और एक बडा, छोटे पीलूपर बहुत छोटे २ फल आते हैं और पकनेपर लाल पडजाते हैं, दूसरा बडा पीलू होता है, उसके फूल पीले और फल लाल और काले होते हैं।

अखरोटनामानि।

अखरोट पार्वतीय-फलस्नेहोगुडाशयः।
कीरेष्ट कर्पराल श्वस्वादुमज्ज पृथक्छद ॥

अर्थ-अखरोट, पार्वतीय, फलस्नेह, गुडाशय, कीरेष्ट, कर्पराल, स्वादुमज्ज, पृथक्छद, (रेखाफल, वृत्तफल, मदनाभफल, अक्षोट, अक्षोटक, अखोट, आखोट, आक्षोट, आक्षोड, कन्दराल और आस्फोटक)

संस्कृतभाषामें	अक्षोट।
हिंदीभाषामें	अखरोट।
वंगभाषामें	आकोट।
मराठीभाषामें	अक्रोड।
गुजरातीभाषामें	अखोड।
कर्णाटकीभाषामें	आखोट।
द्रा०	उव्वकाई।
इंग्रेजीभाषामें	वालनट्। Walnut बेल्गाम वालनट्। Belgaum walnut
लेटिन्भाषामें	एल्युराइटीस् ट्रायलोबा। Aleurites triloba
	एल्युराइटीस् मोल्युकाना। A. moluccana
फारसीभाषामें	चारमगज।
अरबीभाषामें	जोझअट्टयम् मगज, जोझगीर्द् गामचार।

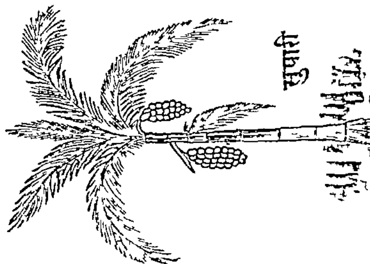
अस्य गुणाः।

अखरोटोमधुरः किञ्चिदम्लः स्निग्धश्वशीतलः। वीर्य्यवृद्धिकरश्चोष्णोरुचिदः कफपित्तकृत ॥ गुरु प्रियोऽनलकर कफकृन्मलबद्धकृत। वातपित्तक्षयवातहृद्रोगरक्तदोषकम् ॥ रक्तवातचदाहचनाशयेदितिकीर्तितम्। (नि० र०)

अर्थ-अखरोट-मधुर, किञ्चित् खट्टा, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्द्धक, गरम, रुचिदायक, कफपित्तकारक, भारी, प्रिय, बलवर्द्धक, कफकारक, मलवर्द्धक तथा वातपित्त, क्षय, वात, हृदयरोग, रुधिरदोष, रक्तवात और दाहको दूर करनेवाला है।

विवरण। इसके वृक्ष-काबुलकी ओर अधिकतासे होते हैं, फूल-सफेद रंगके छोटे और झुमखोंमें लगते हैं, पत्ते-गोल लम्बे और कुछ २ मोटे होते हैं, फल-गोल और मैनफलकी समान होता है, फलके भीतर मींग निकलती है। वह मींग बदामकी मींगकी समान मधुर होती है।

गुवाकनामानि।



गुवाक खपुर पूगीपूगश्चक्रमुकोऽस्यतु।
फलपूगीफलप्रोक्तमुद्वेगश्चतदीरितम्॥

अर्थ-गुवाक, खपुर, पूगी, पूग, क्रमुक, (घोण्टा, गूवाक, कपीतन, क्रमु, क्रमुकी, पूगवृक्ष, दीर्घपादप, दृढवल्कल, वल्कतरु, चिक्कण, अकोट, तन्तुसार, सुरजन, गोपदल, राजताल, छटाफल, करमट्ट) इसके फलको पूगीफल, मुद्वेग और घोण्टाफल, कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	पूगीफल।
हिन्दीभाषामें	सुपारी।
बंगभाषामें	शुपारी।
मराठीभाषामें	सुपारी।
गुजरातीभाषामें	शोपारी।
कर्णाटकीभाषामें	अडकेमर।

तैलिङ्गीभाषामें	पाककाया ।
ओत्क०	गुया ।
इंग्रेजीभाषामें	बिटलनट् पाम् । Betelnut Palm
लैटिनभाषामें	एरिका केटेचु । Areca catechu
फारसीभाषामें	पोपिल ।
अरबीभाषाम	फोफिल ।

अस्य गुणाः ।

पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायंकफपित्तजित् । मोहनंदीपनंरुच्य-मास्यवैरस्यनाशनम् ॥ आर्द्रंतद्गुर्वभिष्यन्दिवह्निदृष्टिहरं स्मृतम् । स्विन्नंदोषत्रयच्छेदिदृढमध्यंतदुत्तमम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सुपारी-भारी, शीतल, रूखी, कषेली, कफपित्तनाशक, मोहकारक, दीपन, रुचिकारक और मुखकी विरसताको दूर करेहै । कच्ची सुपारी भारी, अभिष्यन्दी, मन्दाग्निकारक, दृष्टिशक्तिनाशक, औटाकर बनाई हुई सुपारी, जिसका मध्यभाग दृढ होवे ऐसीसुपारी उत्तम और त्रिदोषनाशक है ।

पक्वपूगफलस्यगुणाः ।

पक्वन्तुवातलंरूक्षंभेदनंकफनाशनम् ॥

अर्थ-पक्की सुपारी-बादी, रूखी, दस्तावर और कफनाशक है ।

शुष्कफलस्यगुणाः ।

शुष्कमग्निकरंपूगंकषायंमधुरंपरम् ॥

अर्थ-सूखीसुपारी-अग्निवर्धक, कषेली और मधुर है ।

अपक्वपूगफलस्यगुणाः ।

गुर्वभिष्यन्दिमधुरंतोयधृग्वह्निनाशनम् ॥

अर्थ-कच्ची सुपारी-भारी, क्लेदजनक, मधुर और अग्निनाशक है ।

पूगस्य बाल्यमध्यादिभेदमाह ।

पूगमाद्यंविषंयोग्द्वितीयेभेदिदुर्जरम् ।
तृतीयादिषुपातव्यंसुधातुल्यंरसायनम् ॥

अर्थ-सुपारी-प्रथम अर्थात् कच्ची अवस्थामें विषकी समान अपकारी है । मध्यम अवस्थामें भेदक और दुर्जर है । और शुष्क अवस्थामें अमृतकी समान उपकारी और रसायन है । इस कारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाको छोड़ कर तृतीय अर्थात् सूखी सुपारी खानी चाहिये ।

अपिच ।

पूगीफलमोहकरस्वादुरुच्यकषायकम् । रूक्षसरचमधुरगुरुपथ्यचदीपनम् ॥ किञ्चित्कटुचसम्प्रोक्तंमुखवैरस्यनाशकम् । वमिक्लेदत्रिदोषघ्नमलवातकफतथा ॥ पित्तदुर्गंधतांचैवनाशयेदितिकीर्तितम् । आर्द्रपूगीफलप्रोक्तुवरंकंठशुद्धिकृत् ॥ अभिष्यन्दिसरचैवगुरुदृष्ट्याग्निमांद्यकृत । रक्तदोषमुखमलपित्तचामकफतथा ॥ आध्मानमुदर चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् । शुष्कपूगीफलरुच्यपाचकंरेचकतथा ॥ स्निग्धचवातलचैवकण्ठरुग्घ्नत्रिदोषनुत । पर्णं विना केवलतुभक्षितशोफपाण्डुकृत् ॥ पक्वचार्द्रपूगफलछेदकचत्रिदोषहृत । शुष्कपक्वीकृततत्तुस्निग्धवातकरमतम् ॥ त्रिदोषनाशकचैवतद्बालसर्वदोषहृत् ।

अर्थ-सुपारी साधारण-मोहकारक, स्वादिष्ठ, रुचिजनक, कषेली, रूखी, सारक, मधुर, भारी, पथ्य, दीपन, किञ्चित् चरपरी, मुखकी विरसताको दूर करनेवाली तथा वमन, क्लेद, त्रिदोष, मल, वात, कफ, पित्त और दुर्गंधको दूर करनेवाली है। कच्ची सुपारी-कषेरी, कंठशोधक, अभिष्यन्दि, सारक, भारी, दृष्टिशक्तिनाशक, मंदाग्निकारक तथा रक्तविकार, मुखमल, पित्त, आम, कफ, आध्मान और उदररोगका नाश करैहै। सूखी सुपारी-रुचिकारी, पाचक, रेचक, स्निग्ध, बादी तथा कंठरोग और त्रिदोषका नाश करनेवाली है। विना पानके सुपारी खानेसे सूजन और पाण्डुरोग उत्पन्न होताहै। पकाईहुई कच्ची सुपारी-छेदक और त्रिदोषनाशक है। पकाई हुई सूखीसुपारी-स्निग्ध, वातकारक और त्रिदोषनाशक है। कोमलसुपारी-सर्वदोषनाशक है।

आम्रोद्भवपूगफलपाकेतुमधुरमतम्। किञ्चिदम्लञ्चतुवरकफवातविनाशकम् । मुखजाड्यकरचैवमुनिभि परिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-आन्ध्रदेशमें उत्पन्न होनेवाली सुपारी-पचनेमें मधुर, किञ्चित अम्ल, कषेली तथा कफवातनाशक और मुखको जडतादायक है।

चम्पावर्तीभवंपूगंपाचनंचाग्निदीपनम् ।
बलप्रदंरसाढ्यञ्चकफनाशकरंमतम् ॥

अर्थ-चम्पापुरकी सुपारी-पाचक, अग्निप्रदीपक, (बलवर्द्धक) रसाढ्य और कफनाशक है ।

गंठसंज्ञपूगफलंरुच्यंचाग्निप्रदीपनम् ।
कटुकंतुवरंचोष्णंपित्तलंमलरोधकृत् ॥

अर्थ-गंठनामवाली सुपारी-रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, चरपरी, कपैली, गरम, पित्तजनक और मलरोधक है ।

वल्गुलग्रामजंपूगंरुच्यंचाग्निप्रदीपनम् ।
पाचनंचत्रिदोषघ्नंमलस्तम्भाममेदहृत् ॥

अर्थ-वल्गुलग्राममें उत्पन्न होनेवाली सुपारी-रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, पाचक, त्रिदोषनाशक तथा मलस्तम्भ, आम और मेदनाशक है ।

चन्दापुरभवंपूगंरसेचमधुरंमतम् ।
कटुकंतुवरंरुच्यंस्वादुचाग्निप्रदीपनम् ॥
पाचनंमुनिभिःप्रोक्तंकफनाशकरंमतम् ।

अर्थ-चन्दापुरीसुपारी-रसमें मधुर, चरपरी, कपैली, रुचिकारी स्वादु, अग्निप्रदीपक, पाचक और कफनाशक है ।

गुहागरोद्भवंपूगंमधुरंतुवरंलघु ।
कटुकंद्रावकंचैवपाचकंविशदंमतम् ॥
मलस्तम्भंतथाध्मानंवातंचैवविनाशयेत् ।

अर्थ-गुहागरीसुपारी-मधुर, कपैली, हलकी, चरपरी, द्रावक, पाचक, विशद तथा मलस्तम्भ और आध्मान, वातनाशक है ।

नैलवद्ग्रामसंभूतंक्रमुकंकण्ठशुद्धिकृत् ।
पाचनंमधुरंरुच्यंस्वरकान्तिकरंलघु ॥
त्रिदोषनाशकंचैवरसाम्लंचनिगद्यते ।

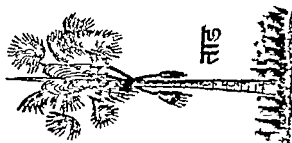
अर्थ-नैलवद्ग्राममें उत्पन्न होनेवाली सुपारी-कण्ठशोधक, पाचक, मधुर, रुचिकारक, स्वरके, कान्तिकारक, हलकी त्रिदोषनाशक और खट्टी है ।

पूगवृक्षस्यनिर्य्यासोमोहन शीतलोगुरु ।
पाकेचोष्णःपित्तलश्चपटुश्चाम्ल प्रकीर्त्तित ॥
वातनाशकरश्चैवमुनिभि परिकीर्तितः ।

अर्थ-सुपारीके पेडका गोंद-मोहजनक, शीतल, भारी, पाकके समय उष्ण, पित्तकारक, चरपरा, खट्टा और वातनाशकहै ।

विवरण । सुपारीके वृक्ष-ताड और नारियलकी जातिके लम्बे २ बागोंमें बहुत होतेहैं, इसका वृक्ष खम्भके समान सीधा चलाजाताहै, इसके पत्ते-बडे २ नारियलकेसे होतेहैं, इसके ऊपर बडे २ बेरके शिरके सदृश फल कुछ लम्बाईलिये गोल २ आतेहैं, उसको छीलनेमें भीतरसे सुपारी निकलतीहै, सुपारीकी अनेक जातिहैं, जिहाजी, श्रीवर्धनी, मानगचन्दी, और अनेक प्रकारकी होतीहै ।

तालनामानि ।



तालस्तुलेख्यपत्र स्यात्तृणराजोमहोन्नत ॥

अर्थ-ताल, लेख्यपत्र, तृणराज, महोन्नत, (तरु, भूमिपिशाच, दीर्घतरु, द्रुमश्रेष्ठ, द्रुमेश्वर, तालद्रुम, पत्री, दीर्घस्कन्ध, ध्वजद्रुम, तृणराज, मधुरस, मदाढ्य, दीर्घपादप, चिरायु, तरुराज, दीर्घपत्र, गुच्छपत्र, आसवद्रु, करपत्रत्रान, दीर्घद्रु, तन्तुनिर्यास, तन्तुगर्भ, शतपत्रा)

श्रीतालनामानि ।

श्रीतालोमधुतालश्चलक्ष्मीतालोमृदुच्छद ॥

अर्थ-श्रीताल, मधुताल, लक्ष्मीताल, मृदुच्छद (विशालपत्र, लेग्याड, रामलिरपदल, शिगलपत्रक, याम्योद्भूत)

हिन्तालनामानि ।

हिन्ताल स्थूलतालश्चवल्कपत्रोवृहद्दल ॥

अर्थ-हिन्ताल, स्थूलताल, वल्कपत्र, वृहद्दल (पुगरोट, स्थिराग्निक,

हिमशानक, हिन्ट च, स्पिनग, [illegible], साम्परांनिक गर्भनाशी, मीन-ताल, भीदग, बहुकन्दक, कल्नार, तृदेपार)

संस्कृतभापामें	ताल, श्रीताल, हिन्ताल।
हिन्दीभापामें	ताड, श्रीताड, हिन्ताल।
वंगभापामें	ताल, श्रीताल, हेंताल।
मराठीभापामें	ताड कटिताड, कालाताड।
गुजरातीभापामें	ताड, श्रीताल, हिन्ताल।
तामिलीभाषामें	पनम।
इंग्रेजीभापामें	पालमाईपाम Palmyra palm
लैटिन्भापामें	बोरेसस फ्लेबेलिफोर्मिस Borassus Flabelliformis
फारसीभापामें	ताल।
अरबीभापामें	नाग।

तालगुणा।

तालवृक्षस्तुमधुर शीतलोमदकृद्गुरु । पुष्टिकृच्छुक्रकफ-कृन्मेदकृद्बलकारक ॥ वृष्यश्चसारक पित्तदाहशोपविप-श्रमान्। विपकुष्टकृमीरक्तदोपवाताश्चनाशयेत ॥ (नि०र०)

अर्थ-तालवृक्ष-मधुर, शीतल, मदकारक, भारी, पुष्टिकारक, शुक्रजनक कफकारक, मेदकारक, बलवर्द्धक, वीर्यजनक, सारक, तथा, पित्त, दाह, शोप, विप, श्रम, विपकुष्ठ, कृमि, रुधिरदोप और वातका नाश करने-वाला है।

अस्य फलगुणा।

वातहावृंहणोबल्य' क्रिमिहाकुष्टनाशन.।
रक्तपित्तहर स्वादुस्ताल सप्तगुणान्वित ॥ (रा० नि०)

अर्थ-ताडका फल-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, क्रिमिनाशक, कुष्ठनाशक, रक्तपित्तहारक और स्वादुरसवाला है।

[illegible]

आममस्यफलप्रोक्तस्निग्धम्न [illegible] । मद [illegible]
कबल्यशीतलधातुवर्द्धकम ॥ [illegible]
त्तिकरस्मृतम । [illegible]
तक्षयरक्तदोपना [illegible]

अर्थ-ताडका कच्चाफल-स्निग्ध, स्वादिष्ट, भारी, मलरोधक, बलकारक, शीतल, धातुवर्द्धक, वीर्य्यजनक, तृप्तिकारक, मांसवर्द्धक, कफकारक तथा वात, श्वास, रक्तपित्त, व्रण, दाह, क्षत, पित्त, क्षय और रुधिरके दोषोंको दूर करनेवाला है ।

अथ पक्वफलगुणाः ।

पक्वतालफलपित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ।
दुर्जरबहुमूत्रचतन्द्राभिष्यन्दशुक्रदम् ॥

अर्थ-ताडका पक्का फल-रक्तपित्तकारक, कफकारक, कठिनतासे पचनेवाला, बहुमूत्रजनक, तन्द्राको उत्पन्न करनेवाला, अभिष्यन्दि और शुक्रदायक है ।

अथ आर्द्रफलबीजगुणाः ।

आर्द्रतुफलबीजं चमूत्रलशीतलस्मृतम् ।
रसेपाकेचमधुरंकफकृद्वातपित्तहृत् ॥

अर्थ-ताडके कच्चे फलके बीज-मूत्रजनक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक और वातपित्तहारक है ।

अथ फलमज्जागुणाः ।

तालमज्जातुतरुणाकिंचिन्मदकरीलघु ।
श्लेष्मलावातपित्तघ्नासस्नेहामधुरासरा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तरुण ताडकी मींग-किञ्चित् मदकारक, हलकी, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्नेहयुक्त, मधुर और सारक है ।

तालफलोद्भवजलगुणाः ।

तालाम्बुपित्तजिच्छुक्रस्तन्यवृद्धिकरंगुरु ॥ (रा० व०)

अर्थ-ताडके फलका जल-पित्तनाशक, शुक्रवर्द्धक, भारी और स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करनेवाला है ।

तालमण्डिकागुणाः ।

श्लेष्मदोषकरीवृष्यावातलाश्लेष्मवर्द्धिनी ।
कासहृल्लासविध्वंसकारिणीतालमण्डिका ॥ (आ०स०)

अर्थ-ताडी-कफकारक, वीर्यवर्द्धक वादी, श्लेष्मवर्द्धक, कासनाशक और उबकाईको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

तालजंतरुणंतोयमतीवमदकृन्मतम् ।
अम्लीभूतंतदातुस्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ॥

अर्थ-नवीन ताडी-अत्यन्त मदकारक है और खट्टी होनेपर पित्तकारक और वातहारक है ।

तालप्रलम्बगुणाः ।

तथातालप्रलम्बश्चरूक्षंक्षतरुजापहम् ।

अर्थ-तालप्रलम्ब-रूक्ष और क्षतरोगनाशक है ।

तालपञ्जरगुणाः ।

तालवृक्षस्यशीर्षस्थ पजरोधातुवर्द्धनः ।
वातपित्तहरश्चैववस्तिशुद्धिकरः परः ॥

अर्थ-ताडके मस्तकका पजर-धातुवर्द्धक, वातपित्तनाशक और वस्तिशोधक है ।

तालवृन्तवायुगुणाः ।

तालवृन्तभवोवातस्त्रिदोषशमनोलघुः । राजवल्लभ

अर्थ-ताडके पत्तेकी पवन-त्रिदोषनाशक और हलकी है ।

तालमूलगुणाः ।

तन्मूलंतुभवेत्स्वादुपाकेचरक्तपित्तहम् ।

अर्थ-ताडकी जड-स्वादिष्ठ, पचनेमें स्वादिष्ठ और, रक्तपित्तनाशक है ।

श्रीतालगुणाः ।

श्रीतालोमधुरोत्यन्तमीषच्चैवकषायकः ।
पित्तजित्कफकारीचवातमीषत्प्रकोपयेत् ॥

अर्थ-श्रीताल-अत्यन्त मधुर, किंचित्कषैला, पित्तनाशक, कफकारक और कुछ २ वातको कुपित करनेवाला है ।

विवरण-ताडके बडे२ वृक्ष होते हैं, पत्ते बडे बडे लम्बे खजूरकी भांतिकी समान फलीके लम्बे चौडे चार चार फुटके होते हैं, इनके पत्ते आदि विस्मनेर पदार्थ बनाये जाते हैं । पहिले सदा ताडके पत्तोंपर समस्त ग्रन्थ लिखे जाते थे ताडकी नर और नारी यह दो जाति हैं नर जातिके वृक्षमें फल नहीं आते और नारीके वृक्षमें फल लगते हैं । नरमें शाखा नहीं होती । वृक्षके रसको ताडी कहते हैं ।

हिन्तालगुणा ।

हिन्तालोमधुराम्लश्चकफकृत्पित्तदाहनुत् ।
श्रमतृष्णापहारीचशिशिरोवातदोषनुत् ॥ (रा नि)

अर्थ-हिन्ताल-मधुर, अम्ल, कफकारी, पित्तनाशक, दाहनाशक, शीतल, वातविकारविनाशक तथा श्रम और तृषाको दूर करे है ।

कपित्थनामानि ।



कपित्थस्तुदधित्थ स्यात्तथापुष्पफलःस्मृतः ।
कपिप्रियोदधिफलस्तथादन्तशठोऽपिच ॥

अर्थ-कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल, दन्तशठ (ग्राही, मन्मथ, पुष्पफल, कपित्थ, कवित्थ, देवपादाढ्य, मालूर, मङ्गल्य नीलमल्लिका, ग्राहिफल, चिरपाकी, ग्रन्थिफल, कुचफल, कपीष्ट, गन्धफल, दन्तफल, करभवल्लभ, काठिन्यफल, करञ्जफलक, अम्लसस्य)

संस्कृतभाषामें कपित्थ ।
हिन्दीभाषामें कैथ ।
वङ्गभाषामें कयेत्बेल, कत्बेल ।
मराठीभाषामें कँवठ, कविठ ।
गुजरातीभाषामें कोंट, काठ, कोटवडी ।
कर्णाटकीभाषामें बेललु ।
तैलङ्गीभाषामें पलागाकाया ।

इंग्रेजीभाषामें वुडएपल एलिफन्टएपल । Wood apple Elephant apple
लेटिन्भाषामें फेरोनिया एलिफेंटिनम् । Feronia Elephantnum

कपित्थफलसाधारणगुणाः ।

कपित्थमम्लमधुरं कषायं विशदं गुरु ।
कासातिसारहृद्रोगच्छर्दिकफरुजापहम् ॥ (आ० स०)

अर्थ-कैथ-खट्टा, मधुर, कषेला, विशद, भारी तथा खाँसी, अतिसार, हृदयरोग, वमन और कफरोगको दूर करे है ।

अपक्वकपित्थस्य गुणाः ।

कपित्थमामकण्ठघ्नं विषघ्नं ग्राहि वातलम् ।
मधुराम्लकषायत्वात्सौगन्ध्याच्च रुचिप्रदम् (रा०)

अर्थ-कच्चा कैथ-कण्ठनाशक, विषनाशक, मलरोधक, वातवर्द्धक । यह मधुर, अम्ल कषाय और सुगंधयुक्त होनेके कारण रुचिकारक है ।

पक्वकपित्थस्य गुणाः ।

तदेव पक्वं दोषघ्नं गुरु ग्राहि विषापहम् । (राज)

अर्थ-पका कैथ-त्रिदोषनाशक, भारी, ग्राही और विषविनाशक है ।

अन्यच्च ।

कपित्थं मधुरं चाम्लं तुवरं ग्राहि शीतलम् । वृष्यं तिक्तं पित्तवातव्रणनाशकरं मतम् ॥ फलमामकपित्थस्य ग्राहि चोष्णं च रूक्षकम् । लघ्वम्लं तुवरं चैव लेखनं वातपित्तकृत ॥ जिह्वाजाड्यकरं रुच्यं विषस्रं कफप्रणुत् । तत्पक्वं रुचिदं चाम्लकषायं ग्राहि माधुरम् ॥ कण्ठशुद्धिकरं शीतं गुरु वृष्यं च दुर्जरम् । श्वासक्षयास्रकरुजं वान्तिवातश्रमं तथा ॥ हिध्मानं च विषं ग्लानिं तृषां दोषत्रयं तथा । हिक्काकासनाशं च तिरीजं च हृद्रयथापहम् ॥ शीर्षस्य यथा विषं नैव विसर्पं नैव नाशयेत् । बीजतैलं तु तुवरं ग्राहकं स्वादु पित्तनुत् ॥ आखोर्विषं कफं नैव हिक्कां वान्तिं च नाशयेत् । विषनाशकरं पुष्पं पर्णं वान्त्यतिसारनुत् ॥ हिक्कां नाशयतीत्येवं प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः । (नि० र०)

अर्थ-कपित्थ-मधुर, खट्टा, कषेला, ग्राही, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कडवा तथा पित्त और वातका नाश करे है। इसका कच्चा फल-ग्राही, गरम, रूखा, हलका, खट्टा, कषेला, लेखन तथा वात, पित्त और जिह्वाको जडता कारक है, रुचिजनक तथा विष, ज्वर और कफका नाश करे है, इसका पक्का फल-रुचिकारक, खट्टा, कषेला, ग्राही, मधुर, कण्ठशोधक, शीतल, भारी, वीर्यवर्द्धक, और दुर्जर है। तथा श्वास, क्षय, रक्तदोष, वमन, वायु, श्रम, विष, ग्लानि, तृषा, त्रिदोष, हुचकी और खाँसीको दूर करे है, इसके बीज हृदयरोग, मस्तकशूल, विष, विसर्प इनको दूर करेहै, इसके बीजोंका तेल-कषेला, ग्राही, स्वादु, पित्तनाशक तथा भूँसेका विष, कफ, हुचकी और वमनको दूर करे है, इसके फूल-विषनाशक हैं। इसके पत्ते-वमन, अतिसार और हुचकीको दूर करे हैं।

विवरण। इसके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानमें पाये जाते हैं, फल नेलसे छोटे और सफेद रंगके लगते हैं, पत्ते छोटे और चिकने होतेहैं, फूल छोटे और सफेद रंगके आते हैं, वर्षाऋतुमें इसकी कली खिलती है, फिर क्रमसे फलके आकार परणवती है, शीतऋतुमें फल पकजाते हैं, कैथमें एक आश्चर्यकारक गुण है कि, कोई हाथी कैथको खालेवे उस हाथीके पेटमें कैथका सार भाग अर्थात् गूदा रह जायगा और गूदेरहित अखण्डित कैथ मलके साथ निकल आवेगा।

कमरखनामानि।



कारुक कर्म्मरग स्याच्छिरालस्तुशुकप्रिय ।

अर्थ-कारुक, कर्म्मरग, शिराल, शुकप्रिय (गृहद्रुल, रुनाकर, कर्म्मार, कर्म्मरक, पीतफल, कर्म्मर मुद्गर, धाराफल, कर्म्मारक)

हिन्दीभाषामें पानीआमला।
बंगभाषामें पानीआमला।
मराठीभाषामें पाणआवळे।
गुजरातीभाषामें पाणिआवला।
इंग्रेजीभाषामें फ्लाकुर्श्या काटाफ्राक्टा। Flacourtia Cataphracta
फ्लागेमोंचिआई। F. Romontchi

अन्य गुणाः।

प्राचीनामलकं दोषत्रयजिज्ज्वरघाति च ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पानीआमला-त्रिदोषनाशक और ज्वरको दूर करे है।

अपिच।

पानीयामलकं ग्राहि स्वाद्वम्लं मुखशोधनम्। (रा०नि०)

अर्थ-पानीआमला-मलरोधक, स्वादु, अम्ल और मुखशोधक है।

अन्यच्च।

"प्राचीनामलकं रुच्यं स्निग्धं गुरु गरापहम्।
वातघ्नं पित्तकफहृत्तृष्णगुल्मसमीरजित्" ॥ (म०पा०)

अर्थ-पानीआमला-रुचिकारी, स्निग्ध भारी, विषनाशक, वात, पित्त और कफको दूर करनेवाला, भारी और वातहारी है।

अपिच।

पर्णामलकं मधुरं रुचिप्रदं गुरु चोष्णम्।
विषत्रिदोषशमनं कफतृष्णावातहृत्प्रोक्तम् ॥
सुतरां तदेव पक्कं कफपित्तकरं विशेषतः प्रोक्तम् ॥ (नि०र०)

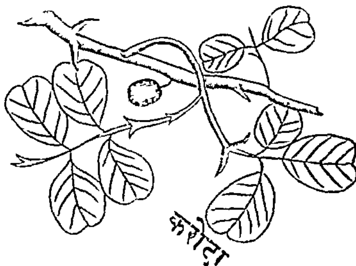
अर्थ-पानीआमला-मधुर, रुचिदायक, भारी, गरम, त्रिदोषनाशक तथा कफ, तृषा और वातका नाश करनेवाला है। यही पकाहुआ विशेष करके कफ और पित्तकारक है।

विवरण-पानीआमलेके वृक्ष जलाशयके समीप होते हैं, इसमें कांटेभी होते [illegible] और फल लाल लाल बेरके समान फाडिया होते हैं।

करमर्दकनामानि।

करमर्दो ऽविनेक्षुश्चापकाम्लः करमर्दकः।
तस्मात्लघुफला या तु सा ज्ञेया करमर्दिका ॥

अर्थ-करमर्द, वनेक्षुद्रा, कराम्ल, करमर्दक, (कृष्णपाकफल, अविम, सुषेण, करामर्द, कृष्णपाक, पाकफल, कृष्णफल, पाककृष्ण, फल, कृष्णफलपाक, पाककृष्ण, फलकृष्ण, वनालय, वनालक, कराम्बुक, कणचूक, बोल, वश, करमर्दी, कराम्लक, पाणिमर्द, कण्टकी, अविघ्न, सुपुष्प, दृढकण्टक, जातिपुष्प, क्षीरफल, डिम-डिम, गुच्छी, क्षीरी, बहुदल) इससे छोटीको करमर्दिका कहतेहैं।



संस्कृतभाषामें करमर्दक।
हिंदीभाषामें करौंदा, करौंदा।
बंगभाषामें करमचा।
मराठीभाषामें गोडाकरवंदा, मड्डकरवंदा।
गुजरातीभाषामें करमदी, करमदा।
कर्णाटकीभाषामें करिजिगे।
तैलिङ्गीभाषामें वाका, पारिकचेट्टु।
इंग्रेजीभाषामें जास्मिन्फ्लावर्डकेरिसा। Jasmine flowered carissa
लैटिन्भाषामें केरिसा कोरदास Carissa Corandas

अस्य गुणाः।

करमर्दद्वयं त्वाममम्लं गुरु तृषाहरम्।
उष्णं रुचिकरं प्रोक्तं रक्तपित्तकफप्रदम्॥
तत्पक्वं मधुरं रुच्यं लघु पित्तसमीरजित्। (भा०प्र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके करोंदे कच्चे-खट्टे, भारी, तृषानाशक, गरम, रुचिकारक तथा रक्तपित्त और कफकारक हैं। वही पके, मधुर, रुचिकारी, हल्के तथा पित्त और वातको जीतेहैं ।

अन्यच्च ।

करमर्दपिपासाघ्नमम्लंरुच्यचपित्तकृत । (रा०व०)

अर्थ-करोंदा-पिपासानाशक, खट्टा, रुचिकारी और पित्तकारीहै ।

अपिच ।

करमर्दफलंचामंतिक्तंचाग्निप्रदीपकम् । गुरुपित्तकरंग्राहि चाम्लमुष्णंरुचिप्रदम् ॥ रक्तपित्तकफंचैववर्द्धयेत्तृड्विनाशकम् ॥ तत्पक्वंमधुरंरुच्यंलघुशीतंचपित्तहम् । रक्तपित्तं त्रिदोषंचविषवातंचनाशयेत । तच्छुष्कंपक्वसदृशगुणंज्ञेयविचक्षणे ॥ अत्यम्लस्यगुणाश्चैवज्ञेयाआमकराम्लवत ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारके कच्चे करोंदे-कडवे, अग्निप्रदीपक, भारी, पित्तकारी, मलरोधक, खट्टे, गरम, रुचिदायक, रक्तपित्तकारक, कफजनक और तृषानाशक हैं। वही दोनो पकेहुये-मधुर, रुचिकारी, हलके, शीतल तथा पित्त, रक्तपित्त, त्रिदोष, विष और वातविनाशक हैं । सूखे करोंदेके गुण पके करोंदेकी समान जानने और अम्लकरोंदेके गुण कच्चेकी समान जानने ।

अन्यच्च ।

करमर्दफलंचार्द्रमम्लंपित्तकफप्रदम् ।
भेदनंचोष्णवीर्य्यंचवातप्रशमनंगुरु ॥
पक्वंतुकेवलपित्तेचतन्मूलंकृमिनुत्परम् । (शो०नि०)

अर्थ-कच्चाकरोंदा-खट्टा, पित्तजनक, कफकारक, भेदक, उष्णवीर्य, वातनिवारक और भारी है । पका करोंदा-पित्तनाशक है । इसकी जड कृमिको हरनेवाली और सारक है ।

विवरण-करोंदेके वृक्ष बागोंमें पडतेहैं, इसमें सफेद और गुलाबी फूल जुहीके समान आतेहैं, फलोंके गुच्छे बेरोंके समान लगतेहैं, परन्तु वे गोल होतेहैं, एक तरफ लाल और सफेदीपर अत्यन्त मनोहर होते हैं, इनका अचार आदि और पकनेपर काले पडजाते हैं ।

बदरीनामानि ।

बदरीदृढबीजाचकण्टकीसुफलापिच ।
नखीव्याघ्रनखीघोण्टाकोलीगुडफलापिच ।

अर्थ–बदरी, दृढबीजा, कण्टकी, सुफला, नखी, व्याघ्रनखी, घोण्टा, (कोली, गुडफला, कोला, कोली, कोलि, कुवली)

बदरीफलनामानि ।

फलंतुबदरकोलंसौवीरफेनिलकुहम् ।
कर्कन्धु कोलिकुवलपिच्छलाबदरीच्छदा ।

अर्थ–बदर, कोल, सौवीर, फेनिल, कुह, कर्कन्धु, कोलि, कुवल, पिच्छला, बदरीच्छदा, (सौवीरक, वालेष्ट, फलशैशिर, वृत्तफल, घोण्टा गोपघोण्टा, हस्तिकोलि, गोपघोण्टी, शृगालकोलि, बादिर, गूढफल, दृढबीज, वृत्तफल, कण्टकी, वक्रकण्टक, सुरस, सुफल, स्वच्छ, कर्कन्धू, बदर, कोली, कोला, कुवली, स्वादुफला, गृध्रनखी, कुवल (:), पिच्छिल, स्वादुफल, कुलक, कोकिल, अजामिया, उभयकण्टक)

संस्कृतभाषामें	बदरी, बदर, कर्कन्धू, कोल, सौवीर, हस्तिकोलि,
हिंदीभाषामें	बेरीका पेड, बेर, छोटेबेर, पेमटी, बडे बेर ।
बंगभाषामें	कुलगाछ, कुलफल, बडकुलगाछ, बरुई, शियाकुल ।
मराठीभाषामें	बोरीचें झाड, बोर, रायबोर, लघुबोर ।
गुजरातीभाषामें	मोटीबोरडी, नानीबोडी ।
कर्णाटकीभाषामें	बेरलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	रेगुचेट्टु, रव ।
औत्क०	कुदि ।
तामिलीभाषामें	रेयन्ति ।
इंग्रेजीभाषामें	जुजब । Jujub
लैटिन्भाषामें	झिझिफस जुजुबा । Zizyphus jujuba
फारसीभाषामें	कुनार ।
अरबीभाषामें	मीदरनबक ।

बदरलक्षणानिगुणाश्च ।

पच्यमानसुमधुरसौवीरबदरमहत । सौवीरबदरशीतभेदन-गुरुशुक्रलम् ॥ बृंहणपित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवारणम् । सौ-

वीगच्छघुसंपक्वमधुरंकोलमुच्यते ॥ कोलन्तुबदरंग्राहि-
रुच्यमुष्णञ्चवातहृत । कफपित्तकरञ्चापिगुरुसारकमीरित-
म ॥ कर्कन्धूःक्षुद्रबदरंकथितंपूर्वसूरिभिः । अम्लंस्यात्क्षु-
द्रबदरंकषायंमधुरंमनाक् ॥ स्निग्धंगुरुचतिक्तंचवातपित्ताप-
हंस्मृतम्।शुष्कंभेद्यग्निकृत्सर्वंलघुतृष्णाक्लमास्रजित॥(भा प्र.)

अर्थ–बड़ा और पककर मीठा पड़गया हो ऐसे बेरको सौवीर कहते हैं, सौवीरबेर–शीतल, भेदक, भारी, शुक्रजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, क्षय और तृषानिवारक है । सौवीरसे छोटे अर्थात् सामान्य बेर और पककर मीठे होगये हों ऐसे बेरोंको कोल कहते हैं । कोलबेर–दाह जनक, रुचिकारक, गरम, वातनाशक, कफपित्तकारक, भारी, और सारक हैं । छोटे बेरोंको कर्कन्धु कहते हैं । कर्कन्धु–खट्टे, कसैले, मधुर, स्निग्ध, भारी, कड़वे और वातपित्तनाशक हैं । सर्वप्रकारके सूखेहुए बेर–भेदक, अग्निजनक, हल्के तथा तृषा, श्रम और रुधिरदोषोंको दूर करते हैं ।

अन्यच्च ।

कर्कन्धु कोलबदरमामपित्तकफावहम् । पक्वंपित्तानिलहरं
स्निग्धंसमधुरंसरम् ॥ तच्छुष्कंकफवातघ्नंनचपित्तेविरु-
ध्यते । पुराणंतृट्प्रशमनंश्रमघ्नंदीपनंलघु ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ–छोटे, बड़े और सामान्य कच्चे बेर–पित्त और कफवर्द्धक हैं वही पके–पित्तवातनाशक, स्निग्ध, मधुर और सारक हैं, वही सूखे–कफ और वातनाशक हैं और पित्तवर्द्धक नहीं हैं और वही पुराने तृषा–और श्रमनाशक हैं, अग्निदीपक और लघुपाकी हैं ।

अन्यच्च ।

अपक्वश्लेष्माणनिचयनिजातविनुते ततोमध्यावस्थ रि-
मपिमधुराम्लपवनहृत । सुपक्वपित्तश्रममदवमिच्छेदि
बलद मरुतृष्णाजित्तद्धनदरमश्नन्तिधनिन ॥

अर्थ–अपक्व अर्थात् कच्चे बेर–कफकारक और वातनिवारक हैं । मध्यम अवस्थाके बेर–किंचित् मधुर, अम्ल और वातनाशक हैं । पके बेर–पित्तनाशक, श्रमहारक, वमननिवारक बलवर्द्धक, सारक और तृषानाशक हैं ।

अपिच ।

बदरीशीतलारूक्षातिक्तापित्तकफापहा । फलमस्यास्तुमधुरतुवरचाम्लमीरितम् ॥ तच्चपक्कतुमधुरमम्लमुष्णकफप्रदम् । ग्राहकलघुरुच्यञ्चवाय्वतीसारशोपहृत् ॥ रक्तश्रमहरप्रोक्तपंडितैश्चरकादिभि· ॥ (नि० र०)

अर्थ–वेरीका वृक्ष–शीतल, रूक्ष, कडवा तथा पित्त और कफनाशक है। इसका कच्चा फल–मधुर, कषेला और खट्टा है। इसका पक्का फल मधुर, खट्टा, गरम, कफकारक, मलरोधक, हल्का रुचिकारी तथा वात, अतिसार, शोष, रुधिरदोष और श्रमको हरनेवाला है।

हस्तिकोलिगुणा ।

गजकोलदुर्जरस्याच्छीतस्वादुगुरुस्मृतम् ।
ग्राहकलेखनस्निग्धपौष्टिकमलवर्द्धकृत् ॥
आध्मानकारकचैवपित्तवातविनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–हस्तिकोलिवेर–दुर्जर, शीतल, स्वादु, भारी, ग्राही, लेखन, स्निग्ध, पुष्टिकारक, मलवर्द्धक, आध्मानकारक तथा पित्त और वातनाशक है।

राजबदरगुणा ।

राजबदर·सुमधुर·शिशिरोदाहार्तिपित्तवातहर ।
वृष्यश्चवीर्य्यवृद्धिकुरुतेशोपश्रमहरते ।

अर्थ–राजवेर–मधुर, शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, वातनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य तथा शोष और श्रमनाशक है।

भूबदरीगुणा ।

भूबदरीमधुराम्लाकफवातविकारहारिणीपथ्या ।
दीपनपाचनकर्त्रीकिञ्चित्पित्तास्रकारिणीरुच्या ॥(नि०र०)

अर्थ–झडबेर–मधुर, आम्ल, कफनाशक, वातविकारनिवारक, पथ्य, दीपन, पाचक, रुचिकारक और किंचित् रक्तपित्तको कुपित करै है।

बदरीफलमज्जागुणा ।

बदरीफलमज्जातुतुवरामधुरामता ।

शुक्रदाबलदावृष्याकासश्वासतृपापहा ।
वातघ्नीछर्दिदाहघ्नीपित्तहामुनिभिर्मता ॥ (नि० र०)

अर्थ-बेरकी मींग-कसेली, मधुर, शुक्रजनक, बलवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक तथा खाँसी, श्वास, तृषा, वात, वमन, दाह और पित्तको दूर करेहै ।

बदरस्यपत्रगुणाः ।

बदरस्यपत्रलेपोज्वरदाहविनाशनः ।
त्वचाविस्फोटशमनीबीजंनेत्रामयापहम् ॥(रा० नि०)

अर्थ-बेरके पत्तोंका लेप-ज्वर और दाहका नाशकरे है । बेरकी छाल फोडेको दूर करनेवाली है । बेरके बीज अर्थात् गुठलीकी मींग नेत्ररोगनिवारक है । बेरके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानके स्थानोंमें प्रसिद्ध है ।

विवरण-बेरके वृक्ष अनेक जातिके होतेहैं और यह सब स्थानोंमें होतेहैं, इसके वृक्ष कांटेदार मध्यम भागके होतेहैं, पत्ते छोटे और गोल कुछेक लम्बाई लिये होतेहैं, फूल गोलहोंमें छोटे २ सफेद रंगके होतेहैं फल अपनी २ जातिके आतेहैं छोटे बडे लम्बे, गोल, पेवन्दी, कठा, पोंदा और रामपुरी इत्यादि । एक झरबेर कहलातेहैं उनके क्षुप छोटे २ पृथ्वीपर फैले हुए होतेहैं उनका एक बनही है जिसका नाम बदरिकाश्रमहै, और दिल्लीसे आगे बढ कर जो देखा तो कोसोंतक बेरकेही वृक्ष देखनेमें आये, उनहीं क्षुपोंको काट काटकर और उनके पत्ते झाड झाडकर बडे बडे ऊंचे ढेर लगादेतेहैं, उनको पाला कहतेहैं उसीसे गाय भैसोंकी उदरपूरता होतीहै इन क्षुपोंपर छोटे २ बेरभी लगतेहैं प्रथम हरे होतेहैं मध्यम अवस्थामें पीले और अंतममें लाल पडकर सुपक्व होतेहैं ।

विकङ्कतनामानि ।

विकङ्कतःस्रुवावृक्षोग्रन्थिलःस्वादुकण्टकः ।
सएवयज्ञवृक्षश्चकण्टकीव्याघ्रपादपि ॥

अर्थ-विकङ्कत, स्रुवावृक्ष, ग्रन्थिल, स्वादुकण्टक, यज्ञवृक्ष, कण्टकी, व्याघ्रपाद (वैकङ्कत वृतिका कण्टकारी, स्रुवावृक्ष, किंकिणी, मण्डल, पण्डपत्र, गुण्डार, मधुपर्णी स्वादुकण्टक, यज्ञाङ्ग, गोपघोण्टा, स्रुवद्रुम, मृदुफल, दन्तकाष्ठ, पवित्र, ब्रह्मपादप, पिण्डार, हिमक, पूतकिङ्किणी, पृथुबीज, क्षुधाराम, पाशंटिका, गवचा)

संस्कृतभाषामें	विकंकत ।
हिन्दीभाषामें	कटाई, किंकिणी, वज ।
वंगभाषामें	वईचिगाछ ।
मराठीभाषामें	वेहड्याच फळ ।
गुजरातीभाषामें	विकलो ।
कर्णाटकीभाषामें	हलुमाणिका मालेगु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कानवेगुचेट्टु ।
औत्क०	वइचकुडि ।
प०	कुकोया ।
लेटिन्भाषामें	सिलस्ट्रस् मोंटेना । Selstrus Montana

अस्य गुणाः ।

विकंकतोम्लमधुरः पाकेतिमधुरोलघुः ।
दीपनः कामलास्रघ्नः पाचनः पित्तनाशनः (रा० नि०)

अर्थ–कटाई–अम्ल, मधुर, पाकमेंभी मधुर, लघु, दीपन, कामलानाशक, रुधिरदोषनिवारक, पाचक और पित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

विकंकतोमधुश्चाम्लः कषायः शीतलोजयेत् । बलासपित्तशोफास्रविकारान्कामलान्तथा ॥ पाककालेतिमधुरोदाहं शोषचनाशयेत् । दीपनः पाचनश्चैवव्रणलूतार्शनाशनः ॥

अर्थ–विकंकत–मधुर, अम्ल, कषेला, शीतल तथा कफ, पित्त, शोफ, रुधिरविकार और कामलारोगको दूर करे है । पचनेमेंभी मधुर, दीपन, पाचक और दाह, शोष, व्रण, लूता और ववासीरको दूर करे है ।

अपिच ।

विकंकतफलपक्वमधुरसर्वदोषजित् । (भावप्रकाश)

अर्थ–विकंकतका पका फल–मधुर और सर्वदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

विकंकतचनात्युष्णदोषघ्नन्नेत्रपुष्पजित् ।

अर्थ–विकंकत–अत्यन्तगरम नहीं है, त्रिदोषनाशक और आंखके फूलेको दूर करे है । विकंकतके वृक्ष–जंगल और वनोंमें होते हैं, वृक्षपै कांटे होते हैं ।

विवरण। कटादिक वृक्ष जगल और वनोंमे बहुत बडे २ होते हैं उनके पत्ते छोटे २ और डालियोंमे काटे होते है, इसमे बहुत अच्छे २ बेरके समान गोल २ फल लगते हैं।

प्रियालनामानि।

प्रियालस्तुखरस्कन्धश्चारोबहुलवल्कल॰ ॥
राजादनस्तापसेष्ट सन्नकद्रुर्धनुष्पट ॥

अर्थ-प्रियाल, खरस्कन्ध, चार, बहुलवल्कल, राजादन, तापसेष्ट, सन्न कद्रु, धनुष्पट (अखट्ट, ललन, चारक, बहुवल्कल, सन्नद्रु, तापसप्रिय, स्नेहबीज, उपवट, मोक्षवीर्य, दुमल्क, राजातन, पियल, धनु, पट, इलन्धर, धनु।पट, पियालक)

संस्कृतभाषामें प्रियाल, पियाल।
हिन्दीभाषामे चिरोंजी।
बंगभाषामें चिरोंजी, पियाल।
मराठीभाषामें चारोळी (को॰) चारवृक्षबीज।
गुजरातीभाषामें चारोली।
कर्णाटकीभाषाम चारबीज।
तैलिंगीभाषामें साळपपु।
तामिलीभाषामें कादगरा।
औ॰ चरु।
पं॰ चिरोंजी।
लैटिन्भाषाम बुकेननिया लैटिफोलिआ। Buchanania latifolia
फारसीभाषामें बुकलेगाना।
अरबीभाषामें हबुल्समाना।

अथ गुणा।

चारोलीमधुरावृष्यापित्तानिलहरागुर्वीसरामता। मलस्तम्भकरी स्निग्धाशीतलाधातुवर्धिनी ॥ कफकृदृजंगलत्याप्रियालातविनाशिनी। पित्तदाहज्वरतृषाक्षतक्षयकदोषनुत् ॥ क्षतक्षयंनाशयतितन्मज्जामधुरामता। वृष्यानदाहपित्तघ्नीनखल्वम-धुरागुरु॥किञ्चिदुष्णंकफकरंपित्तवातविनाशनम् ॥(नि॰र॰)

अर्थ-चिरौंजी-मधुर, वृष्य, भारी, अम्ल, सारक, मलस्तम्भक, स्निग्ध, शीतल, धातुवर्द्धक, कफकारक, दुर्जर, बलवर्द्धक, प्रिय, वातविनाशक तथा पित्त, दाह, ज्वर, तृषा, क्षतरोग, रक्तविकार और क्षतक्षयका नाश करेहै । चिरौंजीकी मींग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, दाह और पित्तनाशक है । चिरौंजीका तेल मधुर, भारी, किञ्चित् गरम, कफकारक और पित्तवातको दूर करैहै ।

अपिच ।

प्रियालमधुरस्निग्धबृंहणवातपित्तजित् । (रा० नि०)

अर्थ-चिरौंजी-मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक और वातपित्तनाशक है ।

प्रियालमूलादिगुणा ।

चारमूलतुतुवररक्तरुक्कफपित्तहम । चारमज्जातुमधुरावृष्यास्निग्धाचशीतला ॥ मलस्तम्भकरीचामवर्द्धकादुर्जरा मता । हृद्याचशुक्रलावातपित्तनाशकरीमता ॥ (नि० र०)

अर्थ-चिरौंजीके वृक्षकी जड-कषेली तथा रुधिरविकार, कफ और पित्तनाशक है । चिराजीवृक्षकी मींग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, शीतल, मलस्तम्भक, आमवर्द्धक, दुर्जर, हृदयको हितकारी, शुक्रजनक और वातपित्तनाशक है ।

विवरण-चिराजीके वृक्ष कोकण आदि देशमें अधिक होते हैं, पत्ते छोटे २ नोकदार खरखरे होते हैं, पत्ते छोटे २ बेरके समान नीलेरगके होते हैं उसमेंसे जो मींग निकलती है, उसको चिरौंजी कहते हैं ।

राजादननामानि ।

राजादन फलाध्यक्षोराजन्याक्षीरिकापिच ।

अर्थ-राजादन, फलाध्यक्ष, राजन्या, क्षीरिका (राजफल, कपीष्ट, क्षीरवृक्ष, नृपद्रुम, निम्बबीज, मधुफल, माधवोद्भव, क्षीरी, गुच्छफल, धूपेष्ट, राजवल्लभ, श्रीफल, दृढस्कन्ध, क्षीरशुक्र)

संस्कृतभाषामें	राजादन ।
हिन्दीभाषामें	खिन्नी, खिरनी ।
बंगभाषामें	क्षीरिणी राजणी ।
मराठीभाषामें	खिरणी ।
गुजरातीभाषामें	रायण ।

कर्णाटकीभाषामें गेंगे मारिने ।
तामिलीभाषामें पल ।
इंग्लीभाषाम ओवटयुगलीव्ड माइमुसोप्स । Obt...l aved Mimusops
लैटिन्भाषामें माइमुसोप्स हेग्जान्ड्रा । Mimusops hexandra

अस्य गुणाः ।

क्षीरीवृक्षाफलंशीतस्निग्धगुरुबलप्रदम् ।
तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् ॥ (भ०नि०)

अर्थ-खिरनी-शीतल, स्निग्ध, भारी, बलवर्द्धक तथा तृषा मूर्च्छा, मद, भ्रांति, क्षय और त्रिदोषको दूर करे है ।

अपिच ।

राजादनीतुमधुरापित्तघ्नीगुरुतर्पणी ।
वृष्यास्थौल्यकरीहृद्यातुस्निग्धामेहनाशकृत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-खिरनी-मधुर, पित्तनाशक भारी, तृप्तिकारक वीर्यवर्धक, देहको स्थूल करनेवाली, हृदयको हितकारी, स्निग्ध और प्रमेहका हरनेवाली है ।

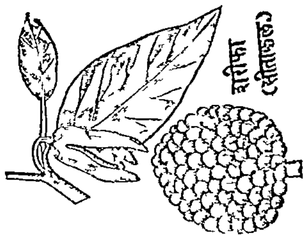
अन्यच्च ।

राजादनहिमस्निग्धकषायमधुरगुरु । स्वाद्वम्लपाकमग्राहि वृष्यविष्टम्भिबृंहणम् ॥ रोचनमासलंहन्तिदोषत्रयमदभ्रमा-न् । मूर्च्छामोहतृषादाहरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥

अर्थ-खिरनी शीतल, स्निग्ध, कषैली, मधुर, भारी, स्वादु, अम्लपाकी, मलरोधक, वीर्यवर्द्धक, विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, रोचन, मांसवर्द्धक तथा त्रिदोष, मद, भ्रम, मूर्च्छा, मोह, तृषा दाह, रक्तपित्त और क्षतक्षयको दूर करे है ।

विवरण । खिरनीके वृक्ष बडे २ ऊंचे होतेहैं, पत्ते नारंगीके समान होतेहैं, इसमें शिशिरऋतुमें मौर आताहै और वसन्त ऋतुमें फल आतेहैं, फल निंबौ-लीके समान गुच्छे लगतेहैं, ये कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले पड-जातेहैं और कोई २ पकनेपरभी हरे ही रहतेहैं, इनको हरियर कहतेहैं उत्तर पश्चिमप्रदेशमें इसको खिरनी कहतेहैं ।

आतृप्यनामानि।



सीताफलगडगात्रंवैदेहीवल्लभंतथा।
कृष्णबीजंचाग्रिमाख्यमातृप्यंबहुबीजकम्॥

अर्थ—सीताफल—गडगात्र, वैदेहीवल्लभ, कृष्णबीज, अग्रिमाख्य, आतृप्य, बहुबीजक।

संस्कृतभाषामें	आतृप्य।
हिन्दीभाषामें	सरीफा, सीताफल।
बंगभाषामें	आता।
मराठीभाषामें	सीताफळ।
तैलिङ्गीभाषामें	सीताफल।
इंग्रेजीभाषामें	कस्टर्डएपल Custerd apple
लै०	एनोना स्क्वैमोसा Annona Sqamosa
फारसीभाषामें	काज।
अरबीभाषामें	सरीफा।

अस्य गुणाः।

तर्पणंरक्तकृत्स्वादुशीतलंहृद्यमेवच।
बलदंमांसकृद्दाहरक्तपित्तमरुत्प्रणुत्॥

अर्थ—सीताफल—तृप्तिजनक, रक्तवर्द्धक, स्वादिष्ट, शीतल, हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक, मांसवर्द्धक तथा दाह, रक्तपित्त और वातविनाशक है।

अन्यच्च।

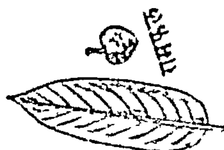
सीताफलंतुमधुरंशीतंहृद्यंबलप्रदम्।

वातलकफकृत्स्वादुपुष्टिकृत्पित्तनाशनम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सीताफल (सरीफा) मधुर, शीतल, हृदयको हितकारी, बलव र्द्धक, वातकारक, कफकारक, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक और पित्तनाशक है।

विवरण। सरीफेके वृक्ष प्राय सर्व भारतवर्षके प्रदेशोंमे पाये जातेहैं। व्यवहार फल, पत्र, छाल, मूल,। इसके बीजोंको पीसकर शिर धोनेसे शिरके कीडे अर्थात् जूएँ दूर होतीहैं।

लवनीफलनामानि।



रामस्यचफलंरामफलंरामाह्वयंतथा।
रक्तत्वचंचवासन्तकृष्णबीजमृदुफलम् ॥

अर्थ-रामफल, रामाह्वय, रक्तत्वच, वासन्त, कृष्णबीज, मृदुफल (लवनी, ग्रीष्मजा, अग्रिमा,)

संस्कृतभाषाम	लवनी।
हिन्दीभाषाम	लवनी, अनोना।
वंगभाषाम	नोना, लोना।
मराठीभाषामें	रामफल।
गुजरातीभाषामें	रामफल।
तामिलभाषामें	रामफल।
इंग्रेजीभाषामें	बेंगालस्टडएप्पल। Bengal custard apple
लैटिनभाषामें	अनोना रेटिक्युलेटा। Anona reticulata
गोवा०	अनोना।

अथ गुणाः।

रामफलंकषायन्स्वादुम्लंकफकारकम्।
वातलंग्राहितृट्दाहपित्तश्रमकुरापहम् ॥ (नि०र०)

अर्थ–रामफल–कपेला, स्वादिष्ठ, खट्टा, कफकारक, वादी तथा रुधिर विकार, तृषा, दाह, पित्त, श्रम और क्षुधाको हरनेवाला है ।

अननासनामानि ।

अनन्नास





अननासपारवतीचामकौतुकसञ्ज्ञकम् ।

अर्थ–अननास, पारवती, आम, कौतुकसञ्ज्ञक ।

संस्कृतभाषामें	अननास, कौतुकसञ्ज्ञक ।
हिन्दीभाषामें	अननास ।
मराठीभाषामें	अननस ।
गुजरातीभाषामें	अननास ।
इंग्रेजीभाषामें	पाईनएपल । Pine apple
लेटिन् भाषामें	अननासा सेटिवा । Annassa sative

अस्यगुणाः ।

अननासमपक्वन्तुरुच्यंहृद्यंगुरुर्मतम् । कफपित्तकरञ्चैवप्रोक्तं चान्नमरोचकम् ॥ श्रमक्लमनाशयतितत्पक्वंस्वादुपित्तहृत । रसातपविकारंचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ–कच्चा अननास रुचिकारक–हृदयको हितकारी, भारी कफपित्त-कारक, अन्नरोचक तथा श्रम और क्लमनाशकर्ता है । पक्का अननास- स्वादिष्ठ पित्तकारक तथा रसविकार और आतपविकारको दूरकर्ता है ।

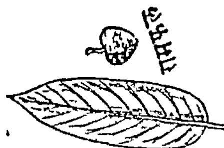
विवरण । अननास पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होताथा क्योंकि सिवाय

वातलंकफकृत्स्वादुपुष्टिकृत्पित्तनाशनम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सीताफल (सरीफा) मधुर, शीतल, हृदयको हितकारी, बल्य र्द्धक, वातकारक, कफकारक, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक और पित्तनाशक है ।

विवरण । सरीफेके वृक्ष प्राय सर्व भारतवर्षके प्रदेशोंमे पाये जातेंह । व्यवहार फल, पत्र, छाल, मूल, । इसके बीजाको पीसकर शिर धोनेसे शिरके कीडे अर्थात् जूएँ दूर होतीहैं ।

लवनीफलनामानि ।



रामस्यचफलरामफलरामाह्वयंतथा ।
रक्तत्वचचवासन्तकृष्णवीजंमृदूफलम् ॥

अर्थ-रामफल, रामाह्वय, रक्तत्वच, वासन्त, कृष्णबीज, मृदूफल (लवनी, ग्रीष्मजा, अग्निमा,)

संस्कृतभाषामें	लवनी ।
हिन्दीभाषामें	लवनी, एनोना ।
बंगभाषामें	नोना, लोना ।
मराठीभाषामें	रामफळ ।
गुजरातीभाषामें	रामफल ।
तैलिङ्गीभाषामें	रामफल ।
इंग्रेजीभाषामें	नेटेड्कस्टर्डएपल । Nettedcustard apple
लैटिन्भाषामें	एनोना रेटिक्युलेटा । Anonareteculata
गोवा०	अनोना ।

अस्य गुणाः ।

रामफलकषायचस्वाद्वम्लंकफकारकम् ।
वातलचाम्लतृड्दाहपित्तश्रमक्षुधापहम् ॥ (नि०र०)

अर्थ–रामफल–कपेला, स्वादिष्ठ, खट्टा, कफकारक, वादी तथा रुधिर विकार, तृषा, दाह, पित्त, श्रम और क्षुधाको हरनेवाला है।

अननासनामानि।

अनन्नास





अननासपारवतीचामकौतुकसञ्ज्ञकम्।

अर्थ–अननास, पारवती, आम, कौतुकसञ्ज्ञक।

संस्कृतभाषामें	अननास, कौतुलसञ्ज्ञक।
हिन्दीभाषामें	अननास।
मराठीभाषामें	अननस।
गुजरातीभाषामें	अननास।
इंग्रेजीभाषामें	पाईनएपल। Pine apple
लेटिन् भाषामें	अननासा सेटिवा। Ananas sativa

अस्यगुणाः।

अननासमपक्वन्तुरुच्यंहृद्यगुरुर्मतम्। कफपित्तकरंचैवप्रोक्तं चान्नमरोचकम्॥ श्रमक्लमनाशयतितत्पक्वंस्वादुपित्तहृत। रसातपविकारंचनाशयेदितिकीर्तितम्॥ (नि०र०)

अर्थ–कच्चा अननास–रुचिकारक–हृदयको हितकारी, भारी कफपित्त-कारक, अन्नरोचक तथा श्रम और क्लमनाशक है। पक्का अननास- स्वादिष्ट पित्तकारक तथा रसविकार और आतपविकारको दूरकरै है।

विवरण। अननास पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होताथा क्योंकि सिवाय

निघण्टुरत्नाकर (जोकि, थोडेसे दिनोंसेही बनाहै) के और किसी प्राचीन निघण्टुमे नहीं देखाजाता।

निकोचकनामानि।

निकोचकचारुफलंसकोचजलगोजकम्।
पिस्तमुकूलकंज्ञेयदन्तीफलसमाकृति॥

अर्थ-निकोचक, चारुफल, सकोच, जलगोजक, पिस्त, मुकूलक, दन्तीफलसमाकृति।

संस्कृतभाषामें	निकोचक।
हिन्दीभाषामें	पिस्ता।
बंगभाषामें	पेस्तागाछ।
मराठीभाषामें	पिस्ते।
गुजरातीभाषामें	पस्ता।
इंग्रेजीभाषामें	पिस्टेशिओनट्। Pistachionut
लैटिन्भाषामें	पिस्टेशियाह्वेरा। Pistaciavera
फारसीभाषामें	पिस्ता।
अरबीभाषामें	फिस्तक।

अस्यगुणाः।

निकोचकगुरुस्निग्धवृष्योष्णंधातुवर्द्धकम्।
रक्तप्रसादनस्वादुबल्यपित्तकरमतम्॥
तिक्तसरचकफघ्नवातगुल्मत्रिदोषजित्। (नि० र०)

अर्थ-पिस्ते-भारी, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, गरम, धातुवर्द्धक, रक्तको शुद्ध करनेवाले, स्वादु, बलवर्द्धक, पित्तकारक, कडवे, सारक, कफनाशक तथा वात, गुल्म, और त्रिदोषको दूर करे है।

अमीरनामानि।



अजीरमञ्जुलज्ञेयकाकोदुम्बरिकाफलम् ।

अर्थ-अजीर, मजुल, काकोदुम्बरिकाफल ।

संस्कृतभाषामें	अजीर ।
हिन्दीभाषामें	अजीर ।
बंगभाषामें	आँजीर, पेयारा ।
मराठीभाषामें	अंजीर ।
गुजरातीभाषामें	अजीर ।
कर्णाटकीभाषामें	मेडियट्ठु ।
इंग्रेजीभाषामें	फिग्ट्री । Fig tree
लैटिन्भाषामें	फाईकस्केरिका । Ficuscarica
फारसीभाषामें	तीन ।

अस्य गुणा ।

अजीरकफलमतीवसुशीतलंचसद्योनिवारयतिशोणितपित्तमुग्रम् । पथ्यविशेषमपिपित्तशिरोविकारेनासाप्रवृत्तरुधिरेचविशेषतस्तु ॥

अर्थ-अजीर-अत्यन्तशीतल, तत्काल रक्तपित्तनाशक, पित्त और शिरोरोगमें विशेष करके पथ्यहै तथा नाकसे रुधिरके गिरनेको बंदकरे है ।

अन्यच्च ।

अजीरकगुरुहिममधुरंचवातपित्तास्ररोगहरणंकरणंरुचीनाम् । सुस्वादुपाकरसयोर्गुरुशीतलंचश्लेष्मामवातकरमस्रविकारहारि ॥

अर्थ-अजीर-भारी, शीतल, मधुर, वातनाशक, रक्तपित्तहारी, रुचिकारी, स्वादु, पचनेमेंभी स्वादु तथा श्लेष्म और आमवातकारकहै और रुधिरविकारको दूर करेहै ।

परूपकनामानि ।

परूपकगिरिपीलुरोपणनागदलोपमम् ।

अर्थ-परूपक, गिरिपीलु, रोपण, नागदलोपम (पारावत, नीलचर्म्म नीलमण्डल, परापर, अल्पास्थि, धन्वनच्छद, मृदुफल)



संस्कृतभाषामें	परूपक ।
हिन्दीभाषामें	फालसा, परुषा ।
बंगभाषामें	फलसा ।
मराठीभाषामें	फाळसा ।
कर्णाटकीभाषामें	बेट्टहा, दागलि ।
तैलिङ्गीभाषामें	पुटिकी ।
गुजरातीभाषामें	धामण ।
इंग्रेजीभाषामें	एशयाटिक् ग्रेविया । Asiatic Grewia
लैटिन्भाषामें	ग्रेविया एशयाटिका । Grewia asiatic
फारसीभाषामें	पालसा ।
अरबीभाषामें	फालसा ।

अथ फलगुणाः ।

परूपमम्लकटुकफार्तिजिह्वातापहंतत्फलमामपित्तकृत ।
सोष्णञ्चपक्वमधुरंरुचिप्रदपित्तापहंशोफहरचतर्पणम् ॥

अर्थ-कच्चा फालसा-कटु, कफनाशक, खट्टा, वातनाशक और पित्तको उत्पन्न करे है । पका फालसा-मधुर, रुचिदायक, पित्तनाशक शोफनाशक और तृप्तिकारक है ।

अन्यच्च ।

परूपककषायाम्लमामपित्तकरलघु ।

तत्पक्कमधुरपाकेशीतविष्टम्भिबृंहणम् ॥
हृद्यतृट्पित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् । (भा०प्र०)

अर्थ–कच्चा फालसा–कपेला खट्टा, पित्तकारक, हलका । पक्का फालसा मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पुष्टिजनक, हृदयको हितकारी तथा तृषा, पित्त, दाह रुधिरविकार, ज्वर, क्षय और वातको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

परूपककषायाम्ललघूष्णस्वादुपित्तलम् । रूक्षमारुतजित्पक्वस्वाद्वम्लशुक्लहिमम् ॥ रोचनमधुरंपाकेहृद्यविष्टम्भि बृंहणम् । हन्तिमारुतपित्तास्रतृष्णादाहक्षतक्षयान् ॥

अर्थ–कच्चा फालसा–कपेला, खट्टा, हलका, गरम, स्वादिष्ठ, पित्तकारक रूखा व वातको दूर करनेवालाहै । पक्का फालसा–स्वादिष्ठ, खट्टा, शुक्रजनक, शीतल, रोचन, पचनेमें मधुर, हृदयको हितकारी, विष्टम्भकारक, पुष्टिकारक तथा वात, रक्तपित्त, तृषा, दाह और क्षतक्षयको क्षयकरेहै ।

अस्यत्वग्गुणाः ।

परूपकत्वक्प्रमेहघ्नीयोनिमेढ्रप्रदाहनुत् ॥
मूत्रदोषप्रशमनीशीतपित्तानिलापहा ॥ (आ०स०)

अर्थ–फालसेकी छाल–प्रमेहनाशक, योनिकी दाह और लिङ्गकी दाहको दूरकरनेवाली, मूत्ररोगनिवारक तथा शीत, पित्त और वातविनाशकहै ।

विवरण–फालसेके वृक्ष मध्यम आकारके होतेहैं, मालीलोग अपने बागोंमें बहुत लगादेतेहैं पत्ते बेलके समान तीन २ मिलेहुए होतेहैं, फल दो तीन एकत्र होतेहैं, फल कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर ऊदे रंगके होजातेहैं ।

तूतनामानि ।



तूततूदब्रह्मकाष्ठब्रह्मण्यब्रह्मदारुच ।
मृदुसारसुपुष्पंचसुरूपनीलरगकम् ॥

अर्थ—तूत, तूद, ब्रह्मकाष्ठ, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, मृदुसार, सुपुष्प, सुरूप, नीलरगके (तूल, ब्राह्मणेष्ट, नीलवृन्तक, क्रमुक, विप्रकाष्ठ, मदसार, पूण, ब्रह्मनेष्ट, नूठ, पूप, ब्रह्मण्य, पलाशिक, यूप) ।

संस्कृतभाषामें	तूत ।
हिन्दीभाषामें	सहतूत, तूत ।
वंगभाषामें	तूँत (टु), पलाशपिपुल ।
मराठीभाषामें	तूँत ।
कों०	तूतीची फळे ।
गुजरातीभाषामें	शेतूत, तूत ।
तैलिङ्गीभाषामें	कम्बलिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	मपुकहइचेडि ।
इंग्रेजीभाषामें	मल्बेरिज़ Mulberies
लैटिन्भाषामें	मोरस इण्डिका । Morus Indica
	मोरसनिग्रा । Morus nigra
	मोरसआल्बा । Morus alba
फारसीभाषामें	शाहतूत, तूततुर्श, तूतशीरिं ।
अरबीभाषामें	तूत, तूतहामीज, तूतहुलु ।

अस्य गुणाः ।

तूतपक्वंगुरुस्वादुहिमंपित्तानिलापहम् ।
तदेवामगुरुसरमम्लोष्णंरक्तपित्तकृत ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—पके सहतूत—भारी, स्वादिष्ठ, शीतल तथा पित्त और वात विनाशक है । कच्चे सहतूत—भारी, सारक खट्टे, गरम और रक्तपित्तकारक है ।

अपिच ।

तोतानिपक्वानिगुरुशीतानिमधुराणिच । ग्राहकाणिरक्तदोषवातपित्तहराणिच ॥ कोमलानिचतानिस्युर्गुरुरेचकराणिच । अम्लानिचोष्णवीर्य्याणिरक्तपित्तहराणिच ॥

अर्थ—पके सहतूत—भारी, शीतल, मधुर, मलरोधक तथा रक्तविकार,

वात और पित्तका नाश करेहैं । कोमल सहतूत-भारी, दस्तावर, खट्टे, गरम और रक्तपित्तका नाश करेहैं । सहतूतके वृक्ष बागोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते अजीरके समान तीन २ कगूरेवाले और नीमके पत्ताके सदृश चारों ओर आरेकेसे चिह्न होतेहैं, यह वृक्ष दोप्रकारके होतेहैं, एकपर काले सहतूत आतेहैं, और दूसरेपर सफेद सहतूत आतेहैं, इसके फल फलीके समान होतेहैं, और उनमें बाजरेकेसे दाने सर्वत्र लगे होतेहैं वह फली अत्यन्त कोमल और रसीली होतीहैं ।

पारेवतनामानि ।

पारेवतश्वेतपुष्पतिन्दुकाभफलमतम् ।

अर्थ-पारेवत, श्वेतपुष्प तिन्दुकाभफल (आरेवत, पालेवत)

संस्कृतभाषामें	पारेवत ।
हिंदीभाषामें	पारेवत ।
बंगभाषामें	पेयारा ।
औ०	प्याडा ।
तैलिङ्गीभाषामें	उत्तरेगे, दोड्डउत्तरेगे ।

अस्य गुणाः ।

पारेवतहिमस्वादुगुरूष्णवातपित्तजित ।
तद्वन्माणवकज्ञेयतृष्णाघ्नमिष्टमम्लकम् ॥ (ध०नि०)

अर्थ-पारेवत-शीतल, स्वादिष्ठ, भारी, गरम, वातपित्तनाशक और महापारेवतकेभी गुण इसाके समानहैं तृषानाशक, मिष्ट और अम्ल है ।

अन्यच्च ।

पारेवततुवरकृमिवातहारि वृष्यतृषाज्वरविदाहहरञ्चहृद्यम् ॥ मूर्च्छाभ्रमश्रमविशोषविनाशकारि स्निग्धञ्चरुच्यमुदितबहुवीर्य्यदञ्च ॥

अर्थ-पारेवत-कषैला, कृमिनाशक, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, रुचिकारक, वृष्य हृदयको हितकारी तथा तृषा, ज्वर, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, श्रम, और शोषनाशक है ।

महापारेवतगुणाः ।

महापारेवतेगोल्यमलकृत्पुष्टिवर्द्धनम् ।

वृष्यंमूर्च्छाज्वरघ्नञ्चपूर्वोक्तादधिकंगुणैः ॥

अर्थ–महापारेवत–गौल्य, बल्कारक, पुष्टिवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, मूर्च्छानिवारक, ज्वरनाशक यह पारेवतसे अधिक गुणवाला है ।

श्लेष्मातकनामानि ।

श्लेष्मातकःकर्बुदार पिच्छिलोलेखशाटकः ।
शेलुःशैलुर्गंधपुष्पःशापितोवहुवारकः ॥

अर्थ–श्लेष्मातक–कर्बुदार, पिच्छिल, लेखशाटक, शेलु, शैलु, गन्धपुष्प, शापित, बहुवारक, (उद्दाल, भूतवृक्ष, बहुवार, द्विजकुत्सित, शीतफल, शाकट, कर्बुदारक, भूतद्रुम, श्लेष्मात, श्लेष्मातक, शीतल, उद्दालक, सेलु)

भूकर्बुदारनामानि ।



भूकर्बुदारकश्चान्यलघुश्लेष्मातकस्तथा ॥

अर्थ–भूकर्बुदार, लघुश्लेष्मातक (क्षुद्रश्लेष्मान्तक, भूशेलु, लघुपिच्छिल, लघुशीत, लघुशेलु, सूक्ष्मफल, मधुभूतद्रुम, भूकर्बुदार)

संस्कृतभाषामें	श्लेष्मातक । भूकर्बुदार ।
हिन्दीभाषामें	लिसोडा, निसोरे, लभेरा ।
बंगभाषामें	बहुयार, चालतागाछ, बोहरी ।
मराठीभाषामें	भोंकर, शेळवट, भोंकरी, गोंधणी ।
गुजरातीभाषामें	गुदोमोटो, गुन्दीनांनी ।
कर्णाटकीभाषामें	चेन्नु गादिणी ।
तैलंगीभाषामें	नाकेरु, नुक्केरु ।
तामिलीभाषामें	विडि ।
आंग्लीभाषामें	अड ।

इग्रेजीभापामें नेरोलिव्ड सेपिस्टन । Narrow leaved Sepistun
लैटिन्भापामें कोर्डिया एगस्टिफोलिया । Cordia angustifolia
फारसीभापामें सिपिस्तान् ।
अरवीभापामें सेफिस्तान् दवक ।

अस्य गुणा ।

श्लेष्मातकटुशीतलंचतुवरस्यात्पाचकमाधुरं स्निग्धकेश्यवलासदंत्वथकृमीञ्छूलामरक्तापहम् ॥ विस्फोटव्रणपित्तनाशनकरवीसर्पसर्वविप हन्तिह्यस्यफलतुशीतमधुरतिक्तलघुस्तूवरम् ॥ वायोर्वृद्धिकरचपित्तशमनविष्टम्भिरुच्य तथासृग्दृष्टिकफनाशनचगदितपक्वतथामाधुरम् ॥ स्निग्धं शीतलवृहणंनिगदितविष्टम्भिरूक्षगुरु वायोर्नाशकरचपित्तशमनस्याद्रक्तदोपापहम् ॥ ((नि०र०)

अर्थ—श्लेष्मान्तक—कटु, शीतल, कपेला, पाचक, मधुर, स्निग्ध, केशोंको हितकारी, तथा कृमि, शूल, आमरक्त, कफकारी, विस्फोटक, व्रण, पित्त, विसर्प और सर्व प्रकारके विषोंको हरनेवाला है। इसके फल—शीतल, मधुर, कडवे, हलके, कपेले, वातवर्द्धक, पित्तको शान्ति करनेवाले, विष्टम्भकारक, रुचिजनक तथा रुधिरविकार, दृष्टिविकार और कफनाशक हैं। इसके पके फल—मधुर स्निग्ध—शीतल, पुष्टिकारक, विष्टम्भकारक, रूखे, भारी, वातविनाशक, पित्तनिवारक और रुधिरविकारको हरनेवाले हैं।

भुचुंदारगुणा ।

क्षुद्रश्लेष्मातकवातकोपनमधुरंमतम् ।
किंचिच्चशीतलज्ञेयकृमिघ्नस्वर्णमारकम् ॥

अर्थ—लभेरा—वातको कुपित करनेवाला, मधुर, किंचित शीतल, कृमिनाशक और सुवर्णको मारे हैं।

विवरण। लिसोडेके वृक्ष जगल और वनमें अधिक होते हैं, पत्ते गोल कुछ लम्बाई लिये होते हैं, फल अलूचेके समान गोल रसीले गुच्छोंमें लगतेहैं, भीतरसे चिपकनेहैं इसीप्रकारके लभेडेके वृक्षभी होतेहैं, पत्तेभी इसी भाँतिके होतेहैं परन्तु फल इससे छोटे होतेहैं, कच्चे रगमें हरे और पकनेपर कुछ गुलाबीसे होजातेहैं, फलके भीतर बीज और कुछ गोंदसा निकलताहै।

वृष्यमूर्च्छाज्वरघ्नश्चपूर्वोक्तादधिकंगुणैः ॥

अर्थ–महापारेवत–गौल्य, बलकारक, पुष्टिवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, मूर्च्छानिवारक, ज्वरनाशक यह पारेवतसे अधिक गुणवाला है।

श्लेष्मातकनामानि।

श्लेष्मातक कर्बुदार पिच्छिलोलेखशाटक।
शेलु शैलुगंधपुष्पःशापितोबहुवारकः ॥

अर्थ–श्लेष्मातक–कर्बुदार, पिच्छिल, लेखशाटक, शेलु, शैलु, गन्धपुष्प, शापित, बहुवारक, (उद्दाल, भूतवृक्ष, बहुवार, द्विजकुत्सित, शीतफल, शाकट, कर्बुदारक, भूतद्रुम, श्लेष्मात, श्लेष्मातक, शीतल, उद्दालक, सेलु)

भूकर्बुदारनामानि।



भूकर्बुदारकश्चान्यलघुश्लेष्मातकस्तथा ॥

अर्थ–भूकर्बुदार, लघुश्लेष्मातक (क्षुद्रश्लेष्मान्तक, भूशेलु, लघुपिच्छिल, लघुशीत, लघुशेलु, सूक्ष्माल, मधुभूतद्रुम, भूकर्बुदार)

संस्कृतभाषामें	श्लेष्मातक। भूकर्बुदार।
हिन्दीभाषामें	लिसोडा, निसोरे, लभेरा।
बंगभाषामें	बहुवार, चालतागाछ, बोहरी।
मराठीभाषामें	भाकरा, शेळवट, भोंकरी, गोंधणी।
गुजरातीभाषामें	गुदोमोटो, गुदीनानी।
कर्णाटकीभाषामें	चेलु गोंदिणी।
तैलिंगीभाषामें	नाकेरु, नुवकेरु।
तामिलीभाषामें	विडि।
औत्कलीभाषामें	अट।

विष, गुल्म, शूल, कृमि, प्रमेह, नेत्ररोग और जलके मैलको दूर करे है। इसका कोमलफल–नेत्रोंको हितकारी, वातवर्द्धक, शीतल तथा रक्तपित्त, तृषा, विष और मोहको दूर करे है। इसका तरुणफल–दुर्जर, रुचिजनक, कफ और पित्तनाशक है। इसका पक्का फल पित्तजनक, वमनकारक, पसीनेको लानेवाला तथा सूजन, पाण्डुरोग, विष, प्रतिश्याय और कामला रोगको दूरकरे है। इसके बीज–नेत्रोंको हितकारी, कषेले, भारी, जलको निर्मल करनेवाले, मधुर तथा पथरी, वात, कफ, मूत्रकृच्छ्र, तृषा, नेत्ररोग, विष, प्रमेह और मस्तकरोगको दूर करे है। निर्म्मलीकी जड–सर्वप्रकारके कुष्ठोंको नष्टकरनेवाली है।

विवरण। कतक अर्थात् निर्मलीफल गोल होतेह, और उसके ऊपरकी छाल कुचलेकी छालकी समान होतीहै, विशेष करके इसकी सब आकृति कुचलेमेंही मिलती है।

द्राक्षानामानि।

द्राक्षामधुरसास्वाद्वीकृष्णाचारुफलारसा।
मृद्वीकागोस्तनीचैवयक्ष्मघ्नीतापसप्रिया॥

अर्थ–द्राक्षा, मधुरसा, स्वाद्वी, कृष्णा, चारुफला, रसा, मृद्वीका, गोस्तनी, यक्ष्मघ्नी, तापसप्रिया, (प्रियाला, गुच्छफला, रसाला, अमृतफला, स्वादुफला हारहूरा, फलोत्तमा, सुफला)।

कपिलद्राक्षानामानि।

अन्याकपिलद्राक्षामृद्वीकागोस्तनीचकपिलफला।
अमृतरसादीर्घफलामधुवल्लीमधुफलामधूलिश्च॥
हरिताचहारहूरासुफलामृद्वीहिमोत्तरापथिका।
हैमवतीशतवीर्य्याकाश्मीरीगजगजमहिगणिता॥

अर्थ–कपिलद्राक्षा, मृद्वीका, गोस्तनी, कपिलफला, अमृतरसा, दीर्घफला, मधुवल्ली, मधुफला, मधूलि, हरिता, हारहूरा, सुफला, मृद्वी, हिमोत्तरा, पथिका, हैमवती, शतवीर्य्या, काश्मीरी।

कामलीद्राक्षानामानि।

अन्यासाकाकलीद्राक्षाजाम्बुकाचफलोत्तमा।
लघुद्राक्षाचनिर्बीजासुवृत्तारुचिकारिणी॥

अर्थ-काकलीद्राक्षा, जाम्बुका, फलोत्तमा, लघुद्राक्षा, निर्वीजा, सुवृत्ता, रुचिकारिणी, (रसाधिका) ।



संस्कृतभाषामें द्राक्षा ।
हिन्दीभाषामें दाख, कालीदाख, किसमिस, अगूर, भूरीदाख ।
बंगभाषामें किसमिस, मनेक्का, आगुर, बेदाना, किसमिस् ।
मराठीभाषामें काळ द्राक्ष, बेदाणा, किसमिस ।
गुजरातीभाषामें धराख, काळिधराख, किसमिस ।
कर्णाटकीभाषामें बेडगणद्राक्षे, चिकुद्राक्षे ।
तैलंगीभाषामें द्राक्षा, किसिमिसि, पोंड्डु, द्राक्षचेट्टु ।
तामिलभाषामें कोडिमण्डि गिप्पझाम ।
इंग्रेजीभाषामें ग्रेप Grape राझिन्स । Raisins
लैटिन्भाषामें वाइटिस्, वेनिफेरा । Vitis Venifera
फारसीभाषामें अगूर, मुनक्का, दानेमवीज ।
अरबीभाषामें कीसमीस, एनब्जनीब, हबुमजर्बीब ।

द्राक्षापक्कासरा शीताचक्षुष्याबृंहणीगुरुः। स्वादुपाकरसास्वर्यातुवरासृष्टमूत्रविट् ॥ कोष्ठमारुतकृद्वृष्याकफपुष्टिरुचिप्रदा । हन्तितृष्णाज्वरश्वासवातवातास्रकामला ॥ कृच्छ्रास्रपित्तसमोहदाहशोषमदात्ययान् । आमास्वल्पगुणागुर्वी सैवाम्लारक्तपित्तकृत् ॥ वृष्यास्याद्गोस्तनीद्राक्षागुर्वीचकफपित्तनुत् । अबीजान्यास्वल्पतरागोस्तनीसदृशीगुणे ॥

द्राक्षापर्वतजालघ्वीसाम्लाश्लेष्माम्लपित्तकृत् । द्राक्षापर्वतजायाद्दक्ताहशीकरमर्द्दिका ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पकीदाख-सारक (कुछ २ दस्तावर) शीतल, नेत्रोंको हितकारी, बृंहण, भारी, स्वादुपाकी, स्वादु, स्वरशोधक, कपैली, मूत्र और मलको निकालनेवाली, कोठेमें वातको करनेवाली, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक तथा तृषा, ज्वर, श्वास, वात, वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष और मदात्ययरोगको हरनेवाली है । कचीदाख-स्वल्पगुणवाली, भारी, खट्टी और रक्तपित्तकारक है । गोस्तनी अर्थात् कालीदाख-वीर्य्यवर्द्धक, भारी और कफपित्तहारी है । किमिमिस-कालीदाखके समान गुणवाली है । पर्वतीदाख-हलकी, खट्टी, कफ और अम्लपित्तको करनेवाली है । करमर्द्दिकानामवाली दाख-पर्वतीदाखकी समान गुणवाली है ।

अन्यच्च ।

द्राक्षातुमधुरास्निग्धावृष्याशीतानुलोमनी ।
वल्यावृष्याक्षतक्षीणतृषावातास्रपित्तजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-दाख-मधुर, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, मलभेदक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा क्षत क्षीण, वात और रक्तपित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

द्राक्षातिमधुराम्लाचशीतापित्तार्त्तिदाहजित् ।
मूत्रदोषहरारुच्यावृष्यासतर्पणीपरा ॥

अर्थ-दाख-मधुर, खट्टी, शीतल, पित्तनिवारक, दाहनाशक, मूत्रदोषहारक, रुचिकारक, वृष्य और तृप्तिकारक है ।

द्राक्षाबालफलकटूष्णविशदपित्तास्रदोषप्रद
मध्यचाम्लरसंरसान्तरगतरुच्यातिवह्निप्रदम् ।
पक्वचेन्मधुरंतथाम्लसहिततृष्णास्रपित्तापह
पक्वशुष्कसमंश्रमार्त्तिशमनमन्तर्पणपुष्टिदम् ॥

अर्थ-कचीदाख-कटु, उष्ण, विशद, रक्तपित्तकारक, मध्यम अवस्थाकी दाख-खट्टी, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक है । पकी दाख-मधुर,

खट्टी, तृषा और रक्तपित्तनाशक है। पककर सूखगई हो ऐसी दाख-श्रमनाशक, तृप्तिकारक और पुष्टिजनक है।

द्राक्षासैवसुधातुवृद्धिजननीसंसर्पशोषापहा
तृष्णार्त्तिव्यथनीसमीरशमनीछर्द्यामयध्वंसिनी।
पाकेम्लासुरसारसेनमधुराशीताचवीर्य्येणसा
सपक्वाविहिताज्वरेचकफजेविण्मूत्रसंशोधनी॥

अर्थ-दाख-धातुवर्द्धक, शोषनाशक, प्यासको हरनेवाली, वातको दूरकरनेवाली, वमनरोगनाशक पचनेमें अम्ल, सुरस मधुर, शीतवीर्य्य, ज्वर और कफको हरनेवाली मूत्र और मलको शोधनेवाली है।

द्राक्षाफलमधुरमम्लकषाययुक्तं क्षारेणपित्तमरुताकफहारिशीघ्रम्॥ श्रेष्ठनिहन्तिरुधिरामयदाहशोषमूर्च्छाज्वरश्वसनकासविनाशकारि॥

अर्थ-दाख,-मधुर, खट्टी, कषेली और किंचित्क्षारके साथ पित्त वात और कफका नाश करेहै। उत्तम तथा रुधिररोग, दाह, शोष, मूर्छा, ज्वर, श्वास और खाँसीको दूर करेहै।

गोस्तनीगुणाः।

द्राक्षातुगोस्तनीशीताहृद्यावृष्यागुरुर्मता। वातानुलोमनी स्निग्धाहर्षदाश्रमनाशिनी॥ दाहमूर्च्छाश्वासकासकफपित्तज्वरापहा। रक्तदोषतृषावातहृद्व्यथाचैवनाशयेत॥

अर्थ-कालीदाख-शीतल, हृदयको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक भारी, वातानुलोमन, स्निग्ध, हर्षजनक तथा श्रम, दाह, मूर्छा, श्वास खाँसी कफ, पित्तज्वर रुधिरविकार, तृषा, वात और हृदयकी व्यथाको हरनेवाली है।

लघुद्राक्षागुणाः।

लघ्वीद्राक्षातुमधुराशीतावृष्यारुचिप्रदा। अम्लारसालाम-प्रोक्ताश्वासकासज्वरापहा॥ हृद्व्यथारक्तपित्तमीक्षतक्षय विनाशिनी। स्वरभेदतृषावातपित्तंचैवविनाशयेत॥ तिक्तताचमुखस्यापिनाशयेदितिकीर्त्तिता।

अर्थ-किसमिस-मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, रुचिप्रद, खट्टी, रसाल तथा श्वास, खाँसी, ज्वर, हृदयकी पीडा, रक्तपित्त, क्षतक्षय, स्वरभेद, तृषा, वात, पित्त और मुखके कडवेपनको दूर करें है ।

विवरण । दाख-काली, लाल और किसमिस इत्यादि अनेक जातिकी है, इसकी उत्पत्ति काबुल तथा देशांतरोंमें होती है, दूसरे प्रकारकी दाख इस देशमेंभी होती है, इसके पत्ते हाथके आकारके होते हैं, फल गुच्छोंमें लगते है ।

मण्डपीनामानि ।

भूशिम्बिकारक्तवीजात्रिवीजास्नेहवीजका ।
मण्डपीभूमिजाभूस्थातथाभूचणकास्मृता ॥

अर्थ-भूशिम्बिका, रक्तबीजा, त्रिबीजा, स्नेहबीजका, मण्डपी, भूमिजा, भूस्था, भूचणका ।

संस्कृतभाषामें	मण्डपी ।
हिन्दीभाषामें	मूँगफली ।
मराठीभाषामें	भुईमुगाच्याशेंगा ।
गुजरातीभाषामें	माडवी ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्राउण्डनट् पिनट् । Groundnut peanut
लैटिन्भाषामें	आरेकीस हायपोजिया । Arachis hypogæa
फारसीभाषामें	मुलीयन् वेल ।
अरबीभाषामें	शेपवान ।

अस्य गुणाः ।

मण्डपीमधुरास्निग्धावातलाकफकारिका ।
ग्राहिकाबद्धवर्चाश्चतत्तैलतद्गुणस्मृतम् ॥

अर्थ-मूँगफली, मधुर, स्निग्ध, वादी, कफकारक, मलरोधक, मलको बाधनेवाली, उसके तेलके गुण इसीके समान जानने ।

काजूतकनामानि ।

काजतकोवृत्तपत्रोगुच्छपुष्पश्चपार्वती ।
स्निग्धपीतफलश्चैवपृथग्बीजोह्यरुष्कर ॥

अर्थ-काजूतक, वृत्तपत्र, गुच्छपुष्प, पार्वती, स्निग्धपीतफल, पृथग्बीज, अरुष्कर (अग्निकृत्, उपपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	काजूतक ।
मराठीभाषामें	काजूचें झाड ।
गुजरातीभाषामें	काजुकलिया ।
तैलङ्गीभाषामें	गतमामोड, जिडिमामेडी ।
इंग्रेजीभाषामें	केश्युनट् । Cashcunut
लैटिन्भाषामें	एनाकार्डिय ओक्सिडेन्टेली । Anacordium Occedentaly
फारसीभाषामें	बादामफिरंगी ।

अस्य गुणाः ।

काजूतकस्तुतुवरोमधुरोष्णोलघु स्मृतः । धातुवृद्धिकरोवातकफगुल्मोदरज्वरान् ॥ कृमिव्रणाग्निमांद्यानिकुष्ठचश्वेतकुष्टकम् । संग्रहण्यर्शआनाहान्नाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (नि.र)

अर्थ-काजूतक-कपेला, मधुर, गरम, हलका, धातुवर्द्धक तथा वात, कफ, गुल्म, उदररोग, ज्वर, कृमि, व्रण, मंदाग्नि, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, संग्रहणी, ववासीर और अफारेको दूर करनेवाला है ।

विवरण । काजूतकके वृक्ष-दक्षिण और गुजरातमें अधिकतासे होते हैं । पत्ते-लम्बे और गोल, फूल सफेद और लाली लिये झुमकोंमें आते हैं, फल-सफरीकी समान होता है ।

जम्बूनामानि ।

जम्बूस्तुसुरभिपत्रानीलफलाश्यामलामहास्कन्धा ।
राजार्हागजफलाशुकप्रियामेघमोदिनीचनवाह्वा ॥

अर्थ-जम्बू, सुरभिपत्रा, नीलफला, श्यामला, महास्कन्धा, राजार्हा, राजफला, शुकप्रिया, मेघमोदिनी, (जम्बु, जम्बुल)

महाजम्बूनामानि ।

महाजम्बूराजजम्बूः स्वर्णमातामहाफला ।
शुकप्रियाकोकिलेष्टामहानीलाबृहत्फला ॥

अर्थ-महाजम्बू, राजजम्बू, स्वर्णमाता, महाफला, शुकप्रिया, कोकिलेष्टा, महानीला, बृहत्फला, (महापत्रा, फलेंद्र, नन्द, सुरभिपत्रा

क्षुद्रजम्बूनामानि ।

क्षुद्रजम्बूर्दीर्घपत्रासूक्ष्मकृष्णफलातथा ॥

अर्थ-क्षुद्रजम्बू, दीर्घपत्रा, सूक्ष्मकृष्णफला (मध्यमा)

काकजम्बूनामानि ।

काकजम्बू काकफलानादेयीकाकवल्लभा ।
भृगेष्टाकाकनीलाचध्वांक्षजम्बूर्घनप्रिया ॥

अर्थ-काकजम्बू, काकफला, नादेयी, काकवल्लभा, भृगेष्टा काकनीला, ध्वांक्षजम्बू, घनप्रिया ।

भूमिजम्बूनामानि ।

अन्याचभूमिजम्बूर्ह्रस्वफलभृगवल्लभाह्रस्वा ।
भूजम्बूर्भ्रमरेष्टापिकभक्षाकाष्टजम्बूश्च ॥

अर्थ-भूमिजम्बू, ह्रस्वफला, भृगवल्लभा, ह्रस्वा, भ्रमरेष्टा, पिकभक्षा, काष्ठजम्बू (सूक्ष्मपत्रा, जलजाम्बुका)

संस्कृतभाषामें	जम्बू, महाजम्बू, क्षुद्रजम्बू ।
हिन्दीभाषामें	जामुन, बडीजामुन, फरेंद्र, छोटीजामुन ।
बंगभाषामें	जामगाछ, बडजाम, क्षुद्रेजाम, वनजाम ।
मराठीभाषामें	थोर जाभूळ, नदीजाभूळ ।
कोंकणीभाषामें	राजिले ।
गुजरातीभाषामें	राजजाम्बु, रावणा वेलरोपाजाम्बु, डुगरिजाम्बु ।
कर्णाटकीभाषामें	निरलु, दोदुनिरलु ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दानेरडि, नीरनेरडि ।
इंग्रेजीभाषामें	जाबीरट्री Jambir tree
लैटिन् भाषामें	युजिनिया जाम्बोलेना Eugenia Jambolana

सिझिझियम जाबोलेनम Syzygium Jambolanum

जम्बूगुणाः ।

जम्बूवृक्षस्तुतुवरोग्राहीमधुरपाचक । मलस्तम्भकरोरूक्षो रुचिकृत्पित्तदाहहा ॥ अम्ल कण्ठय कृमिश्वासशोषातीसारकासहा । रक्तदोषकफञ्चैवव्रणञ्चैवविनाशयेत ॥ फलञ्चतुवरञ्चाम्लमधुरशीतलमतम् । रुच्यरूक्षग्राहकचले

खर्नकंठदूषकम् ॥ मलस्तम्भकरंवातकारककफपित्तनुत् । आध्मानकारकंप्रोक्तपूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥

अर्थ-जामुनकी छाल-कषेली, मलरोधक, मधुर, पाचक, मलस्तम्भक, रूक्ष, रुचिकारक तथा पित्त और दाहको दूर करे है, खट्टी, कण्ठको हितकारी तथा कृमि, श्वास, शोष, अतिसार, खाँसी, रक्तदोष, कफ और व्रण इनका नाश करे है । इसके फल-कषेले, मधुर, शीतल, रुचिकारक, रूखे, मलरोधक, कण्ठदूषक, मलस्तम्भक, वातवर्द्धक, कफपित्तनाशक और अफारेको करनेवालेहै ।

अथ च ।

जाववगुरुविष्टम्भिकषायंस्वादुशीतलम् । अग्निसदूषणंरूक्षवातलकफपित्तजित ॥ (रा०)

अर्थ-जामुनका फल-भारी, विष्टम्भकारक, कषेला, स्वादिष्ट, शीतल, अग्निदूषक, रूखा, वादी तथा कफ और पित्तनाशक है ।

राजजम्बूगुणा ।

राजजम्बूस्तुमधुराचोष्णाचतुवरामता । स्वर्यामलस्तम्भकरीश्वासशोषश्रमापहा ॥ मुखजाड्यातिसारघ्नीकफकासविनाशिनी । फलचास्यास्तुरुचिदमधुरंस्तम्भकगुरु ॥ दोषनाशकरंस्वादुप्रोक्तंपिभिःपरिकीर्तितम् ।

अर्थ-राजजामुन-मधुर, गरम, कषेली, स्वरशोधक, मलस्तम्भक तथा श्वास, शोष, श्रम, मुखकी जडता, अतिसार, कफ, और खाँसीको हरनेवाली है । इसके फल-रुचिकारक, मधुर, स्तम्भक, भारी, दोषनाशक और स्वादिष्ट हैं ।

जलजम्बूगुणा ।

जलजम्बूस्तुतुवराशीतातिक्तगुरु स्मृता । पाकेचमधुराचाम्लापुष्टिकृद्ग्राहिणीमता ॥ वीर्यवृद्धिकरीबल्याश्रमदाहातिसारहा । रक्तदोषकफपित्तव्रणंचैवविनाशयेत ॥

अर्थ-जलजामुन-कषेली, शीतल, कडवी, भारी, पाकमें मधुर, खट्टी, पुष्टिकारक, मलरोधक, वीर्यवर्द्धक, बलकारक तथा श्रम, दाह, अतिसार, रुधिरविकार, कफ, पित्त और व्रणको दूर करनेवाली है ।

क्षुद्रजम्बूगुणाः ।

क्षुद्रजम्बूस्तुवराहृद्याचमधुरामता । वीर्य्यप्रदाग्राहिणीच
पुष्टिकृत्कफपित्तहा॥हृद्रोगकंठरोगचदाहचैवविनाशयेत् ॥
अस्या फलगुणा'प्रोक्तागजजम्बूफले'समा ॥ (नि०र०)

अर्थ–छोटी जामुन–कषेली, हृदयको हितकारी, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, पुष्टिकारक, कफपित्तनाशक तथा हृदयरोग, कण्ठरोग और दाहको दूर करे है । इसके फलोंके गुण गजजामुनकी फलकी समान जानने ।

जम्बूफलमज्जागुणा ।

तन्मज्जामधुराग्राहीविशेषान्मधुमेहहा ।
तदंकुराहिमारूक्षाग्राहकाध्मानकारकाः ॥

अर्थ–जामुनकी मींग–मधुर, मलरोधक और विशेषकरके मधुमेहको हरे है । इसके अंकुर–शीतल, रूखे, ग्राही और आध्मानकारक हैं ।

विवरण । जामुनके वृक्ष–तीन चार प्रकारके होते हैं, एक नदीके निकट होते हैं, जिनके पत्ते कनेरके समान होते हैं उनको नदी जामुन कहते हैं, दूसरी बडी जामुन होती है, उसके पत्ते पीपलकेसे होते हैं, उसको जमुना कहते हैं, तीसरी साधारण जामुन होती है, उसके पत्ते आमकेसे होते हैं, फल मध्यम जातिका होता है, कच्ची अवस्थामें हरी २ होती है और पकनेपर उसका रंग बैंजनी हो जाताहै, फूलके स्थानमें जामुनपर मौरही आता है ।

इति फलवर्ग समाप्त ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे फलवर्गः ॥ ५ ॥

वटादिवर्गः ।

वटनामानि ।

वटोरक्तफल शृङ्गीन्यग्रोध स्कन्धजोध्रुव ।
क्षीरीवैश्रवणावासोबहुपादोवनस्पति ॥

अर्थ–वट, रक्तफल, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कन्धज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, बहुपाद, वनस्पति (नन्दी, शुङ्ग, महत्पाद, वैश्रवणालय, वैश्रवणोदय, वृक्षनाथ, यमप्रिय, कर्म्मज, भाण्डीर, जटाल, रोहिण, अवरोही, विटपी

स्कन्धरुह, मण्डली, महच्छाय, भृङ्गी, यक्षावास, यक्षतरु, पादरोहण, नील, शिफारुह, बहुपात्, जटिल, जटी)

संस्कृतभाषामें	वट।
हिन्दीभाषामें	वड।
बंगभाषामें	वट।
मराठीभाषामें	वड।
गुजरातीभाषामें	वड।
कर्णाटकीभाषामें	आल।
तैलिङ्गीभाषामें	मर्रिचेट्टु, मार्रि, पेड्डिमर्रि।
तामिलीभाषामें	आल।
औत्कलीभाषामें	बोरु।
इंग्रेजीभाषामें	बनीयन्ट्री। Banyantree
लेटिनभाषामें	फाईकस् इन्डिकस। Ficus indicus
फारसीभाषामें	दरख्तिरेशा, वडवाई, ऐशाण्वगर्द।
अरबीभाषामें	जातुज्याइवयआव।

अस्य गुणाः।

वटः शीतोगुरुर्ग्राहीकफपित्तव्रणापहः।
वर्ण्योविसर्पदाहघ्नः कषायोयोनिदोषहृत्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वड-शीतल, भारी, मलरोधक, कफ और पित्तनाशक, व्रणविनाशक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, विसर्परोगनाशक, दाहनिवारक और योनिदोषको दूर करे है।

अन्यच्च।

वटः कषायमधुरः शिशिरःकफपित्तजित्।
ज्वरदाहतृषामोहव्रणशोफापहारकः॥ (रा०नि०)

अर्थ-वड-कषेला, मधुर, शीतल, कफपित्तनाशक तथा ज्वर, दाह, तृषा, मोह, व्रण और सूजनको दूर करे है।

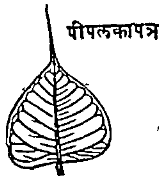
अपिच।

वटोरूक्षोहिमोग्राहीछर्दिहृद्योयोनिदोषजित्।
वर्ण्योमूर्च्छाविसर्पघ्नः कफपित्तहरोगुरुः॥ (ध०नि०)

अर्थ-वड-रूखा, शीतल मलरोधक, वमननिवारक, योनिदोषहारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, भारी तथा मूर्च्छा, विसर्प और कफपित्तको दूर करेहै ।

विवरण । वडका वृक्ष महाविशाल होताहै, इसके पत्तेभी लम्बे चौडे होतेहै, फल छोटे २ झडबेरके बरावर आतेहैं । इसकी शाखाओंमेंसे लाल लाल अंकुर निकलतेहैं, जब वह बढजातेहैं उसको वटकी डाढी कहतेहै, वह इतनी बढजातीहै कि, लटकती २ पृथ्वीमें आकर जमजातीहै । जहाँ जहाँ यह डाढी जमजातीहै वहा २ वडके वृक्ष होजातेहै, इसप्रकार एक वडकी अनेक जडें होतीहैं परन्तु यह सब वास्तवमे एकहीहै और परस्पर मिली हुई होतीहै ऐसेही यह बढते २ उस वडका वीघोंमें विस्तार होजाताहै ।

अश्वत्थनामानि ।



बोधिद्रु पिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रोगजाशन ॥

अर्थ-बोधिद्रु, पिप्पल, अश्वत्थ, चलपत्र, गजाशन, (केशवालय, चैत्यद्रु, बोधितरु, कृष्णावास, चैत्यवृक्ष, नागबन्धु, देवात्मा, महाद्रुम, कपीतन, बोधिद्रुम, चलदल, कुञ्जराशन, अच्युतावास, पवित्रक, शुभद, बोधिवृक्ष, याज्ञिक, गजभक्षक, श्रीमान्, क्षीरद्रुम, विप्र, मङ्गल्य, श्यामल, गुह्यपुष्प, सेव्य, सत्य, शुचिद्रुम, धनुर्वृक्ष)

संस्कृतभाषामें	अश्वत्थ ।
हिन्दीभाषामें	पीपलवृक्ष ।
बंगभाषामें	अश्वत्थ, आशोतगाछ ।
मराठीभाषामें	पिपळ ।
गुजरातीभाषामें	पीपलो ।
कर्णाटकीभाषामें	अरली ।

तैलङ्गीभाषामें	गईचेट्टु, कुलुकुविचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	पोप्लरलीव्ड फिग्ट्री । Poplar leaved figtree
लैटिन्भाषामें	फाईकस् रिलिजियोज्ञा । Ficus Religiosa
फारसीभाषामें	दरखतलरजा ।

अन्य गुणा ।

पिप्पलोदुर्जर शीत-पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ।
गुरुस्तुवरकोरूक्षोवर्ण्योयोनिविशोधन- ॥(भा० प्र०)

अर्थ-पीपल-दुर्जर, शीतल, पित्त, श्लेष्म, व्रण, और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै । भारी, कषेला, रूखा, वर्णको सुंदरतादायक और योनिशोधक है ।

अपिच ।

अश्वत्थोमधुर शीत कषायोदुर्जरोगुरु । रूक्षोवर्ण्यस्तिक्तकश्चयोनिशोधनकारक ॥ योनिदोषंरक्तदोपदाहपित्तकफाञ्जयेत् । व्रणंचनाशयत्येवफलपक्वंचशीतलम् ॥ हृद्यंरक्तरुजपित्तविपदोपचनाशयेत । दाहवान्तिचशोपंचह्यरुचिंचैवनाशयेत ॥ (नि० र०)

अर्थ-पीपल-मधुर, शीतल, कषेला, दुर्जर, भारी, रूखा, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, कडवा, योनिशोधक तथा योनिदोष, रुधिरदोष, दाह, पित्त, कफ और व्रणको दूर करनेवाला है । इसके पके फल-शीतल, हृदयको हितकारी तथा रक्तरोग, पित्त विष, दाह, वमन, शोप और अरुचिको दूर करनेवाले हैं ।

विवरण । पीपलका वृक्ष-बहुत बडा होताहै, यह वृक्ष ग्राम और नगरमें बहुत होतेहैं, वनोंमें बहुत कम होतेहैं, इसके पत्ते-गोल और अनीदार डालियोंपर लगतेहैं यह पत्ते सर्वदा हिलते रहतेहैं इसपरभी छोटे अंकुर होतेहैं, फल भी पत्तोंकी जडमें छोटे झडबेरकी तुल्य लगते हैं, उनको पिपर्लाति कहतेहैं, इसकी शाखाओंपर लाखभी आतीहै परन्तु सर्व नहीं कोई समय पाकर यह वृक्ष बहुत श्रेष्ठ और पवित्रहै ऋषि मुनियोंने इसको पूजनके योग्य समझ रक्खाहै ।

पारीशपिप्पलनामानि ।

पारीशोन्योफलीशश्चकपिचूत कमण्डलु- ।

गर्दभांड·कन्दराल कपीतन सुपार्श्वक· ॥

अर्थ–पारीश, फलीश, कपिचूत, कमण्डलु, गर्दभाण्ड, कदराल, कपीतन, सुपार्श्वक ।

सस्कृतभापामें	पारीश ।
हिन्दीभापामें	पारिसपीपल, गजदड ।
वगभापामें	गजशुडी ।
मराठीभापामें	पारसपिपळ भेंड । को०मणेरवृक्ष ।
गुजरातीभापामें	पारसपिपलो ।
कर्णाटकीभापामें	वगरली ।
तैलङ्गीभापामें	घेनगाखी, गगरेय ।
तामिलीभापामें	पोरिश, पूवरश, सरम् ।
इग्रेजीभापामें	हिविक्सस् Hibiscus
लैटिन्भापामें	थेसपीसीया पोपलनिया । Thespesia populnea
फारसीभापामें	यलास वेलय ।

अस्य गुणा· ।

फलीशोदुर्ज्जर स्निग्ध·कृमिशुक्रकफप्रद ।
फलोम्लोमधुरोमूलेकपाय स्वादुमज्जक ॥ (भा प्र)

अर्थ–पारिसपीपल–अत्यन्त कठिनतासे पचनेवाला, स्निग्ध, कृमिजनक, शुक्रकारक और कफवर्द्धक है । इसके फल–अम्ल । इसकी जडमे मधुरता । इसकी मज्जामें कपेला और मीठापन है ।

अपच्च ।

ब्रह्मवृक्षस्तुमधुरोवृष्योम्लस्तुवरोमत·।दुर्जर कफकृत्स्निग्ध शुक्रलोजतुकारक ॥ वातपित्तचह्द्रोगदाहकठरुजतथा । नाशयेदितिसप्रोक्त फलमम्लमधुस्मृतम् ॥ मूलतुतुवरज्ञेय मज्जास्वाद्वीस्मृताबुधै । (नि० र०)

अर्थ–पारिसपीपल–मधुर, वीर्यवर्द्धक, खट्टा, कपेला, अतिकठिनतासे पचनेवाला, कफकारक, स्निग्ध, शुक्रजनक, कृमिकारक तथा वात, पित्त, हृदयरोग, दाह और कठरोगको दूर करे है । इसके फल–अम्ल और मधुर है । इसकी जड–कपेली है । इसकी मज्जा स्वादिष्ट है ।

विवरण । पारिसपीपलका वृक्ष-पीपलके समान होताहै, परन्तु पीपलपर फूल नहीं होतेहैं और पारिसपीपलमें भिंडीकी समान पीपलफूलभी आतेहैं और इसके डोरे भिंडीके आकार होतेहैं ।

नन्दीवृक्षनामानि ।

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेद प्ररोहीगजपादप ।
स्थालीवृक्ष क्षयतरु क्षीरीचस्याद्वनस्पतिः ॥

अर्थ-नन्दीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी, वनस्पति ।

संस्कृतभाषामें	नन्दीवृक्ष ।
हिन्दीभाषामें	वेलियापीपल ।
तैलिङ्गीभाषामें	बट्टिचेट्टु ।

अस्य गुणाः ।

नन्दीवृक्षोलघुःस्वादुस्तिक्तस्तुवरउष्णक ।
पाकेकटूरसेग्राहीविषपित्तकफास्त्रनुत ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वेलियापीपल-हलका, स्वादिष्ट, कषेला, कडवा, गरम, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा विष, पित्त, कफ और रुधिरके दोषको दूर करेहै।

विवरण । वेलिया पीपलभी पीपलका भेदहै, इसके पत्ते-बडे २ होतेहैं इसकी शाखाओंमेंभी अङ्कुर होतेहैं, इसकी जड बहुत मोटी होतीहै ।

प्लक्षनामानि ।

प्लक्षोजटीपर्कटीचकर्परीचारुदर्शिनी ।
शृङ्गीवरोहशाखीचह्यश्वत्थीपिंपरीवटी ॥

अर्थ-प्लक्ष, जटी, पर्कटी, कर्परी, चारुदर्शिनी, शृङ्गी, वरोहशाखी, अश्वत्थी, पिंपरी, वटी (कमण्डलुतरु, कपीतन, शीगी, सुपार्श्व, कमण्डलु, गर्दभाण्ड पीतन, दृढप्ररोह, प्लवक, प्लवङ्ग, महाबल, कन्दराल, पर्कटि, प्लक्षा, जटि, प्लीक्षा)

संस्कृतभाषामें	प्लक्ष, पर्कटी ।
हिंदीभाषामें	पाखर, ।
बंगभाषामें	पाकुडगाछ ।
मराठीभाषामें	पिंपरी ।

गुजरातीभाषामें पीपर्य ।
कर्णाटकीभाषामें बसुरि)
लैटिन्भाषामें फाईलसविरेन्स । Ficlus verance

अस्य गुणाः ।

प्लक्षःकषाय शिशिरोव्रणयोनिगदापहः ।
दाहपित्तकफास्रघ्नःशोफहारक्तपित्तहृत ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–पाखर–कषेला, शीतल तथा व्रण, योनिरोग, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, सूजन और रक्तपित्तको दूर करै है ।

अ‌पच्च ।

प्लक्ष कटुःकषायश्चशिशिरोरक्तदोपजित् ।
मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नोह्रस्वपत्रोविशेषत ।
मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नोह्रस्वपत्रोविशेषत ॥

अर्थ–पाखर–कटु, कषाय, शिशिर, रक्तदोपनाशक तथा मूर्च्छा, भ्रम और प्रलापको दूर करनेवाला है । ह्रस्वपत्रवाला पाखर अधिक गुणवाला है

विवरण । पाखरके वृक्ष-वड पीपलकी भाँतिके जगल और ग्रामोंमें बहुत होतेहै, पत्ते–लम्बे २ आमकेसे होतेहैं, जब नया वृक्ष लगाना होताहै तब इसके गुद्देको काटकर लगादेतेहै, उसीमेंसे हरे २ पत्ते निकलने लगतेहैं, पाच, छै, वर्षमें वैसाही वृक्ष छायादार होजाताहै, इसके सज्जन वनकी प्रशसाहै कि, ऐसी उत्तम छाया किसी वृक्षकी नहीं होतीहै ।

उदुम्बरनामानि ।



उदुम्बरःक्षीरवृक्षोहेमदुग्धःसदाफलः।
अपुष्पफलसम्बधोयज्ञाङ्गःशीतवल्कलः॥

अर्थ-उदुम्बुर, क्षीरवृक्ष, हेमदुग्ध, सदाफल, अपुष्पफलसंबध, यज्ञाङ्ग, शीतवल्कल (कृमिकण्ट, कृमिकण्टक, क्रिमिकण्टक, पाणिमुख, पुष्पहीन, जन्तुफल, यज्ञफल, यज्ञोडुम्बर, उडुम्बर, हेमदुग्धक, ब्रह्मवृक्ष, हेमदुग्धी, सुचक्षु, श्वेतवल्कल, कालस्कन्ध, यज्ञयोग्य, यज्ञीय, सुप्रतिष्ठित, शीतवल्क, यज्ञसार, पुष्पशून्य, पवित्रक, सौम्य, शीतफल, जन्तुफल)

संस्कृतभाषामें	उदुम्बर।
हिन्दीभाषामें	गूलर।
बंगभाषामें	यज्ञडुमुर।
मराठीभाषामें	उम्बर।
गुजरातीभाषामें	उम्बरो।
कर्णाटकीभाषामें	अत्ति।
तैलिङ्गीभाषामें	बाड्डचेट्टु।
इंग्रेजीभाषामें	किगट्री। hog tree
लैटिन भाषामें	फाइकसग्लोमिरेटा। Ficus glomerata
फारसीभाषामें	अंजीरे आदम।
अरबीभाषामें	जमीज।

अस्य गुणाः।

उदुम्बरःशीतलःस्याद्गर्भसन्धानकारकः। व्रणरोपणकृद्रूक्षोमधुरस्तुवरोगुरुः॥अस्थिसन्धानकृद्वर्ण्यःकफपित्तातिसारकान्। योनिरोगनाशयतिवल्कश्चैवास्यशीतलम्॥ दुग्धंचतुवरंगभ्यंव्रणनाशकरंस्मृतम्। कोमलंचास्यचफलंस्तम्भकृत्तुवरंमतम्॥ हितकारितृषापित्तकफरक्तरुजापहम्। मध्यमकोमलंस्वादुशीतलंतुवरंमतम्॥ पित्तंतृषामोहक-रंरक्तस्रुतिवमीहरम्। प्रदरघ्नंसमुद्दिष्टमपक्वंतुवरंमतम्॥ रुच्यंचाम्लंदीपनंस्यान्मांसवृद्धिकरंमतम्। रक्तरुङ्नाशकंनेत्रदोषलंचजडंमतम्॥ तत्पक्वञ्चकषायंस्यान्मधुरंकृमिरा-

रकम् । जडरुचिप्रदचातिशीतलकफकारकम् ॥ रक्तरु-
क्पित्तदाहक्षुत्तृपाश्रमप्रमेहहम् । शोपमूर्च्छाहरप्रोक्तपूर्वे स्वे
स्वेनिघण्टके ॥ (नि० र०)

अर्थ–गूलर–शीतल, गर्भसन्धानकारक, व्रणको भरनेवाला, रूखा, मधुर, कपेला, भारी, अस्थिसन्धानकारक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा कफ, पित्त, अतिसार और योनिरोगका नाश करे है । उसकी छाल अत्यन्त शीतल, दुग्धवर्द्धक, कपेली, गर्भको हितकारी और व्रणविनाशक है । इसके कोमल फल–स्तम्भक, कपेले, हितकारी तथा तृषा, पित्त, कफ और रुधिरके रोगोंका नाश करे है । मध्यम कोमल फल–स्वादु, शीतल, कपेले, पित्त, तृषा और मोहकारक तथा रक्तस्राव, वमन और प्रदररोगनाशक हैं । इसके तरुणफल–कपेले, रुचिकारक, अम्ल, दीपन, मासवर्द्धक, रुधिरको विगाडनेवाले, दोपजनक और जड हैं । इसके पक्के फल–कपेले, मधुर, कृमिकारक, जड, रुचिकारक अत्यत शीतल, कफकारक तथा रुधिरविकार, पित्त, दाह, क्षुधा, तृपा, श्रम, प्रमेह, शोप और मूर्च्छाको हरनेवाले हैं ।

नद्युदुम्बरनामानि ।

नद्युदुम्बरिकाचान्यालघुपत्रफलातथा ।
लघुहेमदुग्धाप्रोक्तालघुपूर्वसदाफला ॥

अर्थ–नद्युदुम्बरिका, लघुपत्रफला, लघुहेमदुग्धा, लघुपूर्वसदाफला ।

अस्य गुणा ।

नद्युम्बरीगुणे सर्वे सदृशातुमतावुधै ।
रसवीर्य्यविपाकेपुकिञ्चिन्न्यूनाचपूर्वत ॥

अर्थ– नदीके निकटका गूलर–गूलरकेही समान गुणवाला है तथा रस, वीर्य्य और विपाकमें किंचित् हीन है ।

काकोदुम्बरिकानामानि ।

उदुम्बरफलाचैवकर्कशच्छदनाऽसुमा ।
काकोदुम्बरिकाज्ञेयाक्षीरीचखरपत्रिका ॥

अर्थ–उदुम्बरफला, कर्कशच्छदना, असुमा, काकोदुम्बरिका, क्षीरी, खरपत्रिका (कृष्णोदुम्बरिका, खरपत्रि, राजिका, क्षुद्रोदुम्बरिका, फल्गु,

उदुम्बरःक्षीरवृक्षोहेमदुग्धःसदाफलः।
अपुष्पफलसम्बधोयज्ञाङ्ग शीतवल्कल ॥

अर्थ–उदुम्बुर, क्षीरवृक्ष, हेमदुग्ध, सदाफल, अपुष्पफलसबध, यज्ञाङ्ग, शीतवल्कल (कृमिकण्ट, कृमिकण्टक, क्रिमिकण्टक, पाणिमुरा, पुष्पहीन, जन्तुफल, यज्ञफल, यज्ञोदुम्बर, उडुम्बर, हेमदुग्धक, ब्रह्मवृक्ष, हेमदुग्धी, सुचक्षु, श्वेतवल्कल, कालस्कन्ध, यज्ञयोग्य, यज्ञीय, सुप्रतिष्ठित, शीतवल्क, यज्ञसार, पुष्पशून्य, पवित्रक, सौम्य, शीतफल, जवनेफल)

संस्कृतभाषामें	उदुम्बर।
हिन्दीभाषामें	गूलर।
बंगभाषामें	यज्ञडुमुर।
मराठीभाषामें	उम्बर।
गुजरातीभाषामें	उमरो।
कर्णाटकीभाषामें	अत्ति।
तैलिङ्गीभाषामें	याइचेट्टु।
इंग्रेजीभाषामें	फिगट्री। Fig tree
लैटिन् भाषामें	फाइकसग्लोमिरेटा। Ficus glomerata
फारसीभाषामें	अंजीरे आदम।
अरबीभाषामें	जमीझ।

अस्य गुणाः।

उदुम्बरः शीतलः स्याद्गर्भसन्धानकारकः। व्रणरोपणकृद्रूक्षोमधुरस्तुवरोगुरुः ॥ अस्थिसन्धानकृद्वर्ण्यः कफपित्तातिसारकान्। योनिरोगनाशयतिवल्कचैवास्यशीतलम् ॥ दुग्धदन्तुवरगभ्यंव्रणनाशकरम्मतम्। कोमलञ्चास्यचफलंस्तम्भकृत्तुवरम्मतम्॥ हितकारितृपापित्तकफरक्तरुजापहम्। मध्यमकोमलस्वादुशीतलन्तुवरम्मतम् ॥ पित्ततृषामोदकररक्तस्त्रुतिवमीहरम्। प्रदरघ्नंसमुद्दिष्टमपक्वन्तुवरम्मतम् ॥ रुच्यनाम्लंदीपनन्स्यान्मांसवृद्धिकरम्मतम्। रक्तरुधारकञ्चैवदोषलंनजडंमतम् ॥ तत्पक्वञ्चकषायस्यान्मधुरकृमिका-

रकम् । जडंरुचिप्रदंचातिशीतलंकफकारकम् ॥ रक्तरुक्पित्तदाहक्षुत्तृपाश्रमप्रमेहहम् । शोपमूर्च्छाहरंप्रोक्तपूर्वैःस्वेस्वेनिघण्टके ॥ (नि० र०)

अर्थ–गूलर–शीतल, गर्भसन्धानकारक, व्रणको भरनेवाला, रूखा, मधुर, कपेला, भारी, अस्थिसन्धानकारक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा कफ, पित्त, अतिसार और योनिरोगका नाश करे है । उसकी छाल अत्यन्त शीतल, दुग्धवर्द्धक, कपेली, गर्भको हितकारी और व्रणविनाशक है । इसके कोमल फल–स्तम्भक, कपेले, हितकारी तथा तृपा, पित्त, कफ और रुधिरके रोगोंका नाश करे है । मध्यम कोमल फल–स्वादु, शीतल, कपेले, पित्त, तृपा और मोहकारक तथा रक्तस्राव, वमन और प्रदररोगनाशक हैं । इसके तरुणफल–कपेले, रुचिकारक, अम्ल, दीपन, मांसवर्द्धक, रुधिरको बिगाडनेवाले, दोपजनक और जड हैं । इसके पके फल–कपेले, मधुर, कृमिकारक, जड, रुचिकारक अत्यत शीतल, कफकारक तथा रुधिरविकार, पित्त, दाह, क्षुधा, तृपा, श्रम, प्रमेह, शोप और मूर्च्छाको हरनेवाले हैं ।

नद्युदुम्बरनामानि ।

नद्युदुम्बरिकाचान्यालघुपत्रफलातथा ।
लघुहेमदुग्धाप्रोक्तालघुपूर्वसदाफला ॥

अर्थ–नद्युदुम्बरिका, लघुपत्रफला, लघुहेमदुग्धा, लघुपूर्वसदाफला ।

अस्य गुणाः ।

नद्युम्बरीगुणे सर्वे सदृशातुमताबुधै ।
रसवीर्य्यविपाकेपुकिञ्चित्न्यूनाचपूर्वत ॥

अर्थ– नदीके निकटका गूलर–गूलरकेही समान गुणवाला है तथा रस, वीर्य और विपाकमें किंचित् हीन है ।

काकोदुम्बरिकानामानि ।

उदुम्बरफलाचैवकर्कशच्छदनाऽसुमा ।
काकोदुम्बरिकाज्ञेयाक्षीरीचखरपत्रिका ॥

अर्थ–उदुम्बरफला, कर्कशच्छदना, असुमा, काकोदुम्बरिका, क्षीरी, खरपत्रिका (कृष्णोदुम्बरिका, खरपत्रि, राजिका, क्षुद्रोदुम्बरिका, कुष्ठघ्नी,

फल्गुवाटिका, अजाजी, फल्गुनी, मल्पू, चित्रभेषजा, ध्वांक्षनाम्नी, पडु, जघनेफला, बहुफला, खरदला, मलयु, फल्गुफला, काकोदुम्बर, काकोदुम्बरिका, अजाक्षी, भद्रोदुम्बरिका)

संस्कृतभाषामें	काकोदुम्बरिका।
हिन्दीभाषामें	कठूमर।
बंगभाषामें	काकडुमुर।
मराठीभाषामें	काळाउम्बर, बोखाडा।
गुजरातीभाषामें	टेडउम्बरो।
कर्णाटकीभाषामें	काअत्ति।
तैलिङ्गीभाषामें	ब्रह्ममेडिचेट्टु, काकी बाडुचेट्ट।
इंग्रेजीभाषामें	फिग्ट्री। hog tree
लेटिन भाषामें	फाइकस् ओपोझिटि फोलिया। Ficus opposit folia
	फाइकस् हिस्पिडा। F. Hispida
फारसीभाषामें	अजिरेदस्ती।
अरबीभाषामें	तनवर्रि।

मल्पा गुणाः।

मलपूस्तम्भकृत्तिक्ता शीतला तुवरा जयेत्।
कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्डुर्शकामलाः॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कठूमर-स्तम्भक, शीतल, कषैला तथा कफ, पित्त, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, पाण्डुरोग, बवासीर और कामलारोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

काकोदुम्बरिका शीता कषाया दद्रुघातिनी।
[illegible] स्त्रातिमान्द्यन्त्रीचमुख[illegible] [illegible] ०)

अर्थ-कठूमर,-शीतल, कषैला तर्[illegible] नागि-कामें दाह्गिके गिरने[illegible]।

काकोदुम्बरि[illegible]
[illegible] दप [illegible]
पराक [illegible]

दुर्नामानंचोर्द्धदोपनाशयेदितिकीर्तितम् । फलमस्याः स्वादुशीततुवरतृप्तिकारकम् ॥ गुरुधातुवृद्धिकर पाके च मधुर स्मृतम् । स्निग्धमलस्तम्भकरपौष्टिकग्राहिवातलम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कठूमर-शीतल, कडवा, अम्ल, मलस्तम्भक, कटु, कपेला, ग्राही, इन्द्रियमसादक तथा त्वग्दोप, कामला, पित्त, रक्तपित्त, कफ, श्वेतकुष्ठ, व्रण, पाण्डुरोग, रुधिरविकार, सूजन, ववासीर और ऊर्ध्वगत दोपको दूर करें है । इसके फल-स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, भारी, धातुवर्द्धक, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, मलस्तम्भकारक, पुष्टिजनक और मलरोधक हैं ।

विवरण । गूलर अर्थात् उदुम्वर और कठूमरका वडा वृक्ष होता है, इसपर फूल नहीं आते, इसकी शाखाओंमेंसे फल उत्पन्न होते हैं, फल गोल २ अजीरकी समान होतेहैं और इसमेंसे दूध निकलता है, इसके पत्ते-लभेटेकेसे होते हैं, नदी उदुम्वरके पत्ते गूलरके पत्तासे छोटे और फलभी छोटे होते हैं, कठूमरके पत्ते गूलरके पत्तोंसे वडे हैं वरन् गगेरनके पत्तोंके समान होते हैं । इसके पत्तोंको छूनेसे हाथोंमें खुजली होने लगतीहै और पत्तोंमें दूध निकलता है ।

शिरीषनामानि ।

शिरीषोभण्डिलोभण्डीभण्डीरश्चकपीतन ।
शुकपुष्प शुकतरुर्मृदुपुष्प शुकप्रिय ॥

अर्थ-शिरीप, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प, शुकप्रिय (कर्णपूर, शुकद्रुम, भण्डील, भण्डिर, मृदुपुष्प, विपघाती, विपनाशन, शीतपुष्प, भण्डिक, स्वर्णपुष्पक, शुकेष्ट, वर्हपुष्प, विपदन्ता, सुपुष्पक, उद्दानक, शुकतरु, लोमशपुष्पक, कपीतक, कलिंग, श्यामल, शंखिनीफल, मधुपुष्प, वृत्तपुष्प, शिखिनीफल, प्लवग, श्यामवर्ण)

संस्कृतभाषामें	शिरीष ।
हिन्दीभाषामें	सिरस ।
वंगभाषामें	शिरीषगाछ, चट्का ।
मराठीभाषामें	शिरसी ।
गुजरातीभाषामें	शिरीष, सरपडो ।
कर्णाटकीभाषामें	शिरसु ।

फल्गुवाटिका, अजाजी, फल्गुनी, मलयू, चित्रभेषजा, ध्वांक्षनाम्नी, फल्गु, जवनेफला, बहुफला, खरदला, मलयु, फल्गुपत्रा, काकोदुम्बर, काकोदुम्बरिका, अजाक्षी, भद्रोदुम्बरिका)

संस्कृतभाषामें	काकोदुम्बरिका ।
हिन्दीभाषामें	कठूमर ।
बंगभाषामें	काकडुमुर ।
मराठीभाषामें	काळाउम्बर, बोखादा ।
गुजरातीभाषामें	टेडउम्बरो ।
कर्णाटकीभाषामें	काअत्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	ब्रह्ममेडिचेट्टु, काकी बाडुचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	फिगट्री । Hog tree
लेटिन भाषामें	फाइकस् ओपोसिटि फोलिया । Ficus oppositi folia
	फाइकस् हिस्पिडा । F. Hispida
फारसीभाषामें	अंजिरेदस्ती ।
अरबीभाषामें	तनर्यी ।

अस्या गुणाः ।

मलष्टम्भकृत्तिक्ताशीतलातुवराजयेत् ।
कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्ड्वर्शकामलाः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कठूमर-स्तम्भक, शीतल, कषेला तथा कफ, पित्त, व्रण, श्वित्रकुष्ठ पाण्डुरोग, बवासीर और कामलारोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

काकोदुम्बरिकाशीताकषायादद्रुघातिनी ।
रक्तातिसारहन्त्रीचमुखनासास्रघातिनी ॥ (शो०नि०)

अर्थ-कठूमर,-शीतल, कषेला तथा दाद, रक्तातिसार, मुख और नासिकासे रुधिरके गिरनेको दूर करे है ।

अपिच ।

काकोदुम्बरिकाशीतातिक्ताम्लास्तम्भकाकटुः।तुवरामाधुर्णीप्रोक्ताचेन्द्रियाणांप्रसादका ॥ त्वग्दोषकामलापित्तरक्तपित्तकफाञ्जयेत् । श्वेतकुष्ठंव्रणपाण्डुंक्षरोगंचशोथकम् ॥

दुर्नामानचोर्द्धदोषंनाशयेदितिकीर्तितम्। फलमस्याःस्वादुशीततुवरंतृप्तिकारकम् ॥ गुरुधातुवृद्धिकर पाके च मधुर स्मृतम्। स्निग्धमलस्तम्भकरंपौष्टिकग्राहिवातलम्॥(नि०र०)

अर्थ-कटूमर-शीतल, कडवा, अम्ल, मलस्तम्भक, कटु, कषेला, ग्राही, इन्द्रियप्रसादक तथा त्वग्दोष, कामला, पित्त, रक्तपित्त, कफ, श्वेतकुष्ठ, व्रण, पाण्डुरोग, रुधिरविकार, सूजन, बवासीर और ऊर्ध्वगत दोषको दूर करे है। इसके फल-स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, भारी, धातुवर्द्धक, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, मलस्तम्भकारक, पुष्टिजनक और मलरोधक है।

विवरण। गूलर अर्थात् उदुम्बर और कटूमरका वडा वृक्ष होता है, इसपर फूल नहीं आते, इसकी शाखाओंमसे फल उत्पन्न होते है,फल गोल २ अजीरकी समान होतेहैं और इसमेंसे दूध निकलता है, इसके पत्ते-लभेडेकेसे होते हैं, नदी उदुम्बरके पत्ते गूलरके पत्तोंसे छोटे और फलभी छोटे होते है, कटूमरके पत्ते गूलरके पत्तोंसे वडे है वरन् गगेरनके पत्तोंके समान होते हैं। इसके पत्तोंको छूनेसे हाथोंम खुजली होने लगतीहै और पत्तोंम दूध निकलता है।

शिरीषनामानि।

शिरीषोभण्डिलोभण्डीभण्डीरश्चकपीतन ।
शुकपुष्पःशुकतरुर्मृदुपुष्प शुकप्रिय ॥

अर्थ-शिरीष, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प, शुकप्रिय (कर्णपूर, शुकद्रुम, भण्डील, भण्डिर, मूर्द्धपुष्प, विषघाती, विषनाशन, शीतपुष्प, भण्डिक, स्वर्णपुष्पक, शुकेष्ट, बर्हपुष्प, विषदन्ता, सुपुष्पक, उद्दानक, शुकतरु, लोमशपुष्पक, कपीतक, कलिंग, श्यामल, शखिनीफल, मधुपुष्प, वृत्तपुष्प, शिखिनीफल, प्लवग, श्यामवर्ण)

संस्कृतभाषामें	शिरीष।
हिन्दीभाषामें	सिरस।
बंगभाषामे	शिरीषगाछ, चटूका।
मराठीभाषामे	शिरसी।
गुजरातीभाषामें	शिरीष, शरपडो।
कर्णाटकीभाषामे	शिरसु।

तिलङ्गीभाषामें दिरसन, शिरीषम्रानु ।
लेटिन्भाषामें आल्बीझियालेबेक् । Albizzia lebbek
आल्बीयमरा । A amara
फारसीभाषामें दरखते जकरिया, तुख्मेदरखतेजकरिया ।
अरबीभाषामें सुल्तानुल असजार, इनेसुलतानुल असजार ।

अस्य गुणाः ।

शिरीषः कटुकः शीतो विषवातहरः परः ।
पामास्रकुष्ठकण्डूतित्वग्दोषस्य विनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सिरस-कटु, शीतल तथा विष, वात, पामा, रुधिरविकार, कुष्ठ, कण्डू और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शिरीषोऽर्शोविषस्वेदत्वग्रुक्छोफविसर्पनुत् । (शा० नि०)

अर्थ-सिरस-बवासीर, विष, पसीना, त्वचाके दोष, सूजन और विसर्पको दूर करे है ।

अपिच ।

शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरो लघुः ।
दोषशोथविसर्पघ्नः कासव्रणविषापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सिरस-मधुर, अनुष्ण, कडवा, कषेला, हलका तथा दोष, सूजन, विसर्प, खांसी, व्रण और विषको हरनेवाला है ।

विवरण । सिरसके वृक्ष-बडे २ ऊंचे और सघन जंगलोंमें होते हैं, पत्ते-आमलेके समान छोटे २ और डालियोंमें बराबर लगते हैं, पुष्प-छोटे २ तन्तुओंसे मुसज्जित अत्यन्त कोमल हरे २ कुछ पीले २ सुगन्धयुक्त बहुत सुन्दर होते हैं, फली पतली चपटी तीन चार आठ अंगुलतक लम्बी पौन अंगुलसे ज्यादे चौडी, भीतर उसके भूरे रंगके बीज होते हैं एक फलीमें दश बीजका प्रमाण है ।

शिंशपानामानि ।

शिंशपा कृष्णसारा च पिच्छला युगपत्रिका ।
पिच्छला धूम्रिका वीरा कपिला गुरुशिंशपा ॥

अर्थ-शिंशपा, कृष्णसारा, पिच्छला, युगपत्रिका, पिच्छला, धूम्रिका, वीरा, कपिला, अगुरुशिंशपा अगुरु [illegible] , युगपर्णिका, श्याम [illegible] युगार्ध्य, श्यामा, धीरा, [illegible] वीरे

श्वेतशिंशपानामानि ।

शिंशपान्याश्वेतपत्रासिताह्वादिश्वशिंशपा ॥

अर्थ—श्वेतशिंशपा, श्वेतपत्रा, सितशिंशपा ।

कपिलशिंशपानामानि ।



कपिलाशिंशपाचान्यापीताकपिलशिंशपा ।
सारिणीकपिलाक्षीचभस्मगर्भाकुशिंशपा ॥

अर्थ—कपिलशिंशपा, पीता, कपिला, सारिणी, कपिलाक्षी, भस्मगर्भा, कुशिंशपा)

संस्कृतभाषामें	शिंशपा, श्वेतशिंशपा, कपिलशिंशपा ।
हिन्दीभाषामें	सीसम, सफेदसीसो, कपिलवर्णसीसम ।
बंगभाषामें	शिशुगाछ, शादाशिशुगाछ, कपिलपत्रशिशुगाछ ।
मराठीभाषामें	काळाशिसवा ।
गुजरातीभाषामें	शिशम ।
कर्णाटकीभाषामें	करीपइविड्ड, विलीनइविड्ड, हंावदनिड्ड ।
तै०	जिट्टरेगुचट्टु ।
तामिलीभाषामें	जानुकुगुकट्टइ, पशकेदर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लॅकुवुड् सीस्ट्री । Black wood Sisoo tree
लै०	डालबरजिया रेटिफोलिया । Dalbergia latifolia
अरबीभाषामें	सासम ।

शिंशपागुणाः ।

शिंशपाकटुकातिक्ताकषायाशोफहारिणी ।
उष्णवीर्य्याहरेन्मेद·कुष्टश्वित्रवमिकृमीन् ॥

तैलङ्गीभाषामें डिरसन, शिरीषचेट्टु ।
लेटिनभाषामें आल्बीझियालेबेक् । Albizzia lebbek
आल्बीयमरा । Amara
फारसीभाषामें दरखते जकरिया, तुरमेदरखतेजकरिया ।
अरबीभाषामें मुल्तानुल् असजार, हबेमुल्तानुल् असजार ।

अस्य गुणाः ।

शिरीषः कटुकः शीतो विषवातहरः परः ।
पामास्रकुष्ठकण्डूतित्वग्दोषस्य विनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सिरस-कटु, शीतल तथा विष, वात, पामा, रुधिरविकार, कुष्ठ, कण्डू और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शिरीषोऽर्शोविषस्वेदत्वक्शुक्रशोफविसर्पनुत् । (शा० नि०)

अर्थ-सिरस-बवासीर, विष, पसीना, त्वचाके दोष, सूजन और विसर्पको दूर करे है ।

अपिच ।

शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरो लघुः ।
दोषशोथविसर्पघ्नः कासव्रणविषापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सिरस-मधुर, अनुष्ण, कडवा, कषैला, हलका तथा दोष, सूजन, विसर्प, खांसी, व्रण और विषको हरनेवाला है ।

विवरण । सिरसके वृक्ष-बडे २ ऊंचे और सघन जङ्गलोंमें होते हैं, पत्ते-आमलेके समान छोटे २ और डालियोंमें बराबर लगते हैं, फूल-छोटे २ तन्तुओंसे सुशोभित अत्यन्त कोमल हरे २ कुछ पीले २ सुगन्धयुक्त बहुत सुन्दर होते हैं, फली पतली चपटी तीन चार आठ अंगुलतक लम्बी पौन अंगुलसे ड्योढे चौडी, भीतर उसके भूरे रंगके बीज होते हैं एक फलीमें दश बीजका प्रमाण है ।

शिंशपानामानि ।

शिंशपा कृष्णसारा च पिप्पला युगपत्रिका ।
पिच्छला धूम्रिका वीरा कपिला गुरुशिंशपा ॥

अर्थ-शिंशपा, कृष्णसारा, पिप्पला, युगपत्रिका, पिच्छला, धूम्रिका, वीरा, कपिला, अगुरुशिंशपा (अगुरु, पिच्छिला, युग्मपत्रिका, कालानुसार्य, श्यामा, धीरा, मंदरपर्णी, शीतगुप्ता)

श्वेतशिंशपानामानि ।

शिशपान्याश्वेतपत्रासिताह्वादिश्वशिंशपा ॥

अर्थ–श्वेतशिंशपा, श्वेतपत्रा, सिताशिंशपा ।

कपिलशिंशपानामानि ।



कपिलाशिंशपाचान्यापीताकपिलशिंशपा ।
सारिणीकपिलाक्षीचभस्मगर्भाकुशिंशपा॥

अर्थ–कपिलशिंशपा, पीता, कपिला, सारिणी, कपिलाक्षी, भस्मगर्भा, कुशिंशपा)

संस्कृतभाषामें	शिंशपा, श्वेतशिंशपा, कपिलशिंशपा ।
हिन्दीभाषामें	सीसम, सफेदसीसो, कपिलवर्णसीसम ।
वगभाषामें	शिशुगाछ, शादाशिशुगाछ, कपिलपत्रशिशुगाछ ।
मराठीभाषामें	काळाशिसवा ।
गुजरातीभाषामें	शिशम ।
कर्णाटकीभाषामें	करीपइविट्ट, विलीनइविट्ट, हॉवदनिट्ट ।
तै०	जिट्टरेगुचट्ट ।
तामिलीभाषामें	जानुक्कुकट्टइ, पत्तकेदर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लॉक्वुड् सीस्ट्री । Black wood Si oo tree
लै०	डालवरजिया लेटिफोलिया । Dalbergia latifolia
अरबीभाषामें	सागम ।

शिंशपागुणा ।

शिंशपाकटुकातिक्ताकषायाशोपहारिणी ।
उष्णवीर्य्याहरेन्मेद कुष्टश्वित्रवमिक्रमीन् ॥

वस्तिरुग्व्रणदाहास्रबलासान्गर्भपातिनी । (भा०प्र०)

अर्थ-सीसम-कटु, तिक्त, कषाय, शोफनाशक, उष्णवीर्य तथा मेद, श्वित्रकुष्ठ, वमन, कृमि, वस्तिरोग, व्रण दाह, रुधिरविकार और कफको हरनेवाला है तथा गर्भको गिरानेवाला है ।

अन्यच्च ।

शिंशपादद्रुशोफघ्नीकुष्ठजीर्णज्वरापहा ।

अर्थ-सीसम-दाद, सूजन, कोढ, अजीर्ण और ज्वरको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

श्यामादिशिंशपातिक्ताकटूष्णाकफवातजित ।
कुष्ठाजीर्णहरादीप्याशोफातीसारहारिणी ॥

अर्थ-सीसम कडवा, चरपरा, गरम, अग्निदीपक तथा कफ, वात, कुष्ठ, अजीर्ण, सूजन और अतीसारको दूर करे है ।

श्वेतशिंशपागुणाः ।

श्वेतादिशिंशपातिक्ताशिशिरापित्तदाहनुत ।

अर्थ-सफेद सीसम-कडवा, शीतल तथा पित्त और दाहको दूर करे है ।

कपिलशिंशपागुणाः ।

कपिलाशिंशपातिक्ताशीतवीर्याश्रमापहा ।
वातपित्तज्वरघ्नीचच्छर्दिहिक्काविनाशिनी ॥

अर्थ-भूरेरंगका सीसम-कडवा, शीतवीर्य, श्रमनाशक तथा वात, पित्त, ज्वर, वमन और हिचकीको दूर करे है ।

त्रिविधशिंशपागुणाः ।

शिंशपात्रितयंवर्ण्यंहिमंशोफविसर्पजित ।
पित्तदाहप्रशमनंबल्यंरुचिकरंपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तीनों प्रकारके सीसम-वर्णको सुंदर करनेवाले, शीतल, बलदायक, रुचिजनक तथा सूजन, विसर्प, पित्त और दाहको शान्त करते हैं ।

विवरण । सीसमके वृक्ष बहुत बडे २ जंगलमें होते हैं, पत्ते गोल नोकदार पीपलकी बराबर होते हैं, फूल बहुत छोटे २ गुच्छोंमें लगते हैं, फली बहुत पतली और चपटी होती है, उसमें छोटे २ चपटे बीज निकलते हैं, सीसमकी लकडी कुछ श्यामता और ललाई लिये भूरेरंगकी होती है, दूसरा काले रंगका सीसमभी इसीप्रकारका होता है ।

सालनामानि।



सालस्तुसर्ज्जकार्याऽश्वकर्णिकासस्यसम्वर।

अर्थ–साल, सर्ज्जकार्य, अश्वकर्णिका सस्यसम्वर, (अश्वकर्णक, शस्यशम्बर, उपमेत, दीर्घशाख, जलदाशन, लतातरु, लताशख, शकुतरु, शकुवृक्ष, सर्ज, सर्जरस, कल, कललजोद्भव, वल्लीवृक्ष, चीरपर्ण, रालकार्य्य, अजकर्णक, वस्तकर्ण, कषायी, ररलन, गन्धवृक्षक, वश, रालनिर्य्यास, दिव्यसार सुरेष्टक, शूर, अग्निवल्लभ, यक्षधूप, सिद्धक, जरणद्रुम, तार्क्ष्यप्रसव, धन्य, दीर्घपर्ण, कुशिक, कौशिक)

संस्कृतभाषामें	साल, अश्वकर्ण।
हिन्दीभाषामें	साल, सखुया, साखु।
वंगलाभाषामें	शालगाछ, रताशाल।
मराठीभाषामें	राळेचा वृक्ष, साजरा।
कर्णाटकीभाषामें	सज्जरदामर।
ते०	एपचेट्टु।
तामिलीभाषाम	कुंगिलियम।
इंग्रेजीभाषामें	सालट्री। Sal tree
लैटिनभाषामें	शोरिया रोवष्टा। Shorea Robusta

अस्य गुणाः।

अश्वकर्ण कषाय स्याद्व्रणस्वेदकफक्रमीन्।
ब्रध्नविद्रधिवाधिर्य्ययोनिकर्णगदान्हरेत॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अश्वकर्ण साल-कषेला तथा व्रण, पसीना, कफ, कृमि, ब्रध्न, विद्रधि, बधिरता, योनिरोग और कर्णरोगको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

अश्वकर्ण कटुस्तिक्त स्निग्ध पित्तास्रनाशन।
उरोविस्फोटकण्डूघ्न शिरोदोषार्त्तिकृन्तन॥ (रा० नि०)

अर्थ-अश्वकर्ण-कटु, तिक्त, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक तथा उरोविस्फोट, कण्डु और मस्तकरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

उर्जोव्रणहरश्चैवश्लेष्मरक्तप्रकोपहृत।

अर्थ-साल-व्रणविनाशक और कफ तथा पित्तके कोपको शांति करे है।

अपिच।

अश्वकर्ण कटुस्तिक्तोरूक्ष कान्तिकरोमत। स्निग्धोष्ण कफपाण्ड्वर्त्तिपित्तकर्णरुजाहर॥ रक्तरुङ्मेहकुष्ठघ्नोव्रणोर क्षतकण्डुहा। विषदोषवातरोगशिरोरोगश्चनाशयेत॥ फलञ्चमधुररूक्षशीतस्तम्भनकृद्गुरु। मलावष्टम्भनकरस्तुवरलेखनमतम्॥ आध्मानशूलवातानांकारकंपित्तनाशकम्। रक्तदोषतृषादाहक्षतक्षयविनाशनम्॥ (नि० र०)

अर्थ-अश्वकर्ण-शाल-चरपरा, कडुआ, रूखा, कान्तिकारक, स्निग्ध, गरम तथा कफ, पाण्डुरोग, पित्त, कर्णरोग, रक्तरोग, प्रमेह कोढ, व्रण, उरःक्षत, कण्डू, विषविकार, वातरोग और शिरोरोगका नाश करे है। इसका फल-मधुर, रूखा, शीतल, स्तम्भक, भारी, मलावष्टम्भक, कषेला, लेखन तथा आध्मान शूल और वातकारक है। पित्तनाशक और रुधिरविकार, तृषा, दाह और क्षतक्षयको दूर करे है।

अथ शालभेदः।

सर्जकोऽन्योऽजकर्ण स्याच्छालोमरिचपत्रक

अर्थ-सर्जक, अजकर्ण, शाल, मरिचपत्रक।

मिश्रभाषामें ... पेगेरियाइण्डिका।

अस्य गुणाः।

अजकर्ण कटुस्तिक्तः कषायोष्णोन्यपोहति।

कफपाण्डुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान् । (भा०प्र०)

अर्थ–अजकर्ण (सालभेद)-चरपरा, कडवा, कषेला, गरम तथा कफ, पाण्डुरोग, कर्णरोग, प्रमेह, कोढ, विष और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सर्जस्तुकटुतिक्तोष्णोहिम स्निग्धोऽतिसारजित् ।
पित्तास्रदोषकुष्ठघ्नःकण्डूविस्फोटवातजित् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–अजकर्ण (सालभेदक) चरपरा, कडवा, गरम, शीतल, स्निग्ध तथा अतिसार, रक्तपित्त, कोढ, कण्डू और विस्फोटका नाश करे है ।

विवरण–शालके बडे बडे वृक्ष होतेह पत्तेभी बहुत बडे बडे लगतेहैं, फूल कुमखोंम आतेहैं । दूसरा अश्वकर्ण, अजकर्ण इत्यादि शालके कई एक भेदहै । शालके गोंदको राल कहते है ।

शल्लकीनामानि ।

शल्लकीगजभक्षाचगजप्रियाचह्लादिनी ।
महारुहावसामोचासुरभीसुरभीरसा ॥

अर्थ–शल्की, गजभक्षा, गजप्रिया, ह्लादिनी, महारुहा, वसा, मोचा, सुरभी, सुरभीरसा (गजभक्ष्या, शिल्की, सिल्लकी, सलकी, सिह्लकी, सिह्लभूमिका, सुवहा, सुरभि, महेरुणा, कुन्दुरुकी, गजाशना, महेरणा, महारणा, ह्रादिनी, अश्वमूत्री (अश्वपुत्री) कुम्भी, अम्रफला, करका, सुखमोदा, सुगन्धा, सुरभिस्रवा, गजवल्लभा, हस्वदा, बहुस्रवा, गन्धवीरा, सुस्रवा, वनकर्णिका, नागवधू, सुश्रीका, गन्धमूला, रसाला, जलतिक्तिका)

संस्कृतभाषामें	शल्की ।
हिंदीभाषाम	सालई, सलई ।
वंगभाषामें	शलई, शालविशेष ।
मराठीभाषामें	शालईवृक्ष, धूपशलाई ।
गुजरातीभाषामें	शालेड्ड, धूपेडो ।
कर्णाटकीभाषामें	तदीकु ।
तामिलीभाषाम	कुलि ।
लेटिन् भाषामें	बोस्वेल्लिया, थेरीफेरा । Boswelia Therifera

अस्य गुणाः ।

शल्लकीतुवराशीताश्लेष्मपित्तातिसारजित । रक्तपित्तव्रणह-

रीपुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ तत्फलं कफवातार्शःकुष्ठारोचकनाशनम् । पुष्पं चास्य कफवातमर्शःकुष्ठारुचीर्जयेत् ॥ (रा.नि.)

अर्थ-शाल्ई-कषेली, शीतल तथा कफ, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त और व्रणको दूर करेहै तथा पुष्टिकारक है। इसका फल-कफ, वात, बवासीर कोढ और अरुचिको दूर करे है। इसका पुष्प-कफ, वात, बवासीर, कोढ और अरुचिको दूर करे है।

अन्यच्च ।

वृक्षस्तु शल्लकीसंज्ञः पुष्टिकारी कषायकः । शीतवीर्य्यश्च मधुरस्तिक्तो ग्राह्यस्त्रिदोषनुत् ॥ व्रणदोषं कफवातपित्तं चार्शश्च नाशयेत् । पक्वातिसारकुष्ठं च रक्तपित्तं विनाशयेत् ॥ निर्य्यासोऽस्य मतो नाम्ना कुन्दुरुः सुज्ञभाषितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-शाल्ई-पुष्टिकारक, कषेली, शीतवीर्य्य, मधुर, कडवी, मलरोधक तथा रुधिरविकार, व्रण, कफ, वात, पित्त, बवासीर, पक्वातिसार, कोढ और रक्तपित्तका नाशकरेहै। इसके गोंदको विद्वान् कुन्दुरु कहतेहैं।

विवरण-सल्लकी अर्थात् साल्ईका बहुत बडा वृक्ष होताहै पत्ते नीमके समान होतेहैं, फलमें तीनरेखा होतीहैं, इसीवृक्षका गोंद, कुन्दरु होताहै।

अर्जुननामानि ।

अर्जुनः फाल्गुनः पार्थश्चित्रयोधी धनंजयः ।
वैरांतकः किरीटी च नदीसर्जोऽथ पाडवः ॥

अर्थ-अर्जुन-फाल्गुन, पार्थ, चित्रयोधी, धनंजय, वैरान्तक, किरीटी, नदीसर्ज, पाडव (वीरतरु, इन्द्रद्रु, ककुभ, इन्द्रद्रुम, शम्बर, गाण्डीवी, कर्णारि, सव्यसाचि, कौन्तेय, इन्द्रधनु, गाण्डीरी, शिवमल्ल, सव्यसाची, वीरद्रु, कृष्णसारथि पृथाज, धन्वी, धीर, वीरवृक्ष, धवल)।

संस्कृतभाषामें	अर्जुन।
हिन्दीभाषामें	कोह, कौह।
बंगलाभाषामें	अर्जुनगाछ।
मराठीभाषामें	साग्दोट।
गुजरातीभाषामें	सादडो।
तैलङ्गीभाषामें	मद्दिचेट्टु।

कर्णाटकीभाषामें तारेमत्ति।
लेटिन्भाषामें स्टर्क्युलियायुरेन्स। Sterculia urens

अस्य गुणाः।

ककुभःशीतलोभग्नक्षतक्षयविषास्रजित्।
मेदोमेहव्रणान्हन्तितुवरःकफपित्तहृत॥ (भा०प्र०)

अर्थ-अर्जुन शीतल, कषेला, तथा भग्न, क्षत, क्षय, विष, रुधिरविकार, मेद, प्रमेह, व्रण और कफपित्तको दूर करैहै।

अन्यच्च।

अर्जुनस्तुकषायोष्णःकफघ्नोव्रणशोधनः।
पित्तश्रमतृषार्त्तिघ्नोमारुतामयकोपनः॥ (रा०नि०)

अर्थ-अर्जुन-कषेला, गरम, कफनाशक, व्रणशोधक, तथा पित्त श्रम और तृषानिवारक है एवं वातरोगको कुपित करैहै।

अन्यच्च।

पार्थः पथ्येक्षतेभग्नेरक्तस्तम्भनकृच्छ्रयो (रा नि)

अर्थ-अर्जुन-क्षत, भग्न, रक्तस्तम्भ और मूत्रकृच्छ्ररोगमें हितकारी है।

अपिच।

अर्जुनस्तुवरश्चोष्णमधुरःशीतलःस्मृतः।कान्तिदोबलकृच्चैवलघुर्व्रणविशोधकः॥ अस्थिभग्नास्थिसंहारेहितःकफविनाशकः। पित्तश्रमतृषादाहमेहवातविनाशकः॥हृद्रोगंपाण्डुरोगंचविषबाधांक्षतक्षयम्।मेदोवृद्धिंरक्तदोषंघर्म्मंश्वासंक्षतंतथा॥भस्मरोगंनाशयतिपूर्वैरितिनिरूपितम्।(नि०र०)

अर्थ-अर्जुन-कषेला, उष्ण, मधुर, शीतल, कान्तिजनक, बलकारक हलका, व्रणशोधक, तथा, अस्तिभग, अस्तिसंहार, कफ, पित्त, श्रम, तृषा, दाह प्रमेह, हृदयरोग, पाण्डुरोग, विषबाधा, क्षतक्षय, मेदवृद्धि, रुधिरविकार, पसीना, श्वास, क्षत और भस्मरोगको नाश करे है।

विवरण-अर्जुनके वृक्ष बडे २ लम्बे और ऊँचे २ वनोंमें होतेहैं, इसके पत्ते लम्बे और गोल अनीदार होतेहैं इसकी छाल सफेद रंगकी होतीहै और उसमें दूध निकलता है।

असननामानि ।

बीजकःपीतसारश्चपीतमालकइत्यपि ।
बन्धूकपुष्प प्रियक सर्जकश्चासन.स्मृत ॥

अर्थ-बीजक, पीतसार, पीतमालक, बन्धूकपुष्प, प्रियक, असन, (पीतशाल, पीतशालक, पीतसाल, परमायुध, महासर्ज, गौरि, बन्धूकपुष्प, बीजवृक्ष, नीलक, प्रियमालक, असन)

संस्कृतभाषामें	असन, बीजक, पीतसार ।
हिंदीभाषामें	आसन, विजयसार । विजयसारका गोंद ।
बंगभाषामें	पियाशाल ।
मराठीभाषामें	बिवला, बिवलाचा गोंद ।
गुजरातीभाषामें	बीया, हीराडखण, बीयानो गुंद ।
कर्णाटकीभाषामें	केपिन्नहोने ।
तैलिङ्गीभाषामें	माद्दि ।
द्र०	अद्दन ।
इंग्रेजीभाषामें	इन्डियन् किनोट्री । Indian Kino tree
लैटिनभाषामें	टेरोकार्पस मार्सुपियम । Pterocarpus Marsupium.
फार्सीभाषामें	पामरपम् ।

असनगुणा ।

असन.कटुरुष्णश्चतिक्तोवातार्तिदोषनुत ।
सारकोगलदोषघ्नोरक्तमंडलनाशन ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-असन (विजयसार)-तिक्त, गरम, कडवी, वातार्तिदोषनाशक, सारक, गलरोगनिवारक और रक्तमंडलनाशक है ।

अपरञ्च ।

बीजक कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदकृमीन ।
हन्तिश्लेष्मास्रपित्तंचत्वच्य केश्योरसायन ॥(भा०प्र०)

अर्थ-विजयसार-कोढ, विसर्प, श्वित्रकुष्ठ प्रमेह, गुदाके रोग, कृमी, कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, त्वचा और केशोंको हितकारी तथा रसायन है ।

असन पुष्पगुणा ।

असनस्यतुपुष्पाणिविपाकेमधुराणिच ।

तिक्तानिपाचनीयानिवातलानिभवन्तिहि ॥

अर्थ–विजयसारके फल–पचनेमें मधुर, कडवे, पाचक और वादी है ।

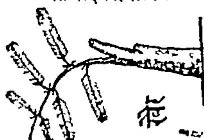
विवरण–असन अर्थात् विजयसारके वृक्ष वनोंमें बहुत बडे २ होतेहैं । पत्ते पीपलके पत्तासे कुछ २ छोटे होते हैं, फल पीले आमलेके समान होते हैं इसकी लकडी कालापन लिये होती है ।

खदिरनामानि ।

खदिरोरक्तसारश्चगायत्रीदन्तधावनः ।
कण्टकीवालपत्रश्चवहुशल्यश्चयाज्ञिक ॥

अर्थ–खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, कण्टकी, वालपत्र, वहुशल्य, याज्ञिक, (वालतनय, पथिद्रुम, तिक्तसार, कण्टकीद्रुम, मसख, युपद्रु, वालपुत्र, कर्कटी, जिह्मशल्य, कुष्ठहृत्, वालपत्रक, यूपद्रुम, खद्यपत्री, क्षितिक्षम, सुशल्य, वक्रकण्टक, यज्ञाग, जिह्वाशल्य, सारद्रुम, कुष्ठारि, वहुसार, मेध्य)

श्वेतखदिरनामानि ।



खदिर श्वेतसारोऽन्य कदर सोमवल्कल ।

अर्थ–खदिर, श्वेतसार, कदर, सोमवल्कल, (सोमवल्क, वहुशल्य खदिरोपन, कार्म्मुक, कुजकण्टक, सोमसार, सोमवृक्ष, पथिद्रुम श्याममार, नेमिवृक्ष, कण्टाढ्य, महावृक्ष, द्विजप्रिय)

संस्कृतभाषामें	खदिर, श्वेतखदिर ।
हिन्दीभाषामें	खैर, सफेदखैर, पपडियाखैर (कत्था) ।
वंगभाषामें	खयेरगाछ, पापरीखयेरगाछ ।
मराठीभाषामें	खैर, पांढरखैर ।
गुजरातीभाषामें	खेरियो, गोरट ।
कर्णाटकीभाषाम	कॅपिनखैर विलीयतर्रि ।
तैलिङ्गीभाषाम	चण्डचेट्टु, ग्वाम्रु तेल्चड ।
लैटिन्भाषाम	एकेश्याकिटेच्यु । Acacia catechu

खदिरगुणाः ।

खदिरःशीतलोदन्त्यःकण्डूकासारुचिप्रणुत ।
तिक्त कपायोमेदोघ्न क्रिमिमेहज्वरव्रणान् ॥
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्हरेत् । (भा०प्र०)

अर्थ-खैर-शीतल, दाँतोंको दृढ करनेवाली, कडवी, कषैली तथा कण्डू, खाँसी, अरुचि, मेद, कृमि, प्रमेह, ज्वर व्रण, श्वित्रकुष्ठ, शोथ आम, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, कुष्ठ और कफको दूर करनेवाली है ।

श्वेतखदिरगुणाः ।

कदरोविशदोव्रण्योमुखरोगकफास्रजित ।
"हन्तिकण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठव्रणप्रदान" ॥(भा०प्र०)

अर्थ-सफेद खैर-विशद, व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ, रुधिरदोष, कण्डू, विष, श्लेष्म, कृमि, कोढ, व्रण और ग्रहबाधाको हरे है ।

अन्यच्च ।

श्वेतस्तुखदिरस्तिक्त कषायःकटुरुष्णक· ।
कण्डूतिकुष्ठभूतघ्न·कफवातव्रणापह· ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सफेद खैर-कडवी, कषैली, चरपरी, गरम तथा कण्डू, कुष्ठ, भूतबाधा, कफ, वात, और व्रणको दूर करनेवाली है ।

अस्यनिर्य्यासादिगुणाः ।

निर्य्यासस्तस्यमधुरोबल्य शुक्रविवर्द्धन ।
सारस्तुविशदोव्रण्योमुखरोगकफास्रजित ॥ (म०पि०)

अर्थ-इसका गोंद-मधुर, बलकारक, शुक्रवर्द्धक, इसका सार विशद, व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

खदिरसारनामानि ।

खादिर'खदिरोतद्भस्तत्सारोरंगद'स्मृत ।

अर्थ-खादिर, खदिरोद्भूत, रंगद (अर्थात् खैरसार या, कत्था खदिरसार्थक)

संस्कृतभाषामें खदिरसार ।
हिन्दीभाषामें ख़ैरसार, कत्था ।
बंगभाषामें खयेर ।

मराठीभाषामें	खैराचा साड, नार, कात
गुजरातीभाषामें	खैग्सार, कायो ।
कर्णाटकीभाषामें	काथ ।
इंग्रेजीभाषामें	केटेच्यु । Catechu
लैटिन्भाषामें	केटेच्युएक्स्ट्राकुट । Garecbneytraenınm
फारसीभाषामें	कात ।
अरबीभाषामें	कात ।

अस्यगुणा ।

खादिरस्तुवरोष्णश्चतिक्तोरुचिकरोमत· । अग्निदीप्तिकरो ग्राहीदंतदार्ढ्यकरोमतः ॥ कटुक कफवातानांव्रणस्यच विनाशक· । कण्ठरोगसर्वमेहक्रुमीन्मुखरुजतथा ॥ अष्टादशैवकुष्ठानिस्थौल्यचार्शंचनाशयेत् ।

अर्थ–खदिरसार तथा कत्या–कपेला, गरम, कडवा, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, मलरोधक, दांतोको दृढ करनेवाला, चरपरा तथा कफ, वात, व्रण, कण्ठरोग, सर्वप्रकारके प्रमेह, कृमि, मुखरोग, अठारह १८ प्रकारके कोढ, शरीरकी स्थूलता और बवासीरको दूर करे है ।

विट्खदिरनामानि ।

इरिमेदोविट्खदिर कालस्कन्धोऽरिमेदक ।

अर्थ–इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कन्ध, अरिमेदक (विट, इरिमेद, अरिमेद, क्रिमिशत्रव, गिरिमेद, मरुद्रुम, रिमेद, गोधास्कन्ध, अहिमार, पूतिभेद, अहिमेदक)

संस्कृतभाषामें	अरिमेद् ।
हिन्दीभाषामें	दुर्गंधिखैर ।
वंगभाषामें	गुयेवाब्ला, विट्खयेर)
मराठीभाषामें	शेण्याखैर, गधियाहिवर, घाणेरखैर ।
गुजरातीभाषामें	इरिमेद, गन्धिलोखेर ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पञ्जट्री Spongo tree
लैटिन्भाषामें	एकेशीया फारनेशीयाना Acacia Farnesiana

अस्य गुणा ।

इरिमेद कषायोष्णोमुखदन्तगदास्रजित् ।

खदिरगुणाः ।

खदिरः शीतलोदन्त्यःकण्डूकासारुचिप्रणुत् ।
तिक्तः कषायोमेदोघ्नःकृमिमेहज्वरव्रणान् ॥
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्हरेत् । (भा०प्र०)

अर्थ-खैर-शीतल, दांतोंको दृढ करनेवाली, कडवी, कषेली तथा कण्डू खाँसी, अरुचि, मेद, कृमि, प्रमेह, ज्वर, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, शोथ, आम, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, कुष्ठ और कफको दूर करनेवाली है ।

श्वेतखदिरगुणाः ।

कदरोविशदोव्रण्योमुखरोगकफास्रजित् ।
"हन्तिकण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठव्रणप्रदान्" ॥(भा०प्र०)

अर्थ-सफेद खैर-विशद, व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ, रक्तदोष, कण्डू, विष, श्लेष्म, कृमि, कोढ, व्रण और प्रदरादिको हरे है ।

अन्यच्च ।

श्वेतस्तुखदिरस्तिक्तः कषायःकटुरुष्णकः ।
कण्डूतिकुष्ठभूतघ्नःकफवातव्रणापहः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सफेद खैर-कडवी, कषेली, चरपरी, गरम तथा कण्डू, कुष्ठ, भूतबाधा, कफ, वात, और व्रणको दूर करनेवाली है ।

अस्यनिर्यासादिगुणाः ।

निर्य्यासस्तस्यमधुरोबल्यः शुक्रविवर्द्धनः ।
सारस्तुविशदोव्रण्योमुखरोगकफास्रजित् ॥ (श०चि०)

अर्थ-इसका गोंद-मधुर, बलकारक, शुक्रवर्धक, इसका सार विशद, व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

खदिरसारनामानि ।

खादिरःखदिरोद्भूतस्तत्सारोरदःस्मृतः ।

अर्थ-खादिर, खदिरोद्भूत, रद (अङ्गरेजी नाम, कत्था शर्करा)

संस्कृतभाषामें खदिरसार ।
हिन्दीभाषामें खैरसार, कत्था ।
बंगभाषामें खयेर ।

मराठीभाषामें	खैराचा साड, नार, कात
गुजरातीभाषामें	खैरसार, कायो।
कर्णाटकीभाषामें	काथ।
इंग्रेजीभाषामें	केटेच्यु। Catechu
लैटिन्भाषामें	केटेच्युएक्स्राकुट। Gareebneytraenmm
फारसीभाषामें	कात।
अरबीभाषामें	कात।

अस्यगुणाः।

खादिरस्तुवरोष्णश्चतिक्तोरुचिकरोमतः। अग्निदीप्तिकरो ग्राहीदन्तदार्ढ्यकरोमतः॥ कटुकःकफवातानांव्रणस्यच विनाशकः। कण्ठरोगसर्वमेहकृमीन्मुखरुजंतथा॥ अष्टादशैवकुष्टानिस्थौल्यचार्शचनाशयेत्।

अर्थ—खदिरसार तथा कत्या—कपेला, गरम, कडवा, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, मलरोधक, दाताको दृढ करनेवाला, चरपरा तथा कफ, वात, व्रण, कण्ठरोग, सर्वप्रकारके प्रमेह, कृमि, मुखरोग, अठारह १८ प्रकारके कोढ, शरीरकी स्थूलता और ववासीरको दूर करे है।

विट्खदिरनामानि।

इरिमेदोविट्खदिर कालस्कन्धोऽरिमेदकः।

अर्थ—इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कन्ध, अरिमेदक (विट, इरिमेद, असिमेद, क्रिमिशात्रव, गिरिमेद, मरुद्रुम, रिमेद, गोधास्कन्ध, अहिमार, पूतिभेद, अहिमेदक)

संस्कृतभाषामें	अरिमेद्।
हिन्दीभाषाम	दुर्गंधिखैर।
वंगभाषामें	गुयेवाब्ला, विट्खयेर)
मराठीभाषामें	शेण्याखैर, गंधियाहिवर, घाणेराखैर।
गुजरातीभाषामें	इरिमेद, गन्धिलोखेर।
इंग्रेजीभाषामें	स्पंजट्री Sponge tree
लैटिन्भाषामें	एकेशीया फारनेशीयाना Acacia Farnesiana

अस्य गुणाः।

इरिमेदः कषायोष्णोमुखदन्तगदास्रजित्।

हन्ति कण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दुर्गंधखैर-कषैला, गरम तथा मुखरोग, दन्तरोग, रुधिरविकार, कण्डू, विष, कफ, कृमि, कोढ़, विष और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

अरिमेदः कषायोष्णस्तिक्तको भूतनाशनः।
शोफातिसारकासघ्नो विषवीसर्पनाशनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-दुर्गंधखैर-कषैला, गरम, कड़वा, भूतनाशक तथा सूजन, अतिसार, खाँसी, विषविकार और विसर्पको हरनेवाला है।

अरिमेदनिर्यासगुणाः।

अरिमेदस्य निर्यासो मधुरस्तु बलप्रदः।
धातुवृद्धिकरश्चैव मुनिभिः सम्प्रभाषितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-अरिमेदका गोंद-मधुर, बलदायक और धातुवर्धक है।

लघुखदिरगुणाः।

लघुस्तु खदिरः प्रोक्तस्तिक्तोष्णश्च कषायकः। कटुस्तीक्ष्णश्चाम्लश्च रूक्षः कृमिकफापहः ॥ मुखरोगदन्तरोगरक्तदोषप्रमेहकम्। मदकण्डूविसर्पं च वस्तिरोगविषज्वरम् ॥ पिशाचबाधामुन्मादकुष्ठदाहव्रणं तथा। आध्मानं नाशयत्यस्य फलं चास्य मधुरं स्मृतम्। स्निग्धकटूष्णमस्त्रं च कफवातविनाशकम्।

अर्थ-लघुखैर-कड़वा, गरम, कषैला, चरपरा, तीक्ष्ण, अम्ल, रूखा तथा कृमि, कफ, मुखरोग, दन्तरोग, रुधिरविकार, प्रमेह, मद, कण्डू, विसर्प, वस्तिरोग, विषमज्वर, पिशाचबाधा, उन्माद, कोढ़, दाह, व्रण और आध्मानको दूर करे है। इसके फल-मधुर, स्निग्ध, चरपरा, गरम तथा कफ और वातविनाशक है।

वल्लीखदिरगुणाः।

वल्लीखदिरकस्तिक्तः कटुश्चोष्णः कषायकः।
रसेऽम्लः श्वासकासघ्नः पित्तरक्तविशोषजित् ॥ (नि०र०)

अर्थ-वल्लीखैर-कड़वा, चरपरा, गरम, कषैला, रसमें खट्टा तथा श्वास खाँसी, पित्त, रक्तविकार और विशोषनाशक है।

विवरण। खैरके वृक्ष वनमें बडे २ होतेहैं, इसकी छाल खरदरी और, चटकी हुई होतीहै, इसके पत्ते आमलेकेसे छोटे २ होतेहैं, इसपर महीन २ और टेढे २ काँटे होतेहैं, खैरसार और कत्था यह भी खैरहीके लकडीका बनाया जाताहै, दूसरे सफेद खैर और दुर्गन्धित खैरके वृक्ष वनमें बहुत होते है।

रोहीतकनामानि।

रोहीतकोरोहितकश्चरोहितःकुशाल्मलीदाडिमपुष्पसंज्ञकः॥
सदाप्रसून सचकूटशाल्मलिर्विरोचन शाल्मलिकोनवाह्वयः

अर्थ–रोहीतक, रोहितक, रोहित, कुशाल्मली, दाडिमपुष्पसंज्ञक, सदाप्रसून, कूटशाल्मलि, विरोचन, शाल्मलिक, (रक्तपुष्प, सदापुष्प, रक्तक, प्लीहनाशन, प्लीहघाती, रुच्य, रक्तप्रसादन, रोही, प्लीहशत्रु, दाडिमपुष्पक, प्लीहघ्न, मांसदलन, यकृद्दरी, चलच्छद, प्लीहारि, रोहितेय, रोहिण)

श्वेतरोहीतकनामानि।

सप्ताह्व श्वेतरोहीत सितपुष्प सिताह्वयः।
सितांग शुक्लरोहीतोलक्ष्मीवाञ्जनवल्लभः।

अर्थ–सप्ताह, श्वेतरोहीत, सितपुष्प, सिताह्वय, सितांग, शुक्लरोहीत, लक्ष्मीवान्, जनवल्लभ (क्षारयोग्य, लक्ष्मी, सर्वजनप्रिय)

संस्कृतभाषामें	रोहितक, कूटशाल्मली, श्वेतरोहितक।
हिन्दीभाषामें	रोहेडा।
बंगभाषामें	रोढा, रयना, नयना, कडार।
मराठीभाषामें	रक्तरोहिडा।
गुजरातीभाषामें	रगतरोहिडो, श्वेतरोहिडो।
कर्णाटकीभाषामें	मुल्लुमल, मुत्तट्ट।
तैलङ्गीभाषामें	मुल्लमोदुगचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	टेकोमा अण्डयुलेटा। Tecoma undulata

रोहीतकोयकृत्प्लीहगुल्मोदरहर परः (रा० व०)

अस्य गुणाः।

अर्थ-रोहेडा-यकृत्-प्लीहा, गुल्म और उदररोगनाशक है।

अन्यच्च।

रोहीतकौकटुस्निग्धौकषायौचसुशीतलौ।

कृमिदोषव्रणप्लीहारक्तनेत्रामयापहौ ॥

अर्थ-दोनों प्रकारके रोहेडे-चरपरे, स्निग्ध, शीतल, कषैले तथा कृमि रोग, व्रण प्लीहा, रक्तविकार और नेत्ररोगोंको दूर करेहै।

अपिच।

रोहीतकद्वयस्निग्धतुवरकटुकमतम्। रक्तप्रसादनंतिक्तंशीतलंचसरंमतम् ॥ कृमिप्लीहारक्तदोषव्रणकर्णरुजापहम्। विषनेत्ररुजगुल्मयकृत्कफविनाशनम् ॥ वातविबन्धंमांसमेदःशूलंचनाशयेत। आनाहभूतबाधांचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके रोहेडे-स्निग्ध, कषैले, चरपरे रक्तप्रसादक, कडवे, शीतल, सारक तथा कृमि, प्लीहा, रुधिरविकार, व्रण, कर्णरोग, विष, नेत्ररोग, गुल्म, यकृत्, कफ, वात, विबन्ध, मांस मेद, शूल, आनाह, और भूतबाधाको दूर करे है।

विवरण। रोहेडेके वृक्ष वनोंमें अधिक होते हैं, फूल अनारके समान होते हैं लाल और सफेद इन फूलोंके भेदसे रोहेडेकी दो जाती है, राजनिघंटुमें लाल रोहिडे और कूटशाल्मलीके पृथक् नाम तथा गुण लिखे हैं और शोढलनिघण्टुमेंभी कूटशाल्मली और लाल रोहिडा पृथक् लिखा है, किन्तु भावप्रकाशमें लाल रोहिडा और कूटशाल्मली भिन्न २ लिखे हैं और गुणभी अलग २ लिखे हैं सो भावप्रकाशसे कूटशाल्मलीके नाम और गुण आगे लिखे हैं।

बहुंटलानामानि।



मालाफलोथवन्धूलोयुग्मकण्टोदृढाफल ।
कण्टकीसूक्ष्मपत्रश्चपीतपुष्पःकषायकः ॥

अर्थ-मालाफल, वबूल, युग्मकण्ट, दृढारुह, कण्टकी, सूक्ष्मपत्र, पीत-पुष्प, कषाय (किंकिरात, किंकिराट, युगलाक्ष, कण्टलु, तीक्ष्णकण्टकगोशृंग, पङ्क्तिबीज, दीर्घकटक, कफान्तक, दृढबीज, अजभक्ष, कण्टल, वब्बूल, वब्बोल, बावल, स्वर्णपुष्प, पीतक)

संस्कृतभाषामें	बर्बूर, वब्बूल।
हिन्दीभाषामें	बबूर, कीकर, २ बबूरका गोंद।
बंगभाषामें	बाबूगाछ।
मराठीभाषामें	बाभूळ, बाबूळ, कीकर, २ बाभळीचा गोंद।
गुजरातीभाषामें	बावल।
कर्णाटकीभाषामें	पुलई।
तैलिङ्गीभाषामें	बल्बतडु, नल्लतुम्म।
औत्क०	गुइडा।
बम्०	रोमकडि।
द्राविड़ीभाषामें	कलिकिकर।
इंग्रेजीभाषामें	एकेश्याट्री। Acacia tree
	गम् आरेबीक्। Gum Arabic
लैटिन्भाषामें	एकेश्या आरेबीका Acacia Arabica
	एकेश्या गम्मि। A Gummi
फारसीभाषामें	मुगिला २ गोन्।
अरबीभाषामें	अमुगिला ३ सिमग।

अस्य गुणाः।

बर्बुरस्तुकषायोष्णः कफकासामयापहः।
आमरक्तातिसारघ्नः पित्तदाहार्शनाशनः॥ (रा० नि०)

अर्थ-बबूर-कषैला, गरम तथा कफ, खाँसी, आम, रक्तातिसार, पित्त, दाह और, बवासीरको दूर करे है।

भा०प्र०।

वब्बूलः कफनुद्ग्राहीकुष्ठक्रिमिविषापहः। (भा०प्र०)

अर्थ-बब्बूल कफनाशक, मलरोधक तथा कोढ, कृमि और विषविना-शक है।

अपिच।

वब्बूलस्तिक्तमधुरः स्निग्धः शीतोष्णतुवरः। आमरक्ताति-

सारणांनाशनोग्राहकोमत. ॥ कफकामचपित्तचदाहरक्ता-
तिसारकम् । वातप्रमेहशमयेत्पर्णन्तुग्राहकंमतम् ॥ रुच्य
कटूष्णकामभ्रवातपुम्स्त्वकफार्शनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-बबूर-कडवा, मधुर, स्निग्ध, शीतल, गरम, कषेला, मलरोधक तथा आम, रक्तातिसार, कफ, खाँसी, पित्त, दाह, वात और प्रमेहको दूर करहै इसके पत्ते-मलरोधक, रुचिकारक, चरपरे, गरम तथा खाँसी, वात, पुरुषत्व, कफ और बवासीरको हरैहै ।

अस्य फलगुणाः ।

"बब्बूलस्यफलंरूक्षंविशदंस्तम्भनंगुरु ।
कषायमधुरंशीतंलेखनकफपित्तहृत् ॥" (भावप्रकाश)

अर्थ-बबूरकी फली-रूखी, विशद, मलस्तम्भक, भारी, कषेली, मधुर, शीतल लेखन तथा कफ और पित्तनाशक है ।

अस्यनिर्य्यासगुणाः ।

बब्बूलस्यतुनिर्य्यासोग्राहीपित्तानिलापहः ।
रक्तातिसारपित्तास्रमेहप्रदरनाशनः ।
भग्नसन्धानकःशीतःशोणितस्रुतिवारणः ॥ (आ०सं०)

अर्थ-बबूरका गोंद-मलरोधक, पित्त और वातनाशक तथा रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और प्रदरको दूर करे है । भग्नसन्धानकारक, शीतल और रुधिरके गिरनेको बन्द करे है ।

विवरण-बबूरके बहुतसे वृक्ष जलाशयके समीप जंगलादिमें प्रायः उत्पन्न होतेहैं, इसमें सुईके समान सफेद तीक्ष्ण काँटे होतेहैं और वे पाँच २ जोडे साथ लगे होतेहैं । पत्ते बहुत छोटे २ आमलेकेसे होतेहैं, फूल पीले रंगके गोल २ लगतेहैं, उसमें तिलके सदृश बीज २ फली होती है ।

अरिमेदस्यनामानि ।

अरिमेदस्त्वमाह्वस्यःकृष्णवर्णोर्थसाधनः ।
रक्तबीजः पीतफलः फलिरोगर्भपातनः ॥

अर्थ-अरिमेद, माधूस्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफल, फेनिल, गर्भपातन (हिं० गुयबबूल, अरिम, मराठी दुर्गन्धखैर, बंगाली गाबबाबला)

सस्कृतभाषामें	अरिष्टक ।
हिन्दीभाषामें	रीठा ।
वगभाषामें	रिटेगाछ ।
मराठीभाषामें	रिठा ।
गुजरातीभाषामें	अरिठा ।
तेलिंगिभाषामें	कुकुड ।
इंग्रेजीभाषामें	सोपबेरी सोपनट । Soap berri Soap nut
लैटिन्‌भाषामें	सेपिंस्त इमार्जिनटस् । Sapintus emarginatus
	सेपिंडस ट्रिफोलियेटस् । S Trifoliatus
फारसीभाषामें	फिद्काहिंदी ।
अरबीभाषामें	बुदक ।

अस्य गुणाः ।

अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नोग्रहजिद्गर्भपातनः । (भा० प्र०)

अर्थ–रीठा–त्रिदोषनाशक, ग्रहविनाशक और गर्भको गिरानेवाला है ।

अन्यच्च ।

अरिष्टकःकटुःपाकेतीक्ष्णोष्णोलेखनोगुरुः । दोषत्रयहरोगर्भपातनोगर्भशान्तिकृत् ॥ तन्मलवामकपानान्नस्याच्छीर्षरुजापहम् । अर्धशीर्षव्यथाहन्तिवमनाद्विषनाशनम् ॥

अर्थ–रीठा–पचनेमें चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, लेखन, भारी, त्रिदोषनाशक, गर्भको गिरानेवाला तथा गर्भको शान्ति करनेवाला है । इसके जलको पीनेसे वमन होताहै और वमनसे विष दूर होताहै । इसके जलका नास लेनेसे मस्तकरोग और आधासीसी दूर होताहै ।

विवरण । रीठेके वृक्ष–वन और उपवनामें होतेहैं, पत्ते रीठेके एक डंडीमे ६।७ लगे होतेहैं, फल ग्रुमसोंमें आतेहैं । रीठेके झागोंसे वस्त्र धोतेहैं ।

पुत्रजीवनामानि ।

पुत्रजीवः पवित्रश्चगर्भदःसुतजीवकः ।
पुत्रजीवोपत्यजीवः सिद्धिदोपत्यजीवकः ॥

अर्थ–पुत्रजीव, पवित्र गर्भद, सुतजीवक, पुत्रजीव, अपत्यजीव, सिद्धिद, अपत्यजीवक, (गर्भकर, जीवपुत्रक, श्रीपदापह, कुमारजीव, यष्टीपुष्प, अर्थसाधक)

संस्कृतभाषामें	पुत्रजीव ।
हिन्दीभाषामें	जियापोता, पतिजिया, जियापति, पितौंजिया ।
बंगभाषामें	जियापुँता, पुत्रञ्जिया ।
मराठीभाषामें	पुत्रजीवकवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	पुत्रजीवक ।
कर्णाटकीभाषामें	पुत्रजीव ।
तैलिङ्गीभाषामें	[illegible], कुँदरुवि ।
इंग्लिशभाषामें	पुत्रजीवा राक्सबुर्घिआई । Putranjiva Roxburghii

अथ गुणाः ।

पुत्रजीवोगुरुर्वृष्योगर्भदः श्लेष्मवातकृत् ।
सृष्टमूत्रमलोरूक्षोहिमःस्वादु कटु पटु ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जीयापोता-भारी, वीर्यवर्द्धक, गर्भदायक, कफवातकारक, मलमूत्रको करनेवाला, रूखा, शीतल, स्वादिष्ट, चरपरा, और खारा है ।

अन्यच्च ।

पुत्रजीवोहिमोवृष्यः श्लेष्मदोगर्भजीवदः ।
चक्षुष्यः पित्तशमनोदाहतृष्णानिवारणः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-जीयापोता-शीतल, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, गर्भ और जीवदायक, नेत्रोंको हितकारी, पित्तको शान्त करनेवाला तथा दाह और तृषाको हरनेवाला है ।

विवरण । पुत्रजीवक अर्थात पतिजियाके वृक्ष सम्पूर्ण [illegible] वृक्ष समान होते हैं [illegible] और इसके बीजाकी माला [illegible] पहनती हैं, साधु [illegible] बनाते हैं ।

इङ्गुदीनामानि ।

इङ्गुदीङ्गारवृक्षश्चतिक्तकस्तापसद्रुमः ॥

अर्थ-इंगुआ, अङ्गारवृक्ष, तिक्तक, तापसद्रुम (मर्कटवृक्ष, इङ्गुदी, [illegible], पूतिपत्रा, [illegible], इंगुल, द्विगुपत्र, [illegible], अग्निमान्थ, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], पूतिगन्ध, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible])

संस्कृतभाषामें	इगुदी ।
हिन्दीभाषामें	हिंगोट, गोंदी ।
बंगभाषामें	जियापुता, इङ्गोट ।
मराठीभाषामें	हिंगणनेट ।
गुजरातीभाषामें	इगोरियो ।
तैलिंगीभाषामें	गरा ।
इंग्रेजीभाषामें	डेलील । Delil
लैटिन् भाषामें	बेलेनाइटीस राक्सबुर्धिआई Balanites Roxburghii
अरबीभाषामें	हिलेलजे ।

अस्य गुणाः ।

इङ्गुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन् ।
हन्त्युष्णश्विन्नशूलघ्नस्तिक्तकः कटुपाकवान् ॥ (भा प्र)

अर्थ-हिंगोट-कोढ, भूतादिबाधा, ग्रहबाधा, व्रण, विष, कृमि, श्वित्रकुष्ठ और शूलको निर्मूल करे है । गरम, कडवा और पचनेमें चरपरा है ।

अपरञ्च ।

इगुदीकफरक्तामग्रन्थिघ्नीस्याद्व्रणेहिता ।
ऐंगुदंस्वादुतिक्तंचस्निग्धोष्णंश्लेष्मवातजित ॥ (शा नि)

अर्थ-हिंगोट-कफ, रक्ताम, ग्रन्थि और व्रणविनाशक है । इसका फल स्वादिष्ट, कडवा, स्निग्ध गरम तथा कफ और वातविनाशक है ।

अपिच ।

इगुदीनामकोवृक्षोमदगंधि कटुर्लघु ।तिक्तश्चोष्ण फेनिलश्चप्रोक्तश्चैवरसायन ॥ कृमीन्वातविषशूलश्विन्नकुष्ठंव्रण कफम् । ग्रहपीडाभूतबाधानाशयेदितिकीर्तितम्॥अस्यपुष्पन्तुमधुरस्निग्धंचोष्णंचतिक्तकम् ।वातंकफनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-हिंगोट-मदगन्धियुक्त, चरपरा, हलका, कडवा, गरम, फेनिल, (झागोंकोकरनेवाला) रसायन तथा कृमि,वात, विष, शूल, श्वित्रकुष्ठ, व्रण, कफ, ग्रहपीडा और भूतबाधाको दूर करे है । इसके फूल मधुर, स्निग्ध, गरम, कडवे तथा वात और कफका नाशकरे है ।

अथाऽस्य मज्जागुणाः ।

इंगुद्या फलमज्जकोजलयुतोलेपोमुखेकान्तिदः ।(रा.नि.)

अर्थ-इंगुदीके फलकीमींगको जलके साथ मुखपर लेप करनेसे मुखकी कान्ति बढती है ।

विवरण । इंगुदीके बडे २ वृक्ष जंगल और वनोंमें उत्पन्न होतेहैं, इन वृक्षोंमें काटेभी होतेहैं, फूल नींबूके समान कुछेक लम्बे और गोल होते हैं, फलके ऊपर गुठलीके सदृश रस लगा रहताहै माना फल रसमें तर रहता है ।

जिङ्गिनीनामानि ।

जिङ्गिनीझिंगिनीझिंगीसुनिर्यासाप्रमोदिनी ॥

अर्थ-जिङ्गिनी, झिंगिनी, झिंगी, सुनिर्यासा, प्रमोदिनी, (कुंजर अरी, पार्वती)

संस्कृतभाषामें	जिंगिनी ।
हिंदीभाषामें	झिंगिणी ।
मराठीभाषामें	मोई मोय ।
गुजरातीभाषामें	मोर्डी, मोलिडु ।
कर्णाटकीभाषामें	ओगिय, मगम ।
लेटिनभाषामें	ओडिनावाडिएर । Odina wodier

अथ गुणाः ।

जिङ्गिनीमधुरासोष्णाकषायायोनिशोधिनी ।

कटुकाव्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्परा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-जिङ्गिणी-मधुर, गरम, कसेली, योनिशोधक, चरपरी तथा व्रण हृदयरोग, वात और अतिसारको दूर करे है और नमर्दन है ।

अपरञ्च ।

जिङ्गिनीमधुरादौर्गन्ध्यतृष्णावातकफापहा ।

कटुपाकाजयेद्वातव्रणातीसारहृद्रुजः ॥ (सो० नि०)

अर्थ-जिङ्गिनी मधुरी दुर्गन्धता, तृषा, वात, कफ, वातव्रण अतिसार और हृदरोगको दूर करे है तथा पचनेमें चरपरी है ।

विवरण-जिंगनीके बडे २ ऊंचे वृक्ष जंगल और पहाडोंमें होतेहैं, इसके पत्ते बडे समान नागपुरमें अगस्त होतेहै और लाल होतेहैं फूल छोटे और फल बेरके समान आतेहैं ।

तमालनामानि ।

तमालउक्तस्तापित्थः कालस्कन्धोमितद्रुम ।
लोकस्कन्धोनीलध्वजोनीलतालश्चसस्मृत ॥

अर्थ–तमाल, तापित्थ, कालस्कन्ध, अमितद्रुम, लोकस्कन्ध, नीलध्वज, नीलताल, (तापिञ्ज, तापिच्छ, कृष्णस्कन्ध, तम, तमा, कालताल, महानल)

संस्कृतभाषामें	तमाल ।
हिन्दीभाषामें	स्यामतमाल ।
वंगभाषामें	तामालगाछ ।
मराठीभाषामें	तमालवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	तमाल ।
तैलिङ्गीभाषामें	तमालु ।

अस्य गुणा ।

तमालस्तुवर' शोथदाहविस्फोटहृत्पुन ॥ (म०नि०)

अर्थ–स्यामतमाल–कषेला, सूजन, दाह और विस्फोटनाशक है ।

अन्यच्च ।

कालस्कन्धश्चमधुरोवल्योवृष्योगुरु स्मृत ।
धातुवृद्धिकर· शीत श्रमदाहकफापह ॥
पित्तशोथचविस्फोटपित्तचैवविनाशयेत ॥ (नि०र०)

अर्थ–स्यामतमाल–मधुर, वलवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, भारी, धातुवर्द्धक शीतल तथा श्रम दाह, कफ पित्तसे उत्पन्न हुआ शोथरोग, विस्फोट और पित्तको दूर करे है ।

विवरण–तमालके वृक्ष प्राय यमुना और तापी नदीके निकट बहुत होतेहैं, वृक्षकी मूल और शाखा स्यामरंगकी होतीहै, पत्ते गोल और शीशमकी सदृश और फूल लाल २ होतेहैं और फूल छोटे २ करौंदेके समान होतेहैं ।

तृणीनामानि ।

तृणीतुन्नकआपीनस्तुणिक कच्छकस्तथा ।
कुठेरक कान्तलकोनन्दीवृक्षश्चनन्दक· ॥

अस्यफलमज्जागुणाः ।

इगुद्या·फलमज्जकोजलयुतोलेपोमुखेकान्तिदः। (व जी)

अर्थ-इगुदीके फलकीमींगको जलके साथ मुखपे लेप करनेमे मुखकी कान्ति वढती है ।

विवरण । इगुदीके वडे २ वृक्ष जगल और वनोंम उत्पन्न होतेहै, उस वृक्षम काटेभी होतेहै, फूल नींबूके समान कुछेक लम्बे और गोल होते है, फलके ऊपर गुठलीके सदृश रस लगा रहताहै मानों फल रसमे तर रहता है ।

जिङ्गिनीनामानि ।

जिङ्गिनीझिंगिनीझिंगीसुनिर्यासाप्रमोदिनी ॥

अर्थ-जिङ्गिनी, झिंगिनी, झिङ्गी, सुनिर्य्यासा, प्रमोदिनी, (कुल म जरी, पार्वती)

संस्कृतभाषामें	जिगिनी ।
हिंदीभाषाम	जिंगिणी ।
मराठीभाषामे	मोई, मोक ।
गुजरातीभाषाम	मवेडी, मोलेडु ।
कर्णाटकीभाषामें	ओगीथ, मग्म ।
लेटिन्भाषाम	ओडिनावोडियर । Odina wodier

अस्य गुणाः ।

जिङ्गिनीमधुरासोष्णाकषायायोनिशोधिनी ।

कटुकाव्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-जिङ्गिणी-मधुर, गरम, कषेली, योनिशोधक, चरपरी तथा व्रण, हृदयरोग, वात और अतिसारको दूर करे है और नमकीन है ।

अन्यच्च ।

जिङ्गिनीमुखदौर्गंध्यतृष्णावातकफापहा ।

कटुपाकाजयेद्वातव्रणातीसारहृद्रुज· ॥ (सो० नि०)

अर्थ-जिङ्गिनी-मुखकी दुर्गन्धता, तृषा, वात, कफ, वातव्रण, अतिसार और हृदयरोगको दूर करे है, तथा पचनेमें चरपरी है ।

विवरण-जिंगनीके वडे २ ऊचे वृक्ष जगल और पहाडोंमे होतेहै, पचे महुवेके ममान शाखाओंमें वरावर दोनों ओर लगे होते है, फूल सफेद और फल वेरके समान आतेहै ।

तमालनामानि।

तमालउक्तस्तापित्थ कालस्कन्धोमितद्रुम·।
लोकस्कन्धोनीलध्वजोनीलतालश्चसस्मृत ॥

अर्थ-तमाल, तापित्थ, कालस्कन्ध, अमितद्रुम, लोकस्कन्ध, नीलध्वज नीलताल, (तापिञ्ज, तापिच्छ, कृष्णस्कन्ध, तम, तमा, कालताल, महाबल)

संस्कृतभाषामें	तमाल।
हिन्दीभाषामें	स्यामतमाल।
वंगभाषामें	तामालगाछ।
मराठीभाषामें	तमालवृक्ष।
गुजरातीभाषामें	तमाल।
तैलिङ्गीभाषामें	तमाल।

अस्य गुणा।

तमालस्तुवर· शोथदाहविस्फोटहृत्पुन ॥ (म०नि०)

अर्थ-स्यामतमाल-कषेला, सूजन, दाह और विस्फोटनाशक है।

अन्यच्च।

कालस्कन्धश्चमधुरोबल्योवृष्योगुरु· स्मृत।
धातुवृद्धिकर शीत श्रमदाहकफापह· ॥
पित्तशोथचविस्फोटपित्तचेवविनाशयेत ॥ (नि०र०)

अर्थ-स्यामतमाल-मधुर, वलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, धातुवर्द्धक, शीतल तथा श्रम दाह, कफ पित्तसे उत्पन्न हुआ शोथरोग, विस्फोट और पित्तको दूर करे है।

विवरण-तमालके वृक्ष माय· यमुना और तापी नदीके निकट बहुत होतेह, वृक्षकी मूल और शाखा श्यामरंगकी होतीह, पत्ते गोल और शीशमकी सदृश और फूल लाल २ होतेंह और फल छोटे २ करोंदेके समान होतेह।

तृणीनामानि।

तृणीतुन्नकआपीनस्तुणिक·कच्छकस्तथा।
कुठेरक कान्तलकोनन्दीवृक्षश्चनन्दक·॥

अर्थ-तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक, कच्छक, कुठेरक, कान्तलक, नन्दीवृक्ष, नन्दक (तूणीक, पीतक, कच्छप, कान्त, नन्दी)

अस्य गुणा ।

तूणीयकः कटुः पाकेकषायोमधुरोलघुः ।
तिक्तोग्राहीहिमोवृष्योव्रणकुष्टास्रपित्तजित् (रा०नि०)

अर्थ-तूणी-पचनेमें चरपरी, कपेली, मधुर, हलकी, कडवी, मलरोधक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा व्रण, कुष्ठ और रक्तपित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

नन्दीवृक्षः कटुस्तिक्तः पीतस्तिक्तास्रदाहजित् ।
शिरोर्तिश्वेतकुष्टघ्नः सुगन्धिः पुष्टिवीर्य्यदः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पीली, सुगन्धि, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्तपित्त, दाह, शिरकी पीडा और श्वेतकुष्ठको दूर करे है ।

अपिच ।

तूणीवृक्षःकटुस्तिक्तः पुष्टिकृच्छीतलोलघुः । वीर्य्यप्रदश्चमधुरस्तुवरोग्राहकोमतः ॥ वृष्यस्त्रिदोषहृत्प्रोक्तोव्रणकुष्टंच नाशयेत् ॥ रक्तपित्तश्वेतकुष्टंशीर्षपीडांचनाशयेत् ॥ कण्डूपित्तरक्तदोषदाहंचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पुष्टिकारक, शीतल, हलकी, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, कपेली, मलरोधक, वृष्य, त्रिदोषनाशक तथा व्रण, कुष्ठ, रक्तपित्त, श्वेतकुष्ठ, शिरकी पीडा, कण्डू, पित्त, रुधिरविकार और दाहको दूर करे है ।

विवरण-तूनके बडे सघन वृक्ष जगल और वनोंमे होतेहैं, पत्ते नीमके पत्तोंसे कुछेक बडे होतेहैं, फूल बहुत छोटे २ सफेद रगके आतेहैं, लकडी इसकी बहुत उत्तम होतीहै ।

भूर्जपत्रनामानि ।

भूर्जपत्रः स्मृतोभूर्जश्चर्म्मीबहुलवल्कलः ॥

अर्थ-भूर्जपत्र, भूर्ज, चर्म्मी, बहुलवल्कल (सुचर्म्मा, छदपत्र, वल्कद्रुम, भूर्ज्जपत्रक, चित्रत्वक्, बिन्दुपत्र, रक्षापत्र, विचित्रक, भूतघ्न, मृदुपत्र, मृदुचर्म्मी, शैलेन्द्रस्थ, चर्म्मद्रुम, छत्रपत्र, शिवि, स्थिरच्छद, मृदुत्वक्, त्वलनिर्मोक पत्रकी, विघादल, पत्रपुष्पक, भुज, बहुपट, बहुत्वक, मृदुच्छद)

संस्कृतभाषामें	भूर्जपत्र ।
हिन्दीभाषामें	भोजपत्र ।
वंगभाषामें	भूर्जिपत्र ।
मराठीभाषामें	भूर्जपत्र ।
गुजरातीभाषामें	भोजपत्र ।
कर्णाटकीभाषामें	भूर्जपत्र ।
इंग्रेजीभाषामें	जेकेमोंटी । Jacque montu
लैटिन्भाषामें	बिट्युला भोजपत्रा । Betula bojaputra

अस्यगुणाः ।

भूर्जोभूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ।
कषायोराक्षसघ्नश्चमेदोविषहरः परः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-भोजपत्र-भूत, ग्रह, कफ, कर्णरोग, रक्तपित्त राक्षस, मेद और विषविनाशक है तथा कषेला है ।

अन्यच्च ।

भूर्जः कटुकषायोष्णोभूतरक्षाकरः परः ।
त्रिदोषशमनः पथ्योदुष्टकौटिल्यनाशनः ॥
"पित्तरक्तरुजांहतामन्त्रकार्येषुसिद्धिदः" ।

अर्थ-भोजपत्र-चरपरा, कषेला, गरम, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोषको शान्त करनेवाला, पथ्य तथा दुष्ट, कुटिलता और रक्तपित्तको हरनेवाला है तथा मन्त्रादि कार्य्योंमें सिद्धिदेनेवाला है ।

अन्यच्च ।

भूर्जोबल्यः कफघ्नः । (राजवल्लभ)

अर्थ-भोजपत्र-बलकारक, कफनाशक और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

विवरण । भोजपत्रके वृक्ष विशेषकरके हिमालयादि पर्वतोंमें उत्पन्न होते हैं, इस वृक्षकी छालकोही भोजपत्र कहते हैं, छाल, कागज तथा सूखे केलेके पत्तेकी समान होती है, पहिले भोजपत्रका वस्त्रके स्थानमें व्यवहार किया जाता था । भोजपत्रमें अनेक प्रकारके जन्त्र मन्त्र लिखे जाते हैं ।

पलाशनामानि ।

पलाशःकिंशुकः पर्णोयाज्ञिकोरक्तपुष्पकः ।

क्षारश्रेष्ठोवातपोथोब्रह्मवृक्षः समिद्वरः ॥

अर्थ-पलाश, किंशुक, पर्ण, याज्ञिक, रक्तपुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, वातपोथ, ब्रह्मवृक्ष, समिद्वर, (करक, त्रिपत्रक, ब्रह्मपादप, पलाशक, त्रिपर्ण, रक्तपुष्प, पूतद्रु, ब्रह्मवृक्षक, ब्रह्मोपनेता, काष्ठद्रु, बीजस्नेह, त्रिपर्ण, कृमिघ्न, वक्रपुष्पक, सुपर्णी)



संस्कृतभाषामें	पलाश ।
हिन्दीभाषामें	ढाक, टेसू, केसू, वाग, काकरिया, पलाश ।
बंगभाषामें	पलाशगाछ ।
मराठीभाषामें	पळस ।
गुजरातीभाषामें	खाखरो ।
कर्णाटकीभाषामें	मुत्तलु ।
तैलङ्गीभाषामें	मातुकाचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	परशन् ।
औत्कलीभाषामें	पराशु ।
इंग्रेजीभाषामें	डाउनी ब्राच ब्युटिया । Downy branch butea
लेटिन्भाषामें	ब्युटिया फ्रंडाझा (लाल) Butea frondoza
	ब्युटिया पार्विफ्लोरा (धवल) B parviflora

अस्य गुणाः ।

पलाशोदीपनोवृष्य'सरोष्णोव्रणगुल्मजित।भग्नसन्धानकृ-दोषग्रहण्यर्श क्रमीन्हरेत् ॥ कषायःकटुकस्तिक्त स्निग्धोगु-दजरोगजित । तत्पुष्पस्वादुपाकेतुकटुतिक्तकषायकम ॥ वातलंकफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहिशीतलम । तृड्दाहशमनं

वातरक्तकुष्ठहरपरम्॥ फललघूष्णंमेहार्शःकृमिवातकफाप-
हम् । विपाकेकटुकरूक्षकुष्ठगुल्मोदरप्रणुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-ढाक-अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, सारक, गरम, कपेला, चरपरा, कडवा, स्निग्ध, टूटे हाडको जोडनेवाला तथा गुदजरोग, संग्रहणी, ववासीर कृमि, व्रण और गुल्मको हरनेवाला है। इसके फूल-स्वादुपाकी, कटु, तिक्त, कपेले, वातवर्द्धक तथा कफ, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, वातरक्त और कुष्ठको नष्टकरेहै तथा शीतल, मलरोधक, तृषा और दाहको दूर करनेवाले है। इसके फल-हलके, गरम, पचनेमें चरपरे, रूखे तथा प्रमेह, ववासीर, कृमि, वात, कफ कुष्ठ गुल्म और उदररोगको दूरकरे हैं।

अन्यच्च।

पलाशस्तुकषायोष्ण कृमिदोषविनाशन ।तद्बीजपामक-
ण्डूतिदद्रुत्वग्दोषनाशकृत् ॥ तस्यपुष्पचसोष्णचकण्डूकु-
ष्ठार्त्तिनाशनम् ।रक्त पीत सितोनील कुसुमैस्तुविभज्यते॥
किंशुकेर्गुणसाम्येपिसितोविज्ञानदःस्मृत ।

अर्थ-ढाक-कपेला, गरम और कृमिदोषनाशक है। इसके बीज पामा, कण्डू, दाद और त्वचाके दोषोको दूर करेहै। इसके फूल-गरम तथा कण्डू और कुष्ठको नष्टकरे है। टेसू-लाल, पीले, सफेद और नीले इन फूलोंके भेदसे चार प्रकारका है, गुण तो चारोंके समानही है, किन्तु सफेद फूलका अनेक प्रकारके विज्ञानदायक है।

अन्यच्च।

पालाशमूलस्वरसोनेत्रच्छायाध्यपुष्पजित ।
तद्बीजकृमिविध्वंसिकाडोरसायनेहित ॥(शो०नि०)

अर्थ-पलाशकी जडका स्वरस-नेत्रच्छाया, रतोंधी और नेत्रके फूलेको दूर करे है। इसके बीज-कृमिनाशक है। इसकी काड रसायनकर्ममें उत्तम है।

अपिच।

उष्ण पलाशस्तुवरोवृष्योदीप्तिकरःसर । तिक्तःस्निग्धोग्रा-
हकश्चभग्नसन्धानकारक ॥ व्रणगुल्मकृमिप्लीहासंग्रहण्य-

र्शवातहा ।कफयोनिरुजपित्तनाशयेदितिकीर्त्तितम् । पुष्प-भेदादयरक्तपीतशुभ्रकनीलकः ॥ पुष्पाणिस्वादुतिक्तानि उष्णानितुवराणिच॥वातलानिग्राहकाणिशीतलान्यूपणानिच । तृपादाहपित्तकफास्रकृदोपचकुष्ठकम् ॥ मूत्रकृच्छ्र घातयन्तिफलंरूक्षंलघुस्मृतम् । उष्णंचकटुकपाकेकुफवातोदरकृमीन् ॥ कुष्ठगुल्मप्रमेहार्शशूलानांचैवनाशकम् । फलवीजचस्निग्धोष्णकटुकृमिकफाञ्जयेत ॥ नूतनाःपल्लवाश्चास्यकृमिवातविनाशका । (नि०र०)

अर्थ-ढाक-कपेला, गरम, वीर्यवर्द्धक, अग्निमदीपक, सारक, कडवा, स्निग्ध, मलरोधक, भग्नसन्धानकारक तथा व्रण, गुल्म, कृमि, प्लीहा, सग्रहणी, ववासीर, वात, कफ, योनिरोग और पित्तको दूर करे है । यह लाल, पीत, श्वेत और नील इन फूलाके भेदमे चारप्रकारका । इसके फूल-स्वादिष्ठ, कडवे, गरम कपेले, वातवर्द्धक, मलरोधक, शीतल, चरपरे तथा तृपा, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ और मूत्रकृच्छ्रको दूरकरे है। इसके फल-रूखे, हलके, गरम, पचनेमे चरपरे तथा कफ, वात, उदररोग, कृमि, कुष्ठ, गुल्म, प्रमेह, ववासीर और शूलको निर्मूल करेहै । इसके फलके वीज-स्निग्ध, गरम, चरपरे तथा कफ और कृमिका नाश करेहै । इसके कोमल पत्ते-कृमि और वातका नाशकरे हैं ।

अस्य निर्य्यासगुणा ।

पलाशभवनिर्य्यासोग्राहीचक्षपयेद्ध्रुवम् ।
ग्रहणींमुखजान्कासाञ्जयेत्स्वेदातिनिर्गमम् (आ०स०)

अर्थ-ढाकका गोंद-मलरोधक तथा सग्रहणी, मुखरोग, खाँसी और पसीनेको दूरकरे है ।

विवरण । पलाश अर्थात् ढाकके वडे २ वृक्ष प्राय' नदीकी तलेटी और जागल प्रदेशमें होते हैं, पत्ते-गोल २ एक एक डडीमें तीन तीन आते हैं, प्रथम लाल निकलते ह फिर हरे रगके होजाते हैं । फूलकी डडी काली और रग अत्यन्त सुन्दर, लाल रगके होते हैं। फली लम्वी २ लगती हैं, वीज गोल और चपटे निकलते ह, इसके वीजोंको ढकपन्ना कहते हैं ।

हस्तिकर्णपलाशनामानि ।

तद्भेदेस्यात्किंशुलुकःकिञ्चुलोहस्तिकर्णक· ॥

अर्थ-इसका भेद हस्तिकर्ण है उसके नाम यह है किंशुलुक और हस्तिकर्णक ।

अस्य गुणा ।

हस्तिकर्णःपरंवृष्योमेधायुर्बलवर्द्धन· ॥ (रा०नि०)

अर्थ-हस्तिकर्णपलाश-अत्यन्तवीर्यवर्द्धक तथा मेधा, आयु और बलवर्द्धक है ।

शाल्मलीनामानि ।

शल्मलिःस्याच्छाल्मलिश्चशाल्मलीशल्मलीतथा ॥

अर्थ-शल्मलि, शाल्मलि, शाल्मली, शल्मली (पिच्छला, पूरणी, मोचा, स्थिरायु, तूलिफला, दुरारोहा, शाल्मलिनी, शाल्मल, अपूरणी, निर्गन्धपुष्पी, तुलिनी, कुक्कुटी, रक्तपुष्पा, कण्टकारी, मोचनी, शीमूल, कदला, चिरजीवी, पिच्छिल, रक्तपुष्पक, तूलवृक्ष, मोचाख्य, कण्टकद्रुम, कुकुटी, रक्तोत्पल, रम्यपुष्प, बहुवीर्य्य, यमद्रुम, दीर्घद्रुम, स्थूलफल, दीर्घायु, कण्टकाष्ठ, निस्सारा, दीर्घपादपा)

मोचरसनामानि ।

निर्य्यास·शाल्मले·पिच्छोशाल्मलीवेष्टकोपिच ।
मोचस्रावोमोचरसोमोचनिर्य्यासइत्यपि ॥

अर्थ-शाल्मलीनिर्य्यास, पिच्छ, शाल्मलीवेष्टक, मोचस्राव, मोचरस, मोचनिर्य्यास, (मोचसार, मोचश्रव, मोचस्रुत, पिच्छिलसार, सुरस, मोचाक, शाल्मलि, मोचाह्व, वेश्मरस, शाल्मल)

संस्कृतभाषामें	शाल्मली, २ शाल्मलीनिर्य्यास, मोचरस ।
हिन्दीभाषामें	सेमल [र], २ सेमरका गोंद, मोचरस ।
बंगभाषामें	शिमुल, २ शिमुलेरआठा ।
मराठीभाषामें	सावरी, शेवरी २ सावरीचा डींक ।
गुजरातीभाषामें	शेमलो २ शेमलानो गुंद, मोचरस ।
कर्णाटकीभाषामें	यवलवदमर ।
तैलङ्गीभाषामें	रुगचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	बोन्रो ।

तामिलीभाषामें	पुला ।
इंग्रेजीभाषामें	सिल्ककाटनट्री Silkcottyn tree
लैटिन् भाषामें	बॉम्बक्समेलेबेरिकम् Bombaxmalabaricum
	सालमेलिया मेलबेरिका Salmalia malabarica

शाल्मलीगुणा ।

शाल्मलीशीतलास्वाद्वीरसेपाकेरसायनी ।
श्लेष्मलास्निग्धवृष्याचबृंहणीरक्तपित्तजित् (भा०प्र०)

अर्थ–सेमल–शीतल, स्वादिष्ठ, पचनेमेंभी स्वादिष्ठ, रसायन, कफकारक, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

शाल्मलीपिच्छलावृष्यावल्यामधुरशीतला ।
कषायाचलघु स्निग्धाशुक्रश्लेष्मविवर्धिनी ॥ (रा० नि)

अर्थ–सेमल पिच्छिल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, शीतल, कषेला, हलका, स्निग्ध तथा शुक्र और कफवर्द्धक है ।

अपिच ।

शाल्मलीमधुरावृष्याबल्याचतुवगमता । शीतलापिच्छिलालघ्वीस्निग्धास्वाद्वीरसायना ॥ शुक्रलाश्लेष्मलाचेवधातुवृद्धिकरीमता । रक्तपित्तचपित्तंचरक्तदोषश्चनाशयेत ॥ त्वग्रसोस्याग्राहक स्यात्तुवर कफनाशनः । पुष्पन्तुशीतल पित्तगुरुस्वादुकषायकम् ॥ वातलग्राहकरूक्षकफपित्तपिनाशकम् । रक्तदोषहरंचैवगुणाह्येतेफलस्यच ॥ कन्दोस्या मधुर'शीतोमलस्तम्भकरोमत' । शोफंदाहचपित्तचसन्तापंचैवनाशयेम (नि० र०)

अर्थ–सेमल–मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, कषेला, शीतल, पिच्छिल, हलका, स्निग्ध, स्वादिष्ठ, रसायन, शुक्रजनक, कफकारक, धातुवर्द्धक, तथा रक्तपित्त, पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करेहै । इसकी छाल–कषेली और कफनाशक है, इसके फूल–शीतल, कडवे, भारी, स्वादिष्ठ, कषेले, बादी, मलरोधक, रूखे तथा कफ, पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर

करे है । इसके फलके गुणभी इसीकी समान जानने । इसका कद-मधुर, शीतल, मलस्तम्भक तथा सूजन, दाह, पित्त और सन्तापको हरनेवाला है ।

अस्यपुष्पशाकगुणा ।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तुघृतसैन्धवसाधितम् ।
प्रदरनाशयत्येवदुःसाध्यञ्चनसंशयः ॥
कफपित्तास्त्रजिद्ग्राहिवातलचप्रकीर्त्तित ।

अर्थ-घृत और सेंधवनोंनसे बनायाहुआ सेमलके फूलोंका शाक, असाध्य प्रदररोगको हरे है, कफ और रक्तपित्तको दूर करे है, मलरोधक और बादी है ।

मोचरसगुणा ।

मोचारसस्तुतुवरोग्राहीबलकरः स्मृत । पुष्टिकृद्धातुकृद्वर्ण्योबुद्धिदःशीतलः स्मृतः ॥ वयसस्थापनोवृष्योगुरुस्वादूरसायन । स्निग्ध कफकरोगर्भस्थापकोवातनाशनः ॥ अतिसारप्रवाहघ्नोरक्तरुक्पित्तदाहहा । आमातीसारशमनोरक्तातीसारनाशनः ॥ "पारदस्यविकारघ्नोसेवनान्मासमात्रतः। केचिन्मोचरसस्थानेपूगपुष्पचनिक्षिपेत"॥(नि र)

अर्थ-मोचरस-कपेला, मलरोधक, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, बुद्धिदायक, शीतल,अवस्थास्थापक,वीर्यवर्द्धक, भारी, स्वादिष्ठ, रसायन, स्निग्ध, कफकारक, गर्भस्थापक, वातनाशक तथा अतिसार, प्रवाहिका, रक्तरोग, पित्तदाह, आमातिसार और रक्तातिसारको दूर करनेवाला है । इसको एक मासपर्यन्त सेवनकरनेसे पारेके विकार दूर होतेहै, कोई २ वैद्य मोचरसके स्थानमें सुपारीका फूल गेरतेहै ।

विवरण । सेमलके वृक्ष प्राय जगलोंमें अधिक होतेहै एक डडीमें आठ दश पत्ते लगतेहै इसम काटे होतेहै । फूल कमलकी समान लालरगके होतेहै । फल आकके समान लगतेहै । भीतरसे रुई निकलतीहै । इसके गादको मोचरस कहते है ।

कूटशाल्मलीनामानि ।

कुत्सितः शाल्मलि प्रोक्तोरोचनः कूटशाल्मलिः ॥

अर्थ-कुत्सितशाल्मलि, रोचन, कूटशाल्मलि ।

कूटशाल्मलीगुणाः ।

कूटशाल्मलिकस्तिक्तः कटुकः कफवातनुत् ।
भेद्युष्णःप्लीहजठरयकृद्गुल्मविषापहः ॥
भूतानाहविबन्धास्रमेदःशूलकफापहः । (भावप्रकाश)

अर्थ-कूटशाल्मली-कडवा, चरपरा, कफवातनाशक, भेदक, गरम तथा प्लीहा, उदररोग गुल्म, विष, भूत, आनाह, विबंध, रुधिरविकार, मेद, शूल और कफनाशक है । कूटशाल्मलिके वृक्ष जंगलमें विशेष करके होते हैं, पत्ते जिंगिनीकी समान, फूल अत्यंत लालरंगके आतेहैं । एकसफेद रंगका होताहै ।

धवनामानि ।

धवःपिशाचवृक्षश्चशकटाख्योधुरन्धरः ॥

अर्थ-धव, पिशाचवृक्ष, शकटाख्य, धुरन्धर, (शाकटाख्य, दृढतरु, गौर, कषाय, मधुरत्वक्, शुष्कवृक्ष, शुष्काङ्ग, पाण्डुतरु, धवल, पाण्डुर, घट, नन्दितरु, स्थिर, पीतफल, मधुरत्वच)

संस्कृतभाषामें	धव ।
हिन्दीभाषामें	धा, धावा ।
बंगभाषामें	धाऊयागाछ ।
मराठीभाषामें	धावडा ।
गुजरातीभाषामें	धावडो ।
कर्णाटकीभाषामें	सिरिवरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	नारिजचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	एनोजिसस लाटिफोलिया । Anogisus Latifolia
	कोनोकार्पस लाटिफोलिया । Conocorpus Latifolia

अस्य गुणाः ।

धवःकटुःकषायःस्यात्कफवातविनाशनः ।
पित्तप्रकोपनोरुच्यःदीपनःपाण्डुरोगजित् ॥

अर्थ-धव-चरपरा, कषेला, कफवातनाशक, पित्तको कुपितकरनेवाला, रुचिकारक, दीपन और पाण्डुरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

धवस्तुतुवरःशीतोमधुरःकटुकोमतः ।

दीपनोरुचिकृच्चैवपाण्डुरोगप्रमेहजित् ॥
कफपित्तार्शवातानांनाशकःपरिकीर्तितः । फलंचास्यहिम स्वादुरूक्षचतुवरमतम् ॥मलस्तम्भकरंचैववातलकफपित्त-जित् । "मूलंकटुकषायंचपित्तकृद्दीपनपरम्" ॥ (नि र)

अर्थ-धो-कपेला, शीतल, मधुर, चरपरा, दीपन, रुचिकारक तथा पाण्डुरोग, प्रमेह, कफ, पित्त, ववासीर और वातको दूर करेहै। इसका फल-शीतल, स्वादिष्ठ, रूखा, कपेला, मलस्तम्भक, वातवर्द्धक तथा कफ-पित्तनाशक है। इसकी जड-चरपरी, कपेली, पित्तकारक और परम दीपनहै।

विवरण। धवके वृक्ष जगलमें अधिक होतेहैं, इसके पत्ते अमरूदकी समान और छाल सफेद रगकी होतीहै, फल वहुत छोटे होतेहैं इसकी लकडीके हल और मूसल बनतेहैं।

धन्वगनामानि

धन्वगस्तुधनुर्वृक्षोगोत्रवृक्षःसुतेजनः ॥

अर्थ-धन्वग, धनुर्वृक्ष, गोत्रवृक्ष, सुतेजन।

अस्य गुणाः।

धन्वङ्गःकफपित्तास्रकासहृत्तुवरोलघुः ।
वृंहणोवलकृद्रूक्षःसन्धिकृद्व्रणरोपणः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-धन्वगवृक्ष-कफ, रक्तपित्त और खाँसीको दूर करेहै, कपेला, हलका, वृंहण, वलकारक, रूखा, संधिकारक और व्रणको भरनेवाला है।

धन्वननामानि।

धन्वनःपिच्छिलत्वक्चधनुर्वृक्षोमहावल ।

अर्थ-धन्वन, पिच्छिलत्वक्, धनुर्वृक्ष, महावल, (रक्तकुसुम, रुजासह, पिच्छिलक, रूक्ष, स्वादुफल)

अस्य गुणाः।

धन्वनस्तुवरोवृष्योमधुरःकटुकोमतः । वल्योरूक्षोलघुश्चैवधातुवृद्धिकरोमतः ॥ किंचिदुष्णश्चसप्रोक्तोव्रणरोपणकारकः । कफमातहरोदाहशोषकण्ठरुजापहः ॥ रक्तरुक्पि-

त्तकासघ्नःपीनसस्यविनाशकः। फलचास्यस्वादुशीतंतुवरंकफवातहम् ॥

अर्थ-धामिनवृक्ष-कषेला, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, चरपरा, वलकारक, रूखा, हलका, धातुवर्द्धक, किंचित् गरम, व्रणरोपण तथा कफ, वात दाह, शोष, कण्ठरोग, रुधिरविकार, पित्त, खाँसी, और पीनस रोगको दूर करे है। इसका फल-स्वादिष्ठ, शीतल, कषेला, कफ और वातविनाशक है।

विवरण। धामिनके वृक्ष-वहुत वडे और लम्बे होतेहैं, पत्तेवेरके पत्तोंसे कुछ वडे होतेहैं, इसकी लकडी प्रायः इमारतके काममें आतीहै।

करीरनामानि।

करीरगूढपत्रचशाकपुष्पंकटूफलम्।
ग्रन्थिलतीक्ष्णसारचकण्टकीमरुभूरुहम् ॥

अर्थ-करीर, गूढपत्र, शाकपुष्प, कटूफल, ग्रन्थिल, तीक्ष्णसार, कण्टकी, मरुभूरुह (क्रकर, क्रकच, निष्पत्रिका, करिर, फरक, तीक्ष्णकण्टक, मृदुफल, निष्पत्र, शोणपुष्प, विदारिक, शतकुन्त, सुफल, उष्णसुंदर, विष्वपत्र, कृशशाख)

संस्कृतभाषामें	करीर।
हिंदीभाषामें	करील।
बंगभाषामें	करील (मथुरादिमें) कचडा।
मराठीभाषामें	नेवती।
गुजरातीभाषामें	केर।
कर्णाटकीभाषामें	तिप्पतिगे।
तैलिङ्गीभाषामें	कवरकुराक एनुगदत सुमोदतु।
इंग्रेजीभाषामें	केपर Caper
लैटिन्भाषामें	केपरिस् स्पाइनोसा Capparis spinosa.
फारसीभाषामें	कनार।

अस्य गुणाः।

करीरमाध्मानकरंकषायकटूष्णमेतत्कफहारिभूरि।
श्वासानिलारोचकसर्वशूलविच्छर्दिखर्ज्जूव्रणदोषहारि।

अर्थ-करील-आध्मानकारक, कषेला, चरपरा, गरम, कफनाशक तथा श्वास, वात, अरुचि, सर्वप्रकारके शूल, वमन, खज्जूं और व्रणविनाशक है।

अन्यच्च ।

करीर कटुकस्तिक्त स्वेद्युष्णोभेदन.स्मृत ।
दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-करील-चरपरा, कडवा, पसीनेको लानेवाला, उष्ण, भेदक तथा बवासीर, कफ, वात, आम तथा विष, सूजन, और व्रणको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

करीरस्तुवरश्चोष्ण कटुश्चाध्मानकारक. । रुच्योभेदकर स्वादु.कफवातामशोथजित्॥ विषाशोव्रणशोथघ्न कृमिपामाहगेमत । अरोचकसर्वशूलश्वासचैवविनाशयेत ॥ फल चास्यकटुस्तिक्तमुष्णचतुवरंमतम् । विकासिमधुरग्राहिमुखवैशद्यकारकम्। । हृद्यरूक्षकफमेहंदुर्नामानचनाशयेत । पुष्पवातकरप्रोक्तंतुवरकफपित्तनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-करील-कषेला, गरम, चरपरा, आध्मानकारक रुचिकारक, भेदक, स्वादु तथा कफ, वात, आम, सूजन, विष, बवासीर, व्रग, शोथ, कृमि, खुजली, अरुचि, सर्व प्रकारके शूल और श्वासको दूर करैहै । इसका फल-चरपरा, कडवा, गरम, कषेला, विकासि, मधुर, मलरोधक, मुखको स्वच्छ करनेवाला, हृदयको हितकारी, रूखा तथा कफ, प्रमेह और पित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

करीरोव्रणशोफार्शोरक्तहृत्कफवातजित । कटुपाकरसोत्युष्णोयकृत्प्लीहापहोग्निकृत ॥ तत्पुष्पकफवातघ्नंकटुपाकरसलघु । मृष्टमूत्रपुरीपचसदापथ्यरुचिप्रदम् ॥ बालचास्यफलपाकेकटुकश्लेष्मशोथजित । कपायवातलतिक्ततत्पक्ककफपित्तजित् ॥ (शो०नि)

अर्थ-करील-व्रण, सूजन, बवासीर और रक्तविकारको दूर करनेवाला तथा कफ, वात, यकृत् और प्लीहाको दूर करे है, पचनेमे चरपरा, अत्यत गरम और अग्निवर्द्धक है । इसके फूल-कफवातविनाशक, चरपरे, पचनेमेंभी चरपरे, हलके, मूत्र और मलको करनेवाले, सदैव पथ्य और रुचिकारक हैं ।

इसके कच्चे फल-पचनेमें चरपरे, कफनाशक, शोथनिवारक, कपेले, वादी, कडवे और पक्के फल-कफ तथा पित्तनाशक हैं।

विवरण-करीलके वृक्ष भूडके ऊपर तथा मारवाडकी भूमिमें अधिकतासे होते है, इसकी डडी नीले रगकी और फूल गुलाबी रंगका होता है, फाल्गुन और चैत्रमासमें इसके ऊपर फल फूल आते हैं, पत्ते न होनेके कारण वृक्षमें फूलही फूल दीखते हैं।

शाखोटनामानि।

शाखोट· पीतफलकोभूतावास·खरच्छद ।

अर्थ-शाखोट, पीतफलक, भूतावास, खरच्छद (पिशाचद्रु, पीतफल, कर्कशच्छद, शखिनीवास, भूतवृक्ष, सकट, अक्षधर, करच्छद, गवाक्षी, घूकावास, रूक्षपत्र, पीत, कैशिक्योज, क्षीरनाश)

स०	शाखोट।	गु०	साहोडा।
हिं०	सहोडा (रा)।	क०	आखोडमरणु।
व०	शेओडा, शाडा।	ते०	भारिणिकेचेट्टु वरनकी।
म०	सहोड।	ले०	स्ट्रेप्लुसासपर। Streplusasper

अस्य गुणाः।

शाखोटोरक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित् ।

अर्थ-सहोडा-रक्तपित्त, ववासीर,वात, कफ और अतिसारको दूर करे है।

विवरण। सिहोडेके वृक्ष अत्यत गँठीले झाड झकाडसे मध्यम कदके होतेहै, पत्ते छोटे छोटे और चिकने चिकने होतेहैं, फूल सफेद रगके और लकडीमें काटेसे प्रतीत होतेहै।

शाकनामानि।

शाक· क्रकचपत्रःस्यात्खरपत्रोतिपत्रक ।
महीरुहःश्रेष्ठकाष्ठ· स्थिरसारोगृहद्रुम· ॥

अर्थ-शाक, क्रकचपत्र, खरपत्र, अतिपत्रक, महीरुह, श्रेष्ठकाष्ठ, स्थिरसार, गृहद्रुम, (अनिल, अर्ण, महापत्र, शाकवर, शाकवृक्ष, शाकाख्य, अर्जुनोपम, दारपत्र, अतिपत्र, भूमिरुह, द्वारदारु, खरच्छद, दीर्घच्छद, कोलपत्र, योगी, दुर्गमक गन्धसार, स्थिरसार, स्थिरक, ध्रुवसाधन)

संस्कृतभाषामें	शाक।
हिन्दीभाषामें	सागोन, सागवन।
वंगभाषामें	शेगुनगाछ।
मराठीभाषामें	साग, सागवान।
गुजरातीभाषामें	शाग।
कर्णाटकीभाषामें	नैगु।
तैलङ्गीभाषामें	टेकुचेट्टु।
तामिलीभाषामें	टेक।
औत्क०	सिंगुरु।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियनटीक्ट्री। Indian teak tree
लैटिन्भाषामें	टेकटोना ग्राडीस्। Tectona Grandis
फारसीभाषामें	फिलगोस्।
अरबीभाषामें	फिल्जोश उजनुलफिल।

अस्यगुणाः।

शाकस्तुसारकःप्रोक्तः पित्तदाहश्रमापहः।
कफघ्नंमधुरंरूक्षंकषायशाकवल्कलम्॥ (रा०नि०)

अर्थ–शाक (सागोन)–सारक तथा पित्त, दाह और श्रमनाशक है। सागोनकी छाल–कफनाशक, मधुर, रूखी और कषैली है।

अन्यच्च।

भूमिसहस्तुशिशिरोरक्तपित्तप्रसादनः॥ (मा०प्र०)

अर्थ–सागवन–शीतल और रक्तपित्तको शुद्धकरनेवाला है।

अपिच।

शाकःश्लेष्मानिलामघ्नोगर्भसन्धानदोहिमः।(म०पा०नि०)

अर्थ–सागोन–कफ और वातनाशक, गर्भसन्धानकारक और शीतल है।

अन्यच्च।

शाकवृक्षस्तुतुवरःशीतलोरक्तपित्तहा। गर्भस्थैर्य्यकरश्चैव गर्भसन्धानकारकः॥ वातपित्तंतथार्शांसिकुष्ठचातिसृतिंजयेत्। अस्यपुष्पंतुतुवरंतिक्तंचविशदंलघु॥ वातप्रकोपनं रूक्षंकफपित्तप्रमेहनुत्। वल्कलंचास्यमधुरंरूक्षंचमधुरम्तम्॥ कफनाशकरंचैवमुनिभिः परिकीर्त्तितम्। (नि०र०)

अर्थ-शाकवृक्ष-कषेला, शीतल, रक्तपित्तनाशक, गर्भको स्थिरकरनेवाला, गर्भसन्धानकारक तथा वात, पित्त, बवासीर, कोढ और अतिसारको दूर करेहै। इसके फूल-कषेले, कडवे, विशद, रूखे हल्के, वातको कुपित करनेवाले तथा कफ, पित्त और प्रमेहको दूर करेहैं। इसकी छाल-मधुर, रूखी, कषेली और कफनाशक है।

विवरण। शाकके वडे वृक्ष जगलम होतेहै, पत्ते वडे और खरसरे होतेहैं इसके पत्ताको हाथसे मलनेसे हाथ लाल होजाते ह सागके फूल छोटे और सफेद होतेहै।

वरुणनामानि।

वरुणोवर्हपुष्पश्चतिक्तशाक कुमारक।
उरुमाण सेतुवृक्ष श्वेतद्रुमारुतापह॥

अर्थ-वरुण, वर्हपुष्प, तिक्तशाक, कुमारक, उरुमाण, सेतुवृक्ष, श्वेतद्रु, मारुतापह, (वरण, कुमार, अश्मरीघ्न, सेतुक, सेतु, वराण, शिखिमण्डल, श्वेतवृक्ष, श्वेतद्रुम, साधुवृक्ष, तमार)

संस्कृतभाषामें	वरुण।
हिन्दीभाषामें	वरना (बिलि)।
वगभाषाम	वरुणगाछ।
मराठीभाषामें	वायवरणा, (कों०) भाटवरणा।
गुजरातीभाषामें	वरणो।
कर्णाटकीभाषामें	मदवमले।
तैलिंगीभाषाम	उरुमाट्टि, जाजिचेट्टु, उलिमिरिचेट्टु।
तामिलभाषामें	मरलिंगम्।
लैटिन्भाषामें	क्रेटिवा, रोक्सबुर्घिआइ। Crateva Roxburghii क्रेटिवा, रिलिजिओसा। Crateva Religiosa

अस्य गुणाः।

वरुण पित्तलोभेदीश्लेष्मकृच्छ्राश्ममारुतान्।
निहन्तिगुल्मवातास्रकृमींश्चोष्णाग्निदीपन॥
कषायोमधुरस्तिक्त कटुकोरूक्षकोलघु॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वरना-पित्तकारक, भेदक, कफ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, गुल्म, वातरक्त

और कृमिका नाश करेहै । गरम, अग्निप्रदीपक, कषेला, मधुर, कडवा, चरपरा, रूखा और हलका है ।

अन्यच्च ।

वरुण कटुरुष्णश्चरक्तदोपहर. परः ।
शीतवातहर स्निग्धोदीप्योविद्रधिवातजित ॥(रा०नि०)

अर्थ–वरना–चरपरा, गरम, रुधिरविकारनाशक, शीतवातनिवारक, स्निग्ध, दीपन तथा विद्रधि और वातविनाशकहै ।

अन्यच्च ।

वरुणोऽनिलशूलघ्नोभेदीचोष्णोऽश्मरीहर. ।
पुष्पवरुणजग्राहिपित्तघ्नमामवातजित ॥ (रा०ज०)

अर्थ–वरना–वात और शूलनाशक, दस्तावर, गरम और पथरीको दूर करेहै । वरनाके फल–मलरोधक, पित्तनाशक और आमवातको दूर करेहैं ।

अपिच ।

वरुणोष्ण'कटु'स्निग्धोदीपनोमधुर स्मृत । लघुस्तिक्त-स्तुतुवर पित्तलोभेदक स्मृत ॥ वातकफविद्रधिचमूत्रकृ-च्छ्रचनाशयेत । अश्मरींवातरक्तचगुल्मरक्तरुजकृमीन् ॥ रक्तदोपशीर्पवातमूत्राघातचहृद्रुजम् ॥ हृद्रोगनाशयत्येव पुष्पचास्यचग्राहकम ॥ रक्तदोपहरचैवफलचास्यसगुरु । पाकेतुमधुरस्वादुस्निग्धोष्णवातनाशकम ॥ पित्तकफंना-शयतीत्येवचमुनिभिर्मतम ॥ (नि०र०)

अर्थ–वरना–गरम, चरपरा, स्निग्ध, दीपन, मधुर, हलका, कडवा, कषेला, पित्तजनक, दस्तावर तथा वायु, कफ, विद्रधि, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वातरक्त, गुल्म, रक्तविकार, कृमि, रक्तदोष, शीर्षवात, मूत्राघात, हृदयरोग और उरशूलको नष्ट करे है । इसका फूल–मलरोधक, रक्तविनाशक । इसके फल–मारक, भारी, पचनेमे मधुर, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, गरम तथा वातपित्त और कफको हरे है ।

विवरण । वरनेका बडा वृक्ष होता है, पत्ते बेलकी समान तीन २ लगते

हैं, फल बेलकी समान गोल और सुपारीकी आकृतिवाले होते हैं, फूल गुलतुर्रेकी सदृश होता है ।

कटभीनामानि ।

कटभीनाभिकाशौण्डीपाटलीकिणिहीतथा ।
मधुरेणुःक्षुद्रश्यामाकैडर्य्यश्यामलानवा ॥

अर्थ-कटभी, नाभिका, शौण्डी, पाटली, किणिही, मधुरेणु, क्षुद्रश्यामा, कैडर्य्य, श्यामला, (स्वादुपुष्प, कटम्भर, किणिही, भद्रेन्द्राणी)

श्वेतकटभीनामानि ।

सितादिकटभीश्वेताकिणिहीगिरिकार्णिका ।
शिरीषपत्रीकालिन्दीशतपादाविषघ्निका ॥
महाश्वेतामहाशौण्डीमहादिकटभीदश ॥

अर्थ-सितकटभी, श्वेतकिणिही, गिरिकर्णिका, शिरीषपत्री, कालिन्दी, शतपादा, विषघ्निका, महाश्वेता, महाशौंडी और महाकटभी)

संस्कृतभाषामें	कटभी, श्वेतकटभी ।
हिन्दीभाषामें	करही, कटभी, हरिमल ।
मराठीभाषामें	वाकुभा ।
गुजरातीभाषाम	वाखुंगा ।
कर्णाटकीभाषामें	वेल्लाल ।
इंग्रेजीभाषामें	केरीमट्री । Careya tree
लैटिनभाषामें	केरिया आर्बोरिया । Careya arborea

कटभीगुणाः ।

कटभीचेत्कटुरुष्णागुल्मविषाध्मानशूलदोषघ्नी ।
वातकफाजीर्णरुजांशमनीश्वेताचतत्रगुणयुक्ता॥(रा.नि)

अर्थ-कटभी-चरपरी, गरम तथा गुल्म, विष, आध्मान शूल, वात, कफ और अजीर्णरोगको दूर करेहै और श्वेतकटभी गुणयुक्तहै ।

अन्यच्च ।

कटभीतुप्रमेहार्शोनाडीव्रणविषकृमीन् ।
हन्त्युष्णाकफकुष्ठघ्नीकटूरूक्षाचकीर्त्तिता ।
तत्फलंतुवरंज्ञेयविशेषात्कफशुक्रजित् ॥ ((भावप्रकाश)

अर्थ–कटभी–प्रमेह, ववासीर, नाडीव्रण, विप, कृमि, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है, गरम, चरपरी और रूखी है। इसका फल–कपेला और विशेषकरके कफ तथा शुक्रनाशक है।

विवरण। कटभीके मध्यम आकारके वृक्ष होतेहैं पत्ते लम्बे और कुछ कुछ गोल होते है, फल अड खर्बूजेकी समान छोटे छोटे लगतेहैं।

मुष्ककनामानि।

मुष्ककोमोक्षकोमुष्टिर्मूर्खकोमोचकस्तथा।
क्षारश्रेष्ठ·क्षारवृक्षोद्विविध·श्वेतकृष्णक॥

अर्थ–मुष्कक, मोक्षक, मुष्टि, मूर्खक, मोचक, क्षारश्रेष्ठ, क्षारवृक्ष, (गौलिक, मेहन, पाटली विषापह, जटाल, वनवासी, सुतीक्ष्णक, गोलीढ, गोलिह, क्षारोष्ण, शिखरी, वनवासी, घण्टापाटलि, क्षुद्रपाटलि, मुचक, जटालु, झाटल, मोक्ष, घण्टा, पाटलि, क्षारद्रु, कालमुष्कक, पाटली, घण्टाक, तीक्ष्ण, घण्टक, कालस्थाली) यह सफेद और कृष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है।

संस्कृतभाषामें	मुष्कक, मोक्षक।
हिन्दीभाषामें	मोखा, मोखा, फरवाह।
वगभाषामें	घण्टापारुल।
मराठीभाषामें	मोकडी, मोखावृक्ष।
गुजरातीभाषामें	मरखो।
कर्णाटकीभाषामें	मोखदलाई।
तैलिङ्गीभाषामें	मोक्षपुचेट्टु, मुष्कलुण्डुचेट्टु।

लैटिन्भाषामें स्क्रीवीरार्स्वाटे निओइडिस। Schre bera swiete nioides

अस्य गुणा'।

मुष्कक कटुकोम्लश्वरोचन पाचन·पर।
प्लीहगुल्मोदरार्त्तिघ्नोद्विधातुल्यगुणान्वित' (रा०नि०)

अर्थ–दोनोंप्रकारके मोखावृक्ष–चरपरे, खट्टे, रोचन, पाचक तथा प्लीहा गुल्म और उदररोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

मोक्षक·कटुकस्तिक्तोग्राह्युष्णःकफवातहृत्।
विपमेदोगुल्मकण्डूवस्तिरुक्कृमिशुक्रनुत॥

अर्थ-मोखा-चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम तथा कफ, वात, विष, मेद, गुल्म, कण्डू, बस्तिरोग, कृमि और शुक्रको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

मोक्षकः कफवातघ्नो ग्राही गुल्मविषकृमीन् ।
हन्त्युष्णो वस्तिरुक्कण्डूस्तत्पुष्पं कफपित्तजित् ॥
निर्य्यासोस्यपरं वृष्यः शोषपित्तानिलापहः । (म नि)

अर्थ-मोखा-कफवातनाशक, मलरोधक, गुल्म, विष और कृमिनाशक है गरम, बस्तिरोग और कण्डूको दूर करे है । इसका फूल कफपित्तनाशक है । इसका गोंद-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा शोष पित्त और वात-विनाशक है ।

अन्यच्च ।

मुष्कक कटुकश्चाम्लो रुचिकृत्पाचन स्मृत । ग्राहकोष्ण पटुस्तिक्तः प्लीहगुल्मोदरापह ॥ विषदोषकफवातमेदरुग्ब-स्तिशूलहा । शुक्रदोषकर्णरुजपित्तकण्डूकृमीञ्जयेत ॥ पुष्प कुष्ठहरञ्चैयवातपित्तकफप्रणुत् । फलमग्भेदीतिरुग्भेदकरो-चकमतम ॥ गुल्ममेहार्शःपाण्डुघ्नशुक्रदोषोदरञ्जयेत ॥(नि र)

अर्थ-मोखावृक्ष-चरपरा, खट्टा, रुचिकारक, पाचक, मलरोधक, गरम, निमकीन, कडवा तथा प्लीहा, गुल्म, उदररोग, विषविकार, कफ, वात, मेद रोग, वस्तिशूल, शुक्रदोष, कर्णरोग, पित्त, कण्डू और कृमिको दूर करेंहै । इसका फूल-कुष्ठ, वात, पित्त, कफको दूर करेंहै । इसका फल-अग्निमदीपक, दस्तावर, रोचक तथा गुल्म, प्रमेह, बवासीर, पाण्डुरोग, शुक्रदोष और उदररोगको दूर करै है ।

विवरण । मोखके वृक्ष सफेद और काले इनभेदोंसे दोप्रकारके होतेंहै, पत्ते वडे बडे होतेंहै । उनमें आककी समान दूध निकलता है । फूल घरा कारके लगतेंहै ।

अम्बुशिरीषिकानामानि ।

शिरीषिकाढिंढिणिकादुर्बलाम्बुशिरीषिका ।

अर्थ-शिरीषिका ढिंढिणिका दुर्बला, अम्बुशिरीषिका ।

संस्कृतभाषामें	अम्बुशिरीषिका ।
हिन्दीभाषामें	जलसिरस, ढाढोन ।
मराठीभाषामें	जलशिरसी ।

अस्य गुणाः ।

त्रिदोषकफकुष्ठार्शोहरीवारिशिरीषिका ।

अर्थ–जलसिरस (ढाँढोन)–त्रिदोष, कफ, कोढ और ववासीरको दूर करें हैं ।

अन्यच्च ।

ढिंढिणीकफकुष्ठार्शःसन्निपातविषापहा ॥ (म०नि०)

अर्थ–जलसिरस–कफ, कुष्ठ, ववासीर, सन्निपात और विषको दूर करें हैं।

विवरण । जलसिरसके वृक्ष, सिरसकेही समान कुछ छोटे जलमें होतेहैं ।

शमीनामानि ।

शमीशक्तुफलीशान्ताकेशहन्त्रीशिवाफला ।
मङ्गल्याशुभदालक्ष्मीःपवित्रापापनाशिनी ॥

अर्थ–शमी, शक्तुफली, शान्ता, केशहन्त्री, शिवाफला, मङ्गल्या, शुभदा, लक्ष्मी, पवित्रा, पापनाशिनी (सक्तुफली, शक्तुफला, सक्तुफला, शिवा, काननारि, तुगा, कचरिफला, केशमथनी ईशानी, तपनतनया, इष्टा शुभकरी, हविर्गन्धा, मेध्या, दुरितदमनी, शक्तुफलिका, समुद्रा, वह्निगर्भा, समीर, ईशान, सुरभी, पापशमनी, भद्रा, शंकरी, सुपत्रा, सुखदा, ईशाना, शंकरा शक्तुफलिका, सुभद्रा)

संस्कृतभाषामें	शमी ।
हिन्दीभाषामें	छाकर (रा) समी, सफेदकीकर, छिकुर ।,
वंगभाषामें	शाँइ, छुँइवाब्ला ।
मराठीभाषामें	थोरशमी, लघुशमी ।
गुजरातीभाषामें	खिजडी, नानी खिजडी ।
कर्णाटकीभाषामें	वानि, कावान्नि ।
तैलिङ्गीभाषामें	शमीचेट्टु ।
औत्क०	शुमि ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पजरी । Spung tree
लैटिन् भाषामें	प्रोसोपिस स्पाइसिजेरा । Prosopis spiciger.

अस्य गुणाः ।

शमीरूक्षाकषायाचरक्तपित्तातिसारजित् ।
तत्फलंतुगुरुस्वादुरूक्षोष्णंनखकेशनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शमी (छोंकर) रूखा, कपेला, तथा रक्तपित्त और अतिसारनाशकहै । इसका फल भारी, स्वादिष्ठ, रूखा, गरम तथा नख और केशोंका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

शमीतिक्ताकटु शीताकषायारोचनीलघुः ।
कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःक्रिमिजित्स्मृता ॥
"तत्फलपित्तलरूक्षमेध्यकेशविनाशनम्" । (भा०प्र०)

अर्थ-छोंकर-कडवा, चरपरा, शीतल, कपेला, रोचन, हलका तथा कफ, खाँसी, भ्रम, श्वास, कोढ, बवासीर और कृमिको दूर करे है । इसका फल-पित्तजनक, रूखा, मेधाकारक और केशोंका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

शमीतुतुवरारूक्षाशीतालघ्वीचतिक्तका । कटुकारेचनीचैवरक्तपित्तातिसारनुत्॥कुष्ठार्शःश्वासकासघ्नीकफभ्रमक्रमीन् हरेत । कम्पश्रमानाशमनीफलंतीक्ष्णञ्चपित्तलम् ॥ मेध्यगुरुस्वादुरूक्षमुष्णकेशहरपरम् ।

अर्थ-शमी (छोंकर)-कपेला, रूखा, शीतल, हलका, कडवा, चरपरा, दस्तावर तथा रक्तपित्त, अतिसार, कुष्ठ, बवासीर, श्वास, खाँसी, कफ, भ्रम, कृमि, कम्प और श्रमनाशक है । इसका फल-तीक्ष्ण, पित्तजनक, मेधाजनक, भारी, स्वादिष्ठ, रूखा, गरम और केशोंको दूर करेहै ।

विवरण । बडा वृक्ष होताहै पत्ते छोटे, रैंकी समान और फली सांगरीकी समान होतीहै । यहभी एक बबूरकी जातीमेंसे है ।

सप्तपर्णनामानि ।

सप्तपर्णोविशालत्वक्शारदोविषमच्छदः ।

अर्थ-सप्तपर्ण, विशालत्वक्, शारद, विषमच्छद (विट, विनद, विन्याक, सारद, देववृक्ष, दुर्गन्धि, शिरोरुजा, मदनाश, सुविपत्र, मदाशी, मदनाशन,

गुच्छपुष्प, शुक्तिपर्ण, सुपर्णक, अयुकच्छद, अयुग्मच्छद, गुच्छपुष्प, युग्मपर्ण, मुनिच्छद, बृहत्त्वक्, बहुपर्ण, शाल्मलिपत्रक, मदगन्ध, गन्धिपर्ण, सप्तच्छद, उत्रपर्ण, शरदिपुष्प)

संस्कृतभाषामें	सप्तपर्ण ।
हिंदीभाषामें	छतिवन, सतवन, सतोना, छातियान् ।
बंगभाषामें	छातिमगाछ, छेतेन ।
मराठीभाषामें	सात्विण ।
गुजरातीभाषामें	सप्तपर्ण ।
बं०	छातविण ।
कर्णाटकीभाषामें	एलेलेग ।
तैलिङ्गीभाषामें	ऐडाकुल, अरिटाकु ।
लैटिनभाषामें	आल्स्टोनिया स्कोलेरिस् । Alstonia schlaris

अस्य गुणाः ।

सप्तपर्णो व्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजन्तुजित् ।
दीपनः श्वासगुल्मघ्नः स्निग्धोष्णस्तुवरः सरः (भा० प्र०)

अर्थ-सतवन-व्रण, कफ, वात, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, श्वास और गुलमका नाश करेहै । दीपन, स्निग्ध, उष्ण और कुछ २ दस्तावर है ।

अन्यच्च ।

सप्तपर्णः कषायोष्णस्तिक्तोदीप्तिकरः सरः ।
स्निग्धोहृद्यः कृमिश्वासकुष्टगुल्मव्रणास्रजित् ॥
मदगन्धिस्त्रिदोषघ्नः शूलरक्तरुजापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सतवन-कषेला, गरम, कडवा, अग्निदीपक, सारक, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, मदगन्धिवाला तथा कृमि, श्वास, कोढ, गुलम, व्रण, रुधिरविकार, त्रिदोष, शूल और रक्तरोगका नाश करेहै ।

विवरण । बडा वृक्ष है, पत्ते शेमलकी समान और एक २ डालीमे सात २ लगतेहै ।

तिनिशनामानि ।

तिनिशः स्पदनो नेमीसर्वसारोऽश्मगर्भकः ।

अर्थ-तिनिश, स्पंदन, नेमी, सर्वसार, अश्मगर्भक (तिनाशक, स्पन्द

नद्रुम, अक्षक, चित्रकर्म्मा, रथद्रु, अतिमुक्तक, वञ्जुल, चित्रकृत्, चर्मी, शताग, शकट, रथ, रथिक, भस्मगर्भ, मेषी, जलधर, स्पदनि)

संस्कृतभाषामें	तिनिश ।
हिंदीभाषामें	तिरिच्छ, (-) तिनसुना ।
वंगभाषामें	तिनाश, सादन, जारुलगाछ ।
मराठीभाषामें	तिवस ।
गुजरातीभाषामें	हम्मेर, मिणोहम्मे । [bergia oides.
लेटिन् भाषामें	युजिनियाडाल बर्जिया ओईडिस् Ougenia da

अस्य गुणाः ।

तिनिश श्लेष्मपित्तास्रमेद कुष्टप्रमेहजित् ।
तुवर श्वित्रदाहघ्नोव्रणपाण्डुकृमिप्रणुत् (भा०प्र०)

अर्थ-तिरिच्छ-कफ, पित्त, रुधिरविकार, मेद, कोढ, प्रमेह, श्वित्रकुष्ठ, दाह, व्रण, पाण्डु और कृमिका नाश करे है तथा कपेला है ।

अन्यच्च ।

तिनिशस्तुवरश्चोष्णोग्राहक कफवातहा । रक्तातिसारकुष्ठचमेहमेदव्रणतथा ॥ रक्तदोषचपित्तचश्वित्रकुष्ठकृमींस्तथा । दाहचपाण्डुरोगचनाशयेदितिकीर्त्तित ॥ (नि० र०)

अर्थ-तिरिच्छ कपेला, गरम, ग्राही, कफवातनाशक तथा रक्तातिसार, कोढ, प्रमेह, मेद व्रण, रुधिरविकार, पित्त, श्वित्रकुष्ठ, कृमि, दाह और पाण्डुरोगका नाश करे ।

विवरण । तिनिसके बडे बडे वृक्ष होवेहै, पत्ते छोटे छोटे छोंकरकी समान होतेहैं, इसकी आकृति खैर अथवा लकिरकी समान होतीहै ।

हरिद्रुनामानि ।

हारिद्रक पीतवर्ण श्रीमान्गौरद्रुमोवर ।

अर्थ-हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान, गौरद्रुम (हरिद्र, पीतदारु, पीतकाष्ठ, [illegible]तक, कदम्बक, सुपुष्प, सुराह, पीतकद्रुम)

संस्कृतभाषामें	[illegible]द्रु ।
हिन्दीभाषामें	दिवा, हलदुवा, हलदू ।
वंगभाषामें	वृक्षविशेष ।
मराठीभाषामें	हलदिवावृक्ष ।

गुजरातीभाषामें	हलदरवो ।
कर्णाटकीभाषामें	विल्डि ।
लेटिन्भाषामें	नोक्लिया कोर्डिफोलिया । Nauclea cordifolia
	एडना कोर्डिफोलिया । Adina cordifolia

अस्य गुणाः ।

हरिद्रुःकटुकःपाकेवीर्योष्णस्तुवरः कटुः ।
लघु कफहरोवर्ण्योव्रणशोधनरोपणः ॥
तिक्तोवल्यःकान्तिदश्चत्वग्दोषांश्चविनाशयेत् ।

अर्थ–हल्दुवा–पचनेमें चरपरा, उष्णवीर्य्य, कषेला, चरपरा, हलका, कफनाशक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, व्रणशोधक, व्रणरोपण, कडवा, बलवर्द्धक, कान्तिजनक और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अपिच ।

हरिद्रुःशीतलस्तिक्तोमंगल्यःपित्तवान्तिजित् ।
अंगकान्तिकरोवल्योनानात्वग्दोषनाशनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ–हलदुवा–शीतल, कडवा, मंगलकारक, पित्तनाशक, वमननिवारक, बलवर्द्धक और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

विवरण । हलदुके बडे बडे वृक्ष पर्वत और वनोंमें होतेहैं, इसकी छाल पीले रंगकी होतीहै । पत्ते दोनों ओर शाखामें बराबर लगे होतेहैं ।

रुद्राक्षनामानि ।

रुद्राक्षंचशिवाक्षंचसर्वाक्षंभूतनाशनम् ।
पावननीलकंठाक्षंहराक्षंचशिवप्रियम् ॥

अर्थ–रुद्राक्ष, शिवाक्ष, शर्वाक्ष, भूतनाशन, पावन, नीलकंठाक्ष, हराक्ष, शिवप्रिय (तृणमेरु, अमर, पुष्पचामर)

हिन्दी, बंग, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तैलंगी–रुद्राक्ष ।

लैटिन् भाषामें इलिओकार्पस गेनीट्रस ।

अस्य गुणाः ।

रुद्राक्षमम्लमुष्णंचवातघ्नकफनाशनम् ।
शिरोर्तिशमनंरुच्यंभूतग्रहविनाशनम् ॥

अर्थ-रुद्राक्ष-अम्ल, उष्ण, वातनाशक, कफनिवारक, शिरकी पीडाको दूरकरनेवाला तथा भूतबाधा और ग्रहबाधाको हरैहै । रुद्राक्षके वृक्ष विशेषकरके वनमें होतेहैं, पत्ते लघु और कुछ गोल होतेहैं । इसके बीजोंको रुद्राक्ष कहतेहैं ।

माडनामानि ।

माडोमाडद्रुमोदीर्घोध्वजवृक्षोवितानक ।
मद्यद्रुमोमोहकारीमद्यद्रुरज्जुरप्यधा ॥

अर्थ-माड, माडद्रुम, दीघ, ध्वजवृक्ष, वितानक, मद्यद्रुम, मोहकारी, मद्यद्रुरज्जु ।

संस्कृतभाषामें	माड ।
हिन्दीभाषामें	माड ।
मराठीभाषामें	माड ।
गुजरातीभाषाम	माड, भेलिमाड ।
कर्णाटकीभाषामें	बैनो ।
इंग्रेजीभाषामें	टेनेंलिव्ह । Tendeaved
लेटिनभाषामें	केर्युटायुरेन्स कार्गाट । Caryota Urens Caryota

अस्यगुणा ।

माडस्तुशिशिरोरुच्यःकपाय·पित्तदाहकृत ।
तृष्णापहोमरुत्कारीश्रमहृच्छ्लेष्मकारकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-माड-शीतल, रुचिकारक, कषैला, पित्तदाहकारक, तृष्णानिवारक, वादी, श्रमनाशक और कफकारक है ।

विवरण । माडके वृक्ष वन जगल सर्वत्र होतेहैं, पत्ते बडे बडे लम्बे और गोल होतेहैं, फूल सफेद और लाल रगके आतेहैं ।

माजडनामानि ।

माजडोवनजोवृक्ष कृष्णत्वक श्यामसारकः ।
धाराफलोथनिस्सारवल्कोवीरवृक्षक ॥

अर्थ-माजड, वनजवृक्ष, कृष्णत्वक, श्यामसारक, धाराफल निस्सारवल्क, वीरवृक्षक ।

हिन्दीभाषामें बौहा (?)

मराठीभाषामें आयन, ऐन ।
गुजरातीभाषामें साजड ।
तैलिङ्गीभाषामें नल्लमद्दि ।
लैटिन्भाषामें टर्मिनेलिया ग्लेब्रा ।

अस्य गुणा ।

"पार्थक्षतेनिलेभग्नेरक्तस्तम्भेकफेहित." ॥

अर्थ-साजड-क्षत, वात, भग्न, रक्तस्तम्भ और कफरोगमें हितकारी है ।

विवरण-साजडभी अर्जुनका भेद है, इसकी आकृति प्राय अर्जुनवृक्षकी समान होती है । इसीका भेद ढोल समुद्रिका जानना ।

ढोलसमुद्रिकागुणा ।

ढोलसमुद्रिकाप्रोक्ताकीटादीनांविषप्रणुत ॥

अर्थ-ढोलसमुद्र-कीटादिकोंके विषको हरनेवाला है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे वटादिवर्ग ॥ ९ ॥

अथ धातूपधातुवर्गः ।

सुवर्णनामानि ।

स्वर्णसुवर्णकनकहिरण्यहेमहाटकम् ।
चामीकरंशातकौम्भद्राविणभूरिपिञ्जरम् ॥

अर्थ-स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, चामीकरशातकौम्भ, द्राविण, भूरिपिञ्जर, (गांगेय, भर्म्म, कर्बुर, जातरूप, महारजत, काञ्चन, रुक्म, कार्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद, करहाटक, कलधौत, मानगि, अकुप्य, लोहोत्तम, भूत्तम, पुरट, रेकन, शातकुम्भ, कर्बुर, कचूर, रुक्म, भद्र, गैरिक, चाम्पेय, भरु,चन्द्र,कल्धौत, अभ्रक, अग्निबीज, लोहवर, उध्य, मारुक,स्पर्श मणिप्रभव, मुख्यधातु, शतखण्ड, उज्ज्वल, कल्याण, मनोहर, अग्निवीर्य्य, अग्नि, भास्कर, पिञ्जान आपिञ्जर, तेज, निष्क, अग्निभ, दीप्तक, मङ्गल्य, सौमेरुक, भृङ्गार, जाम्बल, आग्नेय, निष्क, तपनीयक, अग्निशिख, चन्द्र, अय, पेश, पृशन, लोह, अमृत, मस्त दम्र, चारुरत्न, पीतक, श्रीनिकेत, भूषणार्ह, सर्व्वनामक)

अर्थ-रुद्राक्ष-अम्ल, उष्ण, वातनाशक, कफनिवारक, शिरकी पीडाको दूरकरनेवाला तथा भूतबाधा और ग्रहबाधाको हरेहै । रुद्राक्षके वृक्ष विशेषकरके वनमें होतेहैं, पत्ते लघु और कुछ गोल होतेहैं । इसके बीजोंको रुद्राक्ष कहतेहैं ।

माडनामानि ।

माडोमाडद्रुमोदीर्घोध्वजवृक्षोवितानक ।
मद्यद्रुमोमोहकारीमद्यद्रुरज्जुरप्यथा ॥

अर्थ-माड, माडद्रुम, दीर्घ, ध्वजवृक्ष, वितानक, मद्यद्रुम, मोहकारी, मद्यद्रुरज्जु ।

संस्कृतभाषामें	माड ।
हिन्दीभाषामें	माड ।
मराठीभाषामें	माड ।
गुजरातीभाषामें	माड, भेरीमाड ।
कर्णाटकीभाषामें	बैनो ।
इंग्रेजीभाषामें	टेर्नलिव्ड । Ternleaved
लेटिनभाषामें	केर्युटायुरेन्स वागाट । Caryota Urens-Caryota

अस्यगुणा ।

माडस्तुशिशिरोरुच्यःकषायःपित्तदाहकृत ।
तृष्णापहोमरुत्कारीश्रमहृच्छ्लेष्मकारक ॥ (रा०नि०)

अर्थ-माड-शीतल, रुचिकारक, कषेला, पित्तदाहकारक, तृष्णानिवारक, बादी, श्रमनाशक और कफकारक है ।

विवरण । माडके वृक्ष वन जंगल सर्वत्र होतेहैं, पत्ते बडे बडे लम्बे और गोल होतेहैं, फूल सपेद और लाल रंगके आतेहैं ।

साजडनामानि ।

साजडोवनजोवृक्ष कृष्णत्वक श्यामसारक. ।
धाराफलोथनिस्सारवल्कोवीरवृक्षक ॥

अर्थ-साजड, वनजवृक्ष, कृष्णत्वक, श्यामसारक, धाराफल, निस्सारवल्क, वीरवृक्षक ।

हिन्दीभाषामें कौहा (१) ।

मराठीभाषामें आयन, ऐन ।
गुजरातीभाषामें साजड ।
तैलिङ्गीभाषामें नल्लमद्दि ।
लैटिनभाषामें टर्मिनेलिया ग्लेब्रा ।

अस्य गुणाः ।

"पार्थक्षतेनिलेभग्नेरक्तस्तम्भेकफेहित" ॥

अर्थ-साजड-क्षत, वात, भग्न, रक्तस्तम्भ और कफरोगमें हितकारी है ।

विवरण-साजडभी अर्जुनका भेद है, इसकी आकृति प्राय अर्जुनवृक्षकी समान होती है । इसीका भेद ढोल समुद्रिका जानना ।

ढोलसमुद्रिकागुणाः ।

ढोलसमुद्रिकाप्रोक्ताकीटादीनाविषप्रणुत ॥

अर्थ-ढोलसमुद्र-कीटादिकोंके विषको हरनेवाला है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे वटादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ धातूपधातुवर्गः ।

सुवर्णनामानि ।

स्वर्णसुवर्णकनकहिरण्यहेमहाटकम ।
चामीकरशातकौम्भद्राविणभूरिपिञ्जरम् ॥

अर्थ-स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, चामीकरशातकौम्भ, द्राविण, भूरिपिञ्जर, (गांगेय, भर्म्म, कर्बुर, जातरूप, महारजत, काञ्चन, रुक्म, कार्त्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद, कलधौतक, तपनीय, मानसि, अकुप्य, लोहोत्तम, भूत्तम, पुरट, रेकन, शातकुम्भ, कर्बुर, कर्चूर, रुक्म, भद्र, गैरिक, चाम्पेय, भरु, चन्द्र, कलधौत, अभ्रक, अग्निबीज, लोहवर, उर्ध्व, मारुक, स्पर्श मणिप्रभव, मुख्यधातु, शतखण्ड, उज्ज्वल, कल्याण, मनोहर, अग्निवीर्य, अग्नि, भास्कर, विश्रान आपिञ्जर, तेज, दिप्त, अग्निभ, दीप्तक, मङ्गल्य, सौमेरुक, भृङ्गार, जाम्बव, आग्नेय, निष्क, तपनीयक, अग्निशिख, चट, अप, पेश, कृशन, लोह, अमृत, मरुत्, दग्न, चारुरत्न, पीतक, श्रीनिकेत, भूषणार्ह, सूर्यनामक)

संस्कृतभाषामें	सुवर्ण, स्वर्ण।	तैलिङ्गीभाषामें	भङ्गार।
हिन्दीभाषामें	सोना।	इंग्रेजीभाषामें	गोल्ड्। Gold
बंगभाषामें	सोना।	लैटि०	ओर। Aurum
मराठीभाषामें	सोनें।	फारसीभाषामें	तिला।
गुजरातीभाषामें	सोनु।	अरबीभाषामें	जहब।
कर्णाटकीभाषामें	चिन्ना, स्वर्ण।		

स्वर्णगुणाः।

स्वर्णंस्निग्धकषायंचतिक्तंमधुरमेवच।
स्वादुशीतंत्रिदोषघ्नंरसायनसुरोचकम्॥
चक्षुष्यमायुष्यप्रज्ञावीर्य्यवलस्मृतिप्रदम्॥

अर्थ-सोना-स्निग्ध, कषेला, कडवा, मधुर, स्वादु, शीतल, त्रिदोषनाशक, रसायन, रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, आयुवर्द्धक, प्रज्ञाजनक, वीर्यदायक, बलकारक और स्मरणशक्तिवर्द्धक है।

सुवर्णपरीक्षा।

दाहेरक्तंसितंछेदेनिकषेकुंकुमप्रभम्। तारशुल्वोज्झितं स्निग्धंकोमलंगुरुहेमतत्॥ तच्छ्वेतंकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम्॥ दाहेछेदेसितंश्वेतंकषेत्याज्यंलघुस्फुटम्।

अर्थ-तपानेमें लालहो, तोडनेमें सफेदहो, कसौटीके ऊपर रखनेसे केशरी रंगका होजाय, चांदी और तांबे करके रहितहो, स्निग्ध, नरम और भारी ऐसा सोना उत्तम होता है। सफेदरंगका कठोर, रूखा, बुरेरंगका, मैलयुक्त, परतयुक्त, तपाने और तोडनेमें सफेद हो, कसौटीके ऊपर रखनेसे सफेद होजाय, हलका और चोट मारनेसे टूट जावे ऐसा सोना त्याज्य है।

अन्येच गुणाः।

सुवर्णंशीतलंवृष्यंबल्यंगुरुरसायनम्। स्वादुतिक्तंचतुवरंपाकेचस्वादुपिच्छिलम्॥ पवित्रंबृंहणंनेत्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम्। हृद्यमायुष्करंकान्तिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत्॥ विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषहृत्।

अर्थ-सोना (सोनेकी, भस्म)-शीतल, वीर्यवर्द्धक, बलवर्द्धक, भारी

रसायन स्वादिष्ठ, कडवा, कषेला, पचनेमें स्वादु पिच्छिल, पवित्र, पुष्टिकारक, नेत्रोका हितकारी तथा मेधा, स्मरण शक्ति और बुद्धिजनक है, हृदयको हितकारी, आयुवर्द्धक, कान्तिजनक, वाणीको शुद्ध और स्थिरकरनेवाला, तथा स्थावरविष, जगमविष, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर और शोषको दूर करे है ।

असम्यङ्मारितस्वर्णगुणा ।

असम्यङ्मारितस्वर्णंबलवीर्य्यंचनाशयेत् ।
करोतिरोगान्मृत्युञ्चतद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥

अर्थ-अविधिसे मारा सुवर्ण-बल, और वीर्य्यनाशक है, रोगजनक और मृत्युकारक है । इसकारण उसको भले प्रकारसे मारे ।

अशुद्धस्वर्णस्यदोषा ।

बलंसवीर्य्यंहरतेनराणांरोगव्रजपोषयतीहकाये ।
असौख्यकार्य्यंवसदासुवर्णमशुद्धमेतन्मरणञ्चकुर्य्यात् ॥
(भा०प्र०)

अर्थ-अशोधित सुवर्ण-बल और वीर्य्यनाशक, शरीरमें अनेकप्रकारके रोगाको उत्पन्न करनेवाला, निरन्तर, असुखकारक और मरणको करनेवाला है ।

दह्यतेधातवोवह्नौमणिरत्नाभ्रकादयः । नक्षीयतेनम्रियतेसुवर्णमजरामरम् ॥ अपक्वहेमसघृष्टंशिलायांजलयोगतः । द्रवरूपंतुतत्पेयंमधुनागुणदायकम् ॥ मध्वामलकचूर्णंचवरकश्चेतितत्त्रयम् । प्राश्यारिष्टग्राहितोपिमुच्यतेप्राणसंकटात् ॥ तस्मान्मृतोत्थितंचापिभक्षयन्तद्विचारयेत् । मृतहाटकदिव्यकांतितनोतिक्षतश्वासकासौक्षयपित्तवातौ। प्रमेहग्रहण्यातिसारोचकुष्ठज्वरंहन्तिवापढकदर्पंदंच ॥

अर्थ-धातु, मणि, रत्न और अभ्रकादि सम्पूर्ण रस अग्निमें डालनेसे जलजातेहैं । किन्तु, सोना नतो मरताहै और न कम होवाहै, इसकारण यह अजर और अमरहै । कच्चे सोनेको लेकर जलके योगसे पत्थरपर घिसे, फिर उसमें सहत डालकर पिये तो अत्यन्त गुण होताहै ।

सहत-आमलेका चूर्ण और सोनेके वर्क इनको एकत्र मिलाकर चाटनेसे अरिष्टको प्राप्त हुवा और प्राणसकटहोने परभी आरोग्य होजाता है।

सोनेकी भस्म-दिव्य कांतिजनक तथा क्षत, श्वास, खाँसी, क्षय, पित्त, वात, प्रमेह, संग्रहणी, अतिसार, कुष्ठ और ज्वरको दूर करेहै तथा नपुंसकोंके कामदेवकी वृद्धि करे है।

स्वर्णस्योत्पत्तिः।

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम्।मरीचिरंगिरा अत्रिःपुलस्त्यःपुलहःक्रतुः॥वसिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिताःप-रमर्षयः। पत्नीर्विलोक्यलावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाः॥ कन्दर्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदसः।पतितयद्धरापृष्ठेरेतस्तु हेमतामगात्॥कृत्रिमचापिभवतितद्रसेन्द्रस्यवेधतः॥(भा प्र)

अर्थ-पूर्वकालमे मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ यह जितात्मा, सप्तऋषि अपने आश्रममें बैठे हुयेथे। इनकी पत्नीकी लावण्यता और यौवनावस्थारूप लक्ष्मीको देख कामके बाणोंसे पीडित अग्निका शुक्र जो पृथ्वीमें गिरा उससे सोनेकी उत्पत्ति हुई और एक कृत्रिमभी होताहै, जिसको पारेके वेधसे बनाते है।

विवरण-लंका, चीन, अमेरिका, आफ्रिका आदिदेशोंमें सोनेकी अनेक खानें हैं। सो उपर्युक्तस्थानोंकी भूमिको खोदनेसे जो सोनेकी धूलसा मिलाहुवा रेता निकलताहै उसको अनेकप्रकारसे साफ करके सोना बनाया जाता है।

रूप्यस्यनामानि।

रूप्यंदुर्वर्णकंश्वेतंखर्जूरलोहराजकम्।
अकुप्यंरजतंसौंघंविमलंचन्द्रलोहकम्॥

अर्थ-रूप्य, दुर्वर्णक, श्वेत, खर्जूर लोहराजक, अकुप्य, रजत, सौंध, विमल, चन्द्रलोहक, (शुभ्र, वसुश्रेष्ठ, रुधिर, श्वेतक, महाशुभ्र, तारम्पर, चन्द्रभूति, सित, तार, कल्धौत, इन्द्रलोहक, रौप्य, धौत, चन्द्रहास, राजरंग, दुर्वर्ण, अग्रबीज, कलधौत, कुप्य, रुचिर, चन्द्रवपु, महावसु, मार्जन, महा-धन, चन्द्रकान्ति, शुभ)

स०	रूप्यक, रौप्य, रजत।	तै०	ऐंडी।
हिं०	चादी, रूपा।	इं०	सिल्वर। Silver
बं०	रूप।	लै०	आर्गेन्टम्। Argentum
म०	रुपें, चादी।	फा०	नुकरा।
गु०	रूपु।	अ०	फिद्दा।
क०	बेळि।		

रौप्यपरीक्षा।

गुरुस्निग्धमृदुश्वेतदाहेच्छेदेघनक्षमम् । वर्णाढ्यचन्द्रवत्स्वच्छरूप्यनवगुणशुभम् ॥ कठिनकृत्रिमरूक्षरक्तपीतदललघु । दाहेछेदेघनेनष्टरूप्यदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥

अर्थ–तोलमें भारी, स्निग्ध, नरम, तपाने और तोडनेमें सफेद, घनकी चोटको सहलेवे, सुदरवर्ण और चन्द्रमाके समान निर्मल यह नवगुणयुक्त रूपा उत्तम होताहै । कठोर बनावटी, रूखा, लाल, पीलेपत्तरवाला, हल्का, तपाने तोडने और घनकी चोटसे टूटजाय ऐसा रूपा दुष्ट होताहै ।

रौप्यगुणा ।

रौप्यस्निग्धकषायाम्लविपाकेमधुरसरम् ।
वयस्स्थापनशीतलेखनवातपित्तजित् ॥

अर्थ–रूपा–स्निग्ध कषेला, अम्ल, पचनेमें मधुर, सारक, आयुवर्द्धक, शीतल लेखन और वातपित्तको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

तारंचतारयतिरोगसमुद्रपारंदेहस्यपौष्टिककरंहरतेमलंच ।
वर्णंविपघ्नममलंहरतिप्रमेहंवृष्यंपुनर्नवकरंकुरुतेचिरायुः ॥

अर्थ–तार (रूपा)–प्राणियोंको रोगरूपी समुद्रसे तारनेवाला है, शरीरको पुष्ट करनेवाला, देहके मलको हरनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, विषनाशक, प्रमेहनाशक, वीर्यवर्द्धक, वृद्धमनुष्यको यौवनवान करनेवाला और आयुको बढानेवाला है ।

अपिच ।

सितयाहन्तिदाहान्नवातपित्तफलत्रिकात् ।
त्रिसुगन्ध्याप्रमेहादीन्रजतंहत्यसंशयम् ॥

सहत-आमलेका चूर्ण और सोनेके वर्क इनको एकत्र मिलाकर चाटनेसे अरिष्टको प्राप्त हुवा और प्राणसकटहोने परभी आरोग्य होजाता है।

सोनेकी भस्म-दिव्य कांतिजनक तथा क्षत, श्वास, खाँसी, क्षय, पित्त, वात, प्रमेह, सग्रहणी, अतिसार, कुष्ठ और ज्वरको दूर करेहै तथा नपुसकोंके कामदेवकी वृद्धि करे है।

स्वर्णस्योत्पत्ति।

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम्।मरीचिरगिरा अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु ॥ वसिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिता प-रमर्षय । पत्नीविलोक्यलावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाम ॥ कदर्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदस ।पतितयद्धरापृष्ठेरेतस्तु हेमतामगात्॥कृत्रिमचापिभवतितद्रसेन्द्रस्यवेधत.॥(भा प्र)

अर्थ-पूर्वकालमे मरीचि, अगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ यह जितात्मा, सप्तऋषि अपने आश्रममें बैठे हुयेथे। इनकी पत्नीकी लावण्यता और यौवनावस्थारूप लक्ष्मीको देख कामके बाणासे पीडित अग्निका शुक्र जो पृथ्वीमे गिरा उससे सोनेकी उत्पत्ति हुई और यह कृत्रिमभी होताहै, जिसको पारेके वेधसे बनाते है।

विवरण-लका, चीन, अमेरिका, आफ्रिका आदिदेशोंमे सोनेकी अनेक खानें है। प्राय. उपर्युक्तस्थानोंकी भूमिको खोदनेसे जो सोनेकी भस्मा मिलाहुवा रेता निकलताहै उसको अनेकप्रकारसे साफ करके सोना बनाया जाता है।

रूप्यस्यनामानि।

रूप्यदुर्वर्णकंश्वेतखर्जूरलोहराजकम ।
अकुप्यरजतसौधनिमलचन्द्रलोहकम ॥

अर्थ-रूप्य, दुर्वर्णक, श्वेत, खर्जूर लोहराजक, अकुप्य, रजत, सौध, विमल, चन्द्रलोहक, (शुभ्र, वसुश्रेष्ठ, रुधिर, श्वेतक, महाशुभ्र, तारूप्य, चन्द्रभूति, सित, तार, कलधूत, इन्दुलोहक, रौप्य, धौत, चन्द्रहास, रागांग, दुर्वर्ण, रंगबीज, कलधौत, कुप्य, रुचिर, चन्द्रप्रभु, महावसु, खर्जूर, महा-धन, चन्द्रकान्ति, शुभ)

स०	रूप्यक, रौप्य, रजत।	तै०	ऐंडी।
हिं०	चादी, रूपा।	इं०	सिल्वर। Silver
बं०	रूप।	लै०	आर्गेन्टम्। Argentum
म०	रुपें, चादी।	फा०	नुकरा।
गु०	रूपु।	अ०	फिद्दा।
क०	बेळि।		

रौप्यपरीक्षा।

गुरुस्निग्धमृदुश्वेतदाहेच्छेदेघनक्षमम् । वर्णाढ्यचन्द्रवत्स्वच्छरूप्यनवगुणशुभम् ॥ कठिनकृत्रिमरूक्षरक्तपीतदलंलघु । दाहेछेदेघनैर्नष्टरूप्यदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥

अर्थ–तोलमें भारी, स्निग्ध, नरम, तपाने और तोडनेमें सफेद, घनकी चोटको सहलेवे, सुंदरवर्ण और चन्द्रमाके समान निर्मल यह नवगुणयुक्त रूपा उत्तम होताहै । कठोर बनावटी, रूखा, लाल, पीलेपत्तरवाला, हलका, तपाने तोडने और घनकी चोटसे टूटजाय ऐसा रूपा दुष्ट होताहै ।

रौप्यगुणा।

रौप्यंस्निग्धकषायाम्लविपाकेमधुरंसरम् ।
वयसःस्थापनंशीतलेखनंवातपित्तजित् ॥

अर्थ–रूपा–स्निग्ध कषैला, अम्ल, पचनेमें मधुर, सारक, आयुवर्द्धक शीतल लेखन और वातपित्तको हरनेवाला है ।

अन्यच्च।

तारंचतारयतिरोगसमुद्रपारंदेहस्यपौष्टिककरंहरतेमलंच ।
वर्ण्यंविषघ्नममलंहरतिप्रमेहंवृष्यंपुनर्नवकरंकुरुतेचिरायुः ॥

अर्थ–तार (रूपा)–माणियोंको रोगरूपी समुद्रसे तारनेवाला है, शरीरको पुष्ट करनेवाला, देहके मलको हरनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, विषनाशक, प्रमेहनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, वृद्धमनुष्यको यौवनवान करनेवाला और आयुको बढानेवाला है ।

अपिच।

सितयाहन्तिदाहाद्यंवातपित्तंफलत्रिकात् ।
त्रिसुगन्ध्याप्रमेहादीनजतंहत्यसंशयम् ॥

अर्थ-रूपा-चीनीके साथ-दाहादिरोगोंको, त्रिफलेके साथ-वातपित्तादिकोंको और त्रिसुगन्धि (इलायची, दालचीनी और तेजपात) के साथ-प्रमेहादिक रोगोंको हरनेवाला है।

अशोधितरौप्यगुणा।

तारशरीरस्यकरोतितापविध्वसनयच्छतिशुक्रनाशम्। वीर्य्यंबलहन्तितनोश्वपुष्टिंमहागदान्पोशयतिह्यशुद्धम्।

अर्थ-अशोधित रूपा-शरीरमें तापको करनेवाला, शरीरको शिथिल करनेवाला, शुक्रनाशक, वीर्य्यविनाशक, पुष्टिनाशक, बलहारक और महारोगोंको उत्पन्न करनेवाला है।

रौप्यस्योत्पत्तिः।

त्रिपुरस्यवधार्थायनिर्निमेषैर्विलोचनैः। निरीक्षयामासशिवःक्रोधेनपरिपूरितः॥ अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात्। ततोरुद्रःसमभवद्वैश्वानरइवज्वलन्॥ द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिन्दुस्तुवामकात्। तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्म्मसुयोजयेत्॥ कृत्रिमञ्चभवेत्तद्धिवङ्गादिरसयोगतः।

(भा० प्र०)

अर्थ-त्रिपुरासुरके वध करनेके लिये श्रीमहादेवजी अत्यत क्रोधित हुये तब उस त्रिपुरासुरको पलकरहित देखते हुये उसीसमय महादेवके एकनेत्रसे अग्नि निकली, जिससे महादेव अग्निके समान प्रज्वलित होते हुये और बांये नेत्रसे जो आसूकी बूंद गिरी उससे चांदीकी उत्पत्ति हुई। एक कृत्रिम चांदी वंग और पारेके योगसे बनती है।

विवरण। चांदीकी खानें अमेरिका, सिलोन आदि देशोंमें अधिकहैं।

ताम्रनामानि।

ताम्रम्लेच्छमुखद्विष्टंवरिष्ठञ्चकनीयसम।

अर्थ-ताम्र, म्लेच्छमुख, द्विष्ट, वरिष्ठ, कनीयस (ताम्रक, शुल्व, म्लिष्ट, उदुम्बर, शुल्ब, उदम्बर, औदुम्बर, औडुम्बर, उदुम्बर, रविलोहक, मुनिपित्तल, अर्क, सूर्य्याङ्ग, म्लेच्छितायस, लोहिताय, तपनेष्ट, अम्बक, अरविन्द, रविलोह, रविप्रिय, रक्त, नैपालिक, रक्तधातु, सर्वलोह, पवित्र, म्लेच्छांश, भास्वर)

ग०	ताम्र ।	तै०	गगी ।
हिं०	ताँबा ।	ता०	ताव्रम, शेम्बु ।
बं०	तामा ।	इं०	कापर । Copper
म०	ताँबें ।	लै०	क्युमम । Cuprum
गु०	त्रांबो ।	फा०	मिस ।
क०	ताम्र ।	अ०	नुहास ।

उत्कृष्टताम्रस्य लक्षणम् ।

जपाकुसुमसङ्काशस्निग्धमृदुघनक्षमम् ।
लोहनागोज्झितताम्रमारणायप्रशस्यते ॥

अर्थ-जो जपाके फूलकी समान रंगवाला, स्निग्ध, नरम, घनकी चोटको सहलेवे और जिसमें लोहे तथा शीशेका मेल न हो ऐसा ताबा मारणकर्म्मम उत्तम होता है ।

दूषितताम्रस्य लक्षणम् ।

कृष्णरूक्षमतिस्तब्धश्वेतचापिघनासहम् ।
लोहनागयुतंचेतिशुल्वदुष्टंप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-जो काला, रूखा,अत्यन्त कठोर,सफेद,घनकी चोट न सहसके और लोहे तथा शीशेयुक्त हो ऐसा ताबा दुष्ट होता है । यह मारणकर्म्ममत्याज्य है ।

ताम्रगुणा ।

ताम्रसुपक्कमधुरकपायतिक्तविपाकेकटुशीतलच ।
कफापहपित्तहरविबन्धशूलघ्नपाण्डूदरगुलमनाशि॥ (रा नि)

अर्थ-ताबा-मधुर, कपेला, कडवा, पाकमें कटु, शीतल, कफनाशक, पित्तनिवारक तथा विबंध, शूल, पाण्डुरोग, उदररोग और गुलमरोग-नाशक है ।

अन्यच्च ।

गुल्मश्चकुष्ठचगुदामयचशूलानिशोफोदरपाण्डुरोगम् ।
उत्क्लेशभेदभ्रमदाहहीननिहन्तिसम्यङ्मृतमेवशुल्वम् ॥

अर्थ-औरभी ताँबा-गुल्म, कोढ, गुदारोग, शूल, सूजन, उदररोग, पाडुरोग उत्क्लेश, भेद, भ्रम और दाहको हरनेवाला है ।

अपिच ।

ताम्रकपायंमधुरसतिक्तमम्लचपाकेकटुसारकच ।

पित्तापहंश्लेष्महरंचशीतंतद्रोपणस्याल्लघुलेखनंच ॥
पाण्डूदराशोंज्वरकुष्टकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् ।
शोफक्रमीञ्छूलमपाकरोतिप्राहुर्बुधावृंहणमल्पमेतत् ॥

अर्थ-तांबा-कसेला मधुर, कडवा, अम्ल, पाकमें कटु, सारक, पित्तनाशक, कफनाशक, शीतल, रोपण, हलका, लेखन तथा पाण्डुरोग, उदररोग, बवासीर, ज्वर, कोढ खाँसी, श्वास, क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि और शूलको दूर करे है और अल्पबृंहण है ।

असम्यङ्मारितताम्रस्य दोषाः ।

एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यङ्मारितेष्टते ।
दाहःस्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छाक्लेदोरेकोवमिर्भ्रमः ॥

अर्थ-विषमें तो केवल एकही दोष है, परन्तु कुविधिसे मारे हुए तांबेमें दाह, पसीना, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद रेच (दस्तोंका होना) वमन और भ्रम यह आठ दोष रहते हैं ।

ताम्रोत्पत्तिः ।

शुक्रंयत्कार्त्तिकेयस्यपतितंधरणीतले ।
तस्मात्ताम्रंसमुत्पन्नमिदमाहुः पुराविदः ॥

अर्थ-कार्त्तिकेयका वीर्य पृथ्वीमें पतित हुआ उससे तांबेकी उत्पत्ति हुई ऐसा प्राचीन विद्वान् कहते हैं ।

विवरण । बङ्गदेशमें तांबेकी अनेक खान हैं ।

रङ्गनामानि ।

रङ्गंवङ्गंचक्रसंज्ञंस्वर्णजंनागजीवनम् ।

अर्थ-रंग, वंग, चक्रसंज्ञ, स्वर्णज, नागजीवन, (मृदङ्ग, गुरुपत्र, तमर, नागज, कस्तीर, आलीनक, सिंहल, स्वेत, नाग, त्रपु, त्रपुस, आप, मधुर, हिम, कुरूप्य, पिच्चट, पूतिगन्ध, पिच्चट)

सं०	रंग, वंग ।	ते०	तगरमु ।
हि०	रांग, रांगा, कलई, वंग ।	इं०	टिन् । Tin
बं०	रांग, वंग ।	ले०	स्टेनम् । Stannum
म०	कथील ।	फा०	अर्ज़ीज ।
गु०	कलई, कथीर, सीसपारी ।	अ०	रसास ।
क०	तगर ।		

रंगगुणा ।

त्रपुसकटुतिक्तहिमकषायलवणंसरंचमेहघ्नम् ।
कृमिदाहपाण्डुशमनकान्तिकरंतद्रसायनंच ॥(रा नि)

अर्थ-रांग (वंग)-कटु, तिक्त, शीतल, कषायरसान्वित, लवणरसयुक्त, सारक, प्रमेहनाशक, कृमिनाशक, दाहनिवारक, पाण्डुरोगहारक, कान्तिकारक और रसायन है।

अन्यच्च ।

रंगलघुसररूक्षमुष्णमेहकफकृमीन् । निहन्तिपाण्डुसश्वास चक्षुष्यपित्तलमनाक् ॥ सिंहोयथाहस्तिगणंनिहन्ति तथैवरंगखिलमेहवर्गम् ॥ देहस्यसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वं नरस्यपुष्टिंविदधातिनूनम् ॥

अर्थ-रांग (वंग)-हलका, सारक, रूखा, गरम तथा प्रमेह, कफ, कृमि, पाण्डु और श्वासरोगको दूर करैहै, नेत्रोंको हितकारी और किंचित् पित्तकारी है। जैसे सिंह हाथियोंके समूहोंका नाश करता है, उसीप्रकार वंग सर्वप्रकारके प्रमेहादिकोंका नाश करती है। देहको सुख देनेवाली, इन्द्रियाको प्रबल करनेवाली और देहको पुष्टि करनेवाली है।

अपिच ।

कासेश्वासेचमन्दाग्नौपीनसेविषमज्वरे ।
प्रमेहेपाण्डुरोगेचमृतवंगप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-खाँसी, श्वास, मन्दाग्नि, पीनस, विषमज्वर, प्रमेह और पाण्डुरोगमे वंग देनी हितकारी है।

अशोधितवङ्गदोष ।

वंगविधत्तेखलुशुद्धिहीनंतथाह्यपक्वश्चकिलासगुल्मौ ।
कुष्ठानिशूलंकिलवातशोथपाण्डुंप्रमेहञ्चभगंदरंच ॥
विषोपमरक्तविकारवृन्दंक्षयञ्चकृच्छ्राणिकफज्वरंच। महाश्मरीविद्रधिमुख्यरोगान्नागोऽपिकुर्य्यात्कथितान्विकारान्॥

अर्थ-अशोधित और अपक्व वंग-किलासकुष्ठ, गुल्म, कुष्ठ, शूल, वातव्याधि, सूजन, पाण्डु, प्रमेह, भगन्दर, रक्तविकार, क्षय, मूत्रकृच्छ्र, कफ,

पित्तापहं श्लेष्महरं च शीतं तद्रोपणं स्याल्लघु लेखनं च ॥
पाण्डूदराशोंज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् ।
शोफकृमीन्शूलमपाकरोति प्राहुर्बुधा बृंहणमल्पमेतत् ॥

अर्थ-तांबा-कसेला मधुर, कडवा, अम्ल, पाकमें कटु सारक, पित्त-नाशक, कफनाशक, शीतल, रोपण, हलका, लेखन तथा पाण्डुरोग, उदर-रोग, बवासीर, ज्वर, कोढ, खाँसी, श्वास, क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि और शूलको दूर करे है और अल्पबृंहण है ।

असम्यङ्मारितताम्रस्य दोषाः ।

एकोदोषो विषे ताम्रे त्वसम्यङ्मारिते ऽष्टते ।
दाहः स्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छा क्लेदो रेको वमिर्भ्रमः ॥

अर्थ-विषमें तो केवल एकही दोष है, परन्तु कुविधिसे मारे हुए तांबेमें दाह, पसीना, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद भेद (दस्तोंका होना) वमन और भ्रम यह आठ दोष रहते हैं ।

ताम्रोत्पत्तिः ।

शुक्रं यत्कार्त्तिकेयस्य पतितं धरणीतले ।
तस्मात्ताम्रं समुत्पन्नमिदमाहुः पुराविदः ॥

अर्थ-कार्तिकस्वामीका वीर्य पृथ्वीमें पतित हुआ उससे तांबेकी उत्पत्ति हुई ऐसा प्राचीन विद्वान् कहते हैं ।

विवरण । बङ्गदेशमें तांबेकी अनेक खानें हैं ।

रङ्गनामानि ।

रङ्गवङ्गचक्रसञ्ज्ञस्वर्णजनागजीवनम् ।

अर्थ-रङ्ग, वङ्ग, चक्रसंज्ञ, स्वर्णज, नागजीवन, (मृदङ्ग गुरुपत्र, तमर, नागज, कस्तीर, आलीनक, पिच्चट, स्वेत, राग, त्रपु, त्रपुष, आप, मधुर, हिम, कुरूप्य पिच्चट, पूतिगन्ध, पिच्चट)

सं०	रङ्ग, वङ्ग ।	तै०	तगरमु ।
हि०	रांग, रांगा, कलई, वंग ।	इं०	टिन । Tin
बं०	रांङ्, रंग ।	ले०	स्टेनम । Stannum
म०	कथील ।	फा०	अर्जीज ।
गु०	कलई, कथीर, सीसपारो ।	अ०	रसास ।
क०	तगर ।		

सं०	नाग, सीसक ।	ते०	शीश, शिषमु ।
हिं०	सीसा ।	द्रा०	शिशू ।
व०	सीसे, सीसा ।	इं०	लेड । Lead
म०	शिसें ।	लै०	प्लुनम । Plumbum
गु०	शीसु ।	फा०	सुर्ब ।
क०	सीसा ।	अ०	रुसासुल, अस्वद ।

सीसक गुणा ।

सीसरगगुणज्ञेयविशेषान्मेहनाशनम् । नागस्तुनागशततुल्यबलंददाति व्याधिविनाशयतिजीवनमातनोति॥वह्निप्रदीपयतिकामबलंकरोति मृत्युञ्चनाशयतिसततसेवितोऽसौ ॥

अर्थ-शीशेमें राँगके तुल्य गुण हैं, विशेषकर के प्रमेहको दूर करैहै । सीसा-सौ हाथियोंकी समान बलको देवैहै । व्याधिविनाशक, जीवनवर्द्धक, जठराग्निको दीपन करै, कामजनक, बलवर्द्धक, और निरतर सेवन करनेसे मृत्युकाभी नाश करैहै ।

अन्यच्च ।

क्षयपवनविकारेगुल्मपाण्ड्वामयेषु भ्रमकृमिकफशूलेमेहकासामयेषु । ग्रहणिगुदगदेवैनप्रवह्नौप्रशस्त शुभविधिकृतनाग कामपुष्टिंददाति ॥

अर्थ-सीसा-क्षयरोग, वातविकार, गुल्म, पाण्डुरोग, भ्रम, कृमि, कफ, शूल, प्रमेह, खाँसी, संग्रहणी और गुदाके रोगोंमें देना चाहियें ।

नागस्य प्रकारभेदा ।

नागन्तुद्विविधप्रोक्तकुमारसमलतथा । कुमारसर्वकार्य्येषु योजनीयगुणाधिकम् ॥द्रुतद्रावंमहाभारछेदेकृष्णसमुज्ज्वलम् । पूतिगंधवहि कृष्णशुद्धसीसमतोन्यथा ॥

अर्थ-कुमार और समल इन भेदोंसे नाग दो प्रकारका है । वहा अधिक गुणवाला होनेके कारण कुमार जातिके सीसेको सर्व कार्य्योंमें प्रयोग करना चाहिये । जो अग्निमें डालनेसे शीघ्र गलजाय, तोलमें भारी हो, तोडनेमें काला और भीतर उज्ज्वल हो, जिसमे दुर्गंध आवे और बाहरसे काला हो ऐसा सीसा उत्तम होता है ।

ज्वर, मेह, पथरी और विद्रधि आदि मुख्यरोगोंको उत्पन्न करै है तथा विषकी समान है। और अशोधित शीसाभी उपरोक्त रोगोंको उत्पन्न करता है।

वंगस्य प्रकारभेदाः।

क्षुरकमिश्रकश्चापिद्विविधवङ्गमुच्यते।
उत्तमक्षुरकतत्रमिश्रकत्वहितमतम्॥

अर्थ-क्षुरक और मिश्रक इन भेदोंसे वंग दो प्रकारको है, तहां क्षुरक वंग अत्यन्त उत्तम और मिश्रक वंग अहितकारी है।

धवल मृदुल स्निग्ध द्रुतद्रावंसगौरवम्।
निःशब्दखुरवगस्यात मिश्रकंश्यामशुभ्रकम्॥

अर्थ-जो श्वेत, नरम, चिकनी शीघ्रगलजाय, तोलमें भारी, और अग्निमें डालनेसे शब्द न करै उसको खुरक कहते है और मिश्रक शुभ्र और श्याम मिलेहुये रंगकी होती है।

अथवंगस्य लक्षणम्।

श्वेतंमृदुलघुस्वच्छस्निग्धमुष्णसहंहिमम्।
सूत्रपत्रकरकान्तंत्रपुश्रेष्ठमुदाहृतम्॥

अर्थ-सफेद, नरम, तोलमें हलका, स्वच्छ, स्निग्ध, उष्णगरम, शीतल, जिसके सूत और पत्तर होजाय और चमकदार ऐसा रांग उत्तम होताहै।

विवरण। रांग अन्यदेशोंसे आताहै, बर्तनोंकी कलई और रंग प्रभृतिके काममें आताहै। तांबेके योगसे इसका कांसा बनताहै। रांगकी भस्मको वंग कहतेहैं।

सीसकनामानि।

सीसमुवर्णकचीनपिष्टसिन्दूरकारणम्।

अर्थ-सीस, सुवर्णक, चीन, पिष्ट, सिन्दूरकारण (रांगक, सीसपत्रक, नाग, वप्र, योगेष्ट, गण्डूपदभव, वर्द्ध, स्वर्णारि, यवनेष्ट, नीर, वध्र, विसद, सुवर्णारि, त्रपु [ ], परक, महाबल, यामुनेष्टक, पद्मल, भेदांजन, मद, भुजङ्गम, उरग, कुरग, परिपिष्टक, मृदुकृष्णायस, पद्म, ताराशुद्धिकर, शिराभूत, वपोंग, चीनपिष्ट, चीनरंग, हेल्य, धातुमल, पार्वत)।

स०	नाग, सीसक ।	ते०	शीश, शिषमु ।
हिं०	सीसा ।	द्रा०	शिशू ।
व०	सीसे, सीसा ।	इ०	लेड । Lead
म०	शिसे ।	लै०	प्लुवम् । Plumbum
गु०	शीसु ।	फा०	सुर्ब ।
क०	सीसा ।	अ०	रुसासुल, अस्वद ।

सीसक गुणाः ।

सीसरंगगुणज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम् । नागस्तुनागशततुल्यबलंददाति व्याधिविनाशयतिजीवनमातनोति॥वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोति मृत्युञ्चनाशयतिसंततसेवितोऽसौ ॥

अर्थ–शीशेमें राँगके तुल्य गुण है, विशेषकरके प्रमेहको दूर करेहै । सीसा–सौ हाथियोंकी समान बलको देवेहै । व्याधिविनाशक, जीवनवर्द्धक, जठराग्निको दीपन करे, कामजनक, बलवर्द्धक, और निरंतर सेवन करनेसे मृत्युकाभी नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

क्षयपवनविकारेगुल्मपाण्ड्वामयेषु भ्रमकृमिकफशूलेमेहकासामयेषु । ग्रहणिगुदगदेवैनप्टवह्नौप्रशस्तं शुभविधिकृतनागःकामपुष्टिंददाति ॥

अर्थ–सीसा–क्षयरोग, वातविकार, गुल्म, पाण्डुरोग, भ्रम, कृमि, कफ, शूल, प्रमेह, खाँसी, संग्रहणी और गुदाके रोगोंमें देना चाहिये ।

नागस्य प्रकारभेदाः ।

नागन्तुद्विविधंप्रोक्तंकुमारंसमलंतथा । कुमारंसर्वकार्य्येषु योजनीयंगुणाधिकम् ॥द्रुतद्रावंमहाभारंछेदेकृष्णंसमुज्ज्वलम् । पूतिगंधंबहिः कृष्णंशुद्धंसीसमतोन्यथा ॥

अर्थ–कुमार और समल इन भेदोंसे नाग दो प्रकारका है । तहां अधिक गुणवाला होनेके कारण कुमार जातिके सीसेको सर्व कार्य्योंमें प्रयोग करना चाहिये । जो अग्निमें डालनेसे शीघ्र गलजाय, तोलमें भारी हो, तोडनेमें काला और भीतर उज्ज्वल हो, जिसमें दुर्गंध आवे और बाहरसे काला हो ऐसा सीसा उत्तम होता है ।

अथोपधिवर्यंगनागदोषा ।

पाकेनहीनौकिलवंगनागौकुष्ठानिगुल्मांश्वतथाविकारान् ।
कण्डूप्रमेहानिलसादशोथभगन्दरादीन्कुरुत प्रभक्तौ ॥

अर्थ-पाकहीन वंग और शीशेके खानेसे-कुष्ठ, गुल्म कण्डू, प्रमेह, मंदाग्नि सूजन और भगंदरादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

नागोत्पत्ति ।

दृष्ट्वाभोगिसुतारम्यावासुकिस्तुमुमोचह ।
वीर्य्यंजातस्ततोनाग सर्वरोगापहंनृणाम् ॥

अर्थ-भोगिसर्पकी सुंदर पुत्रीको देख वासुकी सांपने वीर्य छोडा उस वीर्यमें मनुष्योंके सर्वरोग हरनेवाला सीसा उत्पन्न हुवा ।

जसदनामानि ।

जसदवंगसदृशरीतिहेतुश्चतन्मतम् ।

अर्थ-जसद, वंगसदृश, रीतिहेतु (श्वेतपदार्थ, कर्पास्थि)

संस्कृतभाषामें	जसद ।	तलिंगीभाषामें	तुत्तं ।
हिन्दीभाषामें	जस्त, जस्ता ।	इंग्रेजीभाषामें	झिंक । Zinc
बंगभाषामें	दस्ता ।	लैटिन्भाषामें	झिंक । Zincum
मराठीभाषामें	जस्त ।	फारसीभाषामें	रूपतुतिया ।
गुजरातीभाषामें	जसत ।	अर्बीभाषामें	शबहा ।

जसदगुणा ।

जसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत ।
चक्षुष्यंपरमंमेहान्पाण्डुश्वासंचनाशयेत ॥

अर्थ-जस्त कसेला कडवा, शीतल, कफपित्तनाशक नेत्रोंको हितकारी तथा प्रमेह, पाण्डु और श्वासको दूर करे है ।

कान्तलोहनामानि ।

तीव्रलोहमयस्कान्तंकृष्णायोलोहकान्तकम् ॥

अर्थ-तीव्र लोह, अयस्कान्त, कृष्णायस, लोहकान्तक (कान्तलोह, तीक्ष्ण, नागराज, शस्त्र, शस्त्रक, आयस, पिण्ड, पिण्डायस, आयस, शठ मुण्डज, निशित, खड्ग, अय, कान्त, चित्रायस, और चालम)

कृष्णलोहनामानि ।

वर्त्तलोहंतीक्ष्णलोहनीलिकापुटलोहकम् ।

अर्थ-वर्त्तलोह, तीक्ष्णलोह, नीलिका, पुटलोहक (रुक्मलोह, मृत्तकाल, कृष्णायस, मुण्डलोह, मुण्डायस, दृषत्सार, शिलात्मज, अश्मज, कृषि-लोह और आर)

संस्कृतभाषामें	लोह ।
हिन्दीभाषामें	लोहा, इसपात, फौलाद ।
बंगभाषामें	लौह, तिखा, इष्पात्, काललौह ।
मराठीभाषामें	लोखंड, पोलाद, विखें ।
गुजरातीभाषामें	लोढु, मोडु, गजवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	अयस्कान्त, कब्बिण ।
तैलङ्गीभाषामें	इनुमु ।
इंग्रेजीभाषामें	आयर्न । Iron स्टील । Steel
लैटिन्भाषामें	फेर्रम । Ferrum
फारसीभाषामें	आहन्, फौलाद, संगेआहन ।
अरबीभाषामें	हदीद, हजरुल ।

कान्तलोहगुणा ।

गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातभगन्दरम् । कामलाशोथकुष्ठानिक्षयकान्तमयोहरेत् ॥ प्लीहानमम्लपित्तञ्चयकृच्चापिशिरोरुजम् । सर्व्वान्रोगान्विजयतेकान्तलोहनसंशयः ॥ बलवीर्य्यवपुःपुष्टिंकुरुतेऽग्निंविवर्द्धयेत् ।

अर्थ-कान्तलोह,-गुल्म, उदर, अर्श, शूल, आम, आमवात, भगन्दर, कामला, शोष, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, अम्लपित्त, यकृत् और मस्तकादि अनेक रोगोंको दूर करै है, बलकारक, वीर्य्यजनक, शरीरको पुष्टि देनेवाला और अग्निवर्द्धक है ।

कान्तलोहस्य लक्षणम् ।

यत्पात्रेनप्रसरतिजलेतैलबिन्दु प्रतप्ते हिंगुर्गंधत्यजतिच-निजतिक्तर्तानिम्बकल्क । तप्तदुग्धभवतिशिखराकारक नैतिभूमिं कृष्णांगःस्यात्सजलचणकःकान्तलोहंतदुक्तम् ॥

अर्थ-जिसके पर्वनद्वारा जलमें तेलकी बूँद डालनेसे नहीं फैले, जिसमें तपानेसे हींग अपनी गन्धको छोडदेवे और नीमका कल्क रखनेसे मीठा होजाय तथा जिसमें दूध औटानसे दूध शिखाके आकार ऊपरको खडा होजावे, परन्तु फले नहीं और जिसमें जलसहित चने भिगोनेसे काले होजावें उसको कान्तलोह कहते हैं।

सर्वविधशुद्धलोहस्य गुणाः।

लोहतिक्तसरशीतमधुरतुवरंगुरु । रूक्षवयस्यचक्षुष्यंलेख-नंवातलजयेत् ॥ कफपित्तगरशूलशोथार्शःप्लीहपाण्डुताः । मेदोमेहक्रुमीन्कुष्ठतत्किट्टतद्वदेवहि ॥

अर्थ-शुद्धलोहा-कडवा, सारक, शीतल, मधुर, कषेला, भारी, रूखा, अवस्थास्थापक, नेत्रोंको हितकारी, वादी तथा कफ, पित्त, विष, शूल, सूजन, बवासीर, प्लीहा, पाण्डुरोग, मेद, प्रमेह, कृमि और कुष्ठका नाश करे है। लोहेके समान लोहेके कीटके गुण जानने।

अशुद्धलोहस्य दोषाः।

क्लीवत्वकुष्ठामयमृत्युदंभवेद्धृद्रोगशूलौकुरुतेऽश्मरीञ्च । नानारुजाञ्चापितथाप्रकोपकरोतिहृल्लासमशुद्धलोहम् ॥ जीवहारिमदकारिचायसश्चेदशुद्धिमदसंस्कृतध्रुवम् । पाटवंनतनुतेशरीरकेदारुणांहृदिरुजाञ्चयच्छति ॥

अर्थ-अशुद्धलोहा-नपुंसकता, कुष्ठ, मृत्यु, हृद्रोग, शूल, पथरी, नानाप्रकारके रोगोंका कोप और हृल्लासको करनेवाला है। प्राणनाशक, मदकारक, शरीरकी चातुर्य्यता नाशक और दारुण हृदयव्यथाको उत्पन्न करता है।

लोहस्य स्वाभाविकदोषाः।

गुरुताहृढताक्लेदोकफोऽहृत्यकारिता । अश्मदोषःसुदुर्गन्धोदोषाःसप्तायसस्यतु ॥

अर्थ-गुरुता, दृढता, क्लेद, कफ, देहकारिता पत्थरदोष और दुर्गंध यह सात दोष लोहेमें स्वाभाविक रहते हैं।

मुण्डलोहगुणाः।

मुण्डंरूक्षोष्णतिक्तंवातपित्तकफप्रणुत् ।

तीक्ष्णंपाण्डुहरंतच्चशूलमेहनिवारणम् ॥

अर्थ-मुण्डलोह-रूखा, गरम, कडवा, त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, शूल और प्रमेहको हरनेवाला है ।

लोहस्योत्पत्ति ।

पुरालोमिनदैत्यानांनिहतानांसुरैर्युधि ।
उत्पन्नानिशरीरेभ्योलोहानिविविधानिच ॥

अर्थ-पूर्वकालमें देवताओंके द्वारा युद्धमें विनाश किये हुए जो लोमिन दैत्य उनके शरीरसे अनेक प्रकारके लोहे उत्पन्न हुए, ऐसी लोहेकी उत्पत्ति हुई है ।

लोहसेविन कार्य्याणि ।

गुञ्जामेकांसमारभ्ययावत्स्युर्नवरक्तिकाः । तावल्लोहमम-श्रीयाद्यथादोपबलंनरः ॥ कूष्माण्डतिलतैलचमापान्नंरा-जिकान्तथा । मद्यमम्लरसं चैव वर्जयेल्लोहसेवकः ॥

अर्थ-एकगुंजासे लेकर नवरत्तीतक लोहेकी मात्रा है । लोहेको सेवन करनेवाले मनुष्य-पेठा, तिलका तेल, उडद, राई, मदिरा और अम्लरस खटाई आदि) वाले पदार्थोंको छोड देवे ।

मण्डूरनामानि ।

सिंहानकिट्टिमण्डूरलोहकिट्टमयोमलम् ॥

अर्थ-सिंहान, किट्टि, मण्डूर, लोहकिट्ट, अयोमल (लोहसिंहानिका, लोहज, लोहपुरीप, लोहमल, सितरन, सिंहास, सितवाण, शूलघातन, लोहमल, किट्ट, लोहचूर्ण, कृष्णचूर्ण, लोष्ट और सिहल)

मण्डूरलक्षणगुणा ।

ध्मातस्यलोहस्यमलंमण्डूरमितिचोच्यते ।
यल्लोहंयद्गुणंप्रोक्तंतत्किट्टमपितद्गुणम् ॥

अर्थ-दग्धलोहेके मलकोही मण्डूर कहते हैं । जिस २ लोहेके जैसे २ गुण हैं, वैसे २ ही उसकी कीटके जानने ।

सप्तविधामण्डूरप्रकारभेदा ।

शताब्दमुत्तमकिट्टमध्यंचाशीतिवार्पिकम् ।
अधमपष्टिवर्षीयततोहीनंविषोपमम् ॥ (मा०प्र०)

अर्थ-१०० सौवर्षसे अधिक कालका मण्डूर सर्वोत्कृष्ट है, ८० अस्सी वर्षका मण्डूर मध्यम है, ६० साठ वर्षका मण्डूर अधम और इससे अल्प-कालका मण्डूर विषके समान है।

विवरण। लोहेकी अनेक जाति है, उन सबको यहां ग्रन्थ बढनेके भयसे नहीं लिखा। लोहेके अलग २ भेद और गुणदोष विशेष देखनेकी इच्छा होय तो "रसराजशंकर" ग्रंथमें देखो।

कांस्यनामानि।

कांस्यविद्युत्प्रियकसंताम्रार्धंवगशुल्वजम् ॥

अर्थ-कांस्य-विद्युत्प्रिय, कंस, ताम्रार्द्ध, वंगशुल्वज, (कंसारिय, प्रकाश, घण्टाशब्द, असुराह्व, सौराष्ट्रक, घोष, कांसीय, घोषपुष्प, वह्निलोहक दीप्तलोहक, घोषपुष्प, दीप्तलोह, कांसक, कांस, ताम्रत्रपुज, दीप्ति)

संस्कृतभाषामें	कांस्य।
हिन्दीभाषामें	कांसा, कांसी।
बंगभाषामें	कांसा।
मराठीभाषामें	कासे।
गुजरातीभाषामें	कासु।
कर्णाटकीभाषामें	कंचु।
तैलङ्गीभाषामें	कंचु।
इंग्रेजीभाषामें	बेलमेटल। B II Metal ब्रॉन्ज। Bronze
फारसीभाषामें	रोइन।
अरबीभाषामें	सालिकुन।

कांस्यस्य गुणाः।

कांस्यस्यतुगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः।
संयोगजप्रभावेणतस्यान्येपिगुणाःस्मृताः॥
कांस्यंकषायतिक्तोष्णंलेखनंविशदंसरम्।
गुरुनेत्रहितंरूक्षंकफपित्तहरंपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कांसेके गुण तांबे और रांगके समान जानने। संयोगके कारण इसके अलगभी और गुण कहते हैं। कांसा-कषैला, कडवा, गरम, लेखन विशद, दस्तावर, भारी, नेत्रोंको हितकारी, रूखा और कफपित्तको दूर करै है।

अन्यच्च।

कांस्यन्तुतिक्तमुष्णचक्षुष्यवातकफविकारघ्नम्।
रूक्षंकषायरुच्यंलघुदीपनपाचनपथ्यम्॥(रा०नि०)

अर्थ-शुद्ध, कांसा-कडवा, गरम, नेत्रोंको हितकारी, वातकफदोषनाशक, रूखा, कषेला, रुचिकारक, दीपन और पाचक है।

घृतमेकंविनाचान्यत्सर्वंकांस्यगतंनृणाम्।
भुक्तमारोग्यसुखदंहितंसात्म्यकरंतथा॥

अर्थ-एक केवल घृतको छोडकर शेष सर्व प्रकारके पदार्थ कांसेके पात्रमे रक्खे हुए-आरोग्यता और सुखको देनेवाले तथा सात्म्य होजाते है।

विवरण। कांसा-आठभाग तांबा और दोभाग रांगके योगसे बनाया जाताहै। कांसेके पात्र आदि अनेक सामान बनते हैं। कांसा-उपधातु है।

पित्तलनामानि।

पित्तलश्चाऽऽरकूट·कपिलोहसुवर्णकम्।
रिरीरीरीचरीतिश्चपीतलोहसुलोहकम॥
ब्राह्मीतुराज्ञीकपिलाब्रह्मरीतिर्महेश्वरी।

अर्थ-पित्तल, आरकूट, कपिलोह, सुवर्णक, रिरी, रीरी, रीति, पीत लोह, सुलोहक, ब्राह्मी, राज्ञी, कपिला, ब्रह्मरीति, महेश्वरी (पतिकावेर, द्रव्यदारु, रीती, मिश्र, आर, राजरीति, क्षुद्रसुवर्ण, सिंहल, पिंगल, पीतनक, लोहितक, पिंगललोह, पीतक, पाकतुण्डी, राजपुत्री, ब्रह्माणी, हरिलोह, पिंग)

संस्कृतभाषामें पित्तल।	कर्णाटकीभाषामें पित्तालेपग्डु।
हिंदीभाषामें पीतल, काची पीतल।	तैलङ्गीभाषामें इत्तडी।
बंगभाषामें पितल, कांचापितल।	
मराठीभाषामें पितळ, सोनापितळ।	इग्रेजीभाषामें ब्रास। Brass
गुजरातीभाषामें पीतल।	फारसीभाषामें बिरंज।

पित्तलगुणाः।

पित्तलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजने।सयोगजप्रभावं-

णतस्यान्येपिगुणा स्मृता॥ रीतिकायुगलरूक्षतिक्तचलवणरसे। शोधनं पाण्डुरोगघ्नं कृमिघ्ननातिलेखनम् ॥

अर्थ-पीतलके गुण तांबे और जस्तके समान हैं, संयोगजनकप्रभावसे औरभी गुण कहते हैं। दोनों प्रकारके पीतल-रूखे, कडवे, लवणरसान्वित, शोधक, पाण्डुरोगनाशक, कृमिनाशक और अतिलेपन नहीं है।

अन्यच्च।

सकलमेहमरुद्गुदजांरुजग्रहणिकाकफपाण्डुभवरुजम्।
श्वसनकामलशूलभवंरुजहरतिभस्मतदारकसम्भवम् ॥

अर्थ-पीतल-सर्वप्रकारके प्रमेह, वात, गुदजरोग, संग्रहणी, कफ, पाण्डु, श्वास, कामला और शूलका नाश करे है।

अपिच।

रीतेर्द्वयपाण्डुसमीरनाशनरूक्षसर कृमिहरलवण विषघ्नम्।
वृष्यवलीपलितनाशनमुग्रमायुर्वृद्धिकरोतिसहसाचरसायनञ्च।

अर्थ-दोनोंप्रकारके पीतल-पाण्डुरोगनाशक, वातविनाशक, रूखे, सारक, कृमिहारक, लवणरसान्वित, विषनाशक, वीर्यवर्द्धक, वलीपलितनाशक और आयुवर्द्धक हैं।

विवरण। पीतल-उपधातु है यह तांबे और जस्तके योगसे बनाया जाता है। इसमें तांबा १ भाग और जस्त ३ भाग डालकर बनाया जाता है। यह दोप्रकारका होताहै।

पारदनामानि।

पारदो रसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारस ।
चपल शिववीर्य्यंच रसःसूत.शिवाह्वय ।

अर्थ-पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, चपल, शिववीर्य, रस, सूत, शिवाह्वय (रसराज, रसनाथ, महातेज रसलेह, रसोत्तम, सूतराट्, जैत्र, शिवबीज, शिव, अमृत, लोकेश, दुर्धर, प्रभु, रुद्रज, हरतेज, अधिपतन, अविचल, खेचर, अमर, देहद, मृत्युनाशक, स्कन्द, स्कन्दांश, देव, दिव्यरस, रसायनश्रेष्ठ, यशोद, सूतक, सिद्धधातु, पारद, हरबीज, रजस्वल, शीघ्र, पार, शैलेन्द्र, धूर्जट, मृत्युनाशन, हेमनिधि, त्रिनेत्र, रोगिन, स्वामी)

संस्कृतभापामें	पारद ।	तैलिंगीभापामें	पारदरसम् ।
हिन्दीभापामें	पारा ।	इंग्रेजीभापामें	मर्क्युरी Mercury
वंगभापामें	पारा ।	लैटिन्भापामें	हेड्रार्गिर । Hydrargyrum
मराठीभापामें	पारा ।	फारसीभापामें	सिमाव ।
गुजरातीभापामें	पारो ।	अरवीभापामें	जीवक ।
कर्णाटकीभापामें	पारदरसः ।		

पार गुणा'।

पारदःपड्रस'स्निग्धस्त्रिदोपघ्नोरसायन । योगवाहीमहावृष्य·सदादृष्टिवलप्रदः॥सर्वामयहर·प्रोक्तोविशेपात्सर्वकुष्ठनुत् ।असाध्योयोभवेद्रोगोयस्यनास्तिचिकित्सितम्॥रसेन्द्रोहन्तितद्रोगंनरकुञ्जरवाजिनाम् । (भा०प्र०)

अर्थ-पारा-मधुर, अम्ल, कटु, तिक्त, कपाय और लवणरसान्वित, स्निग्ध त्रिदोपनाशक, रसायन, योगवाही, महावृष्य, सदैव दृष्टि और वलको वढाता है । सर्वरोगनाशक और विशेप करके कुष्ठनाशक है । जो रोग असाध्य है और जिनकी चिकित्सा नहीं है उन मनुष्य, हाथी और घोडेके रोगोंको पारा अवश्य हरता है ।

अन्यच्च ।

देहस्यशुद्धिंकुरुतेचपारदोनानागदानांहरणेसमर्थः ।
करोतिपुष्टिंहरतेचमृत्युकल्पायुपञ्चैवकरोतिनूनम् ॥
पारद'सकलरोगपारदोराजयक्ष्मसरभेकवारिदः ।
सर्वरोगमपहतितत्क्षणान्नागवल्लिरसराजभक्षणात् ॥

अर्थ-पारा-देहशुद्धकारक, नानाप्रकारके रोगविनाशक, पुष्टिकारक और मृत्युहारक है, तथा चिरजीव करनेवाला है । पारा सर्वरोगोंको दूर करने वाला, राजयक्ष्मारोगको हरनेवाला और पानके रसके साथ भक्षण करनेसे सर्वप्रकारके रोगोंको तत्काल दूर करनेवाला है ।

अपिच्च ।

मूर्च्छातोगदहृत्तथैवखगतिंधत्तेविवद्धोर्थदः स्याद्भस्मामयवार्धकादिहरणदृक्पुष्टिकातिप्रदम् । वृष्यंमृत्युविनाशनं-

वलकरंकांताजरानंदन शार्दूलातुलसत्त्वकृत्प्रभुविज्ञानोगानुसारीस्फुटम् ॥ मूर्च्छितोहरतेभुजनवधनंभूयोपिमुक्तिदोभवति । अमरीकरोतिमृतःकोन्यःकरुणाकरोस्तिसूतात ॥

अर्थ—मूर्च्छितपारा-रोगनाशक और आकाशमागम गमन करनेकी शक्ति देनेवाला है। बद्धपारा अर्थदायक है। और पारेकी भस्म-तरुणता-दृष्टि, पुष्टि तथा कान्तिजनक है। वीर्यवर्द्धक, मृत्युनाशक, स्त्रियोंको आनन्दजनक और योगवाही है। मूर्च्छित पारा-अंगग्रहनाशक और मुक्तिदायक है। और मराहुवा पारा अमरपदको देवेहै। फिर इससे अधिक और कौन दूसरा कृपा करनेवाला है।

पारदे पथ्यानि।

हितमुद्गान्नदुग्धाजशाल्यन्नानिसदाततः । शाकेपुनर्नवादेविमेघनादसवास्तुकम् ॥ सैन्धवनागरंमुस्तामूलकानिचभक्षयेत । आत्मज्ञानकथापूजाशिवस्यचविशेषतः । एतांस्तुसमाचरेन्भद्रेनलवेद्रसभक्षकः ॥ (नि० र०)

अर्थ—पारेको भक्षण करनेवाले मनुष्योंको मूंग दूध, शालिधानके चावल, बकरीका दूध, पुनर्नवेका शाक, चौलाईका शाक, बथुएका शाक, सेंधानोंन, नागरमोथा और मूली भक्षण करनी चाहिये। तथा आत्मज्ञान, कथा, पूजा और विशेष करके शिवकी भक्ति करनी चाहिये और कदापि लंघन नहीं करे।

पारददोषाः।

मलविषवह्निगिरित्वचापलनैसर्गिकदोषमूचुःन्तिपारदे । उपाधिजौद्वौत्रपुनागयोगजौदोषौरसेन्द्रेकथितौमुनीश्वरैः ॥ मलेनमूर्च्छामरणविषेणदाहोग्निनाकष्टतरःशरीरे । देहस्यजाड्यंगिरिणामदाश्चान्नां चलत्वतावीर्य्यहतिश्चपुंसाम् ॥ वङ्गेनकुष्ठंभुजगेनषंढोभवेत्ततोनोपरिशोधनीयः । वह्निर्विषमलश्चेतित्रिमुख्यादोषापारदस्ययोरसे ॥ एतेकुर्वन्निमन्तापमृतिं

मूर्च्छांनृणांक्रमात् । अन्येऽपिकथितादोषाभिषग्भिःपारदे यदि ॥ तथाप्येतेत्रयोदोषाहरणीयाविशेषत' ।

अर्थ-मल, विष, अग्नि, गिरिदोष, चपलता यह पाच दोष पारेमे स्वभावसेही हैं और राग तथा शीशेके दो दोष इसमें उपाधिज हैं, ऐसे सात दोष मुनीश्वरोंने कहे हैं। मलके दोषसे मूर्च्छा, विषके दोषसे मृत्यु, अग्नि-दोषसे दाह और अत्यन्त शरीरमें पीडा पर्वतके दोषसे देहमें जडता और चचलताके दोषसे वीर्य्यको हरैहै। वगदोषसे कुष्ठ और शीशेके दोषसे नपुसकताको करता है। इसकारण इसको विधिपूर्वक शोधनाचाहिये । अग्नि, विष और मल यह तीन दोष पारेमे मुख्य हैं । सो सताप, मृत्यु और मूर्च्छा इनको क्रमसे करते हैं यद्यपि औरभी पारेम वैद्योने अनेक दोष कहे हैं, किन्तु मुख्य यह तीनही दोष हैं, इससे इनको विशेषकरके हरना चाहिये ।

अशोधितपारददोषा ।

सस्कारहीनखलुसूतराजय'सेवतेतस्यकरोतिवाधाम् ।
देहरयनाशविदधातिनूनकष्टांश्चरोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य अशोधितपारेका सेवन करता है उसको यह बाधा करताहै । निश्चय देहका नाश करनेवाला कष्ट और अनेक प्रकारके रोगाको उत्पन्न करै है ।

पारदस्योत्पत्तिजातिलक्षणानि ।

रसायनादिभिर्लोके पारदोरस्यतेयत. । ततोरसइतिप्रोक्त सचधातुरपिस्मृत' ॥ शिवाङ्गात्प्रच्युतरेत'पतितधरणीतले-तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूत्ततत ॥ क्षेत्रभेदेनविज्ञेयं शिववीर्य्यंचतुर्विधम् । श्वेतरक्ततथापीतंकृष्णतत्तुभवेत्क्रमात् ॥ ब्राह्मण·क्षत्रियोवैश्य शूद्रश्चखलुजातित । श्वेतश-स्तरुजानाशेरक्तकीलरसायनम् ॥ धातुवादेतुतत्पीतखेगतौ कृष्णमेवच ।

अर्थ-रसायनकी इच्छावाले प्राणी इसकी, कांक्षा, करते है । इसकारण इसका नाम रसहै और इसको धातुभी कहते हैं । पृथ्वीमें महादेवका वीर्य्य पतित होनेपर पारेकी उत्पत्ति हुई इस कारण वह देहका, सारभाग, शुक्र

उत्पन्न होनेके हेतु, शुक्लवर्ण और स्वच्छ, हुवा। यह रोगभेदसे श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण चार प्रकारका है। तहाँ सफेद रंगके पारेको ब्राह्मण कहते हैं, यह रोगनाश करनेमें उत्तम है। और लाल रंगके पारेको क्षत्रिय कहते हैं, यह रसायनकार्यमें उत्तम है। पीलेरंगके पारेको वैश्य कहते हैं, यह धातुवादमें श्रेष्ठ है। और काले रंगके पारेको शूद्र कहते हैं यह आकाश-मार्गमें चलनेको सहायक है।

पारदमहत्ता।

मृदः कोटिगुणं स्वर्णं स्वर्णात्कोटिगुणं मणिः।
मणेः कोटिगुणं बाणो बाणात्कोटिगुणो रसः॥
रसात्परतरं लिंगं न भूतं न भविष्यति। (नि०र०)

अर्थ-मट्टीके गुणोंसे अधिक करोड गुण सुवर्णके दर्शन करनेमें है। सुवर्णके गुणोंसे अधिक करोडगुण मणिके दर्शन करनेमें है। मणिके गुणोंसे अधिक करोडगुण बाणके दर्शन करनेमें है और बाणके गुणोंसे करोड गुण अधिक पारेके दर्शन करनेमें है, पारेसे अधिक गुणवाला पदार्थ न हुवा और न होगा। पारेका विशेषवर्णन हमारे बनाये "रसराजसुन्दर" ग्रन्थमें देखो।

हिंगुलस्य नामानि।

हंसपादं रसस्थानं हिंगुलं रक्तपारदम्॥

अर्थ-हंसपाद, रसस्थान, हिंगुल, रक्तपारद (हिंगुल, हिंगुलि, हिंगुल, रक्त, मयूरग्रीव, दरद, रस, उरु, चन्द्र, कपिशीर्षक, बर्बर, सुरंग, सुरस, रञ्जन, म्लेच्छ, चित्राङ्ग, चूर्णपारद, चर्म्मारक, रसोद्भव, रंजक, रसगर्भ, चूर्णपारद, मनोहर, नम्मार, नानाशृंगारवर्द्धन)

संस्कृतभाषामें	हिंगुल।
हिन्दीभाषामें	हिंगुल, शिंगरफ, ईंगुर, हींगलू।
बंगभाषामें	हिंगुल।
मराठीभाषामें	हिंगुळ।
गुजरातीभाषामें	हिंगलो।
कर्णाटकीभाषामें	इंगुलिक।
तैलिङ्गीभाषामें	इंगिलीकामु।

इग्रेजीभापामें सल्फेट ऑफ् मर्क्युरि । Sulphate of Mercury
सिनेबारानेटिव । Cinnabar Native
लैटिन् भापामें सल्फुएट हेड्रार्जिर । Sulphuatum Hydrargyrum
फारसीभापाम सिंग्रफ् ।
अरबीभापामें जजफर ।

हिंगुलगुणा ।

तिक्त-कपाय-कटुहिंगुलु स्यान्नेत्रामयघ्न कफपित्तहारी ।
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्वप्लीहामवातौचगरनिहन्ति ॥

अर्थ-हिंगुल (सिगरफ)-कडवा, कपेला, चरपरा तथा नेत्ररोग, कफ, पित्त, हृल्लास, कुष्ठ, ज्वर, कामला, प्लीहा, आमवात और विपको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

हिंगुलमधुरतिक्तमुष्णंवातकफापहम् ॥
त्रिदोपद्वन्द्वदोपोत्थज्वरहरतिसेवनात् ॥

अर्थ-हिंगुल (सिंगरफ)-मधुर, कडवा, गरम, वातकफ, त्रिदोप, द्वन्द्वजदोप और ज्वरका नाश करैहै ।

अपिच ।

हिंगुल-सर्वदोपघ्नोदीपनोऽतिरसायनः ।
सर्वरोगहरोवृष्योजारणेलोहमारणे ॥

अर्थ-हिंगुल (सिंगरफ)-सर्वदोपनाशक, दीपन, अतिरसायन, सर्वरोगनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, जारण और लोहेके मारनेमें उत्तम है ।

हिंगुलभेदलक्षणम् ।

हिंगुल-स्त्रिविध प्रोक्तश्चर्म्मारःशुकतुण्डकः। हसपादस्तृतीयःस्याच्चर्म्मार शुभ्रवर्णकः ॥ शुकतुण्डकहिंगूल-पीतवर्णो भवेत्सहि । जपाकुसुमसङ्काशोहसपादोमहोत्तमः ॥(भा प्र)

अर्थ-सिंगरफ-चर्म्मार, शुकतुण्डक और हसपाद इनभेदोंसे तीन प्रकारका है । तहा चर्म्मारहिंगुल सफेद रगका, शुकतुण्डक हिंगुल पीले रंगका और हसपादहिंगुल जपाके फूलोंकी समान लाल रगका अत्यन्त उत्तम होता है ।

हिंगुलोत्पत्ति ।

अशुद्धपारदभागचतुर्भागंतुगन्धकम । दर्भोक्षिस्वालोहपात्रेक्षणंमृद्वग्निनापचेत ॥ कृत्वाथखडशस्तत्रकाचकुप्यांनिरुध्यच । वस्त्रमृत्तिकयासम्यक्काचकूपिप्रलेपयेत ॥ सर्वतोंगुलमानेनच्छायाशुष्कंतुकारयेत् । वालुकायंत्रगर्भेतुदिनमृद्वग्निनापचेत ॥क्रमवृद्ध्याग्निनापश्चात्पचेद्दिवसपंचकम । सप्ताहंतुसमुद्धृत्यहिंगुल स्यान्मनोहर. ॥

अर्थ-अशुद्धपारा-एकभाग, गन्धक चारभाग इन दोनोको लोहेके पात्रम डालकर, एक क्षण मन्दाग्निसे पकावे, फिर टुकडे करके कांचकी शीशीम भरकर उस शीशीपर कपडा और मिट्टी लपेटे, चारोंओर एक अंगुल ऊंचा लेप करे, छायामें सुखावे फिर वालुकायंत्रमें रखकर एक दिन मृदु अग्निसे पकावे क्रमसे फिर पांचदिन पर्यंत वृद्धि करता हुआ अग्नि लगावे सातवें दिन निकालके अच्छा हिंगुल बनजायगा ।

स्रोतोञ्जननामानि ।

स्रोतोऽञ्जननदीजचवाल्मीकञ्चजयामलम ॥

अर्थ-स्रोतांजन नदीज, वाल्मीक, जयामल, (सौवीर, स्रोतोनदीभव, स्रोतोभव, सौवीर सौवीरसार, कपोताञ्जन, यामुन, पीतसार, वारिभव, कपोतसार, कापोतसार और वाल्मीकशीर्ष)

सौवीराञ्जननामानि ।

सौवीरकपार्वतेयमेचकनीलमञ्जनम ॥

अर्थ-सौवीरक, पार्वतेय, मेचक नील, अञ्जन (यामुन, कृष्ण, नादेय, स्रोतोज, दृष्यद, सुवीरज, नीलांजन, रसाग्र्य, वारिसंभव और कपोतक)

संस्कृतभाषामें	स्रोतांजन, सौवीराञ्जन ।
हिन्दीभाषामें	सुरमा, अञ्जन, श्वेतसुरमा, कालासुरमा ।
बंगभाषामें	श्वेतसुरमा, नीलसुरमा, नीलाञ्जन, कालसुरमा ।
मराठीभाषामें	काळासुरमा, लालसुरमा, पांढरासुरमा ।
गुजरातीभाषामें	सुरमो, कालोसुरमो, धोलोसुरमो ।
कर्णाटकीभाषामें	स्रोतोञ्जन ।
तैलङ्गीभाषामें	सौवीराञ्जन ।

ईंग्रेजीभाषामें सल्फुरेट ऑफ आटीमनी । Sulphuret of antimony
लैटिन्भाषाम आटिमोनाई सल्फुरेटम् । Antimonii Sulphuretum
फारसीभाषामें सूर्मेअस्फहानि ।
अरबीभाषामें कुहल इसमुद ।

स्रोतोऽञ्जनगुणा ।

स्रोतोऽञ्जनस्मृतस्वादुचक्षुष्यकफपित्तनुत ।
कपायलेखनस्निग्धंग्राहिच्छर्दिविपापहम् ॥
हिक्काक्षयास्रजिच्छीतसेवनीयंसदाबुधै । (भा०प्र०)

अर्थ–स्रोतोञ्जन (कालासुर्म्मा)–स्वादिष्ट, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्त-नाशक, कपेला, लेखन, स्निग्ध, मलरोधक, वमननिवारक, विपनाशक, हिचकीको दूर करनेवाला, क्षयरोगको हरनेवाला है, रक्तदोपनिवारक और शीतल है ।

अथस्रोतोऽञ्जनस्य लक्षणम् ।

वल्मीकशिखराकारभिन्ननीलाञ्जनप्रभम् ।
घृष्टेचगैरिकावर्णश्रेष्ठस्रोतोऽञ्जनञ्चतत ॥

अर्थ–बाँबीकी शिखरके आकार भिन्न नील अजनकी समान प्रभायुक्त और जो घिसनेमें गेरूकी रगकाहो वह उत्तम स्रोतोऽजन है ।

सौवीराञ्जनगुणा ।

सौवीरमधुरशीतकपायंस्निग्धलेखनम् ।
रक्तपित्तविपच्छर्दिहिक्काघ्नदृक्प्रसादनम ॥

अर्थ–सौवीराञ्जन–मधुर, शीतल, कपेला, स्निग्ध, लेखन, तथा रक्तपित्त, विप, वमन और हुचकीको दूर करैहै तथा नेत्रप्रसादक है ।

पुष्पाञ्जननामानि ।

पुष्पाञ्जनन्तुकौसुम्भरीतिकंकुसुमाञ्जनम् ॥

अर्थ–पुष्पाञ्जन, कौसुम्भ, रीतिक, कसुमाञ्जन (रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पौष्पक, सदञ्जन, रीतिकुसुम, माक्षिक, चाक्षुष्य, कुमिरसाञ्जन और धातु-माक्षिक)

सं०	पुष्पाञ्जन।	फा०	पुष्पांजन।
हिं०	पुष्पाजन।	तै०	पुष्पाञ्जनु। [Oxyde
बं०	पुष्पाञ्जन।	इं०	झिङ्क ऑक्साइड। Zinc
म०	पिवळेंवेंकोट,पुष्पाञ्ज॥	लै०	झिंकाई ऑक्साइड।
गु०	फूलांजण।		Zinci Oxidum.

पुष्पाञ्जनगुणाः।

पुष्पाञ्जनं हिमं प्रोक्तं पित्तहिक्काप्रदाहनुत्।
नाशयेद्विषकासार्तिं सर्वनेत्रामयापहम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-पुष्पाजन-शीतल, पित्तनिवारक, हिक्कानाशक, दाहहारक, विष विनाशक, खाँसीकी पीडाको हरनेवाला और सर्व प्रकारके नेत्ररोगोंको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

रीतिपुष्पं च चक्षुष्यं शीतं पित्तकफापहम्॥
हिक्कादाहविषकासनेत्ररोगं च नाशयेत्॥ (नि०र०)

अर्थ-पुष्पांजन-नेत्रोंको हितकारी तथा शीतपित्त, कफ, हिचकी, दाह, विष, खाँसी और नेत्ररोगनाशक है।

अपिच।

पुष्पाञ्जनं हिमं स्निग्धं शीतं सर्वाक्षिरोगहृत्।
अतिदुर्धरहिक्काघ्नं विषज्वरगदापहम्॥

अर्थ-पुष्पांजन-हिम, स्निग्ध, शीतल, सर्वप्रकारके नेत्ररोगहारक, अत्यंत दुर्धर हिचकीको दूर करनेवाला तथा विष और ज्वरनाशक है।

तुत्थकनामानि।

मूषातुत्थं कांस्यनीलं तुत्थकं शिखिकण्ठकम्॥

अर्थ-मूषातुत्थ, कांस्यनील, तुत्थक, शिखिकण्ठक (तुत्थ, हरिताश्म, नीलाश्म, मयूरग्रीवक, ताम्रगर्भ, अमृतोद्भव, मयूरतुत्थ, मूषा, शिखिकण्ठ, नील, तुत्थाञ्जन, शिखिग्रीव, वितुन्नक, मयूरक, हेमसार, मूषाविष और ताम्रोपधातु)

संस्कृतभाषामें	तुत्थ, मयूरतुत्थ।
हिन्दीभाषामें	(तूतिया) नीलाथोथा नीलातूतिया।
इंग्रेजीभाषामें	[illegible]।

मराठीभाषामें	मोरचूत (द) ।
गुजरातीभाषामें	मोरथुथु ।
कर्णाटकीभाषामें	मयूरतुत्थ ।
तैलङ्गीभाषामें	मेलतुतु ।
इंग्रेजीभाषामें	सल्फेट ऑफ कॅपर । Sulphate ot Copper
लैटिन्भाषामें	क्युप्रिआसल्फस Cuprea Sulpbas
फारसीभाषामें	दूदिया ।
अरबीभाषामें	तुतिया अकजर ।

तुत्थगुणा ।

तुत्थककटुकक्षारकषायवामकलघु ।
लेखनंभेदनशीतचक्षुष्यंकफपित्तन्हृत् ॥
विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नंखर्परचापितद्गुणम् ।

अर्थ-नीलाथोथा-चरपरा, नमकीन, कषेला, वमनकारक, हलका, लेखन, भेदक, शीतल, नेत्रोंका हितकारी तथा कफ, पित्त, विष, पथरी, और कण्डूनाशक है । खपरियाकेभी इसीकी समान गुण जानने ।

अन्यच्च ।

तुत्थकटुकषायोष्णश्वित्रनेत्रामयापहम् ।
विषदोषपुसर्वेषुप्रशस्तवान्तिकारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-नीलाथोथा-चरपरा, कषेला, गरम, श्वित्रकुष्ठनाशक, नेत्ररोगनाशक, सर्वप्रकारके विषके विकारोंमें प्रशस्त और वमनकारक है ।

अपिच ।

तुत्थकनेत्ररोगघ्नशीतचित्रविनाशनम् ।
कृमिघ्नलेखनभेदिकण्डूक्लेदविषापहम् ॥

अर्थ-नीलाथोथा-नेत्ररोगनाशक, शीतल, चित्रकुष्ठनाशक, कृमिनाशक, लेखन, भेदक तथा कण्डू, क्लेद और विषके विकारोंको हरनेवाला है ।

अपिच ।

निःशेषदोषविषहृद्गदशूलमूलकुष्ठाम्लपित्तकविवन्धहरपरच।
रसायनंवमनरेचकरगदघ्नचित्रापहगदितमत्रमयूरतुत्थम् ॥

अर्थ-नीलाथोथा-सर्वदोष, विष, हृदयरोग, शूल, कुष्ठ, अम्लपित्त और

विबन्धको दूर करनेवाला है, रसायन, वमनकारक, दस्तलानेवाला और चित्रकोढको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

वमने मडले दर्द्रौ विषेचैव प्रशस्यते ॥

अर्थ-नीलाथोथा-वमन मडल्कुष्ठ, दाद और विषके विकारोंमें हितकारी है ।

खर्परनामानि ।

चक्षुष्यममृतोत्पन्नं खर्परीदार्विकातथा ॥

अर्थ-चक्षुष्य, अमृतोत्पन्न, खर्परी, दार्विका (खर्पर, रसक, खर्परिका, तुत्थ, खर्परीतुत्थ, खर्परीतुत्थक, मशदोपधातु)

संस्कृतभाषामें	खर्पर ।
हिन्दीभाषामें	खपरिया, खापरिया ।
बंगभाषामें	खापर ।
मराठीभाषामें	कल्खापरी ।
गुजरातीभाषामें	खापरीयुकालु ।
कर्णाटकीभाषामें	खर्परी ।
तैलिङ्गभाषामें	खर्पर ।
इंग्लिशभाषामें	ब्लाक् जाक् । black jack
लैटिन्भाषामें	झिंक्मिल्फाईड । Zinci Sulphidum
फारसीभाषामें	संगबसरी ।
अरबीभाषामें	तुतिया, किरमानी, मकगुल ।

खर्परगुणाः ।

रसकः सर्वमेहघ्नः कफपित्तविनाशनः ।

नेत्ररोगक्षयघ्नश्चज्वरकुष्ठविषापहः ॥ (वै०वि०नि०)

अर्थ-खपरिया-सर्व प्रकारके प्रमेह, कफ, पित्त, नेत्ररोग, क्षय, ज्वर कुष्ठ और विषके विकारोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

जायतेशोभनभस्मसर्वव्याधिहरपरम् ।

नेत्ररोगदरःश्रेष्ठदिक्षयहाखर्परोगुरुः ॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ-खपरिया-सर्वप्रकारकी व्याधिविनाशक, नेत्ररोगनिवारक क्लेदकारक, क्षयरोगको हरनेवाली और भारीहै ।

अशोधितखर्परदोषा ।

अशुद्ध·खर्पर कुर्य्याद्वान्तिभ्रान्तिविशेपत· ।
तस्माच्छोध्य·प्रयत्नेनयावद्वान्तिविवर्जितः ॥

अर्थ-अशोधित खपरिया-वान्ति और भ्रान्तिको करती है इसकारण जबतक वान्ति करके रहित नहो तबतक प्रयत्नसे शोधे ।

स्वर्णमाक्षिकनामानि ।

माक्षिकधातुमाक्षिकताप्यस्वर्णाह्वयमतम् ।

अर्थ-माक्षिक, धातुमाक्षिक, ताप्य, स्वर्णाह्वय (सुवर्णमाक्षिक, स्वर्णमाक्षिक, तापिच्छ, आपीत, ताप्यक, पीतमाक्षिक आवर्त्त, क्षौद्रधातु, माक्षिकधातु, कदम्ब, चक्रनाभा, तापिञ्ज, स्वर्णवर्ण, हेमद्युति, मधुधातु, अजनामक)

तारमाक्षिकनामानि ।

विमलमाक्षिकश्रेष्ठश्वेताक्षतारमाक्षिकम् ।

अर्थ-विमल, माक्षिकश्रेष्ठ, श्वेताक्ष, तारमाक्षिक (रूप्यमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक ।
हिन्दीभाषामें	सोनामाखी, रूपामाखी, तारामुखी ।
बंगभाषामें	स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक ।
मराठीभाषामें	दगडीसोनामुखी, रौप्यमाक्षी ।
गुजरातीभाषामें	सोनामाखी, रूपामाखी ।
कर्णाटकीभाषामें	धातुमाक्षिक, यरडुमाक्षिक ।
तैलिङ्गीभाषामें	स्वर्णमाखी, रूपामाखी ।
इंग्रेजीभाषामें	आयर्नपाईराईटीस् । Iron pyrites
लैटिन्भाषामें	फेरीसल्फुरेटम् । Feeri sulphuretum
अरबीभाषामें	सुर्कशीशाजहबी, सुर्कशीशाफिद्दा ।

स्वर्णमाक्षिकगुणाः ।

सुवर्णमाक्षिकस्वादुतिक्तवृष्यंरसायनम् ।

चक्षुष्यबस्तिहृत्कण्ठपाण्डुमेहविषोदरम् ॥
अर्शःशोफविषकण्डुत्रिदोषानपिनाशयेत् ॥ (भा प्र.)

अर्थ-सोनामाखी-स्वादु, कडवी, वृष्य, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, बस्तिरोगनाशक तथा कण्ठरोग, पाण्डुरोग, प्रमेह, विष, उदररोग, विष बवासीर, सूजन, विष, कण्डू और त्रिदोषका नाश करै है।

अन्यच्च।

माक्षिकंमधुरंतिक्तमम्लंकटुकषायकम् ।
श्रमहृल्लासमूर्च्छार्त्तिश्वासकासविषापहम् ॥

अर्थ-माक्षिकधातु-मधुर, कडवी, अम्ल, चरपरी, कषायरस तथा श्रम, हृल्लास, मूर्च्छा, श्वास, खांसी और विषको दूर करे है।

अन्यच्च।

माक्षिकंतुवरंवृष्यंस्वर्यंलघुरसायनम् ।
चक्षुष्यंकुष्ठशोफार्शोमेहनुत्त्यर्तिपांडुता ।
व्यनाथिकट्टकहन्तिकुष्ठोदरविषक्षयान् ॥ (म०नि०)

अर्थ-माक्षिकधातु-कसैली, वीर्यवर्द्धक, स्वरको स्वच्छ करनेवाली, हल्की, रसायन, नेत्रोंको हितकारी तथा कुष्ठ, सूजन बवासीर, प्रमेह, मर्मोकी पीडा, पाण्डुरोग, कृष्ठ उदररोग, विष और क्षयरोगका नाशकरै है। रसायनी और चरपरी है।

अशुद्धमाक्षिकदोष।

मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितांनेत्रगदान्सकुष्ठान् ।
मालांतथैवव्रणपूर्विकांचकुर्यादशुद्धंखलुमाक्षिकञ्च ॥ (भा प्र.)

अर्थ-अशुद्ध माक्षिकधातु मन्दाग्नि, बलहानि, विष्टम्भता, नेत्ररोग, कुष्ठ, गण्डमाला और व्रणको उत्पन्न करनेवाली है।

अन्यच्च।

अशुद्धमाक्षिकंकुर्यादान्ध्यंकुष्ठक्षयकृमीन् ।
शोधनीयंप्रयत्नेनतस्मात्कनकमाक्षिकम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-अशुद्ध सोनामाखी-आंध्य, कुष्ठ, क्षय और कृमिको उत्पन्न करे है। इसकारण यत्न करके शोधनी चाहिये।

अपिच ।

किञ्चित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम् ।
उपधातुःसुवर्णस्यकिञ्चित्स्वर्णगुणान्वितम् ॥

अर्थ–किंचित् सुवर्णमिश्रित होनेसे यह स्वर्णमाक्षिक कहीजाती है, सुवर्णकी उपधातु है और किञ्चित् सुवर्णके गुणयुक्त है ।

तारमाक्षिकगुणा ।

माक्षिकोरजतहाटकप्रभ शोधितोतिगुणदःसुसेवित· ।
मेहकुष्टकृमिशोफपाण्डुतापस्मृतिहरतिसोश्मरीजयेत ॥
स्वर्णमाक्षिकवद्दोषाविज्ञेयास्तारमाक्षिके ।

अर्थ–रूपामाखी चादीकी और सोनेकी समान प्रभायुक्त होती है, यह भलेप्रकारसे शोधी हुई अनेक गुणदायक है तथा प्रमेह, कोढ, कृमि, सूजन, पाण्डुरोग, अपस्मार और पथरीको हरनेवाली है । अशोधित रूपामाखीके दोप स्वर्णमाखीकी समान जानने ।

तारमाक्षिकमन्यत्तुतद्भवेद्रजतोपमम् ।
किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥

अर्थ–जो माखी रूपेकी समान श्वेतवर्ण तथा किंचित् रौप्यमिश्रितहो वह रूपामाखी कही जाती है ।

वोदारनामानि ।

वोदारोनागसत्वश्चव्रणघ्न स्वर्णवर्णक ।

संस्कृतभाषामें	वोदार, नागसत्व, व्रणघ्न, स्वर्णवर्णक ।
हिन्दीभाषामें	मुरदाशिंग ।
मराठीभाषामें	मुरदाडशिंग ।
गुजरातीभाषामें	वोदारकाकरो ।
इंग्रेजीभाषामें	लिथार्ज । Litharge
लैटिन्भाषाम	प्लुंवी आक्सेड । Llumbi
फारसीभाषाम	मुरदासिंग ।
अरबीभाषामें	मुर्दासिंज ।

वोदारगुणाः ।

वोदार मारकोभेदीव्रणरोपणकारक·।वान्तिकृन्मूत्रकृच्छ्रा-

चक्षुष्यवस्तिहृत्कण्ठपाण्डुमेहविषोदरम् ॥
अर्शःशोफविषकण्डुत्रिदोषानपिनाशयेत् ॥ (भा प्र.)

अर्थ-सोनामाखी-स्वादु, कड़वी, वृष्य, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, बस्तिरोगनाशक तथा कण्ठरोग, पाण्डुरोग, प्रमेह, विष, उदररोग, शिर बवासीर, सूजन, विष, कण्डु और त्रिदोषका नाश करै है ।

अन्यच्च ।

माक्षिकमधुरतिक्तमम्लकटुकफापहम् ।
भ्रमहृल्लासमूर्च्छार्त्तिश्वासकासविषापहम् ॥

अर्थ-माक्षिकधातु-मधुर, कड़वी, अम्ल, चरपरी, कफनाशक तथा भ्रम, हल्लास, मूर्च्छा, श्वास, खांसी और विषको दूर करै है ।

अन्यच्च ।

माक्षिकंतुवरंवृष्यंस्वर्यंलघुरसायनम् ।
चक्षुष्यंकुष्ठशोफार्शोमेहवस्त्यर्तिपाण्डुता ।
व्यवायिकटुकंहन्तिकुष्ठोदरविषक्षयान् ॥ (ध०नि०)

अर्थ-माक्षिकधातु-कसैली, वीर्यवर्द्धक, स्वरको स्वच्छ करनेवाली, हल्की, रसायन, नेत्रोंको हितकारी तथा कुष्ठ, सूजन बवासीर, प्रमेह, बस्ती की पीडा, पाण्डुरोग, कुष्ठ, उदररोग, विष और क्षयरोगका नाशक है । व्यवायी और चरपरी है ।

अशुद्धमाक्षिकदोषाः ।

मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितांनेत्रगदान्सकुष्ठान् ।
मालांतथैवव्रणपूर्विकांचकुर्यादशुद्धंखलुमाक्षिकञ्च ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-अशुद्ध माक्षिकधातु-मन्दाग्नि, बलहानि, विष्टम्भता, नेत्ररोग, कुष्ठ, गण्डमाला और व्रणको उत्पन्न करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अशुद्धमाक्षिकंकुर्यादान्ध्यंकुष्ठंक्षयंकृमीन् ।
शोधनीयंप्रयत्नेनतस्मात्कनकमाक्षिकम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-अशुद्ध सोनामाखी-अंधापन, कुष्ठ, क्षय और कृमिको उत्पन्न करै है । इसकारण यत्न करके शोधनी चाहिये ।

कर्णाटकीभाषामें	अभ्रक ।
तैलिंगीभाषाम	अभ्रक ।
इंग्रेजीभाषामें	टालक, ग्लिमर । Talc Glimmer
लैटिन्भाषामें	माईका । Mica
फारसीभाषामें	सिताराजमीन ।
अरबीभाषामें	तल्क़ ।

मारिताभ्रकगुणा ।

अभ्रकषायमधुरसुशीतमायुष्करंधातुविवर्द्धनञ्च । हन्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्टंप्लीहोदरग्रन्थिविषकृमीश्च ॥ रोगान्हन्तिद्रढयतिवपुर्वीर्य्यवृद्धिविधत्तेतारुण्याढ्यंरमयतिशतंयोपितांनित्यमेव । दीर्घायुष्काञ्जनयतिसुतान्विक्रमेसिंहतुल्यान्मृत्योर्भीतिहरतिसततंसेव्यमानमृताभ्रम् ।

अर्थ–अभ्रक–कषेला, मधुर, शीतल, आयुकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोषनाशक तथा व्रण, प्रमेह, कोढ, प्लीहा, उदररोग, ग्रन्थि, विष और कृमिका नाश करैहै । रोगनाशक, देहको दृढकरनेवाला वीर्य्यवर्द्धक, तरुणअवस्थायुक्त सौ स्त्रियोंसे नित्यप्रति रमनेका सामर्थ्य करानेवाला, दीर्घ आयुवाले और सिंहकी समान पराक्रमी ऐसे पुत्रोको उत्पन्न करनेवाला और मृत्युके भयकोभी हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

मृताभ्रककामबलप्रदंचविषमरुच्छ्वासभगन्दराध्यम् ।
मेहभ्रमपित्तकफचकासक्षयनिहन्त्येवयथानुपानात् ॥

अर्थ–अभ्रकको यथानुपानके साथ सेवन करनेसे कामप्रद, बलकारक तथा विष, वात, श्वास, भगन्दर, आध्य, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, खाँसी और क्षयरोगको हरनेवाला है ।

अभ्रस्य जातिवर्णभेदा ।

विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्स्यात्तच्चतुर्विधम् ।
क्रमेणचसितरक्तपीतकृष्णञ्चवर्णत ॥

अर्थ–अभ्रक–जातिके भेदसे चार प्रकारकाहै, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रि

णाप्रमेहम्यचकारकः ॥ कफवातव्रणशूलमुदरकृमिशोथकम् । आध्मानवातगुल्मञ्चआनाहशोफज्वरम् ॥ उदावर्त्तं- नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-मुरदासिंग-सारक, भेदक, व्रणरोपक, वमनकारक, मूत्रकृच्छ्रका- रक, प्रमेहकारक तथा कफ, वात, व्रण, शूल, उदररोग, कृमि, सूजन, आध्मान, वात, गुल्म, आनाह, शोफज्वर और उदावर्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सीससत्त्वमरुच्छ्लेष्मशमनंकायदाहकम् ।
केश्यपुंसांगरोगघ्नरंजनरसबंधनम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-मुरदासिंग-वात, कफ, गरमीके रोग और शरीरकी दाहको दूर करे है केशोंको हितकारी, पुरुषोंके अंगरोगोंको दूर करनेवाला और पारेको बांधनेवाला है ।

उत्पत्तिस्थाननिरूपणम्

अर्बुदस्यगिरेःपार्श्वेजातवेदाग्रशृंगकम् ।
सदलपीतवर्णंनभवेद्गुर्जरमंडले ॥

अर्थ-अर्बुदपर्वतके निकट पार्श्वभागमें वेदार नामवाला शृंग है उस शृंगमें मुरदासिंग उत्पन्न होता है यह सदल और पीले रंगका तथा गुर्जर- देशमें होता है ।

अभ्रकनामानि ।

अभ्रकंगिरिजाबीजनिर्मलंगिरिजामलम् ।
अब्दंव्योमघनंशुभ्रंबहुपत्रंघनाहतकम् ॥

अर्थ-अभ्रक, गिरिजाबीज, निर्मल, गिरिजामल, अब्द, व्योम, घन, शुभ्र, बहुपत्र, घनाहक, (गिरिज, अमल, गौरीबीज गगनरज, अंग, भृङ्ग, अम्बर, अन्तरिक्ष आकाश, ख, अनन्त, गौरीज गौरितेज, गगन)

संस्कृतभाषामें	अभ्र ।
हिन्दीभाषामें	अभ्रक, अबरक, भोडर ।
बंगभाषामें	अभ्र ।
मराठीभाषामें	अभ्रक ।
गुजरातीभाषामें	अबरख ।

कर्णाटकीभापामें	अभ्रक ।
तैलिंगीभापामें	अभ्रक ।
इंग्रेजीभापामें	टाल्क, ग्लिमर । Talc Glimmer
लैटिन्भापामें	माईका । Mica
फारसीभापामें	सितारा जमीन ।
अरबीभापामें	तलूक ।

मारिताभ्रकगुणा ।

अभ्रकपायमधुरसुशीतमायुष्करधातुविवर्द्धनश्च । हन्यात्त्रि-दोपव्रणमेहकुष्टप्लीहोदरग्रन्थिविपकृमीश्च ॥ रोगान्हन्ति-द्रढयतिवपुर्वीर्य्यवृद्धिविधत्तेतारुण्याढचरमयतिशतयोपि-तांनित्यमेव । दीर्घायुष्काञ्जनयतिसुतान्विक्रमै सिंहतु-ल्यान्मृत्योर्भीतिहरतिसततसेव्यमानमृताभ्रम् ।

अर्थ-अभ्रक-कपेला, मधुर, शीतल, आयुकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोप-नाशक तथा व्रण, प्रमेह, कोढ, प्लीहा, उदररोग, ग्रन्थि, विप और कृमिका नाश करैहे । रोगनाशक, देहको दृढकरनेवाला वीर्य्यवर्द्धक, तरुणअवस्थायुक्त सौ स्त्रियोंसे नित्यप्रति रमनेका सामर्थ्य करानेवाला, दीर्घ आयुवाले और सिंहकी समान पराक्रमी ऐसे पुत्रोंको उत्पन्न करनेवाला और मृत्युके भय-कोभी हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

मृताभ्रककामबलप्रदचविपमरुश्वासभगन्दराध्यम् ।
मेहभ्रमपित्तकफचकासक्षयनिहन्त्येवयथानुपानात ॥

अर्थ-अभ्रकको यथानुपानके साथ सेवन करनेसे कामप्रद, बलकारक तथा विप, वात, श्वास, भगन्दर, आध्य, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, खाँसी और क्षयरोगको हरनेवाला है ।

अभ्रस्य जातिवर्णभेदा ।

विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्स्यात्तच्चतुर्विधम् ।
क्रमेणचसितरक्तपीतकृष्णश्चवर्णत ॥

अर्थ-अभ्रक-जातिके भेदसे चार प्रकारकाहै, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य

और शूद्र वह। ब्राह्मणअभ्रक-श्वेतरंगका, क्षत्रिय अभ्रक-लालरंगका, वैश्यअभ्रक-पीले रंगका और शूद्र अभ्रक काले रंगका होता है।

प्रशस्यन्तेसितास्तारेरक्तास्तुरसायने ।
पीताहेम्निकृष्णास्तुगदेषुद्रुतयेऽपिच ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-चांदीके बनानेमें सफेद अभ्रक, रसायन कर्ममें लाल, सुवर्णके बनानेमें पीला और रोगोंमें तथा रसायनके लिये कृष्ण अभ्रक लेना चाहिये।

चतुर्विधाभ्रकस्य नामलक्षणगुणाः ।

पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रञ्चेतिचतुर्विधम् । पिनाकवर्जयेद्धीमा-न्दर्दुरञ्चविशेषतः । तृतीयनागमङ्गञ्चदूरतः परिवर्जयेत् । मुञ्चत्यग्नौविनिक्षिप्तंपिनाकंदलसञ्चयम्॥ अज्ञानाद्भक्षणा-त्तस्यमहाकुष्ठप्रदायकम् । दर्दुरन्त्वग्निनिक्षिप्तंकुरुतेदर्दुरध्व-निम् ॥ गोलकान्बहुशः कृत्वातत्स्यान्मृत्युप्रदायकम् ।ना-गन्तुनागवद्वह्नौफूत्कारम्परिमुञ्चति ॥ तद्भक्षितमवश्यन्तु-विदधातिभगन्दरम् । वज्रन्तुवज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौ विकृतिंव्र-जेत् ॥ वज्रमजरितरोगघ्नमभ्रसर्वत्रनेतरत् । सर्वाभ्रेषुवरंवज्रं व्याधिवार्द्धक्यमृत्युहृत्॥ अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्त्वगुणा-धिकम् । दक्षिणाद्रिभवञ्चाभ्रम्स्वल्पसत्त्वगुणप्रदम् ॥

अर्थ-पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र इन भेदोंसे अभ्रक, चार प्रकारका है। इनमें पिनाक, दर्दुर और नागनामवाला अभ्रक त्यागने योग्य है। पिनाकअभ्रक अग्निमें डालनेसे पत्र २ होजाता है। यदि इसको कोई अज्ञानसे खाले तो उसके महाकुष्ठरोग उत्पन्न होता है। दर्दुरनाम वाला अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेंडकके समान शब्द करता है। तथा गोलाकार होजाता है। इसका भक्षण करनेसे मृत्यु होती है। नागनामवाला अभ्रक अग्निमें डालनेसे फूत्कार करता है, इसके भक्षण करनेसे अवश्य भगन्दररोग उत्पन्न होता है। और वज्रनामक अभ्रक अग्निमें डालनेसे वज्रके समान जैसेका तैसा बना रहता है और विकारको प्राप्त नहीं होता है यह वज्राभ्रक सर्व प्रकारके अभ्रकोंमें उत्तम होकर व्याधि जरा मृत्युको नाश करता है।

वृद्धावस्था और मृत्युको हरनेवाला है । उत्तरके पर्वतोंमें होनेवाला अभ्रक बहुत सत्त्वसम्पन्न और अधिक गुणवाला है तथा दक्षिणके पर्वतोंमें उत्पन्न होनेवाला अभ्रक अल्पसत्त्व और अल्पगुणवाला है ।

अशोधिताभ्रदोषा ।

पीडांविधत्तेविविधांनराणांकुष्ठक्षयपाण्डुगदचशोथम् ।
हृत्पार्श्वपीडाञ्चकरोत्यशुद्धमभ्रंह्यसिद्धगुरुतापदस्यात् ॥

अर्थ-अशुद्ध अभ्रक-अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, सूजन, हृदयकी पीडा, पसवाडेकी पीडा, भारीपन और तापको उत्पन्न करे है ।

अभ्रकोत्पत्ति ।

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतम् । विस्फुलिङ्गास्ततस्तस्यगगनेपरिसर्पित ॥ तेनिपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषुमहीभृताम् । तेभ्यएवसमुत्पन्नतत्तद्गिरिषुचाभ्रकम् ॥ तद्वज्रंवज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् । गगनाद्गलितयस्माद्गगनञ्च ततोमतम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पूर्वकालमें इन्द्रदेवने वृत्रासुरके मारनेको वज्र उठाया उस समय उस वज्रमेसे चिनगारियें निकलकर आकाशमंडलमें फैलगईं, फिर वेही चिंनगारियें गर्जते बादलोंसे निकलकर जिन २ पर्वतोंके शृंगोंमें गिरीं उन्हीं २ पर्वतोंमें अभ्रक उत्पन्न हुआ । यह वज्रसे जो उत्पन्न हुआ इसीसे इसको वज्र कहते हैं, बादलोंके शब्दसे जो प्रगट हुआ इसीसे इसको अभ्रक कहतेहैं और आकाशमे जो गिरा इसी कारण इसको गगन कहते हैं ।

अभ्रे पथ्यम् ।

क्षाराम्लद्विदलंचैवकर्कटीकारवेल्लकम् ।
वृन्ताकंचकरीरंचतैलंचाभ्रेविवर्ज्जयेत ॥

अर्थ-अभ्रकको सेवन करनेवाले मनुष्य क्षार, अम्ल, द्विदल (उडद मूँगादि) ककडी, करेला, बैंगन, करील और तेलको छोडदेवे ।

गन्धकनामानि।

गौरीबीजबलिर्गन्धपाषाणोगन्धकः स्मृतः ।

अर्थ-गौरीबीज, बलि, गन्धपाषाण, गन्धक, (गन्धिक, गन्धाश्म, पामाघ्न, सौगन्धिक, सुगन्धिक, पामारि, शुल्वारि, गन्धी, गन्धमोदन,

और शुद्ध, इसी प्रकार अभ्रक-श्वेतवर्णका, क्षत्रिय अभ्रक-लालरंगका वैश्याभ्रक-पीले रंगका और शूद्राभ्रक काले रंगका होता है ।

प्रशस्यते सितं तारे रक्तं तत्तु रसायने ।
पीतं हेम्नि च कृष्णं तु गदेषु प्रभृतेष्वपि ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—चांदीके बनानेमें सफेद अभ्रक, रसायन कर्ममें लाल, सुवर्णके बनानेमें पीला और रोगोंमें तथा रसायनके लिये कृष्ण अभ्रक लेना चाहिये ।

चतुर्विधाभ्रस्य नामलक्षणगुणाः ।

पिनाकदर्दुरनागवज्रञ्चेति चतुर्विधम् । पिनाकं वर्जयेद्धीमान्दर्दुरं च विशेषतः । तृतीयं नागसंज्ञं च यत्नतः परिवर्जयेत् । मुञ्चत्यग्नौ विनिक्षिप्तं पिनाकं दलसञ्चयम् ॥ अज्ञानाद्भक्षणात्तस्य महाकुष्ठप्रदायकम् । दर्दुरं त्वग्निनिक्षिप्तं कुरुते दर्दुरध्वनिम् ॥ गोलकान्बहुशः कृत्वा तत्स्यान्मृत्युप्रदायकम् । नागं तु नागवद्वह्नौ फूत्कारं परिमुञ्चति ॥ तद्भक्षितमवश्यं तु विदधाति भगन्दरम् । वज्रं तु वज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौ विकृतिं व्रजेत् ॥ वज्रसञ्ज्ञं हितं तेषु सर्वाभ्रेषूत्तमं वज्रं व्याधिवार्धक्यमृत्युहृत् ॥ अभ्रमुत्तरशैलोत्थं बहुसत्त्वं गुणाधिकम् । दक्षिणाद्रिभवञ्चाभ्रमल्पसत्त्वगुणप्रदम् ॥

अर्थ—पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र इन भेदोंसे अभ्रक, चार प्रकारका है । इनमें पिनाक, दर्दुर और नागनामवाला अभ्रक त्यागने योग्य है । पिनाकअभ्रक अग्निमें डालनेसे पत्र २ होजाता है । यदि इसको कोई अज्ञानसे खाले तो उसके महाकुष्ठरोग उत्पन्न होता है । दर्दुरनाम वाला अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेंडककी समान शब्द करता है । तथा गोलाकार होजाता है । इसको भक्षण करनेसे मृत्यु होती है । नागनामवाला अभ्रक अग्निमें डालनेसे फुंकार करता है, इसको भक्षण करनेसे अवश्य भगन्दररोग उत्पन्न होता है । और वज्रनामक अभ्रक अग्निमें डालनेसे वज्रके समान जैसेका तैसा बना रहता है और विकारको प्राप्त नहीं होता है यह वज्राभ्रक सर्व प्रकारके अभ्रकोंमें उत्तम होनेसे व्याधि नाश करता है और,

वृद्धावस्था और मृत्युको हरनेवाला है । उत्तरके पर्वतोंमे होनेवाला अभ्रक वहुत सत्त्वसम्पन्न और अधिक गुणवाला है तथा दक्षिणके पर्वतोंमे उत्पन्न होनेवाला अभ्रक अल्पसत्त्व और अल्पगुणवाला है ।

अशोधिताभ्रदोषा ।

पीडाविधत्तेविविधानराणाकुष्टक्षयपाण्डुगदचशोथम् ।
हृत्पार्श्वपीडाञ्चकरोत्यशुद्धमभ्रह्यसिद्धगुरुतापदस्यात् ॥

अर्थ-अशुद्ध अभ्रक-अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, सूजन, हृदयकी पीडा, पसवाडेकी पीडा, भारीपन और तापको उत्पन्न करे है ।

अभ्रकोत्पत्ति ।

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतम् । विस्फुलिङ्गास्तत-स्तस्यगगनेपरिसर्पित ॥ तेनिपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषुम-हीभृताम् । तेभ्यएवसमुत्पन्नतत्तद्गिरिषुचाभ्रकम् ॥ तद्वज्र-वज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् । गगनाद्गलितयस्माद्गगनञ्च ततोमतम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पूर्वकालमें इन्द्रदेवने वृत्रासुरके मारनेको वज्र उठाया उस समय उस वज्रमेसे चिनगारियें निकलकर आकाशमडलमें फैलगई, फिर वेही चिं-नगारियें गर्जते वादलोंसे निकलकर जिन २ पर्वतोंके शृगोंमे गिरीं उन्हीं २ पर्वतोंमे अभ्रक उत्पन्न हुआ । यह वज्रसे जो उत्पन्न हुआ इसीसे इसको वज्र कहते है, वादलोंके शब्दसे जो प्रगट हुआ इसीसे इसको अभ्रक कहतेहै और आकाशमे जो गिरा इसी कारण इसको गगन कहते हैं ।

अभ्रे पथ्यम् ।

क्षाराम्लद्विदलचैवकर्कटीकारवेल्लकम् ।
वृन्ताकचकरीरचतैलचाभ्रेविवर्जयेत ॥

अर्थ-अभ्रकको सेवन करनेवाले मनुष्य क्षार, अम्ल, द्विदल (उडद मूँगादि) ककडी, करेला, वगन, करील और तेलको छोडदेवे ।

गन्धकनामानि ।

गौरीबीजबलिर्गन्धपाषाणोगन्धक स्मृत ।

अर्थ-गौरीबीज, वलि, गन्धपाषाण, गन्धक, (गन्धिक, गन्धाश्म, पामाघ्न, सौगन्धिक, सुगन्धिक, पामारि, शुल्वारि, गन्धी, गन्धमोदन,

वर, पूतिगन्ध, गन्ध, दिव्यगन्ध, सगन्ध, रसगन्धक, कुष्ठारि, कीटघ्न, क्रूरगन्ध, गन्धभूमिज, बलरस)

संस्कृतभाषामें	गन्धक ।	तैलिङ्गीभाषामें	गधकमु ।
हिन्दीभाषामें	गन्धक ।	अं०	सलफर ब्रिमस्टोन ।
बंगभाषामें	गन्धक ।	फारसीभाषामें	गोगिर्द ।
मराठीभाषामें	गन्धक ।	लैटिनभाषामें	सल्फर ।
गुजरातीभाषामें	गन्धक ।	अरबीभाषामें	किब्रित ।

गन्धकगुणाः ।

गन्धकः कटुकस्तिक्तो वीर्योष्णस्तुवरः सरः ।
पित्तलः कटुकः पाके कण्डूवीसर्पजन्तुजित् ।
हन्ति कुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-गन्धक-चरपरा, कडवा, उष्णवीर्य, कसेला, दस्तावर, पित्तकारक, पचनेमें चरपरा तथा खाज, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, कफ और वातको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

शोधितोयस्तु गन्धः स्याज्जरामृत्युरुजापहः ।
अग्निसन्दीपनः श्रेष्ठो वीर्यवृद्धिकरोऽस्थिकृत् ॥ (र० मृ०)

अर्थ-शोधितगन्धक-जरा और मृत्युनाशक है तथा सब रोगनिवारक है, अग्निदीपक, श्रेष्ठ, शुक्रवर्द्धक और अस्थिजनक है ।

अपिच ।

पवनपित्तकफान्विषकामलान् सकलकुष्ठगदान्हन्ति गन्धक- क । हरति निष्कमितः पयसान्वितो मदनवृद्धिकरो नयनार्तिहृत ॥ (नि० र०)

अर्थ-शोधितगन्धक चार मासे दूधके साथ सेवन करनेसे वातविकार, पित्तविकार, कफविकार, विष, कामला, सब प्रकारके कुष्ठ और नेत्ररोगोंको दूर करते है तथा कामदेवको बढाते है ।

अशुद्धगन्धकदोषाः ।

अशोधितो गन्धकः कुष्ठरोगं करोति तापं विषमं भ्रमं च ।
सौख्यं च रूपं च बलं तथौजः शुक्रं निहन्त्येव करोति रोगान् ॥

अर्थ–अशुद्धगन्धक–कोढ और विषमताप देहमें उत्पन्न करता है तथा सुख, रूप, बल, ओज और शुक्रका नाश करता है और रुधिरको दूषित करे है।

अन्यच्च।

अशुद्धकुरुतेकुष्ठपित्तदाहंभ्रमरुजम्।
हन्तिवीर्य्यंबलरूपंगन्धकशोधयेत्ततः॥

अर्थ–अशुद्धगन्धक–कुष्ठ, पित्त, दाह, भ्रम और पीडाको उत्पन्न करे है। वीर्य्य, बल और रूपका नाश करे है इस कारण प्रथम शोधकर काम लेवे।

गन्धकस्य प्रकारभेदा।

श्वेतोरक्तश्चपीतश्चनीलश्चेतिचतुर्विध.। गन्धकोवर्णतोज्ञेयोभिन्नभिन्नगुणाश्रय.। श्वेत.कुष्ठापहारीस्याद्रक्तोलोहप्रयोगकृत्। पीतोरसेप्रयोगार्होनीलोवर्णान्तरोचित.॥

अर्थ–गन्धक, सफेद, लाल, पीला और नीला इन भेदोंसे चार प्रकारका है, तहा सफेद गन्धक–कुष्ठनाशक है। लाल गधक–लोहके मारनेमें लेना। पीला गन्धक–पारेके विषयमें, उत्तम है, और नीला गन्धक वर्णान्तर तथा रसायनकर्ममें श्रेष्ठ है।

अन्यच्च।

रक्तोहेमक्रियासूक्तःपीतश्चैवरसायने।
व्रणविलेपनेश्वेतःकृष्ण श्रेष्ठ.सुदुर्लभ॥

अर्थ–लाल गधक सुवर्णके बनानेमें लेना, पीलागन्धक रसायन कर्म्ममें लेना, व्रणके लेपादिकमें सफेद गन्धक लेना और कृष्णगन्धक श्रेष्ठ और दुर्लभ है।

श्वेतगन्धकलक्षणम्।

शुक्लपद्मसमच्छायोनवनीतसमप्रभ।
मसृण कठिन स्निग्ध श्रेष्ठगन्धकउच्यते॥

अर्थ–जो सफेद कमलकी समान वर्णवाला, नवनीतकी समान प्रभायुक्त हो मसृण, कठिन और स्निग्ध ऐसा गधक उत्तम कहा जाता है।

गन्धकस्योत्पत्तिः ।

श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडन्त्या रजसाप्लुतम् ।
दुकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ ॥
प्रसृतं यद्रजस्तस्माद्गन्धकः समजायत ।

अर्थ-पूर्वकालमें श्वेतद्वीपमें क्रीडा करती हुई भगवती देवी रजस्वला हुई तब उस रजके भरेहुए कपडेसे भगवती देवी क्षीरसमुद्रमें न्हाई वह रज क्षीरसागरमें गिरा, उससे गन्धककी उत्पत्ति हुई ।

सिन्दूरनामानि ।

सिन्दूरं नागजं वीररक्तं सन्ध्यारुणं शिवम् ॥

अर्थ-सिन्दूर, नागज, वीररक्त, सन्ध्यारुण, शिव ([illegible], [illegible], शृङ्गारभूषण, नागरक्त, नागसम्भव, [illegible], [illegible], रक्तशासन, भालदर्शन, नागरेणु, सीमन्तक?, नागगर्भ, शोण, वीरज?, गणेशभूषण, सन्ध्याराग, शृङ्गारक, सौभाग्य, अरुण, मङ्गल्य, मंगल, नागधातु)

संस्कृतभाषामें	सिन्दूर ।	अंग्रेजीभाषामें	रेड ओक्साइड ।
हिन्दीभाषामें	सिन्दूर ।	फारसीभाषामें	[illegible] ।
बंगभाषामें	सिन्दूर ।	लैटिनभाषामें	मिनियम रेडलेड ।
मराठीभाषामें	शेंदूर ।	तामीलभाषामें	[illegible] ।
तैलङ्गीभाषामें	सेन्दुरम् ।	अरबीभाषामें	उसरंज ।

सिन्दूरगुणाः ।

सिन्दूरमुष्णं वीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् ।
भग्नसन्धानजननं व्रणशोधनरोपणम् ॥

अर्थ-सिन्दूर-गरम, विसर्पनाशक, कुष्ठनाशक, खुजलीनाशक, विषहर्ता तथा भग्नसन्धानकारक, व्रणको शोधन तथा भरनेवाला है ।

सिन्दूरस्य स्वरूपम् ।

सीसोपधातुः सिन्दूरं गुणैस्तत्सीसवन्मतम् ।
संयोगजप्रभावेण तस्याप्यन्ये गुणाः स्मृताः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सिन्दूर सीसेसे बनाया जाता है इस कारण सिन्दूरको सीसेकी उपधातु कहते हैं, सिन्दूरके गुण सीसेके समान हैं परन्तु संयोगके प्रभावसे और भी गुण करते हैं ।

मन शिलानामानि ।

मनःशिलाचगोलाचमनोज्ञानागजिह्विका ।
मनोगुप्तारोगशिलानैपालीकुनटीशिला ॥

अर्थ–मनःशिला, गोला, मनोज्ञा, नागजिह्विका, मनोगुप्ता, रोगशिला, नैपाली, कुनटी, शिला, (मनःसिल, कुलटी, मनोह्वा, नेपालिका, कल्याणिका, नागमाता, रमनेत्रिका, दिव्यौपधि)

संस्कृतभापामें	मनःशिला ।	तैलङ्गीभापामे	मानुशिला ।
हिन्दीभापामे	मनशिल, मैनशिल।	फारसीभापामें	जरनिख, अहेमर ।
बंगभापामें	मनछाल ।	इंग्रेजीभापामें	रीलेगार ।
मराठीभापामें	मनशील ।	लैटिन्भापामें	आर्सेनिक, सलफडम् ।
गुजरातीभापामे	मणशल ।		

मन शिलागुणा ।

मनःशिलागुरुर्बल्यासरोष्णालेखनीकटु ।
तिक्तास्निग्धाविपश्वासकासभूतकफास्रनुत् ॥

अर्थ–मनशिल–भारी, बलकारी, सारक, गरम, लेखा, चरपरी, कडवी, स्निग्ध तथा विप, श्वास, खासी भूत, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करे है ।

अशोधितमन शिलादोषा ।

मन शिलामन्दबलकरोतिजन्तुन्ध्रुवंशोधनमन्तरेण ।
मलानुबन्धकिलमूत्ररोधमशर्करंकृच्छ्रगदचकुर्य्यात् ॥

अर्थ–अशुद्धमनशिल–बलको कम करनेवाली, मलरोधक, मूत्ररोधक, शर्करारोगजनक और मूत्रकृच्छ्र रोगको करे है ।

हरितालमन शिलयोभेद ।

तालकस्यैवभेदोऽस्तिमनागेवतदन्तरम् ।
तालकमतिपीतस्याद्रक्तामन शिला ॥

अर्थ–हरिताल और मनशिल इन दोनोंमें केवल इतनाही अंतर है कि, हरिताल अत्यन्त पीली और मनशिल लाल होतीहै ।

हरितालनामानि ।

पिञ्जरपित्तलतालमनोज्ञहरितालकम् ।

छगागकाञ्चनरम्भंगोदन्तनटमण्डनम् ॥

अर्थ-पिञ्जर, पिंजल, ताल, मनोज, हरितालक, छगाङ्ग, काञ्चनगम, गोदन्त, नटमण्डन (विस्रगन्धि, पीतक हरिताल, वपुर, पीता, हरिबीज, सिद्धधातु, पिञ्जल, लोमहृत्, वंशपत्रक, वर्णक, अल, पीत, गोरोच, चित्राङ्ग, पिञ्जरक, चन्दल, ताल्पक, फलताल, काञ्चनक, विडालक, विस्रगन्ध, पिङ्ग, पिङ्गसार, गौरीललित)

सं०	हरिताल ।	म०	हरिताल ।
हिं०	हरिताल ।	इं०	ओर्पिमेंट ।
बं०	हरिताल, हलेद ।	ले०	यलोआर्सनिकसल्फाइड
म०	हरताळ ।	अ०	जर्नीख अस्फर ।

हरितालगुणाः ।

हरितालंकटुस्निग्धकषायोष्णहरंद्विषम् ।
कण्डूकुष्ठास्यरोगास्त्रकफपित्तकचव्रणान् ॥

अर्थ-हरिताल-चरपरी, स्निग्ध, कषेली, गरम, विषनाशक तथा खाज, कुष्ठ, मुखरोग, रुधिरविकार, कफ, पित्त, बाल और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शोधितहरितालन्तुकान्तिवीर्य्यविवर्द्धनम् ।
कुष्ठादिकफरोगघ्नंजरामृत्युहरंपरम् ॥

अर्थ-शोधित हरिताल-कान्तिजनक, वीर्यवर्द्धक, कुष्ठादिरोगनाशक, कफरोगनाशक, जरा और मृत्युका नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

अशीतिवातान्कफपित्तरोगान्कुष्ठानिमेहाश्रगुदामयांश्च ।
निहन्तिगुञ्जार्धमितंतुतालंपक्वंक्रमवर्द्धनमप्ययुक्तम् ॥

अर्थ-आधी चौंटलीभर हरितालकी भस्म और ८ भाग चांदी मिला कर खानेसे अस्सी प्रकारके वात, कफ, पित्त, कुष्ठ, प्रमेह और बवासीर दूर होवेंहैं ।

अशुद्धहरितालदोषाः ।

अशुद्धन्तालमायुर्घ्नंकफमारुतमेहकृत् ।
तापस्फोटादिरोगान्दुरुकुर्तेनभोजयन् ॥

अर्थ-अशोधित हरिताल-आयुनाशक, कफकारक, वातवर्द्धक, प्रमेहजनक, तापजनक, विस्फोटकारक और अगसकोचक है ।

अपिच ।

अशुद्धतालंखलुपीतवर्णंसधूमकंवातचयचपित्तम् ।
पगुत्वकुष्ठेतनुतेचतेनदेहस्यनाशंचकरोतिसद्य· ॥

अर्थ-अशुद्ध हरताल-पीली और अग्निमें डालनेसे धुआ देने लगतीहै ऐसी हरिताल-वातपित्तको बढानेवालीहै, देहमें पगुता और कुष्ठको उत्पन्न करनेवाली है और तत्काल देहनाशक है ।

अन्यच्च ।

हरतिचहरितालचारुतांदेहजाताम् सृजतिचबहुतापमंगसङ्कोचपीडाम् ॥ वितरतिकफवातौकुष्ठरोगंविदध्यादिदमशितमशुद्धमारितंचाप्यसम्यक् ॥

अर्थ-अशुद्ध और कुविधिसे मारी हुई हरिताल-देहकी सुदरताको हरनेवाली घोर ताप तथा अगोंका सकोच और पीडाको करनेवाली, कफवातको बढानेवाली और कोढको करनेवाली है ।

हरितालस्यप्रकारभेदा ।

हरितालद्विधाप्रोक्तंपत्राख्यपिण्डसज्ञकम् । तयोराद्यंगुणैश्रेष्ठततोहीनगुणपरम् ॥स्वर्णवर्णंगुरुस्निग्धसपत्रचाभ्रपत्रवत् । त्राख्यतालकविद्याद्गुणाढ्यंतद्रसायनम् ॥ निष्पत्रपिण्डसदृशस्वल्पसत्त्वतथागुरु । स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्पगुणतत्पिण्डतालकम् ॥

अर्थ-पत्रहरिताल और पिंडहरिताल इन भेदोंसे हरिताल दो प्रकारकी है तहा पत्रहरिताल (तबकिया) गुणोंमे श्रेष्ठ और पिण्डहरिताल हीनगुणवालीहै । जो हरिताल स्वर्णके समान वर्णवाली हो, भारी हो, स्निग्ध हो और अभ्रककी समान पत्रयुक्त हो वह पत्रहरिताल जाननी यह हरिताल अधिक गुणवाली और रसायन है और जो पत्ररहितहो पिण्डकी समान गोल हो वह अल्पसत्त्वयुक्त, हलकी, स्त्रीके पुष्पका नाश करनेवाली और अल्पगुणवाली ऐसी पिंडहरिताल जाननी ।

अन्यच्च ।

हरितालोऽष्टधाप्रोक्तोगोदन्तःसर्वतोऽधिकः ।
तदभावेतुपत्राख्योयोज्यस्स्थापनंपरं ॥

अर्थ-हरिताल आठ प्रकारकी कहीहै, उन सबमें गोदन्त हरिताल उत्तम है, गोदन्त हरितालके अभावमें पत्राख्य हरिताल लेनी यह अवस्था स्थापक है ।

हरितालभस्मानुपानम् ।

सर्वरक्तविकारेषुदद्यमाम्रहरिद्रया । सुहालाहलजीराभ्याम-
पस्मारहरंपरम् ॥ समुद्रफलयोगेनजलोदरविनाशनम् ।
देवदारुरसैर्युक्तभगन्दरहरंपरम् । फिरंगोपदंशरोगजातक-
न्तिसुदुर्लभम् ॥ विसर्पमण्डलंकण्डूपामाविस्फोटकस्तथा ।
वातरक्तकृतान्रोगानन्यानपिविनाशयेत् ॥

अर्थ-हरितालकी भस्म-सर्वप्रकार रक्तविकारमें आमिहलदीके साथ देनी चाहिये, वत्सनाग विष और जीरेके साथ अपस्माररोगमें देनी चाहिये, समुद्रफलके साथ जलोदररोगमें देनी चाहिये और देवदारुके रसके साथ भगन्दर, फिरंगोपदंश, विसर्प, मण्डल, कण्डू, पामा, विस्फोट और वात रक्तजनित रोग तथा अन्यान्य रोगोंको दूर करैहै ।

हरितालभक्षणप्रमाणम् ।

भक्षयेद्रत्तिमात्रन्तुयथायोगेनतालकम् ।
क्षाराम्लौचकटून्त्यक्त्वामिष्टभोजनमाचरेत् ॥

अर्थ-हरिताल प्रथम एक गुंजा प्रमाण भक्षण करनी चाहिये तथा खार, खटाई और कटुपदार्थ नहीं खावे और मिष्ट भोजन करे ।

हरितालवर्ज्यम् ।

श्वासेकासेक्षयेदुष्टेपित्तेवातेचशोणिते ।
दद्रुपामाव्रणेकुष्ठेतालकंनप्रदापयेत् ॥

अर्थ-हरिताल-श्वास, खांसी, क्षय, पित्त, वातरक्त, दाद, पामा, व्रण और कुष्ठरोगमें देनी चाहिये ।

हरितालादीनामुत्पत्तिः ।

हरितालहरेर्वीर्य्यलक्ष्मीवीर्य्यमनःशिला ।
पारदशिववीर्य्यस्याद्गन्धकपार्वतीरजः ॥

अर्थ -विष्णुके वीर्यसे हरिताल, लक्ष्मीके वीर्य्यसे मनशिल, शिवके वीर्य्यसे पारा और पार्वतीके रजसे गन्धककी उत्पत्ति है ।

विवरण । हरिताल-वर्गपत्री, स्तवक (तवकिया) और पिण्डाख्य (गुवरिया) इन भेदोंसे कई प्रकारकीहै दूसरी एक गोदन्ती हरिताल होतीहै ।

कासीसनामानि ।

कासीसधातुकासीसखाचरधातुशेखरम् ।
शोधनंपांसुकासीसकेसरहसलोमशन् ॥

अर्थ—कासीस, धातुकासीस, खाचर, धातुशेखर, शोधन, पांसुकासीस, केसर, हसलोमश (शुभ्र, कासीस, नेत्रौषध)

पुष्पकासीसनामानि ।

द्वितीयंपुष्पकासीसवत्सकचमलीमसम् ।
ह्रस्वनेत्रौषधंयोज्यंविशदंनीलमृत्तिका ॥

अर्थ—पुष्पकासीस, वत्सक, मलीमस, ह्रस्व, नेत्रौषध, विशद, नील-मृत्तिका ।

संस्कृतभाषामें	कासीस, पुष्पकासीस ।
हिन्दीभाषामें	कसीस, पुष्पकसीस ।
बंगभाषामें	धातुकासीस, पुष्पकासीस ।
मराठीभाषाम	हिराकस, श्वेतनीळी ।
गुजरातीभाषाम	हीराकशी वे जातनी छे नीली तथा धोळी ।
कर्णाटकीभाषामें	कासीस ।
इंग्रेजीभाषामें	सल्फेट ऑफ् आयर्न । Sulphate of iron vitriolgreen विटिअलग्रीन्
लै०	फेरिसल्फास Ferry Sulphas
फारसीभाषाम	जाकेमज्ज ।
अरबीभाषामें	जाजेअख्दर, जाजेअस्फर ।

कासीसगुणाः ।

कासीसन्तु कषायं स्याच्छिशिरं विषकुष्ठजित् । खर्जूकृमिहरं चैव चक्षुष्यं कान्तिवर्द्धनम् ॥ पुष्पकासीसकं तिक्तं शीतलं नेत्रामयापहम् । लेपनं पामाकुष्ठादि नानात्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-कसीस-कषैला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी कान्तिवर्द्धक, तथा विष, कुष्ठ, खाज और कृमिका नाश करे है। पुष्पकसीस-कडवा, शीतल, नेत्ररोगनाशक, इसका लेप करनेसे पामा, कुष्ठादि और अनेक प्रकारके त्वचाके विकार दूर होते हैं।

अन्यच्च ।

कासीसन्तु वरं शीतं चक्षुष्यं कान्तिवर्द्धनम् । अम्लमुष्णमतिक्तञ्च केश्यं क्षारं विषप्रणुत् ॥ वृष्यं च श्वित्रकुष्ठघ्नं मूत्रकृच्छ्राश्मरीहरम् । कफवातव्रणकुष्ठघ्नं नेत्रविनाशयेत् ॥

अर्थ-कासीस-कषैला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा कान्तिवर्द्धक और उष्ण, खट्टा केशोंको हितकारी, क्षार, विषनाशक, वृष्य, श्वित्रकुष्ठ, नाशक तथा मूत्रकृच्छ्र पथरी, कफ, वात, व्रण, कुष्ठ और नेत्ररोगका नाश करे है।

अपरंच ।

पुष्पादिकासीसमपि प्रशस्तमोषङ्कषायाम्लमतीवनेत्र्यम् ।
विषानिलश्लेष्मगदव्रणघ्नं श्वित्रक्षयघ्नं कचरञ्जनञ्च ॥
वातश्लेष्महरं केश्यं नेत्रकण्डूविषप्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनं परिकीर्तितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पुष्पकासीस-अत्यन्त उत्तम गरम, कषैला खट्टा, अतिशय नेत्रोंको हितकारी तथा विष वात कफ, व्रण, श्वेतकुष्ठ और बालोंका रंगनेवाला है, वातकफ, बाल, कण्डू, नेत्र और केशोंको हितकारी विष, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूर करे है।

कासीसलक्षणम् ।

भस्मानुवृत्तिरान्द्रपकासीसधातुद्वयेऽपि ।
तदेवाति बिल्वितं पुष्पकासीसमुच्यते ।

अर्थ–धातुकासीस–भस्मकी समान अम्लमृत्तिका होतीहै और पुष्पकासीस धातुकासीससे कुछेक पीला होता है।

गैरिकनामानि।

गिरिमृद्गैरिकरक्तधातुर्लोहितमृत्तिका ।

अर्थ–गिरिमृत्, गैरिक, रक्तधातु, लोहितमृत्तिका (गिरिधातु, गवेधुक, धातु, सुरगधातु, गिरिमृद्भव, वनालक्त, गवेरुक, मत्यश्म, गिरिज, गैरेय, ताम्रधातु)

सुवर्णगैरिकनामानि।

सुवर्णगैरिकचान्यत्सुरक्तंस्वर्णगैरिकम् ।

अर्थ–सुवर्णगैरिक, सुरक्त, स्वर्णगैरिक, (स्वर्णधातु, शिलाधातु, सन्ध्याभ्र, बभ्रुधातु, सुरक्तक)

पाषाणगैरिकनामानि।

पाषाणगैरिकप्रोक्तकठिनताम्रवर्णकम् ।

अर्थ–पाषाणगैरिक, कठिन, ताम्रवर्णक।

संस्कृतभाषामें	गैरिक, सुवर्णगैरिक, पाषाणगैरिक ।
हिंदीभाषामें	गेरु, पीला गेरु, हिरौंजी ।
बंगभाषामें	गिरिमाटी ।
मराठीभाषामें	सोनगेरु, तांबेगेरु, हुरमुजी ।
गुजरातीभाषामें	गेरु, सोनागेरु, हडमची ।
कर्णाटकीभाषामें	जाजु, होजाजु ।
इंग्रेजीभाषामें	ओकर Oker रेडलम्बरस्टोन Red lumber stone
लैटिन् भाषामें	बॉलरुब्रा Bole Rubia
फारसीभाषामें	गिलेसुर्खमिश्री ।
अरबीभाषामें	तीनेमगरेबी अहमर ।

गैरिकगुणाः।

गैरिकरक्तपित्तास्रकफहिक्काविषापहम्।
चक्षुष्यमन्यद्बल्यचविशेषाद्वान्तिनाशनम् ॥

अर्थ–गेरु–रक्तपित्त, रक्तविकार, कफ, हिचकी और विषका नाश करे है, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक और विशेषकरके वमननिवारक है।

अन्यच्च।

विशदोगैरिकःस्निग्ध कषायोमधुरोहिम ।

कासीसगुणाः ।

कासीसतुकषायस्याच्छिशिरंविषकुष्ठजित् । खर्ज्जूकृमिहरंचैवचक्षुष्यंकान्तिवर्द्धनम् ॥ पुष्पकासीसकतिक्तशीतंनेत्रामयापहम् । लेपेनपामाकुष्ठादिनानात्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-कसीस-कषेला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कान्तिवर्द्धक, तथा विष, कुष्ठ, खर्ज्जू और कृमिका नाश करे है । पुष्पकासीस-कडवा, शीतल, नेत्ररोगनाशक, इसका लेप करनेसे पामा, कुष्ठादि और अनेक प्रकारके त्वचाके विकार दूर होते हैं ।

अन्यच्च ।

कासीसतुवरंशीतचक्षुष्यकान्तिवर्द्धनम । अम्लमुष्णञ्चतिक्तञ्चकेश्यंक्षारविषप्रणुत् ॥ वृष्यचश्चित्रकुष्ठघ्नंमूत्रकृच्छ्राश्मरीहरम् । कफवातव्रणकुष्ठक्षयंचैवविनाशयेत ॥

अर्थ-कासीस-कषेला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कान्तिवर्द्धक, अम्ल उष्ण, कडवा केशोंको हितकारी, क्षार, विषनाशक, वृष्य, श्वित्रकुष्ठ, नाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी कफ, वात, व्रण, कुष्ठ और क्षयरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

पुष्पादिकासीसमपिप्रशस्तमोष्णंकषायाम्लमतीवनेत्र्यम ।
विषानिलश्लेष्ममतिव्रणनश्वित्रक्षयघ्नंकचरञ्जनञ्च ॥
वातश्लेष्महरंकेशनेत्रकण्डूविषप्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनपरिकीर्त्तितम ॥ (नि० र०)

अर्थ-पुष्पकासीस-अत्यन्तप्रशस्त, गरम, कषेला, खट्टा, अतिशय नेत्रोंको हितकारी तथा विष, वात, कफ, व्रण, श्वेतकुष्ठ और क्षयरोगका नाशकरे है, केशरञ्जन, वात, कफ, नेत्र और केशोंकी खुजली, विष, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूर करे है ।

कासीसलक्षणम् ।

भस्मवन्मृत्तिकाम्लञ्चकासीसंधातुइत्यपि ।
तदेवकिञ्चित्पीतंतुपुष्पकासीसमुच्यते ।

अर्थ-धातुकासीस-भस्मकी समान अम्लमृत्तिका होतीहै और पुष्पकासीस धातुकासीससे कुछेक पीला होता है ।

गैरिकनामानि ।

गिरिमृद्गैरिकरक्तधातुर्लोहितमृत्तिका ।

अर्थ-गिरिमृत्, गैरिक, रक्तधातु, लोहितमृत्तिका (गिरिधातु, गवेधुक, धातु, सुरगधातु, गिरिमृद्भव, वनालक्त, गवेरुक, मत्यश्म, गिरिज, गैरेय, ताम्रधातु)

सुवर्णगैरिकनामानि ।

सुवर्णगैरिकचान्यत्सुरक्तस्वर्णगैरिकम् ।

अर्थ-सुवर्णगैरिक, सुरक्त, स्वर्णगैरिक, (स्वर्णधातु, शिलाधातु, सन्ध्याभ्र, बभ्रुधातु, सुरक्तक)

पाषाणगैरिकनामानि ।

पाषाणगैरिकप्रोक्तकठिनताम्रवर्णकम् ।

अर्थ-पाषाणगैरिक, कठिन, ताम्रवर्णक ।

संस्कृतभाषामें	गैरिक, सुवर्णगैरिक, पाषाणगैरिक ।
हिंदीभाषामें	गेरु, पीला गेरु, हिरोंजी ।
वंगभाषामें	गिरिमाटी ।
मराठीभाषामें	सोनगेरु, तांबेगेरु, हुरमुजी ।
गुजरातीभाषामें	गेरु, सोनागेरु, हडमची ।
कर्णाटकीभाषामें	जाजु, होजाजु ।
इंग्रेजीभाषामें	ओकर Oker रेडलम्बरस्टोन Red lumber stone
लेटिन् भाषामें	बॉलरुब्रा Bole Rubra
फारसीभाषामें	गिलेसुर्खमिश्री ।
अरबीभाषामें	तीनेमगरेबी अहमर ।

गैरिकगुणाः ।

गैरिकरक्तपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ।
चक्षुष्यमन्यद्वल्यचविशेषाद्वान्तिनाशनम् ॥

अर्थ-गेरु-रक्तपित्त, रक्तविकार, कफ, हिचकी और विषका नाश करे है, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक और विशेषकरके वमननिवारक है ।

अन्यच्च ।

विशदोगैरिक·स्निग्ध·कषायोमधुरोहिमः ।

चक्षुष्योरक्तपित्तघ्नश्छर्दिहिक्काविषापहः ॥

अर्थ-गेरु-विशद, स्निग्ध, कपेला, मधुर, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, रक्तपित्तनाशक, तथा वमन, हिचकी और विषविनाशक है।

सुवर्णगैरिकगुणाः।

सुवर्णगैरिकस्निग्धमधुरतुवरमतम्। चक्षुष्यशीतलबल्यव्रणरोपणकारकम् ॥ विशदकान्तिकृत्प्रोक्तदाहपित्तकफजयेत्। हिक्कारक्तरुजज्वरविषविस्फोटकवमिम् ॥ अग्निदग्धव्रणचार्शोरक्तपित्तचनाशयेत ॥

अर्थ-पीला गेरु-स्निग्ध, मधुर, कपेला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, बलकारक, व्रणरोपण, विशद, कान्तिजनक तथा दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अग्निदग्धव्रण, बवासीर और रक्तपित्तको हरनेवाला है।

द्विविधगैरिकगुणाः।

गैरिकद्वितयंस्निग्धमधुरतुवरमतम्।
चक्षुष्यंदाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारके गेरु-स्निग्ध, मधुर, कपेले, नेत्रोंको हितकारी तथा दाह, रक्तपित्त, कफ, हुचकी और विषको हरनेवाले हैं।

खड़ीनामानि।

पाकशुक्काशिलाधातुःकठिनीचखटि.खडी।

अर्थ-पाकशुक्का, शिलाधातु, कठिनी, खटि, खड़ी (खटी, खटिनी, खटिका, धवलमृत्तिका, श्वेतधातु, पाण्डुमृत्तिका, सितधातु, पाण्डुमृत, कक्खटी, वर्णरेखा, वर्णलेखा, मृत्तिकानखा, अनीलधातु, वर्णलेखिका, शुक्लधातु, धातुपट, कठिनिका, लेखनी, मकरू।

संस्कृतभाषामें	खटी।
हिन्दीभाषामें	खरियामाटी, खड़िया, गोरखड़ी।
बंगभाषामें	खड़िमाटी, खाखड़ि।
मराठीभाषामें	खडू।
गुजरातीभाषामें	खडी।
कर्णाटकीभाषामें	वेणेचडु।

इंग्रेजीभाषामें पाईपक्ले । Pipe clay
लैटिन्भाषामें कार्बोनेट् आफ् कलशम् । Corbonate of calcum
फारसीभाषामें गिलेसुफेद, गिलेखरिया ।
अरबीभाषामें तिने अबीयद ।

खटीगुणा ।

खटिकामधुरातिक्ताशीतलाव्रणदोषहा ।
पित्तदाहंकफंरक्तदोषनेत्ररुजजयेत् ॥

अर्थ-खडिया-मधुर, कडवी, शीतल, व्रणनाशक तथा पित्त, दाह, कफ, रुधिरविकार और नेत्ररोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

खटीदाहास्त्रनुच्छीतामधुराविषशोषजित् । कफघ्नीनेत्रयो: पथ्यालेखनाबालकोचिता ॥ तद्वत्पाषाणखटिकाव्रणपित्तास्रजिद्धिमा । लेपादितद्गुणाप्रोक्ताभक्षितामृत्तिकासमा॥

अर्थ-खडिया-दाह, रक्तदोष, विष, शोष और कफको दूर करेहै, शीतल, मधुर, नेत्रोंको हितकारी, लेखन और बालकोंको हितकारीहै । पाषाणखटिका (मेलखडी)-केभी गुण खडियाकी समानहै तथा व्रण, पित्त और रक्तविकारको दूरकरेहै, शीतल इसके लेप करनेम यह गुण है और खानेमें तो मिट्टीकी समान है ।

कपर्दकनामानि ।

कपर्दकोवराटश्चकपर्दीचवराटिका ।

अर्थ-कपर्दक, वराटक, कपर्दी वराटिका (वराट, कपर्द, ऊद्भाहवी, चराचर, चर, वर्ज्य, बालक्रीडक)

संस्कृतभाषामें	कपर्दक ।	गुजरातीभाषाम	कोडी ।
हिन्दीभाषामें	कवडी, कौडी ।	कर्णाटकीभाषामें	कवडी ।
बंगभाषामें	कडि ।	इंग्रेजीभाषामें	कवरीस्Corries
मराठीभाषामें	कवडी ।		

कपर्दिकागुणा ।

कपर्दिकाहिमानेत्रहितास्फोटक्षयापहा ।
कर्णस्रावाग्निमाद्यघ्नीपित्तास्त्रकफनाशिनी ॥

अर्थ-कवडी-शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा स्फोट, क्षय, कर्णस्राव, अग्निमांद्य, रक्तपित्त और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

कटूष्णादीपनीवृष्यागुल्मवातकफापहा ।
परिणामादिशूलघ्नीग्रहणीक्षयनाशिनी ॥

अर्थ-कौडी-चरपरी, गरम, दीपन, वृष्य तथा गुल्म, वात, कफ, परिणामशूल, संग्रहणी और क्षयरोगका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

कपर्द कटुतिक्तोष्ण कर्णशूलव्रणापह ।
शूलगुल्मामयघ्नश्चनेत्रदोषनिकृन्तन ॥

अर्थ-कौडी-चरपरी, कडवी, गरम तथा कर्णशूल, व्रण, शूल गुल्म और नेत्ररोगका हरनेवाली है ।

कपर्दिकाभेदा ।

वराटिकात्रिधाप्रोक्ताश्वेताशोणात्रिधापरा । पीतान्यतीक्ष्णा चक्षुष्याश्वेताशोणाहिमाव्रणा ॥ अतिबिंदुभिरश्वेतैर्लांछिता रेखयाथवा । बालग्रहहरानानाकौतुकेपुचपूजिता ॥ पीता गुल्मयुतापृष्ठेरसयोगेषुयोजयेत । सार्धनिष्कप्रमाणासा श्रेष्ठायोगेषुयोजयेत ॥ निष्कप्रमाणामध्यासाहीनापादोननिष्कका ॥

अर्थ-कौडी सफेद, लाल और पीली इन भेदोंसे तीनप्रकारकी है, तहां पीली कौडी-तीक्ष्ण और नेत्रोंको हितकारी है, सफेद और लाल कौडी-शीतल और व्रणका भरनेवाली है । श्वेत बिंदुयुक्त तथा रेखाओंकरके लांछित ऐसी कौडी-बालग्रहनाशक और अनेक प्रकारके कौतुकोंमें उपयोगी है और जिसकी पीठपर पीली गांठें हों ऐसी कौडी रसकर्ममें लेनी चाहिये । तोलमें डेढ तोलेवाली कौडी उत्तम होती है पर तोलेभरकी कौडी मध्यम और पाव तोले भरकी कौडी कनिष्ठ होती है ।

शुक्तिनामानि ।

शुक्तिर्मुक्ताप्रसूश्चैवमहाशुक्तिश्चशुक्तिका ।
मुक्तास्फोटोब्धिमण्डूकीमौक्तिकप्रसवाचसा ॥

अर्थ-शुक्ति, मुक्तामसू, महाशुक्ति शुक्तिका, मुक्तास्फोट, अब्धिमण्डूकी, मौक्तिकमसवा (दुर्नामा, दीर्घकोपिका, दीर्घकौशिका, पङ्कशुक्ति, मुक्तागार महाशुक्ति, तौतिक, मौक्तिकशुक्ति, मुक्तमाता, मुक्तास्फोटा)

जलशुक्तिनामानि।

जलशुक्तिर्वारिशुक्ति·कृमिसूःक्षुद्रशुक्तिका।
शम्बूकाजलडिम्बश्चपुटिकातोयशुक्तिका॥

अर्थ-जलशुक्ति, वारिशुक्ति, कृमिसु (क्ति), क्षुद्रशुक्तिकाशम्बूका, जल डिंव, पुटिका, तोयशुक्तिका, (नगशुक्ति)

संस्कृतभाषामें	शुक्ति, जलशुक्ति।
हिन्दीभाषामें	मोतीकी सीप, जलसीप
बंगभाषामें	झिनुक, शामुक।
मराठीभाषामें	मोत्याची शिंप, नदींतील शिंप।
गुजरातीभाषामें	मोतीनी छीप, नदीना छिपना।
कर्णाटकीभाषामें	मुक्तिनीसिंपु, तोंगेयसिंपु।
इंग्रेजीभाषामें	ओईस्टरशेल। Oyster shell

शुक्तिगुणा।

मुक्ताशुक्ति कटु स्निग्धाश्वासहृद्रोगनाशिनी।
शूलप्रशमनीरुच्यामधुरादीपनीपरा॥ (रा०नि०)

अर्थ-मोतीकी सीप-चरपरी, स्निग्ध, श्वासनिवारक, हृदयरोगहारक, शूलको दूर करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, मधुर और दीपन है।

अन्यच्च।

मुक्ताशुक्तिस्तुमधुरास्निग्धारुच्याचदीपनी।
कट्वीचकासशूलघ्नीहृद्रोगस्यचनाशिनी॥
स्नायुरोगहरीचैवज्वरघ्नीव्रणभेदिनी॥ (रा०नि०)

अर्थ-मोतीकी सीप-मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, दीपन, चरपरी तथा खासी, शूल, हृदयरोग, स्नायुरोग और ज्वरका नाश करनेवाली है और व्रणभेदक है।

अपिच।

शुक्तिश्चशिशिरापित्तरक्तज्वरविनाशिनी॥

अर्थ-सीप-शीत, पित्त, रुधिरविकार और ज्वरको हरनेवाली है।

जलशुक्तिगुणा ।

जलशुक्तिःकटुःस्निग्धादीपनीगुल्मशूलनुत् ।
विषदोषहरारुच्यापाचनीबलदायिनी ॥

अर्थ-जलसीप-चरपरी, स्निग्ध, दीपन, गुल्मनाशक, शूलनिवारक, विषविकारहारक, रुचिकारक, पाचक और बलवर्द्धक है।

अन्यच्च ।

जलशुक्तिःकटु स्निग्धादीपनीपाचकाचसा ।
रुच्याबलप्रदागुल्मनाशिनीचक्षुषोहिता ॥
विषदोषचशूलंचनाशयेदितिकीर्त्तिता । (रा०नि०)

अर्थ-जलकी सीप-चरपरी, स्निग्ध, दीपन पाचक, रुचिकारक, बलवर्द्धक गुल्मनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा विषदोष और शूलका नाश करैहै।

विवरण। मोतीकी सीप और साधारण सीप इन भेदोंसे सीप दोप्रकारकी होतीहै। तहा मोतीकी सीप अत्यत शुभ्र और सुफेद रगकी समुद्रमे होतीहै। दूसरी सीप नदियोंमें होती है।

शखनामानि ।

शख·समुद्रज·कम्बुःसुनाद·पावनध्वनि ॥

अर्थ-शख, समुद्रज, काम्बु, सुनाद, पावनध्वनि (कम्बु, कर्म्बोज अब्ज, त्रिरेख, जलज, अर्णोभव, अन्त कुटिल, महानाद, श्वेतपूत, मुखर-दीर्घनाद, बहुनाद, हरिप्रिय, दीर्घनिस्वन, सुस्वर, सम्यक्छब्द, जलोद्भव, विष्णुप्रिय, दुष्टदावी, धवल, स्त्रीविभूषण, पांचजन्य, अर्णवभव, अर्णवभवोदर ।

स०	शख ।	गु०	शख ।
हिं०	शख ।	तै०	शखमु ।
व०	शाँक, शंख ।	इं०	कौंच । Conch
म०	शख ।		

शंखगुणा ।

शखोनेत्र्योहिम शीतोलघु पित्तकफास्रजित ।

अर्थ-शख-नेत्रोंको हितकारी, शीतल, हलका, तथा पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै।

अन्यच्च।

शख कटुःसरःशीत·पुष्टिवीर्य्यबलप्रदः।
गुल्मशूलहर श्वासनाशनोविषदोषनुत्।

अर्थ-शख-चरपरा, सारक, शीतल, पुष्टि, वीर्य्य और बलवर्द्धक तथा गुल्म, शूल, श्वास और विषके विकारोंको हरेहै।

अपिच।

शखःशीतःकषायश्चलेखीचाजीर्णशूलजित्।

अर्थ-शख-शीतल, कषेला, लेखन तथा अजीर्ण और शूलनाशक है।

अपिच।

शखस्तुपौष्टिकोबल्योरसकालेकटु·स्मृत·। पटु·शीतोग्राहकश्चचक्षुष्योवर्णकृन्मत·॥ नेत्रपुष्पपंक्तिशूलंगुल्मंसग्रहणीहरेत्। तारुण्यपिटिकागुल्मशूलश्वासहर·स्मृतः॥ दक्षिणावर्तशखस्तुत्रिदोषकामलापह·। विषदोषक्षयनेत्रग्रहपीडाविनाशक·॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-शख-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कटुरसान्वित, खारी, शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी, वर्णकारक तथा नेत्रका फूला, पक्तिशूल, गुल्म सग्रहणी, तारुण्यपिटिका (मुहासे) गुल्म, शूल, और श्वासनाशक है। दक्षिणावर्त्तशख-त्रिदोष, कामलारोग, विषदोष, क्षय, नेत्ररोग और ग्रहकी पीडाको दूर करे है।

शखस्य प्रकारभेदा।

द्विधासदक्षिणावर्त्तिर्वामावर्त्तिस्तुभेदत।
दक्षिणावर्त्तशखस्तुपुण्ययोगादवाप्यते॥
यद्गृहेतिष्ठतिसोवैसलक्ष्म्याभाजनभवेत्।

अर्थ-शख-दक्षिणावर्त्त और वामावर्त्त इन भेदोंसे दोप्रकारका है। दक्षिणावर्त्त शख पुण्यके योगसेही प्राप्त होताहै। और जिसके घरमें यह रहताहै उसके लक्ष्मीकी अधिक वृद्धि होती है।

श्रेष्ठशंखलक्षणम् ।

शंखस्तुविमलःश्रेष्ठश्चन्द्रकान्तिसमप्रभः ।
अशुद्धोगुणदोनैवशुद्धस्तुसुगुणप्रदः ॥

अर्थ-निर्मल और जिसकी चंद्रमाके समान कान्ति हो ऐसा शंख उत्तम है । अशुद्ध शंख गुणदायक नहीं है और शुद्ध शंख गुणदायक है ।

कृमिशंखनामानिगुणाश्च ।

कृमिशंखःकृमिजलजः कृमिवारिश्चजन्तुकम्बुश्च ।
कथितोरसवीर्य्याद्यैः कृतनिधिभिःशंखसदृशोऽयम् ॥

अर्थ-कृमिशंख, कृमिजलज, कृमिवारि, जन्तुकम्बु । कृमिशंख-रसवीर्यादिकमें शंखकेही समानहै ।

क्षुद्रशंखनामानि ।

कोशस्थालघुशंखास्तुक्षुद्रका क्षुल्लकास्तथा ।
शंखनकाश्चशम्बूकाःक्षुद्रशंखानदीभवा ॥

अर्थ-कोशस्थ, लघुशंख, क्षुद्रक, क्षुल्लक, शंखनक, शम्बूक, क्षुद्रशंख, नदीभव ।

क्षुद्रशंखगुणाः ।

शम्बूका शीतलानेत्ररुजास्फोटविनाशिनः ।
शीतज्वरहरास्तीक्ष्णाग्राहिदीपनपाचना ॥

अर्थ-क्षुद्रशंख शीतल, नेत्ररोगनाशक, स्फोटकविनाशक, शीतज्वरनिवारक, तीक्ष्ण, ग्राही, दीपन और पाचक है ।

अन्यच्च ।

शम्बूकःसृष्टविण्मूत्रोमधुरःपित्तरोगहा ।

अर्थ-क्षुद्रशंख (घोंघा)-मल और मूत्रको करनेवाला, मधुर और पित्तरोग नाशक है ।

अपिच ।

क्षुल्लकःकटुकस्तिक्तःशूलघ्नोऽग्निदीपनः ।

अर्थ-क्षुल्लक (घोंघा)-चरपरा, कडवा, शूलनाशक और दीपन है ।

शंखद्रावनामानि ।

कङ्कुष्ठंकालकुष्ठञ्चविरङ्गंरङ्गदायकम् ।

अर्थ-कंकुष्ठ, कालकुष्ठ, विरग, रगदायक (रेचक, पुलक, शोधक, कालपालक)

संस्कृतभाषामें	कंकुष्ठ ।
हिंदीभाषामें	कंकुष्ठ (मुरदासिंग) ।
बंगभाषामें	पार्वतीयमृत्तिकाविशेष ।
मराठीभाषामें	कुंकुष्ठ ।
गुजरातीभाषामें	पीळीयो ।

कंकुष्ठगुणा ।

कंकुष्ठरेचनतिक्तकटूष्णवर्णकारकम् ।
कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कंकुष्ठ-दस्तावर, कडवा, चरपरा, वर्णकारक तथा कृमि, सूजन, उदर, आध्मान, गुल्म, आनाह और कफरोगका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

कंकुष्ठतिक्तकटुकवीर्य्यंचोष्णंप्रकीर्त्तितम् ।
गुल्मोदावर्त्तशूलघ्नरसजन्तुव्रणापहम् । (रत्नाकर)

अर्थ-कंकुष्ठ-कडवा, चरपरा, उष्णवीर्य तथा गुल्म, उदावर्त्त, शूल, रस, जन्तु और व्रणविनाशक है ।

अन्यच्च ।

कंकुष्ठपित्तकृद्भेदिविबंधकफगुल्मनुत् । भजेदेनविरेकार्थे ग्राहिभिर्यवमात्रया॥नाशयेदामपूतिचविरेच्यंक्षणमात्रतः । सुभक्षितचताम्बूलविरेकतविनाशयेत ॥

अर्थ-कंकुष्ठ-पित्तकारक, भेदक तथा विबंध, कफ और गुल्मको दूर करेहै । इसको एक जौकी बराबर मलरोधी मनुष्योंको देनेसे क्षणमात्रमें दस्त होने लगतेहैं और दुर्गंध आम दूर होजातीहै तथा ताम्बूलके खानेसे वही दस्त बंद हो जातेहैं ॥

कंकुष्ठोत्पत्तिलक्षणम् ।

हिमवत्पादशिखरेकंकुष्ठमुपजायते। तत्रैकनलिकाख्यस्यात्तदन्यरेणुकस्मृतम् ॥ पीतप्रभंगुरुस्निग्धश्रेष्ठकंकुष्ठमादिमम् । श्यामपीतंलघुत्यक्तसत्त्वंनेष्टहिरेणुकम् ।

अर्थ-कंकुष्ठ हिमालय पर्वतके शिखरोंमें उत्पन्न होताहै, तहां एक नलिकाख्य और दूसरा रेणुक कहा जाताहै । इनमें पीला, भारी, चिकना ऐसा श्रेष्ठ कंकुष्ठ होताहै और काला, पीला, हलका और जिसमें सत्त्व न हो वह कनिष्ठ और उसको रेणुक कंकुष्ठ कहते हैं ।

अपिच ।

केचिद्वदन्तिकंकुष्ठंसद्योजातस्यदन्तिनः ।
वर्च्चश्चश्यामपीताभंतदतीवविरेचनम् ॥

अर्थ-कोई मुरदेसिंगको तत्कालके उत्पन्न हुवे हाथीके बच्चेकी विष्ठा कहतेहैं । यह श्याम और पीली प्रभावाला होताहै तथा अत्यन्त दस्तावर है ।

शखजीरस्यनामानि ।

कम्बुजीरः श्लक्ष्णजीरस्तथाश्लक्ष्णमृदापिच ।

अर्थ-कम्बुजीर, श्लक्ष्णजीर, श्लक्ष्णमृत् [३] ।

संस्कृतभाषामें	शखजीरक ।
हिन्दीभाषामें	सगनगाहत ।
मराठीभाषामें	शखजिरें ।
गुजरातीभाषामें	शखजीरु ।
इंग्रेजीभाषामें	सोपस्टोन् । Soapstone
लेटिनभाषामें	सिलिकेट ऑफ मेगनिश्या । Silicate of Magnesia
फारसीभाषामें	सगे जराहत ।
अरबीभाषामें	हजरुल् परावी ।

अस्य गुणाः ।

शंखाभिधजीरकस्तुव्रणदाहरुचजयेत् ।
प्रलेपाच्छोफवीसर्पकक्षारक्तविकारजित् ॥

अर्थ-शंखजीरक (सगरजराहत)-व्रण और दाहरोगको दूर करै है । इसका लेप करनेसे सूजन, विसर्प, कक्षा और रक्तविकार दूर होताहै ।

स्फटीनामानि ।

स्फटीचस्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरंगदा ॥
दृढरंगारंगदृढादृढारंगापिकथ्यते ॥

अर्थ-स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रगदा, दृढरगा, रगदृढा, दृढा, रंगा (स्फटिकारि, स्फटिकारिका, रगाङ्गा, सुरगा, गतरगा)

स० स्फटिकारि ।	तै० फाटिके ।
हिं० फटकिरी ।	अ० विट्रील ह्वाईट आलम् ।
व० फटफिरी ।	लै० हैड्रार्जिरमूसल फ्युरेटम् ।
म० तुर्टी, फटकी ।	फा० जाकसफेते ।
क० फटकी ।	अ० जाज कल्कतार ।

अस्य गुणा ।

स्फाटिकातुकषायोष्णावातपित्तकफव्रणान् ।
निहन्तिश्वित्रवीसर्पान्योनिसङ्कोचकारिणी॥(भा०प्र०)

अर्थ-फटकिरी-कषेली, गरम तथा वात, पित्त, कफ, व्रण, श्वित्रकुष्ट और विसर्पको दूर करे है तथा योनिको सकुचित करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

स्फाटिकीतुवरास्निग्धाकट्वीरगप्रदामता । रसबन्धकरीकुष्ट व्रणप्रदरनाशिनी॥विपदोपंमूत्रकृच्छ्रवान्तिशोपत्रिदोपक-म् । प्रमेहचनाशयत्येवपूर्वाचार्य्यैर्निवेदितम्॥ (रत्नाकर)

अर्थ-फटकिरी-कषेली, स्निग्ध, चरपरी, रगप्रद, रसबन्धक तथा कुष्ट, व्रण, प्रदर, विषविकार, मूत्रकृच्छ्र, वमन, शोष, त्रिदोष और प्रमेह रोगको हरनेवाली है ।

चुम्बकनामानिगुणाश्च ।

चुम्बक कान्तपाषाणोऽयस्कान्तोलोहकर्षक ।
चुम्बकोलेखन शीतोमेदोविषगरापह ॥

अर्थ-चुम्बक, कान्तपाषाण, अयस्कान्त और लोहकर्षक । चुम्बकपत्थर-लेखन, शीतल तथा मेद, विष और उपविषको दूर करे है ।

राजावर्त्तगुणा ।

राजावर्त्त कटुस्तिक्तःशिशिरःपित्तनाशन· ।
राजावर्त्तःप्रमेहघ्नश्छर्दिहिक्कानिवारण ॥

अर्थ-राजावर्त्त-(रेवगी)-कटु, तिक्त, शीतल, पित्तनाशक तथा ... वमन और हिचकीको दूर करे हैं ।

अर्थ-ककुष्ठ हिमालय पर्वतके शिखरोंमें उत्पन्न होताहै, वहां एक नलिकाख्य और दूसरा रेणुक कहा जाताहै । इनमें पीला, भारी, चिकना ऐसा श्रेष्ठ ककुष्ठ होताहै और काला, पीला, हलका और जिसमें सत्त्व न हो वह कनिष्ठ और उसको रेणुक ककुष्ठ कहते हैं ।

अपिच ।

केचिद्वदन्तिककुष्ठसद्योजातस्यदन्तिनः ।
वर्च्चश्चश्यामपीताभतदतीवविरेचनम् ॥

अर्थ-कोई मुरदेसिंगको तत्कालके उत्पन्न हुवे हाथीके बच्चेकी विष्ठा कहतेहैं । यह श्याम और पीली प्रभावाला होताहै तथा अत्यन्त दस्तावर है ।

शखजीरकनामानि ।

कम्बुजीर श्लक्ष्णजीरस्तथाश्लक्ष्णमृदापिच ।

अर्थ-कम्बुजीर, श्लक्ष्णजीर, श्लक्ष्णमृत् [द्] ।

संस्कृतभाषामें	शंखजीरक ।
हिन्दीभाषामें	संगजराहत ।
मराठीभाषामें	शंखजिरें ।
गुजरातीभाषाम	शंखजीरु ।
इंग्रेजीभाषामें	सोपस्टोन् । Soapstone
लॅटिन्भाषामें	सिलिकेट ऑफ मेगनिश्या । Silicate of Magnesia
फारसीभाषाम	संगे जराहत ।
अरबीभाषामें	हजरुल एगवी ।

अस्य गुणाः ।

शंखाभिधंजीरकतुव्रणदाहरुचजयेत् ।
प्रलेपाच्छोफवीसर्पकक्षारक्तविकारजित् ॥

अर्थ-शंखजीरक (संगजराहत)-व्रण और दाहरोगको दूर करे है । इसका लेप करनेसे सूजन, विसर्प, कक्षा और रक्तविकार दूर होताहै ।

स्फटीनामानि ।

स्फटीचस्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरंगदा ॥
दृढरंगारंगदृढादृढारंगापिकथ्यते ॥

अर्थ-स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रगदा, दृढरगा, रगदृढा, दृढा, रगा (स्फटिकारि, स्फटिकारिका, रगाङ्गा, सुरगा, गतरगा)

स० स्फटिकारि ।	तै० फाटिके ।
हिं० फटकिरी ।	अ० विट्रील हाईट आलम् ।
व० फटफिरी ।	लै० हैड्राजिरमसल फ्युरेष्टम् ।
म० तुर्टी, फटकी ।	फा० जाकसफेते ।
क० फटकी ।	अ० जाज कल्कतार ।

अस्य गुणा ।

स्फाटिकातुकषायोष्णावातपित्तकफव्रणान् ।
निहन्तिश्वित्रवीसर्पान्योनिसङ्कोचकारिणी॥(भा०प्र०)

अर्थ-फटकिरी-कपेली, गरम तथा वात, पित्त, कफ, व्रण, श्वित्रकुष्ठ और विसर्पको दूर करे है तथा योनिको सकुचित करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

स्फाटिकीतुवरास्निग्धाकट्वीरंगप्रदामता । रसवन्धकरीकुष्ठ व्रणप्रदरनाशिनी॥विषदोषंमूत्रकृच्छ्रंवान्तिशोषत्रिदोषक-म् । प्रमेहंचनाशयत्येवपूर्वाचार्य्यैर्निवेदितम्॥ (रत्नाकर)

अर्थ-फटकिरी-कपेली, स्निग्ध, चरपरी, रगप्रद, रसवन्धक तथा कुष्ठ, व्रण, प्रदर, विषविकार, मूत्रकृच्छ्र, वमन, शोष, त्रिदोष और प्रमेहरोगको हरनेवाली है ।

चुम्बकनामानिगुणाश्च ।

चुम्बक·कान्तपाषाणोऽयस्कान्तोलौहकर्षक ।
चुम्बकोलेखन शीतोमेदोविषगरापह· ॥

अर्थ-चुम्बक, कान्तपाषाण, अयस्कान्त और लौहकर्षक । चुम्बकपत्थर-लेखन, शीतल तथा मेद, विष और उपविषको दूर करे है ।

राजावर्त्तगुणा ।

राजावर्त्तःकटुस्तिक्त शिशिर·पित्तनाशन ।
राजावर्त्त·प्रमेहघ्नश्छर्दिहिक्कानिवारण· ॥

अर्थ-राजावर्त्त-(रेवटी)-कटु, तिक्त, शीतल, पित्तनाशक तथा प्रमेह, वमन और हिचकीको दूर करे है ।

सौराष्ट्रीनामानि।

सौराष्ट्र्याढकीतुवरीपर्पटीकालिकासती ।
सुजातादेशभाषायांगोपीचदनमुच्यते ॥

अर्थ-सौराष्ट्री, आढकी, तुवरी, पर्पटी, कालिका, सती, सुजाता, इनको गोपीचंदन कहते है । (काक्षी, पार्वती, मसी, मृत्पाढया, मृत्, मृत्स्ना, आसङ्ग, सुराष्ट्रजा, मृत्तालक, काली, मृत्तिका, कसोद्भवा, मृत्तिका, सुरमृत्तिका, स्तुत्या, सौराष्ट्री)

संस्कृतभाषामें	सौराष्ट्री ।
हिन्दीभाषामें	गोपीचदन, सोरठकी मिट्टी ।
बंगभाषामें	सौराष्ट्रदेशीय सुगन्धिमृत्तिकाविशेष ।
मराठीभाषामें	गोपीचदन ।
गुजरातीभाषामें	गोपीचदन ।
लैटिन्भाषामें	सिलिकेट ऑफ एल्युमिना ।

सौराष्ट्रीगुणा ।

गोपिकाचन्दनशीतंदाहव्रणविषापहम् ।
विसर्पशमकलेपात्पतद्गर्भस्थिरीकरम् ॥

अर्थ-गोपीचदन शीतल, दाहनाशक, व्रणविनाशक, विषहारक, विसर्प निवारक और इसका लेप करनेसे पतित गर्भ स्थिर हो जाता है ।

अपरञ्च ।

गोपीचदनकदाहक्षतरक्तविकारनुत ।
पित्तंकफचप्रदरनाशयेदितिकीर्त्तितम ॥

अर्थ-गोपीचदन दाह, क्षत, रुधिरविकार, पित्त, कफ और प्रदररोगका नाश करे है ।

वालुकानामानि ।

सिकतावालुकासिक्ताशीतलासूक्ष्मशर्करा ।
प्रवाहोत्थामहाश्लक्ष्णासूक्ष्मापानीयचूर्णका ॥

अर्थ-सिकता, वालुका, सिक्ता, शीतला, सूक्ष्मशर्करा, प्रवाहोत्था, महाश्लक्ष्णा, सूक्ष्मा, पानीयचूर्णका, (वालिका, प्रवाही, महाश्लक्ष्मा, पानी यचूर्णिका, रेता)

स०	वालुका ।	तै०	विशिका ।
हिं०	वालु, रेत [ती, ता,]	इ०	सॅन्ड । Sand
व०	वाली ।	लै०	सीलीका । Silica
म०	वाळू रेती ।	फा०	रेग ।
गु०	रेती, वेट ।	अ०	रमल ।
क०	हालुड ।		

अस्यगुणा ।

सिकतामधुराशीतालेखनीतापनाशिनी ।
अग्निदग्धव्रणचैवव्रणोरःक्षतनाशिनी ॥
श्रमकुष्ठहरीचास्याःस्वेदनवातनाशनम् । (रत्नाकर)

अर्थ-वालु तथा रेता-मधुर, शीतल, लेखन, तापनाशक तथा अग्निदग्ध-व्रण, व्रण, उरःक्षत, श्रम और कुष्ठका नाश करे है। इसका सेक वातनाशक है।

कर्दमनामानि ।

पङ्कस्तुजलकल्कश्चचुलुकःकर्दमोमलः ।
चिकिलःपलितोद्रापःपललश्चनिपद्वरः ॥

अर्थ-पङ्क, चुलुक, कर्दम, मल, चिकिल, पलित, द्राप, पलल, निपद्वर (जम्बाल, साद, दम)

कृष्णमृत्तिकानामानि ।

मृन्मृदामृत्तिकामृत्स्नाक्षेत्रजाकृष्णमृत्तिका ।

अर्थ-मृत्, मृदा, मृत्तिका, मृत्स्ना, क्षेत्रजा, कृष्णमृत्तिका ।

संस्कृतभाषामें	पक, कर्दम, मृत् ।
हिन्दीभाषामें	कीच, गारा, मिट्टी, काली मिट्टी ।
वंगभाषामें	कादा माटी, कालमाटी ।
मराठीभाषामें	चिखल, माती, गारा ।
गुजरातीभाषामें	गारो, कालीमाटी ।
तैलिङ्गीभाषामें	नोबुडु ।
इंग्रेजीभाषामें	मडब्लॅक् क्ले । Mud black Clay
लैटिन्भाषामें	हैद्रस् सिलिकेट ऑफ़ आल्युमीनीयम् । Hydrasis silicate of alumunum

पङ्कगुणाः ।

पङ्कोदाहास्रपित्तास्रशोथघ्नःशीतलःसरः ।

अर्थ-कीच-दाह, रक्तपित्त, रुधिरविकार और सूजनको दूर करेहै । शीतल और सारक है)

अन्यच्च ।

कर्दमःशीतलोरूक्षोविषघ्नोवेदनापहः ।
शोफदाहप्रशमनोव्रणशोधनरोपणः ॥

अर्थ-कीच-शीतल, रूखी, विषघ्न, वेदनानाशक, शोफनिवारक, दाहको शांत करनेवाली, व्रणशोधक और व्रणरोपक है ।

अपिच ।

कर्दमः शीतलः स्निग्धोविषपित्तास्रभ्रमजित् ।
शोफदाहक्षतहरोहितःशोधनरोपणे ॥

अर्थ-कीच-शीतल, स्निग्ध तथा विष, रक्तपित्त, भ्रम, सूजन, दाह और घावको दूर करे है । व्रणशोधक और व्रणको भरनेवाला है ।

कृष्णमृद्गुणाः ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत ।

अर्थ-कालीमिट्टी-घाव-दाह, रुधिरविकार, प्रदर और कफपित्त-नाशक है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमृत्स्नारक्तदोषप्रदरक्षतदाहहा ।
मूत्रकृच्छ्रकफपित्तनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-कालीमिट्टी, रुधिरविकार, प्रदर, क्षत, दाह, मूत्रकृच्छ्र, कफ और पित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत ।
प्रलेपाद्विनिहन्त्येषाशोथंभल्लातसम्भवम् ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-क्षत, दाह, रुधिरविकार, प्रदर, कफ, पित्तको दूर और इसका लेप करनेसे भिलावेसे उत्पन्न हुई सूजन दूर होतीहै ।

बोलनामानि ।

वोलंगन्धरसपिण्डनिर्लोहवार्बररसम् ।
सुगन्धंनालकपौरंरसगन्धसितविदुः ॥

अर्थ-बोल, गन्धरस, पिड, निर्लोह, वर्वररस, सुगन्ध, नालक, पौर, रसगन्ध, सित, (रक्तापह, सुण्ड, सुरस, पिण्डक, विप, बबर, सौरभ, रस, रसगन्धक, महागन्ध, विश्व, शुभगन्धक, विश्वगन्ध, व्रणारि, प्राण, बोल, गोप, गोस, पिण्डगोस, शश, गोसशश, गान्धार, मसिवर्धन, गोपरस, बोलज, गोपक, पिण्डल, गोल)

संस्कृतभाषामें	बोल ।
हिन्दीभाषामें	बोल, हीराबोल, बीजाबोल ।
बंगभाषामें	गन्धरस, बोल, हिराबोल, खुनखारापी ।
मराठीभाषामें	बोळ ।
गुजरातीभाषामें	हिराबोल ।
कर्णाटकीभाषामें	बोल ।
तैलिङ्गीभाषामें	बालिम, त्रोपोलम् ।
तामिलीभाषामें	वेळइपूपोलम् ।
बम्०	रक्त्या बोल ।
इंग्रेजीभाषामें	मिर्हा । Myrrha
लैटिन्भाषामें	वालासामोंडेड्रन् मिर्हा । Bulsa modedi on myrha
फारसीभाषामें	मुर ।
अरबीभाषामें	मुरसाफ, मुरमकी ।

अस्य गुणा ।

रक्तबोलःकटुस्तिक्तस्तुवरोष्णश्चपाचनः । मेध्योग्निदीपकोगर्भाशयस्यचविशोधनः ॥ सुगन्धिरक्तदोषघ्नःकफपित्तत्रिदोषनुत् । प्रदराश्मरिमेहघ्नोयोनिशूलज्वरप्रणुत् ॥ कुष्ठापस्माररक्तातीसारस्वेदनिवारणः । ग्रहबाधांपौरुषत्वं नाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-बोल-चरपरा, कडवा, कषेला, गरम, पाचक, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, गर्भाशयशोधक, सुगंधि तथा रुधिरदोष, कफ, पित्त, त्रिदोष,

प्रदर, पथरी, प्रमेह, योनिशूल, ज्वर, कुष्ठ, अपस्मार, रक्तातिसार, पसीना, ग्रहबाधा और पुरुषताका नाश करे हैं ।

शिलाजतुनामानि ।

शिलाजत्वद्रिजतुचशैलनिर्य्यासइत्यपि ।
गैरेयमश्मजञ्चापिगिरिजंशैलधातुजम् ॥

अर्थ-शिलाजतु, अद्रिजतु, शैलनिर्य्यास, गैरेय, अश्मज, गिरिज, शैलधातुज,(अर्थ्य, शिलाज, अगज, शैल, शैलेय, शीतपुष्पक, शिलाव्याधि, अश्मोत्थ, अश्मलाक्षा, अश्मजतुक, जत्वश्मक)

सं०	शिलाजतु ।	क०	कड्डुमेचरु ।
हिं०	शिलाजीत ।	इं०	आसफेल्ट, जुडपिच ।
बं०	शिलाजतु ।	लै०	आस्फलूट पक्षाधिनम ।
म०	शिलाजीत ।		पिटुमेन जुदाईम्म ।

अस्योत्पत्तिलक्षण गुणाश्च ।

निदाघेघर्मसन्तप्ताधातुसारंधराधराः । निर्य्यासवत्प्रमुञ्चन्तितच्छिलाजतुकीर्त्तितम ॥ सौवर्णंरजतंताम्रमायसंतच्चतुर्विधम । शिलाह्वकटुतिक्तोष्णकटुपाकंरसायनम ॥ छेदियोगवहहन्तिकफमेदोश्मशर्करा । मूत्रकृच्छ्रक्षयश्वासवातास्रार्शांसिपाण्डुताम् ॥ अपस्मारंतथोन्मादशोथकुष्ठोदरक्रृमीन् । सौवर्णन्तुजपापुष्पवर्णंभवतितद्रसात ॥ मधुरंकटुतिक्तन्तुशीतलंकटुपाकिच । राजतपाण्डुरंशीतंकटुकंस्वादुपाकिच ॥ ताम्रंमयूरकण्ठाभंतीक्ष्णमुष्णञ्चजायते । लौहजटायुपक्षाभतत्तिक्तलवणंभवेत ॥ विपाकेकटुकंशीत सर्वश्रेष्ठमुदाहृतम ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-उष्णकालमें सूर्यकी किरणोंसे पर्वत तपित होकर धातुओंके सारको गोंदकी समान छोडते हैं, उस सारको शिलाजीत कहते हैं, सौवर्ण, रजत, ताम्र और आयस इन भेदोंसे शिलाजीत चार प्रकारका है । शिलाजीत-कटु, तिक्त, उष्ण, कटुपाकी, रसायन, छेदक, योगवाही तथा कफ,

मेद, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, श्वास, वातरक्त, ववासीर, पाण्डुरोग, अपस्मार, उन्माद, सूजन, कुष्ठ, उदररोग और कृमिरोगका नाश करे है। सौवर्ण (सुवर्णकी खानका)। शिलाजीत–जपाके फूलके समान लाल रंगका होता है, मधुररसयुक्त, कटुरसान्वित, तिक्तरसयुक्त, शीतल और पचनेमें चरपरा है। राजत (रूपेकी खानका)। शिलाजीत–पाण्डुरंगका होता है। शीतल, कटु और पचनेमें स्वादिष्ठ है। ताम्र (तांबेकी खानका) शिलाजीत–मोरकी गरदनके रंगकेसा होता है। तीक्ष्ण और उष्ण है। लौह (लोहेकी खानका)। शिलाजीत–जटायुकी पखकी समान काले रंगका होता है। कटवा, लवणरसान्वित, विपाकमे चरपरा, शीतल और सवमें श्रेष्ठ है।

अन्यच्च।

मासेशुक्रेशुचौचैवशैला'सूर्य्यांशुतापिता । जतुप्रकाशस्वरमशिलाभ्य प्रस्रवन्तिहि॥ शिलाजत्विति विख्यातंसर्वव्याधिविनाशनम्। त्रप्वादीनान्तुलोहानांपण्णामन्यतमान्वयम्। ज्ञेयसुगन्धतच्चापिपङ्योनिप्रथितक्षितौ। लोहाद्रवतितद्यस्माच्छिलाजतुजतुप्रभम् । तस्यलोहस्यतद्वीर्य्यंरसञ्चापि बिभर्त्तितत् । त्रपुसीसायसादीनिप्रधानान्युत्तरोत्तरम् ॥ यथायोगप्रयुक्ताहिश्रेष्ठश्रेष्ठगुणा.स्मृता. । (सु०स०)

अर्थ–ज्येष्ठ आषाढके महीनेमें पर्वत सूर्य्यकी किरणोंसे अत्यन्त तापित होकर लाखकी समान प्रकाशमान अपने रसोंको शिलाओंसे वहाते हैं, वह रस शिलाजीत नामसे विख्यात है यह सर्व व्याधिका नाश करनेवाला है, सीसा इत्यादि और लोहादिक छह धातुओंसे यह पृथक् है इसे सुगन्धिवाला जानना। यह पृथ्वीमें छै स्थानोंसे होता है जो लोहसे उत्पन्नहोता है वह लाखके रंगका है, वह उस लोहेका वीर्य्य और रसभी धारण करता है। रांग, सीसा लोहादि खानजनित गुणोंमें उत्तरोत्तर प्रधान है, वह श्रेष्ठ गुणवाले यथायोग्य प्रयुक्त करने चाहिये।

अथशिलाजतुलक्षणम्।

गोमूत्रगन्धवत्कृष्णस्निग्धमृदुतथागुरु ।
तिक्तकषायशीतञ्चसर्वश्रेष्ठतदायसम् ॥

अर्थ-जिसमें गोमूत्रकी समान गंध आतीहो, रंग कृष्णहो, चिकना, नरम, भारी, कडवा, कषेला, और शीतल ऐसा शिलाजीत लोहकी खानसे उत्पन्न हुवा श्रेष्ठ जानना ।

शिलाजतुगुण ।

शैलजकटुकतिक्तमेहघ्नञ्चरसायनम् । उष्णमुन्मादशोफघ्नक्षयकुष्ठाश्मरीहरम् ॥ शोफोदरापस्मारघ्नवस्तिरोगार्शनाशनम् । कण्डूञ्चपाण्डुरोगञ्चछर्दिवातकफजयेत् वलीपलितकामघ्नश्वासमूत्ररुजापहम् ॥

अर्थ-शिलाजीत-चरपरा, कडवा, प्रमेहनाशक, रसायन, गरम तथा उन्माद, सूजन, क्षय, कोढ, पथरी, शोफ, उदर, अपस्मार, वस्तिरोग, बवासीर, कण्डू, पाण्डुरोग, वमन, वात, कफ, वलीपलित, खाँसी, श्वास और-मूत्ररोगको दूर करे है ।

अपिच ।

शिलाजकफवातघ्नतिक्तोष्णक्षयरोगनुत् ।
वह्नौक्षिप्तभवत्यत्तल्लिङ्गाकारमधूमकम् ॥

अर्थ-जो अग्निमें गेरनेसे धूमरहित और लिंगाकार खडा हो जावे वह शिलाजीत उत्तम और शुद्ध जानना । शिलाजीत-कफवातनाशक, कडवा गरम और क्षयरोगका नाशक है ।

अशुद्धशिलाजतुदोष ।

अशुद्धंदाहमूर्च्छाश्च भ्रमपित्तास्रशोणितम् ।
शिलाजतुप्रकुरुतेमांद्यमग्नेश्चविड्ग्रहम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-अशुद्ध शिलाजीत-दाह, मूर्च्छा, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरविकार, अग्निमांद्य और मलबद्धताको करता है

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे धातुगुणः ॥ १ ॥

अथ रत्नोपरत्नवर्गः ।

अथ रत्नस्य निरुक्ति ।

धनार्थिनोजना सर्वेरमन्तेऽस्मिन्नतीवयत्
ततोरत्नमितिप्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदैः ॥ (भा०प्र०)

रत्नक्लीबेमणिःपुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते ।
तत्तुपापाणभेदोऽस्तिमुक्तादिचतदुच्यते ॥ (कोष)

अर्थ-धनकी इच्छावाले प्राणी इन रत्नोंमें अतीव रमतेहै इसीकारण शब्द शास्त्रोंके ज्ञाताओंने रत्न ऐसा नाम रक्खा है। रत्न ओर मणि यह दोनो चमकनेवाले जवाहरात और मोती आदिमें कहे जाते हैं।

रत्नानांनिरूपणम् ।

वज्रविद्रुममौक्तिकमरकतवैदूर्य्यगोमेदक
माणिक्यहरिनीलपुष्पदपदौरत्नानिनाम्नानव ।
यान्यन्यान्यपिसन्तिकानिचिदिहत्रैलोक्यसीम्निस्फुट
नाम्नातान्युपरत्नसञ्ज्ञकतमान्याहुःपरीक्षाकृत । (नि र)

अर्थ-नवरत्न-हीरा १ मूँगा २ मोती ३ मरकत ४ वैदूर्य ५ गोमेद ६ माणिक्य ७ नील ८ और पुष्पराग ९ इस प्रकार यह नौ हैं। और इस पृथ्वीपर इन्हीं रत्नाकी सदृश दूसरे रत्न होते हैं उनको उपरत्न ऐसा परीक्षक लोग कहते हैं।

अन्यच्च ।

मुक्ताफलहीरकचवैदूर्य्यपद्मरागकम् ।
पुष्परागचगोमेदनीलगारुत्मतंतथा ॥
प्रवालयुक्तान्येतानिमहारत्नानिवैनव । (विष्णुधर्म्मोत्तरे)

अर्थ-मोती, हीरा, वैडूर्य, माणिक, पुखराज, गोमेद, नील, पन्ना और मूँगा इन नवरत्नोंको महारत्न कहते है।

रत्नगुणा ।

रत्नानिभक्षितानिस्युर्मधुराणिसराणिच ।
चक्षुष्याणिचशीतानिविषघ्नानिधृतानिच ॥
मङ्गल्यानिमनोज्ञानिग्रहदोपहराणिच ।

अर्थ-रत्न-मधुर, सारक, नेत्राको हितकारी, शीतल, विपनाशक, श्लिग्ध, मंगलकारक, मनोज्ञ और ग्रहदोषको दूर करे है।

अन्यच्च ।

मणयोवीर्य्यत:शीतामधुरास्तुवरारसात् ।

चक्षुष्यालेखनाश्चापिसारकाविषहारका ॥

अर्थ-मणि (रत्न)-शीतवीर्य्य, मधुर, कषेली, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, सारक और विषहारक है।

हीरकनामानि।

हीरकवज्रमणिरपट्कोणहढगर्भकम्।

अर्थ-हीरा, वज्र, मणि, षट्कोण, दृढगर्भक (हीर, दधीच्यस्थि, वज्रक, सूचीमुख, वरारक, रत्नमुख्य, वज्रपर्य्यायनाम, अभेद्य, दृढाङ्ग, चन्द्र, मणिवर)।

संस्कृतभाषामें	हीरक, वज्र।
हिंदीभाषामें	हीरा।
बंगभाषामें	हिरे।
मराठीभाषामें	हिरा।
गुजरातीभाषामें	हिरो।
कर्णाटकीभाषामें	वज्र।
तैलिङ्गीभाषामें	वज्र।
इंग्रेजीभाषामें	डाणमोण्ड। Diamond।
लेटिनभाषामें	पिओरकार्बन एडमस। [illegible]
फा०	इलमास।

हीरकगुणाः।

हीरकःसारकःशीतःकषायोमधुरस्तथा।

चक्षुष्योवान्तिकृत्पापालक्ष्मीनाशकरोधृतः ॥

अर्थ-हीरा-सारक (कुछ २ दस्तावर) शीतल, कषेला, मधुर, और नेत्रोंको हितकारी वमनकारक है। इसको धारण करनेसे पाप और अल-क्ष्मीका नाश होताहै।

हीरकभेदस्तद्गुणाः।

सश्वेतरतुस्मृतोविप्रोलोहितःक्षत्रियःस्मृतः। पीतोवैश्योऽसितःशूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्चसः॥रसायनेमतोविप्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः। क्षत्रियोव्याधिविध्वंसीजरामृत्युहरःस्मृतः॥वैश्योधनप्रदःप्रोक्तस्तथादेहस्यदार्ढ्यकृत। शूद्रोनाशयति

व्याधीन्वयःस्तम्भंकरोतिच॥पुंस्त्रीनपुंसकानीहलक्षणीयानिलक्षणै । सुवृत्ता फलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ताबृहत्तराः ॥ पुरुषास्तेसमाख्यातारेखाबिन्दुविवर्जिता । रेखाबिन्दुसमायुक्ता षडस्रास्तेस्त्रिय स्मृता ॥ त्रिकोणाश्चसुदीर्घास्तेविज्ञेयाश्च नपुंसका । तेषुस्युःपुरुषाःश्रेष्ठा रसबन्धनकारिण ॥ स्त्रियःकुर्वन्तिकायस्यकान्तिस्त्रीणांसुखप्रदा । नपुंसकास्त्ववीर्य्या स्युरकामाःसत्त्ववर्जिता ॥ स्त्रियःस्त्रीभ्यःप्रदातव्या क्लीबक्लीबेप्रयोजयेत् । सर्वेभ्य सर्वदादेया पुरुषावीर्य्यवर्द्धना ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–हीरा–जातिके भेदसे चार प्रकारका है, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र, तहा ब्राह्मण हीरा (सफेद, हीरा) रसायनकार्य्यमें उत्तम और सर्वसिद्धिदायक है । क्षत्रिय हीरा (लालरंगका) यह सर्व व्याधि, जरा और मृत्युनाशक है । वैश्यहीरा, (पीले रंगका) यह, धनप्रदायक, और शरीरको दृढ करनेवाला है । और शूद्र हीरा, (काले रंगका) होताहै, यह व्याधिनाशक और अवस्थास्थापक है । हीरा-स्त्री, पुरुष और नपुंसक, इन भेदासे तीन प्रकारका है, उत्तम गोलाकार, चमकदार, बडा रेखा और-बिन्दु करके हीन हीरेको पुरुषजातिका जानना । रेखा और बिन्दुकरके युक्त तथा, छे कोनेवाले हीरेको स्त्रीजातिका हीरा जानना । त्रिकोणयुक्त और सुदीर्घ हीरेको नपुंसकजातिका जानना । इनमे पुरुषजातिका हीरा–रस(पारा) को बाँधनेवाला और श्रेष्ठ है । स्त्रीजातिका हीरा–कान्तिजनक और स्त्रियोंको सुखकारक है । नपुंसकजातिका हीरा वीर्य्यविहीन, कामवर्जित और सत्त्वशून्य जानना । स्त्रीजातिका हीरा स्त्रियोंके, नपुंसक जातिका नपुंसकोंके और पुरुषजातिका हीरा सर्व प्राणियोंके लिये उपयोगी और वीर्य्यवर्द्धक है ।

हीरकगुण ।

वज्रसमीरकफपित्तगदांश्चहन्याद्वज्रोपमञ्चकुरुतेवपुरुत्तमश्रि ।
शोफक्षयभ्रमभगन्दरमेहमेदपाण्डूदरश्वयथुहारिचषड्रसाढ्यम् ।

अर्थ–हीरा–वातपित्तकफरोगनाशक, शरीरको वज्रके समान दृढ करनेवाला, लक्ष्मीवर्द्धक, षड्रसयुक्त तथा शोफ, क्षय, भ्रम, भगन्दर, प्रमेह, मेद, पाण्डु, उदररोग और सूजनको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

वज्ररसायनचैवषड्रसैश्चयुतसदा । देहदार्ढ्यकरपुष्टिलक्ष्मी-र्य्यविवर्द्धनम् ॥ सुवर्णसुखकृद्वातकुष्ठपित्तक्षयभ्रमान् । कफवातचशोफचमेदमेहभगन्दरान् । पाण्डुरोगोदरमेद नाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-हीरा-रसायन, षड्रसयुक्त, देहको दृढकरनेवाला, पुष्टि, यश और वीर्य्यवर्द्धक है, वर्णको सुंदर करनेवाला, सुखकारक तथा वातकुष्ठ, पित्त, क्षय भ्रम, कफ, वात, शोफ, मद, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, उदर और मेदनाशक है ।

अशुद्धहीरकदोषाः ।

अशुद्धकुरुतेवज्रकुष्ठपार्श्वव्यथांतथा । पाण्डुतापगुरुत्वञ्च-तस्मात्संशोध्यमारयेत् ॥पीडाविधत्तेविविधानराणांकुष्ठं-क्षयपाण्डुगदंचदुष्टम् । हृत्पार्श्वपीडांकुरुतेतिदुःखदामशु-द्धवज्रगुरुमात्महृत्यजेत ॥ (रत्ना०)

अर्थ-अशोधित हीरा-कोढ, पार्श्वशूल, पाण्डु, शरीरमें ताप और भारी-पनको करे है । तथा अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, हृदय और पसलीमें शूल तथा आत्माका नाश करे है ।

माणिक्यनामानि ।

पद्मरागोलोहितकोमाणिक्यंशोणरत्नकम् ।

अर्थ-पद्मराग, लोहित, माणिक्य, शोणरत्नक, (रत्नराट्, रविरत्नक, शोणरत्न, तरणिरत्न, शृङ्गारी, रंगमाणिक्य, तरुण, रत्ननायक, रागयुक्, रत्न, शोणोपल, सौगन्धिक, कुरुविन्द, कुरुविल्व, लोहित, कुरुविन्दक, लक्ष्मीपुष्प, अरुणोपल) ।

सं० पद्मराग, माणिक्य ।	तै० माणिक्य ।
हि० मानिक, लाल ।	इं० रूबी । Ruby
बं० माणिक ।	ई० ग्यानेग । Palm
म० माणिक ।	फा० लालपद्मराग ।
गु० माणेक, चुन्नी ।	अ० लाल ।
क० माणक ।	

माणिक्यगुणाः ।

माणिक्यलेखनंशीतंकषायंमधुरसरम् ।
चक्षुष्यमंगलदाहदुष्टग्रहविषापहम् ॥

अर्थ–मानिक–लेखन, शीतल, कषेला, मधुर, सारक, नेत्रोंको हितकारी मगलकारक तथा दाह, दुष्टग्रह और विषविनाशक है ।

माणिक्यभेदवर्णाः ।

सिंहलेतुभवेद्रक्तंपद्मरागमनुत्तमम्।पीतकाणपुरोद्भूतकुरुविन्दमितिस्मृतम् ॥अशोकपल्लवच्छायमिदंसौगन्धिकविदुः। तुम्बुरुच्छाययानीलनीलगन्धिप्रकीर्त्तितम् ॥ उत्तमंसिंहलोद्भूतंनिकृष्टन्तुम्बुरूद्भवम् । मध्यममध्यमज्ञेयमाणिक्य क्षेत्रभेदतः ॥

अर्थ–सिंहल देशमें लालरगका पद्मराग नामवाला रत्न उत्पन्न होताहै यह सर्वमें श्रेष्ठ जानना। कानपुर नामवाले देशमें कुरुविन्द नामवाला माणिक उत्पन्न होताहै यह पीला और मध्यम जानना । और अशोक वृक्षके पल्लवकी सदृश रगके सौगन्धिक नामवाले माणिक्यको मध्यम जानना । तुम्बुरु देशम उत्पन्न होनेवाले नीले रगके माणिकको नीलगन्धि माणिक कहतेहैं यह अत्यन्त निकृष्ट है अर्थात् सिंहल देशमें उत्पन्न होनेवाला माणिक अत्युत्तम, तुम्बुरु देशमें उत्पन्न होनेवाला अत्यन्त निकृष्ट और अन्य देशमें उत्पन्न होनेवाले सर्व मध्यम जानने ।

बहुमूल्यमाणिक्यगुणाः ।

बन्धूकगुञ्जाशकलेन्द्रगोपाजपासुमासृक्समवर्णशोभाः ।
भ्राजिष्णवोदाडिमबीजवर्णास्तथापरेकिंशुकपुष्पभास ॥
सिन्दूरपद्मोत्पलकुकुमानांलाक्षारसस्यापिसमानवर्णाः ।
चकोरपुस्कोकिलसारसानांनेत्रावभासश्चभवन्तिकेचित् ॥

अर्थ–बन्धूक पुष्पकी समान, गुञ्जाकी, इंद्रगोप कीडेकी और जपाके फूलकी समान वर्णवाला और शोभासयुक्त तथा चमकदार, अनारके बीजकी सदृश रगवाला माणिक होताहै । और कोई कहते हैं टेसूके फूलकी समान प्रभायुक्त, सिंदूरकी सदृश, लाल कमलकी समान, कुकुमकी समान,

लाखकी समान तथा चकोर, कोकिला और सारस इनके नेत्रोंकी कान्तिकी समान वर्णवाले माणिक कचित् होते हैं।

अन्यच्च।

क्वचित्तुस्फाटिकोत्थानादेशेतुवरसञ्ज्ञके। सधर्म्माण प्रजायन्तेस्वल्पमूल्याहितेस्मृता ॥ वर्णानुयायिनस्तेपारंध्रदेशेतथापरे। यज्जायन्तेतुतेकेचिन्मौल्यलेशमवाप्नुयु ॥ शोभाद्वितयवन्तोयेमणय' क्षतिकारका। उभयत्रपदयेपा तेनचस्यात्पराभव ॥

अर्थ-कहीं तुवर देशमें स्फटिक मणिका माणिक बना ऐसे हैं यह स्वल्प मूल्यका होता है। रन्ध्रदेशमें उन्हींके रंगकी समान दूसरा बनाते हैं यह उससेभी कम कीमतके होते हैं यह मणियें हानिकारक हैं। और जिनके दोनों ओर पद हैं उन माणिकोंसे हार होती है।

अथ तोल।

गुञ्जाफलप्रमाणस्तुद्वासप्ततिगुञ्जकान। पद्मरागस्तुलयतियथापूर्वंमहागुण ॥बिम्बीफलसमाकारोपद्मुसुदशतोलक.। पद्मरागस्तुलयतियथोत्तरमहागुण ॥ अत'परप्रमाणेनमानेननचलक्ष्यते।

अर्थ-तोल-एक गुञ्जासे लेकर १७ गुञ्जा प्रमाणतक पद्मरागमणि तुलती है-यह बडे गुणाकरके युक्त होती है। पद्मराग मणि जितनी २ तोलमें अधिक होगी उतनी २ ही उसकी कीमतभी अधिक होगी। जिसका कन्दूरीकी समान आकार है और ६-८-१०-तोलेकी तोलमें है उसकी कीमत यथा क्रमसे अधिक जाननी। इससे उपरान्त प्रमाणसे मालूम होता है।

अथ मूल्यम्।

षट्त्रिंशतिसहस्राण्यश्मणं पलप्रमाणस्य। कर्षत्रयस्यनिगतिरुपरिष्टात्पद्मरागस्य ॥ अर्द्धपलस्यद्वादशकर्षस्यैनपदसहस्राणि। यज्ञाष्टमासिकमितस्यसहस्रत्रयमौल्यम ॥ माषचतुष्टययत्स्यात्तस्यदशशतमौल्यम ॥ माषद्वयमितो

यस्तुपद्मराग'सुनिर्मलः । तस्यपचशतंमौल्यरौप्यंकर्पस्य चेरितम्॥मापकैकमितोथस्तुपद्मरागोगुणान्वितः । शतैक- समितंवाच्यंमौल्यतस्यविचक्षणे ॥ अतोन्यूनप्रमाणास्तु पद्मरागागुणोत्तराः ॥ स्वर्णाद्विगुणमौल्येनमूल्यतेपांप्रक- ल्पयेत । व्रणेमूल्यचार्द्धतेजोहीनस्यमूल्यमष्टांश· । अल्प- गुणोबहुदोपोमूल्यनाप्नोतिविंशांशम् ॥

अर्थ–जो माणिक तोलमें ४ तोलेभर हो उसकी कीमत २६०००, रुपये है । और जो माणिक ३ तोलेभर हो उसकी कीमत २००००, रुपये हैं । जो माणिक तोलमें दो तोलेभरहो उसकी कीमत १२०००, रुपये है । और जो तोलमें एक तोलाभर हो उसकी कीमत ६०००, रुपये हैं । और जो तोलमें आठ मासे हो उसकी कीमत ३०००, रुपये है और जो तोलमे चार मासेभर हो उसकी कीमत १०००, रुपये जानने जो पद्मराग तोलमें दो मासेका हो और निर्मल हो उसका मूल्य, ५००, रुपये जानने । जो पद्मराग तोलमे एक मासेका है और गुणसयुक्त है उसका मूल्य १००, जानने । और जो तोलमे इससेभी कम है तथा गुणोंमे श्रेष्ठ है उसका मूल्यसुवर्णसे दुगुना जानना और जो उसमे व्रण हो तो आधे मूल्यका जानना । और हीनतेजका हो तो कीमत आठवें भाग, जाननी । जिसमे अल्पगुण और बहुत दोष हों तो उसकी कीमत वीसव भाग भी नहीं ।

रत्नपरीक्षा ।

वालार्ककरसंस्पर्शाद्य शिखालोहितावमेत् । रजयेदाश्रय वापिसमहागुणउच्यते।दुग्धेशतगुणेक्षिप्तोरजयेद्यःसमतत । वमेच्छिखांलोहितांवापद्मराग'सउत्तम· । अन्धकारेम- हाघोरेयोन्यस्तःसन्महामणि· ॥ प्रकाशयतिसूर्य्याभ स· श्रेष्ठ पद्मरागक ।पद्मक्रोशेपुयोन्यस्त'प्रकाशयतितत्क्षणा- त् ॥ पद्मरागवरोह्येपदेवानामपिदुर्लभ । सर्वारिष्टप्रशम- न·सर्वसम्पत्तिदायक· ॥वालार्काभिमुखकृत्वादर्पणेधारये-

न्मणिम। तत्रकान्तिविभागेनच्छायाभागंविनिर्दिशेत्॥अ-प्रणश्यतिसंदेहेशिलायांपरिवर्पयेत । घृष्टोयोत्यन्तशोभा-वान्परिमाणनमुञ्चति ॥ सज्ञेयोऽशुद्धजातीयोज्ञेयाश्चान्ये विजातय । अत्यन्तलोहितोयश्चपद्मरागःसउच्यते ॥

अर्थ-जो प्रातःकालके सूर्य्यकी किरणोंके स्पर्श करतेही लाल कान्तिको त्याग देता है और जो अपने आश्रितको प्रसन्न करे वह पद्मरागरत्न महा गुणवाला है। जो अपनेसे सौगुने दूधमें पड़ा हुआभी चारो ओरसे कान्ति प्रगट करता है और जो लाल रंग की कान्तिको फैलावे है वह पद्मरागरत्न अत्यन्त उत्तम है। महाघोर अंधकारमें रक्खा हुआ यह महारत्न यदि सूर्य्यकी समान प्रकाश करे तो उत्तम है। जो माणिक मुद्रितकमलमें रखनेसे तत्काल कमल को प्रफुल्लित करदे वह उत्तम पद्मरागरत्न देवता-ओंकोभी दुर्लभ है सम्पूर्ण अरिष्टोंको शान्ति करनेवाला और सम्पूर्ण सम्प त्तियोंको देनेवाला है। प्रातःकालके सूर्य्यके सन्मुख दर्पणमें इस मणिको धरे उसके कान्तिविभागसे छायाभागको जाने सन्देहको दूर करनेके लिये इसको पत्थरपर घिसे जो घिसनेसे अत्यन्त शोभावाला हो और परिमाणको त्याग न करे तो शुद्ध पद्मरागमणि जाने और दूसरे विजातीय पद्मराग है जो अत्यन्त लाल है वेभी पद्मराग मणि है।

माणिक्यगुणा ।

सपत्नमध्येपिकृताधिवासंप्रमादवृत्तावपिवर्त्तमानम ।
नपद्मरागस्यमहागुणस्यभर्त्तारमापत्समुपैतिकाचित
दोषोपसर्गप्रभवाश्चयेतेनोपद्रवास्तंसमभिद्रवन्ति ।
गुणै सुमुख्यैःसकलैरुपेतोय पद्मरागप्रयतोविभर्त्ति ॥

अर्थ-शत्रुओंके बीचमें रहने और प्रमाद करनेपरभी इस महागुणवाली पद्मरागमणिके प्रभावसे इसका धारण करनेवाला कभी आपत्तिको प्राप्त नहीं होता जितने दोष है उनमेंसे कोई भी इसको प्राप्त नहीं होता जो पद्मराग मणिको धारण करता है वह सम्पूर्ण गुणोंसे संयुक्त हो जाता है।

अपथ ।

माणिक्यमधुरस्निग्धवातप्रसन्नरसायनम ।
कफप्रदीपनंवृष्यंभूतप्रशमनंपरिशितुन ॥

अर्थ-माणिक्य-मधुर, स्निग्ध, वातविनाशक, रसायन, कफनाशक, दीपन, वीर्य्यवर्द्धक, भूत और क्षयरोगको दूर करे है ।

अपिच ।

माणिक्यमधुरस्निग्धवातपित्तप्रणाशनम् ।
रत्नप्रयोगप्रज्ञानारसायनकरपरम् ॥

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, रत्नके प्रयोगमे श्रेष्ठ और रसायन है ।

अन्यच्च ।

माणिक्यमधुरस्निग्धवातघ्नचरसायनम् ।
पित्तंव्रणनाशयतिपूर्वैरितिनिवेदितम् ।

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातनाशक, रसायन, पित्तनाशक और व्रणको दूर करे है ।

मौक्तिकनामानि ।

मौक्तिकशुक्तिजमुक्ताशौक्तिकेयशशिप्रभम् ।
अम्भःसारमिन्दुरत्नलक्ष्मीमुक्ताफलंहिमम् ॥

अर्थ-मौक्तिक, शुक्तिज, मुक्ता, शौक्तिकेय, शशिप्रभ, अम्भः-सार, इन्दुरत्न, लक्ष्मी, मुक्ताफल, हिम (शुक्तिवीज, क्षारी, कुवल, सौम्य, तार, तारा, मौतिक, तौतिक, शीतल, नीरज, नक्षत्र, अम्भः-सार, बिन्दुफल, मुक्तिका, शौक्तेयक, शुक्तिमणि, स्वच्छ, हिमवल, सुधाशुभ, सुधाशुरत्न, लक्ष, शशिप्रिय, हैमवत, भूरुह, शौक्तिक) ।

स०	मुक्ता ।	तै०	मोत्याछु ।
हिं०	मोती	इ०	पर्ल । Pearl
व०	मुक्ता ।	लै०	मागरिटा । Margraita
म०	मोती ।	फा०	मखारिद ।
गु०	मोती ।	अ०	लोलो ।
क०	मौक्तिक ।		

मौक्तिकगुणा ।

मुक्ताकषायास्वाद्वीचवलपुष्टिप्रदायिनी ।
वृष्यानेत्रहिताराजयक्ष्मघ्नीविषनाशिनी ॥
स्त्रीणांकान्तिरतिकरीधारणाद्ग्रहपापनुत् । (आ०स०)

अर्थ-मोती-कषेला, स्वादिष्ठ, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी तथा राजयक्ष्मा और विषविनाशक है। इसको धारण करनेमें-स्त्रियोंकी कान्ति और रति बढ़ती है तथा ग्रह और पापका नाश होता है।

अन्यच्च।

मौक्तिकसुमधुरसुशीतलदृष्टिरोगशमनविषापहम्। राजयक्ष्मपरिकोपनाशनक्षीणवीर्य्यबलपुष्टिवर्द्धनम्॥ कफपित्तक्षयध्वंसिकासश्वासाग्निमान्द्यजित्। पुष्टिदवृष्यमायुष्यदाहघ्नंमौक्तिकमतम्। मुक्तानांहारविधृतिर्दाहपित्तविनाशिनी। कान्तिहर्षनेत्रसुखददातीतिप्रकीर्तितम्॥ (नि र)

अर्थ-मोती-मधुर, शीतल, दृष्टिरोगको दूर करनेवाला, विषविनाशक, राजयक्ष्माको हरनेवाला, क्षीणवीर्य्यवालेको बल और पुष्टि देनेवाला है। मोती-कफ, पित्त, क्षय, खांसी, श्वास, मन्दाग्नि और दाहको दूर करे है, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक और आयुवर्द्धक। मोतियोंका हार धारण करनेसे-दाह और पित्त दूर होता है, कान्तिजनक हर्ष करता है और नेत्रोंमें सुख होता है।

मौक्तिकोत्पत्ति।

शुक्ति शंखोगज क्रोड फणिमत्स्यश्चदर्दुर।
वेणुश्चाष्टौसमाख्याताःसुज्ञैर्मौक्तिकयोनयः॥

अर्थ-पंडितोंने सीप, शंख, हाथी, शूकर, सांप, मछली, मेंडक और बांस यह आठ मोतीके उत्पन्न होनेके स्थान कहे हैं।

गजमौक्तिक।

यद्दन्तावलकुम्भसम्भवमदः पीतारुणमदकः।
धात्रीदघ्नतयाविरलमथमकाम्बोजकुम्भोद्भवम्॥

अर्थ-गजमोती-काम्बोजदेशके उत्पन्न हाथियोंके गण्डस्थलसे निकले किंचित् लाल और पीले रंगका मोती उत्पन्न होता है इसको भी धारण करते हैं और यह अधम रत्न है।

वराहमौक्तिक।

एकाकीमसुरेनिष्कृष्टहतयाच काननंगाहते

तस्यानादिवराहवंशजनुप·कोलस्यमूर्ध्निरिथतम् ।
ककोलाकृतिमिन्दुवत्सधवलंदैवादवाप्नोतितत्
यस्तधारयतेभवेत्सनिधिभिर्मर्त्योधनाधीशवत् ॥

अर्थ–वराहमोती–आदि वराह अवतारके वंशका जो सूअर इकला सुखसहित निस्पृह वनमें विहार करता है उस सूअरके मस्तकमें मोती होताहै, वह मोती ककोलकी समान आकृतिवाला, चन्द्रमाकी समान धवल होता है, यह मोती प्रारब्धके ही वशसे प्राप्तहोताहै । इस मोतीके मिलनेसे दरिद्री धनाधीश होजाते हैं ।

वेणुमौक्तिक ।

मुक्ताःसन्तिकुलाचलेषुकरकाकान्त्युद्भवावंशजा ।
कर्कन्धूफलवन्धवोनिदधतेकंठेषुशुद्धांगनाः ॥

अर्थ–वंशमोती–कुलाचल पर्वतपर उत्तमकान्तिवाले बांस होतेहैं उन बांसोंमें बेरकी समान मोती उत्पन्न होताहै उस मोतीको स्त्रिया कण्ठमें धारण करती हैं ।

मत्स्यमौक्तिक ।

प्रोष्ठीगर्भगतस्तुमौक्तिकमणिर्गाजै·समःपाटली-
पुष्पाभ·सनलक्ष्यतेभुविजनैरस्मिन्कलौपापिभिः ॥

अर्थ–मत्स्यमोती–मछलीके पेटमें होतेहैं यह मोती गजमोतीकी समान आकृतिवाले और पाढलके फूलकी समान रंगवाले होतेहैं और यह मोती इस पृथ्वीपर पापीजनोंकी दृष्टि नहीं पडतेहैं ।

दर्दुरमौक्तिक ।

यन्मेघोदरसम्भवतदवनीमप्राप्तमेवामरैर्व्योमस्थैरपनीयते विनियतवर्षासुमुक्ताफलम् ॥ तिग्माशोरपिदुर्निरीक्ष्यमकृशसौदामिनीसन्निभ देवानामपि दुर्लभनमनुजस्यैतस्य प्राप्ति·पुन· ॥

अर्थ–वर्षाऋतुमें जो मेडक मेघोदरसे उत्पन्न होते और पृथ्वीके ऊपर नहीं गिरते हैं उन मेडकोंके उदरमें मोती उत्पन्न होतेहैं वह मोती पृथ्वीपर नहीं आते बीचमें देवता ग्रहण करलेते हैं वह मोती सूर्य्यके तेजसेभी अधिक

और बिजलीकीसमान प्रभावाले होते हैं देवताओंकोभी दुर्लभ हैं और मनुष्यकी तो क्या बात है।

शंखमौक्तिक।

शंखस्याच्युतहारिणो जलनिधौयेनशजा कम्बुका-
स्तेष्वत किलमौक्तिकंभवतिवैतच्छुक्रतारानिभम् ॥
कापोताण्डसमसुवृत्तमसकृच्छ्रीकसरूपलघु
स्निग्धस्पर्शकृतहितंचनपुनर्मर्त्यैस्तदासाद्यते ॥

अर्थ-पाञ्चजन्य शंखके वंशके जो शंख समुद्रमें हैं उन शंखोंमें श्वेत तथा नक्षत्रकी समान कान्तिवाले और कबूतरके अंडेकी समान गोल मोती उत्पन्न होते हैं वह मोती झलकदार, स्निग्ध, हलके और लक्ष्मीजनक हैं तथा वह एकबार मनुष्योंको स्पर्श होनेपर फिर हाथ नहीं लगते हैं।

सर्पजमौक्तिक।

शेषस्यान्वयिनाफणासुफणिनायन्मौक्तिकंजायते वृत्तनि-
र्मलमुज्ज्वलशशिरुचिश्यामच्छविश्रीकरम् ॥ कर्कोलाकृति
कोपिकोटिसुकृते प्राप्नोतिचेन्मानव सस्याद्वाजिगजाधि-
कोनृपसमोजातोपिनीचेकुले ॥ आस्तेसद्मनिचेत्सपन्नगम-
णिस्तेयातुधानामग हर्तुंश्रमनेक्षतेइतरत कुर्य्यान्महा-
शांतिकम् ॥

अर्थ-सर्पजमौक्तिक-शेषके वंशमें जो उत्पन्न हुये सर्प उन सर्पोंके फणोंमें उत्पन्न होते हैं वह मोती गोल, निर्मल, उज्ज्वल, चंद्रमाकी समान श्याम छविवाले और कंकोलकी समान आकृतिवाले होते हैं वह मोती किसी करोड़ जन्मतक पुण्य करनेवाले मनुष्योंहीके हाथ लगते हैं जिस मनुष्यको वह मोती प्राप्त होते हैं उसके गज अश्वादिकोंकी वृद्धि होती है और वह नीचकुलकाभी मनुष्य राजाके समान हो जाता है और उन मोतियोंको घरमें रखनेसे निश्चय राक्षसबाधा दूर होती है तथा महाशान्ति होती है।

लक्षण।

श्वेतस्निग्धमतीवमधुरंतरस्यात्पारसीकोद्भवम्।
रूक्षकाञ्चनवर्णमप्ययुतस्याद्बार्बरमौक्तिकम्।

शोणतूर्मजसभवविदुरतिस्निग्धतथादोपजम्
चातुर्वर्ण्ययुतसुलक्षणमितिश्लक्ष्णंकविश्रीकरम् ॥

अर्थ-पारसदेशके समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला मोती-श्वेत, स्निग्ध और अत्यन्त प्रकाशमान होता है अरबके समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला मोती-रूखा और कुछ सुवर्णकी समान रंगवाला होता है । और अन्य समुद्रोंमें उत्पन्न होनेवाले मोती, लाल, स्निग्ध, दोषजनक, चारवर्णयुक्त, सुलक्षण और चिकने तथा लक्ष्मीको करनेवाले होते हैं।

शुक्तिमौक्तिक।

पट्स्वेतेष्वपिरुक्मिणीवजगतिख्यातिगतारुक्मिणी
नाम्नाशुक्तिमतीवचोत्तमगुणासिधौसमुज्जृम्भते ॥
तस्यागर्भभवन्तुकुंकुमनिभंजातीफलाकृत्तिनम्
स्थूलस्निग्धमतीवनिर्मलतमंभूमोप्रकाशसदा ॥

अर्थ-जो सीप रूपेकी समान या सोनेकी समान दीप्तिमान अत्यन्त उत्तमगुणयुक्त समुद्रमें उत्पन्न होती है उस सीपमें कुकुमकी समान प्रभायुक्त जायफलकी समान रूपवाले, स्थूल, स्निग्ध, अत्यन्त निर्मल और सदैव प्रकाश करनेवाले मोती उत्पन्न होतेहैं।

मौक्तिकपरीक्षा।

यद्भिच्छायंमौक्तिकव्यगकायशुक्तिस्पर्शंरक्ततांचापिधत्ते
मत्स्याक्षांकरूक्षमुत्ताननिम्ननेतद्धार्यंधीमतादोपदायि ॥
नक्षत्राभंवृत्तमत्यन्तमुक्तंस्निग्धस्थूलनिर्व्रणंनिर्मलच
न्यस्तधत्तेगौरवंयत्तुलायांनिर्मौल्यतन्मौक्तिकसिद्धिदायि ॥

अर्थ-जो मोती कान्तिरहित, व्यगशरीरवाला, सीपीमें लगाहुआ, लाल, मछलीकी आखोंकी समान चिह्नित, रूखा और ऊँचा नीचा होता है ऐसे दोषदायक मोतीको, बुद्धिमान् पुरुष नहीं धारण करे। जो मोती नक्षत्रकी समान कान्तिवाला, गोल, स्निग्ध, स्थूल, व्रणरहित, निर्मल और तोलमें भागी होताहै ऐसा मोती अमूल्य और सिद्धिदायक है।

प्रवालनामानि।



मूंगेकावृक्ष.

प्रवालोऽङ्गारकमणिर्विद्रुमोम्भोधिपल्लवः।
भौमरत्नं च रत्नाङ्गो रक्ताङ्गश्च लतामणिः।

अर्थ-प्रवाल, अङ्गारकमणि, विद्रुम, अम्भोधिपल्लव, भौमरत्न, रत्नाङ्ग, रक्ताङ्ग, लतामणि (रक्तकन्द, रक्तकन्दल, रक्ताकार)

संस्कृतभाषामें	प्रवाल।
हिन्दीभाषामें	मूंगा।
बंगभाषामें	पला, मुङ्गा।
मराठीभाषामें	पोंवळें।
गुजरातीभाषामें	परवाळा।
कर्णाटकीभाषामें	अवळ्ळव।
तैलङ्गीभाषामें	प्रवालम्, पगडम्।
इंग्रेजीभाषामें	रेड्कोरल। Red coral
लेटिन्भाषामें	कोरेलियम् रुब्रम्। Corallium rubrum
फारसीभाषामें	मिरजान, बेसमिरजा।
अरबीभाषामें	बेसदुलबहर।

प्रवालगुणाः।

वीर्य्यवृद्धौ तथा पुष्टौ नृणां चैवावर्त्तते परम्।
विद्रुमं शोधितं तेन सेवनीयं गुणप्रदम्॥

अर्थ-शोधित मूंगा मनुष्योंकी वीर्यको बढाता और शरीरको पुष्ट करनेवाला

इच्छा वर्त्तती है उनको शुद्धप्रवाल (मूँगा) का सेवन करना चाहिये और यह प्रवाल अनेक गुणदायक है।

अन्यच्च।

विद्रुमसर्वदोपघ्नदीपनरुचिपुष्टिदम्।
क्षयपाण्डुज्वरश्वासकासमेदोगदाञ्जयेत् ॥

अर्थ-मूँगा-सर्वदोपनाशक, दीपन, रुचिकारक, पुष्टिदायक तथा क्षय, पाण्डु, ज्वर, श्वास, खाँसी और मेदरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

प्रवालमधुरसाम्लंकफपित्तार्त्तिदोपऽनुत्। वीर्य्यकान्तिकरं स्त्रीणांधृतेमंगलदायकम् ॥क्षयपित्तास्रकासघ्नदीपनपाचन लघु। विपभूतादिशमनविद्रुमनेत्ररोगहृत् ॥

अर्थ-मूँगा-मधुर, अम्ल, कफनाशक, पित्तनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक, कान्तिजनक, स्त्रियोंको धारण करनेसे मगलदायक, क्षयनाशक, रक्तपित्त-हारक, कासघ्न, दीपन, सारक, पाचक, हलका तथा ज्वर, विप, भूतादि-बाधा, उन्माद, पाण्डुरोग, प्रमेह और नेत्ररोगको दूर करे है।

प्रवालमजरीगुणा।

प्रवालमजरीसार्द्राकामपुष्टिकरीनृणाम्।
सेवितासततदेहेवीर्य्यस्तम्भकरोतिच ॥

अर्थ-मूँगेकी कच्ची बेल-मनुष्योंके काम और पुष्टिको देनेवाली है और इसको निरतर सेवन करनेसे वीर्य्यस्तम्भ होता है।

प्रवालोत्पत्तिलक्षणम्।

बालार्ककिरणारक्तासागरसलिलोद्भवाचजलतापा।
नत्यजतिनिजांरुचिंनिकपेघृष्टापिसाप्तृताजात्या ॥
पक्वबिंबफलच्छायवृत्तायतमवक्रकम्। स्निग्धमव्रणकस्थूल प्रवालसप्तधाशुभम् ॥ आररगजलाक्रान्तिवक्रसूक्ष्मसको-टरम्। रूक्षकृष्णलघुश्वेतप्रवालमशुभत्यजेत ॥

अर्थ-समुद्रमें बालसूर्य्यके किरणोंकी समान लाल मूगेकी बेल उत्पन्न होती है वह बेल कसोटीपे घिसनेसेभी अपनी कान्ति और रगको नहीं

छोडती तथा अमृतकी समान गुणकारी है। पकी बन्दुरीके फलकी समान लाल, गोल, लम्बे, सरल, स्निग्ध, व्रणरहित और स्थूल इन सात लक्षणोंसे युक्त मूंगे उत्तम होते हैं। पीतलकी समान रंगवाले, पानीकी समान रंगवाले, वक्र (टेढे) सूक्ष्म, छिद्रयुक्त, रूक्ष, कृष्ण, हल्के और श्वेत ऐसे मूंगे त्याज्य हैं।

मरकतनामानि।

गारुत्मतमरकतमश्मगर्भहरिन्मणिः।

अर्थ-गारुत्मत, मरकत, अश्मगर्भ, हरिन्मणि (गारुत्मक, गरुडाश्म, मरक्त, राजनील, गरुडाङ्कित, रौहिणेय, सौपर्ण, गरुडोद्गीर्ण बुधरत्न, अश्मगर्भज, गरलारि, वापबोल, गारुड, गरुडोत्तीर्ण, वासबोल)

सं० मरकत।
हिं० पन्ना।
बं० पान्ना।
म० पाचूरत्न।
गु० लीलापानु।
क० पाचि पचे।
तै० नील्य।
इं० इमरैल्ड। Emerald
लै० स्मैरेग्डस्। Smaragdus
फा० जुमुर्रुद।
अ० जमर्रुद।

मरकतगुणाः।

पाचिकाशीतलारुच्यारसकालेमधु स्मृता।
पुष्टिकृद्विषहावृष्याभूतबाधाम्लपित्तहा॥

अर्थ-पन्ना-शीतल, रुचिकारक, मधुररसान्वित, पुष्टिकारक, विषनाशक, वीर्यवर्द्धक तथा भूतबाधा और अम्लपित्तको दूर करै है।

अन्यच्च।

ज्वरच्छर्दिविषश्वाससन्तापाग्निक्षमार्शनुत्।
दुर्नामपाण्डुशोफघ्नतार्क्ष्यमोजोविवर्द्धनम्॥

अर्थ-पन्ना-ज्वर, वमन, विष, श्वास, सन्ताप, मन्दाग्नि, बवासीर, पाण्डुरोग और सूजनको दूर करै और ओजको बढानेवाला है।

मरकतमणिपरीक्षा।

स्वच्छगुरुस्निग्धगात्रचगार्द्वसमेतमव्यगबहुरंगम्। शृगारीमरकतनिभृयात। शर्करिलरूक्षमलिनम्। लघुहीनकान्तिकलमपत्रासयुतनिकृतागमरकतममरोपिनोपयुंजीत।

अर्थ-स्वच्छ, भारी, स्निग्ध, मृदु, अव्यग और बहुरंगवाला ऐसा पन्ना शृङ्गारी मनुष्योंको धारण करना चाहिये। खरखरा, रूखा, मलिन, हलका कान्तिहीन, कलमपयुक्त, त्रासयुक्त और विकृताग धारण नहीं करे।

अपिच।

हरिद्वर्णगुरुस्निग्धस्फुटरश्मिरयशुभम्। भासुरभासनंता-क्ष्यगात्रसमंसुसमतम् ॥ कपिलकर्कशनीलपाण्डुकृष्णंच लाघवम् ॥ चिपटविकृतकृष्णरूक्षताक्ष्यंनशस्यते।(रत्नाकर)

अर्थ-हरेरंगवाला-भारी, स्निग्ध, कान्तिवान्, तेजस्वी, दीप्तियुक्त और गरुडकी समान रूपवाला ऐसा पन्ना उत्तम है। कपिलवर्ण, खरखरा, नीला, पाण्डुवर्ण, कृष्ण, हलका, चिपट, विकृत और रूखा ऐसा पन्ना उत्तम नहीं होता।

पुष्परागनामानि।

पुष्परागोजीवरत्नपीतस्फटिकइत्यपि।

अर्थ-पुष्पराग, जीवरत्न, पीतस्फटिक, (पुष्पराज, मञ्जुमणि, वाचस्पतिवल्लभ, पीत, पीतरक्त, पीताश्मा, गुरुरत्न, पीतमणि)

सं०	पुष्पराग।	क०	पुष्पराग।
हिं०	पुखराज।	तै०	पुष्परागम्।
बं०	पुष्पराग।	इं०	टोपाज। Topag
म०	पुष्कराज।	लै०	टोपाजीयो। Topagio
गु०	पुखराज, पीळु रत्न।		

पुष्परागगुणा।

पुष्परागविषच्छर्दिकफवाताग्निमांद्यजित्।
दाहकुष्ठार्शशमनदीपनलघुपाचनम् ॥

अर्थ-पुखराज-विष, वमन, कफ, वात, मन्दाग्नि, दाह, कुष्ठ, और बवासीरको दूर करेहै, दीपन, हलका और पाचक है।

अन्यच्च।

पुष्परागोम्लःशीत.स्याद्वातलोग्निश्चदीपन।
वृष्योवयःस्थापकश्चप्रज्ञाबुद्धिविवर्द्धन.॥
वातनाशकर' प्रोक्तोमुनिभि पारदर्शिभिः।

अर्थ-पुष्पराज-अम्ल, शीतल, पाकी, अग्निप्रदीपक, वीर्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक, प्रज्ञाजनक, बुद्धिवर्द्धक और वातविनाशक है ।

पुष्परागलक्षणम् ।

पुष्परागगुरुस्निग्धस्वच्छस्थूलसममृदु ।
कर्णिकारप्रसूनाभमसृणशुभमष्टधा ॥

अर्थ-पुखराज-भारी, चिकना, निर्मल, स्थूल, गोल, नरम, अमलतासके फूलकी समान पीलेरंगका और मसृण इन आठ प्रकारसे पुखराज उत्तम जानना ।

अन्यच्च ।

कृष्णबिन्द्वङ्कितव्यंगधवलमलिनलघु । विच्छायशर्करा-
भागपुष्परागसदोषलम् ॥ स्वच्छायपीतगुरुगात्रसुरंग-
शुद्ध स्निग्धचनिर्मलमतीवसुवृत्तशीलम् । यत्पुष्परागम-
मलकलयेदमुष्य पुष्णातिकीर्तिमतिशौर्यसुखायुरर्थान् ॥
अयसलुपुष्परागोजात्यस्तथाचायपरीक्षकैरुक्त ।

अर्थ-जो पुखराज-काला, बिंदु और रेखा, व्यंग (दागयुक्त) सफेद, मलिन, हलका, धवल और खरखरा ऐसा पुखराज दोषवाला होताहै । और जो दीप्तिवान्, पीला, भारी, उत्तमरंगदार, शुद्ध, स्निग्ध, निर्मल और उत्तम गोल ऐसा पुखराज श्रेष्ठ होताहै यह पुखराज कीर्ति, शौर्य, सुख, आयु अर्थको देवेहै ।

नीलमणिनामानि ।

नीलस्तुशौरिरत्नस्यान्नीलाश्मानीलरत्नकः ।
नीलोपलस्तृणग्राहीमहानीलःसुनीलकः ॥

संस्कृतभाषामें	नील, शौरिरत्न, नीलाश्मा, नीलरत्नक, नीलोपल, तृणग्राही, महानील, सुनीलक (मगार)
हिन्दीभाषामें	नीलमणि ।
बंगभाषामें	नीलमणि ।
मराठीभाषामें	नीलमणि ।
गुजरातीभाषामें	नीलम का नग ।
फारसीभाषामें	नील ।

तैलिङ्गीभाषामें नील ।
इंग्रेजीभाषामें सेफायर । Saffire
लैटिन्भाषामें सेफायर्स । Saffirus

नीलगुणा ।

श्वासकासहरंवृष्यत्रिदोषघ्नसुदीपनम् ।
विषमज्वरदुर्नामपापघ्ननीलमीरितम् ॥

अर्थ-नीलम-श्वास, खासी, त्रिदोष, विषमज्वर, ववासीर और पापनाशक है, वीर्य्यवर्द्धक और अग्निप्रदीपक है ।

अन्यच्च ।

नील सतिक्तकोष्णश्चकफपित्तानिलापह ।
योदधातिशरीरेचसौरिमर्दनदोभवेत् ॥

अर्थ-नीलम्-कडवा, गरम, कफपित्तनाशक और इसको शरीरमें धारण करनेसे शनिग्रहकी बाधा दूर होतीहै ।

नीलस्य वर्णभेदा ।

सितशोणपीतकृष्णच्छायानीला क्रमादिमेकथिता ।
विप्रादिवर्णसिद्ध्यैधारणमस्यापिवज्रवत्फलदम् ॥

अर्थ-सफेद, लाल, पीला और काला इन भेदोंसे नीलम् चार प्रकारका है तहा सफेद रगका ब्राह्मण, लालरगका क्षत्रिय, पीले रगका वैश्य और काले रगका शूद्र होताहै । नीलम् अगम धारण करनेसे हीरेकी समान फल देताहै ।

गोमेदनामानि ।

पिंगस्फटिकोगोमेदोऽगस्तिसत्त्वतमोमणि ।

अर्थ-पिङ्गस्फटिक, गोमेद, अगस्तिसत्व, तमोमणि (गोमेदक, पीतरत्नक, वाहुरत्न, स्वर्भानव)

स० गोमेदक । क० गोमेद ।
हिं० गोमेदमणि । तै० गोमेदक ।
व० गोमेद । इ० ओनिक्स । Onyx
म० गोमेदमणि । लै० ओनिक्स । Onyx
गु० गोमूत्र जेवु पीलारगनु ।

अर्थ-पुष्पराज-अम्ल, शीतल, वादी, अग्निमर्दीपक, वीर्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक, मनाजनक, बुद्धिवर्द्धक और वातविनाशक है।

पुष्परागलक्षणम्।

पुष्परागगुरुस्निग्धस्वच्छस्थूलसमंमृदु।
कर्णिकारप्रसूनाभमसृणशुभमष्टधा॥

अर्थ-पुखराज-भारी, चिकना, निर्मल, स्थूल, गोल, नरम, अमलतासके फूलकी समान पीलेरंगका और मसृण इन आठ प्रकारसे पुखराज उत्तम जानना।

अन्यच्च।

कृष्णविन्द्वाङ्कितव्यगधवलमलिनलघु। विच्छायशर्कराभागपुष्परागसदोपलम्॥ स्वच्छायपीतगुरुगात्रसुरंगशुद्ध स्निग्धचनिर्मलमतीवसुवृत्तशीलम्। यत्पुष्परागममलकलयेदमुष्य पुष्णातिकीर्तिमतिशौर्यसुखायुरर्थान्॥ अयखलुपुष्परागोजात्यस्तथाचाग्रपरीक्षकैरुक्तः।

अर्थ-जो पुष्पराग-काला, विंदु अंकित, व्यग (झांईयुक्त) सफेद, मलिन, हलका, बेरंग और खरखरा ऐसा पुखराज दोषवाला होताहै। और जो दीप्तिवान्, पीला, भारी, उत्तमरंगवाला शुद्ध, स्निग्ध, निर्मल और उत्तम गोल ऐसा पुखराज श्रेष्ठ होताहै यह पुखराज कीर्ति शौर्य, सुख, आयु अर्थको देताहै।

नीलमणिनामानि।

नीलस्तुशौरिरत्नस्यान्नीलाश्मानीलरत्नक।
नीलोपलस्तृणग्राहीमहानील:सुनीलक॥

संस्कृतभाषामें	नील, शौरिरत्न, नीलाश्मा, नीलरत्नक, नीलोपल, तृणग्राही, महानील, सुनीलक (मसार)
हिन्दीभाषामें	नीलमणि।
बंगभाषामें	नीलमणि।
मराठीभाषामें	नीलमणि।
गुजरातीभाषामें	नीलम काचनग।
कर्णाटकभाषामें	नील।

न्तिगोमेदप्रतिरूपिणम् ॥ शुद्धस्यगोमेदमणेस्तुमूल्यंसुवर्णतोद्वैगुणमाहुरेके। अन्येतथाविद्रुमतुल्यमूल्यंतथापरेचामरतुल्यमाहुः ॥ चतुर्विधानामेपान्तुधारणंपरिसम्मतम् ।

(भोजराजकृतयुक्तिकल्पतरु.)

अर्थ-गोमेदमणि-हिमालय और सिन्धुमें होती है । स्वच्छकान्तिवाली, भारी, चिकनी, अच्छेवर्णवाली, दीप्तिमान्, गोल और पिंजरयुक्त ऐसी गोमेदमणि उत्तम होती है, जातिके भेदसे गोमेदमणि चार प्रकारकी है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तहा ब्राह्मण सफेद रंगकी, क्षत्रिय लाल रंगकी, वैश्य पीले रंगकी और शूद्र नीले रंगकी होती है । इसी प्रकार चार तरहकी छाया होती है सफेद, लाल, पीली और काली । जो भारी, सफेद-रंगकी, चिकनी तथा अत्यन्त पुरानी और स्वच्छ हो ऐसी गोमेदमणिको धारण करनेसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है । जो हलकी, विरूप, खरदरी, स्नेहसे लिपटी हुईसी और मलीन है उस गोमेदमणिको धारण करनेसे-सम्पत्ति,भोग,बल और वीर्य्यका नाश होताहै। जो दोष हीरेमें होतेहैं वह दोष गोमेद मणिमेंभी हैं । इसकी परीक्षा अग्नि और शानसे करनी चाहिये स्फटिक मणिकोभी गोमेदमणि बनालेते हैं । शुद्ध गोमेदमणिका मूल्य सुवर्णसे दूना है और कोई मूँगेकी बराबर कहते हैं । कोई अमररत्नकी समान कहते हैं । इसका चार प्रकारका धारण करना शुभ है ।

वैदूर्यनामानि ।

वैदूर्य्यंराष्ट्रककेतुरत्नमेघखराङ्कुरम् ।

अर्थ-वैदूर्य्य, राष्ट्रक, केतुरत्न, मेघखराङ्कुर (बालवायज, बालसूर्य्य, बालसूर्यक, कैतव, प्रावृष्य, अभ्ररोह, शराब्दाङ्कुर, विदूररत्न विदूरज, केतुग्रहवल्लभ)।

संस्कृतभाषामें	वैदूर्य्य ।
हिन्दीभाषामें	वैदूर्य्य, वैदूर्य, लहसुनिया ।
बंगभाषामें	वैदूर्य्य ।
मराठीभाषामें	वैदूर्य्यरत्न ।
गुजरातीभाषामें	माजरानी आँख जेरु रुमणियो ।
कर्णाटकीभाषामें	वैदूर्य्य ।

गोमेदरत्नगुणाः।

गोमेदकोम्लश्चोष्णश्चवातकोपविकारनुत।
दीपनः पाचनश्चैवधृतोयंपापनाशनः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, उष्ण, वातके कोपको शान्ति करनेवाली, दीपन, पाचक और इसको शरीरमें धारण करनेसे पापका नाश होताहै।

अन्यच्च।

गोमेदकफपित्तघ्नंक्षयपाण्डुक्षयकरम्।
दीपनपाचनरुच्यंत्वच्यंबुद्धिप्रबोधनम् ॥

अर्थ-गोमेदमणि-कफपित्तनाशक, क्षयनाशक, पाण्डुरोगनाशक, दीपन, पाचक, रुचिकारी, त्वचाको हितकारी और बुद्धिप्रबोधक है।

अपिच।

गोमेदोम्लः पाचकश्चचक्षुष्योष्णोग्निदीपनः।
लघुर्वातस्यकामस्यनाशकारीप्रकीर्त्तितः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, पाचक, नेत्रोंको हितकारी, गरम, अग्निवर्द्धक, हलकी तथा वात और रोगोंको दूर करे है।

नानार्थ॥।

हिमालयेवासिन्धौवागोमेदमणिसम्भवः। स्वच्छकान्तिर्गुरु स्निग्धोवर्णाढयोदीप्तिमानपि॥वलक्ष पिङ्गेयन्योगोमेदइतिकीर्त्तितः।चतुर्धाजातिभेदस्तुगोमेदोऽपिप्रशस्यते। ब्राह्मणः शुक्लवर्णः स्यात्क्षत्रियोरक्तउच्यते। आपीतोवैश्यजातिस्तुशूद्रस्तुनीलउच्यते॥ छायाचतुर्विधाश्वेतारक्तपीताऽसितातथा।गुरुप्रभाढ्य सितवर्णरूप स्निग्धोमृदुर्वान्तिमहापुराण॥ स्वच्छस्तुगोमेदमणिर्धृतोनकरोतिलक्ष्मीं धनधान्यवृद्धिम्। लघुर्विरूपोऽतिरुगेन्यमानःस्नेहोपलिप्तोमलिनःखरोऽपि। करोतिगोमेदमणिर्विनाशंसम्पत्तिभोगावलवीर्य्यराशेः। येदोषाहीन्येज्ञरत्नेगोमेदमणावपि॥ परीक्षानिह्नितास्त्वर्णाणयातरुकोविदैः।स्फटिकेनतरुन-

न्तिगोमेदप्रतिरूपिणम् ॥ शुद्धस्यगोमेदमणेस्तुमूल्यंसुवर्णतोद्वैगुणमाहुरेके। अन्येतथाविद्रुमतुल्यमूल्यतथापरेचामरतुल्यमाहुः ॥ चतुर्विधानामेपान्तुधारणपरिसम्मतम् ।

(भोजराजकृतयुक्तिकल्पतरुः)

अर्थ-गोमेदमणि-हिमालय और सिन्धुमें होती है । स्वच्छकान्तिवाली, भारी, चिकनी, अच्छेवर्णवाली, दीप्तिमान्, गोल और पिंजरयुक्त ऐसी गोमेदमणि उत्तम होती है, जातिके भेदसे गोमेदमणि चार प्रकारकी है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तहा ब्राह्मण सफेद रगकी, क्षत्रिय लाल रगकी, वैश्य पीले रगकी और शूद्र नीले रगकी होती है । इसी प्रकार चार तरहकी छाया होती है सफेद, लाल, पीली और काली । जो भारी, सफेद-रगकी, चिकनी तथा अत्यन्त पुरानी और स्वच्छ हो ऐसी गोमेदमणिको धारण करनेसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है । जो हलकी, विरूप, खरदरी, स्नेहसे लिपटी हुईसी और मलीन है उस गोमेदमणिको धारण करनेसे-सम्पत्ति,भोग,बल और वीर्य्यका नाश होताहै। जो दोप हीरेमें होते हैं वह दोप गोमेद मणिमेंभी हैं । इसकी परीक्षा अग्नि और शानसे करनी चाहिये स्फटिक मणिकोभी गोमेदमणि बनालेते है । शुद्ध गोमेदमणिका मूल्य सुवर्णसे दूना है और कोई मूँगेकी बराबर कहते हैं । कोई अमररत्नकी समान कहते हैं । इसका चार प्रकारका धारण करना शुभ है ।

वैदूर्यनामानि ।

वैदूर्य्यराष्ट्रककेतुरत्नमेघखराङ्कुरम् ।

अर्थ-वैदूर्य्य, राष्ट्रक, केतुरत्न, मेघखराकुर (बालवायज, बालसूर्य्य, बालसूर्यक, केतव, मावृष्य, अभ्ररोह, शरान्द्राकुर, विदूररत्न विदूरज, केतुग्रहवल्लभ) ।

संस्कृतभाषामें	वैदूर्य्य ।
हिन्दीभाषामें	वैदूर्य्य, वैदूर्य, लहसुनिया ।
बंगभाषामें	वैदूर्य्य ।
मराठीभाषामें	वैडूर्य्यरत्न ।
गुजरातीभाषामें	माजरानी आँख जेवु लसणियो ।
कर्णाटकीभाषामें	वैडूर्य्य ।

तैलङ्गभाषामें वैडूर्यं ।
अंग्रेजीभाषामें केट्सआइ । Cat eye

अथ गुणाः ।

वैडूर्य्यमुष्णमम्लञ्च कफमारुतनाशनम् ।
गुल्मादिदोषशमनं भूषितञ्च शुभावहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वैडूर्य-गरम, अम्ल, कल्याणकारक तथा कफ, वात और गुल्मादि दोषोंको दूर करे है । एवं इसका धारण करनेसे शुभ फलको देता है ।

अन्यच्च ।

वैडूर्य्यं रक्तपित्तघ्नं प्रज्ञायुर्बलवर्द्धनम् ।
पित्तप्रधानरोगघ्नं दीपनं गुल्मनाशनम् ॥

अर्थ-वैडूर्यमणि-रक्तपित्तनाशक प्रज्ञा आयु और बलवर्द्धक, पित्तप्रधानरोगनाशक, दीपन और गुल्मको दूर करे है ।

अपिच ।

वैडूर्य्यमुष्णमम्लं स्यादग्निदं च रसायनम् ।
शूलगुल्मोदरकफवातनाशकरं मतम् ॥
अन्ये गुणा हीरकवद्विज्ञेया विबुधैः किल ।

अर्थ-वैडूर्यमणि-गरम, अम्ल, अग्निदीपक, रसायन तथा शूल, गुल्म, उदररोग, कफ और वातका नाश करे है और गुण हीरेकी समान जानने ।

उत्तमवैडूर्य्यलक्षणम् ।

वैडूर्य्यं श्यामशुभ्राभं समं स्वच्छं गुरु स्फुटम् ।
श्रेमच्छुभ्रान्तरीयेण गर्भितं शुभमीरितम् ॥

अर्थ-जो वैडूर्यरत्न (लहसुनिया)-श्याम और शुभ्र तथा विमलकान्तिवाला हो, समगोल, स्वच्छ, भारी, स्फुट, भीतरसे शिरासे गर्भ, और चन्द्रमाकी समान श्याम कांति हो ऐसा वैडूर्य उत्तम होता है ।

इति समाप्तिः ।

अथोपरत्नानि ।

वैक्रान्तनामानि ।

वैक्रान्तं नेत्रविक्रान्तं नीलवज्रं कुवज्रकम् ।
गोनासं क्षुद्रकुलिशं चीर्णवज्रं भगोनसम् ॥

अर्थ-वैक्रान्त, विक्रान्त, नीलवज्र, कुवज्रक, गोनास, क्षुद्रकुलिश, जीर्णवज्र, गोनस ।

वैक्रान्तगुणा ।

वैक्रान्तस्तुत्रिदोषघ्नःषड्रसोदेहदार्ढ्यकृत् ।
पाण्डूदरज्वरश्वासकासक्षयप्रमेहनुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणि-त्रिदोषनाशक, षड्रसान्वित, देहको दृढ करनेवाला तथा पाण्डुरोग, उदररोग, ज्वर, श्वास, खासी, क्षय और प्रमेहको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वैक्रान्तोवज्रसदृशोदेहलोहकरोमतः ।
विषघ्नोरसराजश्चज्वरकुष्ठक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणिके गुण हीरेके समान है, देहको दृढ करनेवाली, पारेके विषको हरनेवाली तथा ज्वर, कुष्ठ और क्षयरोगको दूर करे है ।

सूर्य्यकान्तनामानि ।

दीप्तोपलःसूर्य्यकान्तोज्वलनाश्माग्निगर्भकः ।

अर्थ-दीप्तोपल, सूर्यकान्त, ज्वलनाश्मा, अग्निगर्भक (रविकान्त, अर्कोपल, तापन, तपनमणि, सूर्य्याश्मा, दहनोपम, सूर्य्यमणि) ।

संस्कृतभाषामें	सूर्यकान्त ।
हिन्दीभाषामें	आतिशीशीशा, सूर्यकान्त ।
बंगभाषामें	आतसपाथर ।
मराठीभाषामें	सूर्य्यकान्तमणि ।
गुजरातीभाषामें	अगनचशमानो काच ।
इंग्रेजीभाषामें	मेग्निफाइंग ग्लास । Magnifying glass

सूर्य्यकान्तगुणाः ।

सूर्य्यकान्तोभवेदुष्णोनिर्मलश्चरसायनः ।
वातश्लेष्महरोमेध्यःपूजनाद्रवितुष्टिदः ॥ रा०नि)

अर्थ-सूर्य्यकान्तमणि-गरम, निर्मल, रसायन, वात और कफनाशक, मेधाजनक और इसका पूजन करनेसे सूर्य संतुष्ट होताहै ।

अन्यच्च ।

सूर्य्यकान्तस्त्रिदोषघ्नोमेध्योष्णश्चरसायनः ।

तैलङ्गीभाषामें वैडुरय ।
इंग्रेजीभाषामें केटसआइ । (Cat's eye)

अथ गुणाः ।

वैडूर्य्यमुष्णमम्लञ्च कफमारुतनाशनम् ।
गुल्मादिदोषशमनं भूषितञ्च शुभावहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वैडूर्य-गरम, अम्ल, कल्याणकारक तथा कफ, वात और गुल्मादि दोषोंको दूर करे है। एवं इसको धारण करनेसे शुभ फलको देता है।

अन्यच्च ।

वैडूर्य्यं रक्तपित्तघ्नं प्रज्ञायुर्बलवर्द्धनम् ।
पित्तप्रधानरोगघ्नं दीपनं गुल्मनाशनम् ॥

अर्थ-वैडूर्यमणि-रक्तपित्तनाशक, प्रज्ञा आयु और बलवर्द्धक, पित्तप्रधानरोगनाशक, दीपन और गुल्मको दूर करे है।

अपिच ।

वैडूर्य्यमुष्णमम्लं स्यादग्निदं च रसायनम् ।
शूलगुल्मोदरकफवातनाशकरं मतम् ॥
अन्ये गुणा हीरकवद्विज्ञेया विबुधैः किल ।

अर्थ-वैडूर्यमणि-गरम, अम्ल, अग्निप्रदीपक, रसायन तथा शूल, गुल्म, उदररोग, कफ और वातका नाश करे है और गुण हीरेकी समान जानने।

उत्तमवैडूर्यलक्षणम् ।

वैडूर्य्यं श्यामशुभ्राभं समं स्वच्छं गुरु स्फुटम् ।
भ्रमच्छुभ्रान्तरीयेण गर्भितं शुभमीरितम् ॥

अर्थ-जो वैडूर्यरत्न (लहसुनिया)-श्याम और शुभ्र तथा विमलवर्ण-विशिष्ट हो, समकोण, स्वच्छ, भारी, स्फुट, भीतरसे निकलते धवल, और चन्द्रमाकी समान श्याम कांति हो ऐसा वैडूर्य उत्तम होता है।

इति रत्नानि ।

अथोपरत्नानि ।

वैक्रान्तनामानि ।

वैक्रान्तञ्चैव विक्रान्तं नीलवज्रं कुवज्रकम् ।
गोनाम क्षुद्रकुलिशं गौणवज्रञ्च गोनसम् ॥

अर्थ–वैक्रान्त, विक्रान्त, नीलवज्र, कुवज्रक, गोनास, क्षुद्रकुलिश, जीर्णवज्र, गोनस ।

वैक्रान्तगुण ।

वैक्रान्तस्तुत्रिदोषघ्न·षड्रसोदेहदार्ढ्यकृत् ।
पाण्डूदरज्वरश्वासकासक्षयप्रमेहनुत् ॥

अर्थ–वैक्रान्तमणि–त्रिदोषनाशक, षड्रसान्वित, देहको दृढ करनेवाला तथा पाण्डुरोग, उदररोग, ज्वर, श्वास, खासी, क्षय और प्रमेहको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वैक्रान्तोवज्रसदृशोदेहलोहकरोमत· ।
विषघ्नोरसराजश्चज्वरकुष्टक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ–वैक्रान्तमणिके गुण हीरेके समान है, देहको दृढ करनेवाली, पारेके विषको हरनेवाली तथा ज्वर, कुष्ठ और क्षयरोगको दूर करे है ।

सूर्य्यकान्तनामानि ।

दीप्तोपल·सूर्य्यकान्तोज्वलनाश्माग्निगर्भकः ।

अर्थ–दीप्तोपल, सूर्यकान्त, ज्वलनाश्मा, अग्निगर्भक (रविकान्त, अर्कोपल, तापन, तपनमणि, सूर्याश्मा, दहनोपम, सूर्य्यमणि) ।

संस्कृतभाषामें	सूर्यकान्त ।
हिन्दीभाषामें	आतिशीशीशा, सूर्यकान्त ।
बंगभाषामें	आतसपाथर ।
मराठीभाषामें	सूर्य्यकान्तमणि ।
गुजरातीभाषामें	अगनचश्मानो काच ।
इंग्रेजीभाषामें	मेग्निफाइंग ग्लास । Magnifying glass

सूर्य्यकान्तगुणा· ।

सूर्य्यकान्तोभवेदुष्णोनिर्मलश्चरसायन· ।
वातश्लेष्महरोमेध्य·पूजनाद्रवितुष्टिदः ॥ रा०नि)

अर्थ–सूर्य्यकान्तमणि–गरम, निर्मल, रसायन, वात और कफनाशक, मेधाजनक और इसका पूजन करनेसे सूर्य संतुष्ट होताहै ।

अन्यच्च ।

सूर्य्यकान्तस्त्रिदोषघ्नोमेध्योष्णश्चरसायन ।

कफवातहरं प्रोक्तं पूर्वगैर्गुरुनिर्दर्जनैः ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-सूर्य्यकान्तमणि-त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, रसायन, कफ और वातको दूर करैहै ।

शुद्धः स्निग्धोनिर्व्रणोनिस्तुषस्तुयोनिर्घृष्टोव्योमनैर्मल्यमेति ।
यःसूर्य्यांशुस्पर्शनिर्यतवह्निर्जात्यामोयंचक्षतेसूर्य्यकान्तः ॥

अर्थ-जो चिकना, व्रणरहित, तुषरहित, घिसनेसे आकाशकी समान निर्मल होजाय और धूपमें रखनेसे जिसमें अग्नि मरउठे ऐसा सूर्य्यकान्त (आतिशीशीशा) उत्तम होवाहै ।

चन्द्रकान्तनामानि ।

चन्द्रकान्त सोममणि सिताश्मप्रस्तरोपल ।

अर्थ-चन्द्रकान्त, सोममणि, सिताश्मा, प्रस्तरोपल (कान्त, चन्द्रमणि, चन्द्रोपल, इन्दुकान्त, चन्द्राश्मा, शेशुरोपल, शीताश्मा, चन्द्रिकाद्राव शशिकान्त) ।

संस्कृतभाषामें	चन्द्रकान्त ।
हिंदीभाषामें	चन्द्रकान्त ।
बंगभाषामें	चन्द्रकान्त ।
मराठीभाषामें	चन्द्रकान्तमणि ।
कर्णाटकीभाषामें	चन्द्रकान्त ।
तैलंगीभाषाम	चन्द्रकान्त ।

चन्द्रकान्तमणिगुणाः ।

चन्द्रकान्तमणि शीत स्निग्धःस्वच्छ शिवप्रियः ।
अस्रदाहग्रहालक्ष्मीविनाशनोनिरन्तरम् ॥

अर्थ-चन्द्रकान्तमणि-शीतल, स्निग्ध, स्वच्छ, शिवप्रिय सदा रुधिर-विकार, दाह, ग्रह और अलक्ष्मीका नाशकरैहै ।

चन्द्रकान्तोद्भवजलगुणाः ।

चन्द्रकान्तोद्भवजलंशीतदाहविनाशनम ।

अर्थ-चन्द्रकान्तमणिका जल-स्वच्छ, शीतल और दाहको दूर करैहै ।

चन्द्रकान्तस्य लक्षणम् ।

पूर्णेन्दुकरसंस्पर्शादमृतस्रवतिक्षणात ।

चन्द्रकान्तंतदाख्यातंदुर्लभंतत्कलौयुगे ॥ (यु०क०)

अर्थ-चन्द्रमाकी किरणोंके स्पर्शसे जिसमें अमृत (जल) टपकताहै उसीको चन्द्रकान्तमणि कहतेहैं यह कलियुगमें अत्यन्त दुर्लभहै ।

स्फटिकनामानि ।

शैव'शूकःश्वेतरत्नस्फटिकोनिस्तुपोपलम् ।

अर्थ-शैव, शूक, श्वेतरत्न, स्फटिक, निस्तुपोपल (स्फाटिक, स्फाटक, स्फटिकात्मा, स्फाटीक, स्फाटिकोपल, भासुर, स्फटिकोपल, शालिपिष्ट, यौगशिल, सितोपल, विमलमणि, निर्मलोपल, स्वच्छ, स्वच्छमणि, अमररत्न, निस्तुपरत्न, शिवप्रिय) ।

स०	स्फटिक ।	गु०	फाटकमणि ।
हिं०	स्फटिक, फटिकमणि ।	क०	स्फटिक ।
बं०	फटिक् ।	तै०	स्फटिक ।
म०	स्फटीक ।	इं०	क्रिष्टल ।

स्फटिकगुणाः ।

स्फटिक'समवीर्य्य स्यात्पित्तदाहार्तिशोपनुत् ।
तस्याक्षमालाजपतोधत्तेकोटिगुणफलम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-स्फटिकमणि-समवीर्य्य तथा पित्त, दाहकी वेदना और शोपको दूर करे है इसकी मालाके जपनेसे कोटिगुण फल होता है ।

परोजनामानि ।

पेरोजहरिताश्माचभस्माङ्गंहरितद्विधा ।

अर्थ-पेरोज, हरिताश्म, भस्माङ्ग और हरित इन भेदोंसे दो प्रकारका है ।

संस्कृतभाषामें	पेरोज ।
हिन्दीभाषामें	फिरोजा ।
बंगभाषामें	उपरत्नविशेष ।
मराठीभाषामें	पेरोज ।
गुजरातीभाषामें	पीरोजो ।
कर्णाटकीभाषामें	पेरोज ।
इंग्रेजीभाषामें	टरकोइज्ञ । Tirkois
लेटिन्भाषामें	टरचेसीयस टरचीना । Terchesius Turchina

फार्सीभाषामें फिरोजा।
अरबीभाषामें फिरोजज।

अस्य गुणाः।

पेरोजस्तु कषायः स्यान्मधुरो दीपनः परम्।
स्थावरं जङ्गमं चैव मयोगाच्च तथा विषम्॥
तत्सर्वं नाशयेच्छीघ्रं शूलभूतादिदोषजम्।

अर्थ-फिरोजा-कषेला, मधुर, दीपन और दिर्गोके संयोगसे स्थावर तथा जंगम विषको दूर करे है और भूतादि दोषोंसे उत्पन्न हुये शूलका नाश करे है।

काचनामानि।

काचः कृत्रिमरत्नं स्यात्पिगाणो मुकुरोपि च।

अर्थ-काच, कृत्रिमरत्न, पिगाण, मुकुर।

संस्कृतभाषामें	काच।	इंग्रेजीभाषामें	ग्लास। Glass
हिन्दीभाषामें	काँच कच्च।	लेटिनभाषामें	ग्लेसम। [illegible]
बंगभाषामें	काच।	फार्सीभाषामें	आबगीनां।
मराठीभाषामें	काच।	अरबीभाषामें	जुजाज।
गुजरातीभाषामें	काच।		

अस्य गुणाः।

काचस्तु सारकः कथितो व्रणनेत्रहितावहः।
लेखनीशूलहृत्प्रोक्तो वैद्यशास्त्रविशारदैः॥ (नि०र०)

अर्थ-काँच-सारक कहा है, व्रण और नेत्रोंको हितकारी, लेखन और शूलनाशक है।

दुग्धपाषाणनामानि।

दुग्धपाषाणिका क्षीरी गिरा गौरी सिताभ्रभा।

अर्थ-दुग्धपाषाणिका, क्षीरी, गारी, सरगाभिभा (दुग्धपाषाण, दुग्धपाषाणक दुग्धाश्मा, गोमेदसन्निभ, शशाभ, दीपिक, दुग्धी और सर, गौर)

संस्कृतभाषामें दुग्धपाषाण।
हिंदीभाषामें [illegible]।

वगभाषामें	शिरगोला ।
मराठीभाषामें	शिरगोळा ।
गुजरातीभाषामे	दुधियो पाणो ।
कर्णाटकीभाषामें	रगवालियहरेल्ल ।

अस्यगुणाः ।

दुग्धपाषाणकोरुच्यईषदुष्णोज्वरापहः ।
पित्तहृद्रोगशूलघ्न कासाध्मानविनाशनः ॥

अर्थ–दुग्धपाषाण–रुचिकारक, ईषदुष्ण, ज्वरनाशक तथा पित्त, हृदयरोग, शूल, खाँसी और आध्मानको दूर करे है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे रत्नोपरत्नवर्गः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ विषवर्गः ।

विषनामानि ।

काकोलोगरल क्ष्वेडोविषस्याद्दारदोपिच ।
सौराष्ट्रिक शौक्लकेयोब्रह्मपुत्र प्रदीपन ॥

अर्थ–काकोल, गरल, क्ष्वेड, विष, दारद, सौराष्ट्रिक, शौक्लकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन (आहेय, अमृत, गरद, कालकूट, कसाकुल, हारिद्र, रक्तशृङ्गिक, नील, गर, घोर, हालाहल, हलाहल, शृङ्गी, भुगर, जाङ्गल, तीक्ष्ण, रस, रसायन, जगुल, जागुल, वत्सनाभ, जीवनाघात, किपल, प्राणहर)

संस्कृतभाषामें	वत्सनाभ, अमृत ।
हिन्दीभाषामें	वचनाग, मीठाविष ।
वगभाषामें	काटविष, अमृतविष ।
मराठीभाषामें	वचनाग ।
गुजरातीभाषामें	ठिंगडियो, वछनाग ।
कर्णाटकीभाषामे	वशनवी ।
तैलिंगीभाषामें	नाभी ।
इग्रजीभाषामें	एकोनाईट । AConite
लैटिन्भाषामें	एकोनाइटफेरोक्स । Aconitumferox
फारसीभाषामें	जहर ।
अरबीभाषामें	विष ।

वत्सनाभविषगुणाः।

वत्सनाभोतिमधुरः सोष्णो वातकफापहः।
कण्ठरुक्सन्निपातघ्नः पित्तसन्तापकारकः ॥ (शा०नि०)

अर्थ-(वत्सनाभ मीठा)-अत्यन्त मधुर, गरम, वातकफनाशक तथा कण्ठरोग और सन्निपातको दूर करताहै पित्त और सन्तापको उत्पन्न करता है।

अन्यच्च।

विषप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच ॥
आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥

अर्थ-विष-प्राणनाशक, व्यवायी, विकाशी आग्नेय, वातकफनाशक, योगवाही और मदकारक है।

अपिच।

रूक्षमुष्णंतथातीक्ष्णंसूक्ष्ममाशुव्यवायिच। विकाशिविश-
दञ्चैवलघ्वपाकिचतद्दश ॥ तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्या-
त्पित्तसशोणितम्।तैक्ष्ण्यान्मतिंमोहयतिमर्म्मबन्धान्भिन-
त्तिच॥शरीरावयवान्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्विकरोतिच। आशु-
त्वादाशुतत्प्रोक्तंव्यवायात्प्रकृतिंहरेत्। विकाशित्वाद्दोष-
निदोषान्धातून्मलानपि।अतिरिच्यतेवैशद्याद्दुश्चिकित्स्य-
ञ्चलाघवात्॥दुर्ज्जरत्वाविपाकित्वात्तस्मात्क्लेशयतेचिरम्।

अर्थ-रूक्ष, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, आशु, व्यवायी, विकाशी, विशद, लघु और अपाकी यह दश गुण विषमें रहते हैं। वहीं रूक्षगुणसे वायु प्रकुपित होताहै। उष्णगुणसे पित्त और रक्त कुपित होते हैं। तीक्ष्णगुणसे मतिको मोहता और मर्मबन्धनका छेदन करताहै। सूक्ष्मगुणसे सब शरीरके अवयवोंमें इसका प्रवेश करके विकारोंको उत्पन्न करताहै। आशुगुणसे शीघ्र ही अपने कार्योंको प्रकाशित करता है। व्यवायिगुणसे प्रकृतिको हर लेता है। विकाशिगुणसे दोषादि धात्वादि और मलादि इनके सम्बन्धोंको छोड़ाताहै। विशदगुणसे इसका अत्यन्त दूषणको करताहै, लघुगुणसे अतिशय दुश्चिकित्स्य जानना और अपाकि गुणसे दुर्जर तथा इसलिये बहुत कालपर्यन्त क्लेश होताहै।

अन्यच्च ।

विषरसायनवल्यवातश्लेष्मविकारनुत् । कटुतिक्तकषायञ्च मदकारिसुखप्रदम् ॥ व्यवायिचशिरोद्धाहिकुष्टवातास्रनाशनम् । अग्निमांद्यश्वासकासप्लीहोदरभगन्दरम्॥गुल्मपाण्डुव्रणार्शांसिनाशयेद्विधिसेवितम् ॥

अर्थ–विधिसेवित विष–रसायन, बलकारक तथा वात, श्लेष्म, कुष्ठ, वातरक्त, अग्निमाद्य,श्वास, खाँसी प्लीहा, उदररोग, भगन्दर, गुल्म, पाण्डु और व्रणका नाश करे है तथा चरपरा, कडवा, कपेला, मदकारी, सुखकारी और व्यवायी है ।

अपिच ।

विषव्रणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच।आग्नेयवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥ तदेवयुक्तियुक्तन्तुप्राणदायिरसायनम्। पथ्याशिनांत्रिदोषघ्नंबृंहणवीर्य्यवर्द्धनम् ।

अर्थ–विष–व्यवायी, विकाशी, योगवाही, मादक है इसीको युक्तिपूर्वक सेवन करनेसे बलदायक, रसायन, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा व्रण, कफ और त्रिदोषजनित रोग नष्ट होते हैं ।

विषस्य प्रकारभेदा ।

वत्सनाभ सहारिद्रःसक्तुकश्चप्रदीपनः । सौराष्ट्रिक शृङ्गकश्चकालकूटस्तथैवच॥हालाहलोत्रह्मपुत्रोविषभेदाअमीनव ।

अर्थ–वत्सनाभ, हारिद्र, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्टिक, शृङ्गक, कालकूट, हालाहल और ब्रह्मपुत्र इन भेदोंसे विष नव प्रकारका है ।

१ अथ वत्सनाभस्य स्वरूपम् ।

सिन्धुवारसदृक्पत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा ।
यत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः ॥

अर्थ–सभालूके पत्तोंकी समान बछडेकी नाभिकी आकृतिवाला और जिसके निकट दूसरा वृक्ष नहीं जमे उसको वत्सनाभ विष कहते हैं ।

२ अथ हारिद्रस्य स्वरूपम् ।

हरिद्रातुल्यमूलोयोहारिद्रःसउदाहृतः ।

अर्थ–हलदीकी समान जिसका मूल हो उसको हारिद्र विष जानना ।

३ अथ सक्तुकस्य स्वरूपम् ।

यद्ग्रन्थिः सक्तुकेनैव पूर्णमध्यः स सक्तुकः ।

अर्थ–जिसकी गांठ सत्तूकी सदृश चीजसे भरी हुई हो उसको सक्तुक विष जानना ।

४ अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम् ।

वर्णतो लोहितो यः स्याद्दीप्तिमान्दहनप्रभः ।
महादाहकरः पूर्वं कथितः सप्रदीपनः ॥

अर्थ–जिसका वर्ण लाल अत्यन्त दीप्तिमान् और अग्निकी समान प्रभा-वाला उसको महादाह करनेवाला प्रदीपन विष जानना ।

५ अथ सौराष्ट्रिकस्य स्वरूपम् ।

सुराष्ट्रविषये यः स्यात्स सौराष्ट्रिक उच्यते ।

अर्थ–जो सोरठ देशमें उत्पन्न होता है उसको सौराष्ट्रिक विष कहते हैं ।

६ अथ शृङ्गिकस्य स्वरूपम् ।

यस्मिन्गोः शृङ्गके बद्धे दुग्धं भवति लोहितम् ।
स शृङ्गिक इति प्रोक्तो द्रव्यतत्त्वविशारदैः ॥

अर्थ–जिसको गायके सींगमें बांधनेसे गायका दूध लाल उतरे उसको वैद्योंने शृङ्गिक (सींगियाविष) कहा है ।

७ अथ कालकूटस्य स्वरूपम् ।

देवासुररणे देवैर्हतस्य पृथुमालिनः । दैत्यस्य रुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः ॥ निर्यासः कालकूटोऽस्य मुनिभिः परिकीर्तितः । सोऽहिच्छत्रे शृङ्गवेरे कोङ्कणे मलये भवेत् ॥

अर्थ–देव असुरोंके संग्राममें देवोंने जब पृथुमालि दैत्यको मारा तब उस दैत्यके रुधिरसे पीपलकी समान वृक्ष उत्पन्न हुआ इस वृक्षके गोंदको मुनि कालकूट विष कहते हैं यह अहिच्छत्र, शृङ्गवेर, कोंकण और मलयाचलमें उत्पन्न होता है ।

८ अथ हालाहलस्य स्वरूपम् ।

गोस्तनाभफलो गुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा । तेजसा यस्य दह्यन्ते समीपस्था द्रुमादयः ॥ असौ हालाहलो ज्ञेयः किष्किन्धायां हिमालये । दक्षिणाब्धितटे देशे कोङ्कणेऽपि च जायते ॥

अर्थ-दाखोंके गुच्छोंके समान फल और तालके वृक्षोंकी समान वृक्ष होता है जिसके तेजसे समीपके वृक्ष जलजाते हैं उसको हालाहल विष जानना यह किष्किन्धापुर, हिमालय पर्वत, दक्षिण समुद्रके तटके देशोंमें और कोंकणदेशमें उत्पन्न होता है ।

९ अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम् ।

वर्णतःकपिलोयःस्यात्तथाभवतिसारक ।
ब्रह्मपुत्रःसविज्ञेयोजायतेमलयाचले ॥

अर्थ-जिसका रंग कपिलवर्ण और सारभी जिसका कपिलवर्ण होता है उसको ब्रह्मपुत्र विष जानना यह मलयाचल पर्वतमें उत्पन्न होता है ।

विषस्य वर्णभेदा ।

ब्राह्मणःपाण्डुरस्तेषुक्षत्रियोलोहितप्रभः । वैश्य.पीतोऽसितःशूद्रोविषउक्तश्चतुर्विध. । रसायनेविषविप्रक्षत्रियदेहपुष्टये । वैश्यंकुष्टविनाशायशूद्रंदद्याद्वधायच ॥ (भा.प्र)

अर्थ-पाण्डु रंगका विष ब्राह्मण, लाल रंगका क्षत्रिय, पीले रंगका वैश्य और काले रंगका विष शूद्र होता है । रसायनमें ब्राह्मणविष, देहको पुष्टि करनेके लिये क्षत्रियविष, कुष्ठको दूर करनेके लिये वैश्य और मारणके लिये शूद्र जातिका विष देना चाहिये ।

अ यच्च ।

स्थावरजंगमश्चैवद्विविधविषमुच्यते ।
दशाधिष्ठानमाद्यन्तुद्वितीयषोडशाश्रयम् ॥

अर्थ-स्थावर और जंगम इन भेदोंसे विष दो, प्रकारका है तहा स्थावर विष १० प्रकार और जंगम विष १६ प्रकार जानना ।

स्थावरविषस्यदशप्रकारा यथा ।

मूलपत्रफलपुष्पत्वक्क्षीरंसारमेवच ।
निर्य्यासोधातवःकन्द स्थावरस्याश्रयादश ॥

अर्थ-स्थावरविष-वृक्षादिकके मूल, पत्र, फल, पुष्प, छाल, दूध, सार, गोंद, धातु और कन्द इन दश स्थानोंमें रहता है । अमृतादिक विषको स्थावरविष कहते हैं ।

स्थावरविषस्य सामान्यदोषाः ।

स्थावरंतुज्वरंहिक्कांदन्तहर्षंगलग्रहम् ।
फेनवम्यरुचिश्वासमूर्च्छाश्चजनयेद्विषम् ॥

अर्थ-स्थावरविष-ज्वर, हिचकी, दन्तहर्ष, गलवेदना, मुखमें झागोंका आना, वमन, अरुचि, श्वास और मूर्च्छाको उत्पन्न करता है ।

जङ्गमविषस्य स्वरूपम् ।

सर्प्पाःकीटोन्दुरालूतावृश्चिकागल्गोधिकाः । जलौकामत्स्यमण्डूकाःशलभा सकृकण्टकाः ॥ श्वसिंहव्याघ्रगोमायुतरक्षुनकुलादयः । दंष्ट्रिणोऽमीविषतेषांदष्टोत्थंजंगमंमतम् ॥

अर्थ-साँप, कीट, उन्दुर (मूसा), लूता (मकड़ी), वृश्चिक (बिच्छू) गलगोधिका, जलौका (जोंक), मत्स्य (मछली), मण्डूक (मेंढक), शलभ (पतंग), कृकलास, कुक्कुर, सिंह, व्याघ्र, शृगाल, तेन्दुआ और नौला इन सब जन्तुओंके दाँतोंके विषको जंगम विष कहते हैं ।

जंगमविषस्य षोडशाधाराः ।

दृष्टिर्निश्वासोदंष्ट्राश्चनखमूत्रमलानिच ।
शुक्रलालामुखस्पर्शसंदंशत्रावमर्दितम् ॥
गुदास्थिपित्तशूकानिदशषड्जंगमाश्रयाः ।

अर्थ-जंगमविष-सर्पादिक विषैले जन्तुओंकी दृष्टि, निश्वास, दाढ़, नख, मूत्र, मल, शुक्र, लार, मुख स्पर्श दंश, मार, गुदेन्द्रिय, अस्थि, पित्त और शूक इन १६ स्थानोंमें होता है ।

जंगमविषस्य सामान्यदोषाः ।

निद्रांतन्द्राक्लमंदाहंसपाकंलोमहर्षणम् ।
शोथंचैवातिसारंचजनयेज्जंगमंविषम् ॥

अर्थ-जंगमविष-निद्रा, तन्द्रा, ग्लानि, दाह, पाक, रोमहर्षण, शोथ और अतिसारको उत्पन्न करता है ।

मद्यविषगुणाः ।

येदुर्गुणाविषेऽस्युस्तेस्युर्मदिराविशेषात् ।
तस्माद्विषमनोगेषुश्रेयोमदिराप्रयोजनेन ॥

अर्थ-जो दुर्गुण अर्थात् दोष अशुद्ध विषमें हैं वे दोष शोधितविषमें नहीं हैं इस कारण विषको शोधनपूर्वक औषधिमें लेना चाहिये ।

अथ विषसेवनप्रकार ।

नानारसौषधैर्येतुदुष्प्रायांतीहनोगदा । तेनश्यन्तिविषेदत्ते शीघ्रवातकफोद्भवा ॥शरद्ग्रीष्मवसन्तेषुवर्षासुचप्रदापयेत् । चातुर्मास्येहरेद्रोगान्कुष्ठलूतादिकानपि । दातव्यसर्वरोगेषु घृताशिनिहिताशिनि ॥ क्षीराशिनिप्रयोक्तव्यरसायनरते नरः । ब्रह्मचर्य्यविधानहिविषकल्पेसमाचरेत ॥ पथ्येस्वस्थमनाभूत्वातदासिद्धिर्नसंशय ।आचार्येणतुभोक्तव्यशिष्यप्रत्ययकारकम् ॥ विषेशुद्धिर्हितदपिमात्रयानान्यथाभवेत् । सर्वरोगप्रशमनदृष्टिपुष्टिकरंविषम् ॥

अर्थ-जो वातकफोद्भवरोग नानाप्रकारकी औषधियोंको सेवन करनेसे नहीं दूर होते वे रोग विषके सेवन करनेसे दूर होजातेहैं सर्वऋतुओंमें विषमात्राके प्रमाण विधिपूर्वक देना चाहिये । चार महीनेमें विष, कुष्ठ और लूतादि रोगोंको दूर करताहै और यह सर्वरोगोंमें देना चाहिये । रसायनमें रत ऐसे मनुष्योंको दूध, घी और हितकारक अन्नका सेवन करना और ब्रह्मचर्यको धारण कर अनन्तर विषका सेवन करे इसप्रकार करनेसे रोगोंका नाश होताहै । शिष्य और रोगीके निश्चयके लिये प्रथम विष वैद्यको भक्षण करना चाहिये । शोधित विष मात्राके अनुसार सर्वरोगोंमें देना हितकारक है । विष दृष्टिको स्वच्छ करनेवाला और शरीरको पुष्टि करनेवाला है ।

विषमात्राप्रमाणम् ।

एकाष्टकभवेद्यावदभ्यस्ततिलमात्रया ।
सर्वरोगहरन्नृणाजायतेशोधितविषम् ॥

अर्थ-शोधित विष प्रथम आठ दिनपर्यन्त तिलप्रमाण देना तदनन्तर एक तिल बढावे इस प्रकार करनेसे सर्वप्रकारकी व्याधियोंका नाश होताहै ।

अन्यच्च ।

प्रथमेसार्षपीमात्राद्वितीयेसार्षपद्वयम्।तृतीयेचचतुर्थेचपचमेदिवसेतथा ॥ षष्ठेचसप्तमेचैवक्रमवृद्ध्याविवर्द्धयेत । सप्त-

सर्षपमात्रेणप्रथमसप्तकनयेत ॥ एवमात्राविषदेयंतृतीयेन- मर्ककमात । वृद्धयाहन्यात्प्रदातव्यंचतुर्थेसप्तकंतथा ॥ एवं सप्तसमायातेपरामात्राभिपद्यते । स्थिरीकुर्य्याद्यथेच्छन्तु ततस्त्यागन्तुकारयेत । सेवनक्रमहान्यातुविषकल्पन्तुईरित । एवमात्रासेवनस्याद्गुञ्जामात्रंतुकुष्टवान् ॥ एवमेना- ष्टपर्यन्तपरमात्राधिकामता । विधिनामात्रयाकालेभवे- त्पथ्याशिनांनृणाम ॥

अर्थ-विष-पहिले दिन एक सरसोंके बराबर, दूसरे दिन दो सरसोंके समान, तीसरे दिन तीन सरसोंकी समान अर्थात् सातदिनपर्यन्त एक २ सरसों रोज बढाता जाय और दूसरे सप्ताहमेंभी सात सरसों प्रमाण देतारहै, तीसरे सप्ताहमें फिर क्रमसे एक २ सरसों अधिक बढावे इसप्रकार तीसरे सप्ताहमें क्रमसे विषकी मात्रा देनी चाहिये । चौथे सप्ताहमें क्रमसे वृद्धि कर देनीचाहिये । इसप्रकार सात सप्ताह बीतनेपर श्रेष्ठ वैद्योंने विषकी परम मात्रा कहीहै यथेच्छ स्थिरकरके फिर इसका त्याग कराके इसको कमती करे । यह विषकल्पके सेवन करनेकी विधि है । इसप्रकार एक मात्रा एक गुंजा प्रमाण खाय आठ गुंजापर्यन्त इसकी परम मात्राहै । विधिपूर्वक मात्रा सेवन करता हुआ पथ्यसे रहै ।

विषसेवनमें पथ्याहार ।

घृतक्षीरसिताक्षौद्रगोधूमास्तण्डुलास्तथा । मरिचसैन्धव द्राक्षांमधुरपानकंहिमम् ॥ ब्रह्मचर्यंहिमंदेशंहिमंशय्याहिम जलम् । विषस्यसेवकोमर्त्योभजेदेतानिनित्यशः ॥

अर्थ-विष सेवन करनेवाले मनुष्यको घी, दूध, मधु, गेहूं, चावल, खांड मिश्री सेंधानमक, मिरच मधुर और शीतल पानक, ब्रह्मचर्य, शीतलदेश शीतलशय्या और शीतल जल सेवन करना चाहिये ।

मात्राधिक्यसेवनका वर्णन ।

मात्राधिक्ययदामर्त्यः प्रमादाद्भक्षयेद्विषम् । अष्टौवेगास्तदा तेनजायन्तेतस्यदेहिनः ॥ रोमाञ्चः प्रथमेवेगेद्वितीयेस्वेदसम्भ- वेत् । तृतीयेतुविदाहःस्याच्चतुर्थेपतनंभवेत ॥ फेनस्यपतनं

वेगेषष्ठेवैकल्यमेवच । जडतासप्तमेवेगेमरणचाष्टमेभवेत् ॥ विषवेगानितिज्ञात्वामन्त्रतन्त्रैर्विनाशयेत् ।यावन्नाष्टमवेगन्तु संप्राप्नोतिहिमानव• ॥

अर्थ–जिस समय जो मनुष्य प्रमादके वश होकर मात्रामे अधिक विषको भक्षण करलेताहै उस मनुष्यके उसीसमय आठ वेग उत्पन्न होतेहं तहा प्रथम वेगमें रोमाञ्च और दूसरेमें कम्प, तीसरे वेगमें दाह चौथे, वेगमें शरीरका गिरना, पाचवे वेगमे मुखमें झागोंका आजाना, छठे वेगमें विकलता, सातव वेगमें जडता और आठवें वेगमें मरण होताहै । इसप्रकार विषके वेगोंको जानकर जबतक आठवाँ वेग न आवे तबतक मत्र और तन्त्रोंमे नाशकरे ।

विषको उतारना ।

अतिमात्रयदाभुक्तवमनतस्यकारयेत् । दद्यात्तावदजादुग्ध यावद्वान्तिर्नजायते॥अजादुग्धयदाकोष्ठेस्थिरीभवतिदेहि- न । विषवेगंततोजीर्णजानीयात्कुशलोभिषक् ॥

अर्थ–जो कोई मात्रासे अधिक विषको खाले उसको वमन करावे जब तक वमन न हो तबतक बकरीका दूध पिलादे जिस समय बकरीका दूध कोठेमें स्थिर होजाय उसी समय विषका वेग उतर जायगा ।

अन्यच्च ।

विषंहन्याद्रस पीतोरजनीमेघनादयो ।
सर्पाक्षिटंकणवापिघृतेनविषहृत्परम् ॥

अर्थ–हलदी और चौलाई तथा सर्पाक्षि अथवा सुहागा और घी देनेसे विषका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

पुत्रजीवकमज्जावापीतानिम्बकवारिणा ।
विषवेगनिहन्त्येववृष्टिर्दावानलंयथा ॥

अर्थ–जियापोता वृक्षकी मज्जाको नींबूके रसम उबालकर पीनेसे विषवेगका नाश होता है जैसे वृष्टिसे दावानलका नाशहोता है ।

अतिमात्रयदाभुक्तदाज्यटंकणंपिबेत् ।

विषंत्वेगतोनाशमाशुप्राप्नोतिनिश्चितम् ॥

अर्थ-जिस समय जो कोई मनुष्य मात्रासे अधिक विषको भक्षण करे उस मनुष्यको उसी समय सुहागा और घी मिलाकर पिलानेसे वर्तमान विषके वेगका शीघ्रही नाश हो जायगा ।

आखुपाषाणनामानि ।

शतमल्लस्तुमल्लःस्याद्गौरीपाषाणकस्तथा ।
आखुपाषाणकश्चैवलोहशङ्कारकः ॥

अर्थ-शतमल्ल, मल्ल, गौरीपाषाण, आखुपाषाण, लोहशङ्कारक ।

संस्कृतभाषामें	आखुपाषाण ।
हिन्दीभाषामें	सोमलखार, शखिया ।
मराठीभाषामें	सोमल, शखिया ।
गुजरातीभाषामें	सोमल, सोमलखार सखियो ।
इंग्रेजीभाषामें	ओक्साइड ऑफ आर्सेनिक Oxide of Arsenic
लैटिन्भाषामें	ओक्साइड आर्सेनिकम । Oxydum Arsenicum
फार्सीभाषामें	मिर्गमूष ।
अरबीभाषामें	शुंमुल् (फा) र ।

अथ गुणाः ।

स्वनिजविषमाख्यातंदाहभ्रांतिविरेककृत् ।
मात्राधिकयदाखादेत्तदामृत्युमवाप्नुयात् ॥

अर्थ-सखियाविष-दाह, भ्रम और विरेचन करनेवाला है मात्रासे अधिक खानेसे मृत्युको देता है ।

आखुपाषाणकः स्निग्धः पारदस्यनियामकः । लोहभेदकरश्चैवनीर्य्यकृत्कांतिवर्द्धनः ॥ त्रिदोषसर्वव्याधीनांनाशकः परिकीर्त्तितः ।अशुद्धः सतुविज्ञेयःसप्तधातुविनाशकृत् ॥दाहचित्तभ्रमश्चैवलालास्रावंतथाभृतम् । अनेकवेदनाशोषसदुव्याधिस्तथा ॥ कर्तत्वनोमूर्छकश्चैनप्राणत्य कराननं। नत्स्मर्मापेनैश्वसान्यं प्राणघातकंमायसौ ॥

अर्थ सखिया-स्निग्ध, पारेको बांधनेवाला लोहभेदक, कांतिवर्द्धक,

कान्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष और सर्वव्याधिनाशक है । अशुद्धशखिया-सप्तधातुनाशक तथा दाह, चित्तभ्रम, लालास्राव, मृति, अनेक प्रकारकी पीडा, बहुव्याधि और तृषाको उत्पन्न करे है यह मूर्खके हाथमें कभीभी नहीं देना और न कहना तथा उसके समीपभी न रखना क्योंकि यह प्राणनाशक है ।

अथ उपविषनामानि ।

अर्कक्षीरस्नुहीक्षीरतथैवकलहारिका ।
करवीरोऽथधुस्तूर॰पञ्चोपविषा॰स्मृताः॥(अमरकोश)

अर्थ-आकका दूध, सेहुडका दूध, कलिहारी, कनेर और धतूरा यह पाच उपविष हैं ।

अन्यच्च ।

अर्कक्षीरस्नुहीक्षीरलाङ्गलीकरवीरक॰ ।
गुञ्जाहिफेनोधुस्तूरःसप्तोपविषजातय ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-आकका दूध, सेहुण्डका दूध, कलिहारी, कनेर, घुघुची, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति हैं ।

अपिच ।

स्नुह्यर्कलाङ्गलीगुञ्जाहयारिविषमुष्टिकः ।
जैपालोन्मत्ताहिफेननवोपविषजातय॰ ॥

अर्थ-सेहुण्ड, आक, कलिहारी, घुघुची, कनेर, कुचिला, जमालगोटा, धतूरा और अफीम यह ९ उपविषकी जाति हैं ।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते शालिग्रामनिघण्टुभूषणे विषोपविषवर्ग समाप्त ॥ ९ ॥

अथ धान्यवर्गः ।

धान्यनामानि ।

धान्यभोग्यचभोगार्हमन्नाद्यजीवसाधनम् ।

अर्थ-धान्य, भोग्य, भोगार्ह, अन्न, आद्य, जीवसाधन (स्तम्नकरि, व्रीहि)

धान्यभेदा ।

शालिधान्यव्रीहिधान्यशूकधान्यतृतीयकम् । शिम्बीधान्यक्षुद्रधान्यमित्युक्तधान्यपचकम्॥शालयोरक्तशाल्याद्या-

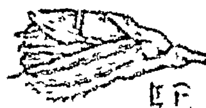
व्रीहयःषष्टिकादयः । यवादिकं शूकधान्यं मुद्गाद्यं शिम्बिधान्यकम् ॥ कंग्वादिकं क्षुद्रधान्यं तृणधान्यं च तत्स्मृतम् ॥

अर्थ–शालिधान्य, व्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिम्बीधान्य और क्षुद्रधान्य इन भेदोंसे धान्य पांच प्रकारके कहे हैं। तहां रक्तशालिआदि शालिधान्य, साठीआदि व्रीहिधान्य, जौंआदिक शूकधान्य, मूंगआदिक शिम्बीधान्य और कांगुनीआदिक धान्योंको क्षुद्रधान्य कहते हैं और क्षुद्रधान्यको तृणधान्यभी कहते हैं।

शालिधान्यनामानि।







रक्तशालिःसकलमः पाण्डुकः शकुनाहृतः । सुगन्धः कर्दमो महाशालिश्च दूषकः ॥ पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथा महिषमस्तकः । दीर्घशूकः काञ्चनको हायनो लोध्रपुष्पकः । इत्याद्याः शालयः सन्ति बहवो बहुदेशजाः । ग्रन्थविस्तरभीतेस्ते समस्ता नात्र भाषिताः ॥

अर्थ–रक्तशालि, कलम, पाण्डुक, शकुनाहृत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पाण्डक, पुण्डरीक, महिषमस्तक, दीर्घशूक, काञ्चनक, हायन और लोध्रपुष्पक इत्यादि अनेक प्रकारके शालिधान्य अनेक देशोंमें उत्पन्न होते हैं वह सब ग्रन्थ बढनेके भयसे यहां नहीं कहे।

संस्कृतभाषामें	शालि, तण्डुल ।
हिन्दीभाषामें	धान, शालिधान, चावल ।
बंगभाषामें	शालिधान्य, चाउल ।
मराठीभाषामें	साळी, भात ।
गुजरातीभाषामें	शाल्य, चोखा ।
कर्णाटकीभाषामें	नेलु ।
तैलिंगीभाषामें	धान्यमु, वीयमु ।
इंग्रेजीभाषामें	राईस । Rice
लैटिन्भाषामें	ओरिझासेटाईवा । Oryza sativa
फारसीभाषामें	बिरज ।
अरबीभाषामें	उरज ।

शालिधान्यलक्षणम् ।

कण्डनेनविनाशुक्लाहैमन्ताःशालयःस्मृता

अर्थ–जो विना छरे फटके सफेद हों उनको शालिधान कहते हैं और शालिधान हेमन्तऋतुमें होते हैं इस कारण इनका हैमन्तिक नामभी है ।

शालिधान्यगुणा ।

शालयोमधुरा स्निग्धाबल्याबद्धाल्पवर्चसः ।
कषायालघवोरुच्याःस्वर्य्यावृष्याश्चबृंहणाः ॥
अल्पानिलकफाःशीताःपित्तघ्नामूत्रलास्तथा ।

अर्थ–शालिधान–मधुर, स्निग्ध, बलकारक, अल्पप्रमाणमलरोधक, कषेले, हलके, रुचिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाले, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिजनक, कुछेक वातकफको कुपित करनेवाले, शीतल, पित्तनाशक और मूत्रजनक हैं ।

अपिच ।

शालयोदग्धभूजाता कषायालघुपाकिनः । सृष्टमूत्रपुरीषाश्चरूक्षाःश्लेष्मापकर्षणा । कैदारावातपित्तघ्नागुरवःकफशुक्रलाः । कषायाःस्वल्पवर्चस्कामधुराश्चवल्यावहा ॥स्थलजाः स्वादवःपित्तकफघ्नावातपित्तदाः । किञ्चित्तिक्ताः कषायाश्चविपाकेकटुकाअपि ।वापितामधुरावृष्यावल्याःपित्तप्रणाशनाः ॥श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काःकषायागुरवोहिमाः ।

वापितेभ्यो गुणैः किञ्चिद्धीना प्रोक्ता अवापिताः ॥ रोपिता-स्तु नवा वृष्याः पुराणा लघवः स्मृताः । तेभ्यस्तु रोपिता भूयः शीघ्रपाका गुणाधिकाः ॥ छिन्नरूढा हिमा रूक्षा बल्याः पित्त-कफापहाः । बद्धविट्का कषायाश्च लघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥

अर्थ-जलीहुई पृथ्वीमें उत्पन्न हुये शालिधान-कषेले, लघुपाकी, मल और मूत्रको करनेवाले, रूखे और कफको शोषनेवाले हैं। खेतमें उत्पन्न हुये शालिधान-वातपित्तनाशक, भारी, कफकारी, शुक्रजनक, कषेले, अल्पमल वर्द्धक, मधुर और बलवर्द्धक हैं। स्थलमें उत्पन्न हुये शालिधान-स्वादिष्ट, पित्तकफनाशक, वातपित्तवर्द्धक, किंचित् कडवे, कषेले और पाकमें कटु हैं। वापितधान्य-मधुर, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तनाशक कफकारक, अल्पमलवर्द्धक, कषेले, भारी और शीतल हैं। अवापितधान्य वापितधान्यसे किंचित् हीन गुणवाले हैं। रोपितनवीनधान्य-वीर्यवर्द्धक हैं और यही पुराने होनेपर हलके होजाते हैं। और इन धान्योंकी अपेक्षा रोपितधान्य अधिकगुणवाले और शीघ्रपाकी हैं। छिन्नरूढशालिधान्य-शीतल, रूखे, बलकारक, पित्तकफनाशक, मलरोधक, कषेले, हलके और किंचित् कडवे हैं।

रक्तशालिगुणाः ।

रक्तशालिर्वरस्तेषु बल्यो वर्ण्यस्त्रिदोषजित् । चक्षुष्यो मूत्रलः स्वर्य्यः शुक्रलस्तृड्ज्वरापहः ॥ विषव्रणश्वासकासदाहनुद्-वह्निपुष्टिदः । तस्मादल्पान्तरगुणाः शालयो महदादयः (भा. प्र.)

अर्थ-रक्तशालिधान्य (लाललालधान्य)-सब धान्योंमें उत्तम हैं, बलवर्द्धक, शरीरके रंगको उत्तम करनेवाले, त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी, मूत्रकारक, स्वरको उत्तम करनेवाले, शुक्रजनक, तृषाज्वरनाशक, विषव्रणनाशक, श्वासनाशक, खांसीको दूर करनेवाले, दाहको दूर करनेवाले, अग्निको दूर करनेवाले और पुष्टिको देनेवाले हैं। महाशालि आदिके गुण रक्तशालिधान्यकी अपेक्षा कम हैं।

महाशाल्यादिगुणाः ।

राजान्नशालिः स्निग्धा मधुरा नाग्निदीपनी मन्दा ग्निधातुप-थ्यदा राज्ञां त्रिदोषहा ॥ लघ्वी गुणैरभ्यधिका ॥ ... धातुरूपा ... आयुषा सुशर्मणि ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-राजशालि (हसराज, वाँसमती इत्यादि)-स्निग्ध, मधुर, अग्निदीपक, बलकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, पथ्य, त्रिदोषनाशक और हलके हैं । ये सफेद, लाल और काले इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं इन तीनोंके गुण एक २ से अधिक हैं ।

अन्यच्च ।

रक्तशालिर्महाशालि'कलमापष्टिकापरा । खञ्जरीटापसाहीचजीरकान्याकपिञ्जला ॥सौगन्धीशूकलाचान्याविलवासीकचोरका । गरुडारुक्मवन्तीचकलमान्यातथापरा॥ विल्वजामागधीपीताताअष्टादशशालय ।

अर्थ-रक्तशालि, महाशालि, कलमा, षष्टिका, खजरीटा, पसाही, जीरका, कपिञ्जला, सौगन्धी, शूकला, विलवासी, कचोरका, गरुडा, रुक्मवन्ती, कलमा, विल्वजा, मागधी और पीता इन भेदोंसे शालिधान अठारह प्रकारके हैं ।

तेषांगुणा ।

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नीचक्षुष्यामूत्ररोगहा । महाशालिर्गुरुर्वृष्याचक्षुष्याबलवर्द्धिनी ॥ शीतागुरुस्त्रिदोषघ्नीमधुरापरषष्टिका । जीरकावातपित्तघ्नीकलमाश्लेष्मपित्तहा॥ कपिञ्जलाश्लेष्मलास्यान्मागधीकफवातला । विलवासीगुरुश्चापि पित्तघ्नीशुक्रवर्द्धिनी॥शूकलापित्तवातघ्नीकचोरापित्तनाशिनी॥गरुडान्याचवातघ्नीपित्तमूत्रगदापहा ॥ रुक्मवन्तीलघुरुचिबलपुष्टिकरीमता। कलमान्यालघुःपथ्यावातश्लेष्मविवर्द्धिनी ॥विल्वजामागधीपीतासामान्यास्तागुणागुणे ॥ रुचिकृद्बलकृन्मूत्रदोषघ्नीचश्रमापहा ॥ दग्धग्रामाचलेजाता शालयोलघुपाकिन । सुपथ्यावद्धविण्मूत्रारूक्षा श्लेष्मापकर्पिण. ॥ केदारप्रभवावृक्षावातपित्तविनाशिन. । रक्तपित्तविकारघ्नावातला कफकारका ॥ देशेदेशेविभिन्ना-

निनामानिपरिलक्षयेत् ।समान्गुणेश्चसर्वास्ताभूमिभागो-
द्भवान्विदु.॥शालयश्छिन्नरोहाश्चमूत्रलावातलाहिमा.।हारीत

अर्थ-रक्तशालिधान-त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और मूत्ररोगको दूर करे हैं । महाशालिधान-भारी, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी और बलकारी है । षष्टिक शालिधान-शीतल, भारी, त्रिदोषनाशक और मधुर है । तीरक शालिधान-वातपित्तनाशक है । कलमीधान-कफ और पित्तको दूर करे है । कपिञ्जल शालिधान-कफकारक है । मागधी शालिधान-कफ और वातको करे है । पिलवासी शालिधान-भारी, पित्तनाशक और शुक्रवर्द्धक है । शूकरा शालिधान-पित्तवातनाशक है । कपोत शालिधान-पित्तनाशक है । गन्ध शालिधान-वातविनाशक तथा पित्त और मूत्ररोगको दूर करे हैं । [illegible] शालिधान-हलका, रुचिकारक, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक है । इसी प्रकार कलमीधान-हलका [illegible] और वातकफवर्द्धक है । पिलवासी, मागधी और [illegible] ये तीनों प्रकारके शालिधान गुण और दोषोंमें समान है । रुचिकारक, बलकारक [illegible] नाशक और श्रमरोगहारक है । [illegible] और [illegible] उपजे शालिधान-लघुपाकी है, पथ्य, मूत्ररोग, [illegible] और [illegible] रोगनाशक है । [illegible] उपजे शालिधान-भारी वातपित्तनाशक, रक्तविकारनाशक, बलवर्द्धक और कफकारक है । इन सब शालिधानोंके नाम [illegible] भिन्न है । सर्व प्रकारके शालिधान समस्तरागी भूमिके भागोंमें उत्पन्न हुए गुणोंमें समान है । छिन्नरोहशालिधान मूत्रकारक, वातकारक और शीतल है ।

व्रीहिधान्यवर्णनम् ।

व्रीहिकः कपिलः शुक्रो नीलः श्रिग्पाकिन । कृष्णव्रीहि
पाटलश्चकुक्कुटाण्डकइत्यपि ॥ शालामु[illegible]नगुणत्स्यापा

व्रीहिश्च स्मृता. । कृष्णव्रीहि.मपित्तरां [illegible]
पाटल पाटलपुष्पवर्णो [illegible]
कुक्कुटाण्डक [illegible]
[illegible] ।
[illegible] ॥

न्दिनोवद्धवर्चस्का षष्टिकैःसमाः ॥ कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणा परे ।(भा० प्र०)

अर्थ-व्रीहिधान-वर्षाकालमें पकतेहैं यह धान छरनेमें सफेद और बहुत देरमें पकतेहैं व्रीहिधान अनेक प्रकारके होतेहैं जैसे कृष्णव्रीहि, पाटल, कुक्कुटाण्डाकृति, शालामुख और जतुमुख इत्यादि । जिसके तुष और चावल काले रंगके होंय उसको कृष्णव्रीहि कहतेहैं । जिसका रंग पाडलके फूलकी समान हो उसको पाटलाव्रीहि कहतेहैं । जिसका आकार मुरगेके अंडेकी समान हो उसको कुक्कुटाण्डव्रीहि कहतेहैं । जिसका शूक और चावल काला हो उसको शालिमुख कहतेहैं । जिसके मुखका रंग लाखकी समान हो उसको जतुमुखव्रीहि कहते हैं । सर्वप्रकारके व्रीहिधानपाकमें मधुर, शीतवीर्य, अल्प अभिष्यन्दि और मलरोधक । व्रीहिधानोंमें कृष्णव्रीहिधान अधिक गुणवालेहैं, शेष अल्प गुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

कृष्णव्रीहिस्त्रिदोषघ्नीमधुराकार्श्यहातथा ।
पित्तघ्नीपिच्छिलाशुक्ररूपवर्णबलप्रदा ॥ (वै०नि०)

अर्थ-कृष्णव्रीहिधान-त्रिदोषनाशक, मधुर, कृशतानाशक, पित्तनिवारक, पिच्छिल तथा शुक्र, रूप और वर्ण तथा बलको देवेहै ।

षष्टिकलक्षण नामानि च ।

गर्भस्थाएवयेपाकयान्तितेषष्टिकामता ।षष्टिक शतपुष्पश्च प्रमोदकमुकुन्दकौ ॥महाषष्टिकइत्याद्या षष्टिका समुदाहृता । ऋतेऽपिव्रीहय प्रोक्ताव्रीहिलक्षणदर्शनात् ॥

अर्थ-जो बालमेंही पकजावें उनको षष्टिक धान्य कहते हैं । षष्टिक, शतपुष्प, प्रमोदक, मुकुन्दक, महाषष्टिक (षष्टिका, षष्टिशालि, षष्टिज, स्निग्धतण्डुल, षष्टिवासरज) इत्यादिक षष्टिकधान्य कहलाते हैं । इनमें व्रीहिधानोंके लक्षण मिलनेसे यह व्रीहि कहे जाते हैं ।

अन्यच्च ।

योव्रीहि षष्टिरात्रेणपच्यतेसतुषष्टिक ।

अर्थ-जो धान ६० रातमें पकके तय्यार होजायँ उनको षष्टिकधान्य कहते हैं ।

षष्टिकगुणाः।

षष्टिका मधुराः शीता लघवो बद्धवर्चसः। वातपित्तप्रशमनाः शालिभिः सदृशा गुणैः। षष्टिका प्रवरा तेषां लघ्वी स्निग्धा त्रिदोषजित्॥ स्वाद्वी मृद्वी ग्राहिणी च बलदा ज्वरहारिणी। रक्तशालिगुणैस्तुल्या ततः स्वल्पगुणाः परे॥ (भा०प्र०)

अर्थ-षष्टिक (साठीधान)-मधुर, शीतल, हलके, मलरोधक वात पित्तनाशक यह गुणोंमें शालिधानके समान है। साठीधानोंमें षष्टिक धान्य उत्तम है, हलके, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, स्वादिष्ठ, नरम, मलरोधक, बलदायक, ज्वरनाशक। इसके गुण लाल शालिधानोंके समान जानने और २ धान इससे हीनगुणवाले हैं।

अन्यच्च।

स्निग्धो ग्राही गुरुः स्वादुस्त्रिदोषघ्नः स्थिरो हिमः।
षष्टिको व्रीहिषु श्रेष्ठो गौरश्चासितगौरतः॥ ([illegible])

अर्थ-साठीधान-स्निग्ध मलरोधक, स्वादिष्ठ, त्रिदोषनाशक, स्थिर, शीतल और सब धानोंमें श्रेष्ठ है। यह वर्णके भेदसे कृष्ण और गौर दो प्रकारके हैं तहां कृष्णादिक धानोंकी अपेक्षा गौरषष्टिकधान अधिक गुणवाले हैं।

अपिच।

स्निग्धोऽनलकृन्मृदुदोषशमनः पथ्यः सदा प्राणिनां श्रेष्ठो व्रीहिषु षष्टिकः श्रमहरः कृच्छ्रादिदोषापहः॥ गौरश्चासितगौरतोऽपि नितरां सैव रसेन्दुगुणः शुक्रश्वासहरः [illegible] कासादिदोषापहः॥

अर्थ-गौर और काले भेदवाला साठीधान स्निग्ध अग्निदायक, त्रिदोषनाशक, सब प्राणियोंको पथ्य, धानोंमें श्रेष्ठ, मूत्रकृच्छ्रादि [illegible] हरनेवाला, [illegible] श्वास [illegible] और [illegible] दूर करते हैं।

[illegible]

भिन्न २ हैं । संस्कृतग्रन्थोंमें अनेक नाम कहेहैं जैसे कलम, सुगधशालि, धान्योत्तम, राजभोग्य, सुवर्णशालि, प्रमोदक, षष्टिक इत्यादि अनेक जातिहैं वह सर्व नहीं लिखीं क्योंकि वर्त्तमानकालमें संस्कृत नाम प्रचलित नहीं हैं देश २ में जुदे २ नाम हैं जैसे इस देशमें हंसराज, वासमती, सुनखर्चा, विदली, दाऊदखानी, मुनिया, रायमुनिया, दलवादल, चवल, फतेपुरी, वकी नागपुरी, मोथा इत्यादि प्रचलित हैं अगर इसी देशके नाम लिखें तो १०० पृष्ठकी पुस्तक तैय्यार होजाय । जो साठ दिनमें पककर तैय्यार होजायँ उनको साठीधान कहते हैं । साठीधान और धानोंकी अपेक्षा हल्के और पथ्यहैं । जौ, गेहू, वाजरा, ज्वारइत्यादिको शूकधान्य कहते हैं । मूँग, उडद, मोठ, चने इत्यादिको शिम्बीधान्य कहते हैं । शमा, कगुनी, कोदों आदि तृणधान्य हैं ।

यवनामानि ।

यवस्तुमेध्य'सितशूकसंज्ञोदिव्योक्षतःकञ्चुकिधान्यराजौ ।
स्यात्तीक्ष्णशूकस्तुरगप्रियश्चशक्तुर्हयेष्टश्चपवित्रधान्यम् ॥

अर्थ—यव, मेध्य, सितशूक, दिव्य, अक्षत, कचुकि, धान्यराज, तीक्ष्ण-शूक, तुरगप्रिय, शक्तु, हयेष्ट, पवित्रधान्य (शितशूक, हयप्रिय, यवक, श्वेतशुङ्ग, प्रवेट, शीतशूक, कचुकी, तुरगप्रिय)

संस्कृतभाषामें	यव ।
हिंदीभाषामें	जौ ।
वंगभाषामें	यव ।
गुजरातीभाषामें	जव ।
मराठीभाषामें	जव, जौं ।
कर्णाटकीभाषामें	सुडजयव ।
तैलिङ्गीभाषामें	यवधान्य ।
तामिलीभाषामें	वार्लिअरिसु ।
इंग्रेजीभाषामें	विटरवार्ली, पेरलवार्ली । Bitter Barley Pearl Barley
लेटिन्‌भाषामें	होर्डियहेग्झास्टिकम् । Hordeum Hexasticum
फारसीभाषामें	जव ।
अरबीभाषामें	शईर ।

यवस्य प्रकारभेदाः ।

यवः सशूकनिःशूकहरिद्वर्णैस्त्रिधामतः ।
सशूको गुणवांस्तस्मान्निःशूकोऽल्पगुणः स्मृतः ।
हरिद्वर्णो हीनगुणो मुनिभिः परिकीर्तितः ।

अर्थ-जो शूक, निःशूक और हरित वर्ण इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं तहां शूकयुक्त जो गुणमें अधिक है, निःशूक जो हीन गुणवाले और हरित वर्ण जो उनसेभी हीन गुणवाले है ।

[illegible] ।

यवस्तु शीतशूकः स्यान्निःशूकोऽतियवः स्मृतः ।
स्तोक्यस्तद्वत्सदाहीनस्तस्तः स्वल्पश्च कीर्तितः ॥ (शा म.)

अर्थ-शीतशूकवाले जौको यव कहते हैं, शूकहीन जौको अतियव कहते हैं, हरे रंगके जौको स्तोक्य कहते हैं और [illegible] जौको [illegible] यव कहते है ।

यवगुणाः ।

रूक्षः शीतो गुरुः स्वादुः कषायो मधुरो यवः ।
वृष्यो [illegible] पित्तश्वासकासनुत् ॥ (रा० नि०

अर्थ-जौ-रूखे, शीतल, भारी, स्वादु, कषैले, मधुर, [illegible] [illegible], [illegible] तथा पित्त, श्वास और खांसीको दूर करते हैं ।

अन्यच्च ।

यवः कषायो मधुरः शीतलो लेखनो मृदुः । व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रूक्षो मेधाग्निवर्द्धनः ॥ कटुपाकोऽनभिष्यन्दी स्वर्यो बलकरो गुरुः । बहुवातमलो वर्णस्थैर्यकारी च पिच्छिलः ॥ कण्ठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदःप्रणाशनः । पीनसश्वासकासोरुस्तम्भलोहिततृट्प्रणुत् ॥ तस्मादतियवो न्यूनः स्तोक्यो न्यूनतरस्ततः (भा० प्र०)

अर्थ-जौ-कषैले, मधुर, शीतल, लेखन, मृदु, व्रणोंमें [illegible] समान हितकारी, रूखे, मेधा और अग्निवर्द्धक, पाकमें कटु, अनभिष्यन्दी, [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] भारी, [illegible] [illegible] [illegible], मधुर

मलको करनेवाले, वर्णको सुन्दर करनेवाले, पिच्छिल तथा कण्ठरोग, त्वचारोग, कफ, पित्त, मेदरोग, पीनस, श्वास, खासी, उरुस्तम्भ, रक्तविकार और तृषाको दूर करनेवाले हैं। जौसे अतियव और अतियवसे स्तोक्य हीनगुणवाले हैं।

अन्यच्च।

यव कषायोमधुर सुशीतल प्रमेहजित्तिक्तकफापहारकः।
अशूकमुण्डस्तुयवोबलप्रदोवृष्यश्चनृणांबहुवीर्य्यपुष्टिदः।(रा.)

अर्थ–जौ–कषेले, मधुर, शीतल, प्रमेहनाशक, कडवे और कफनाशक है। अशूक अर्थात् मुण्डे जौ–बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य और पुष्टिकारक हैं।

गोधूमनामानि।



गोधूमोबहुदुग्ध स्यादरूपोम्लेच्छभोजन·।
यवनोनिस्तुप·क्षीरीरसाल सुमनश्चस ॥

अर्थ–गोधूम, बहुदुग्ध, अरूप, म्लेच्छभोजन, यवन, निस्तुप, क्षीरी, रसाल, सुमन (गोधुम, सुमना,)

संस्कृतभाषामें	गोधूम।
हिंदीभाषामें	गेहू।
बंगभाषामें	गम।
मराठीभाषामें	गहू, काठे लाल रंगाचे (दो०–) पांढुरखुवे।
गुजरातीभाषामें	घउ।
कर्णाटकीभाषामें	गोदी।
तैलिङ्गीभाषामें	गोदुमु।
इंग्रेजीभाषामें	व्हीट्। Wheat
लैटिन् भाषामें	ट्रिटिकम्, वल्गेरी। Triticum Vulgare.

फारसीभाषामें गन्दुम।
अरबीभाषामें हिंता।

गोधूमगुणाः।

मधुरोगुरुविष्टम्भीवृष्योबल्योऽथबृंहण।
ईषत्कषाय शीतश्चगोधूम स्यात्त्रिदोषहा॥ (हा०सं०)

अर्थ-गेहूं-मधुर भारी, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक, कुछेक कषैले, शीतल और त्रिदोषनाशक हैं।

अन्यच्च।

गोधूमउक्तोमधुरोगुरुश्चबल्य-स्थिर-शुक्ररुचिप्रदश्च।
स्निग्धोऽतिशीतोऽनिलपित्तहंतासन्धानकृच्छ्लेष्मकरोऽल्परेची॥

अर्थ-गेहूं-मधुर, भारी, बलकारी, देहको स्थिरकरनेवाले, शुक्रजनक, रुचिकारक, स्निग्ध, अत्यन्त शीतल, वातपित्तनाशक, सन्धानकारक, कफकारक और कुछेक दस्तावर हैं।

अन्यच्च।

गोधूम स्निग्धमधुरोवातघ्न पित्तदाहहृत्।
गुरु श्लेष्मप्रदोबल्योरुचिरोवीर्य्यवर्द्धनः॥ (रा०नि०)

अर्थ-गेहूं-स्निग्ध, मधुर, वातनाशक, पित्त, दाहनिवारक, भारी, कफकारी, मदकारक, बलवर्द्धक, रुचिजनक और वीर्य्यवर्द्धक हैं।

अथ त्रिविध गोधूमगुणाः।

गोधूम सुमनोऽपिस्यात्त्रिविध सचकीर्त्तित। महागोधूमइत्याख्य पश्चाद्देशात्समागत॥ मधूलीतुततःकिञ्चिदल्पासामध्यदेशजा। निःशूकोदीर्घगोधूमःक्वचिन्नन्दीमुखाभिधः॥ गोधूमोमधुरःशीतोवातपित्तहरोगुरु। कफशुक्रप्रदोबल्य स्निग्ध सन्धानकृत्सर॥ जीवनोबृंहणोवर्ण्योव्रण्योरुच्य स्थिरत्वकृत्। मधूलीशीतलास्निग्धापित्तघ्नीमधुराल्पु॥ शुक्रलाबृंहणीपथ्यातद्वन्नन्दीमुख स्मृत॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गेहूं महागोधूम, मधूली और दीर्घगोधूम इन भेदोंसे तीन प्रका-

१ मध्यदेश-हरद्वारसे पूर्व, प्रयाग से पश्चिम, हिमालयसे दक्षिण और विन्ध्याचलसे उत्तर के देश को कहते हैं।

रके हैं तहा महागोधूम पश्चिम मरुदेश आदिम होते हैं, मधूली गोधूम महागोधूमसे छोटा है यह मध्यदेश (देहली, आगरा, लखनऊ आदि) में होता है और दीर्घगोधूम, शूकरहित होता है और कहीं २ नन्दीमुखनामसे भी प्रसिद्ध है । गेहू-मधुर, शीतल, वातपित्तनाशक, भारी, कफकारक, शुक्रजनक, बलकारक, स्निग्ध, सन्धानकारक, सारक, संजीवन, पुष्टिकारक, वर्णको सुंदर करनेवाले, रुचिकारी और शरीरको स्थिर करनेवाले है । मधूली गेहू-शीतल, स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर, हलके, शुक्रजनक, पुष्टिकारक और पथ्य हैं तथा नन्दीमुखकेभी गुण इसीके समान जानने ।

यवनालनामानि ।

यवनालोयावनालः शिखरीवृत्ततण्डुलः ।
दीर्घनालोदीर्घशरःक्षेत्रेक्षुश्चेक्षुपत्रकः ॥

अर्थ-यवनाल, यावनाल, शिखरी, वृत्ततण्डुल, दीर्घनाल, दीर्घशर, क्षेत्रेक्षु, इक्षुपत्रक ।

धवलयावनालनामानि ।

धवलोयावनालस्तुपाण्डुरस्तारतण्डुल. ।
नक्षत्राकृतिविस्तारोवृत्तोमौक्तिकतण्डुल ॥

अर्थ-धवलयावनाल, पाण्डुर, तारतण्डुल, नक्षत्राकृतिविस्तार, मौक्तिकतण्डुल (जूर्णाह्व, देवधान्य, जूर्ण, बीजपुष्पक, जूर्नल, पुष्पगन्ध, सुगन्ध, सेगुरुदक)

तुवरयावनालनामानि ।



अथतुवरयावनालस्तुवरश्चकषाययावनालश्च ।
अपिरक्तयावनाललोहितलोहिततुवरधान्याश्च ॥

फारसीभाषामें गदुम।
अरबीभाषामें हिंता।

गोधूमगुणाः।

मधुरोगुरुविष्टम्भीवृष्योबल्योऽथबृंहणः।
ईषत्कषाय शीतश्चगोधूम स्यात्त्रिदोषहा॥ (हा०सं०)

अर्थ-गेहूं-मधुर, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक, कुछेक कषेले, शीतल और त्रिदोषनाशक है।

अन्यच्च।

गोधूमउक्तोमधुरोगुरुश्चबल्यःस्थिर शुक्ररुचिप्रदश्च।
स्निग्धोऽतिशीतोऽनिलपित्तहतासन्धानकृच्छ्लेष्मकरोऽथसरश्च॥

अर्थ-गेहूं-मधुर, भारी, बलकारी, देहको स्थिरकरनेवाले, शुक्रजनक, रुचिकारक, स्निग्ध, अत्यन्त शीतल, वातपित्तनाशक, सन्धानकारक, कफकारक और कुछेक दस्तावर हैं।

अन्यच्च।

गोधूम स्निग्धमधुरोवातघ्न पित्तदाहहृत्।
गुरु श्लेष्ममदोबल्योरुचिरोवीर्य्यवर्द्धनः॥ (रा०नि०)

अर्थ-गेहूं-स्निग्ध, मधुर, वातनाशक, पित्तघ्न, दाहनिवारक, भारी, कफकारी, मदकारक, बलवर्द्धक, रुचिजनक और वीर्य्यवर्द्धक है।

अथैषां लक्षणगुणाः।

गोधूम सुमनोऽपिस्यात्त्रिविधःसचकीर्त्तितः। महागोधूमइत्याख्य पश्चाद्देशात्समागतः॥ मधूलीतुततःकिञ्चिदल्पासामध्यदेशजा। निःशूकोदीर्घगोधूम क्वचिन्नन्दीमुखाभिधः॥ गोधूमोमधुरःशीतोवातपित्तहरोगुरुः। कफशुक्रप्रदोबल्य स्निग्धःसन्धानकृत्सरः॥ जीवनोबृंहणोवर्ण्योव्रण्योरुच्यःस्थिरत्वकृत्। मधूलीशीतलास्निग्धापित्तघ्नीमधुरालघुः॥ शुक्रलाबृंहणीपथ्यातद्वन्नन्दीमुखःस्मृतः॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गेहूं महागोधूम, मधूली और नन्दीमुख इन भेदोंसे तीन प्रका

[1] बड़ागेहूं-पश्चिमदेश से आता है, ... से बड़े, परन्तु किसी ... मध्यदेशमें होते हैं ...

रके हैं तहा महागोधूम पश्चिम मरुदेश आदिमें होते हैं, मधूली गोधूम महागोधूमसे छोटा है यह मध्यदेश (देहली, आगरा, लखनऊ आदि) में होता है और दीर्घगोधूम, शूकरहित होता है और कहीं २ नन्दीमुखनामसे भी प्रसिद्ध है। गेहू-मधुर, शीतल, वातपित्तनाशक, भारी, कफकारक, शुक्रजनक, बलकारक, स्निग्ध, सन्धानकारक, सारक, सजीवन, पुष्टिकारक, वर्णको सुंदर करनेवाले, रुचिकारी और शरीरको स्थिर करनेवाले हैं। मधूली गेहू-शीतल, स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर, हलके, शुक्रजनक, पुष्टिकारक और पथ्य हैं तथा नन्दीमुखकेभी गुण इसीके समान जानने।

यवनालनामानि।

यवनालोयावनालः शिखरीवृत्ततण्डुलः।
दीर्घनालोदीर्घशरःक्षेत्रेक्षुश्चेक्षुपत्रकः॥

अर्थ-यवनाल, यावनाल, शिखरी, वृत्ततण्डुल, दीर्घनाल, दीर्घशर, क्षेत्रेक्षु, इक्षुपत्रक।

धवलयावनालनामानि।

धवलोयावनालस्तुपाण्डुरस्तारतण्डुलः।
नक्षत्राकृतिविस्तारोवृत्तोमौक्तिकतण्डुलः॥

अर्थ-धवलयावनाल, पाण्डुर, तारतण्डुल, नक्षत्राकृतिविस्तार, मौक्तिकतण्डुल (जूर्णाह, देवधान्य, जूर्णर, बीजपुष्पक, जूर्नर्ल, पुष्पगन्ध, सुगन्ध, सेगुरुदक)

तुवरयावनालनामानि।



अथतुवरयावनालस्तुवरश्चकषाययावनालश्च।
अपिरक्तयावनाललोहितलोहितनतुवरधान्याश्च॥

अर्थ-तुवरयावनाल-तुवर, कषाययावनाल, रक्तयावनाल, लोहित, [illegible]तुवरधान्य ।

अपिच ।

ललिताकोष्टपुच्छाचश्रीखण्डीचसुगन्धिका ।
कृष्णाभाद्रपर्दाचान्याश्वेतामडाचनूर्णका ॥
रक्तिकाकुब्जिकाद्याश्चबह्वयोजूर्णाह्वजातय ।

अर्थ-ललिता, कोष्टपुच्छा, श्रीखण्डी, सुगन्धिका, कृष्णा, भाद्रपर्दा, श्वेता, मडा, जूर्णका, रक्तिका और कुब्जिका इत्यादि ज्वारकी और जाति है ।

संस्कृतभाषामें	[illegible], [illegible]यावनाल [illegible] ।
हिन्दीभाषामें	जुआर, [illegible] [illegible] ।
बंगभाषामें	जोयार [illegible], [illegible] [illegible]-[illegible] भुट्टा ।
मराठीभाषामें	जोधळा, ज्वारी ।
गुजरातीभाषामें	जारव, जुवार ।
कर्णाटकीभाषामें	[illegible] [illegible] ।
तैलङ्गीभाषामें	जोन्न ।
इग्रेजीभाषामें	[illegible] । [illegible]
लैटिनभाषामें	[illegible] [illegible] ॥ [illegible]
	[illegible] [illegible]
फारसीभाषामें	[illegible] ।
अरबीभाषामें	[illegible] ।

[illegible] ।

यावनालो गुरु [illegible] ।
[illegible] स्वादु [illegible] ॥
[illegible] ॥

अर्थ [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] है ।

धवलयावनालगुणाः ।

धवलोयावनालस्तुपथ्योवृष्योबलप्रदः ।
त्रिदोषार्शोव्रणहृद्रोगुल्मारुचिविनाशकः ॥

अर्थ—सफेदज्वार—पथ्य, वीर्यवर्द्धक, बलकारक तथा त्रिदोष, बवासीर, व्रण, गुल्म और अरुचिको दूर करे है ।

शारदयावनालगुणाः ।

शारदोयावनालस्तुश्लेष्मलः पिच्छिलोगुरुः ।
शीतलोमधुरोवृष्योबल्यः पुष्टिकरोमतः ॥
त्रिदोषशमनश्चैवपूर्ववैद्यैर्निरूपितः । (नि० र०)

अर्थ—शारदयावनाल—कफकारक, पिच्छिल, भारी, शीतल, मधुर, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक और त्रिदोषनाशक है ।

साजकनामानि ।

वर्जरीनालिकानालीनीलसस्यचसाजकः ।
अग्रधान्यवर्जरीकातथानीलकणास्मृता ॥

अर्थ—वर्जरी, नालिका, नाली, नीलसस्य, साजक, अग्रधान्य, वर्जरीका, नीलकणा ।

संस्कृतभाषामें	वजरी, साजक ।
हिन्दीभाषामें	बाजरा ।
मराठीभाषामें	बाजरी ।
गुजरातीभाषामें	बाजरो ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पाइकडमिलेट Spiked millet
लेटिनभाषामें	पेनीसीलेर्या,स्पाईकटा Penicellaria spicata पेनीसेट, टाइफोडिय Pennisetum typhoideum
फारसीभाषामें	गावर्सा ।
अरबीभाषामें	जावस ।

अस्य गुणाः ।

साजकोवातलोहृद्योबल्यः कान्तिकरोमतः ।
अग्निदीप्तिकरश्चोष्णोरूक्षः पित्तप्रकोपनः ॥
स्त्रीकामदोदुर्जरश्चपुंस्त्वपुष्टिहरोमतः । (नि० र०)

अर्थ-बाजरा-वादी, हृदयको हितकारी, बलकारी, कान्तिजनक, अग्निप्रदीपक, गरम, रूखा, पित्तको कुपित करनेवाला, स्त्रियोंके कामको बढानेवाला, देरमें पचनेवाला तथा पुरुषता और पुष्टिको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

वर्जरीदुर्जरज्ञेयाकफवातप्रणाशिनी।

अर्थ-बाजरा-देरमें पचनेवाला और कफवातको हरनेवाला है।

शमीधान्यनामानि।

शमीजा-शिम्बिज शिम्बीभवासूप्याश्चवैदला।

अर्थ-शमीज, शिम्बिज, शिम्बीभव, सूप्य, वैदल।

शमीधान्यगुणाः।

वैदलामधुरारूक्षा कषाया-कटुपाकिनः।
वातला कफपित्तघ्नावद्धमूत्रमलाहिमाः॥
ऋतेमुद्गमसूराभ्यामन्येत्वाध्मानकारका।

अर्थ-शिम्बीधान्य (मूंग, मसूर, मोंठ, उरद, लोभिया, चने, अरहर, मटर, कुल्थी इत्यादि)-मधुर रूखे, कषैले, पचनेमें कटु, वातकारक, कफ-पित्तनाशक, मूत्रमलरोधक, शीतल इनमें मूंग और मसूरको छोडकर शेष सर्व आध्मानकारक हैं।

अन्यच्च।

शिम्बीधान्यंतुमधुरंशीतरूक्षकषायकम्। कटुपाकेवातल
चमूत्रलंमलस्तम्भकृत्॥ मसूरमुद्गरहितंगुर्वाध्मानका-
रकम्। स्नेहादिनाक्तदोषमेदपित्तकफापहम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-शिम्बीधान्य मधुर शीतल रूखा, कषाय पाकमें कटु वादी, मूत्रजनक मलस्तम्भक इनमें मसूर और मूंगको छोडकर शेष सब शिम्बीधान्य भारी और आध्मानकारक है। इनका स्नेहादिक करनेसे त्वग्दोष, मेद, पित्त और कफका नाश होता है।

मुद्गनामानि।

मुद्गस्तुसूपश्रेष्ठः स्याद्वर्णार्हःरसोत्तमः।
भुक्तिप्रदोहयानन्दः सूपश्रेष्ठाभिभोजनः॥

अर्थ-मुद्ग, सूपश्रेष्ठ, वर्णार्ह, रसोत्तम, भुक्तिप्रद, हयानन्द सुफल, वाजिभोजन ।

संस्कृतभाषामें	मुद्ग ।
हिन्दीभाषामें	मूग ।
बंगभाषामें	मुग
मराठीभाषामें	हिरवे मूग, पिवळे मूग ।
गुजरातीभाषामें	मग लीला, काला कच्छी ।
कर्णाटकीभाषामें	हेसयेरु ।
तैलिङ्गभाषामें	पेसलु ।
पंजाबीभाषामें	मूंजि ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्रीन ग्रेन । Green gram
लैटिन्भाषामें	फेसीओलस मुगो । Phaseolus Mungo
फारसीभाषामें	बुनुमाष ।
अरबीभाषामें	मज ।

मुद्गगुणाः ।

शीतः कषायो मधुरो लघुः स्यात्पैत्तास्रभृद्दोषहरः सरश्च । विपाकतोऽसौ कटुकप्रधानो मुद्गस्तथान्यः कथितोऽभिरम्यः (हा०)

अर्थ-मूँग-शीतल, कषेली, मधुर, हलकी, पित्त और रक्तके दोषको दूर करनेवाली, सारक, विपाकमें कटु और रमणीक है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमुद्गा महामुद्गा गौरा हरितपीतकाः । श्वेतारक्तास्तु निर्दिष्टा लघवः पूर्वपूर्वतः ॥ प्रधाना हरितास्तत्र वन्यमुद्गास्तु मुद्गवत् । मुद्गः कषायो मधुरः कफपित्तास्रजिल्लघुः ॥ ग्राही शीतः कटुः पाके चक्षुष्यो नातिवातलः ॥ (राज०नि०)

अर्थ-मूँग-अनेक प्रकारके होते हैं जैसे कृष्णमुद्ग, अरुणमुद्ग, गौरवर्णमुद्ग, हरितमुद्ग, पीतमुद्ग, श्वेतमुद्ग और रक्तवर्णमुद्ग इनमें पूर्वसे पूर्व मूँग लघु हैं अर्थात् रक्त मूँगसे सफेद मूँग, सफेद मूँगसे पीले मूँग और पीले मूँगसे हरा मूँग हलका है इत्यादि सर्व मूँगोंमें हरा मूँग प्रधान है । वनमूँग (मोठ) के गुण भी मूँगके समान हैं । मूँग-कषेली, मधुर, कफनाशक, रक्तपित्त-

निवारक, हलका, मलरोधक, शीतल, पचनेमें कटु, नेत्रोंको हितकारी और अत्यन्त वातकारक नहीं है।

गुणाः ।

मुद्गो रूक्षो लघुर्ग्राही कफपित्तहरो हिमः । स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो ज्वरघ्नो वनजस्तथा ॥ मुद्गो बहुविधः श्यामो हरितः पीतकस्तथा । श्वेतो रक्तश्च तेषां तु पूर्वः पूर्वो लघुः स्मृतः ॥ सुश्रुतेन पुनः प्रोक्तो हरितः प्रवरो गुणैः । चरकादिभिरप्युक्तः एष एव गुणाधिकः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मूँग-रूखा, हलका, मलरोधक, कफपित्तनाशक, शीतल, स्वादिष्ट, अल्पवातकारक, नेत्रोंको हितकारी और ज्वरको दूर करे है। वनमूंग (मोठ) के गुणभी मूंगके समान हैं। मूंग अनेक प्रकारकी है जैसे श्याम, हरित, पीत, सफेद, लाल। इनमें पहिले २ मूंग हलके हैं सुश्रुतने हरे मूंगको उत्तम कहा है और चरकादिकभी इसीप्रकार कहते हैं।

अन्यच्च ।

मुद्गः पित्तकफापहो व्रणहरः कण्ठामयघ्नो लघुः पथ्यो नातिविरक्तजन्तुषु तथा नेत्रामयघ्नः परम् ॥ नात्याध्मानकरस्तथानिलहरो मन्दानलः शस्यते भक्तानामपि चोत्तमः स्वरकरो मूत्रामयच्छेदनः ॥

अर्थ-मूँग-पित्तकफनाशक, व्रणविनाशक, कण्ठरोगनिवारक, हलकी तथा वातरक्त, कृमिरोग और नेत्ररोगमें हितकारी है, आध्मानकारक नहीं, वातकारकभी नहीं, मन्दाग्निको दूर करनेवाली, भोजनमें उत्तमभी पथ्य, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाली और मूत्ररोगको हरनेवाली है।

कृष्णमुद्गनामानि ।

कृष्णमुद्गस्तु वामन्तो माधवश्च सुगन्धजः ।

अर्थ-कृष्णमुद्ग, वामन्त, माधव, सुगन्धज।

कृष्णमुद्गगुणाः ।

कृष्णमुद्गस्त्रिदोषघ्नो गात्रवातनाशनः ॥
लघुः प्रदीपनः पथ्यो बल्यो वीर्याङ्गपुष्टिदः ।

अर्थ–कालीमूँग–त्रिदोषनाशक, मधुर, वातनाशक, हलकी, दीपन, पथ्य तथा बल, वीर्य और शरीरको पुष्टि देनेवालीहै।

हरिन्मुद्गनामानि।

शारदस्तुहरिन्मुद्गोधूसरोऽन्यश्चशारदः।

अर्थ–शारद और हरिन्मुद्ग यह दो नाम हरिन्मुद्गके है, धूसर और शारद यह दूसरी होती है।

हरिन्मुद्गगुणा।

हरिन्मुद्गः कपायश्चमधुरःकफपित्तहृत।
रक्तमूत्रामयघ्नश्चशीतलोलघुदीपनः॥

अर्थ–हरीमूँग–कपेली, मधुर, कफपित्तनाशक तथा रुधिरविकार और मूत्ररोगको दूर करे है, शीतल, हलकी और दीपन है।

धूसरमुद्गगुणा।

तद्वच्चधूसरोमुद्गोरसवीर्य्यादिपुस्मृतः।
कपायोमधुरोरुच्य पित्तवातविबन्धकृत॥ (रा०नि०)

अर्थ–धूसर रंगकी मूँग रसवीर्य्यादिकमें तो हरीमूँगकी समानहै कपेली, मधुर, रुचिकारी तथा पित्त, वात और विबन्धकारक है।

मकुष्ठनामानि।

मकुष्ठकोमकुष्ठश्चवनमुद्गःक्रमीलकः।
अमृतोरण्यमुद्गश्चवल्लीमुद्गश्चकीर्त्तितः॥

अर्थ–मकुष्ठक, मकुष्ठ, वनमुद्ग, क्रमीलक, अमृत, अरण्यमुद्ग, वल्लीमुद्ग, (मुकुष्ठ, मपष्ठ, राजमुद्ग, मयष्ठ, मकुष्टक, मकुष्ठक, मकुष्ठ, वरक, निगूढक, कुलीनक, खण्डी, मुद्गष्टक, मुद्गष्ट, मयष्टक, मुकुष्ट, मयूष्ट, मपष्ट, मयक, मयुष्टक, मयुष्ट)

संस्कृतभाषामें	मकुष्ठ।
हिन्दीभाषामें	मोठ।
बंगभाषामें	वनमूँग।
मराठीभाषामें	मटक्या।
गुजरातीभाषामें	मठ।
कर्णाटकीभाषामें	मुग्र, हेसरुभेट।
तैलिंगीभाषामें	ककपेसालु।

इंग्रेजीमें एकोनेडेलिव्ड फिडनीबिन । Aconito leared Fidney bean
लैटिनभाषामें फेसी ओलस Phaseolus
एकोनिटि फालीयम । aconitifolium
फारसीभाषामें माषहिंदि ।

मकुष्टगुण ।

सरक्तपित्तकफवातहन्ताचोष्ण कषायोमधुर प्रदिष्टः ।
अर्शासुशीतोगुदकीलगुल्ममकुष्टक सर्वगदान्निहन्ति ॥

अर्थ-मोठ-रक्तपित्त, कफ और वातनाशक है, गरम, कषैली, मधुर, मलरोधक, शीतल तथा गुदकील, गुल्म और रोगादिको दूर करता है ।

अन्यच्च ।

मकुष्टकःकषायः स्यान्मधुरोरक्तपित्तजित् ।
ज्वरदाहहरःपथ्योरुचिकृत्सर्वदोषजित् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मोठ-कषैली, मधुर, रक्तपित्तनाशक ज्वरनाशक दाहनाशक, पथ्य, रुचिकारक और सर्वदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

मकुष्टोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ।
वान्तिजिन्मधुरःपाकेकृमिकृज्ज्वरनाशनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मोठ-बादी, मलरोधक, कफपित्तनाशक, हलकी, वमननिवारक, पचनेमें मधुर, कृमिजनक और ज्वरनाशक है ।

अपिच ।

मुद्गष्टःशीतलोग्राहीकफपित्तक्षयापहः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मोठ शीतल, ग्राही तथा कफ, पित्त और क्षयको दूर करता है ।

अस्य यूषगुणाः ।

मकुष्टयूषोऽल्पवल्लः पाचनोदीपनोलघुः ।
चक्षुष्योवृष्टदणोऽथ पित्तश्लेष्मास्रगेगनुत ॥ (द्र०गु०)

अर्थ-मोठकी दाल-अल्पवलकारक, पाचक, दीपन, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, वीर्यवर्द्धक तथा पित्त, कफ और रुधिरके रोगोंको दूर करती है ।

माषकनामानि ।

माषस्तुकुरुविन्दःस्याद्धान्यवीरोगुणाकरः ।

मांसलश्चबलाढ्यश्चपित्र्यश्चपितृभोजनः ॥

अर्थ-माष, कुरुविन्द, धान्यवीर, वृषाङ्कुर, मांसल, बलाढ्य, पित्र्य, पितृभोजन (बीजरत्न, बली)

संस्कृतभाषामें	माष ।
हिन्दीभाषामें	उडद ।
बंगभाषामें	माषकलाय ।
मराठीभाषामें	उडीद ।
गुजरातीभाषामें	उडद ।
कर्णाटकीभाषामें	उद्दु ।
तैलिंगीभाषामें	मिनुउलु ।
इंग्रेजीभाषामें	किड्नीबीन । Kidney bean
लैटिन्भाषामें	फेसीओलस रेडीएटस । Phaseolus rediatus
फारसीभाषामें	माष ।
अरबीभाषामें	माषा ।

माषगुणाः ।

माषःस्निग्धोबहुमलकरःशोषणःश्लेष्मकारी वीर्येउष्णोझटितिकुरुतेरक्तपित्तप्रकोपम् । हन्याद्वातंगुरुबलकरोरोचनोभक्ष्यमाणः स्वादुर्नित्यंश्रमसुखवतांसेवनीयोनराणाम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध, बहुमलकारक, शोषक, कफकारक, उष्णवीर्य, शीघ्र रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वातनाशक, भारी, बलकारी, रुचिकारक, स्वादिष्ठ तथा श्रम और सुखवान् मनुष्योंको सदैव सेवने योग्य है ।

अन्यच्च ।

स्निग्धोऽथवृष्योमधुरश्चबल्योमरुत्कफानांपरिबृंहणश्च ।
पाकेम्लकोष्णोविदितोहिमश्चमाषोऽथहृद्य कथितोनरेश्च॥

अर्थ-उडद-स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, मधुर, बलकारक, वात और कफको बढानेवाला, पाकमें अम्ल, उष्ण, शीतल और हृदयको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

माषोगुरुर्भिन्नपुरीषमूत्रःस्निग्धोष्णवृष्योमधुरोऽनिलघ्न ।

सन्तर्पण स्तन्यकरो विशेषाद्बलप्रदः शुक्रकफावहश्च ॥

अर्थ-उडद-भारी, मलमूत्रको निकालनेवाला, स्निग्ध, गरम, वीर्यवर्द्धक, मधुर, वाताशक, तृप्तिकारक, स्तनोंमें दूधको बढानेवाला तथा विशेषकरके बल, शुक्र और कफको करनेवाला है।

कषायभावान्नपुरीषभेदी नमूत्रलो नैव कफस्य कर्त्ता ।

स्वादुर्विपाके मधुरोऽलमाद्र सन्तर्पण स्तन्यरुचिप्रदश्च ॥

अर्थ-उडद कषैलेपनसे मलभेदक नहीं है और मूत्रजनक भी नहीं है और न कफको करनेवाला है, पचनेमें स्वादु, मधुर, स्निग्ध, तृप्तिकारक, स्तनोंमें दूध प्रगट करनेवाला और रुचिकारक है।

अपिच।

माषः स्निग्धो बलः श्लेष्ममलपित्तकरः सरः ।

गुरूष्णोऽनिलहा स्वादुः शुक्रवृद्धिविरेककृत् (पाठ्य०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध बलकारक परमाण, कफकारक, पित्तकारक, सारक, भारी, गरम, वातविनाशक, स्वादिष्ट, शुक्रजनक और दस्तावर है।

अन्यच्च।

माषः सारो गुरुः स्निग्धः शोषणोष्णः कफप्रदः । वृष्यः पित्तकरः पित्तकोपनो रोचको गुरुः ॥ बल्यः सन्तर्पणः स्वादुः पुष्टिकृन्मूत्रशुक्रलः । मलभेदकरो दुग्धकारको मांसवर्द्धनः ॥ मेदोवृद्धिकरश्चैव श्वासश्रमनिवारणः । परिणामभवं शूलमर्दितं च विनाशयेत् । वातचार्शोनाशयतीत्येवमाचार्यैर्निरूपितम् ॥ (१०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध, शोषण, गरम, कफकारक, वीर्यवर्द्धक, पित्तकारक, पित्तको कुपित करनेवाला, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, भारी, बलकारक, तृप्तिकारक, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक मूत्रजनक, शुक्रकारक मलभेदक, दुग्धकारक, मांसवर्द्धक, मेदवर्द्धक तथा श्वास, श्रम, परिणामशूल, अर्दितवात, वात और बवासीरको दूर करे है।

राजमाषमहामाषाः।

राजमाषो महामाषश्चपलश्चपलः स्मृतः ।

अर्थ-राजमाष, महामाष, चपल, चपल (बडेउडद, अमाधर, द्विदल,

नीलमाष, तृणमाष, नृपोचित, मितमाष, दीर्घबीज, निष्पाव, राजमाषक, सुकुमार, दीर्घशिम्बी, क्षुधाभिजनक)



संस्कृतभाषामें	राजमाष ।
हिन्दीभाषामें	लोबिया ।
बंगभाषामें	बरबटीकलाय, बोरा ।
मराठीभाषामें	चवळया (अळसुदे) ।
गुजरातीभाषामें	चोला ।
कर्णाटकीभाषामें	बरबटा, अलसदे ।
पंजाबीभाषामें	रैस ।
इंग्रेजीभाषामें	चाईनिज डोलिकोस । Chinese dolicos
लेटिनभाषामें	डोलिकोस सिनेन्सीस । Dolichos sinensis
	विगना कटिंग । Vigna catiang
फारसीभाषामें	लोबिया ।
अरबीभाषामें	फारिका ।

राजमाषगुणा ।

राजमाषोगुरु स्वादुस्तुवरस्तर्पणः सरः । रूक्षोवातकरोरु-

न्य स्तन्योभूरिवलप्रदः ॥ श्वेतरक्तस्तथाकृष्णस्त्रिविध स-
प्रकीर्तितः॥योमहांस्तेषुभवतिसएवोक्तोगुणाधिक.॥ (भा.प्र.)

अर्थ-लोबिया-भारी, स्वादिष्ठ, कषेला, तृप्तिकारक, सारक, रूखा, वातकारक, रुचिजनक, स्तनोंमें दूध करनेवाला और बलकारक है। सफेद, लाल और काला इन भेदोंसे लोबिया तीन प्रकारके हैं इनमें बड़ा लोबिया अधिक गुणवाला जानना।

अन्यच्च।

राजमाष सरोरुच्य कफशुक्राम्लपित्तकृत ।
सस्वादुर्वातलो रूक्षः कषायोविशदोगुरु ॥(च०सु०म०)

अर्थ-लोबिया-सारक, रुचिकारक, कफकारक, शुक्रनाशक अम्लपित्त कारक, स्वादिष्ठ, वातकारक, रूखा, कषेला, विशद और भारी है।

अन्यच्च।

रञ्जोगुरुर्बृंहणकृच्चलकृच्चशिम्बीधान्याधमस्त्वमभिनागम
एषमिश्या। नगजमापतत्रगजपदप्रदत्त मापनिहायविधि-
नातदद्रूपमेव ॥ (च०अ०)

अर्थ-ह राजमाष (लोबिया)-जो कि, शुभ करनेवाला, भारी, बहुत मलको करनेवाले, शिम्बीधान्यमें अधम हो यह बात मिथ्या नहीं है इसवास्ते विधाताने तुमको और उर्दोंको छोड़कर राजपद दिया यह आश्चर्य पन नहीं हो गया है ?।

अथ यूषगुणाः।

राजमाषभव सूप स्वादूरूक्ष कषायक ।
ग्राहीगुरुर्वातकरःस्तन्यकृद्रुचिकारक ॥ (द्रव्यगुण)

अर्थ-लोबियेकी दाल-स्वादिष्ठ, रूखी कषेली, मलरोधक, भारी, वात-कारी, स्तनोंमें दूध प्रगट करनेवाली और रुचिको उत्पन्न करनेवाली है।

निष्पावनामानि।

निष्पावोराजशिम्बीस्याद्वल्लकःश्वेतशिम्बिकः ।

अर्थ-निष्पाव राजशिम्बी, वल्लक, श्वेतशिम्बिक।

गुजराती भाषामें	निष्पाव।
हिन्दीभाषामें	भटवासु, भटवास, सफेदसेमोंके बीज।

वंगभाषामें	राजशिम्बीबीज, भटरासु ।
मराठीभाषामें	कडवेवाल, पाढरे पावटे, तावडे पावटे । ऑवरे ।
गुजरातीभाषामें	ओलिया ।
कर्णाटकीभाषामें	आवरे, तोरेआवरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	आनपचेट्टु ।
लैटिनभाषामें	लेबलेब्वल्गेरीस । Lablab Vulgaris

निष्पावगुणाः ।

निष्पावोमधुरोरूक्षोविपाकेऽम्लगुरुःसरः ।
कषायःस्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबंधकृत् ॥
विदाह्युष्णोविषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-निष्पाव (भटवासु)-मधुर, रूखा, पाकमें अम्ल, भारी, वातकारी, कुछेक दस्तावर, कषेला, स्तनोंमें दूधको प्रगट करनेवाला तथा रक्तपित्त, मूत्र, वात और विबंधकारक है, दाहजनक, गरम तथा विष, कफ, सूजन और शुक्रको हरेहै ।

अन्यच्च ।

निष्पावोवातपित्तास्रस्तन्यमूत्रकरोगुरुः ।
सरोविदाहिदृक्छुक्रकफशोफविनाशनः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-निष्पाव-वात, पित्त, रुधिरविकार, स्तनोंमें दूध और मूत्रको उत्पन्न करेहै । भारी, सारक, दाहकारक तथा दृष्टि, शुक्र, कफ और सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

निष्पावोमधुरोरूक्षःपाकेम्लःसारकोगुरुः ।
उष्णःशोपकरोबल्यःपुष्टिकृत्तुवरोमतः ॥
विषदृष्टिहरःप्रोक्तःपूर्ववैद्यैःकृपालुभिः । (रा०नि०)

अर्थ-भटवासु-मधुर, रूखा, पचनेमें अम्ल, सारक, भारी, गरम, सूजनको करनेवाला, बलकारक, पुष्टिकारक, कषेला तथा विष और दृष्टिको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

निष्पावस्तुवरोमेध्योदीपनोमधुरोरसे ।

कंठशुद्धिकरो रुच्यो ग्राहको मुनिभिर्मतः ॥
निष्पावसदृशास्त्वन्ये गुणा ज्ञेयाश्चिकित्सकैः ।

अर्थ-सफेद और नील निष्पाव-[illegible] मेधाजनक, शीतल, रसमें मधुर, कंठशोधक रुचिकारक और ग्राही है शेष गुण निष्पावके समान जानने।

रक्तनिष्पावगुणाः ।

रक्तनिष्पावको रुच्यो मधुरः शीतलो गुरुः ।
किञ्चित्कषायो बल्यश्च वातलः पुष्टिकृन्मतः ॥
आध्मानकृद्गुणाश्चान्ये निष्पावसदृशा मताः ।

अर्थ-लाल निष्पाव-रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, किंचित् कषैला बलकारी, वातकारक, पुष्टिकारक, आध्मानकारक और गुण निष्पावके समान जानने।

नदीनिष्पावगुणाः ।

नदीनिष्पावकस्तिक्तः कटुर्नातिरसो गुरुः ।
रक्तप्रद कफघ्नश्च रुचिकृच्च मतः ॥
विषदोषहरश्चैव मुनिभिः परिकीर्तितः । (नि० र०)

अर्थ-नदीनिष्पाव-कडुआ, चरपरा, [illegible], भारी रक्तकारक, कफनाशक, रुचिजनक [illegible] और विषके दोषोंको हरनेवाला है।

मसूरनामानि ।

मसूरो मङ्गलाल्यस्तु मङ्गल्यः पृथुबीजकः ।
सूरः कल्याणबीजश्च गुरुबीजो मसूरकः ॥

अर्थ-मसूर [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], मसूरक ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible])

[illegible]	मसूर।
हिन्दीभाषाम	मसूर।
[illegible]	[illegible], [illegible] [illegible]।
[illegible]	मसूर।
[illegible]	मसूर।
[illegible]	[illegible]।

तैलिंगीभाषामें	मसूरपप्पु, चिरशनमल्ल।
तामिलीभाषामें	मिसुर, पुरपुर।
इंग्रेजीभाषामें	लेंटिल। Lentil
लैटिन्भाषामें	ईरवेलेन्स। Ervylens
फारसीभाषामें	बुनोसुर्स।
अरबीभाषामें	अदस्।

मसूरगुणा।

मसूरोमधुरःशीतःसंग्राहीकफपित्तजित्।
वातामयकरश्चैवमूत्रकृच्छ्रहरोलघुः॥ (रा०नि०)

अर्थ-मसूर-मधुर, शीतल, मलरोधक, कफपित्तनाशक, वातरोगको करनेवाली, हलकी और मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

रूक्षोविशोषीमधुरःप्रदिष्टःशूलार्तिगुल्मग्रहणीविकारान्।
करोतिवातामयवर्द्धनश्चपित्तास्रकृच्छ्रहरोमसूरः॥(हा.स.)

अर्थ-मसूर-रूखी, विशोषक, मधुर तथा शूल, गुल्म और संग्रहणीरोगको उत्पन्न करनेवाली है, वातरोगोंको बढानेवाली तथा रक्तपित्तऔर मूत्रकृच्छ्र-रोगको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

मासूरालघवोतिरूक्षविशदाश्चक्षुष्यमूत्रग्रहाः
श्लेष्मापित्तनिवर्हणारुचिकरावातव्यथाकारकाः।
विष्टम्भजनयन्तिकोष्ठधमनकृच्छ्राश्मरीछेदकाः
सर्वेपित्तविकारजेषुविहिताहृद्याश्चमाधुर्यकाः॥

अर्थ-मसूर-हल्की, अत्यन्तरूखी, विशद, नेत्रोंको हितकारी मूत्रग्रहनाशक, श्लेष्मपित्तनाशक, रुचिकारक, वातरोगकारक, विष्टम्भजनक, मलरोधक, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और सर्व प्रकारके पित्तविकारोंको दूर करे है हृदयको हितकारी और मधुर है।

अपिच।

मसूरोलेपनोवर्ण्योरूक्षोरक्तमलोहिमः।
वाताध्मानकरःकिञ्चित्पित्तास्रकफहालघुः॥

कषायोमधुरोमेदोहताचास्रोमकीर्त्तित ।
तत्पर्णशाकतुवरंलघुतिक्तञ्चकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-मसूरका लेप-वर्णको शुद्ध करनेवाला और त्वचाके रोगोंको दूर करनेवाला है, मसूर-रूखी, मलवर्द्धक, शीतल, वातकारक, किंचित् आत्मा नशक, रक्तपित्त और कफनाशक, हलकी, कषैली, मधुर, मेदनाशक है। इसके पत्ताका शाक-कषैला, हलका और कडुवा है।

चणकनामानि।

चणकोहरिमन्थ स्याद्वाजिमन्थश्चजीवनः ।

अर्थ-चणक, हरिमन्थ, वाजिमन्थ, जीवन (हरिमन्थक, हरिमन्थज, चण, सुगन्ध, कृष्णचञ्चुक, बाल्भोज्य, वाजिभक्ष्य, कंचुकी, बालभैषज्य, सकलप्रिय)

संस्कृतभाषामें	चणक ।
हिन्दीभाषामें	चने, चना, छोला ।
बंगभाषामें	छोलाग्गाछ, बुट ।
मराठीभाषामें	हरभरे ।
गुजरातीभाषामें	चणा ।
कर्णाटकीभाषामें	कडले, बिडिपकडले ।
तैलङ्गीभाषामें	शनगलु ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्राम । Gram
लैटिनभाषामें	सीसरएरिएटिन । Cicer Arietinum
फारसीभाषामें	नखूद ।
अरबीभाषामें	हुम्मस ।

चणकगुणाः ।

चणकःशीतलोरूक्षोरक्तपित्तकफापहः ।
लघु कषायोविष्टम्भीवातल:कुष्ठनाशन ॥ (भ.नि.)

अर्थ-चने-शीतल, रूखे, रक्तपित्तनिवारक, कफहारक, हलके, कषैले, विष्टम्भकारक, वातप्रकोपक और कुष्ठनाशक है।

कफश्च ।

[illegible]

दीप्तिवर्णकरोबल्योरुच्यश्चाध्मानकारकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चने-मधुर, रूखे, प्रमेहनाशक, वातपित्तकारक, दीपन, वर्णकारक, बलकारक, रुचिकारी और आध्मानको करनेवाले हैं।

अपिच।

रक्तेकफेपीनसकेतुकण्ठेगलामयेवातरुजेसपित्ते।
शीतःप्रतिश्यायकृमीन्निहन्तिशुष्कस्तथार्द्रश्चणकःप्रशस्तः।
(हा०स०)

अर्थ-सूखे तथा गीले चने-रुधिरविकार, कफ, पीनस, कण्ठरोग, गलरोग, वातरोग, पित्तरोग, प्रतिश्याय और कृमिरोगको दूर करे हैं और शीतल हैं।

अन्यच्च।

चणकोवातलःशीतःकफासृक्पित्तपुंस्त्वनुत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-चने-वादी, शीतल तथा कफ, रक्तपित्त और पुरुषत्वनाशक हैं।

अन्यच्च।

चणकःशीतलोरूक्षःपित्तरक्तकफापहः। लघुःकषायोविष्टम्भीवातलोज्वरनाशनः॥ सचाङ्गारेणसभृष्टस्तैलभृष्टश्चतद्गुणाः। आर्द्रभृष्टोबलकरोरोचनश्चप्रकीर्त्तितः॥ शुष्कभृष्टोतिरूक्षश्चवातकुष्ठप्रकोपनः। स्विन्नःपित्तकफंहन्यात्सूपःक्षोभकरोमतः ॥ आर्द्रोतिकोमलोरुच्यः पित्तशुक्रहरोहिमः। कषायोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-चने-शीतल, रूखे, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, हलके, कषेले, विष्टम्भकारक, वादी और ज्वरनाशक है। वही चने अंगारा तथा तेलमें भुनेहुये पूर्वोक्त गुणोंको करनेवाले हैं। गीले भुनेहुये चने-बलकारक और रोचक हैं। सूखे भुने चने अत्यन्त रूखे तथा वात और कोढको कुपित करनेवाले हैं। सीजेहुये चने-पित्त और कफनाशक है। चनेकी दाल-क्षोभको करनेवारी है। कच्चे चने-अत्यन्तकोमल, रुचिकारक, पित्तनाशक, शुक्रनिवारक, शीतल, कषेले, वातकारक, मलरोधक, कफपित्तनाशक और हलके हैं।

अन्यच्च।

आमश्चणःशीतलरुच्यकारीसन्तर्पणोदाहतृषापहारी।

गौल्योऽश्मरीशोषविनाशकारी कषायईषत्कफवीर्यकारी ॥ (ग० नि०)

अर्थ-कच्चे-चने-शीतल, रुचिकारक, तृप्तिजनक, दाहनाशक, तृषानिवारक, गौल्य, अश्मरीको दूर करनेवाले, शोषनाशक, किंचित् कसैले, कफ और वीर्यकारक हैं।

अथ भृष्टचणकगुणाः ।

भृष्टस्तुचणकश्चोष्णोरुच्योरक्तरुजापहः । लघुर्बल्यःशुक्रलश्चतेजोवृद्धिकरः स्मृतः ॥ विनाजलेनचभृष्टाश्चातिरूक्षाश्चवातलाः । कुष्ठप्रवर्द्धना प्रोक्तागुणास्त्वन्येतुपूर्ववत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-भुनेहुए चने-गरम, रुचिकारी, रक्तरोगनाशक, हलके, बलकारक, शुक्रजनक, शरीरका तेज देनेवाले तथा पसीना, शीतलता, श्रम, दाह और तृषाको नाशते हैं। सूखे भुनेचने अत्यन्त रूखे, बादी, कुष्ठवर्द्धक और गुण पहिलेके समान जानने।

कृष्णचणकगुणाः ।

कृष्णस्तुचणकः शीतोमधुरश्चरसायनः ।
बलकृच्छ्वासकासघ्नःपित्तार्तिनाशपित्तहा ॥ (नि० र०)

अर्थ-काले चने-शीतल, मधुर, रसायन, बलकारक तथा श्वास, खांसी, पित्तार्तिनाशक और पित्तको दूर करें हैं।

चणकशाकगुणाः ।

चणकानांदलंचाम्लंकिंचिद्वातप्रकोपनम् ।
मलस्तम्भकरंरुच्यंतर्पणंचाग्निकारकम् ॥
कफनाशकरंप्रोक्तंपूर्वैर्वैद्यैः कृपालुभिः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चनेका शाक-खट्टा, किंचित् वातकारक, मलस्तम्भक, रुचिजनक, तृप्तिकारक, अग्निकारक और कफनाशक है।

[illegible] ।

[illegible]पानस्या[illegible]नाशकृत् ।
अम्ल[illegible]भजन[illegible]पित्तनुद्धन्शोषहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-[illegible]

आढकीनामानि ।



आढकीतुवरीवर्य्यामृत्तालचमृतालकम् ।
काक्षीकरवीरभुजावृत्तबीजासुराष्ट्रजम् ॥

अर्थ–आढकी, तुवरी, वर्य्या, मृत्ताल, मृतालक, काक्षी, करवीरभुजा, वृत्तबीजा, सुराष्ट्रज (पीतपुष्पा, मृत्स्ना, तुवरिका, मृत्तालक, शणपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	आढकी ।
हिन्दीभाषामें	अडहर ।
बंगभाषामें	अडहर, आइरि ।
मराठीभाषामें	तुरी ।
गुजरातीभाषामें	तुरदाल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	कदलाकटु, तोंगरी ।
तैलंगीभाषामें	कादुल्लु ।
इंग्रेजीभाषामें	पीजीअन्पी । Pigeon pea
लैटिन्भाषामें	केजेनस इंडिकस । Cajanus indicus
फारसीभाषामें	शाखुल ।

आढकीगुणाः ।

मृदुःकषायाचसरक्तपित्तवातकफघ्नन्तिमुखव्रणञ्च ।
गुल्मज्वरारोचककासछर्दिहृद्रोगदुर्नामहराढकीस्यात् ।(हा.)

अर्थ–अडहर–कषेली तथा रक्तपित्त, वात, कफ, मुखव्रण, गुल्म, ज्वर, अरुचि, खासी, वमन, हृदयरोग और बवासीरको दूरकरे है ।

अरहर।

तुवर्यतिकषायाम्लमेद श्लेष्मास्रपित्तजित्।
विबन्धाध्मानकृत्स्वादु स्वादुपाकाल्पवानला॥
शीतलाबद्धविण्मूत्रालघ्वीरूक्षाप्रकीर्तिता। (शो०नि०)

अर्थ-अरहर-अत्यन्त कषेली, मेद, कफ और रक्तपित्तनाशक है विबन्धकारक आध्मानकारक स्वादिष्ठ, पचनेमें स्वादिष्ठ किंचित् वातकारक शीतल, मल और मूत्रको बांधनेवाली, हलकी और रूखी है।

मदिन।

आढकीमधुराकिञ्चिद्वातलाचकषायका। गुर्वीरुच्यामाहि-णीचरूक्षावर्ण्याचशीतला॥ कफपित्तज्वरविषरक्तरुग्गुल्म-वातनुत्। अर्शोनाशकराप्रोक्ताघृतयुक्तात्वातहा॥ कफ-पित्तहृल्लेपः मेदकफापहा। तुवरीदालिकापथ्या किं-चिद्वातकरामता॥ कृमित्रिदोषशमनीघृतयुक्तात्रिदोषहा।

अर्थ-साधारण अरहर-मधुर किंचित् वातकारक कषेली, भारी, रुचि कारी, मलरोधक रूखी वर्णकारक, शीतल तथा कफ, पित्तज्वर, विष, रुधिरविकार गुल्म वात और बवासीरको दूर करै है और घीके साथ वातका नाशकरै है। इसका लेप करनेसे कफ और पित्तका नाश होता है। इसका लेप करनेसे मेद और कफ दूर होते हैं। इसकी दाल-पथ्य, किंचित् वातकारक तथा कृमि और त्रिदोषका नाशकरै और घीयुक्त त्रिदोषनाशक है।

श्वेताढकीगुणाः।

श्वेतातुतुवरीगुर्वीवातपित्तप्रकोपदा।
अम्लपित्तरुगाधिक्यपथ्याध्मानकारिणी॥

अर्थ-सफेद अरहर-भारी, वातपित्तप्रकोपक, अम्लपित्तकारक, दस्तावर पथ, पथ्य और आध्मानकारक है।

रक्ताढकीगुणाः।

रक्तातुतुवरीलघ्वीपथ्यातापज्वरापहा।
पित्तसन्तापादिनानारोगनाशकरीमता॥

अर्थ–लाल अडहर–रुचिकारक,बलकारक, पथ्य, ज्वरनाशक तथा पित्त और सन्ताप इत्यादि नानाप्रकारके रोगोंको दूर करैहै ।

कृष्णाढकीगुणा ।

कृष्णातुतुवरीबल्याचाग्निदीप्तिकरामता ।
पित्तदाहप्रशमनीऋषिभिःपरिकीर्त्तिता ॥ (रत्नाकर)

अर्थ–काली अडहर–बलकारक, अग्निप्रदीपक, पित्त और दाहको शान्ति करनेवालीहै ।

कलायनामानि ।





कलायोमुण्डचणकोहरेणूरेणुकःस्मृत ॥

अर्थ–कलाय, मुण्डचणक, हरेणु, रेणुक, (सतीलक, हरेणु, खण्डिक,

त्रिपुट, अतिवर्तुल, शमन, नीलक, चन्डी, मतीर, मतीन, हरेणुक, मर्दानक)

संस्कृतभाषामें	कलाप ।
हिन्दीभाषामें	मटर, पेगाव ।
बंगभाषामें	बोंटुरा मटर, मटर, हेजोंडा मटर ।
मराठीभाषामें	वाटाणे ।
गुजरातीभाषामें	मटाणा ।
कर्णाटकीभाषामें	बटाकडले ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दसे ।
इंग्रेजीभाषामें	फील्डपी । Field pea
लैटिन्भाषामें	पाईसम सेटाइवम । Pisum sativum

अस्य गुणाः ।

कलायः कुरुतेवातपित्तदाहकफापहः ।
रुचिपुष्टिप्रदः शीतः कषायश्चामदोषकृत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मटर वातकारक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, कफनाशक, रुचिकारक, पुष्टिजनक, शीतल, कषैली और आमदोषकारक है।

अन्यच्च ।

कलायोमधुरःस्वादुःपाकेरूक्षश्चशीतलः ।
"रक्तदाहकफपित्तघ्नोभिन्नविड्बहुवातलः"॥(भा०प्र०)

अर्थ-मटर-(पेगाव)-मधुर, पाकमें स्वादिष्ट रूखी, शीतल, रुधिरविकारनाशक, कफपित्तनाशक, मलको निकालनेवाली और वातको करनेवाली है।

अपिच ।

त्रिदिनरपायामधुरःप्रदिष्टारुक्षश्चशान्तिजनरक्तपित्ता ।
त्रिदिनत्सनातनिनिहन्तिपित्तकलायकामुद्गसमानरूपा।(हि.प.)

अर्थ-मटर विशेषकरके, मधुर रूखी रुधिरको शान्ति करनेवाली, वातकारक, त्रिविष दाह और पित्तको दूर करे है। यह रूपमें मूंगके समान होती है।

त्रिपुटस्यनामानि ।

त्रिपुटः खण्डिकः प्रोक्तस्तथाचान्यः कलायकः ॥

संस्कृतभाषामें	त्रिपुट, सण्डिक।
हिन्दीभाषामें	खेसारी, कसूर+कस्सा।
बंगभाषामें	खेसारिकलाय।
मराठीभाषामें	लाग, लाक।
गुजरातीभाषामें	मटर।
तैलिङ्गीभाषामें	लाक।
इंग्रेजीभाषामें	चिकिलिंगवेच। Chickling Vetch
लैटिन्भाषामें	लेथिरस् सेटिवस्। Lathyrus Sativus
	पिस एर्वेन्स। Pisum Arvens
फारसीभाषामें	मासग, जलबान।
अरबीभाषामें	हबुल बकर, खलज।

त्रिपुटगुणा।

त्रिपुटोमधुरस्तिक्तस्तुवरोरूक्षणोभृशम्।
कफपित्तहरोरुच्योग्राहकःशीतलस्तथा॥
किन्तुखञ्जत्वपङ्गुत्वकरोवातातिकोपन। (भा०प्र०)

अर्थ-त्रिपुट (खेसारी)-मधुर, कडवा, कपैला, अत्यन्त रूखा, कफ-पित्तनाशक, रुचिकारक, मलरोधक, शीतल, अत्यन्त वातको कुपित करनेवाला और खजापन तथा लगडेपनको देनेवाला है।

अपिच।

रूक्षोविशोपीमधुरः प्रदिष्टःस्नायुकरोत्यस्थिगतवलिष्ठम्।
शूलविबन्धभ्रमशोफकर्त्तादाहार्शहृद्रोगविकारकारी॥(हा स)

अर्थ-त्रिपुट (कस्सा)-रूखा, शोषक, मधुर, हड्डीकी नसोंको बलवान करनेवाला तथा शूल, विबन्ध, भ्रम, सूजन, दाह, बवासीर और हृदय-रोगको उत्पन्न करै है।

अपिच।

लाङ्गस्तुशीतलोरुच्योमधुरोवातकारक।गुरुश्चतुवरोरूक्ष कफपित्तविनाशक॥ वृषभाणाहित प्रोक्त पर्णशाकातुवातला। रुच्यापित्तकफानातुहननीपरिकीर्तिता॥ (नि०र०)

अर्थ-त्रिपुट तथा लाक-खेसारी-शीतल, रुचिकारक, मधुर, वातकारक,

भारी, कषेली, रूखी, कफपित्तनाशक और बैलोंको हितकारी है। इसके पत्तोंका शाक-बादी, रुचिकारी तथा पित्त और कफनाशक है।

कुलित्थनामानि।

कुलित्थस्ताम्रबीजश्च श्वेतबीजः सितेतरः॥

अर्थ-कुलित्थ, ताम्रबीज, श्वेतबीज, सितेतर (कालवृन्त, ताम्रवृन्त, कुलत्थिका, ताम्रवृन्त, ताम्रबीज, कुलत्थ)

संस्कृतभाषामें	कुलित्थ।
हिंदीभाषामें	कुलथी।
बंगभाषामें	कुलथी, कलाय।
मराठीभाषामें	कुळीथ, हुलगे।
गुजरातीभाषामें	कलथी।
कर्णाटकीभाषामें	हुरुलेतीसी।
तैलंगीभाषामें	बुलावुलु।
इंग्रेजीभाषामें	टूफ्लावर्डडोलीकोस्। Two flowered dolichos
लैटिनभाषामें	डोलीकोस बाईफ्लोरस। Dolichos Biflorus
फारसीभाषामें	किलत, मुर्वाहिदी।
अरबीभाषामें	हबुलकिलत।

कुलत्थगुणाः।

कुलत्थस्तु कषायोष्णो रूक्षो वातकफापहः॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुलथी-कषैली, गरम, रूखी तथा वात और कफनाशक है।

अन्यच्च।

कुलत्थः कफवातघ्नो ग्राह्युष्णो बृंहणः कटुः।

गुल्मशुक्राश्मरीमेदःश्वासकासप्रमेहजित्॥ (राज०)

अर्थ-कुल्थी-कफवातनाशक, मलरोधक, गरम, पुष्टिकारक, चरपरी तथा गुल्म, शुक्र, पथरी मेद, श्वास, खांसी और प्रमेहको दूर करे है।

अन्यच्च।

कुलत्थः कटुकः पाके कषायः पित्तरक्तकृत्। लघुर्विदाही वीर्योष्णः श्वासकासकफानिलान्॥ हन्ति हिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान्। स्वेदसंग्राहको मेदोज्वरक्रिमिहरः परः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–कुलथी–पाकमें कटु, कषेली, रक्तपित्तकारक, हलकी, दाहजनक, उष्णवीर्य तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, शुक्र, दाह, आनाह, पीनस, मेद, ज्वर और कृमिरोगको दूर करे है। तथा पसीनेको रोकनेवाली है।

अन्यच्च।

उष्णोजयेन्मारुतपीनसतुकासप्रतिश्यायविबन्धगुल्मान्।
हिक्कांसरक्तस्तुबलासपित्तनिहन्तिमेदश्चकुलत्थकोऽयम्।(हा)

अर्थ–कुलथी–गरम, वात, पीनस, खाँसी, प्रतिश्याय, विबन्ध, गुल्म, हिचकी, रक्त, कफ, पित्त और मेदोरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

वीर्य्येचोष्णाःकुलत्थाःकफपवनहराःपित्तरक्तप्रदाश्च
पाकेम्लाःश्वासकासोदरहृदयशिरोवस्तिशूलापहाश्च।
मूत्राघाताश्मरीघ्नानयनगदहराःशुक्रविच्छेदनाश्च
श्रेष्ठादुर्नामकुष्ठश्वयथुगदयकृद्गुल्मतूनीगदेषु॥

अर्थ–कुलथी–उष्णवीर्य्य, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक, पचनेमें अम्ल तथा श्वास, खाँसी, उदररोग, हृदयरोग, शिरोरोग वस्तिशूल, मूत्राघात, अश्मरी (पथरी), नेत्ररोग, शुक्र, बवासीर, कोढ, सूजन, यकृत, गुल्म, और तूनीरोगको हरणेवाली है।

अपिच।

उष्णाःकुलत्थाःपाकेम्लाविषस्थावरजङ्गमम्।
कासार्शकफवातांश्चघ्नन्तिपित्तास्रदा परम्॥ (वाग्भट)

अर्थ–कुलथी–गरम, पचनेमें अम्ल तथा स्थावरविष, जंगमविष, खाँसी, बवासीर, कफ और वातका नाश करे है तथा रक्तपित्तको उत्पन्न करेहै।

तिलनामानि।

तिलस्तुहोमधान्यस्यात्पवित्रंपितृतर्पणः।
पापघ्नपूतधान्य च जटिलस्तुवनोद्भवः॥

अर्थ–तिल, होमधान्य, पवित्र, पितृतर्पण, पापघ्न, पूतधान्य, जटिल, वनोद्भव (स्नेहफल, पूरफल, तैलफल)



तिल.

संस्कृतभाषामें	तिल ।
हिन्दीभाषामें	तिल, कालेतिल, तिली ।
बंगभाषामें	तिलगाछ ।
मराठीभाषामें	तीळ, काळे तीळ, चोखे तीळ ।
गुजरातीभाषामें	तल ।
कर्णाटकीभाषामें	एळ्ळु ।
तैलिङ्गीभाषामें	नोवुल, नल्लनुवुलु, नुव्वुलु ।
तामिलीभाषामें	नाल्लेण्णे ।
द्राविडीभाषामें	वारिकतिल ।
इंग्रेजीभाषामें	सिसेम नैजर्मीडस । Sesamum Niger seeds
लेटिनभाषामें	सिसेमम् इंडिकम् । Sesamum Indicum
फारसीभाषामें	कुंजद ।
अरबीभाषामें	सिमसिम ।

तिलगुणा ।

तिलो रसे कटुस्तिक्तो मधुरस्तुवरो गुरुः । विपाके कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः कफपित्तकृत् ॥ बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः । दन्त्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राही वातघ्नोऽग्निमतिप्रदः ॥ कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लो मध्यमः स्मृतः । अन्ये हीनतराः प्रोक्तास्तज्ज्ञै रक्तादयस्तिलाः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तिल-रसमें, कडवे, मधुर, कषैले, भारी, पाकमें चरपरे, स्वादु, स्निग्ध, उष्ण, कफपित्तकारक, बलकारक, केशोंको हितकारी, स्पर्शमें शीतल,

त्वचाको हितकारी, स्तनोंमे दूध उत्पन्न करनेवाले व्रणरोगमे हितकारी, दाँतोंको हितकारक, अल्पमूत्रकारक, मलरोधक, वातविनाशक और बुद्धिको उत्पन्न करे हैं । सर्वतिलोमे काले तिल उत्तम है, सफेद तिल मध्यम हैं, यह वीर्य्यवर्द्धक है और रक्तआदि तिल हीनगुणवाले है ।

अन्यच्च ।

"ईषत्कषायोमधुरःसतिक्त सग्राहिक पित्तकरस्तथोष्णः ।
तिलोविपाकेमधुरोबलिष्ठ स्निग्धोव्रणेलेपनपथ्यउक्तः ॥
दन्त्योऽग्निजननोल्पमूत्र स्तन्योथकेश्योनिलहागुरुश्च ।
तिलेषुसर्वेष्वसित प्रधानोमध्य सितोहीनतरास्तथान्ये ॥"

(आ स)

अर्थ–तिल–किञ्चित्कषेले, मधुर, कडवे, मलरोधक, पित्तकारक, गरम, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, व्रणके लेपमें पथ्य, दाँतोंको हितकारी, अग्निजनक, अल्पमूत्रकारक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाले केशोंको हितकारी, वातहारी और भारी है । सर्व तिलोमे काले तिल प्रधान है, सफेद मध्यम और दूसरे अधम है ।

अथ पिण्याकगुणाः ।

पिण्याकमधुररुच्यतीक्ष्णनेत्रविकारकृत ।
मलावष्टम्भकरूक्षंकफवातप्रमेहनुत् ॥
पित्तास्रबलपुष्टिश्चददातीतिभिषड्मतम् । (नि०र०)

अर्थ–तिलोंकी खल–मधुर, रुचिकारक, तीक्ष्ण, नेत्रविकारको करनेवाली, मलस्तभक, रूखी, कफ, वात और प्रमेहनाशक है, रक्तपित्त, बल और पुष्टिको देनेवाली है ।

अतसीनामानि ।

अतसीपिच्छिलादेवीमदगन्धामदोत्कटा ।
उमाक्षुमाहैमवतीसुनीलानीलपुष्पिका ॥

अर्थ–अतसी, पिच्छिला, देवी, मदगन्धा, मदोत्कटा, उमा, क्षुमा, हैमवती, सुनीला, नीलपुष्पिका (चणका, क्षौमी, रुद्रपत्नी, सुवर्चला, नीलपुष्पी, पार्वती, मसृणा, तैलोत्तमा)

अलसी.



संस्कृतभाषामें अतसी।
हिन्दीभाषामें अलसी, तिसी, मसीना।
बंगभाषामें मसिना, तिसी।
मराठीभाषामें जवस, अळशी।
गुजरातीभाषामें अळशी।
कर्णाटकीभाषामें अगसे।
तैलङ्गीभाषामें नल्लपगाविचेट्टु।
इंग्रेजीभाषामें कामन् फ्लेक्ससीड् Common Flaxseeds, Linseeds
लैटिनभाषामें लीनीसेमीना। Lini Semina
लीनमुसिटेटिसिम। Linum Usitatissimum
फारसीभाषामें तुख्मेकतान।
अरबीभाषामें बजरुलकतान।

अतसीगुणाः।

अतसीमदगन्धास्यान्मधुराबलकारिका।
कफवातकरीचेषत्पित्तहृत्कुष्ठनाशनुत्॥ (रा॰नि॰)

अर्थ—अलसी—मदगन्धयुक्त, मधुर, बलकारक, किंचित् कफवातकारक, पित्तनाशक तथा कुष्ठ और वातको दूर करै।

अन्यच्च।

अतसीमधुरातिक्तास्निग्धापाकेकटुर्गुरुः।
उष्णादृक्शुक्रवातघ्नीकफपित्तविनाशिनी॥ (भा.प्र.)

अर्थ-अलसी-मधुर, कडवी, स्निग्ध, पचनेमें चरपरी, भारी, गरम तथा दृष्टि, शुक्र, वात और कफ पित्तका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अतसीशुक्रदृष्टिघ्नीस्निग्धावातास्रजिद्गुरुः ॥ (म नि)

अर्थ-अलसी-शुक्रनाशक, दृष्टिनाशक, स्निग्ध, वातरक्तविनाशक और भारी है ।

अपिच ।

अतसीमधुरास्निग्धागुर्वीचोष्णाबलप्रदा ।
पाकेकट्वीचतिक्ताचकफवातव्रणापहा ॥
पृष्ठशूलचशोथचपित्तशुक्रंदृशंजयेत् ।
पर्णमस्या·कासकफवातनुच्छ्वासहृत्तथा ॥ (नि०र०)

अर्थ-अलसी-मधुर, स्निग्ध, भारी, गरम, बलकारक, पचनेमें चरपरी, कडवी तथा कफ, वात, व्रण, पृष्ठशूल, सूजन, पित्त, शुक्र और दृष्टिका नाशकरेहै । इसके पत्ते-खाँसी, कफ, वात और श्वासको दूर करे हैं ।

सर्षपनामानि ।

सर्षप कटुकस्नेहोभूतघ्नोरक्षिताफल ।
उग्रगन्धोग्रहघ्नश्चतन्तुभोथकदम्बक· ॥

अर्थ-सर्षप, कटुकस्नेह, भूतघ्न, रक्षिताफल, उग्रगन्ध, ग्रहघ्न, तन्तुभ, कदम्बक (सरिसप, कदम्बद, बिम्बट, कदम्ब, तन्तुक, कटुस्नेह, राजक्षवक)।

गौरसर्षपनामानि ।





तीक्ष्णकश्चदुराधर्षोरक्षोन-कुष्ठनाशनः ।
सिद्धप्रयोजन-सिद्धसाधन सितसर्षपः ॥

अर्थ-तीक्ष्णक, दुराधर्ष, रक्षोन, कुष्ठनाशन, सिद्धप्रयोजन, सिद्धसाधन सितसर्षप (गौर, अनल्प, सिद्धार्थ भूतनाशन, कटुस्नेह, मद्घ्न, कण्डूघ्न, गाजिकाफल, गुरुघ्न)

संस्कृतभाषामें	सर्षप, गौरसर्षप ।
हिन्दीभाषामें	सरसों, सफेदसरसों ।
बंगभाषामें	सरिषा, सर्षे, श्वेतसर्षे ।
मराठीभाषामें	शिरस, श्वेतशिरस ।
गुजरातीभाषामें	शरशव ।
कर्णाटकीभाषामें	बिलीयसासीवे ।
तैलङ्गीभाषामें	पाचाअवालु ।
इंग्रेजीभाषामें	सिनापिसआल्बा । Sinapis alba
लैटिन् भाषामें	ब्रसिका कॅपेसट्रिस । Brassica campestris
फारसीभाषामें	सर्षफ ।
अरबीभाषामें	उर्फेअर्षापद ।

सर्षपगुणा ।

सर्षपस्तुरसेपाकेकटुर्हृद्य सतिक्तकः।तीक्ष्णोष्ण कफवातघ्नो रक्तपित्ताग्निवर्द्धन-॥रक्षोहरोजयेत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिग्रहान् । यथारक्तस्तथागौरःकिन्तुगौरोवरोमत ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सरसो रस और पाकमें-चरपरी है, स्निग्ध, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक, अग्निवर्द्धक तथा राक्षसबाधा, कण्डू, कुष्ठ, कोढ, कृमि और ग्रहकी बाधाको दूर करनेवाली है, लाल और सफेद सरसों समानही गुणवाली है, किन्तु दोनोंमें सफेद सरसों लालकी अपेक्षा उत्तम है ।

अन्यच्च ।

सर्षप कटुकस्तिक्तस्तीक्ष्णश्चोष्णोग्निदीपन । किंचिद्रूक्ष पित्तलश्चकफपित्तकरोमत ॥ रक्षोवातकफकण्डूकुष्ठशूले कृमीञ्जयेत ।ग्रहपीडांचपीडांचनाशयेदिति कीर्तित ॥(नि.र)

अर्थ-सरसों-चरपरी, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निप्रदीपक, किञ्चित् रूखी, पित्तकारक, रक्तपित्तजनक, रूक्ष तथा वात, कफ, कण्डू, कुष्ठ, शूल, कृमि, ग्रहपीडा और पीडाको दूर करे है ।

सिद्धार्थगुणा ।

सिद्धार्थःकटुकस्तिक्तोरुच्योष्णोवातरक्तकृत् ।
ग्रहपीडार्शत्वग्दोपशोथव्रणविषापहः ॥

अर्थ-सफेद सरसों-चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम, वातरक्तकारक तथा ग्रहपीडा, बवासीर, त्वचाके दोप, सूजन, व्रण और विपका नाश करे है ।

सर्षपशाकगुणा ।

पर्णशाकासराचाम्लापित्तलातुवरागुरुः ।
स्वाद्वीचोष्णाचपक्वीचकफनाशकरीमता ॥ (नि०र०)

अर्थ-सरसोंके पत्तोंका शाक-सारक, अम्ल, पित्तकारक, कषेला, भारी, स्वादिष्ठ, गरम, खारी और कफहारी है ।

राजिकानामानि ।

राजीतुराजिकातीक्ष्णगन्धाक्षुजनिकासुरी ।
क्षव.क्षुताभिजनक क्रिमिक कृष्णसर्षपः ॥

अर्थ-राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धा, क्षुज्जनिका, आसुरी, क्षव, क्षुताभिजनक, कृमिक, कृष्णसर्षप (क्षुधाभिजनन, कृष्णिका, कटु, असुरी, काकोदुम्बरिका, रक्तिक, रक्तसर्षप, अतितीक्ष्णा, मधुरिक, क्षवक, क्षुतक, क्षव, ज्वलन्ती, ज्वलत्प्रभा)

राजसर्षपनामानि ।

राजक्षवक'कृष्णातीक्ष्णफलाराजिकाराज्ञी ।
साकृष्णसर्षपाविज्ञेयाराजसर्षपाख्याच ॥

अर्थ-राजक्षवक, कृष्णा, तीक्ष्णफला, राजिका, राज्ञी, कृष्णसर्षपा, राजसर्षप (कृष्णिका, सुरी, सुग्रक, व्यष्टक, फटुक, क्षव, क्षुताभिजनन, क्षुधाभिजनन)



संस्कृतभाषामें	राजिका, राजसर्षप ।
हिन्दीभाषामें	राई, लाई ।
बंगभाषामें	राइसर्ष, कालसर्ष, राजसर्षा, राइसरिषा ।
मराठीभाषामें	मोहरी, रायी ।
गुजरातीभाषामें	राई जम्बुतरी अने देशी ।
कर्णाटकीभाषामें	सासिराई ।
तैलिङ्गीभाषामें	वर्णालु ।
इंग्रेजीभाषामें	मस्टर्ड सीड्स । Mustard Seeds
लैटिनभाषामें	सिनापिस् नाईग्रा ब्रोसेका नाईग्रा । Sinapis nigra, Brassica Nigra
अरबीभाषामें	खरदल ।

राजिकागुणाः ।

आसुरीकटुतिक्तोष्णावातप्लीहार्तिशूलनुत् ।
दाहपित्तप्रदाहन्तिकफगुल्मकृमिव्रणान् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-राई-चरपरी, कडवी, गरम, वात, प्लीहा और शूलनाशक है। दाहजनक, पित्तकारक, तथा कफ, गुल्म, और कृमिरोगको हरनेवाली है।

अन्यच्च ।

राजिकाकफपित्तमीतीक्ष्णोष्णारक्तपित्तकृत् ।
किञ्चिद्रूक्षाग्निदाकण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन्हरेत् ॥
अतितीक्ष्णाविशेषेणतद्वत्कृष्णापिराजिका । (भा० प्र०)

अर्थ-राई-कफपित्तनाशक, तीक्ष्ण, गरम, रक्तपित्तकारक, किञ्चित् रूखी, अग्निवर्द्धक तथा कण्डू, कुष्ठ, कोष्ठरोग और कृमिरोगको दूर करेहै। काली राईके भी गुण राईकी समान हैं, विशेषकरके अत्यन्त तीक्ष्ण है।

राजसर्षपगुणाः।

राजसर्षपकश्चोष्णः पित्तलोदाहकारकः।
कटुस्तिक्तोगुल्मकुष्ठकण्डूव्रणरुजापहः॥
वातशूलनाशयतीत्येवपूर्वैर्निवेदितम्।

अर्थ-राजसर्षप-गरम, पित्तजनक, दाहकारक, चरपरी, कडवी तथा गुल्म, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और वात शूलका नाश करेहै।

राजिकापत्रशाकगुणाः।

राजिकापर्णशाकातुकट्वीचोष्णावलप्रदा।
स्वाद्वीपित्तकरीज्ञेयाकृमिवातकफापहा॥
कण्ठरोगहराचोक्तापूर्वैः सूज्ञचिकित्सकैः।-(नि०र०)

अर्थ-राईके पत्तोंका शाक-चरपरा, गरम, बलकारक, स्वादिष्ठ, पित्तकारक, कृमिनाशक, वातकफनाशक और कण्ठरोगको दूर करे है।

तृणधान्यनामानि।

क्षुद्रधान्यकुधान्यचतृणधान्यमितिस्मृतम्॥

अर्थ-क्षुद्रधान्य, कुधान्य, तृणधान्य।

तृणधान्यगुणाः।

तृणधान्यमनुष्णस्यात्कषायंलघुलेखनम्।
मधुरकटुकपाकेरूक्षचक्लेदशोषकम्॥
वातकृद्बद्धविट्कञ्चपित्तरक्तकफापहम्। (भा०प्र०)

अर्थ-तृणधान्य-अनुष्ण, कषेले, हल्के, लेखन, मधुर, पचनेमें चरपरे, रूखे, क्लेदशोषक, वातवर्द्धक, मलबन्धक तथा पित्तरक्त और कफनाशक है।

अन्यच्च।

तृणधान्यलघुस्वादुपाकेकटुचलेखनम्। मलबन्धकरंरूक्ष तुवरंमधुरंमतम्॥ क्लेदशोषकरचोष्णवातलपित्तलतथा॥ कफनाशकरचैवपूर्ववैद्यैरुदाहृतम॥ (नि०र०)

अर्थ-तृणधान्य-हलके स्वादिष्ट, पाकमें कटु, लेखन, मलबंधक, रूखे, कषेले, मधुर, क्लेदशोषक, गरम, वादी, पित्तकारक और कफनाशक है ।

कंगुनामानि ।



स्त्रियांकंगु:प्रियंगुर्द्वेकृष्णारक्तासितातथा ।
पीताचतुर्विधाकंगुस्तासांपीतावरास्मृता ॥

अर्थ-कंगु, प्रियंगु (प्रियंगू, कंगू, कंगुका, कंगुनीका, कंगूनी, चीनक, पीततण्डुल) ।

संस्कृतभाषामें	कंगु ।
हिन्दीभाषामें	कंगुनी, कागनी, कंगनी ।
बंगभाषामें	काङ्गुनी, कानिधान ।
मराठीभाषामें	काग ।
गुजरातीभाषामें	काग ।
कर्णाटकीभाषामें	नवणे ।
तैलिंगीभाषामें	कोरलु ।
लॅटिनभाषामें	पेनिकम मिलियेसियम् । Panicum Miliaceum
फारसीभाषामें	गल ।

कंगनी-काली, लाल, सफेद और पीली इन भेदोंसे चार प्रकारकी है, इनमें पीली कंगनी उत्तम है ।

कंगुगुणाः ।

कंगुस्तुभग्नसन्धानवातकृद्बृंहणोगुरुः ।
रूक्षाश्लेष्महरातीववाजिनांगुणकृद्भृशम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कंगनी-भग्नसन्धानकारक, वातकारक, पुष्टिकारक, भारी, रूखी, कफनाशक और घोडोंके लिये अत्यन्त उपकारी है ।

अन्यच्च ।

प्रियङ्गुर्मधुरोरुच्यःकषाय.स्वादुशीतलः ।
वातकृत्पित्तदाहघ्नोरूक्षोभग्नास्थिसन्धिकृत् ॥

अर्थ–कंगनी–मधुर, रुचिकारक, कपेली, स्वादिष्ठ, शीतल, वादी, पित्त और दाहनाशक, रूखी, भग्न और हड्डीको जोडनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कङ्गुःशीतोवातकरोरूक्षोवृष्यःकषायकः । धातुवृद्धिकरः स्वादुर्गुरुश्चाश्वहितावहः ॥ भग्नास्थिसन्धानकरोगर्भपाते हितावहः । कफपित्तहरश्चायकृष्णरक्ताच्छपीतकैः ॥ वर्णैश्चतुर्धासमतोगुणैश्चोत्तरतोधिक ॥

अर्थ–कगनी–शीतल, वातकारक, रूखी, वृष्य, कपेली, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, भारी, अश्वोंको हितकारी, भग्नास्थिसन्धानकारक, गर्भके गिरानेमें हितकारी, कफपित्तनाशक है, यह कृष्ण, रक्त, सुफेद और पीली इन भेदोंसे चारप्रकारकी है, इनमें एकसे एकके अधिक गुण हैं ।

चीनकनामानि ।

चीनक.काककगुश्चसुश्लक्ष्ण.श्लक्ष्णकःस्मृत. ॥

अर्थ–चीनक, काककगु, सुश्लक्ष्ण, श्लक्ष्णक (कंगु) ।

सस्कृतभाषामें	चीनक ।
हिंदीभाषामें	चीना, चैना ।
वगभाषामें	चिने ।
मराठीभाषामें	राळे ।
गुजरातीभाषामें	चीणो ।
कर्णाटकीभाषामें	चीनक ।
इग्रेजीभाषामें	मीलेट । Millet
लैटिन्भाषामें	पेनिकमिलियेरी । Panicum Millari
फारसीभाषामें	उरजान ।
अरबीभाषामें	बारेगा ।

चीनकगुणा. ।

चीनक.कङ्गुभेदोऽस्तिसज्ञेयःकगुवद्गुणैः ॥ (भा प्र.)

अर्थ-चीनाधान कगनीका भेद है। इसकारण इसके गुणभी कगनीकी समान जानने।

नीवारनामानि ।



नीवारोरण्यधान्यस्यान्मुनिधान्यतृणोद्भवम् ॥

अर्थ-नीवार, अरण्यधान्य, मुनिधान्य, तृणोद्भव (तृणधान्य, वनव्रीहि, अरण्यजालि, प्रसाधिका)

संस्कृतभाषामें	नीवार ।
हिंदीभाषामें	तिरी, सीनी, सौली ।
वंगभाषामें	उढीधान्य ।
मराठीभाषामें	देवभात ।
गुजरातीभाषामें	वटी ।
कर्णाटकीभाषामें	ज्वरडुमेघे ।
तैलङ्गीभाषामें	निवरिवडु ।
लैटिनभाषामें	पेनिक इटालिक । Panicum Italicum

नीवारगुणाः ।

नीवारोमधुर स्निग्ध पवित्र पथ्यदोलघु. ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-नीवारधान्य-मधुर, स्निग्ध, पवित्र, पथ्य और हलके हैं।

अन्यच्च ।

नीवार शीतलोग्राहीपित्तघ्न कफवातकृत ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-नीवारधान्य-शीतल, मलरोधक, पित्तनाशक तथा कफ और वातकारक है।

अपिच ।

नीवार-श्लेष्मलोरूक्ष कषायोवातलोहिमः ।

लेखनोबद्धविण्मूत्रःस्वादुःपित्तहरोलघुः ॥ (शो नि.)

अर्थ–नीवारधान्य–कफकारी,रूखे, कषेले, वादी, शीतल, लेखन, मल और मूत्रको बाधनेवाले, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक और हलके हैं ।

वरकनामानि ।

वरकःस्थूलकगुश्चरूक्ष स्थूलप्रियगुकः ।

अर्थ–वरक, स्थूलकङ्गु, रूक्ष, स्थूलप्रियगु (स्थूलकगू)

वरकगुणाः ।

वरकोमधुरोरूक्षःकषायोवातपित्तकृत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–वरक, (चीनाभेद)–मधुर, रूखे, कषाय और वातपित्तकारक है। यह कगनीकाही भेद है ।

संस्कृतभाषामें	वरक ।
हिन्दीभाषामें	चीनाभेद ।
बंगभाषामें	चीनाविशेष ।
मराठीभाषामें	वऱ्या ।
गुजरातीभाषामें	वऱ्यो ।
लैटिन्‌भाषामें	पेनिकमिलीयेरी कहते हैं ।

नर्त्तकनामानि ।



नर्त्तकोनृत्यकुण्डश्चभूचराचमलीयस ।
कठिनोगुच्छकणिशोलञ्छनोबहुपत्रकः ॥

अर्थ–नर्त्तक, नृत्यकुण्ड, भूचरा, मलीयस, कठिन, गुच्छ, कणिश, लञ्छन, बहुपत्रक ।

संस्कृतभाषामें	नर्त्तक ।
हिन्दीभाषामें	नर्त्तक मडुआ ।
मराठीभाषामें	नाचणी, नागली ।

गुजरातीभाषामें नागली ।
कर्णाटकीभाषामें रपिगुचणे ।
इंग्रेजीभाषामें थ्रिकस्पाइक्ड एल्युसीन । Thrick Spiked Elensine
लैटिन्भाषामें इल्युसाइन कारेकेना । Elensine Coracana
फारसीभाषामें मडवा ।

मडव गुणाः ।

नर्त्तकस्तुवरस्तिक्तोमधुरस्तर्पणोलघुः।बल्यःशीतःपित्तहरस्त्रिदोषशमनोमतः॥रक्तदोषहरश्चैवमुनिभिःपूर्वमीरितः।(नि र)

अर्थ-नर्त्तक-कषेले, कडवे, मधुर, तृप्तिकारक, हलके, बलकारक, शीतल, पित्तनाशक, त्रिदोषनिवारक, और रुधिरके दोषोंको दूर करे है।

श्यामाकनामानि ।

श्यामाक श्यामकःश्यामस्त्रिबीजःस्यादविप्रियः ।
सुकुमारो राजधान्यस्तृणबीजोत्तमश्च सः ॥

अर्थ-श्यामाक, श्यामक, श्याम, त्रिबीज, अविप्रिय, सुकुमार, राजधान्य, तृणबीजोत्तम ।

संस्कृतभाषामें श्यामाक ।
हिन्दीभाषामें समा ।
बंगभाषामें शामाधान ।
मराठीभाषामें सावे, कायली ।
गुजरातीभाषामें शामो ।
कर्णाटकीभाषामें सये ।
तैलङ्गीभाषामें श्यामाङ्क ।
लैटिनभाषामें पेनिकम फ्रूमेंटेसियम । Panicum Frumentaceum
ओपलिसम् मेनस फ्रूमेंटेसियम । Oplismenus Frumentaceum
फारसीभाषामें शामाख ।

श्यामाकगुणाः ।

श्यामाकोमधुरः स्निग्धः कषायोलघुशीतलः ।
वातकृत्कफपित्तघ्नःसमादीविषदोषनुत ॥ (रा०नि०)

अर्थ-समा-मधुर, स्निग्ध, कषेला, हलका, शीतल, वातकारक, कफ पित्तनाशक, मलरोधक और विषके दोषोंको दूर करे है।

अन्यच्च ।

श्यामाकःशोपणोरूक्षोवातलःकफपित्तनुत् ॥ (भा प्र.)

अर्थ–समा–शोपक, रूखा, वादी और कफपित्तनाशक है ।

कोद्रवनामानि ।

कोद्रव कोरदूपःस्यादुद्दालोवनकोद्रवः ॥

अर्थ–कोद्रव, कोरदूप, (कुद्रव, कोरदूपक, कोरदुष्क, कोद्दार, कोद्दाल, कुद्दाल, मदनाग्रक, कोर्द्दव) उद्दाल और वनकोद्रव यह दो नाम वनकोदोंके हैं ।

संस्कृतभाषामें	कोद्रव ।
हिन्दीभाषामें	कोदों ।
वंगभाषामें	कोदोधान्य ।
मराठीभाषामें	हरीक, कोद्रू ।
गुजरातीभाषामें	कोदरों, जगलीकोदरो ।
कर्णाटकीभाषामें	हारक ।
तैलङ्गीभाषामें	आल्लुवाल्लु ।
इंग्रेजीभाषामें	पकचर्ड पासपेल । Punctured Paspalum
लैटिन्भाषामें	पासपेल स्क्रोबिक्युलेटम् । Paspalum Scrobicu talum
औत्कलीभाषामें	कोद्रु ।

कोद्रवगुणाः ।

कोद्रवोवातलोग्राही हिमःपित्तकफापहः ।
उद्दालस्तुभवेदुष्णोग्राहीवातकरोभृशम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–कोदों–वातकारक, मलरोधक, शीतल और पित्तकफनाशकहै, वनकोदों–गरम, मलरोधक और वातकारक है ।

अन्यच्च ।

कोद्रवोमधुरस्तिक्तोव्रणिनांपथ्यकारकः ।
कफपित्तहरोरूक्षोमोहकृद्वातलोगुरुः ॥

अर्थ–कोदों–मधुर, कडवे, व्रणरोगवालोंको पथ्य, कफपित्तनाशक, रूखे, मोहकारक, वादी और भारी हैं ।

अन्यच्च ।

कोरदूषः परग्राहीस्पर्शशीतोविषापहः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-कोदों-अत्यन्त मलरोधक, स्पर्शमें शीतल और विषनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

रूक्षोग्राहीकोद्रवःस्याद्रक्तपित्तविशोधनः ।
नात्यन्तकफकृत्प्रोक्तोरुच्यःस्वादुःप्रकीर्तितः ॥(हा सं.)

अर्थ-कोदों-रूखे, ग्राही, रक्तपित्तशोधक, अत्यन्त कफकारक नहीं, रुचिकारी और स्वादिष्ट हैं ।

अपिच ।

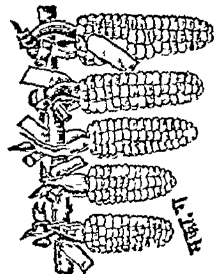
कोद्रवोबद्धविण्मूत्रोवातलोलेखनोलघुः ।
विषपित्तकफामघ्नोकषायोरक्तपित्तजित ॥
स्पर्शशीतः परग्राहीमधुरोरूक्षशीतलः ॥
उद्दालकस्तुवीर्य्योष्णोलेखनोवातलोलघुः ।
रूक्षः स्वादुः कषायश्चश्लेष्मजिद्बद्धमूत्रविट् ॥ (शो॰नि॰)

अर्थ-कोदों-मलमूत्रबद्धक, वातकारक, लेखन, हलके, विषविनाशक, पित्तनिवारक, कफघ्न, आमनाशक, कषैले और रक्तपित्तको दूर करनेवाले, स्पर्शमें शीतल, अत्यन्तग्राही, मधुर, रूखे और शीतल हैं । वनकोदों-उष्णवीर्य, लेखन, वादी, हलके, रूखे, स्वादिष्ट, कषैले, कफनाशक और मलमूत्रबद्धक हैं ।

यष्टिधान्यनामानि ।







मकायस्तुमहाकायोकटिज-कांडज-स्मृतः ।
शिखालु सपुटांतस्थोयावनालसमोगुणे. ॥

अर्थ–मकाय, महाकाय, कटिज, काडज, शिखालु, सपुटातस्थ । इसके गुण ज्वारकी समान हैं ।

संस्कृतभाषामें	मकाय, महाकाय ।
हिंदीभाषामें	मक्का, भुटे ।
मराठीभाषामें	मका ।
गुजरातीभाषामें	मकाई ।
तैलङ्गीभाषामें	जनपट्लु ।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियनकोर्नमेझ । Indian Corn Maize
लेटिन्भाषामें	झियामेझ । Zia–Maize

अस्य गुणाः ।

महाकायस्तृप्तिकरोवातल कफपित्तहृत् ।
विष्टम्भजनकोरूक्ष कोमलोरुचिपुष्टिकृत् ॥

अर्थ–तृप्तिकारक, बादी, कफपित्तनाशक, विष्टम्भकारक और रूखी है । कच्चीमक्का–पुष्टि और रुचिको करनेवाली है ।

गवेधुकानामगुणाश्च ।

गवेधुकातुविद्वद्भिर्गवेधु कथितास्त्रियाम् ॥

अर्थ-गवेधुका, गवेधु (गवेडु, गवेडुका, कुन्त, क्षुद्रा, गोजिह्वा, गुन्द्रगुण)

गवेधु कटुकास्वाद्वीकार्श्यकृत्कफनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गवेडुआ-कटु, स्वादिष्ट, शरीरको कृश करनेवाला और कफनाशक है ।

वरटानामानि ।

कुसुम्भबीजं वरटा सैव प्रोक्ता वरट्टिका ॥

संस्कृतभाषामें	कसूमके बीजोंको वरटा और वरट्टिका कहते हैं ।
हिन्दीभाषामें	कर्र, कर ।
बंगभाषामें	कुसुमफल ।
मराठीभाषामें	करडयां ।
गुजरातीभाषामें	कुसुम्बानाबी ।
फारसीभाषामें	तुख्मबारदना ।
अरबीभाषामें	हब्बुल अस्फर ।

अस्या गुणाः ।

वरटामधुरास्निग्धारक्तपित्तकफापहा ।

कषायाशीतलागुर्वीस्वादुर्वृष्यानिलापहा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कर्र-मधुर, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, कषैली, शीतल, भारी, स्वादिष्ट, वीर्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

चारुकनामगुणाश्च ।

चारुक शरबीजस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ ।

चारुकोमधुरोरूक्षोरक्तपित्तकफापह ॥

शीतलोलघुर्वृष्यश्चकषायोवातकोपन । (भा० प्र०)

अर्थ-सरपतेके बीजोंको चारुक कहते हैं । चारुक-मधुर, रूक्ष, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, लघु वृष्य, कषाय और वातको कुपित करे है ।

वंशयवगुणाः ।

यवावंशभवारूक्षाःकषाया कटुपाकिनः ।

बद्धमूत्रा कफघ्नाश्चवातपित्तकरा सराः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वासके चावल-रूखे, कपेले, पचनेमें कटु, मूत्ररोधक, कफनाशक, वातपित्तकारक और सारक हैं। इसके गुण और नाम प्रथम तृणवर्गमें लिखचुके हैं।

यवनालगुणाः।

यवनालोहिमःस्वादुर्लोहितःश्लेष्मपित्तजित्।
अवृष्यस्तुवरोरूक्ष·क्लेदकृत्कथितोलघुः (भा० प्र०)

अर्थ-पुनेरा-शीतल, स्वादिष्ठ, लाल, कफपित्तनाशक, अवृष्य, कपेला, रूखा, क्लेदकारक और हलका है।

नूतनपुरातनादिभेदेन धान्यगुणाः।

धान्यंसर्वंनवस्वादुगुरुश्लेष्मकरस्मृतम्। तत्तुवर्षोपितपथ्यं यतोलघुतरहितम्॥ वर्षोपितसर्वधान्यंगौरवपरिमुञ्चति। नतुत्यजतिवीर्य्यंस्वंक्रमान्मुञ्चत्यतःपरम्॥ एतेपुयवगोधूमतिलमापानवाहिता।पुराणाविरसारूक्षानतथागुणकारिणः॥ पुराणा वर्षद्वयादुपरिस्थिता यवादयो नवाः स्वस्थान्प्रतिहिता पथ्याशिनां तु पुराणा हिताः॥

अर्थ-सर्व नये धान्य-स्वादिष्ठ, भारी और कफको करनेवाले कहेहैं। एक वर्षके वीतजानेपर वह हलके होनेके कारण पथ्य होते हैं, वर्ष दिनके पीछे सर्वधान्य भारीपनको छोडदेतेहैं किन्तु अपने २ वीर्यको नहीं त्यागते क्रमसे दो वर्षके पीछे वीर्यकोभी छोडदेते हैं। इनमें जौ, गेहू, तिल, उडद यह नयेही हितकारी होते हैं, पुराने वेरस, रूखे और गुणकारीभी नहीं हैं। यवादिक नवीन निरोगी मनुष्योंके लिये हितकारी कहे हैं। किन्तु पथ्य भोजन करनेवालोंको पुरानेही हितकारक कहे हैं।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे धान्यवर्गः समाप्तः॥ १०॥

अथ शाकवर्गः।

पत्रपुष्पफलनालकन्दंसस्वेदजतथा।
शाकपड्विधमुद्दिष्टगुरुविद्याद्यथोत्तरम्॥

अर्थ-पत्र, पुष्प, फल, नाल, कंद और संस्वेदज इन भेदोंसे शाक छः प्रकारका है इनमें एकसे दूसरा भारी जानना अर्थात् पत्रसे पुष्प, पुष्पसे फल, फलसे नाल, नालसे कंद और कन्दसे संस्वेदज भारी है।

शाकदोषाः।

प्रायःशाकानिसर्वाणिविष्टम्भीनिगुरूणिच। रूक्षाणिबहुवर्चांसिसृष्टविण्मारुतानिच॥ शाकभिनत्तिवपुरस्थिनिहन्ति नेत्रं वर्णंविनाशयतिरक्तमथापिशुक्रम्। प्रज्ञाक्षयंचकुरुतेपलितंचनूनं हन्तिस्मृतिंगतिमितिप्रवदन्तितज्ज्ञाः॥ शाकेषुसर्वेषुवसतिरोगास्तेहेतवोदेहविनाशनाय। तस्माद्बुधः शाकविवर्जनन्तु कुर्यात्तथाम्लेषु स एव दोषः॥

अर्थ-दोष और गुण-प्रायः सर्व प्रकारके शाक-विष्टम्भकारक, भारी, रूखे, बहुमल करनेवाले तथा विष्ठा और अधोगत वायुको करनेवाले हैं। शाक-शरीर, हड्डी, नेत्र, रक्त, शुक्र और बुद्धिका नाश करे है। स्मरणशक्तिको हरे है, गतिशक्तिको दूर करे है और निःसन्देह बालोंको सफेद करे है। सर्व प्रकारके शाकोंमें रोग रहते हैं और रोगही शरीरके नाश करनेके हेतु है, इसकारण बुद्धिमान् शाक भोजन करना छोड़देवे और ऐसेही दोष अम्लद्रव्य अर्थात् खटाईमें है, सो खटाईभी त्यागने योग्य है।

शाकंसर्वमचक्षुष्यंचक्षुष्यंशाकपञ्चकम्।
जीवन्तीवास्तुमत्स्याक्षीमेघनादः पुनर्नवा॥

अर्थ-सर्वप्रकारके शाक नेत्रोंको अहितकारी हैं, किन्तु जीवन्ती, बथुआ, मत्स्याक्षी, चौलाई और पुनर्नवा यह पांच शाक हितकारी हैं।

अथास्तु वास्तूकस्य पर्यायाः।

वास्तूकंवास्तुकञ्चस्यात्क्षारपत्रञ्चशाकराट्।
तदेवतुबृहत्पत्रंरक्तंस्याद्गौडवास्तुकम्॥

अर्थ-वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र, शाकराट्, (शाकपत्र, शाकारोह, शाकवीर, प्रहंस, चनावा, वास्तु, बथुआ, हिरमोचिका, शाकराज, गरबाष, पाखटी)। दूसरा लाल पत्तोंका होता है उसके पर्याय यह हैं गौडवास्तुक (गिड़ी, गिलिया, कुनी, अम्लोडिका, मृदुपत्री, लालरंग, लालपत्री, वास्तुकी, मरदन्त और गौडवास्तु)

सस्कृतभाषामें	वास्तूक, गौडवास्तूक।
हिन्दीभाषामें	वथुआ, चिली, वडा वथुआ।
वगभाषामें	वेतुया, वेतोशाक।
मराठीभाषामें	चाकवत, चिविल, चाकवताची भाजी।
गुजरातीभाषामें	टाको, चील।
कर्णाटकीभाषामें	चक्रवती, चिलीपचिल्लीके।
इग्रेजीभाषामें	व्हाइट गुजफूट White goose foot
	परपल गुजफुट Purple goose foot
लैटिन्भाषामें	केनापाडय आलव Chenopodum Album
	के एद्रिप्लिसीस्। Che atripolisi
फारसीभाषामें	मुसेलेसा सरमक।
अरवीभाषामें	रोक्रवतुल वजामेल कुतुफ।

वास्तूकगुणा।

वास्तूकोऽग्निकरोरसेचमधुर पित्तापहश्चक्षुप
स्निग्धोवातविनाशनःकृमिहर पित्तादिदोपापहः।
वर्चोमूत्रविशोधनःप्रथमतःश्लेष्मामयानांतथा
शाकानामपिचोत्तमोलघुतर पथ्य सदाप्राणिनाम्॥

अर्थ-वथुआ-जठराग्निजनक, मधुररसान्वित, पित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, वातविनाशक, कृमिनाशक, पित्तादिदोपनाशक, मलमूत्र-विशोधक, शाकोंमें उत्तम और कफरोगवाले मनुष्योंको सदैव हितकारी है।

अन्यच्च।

सक्षारःकृमिजित्त्रिदोपशमन सदीपनः पाचन-
श्चक्षुष्योमधुर सरोरुचिकरोविष्टम्भशूलापहः।
वर्च्चोमूत्रविशोधन स्वरकर स्निग्धोविपाकेगुरु
र्वास्तूक सकलामयप्रशमनश्चिल्लीतदेवोत्तमा॥

अर्थ-वथुआ-क्षारयुक्त, कृमिनाशक, त्रिदोपनिवारक, दीपन, पाचन, नेत्रोंको हितकारी, मधुर, सारक, रुचिकारक, विष्टम्भनाशक, शूलनाशक, मलमूत्रशोधक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्निग्ध, पाकमें भारी और सर्व

प्रकारके रोगोंको शान्ति करनेवाला है । चिल्ली अर्थात् लाल बथुआ इससेभी उत्तम है ।

अन्यच्च ।

अर्शस्त्रिदोषारुचिजन्तुहारीविस्रंसनोबुद्धिबलाग्निकारी ।
क्षारोविपाकेकटुवास्तुकं स्यात्तद्वच्चचिल्लीलघुपत्रयुक्ता ।(सुषेण)

अर्थ-बथुआ-बवासीर, त्रिदोष, अरुचि और कृमिनाशक है, विस्रंसन, बुद्धिजनक, बलकारक, जठराग्निवर्द्धक, क्षार विपाकमें कटु और चिल्लीके गुणभी इसीकी समान है ।

अपिच ।

वास्तूकद्वितयस्वादुक्षारपाकेकटूदितम् ।
दीपनंपाचनरुच्यलघुशुक्रबलप्रदम् ॥
सरपित्तास्रप्लीहार्शःकृमिदोषत्रयापहम् । (भा०प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारके बथुए-स्वादिष्ट, क्षार, पाकमें कटु, दीपन, पाचन, रुचिकारक, हलके, शुक्रजनक, बलकारक, पुष्टेक, दस्तावर, रक्त, पित्त, प्लीहा, रुधिरविकार, कृमि और त्रिदोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वास्तुकंमधुरंहृद्यंवातपित्तार्शसांहितम् ॥ (ध०नि०)

अर्थ-बथुआ-मधुर, हृदयको हितकारी तथा वात, पित्त और बवासीर-रोगवालोंको हितकारी है ।

चिल्लीगुणाः ।

चिल्लीवास्तुकतुल्याचसक्षाराश्लेष्मपित्तनुत् ।
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रघ्नीपथ्याचरुचिकारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चिल्ली अर्थात् लाल बथुआ-बथुएकी समानही गुणवाला है, क्षार, कफपित्तनाशक, प्रमेहनाशक, मूत्रकृच्छ्रनिवारक, पथ्य और रुचिकारक है । बथुआ जौ और गेहूंके खेतमें अधिकतासे उत्पन्न होताहै इसके पत्तोंका शाक बहुत होताहै और यह सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

लोण्यादिलोणीनामानि ।

लोणालोणीचकथिताबृहल्लोणीचघोटिका ॥

अर्थ-लोणा, लोणी, बृहल्लोणी, घोटिका ।
देशभाषामें लोणा, लोणी, बड़ीलोणी, घोलिका ।

हिंदीभाषामें	लोनी, नोनिया कुल्फा ।
वंगभाषामें	वडणुनी, क्षुद्रेणुनी, वनणुनी ।
मराठीभाषामें	घोळ, लहान घोळ, मळेघोळ, रायघोळ ।
गुजरातीभाषामें	लुणी झीणी, लुणी मोटी ।
कर्णाटकीभाषामें	गोलि ।
तैलिङ्गीभाषामें	अईलकुस ।
तामिलीभाषामें	कोरिलकीरइ ।
इंग्रेजीभाषामें	पर्सलेन । Purs lane
लैटिन्भाषामें	पोर्चलेका ओलिरेसिया । Portulaca oleracea
फारसीभाषामें	खुरफा ।
अरबीभाषामें	वक्लतुलहुमका ।

लोणीगुणाः ।

लोणीरूक्षागुरुःकट्वीवातश्लेष्महरीपटुः ।
अर्शोघ्नीदीपनीचाम्लामन्दाग्निविषनाशिनी ॥

अर्थ—लोणी अर्थात् नोनियाका शाक—रूखा भारी, कटु, वातकफनाशक, खारी, अर्शरोगनाशक, दीपन, अम्ल, मन्दाग्नि और विषविनाशक है ।

घोलिकागुणाः ।

घोलिकाम्लासराचोष्णावातकृत्कफपित्तहृत् ।
वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नीश्वासकासप्रमेहनुत् ॥
पित्तलाम्लाग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी ।

अर्थ—घोलिका अर्थात् वडी नोनिया, कुलफा—अम्ल, सारक, गरम, वातकारक, कफपित्तनाशक, वाणीके दोषको दूर करनेवाला, व्रणविनाशक, गुलमनाशक, श्वासनिवारक, कासहारक, प्रमेहनाशक, पित्तजनक, अम्ल तथा संग्रहणी, बवासीर कुष्ठ और अतिसारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

घोलिकारुचिदापटीपित्तलाचाम्लिकामता ।
सराकफव ।चोष्णावातत्वग्दोषनाशिनी ॥
गुल्मव्रण ।सकासनेत्ररुङ्मेहशोथहा ।

अर्थ—नोनिया—रु ।चकारी, खारी, पित्तजनक, अम्ल, सारक, कफकारक,

गरम तथा वात, त्वचाके दोष, गुल्म, व्रण, श्वास, खासी, नेत्ररोग, प्रमेह और सूजनको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च।

राजपूर्वा बोलिका तु रूक्षाम्ला पटुः स्मृता।
रुच्या कट्वी च गुर्वी च दीपिकाऽग्नेः कफापहा॥
वातचार्शश्चाग्निमान्द्यविषशुक्रं च नाशयेत्॥

अर्थ-बड़ी लोणी-रूक्ष, अम्ल, खारी, रुचिकारक, कटु, भारी, अग्निसंदीपक, कफनाशक तथा वात, बवासीर, मन्दाग्नि, विष और शुक्रका नाश करे है।

क्षुद्रबोलिकागुणाः।

क्षुद्रबोलिका पित्तला सरा कफकरी च कट्वी जीर्णज्वरहा।
श्वासकासहा गुल्मनाशिनी मेहशोथहा सा रसायनी॥
वातहा मता चोष्णकारिणी चाम्लिका मता नेत्ररोगदा।
चर्मदोषहा व्रणहरी मता पूर्वमेव तु मानिरूपिता॥ (नि०र०)

अर्थ-छोटेपत्तोंके नोनियाका शाक-पित्तजनक, सारक, कफकारक, कटु, जीर्णज्वरनाशक और श्वास, खासी, बायगोला, प्रमेह और सूजनको दूर करनेवाला है, रसायन, वातविनाशक, गरम, खट्टा तथा नेत्ररोग, चर्मविकार और व्रणका विनाश करे है, नोनिया और लूनका यह दोनों गीली और रेतीली तथा खारी जमीनमें उत्पन्न होवे है।

चुक्रनामानि।



चुक्रश्चुक्रकमाम्लं च कफकृच्चाम्लवास्तुकम्।

दलाम्लमम्लशाकाख्यमम्लादिहिलमोचिका ॥

अर्थ-चुक्र, चुक्रवास्तुक, लिङ्कुच, अम्लवास्तुक, दलाम्ल, अम्लशाकाख्य, अम्लहिलमोचिका (चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचनी, शतवेधनी) ।

संस्कृतभाषामें	चुक्र, चुक्रिका ।
हिन्दीभाषामें	चूका, चूकाकाशाक ।
बंगभाषामें	चुकापालड ।
मराठीभाषामें	आंबटचुका, लघु व थोर ।
गुजरातीभाषामें	चुको खाटी भाजी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलिचकोत ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लेडरडाक । Bladdered Dock
लैटिन्भाषामें	रुमेक्स वेसिकेरिपस् । Rumex vesicarips
फारसीभाषामें	तुरशक बडा तुर्ग खुरासानी छोटो ।
अरबीभाषामें	हुमाजबुकले हामेजा ।

अस्य गुणाः ।

चुक्रोग्निदीपनश्चोष्णोरुचिकारीलघुःस्मृतः । पित्तलःसारकःपथ्योह्यत्यम्लःशूलनाशकः ॥ गुल्माग्निमांद्यहृत्पीडावद्धविट्कामवातहा । स्वादुतृष्णावान्तिकफवातगुल्मापहोमतः । वातचमुखवैरस्यनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥(नि०र०)

अर्थ-चूका अग्निदीपक, गरम, रुचिकारक, हलका, पित्तकारक, पथ्य, अत्यन्त अम्लशूलनाशक तथा गुल्म, अग्निमांद्य, हृदयकी पीडा, मलवद्ध, आमवात, तृषा, वमन, कफवात, गुल्म, वात और मुखकी विरसताको दूर करे दे तथा स्वादिष्ट है ।

अन्यच्च ।

चुक्रकटुर्ज्जरभेदिवातजित्पित्तलगुरु ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-चूका-दुर्जर अर्थात् कठिनतासे पचनेवाला, भेदक, वातनाशक, पित्तकारक और भारी है ।

मारिषनामानि ।

मारिषोवाष्पकोमार्षःश्वेतोरक्तश्चसस्मृतः ॥
दीर्घनालोरक्तपर्णोविन्दुपर्णश्चसस्मृतः ॥

अर्थ-मारिष, वाष्पक और मार्ष यह नाम मारिषके हैं, मरसा सफेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है, मरसाकी नाल बडी होती है, पत्ते लाल होते हैं और पत्तोंके ऊपर बिन्दु होते हैं।

संस्कृतभाषामें	मारिष।
हिन्दीभाषामें	सफेद मरसा लाल मरसा, नवढा।
बंगभाषामें	श्वेतकाँटानटेशाक, लाल काँटानटेशाक।
मराठीभाषामें	पोकळ्याची भाजी, माठाची भाजी।
गुजरातीभाषामें	डाभो।
ओलन्दीभाषामें	नेउटाशाग।
तैलङ्गीभाषामें	कुरगकुरा।
लेटिन्भाषामें	एमेरेंथस टिरूलर। Amaranthus tricolor

मारिषगुणा।

मारिषोमधुरः शीतोविष्टम्भीपित्तनुद्गुरुः। वातश्लेष्मकरोरक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित्॥ रक्तमारिषोगुरुर्नातिसक्षारोमधुरः सरः। श्लेष्मलः कटुकः पाकेस्वल्पदोषइदीरितः॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मरसा-मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पित्तनाशक, भारी, वातकफकारक, रक्तपित्तनिवारक और अग्निकी विषमताको दूर करे है। लाल मरसा-अत्यन्त भारी नहीं, क्षार, मधुर, सारक, कफकारक, पचनेमें चरपरा और स्वल्पदोषयुक्त है।

अन्यच्च।

मारिषोरोचनः शीतोगुरुर्मंदस्त्रिदोषजित्॥ (ध०नि०)

अर्थ-मरसा-रुचिकारक, शीतल, भारी तथा मंदाग्नि और त्रिदोष-नाशक है।

तण्डुलीयस्यनामानि।

तण्डुलीयोमेघनादः काण्डेरस्तण्डुलेरकः।
भण्डीरस्तण्डुलीबीजोविषघ्नश्चाल्पमारिषः॥

अर्थ-तण्डुलीय, मेघनाद, काण्डेर, तण्डुलेरक, भण्डीर, तण्डुलीबीज, विषघ्न, अल्पमारिष (तण्डुलीय, तण्डुल, तण्डुली, तंडुलीयक, मारिष, पत्रतण्डुल, घनस्वन, सुशाक, दण्डशाक, तण्डुलीयु, अश्मिकाक, क्षीर, तण्डुलनामा)

कञ्चटनामानि।

पानीयतण्डुलीयन्तत्कञ्चटमुदाहृतम् ॥

अर्थ पानीय तण्डुलीय, कञ्चट (मारिष जलज)

संस्कृतभाषामें	तण्डुलीय, कञ्चट।
हिंदीभाषामें	चौलाईका शाक, जलचौलाई।
बंगभाषामें	क्षुदेनटे, चापानटे, गोयाल, काचडादाम।
मराठीभाषामें	तांदुळजा, चवळाई।
गुजरातीभाषामें	ताजलजो।
तैलिङ्गीभाषामें	मोलाकुरा, कुईकोरा।
कर्णाटकीभाषामें	किरुकुशारे।
तामिलीभाषामें	मुल्लुक्किरइ।
द्राविडीभाषामें	काण्डेमाट।
इंग्रेजीभाषामें	हरमेफ्रोडाईट एमेरेंथ Hermaphrodite Amaranth
लैटिन्भाषामें	एमेरेंथस् टेन्युईफोलियस् Amaranthus Tenifolius
फारसीभाषामें	सुपेजमर्ज।
अरबीभाषामें	बुकलेयमानीय।

तण्डुलीयगुणा।

तण्डुलीयोलघु शीतोरूक्षःपित्तकफास्रजित्।
सृष्टमूत्रमलोरुच्योदीपनोविषहारकः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—चौलाई—हलकी, शीतल, रूखी, पित्तकफनाशक, रक्तविकारविनाशक, मलमूत्रनिःसारक, रुचिकारक, दीपन और विषहारक है।

अन्यच्च।

तण्डुलीयस्तुशिशिरोमधुरोविषनाशनः।
रुचिकृद्दीपनः पथ्यःपित्तदाहभ्रमापहः ॥

अर्थ—चौलाई—शीतल, मधुर, विषनाशक, रुचिकारक, दीपन, पथ्य तथा पित्त, दाह और भ्रमको दूर करे है।

अपिच।

रसेविपाकेमधुरोऽतिशीतोरूक्षस्तृपारोचकनाशनश्च।
सदाहपित्तरुधिरंविषंचविशेषतोहन्तिचतण्डुलीयः ॥

अर्थ-चौलाई-रस और विपाकमें मधुर, अत्यन्त शीतल, रूखी तथा तृषा, अरुचि, दाह, पित्त, रुधिरविकार और विषका विनाश करै है।

मतान्तरम्।

स्वादुपाकमसृक्पित्तविषघ्नं तण्डुलीयकम्।

अर्थ-चौलाई-स्वादुपाकी तथा रक्तपित्त और विषनाशक है।

अथ पत्रगुणाः।

तण्डुलीयकदलं हिममर्शः पित्तरक्तविषकासविनाशि।
ग्राहकं समधुरं च विपाके दाहशोषशमनं रुचिदायि॥ (रा नि.)

अर्थ-चौलाईके पत्ते-छूनेमें शीतल, पित्तरक्तनाशक, विषघ्न, कासनिवारक, मलरोधक, पचनेमें मधुर तथा दाह और शोषविनाशक है।

अथ मूलगुणाः।

तण्डुलीयकमूलं स्यादुष्णं श्लेष्मविनाशनम्।
रजोरोधकरं रक्तपित्तप्रदरसंहरम्॥ (आ० सं०)

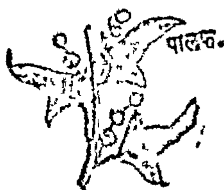
अर्थ-चौलाईकी जड़-गरम, कफनाशक, रजोरोधक तथा रक्तपित्त और प्रदररोगको दूर करनेवाली है।

अथान्यगुणाः।

कटुः तिक्तः करक्तपित्तानिलहरस्तु। (भा० प्र०)

अर्थ-जलचौलाई-कड़वी, रूखी तथा रक्तपित्त और वातका नाश करै है।

पालङ्क्यशाकनामानि।



पालङ्क्यवास्तुपालक्या ग्राममधुरा क्षुपनिका।
सुपत्रास्निग्धपत्रा च ग्रामीणा ग्राम्यनलक्षा॥

अर्थ-पालङ्क्य, पलङ्क्या, मधुरा, क्षुरपत्रिका, सुपत्रा, स्निग्धपत्रा ग्रामिणी, ग्राम्यवल्लभा (क्षुरिका, पालक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका, चीरितच्छदा, पालकी)।

संस्कृतभाषामें	पालङ्क्य ।
हिन्दीभाषामें	पालगका शाग ।
वंगभाषामें	पालशाक ।
मराठीभाषामें	पालख, पोईशाक ।
गुजरातीभाषामें	पालखनी भाजी ।
कर्णाटकीभाषामें	पालक्य ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पाईनेज Spinage
लैटिनभाषामें	स्पाईनेश्या ओलिरेश्या Spinasia Oleracea
फारसीभाषामें	इस्पनाख ।
अरबीभाषामें	अस्पनाख ।

पालङ्क्यगुणा ।

पालंक्यावातलाशीताश्लेष्मलाभेदिनीगुरुः ।
विष्टम्भिनीमदश्वासपित्तरक्तविषापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालगका साग-वादी, शीतल, कफकारक, भेदक, भारी, विष्टम्भजनक तथा मद, श्वास, रक्तपित्त और विषका विनाश करेहै ।

अन्यच्च ।

पालक्यमीषत्कटुकमधुरपथ्यशीतलम् ।
रक्तपित्तहरग्राहिज्ञेयसन्तर्पणपरम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-पालगका साग-किंचित् चरपरा, मधुर, पथ्य, शीतल, रक्तपित्तनाशक, मलरोधक और तृप्तिकारक है ।

अन्यच्च ।

पालक्यामितिवर्णयन्तिसुधियोगुर्वीसरापिच्छिला ।
शीताश्लेष्मकरीचरक्तशमनीपित्तविषनाशयेत् ॥

अर्थ-पालगका साग-भारी, कुछेक दस्तावर, पिच्छिल, शीतल, कफकारक, रुधिरके विकारोंको शान्त करनेवाला तथा पित्त और विषका नाश करे है ।

कुणञ्जरनामानि ।

कुणञ्जरःकुणञ्जीचकुणजोरण्यवास्तुकः ।

अर्थ-कुणञ्जर, कुणञ्जी, कुणञ्ज, अरण्यवास्तुक (क्षेत्रशाक, सुशाक, मञ्जरी, श्वेतमञ्जरी, अतिसारजनक, दुर्भिक्षवल्लभ) ।

संस्कृतभाषामें	कुणञ्जर ।
हिंदीभाषामें	टेसुवा ।
बंगभाषामें	वनवेतुया ।
मराठीभाषामें	कुणजीर ।
गुजराथीभाषामें	कणेझरो, कणेझो ।
कर्णाटकीभाषामें	गोरेनेयपल्लेय ।
लेटिन्भाषामें	एमेरेन्थस पोलिगोनोइडिस । Amaranthus Polygonoides

कुणञ्जरगुणाः ।

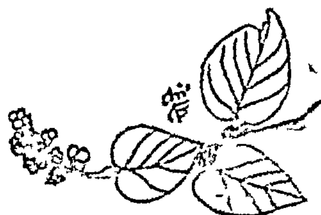
कुणञ्जरस्त्रिदोषघ्नोमधुरोरुच्यदीपकः ।

ईषत्कषायःसंग्राहीपित्तश्लेष्महरोलघुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुणञ्जर-त्रिदोषनाशक, मधुर, रुचिकारक, दीपन, किंचित्कषैला, मलरोधक, पित्तश्लेष्मनाशक और हलका है ।

विवरण-कुणञ्जरके क्षुप वर्षातमें उत्पन्न होतेहैं, पत्ते चौलाईकी समान और चार सफेद तथा लालरंगी निकलती है ।

उपोदकीनामानि ।



उपोदकीकलम्बीनपिच्छिलापिच्छिलच्छदा ।

मोहिनीमदशाकश्चविशालावलिपोदकी ॥

अर्थ-उपोदकी, कलम्बी, पिच्छिला, पिच्छिलच्छदा, मोहिनी, मदशाक, विशाला, वलिपोदकी (उपोदिका, उपोदीका, उपोती, वृश्चिकप्रिया, अपोदिका, पूतीका, पूतिका)।

संस्कृतभाषामें	उपोदकी, पोदकी ।
हिंदीभाषामें	पोईका साग ।
बंगभाषामें	पुइशाक ।
मराठीभाषामें	मायाळु, लघु व थोर ।
गुजरातीभाषामें	पोथी ।
इंग्रेजीभाषामें	रेडमलबारनाइटशेड । Red Malbar Night shabe
लैटिन्भाषामें	बसेला रुब्रा Bassella Rubra ब० आल्बा । B Alba

उपोदकीगुणा ।

उपोदकीकषायोष्णाकटुकामधुराचसा ।
निद्रालस्यकरीरुच्याविष्टम्भश्लेष्मकारिणी ॥

अर्थ-पोईका शाक-कषेला, गरम, चरपरा, मधुर, निद्रा और आलस्यको करनेवाला, रुचिकारक, विष्टम्भजनक और कफकारक है।

अन्यच्च ।

पोतकीशीतलास्निग्धाश्लेष्मलावातपित्तनुत् ।
अकण्ठ्यापिच्छिलानिद्राशुक्रदारक्तपित्तनुत् ॥
बलदारुचिकृत्पथ्याबृंहणीतृप्तिकारिणी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पोईका शाक-शीतल, स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, कण्ठको अहितकारी, पिच्छिल, निद्राजनक, शुक्रजनक, रक्तपित्तनाशक, बलवर्द्धक, रुचिकारक, पथ्य, पुष्टिकारक और तृप्तिजनक है।

अन्यच्च ।

उपोदिकासरास्निग्धाबल्याश्लेष्मकरीहिमा ।
स्वादुपाकरसावृष्यावातपित्तमदापहा ॥

अर्थ-पोईका शाक-कुछेक दस्तावर, स्निग्ध, बलकारक, कफकारक, शीतल, स्वादुपाकी, वृष्य तथा वात, पित्त और मदनाशक है।

अपिच।

उपोदकीद्वितीयाचक्षुद्रान्यावनजातथा।
चतुर्थीमूलपोतीचगुणे सर्वाः समाः स्मृताः॥

अर्थ-पोई, लालपोई, छोटी पोई, वनपोई और मूलपोई इन सबके गुण पोईकी समान हैं।

विवरण। पोईकी बेल घर बाहर सब स्थानोंमें उत्पन्न होजाती है। बेलका रंग सुपेद और लाल होताहै, पत्ते गोल होते हैं और फल लाल होते हैं।

सहस्रमूलीनामानि।

काण्डपत्रीकोपपुष्पीघननीलसुमाशुभा।
सहस्रमूलिकाज्ञेयावर्षाकालीचसास्मृता॥

अर्थ-काण्डपत्री, कोपपुष्पी, घननीलसुमा, शुभा, सहस्रमूलिका, वर्षाकाली।

संस्कृतभाषामें	सहस्रमूली।
हिन्दीभाषामें	सहस्रमूली।
मराठीभाषामें	वेलिची भाजी।
गुजरातीभाषामें	शिपमूर्ली।
इंग्रेजीभाषामें	स्पैडरवर्ट। Spider Wort
लैटिनभाषामें	कोमिलिना कम्युनास। Commelina Communis

अस्या गुणाः।

सहस्रमूलिकास्निग्धामधुरापित्तनाशिनी।
किञ्चिद्वातकरीबल्यामलघ्नीचरसायनी॥

अर्थ-सहस्रमूली-स्निग्ध, मधुर, पित्तनाशक, किञ्चित् वातकारक, बलकारक, सारक और रसायन है।

मधूकनामानि।

[illegible]।
[illegible]॥

अर्थ-मधु, [illegible], मधुर, मधुपव, [illegible] (महुआ, [महुवा, ईलपा])

महाचञ्चुनामानि।

वृहच्चंचुविपारिस्यान्महाचचुःसुचचुका ।
स्थूलचचुर्दीर्घपत्रीदिव्यगन्धाचसत्तथा ॥

अर्थ-वृहच्चचु, विपारि, महाचञ्चु, सुचञ्चुका, स्थूलचञ्चु, दीर्घपत्री, दिव्यगन्धा ।

क्षुद्रचञ्चुनामानि ।

क्षुद्रचञ्चुस्तुचञ्चु'स्याच्चचूःशुनकचचुका ।
त्वक्साराभेदनीक्षुद्राकटुकापटुपत्रिका ॥

अर्थ-क्षुद्रचचु, चचु, चचू, शुनकचचुका, त्वक्सारा, भेदनी, क्षुद्रा, कटुका, पटुपत्रिका ।

सस्कृतभाषामें	चचु ।
हिंदीभाषामें	चचु, चेंचुना ।
वगभाषामें	चेचको ।
मराठीभाषामें	लघुचचु, थोरचचु ।
गुजरातीभाषामें	छुछ राजगरीनी भाजी ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिन्तचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	कार्कोरस् एक्युटेंग्युलेरीस् Corchorus acutangularis

चचुगुणा ।

चचुस्तुमधुरातीक्ष्णाकषायामलशोषिणी ।
गुल्मोदरविवन्धार्शोग्रहणीरोगहारिणी ॥

अर्थ-चचु-मधुर, तीक्ष्ण, कषेला, मलशोषक तथा गुल्म, उदररोग, विवध, ववासीर और सग्रहणी रोगको दूर करे है ।

महाचचुगुणा ।

महाचचु कटूष्णाचकषायामलरोधिनी।
गुल्मशूलोदरार्शोर्तिविषघ्नीचरसायनी ॥

अर्थ-वडा चचुका शाक-चरपरा, गरम, कषेला, मलरोधक, रसायन तथा गुल्म, शूल, उदररोग, ववासीर और विषका नाश करे है ।

क्षुद्रचचुगुणा।

क्षुद्रचचुस्तुमधुराकटूष्णाचकषायिका ।

दीपनीगुल्मशूलार्शःशमनीचविबन्धकृत ॥ (रा.नि)

अर्थ-क्षुद्रचञ्चु-मधुर, चरपरा, गरम, कषेला, विबन्धकारक तथा गुल्म, शूल और बवासीरको दूर करे है।

अन्यच्च।

चंचुःशीतासराकच्यास्वाद्वीदोषत्रयापहा।

धातुपुष्टिकरीबल्यामेध्यापिच्छिलिकास्मृता॥

अर्थ-चचुका शाक-शीतल, सारक, रुचिकारक, स्वादिष्ट, त्रिदोष-नाशक, धातुवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलकारक, मेधाजनक और पिच्छिल है।

चंचुबीजगुणाः।

चचुबीजकटूष्णचगुल्मशूलोदरार्त्तिजित्।

विषत्वग्दोषकण्डूतिआगोर्दुष्टविषापहम्॥

अर्थ-चचुके बीज-चरपरे, गरम, तथा गुल्म, शूल उदरकी पीडा, विष, त्वचाके दोष, खुजली, मूसेका विष और दुष्ट विषको दूर करे है।

विवरण-चेंचुनाके छोटे २ क्षुप होते हैं विशेषकरके यह वर्षाकालमें होता है फूल पीला आता है और फली लगती है इसकी अनेक जाति हैं।

नाडीकनामानि।

नाडीककालशाकञ्चश्राद्धशाकञ्चकालकम्।

अर्थ-नाडीक, कालशाक, श्राद्धशाक, कालक।

अस्यगुणाः।

कालशाकसरंरुच्यंवातकृत्कफशोफहृत्॥

बल्यरुचिकरंमेध्यरक्तपित्तहरंहिमम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नाडीका शाक-कुछेक दस्तावर, रुचिकारक, वातकारक, कफ सूजनको दूर करनेवाला, बलकारक, रुचिजनक, मेधाकारक, रक्तपित्तनाशक और शीतल है।

पट्टशाक पट्टशाकनामानि।

पट्टशाकन्तुनाडीकोनाडिशाकश्चसम्मृतः।

अर्थ-पट्टशाक नाडीक, नाडीशाक (नाडीच, पेटुए पेपुली, पेट्ट, शिकोणा)।

गुणाः पट्टशाकनामानि   पट्टशाक, नाडीशाक।

हिन्दीभाषामें	पटुआसाग ।
बंगभाषामें	पाटशाक, कोसटारशाक, नालते ।
मराठीभाषामें	नाडीशाक ।
गुजरातीभाषामें	नालानी भाजी ।
लैटिन्भाषामें	आईपोमिया रिप्टेन्स । *Ipomoea Reptams*

अस्यगुणा ।

नाडीकशाकंद्विविधतिक्तमधुरमेवच । रक्तपित्तहरंतिक्तकृमिकुष्ठविनाशनम् ॥ मधुरपिच्छिलशीतंविष्टम्भिकफवातकृत् । तच्छुष्कपत्रज्वरदोषनाशनविशेषतःपित्तकफज्वरापहम् । जलचतस्यापिचपित्तहारकंसुरोचनव्यञ्जनयोगकारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-नाडीक शाक-तिक्त और मधुर इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहा तिक्त शाक-रक्तपित्तनाशक तथा कृमि और कुष्ठका नाश करे है। मधुर शाक-पिच्छिल, शीतल, विष्टम्भजनक और कफवातकारक है । नाडीके सूखे पत्ते-ज्वर और विशेषकरके पित्त, कफ, ज्वरनाशक हैं । नाडीका जल-पित्तनिवारक, रोचन और व्यजनमें उपयोगी है ।

अन्यच्च ।

तच्छुष्कजलदोषघ्नपित्तश्लेष्मामवातनुत ॥

अर्थ-नाडीके सूखे पत्ते-जलदोषनाशक, पित्त, कफ और आमवातविनाशक हैं ।

विवरण। नाडीकी वेल पानीमें होतीहै । इसकी डंडी पोली और गांठदार होती हैं । पत्ते लम्बे लम्बे होतेहैं । अफीमके विषको दूर करनेके लिये इसके पत्तोंका रस प्रयोग किया जाता है ।

कलम्बीनामानि ।

कलम्बीशतपर्वाचकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ॥

अर्थ-कलम्बी, शतपर्वा (कडम्बी, कलम्बू, कलम्बिका)

संस्कृतभाषामें	कलम्बी ।
हिन्दीभाषामें	कलमीशाक ।
बंगभाषामें	कलमी ।
तैलिंगीभाषामें	तोमिपच्चलिचेट्टु ।

अथास्या गुणाः ।

कलम्बीस्तन्यदा प्रोक्ता मधुरा शुक्रकारिणी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कलम्बीशाक-स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करनेवाला, मधुर और शुक्रजनक है ।

विवरण । कलम्बीशाक प्रायः खेतोंमें होताहै ।

हिलमोचिकानामानि ।

हिलमोची त्रिवृत्पर्णी विषघ्नी हिलमोचिका ।

अर्थ-हिलमोची, त्रिवृत्पर्णी, विषघ्नी, हिलमोचिका (हिलमोचि, रोची, मोची, मत्स्याक्षी, हेलञ्ची, मर्पा, मत्स्याक्षी, चमार्क्षी, जलमाली, माली, शरवग, आचारी)

संस्कृतभाषामें	हिलमोचिका ।
हिन्दीभाषामें	हुरहुर ।
बंगभाषामें	हिंचेशाक ।
बम्ब	हुरहुरी ।
औरक०	हिरमिचा ।

अथास्या गुणाः ।

शोथकुष्ठकफपित्तघ्नी हिलमोचिका ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-हिलमोचिका अर्थात् हुरहुरका शाक-सूजन, कोढ, कफ, पित्त इनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

हिलमोची सरा तिक्ता कुष्ठघ्नी कफपित्तजित् ।

अर्थ-हुरहुरशाक-दस्तावर, कडवा तथा कुष्ठ और कफपित्तको हरे है ।

विवरण । यह मार्षाकी समान होताहै । प्रायः जलके निकटके स्थानोंमें देखाजाता है । [illegible]

सुनिषण्णकनामानि ।

शितिवारः शितिवरः स्वस्तिकः सुनिषण्णकः ।

श्रीवारकः सूचिपत्रः पर्णाकः कुक्कुटः शिखी ॥

अर्थ-शितिवार, शितिवर, स्वस्तिक, सुनिषण्णक, श्रीवारक, सूचिपत्र, पर्णाक, कुक्कुट, शिखी ([illegible])

सस्कृतभाषामें	सुनिषण्णक ।
हिन्दीभाषामें	शिरिआरि, चौपतिया, उटंगण, गुठवा । उटंगणके वीज ।
वगभाषामें	सुपुणीशाक, शुशुनीशाक ।
मराठीभाषामें	कुरडू ।
गुजरातीभाषामें	ओटीगण, ओटीगणनावी । खडकतिरा ।
तैलिङ्गीभाषामें	सुनिषण्णमनेशाकमु ।
औत्कलीभाषामें	ठुनठुनिया ।
लैटिनभाषामें	ब्लेफेरिस् इडयुलीम् । Blepharis Edulis
फारसीभाषामें	अजरा, तुख्मेअजरा ।
अरवीभाषामें	अजरा, वजहुलअजरा ।

अस्य गुणाः ।

सुनिषण्णोहिमोग्राहीमोहदोषत्रयापहः ।
अविदाहीलघुःस्वादु कषायोरूक्षदीपनः ।
वृष्योरुच्योज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ॥ (भा प्र)

अर्थ-सुनिषण्णक-शिरिआरि-चौपतियाका शाक-शीतल, मलरोधक, मोहनाशक, त्रिदोषनिवारक, अविदाही, हलका, स्वादिष्ठ, कषेला, रूखा, दीपन, वृष्य, रुचिकारक तथा ज्वर, श्वास, प्रमेह, कोढ और भ्रमको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सुनिषण्णोलघुर्ग्राहीवृष्योग्निकृत्रिदोषहा ।
मेधारुचिप्रदोदाहज्वरहारीरसायन ॥ (शो०नि०)

अर्थ-चौपतियाका शाक-हलका, ग्राही, वीर्यवर्द्धक, जठराग्निजनक, त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, रुचिकारक, दाहनिवारक, ज्वरहारक और रसायन है ।

अस्य बीजगुणाः ।

सुनिषण्णकबीजन्तुमूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ।

अर्थ-उटंगणके बीज-मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे है ।

विवरण । सुनिषण्णक अर्थात् उटंगणका छवा क्षुपकी समान सजल स्थानोंमें होताहै पत्ते चार और चागेरीकी समान होतेहैं उन चार पत्तोंके

बीचमेंसे फलीसी निकलती है उसमें दो बीज चपटे हरेहुये होते हैं यह बीज तालमखानेके सदृश चिकने होते हैं ।

मूलकस्य पत्रशाकगुणाः ।

पाचनलघुरुच्योष्णपत्रमूलकजनवम् ।
स्नेहसिद्धत्रिदोषघ्नमसिद्धकफपित्तकृत् ॥

अर्थ-नवीनमूलीके पत्तोंका शाक-हलका, रुचिकारी, गरम और पाचक है वही घी और तेलादिमें सिद्धकिया अर्थात् छौंकाहुआ त्रिदोषनाशक है और असिद्ध अर्थात् कच्चा कफपित्तकारक है ।

काञ्चनपत्रशाकगुणाः ।

काञ्चनपत्रशाकतुकषायकटुकमधु ।
गडमालारक्तपित्तकुष्ठवातार्शनाशयेत् ॥

अर्थ-कचनारके पत्तोंका शाक-कसेला, चरपरा, मधुर तथा गडमाला, रक्तपित्त, कुष्ठ और वातका विनाश करे है ।

मोक्षकपत्रशाकगुणाः ।

मोक्षपत्रस्यशाकन्तुतिक्तञ्चतुनम्मतम् ।
दीपनगुल्ममेहघ्नमुष्णवातकफक्रिमीन् ॥
जयेत्प्लीहामग्रहणीमेदपाण्डुगुदामयान् ।

अर्थ-मोखाके पत्तोंका शाक-कडवा, चरपरा, दीपन, गरम तथा गुल्म प्रमेह, वात, कफ, कृमि, प्लीहा, आम, संग्रहणी, मेद, पाण्डु और गुदाके रोगोंको दूर करे है ।

करल्लीनामानि ।

करल्लीदीर्घपत्राचमध्यदण्डामसृणिका ।

अर्थ-करल्ली, दीर्घपत्रा, मध्यदण्डा, मसृणिका ।

हिन्दीभाषामें	करली ।
मराठीभाषामें	कुरुनी भाजी ।
गुजरातीभाषामें	करसोनी भाजी ।
लैटिनभाषामें	स्कैलियस युरोप ।

करल्लीगुणाः ।

करल्लीशीतलास्वादीमानलाकफहृद्गुरुः ।

अर्थ-करली-शीतल, स्वादिष्ठ, वातजनक, कफकारक और भारी है ।

अन्यच्च ।

करलीमधुरातिक्तावातलासारकामता ।

अर्थ-करलीके पत्तोंका शाक-मधुर, कडवा, वादी और सारक है ।

विवरण । करलीके क्षुप वर्षाऋतुमें उत्पन्न होतेहैं, पत्ते लम्बे और पत्तेके बीचमेंसे एक बाल निकलती है इसमें सफेद फूल होताहै इसका फल नीले रंगका होताहै और इसके पत्तोंका शाक करतेहैं ।

शतपुष्पापत्रशाकगुणाः ।

शतपुष्पादलसोष्णमधुरगुल्मशूलजित् ।
वातघ्नंदीपनंपथ्यपित्तकृद्रुचिदायकम् ॥

अर्थ-सोयेके पत्तोंका शाक-गरम, मधुर, गुल्मनाशक, शूलनिवारक, वातविनाशक, दीपन, पथ्य, पित्तजनक और रुचिकारक है ।

मेथिकापत्रशाकगुणाः ।

मेथिकापत्रशाकातुतिक्तावातहरामता ।
रुचिकृद्दीपनीयाचकिंचित्पित्तप्रकोपनी ॥

अर्थ-मेथीके पत्तोंका शाक-कडवा, वातविनाशक, रुचिकारक, दीपन और कुछ २ पित्तको कुपित करैहै ।

राजिकापत्रशाकगुणाः ।

कटूष्णराजिकापत्रकृमिवातकफापहम् ।
कण्ठामयहरस्वादुवह्निदीपनकारकम् ॥

अर्थ-राईके पत्तोंका शाक-चरपरा, गरम, स्वादिष्ठ, अग्निप्रदीपक तथा कृमि, वात, कफ और कण्ठरोगको दूर करैहै ।

सर्षपपत्रशाकगुणाः ।

सार्षपपत्रमत्युष्णरक्तपित्तप्रकोपनम् ।
विदाहिकटुकंस्वादुशुक्रकृद्रुचिदायकम् (रा०नि०)

अर्थ-सरसोंके पत्तोंका शाक-अत्यन्त गरम, रक्तपित्तप्रकोपक, दाहजनक, चरपरा, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक और रुचिकारक है ।

अन्यच्च ।

कटुकसार्षपशाकन्तुमूत्रमलगुरु ।

अम्लपाकंविदाहिस्यादुष्णंरूक्षंत्रिदोषजित् ॥
सक्षारंलवणंतीक्ष्णंस्वादुशाकेषुनिन्दितम् । (भा०प्र०)

अर्थ–नागरोंके पत्तोंका शाक–चरपरा, बहुमूत्रमलकारक, भारी, अम्लपाकी, दाहजनक, गरम, रूखा, त्रिदोषनाशक, क्षारयुक्त, लवणरसयुक्त, स्वादु और सर्वशाकोंमें निन्दित है ।

शिग्रुपत्रशाकगुणाः ।

शिग्रुपत्रभवंशाकंरुच्यंवातकफापहम् ।
कटूष्णंदीपनंपथ्यंक्रमिघ्नंपाचनंपरम् ॥

अर्थ–सैंजिनेके पत्तोंका शाक–रुचिकारक, वातकफनाशक, चरपरा, गरम, दीपन, पथ्य, कृमिनाशक और परम पाचक है ।

दद्रुघ्नपत्रशाकगुणाः ।

दद्रुघ्नपत्रंदोषघ्नमम्लंवातकफापहम् ।
कण्डूकासकृमिश्वासदद्रुकुष्ठघ्नंलघु ॥

अर्थ–पमारके पत्तोंका शाक–दोषनाशक, खट्टा, वातकफनाशक तथा कण्डू, खांसी, कृमि, श्वास, दाद और कुष्ठनाशक है और हलका है ।

कासमर्दनामानि ।

कासमर्दोरिमर्दश्चकासारिःकर्कशस्तथा ।

अर्थ–कासमर्द, अरिमर्द, कासारि, कर्कश (कासहृत, विमर्द, कासमर्दन याए, पत्नव, जरण, दीपन, कासमर्द) ।

संस्कृतभाषामें	कासमर्द (क) ।
हिन्दीभाषामें	कसौंदी ।
बंगभाषामें	कालकासुन्दा ।
मराठीभाषामें	रानटाकळा ।
गुजरातीभाषामें	कासौंदी मेंदरी तथा मोंरी शाद ।
कर्नाटकीभाषामें	कासवदी कडु कसाद ।
तैलङ्गीभाषामें	गुरुकासवं ।
इंग्रेजीभाषामें	नायन्दपाइन्टेकस्म । [illegible]
लेटिनभाषामें	कसयाओसिरना । [illegible]
	केसयाओक्सिडेन्टलिस । [illegible]

अस्य पत्रगुणाः ।

कासमर्ददलरुच्यवृष्यकासविषार्शनुत् ॥
मधुरंकफवातघ्नंपाचनकण्ठशोधनम् ।
विशेषतःकासहरपित्तघ्नग्राहकलघु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—कसौंदीके पत्तोंका शाक—रुचिकारक, वीर्यवर्द्धक, कासनाशक, विषघ्न, बवासीरको दूर करनेवाला, मधुर, कफवातविनाशक, पाचक, कण्ठशोधक, विशेषकरके खासीको दूर करनेवाला, पित्तनाशक, ग्राही और हलका है ।

अन्यच्च ।

कासमर्दःसतिक्तोष्णोमधुरःकफवातनुत् ।
अजीर्णकासपित्तघ्नःपाचनःकण्ठशोधनः ॥(रा०नि०)

अर्थ—कसौंदी—कडवी, गरम, मधुर, कफवातनाशक, अजीर्णको हरनेवाली, खासीको दूर करनेवाली, पित्तनाशक, पाचक और कण्ठशोधक है ।

अन्यच्च ।

कासमर्दोऽग्निदःस्वर्य्यः स्वादुस्तिक्तस्त्रिदोषजित् ॥

अर्थ—कसौंदीका शाक -अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्वादिष्ठ, कडवा और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । कसौंदीके क्षुप प्रायः बाग और जंगलमें बहुत होते हैं, पत्ते बराबर डंडीपर लगे होते हैं, फूल पीला आता है, फली चपटी आती है ।

कौसुम्भशाकगुणाः ।

कौसुम्भशाकमधुरकटूष्णविण्मूत्रदोषापहरमदघ्नम् ।
दृष्टिप्रसादकुरुतेविशेषाद्रुचिप्रदंदीप्तिकरंचवह्नेः ॥

अर्थ—कसूमके पत्तोंका शाक मधुर, चरपरा, गरम, मल और मूत्रके दोषोंको हरनेवाला, मदनाशक, दृष्टिको बढानेवाला, रुचिकारक और अग्निको दीपन करे है ।

वर्षाभूशाकगुणाः ।

वर्षाभूवसुकोपर्णकफमांद्यानिलापहौ ।
शाकेरूक्षतरौगुल्मप्लीहशूलापहारकौ ॥

अर्थ—पुनर्नवा और वसुकके पत्तोंका शाक—रूखा तथा कफ, मन्दाग्नि, गुल्म, प्लीहा और शूलको निर्मूल करे है ।

गोजिह्वाशाकगुणाः ।

गोजिह्वाकुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरीलघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गोभीका शाक-कोढ, प्रमेह, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, ज्वरनाशक है तथा हलका है।

पटोलपत्रगुणाः ।

पटोलपत्रंपित्तघ्नंदीपनंपाचनंलघु ।
स्निग्धंवृष्यंतथोष्णंचज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-परवलके पत्तोंका शाक-पित्तनाशक, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, गरम तथा ज्वर, खाँसी और कृमिरोगको दूर करे है।

गुडूचीपत्रशाकगुणाः ।

गुडूचीपत्रमाग्नेयंसर्वज्वरहरंलघु । कषायंकटुतिक्तंचस्वादु-
पाकंरसायनम् ॥ बल्यमुष्णंचसंग्राहिहन्याद्दोषत्रयंतृषाम् ।
दाहप्रमेहवातास्रकामलाकुष्ठपाण्डुताः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका शाक-अग्निदीपक, सर्व प्रकारके ज्वरको हरनेवाला, हलका, कषेला, चरपरा, कडवा, स्वादुपाकी, रसायन, बलवर्द्धक, गरम, मलरोधक, त्रिदोषनाशक, तृषानिवारक तथा दाह, प्रमेह, वातरक्त कामला, कोढ और पाण्डुरोगको दूर करे है।

पर्पटशाकगुणाः ।

पर्पटोहन्तिपित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ।
संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः ॥

अर्थ-पित्तपापडेका शाक-रक्तपित्त, ज्वर, तृषा, कफ, भ्रम और दाहको दूर करे है ग्राही, शीतल, कडवा, वादी और हलका है।

मेढुण्ढपत्रशाकगुणाः ।

मेढुण्ढस्यदलंतिक्तंदीपनंरोचनंहरेत् ।
आध्मानार्शोऽरुचिगुल्मशूलशोथोदराणिच ॥

अर्थ-मेढुण्ढके पत्तोंका शाक-[illegible] दीपन रोचक तथा अफारा अर्श, अरुचि, गुल्म, शूल सूजन और उदररोगको दूर करे है।

[illegible]शाकगुणाः

गयार्नीशाकमाग्नेयंकफवातकफप्रणुत् ।

उष्णंकटुचतिक्तचदीपनगुल्मशूलनुत् ॥

अर्थ-अजवायनके पत्तोंका शाक-जठराग्निकारक, रुचिकारक, वातकफनाशक, गरम, चरपरा, कडवा, दीपन, गुल्म और शूलको दूर करे है ।

द्रोणपुष्पीपत्रशाकगुणाः ।

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षगुरुचपित्तकृत् ।
भेदकंकामलाशोथमेहज्वरहरकटु ॥

अर्थ-गूमाके पत्तोंका शाक-स्वादिष्ठ, रूखा, भारी, पित्तजनक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरका नाश करे है तथा चरपरा है ।

चणकपत्रशाकगुणाः ।

रुच्यंचणकशाकस्याद्दुर्जरकफवातकृत् ।
अम्लविष्टम्भजनकपित्तनुद्दन्तशोथनुत् ॥

अर्थ-चनेके पत्तोंका शाक-दुर्जर, कफवातकारक, खट्टा, विष्टम्भकारक, पित्तनाशक और दांतोंकी सूजनको दूर करे है ।

कलायपत्रशाकगुणाः ।

कलायशाकभेदिस्याल्लघुतिक्तत्रिदोषजित् ।

अर्थ-मटरके पत्तोंका शाक-दस्तावर, हलका, कडवा और त्रिदोषनाशक है।

अथ पुष्पशाकम् ।



अगस्तिपुष्पगुणाः ।

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थिकनिवारणम् ।
नक्तांध्यनाशनतिक्तंकषायंकटुपाकिच ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नवातघ्नमुनिभिर्मतम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगस्तियाके फूलोंका शाक-शीतल, चातुर्थिक अर्थात् चौथियाको दूर करनेवाला, रतोंधेको हरनेवाला, कडवा, कसेला, कटुपाकी तथा पीनस, श्लेष्म पित्त और वातको विनाश करे है ।

जीवन्तीपुष्पशाकगुणाः ।

जीवन्तीपुष्पजशाकतुवरमधुरंलघु ।

पथ्यं रुचिकरं वृष्यं कफपित्तविनाशनम् ॥

अर्थ-जीवन्तीके फूलोंका शाक-कसेला, मधुर, हलका, पथ्य, रुचिकारक, वृष्य और कफपित्तनाशक है।

कदलीपुष्पगुणाः ।

कदल्याः कुसुमं स्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु ।
वातपित्तहरं शीतं रक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-केलेके फूलोंका शाक-स्निग्ध, मधुर, कसेला, भारी, वातपित्तनाशक, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको क्षय करे है।

शिग्रुपुष्पगुणाः ।

शिग्रोः पुष्पन्तु कटुकं तीक्ष्णोष्णं स्नायुशोथकृत् ।
कृमिहृत्कफवातघ्नं विद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥
मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितं रक्तपित्तप्रसादनम् ।

अर्थ-सेंजिनेके फूलोंका शाक-चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, स्नायुओंमें सूजन करनेवाला, कृमिनाशक, कफवातनाशक तथा विद्रधि, प्लीहा और गुल्मको दूर करे है। मधुशिग्रुके फूलोंका शाक-नेत्रोंको हितकारी और रक्तपित्त प्रसादक है।

शाल्मलीपुष्पशाकगुणाः ।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तु घृतसैन्धवसाधितम् । प्रदरं नाशयत्येव दु साध्यं च न संशयः ॥ रसे पाके च मधुरं कषायं शीतलं गुरु । कफपित्तास्रजिद्ग्राहि वातलं च प्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-घी और सेंधानिमक डालकर बनायाहुआ सेमलके फूलोंका शाक दुःसाध्यप्रदरको निःसंदेह नाश करे है। रस और पाकमें मधुर, कसेला, शीतल, भारी तथा कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, ग्राही और वादी है।

वरुणपुष्पगुणाः ।

[illegible] वरुणजना [illegible] म [illegible] ।

अर्थ-वरनाके फूलोंका [illegible] और आमवातको दूर करे है।

[illegible] पुष्प [illegible]

अर्थ-महुवाके फूलोंका शाक-हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक और पुष्टिजनक है ।

कोविदारादिपुष्पशाकगुणाः ।

कोविदारकर्बुदारशणशाल्मलिपुष्पकम् ।
ग्राहिशाकंप्रशस्तंचरक्तपित्तेविशेषतः ॥

अर्थ-कचनार, सफेद कचनार, सन और सेमलके फूलोंका शाक-मलरोधक और रक्तपित्तरोगमें हितकारी है ।

अथ फलशाकम् ।

कूष्माण्डनामानि ।

कूष्माण्डंस्यात्पुष्पफलपीतपुष्पंबृहत्फलम् ।

अर्थ-कूष्माण्ड, पुष्पफल, पीतपुष्प, बृहत्फल (घृणावास, तिमिष, ग्राम्यकर्कटी, कूष्माण्डक, कर्कारु, शिखिवर्द्धक, कुम्भाण्ड, कूष्माण्डी, कर्कोटिका, कुम्भाडी, बृहत्फला, सुफला, कुञ्जफला, नागपुष्पफला) ।

संस्कृतभाषामें	कूष्माण्ड ।
हिन्दीभाषामें	पेठा, कुम्हडा, कोहडा ।
बंगभाषामें	कुमडागाछ ।
मराठीभाषामें	कोहोळा ।
गुजरातीभाषामें	भुरु कोलु ।
कर्णाटकीभाषामें	दारकोहोळा ।
तैलिङ्गीभाषामें	पुल्लाहा, वर्डीका, गुम्मडि ।
उडी०	कखाडु, पानीकखारु ।
इंग्रेजीभाषामें	पपकीन । Pumpkin
लैटिन्भाषामें	वेनीनकासा सेरिफेरा Benincasa Cerifera
फारसीभाषामें	मुराकुद्दु ।
अरबीभाषामें	मद्देवा ।

अस्य फलगुणाः ।

मूत्राघातहरप्रमेहशमनकृच्छ्राश्मरीछेदनम् ।

विण्मूत्रग्लपनंतृषार्तिशमनजीर्णांगपुष्टिप्रदम् ।
वृष्यस्वादुतरत्वरोचकहरंवल्यचपित्तापहम् ॥
कूष्माण्डप्रवरवदन्तिभिषजोवल्लीफलानांपुनः॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-पेठा-मूत्राघात रोगको हरनेवाला, प्रमेहको शान्ति करनेवाला, मूत्रकृच्छ्र और पथरीका नाश करनेवाला, मल और मूत्र तृषाकी पीडाको शान्ति करनेवाला, जीर्ण अंगवालोंको पुष्टि देनेवाला, वीर्य्यको बढानेवाला, स्वादिष्ट, अरुचिको हरनेवाला, बलको करनेवाला, पित्तका नाश करनेवाला और सब बेलवाले फलोंमें उत्तम है ।

अन्यच्च ।

मूत्रावरोधशमनंबहुपित्तहारि कृच्छ्राश्मरीप्रशमनविनिहन्तिपित्तम् ॥ पथ्यसशोणितमथुल्वणपित्तरोगे तृष्णापहंत्रिपुममतमुदाहरन्ति ॥ (सु॰)

अर्थ-पेठा-मूत्रके रोधको दूर करनेवाला, अनेक प्रकारके पित्तोंको हरनेवाला, मूत्रकृच्छ्र और पथरीरोगको शान्ति करनेवाला, पित्तनाशक तथा रक्तपित्तरोगमें हितकारी, तृषानिवारक है ।

अन्यच्च ।

कूष्माण्डभेद्यभिष्यन्दिविष्टम्भिवातपित्तजित् । बस्तिशुद्धिकरवृष्यस्वादुपाकरसगुरु ॥ विशेषात्पित्तनुद्बालमध्यचैवकफापहम् । पक्वलघ्वुष्णसक्षारंदीपनंपाचनतथा ॥ सर्वदोषहरहृद्यपथ्यचेतोविकारनुत ॥ (गो॰नि॰)

अर्थ-पेठा-भेदक, अभिष्यन्दी, विष्टम्भकारक, वातपित्तनाशक, बस्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादुपाकी और भारी है । कच्चा पेठा-विशेष करके पित्तनाशक है । मध्यम अवस्थाका पेठा-कफनाशक है । और पका पेठा-हलका, गरम, खारयुक्त दीपन, पाचन, त्रिदोषनाशक, हृदयको हितकारी, पथ्य और हृदय (मन) के रोगनाशक है ।

अपिच ।

कूष्माण्डकफलवृष्यपुष्टिकृद्धातुवर्द्धकम् । बस्तिशुद्धिकरंबल्यमतिस्वादुचशीतलम् ॥ गुरुस्रंसारकचहृद्यकफकर

मतम्। मूत्राघातंप्रमेहञ्चमूत्रकृच्छ्राश्मरीतृषाम् ॥ अरोचकवातपित्तपित्तंरक्तरुजंतथा। वातरेतोविकारंचनाशयेदितितन्मतम् ॥ तत्कोमलंचातिशीतदोषकृत्पित्तहारकम् ॥ तन्मध्यमंकफकरपक्वंकिञ्चिच्चशीतलम् ॥ दीपकंचलघुस्वादुक्षारवस्तेश्चशुद्धिदम्। सर्वदोषहरपथ्यपक्वमज्जाचमाधुरी। वस्तिशुद्धिकरीवृष्यापित्तनाशकरीमता ॥ (नि०र०)

अर्थ-पेठा-वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वस्तिशोधक, वलकारक, अत्यन्त स्वादिष्ठ, शीतल, भारी रूखा, सारक, हृदयको हितकारी, कफकारक तथा मूत्राघात, प्रमेह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, अरुचि, वातपित्त, पित्त, रुधिरविकार, वात और शुक्रके विकारको हरे है, कच्चा पेठा-अत्यन्त शीतल, दोषकारक, पित्तकारक है। मध्यम अवस्थाका पेठा-कफकारक और पक्का पेठा-किञ्चित् शीतल, दीपन, हलका, स्वादिष्ठ, खार वस्तिशोधक, त्रिदोषनाशक और पथ्य है। पक्के पेठेकी मूँग-मधुर, वस्तिशोधक, वृष्य और पित्तनाशक है।

विवरण। पेठा घरवाहर सव जगह बोयाजाता है और इसकी वेल चलतीहै यह फल वडा और इसका रग नीला होता है जव यह फल पकजाता है तव इसके ऊपर सफेद रगकी धूलसी जमजाती है।

पीतकृष्माण्डनामानि।

कूष्माण्डपीतपुष्पाचग्राम्यापीतफलाचसा।
गुडयोगफलाचैवपीतकूष्माण्डइत्यपि ॥

अर्थ-कूष्माण्ड, पीतपुष्पा, ग्राम्या, पीतफला, गुडयोगफला, पीतकूष्माण्ड।

संस्कृतभाषामें	(डगरी) पीतकूष्माण्ड।
हिन्दीमें	लालपेठा, गोलकद्दू, भिलयाकद्दू, काशीफल, सफुरियाकुमार।
वगभाषामें	विलातिकुमडा।
मराठीभाषामें	तावडा भोंपळा।
गुजरातीभाषामें	पतकोलु, शाकरकोलु।
कर्णाटकीभाषामें	डगर।
तेलङ्गीभाषामें	तियागुवडिकाया।

इंग्रेजीभाषामें डिगोर्ड। The gourd
लेटिन्‌भाषामें कुकुर्बिटा मेक्सिमा। Cucurbita Mascima
फारसीभाषामें यादरंग।

पीतकूष्माण्डगुणाः।

अपरपीतकूष्माण्डंगुरुपित्तकरंपरम्।
अग्निमान्द्यकरस्वादुश्लेष्मघ्नवातकोपनम् ॥ (आ० सं०)

अर्थ-पीतकूष्माण्ड अर्थात् भिलवा, लालकद्दू-भारी, पित्तजनक, मन्दाग्निकारक, स्वादिष्ट, कफनाशक और वातको कुपित करे है।

विवरण-लाल कद्दू अर्थात भिल्याकद्दू सर्वत्रबोया जाताहै, इसकी पेठेकी माफिक बेल चलतीहै, पत्ते बडे, बडे, फूल पीला और फल बहुत बडे बडे लगतेहैं।

कूष्माण्डीनामगुणाश्च।

कूष्माण्डीतुभृशंलघ्वीकर्कारुरपिकीर्तिता।
कर्कारुर्ग्राहिणीशीतारक्तपित्तहरागुरु ॥
पक्कातिक्ताग्निजननीसक्षारकफवातनुत। (भा० प्र०)

अर्थ-कूष्माण्डी (कोहडी) हलकी और इसको कर्कारु भी कहतेहैं, कर्कारु-मलरोधक, शीतल, रक्तपित्तनाशक और भारी है, अग्निदीपक, क्षारयुक्त और कफवातनाशक है।

अलाबुनामानि।

अलाबुःकथितातुम्बीद्विधादीर्घाचवर्तुला।

अर्थ-अलाबु, तुम्बी (अलाबु, तुम्ब, तुम्बक, तुम्बा, पिण्डफला, महाफला, आलाबु, लम्बु, लाबु, लाबुका, तुम्बिका, तुम्बी, अलाबु, तुम्बक) यह दो प्रकारका होताहै एक लम्बा और दूसरा गोल।

संस्कृतभाषामें अलाबु, तुम्बी।
हिन्दीभाषामें कद्दू, तोम्बी, लम्बा लौआ, महाकौआ, रामतोरई।
बंगभाषामें लाउ, कद्दू।
मराठीभाषामें दुध्या भोपळा।
गुजरातीभाषामें दुधीयुं, दुधक।
कर्णाटकीभाषामें [illegible]।

तैलिंगीभाषामें	तीयातुखडीकाया ।
इंग्रेजीभाषामें	व्हाइटगुर्ड । White gourd
लैटिन्भाषामें	कुकुर्बिटा लाजिनेरिया । Cucurbita lagenaria
फारसीभाषामें	कुदुशिरिन् कुदुपदरोज ।
अरबीभाषामें	युक्तिनेहुल्लुकरा ।

अस्या गुणाः ।

मिष्टतुम्बीफलहृद्यंपित्तश्लेष्मापहंगुरु ।
वृष्यरुचिकरंप्रोक्तंधातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–तोम्बी कद्दू हृदयको हितकारी, पित्तकफनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक और धातु तथा पुष्टिवर्द्धक है।

अन्यच्च ।

तुम्बीसुमधुरास्निग्धापित्तघ्नीगर्भपोषकृत् ।
वृष्यावातप्रदाचैवबलपुष्टिविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ–तोम्बी–मधुर, स्निग्ध, पित्तनाशक, गर्भपोषक, वृष्य, वातजनक तथा बल और पुष्टिकारक है।

अपिच ।

अलाबूर्भेदनीगुर्वीपित्तघ्नीकफलाहिमा ।

अर्थ–कद्दू रामतोरई–भेदक, भारी, पित्तनाशक कफकारक और शीतल है।

अन्यच्च ।

तुम्बीतुमधुरास्निग्धागर्भपोषणकारिणी ।वृष्यावातप्रदाब-
ल्यापौष्टिकारुच्यशीतला ॥ मलस्तम्भकरीरूक्षाभेदकागु-
रुपित्तनुत् ।काण्डमस्याश्चमधुरवातलकफकारकम् ॥ स्नि-
ग्धशीतभेदकचपित्तनाशकरजगु ।(नि० र०)

अर्थ–तोम्बी–मधुर, स्निग्ध, गर्भको पोषण करनेवाली, वृष्य, वातजनक, बलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, शीतल, मलस्तम्भक, रूखी, भेदक और पित्तनाशक है। इसकी बेलके काड–मधुर, बादी, कफकारक, स्निग्ध, शीतल, भेदक और पित्तनाशक है।

कटुतुम्बीनामानि ।

कटुतुम्बीपिण्डफलाराजपुत्रीनृपात्मजा ।

फलिनीतिक्ततुम्बीचतिक्तकाकटुतिक्तका ॥

अर्थ-कटुतुम्बी, पिण्डफला, राजपुत्री, नृपात्मजा, फलिनी, तिक्ततुम्बी, तिक्तका, कटुतिक्तका (लम्बा, इक्ष्वाकु, कटुकालाबु, कटुफला, तुम्बिनी, बृहत्फला, दंतबीजा, तिक्तबीजा, तुम्बिका, तुम्बी, महाफला, तुम्बीका, क्षत्रियवरा, कटुतुम्बिनी)।

संस्कृतभाषामें	कटुतुम्बी।
हिन्दीभाषामें	तितलौकी, कडवीतोम्बी।
बंगभाषामें	तितलाउ।
मराठीभाषामें	कडू भोंपळा।
गुजरातीभाषामें	कडवी तुंबडी।
कर्णाटकीभाषामें	कहीसोरे।
तैलङ्गीभाषामें	चेतिसानब।
इंग्रेजीभाषामें	बोटलगुर्ड। Bottle gourd
लैटिन्भाषामें	लेजीनेरिया वल्गेरिस। Lagenaria Vulgaris
	क्युकर्बिटालेजिनेरिया। Cucurbita Lagenaria
फारसीभाषामें	कदुतल्ख।
अरबीभाषामें	करउलमुर।

अस्या गुणाः।

कटुतुम्बीकटुस्तीक्ष्णावान्तिकृच्छ्वासवातजित्।
कासघ्नीशोधनीशोफव्रणशूलविषापहा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-कडवी तोम्बी-कटु, तीक्ष्ण, वान्तिजनक, श्वासको दूर करनेवाली, वातनाशक, कासनिवारक, शोधक तथा सूजन, व्रण, शूल और विषनाशक है।

अन्यच्च।

कटुतुम्बीहिमाहृद्यापित्तकासविषापहा।
तिक्ताकटुर्विपाकेचवातपित्तज्वरान्तकृत ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कडवी तोम्बी-शीतल, हृदयको हितकारी, कडवी, पचनेमें कटु तथा पित्त, खांसी, विष और वातपित्तज्वरको दूर करे है।

अस्याः पत्रगुणाः।

पर्णपाकेतुमधुरंमूत्रशोधनमुत्तमम्।

पित्तशान्तिकरंप्रोक्तमृपिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अर्थ-कडवीतोम्बीके पत्ते-पाकमें मधुर, मूत्रशोधक और पित्तको शान्तिकरें हैं ।

कासश्वासविपच्छर्दिज्वरार्तेकफकर्पिते ।
प्रताम्यतिनरेचैववमनार्थतदिष्यते ॥

अर्थ-कडवीतोम्बी-खाँसी, श्वास, विप, वमन और जो मनुष्य ज्वरसे तथा कफसे पीडित हैं उनके लिये इसकी वमन देनी चाहिये ।

विवरण-कडवीतोम्बी और रामतोरईकी वेल एकसी होती है, फूलभी दोनोंपे सफेद आतेहैं, फलभी एकसे लगते हैं ।

कर्कटीनामानि ।

एर्वारुःकर्कटीप्रोक्ताकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ॥

अर्थ-एर्वारु, कर्कटी (लोमशी, व्यालपत्रा, वृहत्फला, व्यालपत्री, लोमशा, स्थूला, तोयफला, हस्तिदन्तफला, कर्कटी, छर्द्दोपनिका, पीनसा, मूत्रला, मूत्रफला, त्रपुषा, हस्तिपर्णी, लोमशकाण्डा, वहुकन्दा, चिर्भटी, कर्कटाक्ष, शान्तनु, वालुङ्की, त्रपुपी, इर्वारु, उर्वारु, ईर्वारु)।

संस्कृतभापामें	कर्कटी ।
हिन्दीभापामें	ककडी ।
वंगभापामें	काँकुड, वडकाँकड ।
मराठीभापामें	काकडी, वालुक-काकडी ।
गुजरातीभापामें	काकडी ।
कर्णाटकीभापामें	क्येयसौत ।
तैलिङ्गीभापामें	दोसकाया ।
इंग्रेजीभापामें	ककवर । Cucumber
लैटिन्भापामें	क्युक्युमिस सैटिवस् । Cucunis Sativus
फारसीभापामें	ख्यादजाव+दरज ख्यारदराज ।
अरवीभापामें	किस्माक्दस् ।

अस्या गुणा ।

कर्कटीशीतलारूक्षाग्राहिणीमधुरागुरुः ।
रुच्यापित्तहरासामापक्वातृष्णाग्निपित्तकृत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-कच्ची ककडी-शीतल, रूखी, मलरोधक, मधुर, भारी, रुचिकारक और पित्तको दूर करे है । पकी ककडी-गरम, अग्निवर्द्धक और पित्तकारक है ।

एर्वारुकंपित्तहरंसुशीतलंमूत्रामयघ्नंमधुररुचिप्रदम् ।
सन्तापमूर्च्छापहरञ्चतृप्तिदंवातप्रकोपायघनतुसेवितम् (रा.नि.

अर्थ-ककडी-पित्तनाशक, शीतल, मूत्ररोगनाशक, मधुर, रुचिकारक सन्ताप और मूर्च्छाको दूर करनेवाली, तृप्तिजनक और अत्यन्त सेवन करनेसे वातको कुपित करे है ।

अन्यच्च ।

कर्कटयास्तुफलंपक्वंछर्दितृष्णाक्लमार्त्तिनुत् ॥

अर्थ-पकी ककडी-वमन, तृषा और ग्लानिको दूर करे है ।

अपिच ।

एर्वारुकंतुमधुररुच्यंरूक्षंचशीतलम् । तृप्तिकृद्ग्राहकंप्रोक्तमत्यन्तवातकारकम् ॥ गुरुवातज्वरकफकारकंतापहारकम् । पित्तमूर्च्छामूत्रकृच्छ्रनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ कोमलेर्वारुकंतिक्तंलघुस्वाद्वतिमूत्रलम् । शीतरूक्षंरक्तपित्तमूत्रकृच्छ्राश्मदोषजित् ॥ तत्पक्वंपित्तलञ्चाग्निदीपनञ्चतृषापहम् । उष्णंत्रिदोषशमनंक्रमदाहहरंमतम् ॥ गृहेजीर्णंतुतज्ज्ञेयमुष्णंपित्तकरंमतम् । कफवायोर्नाशकरंप्रोक्तमायुर्विदेर्जनैः ॥

अर्थ-ककडी-मधुर, रुचिकारक, रूखी, शीतल, तृप्तिकारक, मलरोधक, अत्यन्त वादी, भारी, वातज्वरकारक कफकारक, तापनाशक तथा पित्त, मूर्च्छा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करे है । कोमल ककडी-हलकी, कडवी, स्वादु, अत्यन्त मूत्रकारक, शीतल, रूखी है तथा रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र और पथरीके विकारोंको दूर करे है, पकी ककडी-पित्तजनक, अग्निसंदीपक, तृषानिवारक, गरम, त्रिदोषनाशक, श्रमदाहक, दाहनिवारक है और जो घरमें रक्खीहुई पकजावे ऐसी ककडी-गरम पित्तकारक तथा कफ और वातको नष्ट करे है ।

कर्कटीलघुरारूक्ष्याशीतालघ्वीनमूत्रला । न्ननायायकटुका

तिक्तापाचकाग्निप्रदीपनी ॥ अवृष्याग्राहिणीप्रोक्तामूत्ररोधाश्मरीहरा । मूत्रकृच्छ्रवमिंदाहश्रमंचैवविनाशयेत् ॥
सापक्कारक्तदोषस्यकारिण्युष्मावलप्रदा ॥

अर्थ-दूसरे प्रकारकी ककडी-मधुर, शीतल, रुचिजनक, हलकी, मूत्रजनक, इसकी त्वचा-कटु, तिक्त, पाचक, अग्निप्रदीपक, अवृष्य, ग्राहिणी, मूत्ररोध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, वमन, दाह और श्रमका नाश करे है। वही पकी ककडी-रुधिरविकारकारक, गरम और बलकारक है।

तृतीयाकर्कटीरुच्यामधुरावातकारिणी।
शीतामूत्रप्रदागुर्व्वीकफकृद्दाहनाशिनी ॥
वमिंपित्तभ्रममूत्रकृच्छ्रंमूत्राश्मरीहरेत् ।

अर्थ-तीसरे प्रकारकी ककडी-रुचिकारक, मधुर, वातवर्द्धक, शीतल, मूत्रजनक, भारी, कफकारी, दाहनाशक तथा वमन, पित्त, भ्रम, मूत्रकृच्छ्र, मूत्ररोध, पथरीको दूर करे है।

अरण्यकर्कटीगुणाः ।

अरण्यकर्कटीचोष्णारसेतिक्ताचभेदिका ।
पाकेकट्वीकफकृमिपित्तकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ-वनककडी-गरम, तिक्तरसान्वित, भेदक, पाकमें कटु तथा कफ, कृमि, पित्त, कण्डू और ज्वरको दूर करनेवाली है।

तिक्तकर्कटीगुणाः ।

तिक्तकर्कटिकाप्रोक्तारसेपाकेकटु स्मृता ।
तिक्तामूत्रकरीवान्तिकारिकामूत्रकृच्छ्रहा ।
आध्मानवातचाष्ठीलानाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ-कडवीककडी-रस और पाकमें कटु, तिक्त, मूत्रजनक, वमनकारक, मूत्रकृच्छ्रहारक तथा आध्मान और अष्ठीलाको दूर करे है।

चीनाकर्कटीगुणाः ।

चीनाकर्कटिकाशीतामधुरारुचिदागुरुः ।
कफवाततृप्तिकरीहृद्यापित्तरुजापहा ॥
दाहशोषहराप्रोक्तामुनिभिश्चरकादिभिः ।

अर्थ—चीनाककडी—शीतल, मधुर, रुचिकारक, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, पित्तरोगनाशक तथा दाह और शोषको हरनेवाली है ।

सर्वकर्कटीगुणा ।

सर्वाकर्कटिकागुर्वीदुर्जरावातरक्तदा । अग्निमांद्यकरीप्रोक्ता ऋषिभिःशास्त्रकोविदैः ॥ वर्षाशरदिचोत्पन्नानोहितानच भक्षयेत । हेमन्तजारुचिकरापित्तहाभक्षिताहिता ॥ सैवार्धपक्वासप्रोक्तापीनसोत्पादनीमता। सम्यक्पक्वाचमधुराकफनाशकरीमता ॥ (नि०र०)

अर्थ—सर्वप्रकारकी ककडी—भारी, कठिनतासे पचनेवाली, वातरक्तको करनेवाली और मंदाग्निको करनेवालीहै । वर्षा और शरद ऋतुमें उत्पन्न होनेवाली ककडी हितकारक नहीं है और न भक्षणकरनी चाहिये । हेमन्त ऋतुमें होनेवाली ककडी—रुचिकारक, पित्तनाशक, भक्षणकरनेयोग्य और हितकारी है, अधपकी ककडी—पीनसको उत्पन्न करनेवाली है । अच्छे प्रकारसे पकीहुई ककडी—मधुर और कफनाशक है ।

विवरण—ककडीकी अनेक जाति हैं किन्तु सबप्रकारकी ककडियोंमें ग्रीष्म ऋतुकी ककडी उत्तम है, ककडी सर्वत्र होतीहै ।

त्रपुषनामानि ।









त्रपुपकण्टकिफलंसुधावाससुशीतलम् ।

अर्थ–त्रपुष, कण्टकिफल, सुधावास, सुशीतल (पीतपुष्पा, काण्डालु, कण्टालु, त्रपुकर्कटी, बहुफला, कण्टकिलता, कोपफला, तुन्दिलफला, सुधावासा)।

संस्कृतभाषामें	त्रपुष ।
हिन्दीभाषामें	खीरा, क्षीरा, बालमखीरा ।
बंगभाषामें	शँशा ।
मराठीभाषामें	तवसें, काकडी, खिरा ।
गुजरातीभाषामें	तासरि ।
कर्णाटकीभाषामें	तमयकायि ।
तैलिंगीभाषामें	दोजकाय ।
तामिलीभाषामें	मल्लेवेहरिकोड्णो ।
इंग्रेजीभाषामें	The Cucumber
लैटिन्भाषामें	(Cucumis sativus S N C Hardwicki)
फारसीभाषामें	शिपारखुर्द ।

त्रपुषगुणाः ।

त्रपुपलघुनीलचनवतृट्क्लमदाहजित । स्वादुपित्तापहशीत रक्तपित्तहरपरम ॥ तत्पक्वमम्लमुष्णस्यात्पित्तलकफवात-

नुत । तद्वीजंमूत्रलशीतरूक्षंपित्तास्रकृच्छ्रजित् ॥ (भा०प्र)

अर्थ–नर्वानखीरा–हलका, नीला, स्वादिष्ठ, शीतल तथा तृषा, श्रम, दाह, पित्त और रक्तपित्तको दूर करेहै। पकाहुआ खीरा–खट्टा, गरम, पित्तकारक, कफवातनाशक है। इसके बीज–मूत्रजनक, शीतल, रूखे तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्रको दूर करेहैं।

अन्यच्च।

स्यात्त्रपुषीफलंरुच्यंमधुरंशिशिरंगुरु।
श्रमपित्तविदाहार्त्तिवान्तिहृद्बहुमूत्रदम् ॥ (ग०नि०)

अर्थ–खीरा–रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, बहुमूत्रजनक तथा श्रम, पित्त, दाहकी वेदना और वमनको दूर करे है। खीरा सर्वत्र प्रसिद्ध है।

चिर्भिटनामानि।

चिर्भिटंधेनुदुग्धंचतथागोरक्षकर्कटी।

अर्थ–चिर्भिट, धेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी (सुचित्रा, चित्रफला, क्षेत्रचिर्भिटा, पाण्डुफला, पथ्या, रोचनफला, चिर्भिटिका, कर्कचिर्भिटा)।

मृगेर्वारुनामानि।

मृगाक्षीश्वेतपुष्पाचमृगेर्वारुमृगादनी। चित्रवल्लीबहुफला कपिलाक्षीमृगेक्षणा॥ चित्राचित्रफलापथ्याविचित्रामृगचि-र्भिटा। मरुजाकुम्भसीदेवीज्ञेयाचैकोनविंशति ॥

अर्थ–मृगाक्षी, श्वेतपुष्पा, मृगेर्वारु, मृगादनी, चित्रवल्ली, बहुफला, कपिलाक्षी, मृगेक्षणा, चित्रा, चित्रफला, पथ्या, विचित्रा, मृगचिर्भिटा, मरुजा, कुम्भसी, देवी (कटुफला, लघुचिर्भिटा)।

संस्कृतभाषामें	चिर्भिट (टा) मृगेर्वारु।
हिन्दीभाषामें	कचरिया, गुरुमोई, भकुर, सेंध, फूट, गोरखककड़ी।
बंगभाषामें	बाकुड, गोमुक, फुटि।
मराठीभाषामें	चिबुड, शेंदाड, टकमके।
गुजरातीभाषामें	चिभडां, गनगरां, कोठींबां।
तैलङ्गीभाषामें	गुड्डगवडु।
इंग्रेजीभाषामें	पुबिसेण्टकुकुमर। [illegible]
लैटिनभाषामें	कुकुमिस प्युबिसेन्स। [illegible] Pubescens.
कपु०	ट्राईगोनस। C. Trigonus.

चिर्भिटगुणाः ।

चिर्भटमधुररूक्षंगुरुपित्तकफापहम् ।
अनुष्णग्राहिविष्टम्भिपक्कमूष्णश्चपित्तलम् ॥

अर्थ-कचरिया, गुरुभीठु-मधुर, रूखी, भारी, पित्तकफनाशक, गरम नहीं, ग्राही और विष्टम्भकारक है । पकी कचरिया-गरम और पित्तकारक है

अन्यच्च ।

बाल्येतिक्ताचिर्भटाकिञ्चिदम्ला गौल्योपेतादीपनीसाचपाके ।
शुष्कारूक्षाश्लेष्मवातारुचिघ्नी जाड्यघ्नीसारोचनीदीपनीच ॥

अर्थ-कची कचरिया-कडवी, किञ्चित् अम्ल, गोल्य और पाकमें दीपन है । सूखी कचरिया-रूखी, कफनाशक, वातविनाशक, अरुचिनिवारक, जडतानाशक, रोचन और दीपन है ।

अन्यच्च ।

चिर्भटःशीतलोग्राहीगुरुश्चमधुरः स्मृतः।मलस्तम्भकरः पित्तमूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः ॥ दाहप्रमेहवातचशोपचैवविनाशयेत् ।तत्कोमलफलवातकोपनकफपित्तनुत् ॥ तत्पक्वंपित्तलंचोष्णमुनिभिः परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-कचरिया-शीतल, मलरोधक, भारी, मधुर, मलस्तम्भक तथा पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, वात और शोपका नाश करे है । कची कचरिया-वातको कुपित करनेवाली, कफपित्तनाशक है । पकी कचरिया-पित्तकारक और गरम है ।

अपिच ।

समस्तचिर्भटवातकफकृत्स्वादुशीतलम् ॥

अर्थ-सर्वप्रकारकी कचरिया-वातकफकारक, स्वादिष्ठ और शीतल है ।

चिर्भटपुष्पगुणाः ।

पुष्पश्चचिर्भटस्यैवदोषत्रयकरस्मृतम् ।
अपक्वजीर्णकफकृत्पक्वकिञ्चिद्विशिष्यते (हा०सं०)

अर्थ-कचरियाके फूल त्रिदोषकारक है, कचा अजीर्ण और कफ करेहै और पका कुछेक विशेष होजाताहै ।

मृगाक्षीगुणाः ।

मृगाक्षीकटुकातिक्तापाकेऽम्लावातनाशिनी ।
पित्तकृत्पीनसहरादीपनीरुचिकृत्परा । (रा०नि०)

अर्थ-सेंध-चरपरी, कडवी, पचनेमें खट्टी, वातनाशक, पित्तनाशक, पीनसरोगको दूरकरनेवाली, दीपन और रुचिको करनेवाली है ।

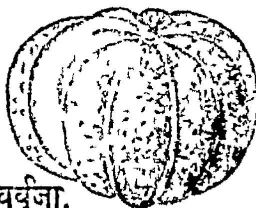
अपिच ।

तिक्तसुतीव्रमधुरञ्चसाम्लवातापहपित्तविनाशनञ्च ।
श्लेष्माकररोचनपाचनञ्चकोष्ठीवटंचाग्निकरंनराणाम् (नृपे०)

अर्थ-सेंध-कडवी, तीव्र, मधुर, खट्टी, वातविनाशक, पित्तनाशक, कफकारक, रोचन, पाचन और मनुष्योंके अग्निको दीपन करे है ।

विवरण । चिर्भटा, फूट, सेंध, कचरिया इन सबकी बेल पत्रादि तथा खर्बूजेकी समान होती है ।

खर्बूजानामानि ।



खर्बूजा.

दशांगुलंतुखर्बूजंकथ्यंतेतद्गुणाअथ ॥

अर्थ-दशांगुल खर्बूज (फलराज, अमृताह्व, षड्भुजा, मधुरसा, षड्रेखा, वृत्तफल, मिष्टा, मिष्टफला, मधुफला, सुगंधादि, षड्भुजा) ।

संस्कृतभाषामें	दशांगुल ।
हिंदीभाषामें	खरबूजा ।
बंगभाषामें	खरमुज, खरबुजा ।
मराठीभाषामें	खर्बूज ।

गुजरातीभाषामें	तलिया शकरटेटी।
कर्णाटकीभाषामें	पढजसौते।
तैलिंगीभाषामें	खरबूज।
इंग्रेजीभाषामें	मेलन्। Melon
लैटिन्भाषामें	कुक्युमिस् मेलो। Cucumis Melo
फारसीभाषामें	खुरपुजा।
अरबीभाषामें	बित्तिख।

अस्य गुणाः।

खर्बूजमूत्रलबल्यकोष्ठशुद्धिकरगुरु। स्निग्धंस्वादुतरशीत वृष्यंपित्तानिलापहम्॥ तेषुयच्चाम्लमधुरसक्षारञ्चरसाद्भवेत्। रक्तपित्तकरंतत्तुमूत्रकृच्छ्रकरंपरम्॥

अर्थ-खरबूजा-मूत्रकारक, बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, भारी, स्निग्ध, स्वादुतर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त और वातको नष्ट करे है। इसमें जो खरबूजा रसमें खट्टा, मीठा और खारी होता है वह रक्तपित्तको करनेवाला और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला होता है।

अन्यच्च।

तिक्तवाल्येतदनुमधुरकिञ्चिदम्लचपाके निष्पक्वचेत्तदमृतसमंतर्पणपुष्टिदायि। वृष्यदाहश्रमविशमनंमूत्रवृद्धिंचधत्ते पित्तोन्मादापहरकफदपड्भुजवीर्य्यकारि॥ (रा० नि०)

अर्थ-कच्चा खरबूजा-कडवा, ईषत् मधुर और पाकमें किंचित् खट्टा है। पक्का खरबूजा-अमृतकी समान तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, वृष्य, दाहको दूर करनेवाला, श्रमको हरनेवाला, मूत्रवर्द्धक तथा पित्त और उन्मादका नाश करनेवाला, कफकारक और वीर्य्यजनक है।

अन्यच्च।

खर्बूजफलराजमुत्तमगुणपक्वंरसबृंहण बल्यस्वादुतरहिम गुरुमहत्पित्तानिलार्त्तिहरेत्। स्निग्धमूत्रलमोदगमयहं सौगन्धिमत्यादराग्नीत पाणियुगे दशांगुलमतो नाम्ना कृतं विष्णुना॥ (सुषेण)

अर्थ-फलोंमें राजा, उत्तम हैं गुण जिसके ऐसा पका खरबूजा पुष्टिकारक बलवर्द्धक, स्वादुतर, शीतल भारी, पित्त और वातकी वेदनाको शान्तिकर-नेवाला, स्निग्ध, मूत्रजनक, उदररोगको दूर करनेवाला और अत्यन्त सुग-न्धिवाला है। विष्णुने इसको अत्यन्त आदरसे दोनों हाथोंमें लिया इसकारण इसका नाम दशांगुल है।

अपिच।

पक्वन्तुखर्बुजतृप्तिकारकपौष्टिकमतम्। कफकृन्मूत्रलंबल्य कोष्ठशुद्धिकरंगुरु॥ स्निग्धसुस्वादुशीतंचवृष्यदाहश्रमाप-हम्। वातपित्तंचउन्मादनाशयेदितितन्मतम्॥ तत्कोमलम-धुरंतिक्तंकिञ्चिदम्लंचतन्मतम्। तज्जीर्णंचमधुरंरसेक्षारञ्च अम्लकम्॥ रक्तपित्तमूत्रकृच्छ्रकरोतीतिबुधाजगु। (रत्ना०)

अर्थ-पका खरबूजा-तृप्तिकारक, पुष्टिजनक, कफकारक, मूत्रवर्द्धक, बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, स्निग्ध, सुस्वादु, शीतल, वृष्य तथा दाह, श्रम, वात, पित्त और उन्मादरोगका हरनेवाला है। कच्चा खरबूजा मधुर, कडवा और किंचित् खट्टा है। पुराना खरबूजा-मधुर, क्षाररसान्वित, अम्ल तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला है। खरबूजा वर्षभरतकका होताहै। किन्तु ग्रीष्मऋतुमें उत्पन्न होनेवाला सबमें श्रेष्ठ होताहै।

पालिन्द्रनामानि।

तरबूज.

रालिन्द्रस्तरबीजस्यात्कालिन्दश्चसुवर्त्तुलम्॥

अर्थ-कालिंग, कृष्णवीज, कालिंद, सुवर्चुल (मासफल, चित्रफल, चित्रवल्लिका, चित्र, मधुरफल, वृत्तफल, घृणाफल, मासल, अल्पप्रमाणक, सुखाश, राजतिनिप, लतापनस, नाटाम्र, मेद, शीर्णवृन्त, वृहद्गोल, सुखवास, सेट, गोडुम्ब, रक्तवीज, चेलान, मूनल)।

संस्कृतभाषामें	कालिङ्ग, शीर्णवृन्त ।
हिंदीभाषामें	तरबूज, सरदा तरबूज, लाल और कालेबीजोंका, कालिंग ।
वंगभाषामें	तरमुज, चेलना ।
मराठीभाषामें	कलिंगड ।
गुजरातीभाषामें	तडबूच, कालिंगडुँ ।
कर्णाटकीभाषामें	कौंडे ।
तैलङ्गीभाषामें	तरबुजंपुचकाया ।
औत्क०	तरपुज ।
इंग्रेजीभाषामें	वाटरमेलन् । Water Melon
लैटिन्भाषामें	साईट्रुल्स् वल्गेरीस् । Citrullus Vulgaris
फारसीभाषामें	हिंदवाना ।
अरबीभाषामें	वत्तिखहिंदी ।

कालिङ्गगुणाः ।

कालिङ्गग्राहिदृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलंगुरु ।
पक्कन्तुसोष्णंसक्षारपित्तलंकफवातकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चा तरबूज-मलरोधक, नेत्रपित्त और शुक्रको हरनेवाला, शीतल और भारी है, पका तरबूज-गरम, क्षारयुक्त, पित्तजनक और कफवातनाशक है ।

अपिच ।

कालिंगोमधुरः शीतः पित्तदाहश्रमापहः ।
वृष्यःसन्तर्पणोबल्योवीर्य्यपुष्टिविवर्द्धनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-तरबूज-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनिवारक, श्रमनाशक, वृष्य, तृप्तिकारक, बलवर्द्धक तथा वीर्य और पुष्टिवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

शीर्णवृन्तंकफकरंसक्षारंमधुरंलघु ।

अर्थ-तरबूज-कफकारक, क्षारयुक्त, मधुर और हलका है ।

अन्यच्च ।

चेलानगुरुविष्टम्भिमधुरंवातपित्तजित ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-दूसरे प्रकारका तरबूज-भारी, विष्टम्भकारक, मधुर और वातपित्त नाशक है।

अन्यच्च ।

कालिंगंशीतलंबल्यमधुरंतृप्तिकारकम् । गुरुपुष्टिकरंज्ञेय मलस्तम्भकरंतथा ॥ कफकृद्दृष्टिपित्तघ्नशुक्रधातोस्तुनाशकम् । तत्पक्वंपित्तलंक्षारंचोष्णंवातकफप्रणुत् ॥ "मज्जास्तु मधुरोबल्योरुचिकृद्धातुवर्द्धकः" । पर्णंतिक्तंरक्तवृद्धिकरं चैवप्रकाशितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कच्चा-तरबूज शीतल, बलकारक, मधुर, तृप्तिकारक, भारी, पुष्टिकारक, मलस्तम्भक, कफकारक तथा दृष्टि, पित्त शुक्र और धातुका नाश करे है। पक्का तरबूज-पित्तजनक, क्षारयुक्त, गरम और वातकफनाशक है। तरबूजकी मींग-मधुर, बलकारक, रुचिजनक और धातुवर्द्धक है। इसके पत्ते-कडवे और रक्तवर्द्धक हैं।

विवरण । तरबूजके बेल प्रायः नदीके निकट और रेतीमें होते हैं तरबूज दो प्रकारका होता है एक काले बीजोंका दूसरा लाल बीजोंका काले बीजोंके तरबूजका गूदा गुलाबी और पीले रंगका होता है और लाल बीजोंके तरबूजका गूदा लाल गुलाबी और पीले आदि सब रंगका होता है इस देशमें तरबूजको पौष और माघके महीनेमें बोते हैं फाल्गुन और चैत्रमें पुष्ट होकर पुष्प आजाते हैं और वैशाख ज्येष्ठमें फल लगते हैं। दूसरे प्रकारके अर्थात् काले बीजोंके तरबूज भारतके सब भागमें होते हैं। किसी २ देशमें तरबूज बडे २ होते हैं और तौलमें १ मनपर्यन्त होता है।

अथ कोशातकीनामानि ।

कोशातकीस्वादुफलामृदुपुष्पाच कोटरिकास्याद्विपर्णातपुष्पा। धाराफलादीर्घफलामृदुकोशाग्रामार्गेन स्याद्बहुजनप्रियम्॥

अर्थ-कोशातकी, स्वादुफला, मृदुपुष्पा, कोटरिका, पीतपुष्पा, धाराफला, दीर्घफला, मृदुकोशा, धामार्गव (कृतवेधना, जालिनी, महाजालिनी, [illegible])।

संस्कृतभाषामें	कोशातकी, धाराफला ।
हिन्दीभाषामें	तोरई ।
बंगभाषामें	घोषालता ।
मराठीभाषामें	शिराळी, दोडकी ।
गुजरातीभाषामें	तुरीया थिसोडा ।
कर्णाटकीभाषामें	धारवितगेई ।
तैलङ्गीभाषामें	वीरकाय। ।
इंग्रेजीभाषामें	एक्युटेंगलेडकुकम्बर । Acuteangled Cucumber
लेटिन्भाषामें	ल्युफाएक्युटेंग्युला । Luffa acutangula

अस्या गुणाः ।

धाराकोशातकीस्निग्धामधुराकफपित्तनुत् ।
ईषद्वातकरीपथ्यारुचिकृद्बलवीर्य्यदा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-तोरई-स्निग्ध, मधुर, कफपित्तनाशक, किंचित् वादी, पथ्य, रुचिकारक, बल और वीर्य्यको देनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पित्तानिलघ्नकफजिद्विपाकात्पथ्यज्वरेस्वादुरसोपपन्नम् ।
हुताशनोद्दीपनभेदकचकोशातकशाकवरंवदन्ति ॥

अर्थ-तोरइयोंका शाक-पित्तवातनाशक, कफहारक, ज्वरमें पथ्य, स्वादु रसवाला अग्निको दीपन करनेवाला और शाकोंमें इसको श्रेष्ठ कहते हैं ।

अपिच ।

धाराकोशातकीशीतामधुराकफवातला ।
पित्तघ्नीदीपनीश्वासज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तोरई-शीतल, मधुर, कफकारक, वादी, पित्तनाशक, दीपन तथा श्वास, ज्वर, खांसी और कृमिका नाश करे है ।

महाकोशातकीनामानि ।

महाकोशातकीप्रोक्ताहस्तिघोषामहाफला ।
धामार्गवोघोषकश्चहस्तिपर्णश्चसस्मृतः ॥

अर्थ-महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, धामार्गव, घोषक, हस्तिपर्ण (बृहत्कोशातकी, हस्तिकोशातकी, राम्यकोशातकी, तेभी, महत्पुष्पा, सर्पातिका, हस्तिघोपातकी) ।

संस्कृतभाषामें	महाकोशातकी ।
हिन्दीभाषामें	घियातोरई, नेनुआ ।
बंगभाषामें	हस्तिघोषा+धुन्दुल ।
मराठीभाषामें	घोसाळी, घड्डोसाळी, पारोशी ।
गुजराती भाषामें	गलकां ।
कर्णाटकीभाषामें	अरहिरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पुड्डावीरकाया+एनुगवीर ।
लेटिनभाषामें	ल्युफापेंटेंड्रा । Luffapentandra
फारसीभाषामें	दिरपार ।
उडि०	तरडि ।

अस्य गुणाः ।

महाकोशातकीस्निग्धासरापित्तानिलापहा ।(म०नि०)

अर्थ-घियातोरई-स्निग्ध, सारक तथा पित्त और वातको नाश करे है ।

अन्यच्च ।

महाकोशातकीस्निग्धारक्तपित्तानिलापहा । (भा०प्र०)

अर्थ-घियातोरई, बड़ी तोरई-स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक और वात विनाशक है ।

अन्यच्च ।

हस्तिकोशातकीस्निग्धामधुराध्मानवातकृत ।
तृष्णाकृमिकरीचित्रवणमंगेपणांचसा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-घियातोरई, नेनुआ-स्निग्ध, मधुर, आध्मानकारक, वातकोप, तृष्णा कृमिजनक और घावको भरनेवाली है ।

विशेषे कोशातकीनामानि ।

कोशातक्यांकृतच्छिद्राजालिनीकृतवेधना ।
क्ष्वेडासुनिकाचण्डालीमृदङ्गफलिकामता ॥

अर्थ-कोशातकी, कृतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधना, क्ष्वेडा, सुनिका, चण्डाली, मृदङ्गफलिका (विशेषे कोशातकी, जिया, कृत्वेधनिका । कृष्णा, सुघोषणी, रम्या, घर्षणच्छदा) ।



संस्कृतभाषामें	तिक्तकोशातकी ।
हिन्दीभाषामें	कडवी तोरई, जगलीतोरई, झिमनी ।
बंगभाषामें	झिङ्गा ।
मराठीभाषामें	कडूदोडकी, दीवाली, कडूशिराळी ।
गुजरातीभाषामें	झुमखडा कडवातें कडवी घीसोडी, वामार्गवते । कडवा तुरीया ।
कर्णाटकीभाषामें	फाहिरे ।
तैलिङ्गभाषामें	चेदुविर्कायो ।
उडि०	जनी ।
इंग्रेजीभाषामें	बिटरल्युफा । Bitter Luffa
लैटिन्भाषामें	ल्युफाएमेरा । Luffa amara
फारसीभाषामें	तुरीयेतलख ।

अथगुणाः ।

तिक्तकोशातकीशीताकिञ्चित्कट्वीकषायका । तिक्तापका-शयाध्मानमलामाशयशुद्धिकृत ॥ लघ्वीरूक्षावातकफपि-त्तपाण्डुविषापहा । यकृत्कुष्ठार्शशोथघ्नीकासोदरविनाशि-नी ॥ कामलागुल्मशमनीफलंचास्यास्तुभेदकम । कटुति-क्तचशीतञ्चस्निग्धहृद्यचदीपनम् ॥ कासांगेचक्रमेहघ्नज्व-रकुष्ठकफापहम्।श्वासपित्तचवातञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-कड़वी तोरईकी बेल-शीतल, किंचित्कटु, कसैली, कड़वी, पक्वाशय, आध्मान, मल और आमाशयको शुद्ध करनेवाली, हलकी, रूखी तथा वात, कफ, पित्त, पाण्डु, विष, यकृत् कुष्ठ, बवासीर, सूजन, खाँसी, उदररोग, कामला और गुल्मको हरै है। इसका फल भेदक, कटु, तिक्त, शीतल, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, दीपन तथा खाँसी, अरुचि, प्रमेह ज्वर, कुष्ठ, कफ, श्वास, पित्त और वातका नाश करै है।

मतान्तर।

तिक्तकोशातकतिक्तवातलकफपित्तजित ।
अवृष्यंकटुकपाकेसारकवान्तिकारकम ॥
एतत्फलञ्चबीजञ्चनस्यान्नासाशिरोर्त्तिजित ।(शो०नि०)

अर्थ-कड़वी तोरई-कड़वी, वादी, कफपित्तनाशक, अवृष्य, पचनेमें कटु, सारक और वमनकारक है। इसके फल और बीजोंके नास देनेसे नासिका और शिरकी पीड़ा दूर होती है।

विवरण-तोरई, घियातोरई और कड़वी तोरई इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है, बड़ा तोरई सफेद रंगकी और धारयुक्त तथा पीले फूलकी होतीहै। घियातोरई नीले रंगकी और लम्बे गोल तथा पीले फूलकी होतीहै। और कड़वी तोरई सफेद रंगकी जंगल वृक्षोंके ऊपर लगती है, फूल पीले और बीज काले होतेहैं।

चिचिण्डनामानि।

चिचिण्ड श्वेतराजि स्यात्सुदीर्घोगृहकूलक ।

अर्थ-चिचिण्ड, श्वेतराजि, सुदीर्घ, गृहकूलक (चिचुण्ड, चेचड़ा, पडलवा, अहिरम्भा, चीचण्डा, चीनककोड़ा।

गहूनभाषामें	चिचिण्ड+अहिरम्भा।
हिन्दीभाषामें	चचेंड़ा, चिचड़ा।
बंगभाषामें	चिचिङ्गा, चिचिन्दा।
मराठीभाषामें	दम्पोडर्।
गुजरातीभाषामें	पंडोल।
तैलङ्गीभाषामें	पोट्लकाया।
इंग्लिशभाषामें	स्नेकगोर्ड। [illegible]
लैटिनभाषामें	ट्रिकोसैन्थिस ऐंग्विना Tr[illegible]

अस्य गुणा ।

चिचिण्डोवातपित्तघ्नोबल्य•पथ्योरुचिप्रद ।
शोपिणेतिहित किञ्चिद्गुणैर्न्यून पटोलत• ॥

अर्थ–चिचेडा–वातपित्तनाशक, वलकारक, पथ्य, रुचिजनक, शोपरोगमे हितकारी और परवलसे गुणाम किञ्चित न्यूनहै ।

विवरण। चचेंडेकी वेल तोरईकी समान होती है, फल वडे वडे लम्बे साँपकी समान होते है ।

पटोलनामानि ।

स्वादौचस्वादुपूर्वासास्वादिष्ठाजनवल्लभा ।
राजपूर्वासुशाकाचस्वादुपत्रफलाचसा ॥

अर्थ–स्वादुपटोल, स्वादु, स्वादिष्ठा, जनवल्भा, राजपूर्वा, सुशाका, स्वादुपत्रफला (राजपटोल) ।

अस्य गुणा ।

पटोलपाचनहृद्यवृष्यलघ्वग्निदीपनम् । स्निग्धोष्णहन्ति-कासास्रज्वरदोपत्रयकृमीन् ॥ पटोलस्यभवेन्मूलविरेचन-कर सुखात् । नालश्लेष्महरपत्रपित्तहारिफलपुन ॥ दोप-त्रयहरप्रोक्ततद्वत्तिक्तपटोलिका । (भा० प्र०)

अर्थ–परवल–पाचक, हृदयको हितकारी, वृष्य, हल्का, अग्निप्रदीपक, स्निग्ध, गरम तथा खाँसी, रुधिरविकार ज्वर, त्रिदोप और कृमिका नाश करे है। परवलकी जड सुखपूर्वक विरेचन करनेवाली है। परवलकी नाल–कफनाशक है। पटोलके पत्ते–पित्तनाशक हैं । इसके फल–त्रिदोपनाशकहै, कडवे परवलके गुणभी इसीके समान है ।

अन्यच्च ।

पटोलीबलकृत्स्वादु पथ्यादीपनपाचनी । रुच्यापुष्टिकरी ज्ञेयावातपित्तज्वरापहा॥शोपत्रिदोपशमनीफलवृष्यरुचि-प्रदम् । मधुरस्वादुपथ्यचपाचनलघुदीपकम ॥हृद्यस्निग्ध चउष्णचकफरक्तत्रिदोपनुत । कासज्वरकृमीन्हन्तिपर्णव पित्तनाशनम् । मूलरेचकप्रोक्तनल्लीचैवकफापहा ॥

अर्थ-परवर-मलकारक, स्वादिष्ट, पथ्य, दीपन, पाचक, रुचिकारक, पुष्टिजनक तथा वात, पित्त, ज्वर, शोष और त्रिदोषको शान्ति करते हैं । इसके पत्र-वृष्य, रुचिकारक, मधुर, स्निग्ध, पथ्य, पाचन, हलके, दीपन, हृदयको हितकारी, स्निग्ध, गरम, कफ, रक्तविकार, त्रिदोष, खाँसी, ज्वर और कृमिनाशक हैं । इसके पत्ते पित्तनाशक । इसकी जड विरेचन करानेवाली है । इसकी बेलें कफनाशक हैं ।

राजपटोलीनामानि ।

मेकीराजपटोलीचपर्वगीपीलुपर्णिका ।
राजनामासुपथ्याचवृत्तबीजाचपर्वग ॥

अर्थ-मेकी, राजपटोली, परवरी, पीलुपर्णिका, राजनामा, सुपथ्या, वृत्तबीजा, परवर ।

पर्वरपाचनहृद्यंवृष्यवह्निकरंलघु।दीपनंस्निग्धमुष्णञ्चका-
सरक्तत्रिदोषदम्॥क्रिमिजिन्मधुरंप्रोक्तंवैद्यैर्विद्याविचक्षणैः ।
कफनाशकरीवल्लीपत्रंपित्तस्यनाशकम् ॥ मूलंतुरेचकंचा-
स्यमुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-परवर-पाचक, हृदयको हितकारी, वृष्य, अग्निजनक, हलका, दीपन, मधुर, स्निग्ध, गरम तथा खाँसी, रुधिरविकार, त्रिदोष और कृमि नाशक है । इसकी बेल-कफनाशक । पत्र-पित्तनाशक और मूल-रेचन करानेवाली है ।

तिक्तपटोलनामानि ।

पटोलः कुलकः प्रोक्तः पाण्डुकः कर्कशच्छदः ।राजीफल पाण्डु
फलोराजीमानोमृताफलः ॥तिक्तोत्तमोबीजगर्भः कुष्ठारिः काम
मर्दनः ॥ पञ्चराजीफलोज्योत्स्नाफलः ज्वरनाशनः ॥

अर्थ-पटोल, कुलक, पाण्डुक, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल राजीमान, अमृताफल, तिक्तोत्तम, बीजगर्भ, कुष्ठारि, कामर्दन, पञ्चराजीफल, ज्योत्स्ना, कफज्वर, ज्वरनाशन (मिश्रक पटु पटुक, पटालक, पलक, शशिम्हा, रसारण, नागफल, नागपटोल, कर्षित, शिवपटुक, मधुरक, कपुर, पट्ट, अमृतफल, पाण्डुर, पाण्डु, मालटक, पंचार, ज्योत्स्नी, कण्टुकी, मर्मोद, कुष्ठा, कामभञ्जन) ।

संस्कृतभाषामें	पटोल, तिक्तपटोल।
हिन्दीभाषामें	कडवे परवल।
बंगभाषामें	पलतालता।
मराठीभाषामें	कडुपडवळ।
गुजरातीभाषामें	कडवापटोल, आरण्यफुटामणा।
कर्णाटकीभाषामें	कहिपडवल।
तैलिङ्गीभाषामें	सेसपटूला–कोम्मुपटोल।
तामिलीभाषामें	कोम्बुपुडलै।
कानाडीभाषामें	मोरहडी।
लैटिनभाषामें	ट्रिकोसैंथिस कुकुमेरिना। Trichosanthis cucumerina

अस्य गुणाः।

पटोलः कटुतिक्तोष्णः सरः पित्तबलासजित्।
कफकण्डूतिकुष्ठासृग्ज्वरदाहार्तिनाशनः॥ (रा॰नि॰)

अर्थ–कडवे परवल–कटु, तिक्त, गरम, कुछेक दस्तावर तथा पित्त, बलास, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रुधिरविकार, ज्वर और दाहकी वेदनाको दूर करनेवाले हैं।

अन्यच्च।

पटोलकफपित्तास्रव्रणकुष्ठज्वरापहम्। विसर्पनयनव्याधि-त्रिदोषगरनाशनम्॥पटोलपत्रंपित्तघ्नंनाडीतस्यकफापहा॥ फलंतस्यत्रिदोषघ्नंमूलंतस्यविरेचनम्॥ (रा॰ व॰)

अर्थ–कडवे परवल–कफ, रक्तपित्त, व्रण कुष्ठ, ज्वर, विसर्प, नेत्ररोग, त्रिदोष और विषका विनाश करेहै। पटोलपत्र–पित्तनाशक है। परवलकी नाडी–कफनाशक। इसके फल–त्रिदोषनाशक और इसकी जड–दस्तावर है।

अन्यच्च।

तिक्तापटोलीकटुकासारकोष्णाकटुः स्मृता। भेदनीपाच-नीचैवअग्निदीप्तिकरीपरा॥ पित्तकफचकण्डूञ्चकुष्ठरक्तवि-कारकम्।ज्वरदाहतृषाकोष्ठरोगकृमिंचनाशयेत्॥ फल-मस्याः कटुस्तिक्तःपाकेस्वादुर्लघुस्मृतम्। दीपनपाचनग्रा-ह्यंमललोमनकारकम्॥ वातपित्तकफानांतुयथास्थाने

निवेशकम् । सारकश्वासज्वरहृत्त्रिदोषकृमिनाशकम् ॥ पित्तनाशकरंपर्णंमूलंकफविनाशकम । कफनाशकरवल्लीतैल वातकफापहम ॥ (नि० र०)

अर्थ-कडवे परवल-चरपरे, सारक, गरम, कटु, भेदक, पाचक, अग्नि प्रदीपक तथा, पित्त, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रक्तविकार, ज्वर, दाह, तृषा, शोथ रोग और कृमिरोगका नाश करे है। इसके फल-चरपरे, कडवे, स्वादु पाकी, हलके, दीपन, पाचन, वृष्य, मलअनुलोमक तथा वात, पित्त और कफको यथास्थानमें स्थापन करनेवाले, सारक तथा श्वास, ज्वर, त्रिदोष और कृमिरोगका नाशकरे है। इसके पत्ते-पित्तनाशक। इसकी जड-कफ नाशक। इसकी बेलकफनाशक और इसका तेल-वात और कफनाशक है।

विवरण। परवल मधुर और कडवे इन भेदोंसे दो प्रकारके होते हैं, यहां कडवे परवल औषधिमें अधिकतासे लियेजाते हैं। परवलकी बेल प्रायः जंगलमें होती है, फूल सफेद, फल नीले और पकनेपर लाल होजाते हैं।

बिम्बीनामानि।

बिम्बीरक्तफलातुण्डीतुण्डिकेरीचबिम्बिका ।
ओष्ठोपमफलाप्रोक्तापीलुपर्णीचकथ्यते ॥

अर्थ-बिम्बी, रक्तफला, तुण्डी, तुण्डिकेरी, बिम्बिका, ओष्ठोपमफला, पीलुपर्णी (ओष्ठी, कर्मकरी, तुण्डीकेरी, तुण्डिकेरिका, तुण्डिकेरि, तुण्डिकेरी, बिम्बा, बिम्बक, बिम्बजा, रक्तफलोपमा, गोह्वी, गोल्हा-पर्णी, छर्दिनी)।

संस्कृतभाषामें	बिम्बी।
हिन्दीभाषामें	कन्दूरी।
बंगभाषामें	तेलाकुचा।
मराठीभाषामें	गोडतोंडली, पांढरी।
गुजरातीभाषामें	घोडांविडी।
कर्णाटकीभाषामें	गोल्हिंडि, तोण्डलु।
तामिलभाषामें	कोव।
अंग्रेजीभाषामें	ईदरिंगै।
लेटिनभाषामें	कोक्सी ग्रान्डिस।

अस्या गुणा ।

विम्बीफलंस्वादुशीतगुरुपित्तास्रवातजित् ।
स्तम्भनंलेखनंरुच्यविबधाध्मानकारकम् ॥

अर्थ-कन्दूरी-स्वादिष्ठ, शीतल, भारी, रक्तपित्तनाशक, वातविनाशक, स्तम्भन, लेखन, रुचिकारक तथा विबध और आध्मानकारक है ।

अन्यच्च ।

विम्बीफलस्वादुशीतस्तन्यकृत्कफपित्तजित् ।
हृद्दाहज्वरपित्तास्रकासश्वासक्षयापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कन्दूरी-स्वादिष्ठ, शीतल, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, कफपित्तनाशक तथा दाह, ज्वर, रक्तपित्त, खासी, श्वास और क्षयरोगका क्षय करे है ।

अन्यच्च ।

विम्बिकामधुराशीताकफवान्तिकरामता। रक्तपित्तक्षयश्वासकामलापित्तशोफकान्॥ रक्तरुग्विषकासांश्चरक्तपित्तज्वरान्हरेत् । फलमस्यागुरुस्वादुशीतलंलेखनमतम्॥ मलस्तम्भकरस्तन्यमुदरेवातसंचयम् । रुच्यपित्तरक्तदोषवाताञ्श्वासचनाशयेत्। शोथवृद्धिदाहकासश्वासनाशकरमतम् । पुष्पमस्या० कण्डुपित्तकामलानाशकारकम्॥ अस्या पर्णोद्भवाशाकाशीतलामधुरालघु । ग्राहकातुवरातिक्तापाके कट्वीचवातला ॥ कफपित्तहराप्रोक्तापूर्ववैद्यवरैः स्फुटम् । मूलमस्याहिममेहनाशनधातुवर्द्धकम्॥ हस्तदाहहरभ्रान्तिवान्तिनाशकरमतम् । (इतिरत्नाकरे)

अर्थ-कन्दूरी-मधुर, शीतल, कफकारक, वमनजनक तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, कामला, पित्तकी सूजन, रुधिरविकार, विषदोष, खाँसी, रक्तपित्त और ज्वरको दूर करेहै । इसके फल भारी, स्वादिष्ट, शीतल, लेखन, मलस्तम्भक, स्तन्यकारक, उदरमें वायुको सचितकरनेवाले, रुचिकारक तथा पित्त, रुधिरविकार, वात, श्वास, सूजन, वृद्धि, दाह, खांसी और दमेको हरनेवाले हैं । इसके फूल-कण्डू, पित्त, कामलाको दूर करनेवाले हैं । इसके

पत्तोंका शाक-शीतल, मधुर, हलका, मलरोधक, कसैला, पचनेमें, चरपरा, ग्लानि तथा कफ और पित्तका नाशकर्ता है। इसकी जड़-शीतल, प्रमेहनाशक, धातुवर्द्धक तथा हाथ पाँवोंकी दाह, वान्ति और भ्रान्तिको शान्तिकर्ता है।

तिक्तबिम्बीनामानि।

तिक्ततुण्डीतुतिक्ताख्याकटुकाकटुतुण्डिका।
बिम्बीचकटुतिक्तादितुण्डीपर्य्यायगाचसा॥

अर्थ-तिक्ततुण्डी, तिक्ताख्या, कटुका, कटुतुण्डिका, कटुबिम्बी तिक्तबिम्बी, तुण्डीपर्य्यायगा।

संस्कृतभाषामें	तिक्ततुण्डी।
हिंदीभाषामें	कड़वी कन्दूरी।
बंगभाषामें	कटुकार, तितधन्धा, तेत पेन्दुरी।
मराठीभाषामें	कडू वाइली।
गुजरातीभाषामें	कड़वी घोली।
कर्णाटकीभाषामें	[illegible], कहितोंडे।
ऐंग्लिभाषामें	[illegible]। Cephalandra Indica
	[illegible]।

अस्या गुणाः।

कटुतुण्डीकटुस्तिक्ताकफपित्तविषापहा।
अरोचकास्रपित्तघ्नीसदापथ्यानरेचनी॥ (रा०नि०)

अर्थ-कड़वी कन्दूरी-चरपरी, कड़वी, रुचिकर, पथ्य, रेचन करनेवाली तथा कफ, पित्त, विष, अरुचि नामी और रक्तपित्तको नष्ट करनेवाली है।

अन्यच्च।

तिक्तबिम्बीफलंतिक्तंवामकंवातकोपनम्।
शोथकृमिविषपित्तास्रज्वरकफपाण्डुहृत्॥ (नि०र०)

अर्थ कड़वी कन्दूरी-कड़वी, वमनकारक, वातको कुपित करनेवाली तथा शोथरोग, विष, पित्त रक्तविकार, कफ और पाण्डुरोगको हरनेवाली है।

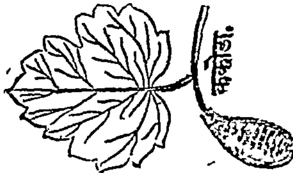
अन्यच्च।

तिक्तबिम्बीफलंनाममर्द्दनंकफनाशनम्।
कफपित्तहरंशीतंमधुरंस्वादुपाकयोः॥ (शो०नि०)

अर्थ-कच्ची कडवी कन्दूरी-वमनकारक और कफनाशक है। पकी कडवी कन्दूरी-पित्तनाशक, शीतल और रसपाकमें मधुर है।

विवरण-कन्दूरी मधुर और कडवी इन भेदोंसे दो प्रकारकी होती है, तहा मधुर कन्दूरी प्राय बागोंमे बोई जातीहै और कडवी कन्दूरी स्वय वन तथा बाँसियोंमें उत्पन्न होजाती है इसकी बेल चलतीहै। पत्ते तीन अनीवाले होतेहैं। फूल सफेद, फल हरे और पकनेपर लाल होजाते हैं।

ककर्कोटकीनामानि।



कर्कोटकीपीतपुष्पीमहाजालीतिचोच्यते।

अर्थ-कर्कोटकी, पीतपुष्पी, महाजाली (पीतपुष्पा, महाजालिनिका, अवन्ध्या, बोधनाजालि, मनोना, मनस्विनी)।

संस्कृतभाषामें	कर्कोटकी।
हिंदीभाषामें	खेखसा, ककोंडा।
बंगभाषामें	फलशाकविशेष (काकरोल)।
मराठीभाषामें	काटली, कर्टोली।
गुजरातीभाषामें	कटोली।
लेटिनभाषामें	मोमोर्डिकाडायोईका।
तैलिङ्गीभाषामें	अगोरकर।
म०	वेंपावल।
तु०	काड कुचाला।
ता०	इगारवलि।
फा०	मङ्गरागाळ।

अस्य गुणाः।

कर्कोटीमलहृत्कुष्ठहृल्लासारुचिनाशिनी।

कासश्वासज्वरान्हन्तिकटुपाकाग्निदीपनी ॥

अर्थ-ककोडा-मदको हरनेवाला तथा कुष्ठ, हल्लास, अरुचि, श्वास, खांसी और ज्वरको दूर करनेवाला, कटुपाकी और दीपन है।

अन्यच्च।

कर्कोटकीकटूष्णाचतिक्ताविषविनाशिनी।
वातघ्नीपित्तहृच्चैवदीपनीरुचिकारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-ककोडा-चरपरा, गरम, कडवा, विषविनाशक वातनाशक, पित्त हारक, दीपन और रुचिकारक है।

अपिच।

कर्कोटकीरुचिकराकटुकाचाग्निदीपनी। तिक्तोष्णावातकफहृद्विषपित्तविनाशयेद ॥ फलमस्यास्तुमधुरंलघुपाकेकटुस्मृतम्। अग्निदीप्तिकरंगुल्मशूलपित्तत्रिदोषनुत ॥ कफकुष्ठकासमेहश्वासज्वरकिलासनुत्। लालास्रावारुचिवातकिलासहृदयव्यथा । नाशयेत्पर्णमस्याश्चरुच्यंवृष्यंनिदोषनुत। कृमिज्वरक्षयश्वासकासहिक्कार्शोनाशनम ॥ कन्दो माक्षिकसंयुक्तःशीर्षरोगेप्रशस्यते ॥ (नि०र०)

अर्थ-ककोडी-रुचिकारक, कटु, अग्निसंदीपक, तिक्त, गरम तथा वात, कफ, विष और पित्तका नाशकरै है। इसके फल-मधुर, लघु, पाकमें कटु, अग्निसंदीपक तथा गुल्म, शूल, पित्त, त्रिदोष, कफ, कुष्ठ खांसी, प्रमेह, श्वास, ज्वर, किलास, लालास्राव, अरुचि, वात, किलास और हृदयकी पीडाको दूरकरै है। इसके पत्ते-रुचिकारक, वीर्यवर्धक, त्रिदोषनाशक तथा कृमि, ज्वर, क्षय श्वास खांसी, हिचकी और बवासीरको हरनेवाले हैं। इसका कंद-मधुके साथ मस्तकरोगमें हितकारी है।

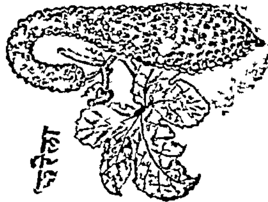
विशेष। ककोडेकी बेल प्रायः झाडों और बाडोंके उपर फैलती है, इसके उपर फूल होते हैं वर्षा ऋतुमें होते और कार्तिक तक फलती है।

कारवेल्लनामानि।

६८ कारवेल्लंकठिल्लंस्यादुग्रकाण्डंसुकाण्डकम्।

अर्थ-करेला, कठिल्ल, उग्रकाण्ड, सुकाण्डक (करेला, करैला)

कारवेल्लीनामानि।



कारवेल्लीवारिवल्लीबृहद्वल्ल्यापरास्मृता।

अर्थ–कारवेल्ली, वारिवल्ली, बृहद्वल्ली (करका, करवल्ली, चिरिमत्र, कठिल्का, सूक्ष्मवल्ली, कण्टफला, पीतपुष्पा, अम्बुवल्लिका, कठिल्लक, सुपवी, राजवल्ली, शुपवी, ऊर्ध्वासित, तोयवल्ली, कण्टूर, काण्डकटुक, सुकाण्ड, उग्रकाण्ड, नासासंवेदन, पटु)।

संस्कृतभाषामें	कारवेल्ल, कारवेल्ली।
हिन्दीभाषामें	करेला, करेली।
बंगभाषामें	वडकोरेलाउच्छे, छोटकरलाउचे।
मराठीभाषामें	कारल, क्षुद्रकारली, लघुकारली।
गुजरातीभाषामें	कारेला, कडवा वेला।
कर्णाटकीभाषामें	हागल।
तैलङ्गीभाषामें	करिला, काकरकाया।
औत्कलीभाषामें	करला।
इंग्रेजीभाषामें	हेरीमोर्डिका। Hairy Mordica
लैटिन्भाषामें	मोमोर्डिकाकरेंटिया। Momordica Charntia
	मो सिंबेलेरिया। M. Cymbalaria
फारसीभाषामें	कारेलाह।
अरबीभाषामें	किस्सा, उलहिमार।

कारवेल्लगुणाः।

कारवेल्लंहिमंभेदिलघुतिक्तमवातलम्।
ज्वरपित्तकफास्रघ्नपाण्डुमेहकृमीन्हरेत्॥

तद्गुणा कारवेल्ली स्याद्विशेषाद्दीपनी लघु । (भा.प्र.)

अर्थ-करेला-शीतल, भेदक, हलका, कडवा, वातकारक नहीं तथा ज्वर, पित्त, कफ, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, प्रमेह और कृमिरोगका नाशकर्ते हैं। करेलीके गुणभी करेलेकी समान हैं विशेषकरके पित्तनाशक और हलकी है।

अन्यच्च।

कारवेल्लमवृष्यश्च रोचनं कफपित्तजित् (रा०नि०)

अर्थ-करेला-अवृष्य, रुचिकारक तथा कफ और पित्तका नाशकर्ता है।

अन्यच्च।

[कारवेल्लश्च वातघ्नः कफघ्नः पित्तकारकः ।
उष्णो रुचिकरः प्रोक्तो रक्तदोषकरो नृणाम्] (ह्रा०)

अर्थ-करेला-वातविनाशक, कफनाशक, पित्तकारक, गरम, रुचिकारक और रुधिरके विकारोंका करनेवाला है।

अपिच।

कारवेल्लं चातितिक्तमग्निदीप्तिकरं लघु । उष्णशीतं भेदकं च स्वादु पथ्यं समीरितम् ॥ अरुचिं च कफं वातरक्तदोषज्वरक्रमीन्। पित्तपाण्डुं च कुष्ठं च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ बृहद्भक्तकारवेल्लं कटुतिक्तं च दीपकम् । अवृष्यं भेदकं स्वादु कन्यक्षारं लघु स्मृतम् ॥ अनातलपित्तहरं रक्तकफपाण्डुरोगहृत् । अरोचककफश्वासव्रणकासक्रमींस्तथा ॥ कोष्ठकुष्ठज्वरं चैव प्रमेहाध्माननाशनम्। कामलां नाशयत्येव गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत् ॥ जलजा कारवेल्ली स्यात्तिक्ता भेदकरी मता। कफं कुष्ठं पाण्डुरोगं क्रमीन्पित्तं च नाशयेत्॥ वनजा कारवेल्ली तु दीपनी तिक्ता मता। गर्भं कासं कफं वातं क्रमीन् हरेत् (रत्नाकरे)

अर्थ-करेला-अत्यन्त कडवा, अग्निदीपक, हलका गरम, शीतल, दस्तावर, स्वादु, पथ्य तथा अरुचि, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, कृमि, पित्त पाण्डुरोग और कुष्ठरोगको नष्टकरनेवाला है। करेला-कडवा, तिक्त, दीपन, अवृष्य, भेदक, स्वादिष्ट, हलका, दस्तावर नहीं, पित्तनाशक तथा रुधिरविकार, पाण्डुरोग, अरुचि, कफ श्वास व्रण

खाँसी, कृमि, कोठरोग, कुष्ठ, ज्वर, प्रमेह, आध्मान और कामला रोगको हरनेवाला है। और शेष गुण पूर्वकी नाई जानने । जलमें उत्पन्न होनेवाला करेला-कडवा, भेदक तथा कफ, कुष्ठ, पाण्डुरोग, कृमि और पित्तरोगका नाश करे है। वनकरेला-दीपन, कडवा, हृदयको हितकारी तथा ज्वर, बवासीर, खाँसी और वातको दूरकरे है ।

डिण्डिशनामानि गुणाश्च ।

डिण्डिशोरोमशफलोमुनिनिर्मितइत्यपि ।
डिण्डिशोरुचिकृद्भेदीपित्तश्लेष्मापहःस्मृतः ॥
सुशीतोवातलोरूक्षोमूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ (भा० प्र०)

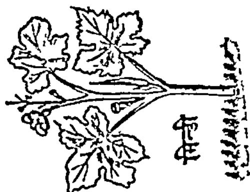
अर्थ-डिण्डिश, रोमशफल, मुनिनिर्मित । हिं० ढेंढश । ढेंढश-रुचिकारक, भेदक, पित्तकफनाशक, शीतल, वादी, रूक्ष, मूत्रजनक और पथरीको दूर करे है ।

पिण्डारगुणाः ।

पिण्डारंशीतलवल्यपित्तघ्नरुचिकारकम् ।
पाकेलघुविशेषेणविषशान्तिकरस्मृतम् ॥(भावप्रकाश)

अर्थ-पिण्डार-शीतल, वलकारक, पित्तनाशक, रुचिकारक, लघुपाकी और विशेषकरके विषको शान्ति करे है ।

भेण्डानामानि ।



भेण्डाभिण्डातिकाभिण्डोभिण्डकःक्षेत्रसम्भवः ।
चतुष्पदश्चतुःपुण्ड्रःसुशाकःपिच्छिलःस्मृतः ॥

अर्थ-भेण्डा, भिण्डातिका, भिण्ड, भिण्डक, क्षेत्रसम्भव, चतुष्पद, चतुःपुण्ड, सुशाक, पिच्छिल (भिण्डीतक, अस्रपत्रक, करपर्ण, वृत्तबीज) ।

संस्कृतभाषामें भिण्डा।
हिन्दीभाषामें भिण्डी।
बंगभाषामें स्वनामख्यातक्षुपशाक वि०।
मराठीभाषामें भेंडे, रानभेंडे।
गुजरातीभाषामें भींडा।
कर्णाटकीभाषामें बेंडे।
तैलिङ्गीभाषामें मेंडकाया।
इंग्लिशभाषामें हिबिस्कस एसक्युलेंटस्। Hibiscus Esculentus.
फारसीभाषामें बामिया।
अरबीभाषामें बुवा।

भेण्डागुणाः।

करपर्णफलंरुच्यंपिच्छिलगुरुवातलम्।वृष्यंश्लेष्मकरंबल्य
शुक्रवृद्धिकरंपरम् ॥कासेमन्दानलेवातेपीनसेषुविनिन्दितम्।

अर्थ-भिण्डी-रुचिकारक, पिच्छिल, भारी, वादी, वृष्य, कफकारक, बलकारक, शुक्रवर्धक तथा खाँसी, मन्दाग्नि, वात और पीनसरोगमें अहितकारी है।

अन्यच्च।

भेण्डात्वम्लरसाचोष्णाग्राहीचरुचिकारका।
गजनामानिघण्टेभद्रस्त्वेवृष्यापरास्मृता॥ (नि० र०)

अर्थ-भिण्डी-अम्ल, गरम, मलरोधक, रुचिकारक और वृष्य है।

वार्ताकुनामानि।



वार्त्ताकीकण्टवृन्ताकीकण्टालु'कण्टपत्रिका । निद्रालुर्मांसलफलावृन्ताकीचमहोटिका ॥चित्रफलाकण्टकिनीमहतीकटुफलाचसा । मिश्रवर्णफलानीलफलारक्तफलातथा॥ शाकश्रेष्ठावृत्तफलानृपप्रियफलास्मृता ।

अर्थ-वार्त्ताकी, कण्टवृन्ताकी, कण्टालु, कण्टपत्रिका, निद्रालु, मांसलफला, वृन्ताकी, महोटिका, चित्रफला, कण्टकिनी, महती, कटुफला, मिश्रवर्णफला, नीलफला, रक्तफला, शाकश्रेष्ठा, वृत्तफला, नृपप्रियफला (हिंगुली, सिंही, भण्टाकी, दुष्प्रधर्षिणी, वार्त्ता, वार्त्ताकु, वातिंकुण, वार्त्ताक, शाकबिल्व, राजकूष्माण्ड, महाबृहती, शाकबिल्वक, वार्षिक, वातिंगम, वृन्ताक, वङ्गण, अङ्गण, वेर, नीलवृषा, भाण्टिका, नीलकण्टका) ।

संस्कृतभाषामें	वार्त्ताकु ।
हिंदीभाषामें	बैंगन, भण्टा, भटा ।
बंगभाषामें	बेगुनगाछ ।
मराठीभाषामें	वांगे ।
गुजरातीभाषामें	रिंगणा, रिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामें	बदने ।
तैलिङ्गीभाषामें	वकाया, वङ्कणहिरिवगु ।
औत्कलीभाषामें	वाइगुण ।
तामिलीभाषामें	कुठिरेकइ ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्रिंजल् । Bringle
लैटिन्भाषामें	सोलेनमेलजीना । Solanum Melongena
फारसीभाषामें	बादंगान् ।
अरबीभाषामें	बाद्जान् ।

अथ शाकगुणाः ।

वार्त्ताकीकटुकारुच्यामधुरापित्तनाशिनी ।
बलपुष्टिकरीहृद्यागुरुर्वातेपुनिन्दिता ॥ (रा०नि०)

अर्थ-बैंगन-कटु, रुचिकारक, मधुर, पित्तनाशक, बलकारक, पुष्टिजनक, हृदयको हितकारी, भारी और वातरोगमें निन्दितहै ।

अन्यच्च ।

निद्राकरंप्रीतिकरंगुरुस्यात्सवातलंकासविकारकारि ।

श्रेष्ठदीर्घंकफवर्द्धनश्वसश्वासकासारुचिवर्द्धनश्च॥(हा.)

अर्थ-बैंगन-निद्राजनक, प्रीतिकारक, भारी, खारी, लामैंके विकारोंको करनेवाला तथा कफ, श्वास, खाँसी और अरुचिको बढानेवाला है । लम्बा बैंगन श्रेष्ठ होता है ।

॥ पद्य ।

अग्निप्रदामारुतनाशिनीचशुक्रप्रदाशोणितवर्द्धिनीच ।
हृल्लासकासारुचिनाशिनीचवार्त्ताकुरेषागुणसंप्रयुक्ता॥

अर्थ-बैंगन-अग्निवर्द्धक, वातविनाशक, शुक्रजनक, शोणितवर्द्धक तथा हृल्लास, खाँसी और अरुचिको दूर करनेवाला है ।

बालाकफपित्तघ्नीपक्वासक्षारपित्तला । सदाफलात्रिदोष-
घ्नीरक्तपित्तप्रसादनी ॥ अङ्गारपक्वावार्त्ताकु: किञ्चित्पित्तक-
रीमता । कफमेदोऽनिलहरासरालघुतरापरा ॥ (रा०१०)

अर्थ-कच्चा बैंगन-कफपित्तनाशक और पका बैंगन-क्षारयुक्त और पित्तल है । सदाफल बैंगन-त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तको निर्मल करनेवाला है । अङ्गारेपै भुना हुआ बैंगन [बैंगनका भुर्ता]-किञ्चित् पित्तकारक, कफ, मेद और वातविनाशक है, सारक और लघुतर है ।

अन्यच्च ।

वृन्ताककटुतिक्तमुष्णमधुरक्षारक्षुधादीपन हृद्यंरुच्यम-
पित्तलकफमरुज्जित्सर्वशाकोत्तमम् ॥ स्थाल्यंकफवातहा-
किंचिद्धृद्धेन्तुमदीपन तिक्तोष्णमधुरंतथाकटुरसमीष-
त्पित्तप्रदम ॥ (त्रि०)

अर्थ-बैंगन-कटु, तिक्त, गरम, मधुर, क्षार, क्षुधाको दीपन करनेवाला, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, अपित्तल, कफवातनाशक और सर्व शाकोंमें उत्तम है । और किसी आचार्य के मत से कफवातनाशक, रुचिकारक, अग्निवर्द्धक तिक्त, गरम मधुर कटुरसान्वित और किञ्चित् पित्तको कुपित करते हैं ।

अन्यच्च ।

वृन्ताकंस्वादुतीक्ष्णोष्णंकटुपाकमपित्तलम् । ज्वरवातबला-
सघ्नंदीपनंशुक्रलंलघु ॥ तद्बालंकफपित्तघ्नंवृद्धंपित्तकरंगुरु ।

वृन्ताकपित्तलकिंचिदङ्गारपरिपाचितम्॥ कफमेदोनिलामन्नमत्यन्तलघुदीपनम् । तदेवहिगुरुस्निग्धंसतैललवणान्वितम् ॥ अपरंश्वेतवृन्ताकंकुक्कुटाण्डसमंभवेत् । तदर्शःसुविशेषेणहितंहीनश्चपूर्वतः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बेगन-स्वादु, तीक्ष्ण, गरम, पाकमें कटु, अपित्तल, ज्वर, वात और कफनाशक, दीपन, शुक्रजनक और हलका है, कच्चा बेगन-कफपित्तनाशक, पका बेगन-पित्तकारक और भारीहै । अगारोंपे भुनाहुआ बैंगन किंचित् पित्तकारक है तथा कफ, मेद और वातनाशक और अत्यन्त हलका तथा दीपन है वही अगारोंपे भुनाहुआ बैंगन-तेल और लवणयुक्त, भारी और स्निग्ध है । और दूसरा सफेद रंगका बैंगन मुरगेकी अंडेकी समान होता है वह सफेद बैंगन बवासीरवाले मनुष्योंको विशेष करके हितकारी है और पहिले बैंगनोंसे गुणोंमें हीन है । बैंगन सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

गोराणीनामानि ।

गोराणीदृढवीजाचनिशाध्यन्धीचवाकुची ।
सुशाकावक्रशिम्बीचगोरक्षफलिनीस्मृता ॥

अर्थ-गोराणी, दृढवीजा, निशाध्यन्धी, वाकुची, सुशाका, वक्रशिम्बी, गोरक्षफलिनी ।

संस्कृतभाषामें	गोराणी ।
हिन्दीभाषामें	ग्वारकी फली ।
मराठीभाषामें	गोवारीच्या शेंगा, बावच्या ।
गुजरातीभाषामें	गुवार ।
तैलिङ्गीभाषामें	गोरचिक्कुडु ।
लैटिन्भाषामें	सायेमोपसिस् सोरेलियाइडिस् । Cyamopsis Psoralioide

अस्या गुणाः ।

वाकुचिकाशिम्बिरूक्षावातलामधुरागुरुः ।
सराकफकरीचाग्निदीपनीपित्तनाशिनी ॥ (नि० र०)
"पत्रमस्यानिशाध्यन्धपित्तनाशकरपरम" ।

अर्थ-गुवारकी फली-रूखी, बादी, मधुर, भारी, दस्तावर, कफकारक,

अग्निमर्दीनक और पित्तनाशक है। गुवारके पत्ते-रतौंधेको दूर करनेवाले और पित्तको हरनेवाले हैं।

द्विविधनिष्पावीनामानि।

निष्पावीग्रामजादिः स्यात्फलिनीनखपूर्विका।
मण्डपाफलिकाशिम्बीज्ञेयागुच्छफलाचसा॥

अर्थ-निष्पावी, ग्रामजा, फलिनी, नखपूर्विका, मण्डपा, फलिका, शिम्बी, गुच्छफला (विशालफलिका, निष्पावि, शिम्बि)।

शुभ्रनिष्पावीनामानि।

अन्यांगुलिफलाचैवनखनिष्पाविकास्मृता।
वृत्तनिष्पाविकाग्राम्यानखपुञ्जफलाशना॥

अर्थ-अङ्गुलिफला, नखनिष्पाविका, वृत्तनिष्पाविका, ग्राम्या, नखपुञ्जफला, अशना (कपिलफलपुञ्जा)।

संस्कृतभाषामें	निष्पावी, अंगुलिफला।
हिन्दीभाषामें	सेम, सर्वा।
बंगभाषामें	सीम, बरवटी।
मराठीभाषामें	पेवटा, लघु पेवटा, थोर पेवटा, वालपापडी।
गुजरातीभाषामें	वालोल, पापडी।
तामिलभाषामें	मोचैकोटे।
तैलङ्गीभाषामें	चिक्कुडु, अनुमुलु।
इंग्रेजीभाषामें	कन्ट्री बीन, डोलिकोस। Flat Leguminous Bean,
लैटिनभाषामें	डोलिकोस लबलब। Dolichos lablab
अरबीभाषामें	फिग।

द्विविधनिष्पावीगुणाः।

निष्पावौद्वौ हरिद्रुर्भाकषायौमधुरौरसौ।
कण्ठशुद्धिकरौमेध्यौदीपनौकफनाशकौ॥(शा०नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी (हरी और सफेद) निष्पावी-कषैली, मधुर कण्ठशोधक, मेधाजनक, दीपक और कफनाशक है।

अन्यच्च।

ग्रामजाऽनिलकृद्गुर्वीमधुरामधुरा। सुनिष्पावकण्ठशु-

छ्दिकारिणीग्राहिणीमता ॥अग्निदीप्तिकरीचैवकफपित्तविनाशका । बृहत्तुग्रामजारुच्यावातलाचाग्निदीपनी ।मुखप्रियाचसंप्रोक्ताशाकज्ञानविशारदैः ॥ कृष्णातुग्रामजाकण्ठ्यामेध्याचाग्निप्रदीपनी।तुवराचरसेमाध्वीरुच्याचग्राहिणीमता ॥ प्रोक्ताङ्गुलिफलावातकारिणीकफकारिणी । विषनाशकरीप्रोक्तागुणास्त्वन्येतुकृष्णवत । पीतायास्त्वधिकाज्ञेयाःपूर्ववैद्यैर्विचारिभिः । (इति रत्नाकरे)

अर्थ-निष्पावी-बादी, रुचिकारक, कषेली, मधुर, मुखप्रिय, कण्ठको शुद्ध करनेवाली, मलरोधक, अग्निप्रदीपक और कफ तथा पित्तविनाशक है। बडी निष्पावी-रुचिकारक, बादी, अग्निप्रदीपक और मुखप्रिय है । काली निष्पावी-कण्ठको हितकारी, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, कषेली, मधुर, रुचिकारक और मलरोधक है। सफेद निष्पावी-बादी, कफकारक, विषविनाशक और शेष गुण काली निष्पावीकी समान जानने । पीली निष्पावीके गुण सर्वनिष्पावियोंसे अधिक हैं ।

शिम्बीनामानि ।

असिशिम्बीखड्गशिम्बीशिबनीनीलशिम्बिका ।
महाशिम्बिबृहच्छिम्बीस्थूलशिम्बीचशिम्बिका ॥

अर्थ-असिशिम्बी, खड्गशिम्बी, शिम्बिनी, नीलशिम्बिका, महाशिम्बी, बृहच्छिम्बी, स्थूलशिंबी, शिम्बिका ।

कोलशिम्बीनामानि ।

कोलशिम्बीकृष्णफलाखड्गासूकरपादिका ।
शिम्बीकुशिम्बीकुत्साग्रशिम्बीपुस्तकशिम्बिका ॥

अर्थ-कोलशिम्बी, कृष्णफला, खड्गा, सूकरपादिका, शिम्बी, कुशिम्बी, कुत्साग्रशिम्बी, पुस्तकशिम्बिका (पटपकपादिका) ।

संस्कृतभाषामें	खड्गशिम्बी, कोलशिम्बी ।
हिन्दीभाषामें	सेम, सुअरासेम, गोजियासेम ।
बंगभाषामें	शेमगाछ ।
मराठीभाषामें	खडसावळ, आवईची शेंग ।

गुजरातीभाषामें पापोडिया, वगवाली ।
अंग्रेजीभाषामें फालचिन्दु ।
लैटिनभाषामें केनावेलिया एन् सिफोर्मिस् ।
Canavalia Ensiformis
अरबीभाषामें गलापुल्लोट ।

द्विविधशिम्बीगुणाः ।

शिम्बिद्वयञ्चमधुरंरसेपाकेहिमंगुरु ।
बल्यंदाहहरंप्रोक्तंश्लेष्मलंवातपित्तजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी सेम-मधुर, पाकमेंभी मधुर, शीतल, भारी, बलकारक, दाहनाशक, कफकारक और वातपित्तको जीतनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कृष्णाशिम्बवल्लीचोष्णागुर्वीनिद्रारुचिप्रदा ।
शुक्राग्निमांद्यजननीमलस्तम्भकरीमता ॥
तुवरामादकावातकफहृत्पित्तलामता । (नि० र०)

अर्थ-काली सेम-गरम, भारी, निद्राकारक, रुचिकारक, शुक्रजनक, मन्दाग्निजनक, मलस्तम्भक, कसैली मदकारक, वातकफनाशक और पित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

असितशिम्बीतुमधुराकषायाश्लेष्मपित्तजित् ।
व्रणदोषापहन्त्रीचशीतलारुचिदीपनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सेम-मधुर, कसैली, कफपित्तनाशक, व्रणके विकारोंको हरनेवाली, शीतल और रुचिको दीपन करनेवाली है ।

कोलशिम्बीगुणाः ।

कोलशिम्बीसमीरघ्नीगुर्वीरुक्षाकफपित्तहृत् ।
शुक्राग्निमांद्यकृत्तृष्णावान्तिकृद्धल्लिगुरु ॥

अर्थ-कुलथसेम-वातनाशक, भारी, रूखी, कफपित्तनाशक, शुक्र और अग्निको मंद करनेवाली, तृषा, वान्तिकारक, बलकारक और भारी है ।

कृष्णकृलशाकगुणाः ।

दधिपुष्पीतुमधुरागौल्यापथ्यारसादिकाषपा ।

खट्वापादीवश्याकाकाकोलपालिकानवधा ॥

अर्थ-दधिपुष्पी, खट्वाङ्गी, खट्वा, पर्य्यंकपादिका, कूपा, खट्वापादी, वश्या, काकाकोलपालिका ।

संस्कृतभाषामें	दधिपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	करियसेम, चमरियासेम ।
वंगभाषामें	कट्टराशिम् ।
मराठीभाषामें	गोडी कोंहळी ।
गुजरातीभाषामें	अडद्वेल्य-कागडोलिया ।
कर्णाटकीभाषामें	कूगरी ।
लैटिनभाषामें	मुक्कुनामोनोंस्परमा । Mucuna Monosperma

अस्या गुणाः ।

दधिपुष्पीकटुमधुराशिशिरासन्तापपित्तदोषघ्नी ।
वातामयदोषकरीगुरुस्तथारोचकघ्नीच ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चमरियासेम-कटु, मधुर, शीतल, सन्तापनिवारक, पित्तनाशक, वातरोगकारक, भारी और अरुचिको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दधिपुष्पीतुमधुराकट्वीशीतोष्णदामता । वृष्याहृद्यागुरुर्ज्ञेयामलस्तम्भाग्निमान्द्यकृत् ॥ रुचिशुक्रप्रदाप्रोक्तासन्तापारोचकाञ्जयेत् । त्रिदोषशमनीप्रोक्तापूर्वैर्वैद्यैर्मनीषिभिः ॥ गुरुहृद्यंबीजमस्यारुचिदस्तम्भकमतम् । कफाग्निमांद्यकरणवातपित्तचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-दधिपुष्पी-करियासेम-मधुर, कटु, शीतल, गरम, वृष्य, हृदयको हितकारी, भारी, मलस्तम्भक, मन्दाग्निकारक, रुचिकारक, शुक्रकारक, सन्तापनाशक, अरुचिको दूर करनेवाली और त्रिदोषनाशक है । इसके बीज-भारी, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, मलस्तम्भक, कफकारक, अग्निमांद्यकारक तथा वात और पित्तको दूर करे है ।

सौभाञ्जनशिंबीगुणाः ।

सौभाञ्जनफलस्वादुकषायकफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपनपरम ॥ (भा०प्र०)

गुजरातीभाषामें   पापोडियां, तरवारसी ।

बंगालीभाषामें   कारचिकड़ु ।

इंग्रेजीभाषामें   केनावेलिया एन् सिफोर्मिस ।

Canavalia Ensiformis

अरबीभाषामें   गराफुल्गोट ।

द्विविधशिम्बीगुणाः ।

शिम्बिद्वयंचमधुरंरसेपाकेहिमंगुरु ।

बल्यंदाहहरंप्रोक्तंश्लेष्मलंवातपित्तजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी सेम-मधुर, पाकमेंभी मधुर, शीतल, भारी, बलकारक, दाहनाशक, कफकारक और वातपित्तको जीतनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कृष्णासर्वबलीचोष्णागुर्वीबल्यारुचिप्रदा ।

शुक्राग्निमांद्यजननीमलस्तम्भकरीमता ॥

तुवरामादकावातकफहृत्पित्तलामता । (नि०र०)

अर्थ-काली सेम-गरम, भारी, बलकारक, रुचिकारक, शुक्रजनक, मंदाग्निजनक, मलस्तम्भक, कषैली मदकारक, वातकफनाशक और पित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

असिशिम्बीतुमधुराकषायाश्लेष्मपित्तजित् ।

व्रणदोषापहंत्रीचशीतलारुचिदीपनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सेम-मधुर, कषैली, कफपित्तनाशक, व्रणके विकारोंको हरनेवाली, शीतल और रुचिको दीपन करनेवाली है ।

कोलशिम्बीगुणाः ।

कोलशिम्बीसमीरघ्नीगुर्वीरूक्षाकफपित्तहृत् ।

शुक्राग्निमांद्यकृद्रूक्षापाकेविदाहिनीगुरुः ॥

अर्थ-कुलथीसेम वातनाशक, भारी, रूक्ष, कफपित्तनाशक, शुक्र और मंदाग्नि करनेवाली, रूक्ष, विदाहकारक, पाकमें विदाहि और भारी है ।

दधिपुष्पीनामानि ।

दधिपुष्पीनाम्नाशिम्बिःपर्यायारुपादिकास्तथा ।

खट्वापादीवश्याकाकाकोलपालिकानवधा ॥

अर्थ-दधिपुष्पी, खट्वाङ्गी, खट्वा, पर्य्यंकपादिका, कूपा, खट्वापादी, वश्या, काकाकोलपालिका ।

संस्कृतभाषामें	दधिपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	करियसेम, चमरियासेम ।
बंगभाषामें	कट्टराशिम् ।
मराठीभाषामें	गोडी कोंहळी ।
गुजरातीभाषामें	अडदवेल्य-कागडोलिया ।
कर्णाटकीभाषामें	कूगरी ।
लैटिनभाषामें	मुक्कुनामोनोंस्परमा । Mucuna Monosperma

अस्या गुणाः ।

दधिपुष्पीकटुमधुराशिशिरासन्तापपित्तदोषघ्नी ।
वातामयदोषकरीगुरुस्तथारोचकघ्नीच ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चमरियासेम-कटु, मधुर, शीतल, सन्तापनिवारक, पित्तनाशक, वातरोगकारक, भारी और अरुचिको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दधिपुष्पीतुमधुराकट्वीशीतोष्णदामता । वृष्याहृद्यागुरु-
र्ज्ञेयामलस्तम्भाग्निमांद्यकृत् ॥ रुचिशुक्रप्रदाप्रोक्तासन्ता-
पारोचकाञ्जयेत् । त्रिदोषशमनीप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥
गुरुहृद्यंबीजमस्यारुचिदंस्तम्भकमतम् । कफाग्निमाद्य-
करणंवातपित्तचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-दधिपुष्पी-करियासेम-मधुर, कटु, शीतल, गरम, वृष्य, हृदयको हितकारी, भारी, मलस्तम्भक, मन्दाग्निकारक, रुचिकारक, शुक्रकारक, सन्तापनाशक, अरुचिको दूर करनेवाली और त्रिदोषनाशक है । इसके बीज-भारी, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, मलस्तम्भक, कफकारक, अग्निमाद्यकारक तथा वात और पित्तको दूर करे है ।

सौभाञ्जनशिंबीगुणाः ।

सौभाञ्जनफलस्वादुकषायकफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्मघ्नदीपनपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-नाहिननेरी पत्ती-स्वादिष्ट, चरपरी, कफपित्तनाशक तथा शूल, पेट रोग, श्वास और गुल्मको दूर करे है तथा दीपन है ।

डोडिकानामगुणाः ।

डोडिकाविषमुष्टिश्चडोडीत्यपिसुमुष्टिका ।
डोडिकापुष्टिदावृष्यारुच्यावह्निप्रदालघुः ॥
हन्तिपित्तकफार्शांसिकृमिगुल्मविषामयान् । (भा प्र.)

अर्थ-डोडिका, विषमुष्टि, डोडी, सुमुष्टिका । डोडी अर्थात् फांडभा- पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, अग्निजनक, हलकी तथा पित्त, कफ, बवासीर, कृमि, गुल्म और विषके रोगोंको दूर करे है ।

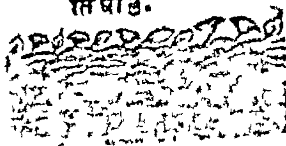
मुनिनिम्बीगुणाः ।

मुनिनिम्बीसमाप्रोक्ताबुद्धिदारुचिदालघुः । पाककालेतु मधुरातिक्ताचैवस्मृतिप्रदा ॥ त्रिदोषशूलकफहृत्पाण्डुरोग- विषापहा । शोफगुल्महराप्रोक्तामापध्नारूक्षवातला ॥ (नि.र.)

अर्थ-अगस्तियाकी पत्ती सारक, बुद्धिदायक, हलकी, पकनेमें मधुर, चरपरी, स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोथ और गुल्मको हरनेवाली है । यही पत्ती हूं पत्ती-रूखी और वादी करे है ।

अथाद्रकनामानि ।

ति पाते.



शृङ्गाटकजलपन्वनिरोणपन्लमित्यपि ।

अर्थ अदरख, [illegible], [illegible] ([illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ॥

संस्कृतभाषामें	शृङ्गाटक ।
हिन्दीभाषामें	सिंघाडे ।
बंगभाषामें	पाणिफल, सिंघाडे ।
मराठीभाषामें	शिंगाडे ।
गुजरातीभाषामें	शिंगोडा ।
कर्णाटकीभाषामें	सिंघाडे ।
तैलिङ्गीभाषामें	परिकेगड्डु ।
इंग्रेजीभाषामें	वाटरकेलट्राप । Water Caltrop
लैटिन्भाषामें	ट्रापावाईस्पाईनोज़ । Trapa Bispinosa
फारसीभाषामें	सुरजान् ।

अस्य गुणाः ।

शृङ्गाटकंहिमंस्वादुगुरुवृष्यंकषायकम् ।
ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मप्रदंपित्तास्रदाहनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–सिंघाडे–शीतल, स्वादिष्ठ, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, कषैले, मलरोधक, शुक्रजनक, वातकारक, कफकारक तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

शृङ्गाटकं शोणितपित्तहारीलघुःखरोवृष्यतमोविशेषात् ।
त्रिदोषतापश्रमशोफहारीरुचिप्रदोमेहनदार्ढ्यहेतुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ–सिंघाडे–रक्तपित्तनाशक, हलके, खर, वृष्यतम, त्रिदोषनाशक, तापनिवारक, श्रमहारक, शोफनाशक, रुचिकारक और लिंगको दृढकरनेवाले हैं ।

अन्यच्च ।

शृङ्गाटंगुरुविष्टम्भिशीतलंरक्तपित्तनुत् ॥ (रा०व०)

अर्थ–सिंघाडे–भारी, विष्टम्भकारक, शीतल और रक्तपित्तनाशक हैं ।

अपिच ।

शृङ्गाटकश्चातिवृष्योलघुर्ग्राहीरुचिप्रदः । शुक्रलोवातकफकृद्गुरुर्मेहनदार्ढ्यकृत् ॥ तुवरोमधुरःशीतस्तर्पणःस्वादुपित्तजित् । दाहत्रिदोषमेहघ्नोरक्तदोषश्रमापहः । शोफसन्तापहाप्रोक्तःपूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः ॥ (नि०र०)

अर्थ-सिंघाड़े मलस्तम्भक, वृष्य, हलके, मलरोधक, रुचिकारक, शुक्रजनक, वात और कफकारी, भारी, रुधिरको इकट्ठा करनेवाले, कसैले, मधुर, शीतल, तृप्तिकारक, स्वादिष्ट, पित्तनाशक तथा दाह, त्रिदोष, प्रमेह, रुधिरविकार, भ्रम, सूजन और सन्तापको हरनेवाले हैं।

विवरण-सिंघाड़ेकी बेल बड़े २ तालाबोंमें होती है इनमें तीन धारवाले फल लगते हैं इसके ऊपर तीन कांटोंकी समान अणी होती है इनमेंसे सफेद गिरी निकलती है इस गिरीके शाकादि पदार्थ बनाते हैं और इसी गिरीको सुखाकर इसका चून बनाते हैं उस चूनसेभी अनेक वस्तु बनाई जाती हैं इस देशमें सिंघाड़ेका चून फलाहार होगया है।

अथ नालशाकम्।

सर्षपनालगुणाः।

तीक्ष्णोष्णंसार्षपनालंवातश्लेष्मव्रणापहम्।
कण्डूकिमिहरंदद्रुकुष्ठमण्डलनाशकम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरसोंकी नाल-तीक्ष्ण, गरम, हरिताकक तथा वात, श्लेष्म, व्रण, खाज, कृमि, दद्रु और कुष्ठका नाशक है।

सूरणनालगुणाः।

नालंतुसूरणंरुच्यंकफवातहरंलघु।
अर्शसांतुविशेषेणहितंकामाग्निदीपनम् ॥ (म०नि०)

अर्थ-जमीकंदकी नाल-रुचिकारी, कफ वातविनाशक, हलकी, बल, अग्निदीपक और विशेष करके अर्शरोगमें हितकारी है।

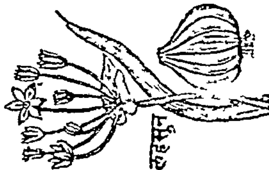
अथ कन्दशाकम्।

[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥

अर्थ-गरम, मधुर, भारी, [illegible]

वातारि, दीर्घपत्रक (रसुन गृञ्जन, रसोनक, कटुकन्द, राहूच्छिष्ट, राहूत्सृष्ट, भूतघ्न उग्रगन्ध, यवनेष्ट)।



संस्कृतभाषामें	रसोन।
हिन्दीभाषामें	लशुन, लहसन, कांदा।
बंगभाषामें	लसुन।
मराठीभाषामें	पाढरी लसूण, ताम्बडी लसूण।
गुजरातीभाषामें	लसण।
कर्णाटकीभाषामें	बिलीयवेल्लुल्ली।
तैलिङ्गीभाषामें	तेल्लाउल्लीगाडा।
तामिलीभाषामें	वल्लइपाण्डु।
इंग्रेजीभाषामें	गालिकरूट्। Garlic root
लेटिन्भाषामें	एलियमसेटिव। Allium Sativum
फारसीभाषामें	सीर।
अरबीभाषामें	सुम ईसकुर्दियून सुमलईयाग।

अस्यगुणा।

पञ्चभिश्चरसैर्युक्तोरसेनाम्लेनवर्जित। तस्माद्रसोनइत्युक्तोद्रव्याणांगुणवेदिभि॥ कटुकश्चापिमूलेपुतिक्त.पत्रेपु संस्थित। नालेकषायउद्दिष्टोनालाग्रेलवण स्मृत॥बीजे तुमधुर प्रोक्तोरसस्तद्गुणवेदिभि। रसोनोबृंहणोवृष्योस्निग्धोष्ण पाचन.सर॥ रसेपाकेचकटुकस्तीक्ष्णोमधुरकोमत.॥भग्नसन्धानकृत्कण्ठ्योगुरु पित्तास्रवृद्धिद॥बलवर्णकरोमेधाहितोनेत्र्योरसायनः॥हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूल-

विबन्धगुल्मारुचिकासशोफान् ॥ दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तुसमीरणश्वासकफांश्च हन्ति । मद्यंमांसंतथाम्लंचहितंलशुनसेविनाम् । व्यायाममातपंरोषमतिनीरंपयोगुडम् ॥ रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरन्तरम् (भा० प्र०)

अर्थ-लहसन-पांच रसयुक्त है और अम्लरस करके वर्जित है इसकारण इसको पण्डित रसोन अर्थात् रसोन कहते हैं। इसकी जड़में चरपरा रस, पत्तोंमें कड़वा रस, नालमें कषैला रस, नालके अगले भागमें लवणरस और बीजोंमें मधुर रस रहता है। लहसुन-पुष्टिकारक, वृष्य, स्निग्ध, उष्ण, पाचक, सारक, रस और पाकमें चरपरा, तीक्ष्ण, मधुर, भग्नसन्धानकारक, कण्ठको हितकारी, भारी, रक्तपित्तको बढानेवाली, बलकारक वर्णको सुन्दरकरनेवाली, मेधा तथा नेत्रोंको हितकारी और रसायन है। तथा हृद्रोग, जीर्णज्वर, कुक्षिशूल, विबन्ध, गुल्म, अरुचि, खांसी, सूजन, बवासीर, कोढ, मन्दाग्नि, कृमि, वात, श्वास और कफको हरनेवाली है, लहसन सेवन करनेवाले मनुष्यको मद्य, मांस और अम्ल (खटाई) हितकारी है। व्यायाम (कसरत), धूपमें फिरना, क्रोध करना, अत्यन्त जल पीना, दूध और गुड का लहसुन भक्षण करनेवाले मनुष्यको निरन्तर त्यागने चाहिये।

अन्यच्च।

रसोनरुष्णः कटुपिच्छिलश्च स्निग्धोगुरुः स्वादुरसोऽथबल्यः। वृष्यः सुमेधास्वरवर्णकारी भग्नास्थिसन्धानकरः सुतीक्ष्णः (रा.नि.

अर्थ-लहसुन-गरम, चरपरा, पिच्छिल, स्निग्ध भारी, स्वादिष्ट, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, मेधा तथा स्वरको उत्तम करनेवाली, वर्णको सुन्दर करनेवाली, भग्नसन्धानकारक और तीक्ष्ण है।

अन्यच्च।

रसोन सर्वांगसमस्तनिकराभिनवः सदावृष्यः स्निग्धोगुरुः कृमिहरोऽग्निकरः । कफश्वासगुल्मश्वसनार्तिनिवर्तकः शिशिरः प्रमेहार्शःक्षयपुरोदरकण्ठरोगहारी ॥ ग्रसनोत्तमोऽकृमिसुगन्धिलशुनं ज्वरतापशोषापहारि प्रशस्तः ।

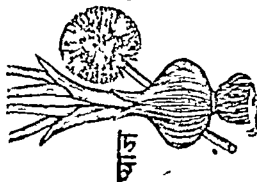
अर्थ-लहसन-शरीरमें सर्वप्रकारकी फैलीहुई वातकी पीडाका नाश करनेवाली, सारक, वृष्य, स्निग्ध, भारी, अरुचिको दूर करनेवाली, खाँसीको हरनेवाली, ज्वरका नाश करनेवाली तथा कफ, श्वास और गुल्मका विनाश करनेवाली, केशोंको हितकारी, कृमिनाशक, प्रमेह, बवासीर, कोढ और सूजनको क्षय करनेवाली, गरम, भग्नसन्धानकारक, रक्तपित्तको कुपित-करनेवाली, शूलको शान्ति करनेवाली और जराव्याधिका नाश करे है।

पलाण्डुनामानि।

पलाण्डुर्यवनेष्टश्चदुर्गन्धोमुखदूषक ।

अर्थ-पलाण्डु, यवनेष्ट, दुर्गन्ध, मुखदूषक (सुकन्दक, निकेतन, नीच-भोज्य, लोहितकन्द, तीक्ष्णकन्द, उष्ण, मुखदूषण, शूद्रप्रिय, दीपन, कृमिघ्न, मुखगन्धक, बहुपत्र, विश्वगन्ध, रोचन, पलाण्डु, सुकन्द, सुकन्दक, मुकुन्दक)।

राजपलाण्डुनामानि।



अन्योराजपलाण्डु स्याद्यवनेष्टोनृपाह्वय:। राजप्रियोमहा-कन्दोदीर्घपत्रश्चरोचक:॥ नृपेष्टोनृपकन्दश्चमहाकन्दोनृप-प्रिय ।रक्तकन्दश्चराजेष्टोनामान्यत्रत्रयोदश ॥

अर्थ-राजपलाण्डु, यवनेष्ट, नृपाह्वय, राजप्रिय, महाकन्द, दीर्घपत्र, रोचक, नृपेष्ट, नृपकन्द, महाकन्द, नृपप्रिय, रक्तकन्द, राजेष्ट।

संस्कृतभाषामें	पलाण्डु, राजपलाण्डु।
हिन्दीभाषामें	प्याज, लालप्याज।
बंगभाषामें	पयाज, लालपेयाज।
मराठीभाषामें	पांढराकांदा, लालकांदा, पातीचा कांदा।

गुजराथीभाषामें डुंगरी ।
कर्णाटकीभाषामें नीरुळ्ळी उल्लि-ईरुळि ।
मराठीभाषामें कांदा ।
तामिलभाषामें वेङ्गायम् ।
इंग्रेजीभाषामें कामन् ओनियन । (I lh)
ल्याटिनभाषामें एलीयमसेपा । Allium cepa
फारसीभाषामें प्याज ।
अरबीभाषामें बसल ।

पलाण्डुगुणाः ।

पलाण्डुः कटुको बल्यः कफपित्तहरो गुरुः ।
वृष्यश्च रोचनः स्निग्धो वान्तिदोषविनाशनः ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-प्याज-चरपरा, बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वृष्य, रोचन, स्निग्ध और वमनके दोषको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पलाण्डुर्वातकफहा शुक्रलः शूलगुल्मनुत् । (रा॰ नि॰)

अर्थ-प्याज-वातकफनाशक, शुक्रजनक तथा शूल और गुल्मको नाश करे है ।

अन्यच्च ।

पलाण्डुस्तु गुणैर्ज्ञेयो रसोनसदृशो गुणैः ।
स्वादुः पाके रसेऽनुष्णः कफकृन्नातिपित्तलः ॥
हरते केवलं वातं बलवीर्यकरो गुरुः ॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-प्याजके गुण लहसुनके गुणोंके समान जानना । प्याज पाकमें और रसमें स्वादिष्ट, अनुष्ण, कफकारक, अल्प पित्तकारक और वातनाशक, बलकारी, वीर्यवर्धक और भारी है ।

पलाण्डुपत्रगुणाः ।

पलाण्डुर्यूषपत्रं स्याच्छिशिरः पित्तनाशनः ।
कफप्रदीपनश्चापि निद्राकृन्नाशनः ॥

अर्थ-प्याजका पत्ता-शीतल, पित्तनाशक, कफकारक, रुचिकारक और अग्निप्रदीपक है ।

अन्यच्च।

वक्ष्यतेनृपपलाण्डुलक्षणक्षारतीक्ष्णमधुरोरुचिप्रदः।
कण्ठशोपशमनोऽतिदीपनःश्लेष्मपित्तशमनोऽतिबृंहणः॥

अर्थ–लालप्याज–क्षार, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिकारक, कण्ठशोपको दूर करनेवाली, अत्यन्त दीपन, कफ पित्तनाशक और अत्यन्त बृंहण है।

पलाण्डुबीजगुणाः।

बीजपलाण्डोर्वृष्यस्याद्दन्तकीटप्रमेहजित्। (रत्नाकर)

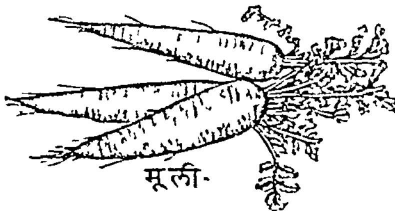
अर्थ–प्याजके बीज–वृष्य तथा दांतोंके कीडे और प्रमेहको दूर करनेवाले हैं।

मूलकनामानि।

मूलकहरिपर्णश्चभूमिकाक्षारएवच।
नीलकण्ठमहाकन्दंरुचिष्यहस्तिदन्तकम्॥

अर्थ–मूलक, हरिपर्ण, भूमिकाक्षार, नीलकण्ठ, महाकन्द, रुचिष्य, हस्तिदन्तक (राजालुक, करुकन्दक, हस्तिदन्त, मूलाह्व, दीर्घमूलक, दीर्घपत्रक, मूलक्षार, कन्दमूल, सित, शखमूल, रुचिर, दीर्घकन्दक, कुञ्जर, क्षारमूल, शिम्बी फल)

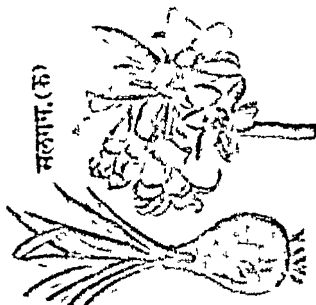
चाणक्यमूलकनामानि।

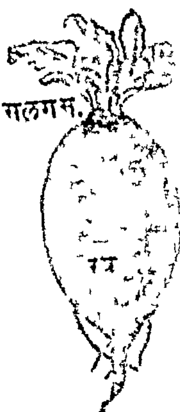


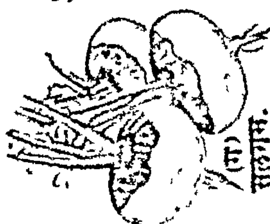
मूली.

चाणक्यमूलकचान्यद्वानेयविष्णुगुप्तकम्।
स्थूलमूलमहाकंदकौटिल्यमरुसम्भवम्॥
शालामर्कटकंमिश्रज्ञेयंनैवनवाभिधम्।

अर्थ-पाचकपथ्यक, मलेप, विष्णुप्रिय, स्थूलमूल, महाकन्द, शंखिन्य, मरणभव, शालामर्कट, दिध।







संस्कृतभाषामें	मूलक, शालामर्कट।
हिंदीभाषामें	मूली, सहिंजनी, मूला, मूलीकी वगैरे।
बंगभाषामें	मूला, कन्दमूली।
मराठीभाषामें	मुळा।
गुजरातीभाषामें	मूला, मूळाकंदी, मोगरी।
कर्णाटकी भाषामें	मूलंगी।
तैलंगीभाषामें	मुल्लंगि।
फारसीभाषामें	तुर्ब। [illegible]
अंग्रेजीभाषामें	रेडिश रूट। [illegible]

फारसीभाषामें तुख तुरमतुख ।
अरबीभाषामें फजल् वजरुल् ।

मूलकगुणा ।

मूलकतीक्ष्णमुष्णञ्चकटूष्णग्राहिदीपनम् ।
दुर्नामगुल्महृद्रोगवातघ्नरुचिदंगुरु ॥

अर्थ-मूली-तीक्ष्ण, गरम, कटु, उष्ण ग्राही, दीपन तथा ववासीर, गुल्म, हृदयरोग और वातका नाश करे है रुचिकारी और भारी है ।

चाणक्यमूलकगुणा ।

चाणक्यमूलकसोष्णकटुकरुच्यदीपनम् ।
कफवातक्रिमीन्गुल्मनाशयेद्ग्राहकगुरु ॥ (रा०नि०)

अर्थ-बडीमूली-गरम, चरपरी, रुचिकारक, दीपन, कफवातनाशक, कृमिघ्न, गुल्मनाशक, ग्राही और भारी है ।

अन्यच्च ।

लघुमूलकमुष्णस्याद्रुच्यलघुचपाचनम् । दोषत्रयहरस्वर्य्यंज्वरश्वासविनाशनम् ॥ नासिकाकण्ठरोगघ्ननयनामयनाशनम् । महत्तदेवरूक्षोष्णगुरुदोषत्रयप्रदम् ॥ स्नेहसिद्ध तदेवस्यादोषत्रयविनाशनम् । (भा०प्र०)

अर्थ-छोटी मूली-गरम, रुचिकारक, हलकी, पाचक, त्रिदोषनाशक, स्वरको शुद्ध करनेवाली तथा ज्वर, श्वास, नासिकारोग, कण्ठरोग और नेत्ररोगको दूर करे है । बडी मूली-रूखी, गरम, भारी, त्रिदोषनाशक । वही मूली तेलमें सिद्ध की हुई त्रिदोषनाशक होजाती है ।

अन्यच्च ।

मूलकगुरुविष्टम्भितीक्ष्णमामत्रिदोषकृत् । तदेवस्नेहपक्वचेत्कफकृद्वातपित्तजित ॥ शुष्कत्रिदोषशमनशोथघ्नगरजिल्लघु । तत्पुष्पकफपित्तघ्नतत्फलकफवातजित ॥(रा०नि०)

अर्थ-कच्ची मूली-भारी, विष्टम्भकारी, तीक्ष्ण और त्रिदोषजनक है । वही तेल घृतादिमें पकाई हुई-कफकारक और वातपित्तहारक होजाती है । सूखी मूली-त्रिदोषनाशक, शोथनिवारक, विषनाशक और हलकी है । मूलीके फूल-कफ पित्तनाशक और मूलीकी फली-कफवातनाशक है ।

अन्यच्च ।

बाल्यं मूलकमीषत्कटूष्णं रुचिप्रदम् । लघ्वग्निदीपकं हृ-
द्यं तीक्ष्णं तु पाचकं सरम् ॥ मधुरं ग्राहकं स्वल्पमूत्रदोषार्शना-
शनम् । गुल्मक्षयश्वासकासनेत्ररोगविनाशकम् ॥ नाभिशू-
लकफवातकण्ठरोगविनाशकम् । त्रिदोषदद्रुशूलमसृदाव-
र्त्तप्रणुत्परम् ॥ पीनसस्वरवर्णं च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ।
जीर्णमूलं चोष्णवीर्यं शोफश्च दाहपित्तकृत् ॥ रक्तदोषकरं चै-
व रूक्षपिच्छि परिकीर्त्तितम् । पक्वमूलं तु कटुकं चोष्णमभिरु-
चितम् ॥ भक्षितं भोजनात्पूर्वं पित्तदाहप्रकोपनम् । भोजनो-
त्तरवेलायां भक्षितं रुच्यदीपनम् ॥ तैलपक्वं मूलनाशं शूलहृद्-
द्रोगनाशकम् । किञ्चिदुष्णा मूलशिम्बी कफवातविनाशिनी ॥
मूलपुष्पं कफकरं पित्तकृत्परिकीर्त्तितम् । (रत्नाकर)

अर्थ-कच्ची मूली-चरपरी, गरम, रुचिकारक, हलकी, अग्निदी-पक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, पाचक, सारक, मधुर, ग्राही, थोडासा तथा मूत्रदोष, बवासीर, गुल्म, क्षय, श्वास, खांसी, नेत्ररोग, नाभिशूल, कफ वात, कण्ठरोग, त्रिदोष, दाद, शूल, उदावर्त, पीनस और स्वरभङ्ग नाश करती है । पुरानी मूली उष्णवीर्य तथा शोथ, दाह, पित्त और रुधिर विकारोंको उत्पन्न करती है । पकी मूली-चरपरी, गरम, अग्निकारक है, यह भोजनसे प्रथम खानेसे पित्त और दाहको कुपित करती है । भोजनके पीछे खायी हुई-पाचक रुचिकारी और हितकारक है । तेलमें पकाई हुई मूली-वातरोग, शूल और हृद्रोगका नाश करती है । मूलीकी फली-किञ्चित् गरम और कफ वातनाशक है । मूलीके फूल-कफकारक और पित्तकारक है ।

[illegible]

नागरमूलनमेलो गानागरसंज्ञकम् ॥

[illegible]

गृञ्जननामानि।

गृञ्जनशिखिमूलचयवनेष्टचवर्त्तुलम्।
ग्रन्थिमूलशिखाकन्दकन्दडिण्डीरमोदकम्॥

अर्थ-गृञ्जन, शिखिमूल, यवनेष्ट, वर्त्तुल, ग्रन्थिमूल, शिखाकन्द, कद, डिंडीरमोदक।

पिण्डमूलनमानि।



पिण्डमूलगजीडचपिण्डिकपिण्डमूलकम्।

अर्थ-पिण्डमूल, गजीड, पिण्डिक, पिण्डमूलक।

संस्कृतभापामें	गर्जर, गृञ्जन, पिण्डमूल।
हिन्दीभापामें	गाजर, जगली गाजर, गोलमूली।
वगभापामें	गाजर।
मराठीभापामें	गाजर, रानगाजर।
गुजरातीभापाम	गाजर, पतालुगाजर, अडवाउगाजर।
कर्णाटकीभापामें	सेठीमूल, चडिकेयरमूल्गी।
तैलिङ्गीभापामें	गृञ्जन।
इंग्रेजीभापामें	क्यारटरूट Carrotroot कारटसीड्स। Carrot-seeds
लेटिन्भापामें	डाक्सकेरोटा। Daucus carota
फारसीभापामें	जर्दक, गजर, गजरेदश्ति तुरुमेजर्दक।
अरबीभापामें	जजर, जजरेबीरं वजरुल्जजर।

गजरगुणा।

गाजरमधुरतीक्ष्णतिक्तोष्णदीपनलघु।
सग्राहिरक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गाजर-मधुर, तीक्ष्ण, कड़वी, गरम, दीपन, हलकी, मलरोधक तथा रक्तपित्त, बवासीर, संग्रहणी कफ, और वातको नाशकरे है ।

अन्यच्च ।

गाजरं मधुरं रुच्यं किञ्चित्कटु कफापहम् ।
आध्मानक्रिमिशूलघ्नं दाहपित्ततृषापहम् ॥ (शा०नि०)

अर्थ-गाजर-मधुर, रुचिकारक, किंचित् चरपरी, कफनाशक तथा आध्मान, कृमि, शूल, दाह, पित्त और तृषाको दूर करे है ।

गृञ्जनगुणाः ।

गृञ्जनं कटुकोष्णं हि कफवातरुजापहम् ।
रुच्यं दीपनं हृद्यं दुर्गन्धि गुल्मनाशनम् ॥

अर्थ-लालगाजर, चरपरी, गरम, कफवातरोगनाशक, रुचिकारक, दीपन, हृदयको हितकारी तथा दुर्गंधि और गुल्मका नाश करे है ।

पिण्डमूलगुणाः ।

पिण्डमूलं कटूष्णं च गुल्मवातादिदोषनुत् ।

अर्थ-गोलमूली-चरपरी, गरम तथा गुल्म और वातादि दोषोंको दूर करनेवाली है ।

सूरणकन्द ।

जिमीकन्द

सूरणः कन्द ओलश्च अर्शोघ्नोऽपि ॥

अर्थ-सूरण, जिमीकन्द, ओल, [illegible]

संस्कृतभाषामें	शूरण ।
हिन्दीभाषामें	सूरन, जिमीकन्द ।
वंगभाषामें	ओल ।
मराठीभाषामें	गोडा । सुरण खाजेरा सुरण ।
गुजरातीभाषामें	सूरण ।
कर्णाटकीभाषामें	सूरण
तैलिङ्गीभाषामें	मचाकन्दा, टोलकन्दा ।
तामिलीभाषामें	सूरण ।
लैटिन्भाषामें	एमोर्फाफेलस पेनिक्युलेटस । Amorphophallus (—paniculatus
फारसीभाषामें	ओल ।

अस्य गुणाः ।

सूरणोदीपनोरूक्ष·कषायःकण्डुकृत्कटुः । विष्टम्भीविशदोरुच्य·कफार्शःकृन्तनोलघुः ॥ विशेषादर्शसिपथ्यःप्लीहगुल्मविनाशन· । सर्वेषांकन्दशाकानांसूरणःश्रेष्ठउच्यते ॥ दद्रूणारक्तपित्तानांकुष्ठिनांनहितोहिस ।संधानोयोगसम्प्राप्तसूरणोगुणवत्तम ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–सूरण–जमीकन्द–रूखा, कषेला, खुजलीको करनेवाला, चरपरा विष्टम्भकारक, विशद, रुचिकारक, कफनाशक, बवासीरको दूर करनेवाला हलका, विशेषकरके अर्शरोगवालोंको हितकारी है तथा प्लीहा और गुल्मरोगोंका नाशकरे है यह दाद, रक्तपित्त और कुष्ठरोगवालोंको हितकारी नहीं है इसका सन्धान अधिक गुणकारी है ।

अन्यच्च ।

सूरणश्चकटुरुच्यदीपन·पाचन·कृमिकफानिलापहः ।
श्वासकासवमनार्शसांहर·शूलगुल्मशमनोस्त्रदोषकृत् ॥

अर्थ–जमीकन्द–चरपरा, रुचिकारक, दीपन, पाचक, कृमिन, कफवातनाशक तथा श्वास, खासी, वमन, बवासीर, शूल और गुल्मरोगको दूरकरेहै तथा रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है ।

सूरणोदीपनोरुच्य कफघ्नोविशदोलघु ।
विशेषादर्शसांपथ्योग्राम्यकन्दस्तुदोपल ॥

अर्थ-जमीकन्द-दीपन, रुचिकारक, कफनाशक, विशद, हलका, विष्टंभ कारक, अर्शरोगवालोंको पथ्य है और नगरका पैदा हुआ विशेष रोचनकर है।

वनसूरणनामानि।

वनकन्दः सुकन्दः स्याद्वन्योऽन्यश्चित्रकन्दकः।

अर्थ-वनकन्द सुकन्द, वन्य चित्रकन्दक (जिमीकन्द, वनकन्द, जंगली सूरण, वनज [illegible], वनओल)।

अस्य गुणाः।

तद्वद्वन्योवनकन्दः कफघ्नः पित्तरक्तकृत्।

अर्थ-जंगली सूरणके गुणभी सूरणहीके समान है, कफनाशक और पित्तकारक है।

अपरञ्च।

वनसूरणकोऽरुच्यः कटूष्णः कृमिनाशनः।

गुल्मशूलादिदोषघ्नः सदाग्निकदीपकः॥ (शा.नि.)

अर्थ-वनसूरण-अरुचिकारी, चरपरा, कृमिनाशक, गरम, गुल्मशूलादि दोषनाशक और अग्निको दीपन करता है।

रक्तालुनामानि।

रक्तालू रक्तपिण्डालू रक्तालू रक्तपिण्डकः।

लोहितो रक्तकन्दश्च लोहितालुः पदालुपः॥

अर्थ-रक्तालु, रक्तपिण्डालु, रक्तालु, रक्तपिण्डक, लोहित, रक्तकन्द, लोहितालु।

पिण्डालुनामानि।

श्वेतः पिण्डालुकः पिण्डकन्दो गोलकन्दकः।

कन्दग्रन्थिश्च पिण्डालुः पिच्छिलः स्यादुपकन्दकः॥

अर्थ-श्वेतपिण्डालुक, पिण्डकन्द, गोलकन्दक, कन्दग्रन्थि, पिण्डालु, पिच्छिल, उपकन्दक।

हिन्दीभाषामें — रतालू, पिंडालू।

गुजरातीभाषामें — रताळु, पिंडाळु, कोनफळ, [illegible]।

बंगभाषामें — लालपिंडालू, [illegible], कुर्मिहालु।

मराठीभाषामें	लाल रताळें, पादर रताळ ।
गुजरातीभाषामें	रतालु, शकरकन्द, श्वेतालु ।
कर्णाटकीभाषामें	केपिनेहंडल, विलयहेंडल ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिरगेड्डु ।
तामिलीभाषामें	यामस्कोल ।
औत्क०	घराअलु ।
इंग्रेजीभाषामें	स्वीट्पोटेटो Sweet potato
लैटिन्भाषामें	बटाटास् एस क्युलेटस् Batatas Esculatus
	व एडुलीस् B Edulis
फारसीभाषामें	जग्दाक लाहोरी ।

रक्तालुगुणाः ।

रक्तपिण्डालुकः शीतो मधुराम्लः श्रमापहः ।
पित्तदाहापहो वृष्यो बलपुष्टिकरो गुरुः ॥

अर्थ-रतालु-शीतल, मधुर, अम्ल, श्रमनाशक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, वृष्य, बलकारक, पुष्टिजनक और भारी है ।

पिण्डा [श्वेता] लुर्मधुरः शीतो मूत्रकृच्छ्रामयापहः ।
दाहशोषप्रमेहघ्नो वृष्यः सन्तर्पणो गुरुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पिंडालु-मधुर, शीतल, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, दाहनिवारक, शोषनाशक, प्रमेहको हरनेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक और भारी है ।

पिण्डालुकः कफकरो गुरुर्वातप्रकोपनः ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-पिंडालु-कफकारक, भारी और वातको कुपित करनेवाले हैं ।

आलुईगुणाः ।

राजालुभेदः सम्प्रोक्तश्चारुईइतिनामतः ।
मलावष्टम्भकः स्निग्धो जडो बलकरो मतः ।
कफनाशकरश्चैव तैलेपक्वो रुचिप्रदः ॥ (नि० र०) ॥

अर्थ-रतालुका भेद अरुई है । अरुई-मलस्तम्भक, स्निग्ध, जड, बलकारक, कफनाशक और यह तेलमें पकाहुई रुचिकारक है ।

गजयणालुनामानि ।

आलुकर्दीर्घनालश्चतीक्ष्णकन्दः सुकन्दकम् ।

महापत्रोऽल्पकन्दश्च हस्तिकर्णं च तत्स्मृतम् ॥

अर्थ-आरुक, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ।

संस्कृतभाषामें	गजकर्णालु ।
हिंदीभाषामें	गुरुबी आल ।
मराठीभाषामें	अळूपाला [illegible] ।
गुजरातीभाषामें	अळवी ।
कर्णाटीभाषामें	[illegible] ।
इंग्रेजीभाषामें	[illegible] । [illegible]
लेटिनभाषामें	[illegible] । [illegible]
अरबीभाषामें	[illegible] ।

[illegible] ।

गजकर्णस्तु तिक्तोष्णस्तथा पाके रसायनः । शीतज्वरहरः स्वादुः पार्श्वरुग् [illegible] कन्दकः ॥ पाण्डुरोगकृमिप्लीहगुल्मप्लीहानाहो दरापहः ग्रहणी अर्शोविकारघ्नो वनशूरणकन्दवत् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-[illegible] [illegible], पाण्डुरोग, [illegible], कृमि, [illegible], प्लीहा, [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible] है और [illegible] समान है ।

मुण्डालुनामानि ।

मुण्डालुर्मण्डपालुश्च दीर्घकन्दस्तु कन्दुकः ।

स्थूलकन्दो महाकन्दः स्यात्कन्दस्तनस्तथा ॥

अर्थ-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ।

मुण्डालुगुणाः ।

मुण्डालुः स्यान्मधुरः शिशिरः पित्तनाशनः ।

रुचिकृद्दाहशोषघ्नो [illegible] ॥

अर्थ-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ।

कासालुनामानि ।

कासालुःकासकन्दश्चकन्दालुश्चालुकश्चसः ।
आलुर्विशालपत्रश्चपत्रालुश्चेतिसप्तधा ॥

अर्थ-कासालु, कासकन्द, कन्दालु, आलुक, आलु, विशालपत्र, पत्रालु ।

कासालुगुणाः ।

कासालुरुग्रकण्डूतिविपश्लेष्मामयापहः ।
अरोचकहरःस्वादुःपथ्योदीपनकारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कासालु-उग्र कण्डूका हरनेवाला, विपघ्न, कफरोगनाशक, अरुचिको दूर करनेवाला, स्वादिष्ठ, पथ्य और अग्निको दीपन करैहै ।

अन्यच्च ।

कासालुककण्डुकरंमधुरपथ्यकारकम् ।
दीपनंरुचिदप्रोक्तकफवातरुजापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कासालु-कण्डूको उत्पन्न करनेवाला, मधुर, पथ्यकारक, दीपन, रुचिकारक तथा कफ और वातरोगका नाश करनेवाला है ।

फोंडालुनामानि ।

फोण्डालुर्लोहितालुश्चरक्तपत्रोमृदुच्छदः ॥

अर्थ-फोण्डालु, लोहितालु, रक्तपत्र, मृदुच्छद ।

फोण्डालुगुणाः ।

फोण्डालु श्लेष्मवातघ्नःकटूष्णोदीपनीयकः ॥

अर्थ-फोण्डालु-कफवातविनाशक, चरपरे, गरम और अग्निको दीपन करनेवाले हैं ।

पानीयालुनामानि ।

पानीयालुर्जलालुःस्यादनूपालुरवालुकः ।

अर्थ-पानीयालु, जलालु, अनूपालु, अवालुक ।

पानीयालुगुणाः ।

पानीयालुस्त्रिदोषघ्नः सन्तर्पणकरः परः ॥

अर्थ-पानीयालु-त्रिदोषनाशक और तृप्तिकारक है ।

महापत्रालुकश्चैव हस्तिकर्णश्च तत्स्मृतम् ॥

अर्थ-आलु, गजनाम, हस्तिकन्द, सुकन्द, महापत्रालु, हस्तिकर्ण।

संस्कृतभाषामें	गजकर्णालु ।
हिन्दीभाषामें	सुरणी, आलू ।
मराठीभाषामें	अळाचा कांदा ।
गुजराथीभाषामें	अरवी ।
बंगालीभाषामें	मानकचु ।
इंग्रेजीभाषामें	[illegible] ।
लेटिनभाषामें	[illegible] इण्डिकम् ।
अरबीभाषामें	[illegible] ।

गजकर्णालुगुणाः ।

गजकर्णालुरत्युष्णस्तथा वातकफापहः । शीतज्वरहरः स्वादुः पाके लघुस्तु कन्दकः ॥ पाण्डुशोथकृमिगुल्मप्लीहानाहोदरापहः । ग्रहण्यर्शोविकारघ्नो वनसूरणकन्दवत् ॥ ((भा.प्र.)

अर्थ-गजकर्ण-कन्दा, गरम, वातकफनाशक, शीतज्वरनाशक, स्वादु, पाकमें लघु तथा पाण्डुरोग, सूजन, कृमि, गुल्म, प्लीहा, अफारा, उदररोग, संग्रहणी और बवासीरको दूर करनेवाला है और सूरणके समान है ।

मुसलीकन्दनामानि ।

मुसलीकन्दः पाण्डुरो दीर्घकन्दस्तु मूलकन्दकः ।
स्थूलकन्दो महाकन्दः स्यात्सुकन्दश्च नन्तथा ॥

अर्थ-मुसली, [illegible]

तस्य गुणाः ।

मुसलीकन्दः स्यान्मधुरः शिशिरः पित्तनाशनः ।
रुचिकृद्धातुवृष्यो दाहशोषापहः ॥

अर्थ-मुसलीकन्द-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रुचिकारक, धातुवर्धक, वृष्य, दाह और शोषनाशक है ।

कासालुनामानि।

कासालुःकासकन्दश्चकन्दालुश्चालुकश्चसः।
आलुर्विशालपत्रश्चपत्रालुश्चेतिसप्तधा॥

अर्थ–कासालु, कासकन्द, कन्दालु, आलुक, आलु, विशालपत्र, पत्रालु।

कासालुगुणा।

कासालुरुग्रकण्डूतिविपश्लेष्मामयापह।
अरोचकहर·स्वादु पथ्योदीपनकारकः॥(रा० नि०)

अर्थ–कासालु–उग्र कण्डूका हरनेवाला, विपत्र, कफरोगनाशक, अरुचिको दूर करनेवाला, स्वादिष्ठ, पथ्य और अग्निको दीपन करैहै।

अन्यच्च।

कासालुककण्डुकरंमधुरंपथ्यकारकम्।
दीपनरुचिदप्रोक्तकफवातरुजापहम्॥(नि०र०)

अर्थ–कासालु–कण्डूको उत्पन्न करनेवाला, मधुर, पथ्यकारक, दीपन, रुचिकारक तथा कफ और वातरोगका नाश करनेवाला है।

फोंडालुनामानि।

फोण्डालुर्लोहितालुश्चरक्तपत्रोमृदुच्छद॑॥

अर्थ–फोण्डालु, लोहितालु, रक्तपत्र, मृदुच्छद।

फोण्डालुगुणा।

फोण्डालु श्लेष्मवातघ्नःकटूष्णोदीपनीयकः॥

अर्थ–फोण्डालु–कफवातविनाशक, चरपरे, गरम और अग्निको दीपन करनेवाले हैं।

पानीयालुनामानि।

पानीयालुर्जलालुःस्यादनूपालुरवालुक।

अर्थ–पानीयालु, जलालु, अनूपालु, अवालुक।

पानीयालुगुणा।

पानीयालुस्त्रिदोषघ्न सन्तर्पणकर पर॰॥

अर्थ–पानीयालु–त्रिदोषनाशक और तृप्तिकारक है।

नीलालुनामानि ।

नीलालुर्नीलकन्दः स्यात्कृष्णालुः श्यामलालुकः ।

अर्थ- नीलालु, नीलकन्द, कृष्णालु, श्यामलालुक ।

नीलालुगुणाः ।

नीलालुर्मधुरः शीतः पित्तदाहश्रमापहः ।

अर्थ-नीलआलू-मधुर, शीतल तथा पित्त, दाह और श्रमको दूर करै ।

शुभालुनामानि ।

शुभालुर्महिषीकन्दो लुलायकन्दश्च [illegible] ।
सर्पाक्षो वनवासी च विषकन्दो नीलकन्दकः ॥

अर्थ-शुभालु-महिषीकन्द, लुलायकन्द, [illegible], सर्पाक्ष, वनवासी, विषकन्द, नीलकन्द ।

शुभालुगुणाः ।

[illegible]महिषीकन्दः कफवातामयापहः ।
[illegible] ॥

अर्थ-[illegible]

[illegible] गुणाः ।

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥ (शा०नि०)

अर्थ-[illegible]

[illegible] ।

शोफकफरक्तदोषवातकुष्ठविसर्पकम् ॥
त्वग्दोषनाशयत्येवमुनिभि·परिकीर्त्तितम् । (नि०र०)

अर्थ–हस्तिकन्द–गरम, चरपरा, मधुर, भारी तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, वात, कोढ, विसर्प और त्वचाके दोषोंको दूर करेहै ।

कोलकन्दनामानि ।



कोलकन्दःकृमिघ्नश्चपञ्जलोवस्त्रपञ्जलः ।
पुटालु·सुपुटश्चैवपुटकन्दश्चसप्तधा ॥

अर्थ–कोलकन्द, कृमिघ्न, पञ्जल, वस्त्रपञ्जल, पुटालु, सुपुट, पुटकन्द ।

कोलकन्दगुणा ।

कोलकन्द'कटुश्चोष्ण'कृमिदोषविनाशनः ।
वान्तिविच्छर्दिशमनोविषदोषनिवारण ॥

अर्थ–कोलकन्द–चरपरा, गरम, कृमिरोगनाशक, वान्तिको शान्त करनेवाला, दुष्ट वान्तिको हरनेवाला और विषके विकारोंको दूर करनेवाला है ।

वाराहीकन्दनामानि ।

वाराहीकन्दएवान्यैश्चर्मकारालुकोमत ।
अनूपेसभवेद्देशेवराहइवलोमवान् ॥

अर्थ–वाराहीकन्द, चर्मकारालुक, (विष्वक्सेनप्रिया, गृष्टि, वराहकच्छा, वनमालिनी, गृष्टि, विल्वमूला, शूकरी, क्रोडकन्या, विष्वक्सेनकान्ता, वराही, कौमारी, त्रिनेत्रा, ब्रह्मपुत्री, क्रोडी, कन्या, माधवेष्टा गृष्टिका, शूकरकन्द, क्रोड, वनवासी, कुष्ठनाशन, वल्य, अमृत, महावीर्य, शम्बरकन्द, वराहकन्द, वीर, मामीकन्द, महौषध, सुकन्दक, वृद्धिद, व्याधिहन्ता, माधवी)।

वाराहीकंद

विवरण। यह कन्द अनूपदेशमें होता है इस कन्दके ऊपर सूअरकी समान बाल होते हैं इस कारण इसको वाराहीकन्द कहते हैं।

संस्कृतभाषामें वाराहीकन्द।
हिंदीभाषामें गेंठी, गिरालिकन्द।
बंगभाषामें चामार, शुवरिआलु।
मराठीभाषामें डुकरकन्द।
गुजरातीभाषामें वाराहीकन्द, सुअरिया, गालिबगावेल्य।
कर्णाटकभाषामें हंदिगेड्डे।
तैलङ्गीभाषामें मार्कडिगेड्डु। पानिगोरे, नेलवाडियेदु।
लैटिनभाषामें डायोस्कोरियाग्लोबोसा। D. globosa

वाराहीगुण।

वाराही पित्तला बल्या कटुस्तिक्ता रसायनी।
आयुः शुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वाराहीकन्द-पित्तकारक, बलकारक, कड़वा, चरपरा, रसायन तथा आयु, शुक्र और जठराग्निको बढानेवाला है और प्रमेह, कफ, कोढ और बादीको नाश करै है।

अन्यच्च।

वाराही तिक्तकटुका विषपित्तकफापहा।
मूत्रमेहहरी बल्या रुच्या बल्या रसायनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-वाराहीकन्द-कडवा, चरपरा, वृष्य, बलकारक तथा विष, पित्त, कफ, कोढ, प्रमेह और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वाराहकन्दश्चार्शोघ्नोवातगुल्मनिवारणः । (आ०)

अर्थ-वाराहीकन्द-बवासीर, वात और गुल्मरोगका नाश करनेवाला है ।

अपिच ।

वाराहकन्दः कटुकस्तिक्तोबल्यश्चपित्तलः । रसायनःशुक्रलश्चवृष्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मधुरोष्णोवर्णकरःस्वर्य्यश्चायुर्विवर्द्धनः । कुष्ठमेहंत्रिदोषञ्चकफवातकृमींस्तथा ॥ मूत्रकृच्छ्रहरःप्रोक्तोवैद्यैर्विद्याविशारदैः । (नि०र०)

अर्थ-वाराहीकन्द-चरपरा, कडवा, बलकारक, पित्तजनक, रसायन, शुक्रजनक, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, मधुर, गरम, वर्णकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, आयुवर्द्धक तथा कोढ, प्रमेह, त्रिदोष, कफ, वात, कृमि और मूत्रकृच्छ्र रोगको नाशकरे है ।

विवरण । वाराहीकंदको कहीं गेंठी और कहीं अगीठी तथा सूअरकंदभी कहतेहैं । यह पृथिवीमें गुडकी भेलीकी समान होताहै । पत्ते कटीले बडे बडे अनीदार होतेहैं, इसपर सूअरकी समान बाल होतेहैं ।

विष्णुकन्दनामानि ।

विष्णुकन्दोविष्णुगुप्तःसुपुष्टोबहुसम्पुटः ।
जलवासाबृहत्कन्दोदीर्घवृत्तोहरिप्रियः ॥

अर्थ-विष्णुकन्द, विष्णुगुप्त, सुपुष्ट, बहुसम्पुट, जलवासा, बृहत्कन्द, दीर्घवृत्त, हरिप्रिय ।

विष्णुकन्दगुणाः ।

विष्णुकन्दस्तुमधुरः शिशिरः पित्तनाशनः ।
दाहशोफहरोरुच्यः सन्तर्पणकरः परः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-विष्णुकन्द-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनाशक, शोफहारक, रुचिकारक और तृप्तिकारक है ।

धरणीकन्दनामानि ।

धरणीधरणीयाचचीरपत्रीसुकन्दकः ।

कन्दालुर्वनकन्दश्च कन्दार्श्चोदण्डकन्दकः ॥

अर्थ-धरणी, धारणीया, वीरपत्नी, सुकन्दक, कन्दालु, वनकन्द, कन्दार्श, दण्डकन्दक ।

धरणीकन्दगुणाः ।

मधुरो धरणीकन्दः कफपित्तामयापहः ।
वक्त्रदोषप्रशमनः कुष्ठकण्डूतिनाशनः ॥

अर्थ-धरणीकन्द-मधुर, कफपित्तरोगनाशक, मुखदोषको दूर करनेवाला तथा कोढ और खुजलीको हरनेवाला है ।

नाकुल्या नामानि ।

नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धा रक्तपत्रिका ।
ईश्वरी नागगन्धा चाप्यहिभुक्चाहिरसा तथा ॥
सर्पादनी व्यालगन्धा ज्ञेया चेति दशाह्वया ॥

अर्थ-नाकुली, सर्पगन्धा, सुगन्धा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नागगन्धा, अहिभुक, अहिरसा, सर्पादनी, व्यालगन्धा ।

गन्धनाकुलीनामानि ।

अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली । सर्पाक्षी फणिकञ्ची च नकुलाह्वाऽहिभुक्चसा ॥ विषमर्दनिका चाहिमर्दनी विषमर्दनी । महाहिगन्धाहिलता ज्ञेया द्वादशाह्वया ॥

अर्थ-महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिकञ्ची, नकुलाह्वा, अहिभुक, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता ।

द्विविधनाकुलीगुणाः ।

नाकुलीयुगलं तिक्तं कटूष्णं च त्रिदोषजित् ।
अनेकविषविध्वंसि किञ्चित्कुष्ठविनाशकम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी नाकुली-कडवी, चरपरी, गरम, त्रिदोषनाशक, और अनेक प्रकारके विषोंको विध्वंस करनेवाली है और सुगन्धनाकुली कुछेक कुष्ठ नाशक है ।

मार्जारकन्दनामानि ।

अथ मार्जारकन्दः स्यादालुकन्दश्च पार्तिकन्दश्च ।

त्रिशिखदलाग्रन्थिदलाकन्दलताकीर्तितापोढा ॥

अर्थ-मालाकन्द, बलकन्द, पक्तिकन्द, त्रिशिखदला, ग्रन्थिदला, कन्दलता ।

मालाकन्दगुणाः ।

मालाकन्दःसुतीक्ष्णःस्याद्गण्डमालाविनाशकः ।
दीपनोगुल्महारीचवातश्लेष्मापकर्षकृत् ॥

अर्थ-मालाकन्द-तीक्ष्ण, गण्डमालारोगको हरनेवाला, दीपन, गुल्मनाशक तथा वात और कफका नाश करनेवालाहै ।

विदारीकन्दनामानि ।

विदारिकास्वादुकन्दासिताशुक्लाशृगालिका । विदारीवृष्यकन्दाचविडालीवृष्यवल्लिका ॥ भूकूष्माण्डीस्वादुलतागजेष्टावारिवल्लभा । ज्ञेयाकन्दफलाचेतिमनुसख्याह्वयामता ॥

अर्थ-विदारिका, स्वादुकन्दा, सिता, शुक्ला, शृगालिका, विदारी, वृष्यकन्दा, बिडाली, वृष्यवल्लिका, भूकूष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वारिवल्लभा, कन्दफला ।

विदारीकन्दगुणाः ।

विदारीमधुराशीतागुरु स्निग्धास्रपित्तजित् ।
ज्ञेयाचकफकृत्पुष्टिबल्यावीर्य्यविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-विदारीकन्द-बिलारीकन्द-बिलाईकन्द-मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्य्यको बढानेवाला है ।

क्षीरविदारीनामानि ।

अन्याक्षीरविदारीस्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्लरी । इक्षुवल्लीक्षीरकन्दःक्षीरवल्लीपयस्विनी॥क्षीरशुक्लाक्षीरलतापयःकन्दापयोलता । पयोविदारिकाचेतिविज्ञेयाद्वादशाह्वया ॥

अर्थ-क्षीरविदारी, इक्षुगन्धा, इक्षुवल्लरी, इक्षुवल्ली, क्षीरकन्द, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, क्षीरशुक्ला, क्षीरलता, पयःकन्द, पयोलता, पयोविदारिका ।

क्षीरविदारीगुणाः ।

ज्ञेयाक्षीरविदारीचमधुराम्लाकषायका ।

तिक्ताचपित्तशूलघ्नीमूत्रमेहामयापहा ॥

अर्थ-क्षीरविदारी-दूधविदारी-मधुर, अम्ल, कसैली, कडवी, पित्तनाशक, शूलनिवारक तथा मूत्ररोग और प्रमेहरोगको दूर करे है।

क्षीरकन्दोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुसनालक ।
विनालोरोगहर्त्तास्याद्वय स्तम्भीसनालक ॥

अर्थ-क्षीरविदारी बिना नालवाला और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारका है, यहां बिना नालका क्षीरकन्द-रोगनाशक और नालयुक्त-वमनस्तम्भक है। विदारीकन्दके विशेष गुण दोष गुडूच्यादि वर्गमें देखो।

चण्डालकन्दनामानि।

प्रोक्तश्चण्डालकन्द स्यादेकपत्रोद्विपत्रक ।
त्रिपत्रोऽथचतु पत्र पञ्चपत्रश्चभेदत ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र, चतुष्पत्र और पंचपत्र इन भेदोंसे पांच प्रकारका है।

चण्डालकन्दगुणा।

चण्डालकन्दोमधुर कफपित्तास्रदोषजित ।
विषभूतादिदोषघ्नोविज्ञेयश्चरसायन ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-मधुर, कफघ्न, रक्तपित्तनाशक, विषनिवारक, भूतादिबाधाओंको हरनेवाला और रसायन है।

तैलकन्दनामानि।

अथतैलकन्दउक्तोद्रावककन्दस्तिलाङ्कितदलश्च ।
करवीरकन्दसंज्ञोज्ञेयस्तिलचित्रपत्रकोनाम्ना ॥

अर्थ-तैलकन्द, द्रावककन्द, तिलाङ्कितदल, करवीरकन्दसंज्ञक, तिलचित्रपत्रक ।

तैलकन्दगुणा।

लौहद्रावीतैलकन्दःकटूष्णोवातापस्मारहारीविषारि ।
शोफघ्न स्याद्धयशारीत्मन्त्यप्रागेवासौदेहसिद्धिकरो ॥

अर्थ-तैलकन्द-लोहेको गला देनेवाला, कडवा, गरम तथा वात, मृगी, विष और सूजनको दूर करे, रोगोंको बांधनेवाला और देहको सिद्धकारक है।

त्रिपर्णीनामानि ।

त्रिपर्णिकाबृहत्पत्राऽयाच्छिन्नग्रन्थिकाचसा ।
कन्दालुःकन्दबहुलाप्यम्लवल्लीद्रुमारुहा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिका, बृहत्पत्रा, छिन्नग्रन्थिका, कन्दालु, कन्दबहुला, अम्लवल्ली, द्रुमारुहा ।

त्रिपर्णीगुणाः ।

त्रिपर्णीमधुराशीताश्वासकासविनाशिनी ।
पित्तप्रकोपशमनीविषव्रणहरापरा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिकन्द-मधुर, शीतल तथा श्वास, खाँसी, पित्त, विष, और व्रणका नाशकरनेवाला है ।

लक्ष्मणाकन्दनामानि ।

लक्ष्मणापुत्रकन्दाचपुत्रदानागिनीतथा ।
नागाह्वानागपत्रीचतुलिनीमक्षिकाचसा ॥
अस्रबिन्दुच्छदाचैवसुकन्दादशधाह्वया ।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रकन्दा, पुत्रदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपत्री, तुलिनी, मक्षिका, अस्रबिन्दुच्छदा, सुकन्दा ।

अस्या गुणाः ।

लक्ष्मणामधुराशीतास्त्रीवन्ध्यत्वविनाशिनी ।
रसायनकरीबल्यात्रिदोषशमनीपरा ॥

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-मधुर, शीतल, स्त्रीके बाझपनेको हरनेवाला, रसायन, बलकारक और त्रिदोषको शान्ति करनेवाला है ।

हस्तजोडिनामगुणाश्च ।

हस्तपर्य्यायपूर्वस्तुजोडिर्वैद्यवरैःस्मृत ।
करजोडिरितिख्यातोरसबद्धादिवश्यकृत् ॥

अर्थ-हस्तजोडि और करजोडि यह नाम हस्ताजूडी, हथाजूडीके हैं हथाजोडी-पारेआदिको बाधनेवाली और वशीकरण है ।

गुच्छकन्दनामानि ।

गुच्छाह्वकन्द स्तबकाह्वकन्दोगुलच्छकन्दश्चविवण्टिकाभिधः

अर्थ-गुच्छाह्वकन्द, स्तबकाह्वकन्द, गुलच्छकन्द, विवण्टिका ।

तिक्ताचपित्तशूलघ्नीमूत्रमेहामयापहा ॥

अर्थ-क्षीरविदारी-दूधविदारी-कन्द मधुर, अम्ल, कसेला, कडवा, पित्तनाशक, शूलनिवारक तथा मूत्ररोग और प्रमेहरोगको दूर करे है।

क्षीरकन्दोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुसनालकः ।
विनालोरोगहर्त्तास्याद्वय स्तम्भीसनालकः ॥

अर्थ-क्षीरविदारी विना नालवाला और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहां विना नालका क्षीरकंद-रोगनाशक और नालयुक्त-वयस्तम्भक है। विदारीकंदके विशेष गुण दोष गुडूच्यादि वर्गमें देखो।

चण्डालकन्दनामानि ।

प्रोक्तश्चण्डालकन्दः स्यादेकपत्रोद्विपत्रकः ।
त्रिपत्रोऽथचतुःपत्रः पञ्चपत्रश्चभेदतः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र, चतुःपत्र और पंचपत्र इन भेदोंसे पांच प्रकारका है।

चण्डालकन्दगुणाः ।

चण्डालकन्दोमधुरः कफपित्तास्रदोषजित् ।
विषभूतादिदोषघ्नोविज्ञेयश्चरसायनः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-मधुर, कफघ्न, रक्तपित्तनाशक, विषनिवारक, भूतादिबाधाओंको हरनेवाला और रसायन है।

तैलकन्दनामानि ।

अथतैलकन्दउक्तोद्रावककन्दस्तिलाङ्कितदलश्च ।
करवीरकन्दसंज्ञोज्ञेयस्तिलचित्रपत्रकोद्वाणे ॥

अर्थ-तैलकन्द, द्रावककन्द, तिलाङ्कितदल, करवीरकंदसंज्ञ, तिलचित्रपत्रक।

तैलकन्दगुणाः ।

लोहद्रावीतैलकन्दः कटूष्णोवातापस्मारहारीविषारिः ।
शोफघ्नः स्याद्बन्धकारीरसस्यक्षिप्रंवासौदेहसिद्धिंधत्ते ॥

अर्थ-तैलकन्द-लोहेको पतला करनेवाला, चरपरा, गरम तथा वात, अपस्मार, विष और सूजनको दूर करेहै, पारेको बांधनेवाला और तत्काल देहको सिद्धकरनेवाला है।

त्रिपर्णीनामानि ।

त्रिपर्णिकावृहत्पत्राच्छिन्नग्रन्थिकाचसा ।
कन्दालुःकन्दवहुलाप्यम्लवल्लीद्रुमारुहा ॥

अथ-त्रिपर्णिका, वृहत्पत्रा, छिन्नग्रन्थिका, कन्दालु, कन्दवहुला, अम्लवल्ली, द्रुमारुहा ।

त्रिपर्णीगुणा ।

त्रिपर्णीमधुराशीताश्वासकासविनाशिनी ।
पित्तप्रकोपशमनीविपव्रणहरापरा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिकन्द-मधुर, शीतल तथा श्वास, खाँसी, पित्त, विप, और व्रणका नाशकरनेवाला है ।

लक्ष्मणाकन्दनामानि ।

लक्ष्मणापुत्रकन्दाचपुत्रदानागिनीतथा ।
नागाह्वानागपत्रीचतुलिनीमक्षिकाचसा ॥
अस्रविन्दुच्छदाचैवसुकन्दादशधाह्वया ।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रकन्दा, पुत्रदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपत्री, तुलिनी, मक्षिका, अस्रविन्दुच्छदा, सुकन्दा ।

अस्या गुणा ।

लक्ष्मणामधुराशीतास्त्रीवन्ध्यत्वविनाशिनी ।
रसायनकरीवल्यात्रिदोपशमनीपरा ॥

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-मधुर,शीतल, स्त्रीके वाझपनेको हरनेवाला, रसायन, वलकारक और त्रिदोपको शान्ति करनेवाला है ।

हस्तजोडिनामगुणाश्च ।

हस्तपर्य्यायपूर्वस्तुजोडिर्वैद्यवरैःस्मृतः ।
करजोडिरितिख्यातोरसवद्धादिवश्यकृत् ॥

अर्थ-हस्तजोडि और करजोडि यह नाम हस्ताजूडी, हथाजूडीके हैं हथाजोडी-पारेआदिको वाधनेवाली और वशीकरण है ।

गुच्छकन्दनामानि ।

गुच्छाह्वकन्द स्तवकाह्वकन्दोगुलच्छकन्दश्चविवण्टिकाभिधः

अर्थ-गुच्छाह्वकन्द, स्तवकाह्वकन्द, गुलच्छकन्द, विवण्टिका ।

गुलच्छकन्दगुणाः ।

गुलच्छकन्दोमधुरःसुशीतलोवृष्यप्रदस्तर्पणदाहनाशनः ॥

(राजनिघण्टु)

अर्थ-गुलच्छकन्द-मधुर, शीतल, वृष्य, तृप्तिकारक और दाहनाशक है ।

मानकन्दनामानि ।

मानकंस्यान्महापत्रःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ।

अर्थ-मानक, महापत्र, (स्थलपद्म, विस्तीर्णपर्ण, माण, बृहच्छद, छत्रपत्र, माणक) ।

अस्य गुणाः ।

माणकःशोथहृच्छीत पित्तरक्तहरोलघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मानकन्द-सूजनको दूर करनेवाला, शीतल, रक्तपित्तनाशक और हल्का है ।

अन्यच्च ।

माणकःस्वादुःशीतश्चगुरु शोथहर कटुः ॥(राजनि०)

अर्थ-मानकन्द-स्वादिष्ठ, शीतल, भारी, सूजनको दूर करनेवाला और चरपरा है ।

शंखालुनामानि ।

शंखालु शंखसकाशोमध्वालुःस्यात्तुरोमशः ।

अर्थ-शंखालु, शंखसकाश, मध्वालु, रोमश ।

काष्ठालुनामानि ।

काष्ठालु स्वल्पकाष्ठंचतत काष्ठालुकस्मृतम् ।

अर्थ-काष्ठालु, स्वल्पकाष्ठ, काष्ठालुक ।

सर्वविधालुगुणाः ।

आलुकशीतलसर्वंविष्टम्भिमधुररसम् ।
सृष्टमूत्रमलरूक्षदुर्जररक्तपित्तनुत् ॥
कफानिलकरंवृष्यवल्यस्तन्यविवर्द्धनम ॥(म०नि०)

अर्थ-सर्वप्रकारके आलु-शीतल, विष्टम्भकारक, मधुररसान्वित, मलमूत्रको करनेवाले, रूखे, दुर्जर, रक्तपित्तनाशक, कफवातकारक, वृष्य, बल्य और स्तनोंमें दूध प्रकट करनेवाले हैं ।

राजाल्वादिगुणा ।

मधुराजालुकशीतमधुरंवायुकारकम् । पाकेकटुचविज्ञेयरुचिददाहपित्तनुत् ॥ शोपतृट्कफनुत्प्रोक्तमस्यकन्दस्तुशीतलः । आग्निमांद्यमलस्तम्भकफकृत्पित्तनुत्पर. ॥ रक्तराजालुककिञ्चिदुष्णंचाग्निप्रदीपकम् ।कफवातहरंचैवऋपिभि.परिकीर्त्तितम् ॥ श्वेतालुकिञ्चित्कटुकमुष्णवातकफापहम् ।कृष्णालुकतुमधुरशीतवीर्य्यंश्रमापहम् ॥ पित्तदाहहरंचैवऋपिभि.परिकीर्त्तितम् । कृष्णवनालुकरुच्यमहासिद्धिकरपरम ॥ मुखजाड्यहरप्रोक्तमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः । वनालुकतृप्तिकरत्रिदोपशमनपरम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-मधुर राजालु-शीतल, मधुर, वातकारक, पाकमें चरपरे, रुचिकारक, दाहनाशक, पित्तनिवारक, शोपको दूर करनेवाले, तृपाको हरनेवाले, कफनाशक । इसका कन्द-शीतल, मदाग्निकारक, मलस्तम्भक, कफकारक और पित्तनाशक है । लालराजालु-किञ्चित् उष्ण, अग्निप्रदीपक और कफ तथा वातको हरनेवाले है । सफेद आलु-किञ्चित् चरपरे, गरम, वात कफनाशक है । कृष्णालुक-मधुर, शीतवीर्य्य, श्रमनाशक, पित्त और दाहको हरनेवाले हैं । काले वनआलु-रुचिकारक, महासिद्धिदायक, मुखकी जडताको दूर करनेवाले है । वनाउ-तृप्तिकारक और त्रिदोपको शान्ति करनेवाले है ।

कसेरुनामानि ।

गुण्डकन्द कसेरु स्यात्क्षुद्रमुस्ताकसेरुका ।
सूकरेष्ट सुगन्धिश्चसुगन्धोगन्धकन्दक ॥

अर्थ-गुण्डकन्द, कसेरु, क्षुद्रमुस्ता, कसेरुका, सूकरेष्ट, सुगन्धि, सुकन्द, कसेरुक, (कसेरु, राजकसेरुक) ।

कसेरुद्विविधतत्तुमहद्राजकशेरुकम् ।
मुस्ताकृतिर्लघुस्याद्यत्तच्चिचोडमितिस्मृतम ॥

अर्थ-कसेरु दो प्रकारके हैं एक कसेरु दूसरा चिचोड । वहा बडे

कसेरु अर्थात् कसेरुको कसेरू कहते हैं और जिसका आकार मोथाके समान हो तथा हलका हो उसको चिचोड कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	कसेरु।
हिंदीभाषामें	कसेरू।
वंगभाषामें	केशुर।
मराठीभाषामें	कचरा, फुरडया।
कर्णाटकीभाषामें	सेकिनगड्डे।
तैलङ्गीभाषामें	इट्टिकोति।
लैटिन्भाषामें	स्किपस कैसूर। Scirpus Kysoor

द्विविधकसेरुगुणाः।

कसेरुकद्वयशीतमधुरतुवरगुरु।
पित्तशोणितदाहघ्ननयनामयनाशनम्॥
ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरस्मृतम्।(भा०प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारके कसेरू-शीतल, मधुर, कसेले, भारी, रक्तपित्तनाशक, दाहनिवारक, नेत्ररोगको हरनेवाले, मलरोधक, शुक्रजनक, वातकफकारक, रुचिजनक और स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करे हैं।

केमुकनामानि।

केवुकाकेमुक केम्बुसुपत्रादलमालिनी।
केलूट स्वल्पविटप स्वादुकन्दश्चपोलिनी॥

अर्थ-केवुका, केमुक, केम्बु, सुपत्रा, दलमालिनी, केलूट, स्वल्पविटप, स्वादुकन्द, पोलिनी (पेचुक, पेचुनी, पेचु, पेचिका, दलसारिणी, केवुक)।

संस्कृतभाषामें	केमुक।
हिन्दीभाषामें	केउँआ।
वंगभाषामें	केउँगाछ केमूपपपा।
मराठीभाषामें	कोर्पा।
गुजरातीभाषामें	कोर्ती।
इंग्रेजीभाषामें	केबेज। (Cabbage)
लैटिन्भाषामें	कोस्टस स्पेशियोसस। Costus speciosus
पारसीभाषामें	कुस्तम।
अरबीभाषामें	कदवम्प।

अस्य गुणाः ।

केमुकः कटुकः पाके तिक्तग्राहिहिमलघुः ।
दीपनपाचनहृद्यंकफपित्तज्वरापहम् ॥
कुष्ठकासप्रमेहार्शोनाशनवातलकटु । (भा०प्र०)

अर्थ-केमुक-पचनेमें कटु, कडवा, मलरोधक शीतल, हलका, दीपन, पाचक, हृदयको हितकारी, वातकारक, चरपरा तथा कफ, पित्त, ज्वर, कुष्ठ, खासी, प्रमेह और ववासीरको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

केलूटकतुमधुररूक्षमच्छचशीतलम् ॥
भेदकग्राहकरुच्यगुरुपित्तकफापहम् ।
वातनाशकरचैवकदेप्येतेगुणाःस्मृताः ॥ (नि०र०)

अर्थ-केमुक, मधुर, रूखा, स्वच्छ, शीतल, भेदक, मलरोधक, रुचिकारक, भारी, पित्तकफनाशक, वातनाशक और कन्दके गुणभी इसकी समान जानने ।

शाल्मलीकन्दनामानि ।

शाल्मलीकन्दकश्चाथविज्जुलोवनवासकः ।
वनवासोमलघ्नश्चमलहन्तापडाह्वयः ॥

अर्थ-शाल्मलीकन्द, विज्जुल, वनवासक, वनवास, मलघ्न, मलहन्ता ।

शाल्मलीकन्दगुणाः ।

मधुरः शाल्मलीकन्दोमलसंग्रहरोधजित् ।
शिशिरःपित्तदाहार्तिशोपसन्तापनाशनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शाल्मलीकन्द-अर्थात् सेमलकी मूली-मधुर, मलसंग्रहके रुकनेको दूर करनेवाली, शीतल तथा पित्त, दाह, शोप और सन्तापको हरनेवाली है ।

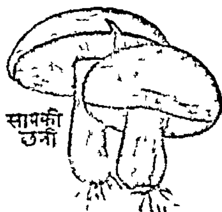
कदलीकन्दगुणाः ।

कन्दः कदल्यारूक्षः स्याद्वातलस्तुवरोगुरुः ।शीतोबल्योमधुःकेश्योरुच्योऽग्निमांद्यकारकः ॥कर्णशूलचाम्लपित्तदाहरक्तरुजंतथा।सोमदोपरजोदोपक्रमीन्कुष्टंचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-केलेका कन्द-रूखा, बादी, कसेला, भारी, शीतल, बलकारी,

मधुर, केशोंको हितकारी, रुचिजनक, मदाग्निकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाद, रुधिरविकार, सोमदोष, रजोदोष, कृमि और कुष्ठ रोगका नाश करे है ।

अथ सस्वेदजशाकनामानि ।



उक्तसंस्वेदजशाकभूमिच्छन्नशिलीन्ध्रकम् ।
क्षितिगोमयकाष्ठेषुवृक्षादिषुतदुद्भवेत् ॥

अर्थ-सस्वेदजशाक, भूमिच्छत्र, शिलीन्ध्रक, (भूछत्र, पृथिवीकन्द, शिलीन्ध्र, कवच, भूमिच्छत्र, भूमिस्फोट, धराकुर, भूसुता, छत्र, छत्राक, उच्छिलीन्ध्र, स्वेदज)यह मृत्तिका, गोबर, काष्ठ और वृक्षादिकोंमें उत्पन्न होता है।

संस्कृतभाषामें	सस्वेदजशाक ।
हिन्दीभाषामें	सांपकी छत्री, छाता, छतौना ।
बंगभाषामें	छातकुड, छाता, भूँइछाति ।
मराठीभाषामें	भुईफोड अळम्बी ।
कोंकणीभाषामें	काम्बिल ।
गुजरातीभाषामें	कुम्प बिलाडीनी वली ।
इंग्रेजीभाषामें	मशरूम । Mushroom
लैटिनभाषामें	फंगाई । Fungi

अस्य गुणाः ।

सर्वेसस्वेदजा शीता दोषला पिच्छिलाश्चते।गुरवश्छर्द्यतीसार-ज्वरश्लेष्मामयप्रदा ॥श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रजसम्भवाः । नातिदोषकरास्तेस्यु शेषास्तेभ्योविगर्हिताः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–सवप्रकारके सस्वेदजशाक–शीतल, दोषजनक, पिच्छिल, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगोंको उत्पन्न करें हैं । सफेद शुभ्र-स्थानमें उत्पन्न होनेवाले तथा काठ, वास और गायोंके स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाले अत्यन्त दोषकारक नहीं हैं और शेष सर्व त्यागने योग्य हैं।

अन्यच्च ।

शीतावल्यासुनेशानीगुरुर्भेदकरामधु· । त्रिदोषकारिणीवृ-ष्याकफदाचमताबुधैः ॥ भेदास्त्रय·समाख्याताःकृष्णोर-क्तश्चपाण्डुर· । कृष्णारसेचपाकेचमधुरोष्णागुरुःस्मृता ॥ श्वेतातुपाककालेचगुर्वीरक्ताल्पदोषदा । (नि०र०)

अर्थ–सापकी छत्री शीतल, बलकारक, भारी, भेदक, मधुर, त्रिदोष-जनक, वीर्य्यवर्द्धक और कफकारक है । यह कृष्ण, रक्त और पाण्डु इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है । तहा कालेरगका मधुर, गरम और भारी है । सफेद पाकमें भारी और लाल अल्पदोषजनक है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे शाकवर्ग समाप्त ॥ ११ ॥

अथ वारिवर्गः ।

जलनामानि ।

पानीयसलिलनीरकीलालजलमम्बुच ।
आपोवार्वारिकतोयपयःपाथस्तथोदकम् ॥
जीवनवनमम्भोर्णोऽमृतवनरसोऽपिच ।

अर्थ–पानीय, सलिल, नीर, कीलाल, जल, अम्बु, आप, वार, वारि, तोय, पयस, पायस, उदक, जीवन, वन, अम्भस, अर्णस, अमृत, घनरस (मेघप्रसव, कमल, भुवन, कबन्ध, पुष्कर, सर्वतोमुख, सलिल, गल, जड, क, अन्ध, कमन्ध, उद, दक, नार, शम्बर, अभ्रपुष्प, घृत, कृत्स्न, पय्य, पाथ, यादो-निवास, जीवनीय, कुलीनस, कुलीन, पिप्पल, कुश, विष, काण्ड, सर, गर, कृपीट, चद्रोरस, सदन, वधुर, व्योम, सम्ब, इरा, वाज, तामर, कम्बल, स्यन्दन, सम्बल, जलपीय, क्षर, ऋत, ऊर्ज, कामल, सोम, नारा, छन्न,

क्षोद, नभ, मधु, पुरीष, रेत, कश, जन्म, वृबूक, वुस, तुग्या, कर्बुर, सुक्षेम, धरुण, सुरा, अरविन्दानि, धनुन्यतु, जामि, आयुधानि, क्षप, अहि, अक्षर, स्रोत, वृसी, रहस, रस, भेषज, सह, शव, यह, ओज, सुख, क्षत्र, आरया, शुभ, यादु, भूत, भविष्य, महत्, यश, मह, सर्णीक, स्वृतीक, सतीन, गहन, गभीर, गम्भलग, अन्न, हवि, सद्म, योनि, ऋतस्ययोनि, सत्य, नयि, सत्, पूर्ण, सर्व, अक्षित, बर्हि, नाम, सर्पि, अप, पवित्र, इन्दु, हेम, स्वसर्ग, सम्नर, अम्ब, वपु, अम्बु, तुप, शुक्र, तेज, दर्भ, जलाप, वज्र, नीलकण्ठप्रिय) इत्याद्यनेकनामानि सन्ति ।

संस्कृतभाषामें	पानीय, सलिल ।
हिन्दीभाषामें	जल, पानी ।
बंगभाषामें	जल ।
मराठीभाषामें	उदक, पाणी ।
गुजरातीभाषामें	पाणी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुनीक ।
तैलिंगीभाषामें	नीरु ।
इंग्रेजीभाषामें	वाटर । Water
लैटिन्भाषामें	एक्वा । Aqua
फार्सीभाषामें	आब ।
अरबीभाषामें	माय ।

जलगुणाः ।

पानीयश्रमनाशनक्लमहरमूर्च्छापिपासापह तन्द्राच्छर्दिनिबन्ध-हृद्बलकरनिद्राहरतर्पणम् । हृद्यगुप्तरसह्यजीर्णशमकनित्य-हितशीतल लघ्वच्छरसकारणनिगदतेपीयूषवज्जीवनम् ॥

अर्थ-जल-पानी-श्रम, मूर्च्छा, प्यास, तन्द्रा, वमन, विबन्ध और निद्राको दूर करैहै, बलकारक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, गुप्तरसवाला, अजीर्णको हरनेवाला निरन्तर हितकारी, शीतल, हलका, स्वच्छ, रसोंका कारण और अमृतकी समान सबप्राणियोंका जीवन है ।

अथात सम्प्रवक्ष्यामिपानीयानिपृथक्पृथक् । शृणुतन्चस-मासेनगुणान्गुणविपर्य्ययम् ॥ द्विविधचोदकप्रोक्तमान्त-

रीक्षंतथौद्भिदम् । आन्तरीक्षतुद्विविधगाङ्गसामुद्रिकंपय· ॥ गाङ्गसामुद्रविज्ञानकथयिष्यामिसाम्प्रतम् । धारितयेनपात्रेणलक्ष्यतेतेनतद्विधम् ॥ धौतंशुद्धसितवस्त्रचतुर्हस्तप्रमाणकम्।दण्डास्त्रिहस्ताश्चत्वारश्चतुष्कोणेषुबन्धयेत् । तस्मात्परीक्ष्यतत्तोयशुद्धेरौप्यमयेऽथवा । कांस्यपात्रेसमुद्धृत्यपरीक्षेतभिषग्वर ॥शुद्धकार्पासतूलवाश्वेतशाल्योदनस्यवा । पिण्डिकातत्समाक्षिप्ताश्वेततायातिसापुन· ॥ श्वेतातुनिर्मलापिण्डीशुद्धश्चनिर्मलपय· । तद्गाङ्गसर्वदोषघ्नगृहीताङ्गसुभाजने ॥ तद्धारयेच्चमतिमान्वल्यमेध्यरसायनम । श्रमक्लमपिपासाघ्नकण्डूदोषनिवारणम्॥ लघुमूर्च्छातृषाच्छर्दिमूत्रस्तम्भविनाशनम् ॥ गङ्गोदकस्यवृष्टि·स्याद्दिवसेवाप्रदृश्यते । आविलसमलनीलघनपीतमथापिच । सक्षारपिच्छिलचैवसामुद्रतन्निगद्यते ॥ सघनकफकृच्चैवकण्डूश्लीपदकारकम् । सवातलचविज्ञेयरक्तदोषार्तिकारणम्॥(हा०स०)

अन्यच्च ।

अर्थ–महर्षि आत्रेयजी हारीतसे कहते हुये कि, मैं अब पानियोंके भेद और गुण दोष कहताहूं तू सुन । पानी आन्तरीक्ष और औद्भिद इन भेदोंसे दो प्रकारका कहा है तहा आन्तरीक्ष (आकाशका) पानीकेभी दो भेद हैं एक गाग अर्थात् गगाका और दूसरा सामुद्रिक अर्थात् समुद्रका गगा और समुद्रके जलके विज्ञानको कहताहू । जिस पात्रमें रक्खा हो उसी पात्रके अनुसार लक्षण प्रतीत होते हैं । जलपरीक्षा–धुला हुआ शुद्ध और सफेद वस्त्र चार हाथ लेवे फिर तीन २ हाथ के दडोंसे उस वस्त्रके चारों कोने बाध देवे इसके उपरान्त शुद्ध चादीके बरतनमें अथवा कांसीके बरतनमें उस जलकी परीक्षा करे तथा शुद्ध कपासकी रुई वा शालिचावलके भातका पिण्ड बना उस जलमें डालदे जो सफेदपनेको प्राप्त होजावे और सफेद होकर वह पिण्ड निर्मल होजावे और वह जलभी शुद्ध और निर्मल होजाय तो उसको गंगाका पानी जानना । वह गगाजल सर्वदोष-

नाशक है, उस जलको सुंदर पात्रमें बुद्धिमान् ग्रहण करे, वह गंगाका जल-बलकारक, मेधाजनक, रसायन, तथा श्रम, क्लम, श्वास, कण्डू, मूर्च्छा, तृषा, वमन और मूत्रस्तम्भको दूर करे है और हलका है । अथवा दिनमें जो वरसता है वह गंगोदक है । कटुपतायुक्त, मलसयुक्त, नीला, घन, पीला, क्षारसहित और पिच्छिल हो ऐसे मेघके जलको सामुद्रिकजल जानना । समुद्रका जल-कफकारक, कण्डू और श्लीपद रोगको उत्पन्न करनेवाला, वादी और रुधिरके विकारोंको करता है ।

अन्यच्च ।

पानीयमुनिभि प्रोक्तदिव्यभौममितिद्विधा । दिव्यंचतुर्विधं प्रोक्तधारजकरकाभवम् ॥ तौपारञ्चतथाहैमन्तेषुधारगुणाधिकम् । धाराभि पतिततोयगृहीतस्फीतवाससा ॥ शिलायांवासुधायांवाधौतायांपतितञ्चतत । सौवर्णेराजतेताम्रे स्फाटिकेकाचनिर्मिते ॥ भाजनेमृण्मयेवापिस्थापितधारमुच्यते । धारनीरत्रिदोपघ्नमनिर्देश्यरसलघु ॥ सौम्यरसायनवल्यतर्पणह्लादिजीवनम् ।पाचनमतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान् ॥ तृष्णांहरतिनात्यर्थविशेषात्प्रावृषिस्थितम् । धारजलञ्चद्विविधगाङ्गसामुद्रभेदत ॥ आकाशगंगासम्बन्धिजलमादायदिग्गजा ।मेघैरन्तरितावृष्टिंकुर्वन्तीतिरच मताम् ॥ गाङ्गमाश्वयुजेमासिप्रायोवर्षतिवारिद ।सर्वथातज्जलदेयतथैवचरकेवच ॥ स्थापितेहेमजेपात्रेराजतेमृण्मयेऽपिवा । शाल्यन्नयेनससिक्तभवेदक्लेदिवर्णवत् ॥ तद्गाङ्गमर्वदोपघ्नज्ञेयंसामुद्रमन्यथा । तत्तुमक्षारलवणंशुक्रदृष्टिनलापहम् ॥ विस्रञ्चदोपलतीक्ष्णसर्व्वकर्म्मसमाहितम् । सा- [illegible] ॥ यतोगस्त्यस्यदिव्यपैकदयात्मकलंजलम् । [illegible] दद्योपलम् ॥ फुत्कारविषवा [illegible]

वर्षासुसविपतोयदिव्यमप्याश्विनविना । अनार्त्तवंप्रमुञ्चति वारिवारिधरास्तुयत् ॥ तत्रिदोषायसर्वेषांदेहिनापरिकीर्त्तितम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–मुनीश्वरोंने जल दो प्रकारका कहा है एक दिव्य और दूसरा भौम तहा दिव्यजल–धाराज, करकाभव, तौषार और हैम इन भेदोंसे चार प्रकारका है । इनमें धाराजल गुणोंमें अधिक है। धारारूपसे पतित हुये जलको स्वच्छ वस्त्रमें छानले वह जल निर्मल वा धुलीहुई शिलामें हो वा स्वच्छ भूमिमें गिरा हुआहो, उसमेंसे सुवर्ण, रजत, ताम्र, स्फटिकमणि, काच वा मृत्तिकाके पात्रमें भरलेना उसको धाराजल कहते हैं । धाराजल त्रिदोषनाशक, गुप्तरस, हलका, शीतल, रसायन, बलकारक, तृप्तिजनक, आनन्दजनक, जीवन, पाचक, बुद्धिवर्द्धक तथा मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, श्रम, क्लम और तृषाको दूर करे है । यह गुण शरदृऋतुमें कहे हैं, किन्तु वर्षाऋतुमें नहीं। धाराजल गाग और सामुद्र इन भेदोंसे दो प्रकारका है। पहिले आचार्योंने कहाहै कि, आकाशगंगासम्बन्धी जलको दिग्गज (दिशाके हाथी) लेकर मेघोंमें छिपे हुए प्राय आश्विनके महीनेमें मेघद्वारा वर्षातेहैं वह जल सर्वथा सबको देना चाहिये तैसेही चरकमेंभी कहाहै परीक्षा । सुवर्ण तथा चादी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें चावल डालकर जल भरदेवे, जो वह चावल न बिगडे और न उनका रंग बदले तो उसको गंगाजल जानना । यह गंगाजल सर्वदोषनाशकहै । और जो वह चावल सडजावें और रंग बदल जावें तो उस जलको सामुद्रजल जानना । यह समुद्रजल सर्वदोषजनकहै । समुद्रजल–खारी, निमकीन, शुक्र, दृष्टि और बलविनाशकहै, दुर्गंधयुक्त, दोषकारक तीक्ष्ण और सबकर्मोंमें यह अहितकारीहै । किन्तु आश्विनके महीनमें जो समुद्रसम्बधी वर्षाका जलहै वह गंगाजलकी समान गुणकारक जानना । कारण यह है कि, आश्विनके महीनेमें अगस्त्य ऋषिके उदय होनेसे सर्व जल–निर्मल, निर्विष, स्वादु, शुक्रजनक और अदोषकारी होजाते हैं । क्योंकि वर्षाऋतुमें आकाशमें विचरनेवाले सॉपोंकी विषेली पवनसे दिव्यजलभी विषयुक्त होजातेहैं, किन्तु आश्विनके महीनेमें विषयुक्त नहीं होते । जो जल अपनी ऋतुको छोडकर और ऋतुओंमें बरसता है वह जल सर्वमनुष्योंके त्रिदोष करनेवाला है ।

इतिद्विधोदकप्रोक्ततथावक्ष्येचतुर्विधम् । रात्रिवृष्टिर्दिवावृ-

नाशक है, उस जलको सुदर पात्रमें बुद्धिमान् ग्रहण करे, वह गंगाका जल-बलकारक, मेधाजनक, रसायन, तथा श्रम, क्लम, घ्याम, कण्डू, मूर्च्छा, तृषा, वमन और मूत्रस्तम्भको दूर करे है और हलका है । अथवा दिनमें जो बरसता है वह गंगोदक है । कलुषतायुक्त, मलसंयुक्त नीला, घन, पीला, क्षारसहित और पिच्छिल हो ऐसे मेघके जलको सामुद्रिकजल जानना । समुद्रका जल-कफकारक, कण्डू और श्लीपद रोगको उत्पन्न करनेवाला, बादी और रुधिरके विकारोंको करता है ।

अन्यच्च ।

पानीयमुनिभिःप्रोक्तदिव्यभौममितिद्विधा । दिव्यंचतुर्विधं प्रोक्तधाराजकरकाभवम् ॥ तौपारञ्चतथाहेमन्तेषुधारागुणाधिकम् । धाराभिःपतिततोयग्रहीतस्फीतवाससा ॥ शिलायांवासुधायांवाधौतायांपतितंचतत् । सौवर्णेराजतेताम्रे स्फाटिकेकाचनिर्मिते ॥ भाजनेमृण्मयेवापिस्थापितधारमुच्यते । धारनीरन्त्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसमलघु ॥ सौम्यरसायनबल्यंतर्पणह्लादिजीवनम् । पाचनंमतिकृन्मृर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान् ॥ तृष्णांहरतिनात्यर्थंविशेषात्प्रावृषिस्थितम् । धारजलञ्चद्विविधगाङ्गसामुद्रभेदतः ॥ आकाशगंगासम्बन्धिजलमादायदिग्गजाः । मेघैरन्तरितावृष्टिंकुर्वन्तीतिवचः सताम् ॥ गाङ्गमाश्वयुजेमासिप्रायोवर्षतिवारिदः । सर्वथातज्जलंदेयतथैवचरकेवचः ॥ स्थापितेहेमजेपात्रेराजतेमृण्मयेऽपिवा । शाल्यन्नयेनमसिक्तमवेदक्लेदिवर्णवत् ॥ तद्गाङ्गमर्वदोषघ्नज्ञेयसामुद्रमन्यथा । तच्चसक्षारलवणंशुक्रदृष्टिवलापहम् ॥ विस्रञ्चदोषलतीक्ष्णंसर्वकर्मसमाहितम् । सामुद्रन्त्वाश्विनेमासिगुणैर्गाङ्गवदादिशेत् ॥ यतोगस्त्यस्यदिव्यपैरुदयात्सकलंजलम् । निर्मलनिर्विषस्वादुशुक्रलंस्यादृदोषलम् ॥ फूत्कारविषवातेननागानांव्योमचारिणाम् ।

वर्षासुसविपतोयदिव्यमप्याश्विनविना । अनार्त्तवंप्रमुञ्चनि वारिवारिधरास्तुयत् ॥ तत्रिदोपायसर्वेपांदेहिनांपरिकीर्त्तितम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–मुनीश्वरोंने जल दो प्रकारका कहा है एक दिव्य और दूसरा भौम तहा दिव्यजल–धाराज, करकाभव, तौपार और हैम इन भेदोंसे चार प्रकारका है । इनमें धाराजल गुणोंमें अधिक है। धारारूपसे पतित हुये जलको स्वच्छ वस्त्रमें छानले वह जल निर्मल वा धुलीहुई शिलामें हो वा स्वच्छ भूमिमें गिरा हुआहो, उसमेंसे सुवर्ण, रजत, ताम्र, स्फटिकमणि, काच वा मृत्तिकाके पात्रमें भरलेना उसको धाराजल कहते हैं । धाराजल त्रिदोपनाशक, गुप्तरस, हलका, शीतल, रसायन, बलकारक, तृप्तिजनक, आनन्दजनक, जीवन, पाचक, बुद्धिवर्द्धक तथा मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, श्रम, क्लम और तृषाको दूर करे है । यह गुण शरदृऋतुमें कहे हैं, किन्तु वर्षाऋतुमें नहीं। धाराजल गाग और सामुद्र इन भेदासे दो प्रकारका है । पहिले आचार्य्योंने कहाहै कि, आकाशगगासम्बन्धी जलको दिग्गज (दिशाके हाथी) लेकर मेवोंमें छिपे हुए प्राय आश्विनके महीनेमें मेघद्वारा वर्षातेहैं वह जल सर्वथा सर्वको देना चाहिये तैसेही चरकमभी कहाहै परीक्षा । सुवर्ण तथा चादी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें चावल डालकर जल भरदेवे, जो वह चावल न बिगडें और न उनका रग बदले तो उसको गगाजल जानना । यह गगाजल सर्वदोपनाशकहै । और जो वह चावल सडजावें और रग बदल जावें तो उस जलको सामुद्रजल जानना । यह समुद्रजल सवदोपजनकहै । समुद्रजल–खारी, निमकीन, शुक्र, दृष्टि और बलविनाशकहै, दुर्गंधयुक्त, दोपकारक तीक्ष्ण और सर्वकर्मोंमें यह अहितकारीहै । किन्तु आश्विनके महीनमें जो समुद्रसम्बधी वर्षाका जलहै वह गगाजलकी समान गुणकारक जानना । कारण यह है कि, आश्विनके महीनेमें अगस्त्य ऋपिके उदय होनेसे सर्व जल–निर्मल, निर्विप, स्वादु, शुक्रजनक और अदोपकारी होजाते हैं । क्योंकि वर्षाऋतुमें आकाशमें विचरनेवाले साँपोंकी विपैली पवनसे दिव्यजलभी विपयुक्त होजातेहै, किन्तु आश्विनके महीनेमें विपयुक्त नहीं होते । जो जल अपनी ऋतुको छोडकर और ऋतुओंमें बरसता है वह जल सर्वमनुष्योंके निर्दोप करनेवाला है ।

इतिद्विधोदकप्रोक्ततथावक्ष्येचतुर्विधम् । रात्रिवृष्टिर्दिवावृ-

पि दुर्दिनासमयोद्भवा ॥ निशाजलकफकरंघनशीतगुणात्मकम् । समुद्रतोयस्यसमविज्ञेयवातकोपनम् ॥ दिवासूर्य्यांशुसंतप्तामेघावर्षन्तियत्पयः । तत्कफघ्नपिपासाघ्नंलघुवातप्रकोपनम् ॥ दुर्दिनेवृष्टिसंपातंवातोद्धतसवातकम् । कफकृच्छोषहननतर्पणदोषकोपनम् ॥ तथाश्रावणवृष्टिश्च दोषरोषकरानृणाम् ।कण्डूत्रिदोषजननपानीयनप्रशस्यते॥ सघनंनाभसंनीरंश्लेष्मकृद्वातकोपनम् । शमनपित्तरोगाणां मधुररक्तदोषहृत ॥रूक्षपित्तकरंचाम्लगुणरक्तविकारकृत । चित्रानक्षत्रसम्भूतपरंशस्तंत्रिदोषहृत ।कार्त्तिकीवृष्टिसम्भूतंम्वातिसम्पातशीतलम्॥नाशनंचत्रिदोषाणांसर्वसस्यविवर्द्धनम् । शीतलंबलकृद्वृष्यतृड्दाहज्वरनाशनम् ॥

अर्थ—इसप्रकार ऊपरका पानी दो प्रकारका कहा, अब चार प्रकारका कहते हैं। रात्रिमें जो बरसता है, दिनमें जो बरसता है, दुर्दिनमें जो बरसता है, और असमयमें जो बरसता है। रात्रिमें बरसा हुआ जल—कफकारक, घन, शीतल गुणोंवाला, वातको कुपित करनेवाला और समुद्रके जलके समान है। दिनमें सूर्यकी किरणोंसे तप्त हुये मेघ जो पानीको बर्षाते हैं वह जल—कफनाशक, प्यासको हरनेवाला, हल्का और वातको कुपित करता है। दुर्दिनमें बरसा हुआ जल—वातल, कफकारक, शोषनाशक, तृप्तिकारक और दोषोंको कुपित करे है। श्रावणके महीनेकी वर्षाका पानी—मनुष्योंके दोषोंको कुपित करनेवाला, कण्डूजनक, त्रिदोषकारक और यह जल उत्तम नहीं है। भादोंके महीनेकी वर्षाका जल—कफकारक, वातको कुपित करनेवाला, पित्तरोगोंकी शान्ति करनेवाला, मधुर और रुधिरके विकारोंको हरे है। आश्विनके महीनेकी वर्षाका जल—रूखा, पित्तजनक, खट्टा और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है। चित्रानक्षत्रमें बर्षा हुआ जल—त्रिदोषनाशक और अत्यन्त उत्तम होता है। कार्त्तिकमासकी वर्षाका जल—अति शीतल, त्रिदोषनाशक, सर्वप्रकारकी खेतियोंको बढानेवाला, शीतल, बलकारक, वीर्यवर्द्धक तथा तृषा, दाह और ज्वरको हरनेवाला है।

धारादिचतुर्विधजलस्य लक्षणम्।

तथाधारचकारचतौपारहैममेवच।
चतुर्विधसमुद्दिष्टतेषांवच्मिगुणागुणम्॥

अर्थ–धार, कार, तौपार, हैम इन भेदोसे जल चार प्रकारके है, अब इनके गुण और दोषोंको कहताहू।

धारचतुर्विधप्रोक्तवक्ष्येकारमहामते।
श्रीमताचमहाप्राज्ञहितायरुजशान्तये।

अर्थ–धारसंज्ञक जल चार प्रकारका कहा है अब कार जल श्रीमान् और बडे विद्वानोंके हितके लिये और रोगकी शान्तिके लिये कहताहू। -

अथ करका।

स्वर्नद्या'शीतवातेनमेघविस्फूर्जसंकुलम्।शीताम्बुबद्धका-
ठिन्यशिलाजातहिमेनतु॥ पश्चात्सूर्य्यांशुसन्तापात्किञ्चि-
द्विद्रवतेजलम्। वहन्तिमेघा·सलिलशकलशीतलमतम्॥
(हा०स०)

अर्थ–शीतलपवनसे स्वर्गगादि नदियोंका शीतल जल मेघके शब्दसे सकुलित हुआ कठिन होके पीछे शीतसे शिलारूप होजाताहै पश्चात् सूर्य्यकी किरणोंके सन्तापसे कुछेक द्रवीभूत (पतला) होजाताहै फिर मेघ उसको खण्ड खण्डरूप (ओलाको) वरसाते हैं उन ओलोंका जल परम-शीतल होताहै।

अन्यच्च।

दिव्यवाय्वग्निसंयोगात्संहता खात्पतन्तिया।
पाषाणखण्डवच्चापस्ता कारक्योऽमृतोपमा॥

अर्थ–दिव्य वायु और बिजलीके संयोगसे ताडित हुआ जो जल आकाशसे शिलारूपसे गिरता है उसको 'करकाजल' कहते है।

गुणा।

करकाजजलरूक्षविशदंचगुरुस्थिरम्।
दारुणशीतलसान्द्रपित्तहृत्कफवातकृत॥ (भा०प्र०)

अर्थ–ओलोंका जल–रूखा, विशद, भारी, स्थिर, दारुण, शीतल, गाढा पित्तनाशक और कफवातकारक है।

अन्यच्च ।

कारशीतगुणश्रमोपशमनरूक्षमरुच्छ्लेष्मकृन्मूर्च्छामोहशि-
रोर्त्तिनाशनकरहिक्काविनिर्वारणम् । शोफीनांव्रणिनांचनो-
हितकरपित्तात्मकानांहितं शसन्तिप्रवरागुणे·प्रतिकृतिंत·
स्माग्रदूरेकृतम् ॥

अर्थ-ओलाका जल-शीतगुणान्वित, श्रमनाशक, रूखा, वातकफकारक तथा मूर्च्छा, मोह, शिरकी पीडा और हिचकीको दूर करे है। सूजन, तथा व्रणरोगियोंको अहितहै और पित्तकी प्रकृतिवाले मनुष्योंको हितकारी है। यह अत्युत्तमहै इसमें अनेक गुणहैं इसकारण इसको कदापि दूर नहीं करना चाहिये। (हा० सं०)

अथ तौषारजलस्य गुणाश्च ।

अपिनद्या·समुद्रान्तेवह्निगपस्तदुद्भवा· । धूमावयवनिर्मु-
क्तास्तुषाराख्यास्तुता स्मृताः ॥ अपथ्याःप्राणिनांप्रायोभू
रुहाणांचनोहिता । तुषाराम्बुहिमरूक्षस्याद्वातलमपित्त-
लम्॥कफोरुस्तम्भकठाग्निमेहगण्डादिरोगनुत् ।(भा०प्र०)

अर्थ-नदीमें एकर समुद्रतक अग्निहै उससे उत्पन्न हुये जल धुएँके अव यव हीन तुषार कहाते हैं, वह तुषार प्राणियोंको और वृक्षोंको अहितकारक हैं। तुषारका जल-शीतल, रूखा, वादी, अपित्तल तथा कफ, उरुस्तम्भ, कण्ठ, प्रमेह और गलगण्डादि रोगोंको दूर करे है।

अन्यच्च ।

तौपारलघुशीतलंश्रमहरपित्तार्त्तिशान्तिप्रदम् । दोषाणांश-
मनंजलार्तिहननंसर्वामयघ्नपरम् ॥ कुष्ठश्लीपदचर्चिकावि-
षहरपामाविसर्पापहम । क्षीणानाक्षतशोषिणांहितकरंसंसे-
व्यतेमानवैः ॥ (हा०सं०)

अर्थ-तुषारका जल-हलका, शीतल, श्रमनाशक, पित्तकी पीडाकी शान्ति करनेवाला, दोषनिवारक, जलके रोगोंको हरनेवाला, सम्पूर्ण रोगोंको नाश करनेवाला तथा कोढ़, श्लीपद, मकड़ीका विष, पामा और

विसर्परोगका नाश करेहै । तथा क्षीणमनुष्य, क्षतरोगवाले और शोप रोगवालोंको हितकारी है ।

अथ हिमजललक्षणम् ।

हिमवच्छिखरादिभ्योद्रवीभूयाभिवर्षति ।
यत्तदेवहिमहैमजलमाहुर्मनीपिण ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हिमके समान शीतल पर्वतोंसे जो वर्फ गलकर जल टपकताहै उसको विद्वान् हिमजल कहतेहैं ।

हिमजलगुणा ।

हैमघनचमधुरश्चकफात्मकश्च मूर्च्छाश्रमार्तिशमनभ्रमनाशनश्च । पित्तास्रजप्रशमनरुधिरक्षतघ्न शान्तिकरोतिहिमसम्भववारिसद्य ॥ (हा०स०)

अर्थ-हिमजल-घन, मधुर, कफकारक तथा मूर्च्छा, श्रम, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरके विकार और क्षतरोगका नाशकरे है तथा शीघ्रही शान्तिको करे है ।

अ पच्च ।

हिमन्तुशीतलरूक्षदारुणसूक्ष्ममित्यपि ।
नतद्दूपयतेवातनचपित्तनवाकफम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हिमजल-शीतल, रूखा, दारुण, सूक्ष्म और न यह वातको दूपित करे, न पित्तको दूपित करे और न यह कफको दूपित करे है ।

अथ भौमजलम् ।

भौममम्भोनिगदितप्रथमत्रिविधंवुधे । जाङ्गलपरमानूपंतत्साधारणक्रमात ॥ अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्चपित्तरक्तामयान्वित । ज्ञातव्योजांगलोदेशस्तत्रत्यजांगलजलम् ॥ वह्वम्बुर्वहुवृक्षश्चवातश्लेष्मामयान्वित । देशोऽनूपइतिख्यातआनूपतद्भवंजलम ॥ मिश्रचिह्नस्तुयोदेश महिसाधारण स्मृत । तस्मिन्देशेयदुदकतत्तुसाधारणस्मृतम ॥ जाङ्गलसलिलरूक्षलवणलघुपित्तनुत । वह्निकृत्कफकृत्पथ्य विकारान्हरतेवहून ॥ आनूपवार्य्यभिष्यन्दिस्वादुस्निग्ध

अन्यच्च ।

कारशीतगुणश्रमोपशमनंरूक्षमरुच्छ्लेष्मकृन्मूर्च्छामोहशि-
रोर्त्तिनाशनकरहिक्काविनिवारणम् । शोफीनांव्रणिनांचनो-
हितकरपित्तात्मकानाहित शसन्तिप्रवरागुणै·प्रतिकृतिंत-
स्मान्नदूरंकृतम् ॥

अर्थ-ओलाका जल-शीतगुणान्वित, श्रमनाशक, रूखा, वातकफकारक तथा मूर्च्छा, मोह, शिरकी पीडा और हिचकीको दूर करे है । सूजन, तथा व्रणरोगियोंको अहितहै और पित्तकी प्रकृतिवाले मनुष्योंको हितकारी है । यह अत्युत्तमहै इसमें अनेक गुणहै इसकारण इसको कदापि दूर नहीं करना चाहिये । (रा० नि०)

अथ तौषारजलस्य गुणाः ।

अपिनद्या·समुद्रान्तेवह्निरपस्तदुद्भवा· । धूमावयवनिर्मु-
क्तास्तुपारारव्यास्तुता स्मृता· ॥ अपथ्या·प्राणिनांप्रायोभू-
रुहाणांचनोहिता । तुपाराम्बुहिमरूक्षस्याद्वातलमपित्त-
लम् ॥ कफोरुस्तम्भकण्ठाग्निमेहगण्डादिरोगनुत । (भा० प्र०)

अर्थ-नदीसे लेकर समुद्रतक अग्निहै उससे उत्पन्न हुये जल धुर्येके अवयव हीन तुषार कहातेहै, वह तुषार प्राणियोंको और वृक्षोंको अहितकारक है । तुषारका जल-शीतल, रूखा, वादी, अपित्तल तथा कफ, उरुस्तम्भ, कण्ठ प्रमेह और गलगण्डादि रोगोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

तौपारंलघुशीतलश्रमहरंपित्तार्त्तिशान्तिप्रदम् । दोपाणांश-
मनजलार्तिहननसर्वामयघ्नपरम् ॥ कुष्ठश्लीपदचर्चिकावि-
पहरंपामाविसर्पापहम । क्षीणानांक्षतशोपिणांहितकरसंसे-
व्यंतेमानवै ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तुषारका जल-हलका, शीतल, श्रमनाशक, पित्तकी पीडाको दूर करनेवाला, दोषनिवारक जलके रोगोंका हरनेवाला, सबप्रकारके रोगोंका नाशकरनेवाला तथा कोढ, श्लीपद मकडीका विष, पामा और

विसर्परोगका नाश करेहै। तथा क्षीणमनुष्य, क्षतरोगवाले और शोप रोगवालोंको हितकारी है।

अथ हिमजललक्षणम्।

हिमवच्छिखरादिभ्योद्रवीभूयाभिवर्षति।
यत्तदेवहिमहैमजलमाहुर्मनीषिण ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हिमके समान शीतल पर्वतोंसे जो वर्फ गलकर जल टपकताहै उसको विद्वान् हिमजल कहतेहैं।

हिमजलगुणा।

हैमघनचमधुरञ्चकफात्मकञ्च मूर्च्छाश्रमार्तिशमनभ्रमनाशनञ्च। पित्तास्रजप्रशमनंरुधिरक्षतघ्न शान्तिकरोतिहिमसम्भववारिसद्य ॥ (हा०स०)

अर्थ-हिमजल-घन, मधुर, कफकारक तथा मूर्च्छा, श्रम, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरके विकार और क्षतरोगका नाशकरे है तथा शीघ्रही शान्तिको करे है।

अन्यच्च।

हिमन्तुशीतलरूक्षदारुणसूक्ष्ममित्यपि।
नतदूपयतेवातनचपित्तनवाकफम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हिमजल-शीतल, रूखा, दारुण, सूक्ष्म और न यह वातको दूपित करे, न पित्तको दूपित करे और न यह कफको दूपित करे है।

अथ भौमजलम्।

भौममम्भोनिगदितप्रथमत्रिविधबुधे। जाङ्गलपरमानूपततस्साधारणक्रमात॥ अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्चपित्तरक्तामयान्वित। ज्ञातव्योजागलोदेशस्तत्रत्यजांगलजलम् ॥ वह्वबुर्नहुवृक्षश्चवातश्लेप्मामयान्वित। देशोऽनूपइतिख्यातआनूपतद्भवेज्जलम ॥ मिश्रचिह्नस्तुयोदेश सहिसाधारण स्मृत। तस्मिन्देशेयदुदकतत्तुसाधारणंस्मृतम॥ जाङ्गलमलिलरूक्षलवणलघुपित्तनुत। वह्निकृत्कफहृत्पथ्य विकारान्हरतेवहून ॥ आनूपवार्य्यभिष्यन्दिस्वादुस्निग्ध

वनगुरु । वह्निहृत्कफकृद्पथ्यविकारान्कुरुतेबहून्॥साधारणन्तुमधुरदीपनशीतललघु । तृष्णादाहमदच्छर्दितथा दोषत्रयप्रणुत ॥

अर्थ-भौमजल अर्थात् पृथ्वीका जल-जांगल, आनूप और साधारण इन भेदोंसे तीन प्रकारकाहै । जिस देशमें अल्पजल और थोडे वृक्ष हों और जहां प्राय. प्राणी पित्त तथा रुधिरके रोगवाले अधिक हों उस देशको जांगलदेश कहते है और उस देशके जलको जांगल जल कहते है । जिस देशमें बहुत जल और बहुत वृक्ष हों और जहांके जीव अधिकतर वात कफ रोगवाले हों उस देशको अनूप देश कहतेहैं और उस देशके जलको आनूप कहतेहैं । जिस देशमें जंगल और अनूप दोनों लक्षण मिश्रित हों रोगभी मिश्रित हों उस देशको साधारण कहतेहैं और उस देशके जलको साधारण जल कहतेहैं । जांगलजल-रूखा, निमकीन, हलका, पित्तनाशक, जठराग्नि-जनक, कफनाशक, पथ्य और अनेक प्रकारके विकारोंको हरनेवालाहै । आनूपजल-अभिष्यन्दि, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, घन, भारी, जठराग्निनाशक, पथ्य और अनेक प्रकारके विकारोंको करे है । साधारणजल-मधुर, दीपन, शीतल, हलका तथा तृषा दाह, मद, वमन और त्रिदोषका नाश करे है ।

अथाष्टविध जलम् ।

धारपृथिव्यापतितपयस्तुतत्रैवजातगुणभेदभिन्नम् ।
नानाविधैर्भेदगुणैश्वसम्यग्जातजलंचाष्टविधंवदन्ति ॥
नद्योद्भिदप्रस्रवणञ्चचौडयकौपतडागंसरसोद्भवञ्च ।
वाप्योद्भवतप्रवदन्तिधीरानीरम्प्रमासेनवदामिचात्र ॥(हा स.)

अर्थ-धारनामवाला जल पृथिवीमें पतित हुआ तहां गुणोंके भेदोंसे भिन्न होजाताहै फिर अनेक प्रकारके भेद और गुणोंसे आठ प्रकारका होता है । नादेय (नदीका), औद्भिद (जो पृथ्वीको तोडकर पडता है उसका जल) झरनेका, चौडयका, कुएका, तडागका, सरका और वापीका इन भेदोंसे जल आठ प्रकारका कहाहै ।

नदीजलम् ।

नद्यानदस्यवानीरंनादेयमितिकीर्तितम् ।

नादेयमुदकरूक्षवातललघुदीपनम् ॥
अनभिष्यन्दिविशदकटुककफपित्तनुत ॥(भा० प्र०)

अर्थ–नदी और नदके जलको नादेय ऐसा कहते हैं नदीका जल–रूखा, वादी, हलका, दीपन, अनभिष्यंदि, विशद, चरपरा तथा कफ पित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

यच्छ्रीमताञ्चैवमहीपतीनांसेव्यतथायोग्यतमप्रदिष्टम् ।
नादेयतोयमधुरतथालघुरूक्षतथोष्णशमनञ्चवायो ॥
सन्दीपनसस्यविनाशनञ्चहिमागमेवाशिशिरेनिषेव्यम् ।
बलप्रदपथ्यकरनराणाप्रदिष्टमेतत्तुसदाभिषग्भि ॥(हा स)

अर्थ–नदीका जल–लक्ष्मीवान् और राजाओंको अतियोग्य कहा है मधुर, हलका, रूखा, गरम, वातको शान्ति करनेवाला, अग्निप्रदीपक, खेतीका नाश करनेवाला, बलकारक और पथ्य है, यह जल शीतऋतुके आगममें तथा शिशिर ऋतुमें सेवन करना चाहिये ।

नद्य शीघ्रवहालघ्व्य सर्वायाश्चामलोदका ।
गुर्व्य शैवलसछन्नामदगा कलुषाश्चया ॥

अर्थ–शीघ्र वहनेवाली नदियाका जल–हलका और निर्मल होताहै । और मदवहनेवाली नदियोंका जल भारी, काईसे ढका हुआ और कलुषता-युक्त होताहै ।

नदीसरस्तडागस्थेकूपप्रस्रवणादिजे ।
उदकेदेशभेदेनगुणान्दोषाश्चलक्षयेत ॥

अर्थ–नदी–सरोवर, तालाव, कूआ, झरना इनके जलमें देशभेदके द्वारा गुण और दोष जानन ।

अथ गगाजलगुणा ।

स्वादुपाकरसशीतत्रिदोषशमनतथा ।
पवित्रमतिपथ्यञ्चगाङ्गवारिमनोहरम् ॥

अर्थ–गगाजल–स्वादुपाकी, शीतल, त्रिदोषकी शान्तिकरनेवाला, पवित्र, अत्यन्त पथ्य और मनोहर है ।

यमुनाजलगुणाः।

गाङ्गात्किञ्चिद्गुरुतरंस्वादुपित्तापहंपरम्।
वातलंवह्निजननंरूक्षंचयामुनजलम्॥

अर्थ-यमुनाका जल गंगाजलसे किंचित् भारीहै, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक, वातजनक, जठराग्निजनक और रूखा है।

नर्मदाजलगुणाः।

अथस्वच्छंप्रशस्तंचशीतलंलघुलेखनम्।
पित्तश्लेष्मप्रशमनंनार्मदंसर्वरोगनुत्॥

अर्थ-नर्मदानदीका जल-निर्मल, शीतल, हलका, लेखन, पित्त और कफकी शान्ति करनेवाला और सर्वप्रकारके दोषोंका नाश करे है।

गोदावरीजलगुणाः।

कण्डूकुष्ठप्रशमनंवह्निसंदीपनंपरम्।
पाचनंवातपित्तघ्नंवारिगोदावरीभवम्॥

अर्थ-गोदावरी नदीका जल-कण्डू, कुष्ठ और वातपित्तनाशक है, अग्नि प्रदीपक और पाचक है।

कावेरीनदीजलगुणाः।

कावेरीसलिलंपथ्यंवातघ्नंबलवर्णकृत्।
आग्नेयमतिशीतंचदद्रुकुष्ठविनाशकृत्॥

अर्थ-कावेरीनदीका जल-पथ्य, वातविनाशक, बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, जठराग्निको बढानेवाला, अत्यन्त शीतल तथा दाद और कुष्ठका नाश करे है।

कृष्णवेणीजलगुणाः।

रूक्षंचशीतलंवारिवातरक्तप्रकोपनम्।

अर्थ-कृष्णावेणीका जल-रूखा, शीतल और वातरक्तको कुपित करे है।

पूर्वदेशोद्भवानद्यःसर्वावातकफप्रदाः। पश्चिमा पित्तला सर्वा कफवातविनाशनाः॥ पश्चिमोदधिगाःशीघ्रवहायाश्चामलोदकाः। पथ्या समास्तास्तानद्योविपरीतास्ततोऽन्यथा॥

अर्थ-पूर्वदेशकी सर्वनदी-वातकफकारक। पश्चिमदेशकी सर्वनदी-पित्तकारक और कफवातविनाशक हैं। पश्चिममें समुद्रमें जानेवाली नदियोंका

जल और शीघ्र वहनेवाली नदियोंका जल निर्मल है। नदीका जल अल्पही पथ्य होता है और अधिक सेवन करना अहितकारक है।

नादेयसंप्रवक्ष्यामिससुद्रगामिस्रोतसाम्। ससैकतामपापाणाद्विविधाचाम्बुवाहिनी॥ सदावहावाघनवारिकोष्णामरुत्कफानाशमनश्चतस्या। नीरवसन्तेहितकृद्विशेपान्नदीभवंनेवहिमागमेच॥ घनविमलशिलानांस्फालनाज्जातफेन वहलसजलवीचीच्छन्नसक्षोभदृस्तम्। ननुसुखमयशीतनातिचोष्णंघनश्च हरतिपवनपित्तश्लेष्मकृद्वारिसम्यक्॥ नवनविमलतोयसैकताया॰प्रवाहो नचभवतिलघुत्वश्रेष्मकृच्छन्तिपित्तम्। भवतिमधुरमेवकिञ्चिदुष्णकपायभवति पवनकारीशोपमूर्च्छानिहन्ति॥ हिमवत्प्रभवानद्य पुण्या देवर्पिसेविता। घनपापाणसिकतावाहिनीविमलोदका॥ हन्तिवातकफतोयश्रमशोपविनाशनम्। किञ्चित्करोति वापित्तत्रिदोपशमनजलम्॥ पारिभद्रभवायाश्चविन्ध्यसिन्धुभवाश्चया। शिरोहृद्रोगकुष्टानाताहेतु श्लीपदस्यच॥ मलयप्रभवानद्य शीततोया सुधोपमा॰। प्रतिपित्तंचवातच शोपभ्रमश्रमापहा॥गगासरस्वतीशोणायमुनासरयूशची। वेणाशरावतीनीलाउत्तरापूर्ववाहिनी॥ हिमवत्प्रभवाद्येता हिमसघातशीतला। समा॰सर्वगुणैर्नद्योवातश्लेष्महरानृणाम्॥ आसांनवशतैर्युक्तागङ्गाप्रोक्तामनीपिभि। तथाचर्मण्वतीवेत्रवतीपारावतीतथा॥ क्षिप्रामहापदीपीतामुत्सकन्यामनस्विनी। शेवतीचैवगोलिन्य सिन्धुयुक्ता ससुद्रगा वातपित्तहरनीरत्रिदोपभ्रमतपरम। श्रमग्लानिहरवृष्यमुत्तगगानुगामिच॥तापीगोपतिगोलोमीगोमतीसलिलामही। सरस्वतीयुतानद्योनर्म्मदापश्चिमानुगा॥ आसाजलवन

शीतपित्तघ्नकफकृत्तथा । वातदोषहरं हृद्यकण्डूकुष्ठविनाशनम् ॥ पश्चिमाब्धिसमुद्भूता गोतमीपुण्यभावना । आसां शीतजलं पापिकफवातविकारकृत ॥ पित्तदशमनबल्यमूत्रदोषविकारकृत् । पूर्णापयस्विनीवेणाप्रणीताचवगनना ॥ द्रोणागोवर्द्धनोयान्यागौतम्यानुगताइमाः । आसांजलघन नातिवातश्लेष्मविकारकृत ॥ पूर्वसमुद्रगाश्चैवनद्योनवशतैर्युता । कावेरीनीरकान्ताचभीमाचैवपयस्विनी ॥ निभावरीविशालाचगोवन्दनीमदनस्वसा। पार्वतीचापगनशोदक्षिणादिग्गमाइमा ॥ प्रत्येकशोनवशतैर्युताइमा पृथक्पृथक्। सर्वासांपरिसंख्याचशतानाचैकविंशति ॥ क्रोशैकोशभवेत्कुल्यायोजनेयोजनेनदी। द्वियोजनाचविज्ञेयामहानीगवुधैर्नदी ॥ (शा० नि०)

अर्थ—आत्रेयजी कहते हैं कि, अब समुद्रमें जानेवाली नदियोंको कहता हूं, रेतेवाली और पत्थरवाली इन भेदोंसे नदी दो प्रकारकी है। गंग पहलेवाली नदी—चंचलजलवाली, गरम, वात और कफकी शान्ति करनेवाली है उनका जल शिशिर काल वसन्तऋतुमें हितकारी है और हिमऋतुमें पूर्वमें हितकारी नहीं है। गन्ध और निर्मल ऐसे पत्थरवाली नदीका जल फेनयुक्त और तरंगोंके क्षोभसे गरम होजाता है मधुर, शीतल, अत्यन्त उष्ण नहीं, हलका, तथा वात पित्तनाशक और कफको करता है। यह रेतेवाली नदियोंका जल—पथ्य नहीं, निर्मल हलका भी नहीं कफकारक, पित्तनाशक, मधुर, स्निग्ध, गरम, रूखा, वातनाशक तथा भूख और दीपनो हा करे है। हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई नदी पवित्र है देव और ऋषियों करके सेवित है, भारी पत्थर और बालूकाके पूर बहनेवाली है और उनका जल—निर्मल, तापज्वरनाशक, श्रमनिवारक, दीपनकारक, शिशिर तिसका रक्त तथा पित्त और त्रिदोषकी शान्ति करे है। पारियात्र, विन्ध्याचल और सिन्धुपर्वतसे उत्पन्न हुई नदियोंका जल—शिरोरोग, हृद्रोग, कफ और श्वासादिरोगोंका कारण है। सह्य पर्वतसे उत्पन्न हुई नदियोंका जल—

शीतल, अमृतके समान तथा वात, पित्त, शोष, भ्रम और श्रमका नाश करे है । गगा, सरस्वती, शोण, यमुना, सरयू, शची, वेणा, शरावती और नीला तथा उत्तर और पूर्वको वहनेवाली, हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई और हिमके सघातसे शीतल हुई यह सर्वनदी गुणोंमें समान और मनुष्योंके वात तथा कफको हरनेवाली है । इनमें ९०० नौसौ नदियाँयुक्त गगा कही है । तथा चर्मण्वती, वेत्रवती, पारावती, क्षिप्रा, महापदी, पीता, मुत्सका, मनस्विनी, शेवती, शैवलिनी और सिन्धु यह सर्वनदी समुद्रमें जानेवाली हैं । इन सर्वनदियोंका जल–वातपित्तनाशक, त्रिदोषनाशक, श्रमहारक, ग्लानि-निवारक, वीर्य्यवर्द्धक और उत्तर दिशासे आता है तापी, गोपती, गोलोमी, गोमती, सलिला, मही, सरस्वती और नर्मदा यह सर्व पश्चिमसे बहती हैं इनका जल–घन, शीतल, पित्तनाशक, कफकारक, वातविकारविनाशक, हृदयको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठका नाश करे है । पश्चिमके पर्वतसे उत्पन्न हुई गोतमी और पुण्यभावना आदि नदियोंका जल–शीतल कफ और वातके विकाराको करे है । पित्तज दोषोंको शान्ति करे है, बलकारक और मूत्रदोषाको उत्पन्न करे है । पूर्णा, पयस्विनी, यत्रा, प्रणीता, वरानना, द्रोणा, गोवर्द्धनी आदि नदी गौतमी नदीका अनुगमन करती है । इनका जल–अत्यन्त घन नहीं है तथा वात और कफके दोषोंको उत्पन्न करे है । पूर्वके समुद्रम गमन करनेवाली ९०० नदी हैं । कावेरी वीरकान्ता, भीमा, पयस्विनी, विभावरी, विशाला, गोवन्दनी, मदनस्वसा और पार्वती आदि नदी दक्षिण दिशाको गमन करनेवाली ह । एक २ नदी ९०० नदीयुक्त ई और सर्वहिन्दोस्थानकी नदियोंकी सख्या २१०० है । कोशकोशमें कुल्या होती हैं, योजन २ म नदी होती है और बारह २ योजनमें महाजलवाली नदी होती है जिसको नद कहते हैं ।

औद्भिदभूमिगुणा ।

भूमिःपञ्चविधाज्ञेयाकृष्णारक्तासितातथा।पीतानीलाभवेच्चान्यागुणास्तासांप्रकीर्त्तिताः॥साकृष्णामधुराक्षाराकषायापीतवर्णिनी।रक्तासातुभवेत्तिक्तामधुराम्लासितास्मृता॥नीलासकटुकाज्ञेयाभूमिभागाज्जलविदु । सवनमधुग्नीर कृष्णभूमिपरिस्रुतम्॥पीनास्थितकपायचरक्ताया क्षारमाधुरम् । सितायाह्यम्लमधुरभूमिभागेनलक्षयेत ॥ (हा०सं०)

अर्थ-पृथिवी-काली, लाल, सफेद, पीली और नीली इन भेदोंमे पांच प्रकारकी है, अब उनके गुण कहते हैं, काली पृथिवी मधुर और खारी है। पीले रंगकी पृथिवी-कषेली है। लाल पृथिवी कड़वी है। सफेद पृथिवी-मधुर और खट्टी है। और नीली पृथिवी चरपरी है। ऐसेही पृथिवीके भागका पानी कहा है। काली पृथिवीका जल-घन और मधुर होताहै। पीली पृथिवीका पानी-कषेला होताहै। लाल भूमिका जल-खारी और मधुर होता है। सफेद भूमिका जल-अम्ल और मधुर होताहै ऐसे पृथिवीके भागसे जलको लक्षित करे, प्राय पृथिवीके समान जलका स्वाद होता है।

औद्भिदजललक्षणं गुणाश्च।

विदार्य्यभूमिंनिम्नायामहत्याधारयाखनेत्। तत्तोयमौद्भिद नामवदन्तीतिमहर्षय ॥ औद्भिदवारिपित्तघ्नमविदाह्यति-शीतलम्। प्रीणनमधुरंबल्यमीषद्वातकरंलघु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पृथिवीको फाड़कर जो नीचे बड़ी धारासे जल बहताहै उस जलको औद्भिद जल कहते हैं, औद्भिदजल-पित्तनाशक अविदाही, अत्यन्त शीतल, प्रीणन, मधुर, बलकारक, किंचित् वातकारक और हलका है।

अथ प्रास्रवणजलस्य लक्षणं गुणाश्च।

शैलसानुस्रवद्वारिप्रवाहोनिर्झरोझरः। सतुप्रस्रवणश्चापि तत्रत्यनैर्झरजलम् ॥ नैर्झररुचिकृत्रीरंकफघ्नदीपनलघु। मधुरकटुपाकञ्चवातलम्यादपित्तलम् ॥

अर्थ-पर्वतमेसे जो जल बहताहै उसको निर्झर, झर और प्रस्रवण कहतेहैं, हिन्दीमें झरनेका जल कहते हैं झरनेका जल-रुचिकारक, कफनाशक, दीपन, हलका, मधुर, कटुपाकी, वातजनक और अपित्तल है।

अथ चौण्ड्यस्य लक्षणं गुणाश्च।

शिलाकीर्णंस्वयश्वभ्रनीलाञ्जनसमोदकम्। लतावितानसंछन्नंचौण्ड्यमित्यभिधीयते ॥ अश्मादिभिर्बद्धयत्तञ्चौण्ड्यमितिचापरे। तत्रत्यमुदकंचौण्ड्यमुनिभिस्तदुदाहृतम् ॥ चौण्ड्यंवह्निकरंगरूक्षंकफघ्नंलघु। मधुरंपित्तहृद्रुच्यपाचनविशदम्स्मृतम् ॥

अर्थ-जो गड्ढा चारों ओरसे शिलाओंकरके व्याप्त हो और जिसका जल नील अजनकी समान निर्मलहो और जिसके ऊपर लता छारहीहों उसको चौण्डय कहते हैं । कोई आचार्य्य कहतेहैं कि, जो पत्थर आदिसे न बाधाहो उसको चौञ्ज्य कहते हैं । उसके जलको चौञ्ज्य जल कहतेहैं । चौण्डयका जल-जठराग्निजनक, रूखा, कफनाशक, हल्का, मधुर, पित्तनाशक, रुचिकारक, पाचक और विशदहै ।

अथ कौपस्य लक्षण गुणाश्च ।

भूमौखातोल्पविस्तारोगम्भीरोमण्डलाकृति । बद्धोऽबद्ध सकूपःस्यात्तदम्भःकौपमुच्यते ॥ कौपंजलयदिस्वादुत्रिदोषघ्नहितलघु।तत्क्षारंकफवातघ्नदीपनपित्तकृत्पर॥ (भा०प्र)

अर्थ-भूमिमें थोडा चौडा गहरा गोल गड्ढा खोदकर ईटपत्थरासे घनाले वा कच्चाही रहनेदेवे उसको कूप कहतेहैं और उसके जलको कौपजल कहतेहैं, कुयेका जल यदि स्वादिष्ठ हो तो त्रिदोषनाशक, पथ्य और जो हल्का होता है और खारी होय तो कफवातनाशक, दीपन और पित्तकारक होताहै ।

अन्यच्च ।

कफघ्नकूपपानीयक्षारपित्तकरलघु । (रा०नि०)

अर्थ-औरभी कुयेका जल-कफनाशक, खारी, पित्तकारक और हलका है।

तडागजलस्य लक्षण गुणाश्च।

प्रशस्तोभूमिभागस्थोवहुसवत्सरोषित. । जलाशयस्तडाग स्यात्ताडागतज्जलम्मृतम् ॥ ताडागमुदकस्वादुकपाय कटुपाकिच । वातलवद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् ॥

अर्थ-उत्तम भूमिके भागमें बहुतवर्षोंके पुराने जलाशयको तडाग कहतेहैं, उसके जलको ताडागजल कहतेहैं । तालावका जल स्वादिष्ठ, कषेला, कटु पाकी, वातवर्द्धक, मल और मूत्रको बांधनेवाला तथा रक्तपित्त और कफका नाश करे है ।

सारसलक्षणं गुणाश्च ।

नद्या·शैलादिरुद्धायायत्रसश्रित्यतिष्ठति । तत्सरोजलसंच्छन्नतदम्भ'सारसस्मृतम् ॥ सारससलिलवल्यतृष्णाघ्नमधुरलघु । रोचनतुवररूक्षवद्धमूत्रमलस्मृतम् ॥

अर्थ-जहां नदी पहाडआदिसे रुककर ठहर जावे उसको सर कहते हैं, उसके जलको सारस कहते हैं। सरका जल-बलकारक, तृषानाशक, मधुर, हलका, रोचन, कषैला, रूखा तथा मल और मूत्रको बांधनेवाला है।

वाप्यलक्षण गुणाश्च।

पाषाणैरिष्टकाभिर्वाबद्धःकूपोऽबृहत्तरः।ससोपानोभवेद्वापीतज्जलवाप्यमुच्यते॥ वाप्यवारियदिक्षारपित्तकृत्कफवातहृत्। तदेवमिष्टकफकृद्वातपित्तहरंभवेत्॥

अर्थ-पत्थर अथवा ईंटोंसे जो बडा कुआ बनाया जावे और उसमें सोपान अर्थात् सीढीभी लगाईजावें उसको वापी (बावडी) कहते हैं और इसके जलको वाप्य कहते हैं। बावडीका पानी जो खारी होय तो पित्तकारक और कफवातहारक जानना। और जो मीठा होय तो कफकारक और वातपित्तहारक जानना।

पाल्वलस्य लक्षणं गुणाश्च।

अल्पंसर पल्वलंस्याद्यत्रचन्द्रार्कगोरवौ।
नतिष्ठतिजलंकिञ्चित्तदन्यत्रापिपाल्वलम्॥
पाल्वलवार्य्यभिष्यन्दिगुरुस्वादुत्रिदोषकृत्।

अर्थ-छोटे सरको पल्वल कहते हैं, इसमें श्रावण तथा वर्षामें जल रहता है फिर सूखजाता है, इसके जलको पाल्वल कहते हैं। पल्वल अर्थात् तलैयाका जल-अभिष्यन्दी, भारी, स्वादु और त्रिदोषकारक है।

वैकिरस्य लक्षणं गुणाश्च।

नद्यादिनिकटेभूमिर्य्यत्रभवेद्वालुकामयी।उद्धार्यतेननीयतेतु तज्जलंवैकिरंविदुः॥वैकिरंशीतलंस्वच्छंनिर्दोषंलघुचस्मृ-तम्। तुवरंस्वादुपित्तघ्नंक्षारंतत्पित्तलंमनाक्॥

अर्थ-नदीके निकटकी जो पृथिवी बालुका होती है उसमें गड्ढा खोदकर जो जलका निकालते हैं उस जलको विकिर (बाहेरा) जल कहते हैं। विकिर (बाहेरा) जल-शीतल, निर्मल, निर्दोष, हलका, कषैला, स्वादिष्ट और पित्तनाशक है और जो खारी होय तो पित्तकारक जानना।

कैदारस्य लक्षणं गुणाश्च।

केदारेसेतुवद्धेस्यात्तज्जलंस्मृतम्।

केदारवार्य्यभिष्यन्दिमधुरगुरुदोपकृत् ॥

अर्थ-केदार खेतको कहते हैं और उसके जलको केदार कहते हैं । केदारका जल-अभिष्यन्दि, मधुर, भारी और दोपकारी है ।

वृष्टिजललक्षणगुणाश्च ।

वार्पिकंतदहर्वृष्टभूमिस्थमहितजलम् ।
त्रिरात्रमुषितन्तत्तुप्रसन्नममृतोपमम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जो वृष्टिका जल उसी दिन वर्षा हो और भूमिस्थित हो वह जल अहितकारी है और जो वही जल तीन रात्रि रक्खारहै तो स्वच्छ और अमृतकी समान होजाता है।

क्षारजलगुणा ।

क्षारोदकपित्तलंस्यात्सरचाग्निप्रदीपनम् ।
कफवातहरंचैवप्रोक्तंपूर्वचिकित्सके ॥

अर्थ-खारीजल-पित्तकारक, सारक, अग्निप्रदीपक तथा कफ और वातका विनाश करे है ।

समुद्रजलगुणा ।

सामुद्रदोपजनकदाहकरक्तदोपकृत् ।
अग्निमांद्यश्लीपदत्वग्दोपश्चकफजयेत् ॥ (धं०नि०)

अर्थ-समुद्रका पानी-दोपजनक, दाहकारक, रक्तके विकारोंको करनेवाला तथा मंदाग्नि, श्लीपद, त्वचाके दोप और कफका नाश करे है ।

सर्वऋतुसम्बन्धिजलगुणा ।

वारिसाधारणवृष्यदीपनमधुरलघु ॥

अर्थ-साधारण जल-वीर्य्यवर्द्धक, दीपन, मधुर और हलका है ।

वार्षिकजलगुणा ।

गुर्व्वभिष्यन्दिपानीयवार्षिकमधुरसरम् ।

अर्थ-वर्षाऋतुका जल-भारी, क्लेदकारक, मधुर और सारक है ।

शारदीयजलगुणा ।

शारदञ्चानभिष्यन्दिलघुतत्परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-शरद्ऋतुका जल-अनभिष्यादि अर्थात् क्लेदहीन और हलका है ।

हैमन्तिकजलगुणाः ।

हैमन्तिकंजलस्निग्धवृष्यबल्यहितगुरु ।

अर्थ-हेमन्तऋतुका जल-स्निग्ध, वृष्य, बलकारक, हितकारी और भारी है ।

शैशिरजलगुणाः ।

शैशिरकफवातघ्नकिंचिद्धैमन्तिकाल्लघु ।

अर्थ-शिशिरऋतुका जल-कफ वातनाशक और हैमन्तिक जलसे किञ्चित् हलका है ।

वासन्तिकजलगुणाः ।

कषायमधुरंरूक्षविद्याद्वासन्तिकजलम् ।

अर्थ-वसन्तऋतुका जल-कषेला, मधुर, और रूखा होता है ।

ग्रैष्मिकजलगुणाः ।

ग्रैष्मिकत्वनभिष्यन्दिजलमित्येवनिश्चयः॥ (रा०प०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका जल-क्लेदरहित होता है ।

ऋतुपरत्वेनजलगुणाः ।

हेमन्तेसारसतोयताडागवाहितस्मृतम् । हेमन्तेविहिततोय शिशिरेऽपिप्रशस्यते ॥ वसन्तग्रीष्मयोःकौपवाप्यवानैर्झर जलम् । नादेयवारिनादेयवसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः॥ विषवद्वन-वृक्षाणापत्राद्यैर्दूषितंयतः । औद्भिदवान्तरिक्षवाकौपवाप्रा वृषिस्मृतम्॥शस्तशरदिनादेयनीरमम्भूदकपरम्॥(भा०प्र०)

अर्थ-हेमन्तऋतुमें सरोवर और तालावका जल पीना हितकारी है, जो जल हेमन्तऋतुमें हितकारी कहा है वह जल शिशिर ऋतुमेंभी हितकारी है वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें कुएका, बावडीका और झरनेका जल पीना चाहिये, वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें नदीका जल नहीं देना चाहिये । कारण यह है कि, इसऋतुमें पतझड होता है इससे उन पत्तोंसे यह नदीका जल विषके समान दूषित होजाता है । वर्षाऋतुमें औद्भिद या अन्तरिक्षजल अथवा कुएंका जल पीना चाहिये और शरदऋतुमें नदीका जल अथवा भौमूदक सेवन करना चाहिये ।

अन्यच्च।

शरदि स्वच्छमुदयादगस्त्यस्याखिलहितम् ॥

अर्थ-शरदृतुमें अगस्त्यऋषिके उदय होनेसे सर्व जल निर्मल और हितकारी होजाते हैं।

अन्यच्च।

पौपेवारिसरोजातंमाघेतच्चतडागजम्। फाल्गुनेकूपसम्भूत चैत्रेचौण्डचहितंमतम् ॥ वैशाखेनैर्झरंनीरंज्येष्ठेशस्ततथौ द्भिदम्। आपाढेशस्यतेकौपंश्रावणेदिव्यमेवच ॥ भाद्रेकौ पपयःशस्तमाश्विनेचौज्यमेवच। कार्तिकेमार्गशीर्पेचजल मात्रप्रशस्यते ॥ (वृद्धसुश्रुतात्)

अर्थ-पौपके महीनेमें सरोवरका जल, माघके महीनेमें तलावका, फाल्गुनके महीनेमें कुयेका, चैत्रके महीनेमें चौण्डयका, वैशाखके महीनेमें झरनेका, जेठके महीनेमें उद्भिदका, आपाढके महीनेमें कुयेका, श्रावणके महीनेमें दिव्योदक, भादोंके, महीनेमें कुएका, आश्विनके महीनेमें चौज्य और कार्तिक तथा मार्गशीर्षके महीनेमें सर्व जल सेवन करने चाहिये।

तथाचतुर्विधतोयवक्ष्यामिशृणुकोविद।
पापोदकरोगोदकमशूदकारोग्योदकौ ॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि अब जलको-पापोदक-रोगोदक-अशू-दक और आरोग्योदक इन भेदोंसे चार प्रकारसे कहता हूं हे हारीत! सुन।

पापोदक।

पापपापोदकचैवकरोत्येवमरोचकम्। विष्टायुक्तयाहिनीरं कृमिकीटसमाकुलम्॥समलनीलशैवालपापन्तुनर्दितंचय-त्। स्नानेपानेनतच्छस्तंनराणावाहयेपुच॥ स्नानेनत्वग्भ-वान्रोगान्कण्डूकुष्ठविसर्पकृत्। पानेनकफगुल्मानांकृमीणा वरसम्भवान्॥करोतिविविधान्रोगांस्तस्मात्तत्परिवर्जयेत॥

अर्थ-पापोदक अर्थात् पापीपानी-अरुचिकारक है। विष्ठायुक्त जल-मलरोपक है। कृमि, कीट, मल और नीलीकाई आदिसे मिलेहुये जलको पापोदक कहतेहैं। यह पापोदक-मनुष्य और घोडोंको स्नान और पीनेमें

अहितकारी है। और इस जलमें स्नान करनेसे त्वचाके रोग, कण्डू, कुष्ठ और विसर्प रोग उत्पन्न होता है। और इस जलको पान करनेसे-कास, गुल्म और कृमिप्रभृति नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। इस कारण यह पापीजल कदापि नहीं पीना चाहिये।

रोगोदकम्।

बहुवृक्षलताकुञ्जेच्छायाकूपोऽथवासरः। अन्ययश्चेदपोऽप्येवकृमिशैवालसंयुतम्॥ क्लिन्नंसपिच्छिलंकृष्णवृक्षमूलाश्रितंभवेत्। बहुवृक्षपर्णयुक्तदुर्गन्धमूत्रगन्धवत्॥ रोगोदकंविजानीयात्करोतिविषमान्गदान्। शूलकुष्ठचकण्डूचसेवितंनकरोतिहि॥ विण्मूत्रतृणनीलिकाविषयुततप्तवनफेनिलं दन्तग्राह्यमनार्त्तवहिमजलदुर्गन्धिशैवालजम्। नानाजीवविमिश्रितंगुरुतरंपर्णौघपङ्काविलं चन्द्रार्कांशुसुगोपितं नचपिबेन्नीरंसदादोषलम्॥ गुल्मप्लीहार्शःपाण्डुश्चजलंनापिजलोदरम्।

अर्थ—बहुतसे वृक्ष और बहुतसी बेलोंके समूहकी छायामें कूआ वा सरोवर हो और उसमें पानी सदैव भरा रहता हो यह जल कृमि, सिवारयुक्त हो, क्लेदितहो, पिच्छिलहो, काले रंगका हो, वृक्षोंकी जडोंसे आश्रितहो और बहुत वृक्षोंके पत्तोंसे युक्त हो, दुर्गंधित हो मूत्रकी समान गन्धवाला हो उसको रोगोदक कहते हैं-यह रोगोदक अर्थात् रोगी पानी-विषमरोग, शूल, कुष्ठ और कण्डूरोगको उत्पन्न करता है। तथा जो जल विष्ठा, मूत्र, तृण, काई और विषसहित हो, गरमहो, वनहो, फेनिलहो, दांतोंको पकडनेवालाहो, अनार्त्तव वर्षाहो, दुर्गन्धियुक्तहो, सिवारयुक्तहो, अनेक प्रकारके जीवोंसे मिलाहुवाहो, अधिकतर भारीहो, पत्र, और कीच इनसे मैलाहो और जिसपर चन्द्रमा और सूर्यकी किरणें नहीं पडती हों यह सबभी रोगोदक जानना, यह कभी नहीं पीना चाहिये। यह सर्वकालमें दोषकारक है तथा गुल्म, प्लीहा, बवासीर, पाण्डु और जलोदर रोगको उत्पन्न करता है।

हंसोदकम्।

दिवासूर्यांशुसन्तप्तंरात्रौचन्द्रांशुशीतलम्।

अशूदकमितिख्यातसर्वरोगनिवारकम् ॥
कफमेदोनिलघ्नचदीपनंवस्तिशोधनम् ।
श्वासकासहरनीरचक्षुष्यनेत्ररोगहृत ॥

अर्थ-जो जल-दिनमें सूर्यकी किरणोंसे तप्त होताहै और रात्रिमें चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल होता है वह जल अशूदक नामसे विख्यात है। अशूदक सर्वरोगनिवारक है, कफ, मेद और वातविनाशक है। दीपन, वस्तिशोधक श्वास और खाँसीको हरनेवाला, नेत्रोंको हितकारी और नेत्ररोगनाशक है।

आरोग्योदकम्।

पादशेषन्तुक्वथितत्चारोग्यजलंविदुः। कासश्वासहरंपथ्य मारुतचापकर्षति॥सद्योज्वरहरत्याशुसमेद.कफनाशनम्। प्रतिश्यायपाचयतिशूलगुल्मार्शनाशनम्।दीपनश्चहुताश· स्यपाण्डुशोथोदरापहम्। अजीर्णञ्चजरत्याशुपीतमुष्णो- दकनिशि॥ (हारीतसहिता,)

अर्थ-जो जल-अग्निपर औटानेसे चौथाई भाग बाकी रहजाय वह आरोग्योदक है। आरोग्योदक-खासी और श्वासको हरनेवाला, पथ्य, वातविनाशक, नवीन ज्वरको शीघ्र हरनेवाला तथा मेद, कफ, प्रतिश्याय, शूल, गुल्म और ववासीरको दूर करे है। अग्निप्रदीपक और पाण्डुरोग, सूजन, उदररोग तथा रात्रिमें पियाहुआ गरमजल अजीर्णको दूर करे है।

जलग्रहणकाल।

भौमानामम्भसाप्रायोग्रहणप्रातरिष्यते।
शीतत्वनिर्मलत्वचयतस्तेपांमतोगुण ॥

अर्थ-भूमिसम्बन्धी जल प्रातःकालही ग्रहण करना चाहिये, कारण यह है कि जलमें मुख्य गुण शीतलता और निर्मलता है, सो यह दोनों गुण प्रातःकालही होते हैं।

शीतजलगुणा।

शीताम्बुमदमूर्छाघ्नछर्दिपित्तज्वरापहम।
श्रमक्लमतृपादाहमदात्ययविषापहम ॥

अर्थ-शीतजल-मद, मूर्च्छा, वमन, पित्तज्वर, श्रम, भ्रम, तृषा, दाह, मदात्यय और विषका नाशकरैहै।

उष्णोदकक्काथगुणाः।

क्वाथ्यमानन्तुयत्तोयनिष्फेनंनिर्मलीकृतम् । भवत्यर्द्धावशिष्टन्तुतदुष्णोदकमुच्यते ॥ उष्णोदकंसदापथ्यकासज्वरविबन्धनुत् ॥ कफवातामदोषघ्नदीपनवस्तिशोधनम् ॥ तत्पादहीनवातघ्नमर्द्धहीनन्तुपित्तजित । कफघ्नपादशेषन्तुपानीयलघुदीपनम ॥ (राज०)

अर्थ-क्वाथ्यमानजलको अग्नि देते २ जब वह निष्फेन और निर्मल होकर अर्द्धशेष रहजाय तब उस जलको उष्ण जल कहते हैं। उष्ण जल सदैव पथ्य, तथा कास, ज्वर, विबन्ध, कफ, वात और आमदोषनाशक है, दीपन और वस्तिशोधक है। उष्ण जलका जब जलते २ एकपाद कम होजावे तब वह जल वातविनाशक होजाता है और जब जलते २ आधा बाकी रहजाय तब वह जल पित्तनाशक होजाता है और जब जलते २ एकही भाग शेष रहजाय तब वह जल कफनाशक, हलका और अग्निप्रदीपक होजाताहै।

अन्यच्च।

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्द्धकेनच। अथवाक्काथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंवदेत ॥ श्लेष्मामवातमेदोघ्नवस्तिशोधनदीपनम् । कासश्वासज्वरान्हन्तिपीतमुष्णोदकंनिशि ॥

अर्थ-जो जल-औटाते २ आठवां भाग शेष रहगया हो, उसको वा औटाते २ चौथा भाग शेष रहगयाहो उसको अथवा औटाते २ आधा रहगया हो उसको तथा केवल औटायेहुयेही जलको उष्णोदक कहते हैं। उष्णजल रात्रिमें पियाहुआ-कफ, आमवात और मेदरोगनाशक है। वस्ति शोधक, दीपन तथा खांसी श्वास और ज्वरको हरनेवाला है।

ऋतुभेदेनजलभेदः

हेमन्तेशिशिरेपादहीनपादस्थितमर्धो। स्यात्पानीयंशरत्कालेग्रीष्मेनार्द्धावशेषितम ॥

इच्छन्तिवहुदोपत्त्वात्प्रावृष्यष्टावशेपितम् ।

अर्थ-उष्णजल हेमन्त और शिशिर ऋतुमें चतुर्थांशहीन, वसन्तऋतुमें चतुर्थांश शेप, शरत् और ग्रीष्मऋतुमें अर्द्धशेप और वर्षाऋतुमे जल वहुत दोपयुक्त होताहै, इसकारण इस ऋतुमें उष्णजलको, औटाते २ जव आठवा भाग शेप रहजाय तव व्यवहारमें लाना चाहिये ।

अन्यच्च ।

त्रिपादशेपसलिलग्रीष्मेशरदिशस्यते ।
हिमेऽर्द्धशेपशिशिरेतथावर्षावसन्तयोः ।

अर्थ-कोई वैद्य ऐसा कहतेहैं कि, उष्णजल ग्रीष्म और शरदऋतुमें तीन पादशेप रहनेपर और हिमऋतु, शिशिरऋतु वर्षा और वसन्त ऋतुमें अर्द्धशेप रहनेपर सेवन करना चाहिये ।

पर्य्युषितजलगुणा ।

दिवाशृतञ्चयत्तोयरात्रौतद्गुरुतात्रजेत् । रात्रौशृतदिवाचापिगुरुत्वमधिगच्छति ॥ रात्रौतप्तञ्चशीतञ्चनपेयदिवसेजनै. । दिवातप्तञ्चशीतञ्चनपेयनिशिसर्वदा ॥

अर्थ-दिनका औटाया हुआ पानी रात्रिमें भारीपनको प्राप्त हो जाता है और रात्रिका औटाया जल दिनमें भारीपनको प्राप्त हो जाताहै । रात्रीमें औटाकर जो जल शीतल होजाय वह जल दिनमे नहीं पीना चाहिये और जो जल दिनमें औटाकर शीतल होजाय वह जल रात्रिमे नहीं पीना चाहिये ।

शृतशीतजलगुणा ।

शृतशीतन्त्रिदोपघ्नयदन्तर्वाष्पशीतलम् ॥

अर्थ-जो जल औटाकर अपने आप ढके हुए वासनमें शीतल हुआहो वह जल त्रिदोपनाशक है ।

अन्यच्च ।

शृतशीतनचस्निग्धनरूक्षञ्चतदेवहि ।
नचश्लेष्मकरतद्धिनचवायुप्रकोपयेत् ॥

अर्थ-शृतशीत अर्थात् जो औटाकर ठंढा होगयाहो वह जल स्निग्ध नहीं है, न रूखा है, न कफकारक और न वायुको कुपित करेहै ।

अपरञ्च ।

स्वच्छसज्जनचित्तवल्लघुतया नाप्यार्त्तवच्छीतलं पुत्रालिंगनवत्तथैवमधुरं बालस्यसंजल्पवत् । पथ्यदीपनपाचनं लघुतरं सश्वासकासापहं हिक्काध्माननवज्वरेपि शमनश्लेष्मापहश्वासजित् ॥ संशुद्धोदरवस्तिशुद्धिकरणंहृत्पार्श्वशूलापहं । गुल्मारोचकपीनसेनिगदितशीतोष्णमेतज्जलम् ॥

अर्थ-शृतशीतजल-स्वच्छ, सज्जनके चित्तकी समान निर्मल हलका, शीतल पुत्रके आलिंगनकी समान मधुर, पथ्य, दीपन, पाचन, लघुतर तथा श्वासयुक्त, खांसी, हिचकी, अफारा, नवीन ज्वर, कफ और श्वासको दूर करे है । शुद्ध, वस्तिशोधक, हृदयरोग, पार्श्वकी पीडा और शूलको दूर करे है । और गुल्म, अरुचि, और पीनसरोगमें हितकारी है ।

अपिच ।

पित्तोत्तरेपित्तरोगेपित्तासृक्कफपित्तयोः । मूर्च्छाछर्दिज्वरेदाहेतृष्णातीऽसारपीडिते ॥ धातुक्षयेविषार्त्तेचसन्निपाते विशेषत । शस्तविबन्धरोगेच शृतशीतजलसदा ॥

अर्थ-शृतशीतजल-कफ, वात और पित्तरोगमें, रक्तपित्त और कफपित्तमें, मूर्च्छा, वमन, ज्वर, दाह, तृषा, अतिसार, धातुक्षय, विषसे पीडित रोगोंमें, सन्निपात रोगमें और विशेष करके विबन्ध रोगमें हितकारी है ।

अपिच ।

द्विपाचितजलंपीतंविषतुल्यंनदाचरेत् ।

अर्थ-औटाकर शीतल कियेहुये जलको दुबारा गरम नहीं करनाचाहिये । क्योंकि, गरम जलको दुबारा गरमकरके पानकरनेसे विषकी समान अपकार करता है ।

उष्णजलनिषेध ।

मदात्ययेमदाहेचरक्तपित्ततथोर्ध्वगे ।
रक्तमेहेविशेषेणनोष्णतोयंप्रशस्यते ॥ (हा० सं०)

अर्थ-गरमजल-मदात्यय, दाह, रक्तपित्त, ऊर्ध्वग, और रक्तमेह रोगमें अहितकारी है ।

शीतलजलनिषेध ।

पार्श्वशूलेप्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे।आध्मानेस्तिमितेकोष्ठे सद्यःशुद्धौनवज्वरे ॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्र-धौ । हिक्कायांस्नेहपानेचशीताम्बुपरिवर्जयेत् ॥ (भा प्र)

अर्थ-शीतलजल पसवाडेकी पीडा, प्रतिश्याय, वातरोग, गलग्रह, आध्मान, बद्धकोष्ठ, जो तत्काल जुल्लाव ले चुकाहो, नवीनज्वर, अरुचि सग्रहणी, गुल्म, श्वास, खांसी, विद्रधि, हिचकीरोग और स्नेहपानमें त्याज्य है ।

अल्पजलपानविषय ।

अरोचकेप्रतिश्यायेमन्देऽग्नौश्वयथौक्षये । मुखेप्रसेकेजठरेकुष्ठनेत्रामयेज्वरे॥व्रणेचमधुमेहेचपिबेत्पानीयमल्पकम् ।(भा प्र)

अर्थ-अरुचि, प्रतिश्याय, मन्दाग्नि, सूजन, क्षय, मुखप्रसेक, उदररोग, कुष्ठ, नेत्ररोग, ज्वर, व्रण, और मधुमेह रोगवाले मनुष्यको अल्प जल पीना चाहिये ।

गुल्मार्शोग्रहणीक्षयेषुजठरेमंदानलेध्मानके शोफेपाण्डुगल-ग्रहेव्रणगदेमेहेचनेत्रामये । वातारुच्यतिसारकेकफयुतेकुष्टे प्रतिश्यायके चोष्णवारिसुशीतलंशृतहिमंस्वल्पंप्रदेयंजलम्॥

अर्थ-गुल्म, अर्श, सग्रहणी, क्षय, उदररोग, मन्दाग्नि, आध्मान, सूजन, पाण्डु, गलग्रह, व्रण, प्रमेह, नेत्ररोग, वात, अरुचि, अतिसार, कफ, कुष्ठ और प्रतिश्याय रोगमें उष्ण, शीतल अथवा शृतशीत जल अल्प पीना चाहिये

जलपानविधि ।

अत्यम्बुपानान्नविपच्यतेऽन्नमनम्बुपानाच्चसएवदोषः ।
तस्मान्नरोवह्निविवर्द्धनायमुहुर्मुहुर्वारिपिबेदभूरि ॥

अर्थ-बहुत जल पीनेसे भोजनका परिपाक नहीं होता और बिलकुल जल न पीनेसेभी अन्न नहीं पचताहै, इस कारण मनुष्य जठराग्निके बढानेके लिये वारवार ठहर २ कर अल्प जल पीवे ।

अजीर्णेभेषजंवारिजीर्णेवारिबलप्रदम् ।
भोजनेचामृतंवारिरात्रौवारिविषप्रदम् ॥

अर्थ-अजीर्ण अवस्थामें जल औषधीकी समान है अर्थात् औषधीकी तुल्य गुण करैहै। जीर्ण अर्थात् भोजनके पचजानेमें जल बलको देनेवाला है। भोजनमें जल अमृतकी समान गुण करे है और रात्रिमें जल विषके सदृश दोषजनक है।

अन्यच्च।

पिबेद्घटसहस्राणियावन्नास्तमितोरविः।
अस्तंगतेदिवानाथेबिन्दुरेकोघटायते॥

अर्थ-जबतक सूर्य अस्त नहीं होय तबतक चाहे हजारों घडे जल पियै किन्तु जब सूर्य अस्त होजाय तब एक बिन्दुभी जल नहीं पीना चाहिये अर्थात् एक बिन्दु जलभी घडेकी समान हो जाता है।

ग्रीष्मेशरदिपातव्यस्स्वेच्छयासलिलंनरैः।
अन्यदास्वल्पमेवैतद्वातश्लेष्मभयात्पिबेत्॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरदृतुमें जल स्वेच्छया अर्थात् जितनी अपनी इच्छा हो उतनाही पीना चाहिये और शेष ऋतुओंमें वात कफके भयसे अल्प जल पीना चाहिये।

आदौजलंवह्निविनाशकारिपश्चात्तदेतत्कफवृद्धिदंच।
मध्येतुपीतंसमतासुखंचतस्याभियोगोभिमतः सङ्गच॥

अर्थ-भोजनकी प्रथम अवस्थामें जल पीनेसे मन्दाग्नि होतीहै, भोजनके अन्तमें जल पीनेसे कफ बढताहै और भोजनके मध्यमें जल पीनेसे जठराग्नि समान होतीहै।

भुक्तान्तःपरतःशस्तंपीतंवारिगुणात्मकम्। अध्वश्रान्तेक्षु-
धाक्रान्तेशोषकोधातुरेषुच॥विषमाशनोपविष्टेनपीतंवारि-
रुजाकरम्। तस्मात्प्रसन्नमनसापिपानीयमन्दमाचरेत्॥
आदौपीत्वादहत्यग्निंमध्येपीत्वारसायनम्। तदन्तेचजलं
पीत्वातज्जलंदुर्जरंभवेत्॥ भोजनादौजलंपीत्वाचाग्निसादः
कृशाङ्गता। अन्तेकरोतिस्थूलत्वमूर्ध्वंचामाशयात्कफम्॥
(हा०म०)

अर्थ-भोजनके मध्यमें पीया हुवा पानी गुणकारक है । मार्गसे थकाहुवा और भूखसे व्याकुल हुवा तथा शोक और क्रोधसे पीडित हुवा और विषम आसनपें बैठा हुवा ऐसा मनुष्य पानीको पीवे तो रोगकी उत्पत्ति होती है । इसकारण प्रसन्न मनसे अल्प पानी पीवे । भोजनकी आदिमें पियाहुवा पानी मदाग्निको करता है, भोजनके मध्यमें पियाहुवा पानी रसायन है और भोजनके अन्तमें पियाहुवा पानी दुर्जर होजाता है । भोजनकी आदिमें जल पीनेसे मदाग्नि और शरीरमें कृशता होतीहै और भोजनके अन्तमें पानी पीनेसे-स्थूलता और आमाशयके ऊपर कफ उत्पन्न होता है ।

पानीयंपानीयशरदिवसन्तेचपानीयम् ।
नादेयनादेयंशरदिवसन्तेचनादेयम् ॥

अर्थ-शरद् और वसन्त ऋतुमें पानी पीना चाहिये किन्तु नद और नदीका पानी शरद् और वसन्त ऋतुमें नहीं पीना चाहिये । कारण यह है कि, उक्त समयमें जल दूषित होकर दोषोंको दूषित करे है ।

जलपानावश्यकता ।

पानीयप्राणिनांप्राणास्तदायत्तंहिजीवनम् । तस्मात्सर्व्वोस्ववस्थासुकैश्चिद्वावारिवार्यते ॥ अन्नेनापिविनाजन्तुःप्राणान्धारयतेचिरम् । तोयाभावेपिपासार्त्तःक्षणात्प्राणैर्विमुच्यते॥तृपितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुञ्चति ।तस्मात्प्राणस्यरक्षार्थंवारिदेयपिपासवे ॥

अर्थ-जल जीवोंका प्राणस्वरूप है इस कारण जीवन जलके आधीन है, अतएव मनुष्योंको किसी अवस्थामें भी जल त्याग नहीं करना चाहिये। अन्नके विना प्राणी बहुत काल पर्यंत जीते रहते हैं, परन्तु जलके विना तो क्षणभरमेंही प्राणोंको त्यागदेतेहैं । तृषासे पीडित मनुष्यके मोह उत्पन्न होताहै और मोहसे प्राणोका नाश होता है । अतएव प्राणोंकी रक्षाके लिये प्यासे मनुष्यको जल देना चाहिये ।

मधुरजलगुणा ।

अगन्धमव्यक्तरसमुशीततर्पनाशनम् ।
अच्छलघुचहृद्यचतोयगुणवदुच्यते ॥

अर्थ-दुर्गंधहीन, अव्यक्तरस, शीतल, तृषानाशक, स्वच्छ, हलका और हृदयको हितकारी ऐसा जल उत्तम कहा है।

निन्दितजलम्।

पिच्छिलकृमिलक्लिन्नपर्णशैवालकर्दमैः। विवर्णंविरससान्द्रंदुर्गंधनहितजलम्॥ कलुषाच्छन्नमम्भोजपर्णनीलीतृणादिभिः। सुदुर्दर्शमसस्पृष्टंसूर्य्यचान्द्रमसांशुभिः॥ अनार्त्तवार्षिकन्तुप्रथमतत्त्वभूमिगम्। व्यापन्नपरिहर्त्तव्यंसर्वदोषप्रकोपनम्॥ तत्कुर्य्यात्स्नानपानाभ्यांतृष्णाध्मानोदरज्वरान्। कासाग्निमान्द्याभिष्यन्दिकण्डूगण्डादिकास्तथा॥

अर्थ-पिच्छिल, कृमियुक्त, पत्ते, काई और कीचसे बिगडाहुवा, बुरे रंगका, बुरे स्वादका, गाढा, दुर्गंधवाला, कलुषतायुक्त कमलके पत्तोंसे, नीलीसे और तृणोंसे ढकाहुवा, दुर्दर्शिका जिसका स्पर्श बुराहो, जिसपर सूर्य और चन्द्रमाकी किरणें न पडतीहो, बिना मौसमका, जो वर्षाकर प्रथमही भूमिमें भराहो और बिगडाहुवा ऐसा जल कभीभी सेवन नहीं करना चाहिये। यह जल अहितकारी और सर्वदोषोंको कुपित करै है। इस जलमें स्नान और पान करनेसे तृषा, आध्मान, उदररोग, ज्वर, खांसी मन्दाग्नि, अभिष्यन्द, कण्डू और गलगण्डादि रोग उत्पन्न होवैं।

दुष्टजलनिवारणोपायम्।

निन्दितञ्चापिपानीयंक्वथितसूर्य्यतापितम्। ताम्रसुवर्णरजतपाषाणनिकर्तांमृदम्॥ भृशसन्ताप्यनिर्व्वाप्यसप्तधामाथिततथा। कर्पूरजातीपुन्नागपाटलादिसुवासितम्॥ शुचिसान्द्रपटस्रावितक्षुद्रजन्तुविवर्जितम्। स्वच्छकनकमुक्ताद्यैः शुद्धंस्याद्दोषवर्जितम्॥ पर्णमूलविषग्रन्थिमुक्ताकनकशैवलैः। गोमेदेनचवस्त्रेणकुर्य्यादम्बुप्रसादनम्॥

अर्थ-दुष्टजलके शोधनकी विधि-प्रथम दुष्टजलको खूब औटावै, फिर धूपमें धर देवै, पीछे सुवर्ण, रजत, लोह, पत्थर और माटीको गरम करके बारम्बार उस जलमें बुझावै फिर उत्तम मिट्टीके कोरे बासन भरके उसमें

कपूर, चमेली, पुनाग और पाटलादिके फूलोंसे तथा खस आदि सुगंधित वस्तुओंसे सुगंधित करे फिर श्वेत निर्मलवस्त्रमें छानलेवे । जिससे कि, उसमें छोटे २ जन्तु न रहें तथा स्वर्ण मुक्तादिसे शुद्ध किया हुवा जल निर्दोष होजाता है । पर्णमूल, कमलकी गाठ, मोती, स्वर्ण, सिवार, गोमेद और वस्त्रादिसे जलको शुद्ध करना चाहिये ।

सुवासितजलगुणाः ।

सुवासितंजलपुष्पैःपूतशुक्लेनवाससा ।
नवेमृद्भाजनेन्यस्तमाङ्गल्यरुचिकृत्परम् ॥

अर्थ-सुगंधित पुष्पादिकासे सुवासित कियाहुवा श्वेतवस्त्रमें छानाहुवा और नवीन मृत्तिकापात्रमें रखाहुवा ऐसा जल मंगलजनक और रुचिकारक है ।

शीतजलपाकविधि ।

आमजलंजीर्य्यतियामयुग्माद्यामेकमात्राच्छृतशीतलंच ।
तदर्द्धमात्रेणशृतंकदुष्णपयःप्रपाकेविधिरेषउक्तः ॥

अर्थ-कच्चा जल पियाहुवा दो पहरमें पचताहै, औटाकर शीतल किया जल एक पहरमें पचता है और गरम जल १॥ डेढ घंटेमें पचता है इस प्रकार जलपाककी विधि कही है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे वारिवर्गः समाप्तः ॥ १२ ॥

अथ दुग्धवर्गः ।

दुग्धक्षीरपयःस्तन्यपीयूषबालजीवनम् ॥

अर्थ-दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य, पीयूष, बालजीवन (ऊधस्य, अमृत, दोहज, अवदोह, दोहापनय)

सं०	दुग्ध ।	तै०	पालु ।
हिं०	दूध ।	इं०	मिल्क । Milk
बं०	दुध ।	लै०	लॅक्टस । Lactus
म०	दूध ।	फा०	शीरे ।
गु०	दुध ।	अ०	रबनुल ।
क०	हाउ ।		

दुग्धगुणाः।

दुग्धसुमधुरस्निग्धंवातपित्तहरंसरम्। सद्यःशुक्रकरंशीतंसात्म्यसर्व्वशरीरिणाम्॥जीवनंबृंहणंबल्यंमेध्यंवाजीकरंपरम्। वयःस्थापनमायुष्यंसन्धिकारिरसायनम्। विरेकवान्तिवस्तीनांतुल्यमोजोविवर्द्धनम्।जीर्णज्वरेमनोरोगेशोषमूर्च्छाभ्रमेषुच॥ ग्रहण्यांपाण्डुरोगेचदाहतृषिहृदामये॥ शूलोदावर्त्तगुल्मेषुवस्तिरोगगुदांकुरे॥ रक्तपित्तातिसारेचयोनिरोगश्रमक्लमे। गर्भस्रावेचसततंहितंमुनिवरैःस्मृतम्॥ बालवृद्धक्षतक्षीणाःक्षुद्व्यवायकृशाश्चये। तेभ्यःसदातिशयितंहितमेतदुदाहृतम्॥निदाहीन्यन्नपानानियानिभुङ्क्तेहिमानवः।तद्विदाहप्रशान्त्यर्थंभोजनान्तेपयःपिबेत्॥(भा०प्र०)

अर्थ-दूध-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, कुछेक दस्तावर, तत्काल वीर्यजनक, शीतल, सर्वप्राणियोंको सात्म्य, जीवन, बृंहण, बलकारक, मेध्य, वाजीकरण, अवस्थास्थापक, आयुष्यकारक, सन्धिकर्त्ता और रसायन है। ओजके बढानेमें विरेचन, वमन और बस्तिके समान गुण करे है, तथा जीर्णज्वर, मनरोग, शोष, मूर्च्छा, भ्रम, संग्रहणी, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, हृद्रोग, शूल, उदावर्त्त, गुल्मरोग, बस्तिरोग, गुदांकुर, रक्तपित्त, अतिसार, योनिरोग, श्रम, क्लम और गर्भस्राव इनमें निरन्तर हितकारी है। जो बालक, वृद्ध, क्षतक्षीण, भूखे और मैथुन करनेसे क्षीण होगये हैं उनको दूध सर्वदा अतिशय हितकारी है। मनुष्य जो दाहकारक अन्न और पानोंको सेवन करते हैं उनके दाहकी शान्तिकरनेके लिये भोजनके अन्तमें दूध अवश्य पीना चाहिये।

अन्यच्च।

क्षीरंस्वादुरसंस्निग्धमोजस्यंधातुवर्द्धनम्।
वातपित्तहरंवृष्यंश्लेष्मलंशीतलंगुरु॥ (राजवल्लभ)
जीर्णज्वरेकफेक्षीणेक्षीरंस्यादमृतोपमम्।
तदेवतरुणेपीतंविषवद्धन्तिमानवम्॥ (वै०)

अर्थ-दूध-स्वादुरसान्वित, स्निग्ध, औजस्य, और धातुवर्द्धक, वातपित्तनाशक, वृष्य, कफकारक, शीतल और भारी है । दूध-जीर्णज्वर और कफके क्षीण होनेमें अमृतकी समान गुणकारी है और वही दूध तरुणज्वरमें पीना विषकी समान मनुष्यको मार डालता है ।

गोमहिषीछागलाविकगजतुरगखरोष्ट्रमानुषस्त्रीणाम् ।
क्षीरादिकगुणदोषौवक्ष्येनुक्रमतोयथायोग्यम् ॥

अर्थ-गाय, भैंस, बकरी, भेड, हथिनी, घोडी, गधी, ऊँटनी, और स्त्रियोंके दूधके गुण और दोषोंको यथाक्रमसे कहताहूं ।

गोदुग्धगुणा ।

धेनोःपयःस्यान्मधुरसुशीतरसायनस्निग्धमलगुरुस्यात् ।
भ्रमश्रमघ्नविषहृत्सरंचकफावहशुक्रकरंहिवर्ण्यम् ॥

अर्थ-गायका दूध-मधुर, शीतल, रसायन, स्निग्ध, भारी, भ्रमनाशक, श्रमहारक, विषविनाशक, सारक, कफकारक, शुक्रजनक और वर्णको सुंदर करैहै ।

अन्यच्च ।

गव्यक्षीरंपथ्यमत्यतरुच्यस्वादुस्निग्धपित्तवातामयघ्नम् ।
कातिप्रज्ञाबुद्धिमेधाङ्गपुष्टिधत्तेस्पष्टवीर्य्यवृद्धिंविधत्ते ॥

अर्थ-गायका दूध-पथ्य, अत्यन्त रुचिकारी, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, कान्तिजनक तथा प्रज्ञा, बुद्धि, मेधा, अङ्गम पुष्टि और वीर्य्यको बढावे है ।

अन्यच्च ।

गोक्षीरजीवनवल्यरक्तपित्तानिलापहम् ।
आयुष्यपुंस्त्वकृत्पथ्यमेध्यवृष्यरसायनम् ॥

अर्थ-गायका दूध-जीवन, बलकारक, रक्तपित्तनाशक, वातनाशक आयु और पुरुषतावर्द्धक, पथ्य, मेधाजनक, वृष्य और रसायन है ।

अपिच ।

गव्यदुग्धविशेषेणमधुररसपाकयोः । शीतलंस्तन्यकृत्स्निग्धवातपित्तास्रनाशनम् ॥ दोषधातुमलस्रोत किञ्चित्क्लेदकरंगुरु । जरासमस्तरोगाणांशान्तिकृत्सेविनासदा ॥ (भा प्र.)

अर्थ-गायका दूध-विशेष करके रस और पाकमें मधुर, शीतल, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाला, वातनाशक, रक्तपित्तनाशक, दोष, धातु, मल, स्रोत और किञ्चित् क्लेदकारक है, भारी और सदैव सेवन करनेवाले मनुष्योंके जरा तथा सर्वरोगोंको शान्ति करनेवाला है।

वर्णविशेषे गुणविशेषाः।

कृष्णायागोर्भवेद्दुग्धंवातहारिगुणाधिकम्।
पीतायाहरतेपित्तं तथावातहरंभवेत्॥
श्लेष्मलंगुरुशुक्लायारक्तचित्राचवातहृत्॥

अर्थ-कालीगायका दूध-वातनाशक और अधिक गुणवाला है। पीली गायका दूध-पित्तनाशक और वातविनाशक है। सफेद गायका दूध-कफकारक और भारी है। लाल और चितकबरी गायका दूध-वातनाशक है।

विवत्साबालवत्साया पयोदोषलमीरितम्।

अर्थ-जिन गायोंका बछडा नहीं है अथवा जिनका छोटा बछडा है उनका दूध दोषकारक है।

वष्कयिणीगोदुग्धगुणाः।

वष्कयिण्यास्त्रिदोषघ्नंतर्पणंबलकृत्पयः।

अर्थ-वाखरी गायका दूध-त्रिदोषनाशक, तृप्तिकारक, और बलवर्द्धक है।

देशविशेषे गुणविशेषाः।

जाङ्गलानूपशैलेषुचरन्तीनांपयोत्तरम्।
पयोगुरुतरंस्नेहोयथाहारंप्रवर्त्तते॥

अर्थ-जो गाय जांगल, अनूप और पर्वतोंमें चरती हैं उनका दूध यथाक्रमसे भारी जानना। अर्थात् जांगल देशकी चरनेवालियोंसे अनूप देशकी गायोंका, और अनूप देशकी चरनेवालियोंसे पर्वतमें चरनेवाली गायोंका दूध भारी है और जैसा वह आहार करती है वैसेही आहारके अनुसार दूध निकलता है।

आहारविशेषे गुणविशेषाः।

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातंक्षीरंगुरुकफप्रदम्।
तत्तुबल्यंपरंवृष्यंस्वस्थानांगुणदायकम्॥
पलालतृणकार्पासबीजजातंगुणैर्हितम्। (भा० प्र०)

अर्थ-जो गाय अल्प अन्न आहार करती हैं उनका दूध-भारी कफकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, परमवृष्य, और आरोग्य, मनुष्योंको गुणदायक है। जो प्याल चरीकी कुट्टी, घास और निनोले खाती हैं उनका दूध अत्यन्त हितकारक है।

अथवयावि शेषगुणा।

तरुणीनांगवांदुग्धमधुरचरसायनम्। त्रिदोपशमनचैववृद्धायादुर्बलमतम्॥ सगर्भाया समुदिष्टत्रिमासोर्ध्वंचपित्तलम्। क्षारचमधुरंचैवमतंवैशोपकारणम्॥ प्रथमचप्रसूतायानिःसारगुणहीनकम्। नूत्नप्रसूतगोर्दुग्धरूक्षंदाहकरं मतम्॥ रक्तदोपस्यजनकपित्तलचमतंबुधे। चिरप्रसूतादुग्धंतुमधुरदाहकपटु॥ (निघण्टुरत्नाकरे)

अर्थ-तरुणी गायका दूध-मधुर, रसायन और त्रिदोपनाशक है। वृद्धगायका दूध-दुर्बल है। जिसगायको ब्यावन हुवे तीन महीने बीतगये हों उस गायका दूध-पित्तकारक, खारी, मधुर और शोपकारक है। जो गाय पहिलीवार ब्याई है उसका दूध-सारहीन और गुणोंमें हीन है। जो गाय नवीन ब्याई है उसका दूध-रूखा, दाहकारक, रक्तको कुपित करनेवाला और पित्तकारकहै। जिस गायको ब्याये हुवे बहुत दिन बीत गये हैं उसका दूध-मधुर, दाहकारक और निमर्कीन है।

अथच गोदुग्धानांप्रशस्ताप्रशस्तभेदा।

शस्तवत्सैकवर्णायाधवलीकृष्णयोरपि।
इक्ष्वादामापपर्णाद्याऊर्ध्वशृङ्गीचयाभवेद्॥
तासांगवाहितक्षीरंशृतवाशृतमेववा॥

अर्थ-जिन गायोका रंग बछडेके रंगसे मिलता है उन गायोंका दूध तथा काली और सफेद गायका दूध प्रशसायोग्य है। जो गाय ईख और मपवन आदिको खाती हैं और जिन गायोके सींग ऊपरको उठे हैं उन गायोंका दूध पक्व अथवा अपक्व हितकारी है।

गोदुग्धग्रहणकालनिर्णय।

गव्यप्रत्युपसिक्षीरगुरुविष्टम्भिदुर्जरम्।

तस्मादभ्युदितेसूर्य्येयामयामार्द्धमेववा ॥
समुत्तार्य्यंततोग्राह्यंतत्पथ्यदीपनलघु ॥ (राजवल्लभ.)

अर्थ-गायका दूध प्रातःकालमें-भारी, विष्टम्भकारी और दुर्जर होता है। अतएव, सूर्य्यके उदय होनेपर एक प्रहर अथवा अर्द्ध प्रहर समय व्यतीत होजानेपर गायका दूध ग्रहण करना चाहिये। इसप्रकार ग्रहण करनेसे यह दूध-पथ्य, दीपन और हल्का है।

माहिषीदुग्धगुणाः।

स्निग्धमरुच्छीतकरंचतन्द्रानिद्राकरंवृष्यतमश्रमघ्नम्।
बलप्रदंपुष्टिकरंकफघ्नंसजीवनंमाहिषमुच्यतेपयः॥(शा०सं०)

अर्थ-भैसका दूध-स्निग्ध, दाहकारक, शीतजनक, तन्द्रा और निद्राको करनेवाला, वीर्यवर्द्धक, श्रमनाशक, कफकारक, पुष्टिकारक और बलको उत्पन्न करैहै।

अन्यच्च।

माहिषंबलवर्णाग्निनिद्राशुक्रकफप्रदम्।तीक्ष्णाग्निशमन
स्वादुरसेपाकेचपुष्टिदम्॥व्यायामश्रान्तदेहस्यश्रमघ्नम-
निलापहम्।निष्कामस्यातिवृद्धस्यस्त्रीषुकामप्रदायकम्॥
बलेनतरुणस्यापिविशेषात्कामदायकम्। (सुषेण)

अर्थ-भैसका दूध-बलकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, अग्निजनक, निद्राकारक, शुक्रजनक, कफकारी, तीक्ष्ण अग्निको शांत करनेवाला, रस और पाकमें मधुर पुष्टिकारक, तथा जिसका देह परिश्रम करनेसे थकगया है उसके श्रमको दूर करै है, श्रमनाशक, वातविनाशक और निष्काम, वृद्ध, स्त्री और तरुणादिकके काम उपजानेवाला है।

अन्यच्च।

माहिषंमधुरंगव्यात्स्निग्धंशुक्रकरंगुरु।
निद्राकरमभिष्यन्दिक्षुधाधिक्यकरंहिमम्॥(भावमिश्र.)

अर्थ-भैसका दूध-गायके दूधसे अधिक मधुर है, स्निग्ध, शुक्रजनक, भारी, निद्राकारी, अभिष्यन्दि, क्षुधाको अधिक करनेवाला और शीतल है।

छागीदुग्धगुणा ।

छागकपायमधुरञ्चशीतग्राहिलघुपित्तक्षयापहारि ।
कासज्वराणांरुधिरातिसारेहितपयश्छागलजन्त्रिदोषजित् (हा)

अर्थ-बकरीका दूध-कषेला, मधुर, शीतल, मलरोधक, हलका तथा पित्त, क्षय, खासी, ज्वर और रक्तातिसारमें हितकारी तथा त्रिदोषनाशक है।

छागीनामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ।
नात्यम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वदोषहरपय ॥
दीपनंलघुसग्राहिश्वासकासास्रपित्तनुत । (सुश्रुत)

अर्थ-बकरियाकी छोटी देह होतीहै और चरपरी और कडवी वनस्पतियोंको चरतीहैं। जल बहुत कम पीतीहै और दिनभर जगलमें विचरती फिरतीहै इसीसे बकरियोंका दूध सर्वदोषनाशक, दीपन, हलका, मलरोधक तथा श्वास, खासी और रक्तपित्तको दूर करैहै।

मेषीदुग्धगुणा ।

आविकलवणस्वादुस्निग्धोष्णचाश्मरीप्रणुत ।
अहृद्यतर्पणवृष्यशुक्रपित्तकफप्रदम् ॥
गुरुकासेऽनिलोद्भूतेकेवलेचानिलेवरे । (भा०प्र०)

अर्थ-भेडका दूध-निमकीन, स्वादिष्ट, स्निग्ध, गरम, पथरीको दूर करनेवाला, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, वृष्य तथा शुक्र, पित्त और कफकारक है। भारी तथा वातकी खासी और केवल वातरोगमें हितकारी है।

अन्यच्च ।

औरभ्रमधुरंरूक्षमुष्णवातकफापहम् ।
नशस्तरक्तपित्तीनावातिकानाहितभवेत् ॥

अर्थ-भेडका दूध-मधुर, रूखा, गरम, वातकफनाशक, रक्तपित्तरोगवालोंको हितकारी नहीं है। केवल वातरोगवालोंको हितकारी है।

मृगीदुग्धगुणा ।

मृगीनांजांगलस्थानामजाक्षीरगुणपय. । (भा०प्र०)

अर्थ-जगलदेशकी मृगीका दूध-बकरीके दूधके समान गुणवाला है।

वडवादुग्धगुणाः ।

रूक्षोष्णं वडवाक्षीरं बल्यं शोषानिलापहम् ।
अम्लं पटु लघु स्वादु सर्वमेकशफं तथा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-घोड़ीका दूध-रूखा, गरम, बलकारक, शोषनाशक, वातविनाशक, अम्ल, खारी, हलका, स्वादिष्ट है । इसी प्रकार और जितने एकखुरवाले पशु हैं उन सबका दूध घोड़ीके दूधकी समान जानना ।

उष्ट्रीदुग्धगुणाः ।

रूक्षं तथोष्णं लवणं कफस्य निवारणं वातविकारहारि ।
लघु प्रशस्तं कटुकं कृमीणां शोफार्शसामौष्ट्रपयोऽनुकल्पम् ॥ (हा.सं.)

अर्थ-ऊँटनीका दूध-रूखा, गरम, नमकीन, कफनिवारक, वातहारक, हलका, उत्तम, चरपरा तथा कृमि, सूजन और बवासीरको दूर करे है ।

अन्यच्च

औष्ट्रं दुग्धं लघु स्वादु लवणं दीपनं तथा ।
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ऊँटनीका दूध-हलका, स्वादिष्ट, निमकीन, दीपन, सारक तथा कृमि, कुष्ठ, कफ, आनाह, सूजन और उदररोगको दूर करे है ।

हस्तिनीदुग्धगुणाः ।

बृंहणं हस्तिनीदुग्धं चक्षुष्यं स्थिरताकरम् ।
स्निग्धं च मधुरं वृष्यं कषायानुरसं गुरु ॥

अर्थ-हथिनीका दूध पुष्टिकारक नेत्रोंको हितकारी, स्थिरताकारक, स्निग्ध, मधुर, धातुवर्द्धक, किंचित् कसैला और भारी है ।

गर्दभीदुग्धगुणाः ।

गर्दभ्यास्तु स्मृतं दुग्धं मधुरं बलकारकम् । रूक्षं साम्लं दीपनं च बुद्धिमोहकरं मतम् ॥ पथ्यं रुचिप्रदं श्वासकफवातविनाशनम् । बालरोगान्कासांश्च श्रमश्चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-गधीका दूध-मधुर, बलकारक, रूखा, अम्ल, दीपन, बुद्धिमें मन्द करनेवाला, पथ्य, रुचिकारक, श्वास, कफ, वातनाशक तथा बालकोंके रोगों और श्रमको हरनेवाला है ।

स्त्रीदुग्धगुणा ।

सञ्जीवनबृंहणमेवसात्म्यसन्तर्पणनेत्ररुजापहच ।
पित्तस्यरक्तस्यचनाशनचनारीपयःस्नेहनमेवशस्तम् ॥

अर्थ-स्त्रीका दूध-सजीवन, पुष्टिकारक, पथ्य, सात्म्य, तृप्तिकारक, नेत्ररोगनाशक, पित्तनाशक, रुधिरके विकारोंको हरनेवाला और स्नेहयुक्त है।

अन्यच्च ।

प्रोक्ततुमानुषीदुग्धमधुरशीतललघु । चक्षुष्यतुवरपथ्यदीपनपाचकंमतम्॥धातुवृद्धिकररुच्यजीवनस्नेहनतथा । रक्तपित्तेचनस्यार्थनेत्रशूलेक्षिपूरणे॥ उत्तमनेत्ररोगघ्नमभिघातविनाशकम्।वातपित्तनाशयतीत्येवमुक्तचिकित्सके॰ ॥(नि०र०)

अर्थ-स्त्रीका दूध-मधुर, शीतल, हलका, नेत्रोंको हितकारी, कपेला, पथ्य, दीपन, पाचक, धातुवर्द्धक, रुचिकारक, जीवन और स्नेहयुक्त है। तथा रक्तपित्तपर इसका नास देना और नेत्रके फूलेपर इसको आस्रम भरना उत्तम है, नेत्ररोगनाशक, अभिघातविनाशक, वात और पित्तका नाश करे है।

दुग्धस्य सात्म्यासात्म्यविधि ।

अल्पाम्बुपानव्यायामात्कटुतिक्ताशनेलघु। पिण्याकाम्लाशिनीनातुगुर्वभिष्यदिशीतलम् ॥ क्षीणानादुर्बलानाञ्चतथाजीर्णज्वरार्दिते। दीप्ताग्निमानतन्द्राणाश्रमशोपविकारिणाम् ॥ व्यवायिनामल्परेत॰श्वासिनाविपमाग्निनाम् । तथाचराजयक्ष्माणाक्षीरपानविधीयते॥नगस्तलवणैर्युक्तश्रीग्चाम्लेनवापुन ।करोतिकुष्ठत्वग्दोपतस्मान्नैवहितमतम् ॥
(हा०स०)

अर्थ-जो मनुष्य-अल्पजल पीते हैं, कसरत करते हैं तथा चरपरे और कडवे पदार्थ खाते हैं उनके लिये दूध हलका है। और जो मनुष्य तिलोंकी पिट्टी खाते हैं और अम्लरसका सेवन करते हैं उनके लिये दूध भारी, अभिष्यन्दि और शीतल है। क्षीण, दुर्बल, जीर्णज्वरसे पीडित, जिनकी जठराग्नि दीपन है, तन्द्राहीन, श्रमवाले, शोषयुक्त, मैथुन करनेवाले

क्षीणवीर्यवाले, श्रमयुक्त, विषम, अग्नियुक्त और राजयक्ष्मारोगवाले मनुष्योंको दूधका सेवन करना चाहिये । लवणयुक्त अथवा अम्लद्रव्ययुक्त दूधका पीना श्रेष्ठ नहीं है । यह कोढ और त्वचाके रोगोंको उत्पन्न करता है इस कारण यह अहितकारी है ।

आमंक्षीरमभिष्यन्दिगुरुश्लेष्मामवर्द्धनम ।
ज्ञेयसर्वमपथ्यतद्गव्यमाहिषवर्जितम ॥
नारीक्षीरत्वाममेवहितनतुशृतहितम ॥

अर्थ-गाय और भैंसके दूधको छोडकर प्रायः सर्व दूध अभिष्यन्दी, भारी, कफकारी और अपथ्य होते हैं किन्तु स्त्रीका दूध कच्चाही हितकारी होता है और पका नहीं होता ।

धारोष्णादिदुग्धगुणाः ।

धारोष्णंगोपयोबल्यंलघुशीतसुधासमम । दीपनञ्चत्रिदोषघ्नतद्धाराशिशिरंत्यजेत ॥ धारोष्णशस्यतेगव्यंधाराशीतंतुमाहिषम । शृतोष्णमाविकपथ्यंशृतशीतमजापयः ॥ शृतोष्णंकफवातघ्नंशृतशीतंतुपित्तनुत । अर्धोदकंक्षीरशिष्टमामात्लघुतरंपयः ॥जलेनरहितंदुग्धमतिपक्वंयथायथा । तथातथागुरुस्निग्धवृष्यंबलविवर्द्धनम ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-धारोष्ण (दुहनेके समय जो उष्ण होता है)-गायका दूध बलकारी, हलका, शीतल, अमृतके समान दीपन और त्रिदोषनाशक है । जो गायके दूधकी धार शीतल होगई हो तो वो त्यागने योग्य है । गायका दूध-धारोष्ण प्रशंसनीय है । भैंसका दूध-धाराशीत उत्तम होता है । भेडका दूध गरमागरम हितकर है और बकरीका दूध औटा कर शीतल किया हुआ हितकारी होता है । शृतोष्ण अर्थात् औटाकर गरम किये दूध कफवातनाशक और औटाकर शीतल किये हुए दूध पित्तनाशक होते हैं । आधा पानी मिलाकर शेष बचा हुआ दूध कच्चे दूधसे अधिक हलका है । जलरहित जैसे २ दूध बहुत औटता है वैसे वैसेही अधिक भारी, स्निग्ध, वृष्यकारक और बलवर्द्धक होता है ।

समयादिदुग्धगुणाः ।

रात्रौचन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा । प्राभातिकं-

दाप्रायोप्रादोपाद्गुरुशीतलम् ॥ दिवाकरकराघाताद्व्याया-
मानलसेवनात् । प्राभातिकात्तुप्रादोपंलघुवातकफापहम् ॥

अर्थ-रात्रिमें चन्द्रगुणकी अधिकतासे तथा व्यायाम न करनेसे प्रातः-कालका दूध प्रायः सायकालके दूधसे भारी और शीतल होता है। दिनमें धूपके लगनेसे तथा व्यायामकी गरमीके सेवन करनेसे सायकालका दूध प्रातःकालके दूधसे हलका और वात तथा कफको दूर करे है।

समयविशेषे दुग्धसेवनगुणाः ।

वृष्यबृंहणमग्निदीपनकरं पूर्वाह्णकालेपयो मध्याह्नेतु वला-
वहकफहरं पित्तापहंदीपनम् । वालेवृद्धिकरं क्षयेक्षयकरंवृ-
द्धेपुरेतोवहं रात्रौपथ्यमनेकदोपशमनं क्षीरंसदासेव्यते ॥
वदन्तिपेयंनिशिकेवलंपयोभोज्यंनतेनेहसहौदनादिकम् ।
भवत्यजीर्णंनशयीतशर्वरींक्षीरस्यपानस्यनशेपमुत्सृजेत्॥
दीप्तानलेकृशेपुसिवालेवृद्धेपयः प्रियोमतंहिततमंदुग्धंसद्य
शुक्रकरंपरम् ॥ भुक्तायेवहुतीव्रचडविदलायेचाम्लतिक्ता-
रसारूक्षाःक्षारविदाहशोपककरायेचातितापप्रदाः । कापा-
या कटुरूक्षदुर्जरतरा ससेव्यमानाहठात्तत्सर्वंवलकृत्करो-
तितरसादुग्धंनिशासेवितम् ॥

अर्थ-पूर्वाह्णकाल (प्रथम प्रहर) में पिया हुआ दूध-वीर्यवढानेवाला, पुष्टिको करनेवाला और अग्निको दीपन करे है। मध्याह्नकालमें पियाहुवा दूध-बलकारक, कफनाशक, पित्तहारक, अग्निप्रदीपक, बालकोंको बढाने-वाला, क्षई रोगका क्षयकरनेवाला और वृद्ध मनुष्योंके वीर्यको देनेवाला है। और रात्रिके समयमें दूध पिया हुवा अनेक दोपोंकी शान्ति करता है, पथ्य है, इसकारण दूध नित्य सेवन करना चाहिये। कोई वैद्य ऐसा कहते हैं कि, रातमें केवल दूधही पीना चाहिये, उसके साथ चावल आदिक न खाने चाहिये, क्योंकि रात्रिमें भात आदि भोजन करनेसे अजीर्ण होजाताहै और निद्रा नहीं आतीहै, तथा पीते दूधको बाकी न छोडे। जिनकी जठराग्नि दीप्तहै और जिनका शरीर कृशहै, बालक, वृद्ध और जिनको दूध प्याराहै

उनके लिये दूध अत्यन्त हितकारी है और तत्काल शुक्रको उत्पन्न करता है । जो मनुष्य अत्यन्त क्षीण तथा अनेक दोषोंको कुपित करनेवाले विरुद्धोंको खाते हैं और जो मनुष्य-अम्ल, कड़वे, रूखे, खारी, दाहजनक, शोषकारक, तापजनक, कोरे, चरपरे, रूखे और दुर्जर पदार्थोंका सेवन करते हैं उन सबको रात्रिमें सेवन किया हुआ दूध बलको देनेवाला है ।

निन्दितदुग्धम् ।

विवर्णं विरसं चाम्लं दुर्गन्धं ग्रन्थिलं पयः । वर्जयेदम्ललवणयुक्तं कुष्ठादिकृद्यतः ॥ क्षीरं मुहूर्तत्रितयोषितं यद्दत्तमं नद्धिकृतिं प्रयाति । षट्सु तु दोषकृत्तत ऊर्ध्वं विषोपमं स्याद्दूषितं दशानाम् ॥

अर्थ-जो दूध बुरे रंगका, बुरे स्वादवाला, खट्टा दुर्गन्धित और गांठदार हो उसको नहीं पीना चाहिये, तथा खटाई और नमकके पदार्थोंके साथभी दूध नहीं सेवन करना चाहिये । तीन मुहूर्ततक रक्खा हुआ कच्चा दूध विकारको प्राप्त होजाता है । अर्थात् बिगड़जाताहै, छः मुहूर्ततक रक्खा हुआ दूध अनेक प्रकारके दोषोंको उत्पन्न करताहै और दश मुहूर्ततक रक्खा हुआ दूध विषके समान होजाताहै ।

अन्यच्च ।

मुहूर्तपञ्चकादूर्ध्वं क्षीरं भजति विक्रियाम् । तदेव द्विगुणे काले विषवद्धन्ति मानवम् ॥ अक्वथितं दशघटिकाः क्वथितं द्विगुणास्ताश्च पयः पथ्यम् । कोष्णं चामृतरसादं यावत्तावत्पयः प्राश्यम् ॥ तस्मात्कृतं वाप्यशृतं पयस्तात्कालिकं पिबेत् ॥

अर्थ-पांच मुहूर्त पश्चात् बिना औटाया हुआ दूध विकारको प्राप्त होजाताहै और यही दश मुहूर्त बाद विषकी समान मनुष्यको मार देता है । कच्चा दूध दश घडीतक और औटा हुआ दूध बीस घडीतक पीनेयोग्य और पथ्य होताहै ऐसा कहाजाता है । कुनकुना और अमृतके समान स्वादु होय तबतक दूध पीनेयोग्य होताहै इसवास्ते औटा हुआ अथवा बिना औटा हुआ तात्कालिक दूध पीना चाहिये ।

धारोष्णपयोगुणाः ।

धारोष्णं गोपयो बल्यं लघु शीतं सुधोपमम् । तदेवातिकषायं तत्

विपवद्धन्तिमानवम् ॥ चतुर्थभागसलिलनिधाययत्नाद्य-
दावर्त्तितमुत्तमतत् । सर्वामयघ्नवलपुष्टिकारिवीर्यप्रदक्षीर-
मतिप्रशस्तम् ॥ येपांनसात्म्यक्षीरेणपीतचाध्मानकारकम्।
तेपामर्द्धजलदत्त्वानागरपिप्पलीयुतम् ॥ आवर्त्तयेत्क्षीरशे-
पतत्पीत्वासुखमाप्नुयात् । गव्यपूर्वाह्णकालेस्यादपराह्णेतु
माहिपम् ॥ क्षीरसशर्करपथ्ययद्वासात्म्यचसर्वदा।स्निग्ध
शीतगुरुक्षीरसर्वकालनसेवयेत् ॥ दीप्ताग्निकुरुतेमदमन्दा-
ग्निनष्टमेवच । नित्यतीव्राग्निनांसेव्यसुपक्वमाहिपपय ॥
पुष्यन्तिधातवःसर्वेवलपुष्टिविवर्द्धनम् । खण्डेनसहितदुग्ध
कफकृत्पवनापहम् ॥ सितासितोपलायुक्तंशुक्रलत्रिमला-
पहम् । सगुडमूत्रकृच्छ्रघ्नपित्तश्लेष्मकरमतम् ॥

अर्थ–दूध–जीर्णज्वर, कफ और निर्वलताम अमृतकी समान है और वही दूध नये ज्वरमे पिया हुवा विपकी समान मनुष्यको मार देवेहै । दूधम चौथा भाग पानी मिलाकर औटावे जब वह पानी जल जाय तब सेवन करे,वह दूध श्रेष्ठ,सर्वरोगनाशक,वलवर्द्धक,पुष्टिकारक,वीर्य्यजनक और अत्यन्त प्रशंसा योग्य है। जिनको दूध नहीं पचता है और जिनके दूध पीनेसे अफारा हो जाताहै उनको चाहिये कि दूधम आधा भाग पानी डालकर, एक तोला सोंठ और एक तोला पीपल डाललेवे फिर औटावे, जब पानी जल जाय तब उतारकर खूब लोट पोट करे। तदनन्तर सेवन करनेसे पच जाताहै और सुख उत्पन्न होताहै । गायका दूध पूर्वाह्णकालमें और भैंसका दूध अपराह्णकालमें पीना चाहिये । शर्करायुक्त और गरम कियाहुआ दूध सर्व कालमें श्रेष्ठ है । स्निग्ध, शीतल, गाढा ऐसा दूध सर्व कालमें सेवन नहीं करना चाहिये । पकाहुआ भैंसका दूध–दीप्ताग्निको मंद करेहै और मन्दाग्निको नष्ट करे है । इस कारण सदैव तीव्राग्निवाले मनुष्यको पीना चाहिये और मन्दाग्निवाले मनुष्यको कभी भी नहीं पीना चाहिये, सब धातुओंको पुष्टि करे और वल तथा पुष्टिवर्द्धक है, खांडयुक्त दूध–कफकारक और वातविनाशक है, मिश्रीके साथ दूध–शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है, गुडके साथ दूध–मूत्रकृच्छ्रनाशक और पित्तश्लेष्मकारक है ।

पर्युषितक्षीरगुणाः।

क्षीरं पर्युषितं सर्वं गुरु विष्टम्भि दुर्जरम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके बासी दूध-भारी, विष्टम्भकारी और देरमें पचते हैं।

पीयूषकिलाटक्षीरशाकतक्रपिण्डमोरटानां लक्षणानि गुणाश्च।

क्षीरं तत्कालसूताया घनं पीयूषमुच्यते । नष्टदुग्धस्य पक्वस्य पिण्डः प्रोक्तः किलाटकः ॥ अपक्वमेव यन्नष्टं क्षीरशाकं हि तत्स्मृतम् । दध्ना तक्रेण वा नष्टदुग्धं बद्धं सुवाससा ॥ द्रवभागेन रहितं तक्रपिण्डः स उच्यते । नष्टदुग्धभवं नीरं मोरटं जल्पतोऽपि च ॥ पीयूषं च किलाटश्च क्षीरशाकं च तक्रपिण्ड इमे वृष्या बृंहणा बलवर्द्धनाः ॥ गुरवः श्लेष्मला हृद्या वातपित्तविनाशनाः । दीप्ताग्नीनां विनिद्राणां विदग्धे चाभिशस्यते ॥

मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् ।
लघुर्बलकरो रुच्यो मोरटः स्यात्सितायुतः ॥

अर्थ-तुरन्तकी ब्याई हुई गाय भैंसआदिके गाढे दूधको पीयूष (खीस) कहते हैं। जो दूध, अग्निसे अच्छा पिण्डी बँध जाय उसको किलाट (मावा, खोवा) कहते हैं। बिना अग्निपर रक्खे जो दूध फट जाय उसको क्षीरशाक (फटा दूध) कहते हैं। जो दूध दही अथवा मठेसे फटजाय फिर उस दही वा छाछसे फटे हुए दूधको साफ कपडेमें बाँधकर उसका पानी निकाल डाले तब उसका पिण्ड होजाता और उसका पानी न रहे तब उसको तक्रपिण्ड कहते हैं। फटे दूधके पानीको मोरट कहते हैं। पीयूष, किलाट, क्षीरशाक और तक्रपिण्ड यह सब वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक भारी, कफकारी, हृदयको हितकारी और वातपित्तको दूर करते हैं। जिनकी अग्नि दीप्त है जिनको निद्रा नहीं आती है और जिनको विदग्ध रोग है उन मनुष्योंको यह हितकारी हैं। मोरटको खांड (बूरे) के साथ सेवन करनेसे मुखशोष, तृषा, दाह, रक्तपित्त और ज्वरको दूर करता है तथा लघु बलकारक और रुचिकारक है।

नवनीतगुणाः।

नवनीतं हितं गव्यं [illegible] ।

तर्पणीबृंहणीस्निग्धावलासवलशुक्रदा ॥

अर्थ-दूधकी मलाई-भारी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तनाशक, दाहनिवारक, तृप्तिकारक, पुष्टिजनक, स्निग्ध तथा कफ, बल और शुक्रको करैहै।

चण्डातक्षीरगुणा ।

क्षीरगव्यमथाजवाकोष्णदण्डाहतपिवेत् ।
लघुवृष्यज्वरहरवातपित्तकफापहम् ॥

अर्थ-गाय तथा बकरीके दूधको अल्प उष्ण करके रईसे मथकर पीवे वह मथाहुआ दूध हलका, वीर्य्यवर्द्धक, ज्वरनाशक तथा वात पित्त और कफको नष्ट करैहै।

गोदुग्धादिभवफेनगुणा ।

गोदुग्धप्रभवकिवाछागीदुग्धसमुद्भवम् । भवेत्फेनत्रिदोपघ्न
रोचनंवलवर्द्धनम् ॥ वह्निवृद्धिकरवृष्यसद्यस्तृप्तिकरलघु ।
अतिसारेऽग्निमान्द्येचज्वरेजीर्णेप्रशस्यते ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गायके दूधके झाग अथवा बकरीके दूधके झाग-त्रिदोपनाशक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, अग्निवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, तत्काल तृप्तिकारक, हल्के तथा अतीसार, मन्दाग्नि और जीर्णज्वरमे हितकारी हैं।

पयसःकेवलस्यापिपदार्थावलवृष्यदा ।
हिताःसुगन्धिनःपुष्टिधातुवृद्धिकराग्निदाः ॥ (नि०र०)

अर्थ-पेडे-बरफी, रवडी इत्यादि शुद्ध दूधके बने हुये पदार्थ-बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, हितकारी, सुगन्धिजनक तथा पुष्टि, धातु और अग्निवर्द्धक है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे दुग्धवर्गः समाप्तः ॥ १७ ॥

अथ दधिवर्गः ।

दधिपयस्यमगल्यविरलचदधिद्रप्सम् ।

अर्थ-दधि, पयस्य, मगल्य, विरल, दधिद्रप्स, (घनेतर, क्षीरज, क्षीरोद्भव, दिग्ध, तक्रजन्म, साम्लक)

संस्कृतभाषामें	दधि ।
हिंदीभाषामें	दही ।
बंगभाषामें	दइ ।
मराठीभाषामें	दही ।
गुजरातीभाषामें	दहि ।
कर्णाटकीभाषामें	मसर ।
तैलिंगीभाषामें	पेरुगु ।
इंग्रेजीभाषामें	फर्मेन्टेडमिल्क । Curdled Milk
फारसीभाषामें	दोग ।
अरबीभाषामें	तुगगन ।

गुणा धन्वन्तरिमतेन ।

पाकेऽम्लमुष्णं दधि दीपनं च स्निग्धं कषायं सरसं गुरु स्यात् ।
मेहादिपित्तास्रकफप्रदं स्यान्मंदं प्रदेशोफकरं प्रसिद्धम् ॥

अर्थ-दही-पाकमें खट्टा, गरम, दीपन, चिकना, कषेला, भारी, सरसी पक, रक्तपित्तकारक, कफकारक, मेदजनक और सूजनको उत्पन्न करे है।

मतम् ।

दध्यम्लमुष्णं वातदोषशमनं मेहादिसूत्रावहं वल्यशोफक-फार्त्तिकृन्त्तशमनं क्लेश्मशान्तिप्रदम् । कासश्वासमपीन-सेपु विषमे शीतज्वरे स्यादिदं स्रोतोविकारकरं कोटिपत्तनशु-क्रस्य वृद्धिप्रदम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-दही-अम्ल भारी, वातके विकारको दूर करनेवाला मलरोधक, मूत्रजनक, कफकारक, शोफनाशक, कफनाशक, अग्निदीपक, और अग्निकी शान्ति करनेवाला तथा खांसी, श्वास, पीनस विषमज्वर और शीतज्वरको दूर करे है और रुचिकर तथा शुक्रवर्द्धक है।

भावप्र ।

दध्युष्णं दीपनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु । पाकेऽम्लं ग्राहि पित्ता-स्रशोथमेदःकफप्रदम् ॥ मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतके विषम-ज्वरे । अतीसारेऽरुचौ कार्श्ये शस्यते बलवर्द्धनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–दही–गरम, दीपन, स्निग्ध, कुछेक कषेला, भारी, पाकमें अम्ल, मलरोधक तथा रक्तपित्त, सूजन, मेद और कफको करे है । मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय, शीत, विषमज्वर, अतिसार, अरुचि और कृशतामें दही हितकारी है तथा बलवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

दधिस्वाद्वग्निदहृद्यस्नेहनरोचनगुरु ।
पाकेऽम्लमुष्णवातघ्नमाङ्गल्यवृंहणपरम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ–दही–स्वादिष्ठ, अग्निजनक, हृदयको हितकारी, स्निग्ध, रुचिकारी, भारी, पाकमें अम्ल, गरम, वातनाशक, मंगलकारक और पुष्टिकारक है ।

दधिभेदाः ।

आदौमन्दततःस्वादुस्वाद्वम्लञ्चततःपरम् ।
अम्लंचतुर्थमत्यम्लपंचमंदधिपञ्चधा ॥

अर्थ–प्रथम मन्द, फिर मधुर, फिर मधुरखट्टा, उसके उपरान्त खट्टा और फिर अत्यन्त खट्टा ऐसे दही पांचप्रकारका होता है ।

मन्दादीनां लक्षणानि गुणाश्च ।

मन्ददुग्धवदव्यक्तरसंकिञ्चिद्घनंभवेत् । मन्दस्यात्सृष्टविण्मूत्रंदोषत्रयविदाहकृत् ॥ यत्सम्यग्घनतायातव्यक्तस्वादुरसंभवेत् । अव्यक्ताम्लरसंतत्तुस्वादुविज्ञैरुदाहृतम् ॥ स्वादुस्यादत्यभिष्यन्दिवृष्यमेदकफावहम् ॥ वातघ्नमधुरपाकेरक्तपित्तप्रसादनम् ॥ स्वाद्वम्लसान्द्रमधुरकषायानुरसंभवेत् । स्वाद्वम्लस्यगुणाज्ञेयाःसामान्यदधिवर्जने ॥ यत्तिरोहितमाधुर्य्यंव्यक्ताम्लत्वंतदम्लकम् । अम्लन्तुदीपनपथ्यंरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ तदत्यम्लंदन्तरोमहर्षकण्ठादिदाहकृत् अत्यम्लदीपनंरक्तपित्तपुष्टिकरंपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–जो दूध कुछेक जमकर गाढा पडगयाहो और जिसमें मधुर अम्लादिक किसी प्रकारका स्वाद न मालूम हो उस दहीको मंद कहतेहैं ।

मंद दही-मलमूत्रको पैदा करता तथा त्रिदोष और दाहको करे है । जो जमकर गाढा होगया हो और जिसमें स्वादुरस मालूम हो तथा अम्लरस प्रगट न हो उसको स्वादु दही जानना । स्वादु दही अत्यन्त अभिष्यन्दी, वीर्यवर्द्धक, मेदजनक, कफकारी, वातनाशक, पाकमें मधुर और रक्तपित्तको शुद्धि करै । जो दधि अम्ल और मधुर दोनों रसयुक्त हो गाढ़ा तथा कुछेक खट्टा हो उसको स्वाद्वम्ल दही कहते हैं । स्वाद्वम्ल दहीके गुण सामान्य दहीके समान जानने । जिस दहीकी मधुरता नाश होकर खट्टा होगया हो उस दहीको अम्लदही कहते हैं, अम्लदही-दीपन, रक्तपित्त और कफकारक है । जो दही अत्यन्त खट्टा हो, दांतोंको खट्टे करे, जिसके खानेसे रोमांच होआवे और कण्ठमें दाहको उत्पन्न करे उस दहीको अत्यम्लदधि कहते हैं । अत्यम्लदही-दीपन, रुधिरविकार, वात और पित्तको करे है ।

मधुरं भक्षयेन्नित्यं नात्यम्लं भक्षयेत्सदा ।
मधुरं त्रिगुणमत्यम्लं रोगकारणम् ॥

अर्थ-मधुर दधि खाना चाहिये और अत्यन्त खट्टा दही नहीं खाना चाहिये । कारण यह है कि, मधुर दही तीनगुणा और अत्यन्त खट्टा दही रोगकारक है ।

गव्यदधिगुणाः ।

दधि गव्यमतिपवित्रं शीतं स्निग्धं च दीपनं बलकृत् ।
मधुरमरोचकहारि वातादिविकारनाशनं मतम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-गायका दही-अत्यन्त पवित्र, शीतल, स्निग्ध, दीपन, बलकारक, मधुर, अरुचिको हरनेवाला, मलप्रद और वातादिनाशक है ।

गव्यम् ।

गव्यं दध्युत्तमं बल्यं पाके स्वादु रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं स्निग्धं पुष्टिकृत्पवनापहम् ॥
उक्तं दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-गायका दही-उत्तम, बलकारक, पाकमें स्वादिष्ट, रुचिकारक, पवित्र, दीपन, स्निग्ध, पुष्टिकारक और वातनाशक है । सब प्रकारके दहियोंमें गायका दही-गुणोंमें अधिक है ।

[illegible]

दुर्नामरोगेग्रहणीगदेचगव्यप्रशस्तंदधिसर्वदैव ॥

अर्थ-गायका दही-अरुचि, पीनस, खांसी, मूत्रकृच्छ्र, शीतज्वर विषमज्वर, बवासीर और संग्रहणीरोगमे हितकारी है।

माहिषदधिसुस्निग्धश्लेष्मलवातपित्तनुत् ।
स्वादुपाकमभिष्यन्दिवृष्यगुर्वस्रदूषणम् ॥

अर्थ-भैंसका दही-स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्वादुपाकी, अभिष्यन्दि, वीर्यवर्द्धक, भारी और रुधिरको दूषित करैहै।

अन्यच्च।

घनमाहिषमुद्दिष्टमधुररक्तदोषकृत ।
कफशोफहरस्वस्थपित्तकृद्वातकोपनम ॥ (हा०स०)

अर्थ-भैंसका दही-गाढा, मधुर, रुधिरको दूषित करनेवाला, कफनाशक, स्वस्थ, पित्तकारक और वातको कुपित करैहै।

अपिच।

महिष्यास्तुदधिप्रोक्तंरक्तपित्तप्रसादनम्। वृष्यस्निग्धचमधुरशोधनकफकारकम् ॥ गुर्वभिष्यंदिवल्यंस्याच्छुक्रलचप्रकीर्त्तितम्।पित्तवातश्रमचैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-भैंसका दही-रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर, शोधन, कफकारक, भारी, अभिष्यंदी, बलकारक, शुक्रजनक तथा पित्त, वात और श्रमको दूर करे है।

छागदधिगुणा।

दध्याजकफपित्तनाशनकरपातघ्नमुष्णतथा दुर्नामश्वसनेचकासिनिहितचाग्नेश्वसदीपनम् । वृष्यबृंहणकान्तिदबलकरसर्वामयध्वसन आमार्शस्वतिसारकेनिगदितपथ्यसदाप्राणिनाम्॥

अर्थ-बकरीका दही-कफपित्तनाशक, वातविनाशक, गरम, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, कान्तिकारक, बलवर्द्धक, सर्वरोगनाशक, अग्निदीपक तथा बवासीर, श्वास, खाँसी, आम, अर्श और अतिसाररोगको दूर करैहै और सदैव मनुष्योंको पथ्य है।

अपरञ्च।

आजदधिभवेचोष्णक्षयवातविनाशनम । दुर्नामश्वासकासे-

प्रदिनमग्निप्रदीपनम् ॥ विपाकेमधुरंवृष्यंरक्तपित्तप्रसादन-
म् । शस्तंप्राभातिकंप्रोक्तंवातपित्तनिबर्हणम् ॥ (अ० सं०)

अर्थ-बकरीका दही-गरम, कफ वातनाशक, पचनेमें भारी और रोगोंमें हितकारी, अग्निदीपक, पाकमें मधुर, वीर्यवर्द्धक, रक्त-पित्तनाशक और प्रातःकालका बकरीका दही-शीत और वात-पित्त-निवारक है ।

अन्यच्च ।

दध्याजंकफवातघ्नंलघूष्णंनेत्ररोगजित् ।
दुर्नामश्वासकासघ्नंदीपनपाचनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बकरीका दही-कफवातनाशक, हलका, नेत्ररोगनाशक, बवासीरको हरनेवाला, श्वासनाशक, खांसी, दीपक, शीतल और पाचन है ।

आविकदधिगुणाः ।

कोपनंकफवातानांदुर्नाम्नांचाविकंदधि । दीपनीयंतुचक्षुष्यंपा-
ण्डुकृन्नापिवातनुत् ॥ रूक्षमुष्णंकषायंस्याद्दध्याविकमग्निदीप-
नम् । स्यात्पाकेमधुरंकषायंपुष्टिवर्द्धनम् ॥ (अ० हृ०)

अर्थ-भेड़का दही कफ, वात और बवासीरको कुपित करनेवाला, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, पाण्डुरोगको उत्पन्न करनेवाला, वातनाशक, रूखा, गरम, कसैला, अग्निदीपक, मीठा रस और पाकमें मधुर, कषाय और पुष्टिको बढ़ानेवाला है ।

अन्यच्च ।

आविकंदधिसुस्निग्धंकफपित्तकरंगुरु ।
वातेनरक्तवातेनपथ्यंशोषिणामपदम् ॥ ([illegible])

अर्थ-भेड़का दही-चिकना, कफपित्तकारक भारी वात और रक्तवात [illegible] और बवासीरको दूर करता है ।

हस्तिनीदधिगुणाः ।

हस्तिन्यादधिपाकेलघुपाकिकफशमनंचाग्निदम् ।
[illegible] ॥

अर्थ-हथिनीका दही-हलका [illegible] नाशक, अग्नि [illegible] और [illegible] है ।

अन्यच्च।

हस्तिन्यादधिवीर्य्योष्णकषायकफवातनुत्।

अर्थ-हथिनीका दही-उष्णवीर्य्य, कसेला और कफ तथा वातनाशक है।

अश्वीदधिगुणा।

अश्वीदधिस्यान्मधुरकषायकफार्तिमूर्च्छामयहारिरूक्षम्।
वातालपददीपनकारिनेत्रदोषापहतत्कथितपृथिव्याम्॥

अर्थ-घोडीका दही-मधुर, कसेला, कफकी वेदना और मूर्च्छारोगको दूर करनेवाला, रूखा, अल्पवातकारक, दीपन और नेत्रोंके विकारोंको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

वाजिजसमधुरबलवर्णस्वेददाहमुपयातिगुरुत्वम्।
दीपनीयमतिदोषलसदाचाक्षुषदधिमरुत्प्रकोपिच॥

अर्थ-घोडीका दही-मधुर, बलकारक, वर्णकारक, पसीनेको लानेवाला, दाहजनक, भारी, अग्निप्रदीपक, अत्यन्त दोषकारक, नेत्रोंको हितकारी और वातको कुपित करैहै।

गर्दभीदधिगुणा।

गर्दभीदधिरूक्षोष्णलघुदीपनपाचनम्।
मधुराम्लरसरुच्यवातदोषविनाशनम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-गधीका दही-रूखा, गरम, हलका, दीपन, पाचन, मधुर, अम्ल, रुचिकारी और वातके दोषोंको दूर करे है।

उष्ट्रीदधिगुणा।

वातार्शकुष्ठक्रिमिनाशनचऔष्ट्रविपाकेकटुतिक्तकच।
सक्षारमम्लकृमिकोष्ठनाशनबल्यञ्चसन्तर्पणमाशुकारि॥

अर्थ-ऊटनीका दही-वादीकी बवासीर, कोढ, कृमि और कोठेके रोगको दूर करे है। पाकमें, कटु, तिक्त, क्षार, अम्ल, बलकारक और तत्काल तृप्तिकारक है।

अन्यच्च।

विपाकेकटुसक्षारगुरुभेद्यौष्ट्रिकंदधि।
वातमर्शांसिकुष्ठानिकृमीन्हन्त्युदरंपरम्॥ (हा०स०)

अर्थ-उष्ट्रीका दही-पाकमें कटु, खारी, भारी, भेदक तथा वात, अर्श, कुष्ठ, कृमि और उदररोगको हरै है।

मानुषीदधिगुणाः।

स्निग्धंविपाकेमधुरंबल्यंसन्तर्पणंहिमम्।
चक्षुष्यंग्राहिदोषघ्नंदधिनार्य्यागुणोत्तमम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-स्त्रीका दही-स्निग्ध, पाकमें मधुर, बलकारक, तृप्तिकारक, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, मलरोधक, वातादिदोषनाशक और अधिक गुणवाला है।

वार्षिकदधिगुणाः।

वार्षिकंपित्तकृद्वातशमनंकफकोपनम्।
गुल्मार्शःकुष्ठरोगेचरक्तपित्तेनशस्यते॥

अर्थ-वर्षाऋतुका दही-पित्तकारक, वातनिवारक, कफको कुपित करनेवाला तथा गुल्म, बवासीर, कुष्ठ और रक्तपित्तरोगमें हितकारी नहीं है।

शारदीयदधिगुणाः।

शारदंदधिगुर्वम्लंरक्तपित्तविवर्द्धनम्।
शोफतृष्णाज्वरार्त्तानांकरोतिविषमज्वरम्॥

अर्थ-शरदऋतुका दही-भारी, खट्टा, रक्तपित्तवर्द्धक, तथा सूजन, तृषा और ज्वरसे पीडित मनुष्योंके विषमज्वरको उत्पन्न करै है।

हैमन्तिकदधिगुणाः।

गुरुस्निग्धंसुमधुरंवातहृद्बलवर्द्धनम्।
वृष्यंमेध्यंचहैमन्तंपुष्टिदंतुष्टिवर्द्धनम्॥

अर्थ-हेमन्तऋतुका दही-भारी, स्निग्ध, मधुर, वातनाशक, बलवर्द्धक, वीर्यजनक, मेधाकारक, पुष्टिकारक और तुष्टिवर्द्धक है।

शैशिरदधिगुणाः।

वृष्यंबल्यंचपित्तघ्नंश्रमसन्तापनाशनम्।
शैशिरंमधुरंनात्यम्लंपिच्छिलंगुरुशोषणम्।

अर्थ-शिशिरऋतुका दही-वीर्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तहर, श्रमनाशक, मधुर, खट्टा, पिच्छिल और भारी है।

वासन्तिकदधिगुणाः।

वासन्तंमधुरंस्निग्धमीषदम्लंकफावहम्।

वलकृद्वीर्य्यकृत्प्रोक्तवसन्तेनप्रशश्यते ॥

अर्थ-वसन्तऋतुका दही-वादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारी, वलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, वसन्तऋतुमें दही श्रेष्ठ नहीं है ।

ग्रैष्मिकदधिगुणा ।

लघुचाम्लभवेद्ग्रीष्मेचात्युष्णरक्तपित्तकृत् ।
शोषभ्रमपिपासाकृद्दधिप्रोक्तनग्रैष्मिके ॥ (हारीतसं०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका दही-हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है ।

पक्वदुग्धभवदधिगुणा ।

पक्वदुग्धभवंरुच्यदधिस्निग्धगुणोत्तमम् ।
पित्तानिलापहंसर्वधात्वग्निवलवर्द्धनम् ॥

अर्थ-औटाये हुवे दूधका दही-रुचिकारक, स्निग्ध, गुणोंमें श्रेष्ठ, पित्त-वातनाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और वलको वढावे है ।

नि सारदधिगुणा ।

असारदधिसग्राहिशीतलवातललघु ।
विष्टम्भिदीपनंरुच्यग्रहणीरोगनाशनम् ॥

अर्थ-जिस दहीका मक्खन निकाल लिया हो फिर उसको जमादिया हो ऐसा असार, दही-मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, विष्टम्भका-रक, दीपन, रुचिकारी, और सग्रहणीरोगको दूर करे है ।

गालितदधिगुणा ।

गालितंदधिसुस्निग्धवातघ्नकफकृद्गुरु ।
वलपुष्टिकररुच्यमधुरनातिपित्तकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-छानाहुआ और निचोडाहुआ दही-स्निग्ध, वातनाशक, कफकारक, भारी, वलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, मधुर और अत्यन्त पित्तका रक नहीं है ।

सितायुक्तदधिगुणा ।

सितायुक्तदधिप्रोक्तपित्तदाहतृषाहरम् ।
रक्तदोषहरंचैवमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-चीनीयुक्त दही-पित्त, दाह, तृषा और रुधिरके विकार दूर करे है ।

गुडयुक्तदधिगुणाः ।

गुडयुक्तंदधिप्रोक्तंतर्पणंधातुवर्द्धकम् ।
गुरुवातहरंचैवमुनिभि परिकीर्त्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-गुडमिश्रित दही-तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, भारी और वात विनाशक है ।

दधिभक्षणनिषिद्धता ।

ननक्तंदधिभुञ्जीतनचाप्यघृतशर्करम् ।
नामुद्गसूपनाक्षौद्रंनोष्णमामलकैर्विना ॥ (सु०स०)

गुल्म ...रात्रिमे दही नहीं खाना चाहिये तथा घृतरहित दही मिश्री
अर्थ-वर्षाऋतु... मधु और आमलेके विना तथा उष्ण दही नहीं खाना चाहिये
नेवाला तथा गुल्म, सर्वा...

...सन्तेषुप्रायशोदधिगर्हितम् ।
शारददधिगुर्वम्लरक्त...ववर्षासुदधिशस्यते ॥ (सु०स०)
शोफतृष्णाज्वरार्त्तानाकर...मे प्राय अपकारी है और हेमन्त शिशि

अर्थ-शरदऋतुका दही-भारी, खट्टा, रक्तपि...
और ज्वरसे पीडित मनुष्योंके विषमज्वरको उत्पन्न करे है ।

हेमन्तिकदधिगुणाः ।

गुरुस्निग्धंसुमधुरंकफकृद्बलवर्द्धनम् ।
वृष्यंमेध्यंचहेमन्तेपुष्टिदंतुष्टिवृद्धिदम् ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुका दही-भारी, स्निग्ध, मधुर, कफकारक, बलवर्द्धक, ...जनक, मेधाकारक, पुष्टिदायक और तुष्टिवर्द्धक ...

शीतिदधिगु...

..., श्रमना...

बलकृद्वीर्य्यकृत्प्रोक्तंवसन्तेनप्रशस्यते ॥

अर्थ-वसन्तऋतुका दही-वादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारी, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, वसन्तऋतुमें दही श्रेष्ठ नहीं है ।

ग्रैष्मिकदधिगुणाः ।

लघुचाम्लभवेद्ग्रीष्मेचात्युष्णंरक्तपित्तकृत् ।
शोषभ्रमपिपासाकृद्दधिप्रोक्तंनग्रैष्मिके ॥ (हारीतसं०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका दही-हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है ।

पक्वदुग्धभवदधिगुणाः ।

पक्वदुग्धभवंरुच्यंदधिस्निग्धगुणोत्तमम् ।
पित्तानिलापहंसर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥

अर्थ-औटाये हुवे दूधका दही-रुचिकारक, स्निग्ध ... आनन्दजनक ... तनाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और बलको ... ला और शी-

निःसारदधिअम्लदधिकूर्चिका ।

असारदधिसम्राहि... रूक्षादुर्जरादधिकूर्चिका ॥ (रा०२०)

अर्थ-गरम दूधमें दूधसे आधा भाग पानी मिलाके फिर उसमें खट्टा दही डालदेवे उसको दधिकूर्चिका कहते हैं । दधिकूर्चिका वातनाशक, रूखी, रक्तमलरोधक और कठिनतासे पचनेवाली है ।

इति श्रीशालिग्राम निघण्टुभूषणे दधिवर्गः समाप्त ॥ १४ ॥

अथ तक्रवर्गः ।

तक्रदण्डाहतघोलगोरसःकट्वरद्रवः ।
मथितकट्वरचाम्लमलिनभग्नसन्धिकम् ॥

अर्थ-तक्र, दण्डाहत, घोल, गोरस, कट्वर, द्रव, मथित, कट्वर, अम्ल,

अर्थ-उष्ट्रनीका दही-पचनेमें कटु, खारी, भारी, भेदक तथा वात,अर्श, कुष्ठ, कृमि और उदररोगको हरे है ।

मानुषीदधिगुणाः ।

स्निग् ... धुरबल्यमन्तर्पणंहितम् ।
चक्षु ... दधिनार्य्यागुणोत्तमम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-स्त्री ... में मधुर, बलकारक, तृप्तिजनक, पथ्य, नेत्रोंको हि ... त्रिदोषनाशक और अधिक गुणवाला है।

... गकी दही ... गुणाः ।

शरद्ग्रीष्मव ... पनम् ।
ठ ... हेमन्तेशिशिरे ... ते ॥

नेवा ... शरद, ग्रीष्म और वसन्तऋतुमें ... को कुपित कर- ... तथा वर्षाऋतुमें दही हितकारी है ।

अक्रमदधिभक्षणदोषाः ।

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्डुभ्रमान्भ्रमान् ।
प्राप्नुयात्कामलाश्चापिविधिंहित्वादधिप्रियः ॥

अर्थ-विना नियमके दहीको खानेसे-ज्वर, रक्तपित्त, विसर्प, कुष्ठ, ... भ्रम और कामलादिक अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं ।

त्रिकटादियुक्तदधिगुणाः ।

दधित्रिकटुकयुक्तंराजिकाचूर्णमिश्रं कफहरमनिलघ्नंवह्नि-
सधुक्षणंच । तुहिनशिशिरकालेसेवितंचातिपथ्यं रुचय-
तितनुदार्ढ्यंकान्तिमत्त्वंनृणाम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-दहीमें त्रिकुटेका चूर्ण, संधानान और राईका चूर्ण मिलाकर हेमन्त और शिशिर ऋतुमें खानेसे कफको दूर करे, वातका नाश करे, अग्निको दीपन करे, अत्यन्त पथ्य तथा शरीरको दृढ करे और नरोंमें कान्तिको उत्पन्न करैहै ।

गव, गु ...

वातलमधुरस्निग्धानि ...

बलकृद्वीर्य्यकृत्प्रोक्तवसन्तेनप्रशश्यते ॥

अर्थ-वसन्तऋतुका दही-बादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारी, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, वसन्तऋतुमें दही श्रेष्ठ नहीं है ।

ग्रैष्मिकदधिगुणा ।

लघुचाम्लंभवेद्ग्रीष्मेचात्युष्णरक्तपित्तकृत् ।
शोपभ्रमपिपासाकृद्दधिप्रोक्तनग्रैष्मिके ॥ (हारीतस०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका दही-हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है ।

पक्वदुग्धभवदधिगुणा ।

पक्वदुग्धभवरुच्यदधिस्निग्धगुणोत्तमम् । ...रक,
पित्तानिलापहसर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥ ...नन्दजनक

अर्थ-औटाये हुवे दूधका दही-रुचिकारक, स्निग्ध ...रनेवाला और शी-
वातनाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और बलको ...

नि सारदधिगुणा ...थ ।

असारदधिसग्राहिशीतम्थम्लदधिकूर्चिका ।
...ग्निदीप्तनंतरूक्षादुर्जरादधिकूर्चिका ॥ (रा०व०)

अर्थ-गरम दूधमें दूधसे आधा भाग पानी मिलाले फिर उसमें खट्टा दही ही मिलालेवे उसको दधिकूर्चिका कहते हैं । दधिकूर्चिका वातनाशक, रूखी, रक्तमलरोधक और कठिनतासे पचनेवाली है ।

इति श्रीशालिग्राम निघण्टुभूषणे दधिवर्ग समाप्त ॥ १४ ॥

अथ तक्रवर्गः ।

तक्रदण्डाहतघोलगोरसकट्वरद्रव ।
मथितकट्वरचाम्लमलिनभग्नसन्धिकम् ॥

अर्थ-तक्र, दण्डाहत, घोल, गोरस, कट्वर, द्रव, मथित, कट्वर,

मलिन, भग्नसन्धिक (गोरसज, कालशेय, विलोडित, अरिष्ट, उदश्वित्, प्रमथित, अम्बर, कट्वर, घल, केवल, छच्छिका)।

संस्कृतभाषामें	तक्र ।
हिन्दीभाषामें	छाछ मट्ठा ।
बंगभाषामें	घोल ।
मराठीभाषामें	ताक ।
गुजरातीभाषामें	छास, घोलवु ।
कर्णाटकीभाषामें	मज्जिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चल्ला ।
इंग्रेजीभाषामें	१ बटरमिल्क २ हे । Butter Milk Wery
फारसीभाषामें	मस्त, मठा ।
अरबीभाषामें	हमीज ।

तक्रभेदाः ।

तेषांनामानिभिन्नानिलक्षणानिसमानिच ।घोलन्तुमथितं-तक्रमुदश्विच्छच्छिकापिच॥ससारनिर्जलघोलंमथितत्त्वस-रोदकम् । तक्रपादजलप्रोक्तमुदश्वित्त्वर्द्धवारिकम्॥ छच्छि-कासारहीनास्यात्स्वच्छाप्रचुरवारिका ॥

अर्थ-घोल, मथित, तक्र, उदश्वित् और छच्छिका इन भेदोंसे तक्र पाच प्रकारका है । जो तक्र मलाई सहित मथा गया हो और पानी जिसमें न पडा हो उसको घोल कहते हैं और जिसमेंसे मलाई निकाल दी हो विनापानी डाले मथा गया हो, उसको मथित कहते है । जिसमें तीन भाग दहीहो और एक भाग पानी गेरकर मथा गयाहो, उसको तक्र (मट्ठा) कहते है । जिसमें आधा दही और आधा पानी पड़ाहो उसको उदश्वित् कहते हैं और जिसमें अँधाधुन्ध पानी पडा हो उसको सारहीन स्वच्छ छच्छिका (छाछ) कहते है ।

घोलादीनां गुणाः ।

वातपित्तहरघोलमथितकफपित्तनुत । तक्रंग्राहिकषायाम्ल स्वादुपाकंरसलघु ॥ वीर्य्योष्णदीपनवृष्यप्रीणनवातनाश-नम्।ग्रहण्यादिमतांपथ्यभवेत्तग्राहिलाघवात॥किंचित्स्वा-

डुविपाकित्वान्नचपित्तप्रकोपनम् । अम्लोष्णदीपनवृष्यप्रीणनवातनाशनम् ॥ कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापिकफापहम् । नतक्रसेवीव्यथतेकदाचिन्नतक्रदग्धाःप्रभवन्तिरोगा ॥ यथासुराणाममृतसुखायतथानराणांभुवितक्रमाहुः । उदश्वित्कफकृद्बल्यश्रमघ्नपरममतम् ॥ छच्छिकाशीतला । लघ्वीपित्तश्रमतृषाहरी । वातनुत्कफनुत्साऽतुदीपनीलवणान्विता ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तहाँ-घोल-वातपित्तनाशक है । मथित-कफपित्तनाशक है । तक्र-मलरोधक, कसेला, खट्टा, पचनेमें स्वादु, रसमेंभी स्वादु, हलका, उष्णवीर्य, अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्ति करनेवाला, वातनाशक और सग्रहणी अतीसारादि रोगोंमें पथ्य है । तक्र हलका होनेसे ग्राही, स्वादुपाकी होनेसे पित्तको कुपित नहीं करता । अम्ल, उष्ण, दीपन, वृष्य, प्रीणन, वातनाशक, कषाय, उष्ण, विकाशि, और रूक्ष होनेसे कफका नाश करे है । तक्रका पान करनेवाला मनुष्य कभी रोगी नहीं होता, तक्रमे भस्म किये हुवे रोग फिर कभी नहीं होते । जैसे स्वर्गलोकमें देवताओंको अमृत है वैसेही मृत्युलोकमें प्राणियोंको तक्र है । उदश्वित्-कफकारक, बलवर्द्धक और श्रमनाशक है । छच्छिका (छाछ)-शीतल, हलकी, पित्तनाशक, श्रमहारक, तृषानिवारक और लवणके साथ छाछ वातनाशक, कफहारक और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

घोलमारुतपित्तहारिमथितवातापहश्लेष्महृत्
पित्तश्लेष्मविनाश्युदश्विदधिकतक्रत्रिदोषापहम् ।
मन्दाग्नावरुचौतथैवनितरामन्येषुरोगेष्वपि
श्रेष्ठंतक्रमिदवदन्तिमुनयस्तेनोत्तमप्राणिनाम् ॥

अर्थ-घोल-वातपित्तनाशक, मथित-वात और कफनाशक है । उदश्वित्-पित्त और कफनाशक है । और तक्र-त्रिदोषनाशक है, तथा मन्दाग्नि, अरुचि और अन्यरोगोंमें भी हितकारी है ।

तक्रंत्रिदोषशमनस्वादुपाकरसलघु ।

वीर्य्योष्णंमूत्रकृच्छ्रघ्नंकषायमम्लमग्निदम् ॥

अर्थ–तक्र–त्रिदोषनाशक, स्वादुपाकी, स्वादुरसान्वित, हलका, उष्णवीर्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनिवारक, कसेला, खट्टा और जठराग्निजनक है।

अम्लेनवातमधुरेणपित्तकफकषायेणनिहन्तिसद्यः ।

अर्थ–तक्र–अम्लपनसे वातका, मधुरपनसे पित्तका और कसेलेपनसे कफका नाश करे है। इस प्रकार तक्र त्रिदोषनाशक है।

अन्यच्च ।

तक्रस्वादुकषायमम्लकरसभक्ष्यलघूष्णंहित
गुल्मार्शःपरिणामशूलशमनच्छर्दिप्रसेकापहम् ।
तृष्णारोचकशोफमेदगरजिच्छ्लेष्मानिलघ्नंपर
सेव्यमूत्रगदापहज्वरहरस्नेहोत्थपीडापहम् ॥

अर्थ–तक्र–स्वादिष्ट, कसेला, खट्टा, भक्षनेयोग्य, हलका, गरम, हितजनक तथा गुल्म, बवासीर, परिणामशूल, वमन, प्रसेक, तृषा, अरुचि, सूजन, मेद, विष, कफ, वात, मूत्ररोग, ज्वर और स्नेहसे उत्पन्न हुई पीडाको दूर करे है।

अन्यच्च ।

आमातिसारेचविषूचिकायावातज्वरेपाण्डुपुकामलायाम् ।
प्रमेहगुल्मोदरवातशूले नित्यपिबेत्तक्रमरोचकेच ॥

अर्थ–तक्र–आमातिसार, विषूचिका, वातज्वर, पाण्डुरोग, कामला, प्रमेह, गुल्म, उदररोग, वातशूल और अरुचिमें सदैव पीना चाहिये।

तथाचत्रिविधतक्रकथ्यतेशृणुपुत्रक । यथायोगेनतत्सम्यक्छस्यतेयेषुरोगिषु ॥ समुद्धृतघृततक्रमर्द्धोद्धृतघृतञ्चयत् । अनुद्धृतघृतञ्चान्यदित्येतत्रिविधमतम ॥पूर्वलघुचपथ्यचत्रिदोषशमनपरम् । ततः परवृष्यतरक्रमेणसमुदीरितम् ॥ अनुद्धृतघृतसान्द्रगुरुविद्यात्कफात्मकम् । चलप्रदन्तुक्षीणानामामशोफातिसारकृत् ॥ (हा०सं०)

अर्थ–आत्रेयजी कहनेलगे कि, तक्र तीन प्रकारका है सो मैं कहताहूं। हे पुत्र ! सुन, यह जिन रोगोंमें हितकारी है सो दिखाताहूं । घृतहीन,

अल्पघृतयुक्त और घृतसयुक्त ऐसे तक्र तीन प्रकारका है । तहा, घृतहीन अर्थात् जिस तक्रमेसे घी निकाललियाहो ऐसा तक्र हल्का, पथ्य और त्रिदोपनाशक है। अल्पघृतसयुक्त अर्थात् जिसमेंसे थोडा घी निकाललियाहो ऐसा तक्र वीर्य्यवर्द्धक और घृतसयुक्त अर्थात् जिसमेंसे घी नहीं निकालाहो ऐसा तक्र-गाढा, भारी, कफकारक, क्षीणमनुष्योंको बल देनेवाला तथा आम, मजन और अतिसारको दूर करे है।

तत्पुनर्मधुरश्लेष्मप्रकोपनकरपरम् ।
वातघ्नपित्तशमनगम्लन्तुपित्तकृत्सदा ॥

अर्थ-मीठातक्र-कफकारक, वातनाशक और पित्तको शान्ति करे है। और खट्टा तक्र-सदैव पित्तकारक है।

पक्वापक्वतक्रगुणाः ।

तक्रमामकफकोष्ठेहन्तिकण्ठेकरोतिच ।
पीनसश्वासकासेषुपक्वमेवप्रयुज्यते ॥ (अ०)

अर्थ-कच्चा तक्र-कोष्ठके कफको दूर करे और कण्ठमें कफको करे है। इसकारण पीनस, श्वास और खासीमें तो पक्काही तक्र देना चाहिये।

दोषविशेषे व्याधिविशेषे च तक्रविशेषा ।

वातेऽम्लशस्यतेतक्रशुण्ठीसैन्धवसयुतम् ॥ पित्तेस्वादुसितायुक्तसव्योपमधिकेकफे हिगुजीरयुतघोलंसैन्धवेनसुसयुतम्। भवेदतीववातघ्नमर्शोतीसारहृत्परम् ॥ सुरुच्य पुष्टिदवल्यवस्तिशूलविनाशनम्। मूत्रकृच्छ्रेतुसगुडपाण्डुरोगेसचित्रकम् ॥

अर्थ-वातरोगमें-सोंठ और सेंधवलवणका चूर्ण मिलाकर खट्टातक्र पीना चाहिये पित्तरोगमें बूरा मिलाकर मीठातक्र पीना। अधिक कफमे त्रिकुटेका चूर्ण डालकर पीना चाहिये। घोल-हींग, जीरा और सेंधवलवणयुक्त अत्यन्त वातनाशक है। तथा बवासीर और अतिसारको दूर करे है रुचिकारक पुष्टिजनक, बलकारक और वस्तिशूलको निर्मूल करे है। घोल-मूत्रकृच्छ्ररोगमें गुडके साथ पीना चाहिये और पाण्डुरोगमें चीतेके साथ पीना चाहिये।

तक्रसेवननिमित्तानि ।

शीतकालेऽग्निमान्द्येचतथावातामयेषुच । अरुचौस्रोतसां रोधतक्रस्यादमृतोपमम् ॥ तत्तुहन्तिगरच्छर्द्दिप्रसेकविषमज्वरान् । पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ॥ मेहं गुल्ममतीसारशूलप्लीहोदरारुची । श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाकृमीन् ॥

अर्थ-शीतऋतु, मन्दाग्नि, वातरोग, अरुचि और छिद्रोंके रोधमें तक्र अमृतकी समान गुणकारक है। यह विष, वमन, प्रसेक, विषमज्वर, पाण्डुरोग, मेदरोग, संग्रहणी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, भगंदर, प्रमेह, गुल्म, अतिसार, शूलरोग, प्लीहा, उदररोग, अरुचि, श्वित्रकुष्ठ, कोष्ठरोग, कोढ, सूजन, तृषा और कृमिरोगको हरे है ।

अन्यच्च ।

शीतकालेऽग्निमान्द्येचकफोत्थेष्वामयेषुच ।
मार्गावरोधेकुष्ठेचवायौतक्रंप्रशस्यते ॥

अर्थ-शीतकाल, मन्दाग्नि, कफसे उत्पन्न हुये रोग, मार्ग चलनेकी थकावट, कुष्ठ और वातके रोगोंमें तक्र हितकारी है ।

रोगविशेषे तक्रनिषेधः ।

नैवतक्रंक्षतेदद्यान्नोष्णकालेनदुर्बले ।
नमूर्च्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपैत्तिके ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-क्षतरोग, उष्णकाल, दुर्बलता, मूर्च्छा, भ्रम, दाह और रक्तपित्त रोगमें तक्र देना नहीं चाहिये ।

गव्यादीनां तक्राणां विशिष्टगुणाः ।

यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्गुणंतक्रमादिशेत् । (भा०प्र०)

अर्थ-पहिले जो आठ प्रकारके दही कहे हैं उनहीके समान उन दहियोंके तक्रोंके गुण जानने ।

गोतक्रगुणाः ।

गव्यंत्रिदोषशमनंपथ्येश्रेष्ठंतदुच्यते ।
दीपनरुचिकृन्मेध्यमर्शोदरविकारजित् ॥

अर्थ-गायका तक्र अर्थात् मट्ठा-त्रिदोषनिवारक, पथ्योंमें उत्तम, दीपन रुचिकारक, मेधाजनक, तथा बवासीर और उदरके विकारोंको दूर करे है।

माहिषीतक्रगुणा ।

माहिषकफकृत्किञ्चिद्धनशोफकरंनृणाम् ।
शस्तप्लीहार्शोग्रहणीदोषेऽतीसारिणामपि ॥

अर्थ-भैंसका तक्र-कफकारक, कुछ २ गाढा, मनुष्योंके सूजनको करनेवाला तथा प्लीहा, बवासीर, सग्रहणी और अतिसाररोगमें हितकारी है।

छागीतक्रगुणा ।

छागललघुसस्निग्धत्रिदोषशमनपरम् ।
गुल्मार्शोग्रहणीशूलपाण्ड्वामयविनाशनम्॥ (हा०स०)

अर्थ-बकरीका तक्र-हलका, स्निग्ध, त्रिदोषनिवारक तथा गुल्म, बवासीर, सग्रहणी, शूल, और पाण्डुरोगको दूर करेहै।

आविकतक्रगुणा ।

आवितक्रमपथ्यस्यादम्लदुर्गंधकारकम् ।
दीपनकटुकचोष्णलेखनलघुपित्तकृत् ॥
रक्तदोषकरचैवकफवातविनाशनम् ।

अर्थ-भेडका मट्ठा-अपथ्य, खट्टा, दुर्गंधकारी, दीपन, चरपरा, गरम, लेखन, हलका, पित्तकारक, रुधिरके विकारोंको करनेवाला और कफवात-विनाशक है।

हस्तिनीतक्रगुणा ।

हस्तिन्यास्तुस्मृततक्रमग्निमांद्यकरगुरु ।
उष्णचतुवरतेजोवर्द्धककफवातहम् ॥

अर्थ-हथिनीका तक्र-मन्दाग्निकारक, भारी, गरम, कसेला, तेजवर्द्धक और कफ वातनाशक है।

अश्वीतक्रगुणा ।

अश्वीतक्रतुवरकिञ्चिद्वातकरंमतम् ।
अग्निदीप्तिकररूक्षनेत्र्यमूर्च्छाकफापहम् ॥

अर्थ-घोडीका तक्र-कसेला, किञ्चिद्वातकारक, अग्निप्रदीपक, रूखा, नेत्रोंको हितकारी तथा मूर्च्छा और कफका विनाश करेहै।

उष्ट्रीतक्रगुणा ।

औष्ट्रतक्रंतुविरसंगुरुहृद्यंचदोषलम् ।
पीनसश्वासकासेषुशस्तमुक्तमनीषिभिः ॥

अर्थ-ऊंटनीका तक्र-बेस्वाद, भारी, हृदयको हितकारी, दोषजनक तथा पीनस, श्वास और खांसीमें हितकारी है ।

गर्दभीतक्रगुणा ।

गर्दभ्यास्तुस्मृतंतक्रंमधुरंदीपनंमतम् ।
रूक्षमम्लकरंचोष्णंवातनाशकरंपरम् ॥

अर्थ-गधीका तक्र-मधुर, दीपन, रूखा, खट्टा, गरम और वातनाशक

स्त्रीतक्रगुणा ।

स्त्रीतक्रंग्राहकंचाम्लंचक्षुष्यंतर्पणंगुरु ।
पाकेचमधुरंबल्यंत्रिदोषस्यचनाशकम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-स्त्रीका तक्र-मलरोधक, खट्टा, नेत्रोंको हितकारी, तृप्तिकारक, भारी, पाकमें मधुर, बलकारक और त्रिदोषनाशक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तक्रवर्गः समाप्तः ॥ १९ ॥

अथ नवनीतवर्गः ।

म्रक्षणंसरजंसारंनवनीतंनवोद्धृतम् ॥

अर्थ-म्रक्षण, सरज, सार, नवनीत, नवोद्धृत, (मन्थज, हैयङ्गवीन [क], दधिसार, नवनी, दधिबुद्, दधिज ।)

संस्कृतभाषामें	नवनीत ।
हिन्दीभाषामें	नवनी, नोनी, मक्खन ।
बंगभाषामें	ननी, माखन ।
मराठीभाषामें	लोणी ।
गुजरातीभाषामें	माखण ।
कर्णाटकीभाषामें	बेण्णे ।
तैलङ्गीभाषामें	वेन्न ।

इंग्रेजीभाषामें — बटर । Butter
लैटिन्भाषामें — बुटिरम् । Butyrum
फारसीभाषामें — मसका ।
अरबीभाषामें — जुब्द ।

साधारणनवनीतगुणाः ।

शीतवर्णबलावह सुमधुर वृष्यच संग्राहक वातघ्नकफका-
रकरुचिकरसर्वाङ्गशूलापहम् । कासघ्नश्रमनाशनसुखक-
रकान्तिप्रदंपुष्टिदं चक्षुष्यं नवनीतमुद्धृतनव गोःसर्वदो-
षापहम् (रा०नि०)

अर्थ-नवीन (ताजी) नवनीत-शीतल, वर्णको सुंदर करनेवाला, बल-कारक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, वातनाशक, कफकारक, रुचिकारक, शरीरके सर्व प्रकारके शूलोंको हरनेवाला, खाँसीको दूर करनेवाला, श्रमनाशक, सुखकारक, कान्तिजनक, पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी और सर्वदोषोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शीतंबलाढ्यमधुराम्लवृष्यश्लेष्मावहपित्तमरुत्प्रणाशम् ।
शोफक्षयक्षीणकृशातिवृद्धबालेषुपथ्यनवनीतमुक्तम् ॥
(द्रव्यगुणदीपिका)

अर्थ-नवनीत-माखन-शीतल, बलकारक, मधुर, खट्टा, वीर्य्यवर्द्धक, श्लेष्मकारक, पित्तवातनाशक तथा शोफरोगी, क्षयरोगी, क्षीण, अत्यन्त कृश, वृद्ध और बालकोंको हितकारी है ।

अपिच ।

नवनीतनवग्राहिहृद्यंचोल्बणदीपकम् । क्षयारुच्यर्दितप्ली-
हग्रहण्यर्शोविकारनुत ॥ चक्षुष्यशिशिरस्निग्धवृष्यजीवन-
बृंहणम् । क्षीणेद्रवहिमग्राहिरक्तपित्ताक्षिरोगनुत ॥ स्मृतिवा-
ग्वह्निशुक्रौज कफमेदोविवर्द्धनम् । वातपित्तकफोन्मादशो-
फालक्ष्मीज्वरापहम्॥सर्वदोषापहशीतमधुरंरसपाकयोः।हा स

अर्थ-नवीन नौनी-ग्राही, हृदयको हितकारी, अग्निको दीपन करनेवाला,

क्षयनाशक, अरुचिको हरनेवाला, लकुवा वायुको दूर करनेवाला, प्लीहाका नाश करनेवाला, संग्रहणीको हरनेवाला, बवासीरको नष्ट करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, स्निग्ध, वृष्य, प्राणरक्षक, पुष्टिकारक, क्षीणमनुष्यको हितकारी, शीतवीर्य्य, मलरोधक, रक्तपित्तनाशक, नेत्ररोगनिवारक, स्मरणशक्तिको बढानेवाला, वातवर्द्धक, वीर्य्यकारक, अग्निजनक, ओजवर्द्धक, कफकारक मेदजनक तथा वात, पित्त, कफ, उन्माद, सूजन, अलक्ष्मी, ज्वर और सर्वदोषनाशक है तथा पाक और रसमें मधुर है।

गव्यनवनीतगुणाः ।

नवनीतहितंगव्यंवृष्यंवर्णबलाग्निकृत् ।
सग्राहिवातपित्तासृक्क्षयार्शोर्दितकासजित् ।
तद्धितंबालकेवृद्धेविशेषादमृतंशिशोः ॥

अर्थ-गायका माखन-हितकारी, वीर्यवर्द्धक, वर्णकारक, बलकारक, अग्निप्रदीपक, ग्राही, तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, क्षय, बवासीर, लकवा और खाँसीको दूर करे है। बालक और वृद्धोंको हितकारी और विशेषकरके यह माखन बालकोंको अमृतके समान गुणकारक है।

माहिषनवनीतगुणाः ।

माहिषंनवनीतन्तुकषायमधुररसे ।
शीतंवृष्यप्रदंबल्यंग्राहिपित्तघ्नतुन्दरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-भैंसका माखन-कसेला, मधुररसान्वित, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, ग्राही, पित्तनाशक, और तुन्द (तोंद) को देता है।

अन्यच्च ।

नवनीतमहिष्यास्तुवातश्लेष्मकरंगुरु ।
दाहपित्तश्रमहरंमेदःशुक्रविवर्द्धनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-भैंसका नौनी-वातकफकारक, भारी, दाह, पित्त और श्रमनाशक, मेदजनक तथा शुक्रवर्द्धक है।

गव्यमाहिषयोरपिनवनीतनवोद्धृतम् ।
शस्यतेबालवृद्धस्यबलकृद्धातुवर्द्धनम् ॥

अर्थ-गाय अथवा भैंसका मक्खन-नवीनही श्रेष्ठ होता है, बालक और वृद्धोंको हितकारी, बलकारक और धातुवर्द्धक है।

छागीनवनीतगुणा ।

नवनीतमजायास्तुमधुरंतुवरंलघु । चक्षुष्यदीपनंबल्यहित-
कृत्क्षयकासनुत् ॥ गुल्मंप्रमेहंशूलञ्चकण्डूंनेत्ररुजज्वरम् ।
पाण्डुचश्वित्रकुष्ठंचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-बकरीका नौनी-मधुर, कसेला, नेत्रोंको हितकारी, दीपन, बलकारक, हितकारक तथा क्षय, खाँसी, गुल्म, प्रमेह शूल, कण्डु, नेत्ररोग, ज्वर, पाण्डुरोग और श्विनकुष्ठको नष्ट करे है ।

आविकनवनीतगुणा ।

नवनीतस्मृतचाव्या पाकेशीतंसरंलघु । योनिशूलेकफेवाते-
शोफेचार्शसिचोदरे ॥ जठराग्नौसदाशस्तंक्रमिज्वरकरपर-
म् । कण्डूंवांतिंचारुचिंचकरोतीतिबुधाजगुः ॥ (नि० र०)

अर्थ-भेडका माखन-पाकमें शीतल, कुछेक दस्तावर, हलका तथा योनिशूल, कफ, वात, सूजन, बवासीर, उदररोग और जठराग्निमें श्रेष्ठ है । कृमिकारक, ज्वर जनक तथा कण्डु, वमन और अरुचिको उत्पन्न करे है ।

हस्तिनीनवनीतगुणा ।

हस्तिन्यानवनीततुतुवरंदीपनंलघु ।
तिक्तमलस्तम्भकरंक्रिमिपित्तकफापहम् ॥ (नि र)

अर्थ-हथिनीका माखन-कसेला, दीपन, हलका, कडवा, मलस्तम्भक, तथा कृमि, पित्त और कफनाशक है ।

अश्वीनवनीतगुणा ।

अश्विन्यानवनीतन्तुतुवरंकटुकंमतम् ।
अचक्षुष्यस्मृतंचोष्णंकफवातविनाशनम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-घोडीका माखन-कसेला, चरपरा, नेत्रोंको अहितकारी, गरम, तथा कफ और वातविनाशक है ।

गर्दभीनवनीतगुणा ।

गर्दभ्यानवनीतन्तुबल्यंचतुवरंमतम् ।
उष्णंचदीपनंचैवकफवातविनाशयेत ॥
मूत्रदोषनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-गधीका माखन-बलकारक, कसेला, गरम, दीपन तथा कफ, वात और मूत्रदोषनाशक है।

उष्ट्रीनवनीतगुणाः ।

उष्ट्रीजंनवनीतन्तुपाकेशीतंलघुस्मृतम् ।
अग्निदीप्तिकरंचवव्रणघ्नक्रमिनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-ऊँटनीका मक्खन-पाकमें शीतल, हलका, अग्निदीपक, व्रणनाशक और कृमिनाशक है।

स्त्रीनवनीतगुणाः ।

स्त्रीजन्यनवनीततुपाकेलघुरुचिप्रदम् ।
चक्षुष्यदीपनंचैवसर्वरोगान्विषंहरेत ॥ (नि० र०)

अर्थ-स्त्रीका नवनीत-पाकमें लघु, रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, सर्वप्रकारके रोग और विषनाशक है।

दुग्धजातनवनीतगुणाः ।

दुग्धोत्थनवनीतन्तुचक्षुष्यरक्तपित्तनुत ।
वृष्यबल्यमतिस्निग्धमधुरंग्राहिशीतलम् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-दूधमेंसे निकालाहुवा नौनी-नेत्रोंको हितकारी, रक्तपित्तनाशक, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, अत्यन्त स्निग्ध, मधुर, मलरोधक और शीतल है।

नवीननवनीतगुणाः ।

नवनीतमिदनवमेवहितहिमशुक्रबलानलकांतिकरम ।
ग्रहणात्मकमर्दितपित्तमरुद्गुदजक्षतजक्षयकासहरम ॥

अर्थ-नवीन अर्थात ताजा माखन-हितकारी, शीतल, शुक्रजनक, बलकारक, अग्निप्रदीपक, कान्तिकारक तथा संग्रहणी, लकुवा, पित्त, वात, गुल्मरोग, क्षतरोग, क्षयरोग और खाँसीको दूर करे है।

चिरंतनवनीतगुणाः ।

सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्दर्शः कुष्ठकारकम् ॥
श्लेष्मलंगुरुमेदस्यनवनीतंचिरंतनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पुराना नौनी-खारी, चरपरा, खट्टा, वमनकारक, बवासीरको उत्पन्न करनेवाला, कुष्ठकारक, कफकारी, भारी और मेदको करे है।

इति श्रीशा० निघण्टुभूषणे नवनीतवर्गः समाप्तः ॥ १६ ॥

अथ घृतवर्गः ।



घृतमाज्यहवि सर्पि पुरोडाश्नवनीतकम् ।
पवित्रवह्निभोग्यचतेजसचाभिवारकम् ॥

अर्थ–घृत, आज्य, हवि, सर्पि, पुरोडाश्, नवनीतक पवित्र, वह्निभोग्य, तैजस, अभिवारक (आज, तोयद, पीथ, अमृत, अडिगार, होम्य, आयु, नवनीतज, भोजनार्ह जीवन ।

संस्कृतभाषामें	घृत ।
हिन्दीभाषामें	घि, घृत, घी ।
बंगभाषामें	घि, घृत ।
मराठीभाषामें	तूप ।
गुजरातीभाषामें	घी ।
तैलिङ्गीभाषामें	नेई ।
इंग्रेजीभाषामें	क्लेरीफाईड बटर । Clerifted Butter
लैटिन्भाषामें	बुटीरम्, डेप्युरेटम् । Butyrum Depuratum
फारसीभाषामें	रोघनेजर्द ।
अरबीभाषामें	समन्, दुहनुल्बकर ।

घृतगुणा ।

घृतन्तुसौम्यशीतवीर्य्यमृदुमधुरममृतमल्पाभिष्यन्दिस्नेह नमुदावर्त्तोन्मादापस्मारशूलज्वरानाहवातपित्तप्रशमनम- ग्निदीपनस्मृतिमतिमेधाकान्तिस्वरलावण्यसौकुमार्य्यौज- स्तेजोबलकरमायुष्यवृष्यमेध्यवय स्थापनगुरुचक्षुष्यश्ले- ष्माभिवर्द्धनपापालक्ष्मीप्रशमनविषहररक्षोघ्नञ्च । (सुश्रुत)

अर्थ–घी–सौम्य, शीतवीर्य्य, कोमल, मधुर, अमृतकी समान गुणकारी, अल्प अभिष्यन्दी, स्निग्ध् और उदावर्त्त, उन्माद, अपस्मार, शूल, ज्वर, आनाह, वात तथा पित्तको दूर करनेवाला अग्निसंदीपक तथा स्मरणशक्ति, मति, मेधा, कान्ति, स्वर, लावण्यता, सुकुमारता, ओज, तेज और बलको करनेवाला है, आयुको बढानेवाला, वीर्य्यको बढानेवाला, मेध्य, अवस्थाको

स्थापन करनेवाला, भारी, नेत्रोंको हितकारी, कफकारी, पाप और अलक्ष्मीको शान्ति करनेवाला, विषविनाशक, और राक्षसबाधाको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

घृतशीतरसेपाकेमधुरंजीवनमतम् । स्नेहेषुचोत्तमंवृष्यकान्तिकृद्धातुवर्द्धकम् ॥ कंठचस्वर्य्यंचेन्द्रियाणातृप्तिकृद्भेदकंमतम् । व्रण्यवय'स्थापकचभेदकचमृदुस्मृतम् ॥ चक्षुष्यकफकृत्प्रोक्तमग्निदीप्तिकरगुरु । बुद्धिमेधास्मृतिप्रज्ञातेजोजोबलपुष्टिकृत् ॥ सौकुमार्यस्यमेदस्यलावण्यस्यचवर्द्धकम् । श्लेष्मकृद्बालवृद्धानांहितकृद्रुचिदमतम् । स्निग्धरसायनचैवक्षतक्षीणेहितमतम् ॥ विसर्पचाग्निदग्धचशस्त्रक्षीणेहितमतम् ॥ अजीर्णोन्मादशूलानि क्षुदावर्तंक्षयतथा । आनाहरक्तपित्तचवातपित्तव्रणतथा ॥ रक्तदोपक्षतदाहयोनिनेत्रश्रुतीरुजम । दद्रुशिरोरुजशोथत्रिदोपचैवनाशयेत् ॥ निरामवातज्वरिणाहितंचामेविपोपमम् । (नि० र०)

अर्थ-घी-रसमें शीतल, पाकमें मधुर, प्राणरक्षक, स्नेहोंमें उत्तम, वृष्य, कान्तिकारक, धातुवर्द्धक, कण्ठको हितकारी, स्वरको शुद्ध करनेवाला, इन्द्रियोंकी तृप्ति करनेवाला, भेदक, घावको भरनेवाला, अवस्थास्थापक, मृदु, नेत्रोंको हितकारी, कफकारक, अग्निप्रदीपक, भारी तथा बुद्धि, मेधा, स्मरणशक्ति, प्रज्ञा, तेज, ओज, बल और पुष्टि करनेवाला तथा सुकुमारता, मेद, लावण्यता और श्लेष्मको बढानेवाला है और बालक तथा वृद्धोंको हितकारी, रुचिकारी, स्निग्ध, रसायन, क्षतक्षय, विसर्प, अग्निदग्धव्रण, शस्त्रक्षत और क्षीणतामें हितकारी है । तथा अजीर्ण, उन्माद, शूल, उदावर्त, क्षय, आनाहवात, रक्तपित्त, वातपित्त, व्रण, रुधिरविकार, क्षत, दाह, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, दाद, शिरोरोग, सूजन और त्रिदोषको दूर करे है । तथा निराम वातज्वरवाले मनुष्यको हितकारी और आमज्वरमें विषकी समान दोषकारी है ।

अन्यच्च ।

ओजस्तेजोभिवृद्धिंजनयति सुखदकान्तिकृत्सम्यगुक्त पापालक्ष्मीश्रमघ्न श्वसनकसनहाऽजीर्णजातज्वरघ्नम् । शूलोदावर्त्तरोगग्रहणिमदरुज नाशयत्याशुपीडा पित्तघ्नंवातनाशि स्वरकरमगदक्षुद्भ्रमेचैवसेव्यम् ॥ चक्षुष्यवृष्यमायु.स्मृतिधृतिकरणराजयक्ष्माविनाश रूक्षेक्षीणेचपथ्य वलिपलितहरसामदोपप्रकोपे । भूतोन्मादप्रमत्तेवहुतिमिरकरेकृच्छ्रपस्माररोगेसर्वेपांसर्वदैवप्रथितगुणगणसाधुपथ्यघृतंस्यात्।

अर्थ–घी–ओज और तेजको वढानेवाला, सुखको उत्पन्न करनेवाला, कान्तिजनक, पाप, अलक्ष्मी, श्रम, श्वास, खाँसी, अजीर्णसे उत्पन्न हुवा ज्वर, शूल, उदावर्त्तरोग, सग्रहणी और मदरोगका नाश करे है, पीडानाशक पित्तनिवारक, वातविनाशक, स्वरको सुदर करनेवाला, तथा क्षुधा और भ्रम रोगमें सेवन करना चाहिये । नेत्रोंको हितकारी, वीर्यको वढानेवाला तथा आयु, स्मरणशक्ति और धारणाशक्तिको करनेवाला है । राजयक्ष्मा रोगका नाशकरनेवाला, रूक्ष और क्षीणमनुष्यको हितकारी, वलीपलितविनाशक तथा आमदोप, भूतोन्माद, प्रमत्त, वहुतिमिर, मूत्रकृच्छ्र और अपस्मार रोगमें सव मनुष्योंको सर्वकालम पथ्यहै ।

गव्यघृतगुणा ।

धीकान्तिस्मृतिदायकवलकरमेधाप्रदपुष्टिकृद्वातश्लेष्महृच्छ्रमोपशमनपित्तापहहृद्धितम् । वह्नेर्वृद्धिकरविपाकमधुरवृष्य वपु.स्थैर्य्यद गव्यंहव्यतमघृतवहुगुण भोग्यभवेद्भाग्यतः ॥ (रा०नि०)

अर्थ–गायका घी बुद्धि, कान्ति और स्मरणशक्तिदायक, वलकारक, मेधाजनक, पुष्टिकारक, वातश्लेष्महारक, श्रमनिवारक, पित्तनाशक, हृदयको हितकारी, अग्निमदीपक, पचनेमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, शरीरको स्थिरतादायक, हव्यतम, वहुगुणयुक्त और यह भाग्यसेही प्राप्तहोता है ।

अन्यच्च ।

सर्पिर्गवांचाप्यमृतविपघ्नचाक्षुष्यमारोग्यकरचवृष्यम् ।

रसायनंचेदमतीवमेध्यंस्नेहोत्तमागांविबुधाःस्तुवन्ति ॥

अर्थ-गायका घी-अमृतकी समान गुणकारी, विषविनाशक, नेत्रोंको आरोग्य करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, मेधाजनक और सर्व स्नेहोंमें उत्तम है ।

माहिषघृतगुणाः ।

सर्पिर्माहिषमुत्तमधृतिकरंसौख्यप्रदंकान्तिकृद्वातश्लेष्मनिवर्हणंबलकरंवर्णप्रदानेक्षमम् । दुर्नामग्रहणीविकारशमनंमन्दानलोद्दीपनं चक्षुष्यंनवगव्यतःपरमिदंहृद्यंमनोहारि च ॥ (रा०नि०)

अर्थ-भैंसका घी-उत्तम, धृतिकारक, सुखकारक, कान्तिजनक, वातश्लेष्मनिवारक, बलकारक, वर्णप्रदायक, बवासीर और संग्रहणीको हरनेवाला, मन्दाग्निको दीपन करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी नवीनगायके घीसे परम हृदयको हितकारी और मनोहारी है ।

अन्यच्च ।

माहिषंतुघृतंस्वादुपित्तरक्तानिलापहम् ।
शीतलंश्लेष्मलंवृष्यंगुरुस्वादुविपच्यते ॥

अर्थ-भैंसका घी-स्वादिष्ठ, रक्तपित्तनाशक, वातविनाशक, शीतल, कफकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी और स्वादुपाकी है ।

छागीघृतगुणाः ।

आजमाज्यंकरोत्यग्निंचक्षुष्यंबलवर्द्धनम् ।
श्वासेकासेक्षयेचापिहितंपाकेभवेत्कटु ॥
कफशोगजयक्ष्माणांनाशनंपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-बकरीका घी-अग्निजनक, नेत्रोंको हितकारी, बलवर्द्धक, श्वास, खाँसी और क्षय रोगमें हितकारी, पाकमें कटु तथा कफ, और राजयक्ष्मा रोगको दूर करे है ।

मेषीघृतगुणाः ।

पाकेलघ्वाविकंसर्पिः सर्वरोगनिपापहम् ।
वृद्धिकृत्तिचाश्मघ्नंनाशमर्गोरोगापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-भेडका घी-पाकमे लघु, सर्वरोगविनाशक, विषनाशक, हड्डियोंको चढानेवाला, तथा पथरी और शर्कराको दूर करे है।

अन्यच्च ।

पाकेलघ्वाविकसर्पिर्नवंपित्तप्रकोपनम् ।
योनिदोषेकफेवातेशोफेकम्पेचतद्धितम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-भेडका घी-लघुपाकी, पित्तप्रकोपक, तथा योनिदोष, कफ, वात, सूजन और कम्पमें हितकारी है।

हस्तिनीघृतगुणा ।

हस्तिन्यास्तुघृततिक्तलघुवैतुवरमतम् ।
अग्निदीप्तिकरप्रोक्तकुष्ठक्रिमिविनाशनम् ॥
मलमूत्रस्तम्भकरंकफपित्तविनाशनम् ।
विषरक्तविकारंचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हथिनीका घी-कडवा, हलका, कषेला, अग्निप्रदीपक, कुष्ठ और कृमिविनाशक, मलमूत्रस्तम्भक, कफ पित्तनाशक, विष और रुधिरके विकारोंको हरे है।

अश्वीघृतगुणा ।

वृद्धिंकरोतिदेहाग्नेर्लघुपाकेविषापहम् ।
तर्पणनेत्ररोगघ्नदाहनुद्वडवाघृतम् ॥

अर्थ-घोडीका घी-देह और अग्निको बढानेवाला, लघुपाकी, विषविनाशक, तृप्तिकारक, नेत्ररोगनिवारक और दाहहारक है। -

अन्यच्च ।

अश्वीघृततुमधुरकिञ्चिच्चाग्निप्रदीपकम् ।
तुवरकटुकचैवमलमूत्रावरोधकम् ॥
किञ्चिच्चवातलचोष्णंपाककालेलघुस्मृतम् ।
गुरुचकफमूर्च्छानांनाशनंपरममतम् ।

अर्थ-घोडीका घी-मधुर, किञ्चित अग्निप्रदीपक, कषेला, चरपरा, मलमूत्ररोधक, किञ्चित् वातकारक, गरम, लघुपाकी, भारी तथा कफ और मूर्च्छाको हरनेवाला है।

गर्दभीघृतगुणाः ।

गर्दभ्यास्तुघृतंबल्यंबुद्धिदंवामकंमतम् ।
अग्निदीप्तिकरंचोष्णवीर्य्यंपाकेलघुस्मृतम् ॥
कषायग्लानिदंप्रोक्तमूत्रदोषकफापहम् ॥

अर्थ-गधीका घी-बलकारक, बुद्धिदायक, वमनकारक, अग्निप्रदीपक, उष्णवीर्य, लघुपाकी कषेला, ग्लानिको देनेवाला तथा मूत्रविकार और कफनाशक है ।

एकशफपशुघृतगुणाः ।

मधुरंरक्तपित्तघ्नंलघुपाकेचदीपनम् ।
सर्वमेकशफसर्पिः कषायंकफनाशनम् ॥

अर्थ-एक खुरवाले सर्वपशुओंका घी-मधुर, रक्तपित्तनाशक, लघुपाकी-दीपन, कषेला और कफनाशक है ।

उष्ट्रीघृतगुणाः ।

औष्ट्रघृतंचाग्निदीप्तिकारकंचपटुस्मृतम् ।पाककालेचकटुकंविषार्शःकृमिनाशनम् ॥शोथवातकफंचैवकोष्ठशीर्षंतथोदरम् ।कुष्ठगुल्मोन्मादमोहमूर्च्छापस्मारजूर्तिदम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-उटनीका घी-अग्निप्रदीपक, नमकीन, पचनेमें चरपरा, विषार्श नाशक, बवासीरको हरनेवाला, कृमिनाशक तथा सूजन, वात, कफ, कोष्ठ शीर्ष, उदररोग, कुष्ठ, गुल्म, उन्माद, मोह, मूछा, अपस्मार और ज्वरको दूर करे है ।

स्त्रीघृतगुणाः ।

कफेऽनिलेयोनिदोषेरोगेष्वन्येषुतद्धितम् ।
चक्षुष्यमाहुः स्त्रीणांचसर्पिः स्यादमृतोपमम् ॥ (शा०नि०)

अर्थ-स्त्रीका घी-कफ, वात, योनिदोष और अन्य रोगोंमें हितकारी है । नेत्रोंको हितकारी और अमृतके समान गुणकारी है ।

अन्यच्च ।

स्त्रीघृतंकथितंनेत्र्यंपाकेलघ्वग्निदीपनम् ।
वातपित्तकफमेदविषघ्नंविनिनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-स्त्रीका घी-रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, लघुपाकी, अग्निमदीपक तथा वात, पित्त, कफ, प्रमेह और विषविनाशकहै ।

उष्ट्रीणांचापिनारीणांगर्दभीनांपयांसिच ।
घृतेकार्य्येप्रयोज्यानिघृतयेषांनविद्यते ॥

अर्थ-जहा-ऊटनी, स्त्री और गधीका घृत न मिलताहो तहा उनका दूधही प्रयोगमें लेना चाहिये ।

हैयगवीनघृतगुणा ।

हैयगवीनचक्षुष्यरुच्यंचाग्निप्रदीपकम् ।
वल्यवृष्यधातुकरविशेषाज्ज्वरनाशकम् ॥

अर्थ-हैयगवीन-नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, वलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, धातुकारक और विशेषकरके ज्वरनाशक है ।

दुग्धोद्भवघृतगुणा ।

घृतन्दुग्धभवग्राहिशीतलनेत्ररोगनुत् ।
निहन्तिपित्तदाहास्रमदमूर्छाभ्रमानिलान् ॥

अर्थ-दूधमेंसे निकाला हुवा घी-मलरोधक, शीतल, नेत्ररोगनाशक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वायुको दूर करे है ।

शतधौतघृतगुणा ।

शतधौतघृतप्रोक्तदाहमोहज्वरापहम् ।

अर्थ-सौवार धुलाहुवा घी-दाह, मोह और ज्वरनाशक है ।

नूतनघृतगुणा ।

नूतनतुघृततृप्तिकारकदुर्वलेहितम् ।
भोजनेस्वादुदप्रोक्तनेत्र्यपाण्डुरुजापहम् ॥

अर्थ-नवीन घी-तृप्तिकारक, दुर्वल मनुष्यको हितकारी, भोजनमें स्वाद्दायक, नेत्रोंको हितकारी, और पाण्डुरोगनाशक है ।

पुराणघृतम् ।

सर्पिः पुराणतिमिरप्रतिश्यायामकासजित् । मूर्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ उग्रगन्धंपुराणस्याद्दशवर्षस्थितघृतम् । लाक्षारसनिभशीतप्रपुराणमत परम् ॥ यथायथाभवेज्जीर्णगुणवत्स्यात्तथापरम् । (रा०च०)

अर्थ-पुराना घी-तिमिररोग, प्रतिश्याय, आम और खाँसीको दूर करै है तथा मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, ग्रहकी पीडा, और मृगीरोगनाशक है। दश वर्षका रखा हुवा और उग्र गन्धवाला तथा लाखके रंगकी समान लाल रंगका ऐसेही घीको पुराना घृत कहते हैं। दश वर्षसे अधिक रखे हुवे घीको प्रपुराना घृत कहते हैं। घी जितना २ अधिक पुराना होता है उतना २ ही अधिक गुणवान् जानना।

मतान्तर।

वर्षादूर्ध्वंभवेदाज्यपुराणतत्रिदोषनुत्।मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम्॥यथायथाऽखिलसर्पिःपुराणमधिकभवेत्। तथातथागुणैः स्वैःस्वैरधिकतदुदाहृतम्॥(भा प्र)

अर्थ-भावमिश्रने एक वर्ष बीत जानेपर घीको पुराना कहा है। वह पुराना घी-त्रिदोषनाशक, तथा मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, अपस्मार और तिमिररोगनाशक है। घी जितने २ अधिक पुराने होते जाते हैं वैसे २ ही जो जो गुण जिस २ घीमें कहे हैं उन २ गुणोंको अधिक करते हैं।

नूतनघृतविषय।

योजयेन्नवमेवाज्यंभोजनेतर्पणेश्रमे।
बलक्षयेपाण्डुरोगेकामलानेत्ररोगयोः॥

अर्थ-भोजन, तर्पण, श्रम, बलक्षय, पाण्डुरोग, कामला और नेत्ररोगमें नवीनही घृत देना चाहिये।

ज्वरेविरन्धेचविषूचिकायामरोचकेवाशमितेतथाग्नौ।पानात्ययेनापिमदात्ययेनाशस्तनसर्पिर्बहुमन्यतेसुधीः॥ (हा० सं०)

अर्थ-ज्वर, विबन्ध, विषूचिका, अरोचक, मंदाग्नि, पानात्यय और मदात्ययरोगमें बहुत घी नहीं देना चाहिये।

अन्यच्च।

शतवर्षमहत्स्वावास्थितंकौम्भमितिस्मृतम्।
एकादशशतायचमहाघृतमितिस्मृतम्॥

अर्थ-सौ वर्षके पुराने अथवा इससे अधिक वर्षके पुराने घृतको कौम्भ कहते हैं और इसके उपरान्तके घृतको महाघृत कहते हैं।

इति श्रीघृतवर्गनिघण्टुभूषणे घृतवर्गः समाप्तः॥ १०॥

अथ मूत्रवर्गः।

स्रवणमेहनमूत्रप्रस्रावप्रस्रवतथा।

अर्थ-स्रवण, मेहन, मूत्र, प्रस्राव, प्रस्रव (गुह्यनिष्यन्द, स्रव)।

संस्कृतभाषामें	मूत्र।
हिन्दीभाषामें	मूत, पेशाब।
बंगभाषामें	मुत, चोना, प्रस्राब।
मराठीभाषामें	मूत, मूत्र।
गुजरातीभाषामें	मुतर।
कर्णाटकीभाषामें	मूत्र, आकल्गोत।
तैलङ्गीभाषामें	उच्चा।
इंग्रेजीभाषामें	युरीन।
लैटिन्भाषामें	युरिना।

मूत्रंगोजाविमाहिष्यगजाश्वोष्ट्रखरोद्भवम्।
मूत्रमानुषजञ्चान्यत्समासेनगुणाञ्छृणु॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि-गाय, बकरी भेड, भैंस, हाथी, घोडा, ऊंट और मनुष्य इनके मूत्रके गुण संक्षेपसे कहताहू, तू सुन।

गोमूत्रगुणाः।

तीक्ष्णचोष्णक्षारमेवकपायगौल्यमेध्यश्लेष्मवातनिहन्ति। भेद्यारक्तपित्तशांतिकरोतिगुल्मानाहोन्माददोषापहच॥ कण्डूकिलासमलशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मामवातगुदमारुतमूत्ररोधान्। कासंसकुष्ठजठरकृमिकोपजालं गोमूत्रमेकमपिपीतमहोनिहन्ति॥

अर्थ-गोमूत्र-गायका पेशाब-तीक्ष्ण, गरम, खारी, कषेला, गौल्य, मेधाजनक, कफवातनाशक, भेदक, रक्तपित्तको शान्त करनेवाला, तथा गुल्म, आनाह और उन्माददोषनाशक है। तथा किलास, मल, शूल, मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, आमवात, गुदरोग, मूत्ररोध, खाँसी, कोढ, उदररोग, और कृमिके समूहको नाशकरते है।

अ॰पद्य।

गवांमूत्रकषायंस्यात्कटुतिक्तलघुस्मृतम्। क्षारंचोष्णंचतीक्ष्णंचपाचनंचाग्निदीपनम्॥ भेदकंपित्तलंमेध्यंकिञ्चिच्चमधुरंसरम्। लेखनंबुद्धिदंप्रोक्तंकफवातविनाशनम्॥ कुष्ठंगुल्मंचोदरंचपाण्डुरोगंकिलासकम्। शूलंचार्शश्चकण्डूंचश्वासंचामंज्वरंतथा॥ आनाहवातकासंचमलस्तम्भंचशोथकम्। मुखाक्षिरोगंस्त्रीरोगंकामिन्याश्चातिसारकम्॥ मूत्ररोधंनाशयतिह्येतच्चैवगुणाधिकम्। (र॰ नि॰)

अर्थ-गायका मूत्र-कषेला, चरपरा, कड़वा हलका, खारी, गरम, तीक्ष्ण, पाचन, अग्निदीपक, भेदक, पित्तकारक, मेधाजनक, किंचित् मधुर, सारक, लेखन, बुद्धिदायक तथा कफ वात, कोढ़, गुल्म, उदररोग, पाण्डुरोग, किलास, शूल, बवासीर खुजली, श्वास, आम, ज्वर, आनाहवात खांसी, मलस्तम्भ, सूजन, मुखरोग, नेत्ररोग, स्त्रियोंके रोग, [illegible] अतिसार और मूत्ररोधको दूर करै। यह गुणोंमें अधिक है।

छागीमूत्रगुणाः।

आजंमूत्रंतीक्ष्णमुष्णंकषायंयोऽन्यंपानेशूलगुल्मार्त्तिनाशम्।
कासेश्वासेकामलापाण्डुरोगेह्यर्शोरोगेश्रेष्ठमेतद्वदन्ति(हा.स.)

अर्थ-बकरीका मूत्र-तीक्ष्ण, गरम, कषेला, तथा शूल, गुल्म, खांसी, श्वास, कामला, पाण्डुरोग, और बवासीरको हरनेवाला है।

आविकमूत्रगुणाः।

सक्षारंकटुकंतीक्ष्णंमूत्रंवातघ्नमाविकम्।
दुर्नामोदरशूलघ्नंकुष्ठमेहविशोधनम्॥

अर्थ-भेड़का मूत्र-खारयुक्त, चरपरा, तीक्ष्ण, वातनाशक तथा बवासीर, उदररोग, शूल, कुष्ठ और प्रमेहको दूर करता है।

माहिषमूत्रगुणाः।

क्षारंसतिक्तंकटुकंकषायंप्रभेदिवातस्यशमंकरोति।
पित्तप्रकोपंकुरुतेनराणांकुष्ठार्शपाण्डूदरशूलनाशनम्॥

अर्थ-भैंसका मूत्र-खारी, कड़वा, चरपरा, कषेला, भेदक, वातको

शान्तिकरनेवाला, पित्तको सदैव कुपित करनेवाला, तथा कुष्ठ, ववासीर, पाण्डुरोग, उदररोग और शूलनाशक है ।

गजमूत्रगुणाः ।

सतिक्तलवणंभेदिवातघ्नकफकोपनम् ।
क्षारमण्डलकुष्ठानांनाशनगजमूत्रकम् ॥

अर्थ–हाथीका मूत–कडवा, नमकीन, वातनाशक, कफको कुपितकरनेवाला, खारी और मण्डलकुष्ठको नष्टकरे है ।

अश्वीमूत्रगुणाः ।

छर्दिकासकफहरंकृमिकुष्ठविनाशनम् ।
दीपनकटुतीक्ष्णोष्णवातश्लेष्मविकारनुत् ॥ (हा०स०)

अर्थ–घोडीका मूत–वमन, खाँसी, कफ, कृमि, कोढ, वात और कफनाशक है, दीपन, चरपरा, तीक्ष्ण और गरम है ॥

गर्दभीमूत्रगुणाः ।

खरमूत्रकटूष्णचक्षारतीक्ष्णकफापहम् ।
महावातापहभूतकम्पोन्मादहरपरम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–गधीकामूत्र–चरपरा, गरम, खारी, तीक्ष्ण, कफनाशक तथा महावात, भूत, कम्प और उन्मादको दूर करे है ।

औष्ट्रमूत्रगुणाः ।

औष्ट्रकफहररूक्षकृमिदद्रुविनाशनम् ।
श्रेष्ठकुष्ठोदरोन्मादशोषार्श कृमिवातनुत् ॥

अर्थ–ऊटनीका मूत–कफनाशक, रूखा, कृमि और दद्रुनिवारक है, श्रेष्ठ तथा कुष्ठ, उन्माद, शोष, बवासीर, कृमि और वातनाशक है ।

मानुषमूत्रगुणाः ।

मानुषक्षारकटुकमधुरलघुचोच्यते । चक्षूरोगहरबल्यदीपनकफनाशनम् ॥ असूतायाघनमूत्रंप्रसूतायाद्रवलघु । नकिंगुणविशेषःस्यात्समतापाकवीर्य्ययोः ॥

अर्थ–स्त्रीका मूत–खारी, चरपरा, मधुर हलका, नेत्ररोगनाशक, बलकारक, दीपन और कफनाशकहै । अप्रसूतास्त्रीका मूत्र गाढा, होताहै, प्रसूता स्त्रीका मूत–पतला, हलका और अप्रसूताके, मूतमे कुछ विशेष गुणवाला नहीं है और पाक तथा वीर्य्यमे भी समानहीं है ।

गोजाविमहिषाणातुस्त्रीणामूत्रंप्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानांपुंसामूत्रंहितमतम् ॥

अर्थ-गौ, बकरी, भेड, भैंस इनोंमें स्त्रियोंका मूत्र, उत्तम होता है और गधा, ऊंट हाथी, मनुष्य इनोंमें पुरुषका मूत्र उत्तम होता है।

मूत्रविशेषगुणाः ।

गोरभेयकेमूत्रन्तुघनसान्द्रप्रशस्यते । तच्चवृषणहीनाना किञ्चिल्लघुतरस्मृतम् ॥ वृषमूत्रञ्चशोफघ्नंक्रिमिदोषविनाशनम् । कामलाग्रहणीपाण्डुनाशनञ्चाग्निदीपनम् ॥अजा गविगतमूत्रपानेशस्तभिषग्वर । आविकमाहिषनाश्वंतैलपाकेविधीयते ॥ गजमूत्रप्रलेपश्चकण्डूदद्रुविसर्पनुत । काम्भनरमूत्रनातेलेनम्यंविधायकम् । ओष्ट्रगोजाविनांच गजहयमहिषीमूत्रवर्गखरोत्थ तिक्तंतीक्ष्णलघूष्णमलवणमुग्रसपित्तलभेदिरूक्षम ॥ हृद्यंरुच्यक्रिमिहृतवदजननकुष्ठमेदोविनाश गुल्मानाहार्शशूलानिलकफविषजिच्छोफपाण्डूदरघ्नम् ॥ सर्वेष्वपिचमूत्रेषुगोमूत्रगुणतोधिकम । अतोविशेषात्कथनेमूत्रगोमूत्रमुच्यते । प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम । शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत ॥ मानुषविषजिन्मूत्रंविषन्यामहरंचतत । नस्यंचाष्ट्रंचपानेतुगवांचाव्या प्रशस्तकम ॥ तैलयोगेगर्दभस्यवत्स्त्यश्वमहिषन्तथा । दद्रुकण्डूविसर्पाणालेपनेहस्तिमूत्रकम् ॥

अर्थ-पशुका मूत्र-गाढा, सान्द्र और श्रेष्ठ होता है और यदि पशु वृषणहीन अर्थात् बधियाका मूत्र-कुछेक हलका होता है। बैलका मूत्र-सूजनको, कृमिरोगनाशक तथा कामला, ग्रहणी इनको दूर करता है और अग्निदीपन है। बकरीका मूत्र और भेडका मूत्र पीनेमें उत्तम है, भेडका मूत्र, भैंसका मूत्र और घोडेका मूत्र तैलपाकमें लिखा है। हाथीके मूत्रका

लेप कण्डू, दद्रु और विसर्परोगनाशक है । ऊटका मूत और गधेका मूत-तेलमें और नस्यमें उत्तम है, ऊट, गाय, बकरी, भेड, हाथी, घोडा भैंस और गधेका मूत्र यह सर्व मूत्रवर्ग कडवा, तीक्ष्ण, हलका, गरम लवणरसान्वित, पित्तकारक, भेदक, रूखा, हृदयको हितकारी रुचिजनक कृमिनाशक, क्षुधाको बढानेवाला, कुष्ठ और मेदरोगनाशक तथा गुल्म आनाह, बवासीर, शूल, वात, कफ, विष, सूजन, पाण्डु और उदररोगको दूर करे है । सर्वप्रकारके मूत्रामें गोमूत्र गुणोंमें अधिकहै । अतएव जहा कहीं मूत्रशब्द आवे वहापर गोमूत्र समझना चाहिये । गोमूत्र-प्लीहा, उदररोग, श्वास खाँसी, सूजन, मलरोध, शूल, गुल्म, अफारा, कामला और पाण्डुरोगको दूर करे है । मनुष्यका मूत्र-विषविनाशक और विषूचिका रोगको नष्ट करे है, नासमें ऊटका मूत्र उत्तम है, पानमें गोमूत्र श्रेष्ठ है । तैलयोगमें गर्दभका मूत्र, वस्तिकर्म्ममें, घोडे और भैसका तथा दाद, खुजली और विसर्पके लेपमें हाथीका मूत्र लेना चाहिये ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे मूत्रवर्ग समाप्त ॥ १८ ॥

अथ तैलवर्गः ।

तिलादिस्निग्धवस्तूनास्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।

अर्थ-तिलादिक स्निग्धवस्तुओंके स्नेहको तैल कहतेहैं (अभ्यञ्जन, म्रक्षण, तिलज, स्नेह) ।

संस्कृतभाषामें	तैल ।
हिन्दीभाषामें	तेल ।
बंगभाषामें	तेल, तैल ।
मराठीभाषामें	तेल ।
गुजरातीभाषामें	तेल ।
कर्णाटकीभाषामें	तैल ।
तैलिङ्गीभाषामें	नुने ।
इग्रेजीभाषामें	आइल । Oil
लैटिनभाषामें	ऑईल्यम् । Oleum
फारसीभाषामें	रोगन, रोगनेकुंजद ।
अरबीभाषामें	दोहनुस्सिमसिम ।

तैलंवातहरंसर्वंविशेषात्तिलसम्भवम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके तेल वातनाशक हैं और विशेष करके तिलका तेल वातको हरे है ।

तिलतैलगुणाः ।

कषायानुरसंस्वादुसूक्ष्ममुष्णंव्यवायिच । -
पित्तकृद्वातशमनंश्लेष्मरोगादिवर्द्धनम् ॥
अल्परुचिकरंमेध्यंकण्डूकुष्ठविकारनुत् । वृष्यंश्रमापहंज्ञेयं तिलतैलंविदुर्बुधाः ॥ छिन्नभिन्नेच्युतेघृष्टेभग्नाग्निदाहकेऽपि च । वाताभिष्यन्दिस्फुटनेचाभ्यङ्गे तिलतैलकम् ॥व्यालश्व-सर्पभेकानांविषेऽभ्यङ्गावगाहने । पानेवस्तौनस्यानेचतिलतै-लंविधीयते ॥ तिलतैलंनिधेयंस्यात्सर्वरोगनिवारणे । (हा० सं०)

अर्थ-तिलका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ, सूक्ष्म गरम, व्यवायि, पित्तकारक, वातनिवारक, कफादिरोगवर्द्धक, अल्परुचिकारक, मेधाजनक, खुजलीको हरनेवाला, कोढको दूरकरनेवाला, वीर्यवर्द्धक, श्रमनाशक, छिन्न अर्थात् शस्त्र आदिके लगनेसे कटे हुएमें पंछी आदिके कटे हुएमें, गिरजानेसे जो चोट लगजाती है, उसमें घिसनेमें, पत्थर आदिके रगडनेसे छिलजानेमें, हाड आदिके टूटनेमें, अग्निसे जलजानेमें, वाताभिष्यन्दमें, फूटनेमें, भेडिया, कुत्ता, मेंढक और सर्पके विषमें, मालिस, स्नान, वस्तिकर्म और नस्यरोगमें तिलका तेल हितकारी है और सर्वरोगोंको दूर करनेके लिये तिलका तेल देना चाहिये ।

तिलतैलमलंकरोतिकेशान्मधुरंतिक्तकषायमुष्णतीक्ष्णम् ।
बलकृत्कफवातजंतुवर्गंव्रणकण्डूनिहरंचकान्तिदायि ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-तिलका तेल-केशोंको उत्तम करनेवाला, मधुर, कडवा, कषेला, गरम, तीक्ष्ण, बलकारक तथा कफ, वात, कृमि, खुजली, घाव, वण इनको दूरकरनेवाला और कान्तिको देनेवाला है ।

तिलतैलंगुरुस्थैर्यंबलवर्णकरंसरम् । वृष्यंविकाशिविशदं मधुरंरसपाकयोः ॥ सूक्ष्मकषायानुरसंतिक्तंवातकफापहम् ।

वीर्य्योष्णतुहिमंस्पर्शेबृंहणंरक्तपित्तकृत् ॥लेखनबद्धविण्मूत्रगर्भाशयविशोधनम् । दीपनंबुद्धिदमेध्यव्यवायित्रणमेहनुत् । श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनंलघुताकरम् ॥त्वच्यकेश्यञ्चचक्षुष्यमभ्यङ्गेभोजनेऽन्यथा । छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते ॥ भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धाविश्लिष्टदारिते । तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते॥वस्तौपानेन्नसंस्कारेनस्येकर्णाक्षिपूरणे । सेकाभ्यङ्गावगाहेपुतिलतैलं प्रशस्यते ॥ (भावमिश्र)

अर्थ-तिलका तेल-भारी, स्थिरताकारक, बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, सारक, वृष्य, विकाशी, विशद, रस और पाकमें, मधुर सूक्ष्म, कषैला, कडवा, वातकफनाशक, उष्णवीर्य्य, स्पर्शमें शीतल, पुष्टिकारक, रक्तपित्तकारक, लेखन, मलमूत्रशोधक, गर्भाशयविशोधक, दीपन, बुद्धिदायक, मेधाजनक, व्यवायि, व्रण और प्रमेहनाशक, कान, योनि और शिरके शूलको दूर करनेवाला,लघुताकारक,त्वचाको हितकारी, केशोंको सुंदर करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी यह गुण तेलके मलनेके हैं । खानेमें यह गुण नहीं हैं और गुण इनसे उलटे हैं । छिन्न भिन्न, गिरजाना, पिसजाना, मसलजाना, घाव, पिचजाना, टूटजाना, फटजाना, विधजाना, आगसे जलजाना, स्थानसे उतरजाना, चिरजाना, चोट लगनी, टेढा होजाना, मृग और व्याघ्रादिसे घायल होजानेपर, वस्तिकर्म्म, पान, अन्नसंस्कार (तेलसे छौंकना) नासकर्म्म, कान और आखोंमे भरना, सेक, मर्दन और अवगाहनमें तिलका तेल हितकारी है ।

नास्तितैलात्परंकिञ्चिदौषधमारुतापहम् ।
तैलसंयोगसंस्कारात्सर्वरोगापहंस्मृतम् ॥

अर्थ-तेलकी समान और कोई दूसरी वातनाशक, औषधि नहीं है और, द्रव्योंके संयोगसे संस्कृत (पका) तेल सर्वरोगनाशक है ।

घृताच्छ्रेष्ठतमंतैलमर्दनेनचभोजने ।
घृतमब्दात्परंपक्वहीनवीर्य्यंप्रजायते ॥
तैलपक्वमपक्वंवाचिरस्थायिगुणाधिकम् ।

अर्थ-तेल-घृतसे गुणोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ है। यह मर्दन करनेमें है, भोजन करनेमें नहीं है। घी पकाकर बीतजानेपर पका हुवा हीनवीर्य होजाता है परन्तु तेल तो पकाहुवा या विनापका जितना जितना ज्यादे पुराना होगा उतनाही अधिकगुणवाला होता है।

नपित्तरोगेनचशोणितेचपथ्येमहावातविकारसंघे।
तिलोद्भवतैलमुदाहरतिवाताश्रितान्हन्तिसमस्तदोषान् ॥

अर्थ-तिलोंका तेल-पित्तरोग और रक्तरोगमें पथ्य नहीं है महावातरोगके समूहमें पथ्य है और सर्वप्रकारके वातरोगोंका नाशकरै है।

सार्षपतैलगुणाः।

कटूष्णंसार्षपंतैलंरक्तपित्तप्रदूषणम्।
कफशुक्रानिलहरंकण्डूकृमिविनाशनम् ॥ (राज०नि०)

अर्थ-सरसोंका तेल-चरपरा गरम रक्तपित्तकारक तथा कफ, शुक्र, वात खुजली और कृमिनाशक है।

भा०प्र०।

दीपनंसार्षपंतैलंकटुपाकिंसरंलघु।
लेखनंस्पर्शवीर्य्योष्णंतीक्ष्णंपित्तास्रदूषकम् ॥
कफमेदोऽनिलाऽर्शोघ्नंशिरःकर्णामयापहम्।
कण्डूकोठकृमिश्वित्रकुष्ठदुष्टव्रणप्रणुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरसोंका तेल-दीपन पाकमें चरपरा सर लघु लेखन, स्पर्श और वीर्यमें उष्ण तीक्ष्ण, रक्तपित्तको प्रकोपित करनेवाला तथा कफ मेदरोग, वात बवासीर, शिररोग कर्णरोग खाज कोढ कृमि श्वित्रकुष्ठ, कुष्ठ और दुष्ट व्रणको नष्ट करनेवाला है।

अन्यच्च।

कटुतिक्तंतथाऽऽग्नेयंचोष्णंस्यात्कफवातनुत्।
कृमिकण्डूशोधनंस्यात्पित्तकृत्सार्षपंस्मृतम् ॥
कर्णरोगेशिरोरोगेनथावातामयेषुच।
कण्डूकुष्ठामयेचैवकफमेदोगदेषुच ॥

प्रशस्यसार्षपश्चैवरोगाणाञ्चविभावयेत्।
वस्तिकर्म्मणिनोशस्तंपित्तदाहकरंमहत् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-सरसोंका तेल-चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम कफवातनाशक कृमि और कण्डूनिवारक, पित्तजनक तथा कर्णरोग, कृमिरोग वातरोग, कण्डू, कुष्ठ, कफ और मेदरोगमें हितकारी है, वस्तिकर्म्ममें उत्तम नहीं है और पित्त दाहकारक है।

राजिकातैलगुणाः।

श्वेतायाश्चैवरक्तायाराजिकायास्तुतैलकम्।
केश्यचतिक्तकटुकमूत्रकृच्छ्रकरमतम् ॥
त्वग्दोषवातदोषचपूयचैवविनाशयेत्।
गुणास्त्वन्येसर्षपानांतैलतुल्याइतीरितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लाल वा काली राईका तेल-केशाको हितकारी, कडवा, चरपरा, मूत्रकृच्छ्रजनक तथा त्वचाके दोष, वातविकार और पूय (राध) को हरे है। शेष गुण ससाके तेलकी समान जानने।

तुवरीतैलगुणाः।

तीक्ष्णोष्णतुवरीतैललघुग्राहिकफास्रजित्।
वह्निकृद्विषहृत्कण्डूकुष्ठकोठकृमिप्रणुत् ॥
मेदोदोषापहचापिव्रणशोथहरपरम ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तोरीका तेल-तीक्ष्ण, गरम, हलका, मलरोधक, कफनाशक, रक्तविकारनिवारक, अग्निप्रदीपक, विषविनाशक तथा खुजली, कोढ, कोठ, कृमि, मेदोदोष, व्रण और सूजनको हरणकरे है।

अतसीतैलगुणाः।

अतसीप्रभवतैलघनमधुरपिच्छिलम्।
विपाकेकटुचोष्णञ्चवातश्लेष्मनिवारणम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-अलसीका तेल-गाढा, मधुर, पिच्छिल, विपाककालमें कटु, उष्ण, वात और कफनाशक है।

अन्यच्च।

मधुरत्नतसीतैलपिच्छिलचानिलापहम्।

मदगन्धिकषायञ्च कफकासापहारकम् ॥ (रा० नि०

अर्थ-अलसीका तेल-पिच्छिल, वातविनाशक, मदगन्धियुक्त, कषेला तथा कफ और खाँसीको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

उमातैलं च वातघ्नं स्वादु प्रणं बलकृद्गुरु ।
कटुपाकमचक्षुष्यं त्वग्दोषकफपित्तकृत् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-अलसीका तेल-वातविनाशक स्वादिष्ठ, बलकारी, भारी, कटुपाकी, नेत्रोंको हितकारी नहीं तथा त्वग्दोष, कफ और पित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

अतसीतैलमाग्नेयं स्निग्धोष्णं कफपित्तकृत् । कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गुरु ॥ मलकृद्रसतः स्वादु ग्राहि त्वग्दोषहृद्घनम् । बस्तौ पाने तथाऽभ्यङ्गे नस्ये कर्णस्य पूरणे ॥ अनुपानविधौ चापि प्रयोज्यं वातशान्तये ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अलसीका तेल-अग्निजनक, स्निग्ध, गरम, कफ पित्तकारक, कटुपाकी, नेत्रोंको अहितकारी, बलकारी, वातहारी, भारी, मलकारक, रसमें स्वादु, मलरोधक, त्वचाके विकार और व्रणको हरनेवाला तथा वस्तिकर्म्म, पान, मर्दन, नास, कर्णपूरण और अनुपानविधिमें वातशान्ति करनेके लिये देना चाहिये ।

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कुसुम्भतैलमुष्णन्तु विपाके कटुकं गुरु ।
विदाहकं विशेषेण सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ (हा० सं०)

अर्थ-कसूमका तेल-गरम, पचनेमें चरपरा, भारी, विशेषकरके दाहकारक और सर्वरोगोंको कुपित करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

कुसुम्भतैलमम्लं स्यादुष्णं गुरु विदाहि च ।
चक्षुष्यमहितं बल्यं रक्तपित्तकफप्रदम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कसूमका तेल-खट्टा, भारी, दाहकारक, नेत्रोंको अहितकारी, बलकारी तथा रक्तपित्त और कफकारक है ।

अपिच।

कुसुम्भतैलंबलदक्षारंकटुविदाहकृत । अचक्षुष्यगुरुस्तीक्ष्णमुष्णंविदस्तम्भकारकम्॥रक्तपित्तकरचाम्लंत्रिदोषाणांचकारकम्॥ कृमिवातहरंप्रोक्तंपूर्वाचार्य्यैर्महर्षिभिः॥ (नि०र०)

अर्थ-कसुमका तेल-बलवर्द्धक खारी, चरपरा, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी, भारी, तीक्ष्ण, गरम, मलस्तम्भक, रक्तपित्तकारक, खट्टा, त्रिदोषजनक तथा कृमि और वातविनाशक है।

गोधूमादितैलगुणा।

गोधूमयावनालव्रीहियवाद्यखिलधान्यजतैलम्।
वातकफपित्तशमनंकण्डूकुष्ठादिहारिचक्षुष्यम्॥(रा०नि०)

अर्थ-गेहू, ज्वार, व्रीहिधान्य और यवादिकोंका तेल-वात, कफ, पित्त निवारक, नेत्रोंको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठादिरोगनाशक है।

एरण्डतैलगुणा।

एरण्डतैलकृमिनाशनचसर्वत्रशूलभ्रमरुत्प्रणाशनम्।
कुष्ठापहचापिरसायनचपित्तप्रकोपानलशोधनच॥

अर्थ-एरंडका तेल-कृमिनाशक, सर्व प्रकारके शूलोंको निर्मूल करने वाला, वातविनाशक, कुष्ठनाशक, रसायन, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निशोधक है।

अन्यच्च।

एरण्डतैलतीक्ष्णोष्णदीपनपिच्छिलगुरु। वृष्यत्वच्यवयःस्थापिमेधाकान्तिबलप्रदम्॥ कषायानुरससूक्ष्मंयोनिशुक्रविशोधनम्। विस्रस्वादुरसेपाकेसतिक्तकटुकसरम्॥ विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत्। हतिवातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान्॥वातशोणितविड्बन्धनर्ध्मशोथामविद्रधीन्। आमवातगजेन्द्रस्यशरीरवनचारिणः॥ एकएवनिहतायमेरण्डस्नेहकेसरी। (भा०प्र०)

अर्थ-अडका तेल-या अडीका तेल-तीक्ष्ण, गरम, दीपन, पिच्छिल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, त्वचाको हितकारी अवस्थास्थापक, मेधाजनक, कान्ति

कारक, बलदायक, कषेला, सूक्ष्म, योनि और शुक्रशोधक, आमगन्धिवाला, रस और पाकमें स्वादिष्ट कडवा चरपरा, कुछ कुछ दस्तावर तथा विषमज्वर हृद्यरोग, पीठ और गुह्यस्थानका शूल, वात, उदररोग, आनाह गुल्म, अष्ठीलिका कमरकादर्द, वातरक्त, मलबद्ध, वर्ध्म (बद) सूजन, आम और विद्रधीरोगको नष्ट करै है शरीररूपी वनमें विचरनेवाले आमवातरूपी मत्त हाथीके मारनेको यह एकही अंडीका तेलरूपी सिंह है ।

अन्यच्च ।

एरण्डतैलमधुरगुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम् । वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरंपरम् ॥ हृद्वस्तिपार्श्वजानूरुत्रिकपृष्ठास्थिशूलिनाम् । आनाहाष्ठीलवातासृक्प्लीहोदावर्त्तशूलिनाम् ॥ हितंवातामयश्वासग्रन्थिब्रध्नविकारिणाम् ॥ (राज॰नि॰)

अर्थ-अंडीका तेल-मधुर, भारी, श्लेष्मावर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म, हृद्रोग और जीर्णज्वरको दूर करै है तथा हृदय बस्ति, पार्श्व, जानु, ऊरु, त्रिक् पृष्ठ और अस्थिशूलवाले मनुष्योंको एवं आनाह, अष्ठीला, वातरक्त, प्लीहा, उदावर्त्त, शूल, वातरोग श्वास ग्रन्थि और ब्रध्नरोगवाले मनुष्योंको हितकारी है ।

करञ्जतैलगुणा ।

कारञ्जकटुकपाकेकटूष्णमनिलापहम् ।
कुष्ठशीर्षगदाशोफमेदशुक्रप्रमेहजित् ॥
अधोर्ध्वहरणश्लेष्मकृमिनिघ्नमनल्पकु ।
मक्षिकादंशकीटादिनाशनव्रणरोपणम् ॥ (शो॰नि॰)

अर्थ-करंजका तेल-पचनमें चरपरा गरम, वातनाशक तथा कोढ, शीर्षरोग, पक्षाघात मेद शुक्र, प्रमेह नाश और ऊर्ध्वभाग, कृमि, मक्खी और डांसादि कीडोंके विषको दूर करै है व्रणका और घावको भरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

करञ्जतैलंतिक्तंस्यादुष्णंचव्रणकफम् । नेत्ररोगनिवर्हीश्च नानकुष्ठव्रणंतथा ॥ रक्तगुल्मसुदावर्त्तयोनिदोषव्रणान्यपेत् । अर्शमलेपनाद्यैनानात्वग्दोषनाशनम् ॥ (नि॰ र॰)

अर्थ-करंजका तेल-कडवा, गरम, व्रणको भरनेवाला तथा नेत्ररोग, विचर्चा, वात, कोढ, व्रण, कण्डू, गुल्म, उदावर्त्त, योनिविकार, बवासीर और लेप करनेसे नानाप्रकारके त्वचाके दोषोंको दूर करै है

इङ्गुदीतैलगुणाः ।

इंगुद्यास्तुस्मृतंतैलस्निग्धशीतंचकान्तिदम् ।
मधुरंकफकृद्बल्यंचक्षुष्यधातुवर्द्धकम् ॥
केशवृद्धिकरंचैवपित्तनाशकरमतम् । (नि०र०)

अर्थ-हिंगोटका तेल-स्निग्ध, शीतल, कान्तिजनक, मधुर, कफकारक, बलकारक, नेत्रोंको हितकारी धातुवर्द्धक, केशवर्द्धक और पित्तनाशक है।

निम्बतैलगुणाः ।

निम्बतैलंकिञ्चिदुष्णंतिक्तंकृमिकफापहम् ।
कुष्ठव्रणवातपित्तपित्तचार्शज्वरंतथा ॥
शोफोदररक्तरुजकफपित्तज्वराञ्जयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-नीमका तेल-किंचित्, गरम, कडवा तथा कृमि, कफ, कोढ, घाव, वातपित्त, पित्त, बवासीर, ज्वर, सूजन, उदररोग, रुधिररोग, कफ और पित्तज्वरनाशक है।

शिग्रुतैलगुणाः ।

शिग्रुतैलंचकटुकंचोष्णमुक्तंचपिच्छिलम् ।
त्वग्दोषंचव्रणवातंकफकण्डूञ्चनाशयेत् ॥
शोथनाशकरंचैवमुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सैंजिनेका तेल-चरपरा, गरम, पिच्छिल, तथा त्वचाके दोष, व्रण, वात, कफ, कण्डू और सूजनको दूर करै है।

ज्योतिष्मतीतैलगुणाः ।

ज्योतिष्मत्याः स्मृतंतैलंवामकंतिक्तकमतम्। अत्युष्णंसारकंतीक्ष्णंपित्तलंस्मृतिबुद्धिदम् ॥ मेधाकरंलेखनंचरसायनकरमतम्।अग्निदीप्तिकरंवातत्रिदोषंचकफंजयेत्॥ (नि०र०)

अर्थ-मालकाङ्गुनीका तेल-वमनकारक, कडवा, अत्यन्त गरम, सारक, तीक्ष्ण, पित्तजनक, स्मरणशक्ति और बुद्धिदायक, मेधाकारक, लेखन, रसायन, अग्निदीपक, वात, त्रिदोष और कफनाशक है।

विभीतकतैलगुणाः ।

अक्षतैलंस्वादुशीतंवृष्यंकेश्यंगुरुस्मृतम् ।
कान्तिप्रदंकफकरंवातपित्तविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-बहेडेका तेल-स्वादिष्ट, शीतल, वीर्यवर्द्धक, केशोंको हितकारी, भारी, कान्तिजनक, कफकारी तथा वात और पित्तहारी है ।

हरीतकीतैलगुणाः ।

हरीतक्या स्मृततैलंशीतलंतुवरंमधु ।
कटुपथ्यंसर्वरोगनानात्वग्दोषनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हरडका तेल-शीतल, कषेला, मधुर, चरपरा, पथ्य तथा सम्पूर्ण रोग और नानाप्रकारके त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

कोशाम्रतैलगुणाः ।

कोशाम्रतैलतिक्तस्यादम्लवल्यंचमाधुरम् ।
पथ्यंरुचिकरंचैवपाचकंचसरंमतम् ॥
कृमिकुष्ठव्रणानांचनाशकंपरिकीर्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-कोशामकी गुठलीका तेल-कडुवा, खट्टा, बलकारक मधुर, पथ्य, रुचिकारक, पाचक, सारक तथा कृमि, कुष्ठ और व्रणको दूर करे है ।

स्पृक्कतैलगुणाः ।

शीतांशुतैलमाक्षेपशमनंवायुनाशनम् । स्वेदनंशूलदन्तरोग ज्वरघ्नंकफनुत्परम् ॥ आमवातेतथाध्मानेज्वरेचशिरोरोगे । दन्तरोगेचभग्नेचदीपेरंपरियुज्यते ॥ (आ०प्र०)

अर्थ-स्पृक्का तेल-आक्षेपको शान्ति करनेवाला, वातविनाशक स्वेद अर्थात पसीनोंको लानेवाला, शूलनाशक, ज्वरहर और कफको हरनेवाला है तथा आमवात, आध्मान, ज्वर, शिरोरोग, दन्तरोग और भग्नरोगमें यह तेल देना चाहिये ।

अन्यच्च ।

कर्पूरतैलंकटुकंचोष्णपित्तकरंमतम् ।
[illegible] ॥ (नि०र०)

अर्थ-कपूरका तेल [illegible] ... दोषों दूर करनेवाला और [illegible]

त्रपुषादितैलगुणाः ।

त्रपुसैर्वारुकूष्माण्डचारबीजादितैलकम् ।
केश्यंकफप्रदशीतमधुरगुरुचस्मृतम् ॥
वांतिकृद्वातपित्तस्यनाशनपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-खीरे, ककडी, पेठा और चिरोंजी आदिका तेल-केशोंको हितकारी, कफकारी, शीतल, मधुर, भारी वमनकारक और पित्तनाशक है।

भल्लातकतैलगुणाः ।

भल्लाततैलकटुकस्वादुचोष्णंचपित्तलम् । तिक्ततीक्ष्णंचतुवरमूर्ध्वाधोमार्गशोधकम् ॥ त्रिदोषचकृमीन्मेहमेदशुक्रकफन्तथा । अर्शंवातचकुष्ठञ्चकण्डूंचैवविनाशयेत् ॥ गुणास्तुम्बरकस्यापितैलस्यैतेबुधै स्मृता ।

अर्थ-भिलावेका तेल-चरपरा, स्वादिष्ठ, गरम, पित्तकारक, कडवा, तीक्ष्ण, कपेला, अधोर्ध्व दोषको शोधनेवाला तथा त्रिदोष कृमि, प्रमेह, शुक्र, कफ, बवासीर, वात, कोढ और खुजलीको दूर करैहै तुम्बुरुके तेलके गुणभी इसीकी समान जानने।

त्रिवृत्तैलगुणाः ।

त्रिवृत्तैलतुशीतस्याद्वातपित्तकफापहम् ।

अर्थ-निसोथके बीजोंका तेल-शीतल और वात-पित्त-कफनाशक है।

देवदारुतैलगुणाः ।

तैलन्तुदेवदारोस्तुकटुतिक्तकषायकम् ।
व्रणशुद्धिकरवातकृमिकुष्ठविनाशकम् ॥

अर्थ-देवदारुका तेल-चरपरा, कडवा, कषेला, व्रणशोधक तथा वात, कृमि और कुष्ठनाशक है।

राळतैलगुणाः ।

सर्जतैलतुविस्फोटकुष्ठदद्रुविनाशकम् ।
कृमीन्कफचवातचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-राळका तेल-विस्फोट, कुष्ठ, दद्रु, कृमि, कफ और वातविनाशक है।

आम्रतैलगुणाः ।

आम्रबीजभवंतैलंसुगंधिमधुरंमतम् ।
रूक्षंकिंचित्पित्तलंचतिक्तंचविशदंमतम् ॥
कफवातहरंचैवमुनिभिः परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-सुगंधि, मधुर, रूखा, किंचित् पित्तकारक, कडवा, विशद और कफवातनाशक है ।

मधूकतैलगुणाः ।

मधूकतैलंमधुरंपिच्छिलंतुवरंमतम् ।
कफपित्तज्वरंचैवदाहंपित्तंचनाशयेत् ॥
पलाशपाटलायास्तुतैलस्यैतेगुणामताः ।

अर्थ-महुवेका तेल-मधुर, पिच्छिल, कसैला तथा कफ, पित्त, ज्वर, दाह और पित्तको दूर करै है । पलाश और पाडलके तेलके गुणभी इन्हींके समान जानने ।

वन्दाकतैलगुणाः ।

वन्दाकतैलंमधुरंगुरु कटुरसंमतम् ।

अर्थ-बंदाका तेल-मधुर, भारी और कटुरसान्वित है ।

अङ्कोलतैलगुणाः ।

अङ्कोलतैलंवातघ्नमभ्यङ्गात्त्वग्रुजापहम् ।
कफनाशकरंप्रोक्तंपूर्वनैर्धर्मदर्शिभिः ॥

अर्थ-अंकोलका तेल-वातनाशक इसको मलनेसे त्वचाके रोग दूर होवे हैं और कफनाशक है ।

दन्तीतैलगुणाः ।

दन्त्यास्तैलंस्वादुरेच्यंलेपनात्सर्वकुष्ठहम् ।
वातघ्नमाशनेनैवपित्तस्यास्रस्यनाशकम् ॥

अर्थ-दन्तीका तेल-स्वादिष्ठ, रेचक। दस्तावर, लेपन करनेसे सर्वप्रकारके कुष्ठोंको नष्ट करै है, खानेसे वातको हरै और रक्तपित्तनाशक है ।

इङ्गुदीफलतैलगुणाः ।

पुत्रजीविभवंतैलंकफवातनिनाशकम् ।

अर्थ-जियापोताका तेल-कफवातविनाशक है ।

त्रायमाणतैलगुणा ।

त्रायमाणभवंतैलसर्वव्याधिविनाशकृत् ।

अर्थ-त्रायमाणका तेल-सर्वरोगनाशक है ।

शंखिनीतैलगुणा ।

शंखिनीसम्भवंतैलतीक्ष्णतिक्तकटुस्मृतम् । रक्तपित्तकर चैवसारकंचमतलघु ॥ कृमिकुष्ठार्शमेहघ्नंकफवातहरपरम् । शुक्रमेदहरप्रोक्तपूर्वेवैद्योत्तमे पुरा ॥ (इ०र०)

अर्थ-शंखिनीका तेल-तीक्ष्ण, कडवा, चरपरा, रक्तपित्तकारक, सारक, हलका तथा कृमि, कोढ, बवासीर, प्रमेह, कफवात, शुक्र और मेदनाशक है ।

पुन्नागतैलगुणा ।

पुन्नागतैलकटुकसरतिक्तचलेखनम् ।
पित्तलवातरक्तघ्नदाहनाशकरमतम् ॥

अर्थ-पुन्नागका तेल-चरपरा, सारक, कडवा, लेखन, पित्तकारक, वातरक्तनाशक और दाहको दूर करे है ।

कपित्थतैलगुणा ।

कपित्थतलतुवरस्वादुचाखुविषापहम् ।

अर्थ-कैथके वीजोंका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ और मूसेके विषको हरे है ।

खसखसतैलगुणा ।

खसवीजस्यतैलन्तुवल्यवृष्यगुरुस्मृतम् ।
स्वादुशीतकफकरवातनाशकरमतम् ॥

अर्थ-खसखसका तेल-बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्वादिष्ठ, शीतल, कफकारक और वातविनाशक है ।

नारिकेलतैलगुणा ।

नारिकेलभवंतैलरसेपाकेमधुस्मृतम् ।
वल्यकेश्यवातहरमुष्णनेत्ररुजापहम् ॥

अर्थ-नारियलका तेल-रस और पाकमे मधुर, बलकारक, केशोंको हितकारी, वातनाशक, गरम और नेत्ररोगनाशक है ।

पीलुतैलगुणा ।

पीलुतैलसरचोष्णकुष्ठवातक्षतापहम् । शोथपित्तरुजकण्डू

गण्डमालांविनाशयेत् ॥ अन्त्रवृद्धिरक्तदोषनाशयेदितिचस्मृ-
तम् । अम्लवेतसतैलस्याप्येतएवगुणामताः ॥

अर्थ-पीलुका तेल-सारक, गरम तथा कोढ, वात, क्षत, सूजन, पित्तरोग, कण्डू, गंडमाला, अन्त्रवृद्धि और रुधिरके दोषोंको दूर करै है अमलवेतके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

शिंशपादितैलगुणाः ।

शिंशपागरुगण्डीरनिर्गुण्डीसरलादिजम् ।
तैलंतुतुवरंतिक्तंकटुकंवातरक्तजित् ॥
विषकण्डूवातकफकुष्ठदुष्टव्रणाञ्जयेत् ।

अर्थ-शीशों, अगर, गण्डीर, निर्गुण्डी और सरलादिका तेल-कषैला, कडुआ, चरपरा तथा वातरक्त, विष, खुजली, वात, कफ, कुष्ठ और दुष्टव्रणको नष्ट करै है ।

पृथ्वीकादितैलगुणाः ।

पृथ्वीकानीपजीमूतहस्तिकर्णकिमूलजम् । काम्पिल्लकचतै-
लन्तुतीक्ष्णपाकेकटुस्मृतम् ॥ सरमुष्णचतिक्तंचलघुकुष्ठ
कफापहम् । मेहमूर्च्छामदक्रिमिनाशनपरममतम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-पृथ्वीका (हिंगुपत्री) जीमूत (देवदाली) मूर्वा, हस्तिकर्णी, पलाश, नीप (कदम्ब) और कबीलेका तेल-तीक्ष्ण, पाकमें चरपरा, सारक, गरम, कडुआ, हलका तथा कोढ, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा मद और कृमिको दूर करै है ।

तैलस्ययोनिगुणह्यारम्भदनाखिलमतम् ।
अतःपरस्यतैलस्यगुणाज्ञेयास्वयोनिवत् ॥

अर्थ-वाक्यमें कहे तेल स्वयोनि अर्थात् जिन २ औषधोंसे जो २ तेल उत्पन्न होताहै वह उन्हींके समान गुणवाले है ऐसा कहा है इसलिये जो तेल इस ग्रन्थमें नहीं कहे गये उनके गुण अपनी २ योनिके समान जानने ।

[illegible] ।

येदोऽत्रनाद्नेयुक्तं भर्गीरेवल्लमादृतेव ।
गिरागुणैरेमरूपैर्धर्मनीमिश्रनपनेव ॥

अर्थ-प्रथम तेलको मलकर पीछे जलसे स्नानकरे इसप्रकार करनेसे शरीरमें बल बढता है तथा शिरामुख, रोमकूप और धमनीनाडियोंके द्वारा तृप्तिकारक है ।

शिरसितैलमर्दनगुणाः ।

नित्यस्नेहार्द्रशिरस शिरःशूलनजायते । नखालित्यनपालित्यनकेशाःप्रपतन्तिच ॥ दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्तिच घनायताः । इन्द्रियाणिप्रसीदन्तिसुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन मस्तकमें तेल मलतेहैं, उनके शिरशूल नहीं उत्पन्न होताहै तथा केशोंकी अल्पता, पकता और केश नहीं पतन होतेहैं और दृढ मूलसहित, काले और सघन केश होजातेहैं तथा इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंम सुदृश्यता उत्पन्न होताहै ।

कर्णतैलपूरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यनमन्यानहनुग्रहाः ।
नोच्चै श्रुतिर्नबाधिर्य्यंनकर्णवातजारुज ॥(राजवल्लभ)

अर्थ-जो मनुष्य कर्णम नित्यप्रति तेल डालतेहै-उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, कानसम्बन्धी ऊंचा सुनना आदि दुःसाध्यरोग, बधिरता और कानमें वातादिरोग उत्पन्न नहीं होते हैं ।

मर्दनेतैलगुणाः ।

"घृतादष्टगुणगुरु"

अर्थ-शरीरम मलनेसे तेलमें घीकी अपेक्षा आठ गुण अधिकहैं ।

तैलनसेवयेद्धीमान्यस्यकस्यचयद्भवेत् ।
विषसात्म्यगुणत्वाच्चयोगेतन्नप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-बुद्धिमान् पुरुषको चाहिये कि जिस तिसके दिये हुये तेलको सेवन नहीं करे और उसमें विषकी समानता होनेसे विना विचारे किसी योगमें भी प्रयोग नहीं करे ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तैलवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ अर्कवर्गः ।

अथातःसम्प्रवक्ष्यामिकेवलार्कगुणप्रिये ।

अर्थ-इसके उपरान्त केवल अर्कोंके गुण कहता हूं ।

हरीतक्यर्कगुणाः ।

हरीतक्याः शूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः ।

अर्थ-हरडका अर्क-शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और आनाह रोगनाशक है।

विभीतकार्कगुणाः ।

विभीतकस्य तृट्छर्दिकफकासविनाशनः ।

अर्थ-बहेडेका अर्क-तृषा, वमन, कफ और खाँसीको दूर करे है।

आमलक्यर्कगुणाः ।

आमलक्यास्त्रिदोषास्रपित्तमोहविनाशयेत् ।

अर्थ-आमलेका अर्क-त्रिदोष, रक्तपित्त और मोहनाशक है।

नागरार्कगुणाः ।

शुण्ठ्या विबन्धामवातशूलश्वासानलामहृत् ।

अर्थ-सोंठका अर्क-मलबद्धता, आमवात, शूल, श्वास और मन्दाग्निनाशक है।

आर्द्रकार्कगुणाः ।

आर्द्रकस्य ज्वरं दाहं हरेद्रुच्याग्निदीप्तिकृत् ।

अर्थ-अदरखका अर्क-ज्वर और दाहको दूर करे है, रुचिकारक अग्निसंदीपक है।

पिप्पल्यर्कगुणाः ।

पिप्पल्याः श्वासकासामवातार्शोज्वरशूलहृत् ।

अर्थ-पीपलका अर्क-श्वास, खाँसी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूलको नष्ट करे है।

मरिचार्कगुणाः ।

मरीचकः श्वासकृमीन्हरेत्सर्वान्गदानपि ।

अर्थ-कालीमिर्चका अर्क-श्वास, कृमि और अन्यान्य सब रोगोंको नाश करे है।

पिप्पलीमूलार्कगुणाः ।

ग्रन्थिकस्य प्लीहगुल्मकफवातोदरं परम् ।

अर्थ-पीपलामूलका अर्क-प्लीहा, गुल्म, कफ और वातोदरनाशक है।

यवान्यर्कगुणाः ।

यवान्यर्कोऽत्यन्तकफनिहृद्विशेषाद्वातापहः ।

अर्थ-अजवायनका अर्क आप कफनाशक और विशेषकर वातरोगनाशक है।

गजपिपल्यर्कगुणाः ।

अर्कस्तुगजपिप्पल्यावातश्लेष्माग्निमान्द्यनुत ।

अर्थ-गजपीपलका अर्क-वात, कफ और मंदाग्निनाशक है ।

चित्रकार्कगुणाः ।

चित्रकस्याग्निकृत्कासग्रहणीकफशोषहा ।

अर्थ-चीतेका अर्क-अग्निजनक तथा खाँसी, संग्रहणी, कफ और शोषको हरे है ।

यमान्यर्कगुणाः ।

यमान्याःपाचनोरुच्योदीपनः शुक्रशूलहृत् ।

अर्थ-अजवायनका अर्क-पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्र और शूलनाशक है ।

अजमोदार्कगुणाः ।

अजमोदोद्भवोवातकफहावस्तिशोधन ।

अर्थ-अजमोदका अर्क-वात कफनाशक और वस्तिशोधक है ।

पारसीकयमान्यर्कगुणाः ।

पारसीकयमान्यास्तुग्राहीपाचकमादकः ।

अर्थ-खुरासानी अजवायनका अर्क-मलरोधक, पाचक और मदकारक है

जीरकार्कगुणाः ।

जीरकस्यतुसग्राहीगर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

अर्थ-जीरेका अर्क-ग्राही और गर्भाशयशोधक है ।

कृष्णजीरकार्कगुणाः ।

कृष्णजीरस्यचक्षुष्योगुल्मच्छर्द्यतिसारजित ।

अर्थ-कालेजीरेका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा गुल्म, वमन और अतिसारको दूरकरैहै ।

कारवीजीरकार्कगुणाः ।

कारव्यावलकृच्चाकोज्वरघ्न पाचनःसर ।

अर्थ-कलोंजीका अर्क बलकारक, ज्वरनाशक, पाचक और सारक है ।

धान्यकार्कगुणाः ।

धान्यकस्यतृषादाहवमिश्वासत्रिदोषजित ।

अर्थ-धनियेका अर्क-तृषा, दाह, वमन, श्वास और त्रिदोषनाशक है ।

हरीतक्यर्कगुणा ।

हरीतक्याःशूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः ।

अर्थ-हरडका अर्क-शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और आनाह रोगनाशक है।

बिभीतकार्कगुणा ।

विभीतकस्यतृट्छर्दिकफकासविनाशनः ।

अर्थ-बहेडेका अर्क-तृषा, वमन, कफ और खाँसीको हरे है ।

आमलक्यर्कगुणा ।

आमलक्यास्त्रिदोपास्रपित्तमोहविनाशयेत् ।

अर्थ-आमलेका अर्क-त्रिदोष, रक्तपित्त और मोहनाशक है ।

नागरार्कगुणा ।

शुण्ठ्याविबन्धामवातशूलश्वासबलासहृत् ।

अर्थ-सोठका अर्क-मलबद्धता, आमवात, शूल, श्वास और कफनाशक है ।

आर्द्रकार्कगुणा ।

आर्द्रकस्यज्वरंदाहहरेद्रुच्यग्निदीप्तिकृत् ।

अर्थ-अदरखका अर्क-ज्वर और दाहको हरे है, रुचिकारक अग्निदीपक है।

पिप्पल्यर्कगुणा ।

पिप्पल्याःश्वासकासामवातार्शोज्वरशूलहृत ।

अर्थ-पीपलका अर्क-श्वास, खाँसी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूलको नष्ट करे है ।

मरीचार्कगुणा ।

मरीचकःश्वासकृमीन्हरेत्सर्वान्गदानपि ।

अर्थ-कालीमिर्चका अर्क-श्वास, कृमि और अन्यान्य सर्व रोगोंको नाश करे है ।

पिप्पलीमूलार्कगुणाः।

ग्रन्थिकस्यप्लीहगुल्मकफवातहर पर ।

अर्थ-पीपरामूलका अर्क-प्लीहा, गुल्म, कफ और वातविनाशक है ।

चव्यार्कगुणा ।

चव्यार्कोऽत्यन्तरुचिकृद्विशेषाद्गुदजापहः ।

अर्थ-चव्यका अर्क-अत्यन्तरुचिकारक और विशेषकरके गुदारोगनाशक है।

गजपिप्पल्यर्कगुणाः ।

अर्कस्तुगजपिप्पल्यावातश्लेष्माग्निमान्द्यनुत् ।

अर्थ-गजपीपलका अर्क-वात, कफ और मंदाग्निनाशक है ।

चित्रकार्कगुणाः ।

चित्रकस्याग्निकृत्कासग्रहणीकफशोपहा ।

अर्थ-चीतेका अर्क-अग्निजनक तथा खाँसी, संग्रहणी, कफ और शोपको हरे है ।

यमान्यर्कगुणाः ।

यमान्या पाचनोरुच्योदीपन शुक्रशूलहृत् ।

अर्थ-अजवायनका अर्क-पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्र और शूलनाशक है ।

अजमोदार्कगुणाः ।

अजमोदोद्भवोवातकफहावस्तिशोधनः ।

अर्थ-अजमोदका अर्क-वात कफनाशक और वस्तिशोधक है ।

पारसीकयमान्यर्कगुणाः ।

पारसीकयमान्यास्तुग्राहीपाचकमादकः ।

अर्थ-खुरासानी अजवायनका अर्क-मलरोधक, पाचक और मदकारक है

जीरकार्कगुणाः ।

जीरकस्यतुसग्राहीगर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

अर्थ-जीरेका अर्क-ग्राही और गर्भाशयशोधक है ।

कृष्णजीरकार्कगुणाः ।

कृष्णजीरस्यचक्षुष्योगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ।

अर्थ-कालेजीरेका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा गुल्म, वमन और अतिसारको दूरकरेहै ।

कारवीजार्कगुणाः ।

कारव्यावलकृच्चार्कोज्वरघ्न पाचन सरः ।

अर्थ-कलौंजीका अर्क बलकारक, ज्वरनाशक, पाचक और सारक है ।

धान्यकार्कगुणाः ।

धान्यकस्यतृपादाहवमिश्वासत्रिदोषजित् ।

अर्थ-धनियेका अर्क-तृषा, दाह, वमन, श्वास और त्रिदोषनाशक है ।

शतपुष्पार्कगुणाः ।

मिश्याज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ।

अर्थ-सौंफका अर्क-ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगनाशक है ।

मिश्रेयार्कगुणाः ।

मिश्रेयायावह्निमान्द्ययोनिशूलकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-सोयेका अर्क-मन्दाग्नि, योनिशूल और कृमिनाशक है ।

ज्वालामरिचार्कगुणाः ।

ज्वालामरीचकस्यापस्मारभूतत्रिदोषनुत् ।

अर्थ-लालमिर्चका अर्क-अपस्मार, भूत व त्रिदोषनाशकहै ।

मेथिकार्कगुणाः ।

मेथिकाया श्लेष्मवातज्वरामकफनाशनः ।

अर्थ-मेथीका अर्क-श्लेष्म, वात, ज्वर, आम और कफनाशक है ।

वनमेथिकार्कगुणाः ।

वनमेथ्या सर्वरोगान्हरेत्कुञ्जरवाजिनाम् ।

अर्थ-वनमेथीका अर्क-हाथी और घोडोंके सर्व रोगोंको हरे है ।

चन्द्रसूरार्कगुणाः ।

चन्द्रसूरस्यहिक्कासृग्वातहृत्पुष्टिवर्द्धनः ।

अर्थ-हालोंका अर्क-हुचकी, रुधिरविकार और वातनाशक है तथा पुष्टिवर्द्धक है ।

हिंग्वर्कगुणाः ।

हिङ्गुन पाचनोरुच्य कृमिशूलोदरापह ।

अर्थ-हींगका अर्क-पाचन, रुचिकारक तथा कृमि, शूल और उदररोग-निवारक है ।

वचार्कगुणाः ।

वचायावह्निवमिकृद्विबन्धाध्मानशूलहृत ।

अर्थ-वचाका अर्क-अग्निजनक, वमनकारक तथा विबंध, आध्मान और शूलको हरे है ।

पारसीकवचार्कगुणाः ।

पारसीकवचायास्तुभूतोन्मादबलंहरेत् ।

अर्थ-खुरासानी वचका अर्क-भूतोन्माद और बलनाशक है ।

कुलिञ्जनार्कगुणाः ।

कुलिञ्जनस्यस्वरकृद्धृत्कण्ठमुखशोधनः ।

अर्थ-कुलिजनका अर्क-स्वरको शुद्ध करनेवाला तथा कण्ठ और मुख-शोधक है ।

स्थूलग्रन्थिवचार्कगुणाः ।

स्थूलग्रन्थिवचस्यार्कोविशेषात्कफकासहृत् ।

अर्थ-स्थूलग्रन्थि वचका अर्क-विशेष करके कफनाशक है ।

द्वीपान्तरवचार्कगुणाः ।

द्वीपान्तरवचायास्तुहरेच्छूलफिरङ्गकम् ।

अर्थ-चोपचीनीका अर्क-शूल और फिरंगरोगनाशक है ।

हपुषार्कगुणाः ।

हपुषायाहरेत्प्लीहविषमोहञ्चदारुणम् ।

अर्थ-हाऊबेरका-अर्क-प्लीहा, विष और दारुणमूर्च्छाको हरेहै ।

क्षुद्रहपुषार्कगुणाः ।

वपुषाया समीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ।

अर्थ-छोटेहाऊबेरका अर्क-वात, ववासीर, संग्रहणी गुल्म और शूल-नाशक है ।

विडङ्गार्कगुणाः ।

विडङ्गस्योदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ।

अर्थ-वायविडंगका अर्क-उदरोग कफ, कृमि, वात और विबंध नाशक है ।

तुम्बुरोरर्कगुणाः ।

तुम्बुरोर्गुरुताश्वासप्लीहागुल्मकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-तुम्बुरुका अर्क-शरीरका भारीपन, श्वास, प्लीहा, गुल्म और कृमिको दूर करे है ।

वंशलोचनार्कगुणाः ।

वंशलोचनजस्तृष्णाक्षयश्वासज्वरान्हरेत् ।

अर्थ-वंशलोचनका अर्क-तृष्णा, क्षय, श्वास और ज्वरको हरे है ।

समुद्रफेनार्कगुणाः ।

समुद्रफेनज शीतोरेचकःकफन्दत्परः ।

अर्थ-समुद्रफेनका अर्क-शीतल, दस्तावर और कफनाशक है ।

जीवकार्कगुणा ।

जीवकोत्थ शुक्रकफबलकृच्छीतलःसमः ।

अर्थ-जीवकका अर्क-शुक्र, कफ और बलकारक और समशीतल है ।

ऋषभकार्कगुणा ।

आर्षभःपित्तदाहास्रकासवातक्षयापह. ।

अर्थ-ऋषभकका अर्क-पित्त दाह, रुधिरविकार, खाँसी, वात और क्षयको क्षयकरे है ।

मेदार्कगुणा ।

सुनामेदोद्भवार्कस्तुदृश्यःस्तन्य.कफावहः ।

अर्थ-मेदका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, स्तनोमें दूध करनेवाला और कफकारी है ।

महामेदार्कगुणा ।

महामेदोद्भव शीतोरक्तवातज्वरप्रणुत् ।

अर्थ-महामेदाका अर्क-शीतल तथा वात, रक्त और ज्वरनाशक है ।

काकोल्यर्कगुणा ।

काकोल्या.शुक्रल.शीतोपित्तशोपज्वरापहः ।

अर्थ-काकोलीका अर्क-शुक्रजनक, शीतल तथा पित्त, शोप और ज्वरनाशक है ।

क्षीरकाकोल्यर्कगुणा ।

क्षीरकाकोलिकाजातोबृंहणोदाहवातहा ।

अर्थ-क्षीरकाकोलीका अर्क-पुष्टिकारक तथा दाह और वातविनाशक है ।

ऋद्ध्यर्कगुणा ।

ऋद्ध्यावल्यस्त्रिदोपघ्नोरक्तपित्तविनाशकः ।

अर्थ-ऋद्धिका अर्क-बलकारी, त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तनाशक है ।

वृद्ध्यर्कगुणा ।

वृद्ध्यागर्भगत.शीत.क्षतकासक्षयापहः ।

अर्थ-वृद्धिका अर्क-शीतल तथा क्षत खाँसी और क्षयरोगनाशक है ।

मधुरार्कगुणा ।

मधुयष्ट्या केशकरःस्वर्य्य.पित्तानिलास्रजित् ।

अर्थ-मुलेठीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला तथा पित्त, वात और रुधिरके विकाराको हरेहै ।

जलमधुयष्ट्यर्कगुणा ।

जलयष्ट्याविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः ।

अर्थ-जलमुलेठीका अर्क-विष, वमन, तृपा, ग्लानि और क्षयरोगनाशक है।

काम्पिल्लार्कगुणा ।

काम्पिल्लस्यविरेकीस्यान्मेहनस्यविकारनुत् ।

अर्थ-कवीलेका अर्क-विरेचक और मूत्रविकारनिवारक है ।

आरग्वधार्कगुणा ।

आरग्वधस्यपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलहृत् ।

कण्डूमेहश्वासकासकृमिकुष्ठज्वरापहः ॥

अर्थ-अमलतासका अर्क-रक्तपित्त, वात, उदावर्त्त, शूल, कण्डू, प्रमेह, श्वास, खाँसी, कृमि, कोढ और ज्वरनाशक है ।

भूनिम्बार्कगुणा ।

भूनिम्बस्यतृपाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-चिरायतेका अर्क-तृपा, कोढ, ज्वर, व्रण और कृमिनाशक है ।

वत्सार्कगुणा ।

भद्रमानस्तुपित्तास्रकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।

अर्थ-इन्द्रजौका अर्क-रक्तपित्त, कृमि, विसर्प और कुष्ठको नष्ट करे है ।

मदनफलार्कगुणा ।

मदनोत्थश्छर्दनेनचतुर्थज्वरकादिहृत् ।

अर्थ-मैनफलका अर्क-वमनकारक और चातुर्थिक (चौथिया) ज्वरनिवारक है ।

रास्नार्कगुणा ।

रास्नोद्भवःसमीरास्रवातशूलोदरापहः ।

अर्थ-रास्नाका अर्क-वातरक्त, वातशूल और उदररोगनाशक है ।

नागभिन्नार्कगुणा ।

नागभिन्नोद्भवाभोगीलूताद्याखुविकारहृत् ।

अर्थ-नाकुलीका अर्क-सर्प, मकडी और मूसे आदिके विषको हरे है ।

माचिकार्कगुणा ।

माचिकाजस्तुपित्तास्रपक्वातीसारहालघुः ।

अर्थ-मोइयेका अर्क-हलका, रक्तपित्त और पक्वातिसारनाशक है ।

तेजस्विन्यर्कगुणा ।

तेजस्विन्याःश्वासकासकफघ्नश्चाग्निदीपनः ।

अर्थ-तेजवलका अर्क-श्वास, खाँसी और कफनाशक है तथा अग्निप्रदीपक है ।

ज्योतिष्मत्यर्कगुणा ।

ज्योतिष्मत्यावान्तिकरोवह्निबुद्धिस्मृतिप्रदः ।

अर्थ-मालकागुनीका अर्क-वमनकारक तथा अग्नि, बुद्धि और स्मरण शक्तिवर्द्धक है ।

कुष्ठार्कगुणा ।

कुष्टस्यहन्तिवातास्रकासकुष्ठमरुत्कफान् ।

अर्थ-कूठका अर्क-वातरक्त, खाँसी, कोढ, वात और कफनाशक है ।

पौष्करार्कगुणा ।

पौष्करस्यारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ।

अर्थ-पोहकरमूलका अर्क-अरुचि, श्वास और विशेषकरके पसवाडेकी पीडाको दूर करे है ।

क्षीरिण्यर्कगुणा ।

हेमाह्वायारेकवान्तिकरःकण्डूविनाशनः ।

अर्थ-स्वर्णक्षीरीका अर्क-विरेचक, वमनकारक और कण्डूनाशक है ।

शृङ्ग्यर्कगुणा ।

शृङ्गीहरेदूर्ध्ववातहिक्कातृष्णाक्षयज्वरान् ।

अर्थ-काकडाशिंगीका अर्क-ऊर्ध्ववात, हिचकी, तृषा, क्षय और ज्वरनाशक है ।

कट्फलार्कगुणा ।

कट्फलोत्थःश्वासकासप्रमेहार्शोऽरुचिंहरेत् ।

अर्थ-कायफलका अर्क-श्वास, खाँसी, प्रमेह, बवासीर और अरुचिको दूर करे है ।

भार्ग्यर्कगुणा ।

भार्ग्याहरेत्कफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारंगीका अर्क-कफ, श्वास, पीनस, ज्वर और वातविनाशक है ।

पाषाणभेदार्कगुणाः ।

पाषाणभेदजोयोनिरोगहृच्छ्वासगुल्महा ।

अर्थ-पाषाणभेदका अर्क-योनिरोग, श्वास और गुल्मनाशक है ।

धातक्यर्कगुणाः ।

धातकीजस्तृषासारविषकीटविसर्पजित् ।

अर्थ-धायके फूलोंका अर्क-तृषा, अतिसार, विष, कृमि और विसर्परोगनाशक है ।

समङ्गार्कगुणाः ।

माञ्जिष्ठजोविषश्लेष्मरक्तातीसारकुष्ठहा ।

अर्थ-मजीठका अर्क-विष, श्लेष्म, रक्तातिसार और कुष्ठनाशक है ।

कुसुम्भार्कगुणाः ।

कुसुम्भजोवर्णकरोरक्तपित्तकफापहः ।

अर्थ-कुसुमका अर्क-वर्णको सुंदर करनेवाला तथा रक्तपित्त और कफनाशक है ।

लाक्षार्कगुणाः ।

लाक्षाजः कृमिवीसर्पव्रणोरःक्षतकुष्ठहा ।

अर्थ-लाखका अर्क-कृमि, विसर्प, व्रण, उरःक्षत और कुष्ठनाशक है ।

हरिद्रार्कगुणाः ।

हरिद्रायामेहशोथत्वग्दोषव्रणपाण्डुनुत् ।

अर्थ-हलदीका अर्क-प्रमेह, सूजन, त्वचाके दोष, व्रण और पाण्डुरोगनाशक है ।

आरण्यहरिद्रार्कगुणाः ।

आरण्यकहरिद्राया कुष्ठवातास्रनाशनः ।

अर्थ-वनहलदीका अर्क-कोढ, वात और रक्तविकारविनाशक है ।

कर्पूरहरिद्रार्कगुणाः ।

कर्पूरकहरिद्रायाःसर्वकण्डूविनाशनः ।

अर्थ-कपूरहलदीका अर्क-सर्वप्रकारके कण्डूनाशक है ।

दारुहरिद्रार्कगुणाः ।

दार्व्याविशेषतोलेपान्नेत्रकर्णस्यरोगनुत् ।

अर्थ-दारुहलदीका अर्क-विशेष करके लेप करनेसे नेत्ररोग और कर्णरोगको हरै ।

रसाञ्जनार्कगुणा ।

रसाञ्जनोद्भवोनेत्रविकारव्रणदोषनुत् ।

अर्थ-रसाञ्जन अर्थात् रसौतका अर्क-नेत्रविकार और व्रणदोषनिवारक है ।

अवल्गुजार्कगुणा ।

वाकुच्याःकृमिविष्टम्भपाण्डुशोफककफापहः ।

अर्थ-बापचीका अर्क-कृमि, विष्टम्भ, पाण्डु, सूजन और कफनाशक है ।

चक्रमर्दार्कगुणा ।

प्रपुन्नाटस्यहन्त्येवकण्डूदद्रुविषानिलान् ।

अर्थ-चकवडका अर्क-खुजली, दाद विष और वातविनाशक है ।

अतिविषार्कगुणा ।

विषजोदीपिकार्य्यर्कः कफपित्तातिसारहा ।

अर्थ-अतीसका अर्क अग्निप्रदीपक तथा कफ, पित्त और अतिसारनाशक है।

लोध्रार्कगुणा ।

लोध्रज शीतलोग्राहीचक्षुष्य कफपित्तनुत् ।

अर्थ-लोधका अर्क-शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ और पित्तनाशक है ।

बृहत्पत्रार्कगुणा ।

बृहत्पत्रोद्भवोनेत्र्योज्वरातीसारशोथहृत् ।

अर्थ-पठानीलोधका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, ज्वर, अतिसार और सूजनको हरे है ।

भल्लातकार्कगुणा ।

भल्लातकोद्भवोहन्याज्ज्वरोदरकृमिव्रणान् ।

अर्थ-भिलावेका अर्क- ज्वर, उदररोग, कृमि और व्रणनाशक है ।

गुडूच्यर्कगुणा ।

गुडूच्यादीपन श्वासकासपाण्डुज्वरापह ।

अर्थ-गिलोयका अर्क-दीपन तथा श्वास, खाँसी, पाण्डुरोग और ज्वरको हरे है ।

बिल्वार्कगुणा ।

बैल्व श्लेष्महरोबल्योलघुरुष्णश्चपाचन ।

अर्थ-बेलका अर्क-कफनाशक, बलकारक, हलका, गरम और पाचक है ।

काश्मर्यार्कगुणाः ।

गाम्भारीजोभ्रान्तितृष्णाशूलार्शोविषदाहनुत् ।

अर्थ-कुम्भेरका अर्क-भ्रान्ति, तृषा, शूल, बवासीर, विष और दाह-नाशक है ।

पाटलार्कगुणाः ।

पाटल्याश्छर्दिशोफास्रतृष्णादाहारुचीर्हरेत् ।

अर्थ-पाडलका अर्क-वमन, सूजन, रुधिरविकार, तृषा, दाह और अरुचिनिवारक है ।

अग्निमन्थार्कगुणाः ।

अग्निमन्थोद्भव शोफकृमिपाण्डुबलासनुत् ।

अर्थ-अरणीका अर्क-सूजन, कृमि, पाण्डु, और कफनाशक है ।

श्योनाकार्कगुणाः ।

श्योनाकजस्तुगुल्मार्शःकृमिहृद्रुचिदीप्तिकृत् ।

अर्थ-श्योनाकका अर्क-गुल्म, बवासीर और कृमिनाशक और रुचिदीपक है ।

शालिपर्ण्यर्कगुणाः ।

शालिपर्ण्याःक्षतकृमिज्वरच्छर्द्यतिसारहा ।

अर्थ-शालिपर्णीका अर्क-क्षतरोग, कृमि, ज्वर, वमन और अतिसार निवारक है ।

पृश्निपर्ण्यर्कगुणाः ।

पृश्निपर्ण्याज्वरश्वासरक्तातीसारदाहहृत् ।

अर्थ-पिठवनका अर्क-ज्वर, श्वास, रक्तातिसार और दाहनाशक है ।

बृहत्यर्कगुणाः ।

वार्त्ताक्याज्वरवैरस्यमलारोचकशूलहा ।

अर्थ-बृहती अर्थात् कटाईका अर्क-ज्वर, मुखकी विरसता, मलरोध, अरुचि और शूलनाशक है ।

श्वेतकण्टकार्यर्कगुणाः ।

कण्टकार्य्यागर्भकर पाचन कफकासहा ।

अर्थ-सफेद कटेरीका अर्क-गर्भकारक, पाचन तथा कफ और खाँसीको दूर करे है ।

कण्टकार्यर्कगुणा ।

कण्टकार्य्यार्दीपनश्वश्लेष्मशोफरुजापहः ।

अर्थ-कटेरीका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा श्लेष्म और सूजनको दूर करे है ।

गोक्षुरार्कगुणा ।

गोक्षुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्रोगवातहा ।

अर्थ-गोखुरूका अर्क-पथरी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ, हृदयरोग, और वात-विनाशक है ।

जीवन्त्यर्कगुणा ।

जीवन्त्या सारहृन्नेत्र्योदोषत्रितयनाशन ।

अर्थ-जीवन्तीका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा त्रिदोष और अतिसार-नाशक है ।

मुद्गपर्ण्यर्कगुणा ।

मुद्गपर्ण्याःशोफदाहग्रहण्यर्शोऽतिसारहृत् ।

अर्थ-मुगवनका अर्क-सूजन, दाह, संग्रहणी और अतिसारनिवारक है ।

माषपर्ण्यर्कगुणा ।

माषपर्ण्या शुक्रकरोवातपित्तज्वरास्रजित् ।

अर्थ-मषवनका अर्क-शुक्रजनक तथा वात पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

श्वेतैरण्डार्कगुणा ।

पञ्चाङ्गुलोद्भव शूलशिर:पीडोदरापह ।

अर्थ-सफेद अण्डका अर्क-शूल, शिरकी पीडा और उदररोगनाशक है ।

रक्तैरण्डार्कगुणा ।

रुबुकोत्थोद्भवःश्वासकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ-लाल अडका अर्क-श्वास, खाँसी, कोढ और आमवातनाशक है ।

मन्दारार्कगुणा ।

मन्दारजोवातकुष्टकण्डूव्रणविषापहः ।

अर्थ-मन्दारका अर्क-वात, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और विषविनाशक है ।

आर्कार्कगुणा ।

अर्क्यर्क प्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरकृमीन्हरेत ।

अर्थ-आकका अर्क-प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग और कृमिनाशक है ।

वज्र्यर्कगुणा ।

वज्रीजोलेपतोहन्याद्व्रणशोफोदरव्रणान् ।

अर्थ-वज्री (एकप्रकारका सेहुड) का अर्क-लेपसे व्रण, सूजन और उदररोगनाशक है ।

सातलार्कगुणा ।

सातलोत्थ·कफानाहपित्तोदावर्त्तशोफहा ।

अर्थ-सातलाका अर्क-कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त और सूजनको हरे है।

लाङ्गल्यर्कगुणा ।

लाङ्गल्यालेपतोहन्याच्छोफार्शोव्रणरोगहृत् ।

अर्थ-कलिहारीके अर्कका लेप करनेसे सूजन, ववासीर और व्रणको हरेहै।

श्वेतकरवीरार्कगुणा ।

करवीरोद्भवोनेत्रशोफकुष्टव्रणापह· ।

अर्थ-सफेद कनेरका अर्क-नेत्ररोग, सूजन, कोढ और व्रणविनाशक है ।

रक्तकरवीरार्कगुणा ।

चण्डातोत्थस्तुविषहृद्भक्षणेलेपनेसुहृत् ।

अर्थ-लाल कनेरका अर्क-भक्षण करनेम विषनाशक और लेप करनेमें विशेष उपकारी है ।

धत्तूरबीजार्कगुणा ।

धत्तूरजोहरेल्लेपाद्यूकाकृमिविषादिकम् ।

अर्थ-धतूरेका अर्क-लेपकरनेसे यूका, कृमि और विषदोषनाशक है ।

वासार्कगुणा ।

वासोद्भवोज्वरच्छर्दिमेहकुष्टक्षयापह ।

अर्थ-अडूसेका अर्क-ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ और क्षयरोगनाशक है ।

पर्पटार्कगुणा ।

पार्पटोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ।

अर्थ-पित्तपापडेका अर्क-रक्तपित्त, भ्रम, तृषा, कफ और ज्वरको हरे है ।

निम्बार्कगुणा ।

निम्बज श्रमतृट्कासज्वरारुचिवमिप्रणुत् ।

अर्थ-नीमका अर्क-श्रम, तृषा, खाँसी, ज्वर, अरुचि और वमननिवारक है ।

गण्डमालाविनाशयेत् ॥ अंत्रवृद्धिंरक्तदोषंनाशयेदितिचस्मृतम् । अम्लवेतसतैलस्याप्येतएवगुणामता॰ ॥

अर्थ-पीलुका तेल-सारक, गरम तथा कोढ, वात, क्षत, सूजन, पित्तरोग, कण्डू, गटमाला, अन्त्रवृद्धि और रुधिरके दोषोंको दूर करैहै अमलवेतके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

शिशपादितैलगुणा ।

शिशपागरुगण्डीरनिर्गुण्डीसरलादिजम् ।
तैलंतुवरतिक्तकटुकवातरक्तजित् ॥
विषकण्डूवातकफकुष्ठदुष्टव्रणाञ्जयेत् ।

अर्थ-सीसों, अगर, गण्डीर, निगुण्डी और सरलादिकका तेल-कषेला, कडवा, चरपरा तथा वातरक्त, विष, खुजली, वात, कफ, कुष्ठ और दुष्टव्रणको नष्ट करै है ।

पृथ्वीकादितैलगुणा ।

पृथ्वीकानीपजीमूतहस्तिकर्णार्कमूलजम् । काम्पिल्लकचतैलन्तुतीक्ष्णपाकेकटुस्मृतम् ॥ सरमुष्णचतिक्तचलघुकुष्ठ कफापहम् । मेहमूर्च्छामदकृमिनाशनपरमंमतम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-पृथ्वीका (हिंगुपत्री) जीमूत (देवदाली) मूली, हस्तिकर्ण, पलाश, नीप (कदम्ब) और कबीलेका तेल-तीक्ष्ण, पचनेमें चरपरा, सारक, गरम, कडवा, हलका तथा कोढ, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा, मद और कृमिको दूर करै है ।

तैलंस्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलमतम् ।
अतःशेषस्यतैलस्यगुणाज्ञेया स्वयोनिवत् ॥

अर्थ-वाग्भटने सर्व तेल स्वयोनि अर्थात् जिस २ औषधीसे जो २ तेल उत्पन्न होताहै वह उसीके समान गुणकरै है ऐसा कहा है इसीसे जो तेल इस ग्रन्थमें नहीं कहे गये उनके गुण अपनी २ योनिके समान जानने ।

अवगाहनयुक्ततैलगुणा ।

स्नेहोऽवगाहनेयुक्तःशरीरेबलमाहरेत् ।
शिरासुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ॥

अर्थ-प्रथम तेलको मलकर पीछे जलसे स्नानकरे इसप्रकार करनेसे शरीरमें बल बढता है तथा शिरामुख, रोमकूप और धमनीनाडियोंके द्वारा तृप्तिकारक है।

शिरस्थितैलमर्दनगुणाः।

नित्यस्नेहार्द्रशिरसःशिरःशूलनजायते। नखालित्यनपालित्यनकेशाःप्रपतन्तिच॥ दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्तिच घनायता। इन्द्रियाणिप्रसीदन्तिसुदृग्भवतिलोचनम्॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन मस्तकमें तेल मलतेहै, उनके शिरशूल नहीं उत्पन्न होताहै तथा केशोंकी अलपता, पकता और केश नहीं पतन होतेहैं और दृढ मूलसहित, काले और सघन केश होजातेहैं तथा इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होतीहै।

कर्णतैलपूरणगुणाः।

कर्णप्रपूरणान्नित्यंनमन्यानहनुग्रहाः।
नोच्चैः श्रुतिर्नबाधिर्य्यंनकर्णेवातजारुज॥(राजवल्लभ)

अर्थ-जो मनुष्य कर्णमें नित्यप्रति तेल डालतेहैं-उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, कानसम्बन्धी ऊचा सुनना आदि दुःसाध्यरोग, बधिरता और कानमें वातादिरोग उत्पन्न नहीं होते हैं।

मर्दनेतैलगुणाः।

"घृतादष्टगुणगुरु"

अर्थ-शरीरमें मलनेसे तेलमें घीकी अपेक्षा आठ गुण अधिकहैं।

तैलनसेवयेद्धीमान्यस्यकस्यचयद्भवेत्।
विषसात्म्यगुणत्वाच्चयोगेतन्नप्रयोजयेत॥

अर्थ-बुद्धिमान् पुरुषको चाहिये कि जिस तिसके दिये हुये तेलको सेवन नहीं करे और इसमें विषकी समानता होनेसे विना विचारे किसी योगमें भी प्रयोग नहीं करे।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तैलवर्गः समाप्तः॥ १८॥

अथ अर्कवर्गः।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिकेवलार्कगुणप्रिये।

अर्थ-इसके उपरान्त केवल अर्कोंके गुण कहता हूं।

गण्डमालांविनाशयेत् ॥ अन्त्रवृद्धिंरक्तदोषंनाशयेदितिचस्मृ-
तम् । अम्लवेतसतैलस्याप्येतएवगुणामता ॥

अर्थ-पीलुका तेल-सारक, गरम तथा कोढ, वात, क्षत, सूजन, पित्तरोग, कण्डू, गडमाला, अन्त्रवृद्धि और रुधिरके दोषोंको दूर करेहै अमलवेतके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

शिंशपादितैलगुणा ।

शिंशपागरुगण्डीरनिर्गुण्डीसरलादिजम् ।
तैलंतुवरतिक्तकटुकवातरक्तजित् ॥
विषकण्डूवातकफकुष्ठदुष्टव्रणाञ्जयेत् ।

अर्थ-सीसों, अगर, गण्डीर, निर्गुण्डी और सरलादिकका तेल-कषेला, कडवा, चरपरा तथा वातरक्त, विष, खुजली, वात, कफ, कुष्ठ और दुष्टव्रणको नष्ट करे है ।

पृथ्वीकादितैलगुणा ।

पृथ्वीकानीपजीमूतहस्तिकर्णार्कमूलजम् । काम्पिल्लकचतै-
लन्तुतीक्ष्णपाकेकटुस्मृतम् ॥ सरमुष्णचतिक्तचलघुकुष्ठ
कफापहम् ।मेहमूर्च्छामदकृमिनाशनंपरममतम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-पृथ्वीका (हिंगुपत्री) जीमूत (देवदाली) मूली, हस्तिकर्ण, पलाश, नीप (कदम्ब) और कबीलेका तेल-तीक्ष्ण, पचनेमे चरपरा, सारक, गरम, कडवा, हलका तथा कोढ, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा, मद और कृमिको दूर करे है ।

तैलस्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलमतम् ।
अतःशेषस्यतैलस्यगुणाज्ञेयाः स्वयोनिवत् ॥

अर्थ-वाग्भटने सर्व तेल स्वयोनि अर्थात् जिस २ औषधीसे जो २ तेल उत्पन्न होताहै वह उसीके समान गुणकरे है ऐसा कहा है इसीसे जो तेल इस ग्रन्थमें नहीं कहे गये उनके गुण अपनी २ योनिके समान जानने ।

अवगाहनयुक्ततैलगुणा ।

स्नेहोऽवगाहनेयुक्तःशरीरेबलमाहरेत् ।
शिरामुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत ॥

अर्थ–प्रथम तेलको मलकर पीछे जलसे स्नानकरे इसप्रकार करनेसे शरीरमें बल बढता है तथा शिरामुख, रोमकूप और धमनीनाडियोंके द्वारा तृप्तिकारक है ।

शिरसितैलमर्द्दनगुण ।

नित्यस्नेहार्द्रशिरस शिर शूलनजायते । नखालित्यनपालित्यनकेशा·प्रपतन्तिच ॥ दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्तिच घनायताः । इन्द्रियाणिप्रसीदन्तिसुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ–जो मनुष्य प्रतिदिन मस्तकमें तेल मलतेहैं, उनके शिरशूल नहीं उत्पन्न होताहै तथा केशोंकी अल्पता, पकता और केश नहीं पतन होतेहैं और दृढ मूलसहित, काले और सघन केश होजातेहैं तथा इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंम सुदृश्पता उत्पन्न होतीहै ।

कर्णतैलपूरणगुण ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यनमन्यानहनुग्रहाः ।
नोच्चै श्रुतिर्नबाधिर्य्यंनकर्णेवातजारुज ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ–जो मनुष्य कर्णमे नित्यप्रति तेल डालतेहैं–उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, कानसम्बन्धी ऊचा सुनना आदि दु साध्यरोग, बधिरता और कानमें वातादिरोग उत्पन्न नहीं होते हैं ।

मर्द्दनेतैलगुण ।

"घृतादष्टगुणगुरु"

अर्थ–शरीरम मलनेसे तेलमें घीकी अपेक्षा आठ गुण अधिकहै ।

तैलनसेवयेद्धीमान्यस्यकस्यचयद्भवेत् ।
विषसात्म्यगुणत्वाच्चयोगेतन्नप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–बुद्धिमान् पुरुषको चाहिये कि जिस तिसके दिये हुये तेलको सेवन नहीं करे और उसमें विषकी समानता होनेसे विना विचारे किसी योगमें भी प्रयोग नहीं करे ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तैलवर्ग समाप्त ॥ १८ ॥

अथ अर्कवर्गः ।

अथात मप्रवक्ष्यामिकेवलार्कगुणप्रिये ।

अर्थ–इसके उपरान्त केवल अर्कोंके गुण कहता हू ।

हरीतक्यर्कगुणाः ।

हरीतक्याःशूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः ।

अर्थ-हरडका अर्क-शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और आनाह रोगनाशक है।

बिभीतकार्कगुणाः ।

विभीतकस्यतृट्छर्दिकफकासविनाशनः ।

अर्थ-बहेडेका अर्क-तृषा, वमन, कफ और खाँसीको हरे है ।

आमलक्यर्कगुणाः ।

आमलक्यास्त्रिदोषास्रपित्तमोहविनाशयेत् ।

अर्थ-आमलेका अर्क-त्रिदोष, रक्तपित्त और मोहनाशक है ।

नागरार्कगुणाः ।

शुण्ठ्याविबन्धामवातशूलश्वासबलासहृत् ।

अर्थ-सोंठका अर्क-मलबद्धता, आमवात, शूल, श्वास और कफनाशक है ।

आर्द्रकार्कगुणाः ।

आर्द्रकस्यज्वरदाहंहरेद्रुच्यग्निदीप्तिकृत ।

अर्थ-अदरखका अर्क-ज्वर और दाहको हरे है, रुचिकारक अग्निप्रदीपक है।

पिप्पल्यर्कगुणाः ।

पिप्पल्याःश्वासकासामवातार्शोज्वरशूलहृत ।

अर्थ-पीपलका अर्क-श्वास, खाँसी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूलको नष्ट करे है ।

मरीचार्कगुणाः ।

मरीचकःश्वासकृमीन्हरेत्सर्वान्गदानपि ।

अर्थ-कालीमिर्चका अर्क-श्वास, कृमि और अन्यान्य सर्व रोगोंको नाश करे है ।

पिप्पलीमूलार्कगुणाः ।

ग्रन्थिकस्यप्लीहगुल्मकफवातहरःपरः ।

अर्थ-पीपरामूलका अर्क-प्लीहा, गुल्म, कफ और वातविनाशक है ।

चव्यार्कगुणाः ।

चव्यार्कोऽत्यन्तरुचिकृद्विशेषाद्गुदजापह ।

अर्थ-चव्यका अर्क-अत्यन्तरुचिकारक और विशेषकरके गुदारोगनाशकरे।

गजपिप्पल्यर्कगुणा ।

अर्कस्तुगजपिप्पल्यावातश्लेष्माग्निमान्द्यनुत् ।

अर्थ-गजपीपलका अर्क-वात, कफ और मन्दाग्निनाशक है।

चित्रकार्कगुणा ।

चित्रकस्याग्निकृत्कासग्रहणीकफशोफहा ।

अर्थ-चीतेका अर्क-अग्निजनक तथा खाँसी, सग्रहणी, कफ और शोफको हरे है।

यमान्यर्कगुणा ।

यमान्या पाचनोरुच्योदीपनः शुक्रशूलहृत् ।

अर्थ-अजवायनका अर्क-पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्र और शूलनाशक है।

अजमोदार्कगुणा ।

अजमोदोद्भवोवातकफहावस्तिशोधनः ।

अर्थ-अजमोदका अर्क-वात कफनाशक और वस्तिशोधक है।

पारसीकयमान्यर्कगुणा ।

पारसीकयमान्यास्तुग्राहीपाचकमादकः ।

अर्थ-खुरासानी अजवायनका अर्क-मलरोधक, पाचक और मदकारक है

जीरकार्कगुणा ।

जीरकस्यतुसग्राहीगर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

अर्थ-जीरेका अर्क-ग्राही और गर्भाशयशोधक है।

कृष्णजीरकार्कगुणा ।

कृष्णजीरस्यचक्षुष्योगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ।

अर्थ-कालेजीरेका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा गुल्म, वमन और अतिसारको दूरकरेहै।

कारवीजार्कगुणा ।

कारव्यावलकृच्चार्कोज्वरघ्न पाचनःसरः ।

अर्थ-कलोंजीका अर्क बलकारक, ज्वरनाशक, पाचक और सारक है।

धान्यकार्कगुणा ।

धान्यकस्यतृषादाहवमिश्वासत्रिदोषजित् ।

अर्थ-धनियेका अर्क-तृषा, दाह, वमन, श्वास और त्रिदोषनाशक है।

शतपुष्पार्कगुणाः ।

मिश्याज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत ।

अर्थ-सौंफका अर्क-ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगनाशक है ।

मिश्रेयार्कगुणाः ।

मिश्रेयायावह्निमान्द्ययोनिशूलकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-सोयेका अर्क-मन्दाग्नि, योनिशूल और कृमिनाशक है ।

ज्वालामरिचार्कगुणाः ।

ज्वालामरीचकस्यापस्मारभूतत्रिदोषनुत् ।

अर्थ-लालमिर्चका अर्क-अपस्मार, भूत व त्रिदोषनाशकहै ।

मेथिकार्कगुणाः ।

मेथिकाया श्लेष्मवातज्वरामकफनाशनः ।

अर्थ-मेथीका अर्क-श्लेष्म, वात, ज्वर, आम और कफनाशक है ।

वनमेथिकार्कगुणाः ।

वनमेथ्या सर्वरोगान्हरेत्कुञ्जरवाजिनाम् ।

अर्थ-वनमेथीका अर्क-हाथी और घोडोंके सर्व रोगोंको हरे है ।

चन्द्रसूरार्कगुणाः ।

चन्द्रसूरस्यहिक्कासृग्वातहृत्पुष्टिवर्द्धनः ।

अर्थ-हालोंका अर्क-हुचकी, रुधिरविकार और वातनाशक है तथा पुष्टिवर्द्धक है ।

हिंग्वर्कगुणाः ।

हिङ्गुनः पाचनोरुच्यः कृमिशूलोदरापहः ।

अर्थ-हींगका अर्क-पाचन, रुचिकारक तथा कृमि, शूल और उदररोग-निवारक है ।

वचार्कगुणाः ।

वचायावह्निवमिकृद्विबन्धाध्मानशूलहृत ।

अर्थ-वचाका अर्क-अग्निजनक, वमनकारक तथा विबन्ध, आध्मान और शूलको हरे है ।

पारसीकवचार्कगुणाः ।

पारसीकवचायास्तुभूतोन्मादबलंहरेत् ।

अर्थ-खुरासानी वचका अर्क-भूतोन्माद और बलनाशक है ।

कुलिञ्जनार्कगुणाः।

कुलिञ्जनस्यस्वरकृद्धृत्कण्ठमुखशोधनः।

अर्थ-कुलिजनका अर्क-स्वरको शुद्ध करनेवाला तथा कण्ठ और मुखशोधक है।

स्थूलग्रन्थिवचार्कगुणाः।

स्थूलग्रन्थिवचस्यार्कोविशेषात्कफकासहृत्।

अर्थ-स्थूलग्रन्थि वचका अर्क-विशेष करके कफनाशक है।

द्वीपान्तरवचार्कगुणाः।

द्वीपान्तरवचायास्तुहरेच्छूलफिरङ्गकम्।

अर्थ-चोपचीनीका अर्क-शूल और फिरंगरोगनाशक है।

हपुषार्कगुणाः।

हपुषायाहरेत्प्लीहविषमोहञ्चदारुणम्।

अर्थ-हाऊबेरका-अर्क-प्लीहा, विष और दारुणमूर्च्छाको हरैहै।

क्षुद्रवपुषार्कगुणाः।

वपुषायाःसमीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत्।

अर्थ-छोटेहाऊबेरका अर्क-वात, ववासीर, संग्रहणी गुल्म और शूलनाशक है।

विडङ्गार्कगुणाः।

विडङ्गस्योदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत्।

अर्थ-वायविडगका अर्क-उदररोग, कफ, कृमि, वात और विबंध नाशकहै।

तुम्बुरोरर्कगुणाः।

तुम्बुरोर्गुरुताश्वासप्लीहागुल्मकृमीन्हरेत्।

अर्थ-तुम्बुरुका अर्क-शरीरका भारीपन, श्वास, प्लीहा, गुल्म और कृमिको दूर करे है।

वंशलोचनार्कगुणाः।

वंशलोचनजस्तृष्णाक्षयश्वासज्वरान्हरेत्।

अर्थ-वंशलोचनका अर्क-तृष्णा, क्षय, श्वास और ज्वरको हरै है।

समुद्रफेनार्कगुणाः।

समुद्रफेनजःशीतोरेचकःकफहृत्परः।

अर्थ-समुद्रफेनका अर्क-शीतल, दस्तावर और कफनाशक है।

जीवकार्कगुणा ।

जीवकोत्थ शुक्रकफबलकृच्छीतलःसमः ।

अर्थ-जीवकका अर्क-शुक्र, कफ और बलकारक और समशीतल है ।

ऋषभकार्कगुणा ।

आर्षभ पित्तदाहास्रकासवातक्षयापहः ।

अर्थ-ऋषभकका अर्क-पित्त दाह, रुधिरविकार, खाँसी, वात और क्षयको क्षयकरे है ।

मेदार्कगुणा ।

सुनामेदोद्भवार्कस्तुहृश्यःस्तन्यःकफावहः ।

अर्थ-मेदका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, स्तनामें दूध करनेवाला और कफकारी है ।

महामेदार्कगुणा ।

महामेदोद्भव शीतोरक्तवातज्वरप्रणुत ।

अर्थ-महामेदाका अर्क-शीतल तथा वात, रक्त और ज्वरनाशक है ।

काकोल्यर्कगुणा ।

काकोल्या शुक्रल शीतोपित्तशोपज्वरापहः ।

अर्थ-काकोलीका अर्क-शुक्रजनक, शीतल तथा पित्त, शोप और ज्वरनाशक है ।

क्षीरकाकोल्यर्कगुणा ।

क्षीरकाकोलिकाजातोबृंहणोदाहवातहा ।

अर्थ-क्षीरकाकोलीका अर्क-पुष्टिकारक तथा दाह और वातविनाशक है ।

ऋद्ध्यर्कगुणा ।

ऋद्ध्याबल्यस्त्रिदोपघ्नोरक्तपित्तविनाशकः ।

अर्थ-ऋद्धिका अर्क-बलकारी, त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तनाशक है ।

वृद्ध्यर्कगुणा ।

वृद्ध्यागर्भगत शीत क्षतकासक्षयापहः ।

अर्थ-वृद्धिका अर्क-शीतल तथा क्षत खाँसी और क्षयरोगनाशक है ।

मधुयष्ट्यर्कगुणा ।

मधुयष्ट्या केशकर स्वर्य्यं पित्तानिलास्रजित् ।

अर्थ-मुलेठीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला तथा पित्त, वात और रुधिरके विकारको दूरे है ।

जलमधुयष्ट्यर्कगुणा ।

जलयष्ट्याविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः ।

अर्थ–जलमुलेठीका अर्क–विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षयरोगनाशक है।

काम्पिल्लार्कगुणा ।

काम्पिल्लस्यविरेकीस्यान्मेहनस्यविकारनुत् ।

अर्थ–कवीलेका अर्क–विरेचक और मूत्रविकारनिवारक है ।

आरग्वधार्कगुणाः ।

आरग्वधस्यपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलहृत् ।
कण्डूमेहश्वासकासकृमिकुष्ठज्वरापहः ॥

अर्थ–अमलतासका अर्क–रक्तपित्त, वात, उदावर्त्त, शूल, कण्डू, प्रमेह, श्वास, खाँसी, कृमि, कोढ और ज्वरनाशक है ।

भूनिम्बार्कगुणा ।

भूनिम्बस्यतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ।

अर्थ–चिरायतेका अर्क–तृषा, कोढ, ज्वर, व्रण और कृमिनाशक है ।

वत्सार्कगुणाः ।

भद्रमानरक्तपित्तास्रकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।

अर्थ–इन्द्रजौका अर्क–रक्तपित्त, कृमि, विसर्प और कुष्ठको नष्ट करे है ।

मदनफलार्कगुणा ।

मदनोत्थश्छर्द्दनेनचतुर्थज्वरकादिहृत् ।

अर्थ–मैनफलका अर्क–वमनकारक और चातुर्थिक (चौथिया) ज्वरनिवारक है ।

रास्नार्कगुणाः ।

रास्नोद्भवःसमीरास्रवातशूलोदरापहः ।

अर्थ–रास्नाका अर्क–वातरक्त, वातशूल और उदररोगनाशक है ।

नागभिन्नार्कगुणा ।

नागभिन्नोद्भवाभोगीलूताद्याखुविकारहृत् ।

अर्थ–नाकुलीका अर्क–सर्प, मकडी और मूसे आदिके विषको हरे है ।

माचिकार्कगुणा ।

माचिकाजस्तुपित्तास्रपक्वातीसारहालघुः ।

अर्थ–मोईयेका अर्क–हलका, रक्तपित्त और पक्वातिसारनाशक है ।

तेजस्विन्यर्कगुणा ।

तेजस्विन्या·श्वासकासकफहृद्वह्निदीपनः ।

अर्थ-तेजवलका अर्क-श्वास, खाँसी और कफनाशक है तथा अग्निप्रदीपक है ।

ज्योतिष्मत्यर्कगुणा ।

ज्योतिष्मत्यावान्तिकरोवह्निबुद्धिस्मृतिप्रदः ।

अर्थ-मालकाँगुनीका अर्क-वमनकारक तथा अग्नि, बुद्धि और स्मरण शक्तिवर्द्धक है ।

कुष्ठार्कगुणा ।

कुष्ठस्यहन्तिवातास्रकासकुष्ठमरुत्कफान् ।

अर्थ-कूठका अर्क-वातरक्त, खाँसी, कोढ, वात और कफनाशक है ।

पौष्करार्कगुणा ।

पौष्करस्यारुचिश्वासान्विशेपात्पार्श्वशूलनुत् ।

अर्थ-पोहकरमूलका अर्क-अरुचि, श्वास और विशेपकरके पसवाडेकी पीडाको दूर करे है ।

क्षीरिण्यर्कगुणा ।

हेमाह्वायारेकवान्तिकरःकण्डूविनाशनः ।

अर्थ-स्वर्णक्षीरीका अर्क-विरेचक, वमनकारक और कण्डूनाशक है ।

शृङ्ग्यर्कगुणा ।

शृङ्गीहरेदूर्ध्ववातहिक्कातृष्णाक्षयज्वरान् ।

अर्थ-काकडाशिंगीका अर्क-उर्ध्ववात, हिचकी, तृषा, क्षय और ज्वरनाशक है ।

कट्फलार्कगुणा ।

कट्फलोत्थ श्वासकासप्रमेहार्शोऽरुचिंहरेत् ।

अर्थ-कायफलका अर्क-श्वास, खाँसी, प्रमेह, बवासीर और अरुचिको दूर करे है ।

भार्ग्यर्कगुणा ।

भार्ग्याहरेत्कफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारंगीका अर्क-कफ, श्वास, पीनस, ज्वर और वातविनाशक है ।

पाषाणभेदार्कगुणा ।

पाषाणभेदजोयोनिरोगहृच्छ्वासगुल्महा ।

अर्थ–पाषाणभेदका अर्क–योनिरोग, श्वास और गुल्मनाशक है ।

धातक्यर्कगुणा ।

धातकीजस्तृषासारविषकीटविसर्पजित् ।

अर्थ–धायके फूलोंका अर्क–तृषा, अतिसार, विष, कृमि और विसर्परोगनाशक है ।

समङ्गार्कगुणा ।

माञ्जिष्ठजोविषश्लेष्मरक्तातीसारकुष्ठहा ।

अर्थ–मजीठका अर्क–विष, श्लेष्म, रक्तातिसार और कुष्ठनाशक है ।

कुसुम्भार्कगुणा ।

कुसुम्भजोवर्णकरोरक्तपित्तकफापहः ।

अर्थ–कसूमका अर्क–वर्णको सुंदर करनेवाला तथा रक्तपित्त और कफनाशक है ।

लाक्षार्कगुणा ।

लाक्षाजःकृमिवीसर्पव्रणोरःक्षतकुष्ठहा ।

अर्थ–लाखका अर्क–कृमि, विसर्प, व्रण, उरःक्षत और कुष्ठनाशक है ।

हरिद्रार्कगुणा ।

हरिद्रायामेहशोथत्वग्दोषव्रणपाण्डुनुत् ।

अर्थ–हलदीका अर्क–प्रमेह, सूजन, त्वचाके दोष, व्रण और पाण्डुरोगनाशक है ।

आरण्यहरिद्रार्कगुणा ।

आरण्यकहरिद्राया कुष्ठवातास्रनाशनः ।

अर्थ–वनहलदीका अर्क–कोढ, वात और रक्तविकारविनाशक है ।

कर्पूरहरिद्रार्कगुणा ।

कर्पूरकहरिद्रायाःसर्वकण्डूविनाशनः ।

अर्थ–कपूरहलदीका अर्क–सर्वप्रकारके कण्डूनाशक है ।

दारुहरिद्रार्कगुणा ।

दार्व्याविशेषतोलेपान्नेत्रकर्णस्यरोगनुत् ।

अर्थ–दारुहलदीका अर्क–विशेष करके लेप करनेसे नेत्ररोग और कर्णरोगको हरै है ।

रसाञ्जनार्कगुणाः ।

रसाञ्जनोद्भवोनेत्रविकारव्रणदोषनुत् ।

अर्थ-रसाञ्जन अर्थात् रसौतका अर्क-नेत्रविकार और व्रणदोषनिवारक है ।

अवल्गुजार्कगुणाः ।

वाकुच्याःकृमिविष्टम्भपाण्डुशोफकफापहः ।

अर्थ-बावचीका अर्क-कृमि, विष्टम्भ, पाण्डु, सूजन और कफनाशक है ।

चक्रमर्दार्कगुणाः ।

प्रपुन्नाटस्यहन्त्येवकण्डूदद्रुविषानिलान् ।

अर्थ-चक्रवडका अर्क-खुजली, दाद विष और वातविनाशक है ।

अतिविषार्कगुणाः ।

विषजोदीप्तिकार्य्यर्कःकफपित्तातिसारहा ।

अर्थ-अतीसका अर्क अग्निप्रदीपक तथा कफ, पित्त और अतिसारनाशक है।

लोध्रार्कगुणाः ।

लोध्रजःशीतलोग्राहीचक्षुष्यःकफपित्तनुत् ।

अर्थ-लोधका अर्क-शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ और पित्तनाशक है ।

बृहत्पत्रार्कगुणाः ।

बृहत्पत्रोद्भवोनेत्र्योज्वरातीसारशोथहृत् ।

अर्थ-पठानीलोधका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, ज्वर, अतिसार और सूजनको हरे है ।

भल्लातकार्कगुणाः ।

भल्लातकोद्भवोहन्याज्ज्वरोदरकृमिव्रणान् ।

अर्थ-भिलावेका अर्क- ज्वर, उदररोग, कृमि और व्रणनाशक है ।

गुडूच्यर्कगुणाः ।

गुडूच्यादीपनःश्वासकासपाण्डुज्वरापहः ।

अर्थ-गिलोयका अर्क-दीपन तथा श्वास, खाँसी, पाण्डुरोग और ज्वरको हरे है ।

बिल्वार्कगुणाः ।

बैल्वःश्लेष्महरोवल्योलघुरूष्णश्चपाचनः ।

अर्थ-बेलका अर्क-कफनाशक, बलदायक, हलका, गरम और पाचक है ।

काश्मर्य्यर्कगुणा ।

गाम्भारीजोभ्रान्तितृष्णाशूलार्शोविषदाहनुत ।

अर्थ-कुम्भेरका अर्क-भ्रान्ति, तृषा, शूल, ववासीर, विष और दाहनाशक है ।

पाटलार्कगुणा ।

पाटल्याश्छर्दिशोफास्रतृष्णादाहारुचीर्हरेत् ।

अर्थ-पाडलका अर्क-वमन, सूजन, रुधिरविकार, तृषा, दाह और अरुचिनिवारक है ।

अग्निमन्थार्कगुणा ।

अग्निमन्थोद्भव शोफक्रिमिपाण्डुबलासनुत् ।

अर्थ-अरणीका अर्क-सूजन, कृमि, पाण्डु, और कफनाशक है ।

श्योनाकार्कगुणा ।

श्योनाकजस्तुगुल्मार्शः क्रिमिह्रुद्रुचिदीप्तिकृत् ।

अर्थ-श्योनाकका अर्क-गुल्म, ववासीर और कृमिनाशक और रुचिदीपक है ।

शालिपर्ण्यर्कगुणा ।

शालिपर्ण्याः क्षतक्रिमिज्वरच्छर्द्यतिसारहा ।

अर्थ-शालिपर्णीका अर्क-क्षतरोग, कृमि, ज्वर, वमन और अतिसार निवारक है ।

पृश्निपर्ण्यर्कगुणा ।

पृश्निपर्ण्याज्वरश्वासरक्तातीसारदाहहृत् ।

अर्थ-पिठवनका अर्क-ज्वर, श्वास, रक्तातिसार और दाहनाशक है ।

बृहत्यर्कगुणा ।

वार्त्ताक्याज्वरवैरस्यमलारोचकशूलहा ।

अर्थ-बृहती अर्थात् कटाईका अर्क-ज्वर, मुखकी विरसता, मलदोष, अरुचि और शूलनाशक है ।

श्वेतकण्टकार्यर्कगुणा ।

कण्टकार्य्यागर्भकरःपाचन कफकासहा ।

अर्थ-सफेद कटेरीका अर्क-गर्भकारक, पाचन तथा कफ और खांसीको दूर करे है ।

कण्टकार्यर्कगुणाः ।

कण्टकार्य्यार्दीपनश्श्लेष्मशोफरुजापहः ।

अर्थ-कटेरीका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा श्लेष्म और सूजनको दूर करे है ।

गोक्षुरार्कगुणाः ।

गोक्षुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्रोगवातहा ।

अर्थ-गोखुरूका अर्क-पथरी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग, और वात विनाशक है ।

जीवन्त्यर्कगुणाः ।

जीवन्त्याः सारहृन्नेत्र्योदोषत्रितयनाशनः ।

अर्थ-जीवन्तीका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा त्रिदोष और अतिसार-नाशक है ।

मुद्गपर्ण्यर्कगुणाः ।

मुद्गपर्ण्याःशोफदाहग्रहण्यर्शोऽतिसारहृत् ।

अर्थ-मुगवनका अर्क-सूजन, दाह, संग्रहणी और अतिसारनिवारक है ।

माषपर्ण्यर्कगुणाः ।

माषपर्ण्या शुक्रकरोवातपित्तज्वरास्रजित् ।

अर्थ-मषवनका अर्क-शुक्रजनक तथा वात पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

श्वेतैरण्डार्कगुणाः ।

पञ्चाङ्गुलोद्भव शूलशिरःपीडोदरापहः ।

अर्थ-सफेद अण्डका अर्क-शूल, शिरकी पीडा और उदररोगनाशक है ।

रक्तैरण्डार्कगुणाः ।

रुबुकोत्थोद्भव श्वासकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ-लाल अंडका अर्क-श्वास, खाँसी, कोढ और आमवातनाशक है ।

मन्दारार्कगुणाः ।

मन्दारजोवातकुष्ठकण्डूव्रणविषापहः ।

अर्थ-मन्दारका अर्क-वात, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और विषविनाशक है ।

अर्कार्कगुणाः ।

अर्क्यर्क प्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-आकका अर्क-प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग और कृमिनाशक है ।

वज्र्यर्कगुणा ।

वज्रीजोलेपतोहन्याद्व्रणशोफोदरव्रणान् ।

अर्थ-वज्री (एकप्रकारका सेहुड) का अर्क-लेपसे व्रण, सूजन और उदररोगनाशक है ।

सातलाकगुणा ।

सातलोत्थ·कफानाहपित्तोदावर्त्तशोफहा ।

अर्थ-सातलाका अर्क-कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त और सूजनको हरे है।

लांगल्यर्कगुणा ।

लाङ्गल्यालेपतोहन्याच्छोफार्शोव्रणरोगहृत् ।

अर्थ-कलिहारीके अर्कका लेप करनेसे सूजन, बवासीर और व्रणको हरेहै।

श्वेतकरवीरार्कगुणा ।

करवीरोद्भवोनेत्रशोफकुष्ठव्रणापह· ।

अर्थ-सफेद कनेरका अर्क-नेत्ररोग, सूजन, कोढ और व्रणविनाशक है ।

रक्तकरवीरार्कगुणा ।

चण्डातोत्थस्तुविषहृद्भक्षणेलेपनेसुहृत् ।

अर्थ-लाल कनेरका अर्क-भक्षण करनेमे विषनाशक और लेप करनेमें विशेष उपकारी है ।

धत्तूरबीजाकगुणा ।

धत्तूरजोहरेल्लेपाद्यूकाक्रिमिविषादिकम् ।

अर्थ-धतूरेका अर्क-लेपकरनेसे यूका, कृमि और विषदोषनाशक है ।

वासार्कगुणा ।

वासोद्भवोज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापह ।

अर्थ-अडूसेका अर्क-ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ और क्षयरोगनाशक है ।

पर्पटार्कगुणा ।

पार्पटोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ।

अर्थ-पित्तपापडेका अर्क-रक्तपित्त, भ्रम, तृषा, कफ और ज्वरको हरे है ।

निम्बार्कगुणा ।

निम्बज भ्रमतृट्कासज्वरारुचिवमिप्रणुत् ।

अर्थ-नीमका अर्क-भ्रम, तृषा, खाँसी, ज्वर, अरुचि और [illegible]

कण्टकार्यर्कगुणाः ।

कण्टकार्य्यादीपनश्श्लेष्मशोफरुजापहः ।

अर्थ-कटेरीका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा श्लेष्म और सूजनको दूर करे है।

गोक्षुरार्कगुणाः ।

गोक्षुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्रोगवातहा ।

अर्थ-गोखुरुका अर्क-पथरी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग, और वात विनाशक है।

जीवन्त्यर्कगुणाः ।

जीवन्त्या सारहन्नेत्र्योदोषत्रितयनाशनः ।

अर्थ-जीवन्तीका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा त्रिदोष और अतिसार-नाशक है।

मुद्गपर्ण्यर्कगुणाः ।

मुद्गपर्ण्याःशोफदाहग्रहण्यर्शोऽतिसारहृत् ।

अर्थ-मुगवनका अर्क-सूजन, दाह, संग्रहणी और अतिसारनिवारक है।

माषपर्ण्यर्कगुणाः ।

माषपर्ण्या शुक्रकरोवातपित्तज्वरास्रजित् ।

अर्थ-मषवनका अर्क-शुक्रजनक तथा वात पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करे है।

श्वेतैरण्डार्कगुणाः ।

पञ्चागुलोद्भव शूलशिरःपीडोदरापहः ।

अर्थ-सफेद अण्डका अर्क-शूल, शिरकी पीडा और उदररोगनाशक है।

रक्तैरण्डार्कगुणाः ।

रुबुकोत्थोद्भवःश्वासकासकुष्ठामामारुतान् ।

अर्थ-लाल अण्डका अर्क-श्वास, खाँसी, कोढ और आमवातनाशक है।

मन्दारार्कगुणाः ।

मन्दारजोवातकुष्ठकण्डूव्रणविषापहः ।

अर्थ-मन्दारका अर्क-वात, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और विषविनाशक है।

अर्कार्कगुणाः ।

अर्कार्क प्लीहगुल्मार्शश्लेष्मोदरकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-आकका अर्क-प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग और कृमिनाशक है।

वज्र्यर्कगुणा।

वज्रीजोलेपतोहन्याद्व्रणशोफोदरव्रणान्।

अर्थ-वज्री (एकप्रकारका सेहुड) का अर्क-लेपसे व्रण, सूजन और उदररोगनाशक है।

सातलाकगुणा।

सातलोत्थ.कफानाहपित्तोदावर्त्तशोफहा।

अर्थ-सातलाका अर्क-कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त और सूजनको हरे है।

लांगल्यर्कगुणा।

लाङ्गल्यालेपतोहन्याच्छोफार्शोव्रणरोगहृत्।

अर्थ-कलिहारीके अर्कका लेप करनेसे सूजन, बवासीर और व्रणको हरेहै।

श्वेतकरवीरार्कगुणा।

करवीरोद्भवोनेत्रशोफकुष्ठव्रणापह.।

अर्थ-सफेद कनेरका अर्क-नेत्ररोग, सूजन, कोढ और व्रणविनाशक है।

रक्तकरवीरार्कगुणा।

चण्डातोत्थस्तुविपहृद्भक्षणेलेपनेसुहृत्।

अर्थ-लाल कनेरका अर्क-भक्षण करनेमें विपनाशक और लेप करनेमें विशेष उपकारी है।

धत्तूरबीजार्कगुणा।

धत्तूरजोहरेल्लेपाद्यूकाकृमिविपादिकम्।

अर्थ-धतूरेका अर्क-लेपकरनेसे यूका, कृमि और विपदोपनाशक है।

वासार्कगुणा।

वासोद्भवोज्वरच्छर्दिमेहकुष्टक्षयापह।

अर्थ-अडूसेका अर्क-ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ और क्षयरोगनाशक है।

पर्पटार्कगुणा।

पार्पटोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान्।

अर्थ-पित्तपापडेका अर्क-रक्तपित्त, भ्रम, तृपा, कफ और ज्वरको हरे है।

निम्बार्कगुणा।

निम्बज श्रमतृट्कासज्वरारुचिवमिप्रणुत्।

अर्थ-नीमका अर्क-श्रम, तृपा, खाँसी, ज्वर, अरुचि और वमननिवारक है।

महानिम्बार्कगुणाः ।

महानिम्बोद्भवोगुल्ममूषिकाविषनाशनः ।

अर्थ-बकायननीमका अर्क गुल्म और मूषेके विषको हरे है ।

पारिभद्रार्कगुणाः ।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोफमेदक्रिमिप्रणुत ।

अर्थ-फरहदका अर्क-वात, श्लेष्म, शोफ, मेद और कृमिविनाशक है ।

काञ्चनारार्कगुणाः ।

काञ्चनारोगण्डमालागुदभ्रंशव्रणापहः ।

अर्थ-कचनारका अर्क-गण्डमाला, गुदभ्रंश और व्रणविनाशक है ।

कोविदारार्कगुणाः ।

कोविदारस्तुपित्तास्रप्रदरक्षयकासहा ।

अर्थ-लालकचनारका अर्क-पित्त, रुधिरविकार, क्षय और खाँसीको हरे है ।

रक्तशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

शोभाञ्जनार्कोरुचिकृच्छुक्रकृन्मलग्राहिदीपनः ।

अर्थ-लालसँजिनेका अर्क-रुचिकारक, शुक्रजनक, मलरोधक और दीपन है।

श्वेतशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

मधुशिग्रूद्भवोहन्याद्विद्रधिश्वयथुक्रिमीन् ।

अर्थ-मधुशिग्रु वा सफेद सँजिनेका अर्क-विद्रधि, सूजन और कृमिरोगनाशक है ।

शिग्रुभार्गगुणाः ।

शिग्रूजोविषहृन्नेत्र्यस्तस्यनस्याच्छिरोर्तिहृत् ।

अर्थ-सामान्यसँजिनेका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, विषविनाशक और इसका नासलेनेसे शिरकी पीडा दूर होती है ।

गिरिकर्ण्यर्कगुणाः ।

गिरिकर्ण्याः कर्णशूलशोफव्रणविषापहः ।

अर्थ-कोयलीका अर्क-कर्णशूल, सूजन, व्रण और विषविनाशक है ।

सिन्धुवारार्कगुणाः ।

सिन्धुवारोद्भवोहन्तिशूलशोफाममारुतान् ।

अर्थ-सम्हालूका अर्क-शूल, सूजन और आमवातनाशक है ।

निर्गुण्ड्यर्कगुणाः ।

निर्गुण्ड्यर्कोहरेज्जन्तुव्रणकुष्ठारुचिर्लघु ।

अर्थ–निर्गुण्डीका अर्क–हलका तथा कृमि, व्रण, कोढ और अरुचिनाशक है।

कुटजार्कगुणा।

कौटजोदीपनःशीत कफतृष्णामकुष्ठजित्।

अर्थ–कुडेका अर्क–दीपन, शीतल तथा कफ, तृषा, आम और कुष्ठनाशक है।

करञ्जार्कगुणा।

कारञ्जःकफगुल्मार्शोव्रणकृमिरुजापहः।

अर्थ–करजका अर्क–कफ, गुल्म, ववासीर, व्रण और कृमिरोगनाशक है।

घृतकरञ्जार्कगुणा।

घृतकारञ्जकोभेदीवातार्श कृमिकुष्ठजित्।

अर्थ–घृतकरजका अर्क–भेदक तथा वात, ववासीर, कृमि और कुष्ठनाशक है।

करञ्जार्कगुणा। -

कारञ्जोवान्तिवातार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित्।

अर्थ–करजुयेका अर्क–वमन, वात, ववासीर, कृमि, कोढ और प्रमेहनाशक है।

श्वेतगुञ्जार्कगुणा।

उच्चटार्क केशकरोवातपित्तकफापह।

अर्थ–सफेद घुघुचीका अर्क–केशको उत्पन्न करनेवाला तथा वात, पित्त और कफनाशक है।

रक्तगुञ्जार्कगुणा।

गुञ्जायाहरतेश्वासमुखशोपश्रमज्वरान्।

अर्थ–घुघुचीका अर्क–श्वास, मुखशोष, श्रम और ज्वरनाशक है।

मर्कटिम्बार्कगुणा।

कपिकच्छूद्भवोवृष्योबृंहणोवाजिकर्म्मकृत्।

अर्थ–काछका अर्क–वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और वाजीकरण है।

मांसरोहिण्यर्कगुणा।

मांसरोहिण्युद्भवस्तुवृष्योदोषत्रयापहः।

अर्थ–मासरोहिणीका अर्क–वीर्यवर्द्धक और त्रिदोषनाशक है।

चिञ्चार्कगुणा।

चेद कुर्य्याद्धातुपुष्टिंतत्फलमार्य्येजनान्।

महानिम्बार्कगुणाः ।

महानिम्बोद्भवोगुल्ममूषिकाविषनाशनः ।

अर्थ-बकायननीमका अर्क गुल्म और मूषेके विषको हरे है ।

पारिभद्रार्कगुणाः ।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोफमेदकृमिप्रणुत ।

अर्थ-फरहदका अर्क-वात, श्लेष्म, शोफ, मेद और कृमिविनाशक है ।

काञ्चनारार्कगुणाः ।

काञ्चनारोगण्डमालागुदभ्रंशव्रणापह ।

अर्थ-कचनारका अर्क-गण्डमाला, गुदभ्रंश और व्रणविनाशक है ।

कोविदारार्कगुणाः ।

कोविदारस्तुपित्तास्रप्रदरक्षयकासहा ।

अर्थ-लालकचनारका अर्क-पित्त, रुधिरविकार, क्षय और खाँसीको हरे है ।

रक्तशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

शोभाञ्जनार्कोरुचिकृच्छुक्रलोग्राहिदीपन ।

अर्थ-लालसंजिनेका अर्क-रुचिकारक, शुक्रजनक, मलरोधक और दीपन है।

श्वेतशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

मधुशिग्रूद्भवोहन्याद्विद्रधिश्वयथुकृमीन् ।

अर्थ-मधुशिग्रु वा सफेद संजिनेका अर्क-विद्रधि, सूजन और कृमिरोगनाशक है ।

शिग्रुजार्कगुणाः ।

शिग्रुजोविषहृन्नेत्र्यस्तस्यनस्याच्छिरोर्तिहृत् ।

अर्थ-सामान्यसंजिनेका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, विषविनाशक और इसका नासलेनेसे शिरकी पीडा दूर होती है ।

गिरिकर्ण्यर्कगुणाः ।

गिरिकर्ण्या कर्णशूलशोफव्रणविषापह ।

अर्थ-कोयलीका अर्क-कर्णशूल, सूजन, व्रण और विषविनाशक है ।

सिन्धुवारार्कगुणाः ।

सिन्धुवारोद्भवोहन्तिशूलशोफाममारुतान् ।

अर्थ-सम्हालूका अर्क-शूल, सूजन और आमवातनाशक है ।

निर्गुण्ड्यर्कगुणाः ।

निर्गुण्ड्यर्कोहरेज्जन्तुव्रणकुष्ठारुचिनिलयु ।

अर्थ-निर्गुण्डीका अर्क-हलका तथा कृमि, व्रण, कोढ और अरुचिनाशक है ।

कुटजार्कगुणाः ।

कौटजोदीपनःशीतःकफतृष्णामकुष्ठजित् ।

अर्थ-कुडेका अर्क-दीपन, शीतल तथा कफ, तृषा, आम और कुष्ठनाशक है ।

करञ्जार्कगुणाः ।

कारञ्जःकफगुल्मार्शोव्रणकृमिरुजापहः ।

अर्थ-करजका अर्क-कफ, गुल्म, बवासीर, व्रण और कृमिरोगनाशक है ।

घृतकरञ्जार्कगुणाः ।

घृतकारञ्जकोभेदीवातार्शःकृमिकुष्ठजित् ।

अर्थ-घृतकरजका अर्क-भेदक तथा वात, बवासीर, कृमि और कुष्ठनाशक है ।

करञ्जार्कगुणाः ।

कारञ्जोवान्तिवातार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित् ।

अर्थ-करञ्जुयेका अर्क-वमन, वात, बवासीर, कृमि, कोढ और प्रमेहनाशक है ।

श्वेतगुञ्जार्कगुणाः ।

उच्चटार्कःकेशकरोवातपित्तकफापहः ।

अर्थ-सफेद घुघुचीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला तथा वात, पित्त और कफनाशक है ।

रक्तगुञ्जार्कगुणाः ।

गुञ्जायाहरतेश्वासमुखशोषश्रमज्वरान् ।

अर्थ-घुघुचीका अर्क-श्वास, मुखशोष, श्रम और ज्वरनाशक है ।

शूकशिम्ब्यर्कगुणाः ।

कपिकच्छूद्भवोवृष्योबृंहणोवाजिकर्म्मकृत् ।

अर्थ-काछका अर्क-वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और वाजीकरण है ।

मांसरोहिण्यर्कगुणाः ।

मांसरोहिण्युद्भवस्तुवृष्योदोषत्रयापहः ।

अर्थ-मांसरोहिणीका अर्क-वीर्यवर्द्धक और त्रिदोषनाशक है ।

चिरुबिल्वार्कगुणाः ।

चैरुः कुर्य्याद्धातुपुष्टिंतत्फलमार्य्येजनान् ।

अर्थ-चिह्नकका अर्क-धातुपुष्टिकारक और इसका फल मोणनाशक है।

वेतसार्कगुणा ।

वेतसोहरतेदाहशोथार्शोयोनिरुग्व्रणान् ।

अर्थ-वेतका अर्क-दाह,सूजन,बवासीर, योनिरोग और व्रणविनाशक है।

जलवेतसार्कगुणा ।

जलवेतसजोग्राहीशीतोवातप्रकोपन॰ ।

अर्थ-जलवेतका अर्क-मलरोधक, शीतल और वातप्रकोपक है।

हिज्जलार्कगुणा ।

हिज्जलार्कस्तुहरतेचराचरविषस्फुटम् ।

अर्थ-समुद्रफलका अर्क-स्थावर और जंगम दोनों प्रकारके विषोको हरैहै।

अङ्कोटार्कगुणा ।

अङ्कोटकस्यशूलामशोथग्रहविषापह ।

अर्थ-अंकोटका अर्क-शूल, आम, सूजन, अगप्रह और विषविनाशक है।

बलार्कगुणा ।

बलार्कोग्राहिवातास्रपित्तास्रक्षतनाशन॰ ।

अर्थ-खिरटीका अर्क-मलरोधक, वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है।

अतिबलार्कगुणा ।

अतिपूर्वाबलार्कस्तुमूर्च्छामोहहर परः ।

अर्थ कंघीका अर्क-मूर्च्छा और मोहनाशक है।

लक्ष्मणामूलार्कगुणा ।

लक्ष्मणार्कन्तुयासेवेद्वन्ध्यापिलभतेसुतम् ।

अर्थ-लक्ष्मणाके अर्कको वांझ स्त्रीभी सेवन करे तो पुत्रवाली होतीहै।

स्वर्णवल्लयर्कगुणा ।

स्वर्णवल्लया शिर'पीडात्रिदोषान्हन्तिदुग्धद॰ ।

अर्थ-स्वर्णवल्लीका अर्क-शिरकी पीडा और त्रिदोषनाशक है तथा दुग्धदायक है।

कार्पासार्कगुणा ।

कार्पास्यर्क कर्णमध्य कर्णरोगान्विनाशयेत् ।

अर्थ-कपासका अर्क-कानमें डालनेसे कानके रोगोंको हरै है।

वंशार्कगुणाः।

वंशजःकफपित्तघ्नः कुष्ठघ्नोव्रणशोफजित्।

अर्थ–बाँसका अर्क–कफ, पित्त, कोढ, व्रण और शोफनिवारक है।

नलार्कगुणाः।

नलाकोंवस्तियोन्यर्त्तिदाहपित्तविसर्पहृत्।

अर्थ–नलका अर्क–वस्तिकी पीडा, योनिकी पीडा, दाह, पित्त और विसर्परोगनाशक है।

पाण्ड्यर्कगुणाः।

पाण्ड्योजयेज्ज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः।

अर्थ–पाण्डीरका अर्क–ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार और हृदयरोगनाशक है।

शरपुंखार्कगुणाः।

शरपुंखोद्भवःप्लीहगुल्मव्रणविषापहः।

अर्थ–सरफोंकेका अर्क–प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषनाशक है।

दुरालभार्कगुणाः।

यवासजोमदभ्रान्तिपित्तहृत्कुष्ठकासहृत्।

अर्थ–जवासेका अर्क–मत्तता, भ्रम, पित्त, कोढ और खाँसीको हरे है।

मुण्ड्यर्कगुणाः।

मुण्डीजोऽत्यन्तबलकृत्प्लीहमोहानिलार्त्तिजित्।

अर्थ–मुण्डीका अर्क–अत्यन्त बलकारक तथा प्लीहा, मोह और वातरोगनाशक है।

अपामार्गार्कगुणाः।

अपामार्गभवश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः।

अर्थ–चिरचिटेका अर्क–वमन, कफ, मेद और वातविनाशक है।

रक्तापामार्गार्कगुणाः।

आरक्तापामार्गभवोधातुस्तम्भनकारकः।

अर्थ–लालचिरचिटेका अर्क–धातुस्तम्भक है।

कोकिलाक्षार्कगुणाः।

कोकिलाक्षभवःशीघ्रसेकाच्छोथनिवारयेत्।

अर्थ–तालमखानेका अर्क–सेक करनेसे शोफको हरे है।

अर्थ-चिल्हकका अर्क-धातुपुष्टिकारक और इसका फल प्राणनाशक है।

वेतसार्कगुणाः ।

वेतसोहरतेदाहशोथार्शोयोनिरुग्व्रणान् ।

अर्थ-बेतका अर्क-दाह,सूजन,बवासीर, योनिरोग और व्रणविनाशक है।

जलवेतसार्कगुणाः ।

जलवेतसजोग्राहीशीतोवातप्रकोपनः ।

अर्थ-जलवेतका अर्क-मलरोधक, शीतल और वातप्रकोपक है।

हिज्जलार्कगुणाः ।

हिज्जलार्कस्तुहरतेचराचरविषस्फुटम् ।

अर्थ-समुद्रफलका अर्क-स्थावर और जंगम दोनों प्रकारके विषोंको हरै है।

अङ्कोटार्कगुणाः ।

अङ्कोटकस्यशूलामशोथग्रहविषापहः ।

अर्थ-अकोलका अर्क-शूल, आम, सूजन, अगग्रह और विषविनाशक है।

बलार्कगुणाः ।

बलार्कोग्राहिवातास्रपित्तास्रक्षतनाशनः ।

अर्थ-खिरैटीका अर्क-मलरोधक, वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है।

अतिबलार्कगुणाः ।

अतिपूर्वाबलार्कस्तुमूर्च्छामोहहरःपरः ।

अर्थ-कंघीका अर्क-मूर्च्छा और मोहनाशक है।

लक्ष्मणामूलार्कगुणाः ।

लक्ष्मणार्कन्तुयासेवेद्वन्ध्यापिलभतेसुतम् ।

अर्थ-लक्ष्मणाके अर्कको बांझ स्त्रीभी सेवन करै तो पुत्रवाली होतीहै।

स्वर्णवल्ल्यर्कगुणाः ।

स्वर्णवल्ल्याशिरःपीडात्रिदोषान्हन्तिदुग्धदः ।

अर्थ-स्वर्णवल्लीका अर्क-शिरकी पीडा और त्रिदोषनाशक है तथा दुग्धकारक है।

कार्पास्यर्कगुणाः ।

कार्पास्यर्कः कर्णसंस्थः कर्णरोगान्विनाशयेत् ।

अर्थ-कपासका अर्क-कानमें डालनेसे कानके रोगोंको हरै है।

वंशार्कगुणाः ।

वंशजःकफपित्तघ्न कुष्ठघ्नोव्रणशोषजित् ।

अर्थ--बाँसका अर्क--कफ, पित्त, कोढ, व्रण और शोषनिवारक है ।

नलार्कगुणाः ।

नलार्कोवस्तियोन्यर्त्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ।

अर्थ--नलका अर्क--वस्तिकी पीडा, योनिकी पीडा, दाह, पित्त और विसर्परोगनाशक है ।

पाण्ड्यर्कगुणाः ।

पाण्ड्योजयेज्ज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ।

अर्थ--पाण्डीरका अर्क--ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार और हृदयरोगनाशक है ।

शरपुङ्खार्कगुणाः ।

शरपुखोद्भव प्लीहगुल्मव्रणविषापह ।

अर्थ--सरफोंकेका अर्क--प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषनाशक है ।

दुरालभार्कगुणाः ।

यवासजोमदभ्रान्तिपित्तहृत्कुष्ठकासहृत ।

अर्थ--जवासेका अर्क--मत्तता, भ्रम, पित्त, कोढ और खाँसीको हरे है ।

मुण्ड्यर्कगुणाः ।

मुण्डीजोऽत्यन्तबलकृत्प्लीहमोहानिलार्त्तिजित् ।

अर्थ--मुण्डीका अर्क--अत्यन्त बलकारक तथा प्लीहा, मोह और वातरोगनाशक है ।

अपामार्गार्कगुणाः ।

अपामार्गभवश्छर्दिकफमेदोऽनिलापह ।

अर्थ--चिरचिटेका अर्क--वमन, कफ, मेद और वातविनाशक है ।

रक्तापामार्गार्कगुणाः ।

आरक्तापामार्गभवोधातुस्तम्भनकारक ।

अर्थ--लालचिरचिटेका अर्क--धातुस्तम्भक है ।

कोकिलाक्षार्कगुणाः ।

कोकिलाक्षभव शीघ्रसेकाच्छोथनिवारयेत ।

अर्थ--तालमखानेका अर्क--सेक करनेसे शोथको हरे है ।

अस्थिसंहारिकार्कगुणाः ।

अस्थिसंहारिकायास्तु भग्नसंधानकृत्स्थिरः ।

अर्थ-अस्थिसंहारकाका अर्क-टूटेहुए हाडोंको जोडनेवाला है ।

कुमार्यर्कगुणाः ।

कुमारिकाया ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटकाञ्जयेत् ।

अर्थ-घीकुआरका अर्क-ग्रन्थि, अग्निदग्ध और विस्फोटनिवारक है ।

पुनर्नवार्कगुणाः ।

पुनर्नवाया श्वेताया सर्वनेत्रामयापहः ।

अर्थ-विषखपरेका अर्क-सर्वप्रकारके नेत्ररोगनाशक है ।

रक्तपुनर्नवार्कगुणाः ।

पुनर्नवायारक्तायाग्राही पित्तास्रनाशनः ।

अर्थ-सांठिका अर्क-मलरोधक और रक्तपित्तनाशक है ।

प्रसारिण्यर्कगुणाः ।

प्रसारिण्या वातहरो वृष्य सन्धानकृत्सरः ।

अर्थ-पसरनका अर्क-वातविनाशक, वृष्य, व्रणनाशक और सारक है ।

शारिवार्कगुणाः ।

शारिवाया वह्निमांद्यकासामयविनाशनः ।

अर्थ-सरिवनका अर्क-अग्निमान्द्य और कासरोगनाशक है ।

भृङ्गराजार्कगुणाः ।

भृङ्गराजस्य दन्त्योऽर्कः केश्योरुच्यः शिरोर्त्तिहा ।

अर्थ-भँगरेका अर्क-दांतोंको हितकारी, केशोंको सुन्दर करनेवाला, रुचिकारक और शिरोरोगनाशक है ।

शणपुष्प्यर्कगुणाः ।

शणपुष्पीलतायास्तुद्यर्कः पित्तकफान्तकः ।

अर्थ-शणपुष्पी, पसनका अर्क-पित्त और कफनाशक है ।

त्रायमाणार्कगुणाः ।

त्रायन्त्यर्कः शूलविषविलेपिज्वरनाशनः ।

अर्थ-त्रायमाणका अर्क-शूल, विष और विलेपिज्वरनाशक है ।

मूर्वार्कगुणाः ।

मूर्वायामेहहृद्रोगकण्डूकुष्ठज्वरापहः ।

अर्थ-मूर्वाका अर्क-प्रमेह, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वररोगनाशक है।

काकमाच्यर्कगुणा।

काकमाच्यानेत्रहितश्छर्दिहृद्रोगनाशन॰।

अर्थ-मकोयका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा वमन और हृदयरोगनाशक है।

काकनासार्कगुणा।

काकनासाभवोवाम्य शोफार्श॰श्वित्रकुष्ठहृत्।

अर्थ-काकनासा (कौआठोडी) का अर्क वमनकारक तथा सूजन ववासीर और श्वित्रकुष्ठनाशक है।

काकजंघार्कगुणा।

काकजघोद्भवोहन्याज्ज्वरकण्डूविपक्रिमीन्।

अर्थ-काकजघा(मसी) का अर्क-ज्वर, कण्डू, विप और कृमिरोगनाशक है।

नागाह्वार्कगुणा।

नागाह्वायाहरेच्छूलयोनिदोपवमिक्रिमीन्।

अर्थ-नागवला गगेरनका अर्क-शूलरोग, योनिदोप, वमन और कृमिरोगनाशक है।

मेषशृंग्यर्कगुणा।

मेपशृंग्याःश्वासकासव्रणश्लेष्माक्षिशूलहा।

अर्थ-मेढाशिंगीका अर्क-श्वास, खाँसी, व्रण, कफ, नेत्ररोग और शूलनाशक है।

हंसपद्यर्कगुणा।

हसपद्याहन्तिलूताम्भृतरक्तव्रणान्विपम्।

अर्थ-हंसपदीका अर्क-मकडीका विप, भूतोन्माद, रक्तव्रण और अन्यप्रकारके विपोंको हरे है।

सोमवल्ल्यर्कगुणा।

सोमवल्ल्यास्त्रिदोपघ्न क्षीरकृच्चरसायन।

अर्थ-सोमलताका अर्क-त्रिदोपनाशक, क्षीरजनक और रसायन है।

आकाशवल्ल्यर्कगुणा।

आकाशवल्ल्या'शीतोऽर्क पित्तश्लेष्मामनाशन'।

अर्थ-आकाशवेलका अर्क-शीतल तथा पित्त, कफ और आमनाशक है।

पातालगरुडार्कगुणाः ।

पातालगरुडीजोऽर्कोवृष्योवातगदापहः ।

अर्थ-छिरहिंटेका अर्क-वीर्यवर्द्धक और वातरोगनाशक है ।

वन्दाकार्कगुणाः ।

वन्दावृक्षोद्भवोऽर्कस्तुविषरक्षोव्रणापहः ।

अर्थ-बदाका अर्क-विषदोष, राक्षसबाधा और व्रणविनाशक है ।

वटपत्रार्कगुणाः ।

वटपत्रभवश्चोष्णो योनिमूत्रगदापहः ।

अर्थ-वटपत्रीका अर्क-गरम तथा योनिरोग और मूत्ररोगनाशक है ।

हिंगुपत्र्यर्कगुणाः ।

हिंगुपत्र्याविबन्धार्शोश्लेष्मगुल्मानिलापहः ।

अर्थ-हिंगुपत्रीका अर्क-विबन्ध, बवासीर, श्लेष्म, गुल्म और वातरोगनाशक है ।

वंशपत्र्यर्कगुणाः ।

वंशपत्र्या पाचनोष्णोहृद्बस्तिगदसवहृत ।

अर्थ-वंशपत्रीका अर्क-पाचन, गरम तथा हृदयरोग और बस्तिरोगनाशक है ।

मत्स्याक्ष्यर्कगुणाः ।

मत्स्याक्ष्यर्कोग्राहिशीत कुष्ठपित्तकफास्त्रजित् ।

अर्थ-मच्छेछीका अर्क-मलरोधक, शीतल तथा कोढ, पित्त, कफ और रुधिरके दोषोंको हरे है ।

सर्पाक्ष्यर्कगुणाः ।

सर्पाक्ष्यारोपण सर्पवृश्चिकादिविषापहः ।

अर्थ-गंडिनीका अर्क-व्रणको भरनेवाला तथा सर्प और वृश्चिकादिक विषको हरनेवाला है ।

शंखपुष्प्यर्कगुणाः ।

शंखपुष्प्याविषहरः कान्तिस्मृतिबलाग्निदः ।

अर्थ-शंखपुष्पीका अर्क-विषनाशक तथा कान्ति, स्मरणशक्ति, बल और अग्निदायक है ।

अर्कपुष्पार्कगुणाः ।

अर्कपुष्पार्कमिश्लेष्ममेदपित्तविकारहा ।

अर्थ-अर्कपुष्पीका अर्क-कृमि, श्लेष्म, प्रमेह और पित्तरोगनाशक है।

लज्जालुकार्कगुणाः।

लज्जालुकायाभगरुग्रक्तपित्तातिसारहृत्।

अर्थ-लज्जालुका अर्क-योनिरोग, रक्तपित्त और अतिसाररोगनिवारक है।

अलम्बुषार्कगुणाः।

अलम्बुषासम्भवोऽर्के कृमिपित्तकफापहः।

अर्थ-अलम्बुषा (लज्जालुभेद) का अर्क-कृमि, पित्त और कफनाशक है।

दुग्धिकार्कगुणाः।

दुग्धिकाया कफकरोवृष्य स्तम्भीकृमिप्रणुत्।

अर्थ-दुद्धीका अर्क-कफकारक, वृष्य, स्तम्भक और कृमिनाशक है।

भूम्यामलक्यर्कगुणाः।

भूम्यामलया कासतृपाकफपाण्डुक्षतापहः।

अर्थ-भुंईआमलेका अर्क-खाँसी, तृषा, कफ, पाण्डु और क्षतरोगनाशक है।

ब्राह्म्यर्कगुणाः।

ब्राह्म्याबुद्धिप्रदश्चार्क षण्मासाभ्यासतः कविः।

अर्थ-ब्राह्मीका अर्क-बुद्धिवर्द्धक, इसको छः महीने सेवन करनेसे कवि होजाता है।

ब्रह्ममण्डूक्यर्कगुणाः।

ब्रह्ममण्डूकजःपाण्डुविषशोफज्वरान्हरेत्।

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकीका अर्क-पाण्डु, विष, सूजन और ज्वरनाशक है।

द्रोणपुष्प्यर्कगुणाः।

द्रोणपुष्प्याज्वरश्वासकामलाशोफजन्तुहृत्।

अर्थ-द्रोणपुष्पीका अर्क-ज्वर, श्वास, कामला, सूजन और कृमिरोगनाशक है।

सूर्यमुख्यर्कगुणाः।

सूर्य्यमुख्युद्भव स्फोटयोनिरुक्कृमिपाण्डुहा।

अर्थ-सूर्यमुखीका अर्क-विस्फोट, योनिरोग, कृमि और पाण्डुरोगनाशक है।

वन्ध्याकर्कोटक्यर्कगुणाः।

वन्ध्याकर्कोटकीजातःसर्पदंशव्रणापह।

अर्थ-बाँझककोडेका अर्क-सर्पविष और व्रणविनाशक है।

मार्कण्डिकार्कगुणाः ।

मार्कण्डिकायाद्दुर्गंधविषगुल्मोदरापहः ।

अर्थ-मार्कण्डिका (एक प्रकारका ककोडा) का अर्क-दुर्गंध, विष, गुल्म और उदररोगनाशक है ।

देवदाल्यर्कगुणाः ।

देवदाल्या शूलगुल्मश्लेष्मार्शोवातजित्सरः ।

अर्थ-देवदालीका अर्क-शूल, गुल्म, श्लेष्म, बवासीर और वातनाशक है तथा दस्तावर है ।

धत्तूरार्कगुणाः ।

ग्राहीधत्तूरजःशीतोवह्निकृद्व्रणदाहहा ।

अर्थ-धतूरेका अर्क-मलरोधक, शीतल, अग्निजनक तथा व्रण और दाहनाशक है ।

गोजिह्वार्कगुणाः ।

गोजिह्वायामेहकासव्रणसारज्वरापहः ।

अर्थ-गोभीका अर्क-प्रमेह, खाँसी, व्रण, अतिसार और ज्वरनाशक है ।

नागपुष्प्यर्कगुणाः ।

नागपुष्प्या सर्वविषसर्वग्रहनिवारणः ।

अर्थ-नागदमनीका अर्क-सर्वप्रकारके विष और सर्वप्रकारके ग्रहदोष-निवारक है ।

बिल्वतरुण्यर्कगुणाः ।

बिल्वतरुण्योमूत्रघाताश्मरीयोन्यनिलार्त्तिजित् ।

अर्थ-बेलतरुणीका अर्क-मूत्राघात, पथरी, योनिरोग और वातविनाशक है ।

छिक्कन्यर्कगुणाः ।

छिकन्यावह्निरुचिकृदर्शःकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-नाकछिकनीका अर्क-अग्निकारक, रुचिजनक तथा बवासीर, कोढ और कृमिनाशक है ।

कुकुन्दरार्कगुणाः ।

र्कोकुन्दरोज्वररक्तमुखशोषकफहरेत् ।

अर्थ-कुकुरौंदेका अर्क-ज्वर, रुधिरविकार, मुखशोष और कफनाशक है ।

सुदर्शनाकगुणा ।

सुदर्शनाकश्चात्युष्णःकफशोफास्त्रवातजित् ।(इ०लङ्कानाथः)

अर्थ–सुदर्शनका अर्क–अत्यन्त गरम तथा कफ, सूजन, रुधिरविकार और वातनाशक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेऽर्कवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥



अथ मधुवर्गः ।

मधुनामानि ।

माक्षिकमधुचक्षौद्रपवित्रकुसुमासवम् ।
भृङ्गवातसारघचपित्र्यपुष्परसोद्भवम् ॥

अर्थ–माक्षिक, मधु, क्षौद्र, पवित्र, कुसुमासव, भृङ्गवात, सारघ, पित्र्य, पुष्परसोद्भव (मार्क्षीक, पुष्पासव, पुष्परसाह्वय, माध्वीक, वरटीवात मकरन्दरस) ।

संस्कृतभाषामें	मधु, माक्षिक ।
हिन्दीभाषामें	मधु, सहत ।
बंगभाषामें	मधु, मौ ।
मराठीभाषामें	मध ।
गुजरातीभाषामें	मध ।
कर्णाटकीभाषामें	जेनतुप्प ।
तैलिङ्गीभाषामें	तेनी ।
इंग्रेजीभाषामें	हनी । Honey
लैटिन्भाषामें	मेल । Mel
फारसीभाषामें	शहद, अगबीन ।
अरबीभाषामें	असलुन् नहल ।

मधुसामान्यगुणाः ।

शीतकषायमधुरलघुस्यात्सन्दीपनलेखनमेवशस्तम् ।
संशोधनवाव्रणशोधनश्चसरोपणहृद्यतमश्चबल्यम् ॥
त्रिदोषनाशकुरुतेचपुष्टिकासक्षयेवाक्षतजेचश्वासम् ।

हिक्काभ्रमेशोषणपीनसानांरक्तप्रमेहेश्वसनेतिसारे ॥
रक्तातिसारेचभ्रमरक्तपित्तेतृष्णमोहहृत्पार्श्वगदेऽपिशस्त । ।
नेत्रामयेवाग्रहणीगदेवाविषेप्रशस्तमधुह्यल्पवातलम् ॥
(इतिहारीतसंहितायाम्)

अर्थ-मधु (सहत)-शीतल, कषेला, मधुर, हलका, अग्निप्रदीपक, चाटनेमें उत्तम, सशोधक, व्रणको शोधनेवाला, घावको भरनेवाला, हृदयको हितकारी, बलकारी, त्रिदोषहारी, पुष्टिकारी तथा खाँसीमें, क्षयमें, क्षतमें, छर्दीमें, हिक्कारोगमें, भ्रममें, शोषमें, पीनसरोगमें, रक्तप्रमेहमें, श्वासमें, अतिसारमें, रक्तातिसारमें, रक्तपित्तमें, तृषामें, मोहमें, हृदयरोगमें, पार्श्वकी वेदनामें, नेत्ररोगमें संग्रहणीमें और विषरोगमें हितकारी है और कुछेक वातकारक है ।

अन्यच्च ।

मधुशीतलघुस्वादुरूक्षंस्वर्य्यंचग्राहकम् । चक्षुष्यलेखनचाग्निदीपकव्रणशोधकम् ॥ नाडीशुद्धिकरसूक्ष्मंरोपणमृदुवर्णकृत । मेधाकरचविशदवृष्यरुचिकरमतम् ॥ आनन्दकृच्चतुवरचाल्पवातप्रदमतम । कुष्ठार्शकासपित्तास्रक्तदोषकफापहम ॥मेहक्रिमिमदग्लानितृष्णावान्त्यतिसारनुत्।दाहक्षतंक्षयमेदक्षयहिक्कात्रिदोषकम॥ आध्मानवातचविषमलबन्धचनाशयेत । सर्वमेतद्व्रणानांतुरोपणशोधकमतम ॥ अस्थिसन्धानकृत्तत्ततस्त्वनिपवन्मतम । उष्णद्रव्येश्चोष्णकालेभक्षिततापदायकम ॥ (नि०र०)

अर्थ-मधु-शीतल, स्वादिष्ट, रूखा, स्वरको शुद्धकरनेवाला, भारी, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, अग्निप्रदीपक, व्रणशोधक, नाडीको शुद्धकरनेवाला, सूक्ष्म, रोपण, मृदु, वर्णकारक, मेधाजनक, विशद, वृष्य, रुचिकारक, आनन्दजनक, कषेला, अल्पवातकारक, तथा कोढ, बवासीर, खाँसी पित्त, रुधिरविकार, कफ, प्रमेह, कृमि, मद, ग्लानि, तृषा, वमन, अतिसार, दाह, क्षतक्षय मेद, क्षय, हिचकी, त्रिदोष, आध्मान, वायु विष और मलबद्ध

तानाशक है। सर्वप्रकारके मधु-व्रणोंको भरनेवाले, शोधनेवाले, टूटेहाडोंको जोडनेवाले हैं, यह गरम कियाहुवा, अथवा उष्णकालमें उष्ण द्रव्योंके साथ खाया हुवा विषके समान सन्तापको करता है।

मधुजातिभेदाः।

पौत्तिकभ्रामरक्षौद्रमाक्षिकछात्रमेवच।
आर्घ्यमौद्दालकदालमित्यष्टौमधुजातयः।

अर्थ-पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र, माक्षिक, छात्र, आर्घ्य औद्दालक और दाल यह आठ मधुकी जाति हैं।

एतेषां लक्षणानि।

पिंगलामक्षिकाज्ञेयामहत्यल्पाचसाद्विधा। महतीपुत्तिकानाम्नीस्वल्पाक्षुद्रेतिकथ्यते॥मध्यमामक्षिकानीलामक्षिकेत्यभिधीयते। पुत्तिकाभ्रमरक्षुद्रामक्षिकासम्भवमधु॥पौत्तिकाद्युच्यतेछात्रवरटीछत्रसम्भवम्। तपोवनेजरत्कारोरार्घ्यंमधुतरूद्भवम्। औद्दालकन्तुवल्मीककारिकीटविनिर्म्मितम्। दालमित्यभिनिर्दिष्टंवृक्षकोटरकीटजम्॥

अर्थ-पिंगलवर्ण मक्खी वृहत् और क्षुद्र इन भेदोंसे दोप्रकारकी है, तहां वृहत्मक्खी पुत्तिका और क्षुद्र मक्खी क्षुद्रानामसे कही जाती है। मध्यम आकारवाली नीले रंगकी मक्खी मक्षिकानामसे कही जाती है। पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा और मक्षिका नामवाली मक्खियोंसे पौत्तिकादि चार प्रकारके मधुकी उत्पत्ति होती है अर्थात् पुत्तिकानामवाली मक्खीसे पौत्तिक, भ्रमर नाम मक्खीसे भ्रामर, क्षुद्रासे क्षौद्र और मक्षिकासे माक्षिक नामवाले मधुकी उत्पत्ति होती है। वरटी नामवाले जो कीडे हैं उनके छत्तोंसे उत्पन्न हुवा जो मधु उसको छात्र, जिस वनमें जरत्कारु ऋषिने तप किया है उसमें जो महुवेके वृक्ष हैं उन वृक्षोंमेंसे जो उत्पन्न हुवा मधु उसको आर्घ्य, वल्मीककारी कीडोंके बनाये हुये मधुको औद्दालक और वृक्षोंकी कोटरोंमें जो कीडे रहते हैं उनके मधुको दाल कहते हैं।

एतेषां लक्षणानि।

माक्षिकंतैलवर्णंस्याद्घृतवर्णन्तुपौत्तिकम्।

क्षौद्रंकपिलवर्णंस्याच्छ्वेतंभ्रामरमुच्यते ॥

अर्थ-माक्षिक मधु तेलवर्ण, पौत्तिक घृतवर्ण, क्षौद्र मधु कपिलरंगका और भ्रामर मधु सफेद रंगका होता है।

एतेषां गुणाः ।

पौत्तिकंतेषुवीर्य्योष्णकषायानुरसान्वयात् ।वातासृक्पित्त-कृन्मेदोविदाहिमदकृन्मधु ॥ पैच्छिल्यात्स्वादुभूयस्त्वाद्भ्रा-मरंगुरुकीर्तितम् । क्षौद्रंविशेषतोज्ञेयंशीतलंलघुलेखनम् ॥ तस्माल्लघुतरंरूक्षंमाक्षिकंप्रवरंस्मृतम् । श्वासादिषुचरोगेषु प्रशस्तंतद्विशेषतः ॥ छात्रंश्वित्रक्रिमिहरंरक्तपित्तहरंगुरु । आर्घ्यंचक्षुष्यमायुष्यंकफपित्तामवातजित् ॥औद्दालकंक-षायोष्णंकटुकुष्ठविषापहम् । दालंकफहरंरूक्षंदीपनंछर्दि-मेहनुत् ॥

अर्थ-पौत्तिकमधु-उष्णवीर्य, किंचित्कषैला, वातवर्द्धक, रक्तपित्तज-नक, मेदक, मदकारक और मधुर है। भ्रामरमधु पिच्छिल, स्वादिष्ट और भारी है। क्षौद्रमधु-अतिशयशीतल, हलका और लेखन है। माक्षिकमधु-अत्यन्त हलका, रूखा, सब मधुओंमें श्रेष्ठ और श्वासादिरोगोंमें हितकारी है। छात्रमधु-श्वित्र (कोढ) कृमि और रक्तपित्तरोगनाशक तथा भारी है। आर्घ्यमधु-नेत्रोंको हितकारी, आयुवर्द्धक, तथा कफपित्त और आमवात-रोगनाशक है। औद्दालकमधु-कषैला, गरम, चरपरा, कोढ और विष-विनाशक है। दालमधु-कफनाशक, रूखा, दीपन, वमन और प्रमेहनाशक है।

नवपुराणमधुगुणाः ।

बृंहणीयंमधुनवंनातिश्लेष्महरंपरम् ।
पुराणंलघुमग्राहिनिर्दोषंस्थौल्यनाशनम् ॥ (रा० प)

अर्थ-नवीनमधु-पुष्टिकारक और थोडा कफनाशक है। पुराना मधु, हलका, मलरोधक, दोषरहित और स्थूलतानाशक है।

मधुनःशर्करायाश्चगुडस्यापिविशेषतः ।
पक्वंसंवत्सरंतत्तुपुराणत्वंस्मृतंबुधैः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मधु, खाड और गुड यह तीनों एक वर्ष व्यतीत होनेपर पुराने गिने जाते हैं ऐसा भावमिश्रने कहा है ।

पक्वापक्वमधुगुणा ।

दोपत्रयहरपक्वमाममम्लत्रिदोपकृत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-पक्कामधु-त्रिदोपनाशक और कच्चामधु-खट्टा और त्रिदोपजनक है ।

मधुन शीतस्यगुणाधिक्यम् ।

विपपुष्पादपिरसस विपाभ्रमरादय· ।गृहीत्वामधुकुर्वन्तितच्छीतगुणवन्मधु ॥विपान्वयात्तदुष्णात्तुद्रव्येणोष्णेनवासह । उष्णार्त्तस्योष्णकालेचस्मृतविपसममधु ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-विपैले भ्रमरादिक विपैले फूलोंसे रसको इकट्ठा करके शहद बनाते हैं, वह शहद शीतल रहनेपर गुणदायक होता है, विपयुक्त रहनेसे यह मधु उष्ण किया अनेक अवगुणकारक है, ऐसेही उष्णकालमें, अथवा उष्णद्रव्यके साथ वा उष्णतासे पीडित मनुष्योंको मधु विपकी समान अहितकारी है ।

सिक्थकनामानि ।

मयनतुमधूच्छिष्टमधुशेपचसिक्थकम् ।
मध्वाधारोमदनकमधूपितमपिस्मृतम् ॥

अर्थ-मयन, मधूच्छिष्ट, मधुशेप, सिक्थक, मध्वाधार, मदनक, मधूपित, (सिक्थ, शिक्थ, शिक्थक, मधुज, मधुसम्भव, मादन, काच, विरस, उच्छिष्ट, मोदन, मक्षिकामल, क्षौद्रेय, पीतराग, स्निग्ध, माक्षिकज, क्षौद्रज, द्रावक, माक्षिकाश्रय, मधूत्थित)

स०	मधूच्छिष्ट ।		मोतदर, मैनामु ।
हिं०	मोम ।	इं०	एल्लोवेक्स ।
व०	मोम ।	लै०	सिराआल्वा ।
म०	मेण ।	फा०	मोमेजर्द ।
गु०	मिण ।	अ०	शमा ।

अस्य गुणा ।

मदनमृदुसुस्निग्धभूतघ्नव्रणरोपणम् ।
भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मोम-कोमल, स्निग्ध, भूतबाधाको हरनेवाला, व्रणको भरनेवाला, भग्नसन्धानकारक तथा वात विसर्प और रुधिरके विकारोंको हरैहै ।

अन्यच्च ।

सिक्थकपिच्छिलस्वादुकटुस्निग्धंमृदुस्मृतम् ।अस्थिसंधि-
करंव्रण्यवातकुष्ठविसर्पनुत् ॥ रक्तदोषंवातरक्तभूतदोषंच
नाशयेत् । स्फुटितस्याङ्गलेपेनत्वचःसंधिकरंमतम् ॥

अर्थ-मोम-पिच्छिल, स्वादिष्ठ, कटु, स्निग्ध, नरम, अस्थिसंधानकारक, व्रणको हितकारी, तथा वात, कोढ, विसर्प, रुधिरविकार, वातरक्त, भूतबाधा और लेप करनेसे फटीहुई त्वचाको आराम करै है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे मधुवर्गः समाप्तः ॥ १९ ॥

अथ इक्षुवर्गः ।

इक्षुनामानि ।

इक्षुर्दीर्घच्छदःप्रोक्तस्तथाभूरिरसोऽपिच ।
गुडमूलोऽसिपत्रश्चतथामधुतृणःस्मृतः ॥

अर्थ-इक्षु, दीर्घच्छद, भूरिरस, गुडमूल, असिपत्र, मधुतृण, (मधुयष्टि विपुलरस, गुडदारु, रसाल, कोशकार, इक्षुर, असिपत्रक, पयोधर, कर्कोटक, वंश, कान्तार, सुकुमारक, अधिपथ, पृष्य, गुडतृण, मृत्युपुष्प, गुड्द, गण्डीरी, खड्गपत्रक, गुडकाष्ठ, तृणाधिप)



संस्कृतभाषामें	इक्षु ।
हिन्दीभाषामें	ईख, गन्ना, गाडा, पौंडा, ऊख ।
बंगभाषामें	आख, पुंडा ।
मराठीभाषामें	ऊस ।
गुजरातीभाषामें	शेरडी, शेरडीनु मूल ।

कर्णाटकीभाषामें	कब्बु, कब्बिनमेरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिरकु ।
इंग्रेजीभाषामें	इयुगरकेन । Sugar Cane
लैटिन्भाषामें	सेकर आल्व । Saccharum Officenarum
	सेकर आफिसीनेर ।
फारसीभाषामें	नेशकर ।
अरबीभाषामें	कसूबुस शक्कर ।

इक्षुसाधारणगुणाः ।

इक्षवोरक्तपित्तघ्नावल्यावृष्या·कफप्रदाः ।
विपाकेमधुराःस्निग्धागुरवोमूत्रलाहिमाः ॥

अर्थ-ईख-रक्तपित्तनाशक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, कफकारी, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, भारी, मूत्रजनक और शीतल है ।

सितेक्षुगुणाः ।

स्निग्धश्चसन्तर्पणवृंहणश्चसजीवन·स्वादुरस·श्रमघ्न· ।
वृष्यश्चपित्तास्रशमनयेच्चह्यतर्विदाहीकफकृत्सितेक्षु· ॥

अर्थ-सफेद ईख-स्निग्ध, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, सजीवन, स्वादिष्ठ, श्रमनाशक, वृष्य, रक्तपित्तको शान्ति करनेवाली, शरीरके भीतरकी दाहको हरनेवाली और कफकारक है ।

कृष्णक्षुगुणाः ।

तद्वत्सुकृष्णोहिमवेद्वर्णेश्चवृष्योभवेत्तर्पणदाहहता ।
सक्षारकिञ्चिन्मधुरोरसेनशोपापहर्त्ताव्रणशोफकर्त्ता॥(हा०स०)

अर्थ-काली ईख-व काले गन्ने-गुणोंमें सफेद ईखकी समान हैं, वीर्य-वर्द्धक, तृप्तिकारक, दाहनिवारक, क्षारयुक्त, मधुररसान्वित, शोपनाशक और व्रण तथा शोफजनक हैं ।

रक्तेक्षुगुणाः ।

रक्तेक्षु शीतल पाकेमधुरोमृदुवृष्यक· । बलकान्तिप्रदश्चै-वधातुवृद्धिकरोगुरु ॥ तुवरःपित्तदाहघ्नोवातविस्फोटना-शक ।मूत्राघातमूत्रकृच्छ्ररक्तदोपचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लालईख-शीतल, पाकमें मधुर, मृदु, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, भारी, कफेली तथा पित्त, दाह, वात, विस्फोट, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और रुधिरके विकारोंको दूरकरैहै ।

इक्षुभेदा ।

पौ ण्ड्रो भीरुकश्चापिवंशक·शतपोरक· । कान्तारस्ताप-क्षुश्चकाण्डेक्षु सूचिपत्रक· ॥ नैपालोदीर्घपत्रश्चनीलपो-रोऽथकोशकृत् । इत्येताजातयस्तेषांकथयामिगुणानपि ॥

अर्थ-पौण्ड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोरक, कान्तार, तापसेक्षु, काण्डेक्षु, सूचिपत्र, नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर, कोशकृत, यह ईखकी जातिहैं । अब इनके गुणोंको कहताहूं ।

पौण्ड्रकभीरुकयोर्गुणा ।

वातपित्तप्रशमनोमधुरोरसपाकयोः ।
शीतोबृंहणोबल्य·पौण्ड्रकोभीरुकस्तथा ॥

अर्थ-पौण्ड्रक और भीरुकनामवाली ईख-वातपित्तनाशक, रस और पाकमें मधुर, शीतल, पुष्टिकारक और बलवर्द्धक है ।

कोशकारगुणा ।

कोशकारोगुरु·शीतोरक्तपित्तक्षयापह· ।

अर्थ-कोशकारनामवाला गन्ना-भारी, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षय-रोगनाशक है ।

कान्तारेक्षुगुणा ।

कान्तारेक्षुर्गुरुर्वृष्य श्लेष्मलोबृंहण·सर· ।

अर्थ-कान्तारनामवाला गन्ना-भारी, वृष्य, कफकारी, पुष्टिकारक और सारक ।

दीर्घपोरवंशयोर्गुणा ।

दीर्घपोर सुकठिन सक्षारोवंशक·स्मृतः ।

अर्थ-दीर्घपोरवाली ईख-कठिन और वंशक ईख-क्षारयुक्त है ।

शतपोरगुणा ।

शतपर्वाभवेत्किञ्चित्कोशकारगुणान्वित ।
विशेषात्किञ्चिदुष्णश्चसक्षार पवनापह· ॥

अर्थ-शतपोरक नामवाली ईख-किञ्चित् कोशकारईखकी समान गुणवाली है, विशेषता यह है कि, किञ्चित् गरम, क्षार और वातनाशक है।

मनोगुप्तागुणाः ।

मनोगुप्तावातहारीतृष्णामयविनाशिनी ।
सुशीतामधुरातीवरक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ-मनोगुप्तानामवाली ईख-वातविनाशक, तृषारोगनाशक, शीतल अत्यन्त मधुर और रक्तपित्तविनाशक है।

तापसेक्षुगुणाः ।

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वीमधुराश्लेष्मकोपना ।
तर्पणीरुचिकृच्चापिवृष्याचवलकारिणी ।

अर्थ-तापसेक्षु-नरम, मधुर, श्लेष्मप्रकोपक, तृप्तिकारक, रुचिजनक, वीर्य्यवर्द्धक और वलकारक है।

काण्डेक्षुगुणाः ।

एवंगुणैस्तुकाण्डेक्षुः सतुवातप्रकोपनः ।

अर्थ-काण्डेक्षुके गुण तापसेक्षुकी समान है और विशेषकरके वातको कुपित करे है।

सूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपोराणांगुणाः ।

सूचीपत्रोनीलपोरोनैपालोदीर्घपत्रकः ।
वातलाःकफपित्तघ्नाःसकषायाविदाहिनः ॥

अर्थ-सूचीपत्र नीलपोर-नैपाल और दीर्घपत्र यह चारोंप्रकारकी ईख-वादी, कफपित्तनाशक, कषेली और दाहजनक है।

इक्षुमूलादिगुणाः ।

इक्षुमूलोतिमधुरोमध्येमधुरएवच ।
ग्रन्थौत्वच्यग्रभागेचविज्ञेयोलवणोरसः ॥

अर्थ-ईखके मूलमें मधुररस और मध्यभागमेंभी मधुररस तथा ग्रन्थि, त्वचा और अग्रभागमें लवणरस रहता है।

बाल्युवावृद्धेक्षुगुणाः ।

बालइक्षुः कफकुर्यान्मेदोमेहकरश्चसः ।
युवातुवातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्चपित्तनुत् ॥

रक्तपित्तहरोवृद्धः क्षतहृद्बलवीर्य्यकृत ।

अर्थ-बाल अर्थात् कची ईख-कफकारी, मेदजनक प्रमेहकारक, युवा अर्थात् कुछ २ पकी और कुछ २ कची ईख-वातनाशक, स्वादिष्ट, किञ्चित् तीक्ष्ण और पित्तनाशक है । वृद्ध अर्थात् पकी ईख-रक्तपित्तनाशक, क्षत-निवारक और बलवीर्य्यकारक है ।

दन्तनिष्पीडितेक्षुगुणाः ।

दन्तनिष्पीडितस्येक्षोरसः पित्तास्रनाशनः ।
शर्करासमवीर्य्यःस्यादविदाहीकफप्रदः ॥

अर्थ-दाँतोंसे चूसीहुई ईखका रस-रक्तपित्तनाशक, शर्कराकी समान वीर्य्यवाला, दाहरहित और कफकारी है ।

अन्यच्च ।

वृष्यः शीतोस्रपित्तंशमयतिमधुरोबृंहणः श्लेष्मकारी स्निग्धो हृद्यःसरश्चश्रमशमनपटुर्मूत्रवृद्धिंकरोति । मेदोवृद्धिंविहन्या च्छमयतिचमलतर्पणश्चेन्द्रियाणां दन्तैर्निष्पीड्यसाक्षाद-मृतमयरसोभक्ष्येदिक्षुदण्डः ॥

अर्थ-दाँतोंसे चूसीहुई ईखका रस-शीतल, रक्तपित्तनिवारक, मधुर, पुष्टिकारी, कफकारक, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, सारक, श्रमको हरने-वाला, नमकीन, मूत्रवर्द्धक, मेदवृद्धिको शान्ति करनेवाला, त्रिदोषनाशक, इन्द्रियोंको तृप्ति करनेवाला और अमृतोपम है ।

अपिच ।

दन्तैर्निपीडितरसोरुचिकृद्गुरुश्च सन्तर्पणोबलकरःकफकृत्-न्छ्रमघ्नः । विष्टम्भकृच्चरुधिरस्यतथैवपित्तदोषं निहन्ति सकलंवमनञ्चशोपम् ॥

अर्थ-दाँतोंसे चूसीहुई ईखका रस-रुचिकारी, भारी, तृप्तिकारी, बल-कारी, कफकारी, श्रमहारी, विष्टम्भकारी, रुधिरके दोषोंको दूर करनेवाला, पित्तको हरनेवाला वमननिवारक और शोषहारक है ।

यन्त्रनिष्पीडितक्षुरसगुणाः ।

मूलाग्रजन्तुजग्धादिपीडनान्मलसंकरात् ।

किञ्चित्कालंविधृत्वाचविकृतिंयातियान्त्रिकः ॥
तस्माद्विदाहीविष्टम्भीगुरुःस्याद्यान्त्रिकोरस ।

अर्थ-ईखकी जड और अगला भाग जो कीडोंसे खायाहुवा होताहै और गाँठ ये सब कोलूमें पेली गईहों उनके मैल आदिके मिलनेसे तथा कुछ अधिक समयतक रक्खारहनेसे वह कोलूका पिला हुवा रस विगड-जाताहै अर्थात् खट्टा होजाताहै वह दूषित रस-दाहजनक, मलवर्द्धक, और भारी होताहै ।

पर्य्युषितेक्षुरसगुणा ।

रस.पर्य्युषितोदुष्टोह्यम्लोवातापहोगुरुः ।
कफपित्तकर'शोषीभेदनश्चातिमूत्रलः ।

अर्थ-ईखका वासी रस-अच्छा नहीं होता, खट्टा, वातनाशक, भारी, कफपित्तकारक, शोषजनक भेदक और मूत्रजनक है ।

इक्षुपक्वरसगुणा ।

पक्वोरसोगुरु.स्निग्धःसुतीक्ष्ण'कफवातनुत् ।
गुल्मानाहप्रशमनोकिञ्चित्पित्तकर.स्मृत ॥(भा० प्र०)

अर्थ-ईखका पक्का अर्थात् अग्निपै औटाया हुवा रस-भारी, स्निग्ध, तीक्ष्ण, कफवातनाशक, गुल्म और अफारेको हरनेवाला और कुछेक पित्तकारक है ।

इक्षुविशेषगुणा ।

भक्षितोभोजनात्पूर्वंचेक्षु पित्तस्यशामक' ।
भोजनोत्तरकालेचभक्षितोवातकोपनः ॥
भोजनेभक्षितश्चासावतिजाड्यकरोमत. । (नि०र०)

अर्थ-भोजनसे पहिले भक्षणकरीहुई ईख-पित्तनिवारक है । भोजनसे पीछे खाईहुई ईख वातको कुपित करे है और भोजनके मध्यमें खाईहुई ईख अत्यन्त जडताकारक है ।

इक्षुरसविपाकगुणा ।

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशना ।
गुरवोमधुरावल्या.स्निग्धावातहरा सरा ॥

वृष्यामोहहराःशीताबृंहणाविषहारिणः ।

अर्थ-इक्षुविकार अर्थात् ईखके रसके बनाये हुये पदार्थ-तृषा, दाह, मूर्च्छा, रक्तपित्त, वात, मोह और विषको हरे है, भारी, मधुर, बलकारी, स्निग्ध, सारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, और पुष्टिकारक है ।

फाणितलक्षणगुणाश्च ।

इक्षोरसस्तुयः पक्वः किञ्चिद्गाढोबहुद्रवः।सएवेक्षुविकारेषुख्यातःफाणितसंज्ञया॥फाणितंगुर्व्वभिष्यदिबृंहणंकफशुक्रकृत । वातपित्तश्रमान्हन्तिमूत्रवस्तिविशोधनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कुछेक गाढा और बहुत पतला ऐसे पकायेहुये ईखके रसको फाणित कहते हैं फाणित-भारी, अभिष्यन्दी, पुष्टिकारक, कफकारी, शुक्रजनक, तथा वात, पित्त, श्रम, इनको दूर करे है और मूत्र तथा वस्तिशोधक है ।

मत्स्यण्डीलक्षण गुणाश्च ।

इक्षोरसोयःसपक्वोघनः किञ्चिद्द्रवान्वितः।मन्दयत्स्पन्दतेतस्मात्तन्मत्स्यण्डीनिगद्यते ॥ मत्स्यण्डीभेदिनीबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा । मधुराबृंहणीवृष्यारक्तदोषापहामता ॥

अर्थ-ईखका रस जो पकायाहुवा गाढा कुछ पतला और थोडा चिकना है इसलिये इसको मत्स्यण्डी कहते हैं । मत्स्यण्डी-भेदक, बलकारक, हलकी, वातपित्तनाशक, मधुर, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक और रुधिरके रोगोंको हरे है।

गुडनामानि ।

गुडः स्यादिक्षुसारस्तुमधुरोरसपाकजः ।
शिशुप्रियः सितादिः स्यादरुणोरसजः स्मृतः ॥

अर्थ-गुड, इक्षुसार, मधुर, रसपाकज, शिशुप्रिय, सितादि अरुण, रसज, (रुन्दा, द्रवज, गिद, मोदक, अमृतसारज, इक्षुरसराय, गन्टोल, मधुरी जर, गुल, स्वादुरसद, स्वादु)।

गुडलक्षणम् ।

इक्षोरसोयः संपक्वोजायतेलोष्टवद्दृढः ।
सगुडोगौडदेशेतुमत्स्यण्ड्येवगुडोमतः ॥ (भा.मि०)

अर्थ-ईखके रसको पकाकर मट्टीके डेलेकी समान दृढ करलेवे । उसको गुड कहते हैं । किन्तु गौडदेशमें मत्स्यण्डीको गुड कहतेहैं ।

संस्कृतभाषामें	गुड ।
हिन्दीभाषामें	गुड ।
वंगभाषामें	गुड ।
मराठीभाषामें	गूळ ।
गुजरातीभाषामें	गोल ।
कर्णाटकीभाषामें	होसवेल्लद हेलरु, जुनोहलेयवेल्ल ।
तैलिङ्गीभाषामें	वेल्लमु ।
इंग्रेजीभाषामें	ट्रीकलमोलासीस । Treacle-Molasseas
फारसीभाषामें	कदेसिया ।
अरवीभाषामें	कदेअस्वद ।

गुडगुणाः ।

गुडोवृष्योगुरुःस्निग्धोवातघ्नोमूत्रशोधनः ।
नातिपित्तकरोमेदःकफकृमिबलप्रदः (राजवल्लभ)

अर्थ-गुड-वीर्यवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, वातनाशक, मूत्रशोधक, अत्यन्त पित्तकारक नहीं तथा मेद, कफ, कृमि और बलकारक है ।

पुरातनगुडगुणाः ।

पित्तघ्नःपवनापहोरुचिकरोहृद्यस्त्रिदोषापहः
सयोगेनविशेषतोज्वरहरःसन्तापशान्तिप्रदः ।
विण्मूत्रामयनाशनोग्निजननः कण्डूप्रमेहान्तकृत्
स्निग्धःस्वादुरसोलघुःश्रमहरः पथ्यः पुराणोगुडः॥ (रा नि.)

अर्थ-पुराना गुड-पित्तनाशक, वातविनाशक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ विशेष करके ज्वरनाशक, सन्तापको शान्ति करनेवाला, मल और मूत्ररोगनाशक, अग्निदीपक, कण्डूनाशक, प्रमेहनिवारक, स्निग्ध, स्वादुरसान्वित, हलका, श्रमनाशक और पथ्य है ।

नूतनगुडगुणाः ।

गुडोनवःकफश्वासकृमिकारोग्निमान्द्यकृत्।श्लेष्माणमाशुनि-

निहन्तिसदार्द्रकेणपित्तंनिहन्तिचतदेवहरीतकीभिः । शुण्ठ्या समंहरतिवातमशेषमित्थंदोषत्रयक्षयकरायनमोगुडाय। (भा.प्र.

अर्थ-नवीनगुड-कफ, श्वास, और कृमिको उत्पन्न करैहै तथा मन्दाग्निजनक है। सदैव अदरखके साथ सेवन कियाहुवा गुड-कफको हरताहै, हरडके साथ सेवन कियाहुवा गुड-पित्तको दूर करताहै और सोठके साथ खायाहुवा गुड-सर्व वातके दोषोंको नष्ट करताहै अतएव हे त्रिदोषविनाशक गुड ! तुमको नमस्कार है।

अ-पथ्य।

नूतनोगुडोमधुरः क्षारोगुरुश्चोष्णश्चसमतः । रक्तरुक्पित्तदोषाणामहितोमूत्रशोधनः ॥ वृष्यः स्निग्धः सरः प्रोक्तः कृमिमेदकरो मतः । शुक्रमज्जामांसरक्तकारकश्चाग्निदीपनः ॥ पित्तलोभेदकोवातश्वासकासकफापहः । सशुद्धोरक्तकफकृत्स्वादुः स्निग्धश्चवातहा।मलमूत्रेनथामार्गंप्रवर्तयतिचांजसा।सचैकहायनोरुच्यः पथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मूत्रविष्ठाशुद्धिकरोऽग्र्यः स्वादुश्चर्पौष्टिकः । रसायनोलघुःस्निग्धो वृष्योमेदश्रमापहः ॥ त्रिदोषपाण्डुसन्तापपित्तवातापहो मतः । सयोगेनज्वरहरहृद्यस्तद्जीर्णोलघुः स्मृतः ॥सर्वदोषहरः श्रेष्ठः पुराणेपुनरुत्तमः । अरिष्टादिषुयोज्यः स्याद्दूर्ध्वहीनगुणः स्मृतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-नवीनगुड-मधुर, खारी, भारी, गरम, रक्तरोगी और पित्तरोगियोंको अहितकारी है, मूत्रशोधक, वीर्यवर्द्धक, चिकना, कुछ कुछ दस्तावर कृमिकारक, मेदजनक, शुक्र, मज्जा, मांस और रक्तकारक है, अग्निप्रदीपक, पित्तजनक, भेदक तथा वात, श्वास, खांसी और कफनाशक है, शुद्धकिया हुवा गुड-रक्तकारक, कफकारी, स्वादिष्ट, चिकना, वातनाशक और मलमूत्रको यथामार्ग प्रवर्त्तकरता है, एकवर्षका पुराना गुड रुचिकारक पथ्य, अग्निप्रदीपक मूत्र और मलको शुद्ध करनेवाला, हृदयको हितकारी, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक, रसायन, हलका, चिकना, वृष्य तथा मेद,

श्रम, त्रिदोष, पाण्डु, सन्ताप, पित्त और वातनाशक है, और किसीके संयोगसे ज्वरनाशक है, तीनवर्षका पुराना गुड-हलका, सर्वदोषनाशक,उत्तम, सर्वप्रकारके पुराने गुडोंमें श्रेष्ठ है, इसको अरिष्टादिकोंमें डालना चाहिये। तीन वर्षसे अधिक पुराना गुड हीनगुणवाला होजाताहै ।

गुदामयेकामलशोपमेहेगुल्मामयेपाण्डुहलीमकेच ।
वातेसपित्तासृजिराजरोगेरुचिप्रदोरोगहरोगुरुःस्यात् ॥
कासेशोषेगुड श्रेष्ठश्चान्यत्रापिहितोमतः ।
योगयुक्तोविशेषेणहितोगुणगणालयः ॥ (हा०सं०)

अर्थ-गुड-गुदारोग, कामलारोग, शोष, प्रमेह, गुल्मरोग, पाण्डुरोग, हलीमक, वात, रक्तपित्त और राजरोगको हरदे तथा रुचिको उत्पन्न करेहै । कास और श्वासरोगमें गुड हितकारीहै । और अन्यान्य रोगोंमेंभी हितकारक है और किसी अनुपानके साथ नानाप्रकारके रोगोंको हरनेवाला है ।

खण्डनामानि ।

खण्डेरसोद्भवाशुक्लासुपिष्टापाण्डुरातथा ॥

अर्थ-खण्ड, रसोद्भवा, शुक्ला, सुपिष्टा, पाण्डुरा, (पशुलका) ।

संस्कृतभाषामें	खण्ड ।
हिन्दीभाषामें	खाड ।
वंगभाषामें	खाँड ।
मराठीभाषामें	साखर ।
गुजरातीभाषामें	खाड ।
कर्णाटकीभाषामें	मालखड ।
तैलिंगीभाषामें	पाचदारा ।
इंग्रेजीभाषामें	इशुगर । Sugar
लैटिन्भाषामें	साचेरम । Saccharum
फारसीभाषामें	शकर ।
अरबीभाषामें	शकर ।

खण्डगुणा ।

वातपित्तहरशीतस्निग्धबल्यंमुखप्रियम् ।
चक्षुष्यश्लेष्मकृच्चोक्तखंडवृष्यतममतम् ॥

निहन्तिसदार्द्रकेणपित्तनिहन्तिचतदेवहरीतकीभिः । शुण्ठ्या समहरतिवातमशेषमित्थंदोषत्रयक्षयकरायनमोगुडाय। (भा.प्र.

अर्थ-नवीनगुड-कफ, श्वास, और कृमिको उत्पन्न करैहै तथा अग्नि जनक है । यही अदरखके साथ सेवन कियाहुवा गुड-कफको हरताहै, हरडके साथ सेवन कियाहुवा गुड-पित्तको दूर करताहै और सोंठके साथ खायाहुवा गुड-सर्व वातके दोषोंको नष्ट करताहै अतएव हे त्रिदोषविनाशक गुड ! तुमको नमस्कार है ।

अन्यच्च ।

नूतनोगुडोमधुक्षारोगुरुश्चोष्णश्चसमतः । रक्तरुक्पित्तदोषाणामहितोमूत्रशोधनः ॥ वृष्यः स्निग्धः सरः प्रोक्तः कृमिभेदकरो मतः । शुक्रमज्जामांसरक्तकारकश्चाग्निदीपनः ॥ पित्तलोभेदकोवातश्वासकासकफापहः । सशुद्धोरक्तकफकृत्स्वादु स्निग्धश्चवातहा।मलमूत्रेयथामार्गंप्रवर्तयतिचाञ्जसा।मचक्रहायनोरुच्यःपथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मूत्रविष्ठाशुद्धिकरोऽयं स्वादुश्चपौष्टिकः । रसायनोलघुःस्निग्धो वृष्योमेहश्रमापहः ॥ त्रिदोषपाण्डुसन्तापपित्तवातापहो मतः । सयोगेनज्वरहररुच्यस्सजीर्णोलघु स्मृतः ॥सर्वदोषहरःश्रेष्ठः पुराणेपुनरुत्तमः । अरिष्टादिषुयोज्यःस्याद्दूर्ध्वहीनगुणःस्मृतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-नयागुड-मधुर, खारी, भारी, गरम, रक्तरोग और पित्तरोगियोंको अहितकारी है, मूत्रशोधक, वीर्यवर्द्धक, चिकना, दस्त लानेवाला कृमिकारक, मेदजनक, शुक्र, मज्जा, मांस और रक्तकारक है, अग्निदीपक, पित्तजनक, भेदक तथा वात, श्वास, खांसी और कफनाशक है, शुद्धकिया हुवा गुड-रक्तकारक, कफकारी, स्वादिष्ट, चिकना, वातनाशक और मलमूत्रको यथामार्ग प्रवृत्त करनेवाला है, एकवर्षका पुराना गुड रुचिकारक पथ्य, अग्निदीपक मूत्र और मलको शुद्ध करनेवाला, हृदयको हितकारी, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक, रसायन, हलका, चिकना, वृष्य तथा प्रमेह,

श्रम, त्रिदोष, पाण्डु, सन्ताप, पित्त और वातनाशक है, और किसीके संयोगसे ज्वरनाशक है, तीनवर्षका पुराना गुड–हलका, सर्वदोषनाशक, उत्तम, सर्वप्रकारके पुराने गुडोंमें श्रेष्ठ है, इसको अरिष्टादिकोंमें डालना चाहिये। तीन वर्षसे अधिक पुराना गुड हीनगुणवाला होजाताहै ।

गुदामयेकामलशोपमेहेगुल्मामयेपाण्डुहलीमकेच ।
वातेसपित्तासृजिराजरोगेरुचिप्रदोरोगहरोगुरु स्यात् ॥
कासेशोपेगुडःश्रेष्ठश्चान्यत्रापिहितोमतः ।
योगयुक्तोविशेषेणहितोगुणगणालय. ॥ (हा०स०)

अर्थ–गुड–गुदारोग, कामलारोग, शोष, प्रमेह, गुल्मरोग, पाण्डुरोग, हलीमक, वात, रक्तपित्त और राजरोगको हरहै तथा रुचिको उत्पन्न करैहै। कास और श्वासरोगमें गुड हितकारीहै । और अन्यान्य रोगोंमेंभी हितकारक है और किसी अनुपानके साथ नानाप्रकारके रोगोंको हरनेवाला है ।

खण्डनामानि ।

खण्डेरसोद्भवाशुक्लासुपिष्टापाण्डुरातथा ॥

अर्थ–खण्ड, रसोद्भवा, शुक्ला, सुपिष्टा, पाण्डुरा, (पशुल्का) ।

संस्कृतभाषामें	खण्ड ।
हिन्दीभाषामें	खांड ।
वंगभाषामें	खाँड ।
मराठीभाषामें	साखर ।
गुजरातीभाषामें	खांड ।
कर्णाटकीभाषामें	मालखंड ।
तैलिंगीभाषामें	पाचदारा ।
इंग्रेजीभाषामें	श्युगर । Sugar
लैटिन्भाषामें	साकेरम् । Saccharum
फारसीभाषामें	शकर ।
अरबीभाषामें	शक्कर ।

खण्डगुणाः ।

वातपित्तहरशीतस्निग्धबल्यमुखप्रियम् ।
चक्षुष्यश्लेष्मकृच्चोक्तखंडवृष्यतमंमतम् ॥

अर्थ-खाड वातपित्तनाशक, शीतल, स्निग्ध, बलकारक, मूत्रभेद, नेत्रोंको हितकारी, कफकारी और वीर्यवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

वातंनिवारयतिपित्तमपाकरोति तृष्णांछिनत्तिविनिहन्ति चमोहमूर्च्छाम् ॥ शोषंनिवर्त्तयतितर्पयतीन्द्रियाणि शीत· सदासमधुरःखलुशुद्धखण्डः ॥

अर्थ-खाड-वातनिवारक, पित्तहारक, तृषानाशक, मोह, मूर्च्छा और शोषको हरनेवाली, इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाली, शीतल और मधुर है ।

गुडखण्डगुणाः ।

गुडखण्डश्चमधुरःसितश्चवातपित्तहा ।
किञ्चिच्छीतगुणोपेतोबल्योवृष्योरुचिप्रदः ॥

अर्थ-गुडकी खाड अर्थात् शक्कर-मधुर, सफेद, वातपित्तनाशक, किंचित् शीतगुणयुक्त, बलकारक, वीर्यवर्द्धक और रुचिकारक

शर्करानामानि । (\ ।पंतिचा-

शर्करामीनाण्डीशुक्लासिताचवालुका ॥ मत्-
अहिच्छत्राचसिकताशुद्धाशुभ्रासितोपला ॥

अर्थ-शर्करा, मीनाण्डी शुक्ला, सिता, वालुकात्मजा । अहिच्छत्रा, सिकता, शुभ्रा, शुद्धा, सितोपला, (शुक्लोपला, शार्प, श्वेता, मत्स्यण्डिका, गडोद्भवा) ।

संस्कृतभाषामें	शर्करा ।
हिन्दीभाषामें	बूरा, मिश्री, बतासे, कंद ।
बंगभाषामें	चिनी, मिछरी ।
मराठीभाषामें	पिठीसाखर, खडीसाखर ।
गुजराथीभाषामें	साकर ।
कर्णाटकीभाषामें	गुडगुडानुगीतु ।
तैलङ्गीभाषामें	चक्केरपांचदारा ।
इंग्रेजीभाषामें	प्युरिफाइड इप्युगर्वेशी Purified Su,ar (ar-ly
लैटिनभाषामें	साकरम् प्युरिफिकेटम् । Saccharum Purificatum
फारसीभाषामें	शर्करशकर नबात ।
अरबीभाषामें	सकरे अबियद् ।

शर्करागुणा ।

शर्कराशीतवीर्य्याचविपाकेमधुरासरा ।
दाहतृदच्छर्दिमूर्च्छास्रक्कृमिकोपविनाशिनी ॥ (गणनि०)

अर्थ–शर्करा (बूरा), शीतवीर्य्य, विपाकमें मधुर, सारक तथा दाह, तृषा, वमन, मूर्च्छा, रुधिरविकार और कृमिरोगको नष्ट करेहै ।

मूर्च्छामोहतृपास्यशोपशमनीदाहज्वरध्वंसिनी श्वासच्छर्दिमदात्ययक्लमहरीहृद्याचसन्तर्पणी । क्षीणेरेतसिपावकेच विपमेक्षीणेक्षतेदुर्वलेदुर्वातेपिचरक्तपित्तजगदेसेव्यासदाशर्करा ॥ इक्षुजेषुविकारेषुसर्वेष्वपिमनोहरा । समस्तरोगशमनीतवराजाख्यशर्करा ॥ (सुषेणदेव)

अर्थ–मिश्री–मूर्च्छा, मोह और तृषाके शोषको शान्ति करनेवाली, दाहज्वरनाशक, श्वास, वमन, मदात्यय और क्लमको हरनेवाली, हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक तथा क्षीणवीर्य्य, विषमाग्नि, क्षीण, क्षत, दुर्वल, वातरक्त और रक्तपित्तरोगमें सदैव सेवन करनी चाहिये । सर्व प्रकारके इक्षुविकारोंमें तवराजशर्कराश्रेष्ठ और सर्व प्रकारके रोगोंको शान्ति करनेवाली है ।

अपरञ्च ।

शर्करामधुराशीतावल्यावृष्यासरामता । स्निग्धाकफकरी चैवक्षयकासतृषाजयेत् ॥ विषदोषमदश्वासमोहमूर्च्छांवमिं तथा।अतिसाररक्तदोषपित्तवातक्लमींस्तथा ॥ भ्रान्तिदाहश्रमचार्शंनाशयेदितिकीर्त्तिता । यथायथाचधौतास्यात्तथागुणकरीमता।।खण्डोपलाचचक्षुष्यास्निग्धाधातुविवर्द्धिनी । मुखप्रियाचमधुराशीतावृष्याबलप्रदा ॥ स्वरेन्द्रियतृप्तिकरीलघ्वीतृष्णाविनाशिनी । क्षतक्षयरक्तपित्तमोहमूर्च्छाकफतथा ॥ वातपित्तचदाहञ्चशोषञ्चैवविनाशयेत्।पौण्ड्रेक्षुजाशर्करातुस्निग्धाहितकरीमता ॥ वृष्याक्षतक्षयञ्चैव क्षयंचैवारुचिंजयेत । वंशेक्षुसम्भवावल्याचक्षुष्याधातुव-

ङ्गिनी॥रूक्षाचमधुराचैवश्यामेक्षूणांबलप्रदा । श्रमभीत-
पर्णीरुच्यारसेक्षूणाचशीतला ॥ स्निग्धाकान्तिकरीप्रोक्ता
रक्तेक्षो पित्तनाशिनी । (नि र.)

अर्थ-शर्करा-गुण-चीनी-मधुर, शीतल, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, सारक, स्निग्ध, कफकारक, तथा क्षय, खाँसी, तृषा, विषविकार, मद, श्वास, मोह, मूर्च्छा, वमन, अतिसार, रुधिरविकार, पित्त, वात, कृमि, भ्रम, दाह, श्रम और ज्वरादिरोगोंको दूर करे है। यह जितनी २ अधिक सफेद होगी उतनी २ ही अधिक गुणकारी है। मिश्री व कन्द-नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, मुखप्रिय, मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, सारक, इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाली, हलकी, तृषानाशक तथा क्षत, क्षय, रक्तपित्त, मोह, मूर्च्छा, कफ, वात, पित्त, दाह और शोषको हरनेवाली है। पुण्ड्रकादि ईखोंकी-गुण-स्निग्ध, हितकारी, वीर्यवर्द्धक, क्षतक्षय, क्षय और अरुचिको हरे है। वंशक नामवाली ईखकी खांड-बलकारी, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक रूखी और मधुर है। कान्ती ईखकी चीनी-बलकारक, श्रमनाशक, कृमिनाशक, रुचिजनक है। रसेक्षुनामवाली ईखकी चीनी-शीतल, स्निग्ध और कान्तिजनक है। रक्तईखकी-गुण-पित्तनाशक है।

शर्करादीनामनुसारतः शैत्यादिगुणवत्त्वमाह ।

लसीकाफाणितगुडखण्डमत्स्याण्डकासिता ।
निर्म्मलालघवोज्ञेयाशीतवीर्य्यायथोत्तरम् ॥
यथायथैषांनैर्मल्यगुणवत्स्यात्तथातथा । (रा० व०)

अर्थ-लसीका (शीरा), फाणित (राब), गुड, खांड, चीनी और मिश्री यह क्रमसे निर्मल है, हलकी और शीतवीर्य है अर्थात् शीरेसे राब, राबसे गुड, गुडसे खांड, खांडसे चीनी और चीनीसे मिश्री-निर्मल, हलकी और शीतवीर्य है इनमें जो जो अधिक निर्मल होवै है उन उनमें ही अधिक गुण जानने ।

खण्डनामशर्करानामानि ।

यावनालीहिमोत्पन्नादिमानीहिमशर्करा ।
क्षुद्रशर्करिकाक्षुद्रागुडजाजलबिन्दुजा ॥

अर्थ–यावनाली, हिमोत्पन्ना, हिमानी, हिमशर्करा, क्षुद्रशर्करिका, क्षुद्रा, गुडजा, जलबिन्दुजा ।

तद्गुणा ।

क्षुद्रातुशर्कराकिञ्चिदुष्णातिक्तातिपिच्छिला ।
स्निग्धाचमधुरारुच्यासरादाहविनाशिनी ॥
वातपित्तरक्तदोपनाशयेदितिकीर्त्तिता । (नि०र०)

अर्थ–यावनालशर्करा (सीरेखिस्त)–किञ्चित् गरम, कडवी, अत्यन्त पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, रुचिकारक, सारक, दाहनाशक तथा वात, पित्त और रुधिरके दोषोंको हरे है ।

यवासशर्करागुणा ।

यवासशर्कराशीतारसेस्वाद्वीकषायका ।
वृष्यातिक्ताचमधुराभ्रमपित्ततृषांजयेत । (रा०नि०)

अर्थ–यवासशर्करा (तुरजबीन)–शीतल, स्वादिष्ठ, कपेली, वीर्यवर्द्धक, कडवी, मधुर तथा भ्रम, पित्त और तृषानाशक है ।

अन्यच्च ।

यवासशर्कराज्ञेयावृंहणीपित्तहारिणी । ज्वरघ्नदीपनीशीतारेच-
नीचपुरातनी ॥ नार्य्योश्चापन्नसत्वायादुर्बलस्यतथाशिशो ।
रेचनार्थंप्रयोज्येयक्षीणस्यस्थविरस्यच ॥ (आ०म०)

अर्थ–यवासशर्करा (तुरजबीन)–पुष्टिकारक, पित्तनाशक, ज्वरनाशक, अग्निप्रदीपक, शीतल और यह पुरानी दस्तावर है । गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक, क्षीण और वृद्धमनुष्योंको इससे दस्तकराने चाहिये ।

मधुशर्करागुणा ।

मधुजाशर्करावल्यागुर्वीवृष्याचशीतला । मधुरातर्पणीरू-
क्षातुवराछेदकातथा ॥ पाकेस्वाद्वीवमिदाहपित्तचअतिसार-
कम्।रक्तपित्ततृषांपित्तकफचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ–मधुकी खांड–बलकारक, भारी, वीर्यवर्द्धक, शीतल, मधुर, तृप्तिकारक, रूखी, कपेली, छेदक, पकनेमें स्वादिष्ठ तथा वमन, दाह, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त, तृषा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुष्पशर्करागुणाः ।

पुष्पोद्भवाशर्करातुस्वाद्वीहृद्याचशीतला । गुर्वीपित्तरक्तदोपनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ यावन्त्य शर्कराःप्रोक्ताःसर्वादाहप्रणाशनाः । रक्तपित्तप्रशमनाश्छर्दिमूर्च्छातृषापहाः ॥

अर्थ-पुष्पशर्करा अर्थात् फूलसे बनाईहुई चिनी-स्वादिष्ट, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, पित्त और रुधिरके विकारोंको हरे है । जितनी प्रकारकी चीनी है वे सर्व प्रकारकी दाहनाशक, रक्तपित्तको शांति करने वाली तथा वमन, मूर्च्छा और तृषाको हरनेवाली है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे इक्षुवर्गः समाप्तः ॥ २० ॥

अथ सन्धानवर्गः ।

काञ्जिकनामानि ।

काञ्जिककञ्जिककाञ्जीकुण्डलकुण्डगोलकम् ।
धान्यमूलधान्ययोनि कुल्माषकुल्माभिषुतम् ॥

अर्थ-काञ्जिक, कञ्जिक, काञ्जी, कुण्डल, कुण्डगोलक, धान्यमूल, धान्ययोनि कुल्माष, कुल्माभिषुत, (आरनाल, सौवीर, कुल्माष, अभिषुत, आवन्तिसोम, धान्याम्ल, कुञ्जल सिद्धत्र, सिद्धमण्ड, काञ्जिक काञ्जिका, भक्तवारि, तुषाम्बु, सन्धान, शुद्धाम्ल, महारस, सुवीरक, कुल्माषुक, धान्यज, उन्नाह, रसोन, सुवीराम्ल, पक्ववारि, वीर, अभिषव, अम्लसार) ।

काञ्जिकलक्षणगुणाः ।

सधितधान्यमण्डादिकाञ्जिककथ्यतेजनै । काञ्जिकंभेदि तीक्ष्णोष्णंरोचनपाचनलघु ॥ दाहज्वरहरंस्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् । माषादिवटकैर्यत्तुक्रियतेतद्गुणाधिकम् ॥ लघुवातहरंतत्तुरोचनपाचनपरम् । शूलाजीर्णविबन्धामनाशनंवह्निशोधनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-धान्यादिकोंके मांडको कुछ दिनों धरा रहना देवे उसको काञ्जी

कहते हैं काजी-भेदक, तीक्ष्ण, गरम, रोचन, पाचक, हलकी शरीरमें लगानेसे दाह और ज्वरको दूर करे और पीनेसे वातकफको हरे है । उरद आदिके वडोंकी वनाईहुई काजी अधिक गुणवाली है हलकी, वातनाशक, रोचन, पाचन, तथा शूल, अजीर्ण, विबन्ध और आमनाशक और वस्ति-शोधक है ।

निषेध ।

शोषेमूर्च्छाज्वरार्तानाभ्रमकेदुर्विषार्दिते । कुष्ठानारक्तपित्तानांकाञ्जिकनप्रशस्यते॥पाण्डुरोगेराजयक्ष्मण्यथशोफातुरेषुच । क्षतक्षीणेपरिश्रान्तेमन्दज्वरनिपीडिते ॥ नरेनैव हितप्रोक्तकाञ्जिकदोषकारकम् ॥ (हारी० स०)

अर्थ-शोष, मूर्च्छा, ज्वरसे पीडित, भ्रम, विषसे पीडित, कुष्ठ, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, राजयक्ष्मा, सूजनसे पीडित, क्षतक्षीण, मार्गचलनेसे थकेहुये और मन्दज्वरसे पीडित मनुष्योंको काजी हितकारी नहीं किन्तु दोषकारी है ।

काञ्जिकविशेषगुणा ।

शूलवातार्दितानान्तुतथाजीर्णविबन्धिनाम् ।
श्रेष्ठप्रोक्ततथाम्लञ्चगुणाधिक्यनरेषुच ॥ (हारी० स०)

अर्थ-शूल और वातसे पीडित तथा अजीर्ण और विबन्ध रोगवाले रोगियोको काजी अत्युत्तम है और अनेक गुण करे है ।

अन्यच्च ।

नूतनमृन्मयकुम्भकटुतैलेनलेपयेत । निर्मलचजलतस्मिन्राजिकाजाजिसैन्धवम् ॥ हिंगुविश्वानिशाचैवओदनंवंशपल्लवा । ओदनस्यकुलित्थानांजलवटकखांडवम्॥सर्वतस्मिन्निधायाथमुद्रांदत्वादिनत्रयम ।रक्षयित्वाततोवस्त्रेगालितकाञ्जिकमतम् ॥तद्रेदकवस्तिशुद्धिकरमुष्णचतीक्ष्णकम्। रुच्यमम्लपाचकचलघुलेपेचदाहकम्॥ज्वरनाशकं प्रोक्ततत्पीतकफवातहम् । शूलशोषभ्रमदाहंमूर्च्छांपित्तज्वरतथा ॥ अजीर्णाध्मानविदस्तम्भानामनाशकरमनम्।

काञ्जिकंसंस्थिताश्चैवनवकारुचिदामता ॥ शीता कफक-
गदाहशूलाजीर्णविनाशका । नेत्ररोगेहितानोकाञ्जिपिभि-
पाककोविदे ।(इति रत्नाकरे)

अर्थ-प्रथम कोरा मट्टीका घडा लेकर उसके भीतर तथा ऊपर तेलका लेप करदे फिर उसमें निर्मल स्वच्छ जल भर देवे उस जलमें राई, जीरा, सधानोन, हींग, सोंठ, हलदी, भात, बांसके कोमल पत्ते, कुलथीके भातका जल और बडोंके टुकडे यह सब पदार्थ डालकर मुख बंद करके तीनदिनतक बंद किया रक्खा रहने देवे इसके उपरान्त उसको खोलकर कपडेसे छानले इसको कांजी कहते हैं । यह कांजी-भेदक, पित्तदोषहर, गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक, खट्टी, पाचक, हलकी, इसका लेप करनेसे-दाह और ज्वर दूर होता है और, यह पीनेसे कफ, वात, शूल, वमन, भ्रम, दाह, मूर्च्छा, पित्तज्वर, अजीर्ण, आध्मान और मलस्तम्भको दूर करे है । कांजीमें पडेहुए बडे-रुचिकारक, शीतल, कफकारी, दाह, शूल और अजीर्णनाशक है और नेत्ररोगोंमें हितकारी नहीं है ।

तुषोदकलक्षण गुणाश्च ।

तुषोदकंयवैरामैः सतुषैः शकलीकृतैः ।
तुषाम्बुदीपनंहृद्यंपाण्डुक्रिमिगदापहम् ॥
तीक्ष्णोष्णंपाचनंपित्तरक्तकृद्बस्तिशूलनुत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-कच्चे तुषसहित जवोंको कूटकर भिगोदे जब उसमें खटास होजाय तब वह तुषोदक होजाता है । तुषोदक-दीपन, हृदयको हितकारी, पांडु और कृमिरोगको दूर करे तीक्ष्ण, गरम, पाचक तथा रक्तपित्तकारक और बस्तिकी पीडाको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

तुषोदकंवातपित्तहृत्तुरक्तपित्तकफप्रभेदकम् ।
दीपनंभ्रामकंक्रिमिभ्रमजीर्णहृत्कटुकंचपाके ॥(रा०नि०)

अर्थ-तुषोदक-वातपित्तनाशक, रक्तपित्तकारक, दस्तावर, पाचक, कफको भस्म करता है कृमिनाशक, अजीर्णनाशक और पाकमें चरपरा है ।

सौवीरलक्षणानि ।

सौवीरकमुर्वीनाम्लपवोत्थंवो समसभवम् ।

यवाम्लजतुपोत्थचतुपोदकञ्चापिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सौवीरक, सुवीराम्ल, यवोत्थ, गोधूमसम्भव, यवाम्लज तुपोत्थ, तुपोदक ।

अस्य लक्षण गुणाश्च ।

सौवीरन्तुयवैरामे पक्वैर्वानिस्तुपैःकृतम् । गोधूमैरपिसौवीरमाचार्य्याःकेचिदूचिरे ॥ सौवीरन्तुग्रहण्यर्शः कफघ्नंभेदि दीपनम् । उदावर्त्ताङ्गमर्दास्थिशूलानाहेपुशस्यते ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कच्चे वा पके जौओंके तुष अलग करदेवे, फिर उसकी काजी बनावे उस काजीको सौवीर कहते हैं । कोई वैद्य कहते हैं कि, कच्चे अथवा पके गेंहूसे सौवीर बनाई जाती है । सौवीर-सग्रहणी, ववासीर और कफनाशक है, दस्तावर, दीपन तथा उदावर्त्त, अंगका टूटना, अस्थियोंमें पीडा और अफारेमें हितकारी है

अन्यच्च ।

सौवीरकंचाम्लरसकेश्यमस्तकदोपजित ।
जराशैथिल्यहरणबल्यसन्तर्पणपरम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सौवीर-खट्टी केशोंको हितकारी, मस्तकरोगनाशक, जरा और शिथिलताको हरनेवाली, बलकारी और तृप्तिकारक है ।

आरनालक्लक्षणगुणाश्च ।

आरनालंतुगोधूमैरामे 'स्यान्निस्तुपीकृते' ।
पक्वैर्वासधितैस्तत्तुसौवीरसदृशगुणे ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-विना तुषके कच्चे गेंहूको भिजोकर आरनाल नामवाली काजी बनाई जाती है । या पके गेंहूसे बनाईहुईकोभी आरनाल कहते हैं । आरनालके गुण सौवीरकी समान जानने ।

आरनालकगुणा ।

जातयवाम्लकटुकविपाकंवातामयश्लेष्महरसरक्तम् ।
पित्तप्रकोपकुरुतेसभेदिविदूषणपित्तगदासृजञ्च ॥

अर्थ-जौंसे बनाईहुई काजी-पचनेमें कटु, वातनाशक, कफनिवारक, रक्त और पित्तको कुपित करनेवाली, दस्तावर और रक्तपित्तको दूषित करे है ।

सन्दीपनशूलहररुचिप्रदगोधूमजातकथितकपायम् ।

सन्दीपनस्याज्जरणंकफभसमीरदोषंहरतेततोऽपि॥ (शा०सं०)

अर्थ-गेहूँसे बनाईहुई कांजी-अग्निको दीपन करनेवाली, शूलको हरनेवाली, रुचिको करनेवाली, कफेली, भोजनको भस्म करनेवाली, कफनाशक और वातके विकारोंको हरे है।

धान्याम्लस्य नाम गुणाश्च।

धान्याम्लंशालिचूर्णञ्चकोद्रवादिकृतंभवेत्।
धान्याम्लंधान्ययोनित्वात्प्रीणनंलघुदीपनम्॥
अरुचौवातरोगेषुसर्वेष्वस्थापनंपुनः।

अर्थ-शालिधानोंके चूर्ण अथवा कोदोंके चूनसे जो कांजी बनाई जाती है उसको धान्याम्ल कहते हैं। धान्याम्ल-प्रीणन, हलकी, अग्निदीपक तथा सर्वप्रकारके वातरोग और अरुचिरोगमें देनी चाहिये।

शिण्डाकीसंज्ञस्य नाम गुणाश्च।

शिण्डाकीराजिकायुक्तैःस्यान्मूलकदलादिभिः।
सर्षपस्यरसैर्वापिशालिपिष्टकसंयुतैः॥
शिण्डाकीरोचनीगुर्वीपित्तश्लेष्मकरीस्मृता॥

अर्थ-मूलीके पत्तोंके रसमें राई डालकर जो कांजी बनती है उसको शिण्डाकी कहते हैं। अथवा सरसोंके रसमें शालिधानोंका चून डालकर जो कांजी बनाई जाती है उसकोभी शिण्डाकी कहते हैं। शिण्डाकी-रोचक, भारी और पित्तकफकारी है।

शुक्तस्य नाम गुणाश्च।

कन्दमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच।यत्रद्रव्येऽभिषूयन्ते
तच्छुक्तमभिधीयते ॥ शुक्तंकफमतीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनं
लघु। पाण्डुक्रिमिहरंरूक्षंभेदकंरक्तपित्तकृत्॥

अर्थ-कन्दमूल और फलादिकमें लोन और तेल डालकर जो द्रव्य बनायाजाता है उसको शुक्त अर्थात् सिरका कहते हैं। सिरका-कफनाशक, तीक्ष्ण, गरम, रोचन, पाचक, हलका पाण्डु और कृमिरोगनाशक, रूखा दस्तावर और रक्तपित्तकारक है।

तत्पानकस्य नाम गुणाश्च।

कन्दमूलफलाद्यंयत्तच्छुक्तविधिसमागुणम्।

तद्रुच्यपाचनवातहरलघुविशेपत· ॥

अर्थ-कद, मूल फलादिकोंमें राई आदिका चूर्ण डालकर जो द्रव्य बनाया जाता है उसको आचार कहते हैं। आचार-रुचिकारक, पाचक, वातनाशक और विशेषकरके हल्का है।

मद्यनामानि।

मदिराप्रसवाहालाचपलाचहलिप्रिया।
अमृतावीरामेधावीमाधवीकापिशायनी॥

अर्थ-मदिरा, प्रसवा हाला, चपला, हलिप्रिया, अमृता, वीरा, मेधावी, माधवी, कापिशायनी (सुरा, मद्य, परिश्रुता, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, इरा, कादम्बरी, परिस्रुता, कश्य, प्रसन्नेरा, माणिका, कपिशी, गन्धमादिनी, कत्तोय, मद, कपिशिका, वारुणी, मत्ता, सीता, कामिनीप्रिया, मदगन्धा, माध्वीक, मधु, सन्धान, आसव, मदनी, सुप्रतिमा, मनोज्ञा, विधाता, मादनी, हली, गुणारिष्ट, सरक, मधुलिका, मदोत्कटा, महानन्दा, सीधु, मैरेय, वनवल्लभा, कारण, तत्त्व, मदिष्ठा, परिप्लुता, कल्प, साधुरसा, शुण्डा, हारहूर, माद्वीक, मदना, देवसृष्टा, कापिश, अब्धिजा, कल्या, मधूल)।

संस्कृतभाषामें	मदिरा, मद्य।
बंगभाषामें	मदिरा, मद्य।
गुजरातीभाषामें	दारू।
मराठीभाषामें	मद्य, दारू।
हिंदीभाषामें	मदिरा, (दे) दारू, सराब।
कर्णाटकीभाषामें	शरे, साराइ।
तैलिङ्गीभाषामें	कल्लु।
अं०	वाइन।
फारसीभाषामें	शराब।

साधारणमदिरागुणाः।

मद्यसाधारणसूक्ष्मसारकदाहककटु। सुस्वादुतिक्तचरसे पाकेम्लचलघुस्मृतम्॥ अग्निदीप्तिकररुच्यहृद्यचोष्णंकषायकम्। तीक्ष्णविकासिचमतमूत्रलतुष्टिकृन्मतम्॥ मलोत्सर्गकरनाडीवस्तिशुद्धिकरमतम्। बल्यपुष्टिकर

म्वर्य्यंप्रतिभाकारकंमतम् ॥आरोग्यकारकंवर्ण्यंरक्तदूषण-
कारकम् । आनाहंचकफवातशूलंचैवविनाशयेत् ॥ निप-
शोकार्त्तपुरुषेस्वल्पाग्नौचहितावहम् । सात्त्विके पुरुषे पीत
गीतहास्यादिकारकम ॥ राजसैर्भक्षितचेत्स्यात्साहसादि-
करमतम । तामसैर्भक्षितंतच्चनिद्रालस्यादिकारकम॥बल
कालंचमत्वात्वापीतंतदमृतोपमम्।अन्यथाभक्षितंचेत्स्या-
द्विषवच्चापकारकम ॥ अतीवमादकंतच्चदुर्गंधिविरसंगुरु ।
कृमिजुष्टंचातितीक्ष्णंचनमृदुचदाहकम् ॥ दुष्टभाण्डस्थितं
नूत्नमनूत्नमपिचिक्कणम । उष्णमुष्णपदार्थैस्तुमिश्रितमलि-
नंतथा ॥ तीक्ष्णैर्द्रव्यैर्युतंतच्चनशस्तीयान्नरःक्वचित । स्त्रीद्वि-
जैर्नैवतत्पेयंबुद्धिभ्रंशकरंयत ॥ (नि०र०)

अर्थ—साधारण मदिरा-सूक्ष्म, कुछ कुछ दस्तावर, दाहजनक, स्वरको, स्वादिष्ठ, कडवी, रस और पाकमें खट्टी, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, कफवातको हितकारी, गरम, कसैली, तीक्ष्ण, विकाशी, मूत्रकारक, तुष्टिकारक, मलको निकालनेवाली, नाडी और वस्तिको शुद्ध करनेवाली, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाली, प्रभाको उत्पन्न करनेवाली, आरोग्यताको देनेवाली, वर्णको सुन्दर करनेवाली रुधिरको दूषित करनेवाली तथा आनाह कफ, वात और शूलनाशक है जिनको विदग्धहुये, शोकसे पीडित हुये और मन्दाग्निवाले मनुष्योंको हितकारी है सात्विक मनुष्य इसको पीनेसे गीत और हास्यादिको करते हैं रजोगुणयुक्त पुरुषोंसे यह पीहुई साहसादि गुणोंको उत्पन्न करे है और तमोगुणयुक्त पुरुषोंसे पीहुई निद्रा और आलस्यको करनेवाली है बल और कालका विचार करके यह पीहुई अमृतके समान गुण करे है अन्य प्रकार सेवन कीहुई विषके समान अपकारी करे है और अत्यन्त नशीली, दुर्गन्ध-युक्त, विरस, भारी, कीडोंकरके युक्त, अत्यन्त तीक्ष्ण, गाढी, मृदु, दाहक और खराबपात्रमें रक्खी हुई, नवीन, पुरानी, चिकनी, गरम, गरम पदार्थोंसे मिली हुई, मलिन और तीक्ष्ण द्रव्योंसे मिली हुई ऐसी मदिरा कभी नहीं पीनी

चाहिये । और स्त्री तथा ब्राह्मण तो इसको कभी भी नहीं पीवें कारण यह है कि, इसके पीनेसे बुद्धि भ्रष्ट होजाती है ।

अरिष्टलक्षण गुणाश्च ।

पक्वौषधाम्बुसिद्धयन्मद्यतत्स्यादरिष्टकम् ।
अरिष्टलघुपाकेनसर्वतश्चगुणाधिकम् ॥
अरिष्टस्यगुणाज्ञेयावीजद्रव्यगुणैःसमाः ।

अर्थ-जो पक्की औषधियोंके काढेसे मदिरा बनाई जाती है उसको अरिष्ट कहते हैं । अरिष्टनामवाली मदिरा लघुपाकी होनेसे सर्वप्रकारकी मदिराओंसे गुणामें अधिक है । अरिष्ट जिस २ वस्तुसे बनता है उसी २ वस्तुके समान उस अरिष्टके गुण जानने ।

अन्यच्च ।

अरिष्टदीपनहृद्यतुवरपाचनलघु ।सरचकटुकचैवपित्तवातकफापहम् ॥ कुष्टगुल्मार्शशोपघ्नशोफसग्रहणीहरम् । पाण्डुप्लीहांचोदरचज्वरशूलकृमीन्क्लमम्॥आनाहनाशयेत्प्रोक्तसर्वमद्येगुणाधिकम् ॥

अर्थ-अरिष्ट-दीपन, हृदयको हितकारी, कपली, पाचक, हलकी, सारक, चरपरी तथा पित्त, वात, कफ, कोढ, गुल्म, बवासीर, शोष, सूजन, संग्रहणी, पाण्डुरोग, प्लीहा, उदररोग, ज्वर, शूल, कृमि, श्रम और अफारेको दूर करनेवाली है तथा सर्वमद्योंमें अधिक गुणवाली है ।

सुरालक्षण गुणाश्च ।

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतमद्यसुरास्मृता ।
सुरागुर्वीबलस्तन्यपुष्टिमेद कफप्रदा ॥
ग्राहिणीशोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ।

अर्थ-शालि और साठीधानाकी पीठीसे जो मदिरा बनाईजातीहै उसको सुरा कहते हैं, सुरा-भारी, बलकारक, स्तनोंमें दूधको उत्पन्नकरनेवाली, पुष्टिकारक, कफजनक, मलरोधक तथा सूजन, गुल्म, बवासीर, संग्रहणी और मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है ।

वारुणीलक्षण गुणाश्च ।

पुनर्नवाशिलापिष्टैर्वारुणीविहितामता ।

संहितैस्तालखर्जूररसैर्या सापि वारुणी ॥
सुरावद्वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ।

अर्थ-पुनर्नवाको सिलपर पीसकर जो मदिरा बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं। किसीके मतसे ताल और खजूरादिके रसमें जो मदिरा बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं। वारुणी मदिराके गुण सुराकी समान हैं विशेष करके हलकी तथा पीनस, आफरा और शूलको निवृत्त करती है।

अन्यच्च

वारुणी पाचिकी हृद्या तीक्ष्णा दुर्घ्नमदा मता । लघ्वी च श्लेष्मशूलकासवातिविबन्धहा ॥ आध्मानपीनसश्वासमूत्रकृच्छ्रं च नाशयेत् । गुल्मं चार्शो नाशयतीत्येवमुक्तं चिकित्सकैः ॥

अर्थ-वारुणीमदिरा-पाचक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण दस्तावर, हलकी, कफनाशक तथा शूल, खाँसी, वमन, विबन्ध, अफरा, पीनस, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म और बवासीरको हरै है।

सीधुमद्यस्य गुणाश्च।

इक्षोः पक्वै रसैः सिद्धः सीधुः पक्वरसश्च सः । आमैस्तैरेव यः सीधुः स च शीतरसः स्मृतः ॥ सीधुः पक्वरसः श्रेष्ठः स्वराग्निबलवर्णकृत् । वातपित्तकरः सद्यः स्नेहनो रोचनो हरेत् । विबन्धमेदःशोफार्शःशोषोदरकफामयान् ॥ तस्मादल्पगुणः शीतरसः संलेखनः स्मृतः ।

अर्थ-पकेहुये ईखके रससे जो मदिरा बनाई जाती है उसको सीधु कहते हैं और जो कच्चे ईखके रससे मदिरा बनाई जाती है उसको शीतरस कहते हैं, पके ईखके रससे बनाई हुई सीधुनामवाली मदिरा-श्रेष्ठ, स्वर, अग्नि, बल और वर्णको करनेवाली, तत्काल वातपित्तकारक, स्निग्ध, रोचक तथा विबन्ध, मेद, सूजन, बवासीर, शोष, उदररोग और कफरोगोंको नष्ट करे है, शीतरस नामवाली मदिरा सीधुसे कुछ अल्पगुणवाली और लेखन है।

अन्यच्च ।

सीधुः कषायाम्लरसो मधुरोनामघ्नो दीपनो मदशमनोपमर्दः ।

आमातिसारानिलपित्तशूलश्लेष्मामयार्शोग्रहणीगदघ्नः(हा स)

अर्थ-सीधुनामवाली मदिरा-कषेली, खट्टी, अग्निप्रदीपक, मेद और मलको हरनेवाली तथा आमातिसार, वात, पित्त, शूल, कफरोग, ववासीर और संग्रहणीको दूर करनेवाली है।

गौडीमदिरागुणा ।

तीक्ष्णोष्णामधुरागौडीवातघ्नीवलपित्तकृत् ।
कान्तितृप्तिकरीपथ्यावह्निकामप्रदीपनी ॥ (आ०स०)

अर्थ-गौडी अर्थात् गुडादिसे वनाई मदिरा-तीक्ष्ण, गरम, मधुर, वातनाशक तथा वल, पित्त, कान्ति और तृप्तिकारक, पथ्य, अग्नि और कामको प्रदीपन करनेवाली है।

अन्यच्च ।

गौडीकषायामधुराम्लशीतासन्दीपनीशूलमलापहन्त्री ।
हृद्यात्रिदोषशमयत्यजीर्णंपाण्ड्वामयार्शःश्वसनान्निहन्ति।हा सं

अर्थ-गौडी मदिरा-कषेली, मधुर, खट्टी, शीतल, अग्निप्रदीपक, शूल और मलको हरनेवाली, हृदयको हितकारी त्रिदोषनाशक तथा अजीर्ण, पाण्डुरोग, ववासीर और श्वासविनाशक है।

माध्वीकमद्यगुणा ।

माध्वीसुरातुमधुराकिञ्चिदुष्णाकषायका । तीक्ष्णालघ्वी चहृद्याचरूक्षाचच्छेदनीमता ॥ पित्तंवातचपाण्डुञ्चकामलांचप्रमेहकम् । गुल्मंचार्शं प्रतिश्यायविषंकुष्ठञ्चनाशयेत्॥

अर्थ-माध्वीनामवाली मदिरा-मधुर, किञ्चित् गरम, कषेली, तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, रूखी, छेदक तथा पित्त, वात,पाण्डुरोग, कामला प्रमेह, गुल्म, ववासीर, प्रतिश्याय, विष और कुष्ठको नष्ट करे है।

अन्यच्च ।

माध्वीकशीतलाम्लमधुरमपितथास्यात्कषायोष्णकञ्च
हन्यात्पित्तामयार्शःश्वसनमपितथाचातिसारप्रमेहान्॥
शूलानाहोपमर्दजरयतिसकलंदीपयत्यग्निसात्म्य
तस्माद्वातामवातवमनमपितथाहन्तिसर्वांश्चरोगान् ॥

अर्थ-माध्वीक मदिरा-शीतल, खट्टी, मधुर, कषेली, गरम तथा शिरोरोग, बवासीर, श्वास, अतिसार, प्रमेह, शूल और आनाहको दूर करे है, सर्व वस्तुओंको पाचनकरनेवाली, अग्निको दीपन करनेवाली तथा वात, आमवात और वमनको हरनेवाली है तथा गाढ्य है।

पैष्टीमद्यगुणाः।

पैष्टीमन्दीपनीरुच्याकफकृद्वातनाशिनी।
पित्तलापाण्डुरोगाणांकारिणीबहुधामता ॥ (हा० सं०)

अर्थ-पैष्टी मदिरा-अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको करनेवाली, कफकारी, वातनाशक, पित्तकारक और पाण्डुरोगको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च।

पैष्टीसुरातुमधुरातीक्ष्णाम्लाकटुकागुरुः।
दीपनीस्तन्यकफदामेहपुष्टिकरीमता ॥ (नि० र०)

अर्थ-पैष्टी मदिरा-मधुर, तीक्ष्ण, खट्टी, चरपरी, भारी, दीपन, स्तनोंमें दूधको करनेवाली, कफकारी तथा प्रमेह और पुष्टिको करनेवाली है।

इक्षुभवमद्यगुणाः।

मद्यतुचैक्षवंशीतमदकृच्चनमीरितम् ॥
यवमद्यन्तुभकंचरूक्षचैवतुदीपकम् ॥
मोदकचाग्निजनकंवृष्यवातकफापहम्।

अर्थ-ऐक्षव मदिरा शीतल, मदकारक और जौकी मदिरा मलभेदक, रूखी, अग्निदीपक, मोदकारक, अग्निकारक, वीर्यवर्द्धक और वातकफनाशक है।

सर्ववृक्षभवमद्यगुणाः।

सर्ववृक्षभवंमद्यंशीतलंगुरुमोदनम्।
बल्यंवृष्यंनाश्यंचतृष्णासन्तापनाशकम् ॥

अर्थ-सर्ववृक्षोंकी मदिरा-शीतल, भारी, मोदन, बलकारक, वृष्य तथा हितकारी तथा तृष्णा और सन्तापनाशक है।

द्राक्षामद्यगुणाः।

द्राक्षासुरातुमधुराश्रेष्ठाग्निप्रकाशिनी। शिशिरादीपनीरु-

ष्णीकिञ्चिदुष्णाबलप्रदा ॥ पुष्टिकृल्लेखनीवर्ण्याशुक्रलाच सरामता। किञ्चित्पित्तकरीमृद्वीवातलाशोपमेदनुत् ॥ क्लेद पाण्डुंकफचार्शं कृमीन्मेहंचकामलाम्। रक्तपित्तचकुष्टच नाशयेदितिकीर्त्तिता॥विषमचज्वरचैवरक्तार्शश्चैवनाशयेत्।

अर्थ–दाखोंकी मदिरा–श्रेष्ठ, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, विशद, अग्निप्रदीपक, हलकी, किञ्चित् गरम, बलकारक, पुष्टिकारक, लेखन, वर्णको सुंदर करनेवाली, शुक्रजनक, सारक, किञ्चित् पित्तकारक, मृदु, वातकारक तथा शोप, मेद, क्लेद, पाण्डुरोग, कफ, बवासीर, कृमि, प्रमेह, कामलारोग, रक्तपित्त, कोढ, विषमज्वर और खूनीबवासीरको हरण करे है।

खर्जूरमद्यगुणा।

खर्जूरमद्यशीतस्याद्रुच्यवातकरगुरु ।

अर्थ–खजूरकी मदिरा–शीतल, रुचिकारक, वादी और भारी है।

तालमद्यगुणा।

श्लेष्मदोपकरावृष्यावातलाश्लेष्मवर्द्धिनी ।

कासहृल्लासविध्वसकरणातालमड्डिका ॥ (हा स०)

अर्थ–ताडकी मदिरा–कफकारी, वीर्य्यवर्द्धक, वादी, श्लेष्मवर्द्धक तथा खासी और हल्लासको हरे है।

आसवलक्षणं गुणाश्च।

यदपक्वौपधाम्बुभ्यासिद्धमद्यसआसवः।

आसवस्यगुणाज्ञेयावीजद्रव्यगुणैःसमा ॥

अर्थ–जो कच्ची औपधियोंके पानीसे मदिरा बनाई जातीहै उसको आसव कहते है। आसवके गुण जिन २ बीज और द्रव्योंसे वह बनाया जाता है उसी उसीके अनुसार जानने।

सुरासवगुणा।

सुरासवस्तीव्रमदोवातघ्नोवदनप्रिय ॥ (चरक०)

अर्थ–सुरासव–तीव्रमदकारक, वातनाशक और मुखप्रियहै।

अन्यच्च।

सुरासव स्रेहन स्याद्गुरुर्नल्यश्चदीपन ।

ग्राहकः पुष्टिकृद्दुग्धरक्तमांसकफप्रदः ॥
मेदःकृद्ग्रहणीगुल्ममूत्राघातार्शशोफहृत् । (नि०र०)

अर्थ-सुरासव-स्नेहन, भारी, पथ्यकारी, दीपन, मलरोधक, पुष्टिकारक तथा दूध रुधिर, मांस, कफ और मेदको देने है तथा संग्रहणी, गुल्म मूत्राघात, बवासीर और सूजनको हरे है।

गुडासवगुणाः।

गुडासवः कटुस्तिक्तोऽनल्पश्चाग्निप्रदीपनः ।
सुस्वादुर्मूत्रलोऽनर्थ्योबृंहणस्तर्पणोमृदुः ॥
सृष्टविट्कश्चवैप्रोक्तोमुनिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ।

अर्थ-गुडासव-चरपरी, कडवी, पथ्यकारक अग्निप्रदीपक, स्वादिष्ट, मूत्रजनक मलको शुद्ध करनेवाली, पुष्टिकारक, तृप्तिकारी, मृदु और मलको करनेवाली है।

मध्वासवगुणाः।

मध्वासवोलघुस्तीक्ष्णोमधुरस्तुवरोमतः ।
छर्दीरक्तप्रतिश्यायकुष्ठमेहविनाशनः ॥

अर्थ-मध्वासव-हलकी, तीक्ष्ण, मधुर, कषेली, ठंडक, छर्दी तथा प्रतिश्याय, कोढ और प्रमेहविनाशक है।

द्राक्षासवगुणाः।

द्राक्षासवः कफकारी रक्तपित्तार्शकुष्ठहा ।

अर्थ-द्राक्षासव-कफकारक तथा रक्तपित्त, बवासीर और कुष्ठनाशक है।

शर्करासवगुणाः।

शर्करायाश्चासवस्तुपाचकोऽग्निप्रदीपनः ।
रोचनश्चलघु स्वादुर्हृद्योवस्तिविकारहा ॥
वातशोफनाशयतीत्यवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-शर्करासव-पाचक अग्निदीपक, रोचक, हलकी, स्वादिष्ट, हृदयको हितकारी बस्तिविकारविनाशक तथा वात और शोथनाशक है।

जम्बुसारासवगुणाः।

जाम्बवस्यासवश्चापितुवरोमलरोधनः ।
वातकोपनकारीच मुनिभिः समुदाहृतः ॥

अर्थ-आम्रवासव-कषेली, मलरोधक और वातको कुपित करे है।

मैरेयमद्यगुणाः।

मैरेयकटुमद्यंस्याद्वृष्यधातुविवर्द्धकम्। सरतृप्तिकरंचैवगुरुतीव्रमदप्रदम्॥ मुखप्रियंचमधुरकटुप्रोक्तकफप्रदम्। बलवर्द्धनकृच्चैवमेदोवातकृमीञ्जयेत्॥

अर्थ-मैरेयमदिरा-वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, सारक, तृप्तिकारक भारी, तीक्ष्णमदकारक, मुखप्रिय, मधुर, चरपरी, कफकारक, बलवर्द्धक तथा मेद, वात और कृमिको दूर करे है।

नवीनमद्यगुणाः।

नूत्नमद्यस्मृतशीतवातलपित्तलतथा।
त्रिदोषजनकंदाहिकफकृद्विशदंगुरु।
अहृद्यंचसरंचैवदुर्गंधिबृंहणमतम्॥

अर्थ-नवीनमदिरा-शीतल, वातकारक, पित्तकारक, त्रिदोषजनक, दाहकारक, कफकारक, विशद, भारी, हृदयको अहितकारी, सारक, दुर्गंधयुक्त और पुष्टिकारक है।

प्राचीनमद्यगुणाः।

जीर्णमद्यभ्रामकस्याद्दीपनरुचिकृल्लघु। सुगंधिवृष्यहृद्यंच स्रोतसांचविशोधकम्॥लवणेनविनासर्वरसैर्युक्तकफापहम्। वातकृमीन्सर्वरोगान्नाशयेदितिकीर्त्तितम्॥ (नि०र०)

अर्थ-पुरानीमदिरा-भ्रमकारक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हलकी, सुगंधियुक्त, वीर्य्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, स्रोतोंको शुद्ध करनेवाली, लवणरसको छोडकर सर्वरसोंकरके युक्त कफनाशक तथा वात, कृमि और सबरोगोको हरे है।

विधियुक्तमद्यपानगुणाः।

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम्। प्रहृष्टोयःपिबेन्मद्यंतस्यस्यादमृतंयथा॥ किन्तुमद्यंस्वभावेनयथैवान्नंतथा स्मृतम्। अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंयथाऽमृतम्॥

अर्थ-मद्यपानकी विधिसे मात्राके माफिक समयपर हितकारक, अन्नोंके

ग्राहक·पुष्टिकृद्दुग्धरक्तमांसकफप्रद ॥
मेदःकृद्ग्रहणीगुल्ममूत्राघातार्शशोफहृत् । (नि०र०)

अर्थ-सुरासव-स्नेहन, भारी, बलकारी, दीपन, मलरोधक, पुष्टिकारक तथा दूध, रुधिर मांस, कफ और मेदको हरे है तथा संग्रहणी, गुल्म, मूत्राघात, बवासीर और सूजनको हरे है।

गुडासवगुणाः ।

गुडासव कटुस्तिक्तोबल्यश्चाग्निप्रदीपनः ।
सुस्वादुर्मूत्रलोवर्ण्योबृंहणस्तर्पणोमृदुः ॥
सृष्टविट्कश्चवैप्रोक्तोमुनिभि सूक्ष्मदर्शिभिः ।

अर्थ-गुडासव-चरपरी, कडवी, बलकारक, अग्निप्रदीपक, स्वादिष्ठ, मूत्रजनक, वर्णको सुंदर करनेवाली, पुष्टिकारक, तृप्तिकारी, मृदु और मलको करनेवाली है।

मध्वासवगुणाः ।

मध्वासवोलघुस्तीक्ष्णोमधुरस्तुवरोमत ।
छेदीरूक्ष प्रतिश्यायकुष्ठमेहविनाशनः ॥

अर्थ-मध्वासव-हलकी, तीक्ष्ण, मधुर, कषेली, छेदक, रूखी तथा प्रतिश्याय, कोढ और प्रमेहविनाशक है।

द्राक्षासवगुणाः ।

द्राक्षासव कफकारीरक्तपित्तार्शकुष्ठहा ।

अर्थ-द्राक्षासव-कफकारक तथा रक्तपित्त, बवासीर और कुष्ठनाशक है।

शर्करासवगुणाः ।

शर्करायाश्चासवस्तुपाचकोग्निप्रदीपनः ।
रोचनश्चलघुःस्वादुर्वृष्योवस्तिविकारहा ॥
वातंशोफंनाशयतीत्येनमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-शर्करासव-पाचक अग्निप्रदीपक, रोचन, हलकी, स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक, वस्तिविकारविनाशक तथा वात और शोफनाशक है।

आम्रवासवगुणाः ।

आम्रवस्यासवश्चापितुवरोमादकोमतः ।
वातरोपनकारीचमुनिभि समुदाहृतः ॥

अर्थ-जाम्बवासव-कषेली, मलरोधक और वातको कुपित करे है।

मैरेयमद्यगुणा ।

मैरेयकतुमद्यस्याद्वृष्यधातुविवर्द्धकम् । सरंतृप्तिकरचैवगुरुतीव्रमदप्रदम् ॥ मुखप्रियचमधुरकटुप्रोक्तकफप्रदम् । वलवर्द्धनकृचैवमेदोवातकृमीञ्जयेत ॥

अर्थ-मैरेयमदिरा-वीर्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, सारक, तृप्तिकारक भारी, तीक्ष्णमदकारक, मुखप्रिय, मधुर, चरपरी, कफकारक, बल्वर्द्धक तथा मेद, वात और कृमिको दूर करे है।

नवीनमद्यगुणा ।

नूत्नमद्यस्मृतशीतवातलपित्तलतथा ।
त्रिदोपजनकदाहिकफकृद्विशदगुरु ।
अहृद्यचसरचैवदुर्गंधिवृंहणमतम् ॥

अर्थ-नवीनमदिरा-शीतल, वातकारक, पित्तकारक, त्रिदोपजनक, दाहकारक, कफकारक, विशद, भारी, हृदयको अहितकारी, सारक, दुर्गंधयुक्त और पुष्टिकारक है।

प्राचीनमद्यगुणा ।

जीर्णमद्यभ्रामकस्यादीपनरुचिकृल्लघु । सुगंधिवृष्यहृद्यच स्रोतसांचविशोधकम्॥लवणेनविनासर्वरसैर्युक्तकफापहम्। वातकृमीन्सर्वरोगान्नाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-पुरानीमदिरा-भ्रमकारक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हलकी, सुगंधियुक्त, वीर्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, स्रोताको शुद्ध करनेवाली, लवणरसको छोडकर सर्वरसोंकरके युक्त कफनाशक तथा वात, कृमि और सर्वरोगाको हरे है।

विधियुक्तमद्यपानगुणा ।

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथावलम्।प्रहृष्टोय पिबेन्मद्यतस्यस्यादमृतयथा ॥ किन्तुमद्यस्वभावेनयथैवान्नंतथा स्मृतम् । अयुक्तियुक्तरोगायग्रुक्तियुक्तयथाऽमृतम् ॥

अर्थ-मद्यपानकी विधिसे मात्राके माफिक समयपर हितकारक, अन्नोंके

साथ वटामलको देखके हर्षसहित जो मनुष्य मदिराको पीता है उसके मद्य अमृतके समान गुण करे है, मद्य स्वभावसेही अन्नकी समान गुणकारक है, परन्तु अविधिसे जो पीवे है उसके रोगोंको करे है और विधिके साथ जो पीवे है उसके अमृतकी सदृश गुणोंको करे है ।

सुराप्रयोगविधि ।

कृशानांरक्तमूत्राणांग्रहण्यर्शोविकारिणाम् ।
सुराप्रशस्तावातघ्नीस्तन्यरक्तक्षयेषुच ॥

अर्थ-कृशशरीरवाले, रुधिर, मूत्र, संग्रहणी और अर्शरोगवाले मनुष्योंको मदिरा, विशेष हितकारी है, सुराको पीनेसे वातरोग, स्तन्य और रक्तक्षयरोग दूर होता है ।

मतान्तर ।

पूर्णेकषायपित्तेचयोगयुक्तासुराहिता । बहुदोषहराचैवश्लेष्मरोगेविशेषतः ॥ श्रमज्वरातुरेशोषेशोषपाण्ड्वामयेक्षये ॥ मते क्रमेऽपस्मारेचपक्ष्मणाश्चभ्रमेषुच ॥ श्रान्तेनाविषपीतेवासर्पदष्टेजलोदरे । रक्तपित्ततथाश्वासेवारुणीनहिता मता ॥ (हा०सं०)

अर्थ-कफपित्तसे युक्त हुवा पित्त जब पूर्ण होवे तब योगसे युक्त मदिरा हितकारक है बहुदोषोंको हरनेवाली और विशेषकरके कफके रोगोंको नष्ट करे है परिश्रम, ज्वरसे पीडित, शोष, शोष पाण्डुरोग, क्षय, मुष्टिकायतना, अपस्मार, पलकोंका भ्रम, श्रान्त और जिसने विष पीलिया हो उसको, सर्पके काटेमें, जलोदरमें, रक्तपित्त और श्वासरोगमें मदिरा हितकारी नहीं है ।

अथ मद्यानां गन्धनाशनोपाय ।

मुस्तैलवालगदजीरकधान्यकैला यश्चर्वयन्सदसिमानमभिव्यनक्ति । स्वाभाविकमुखजमुज्झतिपूतिगंध गन्ध चमद्यलशुनादिभवचनूनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-नागरमोथा, एलुवा, कूठ, जीरा, धनिया और इलायचीको चबाय करके जो सभामें बोले है उनकी स्वाभाविक मुखकी दुर्गंध दूर होती है

और मद्य लशुनादिकी भी दुर्गंध दूर होती है यदि मद्यके विशेष गुणदोष और प्रकार देखनेकी इच्छा होय तो "भैषज्यभास्कर" में देखो ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे सन्धानवर्ग समाप्त ॥ २१ ॥

अथ संख्यावर्गः ।

क्षारद्वयम् ।

एक·पर्पटक·श्रेष्ठ·पित्तज्वरविनाशन ।

अर्थ-एक पित्तपापडाही पित्तज्वरको दूर करता है ।

स्वर्जिकायायशूकश्चक्षारद्वयमुदाहृतम् ।
मिलितवृक्तगुणकृद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥

अर्थ-सज्जी और जवाखार दोनों मिलेहुएको "क्षारद्वय" कहते हैं यह मिलेभी अपने २ गुणोंको करे है और विशेषकरके गुल्मरोगको हरे हैं ।

द्विकटुकम ।

पिप्पलीमरिचरूपम् ।

अर्थ-पीपल और कालीमिर्च इनको "द्विकटुक" कहते हैं ।

क्षारत्रयम् ।

स्वर्जिकाचयवक्षारष्टकणक्षारएवच । क्षारत्रयसमाख्यात त्रिक्षारःसचकथ्यते ॥ तत्तिक्तंबलशुक्रामकान्तिशूलोदरा-पहम् । वातगुल्मंकफंचैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-सज्जी, जवाखार और सुहागा यह "क्षारत्रय" अथवा त्रिक्षार कहे जाते हैं, क्षारत्रय-कडवे तथा बल, शुक्र, आम, कान्ति शूल और उदर रोगको हरे हैं और वात, गुल्म तथा कफको नष्ट करे हैं ।

लवणत्रयम् ।

सैंधवंचविडंचैवरुचकंचेतिविश्रुतम् । लवणत्रयमाख्याततच्च त्रिलवणतथा ॥ वीर्य्योष्णदीपनतीक्ष्णकफघ्नपित्तवर्द्धनम् ॥

अर्थ-सेंधानोन, विरियासंचर, और संचरलवण यह तीनों मिलेहुए लवणत्रय वा त्रिलवण कहलाते हैं । लवणत्रय-उष्णवीर्य, दीपन, तीक्ष्ण, कफनाशक और पित्तको बढानेवाले हैं ।

त्रिकटु ।

पिप्पलीमरिचंशुण्ठीत्रयमेतद्विमिश्रितम् । त्रिकटुत्र्यूषण
व्योषंकटुत्रिकमुदाहृतम् ॥ त्र्यूषणदीपनंहन्तिश्वासकास
गलामयान् । गुल्ममेहकफस्थौल्यमेद-श्लीपदपीनसान् ॥

अर्थ-पीपल, मिर्च और सोंठ इन तीनों औषधी एकत्र मिलीहुईको-त्रिकटु, त्र्यूषण, व्योष और कटुत्रिक (कटुत्रय, ऊषणत्रिक) कहते हैं। त्रिकुटा-अग्निसंदीपक तथा श्वास, खाँसी, गलरोग, गुल्म, प्रमेह, कफ, स्थूलता, मेद, श्लीपद और पीनसरोगको दूर करै है।

षडूषण ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलविश्वमेतत्त्रिभि समैः ।
कटूषणाचविज्ञेयात्रुषैरुत्र्यूषणवद्गुणे ॥

अर्थ-पीपल, पीपलामूल और सोंठ यह तीनो समान मिलीहुई षडूषण कहलाती हैं इसके गुण त्रिकुटाके समान जानने ।

त्रिफला ।

पथ्याविभीतधात्रीणांफलैःस्यात्त्रिफलासमैः ।
फलत्रिकंचत्रिफलासावराचप्रकीर्त्तिता ।

अर्थ-हरड, बहेडा और आमला यह तीनों समान मिलेहुएको त्रिफला, फलत्रिक, वरा (त्रिफली, फलत्रय, फल) कहते है।

मतान्तरे ।

एकाहरीतकीयोज्याद्वौचयोज्यौविभीतकौ ।
चत्वार्यामलकान्येवत्रिफलैषाप्रकीर्त्तिता ॥

अर्थ-और किसीके मतसे-एक हरड, दो बहेडे और चार आमले मिलेहुएको त्रिफला कहते हैं।

गुणाः ।

त्रिफलाकफपित्तघ्नीमेहकुष्ठहरीसरा ।
चक्षुष्यादीपनीरुच्याविषमज्वरनाशिनी ॥

अर्थ-त्रिफला-कफपित्तनाशक, प्रमेहको दूरकरनेवाला, कुष्ठनिवारक, सारक, नेत्रोंको हितकारी, अग्निदीपक, रुचिको करनेवाला तथा विषमज्वरनाशक है।

अन्यच्च ।

त्रिफलामुखरोगघ्नीगलगण्डव्रणापहा । वयसःस्थापकावृ-
ष्यासराहृद्याबलप्रदा ॥ हन्तिनाडीव्रणंकण्डूमेधास्मृतिप्र-
सादिनी । रसायन्यस्रमेदोजिद्रोपणीक्लेदनाशिनी ॥

अर्थ-और भी त्रिफला-मुखरोगनाशक, गलगण्डरोगनिवारक, व्रण-विनाशक, अवस्थास्थापक, वीर्य्यवर्द्धक, कडुकुड दस्तावर, हृदयको हित-कारी, बलवर्द्धक, नाडीव्रण, और कण्डुरोगनाशक है, मेधा और स्मरण-शक्तिको बढानेवाली, रसायन, रुधिरविकार और मेदरोगको हरनेवाली, व्रणको भरनेवाली और क्लेदनाशक है ।

मधुरत्रिफला ।

द्राक्षाकाश्मर्य्यखर्जरीफलानिमिलितानितु । मधुरत्रिफला
ज्ञेयामधुरादिफलत्रयम् ॥ मधुरत्रिफलःवृष्याविशदामधु-
रामता । धातुवृद्धिकरीप्रोक्ताकफवातविनाशिनी ॥

अर्थ-दाख, कुम्भेर और खजूर यह तीनों मिलीहुई त्रिफला कहलाती है अथवा मधुर फलत्रय मधुरत्रिफला-वीर्य्यवर्द्धक, विशद, मधुर, धातुवर्द्धक और कफवातविनाशक है ।

सुगन्धत्रिफला ।

जातीफलतथैलाचलवगफलमेवच ।
सुगधत्रिफलाप्रोक्तातृतीयचफलत्रिकम ॥

अर्थ-जायफल, इलायची और लौंग इन तीनोको सुगधत्रिफला और सुगधफलत्रिक कहते है ।

मतान्तर ।

जातीफलपूगफललवगलतिकाफलम् ।
सुगधत्रिफलाज्ञेयासूरिभिस्त्रिफलास्मृता ॥

अर्थ-और किसीके मतमे जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनोंको सुगधत्रिफला कहा है ।

गुणा ।

सुगन्धित्रिफलावृष्यामुखशुद्धिकरीमता ।
हृद्यारुचिकराचैवकफस्यचविनाशिनी ॥

अर्थ-सुगंधित्रिफला-वीर्य्यवर्द्धक, मुखको शुद्धकरनेवाली हृदयको हितकारी, रुचिकारक और कफको हरे है ।

त्रिसुगन्धि ।

त्वक्पत्रकैलात्रिसुगन्धिमेतत्प्रकीर्त्तितंवातकफापहारि ।
वृष्यविषघ्नचसनागपुष्पज्ञेयचतुर्जातकमेतदेव ॥

अर्थ-दालचीनी, तेजपत्र और इलायची इनको त्रिसुगंधि कहतेहैं-त्रिसुगंधि वात और कफनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और विषविनाशक है । और इन तीनोंमें नागकेशर मिलीहुइको चतुर्जातक कहते हैं ।

अन्यच्च ।

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धत्रिजातकम् । नागकेसरसंयुक्तंचातुर्जातकमुच्यते ॥ तद्द्वयपाचनरूक्षतीक्ष्णोष्णमुखगन्धहृत । लघुपित्ताग्निकृद्वर्ण्यंकफवातविषापहम् ॥

अर्थ-दालचीनी, इलायची और पत्रज, यह तीनों समान २ मिलेहुएको "त्रिजातक" कहते हैं और इसमें नागकेशर मिला दीजाय तो "चातुर्जातक" कहते हैं । त्रिसुगंधि और चातुर्जातक पाचक, रूखे, तीक्ष्ण, गरम, मुखकी दुर्गंधको हरनेवाले, हलके, पित्तजनक, अग्निकारक, वर्णको सुंदर करनेवाले तथा कफ, वात और विषविनाशक है ।

भावमिश्र ।

त्रिजातपित्तलरूक्षरुच्यचाग्निप्रदीपनम् । तीक्ष्णचोष्णलघुवर्ण्यंकटुवृष्यंबलप्रदम्॥रसायनकफवातविषश्वासचपीनसम् । स्वरभेदंचकासचमुखदोषचनाशयेत ॥

अर्थ-त्रिजात-त्रिसुगंधि-पित्तकारक, रूखे, रुचिकारक, अग्निदीपक तीक्ष्ण, गरम, हलके वर्णको सुन्दर करनेवाले, चरपरे, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, रसायन तथा कफ, वात, विष, श्वास, पीनस, स्वरभंग, खाँसी और मुखके दोषोंको हरे है ।

मधुरत्रयम् ।

घृतगुडमाक्षिकंचविज्ञेयमधुरत्रयम् ।
त्रिधात्रिमधुरन्त्रैनप्रोक्तनामधुरत्रिकम् ॥

अर्थ-घी, गुड और शहत यह तीना मिले हुएको मधुरत्रय, त्रिमधुर, मधुरत्रिक कहते हैं ।

मतान्तरे ।

सिताघृतमाक्षिकवाविज्ञेयमधुरत्रिकम् ।
मधुरत्रितयचाग्निदीपनकान्तिकारकम् ॥
विपदोपरक्तपित्ततृष्णांचैवविनाशयेत् ।

अर्थ-और कोई कहतेहैं कि, चीनी, घी और शहत यह तीना मिलेहुये मधुरत्रय कहलातेहैं । मधुरत्रय-अग्निप्रदीपक, कान्तिकारक तथा विपविकार, रक्तपित्त और तृपाको दूर करैहै ।

त्रिसमम् ।

हरीतकीचशुण्ठीचगुडश्चैकत्रमिश्रितम् ।
त्रिसमंभाष्यतेसुज्ञैरथवापिसमत्रिकम् ॥

अर्थ-हरड, सोंठ और गुड यह तीनों एकत्र मिले हुएको "त्रिसम" कहते हैं वा "समत्रिक" कहतेहै ।

मतान्तरे ।

हरीतकीचशुण्ठीचगुडूच्येकत्रयोजितम् ।
समत्रयरुचिकरचक्षुष्यमलशोधनम् ॥
वातपित्तनाशयतीत्येवमाचार्य्यभापितम् ।

अर्थ-और किसीके मतसे हरड, सोंठ और गिलोय यह तीनों मिलीहुई "त्रिसम" कहलाती है । त्रिसम-रुचिकारक, नेत्राको हितकारी, मलशोधक तथा वात और पित्तनाशकहै ।

त्रिकार्षिका ।

नागरातिविपामुस्तात्रयमेतत्रिकार्पिकम् ।
त्रिकार्पिकज्वरशोथपित्तवातभ्रमतथा ॥
आमशूलमतीसारग्रहणींचविनाशयेत ।

अर्थ-सोंठ, अतीस और नागरमोथा यह तीनों मिले हुए "त्रिकार्षिक" कहलाते है त्रिकार्षिक-ज्वर, सूजन, पित्त, वात, भ्रम, आम, शूल, अतिसार और सग्रहणीको हरै है ।

त्रिसिता ।

गुडोत्पन्नाचमधुजाहिमोत्थेतित्रिधासिता । सितागुडोत्था सस्नेहावृष्याक्षीणक्षतेहिता ॥ मधुजाशर्करावल्यागुर्वीवृष्या चशीतला । हिमोत्थाशर्कराकिञ्चिदुष्णातिक्ताचपिच्छला ॥

अर्थ-ईखकी चीनी, शहतकी चीनी और ज्वारकी खांड यह तीनों "त्रिसिता" कहलाती हैं। तहां ईखकी चीनी-स्नेहयुक्त, वीर्यवर्द्धक और क्षीण तथा क्षतवाले मनुष्योंको हितकारी है। शहतकी खांड-बलकारक, भारी, वीर्यवर्द्धक और शीतल है। ज्वारकी खांड-किञ्चित गरम, कडवी और पिच्छिल है।

त्रिकण्टकम् ।

शुण्ठीगुडूचीदुःस्पर्शात्रिकण्टकमितिस्मृतम् ।
त्रिकण्टकानाक्काथः स्यात्पित्तज्वरविनाशनः ॥
नेत्ररोगवमिंचैवमस्तकन्यरुजंतथा ॥

अर्थ-सोंठ, गिलोय और जवासा यह तीनों मिलेहुएको "त्रिकण्टक" कहते हैं त्रिकण्टकाका काढा-पित्तज्वर, नेत्ररोग, वमन और मस्तकरोगको दूर करे है।

कण्टकत्रितयम् ।

दुःस्पर्शाबृहतीद्वयंग्निदमनीतिसमांशकम् ।
कण्टकत्रितयप्रोक्तत्रिदोषभ्रमनाशनम् ॥
ज्वरपित्तंचहिक्काचतन्द्रालापचनाशयेत् ।

अर्थ-जवासा, बडीकटेरी और अग्निदमनी यह तीनों बराबर मिली हुई "कण्टकत्रितय" कहलाती है। कण्टकत्रितय-त्रिदोष, भ्रम, ज्वर, पित्त, हुचकी, तन्द्रा और आलापको हरे है।

कण्टकारीत्रयम् ।

त्रिकण्टक्षुद्रबृहतीकण्टकारीत्रयस्मृतम् ।
कण्टकारीत्रयतन्द्राप्रलापभ्रमनाशनम् ॥
पित्तज्वरत्रिदोषंचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-गोखुरू, कटेरी और कटाई इन तीनों एकत्र मिलीहुईको "कण्टकारीत्रय" कहते हैं कण्टकारीत्रय-तन्द्रा, प्रलाप, भ्रम, पित्तज्वर, त्रिदोष इनको दूर करे है।

त्रिलोहम् ।

स्वर्णरूप्यतथाताम्रत्रिलोहमितिकीर्त्तितम् ।
त्रिलोहस्यगुणाःप्रोक्ता पचलोहसमाबुधैः ॥

अर्थ-सोना, चांदी और तांबा यह "त्रिलोह" कहलाते हैं त्रिलोहके गुण पचलोहेके समान जानने ।

अञ्जनत्रयम् ।

पुष्पाञ्जनचकालाख्यरसाञ्जनमितित्रयम् ।
अजनत्रयमेतद्धिनेत्रयो परमहितम् ॥

अर्थ-पुष्पाजन, कालाञ्जन और रसाञ्जन यह अजनत्रय कहे जाते हैं, अजनत्रय-नेत्रोंको परमहितकारी है ।

अथोपविषात्रयम् ।

निर्विपातिविपाचैवलाङ्गल्युपविपात्रयम् ।
विपात्रयविपघ्नंचज्वरातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-निर्विषी, अतीस और कलिहारी यह तीनों उपविप कहलाते हैं । उपविपात्रय विपनाशक और ज्वरातिसारविनाशकहै ।

चतुरूपणम् ।

त्र्यूपणसकणामूलकथितचतुरूपणम् ।
व्योपस्ययेगुणा प्रोक्ताह्यधिकाश्चतुरूपणे ॥

अर्थ-त्रिकुटेमें पीपलामूल मिलानेसे चतुरूपण कहा जाता है चतुरूपणके गुण त्रिकुटेसे कुछेक ज्यादे हैं ।

चातुर्जातम् ।

त्रिगधमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातसकेसरम् ।
त्रिगधचचतुर्जातरूक्षोष्णलघुपित्तजित ॥
वर्ण्यरुचिकरतीक्ष्णविपश्लेष्मामयाञ्जयेत ॥

अर्थ-इलायची, दालचीनी, पत्रज और नागकेशर यह चारों मिलेहुएको चातुर्जातक कहते है । त्रिसुगंधि तथा चातुर्जातक रूखा, गरम, हलका, पित्तनाशक, वर्णको सुदर करनेवाला, रुचिकारक, तीक्ष्ण, विप और कफरोगको नष्ट करे हैं ।

कटुचातुर्जातकम् ।

एलात्वक्पत्रमरिचंचतुर्जातकटुस्मृतम् ।
चतुर्जातंचकटुकंचातुर्जातसमंगुणैः ॥

अर्थ-इलायची, दालचीनी, तेजपात और कालीमिर्च इनको कटुचतुर्जातक कहतेहैं, कटुचतुर्जातक चरपरा और गुण चातुर्जातककी समान जानने ।

चातुर्भद्रकम् ।

नागरातिविषामुस्तात्रयमेतत्त्रिकार्षिकम् । गुडूचीसंयुतंचैवचातुर्भद्रकमुच्यते ॥ चातुर्भद्रंपाचकंस्याज्ज्वरजीर्णज्वरापहम् । त्रिदोषकण्ठरुक्छोथारुचिशूलामनाशनम् ॥

अर्थ-सोंठ, अतीस, नागरमोथा और गिलोय इन चारों एकत्र मिले हुएको चातुर्भद्रक कहते हैं चातुर्भद्रक-पाचक तथा ज्वर, जीर्णज्वर त्रिदोष, कण्ठरोग, सूजन, अरुचि, शूल और आमनाशक है ।

चतुर्बीजम् ।

मेथिकाचन्द्रशूरश्चकालाजाजीयवानिका । एतच्चतुष्टययुक्तंचतुर्बीजमुदाहृतम् ॥ तच्चूर्णंभक्षितंनित्यंनिहन्तिपवनामयान् । अजीर्णशूलमाध्मानपार्श्वशूलकटिव्यथाम् ॥

अर्थ-मेथी, हालों, कलौंजी और अजवायन इन चारों एकत्र मिले हुएको चतुर्बीज कहते हैं । इसका चूर्ण नित्य सेवन करनेसे वातरोग, अजीर्ण, शूल, आध्मान, पार्श्वशूल और कटिव्यथाको दूर करे है ।

चातुर्थिकगणः ।

आमलक्यभयाकृष्णाचित्रकंचसमंसमम् ।
सामान्यरोगहृताचचातुर्थिकगणः स्मृतः ॥

अर्थ-आमला, हरड, पीपल और चीता इन चारों एकत्र मिले हुएको चातुर्थिकगण कहतेहैं यह अजीर्णादिरोगनाशक है ।

बलाचतुष्टयम् ।

महाबलाचातिबलाबलानागबलातथा ।
बलाचतुष्टयंशीतंमधुरंबलकांतिकृत् ॥
स्निग्धग्राहिसमीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ।

अर्थ-सहदेई, कधी, खिरेंटी और गगेरन इन चारों एकत्र मिलीहुईको बलाचतुष्टय कहतेहैं, बलाचतुष्टय-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कांतिजनक, स्निग्ध, मलरोधक तथा वातरक्त, रक्तपित्त और उर क्षतरोगनाशक है।

कटुग्रंथिचतुष्कम्।

कटुग्रन्थिचतुष्कतुशुण्ठीलशुनमार्द्रकम्।
पिप्पलीमूलसयुक्तंवातव्याधिहरपरम्॥

अर्थ-सोंठ, लहसुन, अदरख और पीपरामूल यह चारों एकत्र मिलेहुएको कटुग्रन्थिचतुष्क कहतेहैं। कटुग्रन्थिचतुष्क-वातरोगनाशक है।

चतुस्समम्।

जातीफलत्रिदशपुष्पसमन्वितञ्चजीरञ्चटङ्कणयुतचरकेन चोक्तम्। चूर्णानिमाक्षिकसितासहितातिलीढाआमाति-सारमखिलगुरुहन्तिशूलम्॥

अर्थ-जायफल, लौंग, जीरा और सुहागा इन चारोंको चतुस्सम कहतेहैं। इस चतुस्समका चूर्ण बनाकर उसमें मिश्री और सहत मिलाकर सेवन करनेसे आमातिसार और शूलरोग नष्टहोताहै।

पंचकोलम्।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरम्।
एकत्रमिश्रितैरेभिः पंचकोलकमुच्यते॥

अर्थ-पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ यह पांचों एकत्र मिलेहुए पंचकोल कहे जातेहैं।

पंचकोलरसेपाकेकटुकरुचिकृन्मतम्।
तीक्ष्णोष्णपाचनश्रेष्ठदीपनंकफवातनुत॥
गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नपित्तकोपनम्।

अर्थ-पंचकोल-रस और पाकमें चरपरा, रुचिकारक, तीक्ष्ण गरम, पाचक, दीपन, कफवातनाशक तथा गुल्म, प्लीहा, उदररोग, आनाह और शूलनाशक है और पित्तको कुपित करे है।

द्वितीयपंचकोलम्।

पथ्याजमोदारुचकमत्युग्रविश्वभेषजम्।
समभागानिचैतानिद्वितीयपंचकोलकम्॥

पंचकोलंद्वितीयंतुपाचकंदीपनंस्मृतम् ।

अर्थ-हरड, अजमोदा, संचलनॉन, हींग और सोंठ यह सब औषधी बराबर मिलीहुई द्वितीय पंचकोल कहलाती है। द्वितीय पंचकोल पाचक और अग्निमंदीपक है।

पंचत्वक् ।

वटीवटोदुम्बरवेतसानामश्वत्थवृक्षेणसमन्वितानाम् ।
त्वक्पंचकपंचमहीरुहाणामितिव्रणघ्नश्वयथुघ्नमेतत् ॥

अर्थ-वड, नदीवड, गूलर, बेंत और पीपल इन पांचोंकी छाल एकत्र मिलीहुईको पंचत्वक् कहते हैं-यह व्रणविनाशक और सूजनको दूर करेहै।

मतान्तर ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारीपप्लक्षपादपाः ।
पंचैतेक्षीरिणोवृक्षास्तेपात्वक्पंचवल्कलम् ॥
त्वक्पंचकहिमनाहिव्रणशोफविसर्पजित् ।

अर्थ-किसीके मतसे-वड, गूलर, पीपल, पारिसपीपल और पाखर इन पांचों क्षीरीवृक्षोंकी एकत्र मिलीहुई छालको पंचत्वक् या पंचवल्कल कहते हैं, त्वक्पंचक-शीतल, मलरोधक तथा व्रण, सूजन और विसर्परोगको नष्ट करे है।

पंचपल्लवाः ।

पल्लवाःक्षीरिवृक्षाणांहिता पित्तातिसारिणाम् ।
कषायाःस्तम्भनारूक्षाःफलतेषान्तुवातकृत् ॥

अर्थ-पंचक्षीरीवृक्षोंके पत्तोंको पंचपल्लव कहते हैं यह पंचपल्लव पित्तातिसारवाले रोगियोंको हितकारी है, कषाय, स्तम्भक, रूक्ष और उन वृक्षोंके फल वातकारक है।

अन्यच्च ।

पंचक्षीरिद्रुपत्रंतुशीतंस्वादुचतिक्तकम् । तुवरंस्तम्भकम्ला-हिलेखनंकफनाशनम् ॥ वातरक्तंमलस्तम्भमाध्मानंचाति-सारकम् । नाशयेत्पित्तरोगंचलघुप्रोक्तंमनीषिभिः ॥ तेषां फलन्तुविष्टम्भिग्राहकंगुरुरूक्षम् । अम्लंचमधुरंवृष्यंरक्त-

पित्तविनाशनम् ॥कफवातचहृल्लासशोपवातंचगुल्मकम् । अरुचिश्वासकासौचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ पक्वगुणाधिकंज्ञेयमितिपूर्वैनिरूपितम् ॥

अर्थ-पचक्षीरी वृक्षाके पत्ते-शीतल, स्वादिष्ट, कडवे, कपेले, स्तम्भक, ग्राही, लेखन, कफवातनाशक तथा वातरक्त, मलस्तम्भ, आध्मान, अतिसार और पित्तरोगको नष्ट करेहैं और हल्के है, इनके फल-विष्टम्भकारक, मलरोधक, भारी, कपेले, खट्टे, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्त, पित्त, कफ, वात, हृल्लास, शोप, वातगुल्म, अरुचि, श्वास और खाँसीको नष्ट करेहैं, इनके पक्के फल-अधिक गुणवाले हैं।

पचांगम्।

त्वक्पत्रफलमूलानिपुष्पाण्येकस्यशाखिनः ।
पंचाङ्गमितिबोद्धव्यं प्राज्ञैरेकत्र मिश्रितम् ॥

अर्थ-एकवृक्षके पत्र, फल, मूल, छाल और फूल इन सब एकत्र मिलेहुएको पचाग कहते हैं।

निम्बपचांगम्।

निम्बस्यपुष्पफलत्वक्पत्रमूलचपचकम् ।
पचनिम्बमितिख्यातसर्वकुष्ठहरपरम् ॥

अर्थ-नीमके-फूल, फल, छाल, पत्ते और मूल इन सब एकत्र मिले, हुओंको पचनिम्बक कहतेहैं, पचनिम्ब-सर्वकुष्ठरोगनाशक है।

अस्यगुणा।

पचनिम्बन्तुतुवरतिक्तशीतमधुस्मृतम् । लघुज्वरहरकुष्ठपित्तनाशकरमतम् ॥ वातरक्तचकण्डूतिदाहमेहविपज्वरम्। वातंचनाशयेदेतदितिपूर्वैनिरूपितम् ॥

अर्थ-पचनिम्ब-कपेले, कडवे, शीतल, मधुर, हल्के तथा ज्वर, कोढ-पित्त, वातरक्त कण्डू, दाह, प्रमेह, विप, ज्वर, और वातको दूर करे हैं।

अपिच।

निम्बवृक्षस्यपचाङ्गरक्तदोपहरपरम् ।
पित्तंकण्डूव्रणंकुष्ठंदाहंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-पंचनिम्ब अर्थात् निम्बपंचांग-रुधिरके दोषोंको हरनेवाला तथा पित्त, कण्डू, व्रण, कोढ और दाहको दूर करे है ।

क्षारपञ्चकम् ।

पलाशमूलकक्षारौयवक्षारःसुवर्चिका ।
तिलनालोद्भवक्षारः क्षारसंयुक्तपञ्चकम् ॥
क्षारपञ्चकगुल्मार्शोग्रहणीकृमिनाशनः ।

अर्थ-ढाकका खार, मूलीका खार, जवाखार, सज्जी और तिलोंकी नालका खार यह पांचो मिलेहुए क्षारपंचक कहलाते हैं क्षारपंचक-गुल्म, बवासीर, संग्रहणी और कृमिरोगनाशक है ।

लवणपञ्चकम् ।

सैन्धवंरुचकंचैवविडमौद्भिदमेवच । सामुद्रेणसमायुक्तंज्ञेयं लवणपञ्चकम् ॥ लवणानांपंचकंतुशोषणंचरुचिप्रदम् । मलानुलोमकंदाहिनेत्र्यंवातकफहरेत् ॥ शूलंचनाशयत्येनमुक्तंपूर्वमनीषिभिः ।

अर्थ-सेंधानोन, संचर अर्थात् कालानोन, बिरियासंचरनोन, औद्भिद् और समुद्रनोन यह पांचों मिलेहुए लवणपंचक कहलाते हैं । लवणपंचक-शोषण, रुचिकारक, मलको अनुलोमन करनेवाले दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी तथा वात, कफ और शूलको नष्ट करे है ।

लघुपञ्चमूलम् ।

शालिपर्णीपृश्निपर्णीवार्त्ताकीकण्टकारिका । गोक्षुरःपञ्चभिश्चैतैःकनिष्ठपञ्चमूलकम् ॥ पञ्चमूलमिदंह्रस्वंबृंहणंबलवर्द्धनम् । कषायतिक्तकंनातिशीतोष्णंसर्वदोषजित् ॥

अर्थ-शालिपर्णी (सालवन), पृश्निपर्णी (पिठवन), कटाई, कटेरी और गोखरु यह पांचों मिलेहुए लघुपंचमूल कहलाते हैं । लघुपंचमूल-पुष्टिकारक बलवर्द्धक, कषैला, कडुआ, न अत्यन्त शीतल और न अत्यन्त गरम और सर्व प्रकारके दोषोंको दूर करे है ।

महत्पञ्चमूलम् ।

बिल्वश्योनाकगम्भारीपाटलागणिकारिका । एतन्महत्-

श्चमूलसञ्ज्ञकंसमुदाहृतम् ॥ पञ्चमूलमहत्तिक्तकषायकफवातनुत । मधुरश्वासकासघ्नमुष्णलघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ-वेल, स्योनापाठा, कुम्भेर, पाढल और अग्णी यह पाचो एकत्र मिलेहुए महत्पञ्चमूल कहे जातेहैं । महत्पचमूल कडवा, कषेला, कफवातनाशक, मधुर, श्वास और खाँसीको हरनेवाला, गरम, हलका और अग्निसंदीपक है ।

मध्यमपचमूलम् ।

वलापुनर्नवाशूर्पपर्णीवेरण्डमेवच । एकत्रयोजितैनैवस्यान्मध्यपचमूलकम् ॥ मध्यमपञ्चमूलन्तुवृष्यवातकफापहम् । किञ्चित्पित्तकरप्रोक्तपूर्वाचार्यैश्चसूरिभिः ॥

अर्थ-खिरेटी, पुनर्नवा (साँठ) मुगवन, मषवन और अड इन पाचो एकत्रमिले हुओंको मध्यमपचमूल कहतेहैं । मध्यमपचमूल-वीर्य्यवर्द्धक, वातकफनाशक और किञ्चित् पित्तकारक है ।

बलाख्यपचमूलम् ।

निशामृतामेषशृङ्गीगोपवल्लीविदारिका । एतासाचैवमूलन्तुबलाख्यदोषनाशकम् ॥ बलाख्यपञ्चमूलन्तुभेदकचप्रकीर्त्तितम् । शोफज्वराणाशमनपूर्वाचार्यैरिहोदितम् ॥

अर्थ-हलदी, गिलोय, मेढाशिंगी, सारिवा और विदारीकद इन पाचोके मूलको बलाख्यपचमूल कहतेहैं । बलाख्यपचमूल-भेदक, तथा सूजन और ज्वरको शांति करैहै ।

जीवनपचमूलम् ।

जीवकर्षभकौवीराजीवन्तीचशतावरी । जीवनीयमिदप्रोक्तचतुर्थंपचमूलकम् ॥ जीवनपचकवृष्यचक्षुष्यधातुवर्द्धकम् ॥ बल्यदाहकफपित्तज्वरतृष्णाश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, क्षीरकाकोली, जीवन्ती और शतावर इन सब एकत्र मिलीहुईको जीवनीयपचमूल कहतेहैं । जीवनीयपचमूल-वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, बलकारक, तथा दाह, कफ, पित्त, ज्वर और तृषाको दूर करैहै ।

अर्थ-पचनिम्ब अर्थात् निम्बपचाङ्ग-रुधिरके दोषोंको हरनेवाला तथा पित्त, कण्डू, व्रण, कोढ और दाहको दूर करे है।

क्षारपञ्चकम्।

पलाशमूलकक्षारौ यवक्षारः सुवर्चिका।
तिलनालोद्भवक्षारः क्षारसंयुक्तपञ्चकम्॥
क्षारपञ्चकगुल्मार्शोग्रहणीकृमिनाशनः।

अर्थ-ढाकका खार, मूलीका खार, जवाखार, सज्जी और तिलोंकी नालका खार यह पांचो मिलेहुए क्षारपंचक कहलाते हैं। क्षारपंचक-गुल्म, बवासीर, संग्रहणी और कृमिरोगनाशक है।

लवणपञ्चकम्।

सैन्धवं रुचकं चैव विडमौद्भिदमेव च। सामुद्रेण समायुक्तं ज्ञेयं लवणपञ्चकम्॥ लवणानां पञ्चकं तु शोषणं रुचिप्रदम्। मलानुलोमकं दाहि नेत्र्यं वातकफहरम्॥ शूलं च नाशयत्येवमुक्तं पूर्वैर्मनीषिभिः।

अर्थ-सैंधानोन, सचर अर्थात् कालानोन, विरियागरनोन, औद्भिद और समुद्रनोन यह पांचों मिलेहुए लवणपंचक कहलाते हैं। लवणपंचक-शोषण, रुचिकारक, मलको अनुलोमन करनेवाले, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी तथा वात, कफ और शूलको नष्ट करे है।

लघुपञ्चमूलम्।

शालिपर्णीपृश्निपर्णीवार्त्ताकीकण्टकारिका। गोक्षुरः पञ्चभिश्चैतैः कनिष्ठपञ्चमूलकम्॥ पञ्चमूलमिदं ख्यातं बृंहणं बलवर्द्धनम्। कषायतिक्तं नातिशीतोष्णं सर्वदोषजित्॥

अर्थ-शालिपर्णी (सालवन), पृश्निपर्णी (पिठवन), कटाई, कटेरी और गोखुरू यह पांचो मिलेहुए लघुपंचमूल कहलाते हैं। लघुपंचमूल-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कसैला, कडवा, न अत्यन्त शीतल और न अत्यन्त गरम और सब प्रकारके दोषोंको दूर करे है।

महत्पञ्चमूलम्।

बिल्वश्योनाकगम्भारीपाटलागणिकारिका। एतन्महत्प-

गुल्म, व्रण और आमको दूर करते है तथा वीर्यवर्द्धक है ।

पञ्चमहाविषाणि ।

गौरपाषाणकश्चैवतालकश्चमन.शिला । वत्सनाभस्यसर्पस्यमहापञ्चविषाणिच ॥ महाविषाणिपञ्चैवमादकानितथा पुनः । सद्य.प्राणहराण्येवशुद्धानिह्यमृतंजगु. ॥

अर्थ–शखिया, हरिताल, मनशिल, वत्सनाभ और सर्पका विष यह पाच महाविष है । पचमहाविष–मदकारक और तत्काल प्राणोंको हरनेवाले हैं यही शुद्ध किये हुए और युक्तिके साथ सेवन किये हुए अमृतके समान गुणकारक है ।

पञ्चोपविषाणि ।

अर्कक्षीरस्नुहीक्षीरतथालाङ्गलिकापिच । धत्तूरकोहयारिश्च पञ्चैवोपविषाणिच ॥ उपपूर्वंपञ्चविषमादकप्राणहारकम् । शोधितत्तुबलदंवीर्य्यवृद्धिकरपरम् ॥

अर्थ–आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी, धतूरा और कनेर यह पाच उपविष कहे जाते हैं । पचउपविष–मदकारक, प्राणहारक यही शुद्ध किये हुवे–बलकारक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

पञ्चगव्यम् ।

गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिस्तथैवच ।समयोजितमेकत्रपचगव्यमितिस्मृतम ॥ पञ्चगव्यंदेहशुद्धिकरंकफविनाशनम् । अजीर्णापस्मृतिज्वरभूतबाधाश्चनाशयेत् ॥

अर्थ–गायका मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी यह पाचों बराबर एकत्र मिलेहुएको पञ्चगव्य कहलाते है । पञ्चगव्य–देहशोधक, कफनाशक तथा अजीर्ण, अपस्मार, ज्वर और भूतबाधाको दूर करे है ।

पञ्चमाहिषम ।

माहिषाम्बुदधिक्षीरसाभिवारचतद्रम ।
तत्पञ्चमाहिषंज्ञेयतद्वच्छागलपञ्चकम् ॥

अर्थ–भैंसका मूत्र, गोबर, दही दूध और घी इनको पञ्चमाहिष कहते हैं इसी प्रकार छागलपञ्चक जानना ।

तृणपञ्चमूलम्।

शरेक्षुदर्भकाशानांनलस्यमूलमेवच ।
सौश्रुतञ्चरकंचैवतृणाख्यंपञ्चमूलकम् ॥ (सु०)

अर्थ-शर, ईख, दाभ, कॉस और नल इन पांचोंके मूलको तृणपञ्चमूल कहते हैं इसीप्रकार सुश्रुत और चरकमें भी कहा है ।

अन्यच्च ।

कुश·काश·शरोदर्भइक्षुश्चेतितृणोद्भवम् ।
पञ्चतृणमिदंख्यातंतृणजपञ्चमूलकम् ॥ (च०)

अर्थ-कुशा, कॉस, सरपता, दाभ और ईख इन पांचोंके मूलको तृणपञ्चमूल कहते हैं ऐसा चक्रदत्तमें लिखा है ।

अन्यच्च ।

शालीक्षुकुशकाशैःस्याच्छरेणतृणपञ्चकम् ।
एषांमूलंतृषादाहपित्तासृद्मूत्रसङ्गहृत ॥

अर्थ-शालि, ईख, कुश, कॉस और सरपता इन पांचोंके मूलको तृणपञ्चमूल कहते हैं ऐसा वैद्यकनिघण्टुमें लिखा है । तृणपञ्चमूल-तृषा, दाह, रक्तपित्त और मूत्रके रुकनेको दूर करे है ।

अस्य गुणाः ।

तृणानांपञ्चमूलन्तुपित्तज्वरतृषापहम् ।
रक्तदोषाम्लपित्तघ्नस्त्रीरोगरक्तपित्तकम् ॥
प्रमेहंनाशयेदेतदितिमुनैर्निरूपितम् ।

अर्थ-तृणपञ्चमूल-पित्तज्वर तृषा, रक्तविकार, अम्लपित्त, स्त्रीरोग, रक्तपित्त और प्रमेहरोगको हरे है ।

गोक्षुरादिपञ्चमूलम्।

गोक्षुरोवदरीचेन्द्रवारुणीकासमर्दिका । गोक्षुराद्यंपञ्चमूलं शिरीषेणसमन्वितम् ॥ गोक्षुरादिकपञ्चानांमूलंकुष्ठार्शनाशनम् । वृष्यंवातकफगुल्मव्रणचामज्वरनाशयेत ॥

अर्थ-गोखुरू, बेरी, इन्द्रायण, कसौंदी और सिरस इन पांचोंके मूलको गोक्षुरादिपञ्चमूल कहते हैं । गोक्षुरादिपञ्चमूल-कुष्ठ, बवासीर, घाव, कफ,

पञ्चगणः ।

पृष्टिपर्णीबृहत्यौचविदारीगोक्षुरस्तथा ।
गणानांपचकप्रोक्तप्लीहानाहप्रमेहजित् ॥
भगन्दरपाण्डुरोगंकुष्ठशूलोदरजयेत् ।

अर्थ–पिठवन, कटेरी, कटाई, विदारीकद और गोखुरू यह पाचों एकत्र मिलेहुये पचगण कहलाते हैं । पचगण–प्लीहा, आनाह, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, कुष्ठ, शूल और उदररोगको दूर करे है ।

पञ्चसमम् ।

शुण्ठीहरीतकीकृष्णात्रिवृत्सौवर्चलतथा ।
इतिपचसमंनामचूर्णंज्वरहरपरम् ॥

अर्थ–सोंठ, हरड, पीपल, निसोथ और कालानोन इन पाचाको सम-भाग मिलेहुये पचसम कहे जाते हैं, पचसमका चूर्ण–ज्वरनाशक है ।

द्वितीयपञ्चसमम् ।

आमलसैन्धवचित्रकपथ्यापिप्पलिचूर्णमिदज्वरहारि ।

अर्थ–आमलों, सैंधानोन, चीता, हरड और पीपल यहभी पचसम कहेजाते हैं इनका चूर्णभी ज्वरनाशक है ।

पञ्चाङ्गलेपः ।

पुनर्नवादारुशुण्ठीसिद्धार्थाशिग्रुमेवच ।
पिष्टाचैवारनालेनप्रलेप सर्वशोथहा ॥

अर्थ–पुनर्नवा, दारुहलदी, साठ सरसों, सहिंजना इन पाचाको काजीमें पीसकर लेप करनेसे सबप्रकारकी सूजन दूर होती है ।

पञ्चभद्रः ।

देवदालीशमीभृङ्गीनिर्गुण्डीसतमालक ।
पञ्चभृङ्गभव क्काथोरोगिस्नानेप्रशस्यते ॥

अर्थ–देवदाली, शमी (छोंकर), अतीस, निर्गुण्डी और तमाल इन पाचाके पत्तोंके काढेसे रोगीके लिये स्नानकराना उत्तम है ।

पञ्चमूत्रम् ।

गोजाविकामहिषीणामूत्रगर्दभकस्यच ।
पचमूत्रकहृष्णञ्चगोयनवृष्यमीरितम ॥

सुगन्धपञ्चकम् ।

कुङ्कुमागरुकर्पूरकस्तूरीचन्दनानि च ।
महासुगन्धमित्युक्तो नामतो यक्षकर्दमः ॥

अर्थ-केशर, अगर, कपूर, कस्तूरी और चंदन यह पांचों बराबर एकत्र मिलेहुए को यक्षकर्दम और सुगन्धपंचक कहलाते हैं ।

स्याद्यक्षकर्दमः शीतः सुगन्धि कान्तिदायकः ।
त्वग्दोषं च शिरोरोगं विषं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-यक्षकर्दम-शीतल, सुगन्धिजनक, कान्तिकारक तथा त्वचाके रोग, शिरोरोग और विषके विकारोंको हरे है ।

सुगंधपञ्चकं शीतं रक्तपित्तकफापहम् ।
पीनसमुखदौर्गन्ध्यहरं रक्तरुजं जयेत् ॥

अर्थ-सुगंधपंचक-शीतल, रक्तपित्तनाशक, कफदारक तथा पीनस, मुखकी दुर्गन्धता और रुधिरके विकारोंको हरे है ।

अम्लपञ्चकम् ।

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुक्रिकाचाम्लवेतसः । पञ्चाम्लक-
मसुद्दिष्टः सचोक्तश्चाम्लपञ्चकः ॥ फलाम्लपञ्चकं रूच्यकं
कफकृत्कामकारकम् । तिक्तजाड्यकरं चैव विष्टम्भशूलवा-
तनुत् । शुक्रगुल्मार्शसां नाशकरोपीति बुधा जगुः ॥

अर्थ-बेर, अनार, विषांबिल, चूका और अमलबेत यह अम्लपंचक है । अम्लपंचक-खट्टे, रुचिकारी, कफ और गोलीको उत्पन्न करनेवाले, कडवे, जड़ताकारक तथा विष्टम्भ, शूल, वात, शुक्र, गुल्म और बवासीरको दूर करे है ।

द्वितीयफलाम्लपञ्चकम् ।

बीजपूरकजम्बीरनारंगं चाम्लवेतसम् । फलैः पञ्चाम्लक
स्यात्तस्तितिडीमदितः परः ॥ फलाम्लपञ्चकं चान्यच्छोफ
कृन्मदकारकम् । विष्टम्भशूलगुल्मार्शशुक्रवातविनाशनम् ॥

अर्थ-बिजौरानिम्बु, जम्भीरीनीबू, नारंगी, अमलबेत और इमली यह दूसरा फलाम्लपंचक है । दूसरा फलाम्लपंचक-शोथकारक, मदकारक, तथा विष्टम्भ, शूल, गुल्म, बवासीर, शुक्र और वातविनाशक है ।

अर्शोघ्नपंचकसर्वार्शोनाश्चैवविनाशनम् ॥

अर्थ-जमीकंद, जंगलीजमीकंद, चित्रकंद अत्यम्लपर्णी और मालाकंद यह पचमूरण कहलाते हैं । पचसूरण-सर्वप्रकारके अर्शरोगनाशक है ।

पञ्चपित्तानि ।

वाराहछागमहिषमत्स्यमायूरपित्तकम् ।
पञ्चपित्तमितिख्यात सर्वेष्वेवहि कर्मसु ॥

अर्थ-सुअर, बकरा, भैंस, मछली और मोर इनके पित्ताको पञ्चपित्त कहते हैं । इनको सर्व कर्म्मोंमे प्रयोग करना चाहिये ।

औषधीपचामृतम् ।

गुडूचीमुशलीशुण्ठीत्रिकण्टकशतावरी । तत्पचकत्वौषधीजपञ्चामृतमुदीरितम् ॥ पञ्चामृतत्वौषधीजंतुष्टिपुष्टिवलप्रदम् । वीर्य्यवृद्धिकरचैवप्रोक्तपूर्वमनीषिभि ॥

अर्थ-गिलोय, मुशली, सोंठ, गोखरू और शतावर इन पाचों औषधी एकत्र मिलीहुईको औषधीपचामृता कहते हैं । औषधीपचामृत-तुष्टिकारक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

पञ्चामृतम् ।

दुग्धसशर्करचैवघृतदधितथामधु ।
पञ्चामृतमिदंप्रोक्तविधेयमर्वकर्मसु ॥

अर्थ-दूध, मिश्री, घी, दही और शहत इन पाचो मिलेहुये पदार्थोंको पञ्चामृत कहते हैं । यह पञ्चामृत सर्व कर्मोंमें प्रयोग करना चाहिये ।

षड्रसा ।

रसाःस्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषायका । षड्द्रव्यमाश्रितास्त्वेवतद्रसषट्कमुच्यते ॥ मधुरादिरसा षट्चाग्निदीप्तिकरामता । पौष्टिकालघवश्चैववातनाशकरामता ॥

अर्थ-मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु और कषाय इन छहो रसोंको षड्रस कहते हैं । यह मधुरादि षड्रस-अग्निप्रदीपक, पुष्टिकारक, लघु और वातविनाशक है ।

क्षारपञ्चकम् ।

क्षाराणितिलनाङ्गल्योमापापामार्गयोस्तथा ।

अर्थ-गाय, बकरी, भेड, भैंस और गधा इन पाँचोंके मूत्रको पञ्चमूत्र कहते हैं। पञ्चमूत्र-चरपरा, गरम, शोधन और पूज्य है।

पञ्चबीजम्।

राजिकाचाजमोदा च जीरकं खसबीजकम्। कुबेराक्षयुतं चैव पञ्चबीजमुदाहृतम्॥ मेथीज्योतिष्मतीबीजयवानीस्थूलजीरकम्। इक्षुरेणसमायुक्तं द्वितीयं पञ्चबीजकम्॥ पञ्चबीजं व्रणिकाकण्डूतिं चाग्निमान्द्यकम्। वातशोफकफं चैव विषूचीं श्वासकासकम्॥ शीतरोगं चामशूलं नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥

अर्थ-राई, अजमोद, जीरा, खसखसके दाने और अजवायन यह सब एकत्र मिलेहुये पञ्चबीज कहेजाते हैं। मेथी, मालकांगनी, अजवायन, कलौंजी और तालमखाना यह सब एकत्र मिलेहुये द्वितीयपञ्चबीज कहलाते हैं। पंचबीज-व्रणकी खाज, मन्दाग्नि, वात, सूजन, कफ, विषूचिका, श्वास, खांसी, शीतरोग, और आमशूल इन सब रोगोंको हरे हैं।

पञ्चसिद्धौषधम्।

तैलकन्दः सुधाकन्दः क्रोडकन्दो रुदन्तिका। मत्स्याक्षीसहिता पञ्चसिद्धौषध्यः प्रकीर्त्तिताः॥ सिद्धानामौषधीनां तु पञ्चकं रोगनाशनम्। रसस्य भस्मकरणे प्रोक्तं पूर्वर्षिपुङ्गवैः॥

अर्थ-तैलकन्द, सुधाकन्द, क्रोडकन्द, रुदन्ती और मत्स्याक्षी यह पाँचो औषधि एकत्र मिलेहुये पञ्चसिद्धौषधी कहलाती हैं। सिद्धौषधियोंका पञ्चक पारेको भस्म करनेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको नाश करनेवाला है।

पञ्चरत्नानि।

कनकं हीरकं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम्।
पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तमृषिभिः पूर्वदर्शिभिः॥

अर्थ-सोना, हीरा, नीलम, पद्मराग और मोती इन पाँचोंको पञ्चरत्न कहते हैं।

पञ्चक्षारम्।

शोभाञ्जनजक्षारतिलदण्डस्नुहीतरु ।
अत्यम्लपर्णीमाराकप्रभवाः क्षाराः पञ्चनामकाः ॥

प्रभातेमैथुननिद्रासद्य प्राणहराणिषट् ॥

अर्थ–सडाहुवा माग, वृद्धा स्त्री, भादोंकी धूप, तरुणदही, प्रभातकालमें मैथुन और निद्रा यह छ' वस्तु तत्काल प्राणोंको हरनेवालीहै।

प्राणकरषट्कम्।

सद्योमांसवरंचान्नबालास्त्रीक्षीरभोजनम्। घृतमुष्णोदकेस्नानंसद्य·प्राणकराणिषट् ॥

अर्थ–ताजा माम, नवीन अन्न, बाला स्त्री, क्षीरका भोजन, घृतयुक्त भोजन और गरमजलमे स्नान करना यह छै वस्तु तत्काल प्राणोंको करनेवाली ह।

सप्तोपविषाणि।

अर्कक्षीरस्नुहीक्षीरलांगलीकरवीरक । गुञ्जाहिफेनोधत्तूर:सप्तोपविषजातयः ॥ सप्तोपविषवर्गोयसवरःपरिकीर्त्तित·। अयुक्त्यासेवितश्चायमारयत्येवनिश्चितम् ॥

अर्थ–आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी, कनेर, चोंटली, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति हैं। सप्तउपविष वर्ग–अत्यन्त श्रेष्ठ है और अनेक कार्योंमे लिया जाताहै। यह अयुक्तिके साथ सेवन कियाहुवा मनुष्यको मार देते हैं।

शरीरस्थसप्तधातव।

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः।

अर्थ–रस, रुधिर, मास, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र यह शरीरमें रहनेवाली सात धातुहै।

सुवर्णादिसप्तधातव।

स्वर्णरूप्यञ्चताम्रञ्चरङ्गयशदमेवच। सीसलोहञ्चसप्तैतेधातवोगिरिसम्भवा· ॥ वलीपलितखालित्यकार्श्यबिल्यजवरामयान्। निवार्य्यदेहदधतिनृणांतद्धातवोमता' ॥

अर्थ–सोना, रूपा, ताबा, रांग, जस्त, सीसा और लोहा यह पर्वतसे उत्पन्न होनेवाली सात धातु है। यह सातधातु–देहमें बलिका पड़ना, बिनासमय बालोंका धवल होजाना, मस्तकमेंसे बालोंका गिरजाना, कृशता, निर्बलता, वृद्धावस्था और रोगोंको दूर करके देहको धारण करती है इसीकारण इनका धातु नाम है।

मोष्ककर्कोटजंचैवक्षारपट्कंविनिर्दिशेत् ॥
क्षारपट्कंवातगर्भगुल्मरक्तरुजापहम् ।

अर्थ-तिलोंकी नालका खार, कलिहारीका खार, उददका खार, चिरचिटेका खार, मोखेका खार और कुडेका खार इन-सबको क्षारपट्क कहते हैं। क्षारपट्क-वात, गर्भ, गुल्म और रुधिरके विकारोंको हरे है।

षटूषणम्।

पञ्चकोलसमरिचंषडूषणमितिस्मृतम् ।
पंचकोलगुणतत्तुरूक्षमुष्णंविषापहम् ॥

अर्थ-पचकोलमें काली मिर्च मिलानेसे षटूषण कहा जाता है। षटू-षणके गुण पचकोलके समान जानने। पचकोल-रूखा, गरम और विषविनाशक है।

सुगन्धषट्कम्।

जातीफललवङ्गैलाकर्पूरपूगवालकम् ।
सुगंधपट्कमेतद्धिसकक्कोलमुदाहृतम ॥
सुगन्धपट्कंरुचिकृद्धृद्यंदाहविनाशकृत् ।

अर्थ-जायफल, लौंग, कपूर, सुपारी, सुगन्धवाला और कंकोल यह सब एकत्र मिलीहुई औषधियोंको सुगन्धपट्क कहलाता है। सुगन्धपट्क-रुचिकारक हृदयको हितकारक और दाहविनाशक है।

महासुगन्धपट्कम्।

कालागरुचकस्तूरीकर्पूरं श्वेतचंदनम्।कक्कोलंचादिगन्धाच महादिपट्सुगंधकम ॥महासुगंधिपट्कंतुस्पृश्यंनेत्रसुगन्धि-कृत । भूतबाधांकफदाहंनाशयेदितिकीर्त्तितम ॥

अर्थ-काली अगर, कस्तूरी, कपूर, सफेदचंदन, शीतलचीनी और यह एक पदार्थ मिलेहुये महासुगन्धपट्क कहलाता है। महासुगन्धपट्क-स्पर्शमें, सुगन्धिकारक तथा भूतबाधा, कफ और दाहको दूर करे है।

पञ्चगव्यषट्कम्।

प्रतिमोमंरिशयोवृद्धानाल्यार्कमल्लणंदधि ।

प्रभातेमैथुननिद्रासद्यःप्राणहराणिषट् ॥

अर्थ–सडाहुवा मास, वृद्धा स्त्री, भादोंकी धूप, तरुणदही, प्रभातकालम मैथुन और निद्रा यह छ' वस्तु तत्काल प्राणोंको हरनेवालीहैं।

प्राणकरषट्कम्।

सद्योमांसंवरचान्नंवालास्त्रीक्षीरभोजनम्।
घृतमुष्णोदकेस्नानसद्य प्राणकराणिषट् ॥

अर्थ–ताजा मास, नवीन अन्न, बाला स्त्री, क्षीरका भोजन, घृतयुक्त भोजन और गरमजलमे स्नान करना यह छ' वस्तु तत्काल प्राणोंको करनेवाली ह।

सप्तोपविषाणि।

अर्कक्षीरस्नुहीक्षीरलागलीकरवीरक.। गुञ्जाहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातय ॥ सप्तोपविषवर्गोयसवर'परिकीर्त्तित ।अयुक्त्यासेवितश्चायमारयत्येवनिश्चितम् ॥

अर्थ–आकका दूध, थूहरका दूध, कुलिहारी, कनेर, चोंटली, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति हैं। सप्तउपविष वर्ग–अत्यन्त श्रेष्ठ हैं और अनेक कार्यांम लिया जाताहै। यह अयुक्तिके साथ सेवन कियाहुवा मनुष्यको मार देवे हैं।

शरीरस्थसप्तधातव।

रसासृङ्मासमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणिधातव.।

अर्थ–रस, रुधिर, मास, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र यह शरीरमें रहनेवाली सात धातुए।

सुवर्णादिसप्तधातव।

स्वर्णरूप्यञ्चताम्रञ्चरङ्गंयशदमेवच। सीसलोहञ्चसप्तैतेधातवोगिरिसम्भवा' ॥ वलीपलितखालित्यकार्श्यावल्यजवरामयान्। निवार्य्यदेहदधतिनृणांतद्धातवोमता ॥

अर्थ–सोना, रूपा, तावा, राग, जस्त, सीसा और लोहा यह पर्वतसे उत्पन्न हानेवाली सात धातु हैं। यह सातधातु–देहमें वलिका पडना, विनासमय बालोंका धवल होजाना, मस्तकमेंसे बालोंका गिरजाना, कृशता, निर्बलता, वृद्धावस्था और रोगोंको दूर करके देहको धारण करती हैं इसीकारण इनको धातु कहते हैं।

शरीरस्थधातूनामुपधातवः ।

स्तन्यंरजोवसास्वेदोदन्ताःकेशास्तथैव च ।
ओजश्चसप्तधातूनांक्रमात्सप्तोपधातवः ॥

अर्थ-दूध, रज, वसा (चर्बी), स्वेद (पसीना), दांत, केश और ओज यह क्रमसे सातधातुओंकी उपधातु हैं अर्थात् रससे दूध, रक्तसे स्त्रीका रज, मांससे चर्बी, मेदासे पसीना, अस्थिसे दांत, मज्जासे केश और शुक्रसे ओज उत्पन्न होता है ।

खनिजोपधातवः ।

स्वर्णजस्वर्णमाक्षीकंतारजतारमाक्षिकम् । तुत्थताम्रभवञ्ज्ञे
यकङ्कुष्ठवङ्गसम्भवम् ॥ रसकोजसदाज्जातोनागात्सिन्दूर-
सम्भवः । लोहाज्जातलोहकिट्टमेतत्सप्तोपधातवः ॥

अर्थ-स्वर्णसे सुवर्णमाक्षी, रूपेसे रूपामाखी, तांबेसे नीलाथोथा, रांगसे कङ्कुष्ठ, जस्तासे खपरिया, शीसेसे सिंदूर और लोहेसे लोहकिट्ट उत्पन्न होतेहैं इसप्रकार यह सातधातुओंकी सात उपधातु हैं ।

सन्तर्पणम् ।

द्राक्षादाडिमखर्जूरैर्मर्दिताम्बुसशर्करम् ।
लाजाचूर्णंसमध्वाज्यमेतत्सन्तर्पणंस्मृतम् ॥

अर्थ-दाख, अनार, खजूर यह तीनों पानीके सङ्गमर्द मिलेहुये और इनमें खीलोंका चूर्ण मिलाहुआ तथा घी और शहद सहित यह सन्तर्पण कहाजाता है ।

मतान्तरे ।

द्राक्षादाडिमखर्जूरकदलीशर्करान्विता ।
समध्वाज्यञ्चपित्तघ्नंसन्तर्पणमुदाहृतम् ॥

अर्थ-किसीके मतसे दाख, अनार, खजूर, केला, खांड, मधु और घी यह पित्तनाशक और सन्तर्पण है ।

कर्मभेदाश्च ।

क्वाथःसप्तविधःप्रोक्तःपाचनंशोधनंतथा । क्लेदनंशमनं-
चैवदीपनंतर्पणंतथा ॥ शोषकश्चेतिभेदास्तुगुणास्तस्य

ब्रवीमिते । अर्द्धांश.पाचनश्चोक्तोग्व्यंश कोष्ठशुद्धिकृत् ॥ चतुर्थांशोघर्म्मकारीत्वष्टांशोरोगनाशन । षष्ठांशश्चाग्नि- जनकःषोडशांशस्तुशोषण. ॥ पञ्चमाशस्तृप्तिकारीमुनि- भिःपरिकीर्त्तित. ॥

अर्थ-क्वाथ सात प्रकारका होता है, जैसे-पाचन १ शोधन २ छेदन ३ शमन ४ दीपन ५ तपण ६ शोपक ७ तहा जो काढेका जल जलकर आधा रहगयाहो उसको अर्द्धांश कहते हैं। अर्द्धांश क्वाथ पाचन है। जिसका पानी जलकर बारहवाँ भाग शेष रहजाय उसको त्र्यंश कहते है। त्र्यंश क्वाथ कोठेको शुद्धि करे है जिस काढेका जल जलकर चौथा भाग बाकी रहजाय उसको चतुर्थांश कहते हैं। चतुर्थांशकाढा-पसीनेको लानेवाला है जिस काढेका जल जलकर आठवाँ भाग शेष रहजाय उसको अष्टांश कहते हैं। अष्टांश क्वाथ रोगनाशक है। जिसका जल जलकर छठा भाग बाकी रहाहो उसको षष्ठांश कहते है। षष्ठांश क्वाथ अग्निजनक है। जिसका पानी जलकर सोलहवाँ भाग बाकी रहजाय उसको षोडशांश कहते है। षोडशांश क्वाथ शोषक। और जिस काढेका जल जलकर पाचवाँ भाग बाकी रहजाय उसको पचमांश कहते हैं पचमांश काढा तृप्तिकारक है।

सप्तोपरत्नानि ।

वैक्रात सूर्य्यकान्तश्चचन्द्रकान्तस्तथैवच ।
कर्पूरक स्फटिकश्चपेरोजाख्यश्चकाचक ॥
सप्तोपरत्नगणितामणयोलोकविश्रुता. ॥

अर्थ-वैक्रात, सूर्यकात, चद्रकान्त, कपूर, स्फटिक, पिरोजा और काच यह सात उपरत्न है।

अष्टधातवः ।

हिरण्यरजतकास्यताम्रसीसकमेवच ।
रङ्गमायसरैत्यश्चधातवोष्टौप्रकीर्तिता ॥

अर्थ-सोना, चांदी, कांसा, तांबा, सीसा, रांग, लोहा और पीतल यह आठ धातुएं।

मतान्तरे।

सुवर्णरजतताम्रलोहकुप्यञ्चपारदम् ।
वंगञ्चसीसकञ्चैवअष्टौदेवसुसम्भवा ॥

अर्थ-और किसीके मतमे सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्त, पारा रांग, और सीसा यह आठ धातु देवोंसे उत्पन्न है।

अष्टविधचिकित्सा।

शल्यशालाक्यकायश्चतथाबालचिकित्सितम् ।
अगदविषतन्त्रञ्चभूतविद्यारसायनम् ॥
वाजीकरणमेवेतिचिकित्साष्टविधास्मृता ।

अर्थ-शल्य, शालाक्य, काय, बालचिकित्सा, अगद विषतंत्र, भूतविद्या, रसायन और वाजीकरण येसे चिकित्सा आठ प्रकारकी है।

अष्टगन्ध।

कर्पूरचंदनमुस्ताकुङ्कुमदेवदारुच ।
गोचनाकेसरंगौरिगन्धाष्टकमुदाहृतम् ॥

अर्थ-कपूर, चन्दन, नागरमोथा, केशर, देवदारु, गोरोचन, नागकेशर और रास यह गन्धाष्टक अर्थात् अष्टगन्ध है।

अष्टवर्ग।

जीवकर्षभकौमेदेकाकोल्यौवृद्धिऋद्धिके । अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभि ॥ अष्टवर्गोहिमःस्वादुर्बृंहण शुक्रलोगुरु । भग्नसन्धानकृद्बल्य शरीरबलवर्द्धनः ॥ वात पित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, वृद्धि ऋद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली यह आठ औषधी एकत्र मिली हुई अष्टवर्ग कही जाती है। अष्टवर्ग-शीतल, स्वादिष्ट पुष्टिकारक, शुक्रजनक, भारी, भग्नसन्धानकारक, बलकारक शरीरवर्द्धक तथा वातको पराजय करनेवाला तथा वात, पित्त, रुधिरविकार तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षयरोगको दूर करे है।

अष्टवर्गप्रतिनिधय ।

मेदाभावेअश्वगन्धामहामेदेचशारिवा ।
जीवकर्षभकाभावेगुडूचीवंशलोचना ॥
ऋद्ध्यभावेबलादेयावृद्ध्यभावेमहाबला ।

अर्थ-मेदाके अभावमें असगंध, महामेदाके अभावमें शारिवा, जीवकके अभावमें गिलोय, ऋषभकके अभावमें वंशलोचन, ऋद्धिके अभावमें खिरेंटी और वृद्धिके अभावमें सहदेवी देनी चाहिये ।

अष्टमङ्गलघृतम् ।

वचाकुष्ठतथाब्राह्मीसिद्धार्थकमतापिच । सारिवासैन्धवश्चैव पिप्पलीघृतमष्टमम् ॥ सिद्धंघृतमिदमेध्यपिबेत्प्रतिदिने दिने । दृढस्मृतिःकुमाराणांपिबतामष्टमङ्गलम् ॥

अर्थ-वच, कूठ, ब्राह्मी, सरसों, सारिवा, सेंधव, पीपल और घी इन सबके द्वारा सिद्ध कियेहुये घृतको अष्टमङ्गलघृत कहते हैं इस घीको जो बालक प्रतिदिन पीतेहैं उनकी मेधाकी वृद्धि होती है और स्मरणशक्ति दृढ होजाती है ।

नवधातव ।

हेमताराऽरनागश्चताम्रवङ्गेचतीक्ष्णकम् ।
कांस्यकंकान्तलोहश्चधातवोनवकीर्त्तिता· ॥

अर्थ-सोना, चांदी, पीतल, सीसा, तांबा, रांग, लोहा कांसा और कान्तलोह यह नवधातु हैं ।

नवरत्नानि ।

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणितार्क्ष्यंचपुष्पभिदुरचनीलम् ।
गोमेदजचाथविदूरकचक्रमेणरत्नानिनवग्रहाणाम् ॥

अर्थ-माणिक, मोती, मूँगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नील, गोमेद और वैदूर्य यह क्रमसे नवग्रहोंके नवरत्न हैं ।

क्षारदशकम् ।

शिग्रुमूलकपलाशचुक्रिकाचित्रकार्द्रकसनिम्बसम्भवं ।
इक्षुशंखार्कमोचिकोद्भवं क्षारपूर्वदशकप्रकीर्त्तितम ॥

मतान्तरे ।

सुवर्णरजतताम्रलोहकुप्यञ्चपारदम् ।
वङ्गञ्चसीसकञ्चैवअष्टौदेवसुसम्भवाः ॥

अर्थ-और किसीके मतसे सोना, चादी, तावा, लोहा, जस्त, पारा रांग, और सीसा यह आठ धातु देवोंसे उत्पन्न हैं ।

अष्टविधचिकित्सा ।

शल्यशालाक्यकायश्चतथाबालचिकित्सितम् ।
अगदंविषतन्त्रञ्चभूतविद्यारसायनम् ॥
वाजीकरणमेवेतिचिकित्साष्टविधास्मृता ।

अर्थ-शल्य, शालाक्य, काय, बालचिकित्सा, अगद विषतन्त्र, भूतविद्या, रसायन और वाजीकरण ऐसे चिकित्सा आठ प्रकारकी है ।

अष्टगन्धा ।

कर्पूरचन्दनमुस्ताकुङ्कुमदेवदारुच ।
रोचनाकेसरोशीरगन्धाष्टकमुदाहृतम् ॥

अर्थ-कपूर, चदन, नागरमोथा, केसर, देवदारू, गोरोचन, नागकेसर और खस यह गन्धाष्टक अर्थात् अष्टगंध है ।

अष्टवर्गः ।

जीवकर्षभकौमेदेकाकोल्यौवृद्धिऋद्धिके । अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभिः ॥ अष्टवर्गोहिमःस्वादुर्बृंहण शुक्रलोगुरुः । भग्नसन्धानकृद्बल्य शरीरबलवर्द्धन ॥ वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, वृद्धि ऋद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली यह आठ औषधी एकत्र मिली हुई अष्टवर्ग कही जाती है । अष्टवर्ग-शीतल, स्वादिष्ट, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, भारी, भग्नसन्धानकारक, बलकारक, शरीरवर्द्धक बलको बढानेवाला तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षयरोगको दूर करे है ।

अष्टवर्गप्रतिनिधयः ।

मेदाभावेअश्वगन्धामहामेदेचशारिवा ।
जीवकर्षभकाभावेगुडूचीवंशलोचना ॥
ऋद्धयभावेवलादेयावृद्धयभावेमहावला ।

अर्थ–मेदाके अभावमे असगंध, महामेदाके अभावमे शारिवा, जीवकके अभावमे गिलोय, ऋषभकके अभावमें वंशलोचन, ऋद्धिके अभावमें खिरेटी और वृद्धिके अभावमें सहदेवी देनी चाहिये ।

अष्टमङ्गलघृतम् ।

वचाकुष्ठतथाब्राह्मीसिद्धार्थकमतापिच । सारिवासैन्धवश्चैव पिप्पलीघृतमष्टमम् ॥ सिद्धघृतमिदमेध्यपिवेत्प्रतिदिने दिने । दृढस्मृतिःकुमाराणांपिवतामष्टमङ्गलम् ॥

अर्थ–वच, कूठ, ब्राह्मी, सरसों, सारिवा, सेंधव, पीपल और घी इन सबके द्वारा सिद्ध कियेहुये घृतको अष्टमंगलघृत कहते हैं इस घीको जो वालक प्रतिदिन पीतेहैं उनकी मेधाकी वृद्धि होती है और स्मरणशक्ति दृढ होजाती है ।

नवधातवः ।

हेमताराररनागश्चताम्रवङ्गेचतीक्ष्णकम् ।
कांस्यकंकान्तलोहश्चधातवोनवकीर्त्तिताः ॥

अर्थ–सोना, चांदी, पीतल, सीसा, तांबा, रांग, लोहा, कांसा और कान्तलोह यह नवधातु हैं ।

नवरत्नानि ।

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणिताक्ष्यंचपुष्पभिदुरचनीलम् ।
गोमेदजचाथविदूरकचक्रमेणरत्नानिनवग्रहाणाम् ॥

अर्थ–माणिक, मोती, मूँगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नील, गोमेद और वैदूर्य यह क्रमसे नवग्रहोंके नवरत्न हैं ।

शाकदशकम् ।

शिग्रुमूलकपलाशचुक्रिकाचिनकार्द्रकसनिम्बसम्भवैः ।
इक्षुशेखरिकमोरिकोद्भवे शाकपूर्वदशकप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सहिंजना, मूली, ढाक, इमली, चीता, अदरख, नीम, ईख, चिरचिटा और केला इन दश वृक्षोंके क्षारको क्षारदशक कहतेहैं ।

दशांगधूप ।

मधुमुस्तघृतगंधोगुग्गुलागरुशैलजम् ।
सरलःसिह्लसिद्धार्थंदशांगोधूपउच्यते ॥

अर्थ-शहत, नागरमोथा, घी, गंधक, गूगल, अगर, भूरिछरीला, धूपसरल, शिलारस और सरसो इन सबको एकत्र कर दशांगधूप बनाई जाती है ।

दशमूलम् ।

उभाभ्यांपंचमूलाभ्यांदशमूलमुदाहृतम् ।
दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासशिरोरुजः ॥
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥

अर्थ-लघु और बृहत्पंचमूल दोनोंको मिलाकर दशमूल होताहै दशमूल-त्रिदोषनाशक तथा श्वास, खाँसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, आनाह, पसलियोंकी पीडा और अरुचिको दूर करे है ।

दशमूत्रम् ।

हस्तिमहिषोष्ट्रगवाजमेषाश्वगर्दभमानुषमानुषी-
णांदशानांमूत्रम् ।

अर्थ-हाथी, भैंस, ऊंट, गाय, बकरी, भेड, घोडा, गर्दभ, मनुष्य और स्त्री इन दश प्राणियोंके मूत्रको दशमूत्र कहतेहैं ।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते निघण्टुभूषणे सन्ध्यावर्गः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ इति पूर्वार्धं समाप्तम् ॥



॥ श्रीः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषणे ।

उत्तरार्द्धम् ।

मंगलाचरणम् ।

स्वात्मस्थित सर्वगतःसमस्तव्यापारवेदीविनिवृत्तसंग ।
प्रवृद्धकालोऽप्यजरोवरेण्य'पायादपायात्पुरुषःपुराणः ॥

अनूपादिवर्गः ।

देशस्तुत्रिविधोज्ञेयोह्यनूपोजांगलस्तथा ।
साधारणोविशेषेणज्ञातव्यास्तेमनीषिभि· ।

अर्थ-अनूप, जांगल और साधारण इन भेदोंसे देश तीन प्रकारके हैं सो वह देश बुद्धिमानों करके जानना चाहिये ।

अनूपदेशका लक्षण ।

नदीपल्वलशैलाढ्य फुल्लोत्पलकुलैर्युतः । हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवित ॥ शशवराहमहिषरुरुगेंडकुलाकुल । प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्योनीलसस्यफलान्वित ॥ अनेक शालिकेदारकदलीक्षुविभूषित । अनूपदेशोज्ञातव्योवात-श्लेष्ममयार्त्तिमान् ॥

अर्थ-जिसमें नदी, तलैया और पर्वत अधिकहो तथा जो फूले कमल और कुमुदोंके समूहसे संयुक्त होय, हंस, सारस, जलमुर्गी और चकवादि पक्षियों करके सेवितहो, खरगोस, सूअर, भैंसा, रुरु और गेंडे इनके समूहसे आकुल होय बहुतसे वृक्ष और पुष्पोंसे युक्तहोय हरी दूब और फलोंसे परिपूर्ण होय और जो अनेक प्रकारके शालिधानोंके खेतोंसे केला और इक्षुआदिवृक्षोंसे सुशोभित होय, अर्थात् यह सब जिसमें होय उसको अनूपदेश कहते हैं, अनूपदेश-वात और कफके रोगोंको उत्पन्न करता है।

अन्यच्च ।

बहुतरशुभनद्यश्चारुपानीयपुष्पास्सरससरउपेताशाद्वलासारभूमिः । हरितकुशजलानांशालिकेदाररम्यादिनकरकरदीप्तिंवाञ्छतेयत्रलोकः॥गुरुमधुररसाढ्याभातिचेक्षुःसदाद्रांविविधजनितवर्णाःशालिगोधूमयूषा । मधुररसविभुक्त्यामानवानांप्रकोपीभवतिकफसमीरःस्यात्तदानूपदेशः ॥

अर्थ—जिसमें निर्मल और मनोहर जलवाली बहुतसी नदी होय तथा जिस देशकी पृथ्वी हरीदूब और रसवाले वृक्षोंसे आच्छादित होरही हो, हरी कुशा और जलसे भरेहुएहैं शालिधानोंके खेत, उन खेतोंसे विभूषित होरहीहै भूमि जिसकी और जिस देशके लोक सूर्यकी किरणोंकी अभिलाषा करते हैं, जहा भारी मधुर रसान्वित और निरंतर हरी ईख होती है, जहा नानाप्रकारके रंगके शालिधान और गोधूमादि होते हैं और जहा मधुर रसको भक्षण करनेसे कफ और वात कुपित होते हैं, उस देशको अनूपदेश कहते हैं । हिन्दी—खादर, तराई ।

जांगलदेशलक्षणम् ।

आकाशशुभ्रउच्चश्चस्वल्पपानीयपादपः । शमीकरीरविल्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः ॥ हरिणैणर्क्षपृषतगोकर्णखुरसंकुलः । सुस्वादुफलवान्देशोवातलोजांगलःस्मृतः ॥

अर्थ—जो देश आकाशके समान स्वच्छ और ऊँचाहो जिसमे अल्पजलहो, बहुत थोडे वृक्ष होंय और शमी, करील, बेल, आक, पीलु और बेरी जिसमें अधिकतामे होंय तथा हरिण, एण, रीछ, चीता, रोझ और गर्दभादि, पशुओंसे जो देश भराहुआहो जिसमें स्वादिष्ठ फल उत्पन्नहो उस देशको जांगलदेश कहते हैं, जांगलदेश—वातकारक है ।

अन्यच्च ।

खरपरुषविशाला पर्वता कण्टकीर्णादिशिदिशिमृगतृष्णाभूरुहा शीर्णपर्णा ॥ अतिखररविरश्मीपांशुसम्पूर्णभूमि सरसिरसविहीनःकूपकारम्भकर्षः ॥ तदनुविरमसस्याहारिणो गोमहिष्य प्रभवति रमसाशेरूक्षभावश्चम-

म्यक् ॥ पुनरपिहिमवाहशालिसस्यनचेक्षुर्भवतिरुधिरपित्तकोपमाशुह्युपैति ॥

अर्थ–जिसमे तीक्ष्ण और कठोर पहाड स्थित है तथा कटकोंसे व्याप्त होरही है दिशा जिसकी, जिसमें विनाही जलके मृगोंको जल प्रतीत होवे, जहा फटेहुये पत्तोंवाले वृक्ष अधिकतर होते हैं, जहाँ सूर्यकी धूपसे अत्यन्त गरम हुए रेतेसे पृथ्वी परिपूर्ण होरहीहै, जहाँ सरोवर और कुओंका पानी नीरस होकर सूखता जाताहै, जहाँ नीरसधान खानेसे हाथी, गाय, भैंस, इत्यादि पशु अधिक प्रसन्न नहीं होते, जहाँ रस और मासमे रूक्षता उत्पन्न होतीहै, जहाँ शीतल पवन, शालिधानोंके खेत और इख नही होतीहै और जहाँ रक्त और पित्त कुपित होताहै उसको जागलदेश कहतेहै। हिन्दी–कंटर खुस्कदेश ।

साधारणदेशका लक्षण ।

उभयगुणयुतवानातिरूक्षंनस्निग्ध नचखरबहुलंचेचाभित कण्टकाढ्यम् ॥ भवतिचजलकीर्णनातिशीतनचोष्ण समप्रकृतिसमेतविद्धिसाधारणञ्च ॥

अर्थ–जहाँ अनूप और जांगल इन दोनों देशोंके लक्षण मिलतेहो, जहाँ न तो अत्यन्त रूक्षता होवै और न अधिक स्निग्धता होवे, जहाँ तेज और काटे अधिक न होवें, जो चारों ओर पानीसे भर रहाहो जिसमें न अत्यन्त शीत होवे और न अत्यन्त गरमी होवे समान प्रकृतिवाला हो उसको साधारण देश कहते है ।

अन्यच्च ।

यत्रद्वयोरपिचलक्षणयोर्निवेशो गोधूममापचणकाभिधयावनालैः ॥ योराजितःसममलोजनसौख्यदायी साधारणः सगदितोखिलवैद्यराजैः ॥

अर्थ–जिसमें अनूप और जागल दोनों देशोंके लक्षण मिलते होंय, जहाँ गेहू, उडद, चन और ज्वार उत्पन्न होतेहोंय और जिसमे सर्दी, गर्मी समान हो उसको साधारण देश कहतेहैं ।

अथ क्षेत्रभेदा ।

क्षेत्रभेदप्रवक्ष्यामिशिवेनाख्यातमंजसा ।

ब्राह्मक्षात्रंचवैश्यंचशौद्रंचेतियथाक्रमात् ॥

अर्थ-अब महादेवके कहेहुए क्षेत्रभेदको कहताहू-ब्राह्मक्षेत्र, क्षात्रक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र और शौद्रक्षेत्र इन भेदोंसे क्षेत्र चार प्रकारका है सो यथाक्रमसे जानना।

ब्राह्मक्षेत्रका लक्षण।

प्रायोदर्भपलाशवारिबहुलयत्रार्जुनामृत्तिका।
ज्ञेयतत्प्रथमद्विजातिसुखदद्रव्यतदुत्थभवेत् ॥

अर्थ-जिसमें कुशा और पलाशके वृक्ष अधिक हो, जो क्षेत्र जलसे परिपूर्ण हो, जहाँकी मृत्तिका सफेद हो उस क्षेत्रको ब्राह्मक्षेत्र कहतेहैं। ब्राह्मक्षेत्रके उत्पन्न हुए द्रव्य ब्राह्मणोंको सुखदेनेवाले हैं।

क्षात्रक्षेत्र।

ताम्रभूमिवलयविभूधरयन्मृगेन्द्रमुखसकुलकुलम्।
घोरघोपिखदिरादिदुर्गमक्षात्रमेतदुदितपिनाकिना ॥

अर्थ-जिसका रंग ताम्रवर्ण हो, और जो पर्वत, सिंह और मृगादिकोंके समूहसे संयुक्तहो तथा भयंकर शब्द करनेवाले पशु पक्षी और खैर आदिके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो उसको 'शंकर' ने क्षत्रियक्षेत्र कहाहै।

वैश्यक्षेत्र।

शातकुम्भनिभभूमिभास्वरस्वर्णरेणुनिचितनिधानवत्।
सिद्धकिन्नरसुपर्वसेवितवैश्यमाख्यदिदमिन्दुशेखरः ॥

अर्थ-जिसका रंग सोनेकी समान पीतवर्ण हो। जिसकी मृत्तिकामें सुवर्णके कणसे मिलेहो, एवं सिद्ध, किन्नर और देवादिकों करके जो सेवित हो उसको 'शंकर' ने वैश्यक्षेत्र कहाहै।

शूद्रक्षेत्र।

श्यामस्थलाढ्यबहुसस्यभृतिदलसत्तृणैर्बब्बुलवृक्षवृद्धिदम्।
धान्योद्भवे कर्पकलोकहर्पदजगादशौद्रंजगतीवृपध्वजः ॥

अर्थ-जिस पृथ्वीका रंग श्यामवर्ण हो, जिसमें नाना प्रकारकी घास उत्पन्न होतीहों, जहाँ तृण और बबूरके पेड बहुत होवें, तथा जो नाना प्रकारके धान्योंके उत्पन्न होनेसे किसानोंको आनंद देनेवाली हो उस पृथ्वीको वृषध्वज (शंकर) ने शूद्रक्षेत्र कहाहै।

चतुर्विधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणा ।

द्रव्यक्षेत्राद्दुदितमनघब्राह्मत सिद्धिदायिक्षत्रादुत्थवलिपलि-
तजिद्विश्वरोगापहारि ॥ वैश्याज्जातप्रभवतितराधातुलोहा-
दिसिद्धौशौद्रादेतज्जनितमखिलव्याधिविद्रावकद्राक् ॥

अर्थ–ब्राह्मणक्षेत्रमे उत्पन्न हुए द्रव्य सिद्धिदायकहैं। क्षत्रियक्षेत्रसे उत्पन्न-हुए द्रव्य वलि और पलित तथा समारके रोगोंको हरनेवाले होते हैं। वैश्य क्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य धातु और लोहादिकी सिद्धिमें लियेजाते हैं और शूद्रक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सवप्रकारके रोगोंको हरनेवाले हैं। इन उपरोक्त ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारो क्षेत्रोंसे उत्पन्न हुये द्रव्य क्रमसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंको हितकारीहैं।

अन्यच्च क्षेत्रभेदा ।

ब्रह्माशक्र किन्नरेशस्तथाभूरित्येतेपादेवता स्युःक्रमेण ।
प्रोक्तास्तत्रप्राग्गुमावल्लभेनप्रत्येकतेपचभूतानिवक्ष्ये ॥

अर्थ–ब्रह्मा, इद्र, कुबेर और पृथ्वी यह ऊपर कहेहुए ब्राह्मादि क्षेत्राके क्रमसे देवता हैं ऐसा शिवने कहा है यह प्रत्येक क्षेत्र पचभूतोंसे पाच प्रकारका है उसको कहताहू।

पार्थिवक्षेत्र।

पीतस्फुरद्वलयशर्करिलाश्मरम्यपीतयदुत्तममृगचतुरस्र
भूतम्। प्रायश्चपीतकुसुमान्वितवीरुदादितत्पार्थिवकठि-
नमुद्यदशेपतस्तु ॥

अर्थ–जो क्षेत्र पीलेरगके गोल कण और पापाणोंसे शोभित हो तथा जिस क्षेत्रकी पृथ्वीका रगभी पीतवर्णहो और जिस क्षेत्रमें वृक्ष लताभी पीले फूलवाले हो तथा जिसकी भूमि कठिन हो उसको पार्थिवक्षेत्र कहते हैं।

आप्यक्षेत्र।

अर्द्धचन्द्राकृतिश्वेतकमलाभदपचितम्।
नदीनदजलाकीर्णमाप्यतत्क्षेत्रमुच्यते ॥

अर्थ–जो क्षेत्र अर्धचन्द्राकार हो, जिसका वर्ण सफेदकमलके समान हो और जो पाषाणोंसे सयुक्त हो, नदी नदादि जलाशयोंसे व्याप्त हो उसको आप्यक्षेत्र जानना।

तैजसक्षेत्र।

खदिरादिद्रुमाकीर्णंभूरिचित्रकवेणुकम् ।
त्रिकोणरक्तपाषाणंक्षेत्रंतैजसमुत्तमम् ॥

अर्थ-जो क्षेत्र खदिरादिकके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो, जिसमें अनेक चीतेके और बाँसके वृक्षहो, जिसका आकार तिकोना हो और जिसमें लाल पाषाण हों उसको तैजसक्षेत्र कहते हैं ॥

वायवीयक्षेत्र।

धूम्रस्थलधूम्रदृषत्परीतंषट्कोणकंतृणमृगावकीर्णम् ।
शाकैस्तृणैरचितरूक्षवृक्षकप्रकारयेत्तत्खलुवायवीयम् ॥

अर्थ-जिस क्षेत्रका रंग धूसर हो तथा जो धूएँके रंगके पाषाणसे संयुक्त हो और जिसके छःकोने हों जिसमें मृगादिपशु, शाक और तृण अधिकतासे हों और जिसमें रूखे वृक्ष हों उस क्षेत्रको वायवीय क्षेत्र कहते हैं ।

आन्तरिक्षक्षेत्र।

नानावर्णवर्त्तुलतत्प्रशस्तप्राय शुभ्रपर्वताकीर्णमुच्चैः ।
यत्रस्थानपावनदेवतानाप्राहक्षेत्रंत्रीक्षणस्त्वांतरिक्षम् ॥

अर्थ-जिस क्षेत्रका रंग नानाप्रकारका हो, जो क्षेत्र गोलहो, तथा जो श्वेतपर्वतोंसे आकीर्ण और ऊँचा होवे और जिसमें देवतादि वास करते हो उसको महादेवने आंतरिक्षक्षेत्र कहा है ।

पंचविधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः ।

द्रव्यव्याधिहरबलातिशयकृत्स्वादुस्थिरपार्थिवं
स्यादाप्यकटुककषायमखिलशीतंचपित्तापहम् ।
यत्तिक्तलवणचदीप्यमरुचिंचोष्णंचतत्तैजसम्
वायव्यंतुहिमोष्णमम्लमबलम्यान्नाभसनीरसम् ॥

अर्थ-पार्थिवक्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-रोगनाशक, अत्यंत बलकारक, स्वादिष्ठ और स्थिर होते हैं । आप्यक्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य चरपरे, कषैले, शीतल और पित्तनाशक होते हैं । तैजस क्षेत्रके उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-कडुवे, नमकीन, अग्निको दीपन करनेवाले, वातनाशक और गरम होते हैं । और

वायवीय क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-शीतल, गरम, खट्टे और अबलकारक होते हैं। और आतरिक्ष क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले सब द्रव्य नीरग होते हैं।

पाचक्षेत्रोंके देवता।

ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रोस्मादीश्वरोथसदाशिव. ।
इत्येता क्रमतःपच क्षेत्रभूतादिदेवता ॥

अर्थ-ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव ये क्रमसे पाँच क्षेत्रोंके पाँच देवता हैं।

वृक्षोत्पत्ति।

जित्वाजवादरिसुसैन्यमिहाजहारवीर पुरायुधिसुधाकलश गरुत्मान् ॥ कीर्णस्तदाशुविसुधाशकले किलासीवृक्षादिकसकलमस्यसुधांशुरीशः ॥

अर्थ-पूर्वकालमें जिससमय बलवान् गरुडजीने सबदेवसेनाको सग्राममें जीतकर अमृतके कलशको शीघ्रतासे छीनाया उससमय जो अमृतकी बूँदें कलशमेंसे पृथ्वीके भागोंमें गिरीं उन्हीं बूँदोंसे यह सब वृक्षादिक उत्पन्न हुए, और इन सबका स्वामी चन्द्रमा हुआ।

वृक्षोंके ब्राह्मणादिभेद।

तत्रोत्पन्नास्त्वृत्तमेक्षेत्रभागेविप्रीयादौविप्रपोयनयत्र।क्षोणीजादिद्रव्यभूयप्रपन्नास्तास्ताःसज्ञाबिभ्रतेतत्रभूय ॥ एव क्षेत्रानुगुण्येनतज्ज्ञाविप्रादिवर्णिन । यदित्रालक्षणतस्या-म्यमोहायमनीपिणाम् ॥

अर्थ-ब्राह्मणादिक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-ब्राह्मण, क्षत्रियक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-क्षत्रिय, वैश्यक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-वैश्य और शूद्रक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-शूद्र कहलाते हैं। ऐसे प्रत्येक क्षेत्रके अनुसार वृक्षोंके ब्राह्मणादि भेदहैं उनमें वैद्यको कदाचित भ्रम न होवे इसकारण उनके लक्षण कहता हूँ।

तल्लक्षणानि।

किसलयकुसुमप्रकाण्डशाखादिषुविशदेषुवदतिविप्रमेतान् ।
नरपतिमतिलोहितेपुवैश्य कनकनिभेषुसितेतरेषुशूद्रम् ॥

अर्थ-जिसके पत्र, पुष्प, दण्डी और शाखादि सफेद हाय, उसको ब्राह्मणजातिका वृक्ष कहते हैं। जिसके पत्र पुष्प प्रकाण्ड और शाखादि लाल

होवें उसको क्षत्रियजातिका वृक्ष जानना। और जिसके पत्र पुष्पादि पीले होवें उसको वैश्य तथा जिसके काले होवें उसको शूद्रजातिका जानना।

ब्राह्मणादिवृक्षोंके योजनेकी विधि।

विप्रादिजातिसंभूतान्विप्रादिष्वेवयोजयेत्।
गुणाढ्यानपिवृक्षादीन्प्रातिलोम्यनचाचरेत्॥

अर्थ-ब्राह्मणजातिके वृक्ष ब्राह्मणोंको देवै, क्षत्रियजातिके क्षत्रियोंको, वैश्यजातिके वैश्योंको और शूद्रजातिके शूद्रोंको देवै। अधिक गुणवाले वृक्षोंकोभी प्रतिलोम (उलटा) न करै, अर्थात् ब्राह्मणजातिके वृक्षोंको क्षत्रियादिकको, और क्षत्रियादिके वृक्षोंको ब्राह्मणवैश्यादिकोंको शूद्र-ब्राह्मण-और क्षत्रियको और शूद्रजातिके वृक्षोंको ब्राह्मणादिको न देवै।

अथौषधिनिर्णयश्चतुर्विधः।

किंचिद्दोषप्रशमनंकिंचिद्धातुप्रदूषणम्।
स्वस्थवृत्तौमतंकिंचित्त्रिविधंद्रव्यमुच्यते॥

अर्थ-कोई औषधि वातादिक दोषोंको शान्तकरनेवाली कोई रसादिक धातुओंको दूषित करनेवाली और कोई औषधि नीरोग प्राणियोंको हितकारक है, ऐसे इस संसारमें जितने द्रव्य हैं वह सब तीन प्रकारके जानने।

तत्त्रिविधं यथा।

द्रव्यंतुत्रिविधंप्रोक्तंजाङ्गमौद्भिदपार्थिवम्।

अर्थ-फिर वही द्रव्य जंगम औद्भिद और पार्थिव इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं।

जंगमद्रव्य।

मधूनिगोरसाःपित्तवसामज्जासृगामिषम्।
विण्मूत्रचर्मरेतोस्थिस्नायुशृंगखुरानखाः॥
जंगमेभ्यःप्रयुज्यन्तेकेशालोमानिरोचनाः।

अर्थ-शहत, गोरस, पित्त, चर्बी, मज्जा, रुधिर, मांस, विष्ठा, मूत्र त्वचा, वीर्य, हड्डी, नसें, सींग, खुर, नख, केश, रोम और गोरोचन (गोलोचन) ये पशु मनुष्य और पक्ष्यादि चलते हुए जीवोंसे उत्पन्न द्रव्य व्यवहारमें आते हैं इनको जंगमद्रव्य कहते हैं।

पार्थिवद्रव्यम् ।

सुवर्णसमलाःपचलोहाःससिकतासुधामन शिलाले ।
मणयोलवणगेरिकांजनेभौममौषधमुद्दिष्टम् ॥

अर्थ-सोना, चाँदी, ताना, जस्त, राग, सीसा, लोहा, शिलाजीत, वालू, सोनामाखी, खपरिया, मुर्दासिंग, मनशिल, हरिताल, हीरादि नवरत्न, उपरत्न, सधवादिलवण, गेरू, खरियामट्टी, कसीस, सुर्मा इत्यादि पार्थिव अर्थात् ये औषधी पृथ्वीकी खानोंमसे निकलतीहै इसकारण इनको भौम औषध कहते हैं ।

औद्भिदद्रव्यम् ।

वनस्पतिर्वीरुधश्चवानस्पत्यस्तथौषधि ।
फलैर्वनस्पति पुष्पैर्वानस्पत्य फलैरपि ॥
ओषध्य फलपाकांताःप्रतानैर्वीरुधस्मृतः ।

अर्थ-धरतीको फोडकर जो द्रव्य निकले उसको औद्भिदद्रव्य कहतेहैं और उस औद्भिदकी चार जाति हैं, वनस्पति १ वीरुध २ वानस्पत्य ३ और ओषधि ४ जिनपै विना फूलकेही फल लगे उनको वनस्पति तथा पादप कहते हैं, जैसे-वड, पीपल इत्यादि । और जिनपै फूल लगकर फल आतेहैं उनको वानस्पत्य तथा शाखी कहतेहैं । जैसे-आम, जामुन इत्यादि । और जो फल आनेके पश्चात् सूखजातेहैं उनको ओषधि कहतेहैं । जैसे-गेहूँ, जौ आदि । और जिनकी बेल चलती है उनको वीरुध कहते हैं ।

अन्यच्च ।

ओषध्य पचधाख्यातालतागुल्माश्चशाखिन ।पादपाःप्रसराश्चेतितेषांवक्ष्यामिलक्षणम ॥ गुडूच्याद्यालताःप्रोक्ता-गुल्मा पर्पटकादय ।आम्राद्याःशाखिनोज्ञेयावटाश्वत्थादि-पादपा ॥ कटकार्यादिका सर्वा प्रसराइतिकीर्त्तिताः ।

अर्थ-लता, गुल्म, शाखि, पादप और प्रसर, इन भेदोंसे ओषधि पाँचप्रकारकी है सो उनके लक्षण कहताहूँ गिलोय, पान, सोमवल्ली, अपराजिता, स्वर्णवल्ली इत्यादि वीरुध अर्थात् लताहैं । पित्तपापडा आदि गुल्म जानने, आम आदि शाखी जानने, वटपीपल इत्यादि पादप जानने, कटेरी आदि प्रसर जानने ।

अथ वृक्षादीनां पुस्त्वादिकथनम् ।

स्त्रीतापुंस्ताक्लीवताचद्रुमादौज्ञेयायुक्त्यालक्षणतद्वदामि ।

अर्थ-वृक्षादिकोंमें स्त्री, पुरुष और नपुंसक, ये तीन भेद हैं, उनके लक्षण आगे कहताहूँ ।

स्निग्धदीर्घपेलवचित्तहारिपुष्पाद्यंचेत्स्त्रीमतासाभिपग्भिः ।

अर्थ-जिनके पुष्प फलादिक स्निग्ध, दीर्घ, कोमल और मनोहर होवें, वह स्त्रीजातिके वृक्ष जानने ।

नोदीर्घानातिह्रस्वा किसलयसुमन'स्कंधकाण्डादयश्चेत्
स्थूलाःपारुष्यभाजस्तइहनिगदिता पूरुषावैद्यवर्य्यैः ॥

अर्थ-जिनके पल्लव, पुष्प, स्कन्द, काण्ड आदि न तो अत्यंत दीर्घ होंय और न अत्यन्त ह्रस्व होंय तथा स्थूल और दृढ होंवें उनको पुरुषजातिके वृक्ष जानने ।

पुंसोवध्वाश्चलिंगमिलतिचयदिवाक्लीवतासाभिधेया
स्वस्वस्वेस्वेनियुक्तागदिजनफलदंभेपजंतत्कृतंच ॥

अर्थ-जिनमें पुरुष और स्त्री दोनोंके लक्षण मिलते होंय उनको नपुंसकजातिके वृक्ष जानना स्त्रीजातिके वृक्ष स्त्रियोंको, पुरुषजातिके पुरुषोंको और नपुंसकजातिके नपुंसकोंको देने चाहिये, इसप्रकार करनेसे रोगियोंको फलकी प्राप्ति होती है ।

द्रव्यपुमान्स्यादखिलस्यजंतोरारोग्यदतद्बलवर्द्धनञ्च ।
स्त्रीदुर्बलास्वल्पगुणागुणाढ्याःस्त्रीष्वेवनक्कापिनपुंसकस्यात् ।

अर्थ-सर्व पुरुषजातिकी औषधि-आरोग्यताजनक और बलको बढानेवाली है, स्त्रीजातिकी औषधि दुर्बल और अल्पगुणवाली तथा स्त्रियोंको अधिकगुण करनेवाली है और नपुंसकजातिकी औषधि किसीकोभी हितकारी नहीं है ऐसा निघण्टुचूडामणिमें लिखा है ।

वृक्षादीनांक्षुत्पिपासादिकथनम् ।

क्षुत्पिपासाचनिद्राचवृक्षादिष्वपिलक्ष्यते ।
भूज्जलादानतस्त्वाद्येपर्णसंकोचतोंतिमा ॥

अर्थ-भूख, पियास और निद्रा यह वृक्षादिकोंमेंभी पाई जाती है, क्योंकि

वृक्ष मिटी खाते, और पानी पीते है जो उनको मिट्टी और पानी न मिले तो वह नष्ट हो जाते है अर्थात् सूखजातेह रातको वृक्षोंके पत्ते सकुचजाते और फिर सवेरेको खिलजाते है, इसकारण वृक्षादिकोंमें निद्रा पाई जाती है।

वृक्षादीनांपंचभूतात्मकत्वकथनम्।

यत्काठिन्यसाक्षितिर्योद्रवांभस्तेजस्तूष्मावर्द्धतेयत्ससवात ।
यच्च्छिद्रतन्नभःस्थावराणामित्यंतेपापंचभूतात्मकत्वम ॥

अर्थ-वृक्षोंमभी मनुष्योंकी तरह पंचभूत रहते है वृक्षोंमें कठिनता पृथ्वीका भाग है, गीलापन जलका भाग है, उष्णता अग्निका अंश है, वृक्षोंकी वृद्धि वायुका विभाग है और वृक्षोंम जो छिद्र होते ह वह आकाशका अंश है।

वृक्षादीनां परोपकार।

मूलत्वक्सारनिर्य्यासनाडिस्वरसपल्लवा ।
क्षारा क्षीरफलपुष्पभस्मतैलानिकंटका ॥
पत्राणिशुगा कदाश्चप्ररोहाश्चोपकारका ।

अर्थ-मूल, त्वक, सार, निर्य्यास, नाड, स्वरस, पल्लव, क्षार, क्षीर, फल, पुष्प, भस्म, तैल, कटक, पत्र, अंकुर और कद यह सब वृक्षोंके अग उपकार करनेवाले ह इसकारण वृक्ष परोपकारी है, मनुष्य तो कोई परोपकारी होते ह परन्तु वृक्ष तो माय सबही परोपकारी होते हैं अतएव जो मनुष्य परोपकारी नहीं होते वह वृक्षादिकासे भी जड ह। (इ० भो०रा०) अब अंग्रेजी मतसे वृक्षोंका विशेष विवरण लिखते ह । सब वृक्ष स्त्री और पुरुष इन भेदासे दोप्रकारके ह, वृक्षाके पुष्प ऋतु है, फल सतान ह वृक्षोंके सन्तान भी स्त्रीवृक्ष और पुरुषवृक्षके सयोगसे होती है ऐसा इंग्रेजी ग्रन्थोंमें लिखा है किन्तु संस्कृतके ग्रन्थोंमें नहीं। एकदल और द्विदल इन भेदासे वृक्षकी दो जातिहै, एकदल जातीके वृक्षमें उत्पन्न होतेही एक पत्ता निकलता है उसमें खडी हुई एक शिरा होतीहै और तिर्छी शिराय अधिक नहीं होती, एकदल अंतर्वर्द्धक है। इसकी उत्पत्ति फल्पूल्लादिके भीतरसे होती है, और इसमें शाखा नहीं होती। द्विदलवृक्षम उत्पन्न होनेके समय प्रथम दो पत्र निकलते है इन पत्तोंमें तिर्छी नसें अर्थात् शिरायें अधिकतासे होती है, इसम उत्पत्तिक्रिया डालियोंमसे अकुरोंके फूटनेसे होती है और फलमेंभी बहुधा

वाथी जाती है । एकदलको इंग्रेजीमें "मोनिकोटीलीडोनस" और द्विदलको "डाईकोट लेडोनस" कहते हैं । अतर्वर्द्धकको "एडोजीनस" और बाह्य-वर्द्धकको "एफजोजीनस" कहते हैं । एकदल वृक्ष, केला, नारियल, ज्वार, बाजरा इत्यादि धान्य जानने । द्विदल वृक्षोंके बीजोंकी दो दालें होती हैं । एकदल जातीके वृक्षकी दो दाले नहीं होतीं । येही वृक्ष स्त्री पुरुषकी भाँति संगमसे फलरूपी संतानको उत्पन्न करते हैं, जैसी संतान वृक्षोंसे उत्पन्न होती हैं, तैसी पशु पक्षी अथवा मनुष्योंसे नहीं होतीं, जैसे एकवृक्षसे करोड बीज उत्पन्न होतेहैं, तैसेही पत्ते, कंद, मूल, डदलादिसेभी वृक्ष उत्पन्न होतेहैं । वृक्ष जिसप्रकार नरनारीसे संतानको उत्पन्न करते हैं सो कहते हैं । जब वृक्ष अपनी उमरमें आता है, तब उसकी डंडीके अग्रभागमे कोपलपर पुष्पोंका वेष्टन दिखाई देता है उसको इंग्रेजीमें "केलीक्स" कहते हैं । उस केलीक्सकी कली नीले रंगकी होती है, ढाकके फूलकी काली होती है जब वह कली उमरमें आवे तो वेष्टनको उघाडकर प्रफुल्लित हो बाहर फूल रूप दिखाई देतीहै । उसमें कोषभी होता है और पखडी अलग २ दिखाई देती है । पुष्पकोशको इंग्रेजीमें "कोरोला" कहते हैं कमलादि पुष्पोंमें वेष्टन नहीं होता, उन फूलोंमें ऊपरकी पखडियें खरेरी और नीले रंगकी होती हैं इसको रोलाके भीतर नरनारी रूपसे तंतु होते हैं उसमें नरतंतुको इंग्रेजीमें "ष्टेमन' कहते हैं और नारी तंतुको "पिष्टल" कहते है नर तंतुओंके ऊपर रजसी लगी रहती है-जिसे संस्कृतमें पराग अथवा पुष्परज कहते हैं । अंग्रेजीमें "पोलन" कहते है । नारीतंतु खुक्ल होता है, उसका मुख खुला हुवा होता है जिसको योनि कहते हैं, अंग्रेजीमें "ष्टिग्मा" कहते है, नारीतंतु जिस स्थानसे उत्पन्न होवे है उसको गर्भाशय कहते हैं अंग्रेजीमें "ओवरी" और लेटिनमें "डिस्क" कहते हैं । ष्टिग्मा व ओवरीके मध्य जो मार्ग होता है उसको इंग्रेजीमें "स्टाइल" कहते हैं स्टाइलमें छोटे २ वीर्यकण होते हैं जिनको इंग्रेजीमें "फोहिला" कहते हैं । नरकेशरमें जो पुष्परज होतीहै वह पवनके द्वारा उडकर ष्टिग्माके भीतर जाय वहांसे ओवरीके भीतर जाकर गर्भबाँधती है, यह नरकेशर वह नारीकेशर एक २ पुष्पमेंभी होती है और पृथक् पुष्पमेंभी होती है उसका संयोग पवनसे अथवा पतंगादि जीवोंसेभी होताहै, पतंगादि नरकेशरवाले पुष्पोंमें जाकर नारीकेशरवाले फूलोंमें जातेहैं व उनके शरीरमें लगाहुवा पुष्परज नारीकेशरके मुखमें जाकर गर्भ बंधनका कारण होता है ।

इसप्रकार बहुत दूरसेभी संयोग होजाता है एकवर्गके वृक्ष समीप होनेसे दूसरे नरपुष्पका रज नारीततुओंमें जानेसे संकर जातिके वृक्ष उत्पन्न होतेहैं। इसप्रकार एक जातिके नरनारी आदि मिश्रितवर्गकी प्रथम संज्ञा इंग्रेजीमें "रेनस्युलेसी" लिखी है। इसप्रकार सर्व वर्ग बाँधे है। तैसेही वृक्षोंके पत्तोंके द्वारा वृक्षोंके गुण शोधक नामोंसे वृक्षके नाम लेटिनभाषाम लिखेगये है। उदाहरण टीफोलिया अर्थात् तीन पत्तोंका "राइक ट्रुर्धिआइ" अर्थात् "राइकटुर्धका" "गोतेलग्राण्डि फ्लोरा" वडे फूलका "मलटीफ्लोरा" छोटे फलका, "यूनीफ्लोरा" छोटे फूलका, "थिसिलिफ्लोरा" उठल आदिका नाम कल्पित किया है। वृक्षवृक्षमें स्त्री पुरुष जातिके पृथक् २ फूल हों तो उन्हें अग्रेजीमें "मोनोष्यिस" कहते हैं अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प होंय तो उन्हें इंग्रेजीमें "डारण्यस" कहते है। एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प होय तो उन्हें इंग्रेजीमें "डारण्यस" कहते हैं। एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षमें हो तो इन दोनोंको "पोलीगोम्मा" कहते हैं। अपुष्प क्षुपको "क्रिपटोगेम्या" कहते है।

अथ नक्षत्रवृक्षाः।

अथवक्ष्यामिनक्षत्रवृक्षानागमलक्षितान्।
पूज्यानायुष्यदाश्चैववर्द्धनात्पालनादपि॥
विषद्रुधात्रीतरुहेमदुग्धाजम्बूस्तथारसादिरकृष्णवंशा।
अश्वत्थनागौचवटःपलाशाःप्लक्षस्तथाम्बष्टतरु क्रमेण॥
विल्वार्जुनौचैवविकंकतोथमकेसरा शम्बरसर्जवंजुला।
सपानसार्काश्वशमीकदम्बास्तथाम्रनिम्बौमधुकद्रुम क्रमात्
अमीनक्षत्रदेवत्यावृक्षा स्यु सप्तविंशति।
अश्विन्यादिक्रमादेषामेषानक्षत्रपद्धति॥
यस्त्वेतेषामामजन्मर्क्षभाजामर्त्यं कुर्याद्द्वेषजादीन्मदाथ।
तस्यायुष्य श्रीकलत्रंचपुत्रनश्यत्येषा वर्द्धतेवर्द्धनाद्धे॥

अर्थ-अब नक्षत्रोंके वृक्षोंके नाम और लक्षण कहताहूं जो अपने जन्मके नक्षत्रके वृक्षको पूजताहै, मानता है और पालता है उसके आयुकी वृद्धि होती है। नक्षत्रवृक्षनाम-१ अश्विनी-कुचला २ भरणी-आमला ३ कृत्तिका-

बाधी जाती है । एकदलको इंग्रेजीमें "मोनिकोटीलीडोनस" और द्विदलको "डाईकोट लेडोनम" कहते है । अंतर्वर्द्धकको "एडोजीनस" और बाह्य वर्द्धकको "एफजोजीनस" कहते हैं । एकदल वृक्ष, केला, नारियल, ज्वार, बाजरा इत्यादि धान्य जानने । द्विदल वृक्षोंके बीजोंकी दो दालें होती है । एकदल जातीके वृक्षकी दो दाले नहीं होतीं । येही वृक्ष स्त्री पुरुषकी भाँति सगमसे फलरूपी संतानको उत्पन्न करते है, जैसी संतान वृक्षोंसे उत्पन्न होती है, तैसी पशु पक्षी अथवा मनुष्योंसे नहीं होती, जैसे एकवृक्षसे करोड बीज उत्पन्न होतेहैं, तैसेही पत्ते, कंद, मूल, डंढलादिसेभी वृक्ष उत्पन्न होतेहैं । वृक्ष जिसप्रकार नरनारीसे संतानको उत्पन्न करते है सो कहते हैं । जब वृक्ष अपनी उमरमें आता है, तब उसकी डंडीके अग्रभागमें कोंपलपर पुष्पोंका वेष्टन दिखाई देता है उसको इंग्रेजीमें "केलीफ" कहते हैं । उस केलीफकी कली नीले रंगकी होती है, ढाकके फूलकी काली होती है जब वह कली उमरमें आवे तो वेष्टनको उघाडकर प्रफुल्लित हो बाहर फूलरूप दिखाई देतीहै । उसमें कोपभी होता है और पखडी अलग २ दिखाई देती है । पुष्पकोशको इंग्रेजीमें "कोरोला" कहते हैं कमलादि पुष्पोंमें वेष्टन नहीं होता, उन फूलोंमें ऊपरकी पखडियें खरेरी और नीले रंगकी होती हैं इसको रोलाके भीतर नरनारी रूपसे तंतु होते हैं उसमें नरतंतुको इंग्रेजीमें "ष्टेमन" कहते हैं और नारी तंतुको "पिष्टल" कहते हैं नर तंतुओंके ऊपर रजसी लगी रहती है-जिसे संस्कृतमें पराग अथवा पुष्परज कहते है । अंग्रेजीमें "पोलन" कहते हैं । नारीतंतु खुपल होता है, उसका मुख खुला हुवा होता है जिसको योनि कहते हैं, अंग्रेजीमें "ष्टिग्मा" कहते हैं, नारीतंतु जिस स्थानसे उत्पन्न होते है उनको गर्भाशय कहते हैं अंग्रेजीमें "ओवरी" और लेटिनमें "डिस्क" कहते हैं । ष्टिग्मा व ओवरीके मध्य जो मार्ग होता है उसको इंग्रेजीमें "स्टाइल" कहते हैं स्टाइलम छोटे २ वीर्यकण होते हैं जिनको इंग्रेजीमें "फोहिला" कहते हैं । नरकेशरमें जो पुष्परज होतीहै वह पवनके द्वारा उडकर ष्टिग्माके भीतर जाय वहांसे ओवरीके भीतर जाकर गर्भबाँधती है, यह नरकेशर वह नारीकेशर एक २ पुष्पमेंभी होती है और पृथक् पुष्पमेंभी होती है उसका संयोग पवनसे अथवा पतंगादि जीवोंसेभी होताहै, पतंगादि नरकेशरवाले पुष्पोंमें जाकर नारीकेशरवाले फूलोंमें जातेहैं व उनके शरीरमें लगाहुवा पुष्परज नारीकेशरके मुखमें जाकर गर्भ बंधनका कारण होता है ।

इसप्रकार बहुत दूरसेभी सयोग होजाता है एकवर्गके वृक्ष समीप होनेसे दूसरे नरपुष्पका रज नारीततुओंमें जानेसे संकर जातिके वृक्ष उत्पन्न होतेहैं । इसप्रकार एक जातिके नरनारी आदि मिश्रितवर्गकी प्रथम सज्ञा इंग्रेजीमें "रेनक्युलेसी" लिखी है । इसप्रकार सर्व वर्ग बाँधे है । तैसेही वृक्षोंके पत्तोंके द्वारा वृक्षोंके गुण शोधक नामोंसे वृक्षोंके नाम लेटिनभाषामें लिखेगये हैं । उदाहरण ट्रीफोलिया अर्थात् तीन पत्ताका "राइक ग्रुर्थिआई" अर्थात् "राइक्रुर्धका" "गोतेलग्राण्डि फ्लोरा" वडे फूलका "मलटीफ्लोरा" छोटे फूलका, "यूनीफ्लोरा" छोटे फूलका, "थिसिलिफ्लोरा" डटल आदिका नाम कल्पित किया है । वृक्षवृक्षमें स्त्री पुरुष जातिके पृथक् २ फूल हों तो उन्हें अंग्रेजीमें "मोनोप्यस" कहते हैं अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प होंय तो उन्हें इंग्रेजीमें "डायप्यस" कहते हैं । एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प होंय तो उन्हें इंग्रेजीमें "डायप्यस" कहते हैं । एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षमें हो तो इन दोनोंको "पोलीगोम्मा" कहते हैं । अपुष्प क्षुपको "क्रिपटोगेम्या" कहते हैं ।

अथ नक्षत्रवृक्षाः ।

अथवक्ष्यामिनक्षत्रवृक्षानागमलक्षितान् ।
पूज्यानायुष्यदाश्चैववर्द्धनात्पालनादपि ॥
विषद्रुधात्रीतरुहेमदुग्धाजम्बूस्तथाखादिरकृष्णवशा ।
अश्वत्थनागौचवटः पलाशाः प्लक्षस्तथाम्बष्ठतरुः क्रमेण ॥
विल्वार्जुनौचैवविकंकतोथसकेसराःशम्बरसर्जवञ्जुलाः ।
सपानसार्कीश्चशमीकदम्बास्तथाम्रनिम्बौमधुकद्रुमःक्रमात्
अमीनक्षत्रदेवत्यावृक्षाः स्युः सप्तविंशति ।
अश्विन्यादिक्रमादेषामेषानक्षत्रपद्धति ॥
यस्त्वेतेषामामजन्मर्क्षभाजामर्त्यः कुर्याद्विपजादीन्मदाधः ।
तस्यायुष्यं श्रीकलत्रंचपुत्रानश्यत्येषां वर्द्धतेवर्द्धनाद्यैः ॥

अर्थ—अब नक्षत्रोंके वृक्षोंके नाम और लक्षण कहताहूं जो अपने जन्मके नक्षत्रके वृक्षको पूजताहै, सींचता है और पालता है उसके आयुकी वृद्धि होती है । नक्षत्रवृक्षनाम—१ अश्विनी—कुचला २ भरणी—आमला ३ कृत्तिका—

गूलर, स्वर्णक्षीरी-सत्यानासी ४ रोहिणी-जामून ५ मृगशिर-खैर ६ आर्द्रा-कृष्णागरु ७ पुनर्वसु-बाँस ८ पुष्य-पीपल ९ आश्लेषा-नागकेशर १० मघा-वड ११ पूर्वा-ढाक १२ उत्तरा-पाखर १३ हस्त-पाढ १४ चित्रा-वेल १५ स्वाती-अर्जुन १६ विशाखा-विककत (रामचन्नर) १७ अनुराधा-पुन्नागवृक्ष १८ ज्येष्ठा-लोध १९ मूल-साल २० पूर्वापाढ-जल्वेंत २१ उत्तरापाढ-पनस २२ श्रवण-आक २३ धनिष्ठा-शमी २४ शततारका-कदम्ब २५ पूर्वाभाद्रपदा-आम २६ उत्तराभाद्रपदा-नीम २७ रेवती-महुवेका वृक्ष । जो मनुष्य मदान्ध होके अपने जन्मनक्षत्रके वृक्षको औषधादिके काममे लाता है, उसकी आयु, लक्ष्मी, स्त्री और पुत्रादिक नष्ट हो जाते है और जन्मनक्षत्रके वृक्षको जल आदिके द्वारा बढानेसे आयु-आदिकी वृद्धि होती हैं ।

अग्नेयाविंध्यशैलाद्याः सौम्योहिमगिरिःस्मृत ।अतस्तदोषधा निस्युरनुरूपाणि हेतुभि·॥अन्येष्वपिप्ररोहति वनेपूपवनेपु च।

अर्थ-विंध्यादिक पर्वत उष्ण है और हिमालय पर्वत शीतल है । इसकारण विंध्यादिककी ओषधि उष्णवीर्य्य और हिमालयपर्वतकी औषधि शीतवीर्य्य होती है । पर्वतोंके अतिरिक्त वन उपवनादिकम भी उत्पन्नहोने वाली औषधि अपने क्षेत्रोंके अनुसार वीर्यवान् होती है ।

औषधिके छेनम मुहूर्तविचार ।

भेपज्यंसल्लघुमृदुचरेमूलभेद्वयंगलग्ने शुक्रेन्द्वीज्येविदिचदिव-सेचापितेपारवेश्व ॥ शुद्धेरिष्फेद्युनमृतिगृहेसत्तिथौनोजनेर्भे।

अर्थ-लघु चर और मूलनक्षत्रोंमं, शुक्रवार, चद्रवार, गुरुवार, बुधवार और सूर्य यह द्विस्वभाल्ग्न [मिथुन, कर्क, धन, मीन] मे हो और शुक्रादि वारोंम लग्नसे १२-७-८ गृह पापोंसे हीन होय तो ऐसे शुभकालम औषधिको ग्रहणकरना देना और बनाना श्रेष्ठ है ।

औषधिलेनकी विधि।

यतध्वमुत्खातशुचिप्रदेशाद्विजेनकालादिकतत्त्ववेदिना। यथार्यथंचौपधयोगुणोत्तरा·प्रत्याहरतेयमगोचरानपि ॥

अर्थ-प्रथम पृथ्वीको झाड बुहारकर साफकरके कालादितत्त्वको जाननेवाला ब्राह्मण, औपधिका कौनसा अग लिया जायगा इसको विचार कर पर्वतादिकोंमें भी छिपीहुई औषधियोंको ग्रहण करे ।

औषधिग्रहणमन्त्रा ।

स्वमारण्येचएकान्तेप्रभातेमन्त्रयुक्तित । सग्राह्यमौषधसिद्धनोचेद्भवतिकाष्ठवत् ॥ ॐनमस्तेऽमृतसम्भवेरसवीर्य्येविवर्द्धिनि। वलमायुश्चमेदेहिपापान्मेजहिदूरत ॥ येनत्वाखनतेब्रह्मायेनत्वाखनतेभृगु । येनवेन्द्रोऽथवरुणस्तेनत्वामुपचक्रमे ॥ तेनाहखनयिष्यामिमन्त्रपूतेनपाणिना । ॐ आतस्तेतेमात्रियतेतेजोवीर्य्योऽन्यथाभवेत् ॥ अत्रैवतिष्ठकल्याणि ममकार्यकरीभव ॥ ममकार्य्येभृतेसिद्धेतत स्वर्गं गमिष्यसि । ॐह्रीचण्डेन्द्रफट्स्वाहा॥अनेनमन्त्रेणानुसयुतमातपेत्रिदिनशुष्कनिहितवीर्य्यधृग्भवेत् । अर्कपुष्यायांसर्वाओषध्यउत्पाद्यन्ते ॥

अर्थ—स्वभावसे वनके एकान्त स्थानमें प्रभातके समय जाकर मन्त्रयुक्तिसे औषधको ग्रहण करे तो कार्य्यकी सिद्धि होतीहै, नहीं तो औषधि काठके समान जाननी । "ॐनमस्तेऽमृतसम्भवे" इत्यादि । इस मन्त्रको पढकर औषधिको उखाड लेवे और जो पत्र पुष्पादिक लेने होय तो वहभी इसी मन्त्रको पढकर लेवे, फिर उस औषधिको लेकर तीन दिन धूपमें सुखावे इसप्रकार करनेसे औषधि अत्यन्त वीर्य्यको धारण करनेवाली होजातीहै प्राय पुष्यार्कयोगमें सब प्रकारकी औषधि उखाडीजातीहै ।

औषधिउखाडनेकी विधि ।

गृह्णीयात्तानिशुमना शुचि प्रात सुवासरे।आदित्यसम्मुखोमौनीनमस्कृत्यशिवहृदि ॥ साधारणधराद्रव्यगृह्णीयादुत्तराश्रितम् ।

अर्थ—औषधि लानेके लिये प्रातःकाल उठकर स्नानआदिसे शुद्धहो शुभदिन वनमें जाकर सूर्यके सन्मुख उपस्थितहो मौनको धारणकर शिवको हृदयमें नमस्कारकर साधारण भूमिमें उत्पन्न हुई, ऐसी औषधिको उत्तर दिशाकी ओरको मुखकरके उखाडे ।

कुत्सितऔषधि ।

वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोपस्मार्गजा ।

जन्तुवह्निहिमव्याप्तानौषध' कार्य्यसाधिका ॥

अर्थ-बाँबी, बुरीजमीन, अनूपदेश (खादर) श्मशानभूमि, ऊपर जमीनमें और मार्गमें उत्पन्न होनेवाली औषधि और जो कीडोंकी खाई हुईहो, अग्निसे दग्ध हुईहो, जिसको सरदी लगीहो, लूकीमारी, ऐसी औषधि कार्य्यको सिद्ध करनेवाली नहीं होती, इसकारण इनको नहीं लेवे।

औषधसंग्रह अथवा रखनेकी विधि।

धूमवर्षानिलक्लेदैःसर्वर्त्तुष्वनभिद्रुते।
ग्राहयित्वागृहेन्यस्येद्विधिनौषधसंग्रहम् ॥

अर्थ-धुँआ, वर्षा, पवन और सरदी इनसे रहित तथा जिसमें किसी प्रकारसे किसी तरहका विकार उत्पन्न न हो ऐसे उत्तम स्थानमें औषधियोंको भलेप्रकारसे रक्खे।

प्लोतमृद्भांडफलकशंकुविन्यस्तभेषजम्।
प्रशस्तायादिशिशुचौभेषजागारमिष्यते ॥

अर्थ-कपडेकी थैलियामें, वा टुकडाम मिट्टीकी हाडियोंमें इमरतवानामें, मटकियामें, मल्सोंमें, मलसियोंमें, सकोरोंमें, कटोरोंमें, प्यालोंमें, शीशियामें, बोतलोंमें, शीशोंमें, डिब्बोंमें, डिब्बियोंमें तख्तोंपै, अल्मारियोंमें, कीलोंपै, खुटीपै और मेखोंपै औषधी रखनी चाहिये और जिसमें सब औषधि रक्खीहों वह औषधी मंदिर अर्थात् औषधालय पूर्व अथवा उत्तर-दिशा तथा उत्तम स्थानमें बनना चाहिये।

अतिस्थूलजटाया स्युस्तासांग्राह्यास्त्वचोध्रुवम्। गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ॥महान्तियेषांमूलानिकाष्ठगर्भाणिसर्वतः। तेषांतुवल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानि सर्वशः ॥न्यग्रोधादेस्त्वचोग्राह्याः सारःस्याद्बीजकादितः। तालीसादेस्तुपत्राणिफलंस्यात्त्रिफलादितः॥क्वचिन्मूलंक्वचित्कंदं क्वचित्पत्रंक्वचित्फलम्। क्वचित्पुष्पंक्वचित्सर्वंक्वचित्सारं क्वचित्त्वचः ॥चित्रकसूरणनिम्बोवासाचत्रिफलाक्रमात्। धातकीकंटकारीचखदिरः क्षीरपादपः ॥

अर्थ-लम्बी और स्थूल जडवाले वृक्षकी छाल लेवे, छोटीजडवाले वृक्षका सर्वांग लेवे, जिनकी जड वडी और चारों ओर छाल लिपट रहीहै उनका वक्कल लेवे, छोटी जडवाले वृक्षोंका पचाग लेवे, वड इत्यादि वृक्षोंकी छाल लेनी चाहिये, विजयसारादिका सार तालिशादिके पत्र और त्रिफलादिके फल लेने चाहिये । किसीका मूल, किसीका कन्द, किसीके पत्ते, किसीका फल, किसीका फूल, किसीका पचाग, किसीका सार और किसी वृक्षकी छाल लेनी चाहिये । चीतेकी छाल, सूरणका कन्द, नीम और अडूसे आदिके पत्र, त्रिफलेके फल, धायके फूल, कटेरी इत्यादिका पचाग, खदिरादिकका सार और दूधवाले वृक्षोंकी छाल लेनीयोग्य है ।

क्वचिन्निंवस्यगृह्णीयात्पत्राभावेत्वचामपि ।
वालफलतुविल्वस्यपक्कमारग्वधस्यच ॥

अर्थ-कहीं नीमके पत्ते न मिल तो वहाँ छालभी लेलेवे, वेलका कच्चा फल और अमलतासादिका पक्का फल लेना चाहिये ।

अगेनुक्तेजटाग्राह्याभागेऽनुक्तेऽखिलसमम् ।
पात्रेऽनुक्तेमृद पात्रकालेऽनुक्तेत्वहर्मुखम् ॥

अर्थ-जहाँ औषधिका कोई अग नहीं कहा होय वहाँ औषधिकी जड लेनीचाहिये, जहाँ तोल नहीं कहीहुई होय वहाँ सव औषधि समानभाग लेवे, जहाँ वासन नहीं कहा होय वहाँ मट्टीका वासन लेवे, जहाँ काल नहीं कहा होय वहाँ प्रात काल समझना ।

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु ।विनाविडगकृष्णाभ्यागुडधान्याज्यमाक्षिकै ॥पुराणतुप्रशस्तम्यात्ताबूलकाजिकतथा । शुष्कनवीनद्रव्यतुयोज्यसकलकर्मसु ॥ आर्द्रंतुद्विगुणयुज्यादेपसर्वत्रनिश्चयः । गुडूचीकुटजोवासाकूष्माडश्चशतावरी॥अश्वगधासहचर शतपुष्पाप्रसारिणी। प्रयोक्तव्याःसदैवार्द्राद्विगुणानैवकारयेत॥वासानिंवपटोलकेतकवलाकूष्मांडकेंदीवरी वर्षाभूकुटजाश्वकन्दसहिता साप्रतिगधामृता ॥ऐन्द्रीनागवलाकुटकपुराक्षत्रामृतास-

वेदा साद्रीएवतुनक्कचिद्द्विगुणिताःकार्येषुयोज्याबुधैः ॥ घृततैलचपानीयंकषायव्यंजनादिकम् । पक्त्वाशीतीकृतं चोष्णतत्सर्वंस्याद्विषोपमम् ॥

अर्थ-सब कर्मोंमें सम्पूर्ण औषधि नवीन लेनी चाहिये, किन्तु वायविडंग, पीपल, गुड, धान्य, घी और मधु, ये सब पुराने लेवे, अर्थात् नवीन न लेवे। पान और कांजी पुरानी लेनी चाहिये सूखा और नवीनद्रव्य सब कार्योंमें लेवे, गीली औषधी मात्रासे द्विगुनी लेवे, ये सर्वत्र निश्चय है । असगध, पियावाँसा, सौंफ और पसर ये औषधी नित्य गीली लेवे, किन्तु द्विगुणी कदाचित् न लेवे । वाँसा, नीम, पटोलपत्र, केतकी, खिरेटी, पेठा, नीलिकमल, शतावरी, साठ, इन्द्रजौ, कन्द, पसरन, गिलोय, इन्द्रायण, गगेरन, पिया वाँसा, सौंफ और आमले ये सब द्रव्य गीले होनेपरभी वैद्य द्विगुणे न डाले घी, तेल, जल, काथ और भोजनकी वस्तु इन सबको एकबार पकाकर ठढे होनेपर फिर गरम न करे यदि गरम करे तो विषकी समान अपकारी होजाते है ।

द्रव्यलक्षण ।

सूक्ष्मास्थिमांसलापथ्यासर्वकर्मणिपूजिता । क्षिप्ताम्भसि निमज्जेद्याभल्लातक्यस्तथोत्तमा ॥ वराहमूर्द्धवत्कदोवारा- हीकदमञ्जक । सौवर्चलतुकाचाभंसैन्धवंस्फटिकप्रभम् ॥ सुवर्णच्छविकज्ञेयस्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् । इद्रपुष्पप्रतीका- शामनोह्वाचोत्तमामता ॥श्रेष्ठशिलाजतुज्ञेयप्रक्षिप्तनविशी- र्यते।तोयपूर्णेकांस्यपात्रेप्रतानेननिवर्द्धते ॥ कर्पूरस्तुवर स्निग्धएलासूक्ष्मफलावरा । श्वेतचदनमत्यन्तसुगन्धिगुरु- पूजितम् ॥ रक्तचन्दनमत्यतलोहितप्रवरमतम् । काकतु- ण्डनिभ स्निग्धोगुरु श्रेष्ठोऽगुरुर्मत ॥ सुगधिलघुरूक्षश्च सुरदारुनरमतम । सरलस्निग्धमत्यर्थंसुगधिचगुणानहम ॥ अतिपीताप्रशस्तातुज्ञेयादारुनिशाबुधै । जातीफलगुरु स्निग्धसमशुभ्रांतरवरम् ॥ मृद्वीकासोत्तमाज्ञेयायास्याद्रो-

स्तनसन्निभा। करमर्द्दफलाकारामध्यमासाप्रकीर्तिता। खडतुविमलश्रेष्ठचंद्रकांतसमप्रभम॥ गव्याज्यसदृशरुच्यगधमधुतरंमतम्॥

अर्थ–रगड छोटी और बहुत गूंदेवाली श्रेष्ठ होतीहै। जलमें डालनेसे डूबजावे वह भिलावा श्रेष्ठ होताहै। वाराहके मस्तककी समान वाराहीकंद उत्तम होताहै। काँचकी समान कालानोन उत्तम होताहै। स्फटिकमणिकी समान निर्म्मल और प्रभावाला सेंधानोन उत्तम होताहै। सोनामाखी सोनेकी समान पीली उत्तम होतीहै। मैनशिल इंद्रपुष्पकी सदृश श्रेष्ठ होतीहै। जो गिरनेसे नहीं फटे तथा जलसे भरेहुये काँसीके वासनमें गेरनेसे तारसे तारसे छोडे वह शिलाजीत उत्तम होताहै। कपूर चिकना और कफेला उत्तम होताहै। इलायची छोटे फलवाली उत्तम होतीहै। सफेद चंदन अत्यंत सुगंधिवाला और भारी उत्तम होताहै। लाल चंदन अत्यन्त लाल श्रेष्ठ होताहै। अगर कौवेके मुखकी समान स्निग्ध और भारी उत्तम होतीहै। देवदारु सुगंधिवाली, हलकी और रूखी अच्छी होती है। सरल अत्यन्त चिकनी और सुगंधित उत्तम होतीहै। दारुहलदी अत्यंत पीली उत्तम होतीहै। जायफल भारी, चिकना, गोल और जो तोडनेसे भीतरसे सफेद निकले वह उत्तम होताहै। दाख गौके स्तनोंकी आकृतिवाली श्रेष्ठ होती है और करोंदेकी फलकी समान आकारवाली दाख मध्यम जाननी। खाड–चंद्रकांतकी समान धवल और निर्म्मल उत्तम होती है। शहत गायके घीके समान रुचिकारक और सुगंधिवाला उत्तम होताहै।

स्वभावसे श्रेष्ठ।

शालीनालोहित शालि षष्टिकेषुचषष्टिका।शूकधान्येष्वपियवोगोधूम प्रवरोमत॥ शिम्बीधान्येवरोमुद्गोमसूरश्चाढकीतथा। रसेषुमधुर-श्रेष्ठोलवणेषुचसैंधव।दाडिमामलकद्राक्षाखर्जूरंचपरूपकम्। राजादनमातुलुंगफलवर्गेषुशस्यते॥ पत्रशाकेषुवास्तूकजीवन्तीपोतिकावरा। पटोल फलशाकेषुकंदशाकेषुसूरणम॥ एण-कुरंगहरिणाजागलेषुप्रशस्यते।पक्षिणातित्तिरिर्लावोवरोमत्स्येषुरोहित॥ह-

रिणस्ताम्रवर्ण·स्यादेण·कृष्णतयामतः । कुरगस्ताम्रउ-द्दिष्टोहरिण कृत्तिकोमहान् ॥ जलेषुदिव्यदुग्धेषुगव्यमा-ज्येषुगोभवम् । तैलेषुतिलजतैलमेक्षवेषुसिताहिता ॥

अर्थ-शालिधानोंमे लालशालिधान, षष्टिकधानोंम साँठीधान, शूकधानोंमें जौ और गेहू, शिम्बीधानोंमें मूग, मसूर और अरहर रसोंम मधुर रस, लवणोंमे सेधानोंन, फलोंम अनार, आमला, दाख, खजूर, फालसा, खिरनी और बिजोरा, पत्रशाकोंमें-बथुआ, जीवन्ती, पोईका साग, फलशाकोंमें परवल, कदशाकोंमें जमीकद, जगली जीवोंम काला, लाल और चितकनरा हिरन, पक्षियोंमें तीतर और लवा, मछलियोंमे रोहू, जलोंमें दिव्यजल, दूधोंम गायका दूध, घृतोंमें गायका घी, तेलोंमें तिलका तेल और इक्षुविकारोंमें मिश्री उत्तम है । तामेके रगके हिरनको हिरन कहते हैं, काले रगके हिरनको एण और कुछेक लाल हिरनको कुरग कहते हैं ।

स्वभावसे अश्रेष्ठ (बुरे) ।

शिम्बीषुमाषान्ग्रीष्मर्तौलवणेष्वोपरत्यजेत् । फलेषुलकुचशाकेसार्षपाणाहितमतम् ॥ गोमासग्राम्यमासेषुनहितम हिषीवसा । मेषीपय कुसुम्भस्यतैलत्याज्यचफाणितम् ॥

अर्थ-शिम्बीधानोंम उडद, ऋतुओंम ग्रीष्मऋतु, निमकोंमें सारीनोन, फलोंमे बडहर, सागोंमें सरसोका साग, ग्राम्यमासोंमे गायका मास, चर्बियोंम भैंसकी चर्बी, दूधोंमे भेडका दूध, तेलोंम कसूमका तेल और इक्षुविकारोंमें गव त्यागने योग्य है ।

उपयोगविरुद्ध ।

शाकाम्लफलपिण्याककुलत्थलवणामिषे ।
करीरदधिमासैश्च प्राय क्षीरं विरुध्यते ॥

अर्थ-शाक, खट्टेफल, तिलकी खल, कुलथी, निमक, मछली, धाँगके फले, दही और मासके साथ दूध भक्षण करना निषेध है ।

प्राणहारीचहारीतोहरिद्रालवणै कृत· ।

अर्थ-हल्दी और निमकके साथ हारीत पक्षीका मास खाना विषके समान है ।

रुवोस्तैलेनसभृष्टविपमायूरमाहिपम् ॥

अर्थ-अंडेके तेलमें भुनाहुआ मोरका मास और भैंसका मास विपकी समान अपकारी है ।

वराहवसयाभृष्टात्रलाकातुहरत्यसून ।

अर्थ-सूअरकी चरबीसे भुनाहुवा बलाका पक्षीका मास भक्षण करनेसे शीघ्रही प्राण नष्ट होवे हैं ।

सयुक्तासेववारुण्याकुलमापेश्चविरुध्यते ।

अर्थ-बलाका पक्षीका मास मदिराके साथ अथवा कुल्मापके साथ भक्षण करना सयोगविरुद्ध है ।

अविंकुसुम्भशाकेनमत्स्यतैले·कणात्यजेत् ।

अर्थ-भेडका मास कसूमके सागके साथ तथा मछलीके तेलके साथ पीपल नहीं खानी चाहिये ।

मापैरिक्षुविकारांश्चकांजिकेस्तिलशष्कुली ।

अर्थ-उडदोंके साथ इक्षुविकार (गुड, खाड, बूरा, मिश्री इत्यादि) और काजीके साथ तिलशष्कुली खानी निपेध है ।

कपोत सार्पपेभृष्टोघृतकांस्येदशाहगम ।

अर्थ-सरसोंके तेलमें भुनाहुआ कबूतरका मास नहीं खाना चाहिये और कासीके पात्रमें दश दिनका रक्खाहुआ घी खाना निपेध है ।

विपघृतसमक्षौद्रंमधुनागगनाम्बुच ।

अर्थ-बराबर भाग शहत और घी मिलाकर पीनेसे तथा शहतके साथ मेघके जलको पीनेसे विपकी समान अपकार करे है ।

मूलकमापयूपेणमधुनानचभक्षयेत् ।

अर्थ-उडदोंके यूपके साथ अथवा मधुके साथ मूली नहीं खानी चाहिये ।

नारिकेलजलेनापिकर्पूरनैवभक्षयेत् ॥

अर्थ-नारियलके जल (दूध) के साथ कपूर भक्षण करना अनुचित है ।

एकत्रसर्वमांसानिविरुध्यन्तेपरस्परम् ॥

अर्थ-सर्वप्रकारके मास एकत्र मिलाकर खाने नहीं चाहिये अर्थात् एक प्राणीके मांसके साथ दूसरे प्राणीका मास मिलाकर नहीं खावे ।

आषधी छेनेमे खेवेत।

लवणसैन्धवंप्रोक्तंचदनरक्तचन्दनम् । चूर्णलेहासवस्नेहाः साध्याधवलचन्दनैः॥कषायलेपयो'प्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनम्।अन्तःसमार्जनेज्ञेयाह्यजमोदायवानिका॥वहिः समार्जनेसैवविज्ञातव्याजमोदिका । पयःसर्पिःप्रयोगेषुगव्यमेव हिगृह्यते ॥ शकृद्रसोगोमयकोगोत्रगोमूत्रमुच्यते ।

अर्थ—जहा लवण लिखा है वहा सैन्धवलवण लेना चाहिये और चन्दनके स्थानमें लालचन्दन लेवे, परतु चूरण अवलेह—आसव और तेल, इनम सफेद चन्दन डाले, काढा और लेपादिकमें लाल चन्दन लेवे, अत समार्जन (जो भक्षण करनेसे उदरको शुद्ध करे) औषधियोंमे अजमोदके जगह अजवायन लेनी चाहिये और वहिः सम्मार्जन (जो शरीरके ऊपर लगानेसे शरीरको शुद्ध करे) औषधियोंमें अजमोदकी जगह अजमोदही डाले, जहा केवल दुग्ध और घृत लिखा है वहा गायका दूध घी लेवे, जहा शकृद्रस (गोबरका रस) लिखा है वहा गायके गोबरका रस लेवे, जहा केवल मूत्र लिखा है वहा गोमूत्र लेना चाहिये।

प्रतिनिधि।

चित्रकाऽभावतीदन्तीक्षार शिखरिजोऽथवा ।अभावेधन्वयासस्यप्रक्षेप्यातुदुरालभा ॥तगरस्याप्यभावेतुकुष्ठन्दद्याद्भिषग्वर । मूर्वाभावेत्वचाग्राह्याजिंगिनीप्रभवाबुधै॥ अहिंस्रायाअभावेतुमानकन्द प्रकीर्तित । लक्ष्मणायाअभावेतुनीलकठशिखामता॥ वकुलाऽभावतोदेयकह्लारोत्पलपकजम् । नीलोत्पलस्याभावेतुकुमुददेयमिष्यते॥ जातीपुष्पनयत्रास्तिलवगतत्रदीयते । अर्कपर्णादिपयसोह्यभावेतद्रसोमत । पौष्कराभावत कुष्ठन्तथालांगल्यभावत । स्थौणेयकस्याभावेतुभिषग्भिर्दीयतेगद ॥चविकागजपिप्पल्योपिप्पलीमूलवत्स्मृते । अभावेसोमराज्यास्तुप्रपु-

म्राटफलमतम् ॥ यदिनस्याद्दारुनिशातदादेयानिशाबुधै। रसांजनस्याभावेतुसम्यग्दावीप्रयुज्यते॥सौराष्ट्राभावतोदेयास्फटिकातद्गुणाजनै ।तालीसपत्रिकाभावेस्वर्णतालीप्रशस्यते ॥ भाङ्गर्चभावेतुतालीसकट्कारीजटाऽथवा । रुचकाभावतोदद्याल्लवणपांशुपूर्वकम् ॥ अभावेमधुयष्टचास्तुधातकींचप्रयोजयेत् । अम्लवेतसकाभावेचुक्रदातव्यमिष्यते॥द्राक्षायदिनलभ्येतप्रदेयकाश्मरीफलम् । तयोरभावेकुसुमंवधकस्यमतबुधै॥लवगकुसुमदेयनखस्याभावतःपुन । कस्तूर्य्यभावेककोलक्षेपणीयविदुर्बुधा ॥ ककोलस्याप्यभावेतुजातीपुष्पप्रदीयते । सुगधिमुस्तकदेयकर्पूराभावतोबुधै ॥ कर्पूराभावतोदेयग्रन्थिपर्णविशेषत । कुकुमाभावतोदद्यात्कुसुम्भकुसुमनवम् ॥ श्रीखण्डचन्दनाभावेकर्पूरदेयमिष्यते । अभावेत्वेतयोर्वैद्य प्रक्षिपेद्रक्तचन्दनम्॥रक्तचन्दनकाभावेनवोशीरविदुर्बुधा । मुस्ताचातिविपाभावेशिवाभावेशिवामता ॥ अभावेनागपुष्पस्यपद्मकेशरमिष्यते । मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वद्वेऽपिवाऽसति॥ वरीविदार्य्यश्वगधावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत्।वाराह्याश्चतथाभावेचर्म्मकारालुकोमत ॥ वराहीकदसज्ञस्तुपश्चिमेगृष्टिसज्ञक । वाराहीकदएवान्यश्चर्मकागलुकोमत ॥ अनूपमभवेदेशेवराहइवलोमवान्॥ भल्लातकासहत्त्वेतुरक्तचन्दनमिष्यते।भल्लाताभावतश्चित्रनलश्चेक्षोरभावतः॥सुवर्णाभावत.स्वर्णमाक्षिकप्रक्षिपेद्बुध । श्वेततुमाक्षिकज्ञेयबुधैग्जतवद्ध्रुवम्।माक्षिकस्याप्यभावेतुप्रदद्यात्स्वर्णगैरिकम्। सुवर्णमथवारौप्यमृतयत्रनलभ्यते॥तत्रकान्तेनकर्माणिभि-

पक्कुर्य्याद्विचक्षण।कान्ताभावेतीक्ष्णलोहयोजयेद्वैद्यसत्तमः॥ अभावेमौक्तिकस्यापिमुक्ताशुक्तिंप्रयोजयेत् । मधुयत्रनल-भ्येततत्रजीर्णगुडोमतः ॥मत्स्यंडयभावतोदद्युर्भिषजःसि-तशर्कराम् । असभवेसितायास्तुबुधैःखडप्रयुज्यते ॥क्षीरा-भावेरसोमोद्गोमासूरोवाप्रदीयते । अत्रप्रोक्तानिवस्तूनिया-नितेषुचतेषुच ॥ योज्यमेकतराभावेपरवैद्येनजानता ।

अर्थ-चीतेके अभावमें दन्ती अथवा चिरचिटेका खार, धमासेके अभावमें जवासा, तगरके अभावमें कूठ, मूर्वाके अभावमें जिगनीकी छाल, अहिंस्राके अभावमें मानकन्द, लक्ष्मणाकन्दके अभावमें मयूरशिखा, मौलसिरीके अभावमें कुमुद लालकुमुद और कमल, नीलेकमलके अभावमें कुमुद (नीलोफर), जायफलके अभावमें लौंग, आक इत्यादिके दूधके अभावमें आकआदिके पत्तोंका रस, पुष्करमूल और कलिहारीके अभावमें कूठ और थूनेरके अभावमें कूठ, जिस स्थानमें पीपरामूल न होय वहा चव्य और गजपीपल, वापर्चीके अभावमें चकवडके बीज, दारूहल्दीके अभावमें हल्दी, रसौतके अभावमें दारूहल्दी, गोपीचदनके अभावमें फिटकरी, तालीशपत्रके अभावमें स्वर्णतालीश, भारगीके अभावमें तालीसपत्र वा कटेरीकी जड, कालेनोनके अभावमें पाशु लवण लेवै, मुलैठीके अभावमें धायके फूल, अमलवेतके अभावमें चूका, दाखके अभावमें कुभेरका फल, दाख और कुभेरके अभावमें दुपेरियाका फूल, नखद्रव्यके अभावमें लौंग, कस्तूरीके अभावमें शीतलचीनी, शीतलचीनीके अभावमें जायफल और कपूरके अभावमें सुगधमोथा वा गठि वन,केसरके अभावमें कसूमके नवीन फूल,श्रीखडचन्दनके अभावमें कपूर,केसर और चन्दनके अभावमें लालचन्दन, लालचन्दनके अभावमें नवीन खस, अतीसके अभावमें नागरमोथा, हरडके अभावमें आवला, नागकेसरके अभावमें कमलकेसर, मेदा और महामेदाके अभावमें शतावर, जीवक और ऋषभकके अभावमें विदारीकन्द, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगध, ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें वाराहीकन्द, और वाराहीकन्दके अभावमें चर्मकारआलू ऐसे वाराही कदको पश्चिममें गृष्टि कहते हैं । चर्मकार-आलूभी वाराहीकाही भेद है ये सजल स्थानोंमें उत्पन्न होवे है इसके ऊपर सूअरके रोम समान रोम होते हैं, मिलावेके अभावमें लालचन्दन वा

चीता, ईखके अभावमें नल, सोनेके अभावमें सोनामाखी, चांदीके अभावमें रूपामाखी, सोनामाखी और रूपामाखीके अभावमें स्वर्णमेरु सोने और रूपेकी भस्मके अभावमें कान्तलोहेकी भस्म, कान्तलोहके अभावमें तीक्ष्णलोह, मोतीके अभावमें मोतीकी सीप, सहतके अभावमें पुराना गुड, मिश्रीके अभावमें सफेद चीनी सफेद चीनीके अभावमें सफेद खाँड और दूधके अभावमें मूगका अथवा मसूरका रस लेवे । यहां कहीहुई प्रतिनिधि एकके अभावमें उसकी दूसरी वस्तु मिलानी चाहिये ।

रसवीर्य्यविपाकाद्यैः समद्रव्यं विचिन्त्य च ।युञ्ज्याद्भिषग्विधिज्ञोऽन्यद्रव्याणां तु रसादिवित् ॥ योगे यदप्रधानं स्यात्तस्य प्रतिनिधिर्मतः । यत्तु प्रधानं तस्यापि सदृशं नैव गृह्यते ॥ व्याधेरयुक्तं यद्द्रव्यं गणोक्तमपि तत्त्यजेत् । अनुक्तमपि युक्तं यद्योजयेत्तद्रसादिवित् ॥

अर्थ-किसी योगका कोई द्रव्य न मिले तथा जिसकी प्रतिनिधि नहीं कही है तो उस औषधिके वीर्य्य और विपाकादिके तुल्य वैद्य अन्य औषधिको समझकर प्रयोगमें डाले । इस प्रतिनिधिकेही ऊपर न रहे । जो औषधि प्रयोगमें अप्रधान है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि डाले, और जो प्रधान है अर्थात् मुख्य औषधि है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि न लेवे, जैसे कि, मरिचादिगुटिकामें पीपल जवाखारादि अप्रधान औषधि हैं इनके बदलेमें दूसरी प्रतिनिधि लेवे किन्तु प्रधान मरिचके अभावमें प्रतिनिधि न लेवे, जो प्रयोगमें कहीहुई औषधि रोगमें अपकारी है उसको उस योगमेंसे निकालदेवे और जो औषधि रोगको दूर करनेवाली है, किन्तु वह उस योगमें नहीं है तोभी रसादिवित् वैद्य उस योगमें मिलादेवे ।

द्रव्यांतर्गतपदार्थाः ।

रसो वीर्यं विपाकश्च ज्ञातव्यास्ते तु यत्नतः ।
रसस्तु मधुरादिः स्याद्वीर्यं कार्यसमर्थता ॥
परिणामे गुणाढ्यत्वं विपाक इति संज्ञितम् ।

अर्थ-द्रव्यामें रस, वीर्य और विपाक इनको यत्नपूर्वक जानना चाहिये, मधुरादिकको रस कहतेहैं, जो कार्यमें समर्थता करे उसको वीर्य और जो अन्तमें गुणोंको करे उसको विपाक कहते हैं ॥

पक्कुर्य्याद्विचक्षणः।कान्ताभावेतीक्ष्णलोहयोजयेद्वैद्यसत्तमः॥ अभावेमौक्तिकस्यापिमुक्ताशुक्तिप्रयोजयेत । मधुयन्ननलभ्येततत्रजीर्णगुडोमत' ॥मत्स्यडचभावतोदद्युर्भिपजःसितशर्कराम् । असंभवेसितायास्तुवुधे'खंडप्रयुज्यते ॥क्षीराभावेरसोमौद्गोमासूरोवाप्रदीयते । अत्रप्रोक्तानिवस्तूनियानितेषुचतेषुच ॥ योज्यमेकतराभावेपरवैद्येनजानता ।

अर्थ-चीतेके अभावमें दन्ती अथवा चिरचिटेका खार, धमासेके अभावमें जवासा, तगरके अभावमें कूठ, मूर्वाके अभावमें जिगनीकी छाल, अहिंस्राके अभावमें मानकन्द, लक्ष्मणाकंदके अभावमें मयूरशिखा, मौलसिरीके अभावमें कुमुद लालकुमुद और कमल, नीलेकमलके अभावमें कुमुद (नीलोफर), जायफलके अभावमें लौंग, आक इत्यादिके दूधके अभावमें आकआदिके पत्तोंका रस, पुष्करमूल और कलिहारीके अभावमें कूठ और थूनेरके अभावमें कूठ, जिस स्थानमें पीपरामूल न होय वहां चव्य और गजपीपल, वापचीके अभावमें चकवडके बीज, दारुहल्दीके अभावमें हल्दी, रसौतके अभावमें दारुहल्दी, गोपीचंदनके अभावमें फिटकरी, तालीसपत्रके अभावमें स्वर्णतालीश, भारंगीके अभावमें तालीसपत्र वा कटेरीकी जड, कालेनोनके अभावमें पांशु लवण लेवै, मुलैठीके अभावमें धायके पुष्प, अमलवेतके अभावमें चूका, दाखके अभावमें कुभेरका फल, दाख और कुभेरके अभावमें डुपेरियाका फूल, नखद्रव्यके अभावमें लौंग, कस्तूरीके अभावमें शीतलचीनी, शीतलचीनीके अभावमें जायफल और कपूरके अभावमें सुगंधमोथा वा गठिवन,केसरके अभावमें कसूमके नवीन फूल,श्रीखंडचन्दनके अभावमें कपूर,केसर और चन्दनके अभावमें लालचन्दन, लालचन्दनके अभावमें नवीन खस, अतीसके अभावमें नागरमोथा, हरडके अभावमें आंवला, नागकेसरके अभावमें कमलकेसर, मेदा और महामेदाके अभावमें शतावर, जीरक और ऋषभकके अभावमें विदारीकन्द, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगंध, ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें वाराहीकन्द, और वाराहीकन्दके अभावमें चर्मकारआलू लेवै वाराही कन्दको पश्चिममें गृष्टि कहते हैं । चर्मकारआलूभी वाराहीकाही भेद है ये सजल स्थानोंमें उत्पन्न होते हैं इसके ऊपर सूअरके रोम समान रोम होते हैं, भिलावेके अभावमें लालचन्दन या

चीता, ईखके अभावमें नल, सोनेके अभावमें सोनामाखी, चांदीके अभावमें रूपामाखी, सोनामाखी और रूपामाखीके अभावमें स्वर्णमेरु सोने और रूपेकी भस्मके अभावमें कान्तलोहेकी भस्म, कान्तलोहके अभावमें तीक्ष्णलोह, मोतीके अभावमें मोतीकी सीप, सहतके अभावमें पुराना गुड, मिश्रीके अभावमें सफेद चीनी सफेद चीनीके अभावमें सफेद खाँड और दूधके अभावमें मूंगका अथवा मसूरका रस लेवे । यहां कहीहुई प्रतिनिधि एकके अभावमें उसकी दूसरी वस्तु मिलानी चाहिये ।

रसवीर्य्यविपाकाद्यैःसमद्रव्यविचिन्त्यच ।युज्याद्विविधमन्यच्चद्रव्याणातुरसादिवत् ॥ योगेयदप्रधानस्यात्तस्यप्रतिनिधिर्मतः । यत्तुप्रधानतस्यापिसदृशनैवगृह्यते ॥ व्याधेरयुक्तयद्द्रव्यगणोक्तमपितत्त्यजेत । अनुक्तमपियुक्तयद्योजयेत्तद्रसादिवित् ॥

अर्थ-किसी योगका कोई द्रव्य न मिले तथा जिसकी प्रतिनिधि नहीं कही है तो उस औषधिके वीर्य्य और विपाकादिके तुल्य वैद्य अन्य औषधिको समझकर प्रयोगमें डाले । इस प्रतिनिधिकेही ऊपर न रहे । जो औषधि प्रयोगमें अप्रधान है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि डाले, और जो प्रधान है अर्थात् मुख्य औषधि है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि न लेवे, जैसे कि, मरिचादिगुटिकामें पीपल जवाखारादि अप्रधान औषधि हैं इनके बदलेमें दूसरी प्रतिनिधि गेरे किन्तु प्रधान मरिचके अभावमें प्रतिनिधि न लेवे, जो प्रयोगमें कहीहुई औषधि रोगमें अपकारी है उसको उस योगमेंसे निकाल्देवे और जो औषधि रोगको दूर करनेवाली है, किन्तु वह उस योगमें नहीं है तोभी रसादिवित् वैद्य उस योगमें मिलादेवे ।

द्रव्यांतर्गतपदार्था ।

रसोवीर्यंविपाकश्चज्ञातव्यास्तेतियत्नत ।
रसस्तुमधुरादि स्याद्वीर्यंकार्यसमर्थता ॥
परिणामेगुणाढ्यत्वंविपाकइतिसज्ञितम् ।

अर्थ-द्रव्योंमें रस, वीर्य और विपाक इनको यत्नपूर्वक जानना चाहिये, मधुरादिकको रस कहतेहैं, जो कार्यमें समर्थता करे उसको वीर्य और जो अन्तमें गुणोंको करे उसको विपाक कहते हैं ॥

द्रव्येरसोगुणोवीर्यंविपाक·शक्तिरेवच । पदार्थाःपचतिष्ठति स्वंस्वंकुर्वन्तिकर्मच॥रसाःस्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषाय-का·॥षड्द्रव्यमाश्रितास्तेचयथापूर्वबलावहाः।तत्राद्यामारु तघ्नतित्रयस्तिक्तादय·कफम्। कषायतिक्तमधुराःपित्तमन्ये तुकुर्वते॥येरसावातशमनाभवतियदितेषुवै । रौक्ष्यलाघव-शैत्यानिनतेहन्यु समीरणम्॥ येरसा·पित्तशमनाभवतिय-दितेषुवै । तीक्ष्णोष्णलघुताचैवनतेतत्कर्मकारिणः॥येरसाः श्लेष्मशमनाभवतियदितेषुवै । स्नेहगौरवशैत्यानिनतेह-न्यु·कफतदा ॥

अर्थ–रस गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति ये पांच पदार्थ द्रव्यम रह-तेहैं और ये अपने २ कार्याको करते हैं, स्वादु, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु और कषेला ये छ· रस द्रव्योंम रहते हैं, और इनमें एकसे दूसरा बलहीन है अर्थात् स्वादुरससे अम्लरस, अम्लरससे लवणरस, लवणरससे तिक्तरस, तिक्तरससे चरपरारस और चरपरेसे कषेलारस निर्बलहै।स्वादु, अम्ल, और लवण ये तीनों रस वातनाशकहै और तिक्त, कटु, कषेला ये तीनों रस कफको हरतेहै तथा कषेला, तिक्त और मधुररस पित्तको शमन करते हैं, शेषमें अम्ल, कटु और कषाय ये तीनो रस पित्तकारकहै जो रस वातको दूर करनेवालेहैं, किन्तु उनमें रूक्षता, लघुता और शीतलता ये तीनों गुण होवें तो वह कदापि वातको दूर नहीं करसक्ते। जो रस पित्तको शान्त करनेवाले है जो उनम तीक्ष्णता, उष्णता और लघुता ये तीना गुण होवें तो वह पित्तको नष्ट नहीं करसक्ते ऐसेही जो रस कफको शमन करनेवाले है यदि उनमे स्निग्धता, गुरुता और शीतलता ये तीनों गुण होवें तो कदापि कफको दूर नहीं करसक्ते।

क्षार कषाय पवनप्रकोपीमधुरोऽथतिक्त कफकोपनश्च ।
कट्वम्लकौपित्तविकारकारिणौकट्वम्लकौवातशमौप्रदिष्टौ॥
पित्तस्यनाशीमधुर सतिक्तःकटुकषायौशमनौकफस्य ।
अन्योन्यमेतच्छमनवदन्तिपरस्परदोपविवृद्धिमन्तः॥

अर्थ-लवण और कपेला रस वातको कुपित करेहै, मधुर और कडवा रस कफको कुपित करनेवालाहै, चरपरा और खट्टारस पित्तको कुपित करताहै और वातको शमन करताहै, मधुर और कडुवा रस पित्तको दूर करे है, चरपरा और कषेलारस कफको शमन करेहै और परस्पर दोषाको बढाने-वाले परस्परमें मिलेहुए दोष शमन करते है ।

मधुरःश्लेष्मलःप्रायोजीर्णाच्छालियवाद्दते ।प्रायोम्लपित्त-जनकदाडिमामलकाद्दते ॥ अपथ्यलवणप्रायश्चक्षुषोन्यत्र सैंधवात्।तिक्तकटुकभूयिष्ठमवृष्यवातकोपनम् ॥ ऋतेमृ-तापटोलीभ्याशुण्ठीशुष्काद्रसोनत• । कषायःप्रायश शी-त•स्तभनश्चाभयांविना ॥

अर्थ-पुराने चावल, जौ, गेहू, मूँग, सहत, मिश्री और जगली जीवोंके मासको छोडकर जितने मधुर रसवाले पदार्थ है सब पित्तको करतेहै, सैंधव लवणको छोडकरके सम्पूर्ण लवण अपथ्य और नेत्राको अहितकारीहै गिलोय और परवलके सिवाय जितने कडवे पदार्थ है सब अवृष्य, वातको कुपित करनेवाले है, साठ, अदरख और लशुनको छोडकर जितने चरपरे पदार्थ है अवृष्य और वातको कुपित करनेवाले है, हरडको छोडकर जितने कषेले पदार्थ है प्रायः सबही शीतल और स्तम्भक है ।

मधुररसवर्णनम् ।

मधुरगोल्यमित्याहुरिक्ष्वादौचसलक्ष्यते ॥स्वादु स्तन्यर-सौजसाचबलकृद्वीर्यप्रदस्तृप्तिद प्राह्लद्यारसनांकरोतितद-नुश्लेष्मप्रकोपप्रदः । पित्तानांदमनः श्रमोपशमनोवृष्योन-राणाहित क्षीणानांक्षतपाण्डुनेत्रविरुजांहंताभवेन्माधुर ॥

अर्थ-मधुर, गौल्य (गोल, रसज्येष्ठ, गुल्म, स्वादु, मधूलक) ये सब मधुररसके पर्याय है, मधुररस इक्ष्वादिकमें रहताहै, मधुररस स्तनामें दूधको बढानेवाला, बल पुष्टिको करनेवाला, वीर्यजनक, हृदयको और जिह्वाम तृप्तिको करनेवाला, किंचित् कफको कुपित करनेवाला, पित्तको दमन करनेवाला, श्रमको शमन करनेवाला तथा क्षीण, क्षत, पाण्डु और नेत्ररोगवाले मनुष्योंको हितकारीहै ।

मधुरःपिच्छिलःशीतोधातुस्तन्यबलप्रदः ।
चक्षुष्योवातपित्तघ्नःकुर्यात्स्थौल्यमलक्रमीन् ॥

अर्थ-मधुररस-पिच्छिल, शीतल, धातु, स्तनोंमें दूध और बलको बढानेवाला, नेत्रोंको हितकारी, वातपित्तनाशक तथा स्थूलता, मल और कृमिको करनेवाला है ।

मधुरस्तुरसश्चिनोतिकेशान्वपुषःस्थौल्यबलौजवीर्यदायी।
अतिसेवनतःप्रमेहशैत्यजडतामांद्यमुखान्करोतिदोषान् ॥

अर्थ-मधुररस-केशोंको सुन्दर करनेवाला, शरीरको स्थिरता देनेवाला तथा बल, ओज, वीर्यको देनेवाला है, यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो शीतलता, जडता, मन्दाग्नि, मुखरोग और प्रमेहादि रोगोंको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

सोऽतियुक्तोज्वरश्वासगलगडादिरोगकृत । (रा० व०)

अर्थ-यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो ज्वर, श्वास, गलगडादि रोगोंको उत्पन्न करताहै ।

अम्लरसवर्णनम् ।

अम्लस्तुचिचाजंबीरमातुलुंगफलादिषु ।
अम्लोष्णोतर्बहिःशीतोरुच्यःपित्तकफास्रदः ॥
विबधानाहदृष्टिघ्नोदंताक्षिभ्रूनिकोचकः ।

अर्थ-अम्लरस-इमली, जम्भीर और मातुलुंगादि फलोंमें होताहै, अम्लरस-गरम, बाहर अर्थात् स्पर्श करनेसे शीतल, रुचिकारक, पित्त, कफ और रुधिरको कुपित करनेवाला तथा विबंध, आनाह और दृष्टिको नष्ट करनेवाला और दाँत, नेत्र, भौंहको सकुचानेवाला है ।

अन्यच्च ।

अम्लाभिधःप्रीतिकरोरुचिप्रदःप्रपाचनोयमृदुताचयच्छति।
भ्रांतिंचकुष्टकफपांडुतांचकार्श्यंचकासकुरुतेतिसेवितः ॥

अर्थ-अम्लरस-प्रीतिकारक, रुचिजनक, पाचक और मृदुताको करनेवालाहै, इसको अधिक सेवन किया जाय तो भ्रान्ति, कुष्ठ, कफ, पाण्डुता और कृशताको करैहै ।

अन्यच्च ।

सोऽतियुक्तोभ्रमकुर्यात्तृड्दाहतिमिरज्वरान् ।
कण्डूपाण्डुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृच्च ॥(भा०प्र०)

अर्थ-इसका अधिक सेवन किया जाय तो भ्रम, तृषा, दाह, तिमिर, ज्वर, कण्डू पाण्डुता, वीसर्प, शोथ, विस्फोट और कुष्ठरोगको उत्पन्न करैहै।

लवणरसवर्णनम् ।

लवणस्तुवर प्रोक्त सैंधवादिपुदृश्यते ।
लवणःशोधनोरुच्य'पाचनःकफपित्तहा ॥
पुस्त्ववातहरःकायशैथिल्यमृदुकारक ।

अर्थ-लवणरस सैंधवादिक पदार्थोंमें देखा जाता है, लवणरस-शोधन, रुचिकारक, पाचक, कफपित्तनाशक, पुरुषतानाशक, वातहारक तथा शरीरमें शिथिलता और मृदुताको करनेवालाहै।

अन्यच्च ।

लवणोरुचिकृद्रसोनितांतपचन स्वादुकरश्चसारकश्च ।
अतिसेवनतोजरांचपित्तंशितिमानचददातिकुष्ठकारी ॥

अर्थ-लवणरस-रुचिकारक, पाचक, स्वादिष्ट, सारकहै इसको अधिक सेवन करे तो जरा, पित्त और कोढको करैहै।

अपिच ।

सोतियुक्तोक्षिपाकास्रपित्तकोष्ठक्षतादिकृत् ।
वलीपलितखालित्यकुष्ठवीसर्पतृट्प्रद ॥

अर्थ-इसको अधिक सेवन करनेसे नेत्रपाक, रक्तपित्त, कोढ और क्षतादिरोग उत्पन्न होतेहैं, शरीरमें वलीका पड़ना, कोढ, विसर्प और तृषा यह सब उत्पन्न होतेहैं।

तिक्तरसवर्णनम् ।

तिक्तन्तुपिचुमन्दादौव्यक्तमास्वाद्यतेरस ।

मधुरः पिच्छिलः शीतो धातुस्तन्यबलप्रदः ।
चक्षुष्यो वातपित्तघ्नः कुर्यात्स्थौल्यमलक्रिमीन् ॥

अर्थ—मधुर रस—पिच्छिल, शीतल, धातु, स्तनोंमें दूध और बलको बढानेवाला नेत्रोंको हितकारी, वातपित्तनाशक तथा स्थूलता मल और कृमिके करनेवाला है।

मधुरस्तु रसस्स्निग्धो हितः केशान्बुधः स्थौल्यबलोनवीर्यदायी।
अतिसेवनतः प्रमेहगण्डं जडतां मांद्यमुखान्करोति दोषान् ॥

अर्थ—मधुर रस—केशोंको उत्तम करनेवाला, शरीरके स्थिरता देनेवाला बल करनेवाला, वीर्यको देनेवाला है यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो प्रमेह, गण्ड, जडता, मन्दाग्नि इत्यादि और मोटापे रोगोंके उत्पन्न करते हैं।

अन्यच्च।

सोऽतियुक्तो ज्वरश्वासगलगण्डादिरोगकृत् । (ना० २०)

अर्थ—यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो ज्वर, श्वास, गलगण्डादि रोगोंको उत्पन्न करता है।

अम्लरसवर्णनम्।

अम्लस्तु चिञ्चाजम्बीरमातुलुङ्गफलादिषु ।
अम्लोऽग्निवृद्धिकृच्छीतोऽच्छः पित्तकफावहः ॥
विबंधानाहदृष्टिनो दृग्ग्लानिश्लथिकारकः ।

अर्थ—अम्ल रस—इमली जम्बीरी और मातुलुंगादि फलोंमें रहता है, अम्ल रस—स्वाद, थोडा अर्थात् स्पर्श करनेमें शीतल, अग्निको बढानेवाला, पित्त और कफको कुपित करनेवाला, तथा विबंध, अफारा और दृष्टिको नष्ट करनेवाला और इन्द्रिय, नेत्र भौंहको सकुचनेवाला है।

अन्यच्च।

अम्लोऽभिरुचिप्रीतिकरोऽग्निदः स्यात्पाचनो हृद्यतानिवर्धनः।
भ्रान्तिं च तृट्कफपाण्डुतां च कार्श्यं च कान्तं कुरुतेऽतिसेवितः ॥

अर्थ—अम्ल रस—रोचक है, अग्निवर्धक, पाचक और हृदयको हितकारी करनेवाला है, इसको अधिक सेवन किया जाय तो भ्रान्ति, तृषा, कफ, पाण्डुता और कृशताको करता है।

अपथ्य।

सोऽतियुक्तोभ्रमकुर्यात्तृड्दाहतिमिरज्वरान्।
कण्डूपाण्डुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-इसका अधिक सेवन किया जाय तो भ्रम, तृषा, दाह, तिमिर, ज्वर, कण्डू पाण्डुता, वीसर्प, शोथ, विस्फोट और कुष्ठरोगको उत्पन्न करेहै।

लवणरसवर्णनम्।

लवणस्तुवरःप्रोक्तःसैंधवादिषुदृश्यते।
लवणःशोधनोरुच्यःपाचनःकफपित्तदः॥
पुंस्त्ववातहरःकायशैथिल्यमृदुकारकः।

अर्थ-लवणरस सैंधवादिक पदार्थोंमें देखा जाता है, लवणरस-शोधन, रुचिकारक, पाचक, कफपित्तनाशक, पुरुषतानाशक, वातहारक तथा शरीरमें शिथिलता और मृदुताको करनेवालाहै।

अपथ्य।

लवणोरुचिकृद्रसोनितांतपचनःस्वादुकरश्चसारकश्च।
अतिसेवनतोजरांचपित्तंशितिमानचददातिकुष्ठकारी॥

अर्थ-लवणरस-रुचिकारक, पाचक, स्वादिष्ठ, सारकहै इसको अधिक सेवन करे तो जरा, पित्त और कोढको करेहै।

अपथ्य।

सोतियुक्तोक्षिपाकास्रपित्तकोष्ठक्षतादिकृत्।
वलीपलितखालित्यकुष्ठवीसर्पतृट्प्रदः॥

अर्थ-इसको अधिक सेवन करनेसे नेत्रपाक, रक्तपित्त, कोढ और क्षतादिरोग उत्पन्न होतेहै, शरीरमें वलीका पडना, कोढ, विसर्प और तृषा यह सब उत्पन्न होतेहै।

तिक्तरसवर्णनम्।

तिक्तन्तुपिचुमन्दादौव्यक्तमास्वाद्यतेरसः।

अर्थ-कडवारस-नीम चिरायताटिमें रहता है तथा यह रस प्रायः गुन और बेस्वाद होता है।

तिक्त·पित्तकफापहोज्वरहर·कुष्ठादिदोषापह·शीतोरक्तगदापह श्रमहरोरुच्योनसंक्लेदन·। जिह्वाकंठविशोधनोभवति तद्दाहापहोरोचनो वक्रोल्लासकर प्रकुष्ठकथितोनिम्बादिके स्वादधृक् ॥

अर्थ-कडवारस-पित्त और कफको हरनेवाला, ज्वरको दूर करनेवाला, कुष्ठादि रोगोंको नष्ट करनेवाला, शीतल, रुधिरके विकारोंको दूर करनेवाला, श्रमनाशक, रुचिकारक, क्लेदकारक, जिह्वा और कंठको शुद्ध करनेवाला, दाहनाशक, रोचन और मुखको प्रसन्न करनेवाला है।

अन्यच्च।

तिक्त शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत। कृमिकुष्ठविषोत्क्लेददाहरक्तगदापह· ॥ रुच्य·स्वयमरोचिष्णु कंठस्तन्यविशोधन·। वातलोऽग्निकरोनासाशोषणोरक्षणोलघु·॥ सोऽतियुक्त शिरःशूलमन्यास्तम्भश्रमार्तिकृत । कम्पमूर्च्छातृषाकारीबलशुक्रक्षयप्रद· ॥

अर्थ-कडवारस-शीतल, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त, कफ, कृमि, कोढ, विष, उत्क्लेद, दाह रुधिरविकार इनको दूर करे है, स्वय अरुचिकारक होनेपरभी अरुचिवाले मनुष्योंको रुचिको उत्पन्न करे है, कंठ और स्तनोंके दूधको शोधे है, वातकारक, अग्निप्रदीपक, नासाको सुखानेवाला, रूखा और हलका है। कडवेरसको अधिक सेवन करनेसे-शिरःशूल, मन्यास्तम्भ, श्रम, कम्प, मूर्च्छा और तृषारोग उत्पन्न होवाहै तथा बल और शुक्रका नाश होताहै।

कटुरसवर्णनम्।

कटुस्तुपिप्पलीमूलेमरिचार्दामलक्ष्यते ॥ नेत्रस्रावकरोमुखं विदहतेकर्णासिजिह्वालोद्रदन वीभत्सकुरुतेश्रमविदधतेरम-

श्वतीक्ष्णोभृशम् । अग्निश्चोत्पथतेक्षतविदहतेक्षीणस्यश-
स्तोनच वातवर्द्धयतेकफप्रहरतेरौद्रःकटुर्योरस ॥

अर्थ—चरपरारस—पीपलामूल और मिरचादिम रहता है। चरपरारस—नेत्रोंमेंसे पानी टपकावे, मुखको जलावे, कानोंमें झलझलाहट करे, नेत्रोंम ज्वाला उत्पन्न करे, भयकरपनेको प्रगट करे, रूखा, तीक्ष्ण, अग्निको उत्पन्न करे, क्षतको दहन करनेवाला, क्षीण मनुष्योंको अहितकारी वातको बढानेवाला, कफको हरनेवाला और रौद्रस्वरूप है।

अन्यच्च।

कटुरुष्णश्वतीक्ष्णश्वविशदोवातपित्तकृत्।श्लेष्महृल्लघुराग्ने-
य:कृमिकण्डूविषापह ॥रूक्ष:स्तन्यहरश्चापिमेदःस्थौल्या-
पकर्षण:।अश्रुदोनासिकास्याक्षिजिह्वाग्रोद्वेगकोमत ॥दी-
पन पाचनोरुच्योनासिकाशोषणोभृशम् । क्लेदमेदोवसा-
मज्जाशकृन्मूत्रोपशोषण:॥ स्रोत प्रकाशकोरूक्षोमेध्योव-
चोविबन्धकृत । सोतियुक्तोभ्रान्तिदाहमुखताल्वोष्टशोप-
कृत॥कठादिपीडामृच्छांतर्दाहदोवलकान्तिहृत् ।

अर्थ—चरपरारस—गरम, तीक्ष्ण, विशद, वातपित्तकारक, कफनाशक, हलका, आग्नेय, कृमिनाशक, खुजलीको हरनेवाला, विषके विकारोंको दूर करनेवाला, रूखा, स्तनोंमे दूधको सुखानेवाला, मेदा और स्थूलताको हरनेवाला, आँसुओंको उत्पन्न करनेवाला, नासिका, मुख, नेत्र और जिह्वाको उद्वेग करनेवाला, दीपन, पाचन, रुचिकारक, नासिकाको सुखानेवाला, क्लेद, मेद, वसा, मज्जा, विष्ठा और मूत्रको सुखानेवाला, स्रोतोंको प्रकाशित करनेवाला, रूखा मेधाजनक और मलरोधक है । इसको अधिक सेवन करनेसे भ्रान्ति और दाह उत्पन्न होताहै । तथा मुख,तालु, ओष्ठ यह सूखजाते हैं कण्ठम पीडा उत्पन्न होवे अतर्दाह होवे, तथा बल और कान्ति नष्ट होवेहै।

कषायरसवर्णनम्।

कषायस्तुवर प्रोक्त:सतुपूगीफलादिषु ।

अर्थ-कषाय, तुवर (तूवर, कुवर) यह कषायरसके पर्याय हैं। कषायरस सुपारी आदि पदार्थोंमें होता है।

कषायोरोपणोग्राहीस्तम्भनःशोधनोहिमः।
कफशोणितपित्तघ्नोजिह्वाजाड्यकरोलघुः॥

अर्थ-कषैलारस-व्रणको भरनेवाला, मलको रोकनेवाला, स्तम्भन, शीतल तथा कफ, रक्तपित्तको दूर करनेवाला, जिह्वामें जडताको करनेवाला और हल्का है।

मतान्तरम्।

कषायःशोषणःस्तम्भीव्रणपाकार्त्तिनाशनः।
कफशोणितपित्तघ्नोरूक्षःशीतोगुरुस्तथा॥

अर्थ-कषैला रस-शोषण, स्तम्भक, व्रणपाककी पीडाको दूर करनेवाला कफनाशक, रुधिरके विकारोंको हरनेवाला, पित्तनिवारक, रूखा, शीतल और भारी है।

अन्यच्च।

कषायनामानिरुणद्धिशोफवर्णंतनोर्दीपनपाचनश्च।
सत्त्वापहोसौशिथिलत्वकारीनिषेवितःपांडुकरोनिगात्रम्॥

अर्थ-कषैलारस-सूजनको धरे, वर्णको बिगाडदेवे, दीपन, पाचन, सामर्थ्यको नष्ट करे, शिथिलताको उत्पन्न करे और इसको अधिक सेवन कियाजाय तो शरीरमें पाडुता उत्पन्न होती है।

अथ द्वन्द्वरस।

कटु कषायश्चकफापहारिणौमाधुर्य्यतिक्तावपिपित्तनाशनौ।
कट्वम्लमशौचरसौमरुद्गणवित्थंहिद्वन्द्वौमकलामयापहौ॥

अर्थ-चरपरा और कषैलारस-कफको, मधुर और कडुआरस पित्तको, चरपरा और खट्टारस वातको दूर करते हैं, इसप्रकार दो दो रस मिलेहुये सर्वप्रकारके रोगोंको हरते हैं। इस छः रसोंमें एकमें एक मिलनेसे अनेक भेद होजाते हैं सो कहते हैं।

मिश्रितरसके ६३ भेद।

मधुरोम्लकटुस्तिक्त·कटुस्तुवरइत्यपि।
क्रमादन्योन्यसकीर्णानानात्वंयातिषड्रसा· ॥

अर्थ–मधुर, अम्ल, चरपरा, कडवा, नमकीन और कषेला यह छ रस एक दूसरेके साथ मिलनेसे नानाप्रकारके भेदोंको प्राप्त होतेहैं और उनके गुणभी पृथक् २ होजाते है, वह सब नीचे लिखते है।

सामान्येनात्रनिर्दिष्टागुणा·षड्रससम्भवा। रसानायोगत-स्तुस्यादन्यएवगुणोदय·॥सयोगाद्विषतांयातिसममाज्ये-नमाक्षिकम्। अमृततुविषयातिसर्पदष्टस्यवैयथा॥

अर्थ–ये सामान्यतासे छ' रसोंके गुण कहे है, किन्तु रसोके मिलनेसे उनमें और औरही गुण उत्पन्न होजातेहै, जैसे–घृतमें बराबर भाग सहत मिलानेसे विष होजाता है जिसप्रकार अमृतरूप जो दुग्धादि पदार्थ हैं वे सॉपके डसनेसे विषरूप होजाते है।

रसानांसयोगा·सप्तपचाशद्भवन्ति।
कल्पनात्तुत्रिषष्टिधाभवन्ति॥

अर्थ–रसोंके सयोग सत्तावन ५७ हैं और कल्पना करके त्रेसठ ६३ जानने।

तद्यथा।

षट्पचका षट्पृथग्रसा·स्युश्चतुर्द्विकौपचदशप्रकारौ।
भेदास्त्रिकाविंशतिरेकमेवद्रव्यषडास्वादमितित्रिषष्टि· ॥

अर्थ–पॉच पॉच रसके मिलनेसे छः भेद होतेहैं, और छः अलग अलग रस हैं और चार चार रसोंके मिलनेसे पद्रह भेद होते है और दोदोके मिलनेसेभी पद्रहभेद होतेहै और तीनतीन रसाके सयोगसेभी वीस भेद होते है और छहोरसोंका स्वादवाला एक ऐसे त्रेसठ ६३ भेद कहे है।

दोदोके सयोगसे १५	पाचपाचके सयोगसे ६
चारचारके सयोगसे १५	पृथक् २ रस ६
तीनतीनके सयोगसे २०	परन्तु छहामिलेहुवे १

इस प्रकार सब मिलकर ६३ भेद होतेहैं ।

अब इनको समझनेके लिये नीचे कोष्टक लिखा है ।

रसोंके ६३ भेद जाननेके लिये नीचे यत्र लिखते हैं ।

१ मधुराम्लौ	२ मधुरलवणौ	३ मधुरतिक्तौ
४ मधुरकटुकौ	५ मधुरकषायौ	६ अम्ललवणौ
७ अम्लतिक्तौ	८ अम्लकटुकौ	९ अम्लकषायौ
१० लवणतिक्तौ	११ लवणकटुकौ	१२ लवणकषायौ
१३ तिक्तकटुकौ	१४ तिक्तकषायौ	१५ कटुकषायौ
१६ मधुराम्ललवणा	१७ मधुराम्लतिक्ता	१८ मधुराम्लकटुका
१९ मधुराम्लकषाया	२० मधुरलवणतिक्ता	२१ मधुरलवणकटुका
२२ मधुरलवणकषाया	२३ मधुरतिक्तकटुका	२४ मधुरतिक्तकषाया
२५ मधुरकटुकषाया	२६ अम्ललवणतिक्ता	२७ अम्ललवणकटुका
२८ अम्ललवणकषाया	२९ अम्लतिक्तकटुका	३० अम्लतिक्तकषाया
३१ अम्लकटुकषाया	३२ लवणतिक्तकटुका	३३ लवणतिक्तकषाया
३४ लवणकटुकषाया	३५ तिक्तकटुकषाया	३६ मधुराम्ललवणतिक्ता
३७ मधुराम्ललवणकटुका	३८ मधुराम्ललवणकषाया	३९ मधुरलवणतिक्तकटुका
४० मधुरलवणतिक्तकषाया	४१ मधुरलवणकटुकषाया	४२ मधुरतिक्तकटुकषाया
४३ मधुराम्लतिक्तकटुका	४४ मधुराम्लतिक्तकषाया	४५ मधुराम्लकटुकषाया
४६ अम्ललवणतिक्तकटुका	४७ अम्ललवणकटुकषाया	४८ अम्लतिक्तकटुकषाया
४९ अम्ललवणतिक्तकषाया	५० लवणतिक्तकटुकषाया	५१ मधुराम्ललवणतिक्तकटु०
५२ मधुराम्ललवणतिक्तकषा०	५३ मधुराम्ललवणकटुकषा०	५४ मधुराम्लतिक्तकटुकषा०
५५ मधुरलवणतिक्तकटुकषा०	५६ अम्ललवणतिक्तकटुकषा०	५७ मधुराम्ललवणतिक्तकटु०
५८ मधुर	५९ अम्ल	६० लवण
६१ तिक्त	६२ कटु	६३ कषाय

मित्ररसौ ।

अन्योन्यमधुराम्लौलवणाम्लौकटुतिक्तकौचरसौ ।
कटुलवणौचस्यातांमित्ररसेतिक्तलवणौच ॥

अर्थ–मधुर और अम्लरस आपसमें मित्रहैं लवण और अम्लरस मित्र है, कटु और तिक्तरस मित्र है, कटु और लवणरस मित्र है, तिक्त और लवणरस मित्र हैं ।

परस्परविरुद्धरसौ ।

लवणमधुरौविरुद्धावथकटुमधुरौचतिक्तमधुरौच
साधारणःकषायःसर्वत्रसमानतांधत्ते ॥

अर्थ–लवण और मधुररस परस्पर शत्रु अर्थात् विरुद्ध हैं, कटु और मधुर रस विरुद्ध हैं, तिक्त और मधुररसभी विरुद्ध है, और कषेला रस साधारण है ये सबके साथ साधारणपनेसे वर्त्ताव करते हैं ।

अथ गुणाः ।

गुरुर्लघुस्तथास्निग्धोरूक्षस्तीक्ष्णइतिक्रमात् । भूनभोवारिवातानांवह्नेरेतेगुणाः स्मृताः ॥ गुरुवातहरंपुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकिच । लघुपथ्यपरंप्रोक्तंकफघ्नंशीघ्रपाकिच ॥ स्निग्धंवातहरंश्लेष्मकारिवृष्यंबलावहम् । रूक्षंसमीरणकरंपरंकफहरंमतम् ।तीक्ष्णंपित्तकरंप्रायोलेखनंकफवातनुत् ॥

अर्थ–गुरु, लघु, स्निग्ध, रूक्ष और तीक्ष्ण, ये क्रमसे भूमि, आकाश, जल, वायु और अग्निके गुणहैं । तहां गुरुपदार्थ वातनाशक कफ और पुष्टिकारक और देरमें पचेहैं । लघुपदार्थ अत्यंत पथ्य, कफनाशक और शीघ्र पचेहैं । स्निग्धपदार्थ वातहारक, कफकारक, वीर्य और बलको बढावेहैं। रूक्षपदार्थ वातकारक और कफहारकहैं । तीक्ष्णपदार्थ लेखन और कफवातनाशक हैं ।

सुश्रुतेतुगुणाएतेविंशतिर्नात्रदर्शिताः ।

अर्थ–इसीप्रकार सुश्रुतमेंभी बीस गुण कहेहैं, वह यहां ग्रंथ बढनेके भयसे नहीं दिखाये ।

---

१ शीतोष्ण[illegible] ।

॥ अथ गुणमस्त्वावाद्दीपनादयोगुणाः ॥

पचेन्नामवह्निकृद्यदीपनतद्यथामिसिः । पचत्यामंनवह्निंच कुर्याद्यत्तद्धिपाचनम् ॥ नागकेशरवद्विद्याच्चित्रोदीपनपाचन । नशोधयतियद्दोपान्समान्नोदीरयत्यपि ॥समीकरोतिविपमान्शमनतद्यथाऽमृता । कृत्वापाकमलानांच भित्त्वावधमधोनयेत् ॥ तच्चानुलोमनज्ञेययथाप्रोक्ताहरीतकी । पक्तव्ययदपक्त्वैवश्लिष्टंकोष्ठेमलादिकम् ॥ नयत्यध स्रसनंतद्यथास्यात्कृतमालकम् । मलादिकमवद्ध यद्वद्धवापिंडितमले· ॥ भित्त्वाऽध पातयतियद्भेदनकटुकीयथा । विपक्वयदपक्ववामलादिद्रवतांनयेत् ॥ रेचयत्यपितज्ज्ञेयरेचनत्रिवृतायथा । अपक्वंपित्तश्लेष्माणंवलादूर्ध्वंनयेत्तुयत् ॥ वमनतद्धिविज्ञेयमदनस्यफलयथा । स्थानाद्वहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसचयम्॥देहसशोधनतत्स्याद्देवदालीफलंयथा । दीपनपाचनयत्स्यादुष्णत्वादवशोपकृत ॥ ग्राहीतच्चयथाशुंठीजीरकगजपिप्पली । रौक्ष्याच्छैत्यात्कपायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत ॥ वातकृत्स्तंभनतत्स्याद्यथावत्सकटुंटुको । श्लिष्टान्कफादिकान्दोपानुन्मूलयतियद्वलात ॥ छेदनतद्यथाक्षारामरिचानिशिलाजतु । धातून्मलान्वादेहस्यविशोप्योल्लेखयेच्चयत ॥ लेखनंतद्यथाक्षौद्रनीरमुष्णवचायवा । यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीपुहर्पोवाजिकरहितत ॥ यथाश्वगंधामुसलीशर्कराचशतावरी । यस्माच्छुक्रस्यवृद्धि स्याच्छुक्रलहिंतदुच्यते ॥ यथानागवलाद्या स्युर्वीजचकपिकच्छुजम् । दुग्धमापाश्चभल्लात फलमज्जामलानिच॥एतानिजनकानिस्युरेचकानिचरंनम । प्रवर्त्तिनीस्त्रीशुक्रस्यरेचनंबृहतीफलम् ॥ जातीफल

स्तंभकस्यात्कालिंगकक्षयकारिच । रसायनंतुतज्ज्ञेयंयज्जरा व्याधिनाशनम् ॥ यथाहरीतकीदंतीगुग्गुलुश्चशिलाजतु । पूर्वंव्याप्याखिलकायंततः पाकंचगच्छति ॥ व्यवायितद्यथा भंगाफेनचाहिसमुद्भवम् । संधिबंधास्तुशिथिलान्य करोति विकाशितत् ॥ विशोष्योजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवौ । बुद्धिंलुपतियद्द्रव्यंमदकारितदुच्यते ॥ तमोगुणप्रधानंचय- थामद्यसुरादिकम् । व्यवायिचविकाशिस्याच्छ्लेष्मच्छेदिम- दावहम् ॥ आग्नेयंजीवितहरंयोगवाहिस्मृतंविषम् ॥ निज वीर्येणयद्द्रव्यंस्रोतोभ्योदोषसंचयम् । निरस्यतिप्रमाथिस्या- त्तद्यथामरिचंवचा ॥ पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यंरुद्ध्वारसवहाः शिराः । धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्यंदियथादधि ॥ विदाहि द्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्यात्तथातृषाम् । हृदिदाहंचजनयेत्पाकं गच्छतितच्चिरात् ॥ गृह्णातियोगवाहिद्रव्यसंसर्गिवस्तुगुणा- न् । पच्यमानयथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलोहादिः ॥

अर्थ—अब प्रसंगवश दीपनपाचनादि गुणोंके लक्षण कहतेहैं । जो पदार्थ आम (कच्चे) को पकावे नहीं परंतु अग्निको प्रदीप्त करे वह दीपन कहा- ताहै जैसे कि—साफ । जो पदार्थ कच्चेको पकावे परन्तु अग्निको दीपन नहीं करे उसको पाचन कहतेहैं । जैसे कि—नागकेशर । जो अग्निको दीपन करताहै और कच्चेको पकाताहै उसको दीपन पाचन कहतेहैं । जैसे कि—चीता । जो पदार्थ तीनो दोषोंको शुद्ध नहीं करता अर्थात् ऊंचे तथा नीचे मार्गमें नहीं लेजाताहै समान दोषोंको बढाता नहीं और विषम हुए दोषोंको सम करताहै वह पदार्थ शमन कहाताहै । जैसे कि, गिलोय । जो पदार्थ पक्व वातपित्त और कफको पकाकर वायुके बन्धनको भेदन करके नीचे लेजा- ताहै अर्थात् मलको गिरादेता है वह पदार्थ अनुलोमन कहाताहै जैसे कि—हरड । जो पदार्थ कोठेमें चिपटे हुए पकानेयोग्य मल, कफ और पित्त उनको विना पकायेही नीचे लेजाय वह स्रंसन कहाताहै जैसे कि—अमलतास । जो वातादि दोषोंसे बंधेहुये मल मूत्रको अलग अलग करके गुदद्वारमें

बाहर निकालै उसको भेदन कहतेहैं । जैसे कि, कुटकी । जो पदार्थ अपक्वे अथवा कच्चे मलको द्रवरूप (पतला) करै और नीचेकोगेर वह पदार्थ रेचन कहाताहै जैसे कि–निशोय । जो पदार्थ कच्चे पित्त, कफ तथा अन्नके समूहको मुखके मार्गसे बाहर निकाले वह पदार्थ वमन कहाताहै जैसे कि, मैनफल । जो पदार्थ मलके समूहको अपने स्थानसे बाहर निकाले अथवा नीचे या ऊपर लेजाय वह पदार्थ देहशोधन कहाताहै जैसे कि–देवदाली । जो पदार्थ अग्निको दीपन करनेवाला, कच्चेको पकानेवाला और गरम होनेसे द्रवतारूप (गीलेपन) को सुखानेवालाहै वह द्रव्यग्राही कहाताहै जैसे कि–सोंठ, जीरा और गजपीपल जो पदार्थ रूक्ष, शीतल, कषैला और लघुपाकी होनेसे वायुको उल्टा करनेवाला होय वह पदार्थ स्तम्भन कहाताहै जैसे कि, कुडा और सोनापाठा । यह नीचे जानेवाले मलादिकको रोककर रखताहै इसलिये स्तम्भक कहाताहै । जो पदार्थ शरीरमें चिपटे हुए कफादिकदोषोंको बलात्कारसे उखाडडाले वह पदार्थ छेदन कहाताहै जैसे कि–जवाखार, आदिखार, कालीमिरच और शिलाजीत । जो पदार्थ देहके धातुओंको अथवा मलको सुखाकर दुर्बल करै वह पदार्थ–लेखन है जैसे कि, मधु, उष्णजल, वच और इन्द्रजौ । जिस द्रव्यके प्रयोग करनेसे स्त्रीके साथ रमनेका उत्साह होय वह द्रव्य वाजीकरण कहाता है जैसे कि–असगन्ध, मुसली, मिश्री (चीनी) और शतावर । जिस द्रव्यसे वीर्यकी वृद्धि होय वह द्रव्य शुक्रल कहाताहै जैसे कि, नागबला आदि और कडेके बीज । दूध, उडद, भिलावेंकी मींग और आमले ये अपने स्वभावसे, शीघ्रही रसादिकको उत्पन्न करके वीर्यको प्रकट करतेहैं और वीर्यकी अधिकता होनेपर उसकी प्रवृत्ति करतेहैं । स्त्रीवीर्यको प्रवर्तानेवाली, कटेरिका पर वीर्यका रेचक जायफल वीर्यका स्तम्भन करनेवाला और कडुआ (इन्द्रजौ) वीर्यका क्षय करतेहैं । स्त्रीका स्मरण कीर्तन, दर्शन, संभाषण स्पर्श, चुम्बन, आलिंगन और मैथुन यह सम्पूर्ण क्रियायें या कपही क्रिया वीर्यका प्रवर्त्ताने (निकालने) वालीहैं । जो पदार्थ जरा और व्याधिका नाश करनेवाला होय वह पदार्थ रसायन कहाता है जैसे कि, हरड, देवी, गूगल और शिलाजीत । जो पदार्थ प्रथम सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पश्चात् पाक अवस्थाको प्राप्त होय वह पदार्थ व्यवायी कहाताहै जैसे कि, भांग और अफीम । अन्यद्रव्य परिपाकको प्राप्त होकर अपना

गुण करतेहैं और व्यवायी द्रव्य तो कच्चेही अपने गुणोंसे सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पीछे पकतेहैं। जो द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाले वीर्यमेंसे ओजको सुखाकर शरीरकी सन्धियोंके बंधनोंको शिथिल करतेहैं। इनको विकाशी जानना, जैसे सुपारी और कोदों। जो द्रव्य अधिक तमोगुणवाला और बुद्धिका नाश करनेवाला होय वह मदकारी अर्थात् मादक द्रव्य कहाताहै जैसे कि, मदिरा आदिका जो पदार्थ व्यवायी, विकाशी, कफ नष्ट करनेवाला, मद करनेवाला, अग्निका अधिक अंशयुक्त, प्राणनाशक और योगवाही होय वह पदार्थ विष कहाताहै जैसे कि, वत्सनाभ और शृङ्गक आदि। वत्सनाभ आदि द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पकते हैं इसलिये व्यवायी हैं। ओजको सुखाकर सधियोंके बंधनाको शिथिल करनेवाले हैं इसलिये विकाशी हैं। तमोगुणका भाग अधिक होनेसे बुद्धिका नाश करके मद करनेवालाहै, अग्निका अधिक अंशयुक्तहै और जिस पदार्थके साथ मिलकर उसके गुणोंको ग्रहण करनेवाला होनेसे योगवाहीभीहै। जो द्रव्य अपनी शक्तिसे स्रोतोंसे दोषोंके समूहको निकाले वह द्रव्य प्रमाथी कहाताहै जैसे कि, मिरच और वच। जो पदार्थ रसको बहानेवाली शिराओंको पिच्छिल और भारीपनसे रोककर शरीरमें भारीपन करताहै वह पदार्थ अभिष्यन्दी कहाताहै जैसे कि, दही। जिस द्रव्यके खानेसे खट्टी डकार आवें, प्यास लगे, हृदयमें दाह होय वह पदार्थ विदाही कहाताहै, इस द्रव्यका पाक बहुत देरसे होताहै। जो द्रव्य अपने साथ मिली हुई वस्तुओंके गुणोंको ग्रहण करै वह पदार्थ योगवाही कहाताहै जैसे कि, सहत, तेल, घी, पारा और लोहा आदि।

अथ वीर्यम्।

मृदुतीक्ष्णगुरुस्निग्धलघुरूक्षोष्णशीतलम्।
वीर्य्यमष्टविधंप्राहु शीतोष्णद्विविधंपरे॥

अर्थ—मृदु, तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध, लघु, रूक्ष, उष्ण और शीतल इन भेदोंसे वीर्य्य आठ प्रकारका है और किसी किसीके मतमें उष्ण और शीत इन भेदोंसे वीर्य्य दो प्रकारका है।

उष्णशीतवीर्य्ययोर्गुणानाह।

उष्ण पित्तकरोऽलघ्वोवातश्लेष्महरोलघु।
शीतल:पित्तहानल्य:कफवातकरोगुरु॥

अर्थ-उष्णवीर्य-पित्तकारक, बलवर्द्धक, वातकफनाशक और हल्का है। शीतवीर्य-पित्तनाशक, बलकारक, कफकारक और भारी है।

अपरञ्च।

यच्छीतवीर्य्यंगुरुपित्तहारिद्रव्यंनृणांवातकरंतदुक्तम्। यदुष्णवीर्य्यंलघुवातहारिश्लेष्मापहपित्तकरंचतत्स्यात्॥

अर्थ-जो द्रव्य शीतवीर्य्य हैं वह सब भारी, पित्तहारी और वातको करनवाले हैं, जो द्रव्य उष्णवीर्य्य हैं वह सब हलके, वातविनाशक, कफनाशक और पित्तको उत्पन्न करे हैं।

रसानांवीर्य्यभेदमाह।

रसा कट्वम्ललवणाउष्णवीर्यायथोत्तरम्। तिक्तकषायमधुराःशीतवीर्य्यायथोत्तरम्॥

अर्थ-कटु, अम्ल और लवण यह तीनों रस यथाक्रमसे उष्णवीर्य्य हैं अर्थात् चरपरे रससे खट्टा रस और खट्टे रससे लवण रस अधिक उष्णवीर्य्य है, तिक्त, कषाय और मधुर यह तीनों रस यथाक्रमसे शीतवीर्य्य हैं अर्थात् तिक्तरससे कषैला रस और कषैले रससे मधुररस अधिक शीतवीर्य्य है।

अथ विपाकः।

जाठरेणाग्निनायोगाद्यदुदेतिरसांतरम्। रसानांपरिणामान्तेसविपाकइतिस्मृतः॥ विपाकस्त्रिविधःप्रोक्तःस्वाद्वम्लकटुकात्मकः। मिष्टःपटुश्चमधुरोऽम्लोम्लंपच्यतेरसः॥ कषायकटुतिक्तानांपाकःस्यात्प्रायशःकटुः। श्लेष्मकृन्मधुरःपाकोवातपित्तहरोमतः॥ अम्लस्तुकुरुतेपित्तंवातश्लेष्मगदापहः। कटुःकरोतिपवनंकफपित्तंचनाशयेत॥ निःशेषपूर्वरसनांविपाकानांनिदर्शितः।

अर्थ-जठराग्निसंयोगसे जो रस उत्पन्न हो और फिर उस रसके परिणाम जो परिणाम होताहै उसको 'विपाक' कहतेहैं। विपाक तीन प्रकारका है, मधुर, चरपरा और अम्ल, मधुर और अम्ल रसवाले पदार्थोंका विपाक मधुरही होताहै, अम्लपदार्थोंका अम्ल होताहै तथा कटु, तिक्त और कषैले रसोंका विपाक चरपराही होताहै, मधुर विपाकवाला द्रव्य कफको उत्पन्न

करे है और वातपित्तको दूर करे है । अम्लविपाकवाले द्रव्य पित्तको उत्पन्न करे है और वातकफको हरे हैं । और कटुविपाकवाले द्रव्य वातको उत्पन्न करेहै और कफपित्तको दूर करे हैं । विशेषकरके यह विपाक रसोंसे दर्शाया है ।

प्रभाव ।

रसादिसाम्येयत्कर्मविशिष्टतत्प्रभावजम् । दन्तीरम्याद्यैस्तुल्यापिचित्रकस्यविरेचनी ॥ मधूकस्यचमृद्वीकाघृतक्षीरस्यदीपनम् । प्रभावस्तुयथाधात्रीलकुचस्यरसादिभिः ॥ समापिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम् । कचित्तुकेवलद्रव्यकर्मकुर्यात्प्रभावतः । ज्वरहन्तिशिरोबद्धासहदेवीजटायथा ॥

अर्थ—औषधीके रस, गुण, वीर्य और विपाकमें जो गुण होवे उनसे अलग अपने प्रभावसे जिस गुणको करे उसका नाम प्रभाव है, जैसे दन्ती और चीता दोनों रस वीयविपाकादिमें समानभी है, किन्तु दन्ती रेचक है और चीता नहीं, इसको प्रभाव कहतेहै । जैसे महुआ और दाख रसादिकमें समान है, पर दाख दस्तावर है । दूध और घी रसादिकमें समान है, परन्तु घी अग्निको दीपन करेहै । आमला और बडहर गुणोमें तुल्य है, किन्तु आमला त्रिदोषनाशक है कहीं कहीं केवल द्रव्य प्रभावसेही कार्य करता है, जैसे सहदेवीकी जडको मस्तकमें बांधनेमें ज्वर दूर होताहै, ये प्रभावज गुण जानने ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेऽनुपानादिवर्गः समाप्तः ॥ २१ ॥

अथ मिश्रवर्गः ।

ब्राह्मेमुहूर्तउत्तिष्ठेत्सुस्थोरक्षार्थमायुषः ।
शरीरचिन्तानिर्वर्त्त्यमेत्रकर्म्मसमाचरेत ॥

अर्थ—सुस्थ मनुष्य आयुकी रक्षाके लिये ब्राह्ममुहूर्त्तमें उठे, फिर शरीर सम्बन्धीय चिन्ता (मलमूत्रादित्याग) से निवृत्त अर्थात् निवटकर हितकारी करनेवाले कार्य्योंको विचारे ।

स्वभावतःप्रवृत्तानांमलादीनांजिजीविषुः ।
नवेगान्धारयेद्धीरःकामादीनान्तुधारयेत् ॥

अर्थ-जीवनकी इच्छा करनेवाले धीर मनुष्यको चाहिये कि, स्वभावसे आयेहुये मलमूत्रादिके वेगको धारण नहीं करे, क्योंकि इनको धारण करनेसे अनेक प्रकारके विकार उत्पन्न होकर नानाप्रकारके रोगोंको उत्पन्न करतेहैं और जो धारण करे तो कामादिके वेगोंको धारण करे, क्योंकि कामादिके वेगोंको धारण करनेसे संसारके रोगोंसे छूटकर उत्तम सुख (मोक्ष) को प्राप्त होताहै ।

पादमलमार्गाणां शौचगुणाः ।

मेध्यपवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
पादयोर्मलमार्गाणांशौचाधानमभीक्ष्णशः ॥

अर्थ-दोनों पाँव और मलके मार्ग सदैव साफ रखने चाहिये, क्योंकि इनको साफ रखनेसे मेधाकी वृद्धि होती है, पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयु बढ़तीहै और अलक्ष्मीका नाश होता है ।

जलपानगुणाः ।

कासश्वासातिसारज्वरवमथुकटीकोष्ठकुष्ठप्रकारान् मूत्राघातोदरार्शःश्वयथुगलशिरःकर्णनासाक्षिरोगान् । येचान्ये वातपित्तक्षयजकफकृताव्याधयः सन्तिजन्तोस्तांस्तानभ्यासयोगादपनयतिपयःपीतमन्तेनिशायाः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन प्रभातके समय उठकर जलपान करते हैं उनके खाँसी, श्वास, अतिसार, ज्वर, वमन, कटिरोग, कोष्ठरोग, अनेक प्रकारके कुष्ठरोग, मूत्राघात, उदररोग, बवासीर, सूजन, गल, मस्तक, कर्ण, नासिका और नेत्ररोगादि तथा वात, पित्त, क्षय और कफसे उत्पन्न हुए सर्वप्रकारके रोग दूर होजाते हैं ।

नासिकया जलपानगुणाः ।

विगतघननिशीथेप्रातरुत्थायनित्यं पिबतिखलुनरोयोघ्राणरन्ध्रेणवारि । सभवतिमतिपूर्णश्चक्षुषातार्क्ष्यतुल्योवलिपलितविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥

अर्थ-जो मनुष्य मेघरहित रात्रिके अन्तमें नित्य नासिकाके द्वारा जल पीते हैं, वे मनुष्य पूर्ण बुद्धिमान्, गरुडके समान नेत्रोंवाले और वलीपलित-रहित होजाते हैं तथा सब रोगासे छूटजाते हैं।

दन्तधावनविधि।

प्रातर्भक्ष्वाचमृद्वग्रकषायकटुतिक्तकम्।
भक्षयेद्दन्तधवनंदन्तमांसान्यबाधयन्॥

अर्थ-प्रातःकालमें कषाय, कटु और तिक्तरसवाले वृक्षोंके कोमल अग्रभागको लेकर उसके द्वारा इस प्रकार दतौन करै कि, जिससे मसूढे न छिलजायँ।

मतान्तरम्।

केप्यत्रकरवीरार्ककरञ्जबकुलासनान्।
दन्तकाष्ठार्थमन्येतुसर्वान्कटकिनोविदुः॥

अर्थ-कोई कोई वैद्य कनेर, आक, करज, मौलसिरी और सालकी लकडीके द्वारा दतौन करना चाहिये ऐसा कहते हैं। और कोई कोई सर्व प्रकारके काँटोंवाले वृक्षोंकी दतौन करनी चाहिये ऐसा कहते हैं।

निषिद्ध यथा।

गुवाकतालहिन्तालखर्जूरैःकेतकीमतैः।
नारिकेलेनताड्याचनकुर्य्याद्दन्तधावनम्॥

अर्थ-सुपारी, ताल, हिन्ताल, खजूर, केतकी, नारियल और ताडी (पत्रवृक्ष) इन सब वृक्षोंकी दतौन नहीं करनी चाहिये।

दन्तधावने दिङ्निर्णय।

मृत्युः स्याद्दक्षिणास्येनपश्चिमास्येनचामयः।
पूर्वास्येनोत्तरास्येनसम्पदोदन्तधावनात्॥

अर्थ-दक्षिणकी ओर मुख करके दतौन करनेसे मृत्यु, पश्चिमकी ओर मुखकरके दतौन करनेसे रोग और पूर्व तथा उत्तरकी ओर मुखकरके दतौन करनेसे सम्पदाकी वृद्धि होती है।

दन्तकाष्ठस्यदाननिषिद्धता।

अर्दितीकर्णशूलीचदन्तरोगीनवज्वरी।
शोषीकासीचमूर्च्छार्त्तोदन्तकाष्ठंविवर्जयेत्॥

अर्थ-अर्दितरोगी, जिसके कानमें शूलहो, दन्तरोगी, नवीन ज्वरवाला, शोषरोगवाला, कासरोगी और मूर्च्छारोगवाले मनुष्योंको दतौन नहीं करनी चाहिये ।

जिह्वालेखनगुणाः ।

जिह्वानिर्लेखनंरौप्यंसौवर्णंताम्रमायसम् । तन्मलापहरंशस्तंमृदुश्लक्ष्णंदशांगुलम् ॥ निहन्तिवक्त्रवैरस्यंजिह्वादन्ताश्रितामयम् । आरोग्यरुचिमाधत्तेसद्योदन्तविशोधनम् ॥

अर्थ-चांदी, सोना, तांबा अथवा लोहा इनकी नरम और निर्मल दशअंगुल लंबी जीभी बनाकर उसके द्वारा जिह्वाको घिसे, इसप्रकार करनेसे मुखकी विरसता, सबप्रकारके जिह्वा और दन्तरोग नाश होते हैं । आरोग्य और रुचिकी वृद्धि होतीहै दन्त शुद्ध होजाते हैं ।

चक्षुःप्रक्षालनविधिः ।

दन्तमूर्ध्वमधोघृष्ट्वाप्रातःसिञ्चेच्चलोचने ।
तोयपूर्णमुखस्तेनदृष्टिराशुप्रसीदति ।

अर्थ-प्रथम दांतोंके ऊर्ध्व और अधोभाग घिसकर फिर मुखमें जल भरकर उस जलसे नेत्रोंको सींचे इससे नेत्रोंमें प्रसन्नता उत्पन्न होतीहै ।

गण्डूषगुणाः ।

गण्डूषमपिकुर्वीतशीतेनपयसामुहुः । कफतृष्णामलहरं मुखान्तःशुद्धिकारकम् ॥ सुखोष्णोदकगंडूषःकफारुचिमलापहः । दन्तजाड्यहरश्चापिमुखलाघवकारकः ॥ विषमूर्च्छामदार्त्तानांशोषिणांरक्तपित्तिनाम् । कुपिताक्षिमलक्षीणरूक्षाणांमनशस्यते ॥

अर्थ-तदनन्तर ठंढे पानीसे कुल्ले करे, इससे कफ, तृषा और मुखका मल दूर होजाता है एवं भीतरसे मुख शुद्ध होजाता है उष्णजलके द्वारा कुल्ले करनेसे कफ, अरुचि, मल और दांतोंकी जड़ता दूर होताहै । विष, मूर्च्छा और मदसे व्याकुल हुए, शोष रोगवाले, रक्तपित्तरोगी, नेत्ररोगी, जिनका मन क्षीण होगयाहो और रूक्षशरीरवाले मनुष्योंको कदापि गरम पानीके द्वारा कुल्ले नहीं करने चाहिये ।

मुखप्रक्षालनगुणाः ।

मुखप्रक्षालनशीतपयसारक्तपित्तजित । मुखस्थपिडिका-
शोपनीलिकाव्यंगनाशनम् ॥ कुर्य्याद्वापिकदुष्णेनपयसा-
स्यविशोधनम् । कफवातहरस्निग्धमुखशोपविनाशनम् ॥

अर्थ-शीतलजलके द्वारा मुखको धोनेसे रक्तपित्त, मुखकी पिडिका, मुखशोप, नीलिका और व्यंग (झाई) दूर होती है । कुछ कुछ गरम जलसे मुखको शुद्ध करै इससे कफ वात दूर होकर स्निग्धता उत्पन्न होतीहै और मुखशोप दूर होताहै ।

अंजनधारणगुणानाह ।

नेत्रमंजनसंयोगाद्भवत्यमलतारकम् ।
दृष्टिर्निराकुलाभातिनिर्मलश्चन्द्रमायथा ॥

अर्थ-नेत्रोंमें अंजन लगानेसे नेत्र निर्मल तारेयुक्त होजाते हैं अर्थात् आँखों के तारे साफ होजाते हैं, दृष्टि स्थिर और चन्द्रमाके समान निर्मल होजाती है ।

रात्रौजागरितश्रान्तश्छर्दितोभुक्तवांस्तथा ।
ज्वरातुरःशिरःस्नातःकदाचिन्नतदाचरेत् ॥

अर्थ-रातमें जागाहो, थकाहुआहो जिसको वमन हुईहो, ज्वरसे व्याकुल और जिसने शिरसे स्नान कियाहो, इतने मनुष्योंको कदापि अंजन नहीं लगाना चाहिये ।

कंकतीगुणाः ।

कंकतीकान्तिजननीकण्डूघ्नीमूर्द्धरोगजित् ।
केशप्रसादनीकेश्यारजोजन्तुमलापहा ॥

अर्थ-कंकती-कंघी, कंघा आदिसे बालोंको काढना कान्तिजनक, कण्डूरोगको हरनेवाला, शिरोगेगको दूर करनेवाला तथा रज, जुयें और केशोंके मलको दूर करैहै, केशोंको बढानेवाली और केशोंको हितकारी है ।

उष्णीपधारणगुणाः ।

उष्णीपःशिरसाधार्य्यंप्रभातेलघुनित्यशः ।
केश्यचक्षुष्यमायुष्यंरजःशीतोष्णवारणम् ॥

अर्थ-प्रतिदिन प्रभातके समय बारीक वस्त्रकी हलकी पगडी धारण करे पगडी-वालोंको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी तथा धूल, शीत और गरमीको दूर करती है ।

श्मश्रुनखादिच्छेदनगुणाः ।

पञ्चरात्रान्नखश्मश्रुकेशरोमाणिकर्त्तयेत् ।
पौष्टिकबल्यमायुष्यंशौचरूपविराजनम् ॥
केशश्मश्रुनखादीनांकृन्तनमप्रसादनम् ।

अर्थ-पाच पाच दिनके पश्चात् नख, डाढी, केश और रोमोंको कटवातारहे अर्थात् हजामत बनवातारहै । बाल, डाढी, मूँछ और नखोंको कतरनेसे शरीर कान्तिवान् होता है, पुष्टि, बल और आयुकी वृद्धि होती है तथा इससे पवित्रता और सुन्दरता उत्पन्न होतीहै ।

उत्पाटयेत्तुलोमानिनासायानकदाचन ।
तदुत्पाटनतोदृष्टेर्दौर्बल्यत्वग्याभवेत् ।

अर्थ-नाकके बालोंका कदापि न उखाडे, क्योंकि नाकके बाल उखाडनेसे दृष्टि कम होजाती है ।

प्रभातदृश्याः ।

वैद्य पुरोहितोमन्त्रीदैवज्ञोऽत्रचतुर्थकः ।
प्रभातकालेद्रष्टव्यानित्यस्वश्रियमिच्छता ॥

अर्थ-ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवाले मनुष्यको प्रतिदिन प्रभातके समय वैद्य, पुरोहित, मन्त्री और दैवज्ञ (सिद्धान्तवेत्ताज्योतिषी) का दर्शन करना चाहिये ।

अग्निसेवनगुणाः ।

अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः ।
आमाभिष्यन्दशमनोरक्तपित्तप्रकोपनः ॥

अर्थ-अग्निका सेवन करनेसे वात, कफ, स्तम्भ, शीत और कम्प तथा आम और अभिष्यन्द नाशको प्राप्त होते हैं तथा रक्तपित्त कुपित होते हैं ।

पूर्वादिवातगुणाः ।

पूर्व पित्तानिलौकुर्यात्पश्चाय कफानिलौ ।

अर्थ-धूमको सेवन करनेसे पित्त और वायुकी वृद्धि होती है और हिमको सेवन करनेसे कफ और वात बढती है ।

शिशिरगुणाः ।

शिशिरशीतलरूक्षवृष्यवातप्रकोपनम् ।

अर्थ-शिशिर अर्थात् ओस-शीतल, रूखी, धातुवर्द्धक और वातको कुपित करनेवाली है ।

कुज्झटिगुणाः ।

रूक्षातमोगुणप्रायाकुज्झटि कफपित्तला ॥

अर्थ-कुज्झटिका (कोल, कुहर, कुहासा) रूखा, तमोगुणयुक्त और कफपित्तकारक है ।

छत्रगुणानाह ।

छत्रवर्षातपरजोवातावश्यायनाशनम् ।
वर्ण्यंदृष्टिकरबल्यगुम्याबरणशंकरम् ॥

अथ-छत्र-छाता वा छत्री-वर्षा, धूप, धूल, वायु और ओसका दूर करे है तथा वर्ण और दृष्टिको बढानेवाली, बलकारक, मंगलजनक, पिशाचादि बाधाको दूर करनेवाली और मनुष्योंका आवरण है ।

वृष्टिगुणानाह ।

वृष्टिर्निष्यदिनीशीतानिद्राश्लेष्मबलप्रदा ॥
मलापहारिणीवायुदायिनीवह्निवारिणी ॥

अर्थ-वर्षा-कफादिकको टपकानेवाली, शीतल, निद्रा, श्लेष्म और बलको बढानेवाली है, मलनाशक, वायुवर्द्धक और मन्दाग्निकारक है ।

आतपगुणानाह ।

आतप कटुकोरूक्ष स्वेदमूर्च्छातृपावह ।
दाहवैवर्ण्यजननोनेत्ररोगप्रकोपनः ॥

अर्थ-सूर्यकी धूप-चरपरी, रूखी तथा पसीना, मूर्च्छा, दाह, विवर्णता और नेत्ररोगोंको उत्पन्न करे है ।

छायागुणानाह ।

छायादाहश्रमस्वेदहरमधुरशीतला ॥

अर्थ-छाया-दाह, श्रम और पसीनेको दूर करनेवाली है तथा मधुर और शीतल है ।

अर्थ-प्रतिदिन प्रभातके समय बारीक वस्त्रकी हल्की पगडी धारण करे पगडी-बालोंको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी तथा धूल, शीत और गर्मीको दूर करती है।

श्मश्रुनखादिकर्त्तनगुणाः।

पञ्चरात्रान्नखश्मश्रुकेशरोमाणिकर्त्तनेत्।
पौष्टिकंबल्यमायुष्यंशौचरूपविराजनम्॥
केशश्मश्रुनखादीनांकर्त्तनंसंप्रसादनम्।

अर्थ-पांच पांच दिनके पश्चात् नख, डाढी, केश और रोमोंको कटवावारहे अर्थात् हजामत बनवातारहे। बाल, डाढी, मूंछ और नखादिको कतरनेसे शरीर कांतिवान् होता है, पुष्टि, बल और आयुकी वृद्धि होती है तथा इससे पवित्रता और सुन्दरता उत्पन्न होतीहै।

उत्पाटयेत्तुलोमानिनासायांनकदाचन।
तदुत्पाटनतोदृष्टेर्दौर्बल्यंत्वरयाभवेत्॥

अर्थ-नाकके बालोंको कदापि न उखाडे, क्योंकि नाकके बाल उखाडनेसे दृष्टि कम होजाती है।

प्रभातद्रष्टव्याः।

वैद्यःपुरोहितोमन्त्रीदैवज्ञोऽत्रचतुर्थकः।
प्रभातकालेद्रष्टव्यानित्यस्वश्रियमिच्छता॥

अर्थ-ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवाले मनुष्योंको प्रतिदिन प्रभातके समय वैद्य, पुरोहित, मंत्री और दैवज्ञ (सिद्धान्तवेत्ता ज्योतिषी) का दर्शन करना चाहिये।

अग्निसेवनगुणाः।

अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः।
आमाभिष्यन्दशमनोरक्तपित्तप्रकोपनः॥

अर्थ-अग्निके सेवन करनेसे वात, कफ, स्तम्भ, शीत और कम्प तथा आम और अभिष्यन्द इनको नाश होवे हैं तथा रक्तपित्त कुपित होते हैं।

धूमादिगुणाः।

धूम पित्तानिलौकुर्यादवश्यायःकफानिलौ।

अर्थ-धूमको सेवन करनेसे पित्त और वायुकी वृद्धि होती है और हिमको सेवन करनेसे कफ और वात बढती है ।

शिशिरगुणा ।

शिशिरशीतलरूक्षवृष्यवातप्रकोपनम् ।

अर्थ-शिशिर अर्थात् ओस-शीतल, रूखी, धातुवर्द्धक और वातको कुपित करनेवाली है ।

कुज्झटिगुणा ।

रूक्षातमोगुणप्रायाकुज्झटिःकफपित्तला ॥

अर्थ-कुज्झटिका (कोल, कुहर, कुहासा) रूखा, तमोगुणयुक्त और कफपित्तकारक है ।

छत्रगुणानाह ।

छत्रवर्षातपरजोवातावश्यायनाशनम् ।
वर्ण्यंदृष्टिकरबल्यंगुस्यावरणशंकरम् ॥

अर्थ-छत्र-छाता वा छत्री-वर्षा, धूप, धूल, वायु और ओसको दूर करे है तथा वर्ण और दृष्टिको बढानेवाली, बलकारक, मंगलजनक, पिशाचादि बाधाको दूर करनेवाली और मनुष्योंका आवरण है ।

वृष्टिगुणानाह ।

वृष्टिर्निष्यन्दिनीशीतानिद्राश्लेष्मबलप्रदा ॥
मलापहारिणीवायुदायिनीवह्निवारिणी ॥

अर्थ-वर्षा-कफादिकको टपकानेवाली, शीतल, निद्रा, श्लेष्म और बलको बढानेवाली है, मलनाशक, वायुवर्द्धक और मन्दाग्निकारक है ।

आतपगुणानाह ।

आतपःकटुकोरूक्षः स्वेदमूर्च्छातृषावहः ।
दाहवैवर्ण्यजननोनेत्ररोगप्रकोपनः ॥

अर्थ-सूर्यकी धूप-चरपरी, रूखी तथा पसीना, मूर्छा, दाह, विवर्णता और नेत्ररोगोंको उत्पन्न करे है ।

छायागुणानाह ।

छायादाहश्रमस्वेदहृन्मधुरशीतला ॥

अर्थ-छाया-दाह, श्रम और पसीनेको दूर करनेवाली है तथा मधुर और शीतल है ।

अन्यच ।

छायातमोऽस्रपित्तार्त्तिनिहन्यात्स्निग्धशीतला ।
विशेषतोवटच्छायाबलवर्णप्रसादनी ॥

अर्थ-छाया-तम, रुधिरविकार और पित्तकी पीडाको शान्त करे है स्निग्ध और शीतल है विशेषकरके वटकी छाया बलकारक तथा वर्णको प्रसन्न करनेवाली है ।

यष्टिधारणगुणानाह ।

स्खलतःसम्प्रतिष्ठानशत्रूणाञ्चनिरोधनम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यभयघ्नदण्डधारणम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण करना-स्खलितपद प्रतिष्ठापक और शत्रुविरोधक है तथा बलवर्द्धक और भयनाशक है ।

अन्यच्च ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यविष्टम्भवीर्य्यकृत ।
रक्षःसर्पादिभयजिद्विशेषात्स्थाविरेमतम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण-उत्साह, स्थिरता, विष्टम्भ और वीर्यको उत्पन्न करै है और राक्षस तथा सर्पादिकोंके भयको दूर करै है, यह बुढापेमें हितकारी है ।

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामोहिसदापथ्योबलिनांस्निग्धभोजिनाम् ।सचशीते वसन्तेचतेषांपथ्यतमोमतः॥सर्वेष्वृतुषुसंर्दिमत्यैरात्महि-तार्थिभिः।शक्त्यर्द्धेनचकर्त्तव्योव्यायामोहन्त्यतोऽन्यथा ॥ हृदिस्थानस्थितोवायुर्यदावक्त्रंप्रपद्यते । शक्त्यर्द्धस्य तु तल्लिङ्गं… [illegible]
व्यायामकर्मसामर्थ्यंस्थैर्यक्लेशसहि-ष्णुता । दोषक्षयोग्निवृद्धिश्चव्यायामादुपजायते ॥ व्याया-मधुर्नोनित्यंनिरुद्धमपिभोजनम् ।विदग्धमविदग्धवानि-र्दोषपरिपच्यते ॥ नचव्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्ष-णम् । नचव्यायामिनमर्त्यमर्दयन्त्यरयोबलात् ॥ नचैनं सहसाक्रम्यजरासमधिगच्छति । व्यायामक्षुण्णगात्रस्य-

व्यामुद्वर्तितस्यच॥व्याधयोनोपसर्पन्तिनैनतेयमिवोरगाः ।
वयोबलशरीरंचदेशकालमथापिच ॥ समीक्ष्यकुर्याद्व्या-
याममुक्त्याशक्त्याचबुद्धिमान् । रक्तपित्तीक्षयीशोषीका-
सीश्वासीक्षतातुरः ॥भुक्तवान्स्त्रीषुचक्षीणोव्यायामंपरिवर्ज-
येत् । वातपित्तामयीबालोवृद्धोजीर्णीचतत्यजेत् ॥ अति-
व्यायामतःकासोरक्तपित्तप्रतानकः । श्रमःक्लमःक्षयस्तृ-
ष्णाज्वरश्छर्दिश्चजायते ॥

अर्थ—स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्योंके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और बसन्तऋतुमें ही हितकारीहै परन्तु अपना हित चाहनेवाले मनुष्य सब ऋतुओंमें आधी शक्तिके अनुसार कसरत करें इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योंको नष्ट करदेताहै। आधी शक्ति उसको कहतेहैं जिसमें कोख, माथा और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे। कसरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्य्यमें सामर्थ्य, स्थिरता और क्लेशसहिष्णुता (क्लेशका सहलेना) उत्पन्न होतीहै। दोष (वातपित्तादि) क्षय होतेहैं, अग्नि बढतीहै, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुछभी खाले वह सब दोषरहित होकर पच जातेहैं, स्थूलताका नाश करनेकेलिये कसरतकी समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है। अनुलोम कसरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढाई नहीं करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक बुढापा नहीं आसक्ता। जिस प्रकार सर्पोंका समूह गरुडपर चढाई नहीं करसक्ता उसी प्रकार रोगोंका समूहभी उस पुरुषपर जिसने कसरत करके अपना शरीर सुखायाहै आक्रमण नहीं करसक्ता, बुद्धिमान् मनुष्योंको चाहिये कि आयु, बल, शरीर, देश, काल इन युक्ति और शक्तियोंको भलीभांतिसे विचारकर कसरत करें रक्तपित्त, क्षय, शोष, खाँसी, श्वास और क्षतरोगी और भुक्तवान् तथा मैथुन करनेसे क्षीण होगये अंग जिनके यह सब कसरत न करें। वातपित्तरोगी, बालक (सोलह वर्षपर्यन्त) वृद्ध (सत्तर वर्षसे पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्योंको कसरत नहीं करनी चाहिये। अत्यन्त कसरत करनेसे रक्तपित्त, खाँसी, श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर वमनादिरोग उत्पन्न होतेहैं।

अन्यच्च ।

छायातमोऽस्रपित्तार्त्तिनिहन्यात्स्निग्धशीतला ।
विशेषतोवटच्छायानलवर्णप्रसादनी ॥

अर्थ-छाया-श्रम, रुधिरविकार और पित्तकी पीडाको शान्त करै है । स्निग्ध और शीतल है विशेषकरके वडकी छाया पचकारक तथा वर्णको प्रसन्न करनेवाली है ।

यष्टिधारणगुणानाह ।

स्खलनमप्रतिष्ठानशत्रूणाञ्चविरोधनम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यभयघ्नदण्डधारणम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण करना-स्खलित प्रतिष्ठापक और शत्रुविरोधक है तथा अवष्टम्भक और भयनाशक है ।

अन्यच्च ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यविष्टम्भवीर्यकृत् ।
रक्षसर्पादिभयजिद्विशेषात्स्यान्निर्गमनम ॥

अर्थ-लाठीका धारण-उत्साह, स्थिरता, विष्टम्भ और वीर्यको उत्पन्न करै है और राक्षस तथा सर्पादिके भयको दूर करै है, एवं बुढापेमें हितकारी है ।

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामोहिसदापथ्योबलिनांस्निग्धभोजिनाम् । सचशीते वसन्तेचतेषांपथ्यतमोमतः ॥ सर्वेष्वृतुष्वहरहःपुम्भिरात्महितैषिभिः । बलस्यार्द्धेनकर्त्तव्योव्यायामोहन्त्यतोऽन्यथा ॥ कुक्षौललाटेग्रीवायांयदास्वेदःप्रवर्त्तते । बलार्द्धंतंविजानीयाद्व्यायामस्यचसर्वदा ॥ लाघवंकर्मसामर्थ्यंस्थैर्यंक्लेशसहिष्णुता । दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्चव्यायामादुपजायते ॥ व्यायाममकुर्वतोनित्यंविरुद्धमपिभोजनम् । विदग्धमविदग्धंवानिर्दोषंपरिपच्यते ॥ नचव्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्षणम् । नचव्यायामिनंमर्त्यमर्दयन्त्यरयोबलात् ॥ नचैनं सहसाक्रम्यजरासमधिगच्छति । व्यायामक्षुण्णगात्रस्य-

व्यामुद्वर्तितस्यच॥व्याधयोनोपसर्पन्तिनेनतेयमिवोरगाः। वयोबलशरीरंचदेशकालमथापिच॥ समीक्ष्यकुर्याद्व्यायामयुक्त्याशक्त्याचबुद्धिमान्। रक्तपित्तीक्षयीशोषीकासीश्वासीक्षतातुरः॥भुक्तवान्स्त्रीषुचक्षीणोव्यायामंपरिवर्जयेत्। वातपित्तामयीबालोवृद्धोजीर्णीचतंत्यजेत्॥ अतिव्यायामतःकासोरक्तपित्तप्रतानकः। श्रम क्लम क्षयस्तृष्णाज्वरश्छर्दिश्चजायते॥

अर्थ-स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्योंके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और वसन्तऋतुमें ही हितकारीहै परन्तु अपना हित चाहनेवाले मनुष्य सब ऋतुओंमें आधी शक्तिके अनुसार कसरत करें इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योंको नष्ट करदेताहै। आधी शक्ति उसको कहतेहैं जिसमें कोख, माथा और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे। कसरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्य्यमें सामर्थ्य, स्थिरता और क्लेशसहिष्णुता (क्लेशका सहलेना) उत्पन्न होतीहै। दोष (वातपित्तादि) क्षय होतेहैं, अग्नि बढतीहै, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुछभी खाले वह सब दोषरहित होकर पच जातीहै, स्थूलताका नाश करनेकेलिये कसरतकी समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है। शत्रुलोग कसरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढाई नहीं करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक बुढापा नहीं आसक्ता। जिस प्रकार सर्पोंका समूह गरुडपर चढाई नहीं करसक्ता उसी प्रकार रोगोंका समूहभी उस पुरुषपर जिसने कसरत करके अपना शरीर सुखायाहै आक्रमण नहीं करसक्ता, बुद्धिमान मनुष्योंको चाहिये कि आयु, बल, शरीर, देश, काल इन युक्ति और शक्तियोंको भलीभांतिसे विचारकर कसरत करे रक्तपित्त, क्षय, शोष, खांसी, श्वास और क्षतरोगी और भुक्तवान् तथा मैथुन करनेसे क्षीण होगये हैं जिनके यह सब कसरत न करें। वातपित्तरोगी, बालक (सोलह वर्षपर्यन्त) वृद्ध (सत्तर वर्षसे पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्योंको कसरत नहीं करनी चाहिये। अत्यन्त कसरत करनेसे रक्तपित्त, खांसी श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर वमनादिरोग उत्पन्न होतेहैं।

अन्यच्च।

छायातमोऽस्रपित्तार्त्तिनिहन्त्री स्निग्धशीतला।
विशेषतो वटच्छाया बलवर्णप्रसादनी॥

अर्थ-छाया-श्रम, रुधिरविकार और पित्तकी पीडाको शान्त करती है स्निग्ध और शीतल है विशेषकरके बडकी छाया बलकारक तथा वर्णको प्रसन्न करनेवाली है।

यष्टिधारणगुणानाह।

स्खलतः सम्प्रतिष्ठानं शत्रूणाञ्च विरोधनम्।
अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम्॥

अर्थ-लाठीका धारण करना-स्खलितपद प्रतिष्ठापक और शत्रुविनाशक है तथा अवष्टम्भक और भयनाशक है।

अन्यच्च।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यविष्टम्भवीर्य्यकृत्।
रक्षः सर्पादिभयजिद्विशेषात्स्थाविरे मतम्॥

अर्थ-लाठीका धारण-उत्साह, स्थिरता, विष्टम्भ और वीर्यको उत्पन्न करे है और राक्षस तथा सर्पादिकोंके भयको दूर करे है, पर बुढापेमें हितकारी है।

अथ व्यायामगुणाः।

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम्। स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमो मतः॥ सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुंभिरात्महितार्थिभिः। बलस्यार्द्धेन कर्त्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा॥ कुक्षौ ललाटे नासायां यदा घर्मः प्रवर्त्तते। अतः परं न निगानी-यान्नाद्गमनमेव च॥ लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहि-ष्णुता। दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते॥ व्याया-मं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम्। विदग्धमविदग्धं वा नि-र्दोषं परिपच्यते॥ न च व्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्ष-णम्। न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात्॥ न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिगच्छति। व्यायामक्षुण्णगात्रस्य-

व्यामुद्वर्तितस्यच॥व्याधयोनोपसर्पन्तिनेनतेयमिवोरगाः। वयोबलंशरीरंचदेशकालमथापिच॥ समीक्ष्यकुर्याद्व्यायामयुक्त्याशक्त्याचबुद्धिमान्। रक्तपित्तीक्षयीशोषीकासीश्वासीक्षतातुरः॥भुक्तवान्स्त्रीषुचक्षीणोव्यायामपरिवर्जयेत्। वातपित्तामयीबालोवृद्धोजीर्णीचतत्यजेत्॥ अतिव्यायामतःकासोरक्तपित्तप्रतानकः। श्रमः क्लमःक्षयस्तृष्णाज्वरश्छर्दिश्चजायते॥

अर्थ–स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान मनुष्योंके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और वसन्तऋतुमें ही हितकारीहै परन्तु अपना हित चाहनेवाले मनुष्य सब ऋतुओंमें आधी शक्तिके अनुसार कसरत करें इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योंको नष्ट करदेताहै। आधी शक्ति उसको कहतेहैं जिसमें कोख, माथा और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे। कसरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्य्यमें सामर्थ्य, स्थिरता और क्लेशसहिष्णुता (क्लेशका सहलेना) उत्पन्न होतीहै। दोष (वातपित्तादि) क्षय होतेहैं, अग्नि बढ़तीहै, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुछभी खाले वह सब दोषरहित होकर पक जातीहै, स्थूलताका नाश करनेकेलिये कसरतकी समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है। शत्रुलोग कसरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढ़ाई नहीं करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक बुढ़ापा नहीं आसक्ता। जिस प्रकार सर्पोंका समूह गरुडपर चढ़ाई नहीं करसक्ता उसी प्रकार रोगोंका समूहभी उस पुरुषपर जिसने कसरत करके अपना शरीर सुखायाहै आक्रमण नहीं करसक्ता, बुद्धिमान् मनुष्योंको चाहिये कि आयु, बल, शरीर, देश, काल इन युक्ति और शक्तियोंको भलीभांतिसे विचारकर कसरत करें रक्तपित्त, क्षय, शोष, खाँसी, श्वास और प्रदररोगी और भुक्तवान तथा मैथुन करनेसे क्षीण होगये अगर जिनके यह सब कसरत न करें। वातपित्तरोगी, बालक (सोलह वर्षपर्यन्त) वृद्ध (सत्तर वर्षसे पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्योंको कसरत नहीं करनी चाहिये। अत्यन्त कसरत करनेसे रक्तपित्त, खाँसी श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर वमनादिरोग उत्पन्न होतेहैं।

अन्यच्च ।

छायातपोऽस्रपित्तार्त्तिनिहन्त्यात्स्निग्धशीतला ।
विशेषतोवटच्छायाबलवर्णप्रसादनी ॥

अर्थ-छाया-श्रम, रुधिरविकार और पित्तकी पीडाको शान्त करे है स्निग्ध और शीतल है विशेषकरके वडकी छाया बलकारक तथा वर्णको प्रसन्न करनेवाली है ।

यष्टिधारणगुणानाह ।

स्खलतः संप्रतिष्ठानं शत्रूणां च निषूदनम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम् ॥

अर्थ लाठीका धारण करना-स्खलितपद प्रतिष्ठापक और शत्रुनिषूदन है तथा बलवर्द्धक और भयनाशक है ।

अन्यच्च ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यविष्टम्भवीर्यकृत् ।
रक्षःसर्पादिभयजिद्विशेषात्स्थविरे हितम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण-उत्साह, स्थिरता, विष्टम्भ और वीर्यको उत्पन्न करे है और राक्षस तथा सर्पादिकोंके भयको दूर करे है, वा बुढापेमें हितकारी है ।

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम् । स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमो मतः ॥ सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुम्भिरात्महितार्थिभिः । बलस्यार्द्धेन कर्त्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा ॥ कुक्षौ ललाटे नासायां यदा घर्मं प्रवर्त्तते । बलार्द्धेन विजानीयाद्व्यायामस्य च तत्र ॥ लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं दुःखसहिष्णुता । दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते ॥ व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् । विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥ न च व्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्षणम् । न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात् ॥ न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति । व्यायामदृढगात्रस्य-

व्यामुद्वर्तितस्यच॥व्याधयोनोपसर्पन्तिवैनतेयमिवोरगाः । वयोबलंशरीरंचदेशकालमथापिच ॥ समीक्ष्यकुर्याद्व्यायामथुक्त्याशक्त्याचबुद्धिमान् । रक्तपित्तीक्षयीशोषीकासीश्वासीक्षतातुरः ॥भुक्तवान्स्त्रीषुचक्षीणोव्यायामंपरिवर्जयेत् । वातपित्तामयीबालोवृद्धोजीर्णीचतत्यजेत् ॥ अतिव्यायामतः कासोरक्तपित्तप्रतानकः । श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णाज्वरश्छर्दिश्चजायते ॥

अर्थ–स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान मनुष्योंके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और वसन्तऋतुमें ही हितकारीहै परन्तु अपना हित चाहनेवाले मनुष्य सब ऋतुओंमें आधी शक्तिके अनुसार कसरत करें इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योंको नष्ट करदेताहै। आधी शक्ति उसको कहतेहैं जिसमें कोख, माथा और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे। कसरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्यमें सामर्थ्य, स्थिरता और क्लेशसहिष्णुता (क्लेशका सहलेना) उत्पन्न होतीहै । दोष (वातपित्तादि) क्षय होवेंहैं, अग्नि बढतीहै, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुछभी खाले वह सब दोषरहित होकर पच जातीहै, स्थूलताका नाश करनेकेलिये कसरतकी समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है । शत्रुलोग कसरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढाई नहीं करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक बुढापा नहीं आसक्ता । जिस प्रकार सर्पोंका समूह गरुडपर चढाई नहीं करसक्ता उसी प्रकार रोगोंका समूहभी उस पुरुषपर जिसने कसरत करके अपना शरीर सुखायाहै आक्रमण नहीं करसक्ता, बुद्धिमान मनुष्योंको चाहिये कि, आयु, बल, शरीर, देश, काल इन युक्ति और शक्तियोंका भलीभांतिसे विचारकर कसरत करे रक्तपित्त, क्षय, शोष, खाँसी, श्वास और क्षतरोगी और भुक्तवान तथा मैथुन करनेसे क्षीण होगये अर्थात् जिनके यह सब कसरत न करें । वातपित्तरोगी, बालक (सोलह वर्षपर्यन्त) बूढा (सत्तर वर्षसे पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्योंको कसरत नहीं करनी चाहिये । अधिक कसरत करनेसे रक्तपित्त, खाँसी, श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर वमनादिरोग उत्पन्न होवेंहैं ।

अपिच।

सामर्थ्यंसकलक्रियासुलघुतामगेषुदीप्तिंपरामग्नेःपाटवमि-न्द्रियेषुलघुतांछेदपरंमेदस ।उत्साहमनस शरीरदृढतांशा-न्तिबलाढ्यापदांव्यायाम·शिशिरेवसन्तसमयेकुर्याद्धिमेसे-वनम्॥वातामय पित्तरुजान्वितश्चबालोतिवृद्धोतिकृशोति-जीर्ण·। मन्दानल स्निग्धरसान्नवर्ज्यांव्यायामकालेषुविव-र्जनीया ॥ स्थाल्यां यथानावरणाननायांनवह्नितायान·चसाधुपाक । अनाप्तनिद्रस्य तथानरेन्द्रव्यायामहीन-स्यनचान्नपाकः ॥

अर्थ-व्यायाम (कसरत) का करना सब कामोंमें सामर्थ्य, शरीरमें हलकापन, देहमें प्रकाश, अग्निको दीपन, इन्द्रियोंमें स्फुर्ति, मेदाका नाश, मनमें उत्साह, शरीरमें दृढता दुःखोंकी शान्ति और बलको करे है। व्यायाम-शिशिर और वसन्तऋतुमें करनी चाहिये। वात और पित्तरोगी, बालक, अत्यंत वृद्ध, अत्यंत कृश और अधिक जीर्ण हुई मन्दाग्निवाला और स्निग्ध भोजन न करनेवाला, इन सबको व्यायाम नहीं करनी चाहिये। जिस प्रकार पतीलीके मुखपर पात्र नहीं ढकने तथा उसको लकड़ियोंसे नहीं जलानेसे अन्न अच्छे प्रकारसे नहीं पकता है उसी प्रकार हे राजन्! निद्रा और व्यायाम रहितका अन्न अच्छे प्रकार नहीं पकता है।

संवाहनगुणाः।

संवाहनंश्रमहरंवृष्यंनिद्रासुखप्रदम्।
मांसासृक्त्वक्प्रसादनंकुर्याद्वातकफापहम्॥

अर्थ-शरीरको मर्दन करना-श्रमनाशक, धातुओंको पुष्ट करनेवाला, निद्रा और सुखको देनेवाला, मांस, रुधिर और त्वचाको निर्मल करनेवाला तथा वातकफनाशक है।

शरीरोद्वर्तनगुणाः।

उद्वर्तनंहरेच्छ्लेष्मंकण्डूविनाशनम्।
तेजनत्वग्गतस्याग्नेःशिरामुखविरेचनम्॥

अर्थ-शरीरको घिसनेसे दृष्टि बढती है तथा कण्डू और कोष्ठरोग दूर होता है, त्वचामें स्थित जो अग्नि उसके तेजकी वृद्धि होती है और शिराओंमें सुखकी वृद्धि होती है ।

पथभ्रमणगुणमाह ।

अध्वामेद कफस्थौल्यसौकुमार्यविनाशन ।

अर्थ-पथभ्रमण करनेसे मेद, कफ, स्थूलता और सुकुमारता नष्ट होती है ।

अतिभ्रमणगुणा ।

यत्तुचङ्क्रमणनातिदेहपीडाकरंभवेत् ।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥

अर्थ-जिस भ्रमण करनेसे शरीरमें क्लान्ति उत्पन्न न होवे उस भ्रमणसे आयु, बल, मेधा और अग्निकी वृद्धि होती है और इन्द्रियोंमें प्रफुल्लता उत्पन्न होती है ।

पादुकाधारणगुणा ।

पादत्रधारणवृष्यमोजस्यंचक्षुषोर्हितम् ।
सुखप्रचारमायुष्यबल्यपादरुजापहम् ॥

अर्थ-पादुकाधारण अर्थात् जूतेके पहिरनेसे वीर्य और ओजकी वृद्धि होती है, नेत्रोंको हितकारी, गमनके समय सुखकारी, आयु और बलवर्द्धक तथा पाँवोंकी पीडाको दूर करे है ।

अधारणेदोषापथा ।

पादाभ्यामनुपानद्भ्यांनृणांचङ्क्रमणसदा ।
अनारोग्यमनायुष्यमिन्द्रियघ्नमदृष्टिकृत् ॥

अर्थ-सर्वदा विनाजूतेके भ्रमणसे अर्थात् नगे पाँवों फिरनेसे आरोग्यता, आयु, इन्द्रिय और दृष्टिशक्ति नाश होती है ।

हस्त्यादिगमनगुणा ।

हस्त्यश्वरथदोलाद्यैर्भ्रमणवातकोपनम् ।
स्थितीकरणमगानांबल्यवह्निविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-हस्ती, अश्व, रथ और डोला आदिमें चढकर भ्रमण करनेसे वात कुपित होती है, सम्पूर्ण अङ्ग स्थिर होते हैं, बल बढता है और जठराग्नि बढती है ।

विश्रामगुणाः ।

विश्रामो बलकृत्स्वेदश्रमनुत्सौख्यदः शुभः ॥

अर्थ-विश्राम अर्थात् आराम करना-बलकारक तथा स्वेद, श्रम इनको दूर करनेवाला और सुख्यदाता तथा मंगलजनक है ।

पादप्रक्षालनगुणाः ।

पादप्रक्षालनं पादमलरोगश्रमापहम् ।
दृष्टिप्रसादनं वृष्यं रक्षोघ्नं प्रीतिवर्द्धनम् ॥

अर्थ-पाँवोंको धोनेसे पैरोंका मैल, पैरोंका रोग और श्रम दूर होता है, दृष्टिशक्तिको प्रसन्न करे है, वीर्यवर्द्धक, रक्षनाशक और प्रीतिवर्द्धक है ।

नानावातगुणानाह ।

प्राग्वातो मधुरः क्षारो वह्निमान्द्यकरो गुरुः । वैरस्यगौरवोष्णा-
श्यग्निकरोऽल्पोऽपि वीर्यपुच ॥ भग्नेऽपीष्टः क्षताद्येषु त्वावभय-
धुरोगकृत् । सन्निपातज्वरश्वासत्वग्दोषार्शोविषक्रिमीन् ॥
कोपयेदामवातञ्च रक्तमवातकारक ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी पवन अर्थात् पुरवाई हवा-मधुर, खारी, मन्दाग्निकारक, भारी, औषधि और अन्नमें विरसता, गुरुता और उष्णता करनेवाली, भग्न और क्षतादि रोगोंमें हितकारी, नासास्राव, मूत्र, सन्निपातज्वर, श्वास, त्वचाके विकार, बवासीर, विष, कृमि और आमवातादि रोगोंको बढानेवाली और भगको मथन करे है ।

तथाच ।

शीतोऽतिमाधुर्यगुणः प्रयुक्तो नातप्रकोपी बलकृद्विशेषात् ।
वाताधिकानां कफशोफिनां च प्राचीप्रवृत्तः पवनो निरस्तः ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी पवन-शीतल, अत्यंत मधुरतागुण, बलको वृद्धि करनेवाली, बलकारक यह वायु विशेष करके वात अधिकवाले होवें तथा कफ सोजवालोंको अहितकारी है ।

आग्नेयपवनगुणाः ।

विदाहकृत्तीक्ष्णरूक्षोष्णः स्यात्स मर्माणि रोगकारी ।
सुशीतलः शोषकरो विनाशनो वाग्नेयसमीरणश्च ।

अर्थ-अग्निकोणकी पवन-कुछ २ कडवी, मधुररसान्वित, कफ और वातसे उत्पन्न हुये रोगोंको करनेवाली, शीतल और सूजन युक्त व्रणोंको अहितकारी है।

दक्षिणमारुतगुणाः।

दाक्षिणोमारुतोबल्यश्चक्षुष्य'सस्यघातक। मधुरश्चविदाहीचकषायान्तरसोलघु ॥ रक्तपित्तप्रशमनोनचमारुतकोपन'। गण्डूपदादिकीटानाजनक प्राणकारक ॥

अर्थ-दक्षिणदिशाकी पवन-बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, खेतीका नाश करनेवाली, मधुर, दाहजनक, अन्न और पानीमें कषैले रसको उत्पन्न करनेवाली, हलकी, रक्तपित्तनाशक, परतु वातको कुपित करनेवाली नहीं है, गण्डूपदादि कीटोंको उत्पन्न करनेवाली और आयुवर्द्धक है।

ग्रन्थान्तरे।

तिक्त कषायोमधुरोतिमन्द सुगंधसशीतगुणै'प्रकृष्ट।
वदन्तिसज्ञामलयानिलेतिप्रकृष्टरामाजनचित्तहारी ॥
मनोभवस्यप्रकरोमरुत्स्यात्कफोद्भव सम्भवतिप्रचार।
नचातिशीतोनतथोष्णकोवाशुभश्चयाम्यांप्रभव समीरः ॥

अर्थ-दक्षिण दिशाकी पवन-कडवी, कषैली, मधुर, अत्यन्त मद, सुगध, शीतल, मलयानिलसज्ञक अर्थात् मलयाचलकी पवन स्त्रियोंके चित्तको हरनेवाली, कामदेवको दीपन करनेवाली, कफसे उत्पन्नहुये रोगोको करनेवाली, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त उष्ण और शुभहै।

नैर्ऋत्यमारुतगुणा।

रूक्षोष्णवातप्रशम समीर कट्वम्लपित्तासृजिदोषकारी ॥
प्रशोषणोदेहबलस्यवायु कफान्वितोनैर्ऋतिक समीर ॥

अर्थ-नैर्ऋत्यकोणकी पवन-रूखी, गरम, वातको शात करनेवाली, चरपरी, खट्टी, पित्त और रुधिरको कुपित करनेवाली, मनुष्योंके देहके बलको शोषणकर्त्ता और कफयुक्त है।

पश्चिमपवनगुणा।

पश्चिमोऽग्निवपुर्वर्णबलारोग्यनिवर्द्धन। कषायशोषण
स्वष्योरोचनोविशदोलघु' ॥ अपालघुत्वनेशद्यशैत्यनैम-

ल्यकारकः । सर्वद्रव्येष्वभिव्यक्तप्रभावरसवीर्यकृत् ॥ व्रणसरोपणस्त्वच्योदाहशोषतृषापहः ॥

अर्थ-पश्चिमदिशाकी पवन-अग्नि, शरीर, वर्ण, बल और आरोग्यताको बढानेवाली है, कसैली, शोषण, रसको सुखानेवाली, रुचिकारक, विशद, हलकी, निर्मल उत्तम स्फुरता सेनवर्णना, शीघ्रता और निर्मलताकारक है, सर्वद्रव्योंमें व्यक्तप्रभाव रस और वीर्यजनक है घावको सुखानेवाली, त्वचाको सुंदर करनेवाली तथा दाह, शोष और तृषाको हरनेवाली है ।

वायव्यपवनगुणाः ।

वायव्यजातो मरुतः प्रशस्तः कषायसंशुष्कगुणप्रसन्नः ।
करोति वातस्य न शमनगणाः शस्तो नितान्तं व्रणशोफिनाशः ॥

अर्थ-वायव्यकोणकी पवन-श्रेष्ठ है, कसैली और शुष्कगुणवाली है, मनुष्योंको पवनके वश करती है, घावोंवालोंको हितकारी है, निश्चित नहीं है ।

उत्तरपवनगुणाः ।

औत्तरो मारुतः स्निग्धो मृदुर्मधुर एव च । कषायानुरसः शीतः सर्वदोषप्रकोपनः ॥ क्षीणक्षतविषार्त्तानां हितो दाहतृषापहः ।

अर्थ-उत्तरदिशाकी पवन-स्निग्ध, मृदु, मधुर, अम्ल और कषाय रसानुरसको उत्पन्न करनेवाली, शीतल, सब दोषोंको कुपित करनेवाली तथा क्षीण, क्षत और विषसे पीडित मनुष्योंको हितकारी, दाह और तृषाको हरनेवाली है ।

ऐशानपवनः ।

स्वादुः कषायश्च कफप्रकोपी वायुः कुबेरस्य दिशः प्रवृत्तः ।
करोति संतापमनल्पमन्तः शीतो न चोष्णो न च नातिरूक्षः ॥

अर्थ-उत्तर दिशाकी पवन-स्वादिष्ठ, कसैली, कफको कुपित करनेवाली, सन्निपातियोंको संताप करनेवाली, शीतल, न स्निग्ध और न रूक्ष है ।

पवनवायुगुणाः ।

शीतो निरीहश्च कफानलोपकरोति ईशानदिशः प्रवृत्तः ।
शल्यश्च तापं व्रणशोफकासमप्येनथाश्वासविकारिणाह्य ॥

अर्थ-ईशान दिशाकी पवन-शीतल अत्यन्तगौल्य, कफवातको कुपित करनेवाली तथा-व्रण, सूजन, खाँसी, क्षय और श्वासरोगवालोंको हितकारक नहीं है।

नीहारादियुक्तपवनगुणा ।

शीताधिकःसनीहारः सविद्युत्स्तनयित्नुवान् ॥

अर्थ-तुषार अथवा वर्फ-बिजली और मेघसयुक्त पवन-अत्यन्त शीतल है।

विष्वग्वायुगुणा ।

विष्वग्वायुरनायुष्य प्राणिनानेकदोषकृत ।
सर्वर्त्तुलिंगकोहन्ताहृद्योत्पातपुरःसरः ॥

अर्थ-विष्वग्वायु अर्थात् घूमवाला बवूला प्राणियोंकी आयुनाशक, त्रिदोषकोपक, सवऋतुओंका लक्षणकारक, प्राणनाशक और हृदयमें उद्वेग उत्पन्न करे है।

व्यजनानिलगुणा ।

मूर्च्छास्वेदतृपादाहश्रमघ्नोव्यजनानिलः ॥

अर्थ-पखेकी पवन-मूर्च्छा, पसीना, तृषा, दाह और श्रमनाशक है।

तालपत्रवायुगुणा ।

तालपत्रकरम्भायादलव्यजनोहिमः ।मधुरोऽतिश्रमघ्न स्यादार्द्रत्वात्कफकोपन ॥ निद्राकरःप्रीतिकरः शोकरोगविकारहा । दाहपित्तश्रमग्लानिनाशनोभ्रमशान्तिकृत ॥

अर्थ-ताडके पत्ते और केलेके पत्तोंके पखेकी पवन-शीतल, मधुर, अत्यन्त श्रमनाशक, आर्द्रपनसे कफको कुपित करनेवाली निद्राजनक, प्रीतिकारक, रोगशोकादिको दूरकरनेवाली तथा दाह, पित्त, परिश्रम, ग्लानि और भ्रमको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

तालवृन्तभवोवातस्त्रिदोषशमनोलघुः ॥

अर्थ-ताडके पखेकी पवन-त्रिदोषनाशक और हलकी है।

वंशव्यजनपवनगुणा ।

वंशव्यजनजोवातोरूक्षोष्णोवातपित्तदः ॥

अर्थ-बाँसके पखेकी पवन-रूखी, गरम और वातपित्तकारक है।

वेणव्यजनगुणाः ।

वैणवं व्यजनं तन्द्रानिद्राकरणमेव च ।
रूक्षोऽतिकषायरसो न च वातप्रकोपनः ॥

अर्थ-बाँसके पंखेकी पवन-तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करै है, रूखी अत्यन्त कसेली और वातको कुपित करनेवाली नहीं है ।

उशीरमूलादिव्यजनगुणाः ।

उशीरमूलरचितव्यजनं शिखिपिच्छकैः ।
व्यजनेन सुगन्धः स्यान्मन्दः शीतगुणात्मकः ॥
ग्लानिमूर्च्छाभ्रमशोषविसर्पविषदर्पहा ।

अर्थ-खस और मोरके पंखोंसे बनायेहुए पंखेकी पवन-सुगन्धिकारक, मंद, शीतल तथा ग्लानि मूर्च्छा, भ्रम, शोष, विसर्प, विष इनको दूर करै है ।

वालव्यजनवायुगुणाः ।

वालव्यजनमोजस्यं मक्षिकादीन्यपोहति ॥

अर्थ-चमरकमकी आदिकी वायु ओजवर्द्धक और मक्खीआदिको दूर करै है ।

मयूरपक्षादिनिर्मितव्यजनवायुगुणाः ।

मायूरव्यजनैश्चानातादोषत्रयापहा ॥

अर्थ-मोरके पंख तथा और वेतके पंखेकी पवन, त्रिदोषनाशक है ।

ऋतुभेदवायुगुणाः ।

शिशिरे पूर्वकुद्वायुर्ग्रीष्मेऽपि मन्दमरुत् । वसन्ते दक्षिणो वायुर्ग्रीष्मे नैर्ऋत्यकस्तथा ॥ वर्षासु पश्चिमो वायुर्वायव्यः शरदि स्मृतः । शिशिरे हेमन्ते चोत्तरश्चोत्तरोऽनिलः ॥ अग्र गर्वर्षास्वदन्ति निपुणास्तिग्मग्रिशिरोऽग्नमोक्षःशिशिरेषु मन्तोऽपि सन्तु सूर्योदयादयन । मध्याह्नेनत्यानदन्ति निपुणाश्शीतलाः स्यात्तत्ती वासन्त ऋतुर्नान्नि गुणानि निःशेषगुणात्मदा ॥

अर्थ-शिशिरऋतुमें पूर्वकी पवन उत्तम है, वसंतऋतुमें दक्षिणकी पवन, ग्रीष्मऋतुमें नैर्ऋत्यकोणकी पवन, वर्षाऋतुमें पश्चिमकी पवन और शरद ऋतुमें वायव्यकोणकी पवन उत्तम है । शिशिर और वसंतऋतुमें उत्तरकी पवनभी श्रेष्ठ है । दिनके तीसरे पहरको वर्षाऋतु, अर्धरात्रि शरदृऋतु, आधीरातके पश्चात्को शिशिरऋतु, सूर्योदयके समयको हेमंतऋतु, दुपहरके समयको ग्रीष्मऋतु और दिनके पूर्वभागको वसन्तऋतु कहते हैं ।

अभ्यंगगुणाः ।

वातव्याधिंहरतिकुरुतेसर्वगात्रेषुपुष्टिंदृष्टिंमन्दामपिवितनुतेवैनतेयोपमांच । निद्रांसौख्यंजनयतिजराहतिशक्तिंविधत्तेधत्तेकार्तिंकनकसदृशींनित्यमभ्यंगयोगात् ॥

अर्थ-सर्वदा शरीरमें तैलको मलनेसे वातरोग दूर होता है, सम्पूर्ण अंग पुष्ट होता है, गरुडके समान दृष्टि होजाती है, निद्रा और सुख उत्पन्न होता है, बुढापा दूर होता है, शरीरमें शक्ति उत्पन्न होती है और सुवर्णके समान वर्ण होजाता है ।

पादाभ्यंगगुणाः ।

पादाभ्यंगोऽथनिद्राकृच्चक्षुष्यःपादरोगहा । चक्षुषिप्रतिबद्धेद्वेशिरेपादगतेनृणाम् ॥ अतश्चक्षुःप्रसादार्थीपादाभ्यंगंसमाचरेत् ।

अर्थ-पावोंमें तैलको मलना-निद्राजनक नेत्रोंको हितकारी, पावोंके रोगोंको हरनेवाला है । नेत्रोंके दोना छिद्रोंमें जो दो शिरा हैं वह दोना शिरा पावोंमें लगीहुई हैं इसकारण पावोंमें तैलको मलना नेत्रोंको हितकारी है अतएव नेत्रोंका हित चाहनेवाले मनुष्य सदैव पावोंमें तैलका मर्दन करें ।

अभ्यंगवर्जितजनाः ।

वर्ज्योऽभ्यंगः कफग्रस्तस्नानसंशुद्ध्यजीर्णिभिः ॥

अर्थ-कफग्रस्त, स्नानादिसे शुद्ध हुवा और अजीर्णरोगवाले मनुष्यको तैलादिका मर्दन करना निषेध है ।

अवगाहनपूर्वतैलगुणाः ।

स्नेहोऽवगाहनेयुक्तः शरीरेबलमादधेत् ॥

अर्थ-शरीरमें तेलको मलकर जलमें डूबकर स्नानकरनेसे शरीरमें बल उत्पन्न होता है ।

विदेहस्त्वपि ।

शिरामुखै रोमकूपैर्धमनीभिश्च तर्पयेत् ॥

अर्थ-शरीरमें इस प्रकारसे तेलको मले कि, जिससे धमनियों, उदर, रोमकूपोंमें और शिराओंमें तेल प्रवेश होजाय ।

शिरोऽभ्यङ्गगुणाः ।

नित्यंस्नेहार्द्रशिरसः शिरःशूलंनजायते।नखालित्यंनपालि-त्यंनकेशाःप्रपतन्तिच॥दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्तिचघना यताः । इन्द्रियाणिप्रसीदन्तिसुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य रोजीना तेलसे शिरको मलते हैं, उनके शिरमें शूलरोग कदापि उत्पन्न नहीं होता है, तथा केशोंकी अल्पता पकना और केश पतित नहीं होते हैं और केश दृढमूल, कृष्ण और अत्यन्त सघन होजाते हैं इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृष्टता उत्पन्न होती है ।

कर्णपूरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यंनमन्यानहनुग्रहः ।
नोच्चैःश्रुतिर्नबाधिर्यंनकर्णनादजारुजः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन कानोंमें तेल डालते हैं उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, ऊंचा सुनना, बधिरता और कानके उत्पन्नहुए कर्णरोग नहीं होते हैं ।

उद्वर्तनगुणाः ।

उद्वर्त्तनंवातहरंकफमेदोविलापनम् । स्थिरीकरणमङ्गानां-त्वक्प्रसादकरंपरम् ॥ उद्वर्त्तनंदर्पकाद्यैःकण्डूवैवर्ण्यरोगजित् । तिलैर्नोद्वर्त्तनंकण्डूकोठत्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-तेल लगानेके पश्चात् उबटन मलना, वातरोग, कफ, मेद और वायुको दूर करते हैं, अंगोंमें स्थिरता और त्वचामें निर्मलता करते हैं, दर्पका-दिके द्वारा उबटन करनेसे खुजली, विवर्णता और त्वचाके रोग नाश होते हैं और तिलोंके द्वारा, उबटन करनेसे-खुजली, चकत्ता और त्वचाके विकार दूर होते हैं ।

तथा ।

स्यादुद्वर्त्तनमङ्गानांनिर्मलत्वंकफापहम् ।

अर्थ-उबटन-शरीरमें कान्तिजनक तथा मेद, कफ और आलस्यको दूर करें है ।

मुखमलेपगुणा ।

मुखलेपाद्दृढचक्षु पीनोगडस्तथाननम ।
कान्तमव्यगपिडकभवेत्कमलसन्निभम् ॥

अर्थ-मुखपर लेप करनेसे नेत्र पुष्ट होतेहैं, कपोल दृढ होतेहै और मुख कान्तियुक्त झाँई और मुहासे रहित तथा कमलके समान निर्मल होजाताहै ।

अथ स्नानगुणमाह ।

स्नानपवित्रमायुष्यश्रमस्वेदमलापहम ।
शरीरबलसन्धानकेश्यमोजस्करपरम ॥

अर्थ-स्नान करनेसे शरीरमें पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयुकी वृद्धि होतीहै तथा परिश्रम, पसीना और मेल दूर होता है, बल बढताहै, केशोंकी और तेजकी वृद्धि होती है ।

उष्णाम्बुनास्नानगुणमाह ।

उष्णाम्बुनाधःकायस्यपरिषेकःसुखावह ।तेनैवतूत्तमाङ्ग-स्यबलघ्नकेशचक्षुषो ॥विनिहन्तिगिर स्नानतृष्णाताल्वा-स्यशोषणम्।मलोष्णपिडिकाकण्डूशिरोरोगांश्चपित्तजान ॥

अर्थ-उष्णजलमे आधे शरीरको घोनेसे सुखकी वृद्धि होतीहै और गरम पानीके द्वारा शिरसे स्नान करनेसे केशोंका और नेत्रोंका बल कम होताहै तथा तृष्णा, तालुशोष, मुखशोष, कुपितमल (वातपित्त और कफका कुपित होना) शरीरकी गरमी, पिडका, कण्डू, मस्तकरोग और पित्तसे उत्पन्न हुए रोग दूर होतेहैं ।

तथाच ।

नैर्मल्यवपुष.करोतिकुरुतेनिष्पापमृत्तिपरा पुण्यवर्द्धनति त्वचरच्चयतेवर्णप्रभाकोमलाम् । कंडूहन्तिरतिश्रमवि-घटयत्यगेपुसौख्यप्रदं शुक्रोजोबलवर्द्धनंरतिकरंस्नानसु-खोष्णाभमा ॥

अर्थ-सुखकारि उष्णजलमे स्नान करनेसे-शरीर निर्मल होता है, पाप

तैलमर्दनविधि ।

शिखामुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ॥

अर्थ-शरीरमें इस प्रकारसे तेलको मले कि, जिससे बालोंकी जडमें रोमकूपोंमें और शिराओंमें तेल प्रवेश होजाय ।

शिरसितैलमर्दनगुणा ।

नित्यंस्नेहार्द्रशिरस:शिर शूलनजायते।नखालित्यनपालित्यनकेशा प्रपतन्तिच॥दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्तिचवनायता: । इन्द्रियाणिप्रसीदन्तिसुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य रोजरोज तेलसे शिरको मलतेहैं, उनके शिरमें शूलरोग कदापि उत्पन्न नहीं होता है, तथा केशोंकी अल्पता पकता और केश पतित नहीं होते हैं और केश दृढमूलयुक्त, कृष्ण और अत्यन्त सघन होजाते है इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होती है ।

कर्णतैलपूरणगुणा ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यनमन्यानहनुग्रहा: ।
नोच्चै श्रुतिर्नबाधिर्य्यंनकर्णवातजारुज: ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन कानोंमें तेल डालते हैं उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, ऊंचा सुनना, बधिरता और वातसे उत्पन्नहुए कर्णरोग नहीं होतेहै ।

उद्वर्त्तनगुणा ।

उद्वर्त्तनवातहरकफमेदोनिलापहम् । स्थिरीकरणमङ्गानात्वक्प्रसादकरपरम् ॥ उद्वर्त्तनहरिद्राद्यैः कण्डूवैवर्ण्यरौक्ष्यजित् । तिलैनोद्वर्त्तनकण्डूरौक्ष्यत्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-तेल लगानेके पश्चात् उबटन करना, वातरोग, कफ, मेद और वायुको दूर करैहै, शरीरमें स्थिरता और त्वचामें निर्मलता करैहै, हरिद्रादिकके द्वारा उबटन करनेसे-कण्डू, विवर्णता और रूक्षता नाश होती है और तिलोंके द्वारा उबटन करनेसे-खुजली, रूखापन और त्वचाके विकार नष्ट होते हैं ।

अन्यच्च ।

स्यादुद्वर्त्तनमङ्गकांतिजनकमेद:कफालस्यजित् ।

अर्थ-उबटन-शरीरमें कान्तिजनक तथा मेद, कफ और आलस्यको दूर करै है ।

मुखलेपगुणा ।

मुखलेपाद्दृढचक्षु पीनोगडस्तथाननम् ।
कान्तमव्यंगपिडकभवेत्कमलसन्निभम् ॥

अर्थ-मुखपर लेप करनेसे नेत्र पुष्ट होतेहैं, कपोल दृढ होतेहैं और मुख कान्तिसयुक्त झाँई और मुहासे रहित तथा कमलके समान निर्मल होजाताहै ।

अथ स्नानगुणमाह ।

स्नानपवित्रमायुष्यश्रमस्वेदमलापहम् ।
शरीरबलसन्धानकेश्यमोजस्करपरम ॥

अर्थ-स्नान करनेसे शरीरमें पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयुकी वृद्धि होतीहै तथा परिश्रम, पसीना और मल दूर होता है, बल बढताहै, केशोकी और तेजकी वृद्धि होती है ।

उष्णाम्बुनास्नानगुणमाह ।

उष्णाम्बुनाधःकायस्यपरिषेकःसुखावहः । तेनैवतूत्तमाङ्ग-
स्यबलघ्नकेशचक्षुषो ॥विनिहन्तिशिर स्नानतृष्णाताल्वा-
स्यशोषणम्।मलोष्णपिडिकाकण्डूशिरोरोगांश्चपित्तजान् ॥

अर्थ-उष्णजलसे आधे शरीरको धोनेसे सुखकी वृद्धि होतीहै और गरम पानीके द्वारा शिरसे स्नान करनेसे केशोंका और नेत्रोंका बल कम होताहै तथा तृष्णा, तालुशोष, मुखशोष, कुपितमल (वातपित्त और कफका कुपित होना) शरीरकी गरमी, पिडका, कण्डू, मस्तकरोग और पित्तसे उत्पन्न हुए रोग दूर होतेहै ।

तथाच ।

नैर्मल्यंवपुषःकरोतिकुरुतेनिष्पापमूर्त्तिपरा पुण्यंवर्द्धयति
त्वचरञ्चयतेवर्णप्रभाकोमलाम् । कण्डूहन्तिरतिश्रमवि-
घटयत्यगेपुसौख्यप्रद शुक्रौजोबलवर्द्धनरतिकरस्नानसु-
खोष्णाम्भसा ॥

अर्थ-सुखदायिनि उष्णजलसे स्नान करनेसे-शरीर निर्मल होता है, पाप

दूर होताहै, पुण्यकी वृद्धि होतीहै, त्वचाका रंग उत्तम होताहै, वर्ण, कान्ति और कोमलता उत्पन्न होतीहै, खुजली दूर होतीहै, रतिका श्रमनाश होताहै, अंगोंमें सुख उत्पन्न होताहै, वीर्य, ओज और बलकी वृद्धि होतीहै और शक्ति उत्पन्न होतीहै ।

द्रव्यविशेषणस्नानगुणमाह ।

मधुकामलकैःस्नानपित्तघ्नतिमिरापहम् ।
स्नानवचाघनैरिष्टश्लेष्मघ्नतिमिरापहम् ॥
स्नानकृष्णतिलैश्चापिचक्षुष्यमनिलापहम् ।

अर्थ-मुलैठी और आमलेको मलकर स्नान करनेसे पित्त और तिमिररोग दूर होताहै, वचा और नागरमोथेको मलकर स्नान करनेसे कफ और तिमिररोग नाश होताहै, काले तिलोंको मलके स्नान करनेसे नेत्रोंकी दृष्टि बढती है और वायु नष्ट होताहै ।

स्नानस्यविशेषगुणमाह ।

अस्नातस्यशरीरस्यउष्मासर्वांगगोचरम् ।
स्नानेनैकत्वमायातितेनदीप्यतिपावकः ॥

अर्थ-नहीं स्नानकरनेसे-अग्न्याशयमें स्थित अग्नि सर्वांगमें फैल जातीहै, वही अग्नि स्नानके द्वारा एकत्रितहोकर मनुष्योंकी अग्नि दीपन होतीहै ।

स्ताननिषिद्धजनाः ।

स्नानमर्दितनेत्रास्यकर्णरोगातिसारिषु ।
आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सुचगर्हितम् ॥

अर्थ-अर्दित, नेत्र, मुख और कर्णरोगमें, अतीसार, आध्मान, पीनस, अजीर्णादि रोगोंमें तथा भोजनके अंतमें स्नान करना निषेध है ।

शरीरमार्जनगुणाः ।

दौर्गन्ध्यगौरवकण्डूकच्छूमलमरोचकम् ।
स्वेदबीभत्सतांहन्तिशरीरपरिमार्जनम् ॥

अर्थ-वस्त्रादिकसे शरीरको मार्जन करनेसे-दुर्गंधता, भारीपन, खुजली कच्छू, मल, अरुचि, पसीना और घृणा दूर होतीहै ।

वस्त्रधारणगुणाः ।

कौशेयौर्णिकवस्त्रचरक्तवस्त्रंतथैवच । वातश्लेष्महरतच्छी-

तकालेविधारयेत् ॥ मेध्यंसुशीतपित्तघ्नकषायवस्त्रमुच्यते । तद्धारयेदुष्णकालेतत्रापिलघुशस्यते ॥ शुक्लंतुशुभदंवस्त्रं शीतातपनिवारणम् । नचोष्णनचवाशीततत्तुवर्षासुधारयेत् । यशस्यकाम्यमायुष्यश्रीमदानन्दवर्द्धनम् । त्वच्यवशीकर रुच्यनवनिर्मलमम्बरम् ॥ कदापिनजनैःसद्भिर्धार्य्यंमलिनमम्बरम् । तत्तुकण्डूकृमिकरग्लान्यलक्ष्मीकरंपरम् ॥

अर्थ-रेशमी, ऊनी और लाल रंगके वस्त्र-वात और कफको दूर करे हैं इस कारण इनको शीतकालमें पहिरना चाहिये । लाल, पीले आदि मिश्रित रंगके वारीक वस्त्र पवित्र, शीतल और पित्तको दूर करे हैं इनको ग्रीष्मकालमें पहिरे इनमें जहांतक होसके बहुत महिने पहिरे । सफेद वस्त्र-मंगलकारक, शीत और धूपको दूर करनेवाले हैं । न यह गरम है और न यह शीतल है इस कारण वर्षाऋतुमें धारण करना चाहिये । नवीन और निर्मल वस्त्र-यशको देनेवाले, कामदेवको बढानेवाले, आयुको बढानेवाले, लक्ष्मीको देनेवाले, आनन्दवर्द्धक, त्वचाको उत्तम करनेवाले वशीकरण और रुचिकारक हैं । श्रेष्ठ पुरुष कभीभी मलिन अर्थात् मैले वस्त्रोंको नहीं पहिने, क्योंकि इनको पहिननेसे-खुजली, कृमिरोग, ग्लानि और अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता आती है ।

रत्नाभरणधारणगुणाः ।

धन्यमाङ्गल्यमायुष्यंश्रीमद्व्यसनसूदनम् ।
हर्षणकाम्यमोजस्यरत्नाभरणधारणम् ॥

अर्थ-रत्नाभरणका धारण-धन, मंगल, आयु और लक्ष्मीवर्द्धक है । व्यसननाशक तथा हर्ष, काम और ओजवर्द्धक है ।

गुर्वादिरर्चनगुणाः ।

स्वर्ग्यंयशस्यमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
धनधान्यकरंनित्यंगुरुदेवद्विजार्चनम् ॥

अर्थ-गुरु और देवादिकका पूजन-स्वर्ग, यश और आयुको देनेवाला है अलक्ष्मीनाशक तथा धन और धान्यवर्द्धक है ।

दर्पणगुणाः ।

दर्पणंश्रीमदायुष्यंपापोपशमनंपरम् ।

अर्थ-दर्पणमें मुख देखनेसे-लक्ष्मी और आयुकी वृद्धि होती है तथा पापका नाश होता है।

अनुलेपनगुणाः ।

प्रीत्योजोवर्द्धनवृष्यस्वेददौर्गन्ध्यनाशनम् ।
तन्द्रातापोपशमनश्रमघ्नमनुलेपनम् ॥

अर्थ-शरीरमें सुगंधादि वस्तुओंका लेप करनेसे-हर्ष, ओज और वीर्यकी वृद्धि होती है तथा पसीना, दुर्गंध, तन्द्रा, ताप और श्रम दूर होता है।

अन्यच्च ।

अनुलेपस्तृषामूर्च्छादुर्गंधस्वेददाहजित् ।
सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रीत्योजोबलवर्द्धनः ॥
सस्नानानर्हलोकानामनुलेपोऽपिनोहित ॥

अर्थ-चदनादिका लगाना, तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंध, पसीना और दाहको दूर करे है, सौभाग्य, तेज, त्वचाका वर्ण, प्रीति, ओज और बलवर्द्धक है जिनको स्नान करना निषेध है उनको चदनादिकाभी लगाना निषेध है।

पुष्पादिधारणगुणाः ।

सुगंधिपुष्पपत्राणांधारणकांतिकारणम् ।
पापरक्षोग्रहहरकामदश्रीविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-सुगंधित पुष्पपत्रादिका धारण-कांतिजनक, पाप, राक्षस और ग्रहबाधाको दूरकरनेवाला, कामोद्दीपन और लक्ष्मीको बढानेवाला है।

भोजनाद्यौलवणार्द्रकादिभक्षणगुणाः ।

भोजनाग्रेसदापथ्यजिह्वाकंठविशोधनम्।अग्निसंदीपनंहृद्य लवणार्द्रकभक्षणम् ॥ आयुर्घृतेगुडेरोगोमृत्युर्लीनोविदाहिषु । आरोग्यकटुतिक्तेषुबलमांसेपयःसुच ॥

अर्थ-भोजनसे पहिले सधवनिमकके साथ अद्रखका खाना सदैव पथ्यहै, जिह्वा और कंठको शुद्ध करैहै, हृदयको हितकारी और अग्निसंदीपक है। भोजनसे पहिले घृतभक्षण करनेसे आयुकी वृद्धि होतीहै, गुड खानेसे रोग उत्पन्न होतेहै, दाहजनक पदार्थ खानेसे मृत्यु होतीहै, कटु और तिक्तरसके पदार्थ खानेसे आरोग्यता उत्पन्न होतीहै, मांस और दूध खानेसे बलकी वृद्धि होतीहै।

क्रमादन्नादीनां गुणाधिक्यमाह।

अन्नादष्टगुणंपिष्टंपिष्टादष्टगुणंपयः।
पयसोऽष्टगुणंमांसंमांसादष्टगुणंघृतम्॥
घृतादष्टगुणंतैलंमर्दनान्नतुभक्षणात्।

अर्थ-अन्न, पिष्टक, दुग्ध, मास, घृत इनके उत्तरोत्तर आठगुण अधिक हैं अर्थात् अन्नसे आठगुण अधिक पिट्ठीमें है, पिट्ठीसे आठगुण अधिक दुग्धमें है, दुग्धसे आठ गुण अधिक मासमें है, और माससे आठगुण अधिक घृत खानेमें है और घीकी अपेक्षा आठगुण अधिक तेलमें हैं, परन्तु तेलमें आठ गुण अधिक मर्दन करनेमें है खानेमें नहीं।

आहारगुणाः।

आहारः प्रीणनःसद्योबलकृद्देहधारकः।

अर्थ-आहार-तृप्तिकारक, तत्काल बलजनक और देहकी रक्षा करनेवाला है।

आहारे दिङ्निर्णयः।

आयुष्यंप्राङ्मुखोभुंक्तेयशस्यंदक्षिणामुखः।
श्रियंप्रत्यङ्मुखोभुंक्तेऋतंभुंक्तेह्युदङ्मुखः॥

अर्थ-पूर्वकी ओर मुखकरके आहार करनेसे आयुकी वृद्धि, दक्षिणकी ओर मुखकरके आहार करनेसे यशकी प्राप्ति और पश्चिमकी ओर मुखकरके आहार करनेसे संपदाकी प्राप्ति होतीहै। उत्तरकी ओर मुख करके आहार करनेसे सत्यकी प्राप्ति होतीहै। इसकारण उत्तरकी ओर मुख करके आहार करे।

भक्षणविषयेअन्नादीनांपरिमाणमाह।

कुक्षावन्नेनभागौद्वावेकंपानेनपूरयेत्।
वायोः संचरणार्थञ्चचतुर्थमवशेषयेत्॥

अर्थ-आहारके समय-उदरके दो भाग अन्नसे भरे, एकभाग पीनेकी वस्तुओंसे भरे और बाकीका एकभाग वायुके विचरनेके लिये रहने देवे।

आचमनगुणाः।

दन्तान्तरगतञ्चान्नंशोचेनैवाहरेच्छनैः।
कुर्य्यादनिर्गतंतद्धिमुखस्यानिष्टगंधताम्॥

अर्थ-भोजन करनेके समय जो अन्न दाँतोंमें घुसजाता है, वह अन्न आचमनके द्वारा धीरे धीरे निकालदेवे, जो आचमनके द्वारा दाँतोंसे अन्न बाहिर नहीं निकालते उनके मुखमें दुर्गंध आने लगतीहै।

भोजनान्ते कर्त्तव्यता।

भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते।
अचिरेणैवतद्वारितिमिराणिव्यपोहति॥

अर्थ-भोजनके अंतमें हाथमें हाथ घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे वह जल नेत्रोंके तिमिररोगको दूर करहै।

भुक्त्वाचम्यकरंवामदत्त्वाकुक्षौततःपठेत्। भुक्तमाहेन्द्रहस्तेनवैश्वानरमुखेनच॥ गंङ्गरस्यचकठेनसमुद्रस्यचवह्निना। वातापिर्भक्षितोयेनपीतोयेनमहोदधिः॥यन्मयाखादितपीततदगस्त्योजरिष्यति।

अर्थ-भोजन करनेके पश्चात् आचमन करके कोखमें वामहाथ धरके "भुक्त माहेन्द्र, इत्यादि" इस मन्त्रको पढै तो भोजन शीघ्र जीर्ण होजाता है।

सुखासीनःक्षणंतिष्ठेद्यावन्नलभतेसुखम्।

अर्थ-फिर थोडी देरतक आराम करे जब तक सुख न हो।

भुक्त्वापादशतंगत्वावामपार्श्वेणसंविशेत।
एवञ्चाधोगतंचान्नसुखंतिष्ठतिजीर्य्यति॥

अर्थ-भोजन करनेके पश्चात् सौ कदम धीरे धीरे चले, फिर बाँई करवटसे सोरहै तो अन्न पाकस्थानमें जाकर जीर्ण होजाता है।

भोजनान्त उपवेशनादिगुणाः।

भुक्त्वोपविशतस्तुन्दःशयानस्यवपुर्भवेत।
आयुश्चक्रममाणस्यमृत्युर्धावतिधावतः॥

अर्थ-भोजनके अंतमें उपवेशन अथवा शयन करनेसे स्थूलताकी वृद्धि, धीरे धीरे चलनेसे आयुकी वृद्धि और दौडनेसे मृत्यु होतीहै।

ताम्बूलगुणाः।

ताम्बूलकटुतिक्तमुष्णमधुरंक्षारंकषायान्वितं

वातघ्नकृमिनाशनकफहरदु:खम्यविच्छेदनम ।
स्त्रीसम्भाषणभूषणंधृतिकरकामाग्निसंदीपन
ताम्बूलेनिहितास्त्रयोदशगुणा:स्वर्गेपितेदुर्लभा। ॥

अर्थ–पान–चरपरा, कडवा, गरम, क्षारगुणयुक्त, मधुर, कपेला, वात विनाशक, कृमिनाशक कफहारक, दु:खको दूर करनेवाला, स्त्रीसभाषणके विषय आभूषण, धारणशक्ती और कामको बढानेवाला है यह १३ गुण पानमें विद्यमान है सो स्वर्गमभी दुर्लभ है।

पूगफलगुणा।

शुष्कमग्निकरपूगकषायमधुरपरम् ।
पक्वन्तुवातलरूक्षभेदनकफनाशनम ॥
गुर्वभिष्यदिमधुरतोयधृग्वह्निनाशनम ।

अर्थ–सूखी सुपारी-अग्निवर्द्धक, कषेली और मधुरयुक्त है। पकी सुपारी–वातवर्द्धक, रूखी, भेदक और कफनाशक । कच्चीसुपारी–भारी, क्लेदजनक, मधुर और मंदाग्निकारक है।

ताम्बूलपत्रगुणा।

ताम्बूलपत्रतीक्ष्णोष्णकटुवातकफापहम ।
पित्तकृत्स्रसनवृष्यवह्निकृद्वस्तिशोधनम ॥

अर्थ–ताम्बूलपत्र तीक्ष्ण, गरम, चरपरा वात–कफनाशक पित्तकारक, स्रसन, वीर्य्यवर्द्धक अग्निजनक और वस्तिशोधक है।

पर्णमूलाग्रगुणा।

पर्णमूलेभवेद्व्याधि पर्णाग्रेपापसम्भव ।
जीर्णपर्णहरेदायु शिरावह्निविनाशयेत ॥

अर्थ–पानकी जडको खानेसे–नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होतेहै, पानके अग्रभागको भक्षण करनेसे पाप उत्पन्न होता है और जीर्णपानको भक्षण करनेसे आयु क्षीण होती है और शिरा अग्निका विनाश करती है।

चूर्णगुणा।

चूर्णमर्मारणश्लेष्ममेदोहरमुदाहृतम ।

अर्थ–चूना–वात, कफ और मेदनाशक है।

शङ्खचूर्णगुणाः ।

शङ्खचूर्णंकटुक्षारमुष्णंकृमिहरंपरम् ।

अर्थ-शंखका चूना-चरपरा, क्षार, गरम और कृमिनाशक है।

खदिरगुणाः ।

खदिरं कुष्ठवीसर्पमेहपित्तकफापहः ।

अर्थ-कत्था-कोढ, वीसर्प, प्रमेह, पित्त और कफनाशक है।

एलागुणाः ।

एलामूत्रविबन्धघ्नीतृट्छर्दिकफवातजित् ।

अर्थ-इलायची-मूत्रविबन्धनाशक तथा तृषा, वमन, कफ और वातनाशक है।

लवङ्गगुणाः ।

आध्मानानाहशूलघ्नंलवङ्गंपाचनंलघु ।

अर्थ-लौंग-अफारा, आनाह और शूलनाशक है, पाचक और हलकी है।

जातीफलगुणाः ।

जातीफलंतृषाछर्दिशूलघ्नंवातपित्तजित् ।

अर्थ-जायफल-तृषा, वमन, शूल और वातपित्तनाशक है।

जातीकोषगुणाः ।

जातीकोपोलघुस्तृष्णातोददौर्गन्ध्यजिन्मतः ।

अर्थ-जावित्री-हलकी-तृषा, वेदना और दुर्गंधको दूर करे है।

कर्पूरगुणाः ।

कर्पूरंशीतलंपाकेचक्षुष्यंकफनाशनम् ।

पक्वकर्पूरतःप्राहुरपक्वंगुणवत्तरम् ॥

अर्थ-कपूर-पचनेमें शीतल, नेत्रोंको हितकारी और कफनाशक है। पक्के कपूरसे कच्चा कपूर अधिकगुणवाला है।

पूगस्य पाकमध्यादिभेदेन गुणमाह ।

आदौपूगंविषवोर्ग्द्वितीयेभेदिदुर्जरम् ।

तृतीयादिपुपातव्यंसुधातुल्यंरसायनम् ॥

अर्थ-कच्चीसुपारी-विषके समान अहितकारी है, मध्यम आग्याकी सुपारी-भेदक और दुर्जर है और सूखी सुपारी-अमृतकी समान हितकारी

और रसायन है, इसकारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाकी सुपारीको त्यागकर तृतीय अर्थात् शुष्कसुपारी भक्षण करनी चाहिये ॥

ताम्बूलभक्षणनिषेधः ।

ताम्बूलमहितप्रोक्तशरीरेरूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषेपित्तास्रमदमूर्च्छाक्षिरोगिषु ॥

अर्थ–रूक्ष, दुर्बल, ज्वर, मुखशोष, रक्तपित्त, मद, मूर्च्छा और नेत्ररोगवाले मनुष्योंको ताम्बूल भक्षण करना नहीं चाहिये ।

ताम्बूलस्यानुपयोगगुणा ।

ताम्बूलानुपयोगात्स्याच्छ्लेष्मापित्तानिलान्वित
देहदृक्केशदन्ताग्निश्रोत्रवर्णबलक्षय ॥

अर्थ–ताम्बूल नहीं खानेसे मनुष्योंके कफ–पित्त और वातका कोप होता है तथा देह, नेत्र, केश, दन्त, अग्नि, कर्ण, वर्ण और बलआदिका नाश होता है ।

अध्ययनादिगुणा ।

सतताध्ययनवादःपरतन्त्रविलोकनम् ।
सद्विद्याचार्यसेवाचबुद्धिमेधाकरोगण ॥

अर्थ–निरंतर शास्त्रका अध्ययन–शास्त्रार्थ, उत्तमशास्त्रोंका दर्शन, सद्विद्याका ग्रहण और गुरुकी सेवा यह गन मनुष्योंकी बुद्धि और मेधाको बढाते है ।

बुद्धिगुणमाह ।

शुश्रूषाश्रवणचैवग्रहणधारणतथा ।
ऊहापोहोर्थविज्ञानतत्त्वज्ञानचधीगुणा ॥

अर्थ–गुरुजनोंकी शुश्रूषा, गुरुके वाक्योंको श्रवण करना, गुरुके वचनोंको ग्रहण और धारण करना तथा तर्कका मीमांसाजनक ज्ञान और ईश्वरविषयका ज्ञान यह छः बुद्धिके गुण है ।

सद्यःप्राणहराणिगुणा ।

सद्योमांसनवान्नचबालास्त्रीक्षीरभोजनम ।
घृतमुष्णोदकचैवसद्य प्राणकराणिषट् ॥

अर्थ–तत्कालका मांस–नवीनअन्न–बालास्त्री क्षीरभोजन–घृत और उष्णजल, ये छः तत्काल प्राणजनक है ।

प्रतिमांसादिगुणा ।

प्रतिमांसस्त्रियोवृद्धावालार्कस्तरुणदधि ।
प्रभातेमैथुननिद्रासद्यःप्राणहराणिषट् ॥

अर्थ-दुर्गंधितमांस-वृद्धास्त्री भादों और क्वारकी धूप-पांच दिनका दही-प्रभातके समय मैथुन और निद्रा ये छः तत्काल प्राणनाशक है।

वयोभेदे नारीणा बालादिकथनम्।

बालेतिगीयतेनारीयावत्षोडशवत्सरम् । तस्मात्परतुतरुणीयावत्स्यात्त्रिंशतंभवेत् ॥ ततऊर्ध्वंभवेत्प्रौढायावत्पचाशतपुनः । वृद्धातत परज्ञेयासुरतोत्सववर्ज्जिता ॥

अर्थ-सोलहवर्षकी स्त्रीको बाला, सोलह वर्षके बाद तीस वर्षतककी तरुणी, तीस वर्षसे पचास वर्षतककीको प्रौढा और पचास वर्षसे अधिक उमरवालीको वृद्धा कहते हैं। वृद्धनारी रतिक्रियामें वर्जित है।

बालादिस्त्रीसङ्गगुणा ।

बालातुप्राणदाप्रोक्तातरुणीप्राणधारिणी ।
प्रौढाकरोतिवृद्धत्ववृद्धामरणमादिशेत् ॥

अर्थ-बालास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी वृद्धि होती है, तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी रक्षा होती है, प्रौढा स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे वृद्धता आती है और वृद्धास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे मृत्यु होती है।

बालादिभेदे मैथुनकालनिर्णय ।

निदाघशरदोर्बालाप्रौढावर्षावसतयोः ।
हेमन्तेशिशिरेयोग्यानवृद्धाक्वापिशस्यते ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरदऋतुमें बालास्त्रीके साथ, वर्षा और वसंतऋतुमें प्रौढास्त्रीके साथ, हेमन्त और शिशिरऋतुमें तरुणीके साथ मैथुन करे, किन्तु वृद्धास्त्रीके साथ किसी ऋतुमें मैथुन न करे।

मैथुननिषेध ।

नत्तंचषोडशाद्वर्षात्सप्तत्या परतोनच ।
आयुष्कामोनरः स्त्रीभिः संयोगकर्त्तुमर्हति ॥

अर्थ-आयुकी अभिलाषा करनेवाले मनुष्य सोलहवर्षसे कम सत्तर वर्षसे अधिक आयुवाली स्त्रीसे मैथुन नहीं करे

मैथुनकालनिर्णय।

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्चसेवेतप्रमदानर।
सर्वेष्वृतुषुग्रीष्मेतुपक्षान्मासाद्व्रजेद्बुध॥

अर्थ-बुद्धिमान् मनुष्य वर्षा, शरद, हेमन्त, वसन्त और शीत ऋतुमें तीन दिनके बाद मैथुन करे और ग्रीष्मऋतुमें पंद्रह दिन अथवा एक महीनेके अंतरसे मैथुन करे।

अतिमैथुनगुण।

ग्लानिकम्पोरुदौर्बल्यधात्विन्द्रियबलक्षय।
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्याजायन्तेऽतिव्यवायतः॥

अर्थ-अत्यन्त मैथुन करनेवाले मनुष्योंके शरीरमें ग्लानि, कम्प घुटनोंमें दुर्बलता होती है। धातु, इन्द्रियबल इनका क्षय होता है और राजयक्ष्मा वृद्धि तथा उपदंशादिरोग उत्पन्न होते हैं।

सन्तानोत्पत्तिरायुर्निर्दिष्टा।

पचपञ्चाशतोनारीसप्तसप्ततित पुमान्।
द्वावेतौनप्रसूयेतेप्रसूयेतेव्यतिक्रमात्॥

अर्थ-पचपन वर्षकी स्त्री और सतत्तर वर्षका पुरुष, ये दोनों सन्तानको उत्पन्न नहीं करसक्ते, कारण यह है कि, पचपन वर्षकी स्त्रीके रजमें और सतत्तर वर्ष आयुवाले पुरुषके वीर्य्यमें सन्तानको उत्पन्न करनेवाली शक्ति नष्ट होजातीहै, परन्तु पचपन वर्षसे कमकी स्त्री और सतत्तर वर्षसे कमका पुरुष सन्तान उत्पत्ति करसक्ते हैं।

सुखशय्याशनगुण।

सुखशय्याशनसेव्यनिद्रापुष्टिधृतिप्रदम्।
श्रमानिलहरंवृष्यंविपरीतमतोन्यथा॥

अर्थ-सुखशय्या और उत्तमद्रव्यका भोजन-निद्रा, पुष्टि और धीरजको बढाते हैं, श्रम और वातनाशक तथा वीर्य्यजनक हैं और इनसे विपरीत शय्या और विपरीत भोजन विपरीतगुणकारक हैं।

भूमिशय्यागुण।

भूशय्याऽनिलपित्तघ्नीबृंहणीशुक्रवर्द्धिनी।

अर्थ-पृथ्वीमें सोना-वात और पित्तनाशक, पुष्टिकारक और शुक्रवर्द्धक है।

खट्वापट्टशय्ययोर्गुणा ।

खट्वातुवातलाप्रोक्तापट्टोरूक्षोऽतिवातलः ।

अर्थ-खाटपर सोनेमे वात बढती है और पट्टशय्यापै सोनेसे रूक्षता और वात बढतीहै ।

ज्योत्स्नागुणा ।

ज्योत्स्नाकषायमधुरादाहास्रक्पित्तनाशिनी ।

अर्थ-ज्योत्स्ना (चादनी) कसेली और मधुर, तथा दाह और रक्तपित्त नाशक है ।

अन्धकारगुणा ।

तमोभयावहतिक्तदृष्टितेजोवरोधनम् ।

अर्थ-अन्धकार-भयकारक, कडवा, दृष्टिशक्ति और तेजको रोकनेवालाहै।

मैथुनगुणा ।

व्यवायोधात्वपचयकुरुतेरत्यपत्यदः ।

अर्थ-मैथुन-धातुनाशक, रति और सन्तान देनेवाला है ।

अतिमैथुनगुणा ।

अतिव्यवायाज्जायन्तेश्वासकासज्वरादय. ।

अर्थ-अत्यत मैथुन करनेसे-श्वास, कास और ज्वरादि रोग उत्पन्न होतेहै ।

मैथुनावरणगुणा ।

असेवनान्मेहमेदोग्रन्थिरग्नेश्चमार्दवम् ।

अर्थ-मैथुन नहीं करनेसे-प्रमेह, मेद, ग्रन्थि और मन्दाग्नि उत्पन्न होती है।

परिमितमैथुनगुणा ।

स्मृतिमेधायुरारोग्यपुष्टीन्द्रिययशोबलैं ।
अधिकानाशुजरसोभवन्तिस्त्रीपुमयताः ॥

अर्थ-नियमानुसार मैथुन करनेसे-स्मरणशक्ति, अभ्यासशक्ति, आयु, आरोग्य, पुष्टि, इन्द्रियशक्ति, यश और बल इनकी वृद्धि होतीहै और नियमानुसार मैथुन करनेवाला मनुष्य शीघ्र वृद्धताको नहीं प्राप्त होता है ।

निद्रागुणा ।

निद्रातुसेविताकालेधातुसाम्यमतन्द्रिताम् ।

पुष्टिवर्णबलोत्साहानग्निदीप्तिंकरोतिच ॥

अर्थ-नियमानुसार निद्रा लेनेसे-धातुकी समता, तन्द्रानाश, पुष्टि, वर्ण, बल, उत्साह और अग्नि दीपन होताहै ।

रात्रिजागरदिवास्वप्नयोर्गुणाः ।

रात्रौजागरणरूक्षस्निग्धप्रस्वपनदिवा ।
कफमेदोविषार्त्तानांरात्रौजागरणहितम् ॥
दिवास्वप्नश्चतृट्छूलहिक्काजीर्णातिसारिणाम् ।

अर्थ-रात्रिमें जागनेसे शरीरमें रूक्षताकी वृद्धि और दिनमें सोनेसे शरीरमें स्निग्धताकी वृद्धि होतीहै, इस कारण दिनमें सोना और रात्रिमें जागना अनुचित है । किन्तु कफ, मेद और विषग्रस्तरोगियोंको रात्रिमें जागना हितकारक है, तथा तृष्णा, शूल, हिक्का, अजीर्ण और अतिसाररोगवालाको दिनमें सोना हितकारकहै ।

दिवावायदिवारात्रौनिद्रासात्मीकृतातुयै ।
नतेपास्वपतांदोषोजाग्रतावाविधीयते ॥

अर्थ-जिनको दिनमें निद्रा लेनेका और रात्रिमें जागनेका अभ्यासहै उनको दिनमें निद्रा और रात्रिमें जागनाही उचितहै ।

हेमन्तशिशिरकृत्यम् ।

शीतेशीतानिलस्पर्शसरुद्धोबलिनांबली । पक्ताभवतिहेमन्तेमात्राद्रव्यगुरुक्षम ॥सयदानेन्धनयुक्तलभतेदेहजतदा । रसनिहत्यतोवायुःशीतःशीतेप्रकुप्यति ॥ तस्मात्तुषारसमयेस्निग्धाम्ललवणान्रसान् । उदकानूपमांसानामेध्यानामुपयोजयेत ॥ विलेशयानामांसानिप्रसहानांभृतानिच । भक्षयेन्मदिरांसीधुमधुचानुपिबेन्नर ॥ गोरसानिक्षुविकृतीर्वसांतैलनवौदनम् । हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णञ्चायुर्नहीयते ॥ अभ्यङ्गोत्सादनमूर्ध्नितैलजेन्ताकमातपम् । भजेद्भूमिगृहञ्चोष्णमुष्णगर्भगृहंतथा ॥ शीतेसुसंवृतंसेव्ययानंशयनमासनम । प्रावाराजिनकौशेयप्रवेणीकुथकास्तृतम् ॥ गुरु-

ष्णवासादिग्धाङ्गोगुरुणाऽगुरुणासदा । शयनेप्रमदांपीना विशालोपचितस्तनीम् ॥ आलिंग्यागुरुदिग्धाङ्गीसुप्यात्समदमन्मथ । प्रकामञ्चनिषेवेतमैथुनशिशिरागमे ॥ वर्ज्जयेदन्नपानानिलघूनिवातलानिच । प्रवातप्रमिताहारमुदमन्थहिमागमे ॥ हेमन्तेशिशिरेतुल्येशिशिरेऽल्पंविशेषणम् । रौक्ष्यमादानजशीतंमेघमारुतवर्षजम् ॥तस्माद्धेमन्तिकःसर्वं शिशिरेविधिरिष्यते । निवातमुष्णन्त्वधिकशिशिरेगृहमाश्रयेत् ॥ कटुतिक्तकषायाणिवातलानिलघूनिच । वर्ज्जयेदन्नपानानिशिशिरेशीतलानिच ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुमें शीतल पवनके चलनेसे मनुष्यके शरीरकी उष्णता बाहर नहीं निकलती इसकारण इस ऋतुमें बलवान् मनुष्योंकी पाचकाग्नि अत्यन्त प्रबल होकर बहुत भोजन और भारी पदार्थोंको पचानेको समर्थ हो जातीहै, ऐसेही जो प्रबल अग्नि उचित नियमसे पकानेकी वस्तु न पावे तो वह शरीरकी रस धातुका क्षय करना आरम्भ करती है, रसक्षयके हेतुसे शीतल वायु कुपित होनेके कारण,इस ऋतुमें स्निग्ध,द्रव्य,अम्ल और नमकीन पदार्थ, पवित्र जल, अनूप देशके जीवोंका मास और प्रसहजातिके जीवोंका मास भक्षण करे तथा सीधुनामक मदिराको पीकर फिर शहत पीवे हेमन्त ऋतुमें दूध, इक्षुविकार, वसा, तेल और नवीन चावलोंका भात भक्षण करना चाहिये । हेमन्त ऋतुमें गरम करके जल पीवे, इससे मनुष्यों की आयु नष्ट नहीं होती है । इस ऋतुमें अभ्यंग, उत्सादन (हलदी आदिका मलना) जेन्ताक (एक प्रकारका स्वेद) आदिका व्यवहार है । ईंटोंके अथवा मृत्तिकाके बनेहुए उष्ण गृहमें अथवा उष्ण गर्भगृहमें वासकरना चाहिये । इस ऋतुमें कम्बल, चर्म्म (पोस्तीन आदि) रेशमीन सवर्णी और विचित्र कम्बलआदिसे भलीभाँति ढकीहुई सवारी (अम्बारि) सेज और आसनको व्यवहार करे । सदैव मोटा और गरम कपडा पहिने, अंग को घिसकर गाढा लेप करे । शयन करनेके समय मद पीकर कामयुक्त चित्तसे मोटी ताजी, उठेहुवे स्तनवाली, अगर आदि सुगन्धियें जिसके शरीरमें लगरही हैं, ऐसी तरुणी स्त्रीके साथ लेटकर आलिंगन करे और

इच्छानुसार मैथुन करके फिर सोरहै। इस ऋतुमें हलके, वातवर्द्धक भोजन और पानीय अर्थात् पीनेके द्रव्य, प्रबल वायु, अल्प आहार और उदमन्थ (जलम घोले हुवे सत्तू) त्यागदेवे। हेमन्त और शिशिर ऋतु दोनो समानहै, अतर केवल इतनाहीहै कि, शिशिर ऋतुमें आदान जात (इस ऋतुमें सूर्य्यके द्वारा शरीरके चिकने पदार्थ ग्रहण किये जातेहैं) रूक्षापन, मेघवायु और वर्षासे उत्पन्न हुवा शीत अधिक होताहै, इसकारण हेमन्त कालके आचार व्यवहार शिशिर कालमें आचरण करे। इस ऋतुमें वायुरहित उष्ण गृहमें रहना चाहिये और चरपरे कडवे, कसेले रसवाले द्रव्य, वातको वढानेवाले द्रव्य, हलके द्रव्य और ठंडे खानके पदार्थ और पीनेके द्रव्य त्यागदेवे।

वसन्तकृत्यम्।

हेमन्तेनिचित श्लेष्मादिनकृद्भाभिरीरितः। कायाग्निंबाधतेरोगांस्ततः प्रकुरुतेवहून् ॥ तस्माद्वसन्तेकर्म्माणिवमनादीनिकारयेत्। गुर्वम्लस्निग्धमधुरदिवास्वप्नंचवर्जयेत ॥ व्यायामोद्वर्त्तनधूमकवलग्रहमंजनम्। सुखाम्बुनाशौचविधिंशीलयेन्कुसुमागमे ॥ चन्दनागुरुदिग्धाङ्गोयवगोधूमभोजनः। शारभशाशमैणेयमांसलावकपिंजलम्॥ भक्षयेन्निगदसीधुपिवेन्माध्वीकमेववा। वसन्तेऽनुभवेत्स्त्रीणांकाननानांचयौवनम् ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुमें सचित हुवा कफ सूर्य्यकी तीक्ष्ण किरणोंसे चलायमान होकर देहकी अग्निको मंद करता है इसकारण वसन्त ऋतुमें बहुत प्रकारके रोग उत्पन्न होतेहैं, अतएव वसन्तऋतुमें उनके दूर करनेको वमनादि क्रियाकरे। इसऋतुमें भारी, खट्टी, तथा मधुर रसवाली वस्तु और दिनमें सोना छोडदेवे। व्यायाम, उबटन, धूमपान, कवलग्रहण (कुल्ला आदिके रसके कुरले करना) आँखोंमें अंजन लगाना, कुछेक गरम जलसे शौचादि क्रियाकरना, यव, गोधूम, शरभका मांस, खरगोशका मांस हिरनका मांस, लवेका मांस, और चातकका मांस भक्षण करना, और सीधु तथा माध्वीक नामक मद्यको पीना ठीकहै इसऋतुमें वनोंकी और स्त्रियोंके यौवनकी सुन्दरता वढती है।

ग्रीष्मकृत्यम् ।

मयूखैर्जगतःसारंग्रीष्मेपेपीयतेरवि । स्वादुशीतद्रव्यस्निग्धमन्नपानतदाहितम् ॥ शीतसशर्करंमन्थजाङ्गलान्मृगपक्षिण । घृतपयःसशाल्यन्नभजन्ग्रीष्मेनसीदति ॥ मद्यमल्पनवापेयमथवासुबहूदकम् । लवणाम्लकटूष्णानिव्यायामञ्चात्रवर्जयेत् । दिवाशीतगृहेनिद्रांनिशिचन्द्रांशुशीतले ॥ भजेच्चन्दनदिग्धाङ्ग प्रवातेहर्म्यमस्तके । व्यजनै पाणिसंस्पर्शैश्चन्दनोदकशीतलै. ॥ सेव्यमानोभजेतास्यामुक्तामणिविभूषितः । काननानिचशीतानिजलानिकुसुमानिच ॥ ग्रीष्मकालेनिषेवेतमैथुनाद्विरतोनरः ।

अर्थ-ग्रीष्मऋतुमें सूर्यकी किरणोंसे पृथ्वीके सर्व स्निग्ध पदार्थ सूख जातेहैं इसकारण इस ऋतुमें स्वादिष्ठ, शीतलद्रव्य और स्निग्धगुणवाले भोजन और पीनेके द्रव्योंका व्यवहार करना चाहिये । इसऋतुमें बूरा मिलाहुवा तक्र, जंगली पशु और जंगली पक्षियोंका मांस, साठीके चावलोंका भात खावे दूध पीवे, जिनको मदिरा पीनेका अभ्यासहै वह थोडीसी या बहुतसा जल मिली हुइ मदिरा पीवें परन्तु जिनको मदिरा पीनेका अभ्यास नहीं है, उनको इस ऋतुमें मदिरापान अयोग्यहै ग्रीष्मऋतुमें लवण, खट्टे और चरपरे रसके पदार्थ, उष्णवस्तु और व्यायाम (कसरत) करनी छोडदें । शरीरमें चन्दन लगाकर दिनके समय हवादार शीतल घरमें और रात्रिके समय पवन और चंद्रमाकी किरणोंसे संयुक्त छतपर शयन करे । जब दुपहरको प्रचण्डसूर्यकी गरमीसे शरीर तप्तहोजाय तो चन्दनके जलको पंखेपर छिडककर शीतल बयारसे और दासदासियोंका हाथ छूनेसे, सावधान होनेके पीछे मणिमुक्ता धारणकर आराम करना चाहिये । फिर मैथुनसे निरन्तर शीतल पुष्पवाटिका, शीतलजल और शीतल सुगंधियुक्त पुष्पोंका व्यवहार करे ।

वर्षाकृत्यम् ।

आदानदुर्बलेदेहेपक्ताभवतिदुर्बल. । सवर्षास्वनिलादीनां दूषणैर्बाध्यतेपुन· ॥ भूबाष्पान्मेघनिस्यन्दात्पाकादम्ला-

जलस्यच।वर्षास्वग्निबलेक्षीणेकुप्यन्तिपवनादय ॥तस्मा-त्साधारण सर्वोविधिर्वर्षासुचेष्यते।उदमन्थदिवास्वप्नमव-श्यायनदीजलम् ॥ व्यायाममातपञ्चैवव्यवायञ्चात्रवर्जये-त।पानभोजनसस्कारान्प्राय क्षौद्रान्वितान्भजेत्।व्यक्ता-म्ललवणस्नेहवातवर्षाकुलेऽहनि ॥ विशेषशीतेभोक्तव्यव-र्षास्वनिलशान्तये।अग्निसरक्षणवतायवगोधूमशालय ॥ पुराणाजागलैर्मांसैर्भोज्यायूपैश्चसस्कृतै । पिवेत्क्षौद्रान्वि-तचाल्पमाध्वीकारिष्टमम्बुवा ॥ माहेन्द्रतप्तशीतवाकौपसा-रसमेववा।प्रघर्षोद्वर्त्तनस्नानगन्धमाल्यपरोभवेत् ॥ लघु-शुद्धाम्बरस्थानभजेदक्लेदिवार्षिकम् ।

अर्थ–आदान कालमें देहकी दुर्बलताके हेतुसे अग्निभी दुर्बल होजाती है, यह दुर्बलाग्नि वर्षाकालमे वातादि दोषाकरके अधिक दुर्बल होजाती है इसऋतुमे पृथ्वीमेंसे वाफ उठतीहै, मेघ गरजतेहै जलका अम्ल पकजाताहै और अग्निका बल न्यूनहोनेसे त्रिदोष कुपित होतेहै इस कारण इसऋतुमें साधारण विधिका आचरण करना चाहिये वर्षाकालमें मट्टेमें जल मिलाकर पीना, दिनमें सोना, हिम और नदीके जलको सेवनकरना, कसरत करना, धूपमे बैठना और मैथुन करना, यह सब छोडना चाहिये इसऋतुमे पानी और भोजनमे सहत मिलाकर सेवन करना चाहिये और वर्षायुक्त दिनमें अत्यत शीत होय तो वायुको शान्त करनेके लिये अम्ल और लवण रस तथा स्नेहयुक्त द्रव्य भक्षण करे । अग्निकी रक्षा करनेको पुराने जौ, गेहू, शालीके चावल और जगली पशुओंके मासका भक्षण, शोधित यूप, मधुयुक्त थोडीसी माध्वीक मदिरा अथवा अरिष्ट पान करे मेघजल वा तप्तशीतल जल (जो जल गरम होकर शीतल किया होय,) या कूपजल या सरोवरका जल पान करे, इस ऋतुमें शरीरका घर्षण, उबटन, स्नान, गन्धादि सुगधित द्रव्य और पुष्पोंकी मालाका धारण, हलके और शुद्धवस्त्र पहरना और क्लेदरहित स्थानमें वास करना चाहिये ।

शरदृतुचर्या ।

वर्षाशीतोचितांगानामहसेवार्करश्मिभि । तप्तानामाचित

पित्तंप्रायःशरदिकुप्यति॥तत्रान्नपानंमधुरंलघुशीतसतिक्तकम् । पित्तप्रशमनसेव्यमात्रयासुप्रकांक्षितै ॥ लावान्कपिञ्जलानेणानुरभ्रान्छरभाञ्छशान् । शालीन्यवांश्चगोधूमान्सेव्यानाहुर्घनात्यये ॥ तिक्तस्यसर्पिषःपानविरेकोरक्तमोक्षणम् । धराधरात्ययेकार्यमातपस्यचवर्जनम् ॥ वसातैलमवश्यायमौदकानूपमामिषम । क्षारदधिदिवास्वप्न प्राग्वातश्चात्रवर्जयेत् ॥ दिवासूर्यांशुसंतप्तनिशिचन्द्रांशुशीतलम् । कालेनपक्वंनिर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम् ॥ हंसोदकमितिख्यातशारदविमलजलम् । स्नानपानावगाहेषु शस्यतेतद्यथामृतम ॥ शारदानिंचमाल्यानिनासांसिविमलानिच । शरत्कालेप्रशस्यतेप्रदोषेचेन्दुरश्मय॰ ॥

अर्थ–वर्षाकालमें उस कालका शीतसे संचित हुआ पित्त शरद् ऋतुमें सूर्यकी किरणोंसे संतापितहो (अनुबंधरूपसे वात और पित्तभी कुपित होते हैं) कुपित होताहै इसकारण पित्तको शमन करनेके लिये क्षुधातुर मनुष्य मधुर, शीतल, हलका और कडवा अन्न तथा पीनेके द्रव्य यथोचित मात्राके अनुसार सेवन करै और लवा, कपिञ्जल (सफेद तीतर,) एण (कालाहरिण) मेढा, शरभ और खरगोसआदि जीवोंका मांस, सांठीके चावलोंका भात और जौ, गेहूं खावे। पित्तको शान्त करनेके लिये तिक्तरसयुक्त घृत (पंचतिक्त घृतादि,) पीना चाहिये जो तिक्त घृतके पीनेसे पित्त शान्त न होवे तो जुलाबकी औषधियोंको सेवनकर पित्तको शान्त करे। फिर इससेभी शान्त न होवे तो रक्तमोक्षण (फस्त) कराना चाहिये। इस ऋतुमें शरीरको धूप न लगने दे, तथा वसा (चरबी) तेल, हिम, जल और अनूपदेशके जीवोंका मांस, खार, दही, दिनका सोना और प्रबल पूर्वदिशाकी वायुका सेवन छोडदेना चाहिये। वर्षाके समय मेघ बर्षनेसे जल नवीन होजाते हैं। वह इस जलके साथ विषैले पदार्थ मिलजाते हैं और जलका अम्ल पकजाता है जब शरद् ऋतुमें यह जल स्वभावसे पकजावे और अगस्त्यके उदयसे विषरहित होजाय तब उसको लेकर

सारेदिन सूर्यकी धूपमें और रातभर चन्द्रमाकी किरणोंमें रखकर शीतल करे इसजलको 'हंसोदक' कहते हैं। शरत् ऋतुमें स्नान, पान और कुल्ला करनेको हंसोदकही श्रेष्ठ है तथा अमृतके समान है, इस ऋतुमें पुष्पोंकी माला तथा निर्मल वस्त्रोंको धारण करना चाहिये और प्रदोष (रात्रि) कालमें चन्द्रमाकी किरणोंको सेवन करना चाहिये।

अथ ग्रंथकर्तृवंशवर्णनम्।

चन्द्रान्वयेमाथुरवैश्यवर्य्यआह्लादगोत्रोद्विजवृन्दसेवी। दान्त' सुशील शिवभक्तियुक्तोविद्यानिधि सर्वकलाप्रवीण'॥ आसीत्पुराधर्म्मविदांवरिष्ठ'श्रीबालमुकुन्द'करुणाकरश्च। यस्यप्रतापीबहुपुण्यकारीबभूवगोवर्द्धनदासपुत्र ॥ हरियशराजोहरिजनभक्त सुजनसुधर्म्मीविदितसुपुत्र'। गोपालदासस्तनयोबभूवयोमेश्वरस्तस्यकुलेमहात्मा ॥ विज्ञानयुक्त प्रथितप्रबोधो महाजन सर्वगुणैकसिन्धु । तस्यसुत पुरुषोत्तमदासोबुद्धियुत कथितोगुणशील ॥ कोविदरत्नमहाजनसेवीसज्जनसंगरतोविनयीच। मोतीरामइतिख्यातस्तनयस्तस्यधार्म्मिक'॥तत्सुत पद्मनेत्रोभूत्समृद्धोधार्म्मिकोवशी। घनश्यामदासनामातस्यपुत्रोगुणाग्रणी। सीतारामश्चविख्यातस्तस्यपुत्र प्रतापवान्। विनिर्मितोयस्यविशालकूप प्रवर्ततेपट्टरगजमध्ये। अशीतिहस्तरयमुखविलोक्यमतिर्भवत्येवनुदीर्घिकाया' ॥ नतत्समोन्य कूपोस्तिमुरादाबादपत्तने। अद्भुतोदर्शनीयश्चकीर्तिर्जागर्त्तिभूतले॥ तस्यपुत्रास्त्रयश्रेष्ठादिल्सुखरायमहर्द्धिमान्। मध्यमोरामजीरामोहरिभक्तोमहाशय ॥ कनीयान्सत्यवान्नाम्यानंदरूपश्चविश्रुतः। तस्यपुत्रोमहानत्र शालिग्रामोऽभ्यजायत॥तेनासौनिर्म्मितोग्रन्थोभिषजानांसुखावहः। सर्वलोकोपकारायज्ञा-

नायचशुभाशुभम्॥शाकेवसुक्षितिवसुक्षितिसम्मितेब्देआ-
षाढशुक्लविमलातिथिपञ्चदश्याम । वारेभृगोसमगमत्प-
रिपूर्णतां वै ग्रन्थोनिघण्टुशिरभूषणनामधेयः ॥

अर्थ-चन्द्रवंशीय माथुरवैश्य महाश्रेष्ठ आह्लादगोत्रमें अनेक सज्जन हुए, उनमें ब्राह्मणोंके सेवक, परमचतुर, सुशील, शिवभक्तियुक्त, विद्यानिधान, सर्वगुणोंमे प्रवीण, धर्म्मज्ञजनोंमें श्रेष्ठ, करुणासिन्धु श्रीबालमुकुन्दजी पहिले हुए, जिनके बडे प्रतापी और पुण्यकारी गोवर्धनदासजी हुए, उनके हरिभक्तोंके भक्त हरिप्रियशराय हुए, जो बडे महात्मा और मनुष्योंमें धर्म्मात्मा विख्यात हुए उनके महायोगेश्वर गोपालदासजी पुत्र हुए जो बडे विज्ञानी सब वार्तोके जाननेवाले, महापुरुष, सम्पूर्ण गुणोंके सागर थे उनके सुत महाबुद्धिमान्, गुणज्ञ और शीलवान्, पण्डितोंमें रत्न, महात्माओंके सेवक, सज्जनोंकी संगतिमें रहनेवाले, नीतिवान् पुरुषोत्तमदास हुए उनके महाधर्म्मात्मा मोतीरामजी हुए उनके पुत्र धर्म्मपरायण और जितेन्द्रिय कमलनयन हुये, उनके पुत्र गुणियोंमें अग्रगण्य श्रीघनश्यामदास हुए, उनके पुत्र संसारमें विख्यात और महाप्रतापी सीतारामजी हुए, जिन्होंने पद्मपरगजमें बहुत बडा कुआ बनाया, जिसके ८० हाथके मुखका विस्तार देखकर यह जान पडता है कि, यह कोई बडा सरोवर है मुरादाबादमें इस कुएकी समान दूसरा कुवा नहीं है, यह एक अद्भुत और देखने योग्य वस्तु है, जिसकी आज प्रशंसा हो रही (यह चौडे कुवेके नामसे प्रसिद्ध) है उन सीतारामजीके महाबुद्धिमान् तीन पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ दिलेराम, मध्यम रामजीदास, जो बडे हरिभक्त और महायशस्वी थे और छोटे सत्यवान् आनन्दरूप खुसालराय विख्यात हुए उनका पुत्र महानम्र मैं शालिग्राम

१ आनन्दरूप जो खुशालरायनामसे विख्यात हुए उनका वृत्तान्त यह है, संवत् १८६० में एक मीरखां नामक [illegible] भारी चतुरंगिनी सेनासहित मुरादाबादपर चढ आया, उस समय चौधरी खुशालराय जो कि, बडे तेजस्वी और प्रतापवान् मुरादाबादमें मुख्य थे । उन्होंने [illegible] प्रकारके भोजन सम्पूर्ण सेनाके खाने और सवारियोंके लिये दाना, घास इत्यादि सामग्री पहुँचाई और नगरको लूटसे बचाया उस समय मेरे पिता आनन्दरूपजीकी १० वर्षकी अवस्था थी, उन्होंने भी बहुत कुछ मिष्टान्न आदि सामग्री मीरखांको भेंट की, इस समय मेरे पिताजीसे मीरखां [illegible] कि, आपने भी खुशालकी [illegible] मुझको [illegible] खुशालरायको [illegible] [illegible] खुशालराय कहने लगा, इस कारण मेरे पिता खुशालरायनामसे विख्यात हुए ।

हुआ मैंने वैद्योंको ३ सुख देनेवाला सर्व संसारके उपकारके लिये और शुभाशुभके जाननेके लिये यह ग्रंथ बनाया है शके १८१८ आषाढ सुदी पूर्णमासी शुक्रवारको यह "निघण्टुभूषण" समाप्त हुआ ॥

इति श्रीमाथुरवैश्यवंशोद्भवरसिकपुरनिवासिलालाशालिग्रामवैश्यविरचिते शालिग्रामनिघण्टुभूषणे उत्तरार्द्धे मिश्रवर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

शुभमस्तु ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।



श्रीहरिः ।

अथ परिशिष्टभागः ।

मायाफलनामानि ।

मायाफलमाइफलचमाइकाछिद्राफलमायिचपंचनामकम् ।

अर्थ-मायाफल, माइफल, माइका, छिद्राफल और मायि (मायुक, केशरञ्जन, शिशुभेषज)

संस्कृतभाषामें	मायाफल ।
हिन्दीभाषामें	माजूफल ।
बंगभाषामें	माइफल ।
गुजरातीभाषामें	माया ।
मराठीभाषामें	मायफळ ।
इंग्रेजीभाषामें	गालनट । Gallnut
लेटिन्भाषामें	क्वर्कस् इन्फेक्टोरिया । Quercus infectoria
फारसीभाषामें	माजुम ।
अरबीभाषामें	आप्स समरतुल तुरफा ।

मायाफलगुणाः ।

मायुकशीतलरूक्षकषायंलघुदीपनम् ।
विपाकेकटुकग्राहिकफपित्तहरपरम् ॥ (शा० नि०)

अर्थ-माजूफल-शीतल, रूखा, कसैला, हलका, अग्निसंदीपक, पचनेमें चरपरा, मलरोधक और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

उष्णंमायफलंप्रोक्तन्तीक्ष्णंशैथिल्यनाशकम् ।
प्रशस्तवातहृत्प्रोक्तंपूर्वंनचण्टकारकं ॥ (नि० र०)

अर्थ-माजूफल-गरम, तीक्ष्ण, शिथिलतानाशक, प्रशस्त और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

मायाफलंवातहरंकटूष्णकंशैथिल्यसंकोचककेशकार्ष्ण्यदम् ।

अर्थ-माजूफल-वातनाशक, चरपरा, गरम, शिथिलताको संकुचित करनेवाला और केशोंको काला करनेवाला है । (रा० नि०)

विवरण। माजूके वृक्ष वनोंमें होते है, आकृति सरूकी समान होती है, इसके फलोंमें मक्खीकी समान नीले रंगके कीडे घुसजाते हैं और उन फलोंका रस निकालकर फलोंको खुक्ख कर देते हैं उसमें अपने बच्चे रखते हैं, जिसप्रकार अंडेमें जीव बढताहै उसीप्रकार इसमें जीव बढता है, पूर्ण होनेपर निकल जाताहै, इसकारण सब फल काणे होते हैं जो फल काणे नहीं होते उनमें मराहुआ जीव निकलता है। यह वास्तवमें फल नहीं होता किन्तु वृक्षमेंही फलसे दीखतेहैं इसकारण इनकी छाल और बीज नहीं होते।

समुद्रफलनामानि।

समुद्रनामप्रथमपश्चात्फलमुदाहरेत्।
समुद्रफलमित्यादिनामवाच्यंभिषग्वरे॥

अर्थ-समुद्रफल, (अब्धिफल, उदधिफल, सिन्धुफल, अम्बुधिफल) इत्यादि।

संस्कृतभाषामें	समुद्रफल।
हिन्दीभाषामें	समुद्रफल।
मराठीभाषामें	समुद्रफळ।
गुजरातीभाषामें	समदरफल।
कर्णाटकीभाषामें	समुद्रफलकाया।
तैलिङ्गीभाषामें	ब्यारगचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	ब्यारिंगटोनिया एक्युटेंग्युला। Barringtonia Acutangula
	ब्या० रेसिमोसा। B. racemosa

समुद्रफलगुणाः।

फलंसमुद्रस्यकटूष्णकारिवातापहंभूतनिरोधकारि।
त्रिदोषदावानलदोषहारिकफामयभ्रान्तिविरोधकारि। (रा०)

अर्थ-समुद्रफल-चरपरा, गरम, वातविनाशक, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोष, दावानलदोष, कफरोग और भ्रान्तिको हरनेवाला है।

अपिच।

समुद्रस्यफलंचोष्णंतिक्तंचैवत्रिदोषजित्। वातंचभूतबाधांचकफंभ्रान्तिंशिरोरुजम्॥ दोषदावानलाख्यंचनाशयेदितिकीर्तितम्।जलेनघृष्ट्वापीतंचेत्कृमिनाशकरंपरम्॥ नि०र०)

अर्थ-समुद्रफल-गरम, कडवा, त्रिदोषनाशक तथा वात, भूतबाधा, कफ, भ्रान्ति, शिरोरोग और दावानलाख्य दोषाको दूर करे है। इसको जलमें घिसकर पीनेसे कृमिरोग दूर होता है।

विवरण। इसके वृक्ष कोकणदेशकी ओर अधिकतासे होतेहैं, इस वृक्षपर डोरे आते हैं उन डोरोंमेंसे तीन धारवाले बडी इलायचीके समान फल निकलते हैं। उनको समुद्रफल कहते हैं।

ब्रह्मदण्डीनामानि।



ब्रह्मदण्डयजदण्डीचकण्टपत्रफलाचसा ॥

अर्थ-ब्रह्मदंडी, अजदंडी, कण्टपत्रफला।

संस्कृतभाषामें	ब्रह्मदण्डी।
हिन्दीभाषामें	ब्रह्मदंडी, (उटकटारा)।
बंगभाषामें	छागलदाँडी, वामनदाँडी।
मराठीभाषामें	ब्रह्मदंडी।
गुजरातीभाषामें	ब्रह्मदंडी, तरफरो।
कर्णाटकीभाषामें	ब्रह्मदंडी।
इंग्रेजीभाषामें	थिस्टल। Thistle
लेटिनभाषामें	ट्रिकोल्पिसग्लेबरिमा। Tricholepis glaberrima

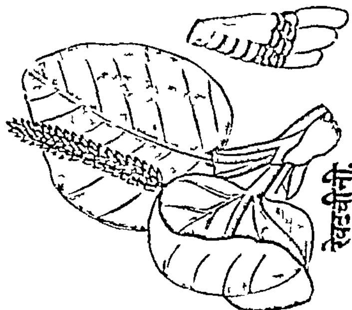
ब्रह्मदण्डीगुणाः।

ब्रह्मदडीभवेदुष्णातिक्ताकफविनाशनी।
वातरोगश्वशोफघ्नाश्चेतिकीर्त्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ-ब्रह्मदंडी-गरम, कडवी, कफनाशक तथा वातरोग और सूजनको दूर करे है।

विवरण । इसका क्षुप होता है, इसके पत्ते और फलोंपर कांटे होते हैं यह प्रायः जंगलमें अधिकतामें होती है ।

रेवट्चीनीनामानि ।



रेवट्चीनीचपीताचगंधिनीपीतमूलिका ।

अर्थ-रेवट्चीनी, पीता, गन्धिनी पीतमूलिका (पीतमूली) ।

संस्कृतभाषामें	पीतमूली ।
हिन्दीभाषामें	रेवत (ट) चीनी ।
बंगभाषामें	रेउचीनी ।
मराठीभाषाम	रेवाचीनी ।
इंग्रेजीभाषामें	रुबब ।
लॅटिनभाषामें	रेडंगेटिक्स ।
फारसीभाषामें	रेवन ।
अरबीभाषामें	रावन ।

रेवट्चीनीगुणा ।

रेवट्चीनीकटुस्तिक्तानल्यासामृदुरेचनी ॥
दन्त्यजीर्णमतीसारवह्निमांद्यमरोचकम् ॥
विदसगशीनपित्तंचदुष्टव्रणविरोहिणी ।

अर्थ-रेवटचीनी-चरपरी, कडवी, बलकारक, मृदुरेची तथा अजीर्ण, अतिसार, मदाग्नि, अरुचि, विड्बंध, शीतपित्त और दुष्ट्रव्रणको दूर करे है।

विवरण। रेवटचीनीका क्षुप होताहै, जड अर्थात् कंद पीले रंगका होताहै इसीको रेवटचीनी कहते हैं। इसके सत्तको उशारे रेवन कहते हैं।

चाहनामानि।



चाहतुचविकाचाहाद्वितीयातृण्णपत्रिका। जायतेदक्षिणेदेशेसाचाहेतिप्रकीर्त्तिता ॥ निर्गुण्डीपत्रवत्पत्रापरद्वीपादिहागता। अपरातृणचाहेतितृणरूपासुराष्ट्रजा ॥

अर्थ-चाह, चविका, चाहा। यह नाम चाहके हैं। दूसरे प्रकारकी चाहके नाम उष्णपत्रिकादि हैं। चाह दक्षिणदेशमें उत्पन्न होती है, चाह इसनामसे सर्वत्र प्रसिद्ध है। इसके पत्ते निर्गुण्डीके पत्तोंकी समान होते हैं और यह दूसरे द्वीपसे आई है अर्थात् पहिले हिन्दुस्थानमें नहीं होतीथी। और एक तृणचाह होती है जिसको संस्कृतमें तृणचाह, तृणरूपा और सुराष्ट्रजा कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	चाह।
हिन्दीभाषामें	चा।
वंगभाषामें	चाह।
मराठीभाषामें	चहा।
गुजरातीभाषामें	चा।
इंग्रेजीभाषामें	टी। Tea
लैटिनभाषामें	थियाचाईनेनसीस। Thea chinensis
फारसीभाषामें	चारातार्ई।

चाहगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णातुवराचाहादीपनीपाचनीलघु । कफपित्तहरी चैवकिंचिद्वातप्रकोपिनी ॥ द्वितीयातृणरूपायासुसुगंधासुराष्ट्रजा । ज्वरघ्नीपाचनीहृद्याकफकासनिवर्हणी ॥

अर्थ-चाह-तीक्ष्ण, गरम, कपेली, अग्निको दीपन करनेवाली पाचक, हल्की, कफपित्तनाशक और कुछेक वातको कुपित करनेवाली है । दूसरी तृणरूप, सुगंधित और सुराष्ट्रदेशमें जो उत्पन्न होती है वह तृणचाह ज्वरनाशक, पाचक, हृदयको हितकारी तथा कफ और खाँसीको दूर करे है ।

विवरण । चाहा पहिले चीन आदि देशोंसे आवीथी किन्तु अब भारतके अनेक भागोंमें चाहकी खेती अधिकतासे होनेलगी है । हमारे भारतवासियोंको भी देखादेखी चाहका अधिक शौक वढने लगा है ।

तमाखुनामानि ।



तमाखु क्षारपत्राचकृमिघ्नीधूम्रपत्रिका ।

अर्थ-तमाखु, क्षारपत्रा कृमिघ्नी, धूम्रपत्रिका (वज्रभृङ्गी, ताम्रकुट्टिक)

संस्कृतभाषामें	क्षारपत्रा ।
हिन्दीभाषामें	तमाखु ।
वंगभाषामें	तमाकू ।
मराठीभाषामें	तम्बाखु ।
गुजरातीभाषामें	तमाखु ।

इंग्रेजीभाषामें	इंडियनटोबाको । Indian tabacco
लेटिन्भाषामें	नैकोटिनाटोबाक । Nicotiana tbbacum
फारसीभाषामें	तम्बाकु ।
अरबीभाषामें	तम्बाक ।

तमाखुगुणाः ।

तमाखु पित्तलस्तीक्ष्णश्चोष्णोवस्तिविशोधनः । मदकृद्भ्रामकस्तिक्तोदृष्टिमांद्यकरः सरः ॥ वामकः कटुकोरुच्योवातस्यानुविलोमकः।कफकासश्वासवातकोष्ठवातकृमीञ्जयेत ॥ दंतशुक्रदृष्टिरुजोलिक्षायूकादिकान्गदान् । वृश्चिकादिविषशोथनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-तमाखु-पित्तकारक, तीक्ष्ण, गरम, बस्तिशोधक, मदकारक, भ्रमकारक, कडवा, दृष्टिको मंद अर्थात् कम करनेवाला, सारक, वमनकारक, चरपरा, रुचिकारक, वातानुलोमक तथा कफ, खाँसी, श्वास, वात, कोष्ठवात, कृमिरोग, दंतरोग, शुक्रदोष, दृष्टिरोग, लीख, जूँ, वृश्चिकआदिका विष और सूजनको दूर करेहै ।

विवरण । तमाखुके क्षुप सर्व देशोंमें होते है ।

ईषद्गोलनामानि ।

ईषद्गोलस्निग्धबीजंश्लक्ष्णजीरश्चकीर्त्तितः ॥

अर्थ-ईषद्गोल, स्निग्धबीज, श्लक्ष्णजीर (स्निग्धजीरक, श्लक्ष्णजीरक)

संस्कृतभाषामें	ईषद्गोल ।
हिंदीभाषामें	ईसबगोल ।
मराठीभाषामें	इसबगोल ।
गुजरातीभाषामें	उथमुजीरु ।
तेलङ्गीभाषामें	इस्पगुल ।
इंग्रेजीभाषामें	ईस्पगुलसीड । Ispaghul seed
लेटिन्भाषामें	प्लेन्टेगोईस्पगुल । Plantago ispaghula
फारसीभाषामें	इस्पगुल ।
अरबीभाषामें	बजरकतूना ।

ईषद्गोलगुणाः ।

ईषद्गोलपरगृष्यमधुरमादिशीतलम् ।

पिच्छिलतुवरकिंचिद्वातकृत्कफपित्तहृत ॥
रक्तातीसारास्रपित्तनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-ईसबगोल-अत्यन्तपुष्टिकारक, मधुर, मलरोधक, शीतल, पिच्छिल, कषेला, किंचित् वातकारक, कफपित्तविनाशक, रक्तातिसार और रक्तपित्तनाशक है ।

विवरण। ईसबगोल खेतामें बोयाजाताहै इसके क्षुप होतेह, ईसबगोल किसीप्राचीन ग्रथम नही लिखा केवल मोरेश्वरकृत वैद्यामृत और निघटुसग्रहमें लिखाहै मालूम होताहै कि, यह प्रथम यूनानी चिकित्साकी पुस्तकामेंसे अनुभव करके लिखागयाहै ।

सुधामूलीनामानि।

अमृताजीवनीजीवासुधामूल्यमृतोद्भवा ।
प्राणदाप्राणभृत्प्रोक्तावीरकदामताबुधे ॥

अर्थ-अमृता, जीवनी, जीवा, सुधामूली, अमृतोद्भवा, प्राणदा, प्राणभृत् और वीरकदा ।

संस्कृतभाषामें	सुधामूली ।
हिन्दीभाषामें	सालममिश्री ।
मराठीभाषामें	सालमिश्री ।

सुधामूलीगुणा ।

दीपनीतुसुधामूलीशुक्रकृद्बलवर्द्धनी। रक्तदोषहरीहृद्याकामसजननीपरा॥रसायनीपरावृष्यावय स्थापुष्टिदामता।(आ.स.)

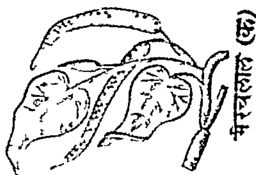
अर्थ-सालममिश्री-अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, बलकारक, रक्तदोषनिवारक, हृदयको हितकारी, कामदेवको उत्पन्न करनेवाली, रसायन, अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक और पुष्टिकारक है ।

विवरण। सालममिश्री हिमालय और तिब्बत आदि पर्वतापर उत्पन्न होती है कन्द सफेदरगका होता है। दूसरी सालममिश्री काबुल-फारस बुखारा आदि देशोंसे आती है । और अनेक धूर्त आलू, प्याज, लसुन, अरवी आदि कन्दोंके द्वारा कृत्रिम सालममिश्री बनाकर बेचते है ।

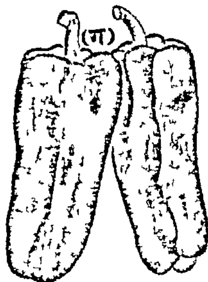
रत्नमरिचनामानि।

कटुर्वीरोज्ज्वलातीद्गातीत्रशत्तयजडेतथा ॥

अर्थ-कटुवीरा, उज्ज्वला, तीक्ष्णा, तीव्रशक्ति, अजड़ा (कुमरिच, रक्तमरिच)









संस्कृतभाषामें	कटुवीरा ।
हिन्दीभाषामें	लालमिर्च ।
बंगभाषामें	लंकामरिच, झाल ।
मराठीभाषामें	लालमिरची ।
औदरनीभाषामें	नोकोमरिच ।
इंग्रेजीभाषामें	कायनपेपर ।
लैटिनभाषामें	फार्गिवारसे ।
फारसीभाषामें	फिल्फिलेसुर्ख ।

कटुवीरागुणा ।

कटुवीराग्निजननीवलासघ्नीचदाहिनी । हन्त्यजीर्णविषूची-
व्रणक्लिन्नसुदारुणम्।तन्द्रामोहप्रलापञ्चस्वरभेदमरोचकम् ॥

अर्थ–लालमिर्च–अग्निप्रदीपक, बलासनाशक, दाहजनक, तथा अजीर्ण, विषूचिका, दारुण और क्लिन्न व्रण, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, स्वरभेद और अरुचिको दूर करेहै ।

विवरण । लालमरिचके क्षुप मकोयके क्षुपके समान होते हैं, फूल सुफेद रंगके आते हैं फल अपक्व अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले होकर लाल होजाते हैं। मिरच छोटी बडी देशी, देशान्तरीय अनेक प्रकारकी होती है।

वनकुलत्थनामानि ।

कुलत्थाहृक्प्रसादाचप्रोक्तारण्यकुलत्थिका ।
कुलानीलोचनहिताचक्षुष्याकुम्भकारिका ॥

अर्थ–कुलत्था, दृक्प्रसादा, अरण्यकुलत्थिका, कुलानी, लोचनहिता, चक्षुष्या, कुम्भकारिणी (कुलत्थिका, कुलमाष, कुरुविल्वक, काननोत्था, चिपिटा)

संस्कृतभाषामें	कुलत्था ।
हिन्दीभाषामें	वनकुलथी, चाक्षु ।
बंगभाषामें	वनकुलथी ।
मराठीभाषामें	रानकुळीथ, रानकुलगे ।
गुजरातीभाषामें	चमेडच, आरण्यनुभग्ण ।
कर्णाटकीभाषामें	कएणगुटकीनर्बीज ।
इंग्रेजीभाषामें	फोरलीव्डकेशिया । Four leved cassia
लैटिन्भाषामें	केशियाएवसस् । Cassia absus
फारसीभाषामें	चश्मक ।
अरबीभाषामें	चश्मिमसन तश्मीज ।

अस्य गुणा ।

वन्योद्भवःकुलित्थस्तुकटुस्तिक्तश्चशीतल ।व्रणरोपणका-
रीचचक्षुष्योऽर्शविनाशक ॥ कफशूलविषस्फोटकंडूहि-
क्काविनाशक ।नेत्ररोगमलस्तम्भमाध्मानञ्चविनाशयेत् ॥
(नि०र०)

अर्थ-चाखु (कुलित्थ)-चरपरी, कडवी, शीतल, व्रणको भरनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, बवासीरको दूर करनेवाली तथा कफ, शूल, विष, रक्तदोष, कण्डू, हिक्का, नेत्ररोग, मलस्तम्भ और आध्मान रोगको हरनेवालीहै।

विवरण । वनकुल्थीके क्षुप वनमें होतेहैं । फूल कोयलके समान लगतेहैं इसके ऊपर फली आती है दूसरे प्रकारकी वनकुल्थीका क्षुप छत्तारा होताहै।

माहाराष्ट्रीनामानि ।



महाराष्ट्र्यांचराष्ट्रीचतीक्ष्णामरहट्टिकामता ॥

अर्थ-महाराष्ट्री, राष्ट्री, तीक्ष्णा, मरहट्टिका ।

संस्कृतभाषामें	महाराष्ट्री ।
हिन्दीभाषामें	मरेठी ।
मराठीभाषामें	मराठी ।
गुजरातीभाषामें	मरेठी ।
इङ्गेजीभाषामें	पेनिरोयल Pennyroyal
लेटिन्भाषामें	मेन्थाप्युलेजिय MenthaPulegium
फारसीभाषामें	पाधुनेगाउ ।
अरबीभाषामें	उफहोयान ।

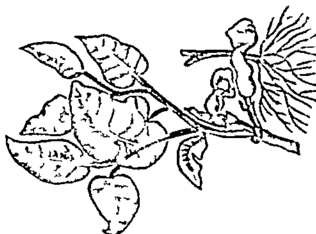
महाराष्ट्रीगुणाः ।

महाराष्ट्रीकटुस्तीक्ष्णासोष्णावातकफार्त्तिहृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मरेठी-चरपरी, तीक्ष्ण, गरम तथा वात और कफकी पीडाको दूर करैहै ।

विवरण । मरेठीके बडे २ क्षुप होतेहैं, पत्ते तुलसीके समान और गरम पीले तथा लाल रंगके डोर लगतेहैं यह अजवायनके समान होतीहै ।

कीटमारीनामानि ।



कीडामारी

कीटारि.कीटमारीचभृंगीकीटकहातथा ॥

अर्थ-कीटारि, कीटमारी भृंगी, कीटकहा ।

संस्कृतभाषामें	कीटमारी ।
हिन्दीभाषामें	कीडामारी ।
मराठीभाषामें	किडामार ।
गुजरातीभाषाम	कीडामारी ।
तैलिङ्गीभाषामें	गीरीदागुटापा ।
इंग्रेजीभाषामें	बेक्टीएटेडबर्थवर्ट Bracteab Birthwort
लेटिन्भाषामें	एरिष्टोलोचियाब्रेकटीका Aristolochia bracteata

अस्या गुणा ।

वातश्लेष्मज्वरहरासध्यस्थिनिप्रसारिणी ॥

अर्थ-कीडामारी-वातकफज्वरनाशक, तथा संधि और अस्थियोंको फैलानेवालीहै ।

विवरण । कीटमारीके क्षुप होतेहैं विशेष करके खेतोंम उत्पन्न होजातीहै, इसपर डोरे आतेहैं, वह डोरे कच्ची अवस्थामें हरे रंग और रेखायुक्त होतेहैं । पकनेपर उनमेंसे अपने आप फटकर काले रंगके बीज निकलतेहैं ।

सर्पदंष्ट्रानामानि ।

सर्पदंष्ट्रापीतपुष्पागुच्छपत्राविषापहा ॥

अर्थ-सर्पदंष्ट्रा, पीतपुष्पा, गुच्छपत्रा, विषापहा ।



संस्कृतभाषामें	सर्पदंष्ट्रा ।
हिन्दीभाषामें	सिताब ।
मराठीभाषामें	सताप ।
गुजरातीभाषामें	सताप ।
इंग्रेजीभाषामें	कोमनरु Commonrue
लैटिन्भाषामें	रुटाग्रेविओलेन्स Ruta Graveolens
फारसीभाषामें	इस्पन्द ।
अरबीभाषामें	हरमल ।

सर्पदंष्ट्रागुणाः ।

सर्पदंष्ट्रासराचोष्णातिक्ताकफविनाशिनी ।
वातनाशकरीप्रोक्ताविचारज्ञैश्चिकित्सकैः ॥ (नि०र०)

अर्थ-सिताब-सारक, गरम, कडवी, कफनाशक और वातको हरनेवाली है ।

विवरण । सिताबके क्षुप बाग पुष्पवाटिका और घरगमलोंमें मनुष्य लगालेते हैं । सिवाय निघण्टुरत्नाकरके और किसी प्राचीन ग्रंथमें सिताब नहीं है ।

उष्ट्रकण्टनामानि ।

उष्ट्रकण्टोथकण्टालु करभादनपत्रसः ॥

अर्थ-उष्ट्रकण्ट, कण्टाउ, करभादन (उत्कण्टक, कण्टक, शृगाल, शुनका शन, तीक्ष्णाग्र, वृत्तगुच्छ, गुरर्दंडमापद, उत्कटोतट)

संस्कृतभाषामें उष्ट्रकट ।

हिंदीभाषामें	ऊँटकटीरा ।
मराठीभाषामें	उटकटारा, उतारी ।
गुजरातीभाषामें	उत्कटो, शूलियो ।
इंग्रेजीभाषामें	थिस्टल । Thistle
लैटिनभाषामें	एकिनोप्स एकीनटस् । Echinops echinatus

अस्या गुणाः ।

उत्कण्टकःकटुस्तिक्तःकफवातहरोलघुः ।
तन्मूलपानतःस्त्रीणांशीघ्रप्रसवकारकः ॥ (शो०नि०)

अर्थ–ऊँटकटीरा–चरपरा, कडवा, कफवातनाशक, हलका, इसकी जडको जलमें पीसकर पीनेसे स्त्रियोंके शीघ्रप्रसव होजाता है ।

अन्यच्च ।

उत्कटारुचिदाचोष्णातिक्तावृष्याप्युदाहृता।मूत्रकृच्छ्रपित्तवातमेहतृष्णाचहृद्रुजम्॥विस्फोटकनाशयतिबीजमस्यास्तु शीतलम् । वृष्यतृप्तिपरंचैवमधुरश्चप्रकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ–ऊँटकटीरा–रुचिकारक, गरम, कडवा, वीर्य्यवर्द्धक तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तवात, प्रमेह, तृषा, हृदयरोग और विस्फोटकको दूर करे है । इसके बीज–शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक और मधुर है ।

विवरण । ऊटकटेरीके क्षुप होते हैं, इसके पत्ते और फलोंमें कांटे होते हैं । इसकी डालियोंमें तीक्ष्ण अणिवाले कांटेयुक्त डोरे लगते हैं । हमारे देशमें कोई कोई अजान वैद्य सत्यानासी कटेरीकोही ऊटकटीरा गाते हैं ।

नखरञ्जकनामानि ।

तिमिर-कोकदताचद्विवृन्तोनखरञ्जक ।

अर्थ–तिमिर, कोकदन्ता, द्विवृन्त, नखरञ्जक (मेंदिरा, रागगर्भा, रञ्जका, नखरञ्जिनी, सुगन्धपुष्पा, रागाङ्गी, यवनेष्टा)।

संस्कृतभाषामें	नखरञ्जक ।
हिंदीभाषामें	मेहदी ।
बंगभाषामें	मेंदी ।
मराठीभाषामें	मेंदी ।
गुजरातीभाषामें	मेंदी ।

तैलिङ्गीभाषामें	गोरंटग्न ।	
इंग्रेजीभाषामें	हेना ।	Henna
लेटिन्भाषामें	लॉसोनिया आल्बा ।	Lawsonia alba
फारसीभाषामें	हिना ।	
अरबीभाषामें	हिनाअकान्न काफल्युन ।	

अस्या गुणाः ।

रक्तरगादाहहन्त्रीवान्तिकृच्छ्लेष्मकुष्ठहा ॥
बीजमस्याग्राहकंतुशोषकंचप्रकीर्त्तितम् ॥
भूतग्रहाणांदोषचज्वरंचैवविनाशयेत् ।

अर्थ-मेंदी-दाहनाशक, वमनकारक, कफ और कोढको दूर करे है। इसके बीज-मलरोधक, शोषक तथा भूतबाधा, ग्रहदोष और ज्वरको दूर करे है।

विवरण । मेंदीके वृक्ष बागोंमे बोएजाते है, पत्ते छोटे छोटे होते है, मेंदीके फूल मौरकी समान, छोटे सफेदरगके और सुगंधियुक्त होते हैं इसके पत्तोंको पीसकर हाथपावपर लगानेसे लाल होजाते है तथा गरमी और हाथपावादिकी दाह दूर होजाती है। कितनेक देशी वैद्य इसके बीजोंको रेणुका कहते हैं।

अधःपुष्पीनामानि ।

अंधपुष्पीचरोमालुर्गोलोमींदार्विकापिच ।
अधोमुखाधेनुजिह्वाअधःपुष्पीचसत्तथा ॥

अर्थ-अधपुष्पी, रोमाळु, गोलोमी, दार्विका, अधोमुखा, धेनुजिह्वा, अध पुष्पी (अवाक्पुष्पी, मुखा, गणपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	अधपुष्पी ।	
हिन्दीभाषामें	अपाढुली, ओंधाहुली ।	
बंगभाषामें	चोरहुली ।	
मराठीभाषामें	पाथरी ।	
गुजरातीभाषामें	उंधाफूली ।	
लेटिन्भाषामें	ट्राईकोडेस्माइंडिक ।	Trichodesma Indicum

अस्या गुणाः ।

अन्धपुष्पीचचक्षुष्यागूढगर्भापकर्षिणी ॥

अर्थ-अधाहुली-नेत्रोंको हितकारी और गूढगर्भको अपकर्षण करनेवाली है ।

विवरण-अधाहूलीका क्षुप होता है उसकी डंडी कुछ लालीलिये होती है, पत्ते लम्बे गोल और रोमयुक्त होते हैं, फल असमानी रंगका और नीचेको रहता है ।

दण्डोत्पलनामानि ।

दण्डोत्पलेसहदेवाविषमज्वरनाशिनी । दण्डोत्पलात्रिधा प्रोक्तापुष्पवर्णप्रभेदतः । गोवन्दनीदेवसहापीतदडोत्पल स्मृतम् । रक्तदण्डोत्पलाप्राहुर्विश्वदेवातथापरा ॥ श्वेतद-डोत्पलप्रोक्तदडोत्पलाचदेविका ।

अर्थ-दण्डोत्पला, सहदेवा और विषमज्वरनाशिनी यह साधारण दण्डोत्पलके नाम हैं । दण्डोत्पल पुष्पोंके भेदसे तीनप्रकारका है । पीत, रक्त और श्वेत, गोवन्दनी, देवसहा, (गधवल्ली, सहदेवी, सहा) यह पीलेदण्डोत्पलके नाम हैं । विश्वदेवा, (सहदेवा) यह लालदण्डोत्पलके नाम हैं । दडोत्पला, देविका यह सफेद दडोत्पलके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	सहदेवा, दडोत्पल ।
हिन्दीभाषामें	दण्डोत्पल तीनप्रकारका ।
बंगभाषामें	डानिपोलाडानकुर्नी, दडवलरा ।
मराठीभाषामें	ओमारी ।
गुजरातीभाषामें	सेदरडी । (Ageratum (Conyzoides)
लैटिन्भाषामें	वरनोनियामाई निग्या Vernonia Cinerea

त्रिविधदण्डोत्पलगुणाः ।

दण्डोत्पलक्षयश्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ॥

अर्थ-तीनों प्रकारके दडोत्पल-क्षय, श्वास और खांसीको दूर करते हैं तथा अग्निको दीपन करते हैं ।

विवरण । दण्डोत्पलके क्षुप प्राय अनूप देशमें होते हैं, कुछ मोटे, पीला, लाल और किसी किसीमें घोलेरगकाभी आभा होता है, पत्ते गलतुलसीकी

तैलिङ्गीभाषामें	गोरटम ।
इंग्रेजीभाषामें	हेना । Henna
लेटिन्भाषामें	लॉसोनिया आल्बा । Lawsonia alba
फारसीभाषामें	हिना ।
अरबीभाषामें	हिन्नाअकान्न काफलयुन ।

अस्या गुणा ।

रक्तरोगादाहहन्त्रीवान्तिकृच्छ्लेष्मकुष्ठहा ॥
बीजमस्याग्राहकंतुशोषकंचप्रकीर्त्तितम् ॥
भूतग्रहाणांदोषंचज्वरंचैवविनाशयेत् ।

अर्थ-मेंदी-दाहनाशक, वमनकारक, कफ और कोढको दूर करे है । इसके बीज-मलरोधक, शोषक तथा भूतबाधा, ग्रहदोष और ज्वरको दूर करे हैं ।

विवरण । मेंहदीके वृक्ष बागोंमें बोएजाते हैं, पत्ते छोटे छोटे होते हैं, मेंहदीके पुष्प मौरकी समान, छोटे सफेदरंगके और सुगंधियुक्त होते हैं इसके पत्तोंको पीसकर हाथपावपर लगानेसे लाल होजाते हैं तथा गरमी और हाथपावादिकी दाह दूर होजाती है । कितनेक देशी वैद्य इसके बीजोंको रेणुका कहते हैं ।

अधपुष्पीनामानि ।

अधपुष्पीचरोमालुर्गोलोमीदार्विकापिच ।
अधोमुखाधेनुजिह्वाअध पुष्पीचसप्तधा ॥

अर्थ-अंधपुष्पी, रोमालु, गोलोमी, दार्विका, अधोमुखा, धेनुजिह्वा, अध'पुष्पी (अवाक्पुष्पी, मुखा, गंधपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	अंधपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	अधाहुली, आधाहुली ।
बंगभाषामें	चोरपुष्पी ।
मराठीभाषामें	पार्दी ।
गुजरातीभाषामें	उंधाफूली ।
लैटिनभाषामें	ट्राइकोडेस्माइंडिक । Trichodesma indicum

अन्या गुणाः।

अन्धपुष्पीचचक्षुष्यागूढगर्भापकर्षिणी ॥

अर्थ–अधाहुली–नेत्रोंको हितकारी और गूढगर्भको अपकर्षण करनेवाली है।

विवरण–अधाहूलीका क्षुप होता है उसकी डंडी कुछ लालीलिये होती है, पत्ते लम्बे गोल और रोमयुक्त होते हैं, फल असमानी रंगका और नीचेको रहता है।

दण्डोत्पलनामानि।

दण्डोत्पलेसहदेवाविषमज्वरनाशिनी। दण्डोत्पलात्रिधा प्रोक्तापुष्पवर्णप्रभेदतः। गोवन्दनींदेवसहापीतदंडोत्पलं स्मृतम्। रक्तदण्डोत्पलाप्राहुर्विश्वदेवातथापरा ॥ श्वेतदंडोत्पलप्रोक्तादंडोत्पलाचदेविका।

अर्थ–दण्डोत्पला, सहदेवा और विषमज्वरनाशिनी यह साधारण दण्डोत्पलके नाम हैं। दण्डोत्पल पुष्पोंके भेदसे तीनप्रकारका है। पीत, रक्त और श्वेत, गोवन्दनी, देवसहा, (गधवल्ली, सहदेवी, सहा) यह पीलेदण्डोत्पलके नाम हैं। विश्वदेवा, (सहदेवा) यह लालदण्डोत्पलके नाम हैं। दंडोत्पला, देविका यह सपेद दंडोत्पलके नाम हैं।

संस्कृतभाषामें	सहदेवा, दंडोत्पला।
हिन्दीभाषामें	दण्डोत्पल तीनप्रकारका।
बंगभाषामें	दानिपोलादानकुर्नी, दंडकल्स।
मराठीभाषामें	ओसारी।
गुजरातीभाषामें	शेदरडी। (Ageratum (Conyzoides)
लैटिन्भाषामें	वरनोनियासाई निरिया Vernonia Cinerea

त्रिविधदण्डोत्पलगुणाः।

दण्डोत्पलःक्षयश्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ॥

अर्थ–तीनों प्रकारके दंडोत्पल–क्षय, श्वास और खांसीको दूर करते हैं तथा अग्निको दीपन करते हैं।

विवरण। दण्डोत्पलके क्षुप प्रायः अनूप देशमें होते हैं, फूल सपेद, पीला, लाल और किसी किसीके कालेरंगकासा आताहै, पत्ते रानतुलसीकी

समान होवेंहै, रुन्द्रौपदकी टोपी बनाकर शिरपै धारण करनेसे ज्वर दूर होता है ।

रुदन्तीनामानि ।

स्याद्रुदतीस्रवत्तोयासञ्जीवन्यमृतस्रवा ।
रोमाञ्चिकामहामांसीचणपत्रीमधुस्रवा ॥

अर्थ-रुदन्ती, स्रवत्तोया, सञ्जीवनी, अमृतस्रवा, रोमाञ्चिका, महामांसी चणपत्री, मधुस्रवा (सुधास्रवा)

संस्कृतभाषामें	रुदन्ती ।
हिन्दीभाषामें	राणा (पु) रुदन्ती, रुद्रवन्ती ।
मराठीभाषामें	रुडन्ती, ।
गुजरातीभाषामें	पलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	अनुगुणि ।
लैटिन्भाषामें	क्रेसाक्रेटिका Cressa Cretica

रुदन्तीगुणाः ।

रुदन्तीकटुतिक्तोष्णाक्षयक्रिमिविनाशिनी ।
रक्तपित्तकफश्वासमेहहारीरसायनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-रुदन्ती-चरपरी कडवी, गरम, रसायन तथा क्षय, क्रिमि, रक्त पित्त, कफ, श्वास और प्रमेहनाशक है ।

अन्यच्च ।

रुदन्तीवह्निकृद्वृष्यापित्तघ्नीचरसायनी ॥ (रा०प०)

अर्थ-रुदन्ती-अग्निजनक, वीर्यवर्द्धक, पित्तनाशक और रसायन है ।

विवरण । रुदन्तीके बहुत छोटे २ क्षुप होवें है, यह क्षुप प्रायः खारी भूमि और जलके समीप उत्पन्न होते है, पृथ्वीपर फैल जावे है, पत्ते चनोंके पत्तोंकी समान होते हैं इसपै ओस पडनेसे जलके बिन्दु टपकते हैं उन जलके बिन्दुओंसे नीचेकी पृथ्वी भीगी रहती है इसकारण इसको रुदन्ती कहते है ।

चिरपोटनामानि ।

चिरपोटादीर्घपत्राकुंतलीतिक्तकामना ॥

अर्थ-चिरपोटा, दीर्घपत्रा, कुन्तली, तिक्तका (चर्पोटी, रक्तदर्भा, रक्तरसा, रक्तफार्णि)

संस्कृतभाषामें	चिरपोटा ।
हिंदीभाषामें	पनसोखा, पटकोना, चिरपोटन (प०)
मराठीभाषामें	चिरपोटाणी ।
गुजरातीभाषामें	पर्पोटी ।
लैटिन्भाषामें	फाईसेलिस् मिनीमा Physalis Minima P Indica
अरबीभाषामें	काक्नुज् ।
अरबीभाषामें	इवुल्मुहल्याहुदहवअल्काकद् ।

अस्या गुणाः ।

चिरपोटाहिमारूक्षाभेदिनीश्वासकासजित् ।

अर्थ-पनसोखा-शीतल, रूखा, भेदक तथा श्वास और खाँसीको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

पर्पोटीपानलेपाभ्यांरक्तविद्राविणीध्रुवम् ।
तस्या पक्वफलपित्तश्लेष्मलज्वरकारिच ॥

अर्थ-चिरपोटेके पत्ताको पीसकर लेप करनेसे रक्तद्रावण होता है, इसके पके फल पित्त, कफ और ज्वरको उत्पन्न करनेवाले हैं ।

विवरण। इसके क्षुप होते हैं, इसमें बडे २ बोंदने लगते हैं उनके भीतर सफेद रंगके फल होवेहै वह फल कच्ची अवस्थामें कटवे और पकनेपर खट्टे तथा मीठे होजाते हैं ।

कुरण्टिकानामानि ।

कुरण्डिकाक्षेत्रभूषाकुरण्टीक्षेत्रनागिनी ॥

अर्थ-कुरण्डिका, क्षेत्रभूषा, कुरण्टी, क्षेत्रनागिनी (विकट, लघुरण्ट)

संस्कृतभाषामें	कुरण्डिका ।
हिन्दीभाषामें	कुरडवृक्ष (दाक्षिणात्य० दे०)
मराठीभाषामें	लघुकुरडिका, थोरकुरण्डिका ।
गुजरातीभाषामें	नानोआगियो, मोटोआगियो ।
लैटिन्भाषामें	एमानियावेसिकेटोरिया । Ammania Vesicatoria

कुरण्टिकागुणाः ।

कुरण्डिकासरारुच्यागुर्वीचाग्निप्रदीपनी। नागिनीकफवातानांविद्धंसुपरिकीर्त्तिता ॥ वृहत्कुरण्डिकाशीतापाकेमा-

ध्वीकटु स्मृता। तिक्ताक्षाराचरूक्षाचसरावृष्याजडामता॥ वातलापित्तलावस्तौवातकारिकफापहा । रक्तदोषमूत्रकृच्छ्रनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ-कुरड-मारक, रुचिकारक, भारी अग्निदीपक तथा कफ और वातको दूर करे है। यथा कुरड-शीतल पचनेमें मधुर, चरपरा कडुवा, क्षार, रूखा, सारक, वीर्य्यवर्द्धक, जड, वातकारक पित्तजनक, बस्तिमें वातकरनेवाला तथा कफ, रुधिरविकार और मूत्रकृच्छ्रको दूर करे है।

विवरण। कुरण्ड प्राय नग्याहर खेतबागोंमें अधिकतासे होताहै फूल सुफेदरंगका होता है।

कुम्भिकानामानि।

कुम्भिकावारिपर्णीचवारिमूलीखमूलिका ।
आकाशमूलीकुतृणंकुमुदाजलवल्कलम् ।

अर्थ-कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमूली, खमूलिका, आकाशमूली, कुतृण, कुमुदा, जलवल्कल (भिन्नपर्णी, अजाकुम्भी, पानीयपृष्ठज, कुम्भी, वारिमूली, खली, पर्णी, पृश्नी, वारिकर्णिका, दलाढक, वारिकर्णि)।

संस्कृतभाषामें	कुम्भिका, वारिपर्णी।
हिन्दीभाषामें	जलकुम्भी, कुम्भी (काई)।
बंगभाषामें	पाना, टोकापाना।
मराठीभाषामें	जरमटरी
गुजराठीभाषामें	जलकुम्भी।
कर्णाटकीभाषामें	हासल।
तैलङ्गीभाषामें	तुम्पिर।

कुम्भिकागुणाः।

वारिपर्णीहिमातिक्तालघ्वीस्वाद्वीसराकटुः ।
दीपनयकृतीरूक्षाशोणितज्वरशोफकृत् ॥

अर्थ-जलकुम्भी-शीतल, कडवी, हलकी, स्वादिष्ट, सारक, चरपरी त्रिदोषनाशक रूखी तथा रुधिरविकार और ज्वरको दूर करे है।

विवरण। जलकुम्भी अथवा काई प्रायः बडे बडे तालाबोंमें जलके ऊपर ही पांसे ऊपरी परी होती है।

शैवालनामानि ।

शैवालजलनीलीस्याच्छैवलजलजचतत् ॥

अर्थ-शैवाल, जलनीली, शैवल, जलज, (शेपान, शेवाल, शिवल, शेपाल, जलनीलिका, जलनील, अम्बुचामर, जलकुन्तल, मञ्जुल, सैवाल, शेवाल, वारिचामर सलिलकुण्डल, हठपर्णा, अम्बुताल, जलशूक, जलाश्चन, अरक, जलकेश, कावार, जलपृष्ठजा)

संस्कृतभाषामें	शैवाल ।
हिन्दीभाषामें	सिवार ।
बंगभाषामें	शेओयाला ।
मराठीभाषामें	शेवाळ ।
गुजरातीभाषामें	शेवाल, लील ।
तैलिङ्गीभाषामें	नाचु ।
कर्णाटकीभाषामें	हावळ ।
लैटिन्भाषामें	सिरेटोफाईल सबमर्स । Ceratophyllum Submersum
फारसीभाषामें	पशमेंदरा, जामगृक, जवाल ।
अरबीभाषामें	तुहलब ।

शैवालगुणाः ।

शैवालशीतलस्निग्धसन्तापव्रणनाशनम् ॥

अर्थ-सिवार-शीतल, स्निग्ध तथा सन्ताप और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शैवाल शीतल स्निग्धस्तिक्त स्वादुर्लघु पटुः ।
सरःसन्तापव्रणजिज्ज्वरपित्तत्रिदोषहा ।
रक्तदोषस्यशमनोविज्ञेयश्चचिकित्सकैः ॥

अर्थ-सिवार-शीतल, स्निग्ध, कडवी, स्वादिष्ट, हलकी, नमकीन, सारक, तथा सन्ताप, व्रण, ज्वर, पित्त, त्रिदोष और रुधिरके विकारको दूर करे है ।

विवरण । सिवारभी जलके उपर बालोंसी आच्छादित रहती है । यह कईक प्रकारकी होती है सिवार इस देशमें, चीनी साफ करनेमें विशेष करके काममें लीजाती है ।

अत्यम्लपर्णीनामानि ।

अत्यम्लपर्णीतीक्ष्णाचकण्डूराबल्लिसूरणा ।

वल्लीकरवडादिश्च वनस्थारण्यवासिनी ॥

अर्थ-अत्यम्लपर्णी, तीक्ष्णा, कण्टुरा, वल्लिकरणा करवडवल्ली वनस्था, अरण्यवासिनी ।

संस्कृतभाषामें	अत्यम्लपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	रामचना (खट्टुआ)
मराठीभाषामें	कडमडवल्ली, आवडवेल ।
गुजरातीभाषामें	खाट खट्टवबेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	देंगोर्ली ।
लेटिनभाषामें	वाईटीस पडाफाईल। Vitis pedaphylla.

अस्या गुणाः ।

अत्यम्लपर्णी तीक्ष्णाम्ला प्लीहशूलविनाशिनी ।
वातरुद्दीपनी रुच्या गुल्मश्लेष्मामयापहा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अत्यम्लपर्णी-तीक्ष्ण, अम्ल, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिकारक, तथा प्लीहा, शूल, वात, गुल्म और कफ इन रोगोंको दूर करे है ।

विवरण-यही बेल होतीहै, पत्ते जिमीकन्दकी समान एक डंडीमें पांच पाँच होवह, फल करोंदेकी समान झुमकोंमें लगते हैं इस बेलके पत्ते खट्टी सब खट्टी होतीहै ।

मखान्ननामानि ।

मखान्नं पद्मबीजाभ पानीयफलमित्यपि ॥

अर्थ-मखान्न, पद्मबीजाभ, पानीयफल ।

संस्कृतभाषामें	मखान्न ।
हिंदीभाषामें	मखाना ।
बंगभाषामें	मखाना ।
मराठीभाषामें	मखाणे ।
गुजरातीभाषामें	मखाना ।
क०	मखिनागिण ।
लेटिनभाषामें	युर्यलेफिरोक्स । Euryale ferox.

मखान्नगुणाः ।

मखान्नं पद्मबीजस्य गुणैस्तुल्यं विनिर्दिशेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मखानेके गुण कमलगट्टेकी समान है।

विवरण-मखाने कमलगट्टाको भूनकर बनाये जाते हैं इस कारण इसके गुण कमलगट्टेकी समान जानने।

मर्य्यादवल्लीनामानि।



मर्य्यादामारवल्लीचसागरामन्मथापिच।
युग्मपत्रारक्तपुष्पातथासागरमेखला॥

अर्थ-मर्य्यादा, मारवल्ली, सागरा, मन्मथा, युग्मपत्रा, रक्तपुष्पा, सागरमेखला।

संस्कृतभाषाम	मर्य्यादालता।
हिंदीभाषाम	मरजादवेल।
दक्षिणीभाषाम	दोपार्चालता।
वंगभाषाम	छागलखुरी (डा०)।
कोंकणीभाषाम	मर्य्यादावेल।
गुजरातीभाषाम	मरजादवेल्य।
इंग्लिशभाषाम	आईपोमिया बिलोब।

अस्य गुणा।

मर्य्यादवल्लिकाशीतात्राहिणीमारकागुरुः।
पाककालेचोपणास्याद्वातघ्नगर्भरूपिणी॥
विषूचिकांचशूलंचवान्तिंचाप्यनाशयेत्। (नि०र०)

वल्लीकरवडादिश्चवनस्थारण्यवासिनी ॥

अर्थ-अत्यम्लपर्णी, तीक्ष्णा, कण्डूरा, वल्लिसूरणा, करवडवल्ली, वनस्था, अरण्यवासिनी ।

संस्कृतभाषामें	अत्यम्लपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	रामचना (खट्टुआ)
मराठीभाषामें	कडमडवल्ली, आवटवेल ।
गुजरातीभाषामें	खाट खट्टूववेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	हेग्गोली ।
लैटिन्भाषामें	वाईटीस पेंडाफाईला। Vitis pentaphylla

अस्या गुणा ।

अत्यम्लपर्णीतीक्ष्णाम्लाप्लीहशूलविनाशिनी ।
वातहृद्दीपनीरुच्यागुल्मश्लेष्मामयापहा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अत्यम्लपर्णी-तीक्ष्ण, अम्ल, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिकारक, तथा प्लीहा, शूल, वात, गुल्म और कफ इन रोगोंको दूर करै है ।

विवरण-वडी वेल होतीहै, पत्ते जिमीकदकी समान एक डडीमें पाँच पाँच होतेहैं, फल करोंदेकी समान झुमकोंमें लगते हैं इस वेलके पत्ते डडी सब खट्टी होतीहै ।

मखान्ननामानि ।

मखान्नंपद्मवीजाभपानीयफलमित्यपि ॥

अर्थ-मखान्न, पद्मवीजाभ, पानीयफल ।

संस्कृतभाषामें	मखान्न ।
हिंदीभाषामें	मखाना ।
वंगभाषामें	मखाना ।
मराठीभाषामें	मखाणे ।
गुजरातीभाषामें	मखाना ।
दे०	गीलागिच ।
लैटिन्भाषामें	युर्यलेफेरोक्स । Euryale ferox

मखान्नगुणा ।

मखान्नंपद्मवीजस्यगुणैस्तुल्यंविनिर्दिशेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मखानेके गुण कमलगट्टेकी समान है ।

विवरण-मखाने कमलगट्टाको भूनकर बनाये जातेहैं इस कारण इनके गुण कमलगट्टेकी समान जानने ।

मर्यादवल्लीनामानि ।



मर्य्यादामारवल्लीचसागरमन्मथापिच ।
युग्मपत्रारक्तपुष्पातथासागरमेखला ॥

अर्थ-मर्य्यादा, मारवल्ली, सागर मन्मथा, युग्मपत्रा, रक्तपुष्पा, सागरमेखला ।

संस्कृतभाषामें	मर्य्यादालता ।
हिंदीभाषामें	मरजादवेल ।
दक्षिणीभाषामें	दोपार्चालता ।
बंगभाषामें	छागलखुरी 'दा० ।
कोंकणीभाषामें	मर्य्यान्दवेल ।
गुजरातीभाषामें	मरजादवेल ।
इंग्रेजीभाषामें	आइपोमिया बिलोबा । Ipomoea biloba

अथ गुणाः ।

मर्य्यादवल्लिकाशीताग्राहिणीनारुकागुरुः ।
पाककालेचोषणास्याद्वातलागर्भरूपिणी ॥
विषूचिकांचशूलंचशान्तिंचामचनाशयेत । (नि०र०)

अर्थ-मरजादवेल-शीतल, मलशोधक, सारक, भारी, पचनेमें चरपरी, वातकारक, गर्भको अपकर्षण करनेवाली तथा विपूचिका, शूल, वमन, और आमको दूर करे है।

विवरण। मरयादवेल प्रायः अनूपदेशमें अर्थात् नदीके निकट अधिकतासे होतीहै, इसके पत्ते अश्मन्तकवृक्षकी समान दो दो एकत्र होते हैं, फूल लाल होता है।

झिल्लनामानि।

झिल्लोरक्तापहोनीलःसुझिल्लोमृदुपत्रकः॥

अर्थ-झिल्ल, रक्तापह, नील, सुझिल्ल, मृदुपत्रक।

संस्कृतभाषामें	झिल्ल।
हिन्दीभाषामें	झिल।
मराठीभाषामें	सुरकुट।
गुजरातीभाषामें	झिलय।
लैटिनभाषामें	इण्डिगोफोरा पोसिफ्लोरा। Indigofera pausiflora

अस्य गुणाः।

झिल्लोवातास्रकंहन्तिशितवीर्य्योऽग्निदीपनः।

अर्थ-झिल्ल वातरक्तको दूर करनेवाला, शीतल और अग्निको दीपन करनेवाला है।

विवरण-झिलका क्षुप होता है, इसकी छाल लाल रंगकी होती है, पत्ते बहुत छोटे होते हैं, फूल लाल होता है, फली छोटी होतीहै।

एकवीरनामानि।

एकवीरोमहावीरःसकृद्वीरःसुवीरकः।

एकादिवीर्य्यपर्य्यायोवीरश्चपङ्क्तिधाह्वयः॥

अर्थ-एकवीर, महावीर, सकृद्वीर, सुवीरक, एकादिवीर्य्यपर्याय, वीर।

संस्कृतभाषामें	एकवीर।
हिन्दीभाषामें	एकवीर।
मराठीभाषामें	अमाणा।
गुजरातीभाषामें	एकलकटो।
कर्णाटकीभाषामें	गड्डुविच।
लैटिनभाषामें	ब्रायोडेलियामोण्टेना। Briodelia montana

एकवीरगुणा ।

एकवीरामृतातिक्ताचात्युष्णावातहामता ।
पक्षावातपृष्ठकटीशूलञ्चैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-एकवीर वृक्ष-कडवा, अत्यन्त गरम, वातनाशक तथा पक्षाघात, पृष्ठ और कटिशूलको दूर करेहै ।

विवरण-एकवीरके जंगलमें बडे बडे वृक्ष होते है, इसमें बडा, मोटा और अलग २ एक एक काँटा होताहै, पत्ते पारसकी समान होते हैं, फल छोटे छोटे और झुमकाम लगते हैं ।

कथारीनामानि ।

कथारीकथरीकथादुर्धर्षातीक्ष्णकण्टका ।
तीक्ष्णगन्धाक्रूरगन्धादुःप्रवेशाष्टनाभिधा ॥

अर्थ-कथारी, कथरी, कथा, दुर्धर्षा, तीक्ष्णकण्टका, तीक्ष्णगन्धा, क्रूरगन्धा, दुःप्रवेशा (अहिंसा, जालि, गृध्रनखी, कर्णास्फोटा, गृध्रनखी, वक्रकंटकी, कन्या, कपालकुलिका, अम्लदण्डा, गुरुकुलिमका)

संस्कृतभाषामें	कथारी ।
हिन्दीभाषामें	कथारी, कतार ।
मराठीभाषामें	कथार ।
गुजरातीभाषामें	कथार ।
कर्णाटकीभाषामें	कतर ।
लेटिनभाषामें	कपेरिस सिपिर्णारिया ।

अस्या गुणाः ।

कथारीदीपनीरूच्याकटूष्णातिक्तकामता ।
रक्तदोषकफवातग्रन्थिरोगचनाशयेत ॥
स्नायुरोगञ्चशोफञ्चनाशयेदितिकीर्तिता ।(नि०र०)

अर्थ-कथारी-अग्निदीपक रुचिकारक चरपरी, गरम, कडवी तथा रुधिरविकार, कफ वात, ग्रन्थिरोग, स्नायुरोग और सूजनको दूर करे है ।

विवरण । कथारी तीन चार जातिकी होतीहै, एक हरी कटीली होतीहै उसके पत्ते गोल होतेहैं, फूल सुफेद गोरे और फूल केसरयुक्त होतेहैं, फल छोटे छोटे अनेक प्रकारके होते हैं ।

आरिनामानि ।

आरि मदानिकोद्दालाज्ञेयाखदिरपत्रिका ॥

अर्थ-आरि मदानिका, उद्दाला, और खदिरपत्रिका (नालिखदिर, खादिरवल्ली) ।

संस्कृतभाषामें	आरि ।
हिंदीभाषामें	आरी खेरबेल ।
मराठीभाषामें	आरई वेल्याखेर आराटी ।
कर्णाटकीभाषामें	मीग़ुरी ।
गुजरातीभाषामें	खेरवेल्य ।
लेटिनभाषामें	एकस्यापिनेटा । Acacia pennat

अस्या गुणाः ।

आरि कषायकटुकातिक्तारक्तार्त्तिपित्तजित ।
त्रिदोषघ्नीरसेपाकेचाम्लोष्णानिलकासहा ॥(रा०नि०)

अर्थ-आरी-कषैली, चरपरी, कडवी रस और पाकमें अम्ल गरम, तथा रुधिरविकार, पित्त, त्रिदोषवात और खांसीको दूर करे है ।

विवरण । आरीकी बेल होती है, इसपै-कांटे होते है, पत्ते छोटे छोटे खेरकी समान होते है, फली चपटी नीली रगकी होती है, फूल तन्तुयुक्त कीकरके फूलकी समान होते ह ।

भ्रमरच्छल्लीनामानि ।

भृगाह्वाभ्रमराह्वाचक्षीरद्रुर्भृंगमूलिका ।
उग्रगधाचभृगत्वक्छल्लीभ्रमरछल्लिका ॥

अर्थ-भृगाह्वा, भ्रमराह्वा, क्षीरद्रु, भृगमूलिका, उग्रगधा, भृगत्वक्, छल्ली भ्रमरछल्लिका ।

संस्कृतभाषामें	भ्रमरछल्ली ।
हिंदीभाषामें	भमरछल्ली ।
मराठीभाषामें	भ्रमरसाली ।
गुजरातीभाषामें	भमरछाल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	उप्पुशथे ।
लेटिनभाषामें	हाइमनोडिक्टियन एक्सेल्सा Hymenodictyon Axcel (Som)

भृङ्ग्या गुणाः ।

भृङ्गाह्वा कटुकाचोष्णा तिक्ता रुच्याग्निदीपनी ।
कण्ठ्या च सर्वदोषघ्नी प्रोक्ता पूर्वैर्भिषग्वरैः ॥ (नि०र०)

अर्थ-भमरउली-चरपरी, गरम, कडवी, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाली कण्ठको हितकारी और सर्वदोषनाशक है ।

विवरण । भ्रमर, शालीक वृक्ष बडे २ जंगलमें होतेहैं पत्र नारंगीके समान होतेहैं, फली अत्यन्त पतली आतीहै इसकी लकडी सफेद रंगकी और अत्यन्त श्रेष्ठ होतीहै प्रायः इसकी लकडीके तलवारके म्यान बनाये जातेहैं ।

अजगन्धानामानि ।

तिलवन.



अजगन्धा बस्तगन्धा खरपुष्पा सुगन्धिका ।
कावरी बर्बरा गंधा तुङ्गी पूतिमयूरिका ॥

अर्थ-अजगंधा, बस्तगंधा, खरपुष्पा, सुगंधिका, कावरी, बर्बरगंधा तुंगी, पूतिमयूरिका, (अविगंधा, अविगंधिका, ब्रह्मगर्भा, मार्जी)

संस्कृतभाषामें अजगंधा ।
हिन्दीभाषामें तिलवन ।
मराठीभाषामें कानफोटी ।
गुजरातीभाषामें मरवणी ।
कर्णाटीभाषामें नीलवणी ।
तेलङ्गीभाषामें वामिंग, अजगंधि ।
मल० कानेरा, पावटा ।
अंग्रेजीभाषामें जिनेन्ड्रोप्सिसपेण्टाफिला Gynandropsis pentaphylla

अजगंधागुणाः ।

अजगंधाकटूष्णास्याद्वातगुल्मोदरापहा ।
कर्णव्रणार्तिशूलघ्नीपीताचेदंजनेहिता ॥ (रा०नि०)

अर्थ-तिलवन-चरपरी, गरम, तथा वात, गुलम, उदररोग, कर्णरोग, व्रण और शूल्को दूर करे है। इसमें पीली तिलवन अंजनमें हितकारी है।

विवरण। तिलवन वनबाग जंगल आदिमें होतीहै यह दो प्रकारकी है, एकपर सफेद फूल और दूसरीपर नीलपीत मिश्रित रंगके फूल आतेहैं दोनोंमें फली आतीहै बीज काले रंगके निकलते हैं।

वृद्धदारुकनामानि ।

वृद्धदारुकआवेगीजन्तुकोदीर्घवल्लरी ।
वृद्धा कोटरपुष्पीस्यादजान्त्रीछगलांत्रिका ॥

अर्थ-वृद्धदारुक, आवेगी, जन्तुक, दीर्घवल्लरी, वृद्ध, कोटरपुष्पी, *अजान्त्री, छगलान्त्रिका (ऋक्षगंधा, छगलान्त्री, जुग, ऋष्यछगलाघ्री, छगला* अन्त्री, जुगा, छगली, जुगक, श्याम, वृष्यगंधा, दीर्घवालुका, छागलान्त्रिका वृद्धकोठरपुष्पी)

जीर्णदारुनामानि ।

जीर्णदारुर्द्वितीयस्याज्जीर्णाफञ्जीसुपुष्पिका ।
अजरासूक्ष्मपत्राचविज्ञेयाचषडाह्वया ॥

अर्थ-जीर्णदारु, जीर्णा, फञ्जी, सुपुष्पिका, अजरा और सूक्ष्मपत्रा ।

संस्कृतभाषामें	वृद्धदारु, जीर्णदारु ।
हिन्दीभाषामें	विधारा, कालाविधारा ।
बंगभाषामें	बितारक, बीजतारक, विद्धडक ।
मराठीभाषामें	श्वेतवरधारा ।
गुजरातीभाषामें	वरधारो ।
लैटिन्भाषामें	रोरियार्गेटेलोइ डश्नि । Roirea argteloi (Dec)
कर्णाटकीभाषामें	एरडुमुष्टे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चन्द्रपुडी ।

द्विविधवृद्धदारुगुणाः।

वृद्धदारुद्वयंगौल्यपिच्छिलकफवातहृत्।
बल्यकासामदोषघ्नद्वितीयस्त्वल्पवीर्य्यदम्॥(रा०नि०)

अर्थ–दोनो विधारे–गौल्य, पिच्छिल, कफवातनाशक, बलकारक, तथा खाँसी और आमदोषको दूर करे है। इनमें दूसरा विधारा अल्पवीर्यवाला है।

अपरञ्च।

साधारणोवृद्धदारुःकटुस्तिक्त कषायकः। रसायनोष्णो मधुरोमेध्यःस्वर्य्य सरोग्निदः॥ कान्तिधातुकरोबल्योरुच्यःपुष्टिकरोलघुः। उपदंशपाण्डुरोगक्षयकासप्रमेहकम्॥ वातरक्तचामवातवातशोफकफजयेत। (नि०र०)

अर्थ–विधारा–चरपरा, कडवा, कषेला, रसायन, गरम, मधुर, मेधाजनक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, सारक, अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक, धातुजनक, बलकारक, रुचिकारक, पुष्टिको करनेवाला, हलका (तथा उपदंश पाण्डुरोग, क्षय, खाँसी, प्रमेह, वातरक्त, आमवात, वात, सूजन और कफ दूर करनेवाला है।

विवरण–विधारा समुद्र शोषकी समान जानपडता है क्योंकि, समुद्रशोष और विधारेके फूल, पत्ते, बेल, काण्ड आदिमे कुछभी अन्तर नहीं दीखता। इसी कारण कितनेक वैद्य विधारा और समुद्रशोषको एकही मानतेहैं। विधारा दो प्रकारका होताहै एक वृद्धदारु, दूसरा जीर्णदारु, जीर्णदारुको फजी कहतेहै फजीके गुणदोष आगे लिखेहैं।

समुद्रशोषगुणाः।

समुद्रशोषःसम्प्रोक्तोवातलोग्राहकोमतः।
अतिपित्तकरश्चैवकफकृच्चमतोबुधैः॥ (नि०र०)

अर्थ–समुद्रशोष–वातकारक, भारी, अत्यन्त, पित्तकारक और कफका उत्पन्नकरनेवाला है।

समुद्रपुष्पगुणाः।

समुद्रपुष्पतुवरमधुरंशीतलमनम्।
रक्तदोषकफंपित्तकामलाचविनाशयेत्॥
गर्भिणीकण्टगमनमुनिभिःपरिकीर्त्तितम्।

अर्थ-समुद्रफूल-कपेला, मधुर, शीतल तथा रुधिरविकार, कफ, पित्त, कामला और गर्भिणीके कष्टको दूर करे है, समुद्रशोष और समुद्रफूल यह दोनो विधारेका ही भेद है।

फञ्जिकानामगुणाश्च।

फञ्यातुफञ्जिकापद्माह्वजात्रीचापराजिता । फञ्जीतुशीतलावृष्याग्राहकातुवराकटु ॥ ऊपणामधुराबल्यास्निग्धा कफकरागुरु । विष्टम्भकारिणीवातपित्तहृद्रोगकासहा ॥ क्लेशामदोषशमनी इतिपूर्वेभिषग्वरा । (नि०र०)

अर्थ-फञ्जी-शीतल, वीर्यवर्द्धक, मलरोधक, कपेली, चरपरी, गरम, मधुर, बलकारक, स्निग्ध, कफकारक, भारी, विष्टम्भकारक तथा वात, पित्त, हृदयरोग, खाँसी, क्लेश और आमदोषको दूर करे है।

विवरण। फञ्जीकी बेल खेतकी बागपर लगादेते हैं, फल समुद्रशोषकी समान होते हैं,। पत्तेभी समुद्र शोषकी समान किन्तु कुछ छोटे होतेहैं इसके पत्तोके पतोडे बनाते हैं।

संस्कृतभाषामें	फञ्जी, फञ्जिका, पद्मा, अजात्री, अपराजिता।
हिन्दीभाषामें	फञ्जी।
मराठीभाषामें	फाजी।
गुजरातीभाषामें	फाग्य।
लेटिनभाषामें	हिविया ओर्नेटा।

वेल्लतरुनामानि।

वेल्लतरुर्दीर्घमूलोवीरद्रुर्बहुवारक ॥

अर्थ-वेल्लतरु, दीर्घमूल, वीरद्रु, बहुकारक। (क्षुधाकुशलसंज्ञक, वीरवृक्ष, कृच्छ्रारि)

संस्कृतभाषामें	वेल्लतरु।
हिन्दीभाषामें	वरवेल, विल्वान्तर
मराठीभाषामें	वेल्लतूर।
तैलिङ्गीभाषामें	वेणुतुरुचेट्टु।
कर्णाटकीभाषामें	ओडङ्ग।
तामिलीभाषामें	विडात्तर।
लेटिनभाषामें	डेस्मान्थस सिनेरियस।

अस्य गुणाः ।

वेल्लतरुस्तुकटुकःपथ्यश्चोष्णोऽग्निदीपनः । रसेपाकेचतिक्तः स्याद्ग्राहकोवातरोगहा ॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीसंधिशूलघ्नोयोनि-रोगहा । मूत्राघातस्यशमनऋषिभिःपरिकीर्तितः ॥(नि०र०)

अर्थ-वेल्लतर-चरपरा, पथ्य, गरम, अग्निप्रदीपक, रस और पाकमें कडवा, मलरोधक, वातरोगनाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, संधिशूल, योनिरोग और मूत्राघातरोगको दूर करे है ।

विवरण । वेलन्तरके वृक्ष मारवाडदेशमें तथा नर्मदानदी और चर्म्मण्वती आदि नदियोंके तटपर होते हैं, इनपर कांटे होतेहै, पत्ते ऊंटकटेके समान छोटे २ होते हैं, फूल पाचों रंगके आते है ।

कर्कटनामानि ।

कर्कटः कार्कटः कर्कः क्षुद्रधात्रीमता स्मृता ।
क्षुद्रामलकसंज्ञश्चप्रोक्तः कर्कफलश्चसः ॥

अर्थ-कर्कट, कार्कट, कर्क, क्षुद्रधात्री, क्षुद्रामलकसंज्ञ, कर्कफल, (गांगेरुक, कर्कटक, मृगलेंडक, तोदन, कृन्तन, मृगविन्दसदृश)

संस्कृतभाषामें	कर्कटफल ।
हिन्दीभाषामें	गंगेरुवा, काठआमला ।
बंगभाषामें	काट आमला ।
मराठीभाषामें	धुटका काकणा ।
गुजरातीभाषामें	करपटा ।
कर्णाटकीभाषामें	बालिगे ।
लैटिन्भाषामें	गेहगा पिनेटा ।

अस्य गुणाः ।

तोदनंग्राहकंचाम्ललघूष्णंचाग्निदीपकम् । पित्तलंचफलं चास्या पक्वन्तुमधुरंमतम् ॥ स्निग्धंचतुवरंप्रोक्तंकफवातहरं स्मृतम् । गांगेरुकंतुतुवरमम्लंचोष्णंगुरुस्मृतम् ॥ रक्तपि-त्तकफकरंसारकंवातहारकम् । पक्वगांगेरुकफलंरुचिरंच गुरुस्मृतम् ॥ वातरक्तहरंपित्तनाशकंमुनयोजगुः ॥(नि०र०)

अर्थ-काठआमला-मलरोधक, खट्टा, हल्का, गरम, अग्निप्रदीपक और पित्तकारक है। इसके पक्के फल-मधुर, स्निग्ध, कषैले और कफवातनाशक हैं दूसरे प्रकारका काठआमला-कषैला, खट्टा, गरम, भारी, रक्तपित्तकारक, कफकारक, मारक, वातविनाशक है। इसके पक्के फल-रुचिकारी, भारी, वातरक्तहारी और पित्तको नष्ट करनेवाले हैं।

विवरण। काठआमलेके वृक्ष प्रायः पर्वतोंपर अधिकतासे होते हैं, पत्ते पक्तिवार होते हैं, फल आमलेकी समान बहुत छोटे २ होते हैं।

त्रिकिणीनामानि।

किंकिणीव्याघ्रघंटीचगोविंदीकटुकन्दरी ॥

अर्थ-किंकिणी, व्याघ्रघटी, गोविंदी, कटुकदरी, (ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद, वर्त्तल, व्याघ्रनखी, कृशाग्री, कटकलता, कारभा, तापसप्रिया)

संस्कृतभाषामें	किंकिणी।
हिंदीभाषामें	किंकिणी।
मराठीभाषामें	वाघटी।
गुजरातीभाषामें	वागाटी।
इंग्रेजीभाषामें	थोर्नीकपरब्रश। Thorny caperbrush
लेटिनभाषामें	केपेरिस् होरिडा। Capparis horrida

अस्या गुणाः।

किंकिणीतुवरातिक्तापित्तश्लेष्महराहिमा।
तत्फलंवातलंत्वामपक्वंस्वादुत्रिदोषजित् ॥ (म०नि०)

अर्थ-किंकिणी-कषैली, कडवी, पित्तकफनाशक और शीतल है। इसके कच्चे फल-बादी और पक्के फल त्रिदोषनाशक हैं।

अन्यच्च।

व्याघ्रघटापित्तलोष्णारुच्याविषकफापहा।
फलंचास्यास्तुतिक्तोष्णंविषूचीकफवातजित्।
त्रिदोषहारिणीप्रोक्तावैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (नि०र०)

अर्थ-किंकिणी-पित्तकारक, गरम, रुचिकारक तथा विष और कफनाशक है। इसके फल-कडवे, गरम तथा विषूचिका, कफ, वात और त्रिदोषनाशक हैं।

विवरण । किंकिणीके वृक्ष वन और पर्वतोंपर होते हैं । इस वृक्षपर बेरीके समान नाके काटे होते है, फल लम्बे गोल और बीचमें गाड्दार होते है फलका मध्यमभाग हिंगोटकी समान होता है ।

गोरक्षानामानि ।

गोरक्षीसर्पदर्डाचदीर्घदर्डासुदडिका ।
चित्रलागधवहुलागोपालीपचपर्णिका ॥

अर्थ-गोरक्षी, सर्पदर्डी, दीर्घदर्डी, सुदण्डिका, चित्रला, गन्धबहुला, गोपाली, पंचपर्णिका ।

संस्कृतभाषामें	गोरक्षी ।
हिन्दीभाषामें	गोरखइमली ।
मराठीभाषामें	गोरखचिंच ।
गुजरातीभाषामें	रखडो ।
लैटिनभाषामें	एडन्सोनिया डिजिटेट ।
अरबीभाषामें	हवहबु ।

अस्या गुणाः ।

गोरक्षीमधुरातिक्ताशिशिरादाहपित्तनुत् ।
विस्फोटवान्त्यतीसारज्वरदोषविनाशिनी ॥(रा०नि०)

अर्थ-गोरखइमली-मधुर, कटवी, शीतल तथा दाह, पित्त, विस्फोट, वमन, अतीसार और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । इसका वडा वृक्ष होता है एक डण्डीमें सेमलकी समान पांच २ पत्ते होते हैं, फूल बडा और सफेद कमलकी समान होता है, फल लौनी अथवा तारकी समान आते है ।

पातालतुम्बीनामानि ।

गर्त्तालावुश्चभूतुम्बीदेवीवल्मीकसम्भवा ।
दिव्यतुम्बीनागतुम्बीशक्रचापसमुद्भवा ॥

अर्थ-गर्तालाबु भूतुम्बी, देवी, वल्मीकसम्भवा, दिव्यतुम्बी, नागतुम्बी शक्रचापसमुद्भवा ।

संस्कृतभाषामें	पातालतुम्बी ।
हिन्दीभाषामें	पातालतोम्बी ।

गुजरातीभाषामें पातालतुंम्बडी।
मराठीभाषामें नागतुम्बी।
लैटिन्भाषामें बोविस्टास्पिसिस्। Bovista sp ecies

भूतुम्बीगुणाः।

भूतुम्बीकटुकातिक्ताविषदोषविनाशिनी।प्रसूतिकादोषसम्भूतातिसारहरापरा ॥ दन्तबंधज्वरशोथसस्वेदंसप्रलापकम्। जयेदात्मप्रभावेणह्यचिन्त्यावस्तुशक्तय ॥

अर्थ-भूतुम्बी-चरपरी, कडवी, विषदोषविनाशक तथा प्रसूतके समयका अतिसार, दाँतोंकी जडता और सूजन, स्वेद तथा प्रलापयुक्त ज्वरको दूर करे है।

विवरण। पातालतुम्बी खेतोंमें और कर्गेमें होतीहैं इसपर बहुत बारीक और पीले रंगके छींटेवाले बिच्छूके डंकके समान कांटे होते हैं, कांटेके बीचमें तोम्बीकी समान पातालतुम्बी होती है। इसमें अनेक चमत्कारिक गुणहैं जो कि, अन्य औषधियोंमें नहीं देखे जाते।

हेरम्बनामानि।

हेरम्बःखरपत्रःस्यात्कटकीदन्तधावन ।

अर्थ-हेरम्ब, खरपत्र, कटकी, दन्तधावन।

संस्कृतभाषामें हेरम्ब।
हिंदीभाषामें हेरम्ब-वज्रदंती।
मराठीभाषामें दातूणी, हेरम्बवृक्ष।
गुजरातीभाषामें वज्रदंती।
लैटिन्भाषामें लपिकार्पस आरिएण्टेलीस। Lepicarpus Orientalis

अस्य गुणाः।

हेरम्बवृक्षःकफहावातनाशकरोमत ।
हेरम्बवृक्षमूलंतुप्रोक्तंवांतिकरंबुधै ॥

अर्थ-हेरम्बवृक्ष-कफनाशक और वातको दूर करे है। हेरम्ब वृक्षकी जड वमनकारक है।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते बेरकी समान होतेहैं, इसकी दतौन करते हैं।

वृश्चिकानामानि।

वृश्चिकानखपर्णीचपिच्छिलाप्यलिपत्रिका।

अर्थ–वृश्चिका, नखपर्णी, पिच्छिला, अलिपत्रिका (दुस्पर्शा, धूम्रपुष्पा, दहना, नक्रदंष्ट्रिका, सर्पदंष्ट्री, विषघ्नी, सूतवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	वृश्चिका।
हिन्दीभाषामें	बिछवाघास।
बंगभाषामें	बिछुटी।
मराठीभाषामें	आग्या, विचवा।
कर्णाटीभाषामें	इगुल, मामसा, होत्रगोत्रे।
तामिलीभाषामें	कायचोरी।
तैलिंगीभाषामें	दुलगोंड।
तु०	पच्चीरंगी।
मल०	कोंसाटुवा।
गुजरातीभाषामें	खाजवणी।
लैटिनभाषामें	जिरार्डिनिया हिटरोफाईला Girardinia heterophylla

अस्या गुणाः।

वृश्चिकापिच्छिलाम्लास्यादन्नवृद्ध्यादिदोषनुत्॥ (रा०नि०)

अर्थ विछवा–पिच्छिल, खट्टी और अन्नवृद्ध्यादि दोषनाशक है।

अन्यच्च।

वृश्चिकालीतुवल्यास्यात्तिक्ताकटीविबन्धनुत्।
हृद्याचोष्णावस्तिशुद्धिकारिणीरक्तपित्तहा॥
अरोचकनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः।

अर्थ–विछवा–बलकारक, कड़वी, चरपरी, विबन्धनाशक, हृदयको हितकारी, गरम, वस्तिशोधक, रक्तपित्त और अरुचिको दूरकरेहै।

विवरण। विछवा कईप्रकारका होताहै, इसके वेल क्षुप और वृक्ष होतेहैं। इसपर कौंछकी समान रूआ होताहै।

तुवरनामानि।

तुवरः सागरोद्भूतः कुष्ठहाऽलमकापहः॥

अर्थ–तुवर, सागरोद्भूत, कुष्ठहा, अलमकापहा।

संस्कृतभाषामें	तुवर ।
हिंदीभाषामें	तवरक ।
मराठीभाषामें	तीमर ।
गुजरातीभाषामें	तवरियां चेरिया ।
लेटिनभाषामें	एविसिनीया टामेंटासा Avicenia tomentosa

तुवरगुणाः ।

तुवरस्तुवरश्चोष्णोरसेपाकेचतिक्तकः ।
कफव्रणकृमीमेहकुष्ठज्वरविनाशनः ॥
आनाहमर्शशोफंचनाशयेदितितेजगुः । (नि०र०)

अर्थ-तुवर-कपैला, गरम, रसमें और पचनेमें कडवा, तथा कफ व्रण, कृमि, प्रमेह, ज्वर, आनाह, बवासीर और सूजनको दूर करे है ।

विवरण । इसके वृक्ष समुद्र और नदियोंके तट पर होते हैं, फल इमलीके समान होते हैं इसके फलको पशुओंको देनेसे दूध अधिक बढ जाताहै ।

एरण्डचिर्भिटनामानि ।



एरण्डचिर्भिटोवृक्षश्चिर्भिटानलिकादलः ।
वातकुम्भफलःप्रोक्तःमर्चनमधुकर्कटी ॥

अर्थ-एरण्डचिर्भिटवृक्षको चिर्भिटा और नलिकादल कहते हैं । इसके फलोंको वातकुम्भफल और मधुकर्कटी कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें	वातकुम्भ ।
हिन्दीभाषामें	अण्डखरबूजा पोपैया ।
मराठीभाषामें	पोपैया ।
गुजरातीभाषामें	पोपयो, एरडकाकडी, झाडचीभडी ।
तैलिङ्गीभाषामें	पोपटचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	पेपो । Papaw
लेटिन्‌भाषामें	केरिकापापैया । Caricapapaya
कर्णाटकीभाषामें	पप्पलसु ।
तुर्कीमें	वप्पागाई ।
तैलिङ्गीभाषामें	बोप्पइ ।
मला०	पप्पायम्
तामिलीभाषामें	पप्पाई ।

अस्य गुणाः ।

वातकुम्भफलग्राहिकफवातप्रकोपनम् ।
तत्पक्वमधुररुच्यपित्तनाशकरगुरु ॥

अर्थ-अडखर्बूजा-मलरोधक, कफ और वातको कुपित करे है, पका अण्डखर्बूजा-मधुर, रुचिकारक, पित्तनाशक और भारी है ।

अन्यच्च ।

मध्वेरण्डफलपक्वकिंचित्तिक्तञ्चमाधुरम् ।
वृष्यंकफकरहृद्यमुन्मादस्यविनाशकम् ॥
वर्ध्मरोगहरञ्चैवस्निग्धंवातविनाशनम् ।

अर्थ-पका अडखर्बूजा-किंचित्, कडवा, मधुर, वीर्यवर्द्धक, कफकारी, हृदयको हितकारी, उन्मादरोगको हरनेवाला, वर्ध्मरोगको विनष्ट करनेवाला, स्निग्ध और वातविनाशक है ।

विवरण । अडखबूजेके वृक्ष प्राय अण्डके समान होते हैं । बल्कि यह अडशाही भेद है । पत्तभी अडसेमे होते हैं किन्तु यह वृक्ष बहुत लम्बे और सीधे होते हैं । फल बडे २ लम्बे और गोल तीन चार प्रकार लगते हैं ।

क्षुद्रवादामनामगुणाश्च ।

वदाम-क्षुद्रसञ्जस्तुक्षुद्रबीजोम्लमाधुरः ।
तुवरोग्राहिपित्तघ्नःशिशिर कफशुक्रकृत् ॥

अर्थ-क्षुद्रवादाम और क्षुद्रबीज यह दो नाम देशी बादामके है ।

देशीबादाम-खट्टा, मधुर, कषेला, मलरोधक, पित्तनाशक, शीतल, कफ तथा शुक्रको करे है ।

विवरण । देशीबादामके वृक्ष प्राय बाग और वन सर्वत्र होते हैं, पत्ते बराबर शाखाओंमे दोनो ओर होते है, फल अपक्व अवस्थामे हरे और खानेमे कषेले तथा खट्टे होतेहै और पकजानेपर लाल तथा मधुर होजाते है ।

संस्कृतभाषामें	क्षुद्रवादाम ।
बंगभाषामें	क्षुद्रवादाम ।
हिन्दीभाषामें	देशीबादाम ।
मराठीभाषामें	हिरवा बदाम ।
गुजरातीभाषामें	बदाम देशी ।
कर्णाटकीभाषामें	नतवड ।
तैलङ्गीभाषामें	बदम ।
इंग्रेजीभाषामें	आमण्ड । Almond
लैटिनभाषामें	टरमिनेलियाकैटापा । Terminalia catappa

काम्बोजीनामगुणाश्च ।

काबोजिन्यांचकाम्बोजीबहुपुष्पाबहुप्रजा ।
काम्बोजीग्राहिणीवातशोफरक्तविभेदकृत ॥

अर्थ-काम्बोजिनी, काम्बोजी, बहुपुष्पा और बहुप्रजा यह काम्बोजीके संस्कृत नाम है ।

काम्बोजी-मलरोधक तथा वात, सूजन और रुधिरके विकारको दूर करे है ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष होता है, पत्ते आमलेके पत्तोकी समान होते है, इसकी शाखा लम्बी लम्बी होतीहै फल गोल और अपक्व अवस्थामे हरे होते हैं और पकनेपर लाल होजातेहैं ।

संस्कृतभाषामें	काम्बोजी ।
हिन्दीभाषामें	कम्बोई ।
बंगभाषामें	काम्बोजी ।
मराठीभाषामें	चिफली ।
गुजरातीभाषामें	खेडा कम्बोई ।
लॅटिन्भाषामें	फाईलेन्थस मल्टीफ्लोरस् । Phylanthus Multi Florus
	फाइलेन्थस रेक्टिकुलेटस् । Phylanthus Recticuletus

अथ निर्विषीनामानि ।

निर्विषापविषा चैव विविषा विषहापरा ।
विषघ्नी विषाभावाह्यविषा विषवैरिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ–निर्विषा, अपविषा, विविषा, विषहा, विषघ्नी, विषाभावा, अविषा और विषवैरिणी यह निर्विषीके नाम ८ ।

संस्कृतभाषामें	निर्विषी ।
हिन्दीभाषामें	निर्विषीघास ।
बंगभाषामें	निर्विषीघास ।
मराठीभाषामें	निर्विषी कचऱ्या सारख झाड असतें ।
गुजरातीभाषामें	निर्विषी ।
कर्णाटकीभाषामें	निर्विषी ।
फारसीभाषामें	जद्वार ।
लॅटिन्भाषामें	डेल्फिनियम डिनुडेट Delphineum Denudatum

अस्या गुणाः ।

निर्विषी कटुका शीता व्रणरोपणकारिणी ।
कफवातरक्तदोषविषं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ–निर्विषी–कटु, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा कफ, वात, रुधिरविकार और विषको नष्ट करे है ।

विवरण । निर्विषीघास मोथेकी समान होती है यह प्रायः हिमालय, मलयाचल, काश्मीर और केदार आदि पर्वतोंपर अधिकतासे उत्पन्न होती

है, इसका कद अतीसकी समान होता है यह साप विच्छू आदि अनेक प्रकारके विषोंको दूर करे है ।

अथ नागजिह्वानामगुणाश्च ।

नाहुश्चनागजिह्वाख्यातिक्तपत्राक्षितीक्षुपः ।
कृमिहृत्क्षारकर्म्माचतथामभिजक स्मृतः ॥

अर्थ-नाहु, नागजिह्वा, तिक्तपत्रा, क्षितीक्षुप, कृमिहृत्, क्षारकर्म्मा और माभिजक यह नागजिह्वाके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	नागजिह्वा ।
हिन्दीभाषामें	छोटा किरायता ।
बंगभाषामें	नागजिह्वा ।
मराठीभाषामें	तानवडीच झाड ।
गुजरातीभाषामें	मामेजवो ।
लेटिन्भाषामें	हिपियन् ओरिएण्टल् । Hipian orientale

गुण-नागजिह्वा (छोटा किरायता)-कटु, अत्यन्त तिक्त तथा कृमिदोष, वातरोग और ज्वरको दूर करे हैं ।

विवरण । छोटे किरायतेके साथ, चौमासेमें अनेक क्षुप उत्पन्न होजाते हैं, पत्ते अंगुलीकी समान लम्बे और पतले २ होते हैं, फल छोटे छोटे गोल आते हैं ।

अथ माकन्दीनामानि ।

माकन्दीबहुमूलाचमादिनीगंधमूलिका । एकविंशतिमूली चश्यामलागिरिकन्दका ॥ मायिनीगिरिवर्य्याचगिरिमध्या गिरिप्रिया ।वराहेष्टागिरिमतीवर्त्तीचतुर्दशाभिधा॥(रा०नि०)

अर्थ-माकन्दी, बहुमूला, मादिनी, गंधमूलिका, एकविंशतिमूली, श्यामला, गिरिकन्दका, मायिनी, गिरिवर्य्या, गिरिमध्या, गिरिप्रिया, वराहेष्टा, गिरिमती और वर्ती यह नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	माकन्दी ।
हिन्दीभाषामें	माइमूल ।
बंगभाषामें	माइराणी ।
मराठीभाषामें	मायमूले माईनी-मोगिनी-मायिणी ।

गुजरातीभाषामें — गरमर ।
कर्णाटकीभाषामें — मागिणी ।
लैटिन्भाषामें — कोलेन्सबोर्वेटस् । Colens Bor Brutus

अस्या गुणाः ।

माकन्दीमधुरातिक्ताकटुकादीपनीपरा ।
रुच्यालपवातकृत्पथ्याजठरामयनाशिनी ॥

अर्थ-माकन्दी-मधुर, तिक्त, कटु, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, अल्पवातकारक, पथ्य और उदररोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

मायिनीतिक्तकातीक्ष्णामधुराग्निप्रदीपनी । रुच्याबलकरी चैवप्लीहवातकफाञ्जयेत् ॥ गुल्मोदरानाहशीतज्वरनाशकरीमता । कन्दस्तुपाकेमधुरोनिकाशीपाण्डुशोफजित् ॥ कृमिप्लीहापाण्डुगुल्मसंग्रहण्युदरार्शोजित् ॥ (नि०र०)

अर्थ-माई-तिक्त, तीक्ष्ण, मधुर, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, बलकारक तथा प्लीहा, वात, कफ, गुल्म, उदररोग, आनाह और शीतज्वरको नष्ट करेहै । इसका कन्द-पाकमें मधुर, विकाशी तथा पाण्डुरोग और सूजनको दूर करेहै तथा कृमि, प्लीहा, पाण्डु, गुल्म, संग्रहणी उदररोग और बवासीरको दूर करेहै ।

विवरण । माकन्दी-खेत और बागोंमें बोई जाती है, इसके क्षुप होतेहै, नीचे अंगुलीकी समान जड होती है, इसकी डंडी और पत्तों दोनोंका शाक बनातेहैं ।

झुल्लपुष्पनामगुणाश्च ।

झुल्लपुष्पेज्वलत्पुष्पःकृच्छ्रहालघुपत्रकः ।
पीतपुष्पः पङ्क्तिपत्रस्तथालम्बालुकः स्मृतः ॥
झुल्लपुष्पः स्पृष्टमूत्रोमूत्रकृच्छ्रहरः परः ।

अर्थ-झुल्लपुष्प, ज्वलत्पुष्प, कृच्छ्रहा, लघुपत्रक, पीतपुष्प, पंक्तिपत्र और लम्बालुक यह संस्कृत नाम है ।

संस्कृतभाषामें — जलपुष्प ।
बंगभाषामें — झलई ।

मराठीभाषामें झरेर ।
गुजरातीभाषामें झरेर ।
लैटिन्भाषामें वाईओफिटमेन्सेटिवम् । Biophytum Sensitivum

गुण-जलपुष्प-मूत्रजनक और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करैहै ।

विवरण । इसका छोटा क्षुप होताहै, फूल पीला आताहै, लज्जावतीकी समान इसके पत्तेभी मनुष्यके स्पर्शसे तत्काल सिकुड जातेहै ।

अथ ओखराडीनामगुणाश्च ।

ओखराड्यांभिस्सटाचतडागमृत्तिकोद्भवा ।
भिस्सटाभस्मतैलेनसंयुतामरिचैर्युता ॥
मस्तकेपरितोलेपाद्व्रणान्हन्तिचिरोत्थितान् ।

अर्थ-ओखराडी भिस्सटा और तडागमृत्तिकोद्भवा यह नामहै ।

संस्कृतभाषामें ओखराडी ।
बंगभाषामें ओपड ।
मराठीभाषामें ओखराडज ।
गुजरातीभाषामें आखराडच ।
लैटिनभाषामें मोल्युगोहिटी । Mollu Gohirta

गुण-इसकी भस्म बनाकर तेल और कालीमिरचाके चूर्णके साथ मिलाकर शिरपर लेप करनेसे बहुत दिनोंके व्रण दूर होजाते है ।

विवरण । इसके छत्ते होतेहैं, विशेषकरके जिस नदी या तालावका जल सूख जाताहै उसमें यह अधिकतासे होताहै, इसमें बीज अधिक होतेहै, यह अनेक प्रकारके रोगोंमें अनुपान विशेषके साथ प्रयोग किया जाताहै, मूत्रके रुकनेपर अथवा मूत्रकृच्छ्रमें यह अत्यन्त हितकारीहै, इसको पीसकर शिरपर लगानेसे शिरकी खुजली, दाद, शोप और व्रण दूर होजातेहै ।

झावुकनामगुणाश्च ।

झावुक पिचुलोझावुरफलोबहुग्रन्थिक ।
झावुक कटुकम्तिक्त'मूत्रकृच्छ्रविनाशक ॥

अर्थ-झावुक, पिचुल, झावु अफल और बहुग्रन्थिक यह झाउके संस्कृत नाम है ।

संस्कृतभाषामें झावुक ।

हिन्दीभाषामें झाऊका वृक्ष ।
वंगभाषामें झाऊगाछ ।
मराठीभाषामें झावू, तिल्व्यावृक्षभेद ।
गुजरातीभाषामें झावू ।

विवरण—झाऊके वृक्ष—प्राय. नदियोंकी रेतीमें होतेहैं, पत्ते सरूकी समान होतेहैं, किन्तु सरूकी माफिक लम्बे और सीधे नहीं होते, पेड झादेदार होतेहैं, इसकी लकडी बहुत गाठदार और दृढ होतीहै, इसमें छोटे २ अनेक फल होतेहैं ।

राजाद्रिनामगुणाश्च ।

राजाद्रिःस्याद्राजगिरिर्ज्ञातव्याराजशाकिनी ॥

संस्कृतभाषामें राजाद्रि, राजगिरि और राजशाकिनी यह नाम हैं ।
हिंदीभाषामें फलगाघास ।
वंगभाषामें राजशाक, कलईशाक ।
मराठीभाषामें राजगिरा ।
गुजरातीभाषामें राजगरो ।
कर्णाटकीभाषामें डोलगेदो निएरड्डु ।
फारसीभाषामें अगोझा ।
अरबीभाषामें हमाहम ।

गुणाः ।

लघुराजगिरःप्रोक्तःकफकृत्सारकोगुरुः । निद्रालस्यकरं पथ्यं सारकश्चेतिशीतलः ॥ मलावष्टम्भकरणोरुचिदोतिगुरुः स्मृतः । पित्तनाशकरश्चैवऋषिभिः परिकीर्तितः ॥

अर्थ—छोटा राजगिर—कफकारक, सारक, भारी, निद्रा और आलस्यको उत्पन्न करनेवाला, पथ्य, सारक, अत्यन्त शीतल, मलावष्टम्भकारक, रुचिकारी, भारी और पित्तनाशक है ।

विवरण । इसके बडे २ क्षुप होतेहैं, इसकी डंडी मोटी होतीहै, इसके कच्चे पत्तोंका शाक बनातेहैं इसके बीजोंका फलाहार करतेहैं ।

सप्तपुत्री (तोशातकी) नामानि ।

लघुकोशातकीग्राम्यासप्तपुत्रीस्मृताबुधैः ॥

अर्थ—लघुकोशातकी, ग्राम्या और सप्तपुत्री यह नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	सप्तपुत्री ।
हिन्दीभाषामें	सतपुतीतोरई ।
वंगभाषामें	सातपुती ।
मराठीभाषामें	सातपुती ।
गुजरातीभाषामें	झुमखडा ।

अस्या गुणाः ।

सप्तपुत्रीशीतलास्याद्धृद्यापाकेकटुःस्मृता ।
स्निग्धापित्तविषकासज्वरवातश्चनाशयेत् ॥

अर्थ–सतपुतीतोरई–शीतल, हृदयको हितकारी, पचनेमें कटु, स्निग्ध तथा पित्त, विष, खाँसी, ज्वर और वातको नष्ट करे है ।

विवरण । सतपुती तोरईकी वेलभी तोरईकी समान होतीहै, पत्तेभी तोरईकी समान होतेहैं, फल कन्दूरीसे कुछ मोटे और परवलकी समान गुच्छाम सात सात लगतेहैं ।

वनप्सानामानि ।

वनप्सासूक्ष्मपत्राचनीलपुष्पाज्वरापहा ॥

अर्थ–वनप्सा, सूक्ष्मपत्रा, नीलपुष्पा और ज्वरापहा यह गुलवनप्साके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	वनप्सा, पुष्पवनप्सा ।
हिन्दीभाषामें	गुलवनप्सा ।
वंगभाषामें	वानप्सा ।
मराठीभाषामें	वनप्सा ।
गुजरातीभाषामें	वनप्सा ।

अस्या गुणाः ।

वनप्साकटुतिक्तोष्णाशीतज्वरनिवारणी ।
कासश्वासहरान्नल्यावातपित्तकफापहा ॥

अर्थ–वनप्सा–कटु, तिक्त, गरम, शीतज्वरनाशक, खाँसी और श्वासको हरनेवाली और त्रिदोषको दूर करेहै ।

विवरण । वनप्सा प्रायः पर्वतापर होतीहै, इसके क्षुप छोटे २ कालापन लिये कुछ हरे अथवा धूसर रंगके होतेहैं, फूल सफेद और नीलरंगके आतेहैं । कितनेक वैद्य श्रायमानको वनप्सा कहते हैं सो श्रायमानका और वनप्साकी कुछभी आकृति नहीं मिलती ।

आलुकनामगुणाश्च।

आलुकंस्वादुकन्दश्चम्लेच्छकन्दसुकन्दकम्।

अर्थ-आलुक, स्वादुकन्द, म्लेच्छकन्द और सुकन्दक यह आलूके संस्कृत नामहैं।

संस्कृतभाषामें	आलुक।
हिंदीभाषामें	आलू।
बं०-गु-म०	सर्वभाषाओंमें प्रायः "आलू" इसी नामसे प्रसिद्धहै।
इंग्रेजीभाषामें	पुटैटो। Potato

अस्य गुणाः।

आलुकस्निग्धमुष्णश्चवृष्यंवातकफापहम्।
दीपनंरुचिदंहृद्यंमधुरग्राहिशोथनुत॥

अर्थ-आलू-स्निग्ध, गरम, वृष्य,वातकफनाशक, अग्निदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, मधुर, मलरोधक और सूजनको दूर करैहै।

विवरण-आलू अर्वाचीन कन्दहै, इसको हिन्दोस्तानमें आये हुए, अनुमान एकसौ वर्ष १२० वर्षसे अधिक नहीं हुए, पहले अमेरिकामें होताथा पश्चात् यह यूरोप आदि देशोंमें आया अब सम्पूर्ण भारतवर्षमें आलूकी खेती अधिकतासे होतीहै, यह सफेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है। पर्वतोंपर आलू बहुत बडा और अधिक स्वादिष्ट होताहै।

अथ पुष्पगोभीनामानि।

पुष्पगोभीस्वादुशाकामध्यपुष्पाबृहद्दला॥

अर्थ-पुष्पगोभी, स्वादुशाका, मध्यपुष्पा, बृहद्दला (पीतपुष्पा और पुष्पशाका) यह नाम पुष्पगोभीके है।

संस्कृतभाषामें	पुष्पगोभी।
हिंदीभाषामें	फूलगोभी, गोभीका फूल, गोभी।
बंगभाषामें	गोभी।
मराठीभाषामें	गोभी।
इंग्रेजीभाषामें	कालीफ्लावर। Cauliflower

अस्य गुणाः।

पुष्पगोभीगुरुस्वाद्वीवातकोपप्रकोपनी।
मधुराग्राहिणीबल्यावह्निमांद्यकरीमता॥

अर्थ-फूलगोभी-भारी, स्वादिष्ठ, वात और शोथको प्रकुपित करनेवाली मधुर, मलरोधक, बलकारक और अग्निको मन्दकर्ती है।

पत्रगोभीगुणाः ।

पत्रगोभीसरारुच्यावातलामधुरागुरुः ।

अर्थ-पत्रगोभी-सारक, रुचिकारक, वातकारक, मधुर और भारी है।

ग्रन्थिगोभीगुणाः ।

ग्रन्थिगोभीमहाबल्यादुर्जराग्राहिशीतला ।

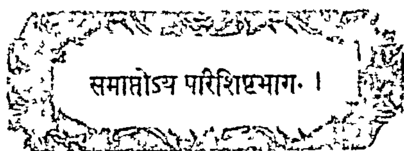
अर्थ-गाठगोभी-अत्यन्त बलकारक, बहुत देरमें पचनेवाली, मलरोधक और शीतल है।

विवरण। गोभी पहले यूरोप आदि अन्य देशामें होतीथी किन्तु अब समस्त हिन्दोस्तानमें होनेलगीहै। अनुमान गोभीको हिन्दोस्तानमें आये साठ ६० वर्षसे अधिक नहीं हुए। पहले जब गोभी भारतमें आई थी तब इसको बहुत कम मनुष्य खाते थे, बहुतसे मनुष्य इसको प्रथम प्याज, सलजमकी माफिक घृणाकी दृष्टिसे देखते थे किन्तु अब गोभी उत्तम शाकामें गिनी जाती है।

फूलगोभी, पत्रगोभी (बन्दगोभी, करम कल्ला) और गाठगोभी इन भेदोंसे यह तीन प्रकारकी होतीहै।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे परिशिष्टभागः समाप्तः ।

श्रीशङ्करः । शुभमस्तु । कल्याणमस्तु ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बम्बई